्राह्म प्रिक्ति अर्थ प्रतिनिधि समा का साप्ताहिक मुखपत्र

हस्य एक प्रति ५० पैसे

3 7

रविवार ४ नवम्बर १६५४

बाय मस्तर १६,०५५३०५४

१६ कानिक २०४१

दयान दाब्द--१४८

अलगाववाद की ताकतों का विरोध करना होगा

हम राष्ट्र को खरिण्डल नहीं होने देगे सभी देशवासी सकत्प ले स्वराज्य के मन्त्रदाता महर्षि दयानन्द का दिल्ली मे १०१वा भव्य निर्वाण दिवस

आर्य नेताम्रो का उद्बोधन :

त्रशाल सार्वजनिक सभा मे महर्षि को श्रद्धाजलि

नई दिल्ली । महर्पि दयानन्द सरस्वती पहले भाग्तीय थ जिल्हान उन्होन उ नी-न्त्री मनाब्दी संसम्पूर्ण सानव समाज क अभ्यदय की बात कही वह पहल भारतीय व तक ये जि नेन पूण स्वराज्य की बात कही उस बाद मंदूनर राजनीतिज्ञा और ाग्रस ने दहराया। आज वे ही नाकन फिर एकजुर हा रही हैं जि होन देश का पहन ाडने की काणिश की बी धम प्रदाएव भाष के आधार पर अनगाववाद का माग का म जम कर विरोध करना हागा पिछला वप भःभावात का बीता है उसमे आयममाजन लगावबाद और विखण्डन क विरुद्ध राष्ट्रीय मूरक्षासेना द्वाराकी कायवाही का समयन न्या है। 'इन श•दाम साबदेशिक सभा के प्रधान लाला रामगापाल शालवाल न दावाला ४ अक्तबर, १६८४ के दिन प्रात रामनीना मैदान में बाय के द्रीय सभा दिल्ली द्वारा ायोजित विशाल जनमभा का उदबोधन किया। भारत सरकार की स्वास्थ्य उप त्रिगीसुत्री कूमूद बेन जापी ने जनता का आद्धान करन हर कहा --- 'आज हम सक्र र पना होगा कि हम राष्ट्र को खण्डिन नहीं होने दग हमारा पूण स्वराज्य ट्रेनही, ह्यत और पुष्ट हो इसके लिए आय जन प्रयत्नकील हा। नारी को उसका सम्मान ।दलान ले महींव दयानन्द ही ये अ।यसमाज क दस नियम हमारे लिए पर प्रदशक हैं। वापीढी को उनका अनुसरण करना चाहिए। इस अवसर पर श्री क्षितीश वेदालकार श्री बाचस्पति उपाध्याय के भाषण हए।

इस जनसर पर सावदेशिक समाके प्रधान श्री वाल दाले ने घोषणा को कि १२१ में ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध निकाने गए जलूस का घण्टावर मं नतुत्व करने ल स्वामी श्रद्धानन्द के नाग पर चादनी चौक का नाम श्रद्धानन्द चौक रखने का स्ताव दिल्ली प्रशासन न स्वीकार कर लिया है इनसे पूव निगम न चौक पर रामशरण व्रवाल चौक की पटटी लगाई थी।

ऐसी उपस्थिति पहले कभी नहीं

इस अवसर पर भाषण यते हुए ।सी विवानन्द सरस्वती ने कहा— केन्द्रीय सभा द्वारा चालीसची बार [वि निर्वाण दिवस मनाया बा र. [परन्तु मैं कह सकता हु कि यज व बजारोहण के समय इतनी बड़ी ।स्थिति पहुषे कभी नही रही। हते रण रचना होगा कि जिस रास्ट जन नस से सन्छिति, परम्पराग तथा तत्व कम जाते हैं, उसकी जात्मा सन्य हा हो है। दश की जात्मा सन्य हा ए उसकी सन्हाति और सम्यता की साहित्य परम्परा और सस्कृति की रहा कर ही मारत की जात्मा को जिए जोवी कर सकते हैं। मू पू ससद सदस्य भी विस्कृता परिस्पतियों में कहा कि महिंग ने प्रतिकृत परिस्पतियों में काम कर मारतीय आता को रास की है। उन्हार मारतीय महिलाओं का उत्पर उठाया है आयमवाज ने समकरण्याम जैसे कायस्य कुल म जन्मे व्यक्ति को निवेदी बना के सवववेद का भाव्य करने की समता परा की। इसी उत्पार पुरुकृत में जन्मे प पुरुकृत में प पुरुकृत में जन्मे प पुरुकृत में प पुरुकृत में प पुरुकृत में प पुरुकृत में प प्रिकृत में प्रिक



आय महासम्प्रेपन की अध्यक्षता करत हुए प० सत्यव्रत सिद्धातालकार परिद्रष्टा गुरुक्त कागडी विद्रविद्यालय हुनुमान रोड समाज क प्रवान श्री राममूलि कैला उनका स्वापत कर रह है।

साबद्धिक समा के महामन्त्री था अग्रिप्पक्षका त्यागी न १६वी अन न्दी के पुषप्रवर्त्तकों मे महर्षि दयग्न- की काल साक्ष्म में गुल्ला की। विगानी में साथ समाज के नियमा की महना स्वाकार करन हैं। सहर्षि ने दिल्ली म मया एक ग्लाम सम्प्रचलित करन का प्रयंत किया था।

इस सभा म स्त्री बायसमाज पताबी बाग की मन्त्रिणी श्रीमती बादल कुमार बौर श्रीमती ए डी कपूरन श्रीनगर के हजूरी बाग के ब्वस्त बायसमाज मदिर जीर आय पाठवाला क पुनिनर्शण के सावदिका रूपण का चैक सावदिका सभा क प्रधान लाला राम्गाराल गानवार का भेंट किया। बुख्वार
-४४ जन्दर का दीवाली का पव दिल्ली
अर का धायनमात्रा जाय सरसाबा और
आयत्रनता न जाय कन्द्रीय सभा के तरबावचान म १०१ व निवाणा सब के रूप में
मनाया। प्रात च बज विशाल यज्ञ हुमा,
उसके बाद स्वामी विद्यानन्द सरस्कती के बाद म पराक्ष कहा हुमा,



अगिन आदि देवता क्यो कहलाते हैं ?

— मनोहर विद्यालकार

अग्निन्वना वाता देवना सूर्यो देवता च द्रमा देवता वसवी देवता रद्रा दवतादिया देवता मस्ती देवता विक्वेन्बा दवना बहस्पतिदवन द्रो देवता बरुणो देवता यज् ० १४।५०

विश्वनेव दवता---अर यात्रय छ स --- भरिग बाह्मी त्रिष्टप (अग्नि) उ नयन गब्द व

मागटशन गति कोति और भस्म करन वालेतव---परमामा जीवामा मन गुरु ब्राह्मण महासूत अग्ति आर्टि (देवता) स्वय दीप्त दूसराका टीप्त करने और किसीन किसी रूपम दान करन के कारण देवता है। (वान) गतिमय होकर प्रदेशण तथा दोषों का दर करने वाल उत्त (सय) उपादन करने प्ररणा दन ए वय मय हान तथा ऐश्वय व प्रकाश देने वाल तस्व(च द्रमा) अभिलायात्रा का पूण करने देवता हैं (बमव) निवास का साधन बनने आपत्तिया से अच्छात्न द्वारा रक्षा करन वल तथा अधकार को दूर करन बान तत्त्व (स्द्रा) उपन्या द्वाराज्ञान था परितास देन वाले तथा दण्ड द्वारा अपराधिया का रलाने वाल तत्त्व (आदिया) प्रदूषण तथा अतिरिक्त भागको लने वात अदिति प्रकृति के पूत्र अर्थात उसके निकट रहने वाले तत्त्व (मरुत) कम बोलकर विविध प्रकार से रोचमान हाने तथा दूसरो का रोचमान करने और अपने बत का पूण करने म मरन तथा मारने सन हिचकन बाल (विन्वेदेवा) जगत क स्रय सर्वा ५०४ गुणसम्पनतत्त्व (देवता) देवताहैँ (बहस्पति) बड लोका तथा सस्थाना के पालक तथार क्षिता (इ. द्र) किसी भी एइवय से सम्पन तत्त्व तथा (वरुण) सत पटार्थो तथा भावो को वरणं करने और कराने वाल तत्त्व दवता है

निष्कथ ---जगत के प्रत्यक पदाय म दियतायादान देन और लाभ पहुचान का सामध्य है इसलिए उसे दब या देवता कहसकत है वेट मं प्रथमत सभी नाम आन्यातज अधात यौगिक है इसलिए प्र यक नामवाची शब्द के स्थान और प्रसग की दिष्ट से अनक अथ किए जा सकते हैं। किमी भी नामवाची ग॰ को किसी एक पदाय क लिए रूढ नहीं मानना चाहिए। जगत क प्राक्त पराध में परमामा की अन्तर शक्ति काय करती है इसलिए प्रयक्त पटायवाची नाम स अस्तिम अभि धयनहाँ प्रायक मन् य इस म त्र मे वर्णिन देवताओं मंस किसी कभी गुणो को घारण करके देव या देवता बन सकता 81

विशेष इस मत्र कऋषि शब्द काअन्यस्तकरता है कि विव का प्रायक पदाथ दिव्य है अथवा वह पर म माही विश्वदेव है उसके गुणातथा उपयोगो का जानन वाला उनसे लाभ प्राप्त कर सकता है

म त्र कप्रयेक नामवाची शब्द को देवतामानाहै इससे भाऊ पर के सकेत की पूरिट हाती है कि म त्र म आया प्रत्येक नामबाची शब्द देवता के गुणो से युक्त है मत्रक छ न का श≪द य सकत करता है कि यदि तिप्दुप बन अर्थात काम ऋाध लोभ का अवराध कर शरीर मन तथा आह लादित करने वाले नत्त्व (दवता) मा मातीना की साधना कर और ज्येष्ठ समवयस्य तथा वनिष्ठ तीनो की स्तृति अधान उनके साथ यथ योग्य व्यवहार कर ताप्रयक पदाश्व से अपना भरण पोषण कर सकत है और ब्राह्मी स्थिति को प्राप्त करके ब्राह्मगुणा से युक्त हाकर कुछ भ्रशामे ब्रह्मसम बन सकत है

> अथपोषक प्रमाण-नामानि आख्या तजानि निर० ११२ तनाम यनाभि दशाति स वम । देवता देवो दानाद्वा दीप नाद्वा द्वातनाद्वा यादव सादवता निरु ६१५। अग्नि - अग्रणी भवति अग्र प्रणीयत्र ग्रयनयति स्वम्भने न वन प यति स्नहयति अ ग --- नि एति (इणगतो ग अंग्रावित कि िं वा दह भस्मी करण के दग्ध का) नि (नीज) प्रापण) वात — वा गतिगधनमा । ग वन हिंसनम सूय — व प्ररण वज प्रसर्वेश्वयय । युत्र व्यक्तियव । चाद्रमा — चिन बाह लाग्ने दाक्तीच । वसव ---वस निवासे वस आच्छान्ने विवासयति वातमा । मस्त मितस्वति अमितस्वति बहप्रकारम मितममित वा रोच ते राच यतिवास्त्रियते वानन पूरवा रुद्रा— रुत शब्दपदेश कुवति रोदयति वा अ।दिय आददति स्रादीप्यतवा अप्ति पुत्रा बा। विश्वेदेवा --- सव देवा । वहस्पति - वहता साकाना पालविता बहतो वा जगत पति रक्षितावा इ.इ.—इराअल्नदघाति धारयति ददातिया बीज त्रीह्यादि दणानि विदारयति वा इदव द्रवति गच्छनि वा इदौरमते इधानीपयति शरीर भूतदिइध्यतेप्राणवा इद करोति उपादीकराति पश्यतिवा। अस्य सवस्य शुभागुसक्मणा द्रष्टा वा। वरण बाव णाति आद्रियत वा वृञ्च वरण ।

५२२ ईश्वरभवन सारीबावडी दिल्ली ६

* दीवाली टयानन्ट की

लेखिका श्रीमती सुशीलादेवी विद्यालकृता साहित्यरत्न

एक बार महर्षि अरवि द से किसी ने ने पछा-आप दयानन्द जी को स्वामी दयान दया महर्षि दयान द श्यो नहीं कहते ? सिफ दयान द ही क्यो कहत है ? सामने की निशाम सबारश्न के लिए कहा महर्षि अरवि द ने कहा--- महर्षि तो भारत भूमि पर अनेक हुए है और स्वामी भी जहा जहा दिख्टगाचर हो जाते है पर तु भारत की भूमि पर दय न द जसा आ ज तकन कोई हुआ है न होगा। इसलिए मैं तो उहदयान-दही कहगा। वस्तुत दीन दुखियोप दया करक ही अपनिदत रहने वाल दयान द अपने आप मे एक ही थे। दीवाली की रात्रि है। ऋषिदयान द का पूण दारीर रोम रोम छालो से भरा पडा है। कोई साधारण व्यक्ति होता ता करा हते कराहत ही कमरा सिर पर उठा लेता पर तुवाहरे दयान द । उस पीडा असह्य पीडाम भी मुखपर अनिवचन य व्याभा[।] लागो न पूछा स्वामीजी अप कहा है ? उत्तर मिला- र्व्बरेन्छा म।सच मच ही दिल देता ऐसा परवरिंगार द किर व का घडी भी खशी म गुजार द

पीडाकी घडियों मंभी सबका आनंद बाटन वाला अनोस्ता ही व्यक्ति या दयान द। स्वामीजी को अपने दद का चिंता नहीं थी। चिता थी ता यह कि जाते जात भी सवरे दिला मं प्रकाश की किरण बिखेरकर जाए। ० गुरदत्त विद्यर्थी नास्तिक थे। प्रभु विश्वास के लिए भी ता प्रभ की क्या की आवश्यकता है न यमैंवय वणततनलय वहप्रभृङ्गाका घडीण गुरदत्त विद्यार्थी ने लिए आ पट्टच थी। स्व मी ी न भवता ने कहा

१ सब खिडकियादरव जस्राल दो।

२ सब लाग मेरे पीछ आ जाश्री। २ प० गुरदत्त विद्याधा को भ्रपन प० गुरुदन विद्यार्थी ऋषि दयानद के अन य भक्त थे ऋषि के साथ सक वितककत ये। पर सू उनमं प्रभ पर विष्वास बानान हो सका। महर्पि से कहते स्वामीजी। आपके तक अकाटम है पर तुक्या करू। मन म विश्वास नही जमता ऋषि कहते वह समय भी आएगा जब विश्वास जमगा ऋषि ने सचा। इस अधरे दीए का प्रकाशित करना है। ऋषि दयानंद न प्रभभक्ति क संत्र पढ। आ वि वानि दव सवितद्दितानि परासुव। यदभद्र तन आसुव। पढा को अन्त नय सुपथा राय भी पढा प्राण याम द्वारा अपन स्वास बाहर निकाल और अपनेष्यारे प्रभाकी गदम जा पहुच ईश्वर तरी इच्छा पृण हो गुरुदत्त दख रहे थिक यह कौन भी अन्दय गवित है जिसके सहारे से इस पीड़ाम भी ऋषि के चेहर पर दि॰य तज है। चमक है। मुसकान है। मानाप्यारं प्रतम से भटकरने जारह हो । जरुर कोई अनध्यामिक शक्ति है। प्रवरा छट चुका या। प्रभु विश्वास का प्रकाश सन मं व्याप्त हो गया या। यह थी दयान द की दीवाली रजनी की तमपिनत कहा जब दीपपिनत जगमग करती। नया प्रकाश की किरण पाकर रह स∓ताकालीघरता।

१६७४६ वरदान पुत्र मारहपत्ली निकद्रावाद (आध्य प्रदश)



एकताकाबल।

पजाब के महाराजा रणजीतसिंह अपनी राजवानी लाहौर मंद्रे कि उहं उनक गृप्तचरो ने सबरदी कि कबीली लूटेरो का एक दल सरहद क्सूब क पेशावर शहर म -घस गया है और उसे लूट रहा है। महाराजा रणजीतसिंह ने तुर त इलाके के सेनापित को बलाया और पूछा — जापने पशावर नगर की सुरक्षा क्यो नहीं की ? सेनापित ने क्छ सकोच से कहा— महाराज हमारे पास शहर मे क्बल १५० सनिक थ और क्बीसी लटेरो की स€या इट हजार थी फलत हम उनका मुकाबला नहीं कर सके।

महाराज रणजीतसिंह ने अपन साथ केवल ढढ सौ सिपाही लिए और वह पनाबर मे लुटेरों की भीड पर टूट पड । उन सनिकाकी वीरता और तलवाग के हमल के के सम्मूल कवीली लुटरेटिक नहीं सके वे भागत ही नजर आए। लौटकर महाराज ने सेनापति से पूछा- मरे साथ कितने सिपाही थे और क्बीली कितत सिप ही थे? सेना पति ने कहा महाराज अगपके साथ केवल डढसा सिपाही थे और कबील डढ हजार थे। महाराज ने कहा— इतने पर भी वे हार गए क्या कारण है? आपका बहादरी आरेर रौबदाब के कारण! महाराज ने कहा नहीं मेरे अकेले की बहादरी से नहीं पर सबकी मिली हुई बहादूरी के कारण । इसी एक्ता से एक एक वीर दुरमनो के सवा लाख के बराबर हो गया।

ब्रह्मचय से मृत्युपर विजय

ओ ३म ब्रह्म बर्येण नपसा देवा मृत्युमपाध्नतः।

इ हो ह ब्रह्मचयण देवेम्य स्वराभरत ।।अथव ११५ १६

ब्रह्मचय और तप से देवों ने मंग्रकादूर विया। इन्द्रन प्रह्मचय से हादेवा अन्यवादिव्य मक्ति सम्पन इदियों के लिए तेज एवं सुक्त को घारण किया।



सत्य एव न्याय का पक्षधर

पत्र के इसी अंक में बड़ीदा की आयसमाज खारीवाव मंग के एक उसाही आय कायकर्ताने बडी वेदना से एक प्रश्न उठाया है कि जिस आयसमाज की स्थापना मे बहुसम्ब्यक जनता के सहयाग के साथ मुसलमानी एवं मिस्रो का यागदान रहा काक इवाडी आयसमाज म जिला यास पथर मंचनके नाम का उल्लेख है लाहीर मे आयसमाज की स्थापना एक मुस्लिम मज्जन के घर हुई फिर क्या कारण है कि उमी आयसमाज का पाकिरतान मे पथक स्वन्त्र व बस्ति व नहीं ? उनका तथा उन जैसे विचा रिका का कथन है कि जिस प्रकार महिंच दयान द मरस्वती स य एव याय के पक्षधर क्षे वैमे उनके अनुयायी नहीं रहगए है। महर्षि दयान द सरस्वता मुस्लिम विद्य बिद्यलय गानाउ होने जहानिराकार भगवान की स्तुति की वहाउमके पैगम्बर एव समय थ की यक्तियुक्त आलाचना करने मे कभी सकाच नही किया। वियोसाफिस्ट आर्यसमान के सिद्धानों में अनुकृत थ पर तुमहर्षिन दिमा भी बड से बन मानद को स्वाकास्वाम पैगम्बर मानने से इकार कर निया। महर्षिका भारतीय या विदेशी सम्प्रदाया एवं मन मना तरों से किसी पंद्व गया अनुरागनहीं या इसके बावजून उहीने मब धर्मा के मौलिक म य मिद्धाता की एकता तथा उनके साम्प्रशयिक दूषणा की कलई खालने मे कभा मकोचनही किया। वह मन विशय के आग्रहाका उसक अच्छ और बुरेत वो काठीक से समक्त कर वेदानुकल साय अप्रकाश क समक्त न कलिए निर तर च्चवत्त रहत । इसी कारण इनकी संय एवं यायप्रियना का सभा स्वीकार करत थे।

आयसमाज नस्था और इसके मस्थापक महर्षि कास देश पिछली सवा गता॰दी से देश विदेशा म गज रहा है। इसके प्रारम्भिक जीवन मे इसके सदस्यो एव कायकर्नाओ की सयनिष्ठाएव उच्च लक्ष्यों के लिए याछावर करने की वित्त सभी सरहते थ । स्वाधीनता के सबय का प्रदन हता या प्रदर्श स्माज मन्य त कुरी तियो ब्राव्यो को दूर करने एव जनता के दुस नैय को दूर करन का जब कभी काई भी प्रदन उठनाया तब उसमे महर्षि के अनयाया आयव घु सदा आगे रहने थे प्राकृतिक सामाजिक एव राष्ट्राम विनदा आने पर ये नमठ आनव घ सदा सबदा आगे रहते थे राष्ट्रीय चारित्रिक जन जीवन कंव अग्रणा थे पर तुआंज स्थिति कुछ वैभी नहीं रह गरी। यह ठीक है कि आज मसार भर मं ५ ६ हजार से भी अधिक गिनती में आयममाज कायरत है। इन सम्बाओं के अ तगत महस्रो शिमण सस्वाए अज्ञान को दूर करने मे प्रय नशील हैं इसी तरह हरिजनाद्वार नारी समुनित क्रीतिया व निवारण म भी बडी मत्या म आयजन एव मस्थाए काय कर रही ह। इतने लख जाले के साथ यह भी उल्लेखनीय है कि अराज आयसमाजो एव आयमस्थाओं का भौतिक स्वरूप बहुत विराट हो गया है और विश्व भर मे इस विचारघाराको ब्रगीकार करने वात भी काटिकाटि आयजनो की गिनती की जासकती है पर तुस्के बायकद प्रदर्शसम्प्रदाया व समाज सफैली बुराई अन्याय एवं व भावा को दूर करन में सस्थातया उसक समथकों का पहला जजा प्रचण्ड सामृहिक उ माह देखने को नहीं मिलता ।

यही कारण है कि बाज पहल जमे शास्त्राय देखने को नहीं मिलत विश्लो मुसलमाना रैंसाइयो ज्ञा बना कि हो प्रमुक्त पर्यथा गात बुराइया एव पुनताओं की ओर ह गित कर सच्चे मानवधम का स देश गजान वाले नहीं मिलते। हमें स्मरण रखना हुगा कि महीच दयान द सरस्ती न क्यारियो एव मतवादा है परिपृण क्या कि निर्देश के आपनाम का प्रारम्भ नहीं किया था। उहीने ता भारतीय विश्वेष सभी सभ्यायों की कुरीतियो एव व्यविष्याधी भात व धारणाओं का उनुस्तन कर बान विभाग के परिपृण क्या के अवस्त्र मानव सम के प्रति वैदिक धम का स देश मुनाया था। जब बहु निरातार गयवान का सत्ववन करते थे उसका गुणानुवाद करते थे तब ईवाई मुस्तिक और शिख उनके चरणों में पहुंचते थे पर तु उनके पहुंचने पर वे उनके मतो की कुरीतियों और दुशाइयों का पर्याणाय करते में रस्ती पर स स्वत्र के विश्वेष स्वत्र में स्वत्य स्वत्र में स्वत्य में स्वत्

का विदेशी निर्माण कर गए हैं। महाँच निर्माण के बाद की तथा आयसमात्र के जीवन की दूसरी सताब्दी से पदि हम महाँच के द्वारा प्रदर्शित मात्र का अनुसरण कर दशई की दुर्शोई भीर बन्धाई को बन्धाई कहन की न्द्रता और सच्चाई का अनुसरण कर सके ता जगन वर्षों म महाँच भीर जायममात्र का म देश ऐस भना म ज्यात ह सक्या जहा वह जान दिखाई नहीं दे रहा।



त्रिभाषा सूत्र के ग्रन्तगत हिन्दी ग्रनिवाय विषय

यह जानकर वंयत प्रसानना हुई कि ि ली प्रणासन न १११० ६४ का हि दी शिक्षक सम्मनन साकी गई व पणा के बनसार नवी तथा त्यवी व स्थाओं से त्रिभाप सूत्र के जनगत हि ी का अनिवाय विषय बनान का निणय कि यो है। इस निणय क लिए दिल्ली प्रणासन व यवाल का पात्र है और के द्रायकार ने आ गह करने हैं कि वह इस निणय को गीन स्वीकार करे और यह लिली व स्वत्तां में प्याद्योग नागू किया जा मके। प्यार्व्वीत या बाल्यों क्साओं सामी विषयों का माध्यम हि रिस्ता जाना वाहिए थ्यार्व्वीत या बाल्यों क्साओं सामी प्राप्तीय माहिय के जनस्व विवत्त न रह जाल इस उहरण से बन कस्थाओं मिसी एक भारताय भाषा हा विकल अनिवाय किया जाना वाहिए।

वस्तुत हिदो का उनका उचित प्रतिष्ठित स्थान कवल तभी मिनगाब सभी उच्च शिलाको तथास्कापरापरानोको की परीलाओं मसे अग्र बाकी अनिवायना समाप्तको जाए।

> डा० इप्प्लाल प्रधान आयममाज एव स्य जक हिनी उपसमिति असमाज सरस्वती विहार टिल्ला ११००० ४

पास्कितान मे श्रायसमाज का श्रस्तित्व क्यो नहीं?

महारा त्यान त्यारस्वती के अनुवाधियों से मैं कहुरा बनाम न समय में आज समाज पर गांधीवादी एवं गोलवलकरवादी गुरा का वहस्व छाया हुझा है यि आय समाज के बस्तित पर इनकी स्वापना संलकर त्या में विभाजन नात्त के तिर तबन बनान समय तक चितन दिया जाए ता यह निष्मय निकलता है। कस सी अज्ञ से प्रवल पुरवाध करत हुए भी आयसमाज का पुषक अस्ति व बनाए रखन संप्याप्त उपेक्षा का गई है अयमा आज भी पाहिस्तान में आयसमाज अपना अस्ति व बनाए रखना एवं भारत की गांजनीति पर जोरतार प्रभाव डाल सहता था। यह एक मौलिक तथ्य है कि आयसमाज के द्वार न नव मंत्र के अने हैं। अन्य समय की युकार है कि सर्वि त्यान त्र के सन्ये अनुय यिया का आयसमाज का अपन विगद्ध स्वन्य प्र उभारकर विश्वक पी बन नक निए अपना कमर का निष्

----प्राधम द्रधीया आकारकज खारादाव माग बडादा ६०००१

क्यादव यज्ञ त्र ता युग की कल्पना है?

श्री युधिष्ठर जी मीमासक न अपनी वदिक स्वर मीमासा म पष्ठ ८७ पर लिखा है कि वेदाथ का क्षत्र आधि दैविक तथा आध्यामिक जगत है पर तुकाला तर म इनके साथ वेदाय का एक गौण क्षत्र यज्ञ भी सम्मिलित हो ग्या। मनुष्या की बुद्धि का हाल देखकर ऋषियों ने त्र तायुग के आरम्भ में अनिहोत्र त्श पौणमाम विविध श्रौत यज्ञा की कल्पना की उत्तर काल में वेटाय के वास्तविक अप लूप्त हो गए। और गौण यानिक अध्य ही प्रधान हागए मत्राकायज्ञ कम के साथ काल्पनिक गठब घन कमकाण्ड म मत्रो का जो विनियोग क्या गया वह इस प्रकार काल्पनिक है — जस र सचित्त निदशन के लिए रची गई रामायण की चौपाइया का रामलाला कंपाशा कसाथ गठब धन है। अत यज्ञों के पराथ ह ने क कारण याजिक अथ गीण के। मत्रा का याजिक अर्थ तो ऊपर मे जोडा गया है। हसका केन क माथ कोने मम्ब ध नहीं माक्षान काई सब्ध नही है स्यो कि यज्ञो का आरम्भ त्र तायुग के आरम्भ मं हुआ। अत पव भावी देन मे पुरुचात भावी यनाका विधान कैसे हासक्ता है ? अतं वेर के जिन सत्रा स यज इच्टिकन् आरदि श∘दो कानिर्देश है उनमे भी त्रतायुग कञारम्भ किए ग⊓ द्र∘य मय यज्ञाकावणन नहीं है। श्रीमान जी यदि यज्ञ कम त्र तायूग के ऋषियाकी कल्पना है तो श्री स्वामा देयान द जी ने अपने संयोध प्रकारा मस्कार विधि आर्थि पुस्तना म यज्ञकरने का विधान क्याकिया है ? और यज्ञके लाभ वेद मत्र क्यालिय हैं ? तथा आयवर शिरामणि राजमहाराज ऋषि महर्षिसव यज्ञकरते य यदि अब भी यज्ञ

— आ चाय स्वामी रामेश्वरान द गुरुकुल घाडा करनाल (हरियाणा)

—स्वामी वेदमुनि परिवाजक, अध्यक्ष —वैदिक सस्यान, नवीबाबाद, उ० प्र०

राम कृष्ण और ऋषि-मृनियो की सन्तानो । उत्तराखण्डकेसीमान्त प्रदेश गढवाल के पौडी, चमोली, उत्तर काशी कौर टिहरी जनपदो के निवासियों की अविद्याऔर निधनताका अनुचित लाभ जठाने के लिए ईमाई इन क्षेत्रों में स्कुल कालिजो तथा अस्पताला का जाल विछाने में लगे है। ईसामसीह के जन्म दिन पर तेल, भावून बनियान, कापी पन्सिली ब्यादि का भरपूर वितरण करत है। दूसरी क्यों र उस क्षत्र के सवण हि दू शेष हिन्दुओं से चोर घुणा करते है। यह स्थिति यदि अधिक चलती रहातो वहा के अविद्या-ग्रन्त दलित हिन्दू ईसाई बन जाएगे और तब इस सीमान्त प्रदेश की दशा भी नागा लैण्ड जैसी हो जाएगी।

नागन्तैण्ड जो ईसाई बहलक्षेत्र बन चका है वहा के ईसाई बने हुए नागाओ को चीन ने छापामार युद्ध का प्रशिक्षण देकर शस्त्रास्त्र दिए और अब लगभग -बीस क्य से वे लोग देश से विद्राह कर रहे हे तथा भारत सरकार व दश के लिए सिर दर्द बने हुए हैं। गढवाल जैसे सीमात प्रदेश में जो एकदम भीन की सीमा पर स्थित है यदि ईसाइयत बढती है ता चीन यहा भी शस्त्रास्त्र बाटने और उन हिन्दू से ईसाई बने लोगो को छापामार युद्ध का प्रशिक्षण देने मे नहीं चकेगा। उस समय की स्थिति की कल्पना करके भी रामाच हो आता है। इस स्थिति को उत्पन्न हाने से रोकन और दश के लिए वह दुभाग्य-पूर्णबनसर न अपने देन क लिए वदिक सस्यान नजीबाबाद ने कृतमकस्य हाकर काय प्रारम्भ कर दिया ह।

भविद्याम पड हुए दलित निधन जना म काय करने के साथ-साथ बहा क सवर्णों में भी इस बात का प्रचार करना बन्यावश्यक है कि यह दलित वर्गों के लाग खुणाके पात्र नहीं, अपितु उन्ही ऋषि-मुनियो और रामकृष्ण की सन्ताने है, जिनके आप हैं। वेभी आय थे और उनकी सन्तान होने से जाप और ये सब अवाय (हिन्दू) है। इस प्रकार के प्रचार से सवर्णों मंदलितों के प्रति घुणा की समाप्ति होगी। ऐसा होने से ईसाइयत की गति मन्द हो जाएगी और ईसाइयत से सैद। न्तिकटक्कर लेकर उसका प्रचार रोका जा सरेगा। यदि उन लागो के साथ सावणों का घृणाका व्यवहार बना रहा तो लाख प्रयत्न करके भी इसाइयत की आवादको नहीं रोका जा सक्ता। इसी कारण वैदिक सस्यान नजीवाबाद न वहा

के प्रचार के लिए माहित्य वितरण का

काय प्रारम्भ किया है।

इस समय 'हिन्दू नही बाय' पुस्तक पाच सहस्र छपवाकर वितरित कराई बिजा रही हे बीर अब वर्ण जन्म से नहीं बिजा पृण कर से 'छह सहस्र छप रही है। इसे छपवाने के लिए दान प्राप्त हो चुका है। इसके तुर-त परचात् 'आयसमाज क्या है' पुस्तक की भी जायत ५००) है। इसके बितियक महिंप दान र अणीत स्ताप्त भी गढ- साला नामक प्रच का वितरण भी गढ- बाल क्षेत्र में कराना है। ४००) संकबा स्ताच का महिंप हो। इसके बाय ही है। इसके बाय ही है। इसके बाय ही है। इसके बाय ही है। इसके बाय है। इसके बाय है। इसके बाय है। इसके बाय ही है। इस

म्रार्थो सावधान !

आर्यसमाज की यह निवसता रही है कि वह जाति बन्धन नहीं तोड सका और महर्षि दयानन्द सरस्वती के शब्दों में 'यतमान जाति भेद को समाप्त किए बिना वर्ण स्पवस्था का कम ठीक नहीं हो

हम दिन-रात वण व्यवस्था के गुण-कमांतुसार होने के पक्ष से बुजाबार साथण कर बोर लेख लिखे तथा जनमान आंक्र मेद का खरवन करें किन्तु जातिमेद को तोडन के लिए तैयार कदापि न हो ता हम ऋषिवर दशान-द के दिग्य बोर वेद के भक्त नहीं अपितु दाही प्रमाणित हो जाते हैं।

वैदिक सस्थान, नजीवाबाद ने मार्च सन, १६८३ में सेकड़ो आयसमाजो को अपने जातिभेद निवारक विभाग की नियमाबसी व विज्ञाप्ति भेजो थी, परन्तु सेद यह है किसी एक मी आयसमाज का इस कार्य में सहयोग प्राप्त नहीं हुआ हो सो हो बात नहीं, अपितु प्रतिक्या भी उपनब्ध नहीं हुई।

सस्थान ने अपनी दिक्कप्ति समावों को इसलिए अंत्री थीं कि बायसमावें अपने अपने श्रेन से एक एक, दो.दा सदस्य भी सस्थान के वातिभेद निवारक विभाग के लिए बना देशी तो सहस्रो न सही, संकड़ी सदस्य तो बन हो जाएंगे को र इस प्रकार जातिभेद निवारण की जोर हमारा यह एक पग होगा।

व्यवस्था यह बनाई गई है कि जो व्यक्ति अपनी सन्तानों के विवाह जाति-बन्धन तोडकर करना चाहे, वे सदस्य बने तथा ऐसे व्यक्ति जिनके सम्मुख बच्चो के विवाह का प्रदन शेष न हो, इस कार्य मे सहायतार्थं सदस्य बने । सदस्यता श्रुत्क १०० रपए बार्षिक अथवा १० ६पए मासिक रखा गया है। साथ ही यह सूचना भी दी गई थी कि कम से कम २५० रुपए एक बार देकर वैदिक सस्वान के आजी-वन सदस्य बनने वाले सञ्जन जातिभेद निवारक विभाग के सरक्षक माने जाए गे। यदि कुछ समाजे ऐसी हो, जो जातिभेद सोडकर अपनी सन्तानों के विवाह कर सकने का साहस करने वाले तथा वन द्वारा इस काय को प्रोत्साहन देने वाले सदस्य भी न दे सके तो कम से कम २४० रुपए भेज कर वे समाजें स्वय तो सदस्य बन सकती थी, किन्तु ऐसा किसी एक भी समाज न नहीं किया।

आयंजन स्वय मी सोचे बीर अपनी समाज के साप्ताहिक बीर अन्तरण अधि-वेशान से भी इस प्रस्त पर विचार करें कि बताना परिस्थितियों में, जब इस्लाम और ईसाइयत हुने हुब्पने की पूरी शवित के साथ जुटे हुए है बिना इस प्रकार के ठीस पत्र उठाए क्या साप्ताहिक और वार्षिक अधिवता और उनमें होने वाले युवाचार माथण हुने बचा सकेंगे?

जब कही से भी कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं हुई तब मन को बड़ी ठेस लगी। हमारे जीवन में कोई वैदिक बाधार नहीं, हम बेदों का स्वाध्याय करते नहीं। वैदिक सस्कार और अग्रय प्रव- पद्धति के अनुसार पर्व हमने अपनाए नहीं तथा जातिभेद तोड कर हम-सतानों के विवाह करने को तैयार नहीं तो इञ्चन्ता विक्वमार्थम्' के भोष लगाने मात्र से क्या होगा ?

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने लिखा है कि "बौका लगाते-सगाते राज्य पाट. धन-षाम सब पर तो चौका लगा दिया और कही जाकर बस भी करोगे।" सोचना पडता है कि यदि गुरुवर आज होते और हमारी इस शोचनीय पीडादायक स्थिति को देखते तो कह उठते कि स्वाहा-स्वाहा करते करते सम्यता, संस्कृति, आधार-व्यवहार सब कुछ तो स्वाहा कर बैठे और कही जाकर बस भी करोगे। 'क्या बाय जन इस दिशा में विचार करने की तैयार हैं ? यदि हा तो दृढ़ निश्चय के साथ आगे बढिए, आपका स्वागत है। यदि नहीं, तो परिणाम भोगने और इतिहास के पृथ्ठो पर यह सकित कराने को तैयार रहिए कि विषदाता जगन्नाय ने तो महिष दया-नन्द के नश्वर शरीर की हत्याकी थी. उनके बास्तविक हत्यारे तो उनके मिश्रन की हत्या करने वाले उनके शिष्य ही हैं, जो घोष तो 'महर्षि दयानन्द की जय, वैदिक वम की जय और आर्यसमाज असर रहें के लगाते रहे किन्तु आचरण द्वारा यह सिद्ध करते रहे कि बास्तव में हम न तो महर्षि दयानन्द के शिष्य हैं न वेदभक्त और न बायसमाजी ही हैं।

श्रद्धा-निष्ठा से आर्थ स्त्री समाज का उत्सव सम्पन्त

१२-१०-६४ शुक्रवार हनुमान रोड, आर्थ स्त्री समाज का वाधिकोत्सव मान्या वहिन डैक्वरदेवी जी की बध्यक्षता में हर्वोत्सास से सम्मन हुआ। यज्ञ, स्तुति प्रार्थन वहिन कृष्णा जी वडेरा से मौजन्य से विधिवत-बडी अद्धा निष्ठा से हुई।

श्री कृष्ण रसवन्त की प्रेरणा से पहाडमज की बहिनों ने अजनो से समाहो बाघ दिया। रघुमल स्कल की छात्राओं ने रगारण कायकम प्रस्तुन किया। वाणी की महत्ता' विशेष प्रेरणादायक और प्रभावकाली रही। अध्यापकों ने भी अजन सुनाए।

वार्यं कन्या गुरुकुल राजेन्द्र नगर की छात्राओं ने वद पाठ किया। कु० क्रांति ने आवार्यं देवोभवं विषय पर प्रभावशाली व्यास्थान दिया। बहुनी न भावविभीर होकर गुरुकुल की कन्याओं को पुरस्कार तवा माधुवाद दिया।

श्रीमती कृष्णा महेन्द्र की कविताए हृदयग्राही रही।

दिस्सी की प्रमुख स्त्री समाबो की प्रतिनिधि बहिनो ने बहुत योगदान किया। विवेचकर, मदिर मान, करोजवाय और राजारी गावन, दीवानहाल इत्यादि ने । अवनो बोर कविताओं की होड-सी बगी रही। प्रतपुत्र प्रमान स्नाति अधिक ने अपनी विदेश यात्रा के सम्मरण सुनाए।

श्री जया शास्त्री और श्री० डा० शिषाप्रमा के श्रास्थान सत्रमुख करने वाले ये। विदुषी बहिनो का स्वागत भी वैदिक-साहित्य से किया गया। डा० चन्द्रप्रमा तथा प्रकाश शास्त्री की कविताए सनमोहक रही।

— प्रकाश सार्था सत्रिणी

थी सत्यदेव स्नातक द्वारा बेद प्रचार

सायसम् ज आनन्दिस्हार हरिनगर एस स्लाक से १५ जनतुबर से २१ जनतुबर तक प्राठ ६-२० से दबने तक सी सत्यदेव स्नातक न शकका समामन एव नेदोपरेश किया। प्रतिदिन रात्रिको दसे १० तक बोर वीरागनाओं के परित्रोका आस्थान प्रस्तुत किया।

यात्रा-पर्यटन : वैदिक परम्परा में

ऐतरेय बाह्मण की एक कथा के बन-सार जब राजा हरिषचन्द्र का पुत्र उत्पन्न हुआ और कुछ बड़ा हो गया तब वह वन मे पर्यटन के लिए निकल पडा। जब उस उसकी बापस लौटने की इच्छा होती थी, त्री-तब इन्द्र उसे कहते थे - पर्यटन करते रहो, पर्यंटन करते रहो, 'बरँबंति वरैं-वैति'। पयटन का माहात्म्य बताते हुए वहा कहा है कि जो विचरण करता है उसे ही मधुमिसताहै--चरम् वै मधु विन्दति'। दृष्टान्त सूर्यं का दिया गया है कि देखी, सुर्यं प्राची मे उदय होकर गगन मे यात्रा करता हुआ प्रतीची मे पहुच जाता है भौर फिर प्रतीची से प्राची मे, यह यात्रा करता हुआ यकता नहीं है।

सूर्य के समान ही वेदों के अन्य प्रधान देव भी यात्री हैं। उनके वाहनो का भी अनालकारिक वणन मिलता है। इन्द्र के बाहन 'हरि' हैं, अग्नि के रोहित', अदिन्य के 'हरित' अधिवयुगल के 'रासभ' पूषादेव के बज', मस्तो की 'पुषतिया', उषा की 'बरुणवर्णा गौए', सविता के 'स्याव', बृह-स्पति के 'विश्वरूप' और वायु के नियुत'। वेदो मे पसटन के साधन मनुष्य के अपने पैर, अध्व, रथ, जलयान, आकाशयान, 💂 धनियान, विद्युतयान बादि वर्णित हुए है। ऋरवेद मे 'भुज्यु' की समुद्र यात्रा के प्रसग मे उसके जलीय यान के टूट जाने तथा अध्वयुगल द्वारा उमे समुद्र में हुबने से बचाकर यानो द्वारा सकुशल यथास्यान पहचादिए जाने का दणन मिलता है। 'भज्य' समृद्र पार से भोग्य पदार्थी को आयात-निर्यात करने वाला व्यापारी है।

किसीकाल में घामिक दृष्टि से भारत में समुद्र यात्रा निषिद्ध ठहरा दी गई थी, परन्तु वेदो मे समुद्रयात्रा के कई प्रसग बाते हैं। बहिबयुगल द्वारा मुज्यु' के समुद्र उद्धार का वर्णन बेलिए---

तिस्र सारित्र रहातिय बद्भि नासत्य भुज्युम् ऊह्यु पतङ्गे । समुद्रस्य धन्दन्नाद्रस्य पारे **ँ त्रिभी रयै शतपदिभि षडस्बै।।** ₹ १ ११६ ¥

यहासमुद्रयात्री 'भुज्यु' को डूबने से बबाने की अधिवागन की कार्यकृतलता वर्णित की गई है। जो तीन दिन और तीन रात्रि लगातार चलते हैं ऐसे यानो मे चढाकर अध्वि युगल भुज्युको उसके पिता के पास लाते है। इस काय मे तीन प्रकार के रथी का प्रयोग करते हैं --- जलयान, स्वसयान और बाकाशयान । उन रवो मे सैकडों कला यन्त्र लगे होते हैं और अग्नि, बायु बादि छह अस्व जुते होते हैं।

ऋग्वेद मे कहा है कि इन्द्रदेव सुम उद्देश्य से प्यटन करने वाल प्रत्येक यात्री के रचकी रक्षाकरत हैं - त्व त्यमिटतो रयमिन्द्र प्राव सुतावत (ऋग् १०१७१ १)। वेद के अनुसार पैदल पर्यटन का भी महस्व है। अथवबेद मे पैदल चलने या दौडने की क्षमता को बाछनीय बताते हुए लिखा है कि-हे पुरुष, यदि तू घोडे जैसी तेज वाल से तीन या पाच योजन दौड सकता हो और उसी चाल से फिर लौट सकता हो, तभी तुम्हे पुत्रो का पिता बनने का अधिकार है-

> यद घावसि त्रियोजन. पञ्चयोजनमाधिवनम् । ततस्त्व पुनरायसि, पुत्राणानो बस पिता।। वयव ६ १३१ ३

-- डा॰ रामनाय वेदालकार

वैदिक साहित्य मे यात्राए कई प्रकार की पाई जाती हैं, यथा विजय-यात्रा, श्रैक्षणिक यात्रा, व्यापार यात्रा, सास्क्र-तिक यात्रा। राजा लोग चक्रवर्ती सम्राट बनने के लिए अस्वमेध यज्ञ करते थे. जिस मे घोडे को साथ लेकर मैनिक सवत्र पर्य-टन करतेथे। जो घोडे का पकडने का साहस करता था, उसके साथ युद्ध होता याऔर उसे पराजित कर अपने अवीन कर लिया जाता था। यह एक प्रकार की विजय-यात्रा होती थी।

छान्दोग्य उपनिषद् मे सत्यकाम जाबाल को उसके भावार्य चारसी गाए सौप कर कहते है कि इन्ह ले जाओ, इनके साम साम परिश्रमण करते रही जहा ये जाए, जाने दो। जब चार सौकी हजार हो जाए तब लौट कर आना। सत्यकाम पयटन करता रहता है और इमी काल मे प्रकृति-निरीक्षण करते-करते ऋषम, अग्नि. हस और एक जलवर पक्षी मद्गुकेस्व-भाव बादि को देखते-देखते उसे कमश बह्य के एक एक पाद का ज्ञान होकर चतु-ष्याद ब्रह्म का साक्षात्कार हो जाता है। यह सत्यकाम का शैक्षणिक पयटन है।

छान्दोग्य उपनिषद में ही बादणि का पुत्र इक्तकेतु पयटन करता-करता पचाल देश के क्षत्रियों की सभामें जा पहुचता है। राजा प्रवाहण जैवलि उससे पाच प्रवन पुछते हैं। एक काभी उत्तर उससे नही बनता । तब ज्ञानचर्चा होती है और पाची रहस्यात्मक प्रदनो का उत्तर उसे मिल जाता है। इसी प्रसग मे प्राचीन शाल, सत्वयज्ञ, इद्रश्रुम्न, जन और बुडिल नामक पाच व्यक्ति विभिन्न स्थानी से र्वेक्षणिक शिविर के लिए एकत्र होते हैं

और 'बात्मा कौन है बहा क्या है ?' इन विषयो पर सेमिनार लगता है।

बृहदारष्यक उपनिषद में जनक के यज्ञ में कुरु देश और पचाल देश के सभी प्रमुख बाह्मण आकर एकत्र होते है। जनक की यह जिज्ञासा होती है कि इनमे सबसे वडा विद्वान कीन है। वह एक हजार गाए इकट्ठी कर प्रत्येक के दोनो सीगो पर दस-दस स्वर्ण-मुद्राए बाबकर ब्राह्मणो को सम्बोधिन कर कहता है कि आपमे जो सबसे बहा ब्रह्मवित हो वह इन गायो को हाक ले जाए। किसी को साइस करते न देख याज्ञवल्यय अपने शिष्य सामश्रवा को कहते हैं कि इन गायो को हाक कर ले चलो। याज्ञवल्क्य का दूस्साहस समभकर सब कृपित हो जाते हैं और उसके ज्ञान की परीक्षाले ने के लिए उससे एक एक करके प्रष्ट्रपुछते हैं। यह भी एक अच्छा शिक्षण-शिविर हो गया है, जिसमे बनेक रहस्य-मय प्रश्न सामने बाते है और याज्ञवल्क्य उन सबका सही उत्तर देते चलने है। इस प्रकार के शिक्षण-शिविर उपनिषद् काल मे प्राय लगते रहते थे।

छान्दोग्य मे एक पयहक उपस्ति चाकायण की कथा मिलती है, जो भपनी पत्नी के साथ हस्तिपालों के एक ग्राम मे जापहुचाथा। वहाउसे भिक्षा मे एक हाबीवान से भठें कुड़य ही खाने को मिल पाए। उन्हीं से उसने क्षुषा शान्त की। अगले दिन उसे पता चला कि कोई राजा

यज्ञ कर रहा है। वह वही जा पहचा और यज्ञ के पुरोहिती को चैलेंत्र दे बैठा कि यदि तुम अपने अपने काय के देवता को बिनाजाने यज्ञ-काय करा रहेही ती तुम्हारा मूर्घा गिर जाएगा। झन्त मे उस का पाण्डित्य देखकर राजा ने उसी को मुक्य पुरोहित के रूप मे वर लिया। इस प्रकार उपनिषदों में कोई विद्वान् यत्र-तत्र अपनी विद्वता का सिक्का जमाने के लिए भी पयटन करते दिखाई देते है।

व्यापार यात्राए भी होती हैं। इस प्रसग मे मुज्यू की समुद्र यात्रा का उल्लख पूर्वकियाजा चुकाहै। अध्यववेद के बाजिज्य सुक्त में द्यावा पृथिवी के मध्य मे विद्यमान बाकाश मार्गो द्वारा वणन है-

ये पन्यानी बहवी देवयाना अन्तरा खावापृथिकी संवरन्ति। ते मा जुबन्ता पयसा घतेन यथा कीत्वा धनमाहराणि।।

अथव ३१५२

अपनी सस्कृति के प्रचार के निमित्त सास्कृतिक यात्राओं का सकेत भी वेदों मे मिलता है। इन यात्राओं द्वारा हम अपनी सस्कृतिको विद्वमे फैलासकत हे— सासस्कृति प्रथमा विश्ववारा(यजु० ७ १४)। प्राचीन आर्य लोग इस वैदिक सन्देश का अनुसरण करके अमेरिका, चीन, जावा, सुमात्रा बादि मे अपनी सस्कृति का प्रचार करते रहे हैं। विभिन्न देशो की चित्रकला, मूर्ति, प्राचीन सिक्को बादि से ये तथ्य प्रमाणित होते है।

१।११६ फूलबाग पन्तनगर (नैनीताल)

enikxxxxxxx xxxxxeexxxxxx

एक की महत्ता

ले॰ स्वामी स्वरूपानन्द, ग्रविष्ठाता वेदप्रचार वि , दि आ प्र सभा

💓 एक बोदेम को घ्याइए, सकल प्रपञ्च विसार। सर्वोत्तम प्रिय नाम यह, मुमरो बारम्बार।।

किलाडी, एक गेंद से खेल।

एक नदर की चूक से, हो जात है फोला। 💢 देक्को गाडी रेल मे, डिब्वे रहे अनेक।

ले जाता है सीचकर, सबको इजन एक।।

आकाश मे, देना है प्रकाश। 🕱 एक सूय एक सत्य के वचन का, करे सभी विश्वास।।

🕰 एक ही मला सपून है, कुल की राखे लाज।

एक ही खुद्ध विचार से,सफल होयसब काज।। चन्द्र से, जिले चादनी रात।

एक दूल्हा के साथ मे, शोभा देय बारात।।

🎉 एक अपनेले ने वेदो का प्रचार। दयानन्द ऋषिराज को, जाने सब ससार।।

🌉 जाना सबको एक दिन, छोड जगत जजाल। सबकेसिर मडरा रहा, एक काल विकराला।।

💓 एक व्रत भारण करो, रही स्वस्य सानन्द।

ईश की शरण गह, पाओ परमानन्द।।



चण्डोगढ़ का प्रश्न अबोहर-फाजिल्का से जुड़ा

प्रधानमन्त्री का कथन चण्डीगढ़ पजाब का ही है, ऋर्द्ध-सत्य है-प्री० श्रेरसिंह

समाचार पत्नो में प्रकाशित प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के उस वक्तव्य पर जिसमें उन्होंने कहा है कि 'वच्छीगढ तो प्रजाब का ही है' पर जपनी प्रतिक्रिया करते हुए इरवाणा रक्षा वाहिनों के कथक स्त्रों ये रिस्तृ ने प्रधानमन्त्री के कथन को अव्यं मन्य कहा है। उन्होंने स्माण करवाया है कि प्रधानमन्त्री ने वच्छीगढ के बर्च के ज्वाहें के स्वर्ध के अवहें जे अवहें प्रभाव कि प्रधान के व्यक्ति अवहें एक प्रिक्त इरवाणा को देने का एवाड दिया था। अत वच्छीगढ प्रधान की दिया जाता है ना अवहें इरवाणा को देने का एवाड दिया था। अत वच्छीगढ प्रधान की दिया जाता है ना अवहें इरवाणा के प्रसान क्षत्री के कला किया पर कुरवाणा के शाम का स्त्रों ने सामकर हरवाणा के शामित करने के निर्माण यो शामित करने के निर्माण यो परने प्रधानमन्त्री ने अवहाणी नेता सन्त करही को जात बचाने के लिए ही वाह कमीयन के निष्यं को बदलकर चण्डीगढ प्रधान की वाल अवहरूर-काजिक्का हरवाणा को देने का एवाड दिया था।

प्रो० शेरसिंह ने अपने वस्तव्य में प्रधानमन्त्री को सुफाव दिया है कि चण्डीयड पत्राव को देने से पूर्व अवीहर फाजिल्का हरयाणा को सौंपा जाए। अन्यथा हरयाणा की जनता इस जन्याय को सहन नहीं करेगी।

बालावास मे शराव का ठेका वन्द होने पर स्रार्थ विजय-महोत्सव

आर्थनमाज के कार्यकर्ताओं की ओर से प्राम बालावास जिला हिसार में १४ अप्रेल से कराज के ठेके पर घरना आरम्भ किया गया था। यह घरना निरत्तर ६ मास नक जारी रहा ओर घरना स्वत्त पर प्रतिदिन यह, सस्स्य तथा स्वाव के विरुद्ध प्रचार किया गया। इस प्रकार स्वाव के विश्व प्रचार किया गया। इस प्रकार स्वाव के विश्व हुए में प्रकार किया गया। इस प्रकार स्वाव के विश्व हुए प्रकार का एक प्रथम त्याहरण है।

अन्तत जनवास्ति के सामने घरा के ठेकेदार तथा सरकार ने व अक्तूबर को इन प्रान का ठेका बन्द कर दिया। इसी उपलब्ध में बालावास में १४ अक्तूबर को आध दिख्य महोत्सव सूमचाम से मनाया गया। इस अक्तूबर एक साम कि अक्तूबर के आप हिजय महोत्सव सूमचाम से मनाया गया। इस अक्तूबर पर हासी, लाइवा, कावारी, मुखादपुर, उपरां, सुलतान, प्रान्तवा, दुमेठा को भी, मुक्तान, प्रीरणवाम, आयंनगर, वौराला, मानवान, तौवाम, साहपुर, सामा, हिमार दिल्ली, राहतक, भिवानी, मिवानी, लानक आदि स्थानी से मारी सक्या में नरनारी उपस्थित हुए।

ग्रार्यममाज निर्माण विहार नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव

आसममाज निर्माण किहार (यमुना पार) नई दिस्सी का चतुर्व वाधिकोस्तव १० जन्मुबर के २१ बन्तुबर, १६८४ तक केन्द्रस पाक निर्माण विहार में बडे समारोह पुत्रक मनाया गया। १८ से २० जन्मुबर तक प्रात यजुर्वर महायह हुआ। विसके बह्या ५० विश्वचामित्र मेघावी, कुल्पति गुरुकुल महाविद्यासय सिरायू (इसाहाबाद) थे। राजि को श्री मेघावी जो के प्रमाववाली यचन होते रहे।

्र अक्तूबर को प्रात १० बने यह की पूर्णहृति हुई जिसमे श्री विद्याप्रकास केडी, श्री मृत्यदेव, प्रवान दिस्सी आपप्रतिनिधि समा, श्री कुन्दनलाल माटिया, सनातन वर्ष मसा (प्रीति विद्यार वाले) ने भाग लिया। १० बने से १ बने तक राष्ट्रीय एकता स्थमेनत ता रासनोपाल सालवाले, प्रवान सार्विधिक समा की अध्यक्ता में बड़ी सक्त-लायुक्क सम्पन्त हुआ जिममे श्री रामचन्द्र विकल सदस्य राज्यसमा, जामाय हरिदेव व प । बस्ताम में सार्वा व अन्य दिवानों ने अपने दिचार रखे। अन्त में श्री विद्या-प्रकास केठी के कर कमलो द्वारा सरवार्यक्रास करी के जर कमलो द्वारा सरवार्यक्रास वरीकाओं में उत्तीण बच्चों को प्रमाण-प्रवास करी के अप कमलो द्वारा सरवार्यक्रास वरीकाओं में उत्तीण बच्चों को प्रमाण-

आर्यसमाज विनय नगर वाई ब्लाक सरोजिनी नगर नई दिल्ली के तत्वावधान मे वेद प्रवचन

सुरोजिनी मार्किट पार्क (पताब नेशनला बंक के सामने) सोमबार ५ नवस्बर १९८४ से १० नवस्बर १९८४ तक रात्रि ७ ३० से १ बजे तक बाजामं पृथ्योत्तम जी बेदलवा किया करेंगे। श्री सरवदेव स्नातक (रेडियो सिगर) के मनोबर मजन होगे।

नवयुवको को प्रोत्साहन दीजिए

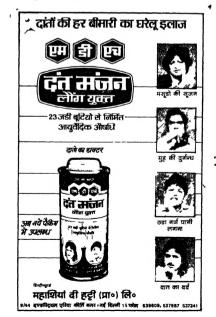
—पुष्पकर लाल बाय १०७ हाऊसिंग वोई कालानी, मिवानी (हरियाणा)

प्रार्थयुवक महासम्मेलन ११ नवम्बर को होगा

वार्यसमाज (बेनारकती) मन्दिर माम में ६० वे वार्षिकासव पर ११ नव-म्बर को दोगहर र कमें से ५ बने तक बायपुतक परिषड् के उत्तावधान में आयपुतक महासम्मेलन किया वाएगा। सम्मेलन के बच्यल भी धार्यनरेग होगे और स्वचाराहुण दिल्ली बाय प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री विधारकाश सेठी करेंगे। सम्मेलन का उपाटन दिल्ली बाय प्रतिनिधि सभा के महामभी डा॰ धर्मपाल घाय करेंगे। मुख्य बितिध सायसमाज परिचम बिहार के प्रधान श्री हीरालाल चावना होगे। प्रो॰ सारस्वत मोहन महीयी डी ए बी कालेज बबोहर, प्रो॰ वेदसुमन वेदानवार डी ए बी कालेज करनाल खादि के प्राथण होगे बीर आयदुवक सासन, रण्ड बैठक, लाठी तसवार, जुडी-कराटे वालिया के प्रदान करेंगे।

ग्रार्यसमाज गोविन्दपुरी का वार्षिकोत्सव

आर्थिसात्र गावि यपुरी (कालका जी) नई दिल्ली-१६ का ११ बा वाविकोत्सव २ १ ते २ कल्कृबर तक समाजा गया। उठाई स्वाभी दीक्षानर जी की सर-स्वती के बहात्व में यह हुता। रावि का स्वामी दीक्षानर जी के क्या हुई। २६ बन्तुबर के दिन बास सहिता सम्मेलन किया गया। २६ बक्तुबर को बायं सम्मेलन मे स्वाभी दीक्षानर-वी शब्द खिल्कुमार खास्त्री के आपण हुए। ऋषि स्वत्र श्राय स्त्री समाज के सहस्रोध से क्या गया।



गुरुकुल शुक्रताल का वार्षिकोत्सव

वदप्रचाराथ बसो की विशेष व्यवस्था

वैदिक योग श्रम गुरुकुल खुकनाल का बीनवा नाषिकात्मव १ से ८ नवम्बर तक हो रह है। इस अवनर परम सबन पारायण महायक भी हा रहा। तिसकी पूर्ण कृति ८ नवस्वर को होगी ५ नवम्बर को योग राघना शिविर आधाजित होगा। उत्सव पर बहागो योगासन आधामा ल ठी सरिया मादना जजीर तोकने काच पुमन आदि के कायक्रम प्रदर्शित करने।

उत्सव का जायोजन कार्तिक पूर्णिमा क अवसर पर किया जा रहा है जब गगा स्वान के लिए लाखा नर नारी गया उट पर बसे शकराल आता है। आवसमा का स देश प्रचारित करने के लिए यह जन्छा अवसर है दि ती जाय प्रतिनिध्य समा की आर से गुरुकुल जाने के लिए विधेय न्यस्ता की गाई है। जनवनर का प्रात अब जायोग अवस्ता की तार से गुरुकुल जाने के लिए विधेय न्यस्ता की गाई है। जनवनर का प्रात अब जायोग । असि त्यस्ता की साथ से प्रकार होगी। कार दिल्ली साथ ५ वजे पहुंची वस से अधिक सवारिया होने पर उहे रास्व शिवा का स्वाज की स्वाज जाएगा। प्रति ज्यस्ति क्षी का कराया २२) है निवास जोर मोजन की ज्यस्ता मुक्कुल को जोर से की गाई है यह पुरुकुल दि ली से न ० मील हुर पुज्यकर नगर के पास है जो सन्त्रन वानी काण सजाना चाह जा सकते है। इस अवसर पर लिली आय प्रतिनिध समा को जोर से उपरोक्त प्रवास जीर ज्यार वाहन ने अबे की ज्यस्ता हो से ही सी हो का जारकण दिल्ली जय प्रतिनिधि समा कार्यालय (३१०१४० फोन) या आयनमात्र करोलवाग ५६०४५० पर नवस्वर तक करवा सकते हैं। अस अवसर के स्थायक जी रामला प्रतिक है। वस अवसर के स्थायक करोलवाग प्रकार है। वस वस्त्र के स्थायक करानवाग मिलक है।

मस्जिद मोठ क्षेत्र मे ग्राम प्रचार

मस्त्रिद म ठलाज से जिन्नी आय प्रतिनिधित सभा और दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सण्डल के सम्बन्ध तत्त्वावचान म दि० २०१० स्त्र चौचरी मदसेन पटवारी की अध्यक्षता से प्राम प्रचार कय सम्बन्ध हुआ भी वैष्वरचद सगरत इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे। सभा के अजनीपन्याक भी चुनीसाल और भी वेदव्यात जी ने सुदर उप देश किया। सभा की प्रचार वाहृन भी वहा पर गई जिनमे कसेट और साज्यस्पीकर आदि लगा है।

स्मरण रखें कि विसम्बर के ब्रान्तिम सप्ताह में विल्ली ब्राय प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में क त्रीय महींव निर्वाण शनाब्दी मनाई जाएगी। ब्रयना सक्त्य सहयोग वें।

सोवान मे शुद्धि सस्कार

हिंदू बस से बिछडकर मस्तिम मन्प्रदाय म गए हुए प्राप्त तुलसीपुर पो० पचकडबा जिला फेजाबाद निवासी दा राजपूत महानुसाबा का उनकी इच्छा नुसार सीवान बायसमान प्राप्त में बास सस्दयो एवं बस प्रतिथित सन्तानों की उपस्थित में ता है दि ४८ भी सुद्धकर पून विश्व बस में सम्मित्तत

कियागयातथा उक्त खुद्ध किए गए शाबीर हसनक्षाकाश्री शकपालसिंह सथा मुहम्मद मुस्लिमक्षाका शिवपालसिंह नामकरण कियागया।

सीवान आयसमाज प्रागण मे ता० २२२ और २४ सितम्बर ८४ को वेद कथा एवं वेद प्रचारकाय सम्पन हुआ।

करनाल में श्री देवीदास ग्राय का ग्रीमनन्दन

करनाल बाय प्रादेशिक प्रतिनिधि समा हरियाणा के तत्वावधान में बायों जित महीस दयान व सिवारा जवाली समारोह के बनकर में विक्यात महिला उद्धारक बायसमाजी नेता भी देवीगात बाय (कानपुर) का नागरिक कमिन दन किया वारा। विमानन पत्न में हारार्थ पतित क याजी व महिलाबों को गुण्यों से मुक्त कराने विकारियों को हिंदू धम सामिल करने तथा बन्य समाज मुखार

इहामिल करने तथा अन्य समाज धुनार के कार्यों की पूरिभूरि प्रश्नसा की गई।

शत शत प्रणाम :-

(शरर एम ए)

बातुङ्ग हिमालयशङ्ग तुल्य उज्ज्वन महान

गम्भीर पर पावन चरित्र गगा समान । ओ बहाचय साकार न्यि जीवन अनग पासण्ड दम्झ के लिए उम्र विदाह रूप को दया आहिंसा संग्रंग योग के यम कार—आग अवला दीन सनाग दलित के ची कार

को पयोदिष से शात विजलिया से विह्नस

अरो प्रसार तेज मे सूय चद्रमा से फीतल

निर्मीक तपस्वि परिवट कीप न धारि— अवाय ऋषिवर दय नन्द ओ व्ह्यचिर अयो जगहित निज्ञीवन अधिन अपन वात

विष पी पी कर भी पीडा हरने वाले

ओ तेजस्वि आ कातदर्शी आ स यकाम

युगपुरुष हमारायुग युगतक तुभकाप्रणाम ।

स्वराज्य मन्त्र के उदगाता महर्षि दयान द

४ नवस्बर रिवेव र रात्रि = १५ पर आ माने व भी न दिलाए कड़ साप्रा० अयदेव आराय की एक व नी प्रश्त रित होगा जिसका विषय है— स्वराय मंत्र क प्रथम उदगाता—महर्षि दयान दे।

वैदिक कैसेट

प्रसिद्ध फिल्मी गायक **महेन्द्र कपूर** द्वारा मर्हाप दयानन्द की अमर कहानी

सन्ध्या-यज्ञ शान्तिप्रकरण स्वस्तिवाचन आदि प्रसिद्ध भजनोपदेशको-

सत्यपाल पियक ओमप्रकाश वर्मा पन्नालाल पीयव सोहनलाल पिथक शिवराजवती जी क सर्वोत्तम भजना व केमरम तथा प बढादेव विद्यालकार के भजनो का सग्रह ।

आय समाज के अन्य भी बन्त से कैसेटस के सचीपत्र के लिए लिख कस्त्रोकोंन इतैक्टोनिक्स (इण्डिबा) फ्रांनि 14 मस्टिट 11 ऐसे 11 अशार्फ बिहार दहली 5

कान 118326 744170 टेलेक्स 31-46 3 AKC IN

— प्राप्ति स्थान —

यह कैसेट हिन्सी बाय प्रतिनिधि सभा

े तरक वस में तांकाता १४ हन्मान रोह नई बिल्ली पर भी मिलते हैं। असमा का एक मात्र विश्वास



🖁 पैरिस ब्य

पैरिस ब्यूटी सेल्स कार्पारेशन

2665 ए/2 बीहन पुरा अजमल रनारोह करोल बाग नई दिल्ली १९०००५ ६ दूरभाष 569224 574200 582036

नागालंड मे वेड प्रचार काय अस

दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा के अवनीपरेशक श्री देद यास बाय ने द अक्तूबर म २० अक्तूबर तक भारत के पूर्वोत्तर अ चल मे अवस्थित नागालड की यात्रा की। इस यात्रा म स्वामी दीक्षान द जी सरस्वती श्री पच्चीराज सास्त्री काषाच्यल श्री देदप्रकाश मेहता और श्री तनेजा भी गए थे।

दीमापुर में १२ जनतुबर से १८ मक्तूबर तक दयानन्द सेवाश्रम के विद्यालय में स्वामी दीलान द जी ने महायज्ञ कराया रात्रि को वेदीपदेश एव सबनोपदेश का आक एक कायकम हुजा जिसमें स्वानीय जनता ने उत्साह से माग लिया। एक विद्याप कायकम म १५ जनतुबर के दिन सावदेशिक समा के प्रचान श्री रामगोपाल खालवाने तथा सम म नी श्री आन्त्रकास त्यामी ने जनता का उदबोधन किया।

दशहरा पर्व ग्रीर रावण वध-

वायस वेष के वक्तूबर के सक में श्री कृष्णवत्त का लेख राम आदरणीम ही नहीं वनुकरणीय भी हैं पढ़ा। त्यक्षक की मावनाओं से सहमत होना वायव्यक है कितु गितहां विक तथ्य यह है कि राम ने रावण का वध बादियन में नहीं विरातु चैन में किया या जमा कि वात्मीकि रामायण से विदित होता है। बस्तुत यह पव विजववत्वामी का है जो लाज्यम में स्वीकृत विजय याजाओं तथा अरुत करने के प्रवत्तन ने साम्बद्ध है। इस्त विवयम में स्वीकृत विजय याजाओं तथा अरुत करने में प्रवत्तन ने साम्बद्ध है। इस विवयम में स्वीकृत वातारों के लिए महात्मा वसर स्वामी रचित पुस्तक क्या रावण विजयदश्यी का मारा गया था? पढ़ने की सस्तुति करता हु।

डा॰ भवानीलाल भारतीय चण्डीगढ

मस्जिद मोठ मे ग्राम प्रचार कायकम

० अक्तूबर को ॥ से ६ वजे तक चौघरी भद्रकेन परवारी को अध्यक्षता से निगण नि सी वेन प्रचर सण्डल के त बावधान म महिला सण्नल आय जनरल स्टोर मस्त्रिन माठ के समाप प्राम प्रचार कायकम हुआ। इसमे मगाताचाय श्री चुनीलाल और मगीताचाय वेन्ध्यास क प्रचन हुए।



बाय के द्वीय समा दिल्ली द्वारा आयोजित १०१व महर्षि निर्वाण उत्सव पर रामलीका मैदानों सायोजित विवाल समा को सम्बोधित करती हुए के द्वीय स्वास्थ्य उपमित्रणी मुपी कुपुर केन जोशी। मच पर सावर्गिक समा के प्रमान लाला रामनापाल साववाले स्वामी विवान सरस्वती डा०वनपाल महावल महापाल श्री सुपवेद और जन्म जन्म उत्तर समा के सुपवेद आर पर मायण देते हुए श्री खितीस वेदानकार।



उत्तम स्वास्थ्य के लिए गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार की ग्रौषधियां सेवन करें

बाक्स कार्यालय ६३, गली राजा केशरताच

कोन न ॰ २९६८३८

बावडी बाजार, दिल्ली-६



आइम् सन्दिशाध्य

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि समा का साप्ताहिक मुखपत्र

मुख्य एक प्रति ५० पैसे

तम ३

रविवार ११ नवम्बर १६५४

बाय सबत्सर १६ -०६४३०६४ २४ कानिक २०४१

त्यान त्राक्त १५८

अलगाववादी देशी-विदेशी षड्यन्त्रों का घृणित परिणाम

प्रधानमन्त्री इन्दिरागाधी की हत्या : भारतीय लोकतन्त्र को गहरी स्रीत

गुप्तचर व्यवस्था प्रधानमन्त्री की रक्षा करने में सर्वथा विफल रही

राष्ट्र के रेताम्रो की भावपूर्ण श्रद्धांजलिया

नई दिन्सी। ३१ बन्तुबर १६-४ के दिन प्रात १। वज प्रधानम नी श्रीमती इतिया गांधी पर उनके सकर कमा नई दिल्ली स्थित निवास स्थान पर उनके दा सुरका प्रमरक्षको द्वारा गांधिया मारकर हत्या कर दी गई। जिलम भारतीय आयुर्विष्ठाम सरसान पर उनके १९ गांधिया मारकर हत्या कर दी गई। जिलम भारतीय आयुर्विष्ठाम सरसान प्रजन्के १९ गांधिया से छलती छरीन ने प्राण त्याप रिद् । प्रधानम नी श्रीमती इतिया गांधी की हत्या का सभी राजनीतिक दला और नेताओ द्वारा लाकत न पर मारी आयात बताया गया। मृत्युव प्रधानम नी श्री मोरारजी देगाई न कहा— लाक तत्र को बातकवाद बौर मता बता वे वचाना सभी को कत्त व्याप्त है। दिनत मजदूर हिसान पार्टी के नेता जी चरण सिंह ने कहा— यह मानना पडणा कि देश के दिनहाम ने उनकी महत्वपुण पूषिका रिही है। उनकी हत्या मे प्रचेक देशसक्त को आयात पहुचा है। प्रारतीय जनता गारी के कम्पस श्री अटल बिहारी बाजपेयी ने कहा— उनकी हत्या है महत्या हे महुने राप्ट के नहरा सावाद पहुचा है। जनता गारी के अप्यक्ष और बद्ध वह स्थारी मानवीयन नित्र भीवन का सबसे हु स्थारी मानवीयन गांधी की हत्या के बाद यह हमारे मावजनित भीवन का सबसे हु सात पटना है। काप स (अ) क अप्यक्ष श्री जनवीवनराम ने कहा— भंभीवती गांधी की हत्या के देश पर मारा विषय आग में है। उनकी हत्या ते स्थप्ट है लि हमारी गुलव्य अवकर रही है। स्वारत अव की सुण्या अवकर रही है। स्वारत अवन की सुण्या अवकर रही है।

सावदेशिक आय प्रतिनिमि सभा के अध्यक्ष श्री रामगापाल शालवाचे और महासचिव श्रा आध्यकाश त्यापी ने श्रीमती गांधी के जीवन पर कायरतापुण हमले की निन्दा करते हुए उस देश का विषटन चाहने वाली अलगाववादी देशी विद्यी गहरे पढ़या त्रो सारिणाम कहा। उन्होंने भारतीय जनता और राजनातिक दलो से जपील की है कि उन्हें देश को अस्थिर करन के लिए प्रयत्नशील और राज्य के शत्रुओं को पह चान कर जनका स्वयुक्त मुकाबना करना चाहिए।

हिंसा देश के लिए कड़ी चुनौती इन्विरा जी का बिलवान राष्ट्रीय एकता के लिए

्र प्रायक्षमाज अजमेर के प्रधान तथा तथा तथान द कालेज ध्रवमेर आदि आय क्षमाज की शिक्षण सस्थामों केन त्री घीर रेडकास के तेयरमैन श्री दत्तात्र य वा०न ने श्रीमती इन्दिरा गांधी के असामधिक नियन पर शोक सबदना ०यन्त की है।

उन पर किए गए कायरतापुण भीर विश्वासभाती भाक्रमण की निन्दा करते हुए उन्होंने कहा है कि हमारे देख की राजनीति में हत्या और हिंसा का उदाहरण सारे देख के लिए चुनोती हैं।

श्रीमती इन्दिरा गांधी ने देश की सखण्डता स्वत बता और एकता के लिए जीवन भर बुदता से जो सचय किया, उसी के लिए यह उनका एतिहासिक विश्रदान हुआ। है।

मारत मा के रूप मे बलि दे दी

इन्दिरा जी के बलिदान पर श्री शालवाले नेवान हाल झायसमाज मे नाक प्रस्ताव

बारनम त निवान होता के माला हिक सल्भग क वान्यार ना प्रयंत्रमधा श्रीमती इंदिरा गांधी की दन्ता कह य पर प्रस्ताव पारिस किया गया। सभा करते संबोधित करते हुए मावन्यिक सभा क प्रवान सभी रामगाव ने दनाक ह या स समुवा सतार हिला गया है। श्रीमती गांधी ने जिन लोगो पर विश्वस स करक



श्रीमती इन्दिरा गाधी यद हमशाक्रेगा भारत देश तस म

विश्वामणान करके आस्वयवकित करदिय अन्य जगन महो गया इदिराजी का नाम । भारत का स्वत त्रना अक्षण्डना और प्रभुसत्ताकी रक्षाकरन हुए उन्होन अपने कारीर की अतिम व द भी बिल दे दी

गाधी का श्रद्धाः लिलाभी तक भारत माता को कल्पना करके ही लोग जयज्ञय कार करते थे। उहाने ता साक्षात्र मारत माता का क्षा चारण करके अपने का बनि दान किया है

विश्व मे सम्मानजनक स्थान दिलाया

प्रधानमन्त्री की हत्या ऋत्यन्त निन्दनीय दिल्ली सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव का वक्तव्य

न हैं दिल्ली। दिल्ली बाय प्रतिनिधि सभा के प्रधान भी सुबदन ने एक प्रस क्त त्य मे घोषित किया है कि देश को लोकप्रिय नेता प्रधान सभी सीमती इन्तिरागाओं की जयप हु या की सारा जावजनत कह सक्ता में निराक्तता है। श्रीमती पात्री ने देश को विद्युक राष्ट्रा एवं भ्रातराष्ट्रीय ज्ञान से सम्मानजनक स्थान किसाय था। हुस आज इन विपत्ति के समय प्रण लेना चाहिए कि राष्ट की जलाव्हता के लिए प्राणपन हे

शहादत से सीख लें : अखण्डता रखें

इन्दिरा जी का निधन मानव मात्र की क्षति-शालवाले

नई लिली। माबरेबिक बाय प्रतिनिधि ममा के प्रधान ताला रामगोपाल वालवाले ने एक प्रस वहत्य में घाषित किया है कि श्रीमती इदिरा गांधी का निवन केवल मारन के लिए नहीं जानव मात्र के लिए एक महती कृति है। सारा आयवयन इसने मोक स तत्य वहत्य है तथा इस निवन्त्र ह याकार्य की मत्यना करता है। हमें बागा है कि राष्ट्वारी बालिया श्रीमती इदिरा गांधी की इस बहारत से पाठ लेकर राष्ट्र की अवश्यता के लिए एकजुट होकर काय करेंगी।



₹

परमात्मा हमारी राक्षसो वधूर्तीसे रक्षाकरे

—प्रेमनाथ एडवोकेट

पाहिनो अप्ने रक्षस पाहि पूर्तेराध्या। पाहिरपित उतवा अिवासतो बृहद्भानो यविष्ठय।। (ऋ०१।३६।१२)

भीग काण्य-ऋषि अग्नि देवता, विराट् पथ्या बृहती छन्द, मध्यम स्वर।

धान्यार्थ — [बृह्य्माननो] हे महान् तेज बाले [विस्टब्य] अनवताम [महान् अनत्य तव वाले] [बाने] जात स्वरूप सर्व पुत्रमो दुरुदे को स्था करते वाले [न] हमारी [स्कात] राजस जयांत् हिंसाधील दुरुट स्वमान मुद्रप्य हे [याहिं] स्था करो (बान) हमारी [युर्जे] विस्थान वाहक कली करारी (बा) विसाण्य वाल वर्ष रहित करपण मृद्रप्य हे [याहिं] हमारी रक्षा करो। [उत] और [रियत] ज्याद्यादि हिंसक प्राणियो से [न] अवया (जो दुरुट जववा पातल) [जिवासत] (हम मारते की जो इच्छा करता है उससे भी [याहिं] हमारी रक्षा करो।

व्याख्या--इस वेदमन्त्र मे परमात्मा से प्रार्थना की गई है कि वह हमे राक्षसो, बतौ, स्वाधी कृपण (जो धन होते हुए भी कुछ भीदान नहीं करते) मनुष्यो वा हिंसक (ब्याझ सर्वादि) जीवो से हमारी रक्षा करे ! कोई भी प्रार्थना हमारी सफल नहीं हो सकती जब तक हम उसके लिए स्वय पुरा पुरुवाय न करें, व्यक्तिगत अथवा मिलकर अथवा शासन (सरकार) की सहायता से। इसके लिए हमे बल-वानृ होना चाहिए और सब साधनो उप-साधनो से सुसज्जित होना चाहिए, आपस में मेल-मिलाप से एक दूसरे की सहायता करते हुए रहना चाहिए वा शासन पूरा प्रजातात्रिक होना चाहिए और शासनवर्ग मे कोई छली कपटी स्वाधी हिसक नहीं होना चाहिए। इसके लिए हमें लोकसभा अथवा विधानसभा आदि के खुनावी मे विना किसी जाति आदि के भेदभाव के धार्मिक (सदाचारी) विद्वानों को ही मत- दान करना चाहिए। ताकि हमारे देश में अथवा ससार में रामराज्य (शांति सपन्न)

बचवा सदार म रागराज्य (चारा घरण) ही हो। अग्ने इन वेद मन्त्र मे परमास्मा को अन्ने कहकर सम्बोधित किया गया है। अनिन गब्द बनन्यतुंचातु से निकसा है जिसके अर्थ हैं ज्ञान, गमन, प्राप्ति वा

पूजा के। परमात्मा ज्ञानस्वरूप सर्वज्ञ

व्यापक, सबको प्राप्त करने वा पूजा के

योग्य होने से उसको 'अग्नि' कहते हैं।

वह अवणी (हमारा सबका नेता) वा दुष्टों का दाहक होने से भी उसको अगिन कहते हैं। रक्षस— 'रक्षस' कब्द के अयं है 'राक्षस' के अर्थात् जो अपने स्वायं की रक्षा करता है और इसके लिए छल, कपट, चौरी, डाका वथ आदि करता है। अराज्य— यह शक्द 'रा' बातु से निकता है, जिसके कार्य दान' करने के बौर बान पर्य से रहित कृषण युज्य मुख्य है उसको अराज्य कहते हैं अर्थात् परमारमा

हमे 'अराव्ण' जो दानशील नही उससे भी

हमारी रक्षा करे। इस खब्द का रामायण

वाले रावण से कोई सम्बन्ध नहीं।

भावायं—सब मनुष्यों को वाहिए कि वे सब प्रकार रक्षा के लिए सर्वाप्रिय्तक परमारमा से संवंदा प्रायना करें होर अपने कार यो बलवान हो या दुष्ट स्वमान बाते प्राणियों से दूर रहें वा सब पायों से दूर रहें वा सब पायों से दूर रहें। और सासक प्रवान मन्त्री, मुख्य मन्त्री बादि को भी छसी, कपटी, चोरों बाहुकों व हत्यारों आदि से रक्षा के लिए बाध्य करें, जिससे देश से सादि का राज्य हो बौर प्रवा मुखी हो। बौर ०-१०३, नीति बाग, नई दिल्ली-४६

जोघपुर मे महर्षि निर्वाण शतास्त्री

१०-११-१२ नवम्बर, १६८४ को जोबपुर में प्रातीय स्तर पर महाँव निर्वाण शताब्दी मनाई जा रही है। जमबन्त कानेज के पाम दयानन्द माग, जोबपुर में यह शताब्दी कार्यक्रम किया जा रहा है।

ग्रायंसमाज लक्ष्मीनगर का वार्षिकोत्सव

आध्यसमाज लक्ष्मीनगर, विस्तार, दिस्सी १२ में आयसमाज का दूसरा वाधि-कोत्सव रविवार, ११ नवस्वर, १६०४ को प्रात ा। से दोपहर १।। बचे तक श्री रत्न सिंह खर्माण्डल्य की अध्यक्षता में ननाया जा रहा है। इस प्रवसर पर श्री यद्यापाल सास्त्री, श्री रामचन्द्र विकल, पवन कुमार सास्त्री, श्री जैमिनी सास्त्री जाबि के आयण होंगे।



सेवा की सच्ची भावना।

उत वर्ष पत्राव मे वयकर अकाल पढा था, जैसा कि बूढो की याद मे भी कमी
नहीं हुवा था। उन दिनो पत्राव मे सहाराणा रणजीत सिंह का राज था। उन्होंने ऐसान
करवा दिया 'हुमम महाराज का, खाही को छार हर ज़करतमन्द के लिए जुने हैं. 'हर
करता मन्द एक बार में जितना बनाव उठा सके, ले आए।'' ऐसान होते ही जकरत
मन्द प्रजा उनक पढ़ी, राजी-वाहरों से वकाल है पीजित लोगों का सिलसिला बन गया।
उन दिनो ताहौर में एक सद्गृहस्य बूढ सज्जन कहते थे। कट्टर सनातनी विचारों के,
जीवन में कभी उन्होंने कभी हाथ नहीं पत्रात था, बन्देरा होने पर बह साहै को छार के
हार पर पट्टने वहा दरनाजा जुला था, किसी तरह को कोई जाय-परवाल पुख्ताक नहीं
हुई। उन्होंने वहाँ क्लिक से अपनी बादर लेलाई, उसके कोने मे बोश-सा नाज बाथा,
अधिक जनाव उठाना उनके सिए कठिन था। इतने मे पगडी बाये एक बादमी बहा
बाया। उसने कहा—'भारताओ, आपने तो बहुत कम बनाज दिया।' युढ सज्जन
बोले—''बसन में मैं दुड़ा साचार हूं, इस बकाल मे घोडा जनाव लेना ही ठीक है,
विससे सब करताननों को अस सिल जाए।'

उस जायन्तुक ने वृद्ध सञ्जन की गठरी कोल दी। उसमे मरपूर जनाज भर दिया। वृद्ध सञ्जन ने कहा— मैं हृतना बनाज नहीं उठा सकता और न इसकी मजदूरी का पैसा है। दे सकता हूं ।" वृद्ध सञ्जन हिषकते ही रहे, उस जजनवी ने वह जनाज ना गट्टर उठा लिया बोर चल पड़ा ।वर के हार पर दो कच्चे कहें थे, बोले— बावा-कहा चले गए वे ?" वृद्धा खुप रहा। जजनवी ने गृष्टा— 'वर मे कोई बडा नवका नहीं है ?" वृद्धा बोला— 'कहा चले गए वे ?" वृद्धा खुप रहा। जजनवी ने गृष्टा— 'वर मे कोई बडा नवका नहीं है ?" वृद्धा बोला— 'कहा वा, पर काचुन की लडाई में कुर्वान हो गया, जब वह है किए हुर्वान हो गया।"

रोक्षमी में बूढ सम्बन ने उस अबनवी को पहचान सिया। वह स्वय महाराचा रणबीत विह थे, बूढ पोतो से बोले — इनके सामने मत्वा टेकों? बोर खुर मो प्रणाम करते लगे, बोले — 'आव बडा पाप हो गया, बापसे बोका उठवाचा।'' 'नहीं, वह पुण नहीं मेरी फिस्सव हैं कि मैं एक छोटे के परिवार की सेवा कर सन्, या स्ववती होवा करना मेरा फर्ब हैं, वब तक जीवन हैं, बाप हमारे साथ हो रहिए।'' — नरन्न

दक्षिण-पूर्वी एशिया

(थाईलेंड, मलायीशिया, सिगापुर, जावा ऋौर बाली की द्वितीय सास्कृतिक तीर्थयात्रा)

१६ जनवरी, १६०५ से २ फरवरी १६०५ तक दो उप्ताह की सात्रा का कुल ज्यय १३७५० रुपए प्रति व्यक्ति (जिससे हवाई जहाज द्वारा जाना-बाना, वालानुकू-लित होटलो मे निवास, डीलवस बसो द्वारा दर्शनीय स्वानो का जबसोकन तथा हाका-हारी प्रात काल और साथ काल का भोजन व्यय सामिल है।

दक्षिण-पूर्वी एश्विया के देशों में अब से केवल चार सदी पहले तक हिन्दू वर्क एव भारतीय सस्कृति का प्रचार था। वहा बाली नाम का एक ऐसा ब्रीप है, जिसमें अब भी पच्चीय लाख के लगमग हिन्दू रहते हैं, बोर जिसे सच्चे अमें में 'चयू आर्या-वर्त' कहा जा सकता है। आवा के निवासिकों में भी पैतीय लाख के लगमग हिन्दू हैं। इन द्वीपों में मनेक ऐसे मन्दिर व तीय स्वान भी है, जिनका हरिखार व रामेस्वरम् के समान महत्त्व है। इस तीर्थवात्रा में सम्मित्तक होर्कर दिकार-पूर्वी एमिया के कार्य हिन्दु मों के दाय एकानमकता व सम्पर्क स्वापित कीजिए, और मारत के विशास सास्कृतिक साम्राज्य की एक अनक देखिए। साथ ही, वहां के हिन्दुओं को महर्षि दयानन्द सरम्वती की जिलानों तथा आर्थमयान के कार्य से परिचित कराइए।

विवरण के लिए सम्पर्क करे----

---श्रीबद्योक त्रिसा

ट्रबल ट्रस्ट, बी-२४, निजामुहीन ईस्ट, नई दिल्ली-२१ टेलीफोन-६१८०४ १ धर्मेपूर्वक धन की प्राप्ति बो३म् भूर्मुवस्य सुप्रजाप्रजामि स्याम । सुदीरावीरै सुपोदापोद्यै ॥ यजुर्वेद ८ ५३

हम प्रकोक, अन्तरिक्ष लोक जोर युलोक की चपल व्ययो में सुकृत हो तथा सन्तानों से अच्छी सन्तानो वाले और पोषक पदावाँ से अच्छे पायक अववा मोज्य पदावाँ वाले हो।



एक युग बीता: नए युग की शुरूआत

हमारे महान राष्ट्र पर मकट की काली चटाए कई बार विशे हैं हर बार वह सभी वाशको विराधों एव प्रतिकृत परिस्थितियों से जुम्मत हुआ बढ़ता ज्या है। वन् १९४८ ई० की २० जनवरी को म गांची का वब विल्यान हुआ था, उस समय हुमारी राजनीतिक स्थानेता को प्राप्त किए हुए कुछ महीने ही स्थाति हुए ये परन्तु उस समय देख का नेतृत्व करने के लिए प० जवाहरलाल नेहरू, सरदार बरलम गाँह, वा० रानेनृत्वाच् जेसे परितित एव परेखे हुए नेतानों का पर-प्रदर्शन उसलस्थ था। १९६४ मे २० मई के दित जब प० नेहरू का देहावतान हुआ था ता वव देश के सम्बंध का बात पर पर के लिए प० जन का है। वाल विराध के सम्बंध का वाल पान विराध के सम्बंध का बात पान विराध के सम्बंध का बात पान विराध के स्थान कर वाल क

त्रियविद्यानी इन्तिरा नाथी को नेहरू जी ने अपने प्रसिद्ध पत्रों में निकास मा'इतिहास का जय्यन प्रमण्का होता है परन्तु यह कही नेहतर है कि जूप दिनहास
लेखा जाए।'' इन्दिरा जी ने अपने यसकी जीवन के विद्ध कर दिया कि अपने पिठा
की तरह वह भी साहत को नेत्री थी। उन्होंने गुरू के ही प्रयोक समस्या का जय्यन कर
स्तत अपना मन बनाया। जिस प्रमार की प्रमण्य कावाओ एव प्रतिकृत परिस्थितियो
का उन्होंने सामना किया उसमे दूसरा कोई भी व्यक्ति परत हो सकता था वे परिस्थितिया बाहे सन १८६६ से राष्ट्रपति के पद के निर्वाचन का प्रकार रहा हो प्रयश्च
१९०१ म बनत देश के सम्बन्ध ने पाकिस्तान से गुद्ध हो, अथवा हिन्द महासानर मे
अमेरिकी सातवें वेदे भी उपस्थिति हो अथवा सन्द भ म अध्यात के सद को ज्वस्य का समय पहा हा उन्होंने पूरी दूदता, साहस और सनन से भीषणतम परिस्थितिया
नासों की सम्बन्ध प्रतोक की। अपने कार्यों से उन्होंने समाजवाद के सिद्धात की प्रतिष्ठा
को सो सास ही अपन्यस्थकों का विद्यास सी प्रात्त किया।

३१ अक्तूबर को प्राप्त देशी-विदेशी साम्राज्यवादी अलगाववादी ताकतो के हिसक प्रहार से भारतीय राष्ट्र एव जनता की बाकाक्षाओं की प्रतीक श्रीमती इन्दिरा गांधी का पार्थिय शरीर निष्प्राण हो गया है । उनके श्रसामयिक दुखद नियन से आधु-निक भारत का एक युग बीत गया है और नए युग की शुक्रवात हुई है। अभी तक सकट की वडिया गहराने पर देश को या तो अनुभवी एव परीक्षित नेतृत्व का साम मिलता या, अथवा उसे ऐसे माफी मिले जो अनुमधी और परीक्षित तो न थे, परन्तु जन्होंने सम्बे समय तक बनुमनी व्यक्तियों के सान्तिष्य में समूचित पथ प्रदशन पाया था। भाज देश के सितिज पर अलगाववादी जातकवाद की हिंसक घटाए विर धाई हैं, ऐसे समय यदि प्रमुख राजनीतिक दल राष्ट्रीय हितो के लिए एक व सयुक्त होकर कार्यं कर सकें और राष्ट्रीय समस्याओं को सुलक्षाने का प्रयत्न करेतव स्थिति का समुचित समाधान हो सकता है। इन्दिरा जी के असामयिक निधन से भारतीय राज-नीति मे एक अपूरणीय शून्य पैदा हो गया है जिसे भरने के लिए सभी राष्ट्रहितै चियो को प्रयत्नशील होना चाहिए। बार्यसमाजो एव बार्यजनी को इम सकट की वडी मे राष्ट्रीय परित्र को अधिकाधिक सरा, सण्या और प्रामाणिक बनाने का प्रयत्न कर भावी दिशा-निर्धारण मे अपना उल्लेखनीय योगदान करना चाहिए जैसा कि उन्होने राष्ट्र के नव जागरण एव स्वाधीनता सवर्ष के दिनों में प्रस्तूत किया वा ।

श्रार्य विद्वानी, समाधान करी या संशोधन करी।

सहीं दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित बहुधक में जो मन्त्रों का कम सरकार विधि बन्द में बताया है उसने अनेक परिवर्तन क्यों, वर्तमान में अचितत सन्ध्या पुराकों में प्राय १६ मन्त्रों का कम बताया है, परन्तु ऋषि वाक्षानुसार मन्त्रों की सस्था २१ है। इसके वितिष्कर प्रारम्भ में सक्त्य का उच्चारण बताया है। द्वारों देवीन मन्त्र द्वारा तीन स्थानों पर वाचमन बताया है। इस प्रकार विधि विधान में सान्त्रचित्त होकर सन्ध्या करें। प्राथाशांक करें तो मून से न्यून भीन चण्टा तो समय लगता हो है, परन्तु देखा वह वाता है कि वायवन बाता पूर्ति के सिए तीन मिनट या पाच मिनट से ज्यादा समय सन्ध्या में नहीं बनातें।

'अब नित्य सन्त्या यज्ञोपासनाविधि त्रम— सदा स्त्री पूरप १० बजे स्वयन स्वीर राणि के प्रहर बहावेसा में ४ वजे उठकर प्रथम हृदय में रत्मेस्वर का चिन्तन करके समें सर्थ का विचार करना और सम और सर्थ के बनुष्ठान व उद्योग करन में गीडा यादी हो तथाशि समें इन्दर पूर्वपार्थ को कभी नहीं छोड़ना चाहिए। किन्तु सदा सरीर और बारा सा की रक्षा के नित्य कुला कर के स्वाव के स्था के किए पूक्त आहार विहार जीवव सेवन सुपम आदि से निर-तर उद्योग करके व्यावहारिक सीर परमाय कर्ता व्यावसा की सिद्धि के लिए ईक्षरोपासना भी करना। विख परमेश्वर की कुणा दृष्टि बीर सहाय से महा कठिन कार्य भी सुमसा से सिद्ध हो सके इसके लिए निम्न वेद म-नो से ईश्वर की प्राथना सपरिवार मिसकर करें।

को हम् प्रातरिनि ० कादि ऋषित के मण्यल ७ सूनत ४१ मत्र १ से ५ तक का पाठ करें। तत्पदचात् शीच दन्तवायन, मुझाप्रकासन करके स्नान कर। सन्ध्योपासनादि नित्य कर्सनीचे लिखे अनुसार यथा विधि उचित समय में किया करें।

प्रारम्भ से सकस्य उच्चारण करें, फ्रोइस तत्वत् श्रह्मणो आदि किया साहित करें। किर इन सन्त्रो का एक-एक बाचमन करें। बोडम् अमृतीपस्तरणनासि स्वाहा, बोडम् चल्प यश श्रीमध्य श्री क्यता स्वाहा इसके वनन्तर पायत्री मत्र द्वारा खिला बाकर रहा को रेम् चल्प यश श्रीमध्य श्री क्यता स्वाहा इसके वनन्तर पायत्री मत्र द्वारा खिला बाकर रहा करे। जाचमन मन्न—वना देवी द्वारा तीन बाचमन, अर इन्द्रिय स्वर्ध मच्च — बोडम् वाक् बाक् जादि, अय ईस्वर प्रार्थना पूर्व मार्जन —बोडम् मु सु प्राप्त खिला क्या स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्ध स्वर्ध स्वर्य स्वर्ध स्वर्ध स्वर्य स्वर्

अय बनसा परिक्रमा मत्र— बाहेन प्राची ने कर्षां प्रयन्त ६ मन्त्री द्वारा पर-मेस्बर हे प्रावंता करें। अयोपस्थान मत्रा— तरफ्सात् परमात्मा का उपस्थान अर्थात् परमेश्वर के निकट मैं और मेरे अति निकट परमात्मा है, एसी बुद्धि एव चारण करके करें।

उपस्थान मत्रों में बनमान प्रचितत सन्ध्या पुस्तकों से एक महत्वयूण मन्त्र को हटा दिया है। मत्रों का कम भी बदल दिया है। यह आय जनों की भारी भूल है ऐसा बान पक्षता है। उपस्थान मत्रा का अस और सस्था महीं द्वारा निर्धारित निश्न प्रकार सस्कार विवि गृहस्य प्रकरण से विद्यतान है। बाद उपस्थान मत्रा

ा पृत्य प्रकरण नाज्याणा हूं । या वार्तिया नि वहाति वद । कोश्म जावदेवते पुत्रवान साम मरातीययो नि वहाति वद । सा नायदित दुर्गाणि विश्वा नावेत किःमु दुमनात्या। ने ।। सो नेम जिल्ल वेदाना मनादिनक सारि ।। २।। सो नेम् जुद्ध जात वेदस देव बहुन्ति केतव सादि ।। २।। सो मृ जुद्ध तमसस्परिक्ष परमन्तु आदि ।। ४।। सो नृ जुद्ध तमसस्परिक्ष परमन्तु आदि ।। ४।। सो नृ जुद्ध तमसस्परिक्ष परमन्तु आदि ।। ४।।

पुन — गायत्री मन, जय समयणम् हे ईश्वर दयानिषे झादि, ओ३म् नम सम्यु-वाय च बादि मत्र से परमात्मा को नमस्कार करके ख नो देवी इस मत्र से तीन आचमन करके बन्निहोत्र का आरम्भ करें।

सार्य विद्यानो से विनन्न प्राप्तना है कि उपयुक्त कमानुसार मनो का स्वयोधन करा बाए। इस कम का सकलन व्यक्ति प्रत्य के साधार पर साहपुर्या निवासी बाय वधु श्री सोहनसाल की सारदा द्वारा प्रकाशित पुस्तक सक नियस न्याय प्रशोधासना विधि' नि सुक्कममाकर व्यक्ति साझानुसार वयने परिवार को श्रद्धावानु वसाय, अही दिनक्र प्रार्थना है। — कस्यपदेव वानप्रस्थी वैदिक सत्सग आस्त्रम, पुण्कर

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस एव दीपावली पर्व

वार्षसमान शिवाबी चीक सहवा से ऋषि दयान-द निर्वाण दिवस एव रीपा-वती पर्व दिवाक २४-१० -४४ को समारोहपूर्वक सनाया गया। पर्व पढित के अनुसार बहुद् यस सन्या प्रार्थना के पहचान थी रामचन्द्र थी आयं प्रचान जा० सः सहवा ने सहूष्व वयानन्द सरस्वती के जीवन परासर्पाति प्रभावण दिया, भी प० नन्द किशोर थो द्विवेदी ने श्रेष्ठ की वर्षमान परिस्थिति और हुमारा कर्त्त व्याप्त पर्वाण दिया,

जीवन ज्योति के प्रतीक

— चमनसाल प्रधान आर्यसमाज वशोक विहार दिल्ली-५२

पर्वो नवा त्याहारों का मानव के जीवन मे एक ऊचा स्वान है। स्वर्गीय लोकमान्य बालगगाधर तिलक यहा तक कहाकरते थे कि त्योहारों को मनानाही कि देश राष्ट्र के जीवन क्योंति का प्रतीक है। जितने जितने उत्माह, उल्लास श्रद्धा और प्रेम से कोई शब्द अपने त्याहार मनाता है, उभी अनुपात में उस राष्ट्र के निवासियों में जीवन ज्योति समभनी चाहिए हुमारे देश मे जितनी अधिक सस्या म त्याहार मनाए जात है सम्भवत विश्व के किसी अन्य देश में नहीं मनाए जात होगे। हमारे कुछ त्याहार ऋतुपरक और क्छ महापुरुषो के नाम से सम्बन्धित है। मूछ राष्ट्रीय न्याहार भी है। परन्तु इन मब मे तीन बडे त्याहार ग्रयाभ्यापति मर्यादा पुरुषोत्तम राम कंनाम संसम्ब-धित हे—रामनवमी— जा प्रतिवर्षचैत्र शुक्लानवमीका देश विदेशों में बडे उपाहसे मनाई जाती है परतुदो त्या-हार विजयदशमी का त्य'हार असोज मास की शुक्ला १० बी को मनाथा जाता है। जिसके सम्बन्ध में कहा जाता है राम की राक्षमपति रावण पर विजय इस दिन हुई थी और तीसरा त्योहार दीपावली विजय दशमी के ठीक बीस दिन बाद आरता है। कार्तिक की कृष्ण पक्ष की अमावस्या को मनाया जाता है कि अयोध्यावासियों ने श्रीराम जीकी रावण पर विजय प्राप्ति करके बापस लौटने पर दीप माला का उत्सव मनाया था परन्तु इतिहास व राम जीवन कमबसे प्रमाणित ग्रन्थ वाल्मी कि रामायण से इन त्योहारा का इन तिथियो मे पडनाक्दाचित प्रमाणित नही होता। बे सब घटनाए सक्षेप से इस प्रकार है -

अयायापित राजा दशास्य जब बृद्धाग्रम्या को प्राप्त हुए तब उन्होत राज्य क मित्रया, गुण्जना तथा और अस्य अनक गाओं का जुनाकर नजा सम्मुख्य राम -अपन जगरु पुत्र का गान्य का काम भार सीपन का प्रस्ताव रखा और उनकी अनुमास ने राम का युक्ताज का लिए सब मामग्री जुटाने के बादश दिए गए। यह चेत्र माम का महीना था।

यहा रहने-न्नतं रान्य ऋतु बीत गई हैमन्त का आरम्म हुआ। पुछ ममय परुवान् रावम छन-क्पट से माता मीता को हुर कर ले गया। उसको अपनी अशक बारिका में रखकर, अरा-घमका कर मीता को अपनी पत्नी बनान में अमफन रहा, तो उसने सीता का एक वप का समय सोवने के बान्ते दिया और जब हुनुमान मीता को लका में मिला तब उस एक वर्ष में से केवल दो माता ही थव रह गए में ये

इति प्रत्यक्या तान् राजा बाह्यणा निदमत्रत्रोत् । वसिष्ट वासदेव च तेषा-मेत्रोपशुक्ताम् । 'चैत्र श्रीमानय मास पुष्प पुष्पतकानन । यौतराज्याय रामस्य मत्रमेत्रोपकल्यताम् ॥

परन्तु विधि का विधान बढा विचित्र है। आदमी सोचता कुछ है, परन्तु परमा-न्मदेव की कुछ बौर ही रचना है।

चेत्रमाम क पुष्य तक्षत्र से निष्पाप राम को अवाध्या का युवराज वनने की जजाय दुष्टा दासी मन्दारा तथा कैसी के पढद्य-त्र रचन क कारण साधु वेदा में पिठा की आजा से वन जाना पड़ा और जब मरत जी राम को वापम सीटाने वन म पए तब वित्रकृट पवत पर कुटी बनाकर रहते था।

'अनन्तरम् तत्सरितद्दिषत्र कृटश्व पवत । तया पणकुटी तात तत्र तौ वसतो स्वस्था'

भगत मण्डली क आधह करन भी राम न १४ वर्ष के वनवाय की अविषकी समाति से पृव लोटने से इन्कार कर दिया तो भरत राम की पादुकाए लेकर राम से बोदह वर्ष की समादित पर लोटने की प्रतिकात चवन ने वापस चले गए और यह कहते हुए कि मदि बौदह वय के अतिका रिवारत मा लोटेंगे तो मैं (भरत) चिंता बनाकर सन्ति से प्रवेश कर दुगा।

भरत के लीटने पर राम ने चित्रकृत छोड़ कर किसी अन्य स्थान पर जान का निद्यय किया और इस प्रकार वन में युगत पुगते और ऋषि आध्यों की आसा सीमो देखते दस वय बीत गए और दश्व-कारण्य में एक सुन्दर स्थान प्यवदी में कुटी बनाकर लेख या वय वितान का १८६२ से निक्चय किया।

हनुमान जी न राम का सीता का सदेश दिया और राजण द्वारा दी गई तो सम का अविष बनाई, तो राम बड आतुर होर दाने ये दि सीना एक माम नक भी जीएगो ना बहुत समभा, में ना उसके बिना एक साम भी नहीं जी सकना। अन राम न सुर्गीत को जल्दी म लका एर चढाई करने को कहा और उत्तरार फास्त्रुनी नक्षत्र में चढाई कर दी बौर जब राम म सुर्गीत को कहा और उत्तरार का स्तुत्र ने अवेश में से के कल एक दिन शेष बा, बत राम जी उभी दिन अयोध्या जाना चाहते थे, इसलिए वह रावण के एपक बिनान म ठीक १४वर्ष की समास्त्र पर अवोश्या जा पहुले।

इस सन घटनायक से स्पष्ट है कि राम रावण युद्ध फाल्गुन चैत्र मास मे हुमा और चौदह वयं भी चैत्र मास मे

ही समाप्त होते हैं। अत निजयदणेमी का त्योहार अभीज मास में न मना कर कहीं चेत्र मास में न मना कर कहीं सकार से साहिए और इसी रहा है। अहा ते सही है। यह ती से साहिय से से साहिय से सा

दीवावली त्योहार का एक अपना ही विशेष महत्त्व हैं, इसको रास्ट्रीय त्योहार कहनाभी कुछ अनुचित न होगा। यह ऋतपरक और फमली त्योहार भी कह-लाता है दूपरे जन्दों में इसे 'नवशस्येप्टि' भी कहना ठीक ही होगा क्यों कि इस अव-सरपर न्यावनी (स्नरीक) की फसल के अनाज ज्वार, सक्का, बाजरा, उडद, चावल, गुड-शक्तर निलादि सभी आ जाते हैं और सभी लाग इसको लक्ष्मी-पूजाकरूप मे मनाना बढापुण्य समभते ह। लक्ष्मी के स्वागन क लिए मारी रात्रि घरो मे राशनी रखते हे ताकि कही अभा-वस्याकी घार ग्रथरी रात्रि मे प्रकाश क अस्मावमेलक्ष्मी वापस न चली जाए। इसी लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए कुछ चूत, मूलंलोग जुआ लेलकर आनन्द लूटते हैं, क्योंकि ऐसे लोगों का अन्धविश्वास है कि जो इस दिन जुवानही खेलता, वहनरक मे जाता है जबकि वेद मे जुआ खेलना, दुष्कर्म पाप बताया है। जैनियों के लिए भी यह दिन कुछ कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। क्यों कि बाज के दिन उनके मन्तिम तीर्थ-कर महावीर स्वामी ने निर्वाण प्राप्त कियाधा। बाज के ही दिन मन् १६०६ में स्वामी राम ने गगा माता की गोद मे जीवित समाधि ली थी, परन्तु इस दिवस का महत्त्र एक सौ एक वय से पूर्व अवर्थान् और बढ गया है।

81

गत वर्ष वजभेर ने उनकी विकास स्वाब्दी वड़ेसमारोहपूर्वक मनाई गई की और उसके बाद पूरे वर्ष जिल्ल-भिल्ल स्वानो पर यह उस्सव मनावा जा रहा है सोत्रीय वजसर पर।

दीपावली हर वय आती है और आयं-बन्ध ऋषि भक्त उनके जीवन में बटी अग्रेक षटनाओं की चर्चा करके अपने की क्रूस्य-कृत्य समऋते हैं, परन्तु जराध्यान देकर देखें तो सही क्या ऋषि द्वारा छोड़े अपूर्ण कार्यकिस हद तक वे पूरे कर पाये। गत एक सीएक वर्षों मे। देश के बाचार, नैतिकताका पतन ऋषि के समय से भी कही अधिक इस समय हो गया है। महर्षि एक जाति व देश विशेष के लिए काय नहीं करते थे। वह तो समस्त विष्व की मानवता के कल्याण के लिए सारा जीवन प्रयत्नशील रहे और इसी मानव-कल्याण के लिए उन्होंने अपनी १८-१६ वटे की समाधिकादिव्य धानन्द भी त्यागकर ई टो-पन्थरों के प्रहार नहें भीर दिख के प्याले भी पीए। उन्होंने वेद को स्वत प्रमाण मान कर इसके आधार पर प्रचार किया और प्राचीन ऋषि-मूनियो की बिस्तृत परम्पराओं को फिर से जीवित किया।

वह महान देशयोडा थे और देश को सम्पन, शिक्याकी सौर, स्वतन्त्र सत्ता वाला देखना बाहते थे। स्वतन्त्र सत्ता वाला देखना बाहते थे। सामाजिक मुरोविया के वह शत् थे और वह दियों को स्वतन्त्र सत्तावाल से भी सकेले ऋषि ने मुरोवियों के वह गढ को पूर-पूर करके रक्ष दिया। उन्होंने प्राप्तीय भेदमाबों को भूजकर स्वय गुव-राती होते हुए भी हिन्दी को राष्ट्रमाया के रूप से स्वीकार किया और अपन सभी ग्रम्ब हिन्दी में ही लिखे। देश की एकता क्लाव्या के लिए वह जीवन भर प्रयत्नात्री रहे।

दीपावली निवांण दिवस पर ऋषि के प्रति सच्ची अद्वाजिल यही होगी कि हम सब गुरुबुट होकर आपसी भेदभावो/ को भुनाकर निरुकाम भाव से ऋषि के अबुरे काम की पूर्ति में यबाधांकित सहयोग बेकर ऋषि के ऋण से उन्हण होने का प्रयत्न करें।

MAGGANA MAGANAMA

आर्यसमाज तिलकनगर का ३५ वा वार्षिकोत्सव

बायसमाव लिसकनगर, नई दिल्ली १८ का देश वा वाषिकोस्वव ११ नवस्वर है १८ नवस्वर तक मनाया जा रहा है। इस बवसर पर इन्ही दिनो प्रात ७।। से ६ बजे तक नामवेद सज प० व्यवपास सुधायु के बद्यान्य में हो रहा है। प्रतिदिन रात्रि को ८ से ४५ बजे तक प० चून्नीलास जी के अजनोपदेश तथा ८-४५ से ८-४५ तक प० वाणाल सुवायु के वेदीपदेश होते हैं। १८ नवस्वर को पूर्णाहृति होगी। उसके बाद श्री रामगोपल लालवाल, श्री सुवेदव बी, महासब वामपास जी, डा० वर्मपास जी, एव श्री रामगोपल के प्रवचन होंगे।

भारत में युवा ग्रान्दोलन

भारत के नविनिर्माण एव पुनरुत्थान म युवाशवित अपना गौरवपूण सहयोग दे सकती है। इस सामयिक प्रश्न पर राजधानी दिल्ली स निवा चित ससद सदस्य श्री सज्जनकुमार के विचार—

प्रस्तुतकर्ता रोशनलास गोयल

अच्चाद्यासित सम्पूण राष्ट्र की दिखा को परिवर्तित कर सकती हैं। आप युना झान्दोसन से कैसे काम नी अपेक्षा कर सकते हैं?

नि सन्देह युवाशिक्त सम्पूण राष्ट्र को नई दिशा दे सकती है लिकिन उसके लिए प्रोड नेतृब की अनिवाय गत है। युवा शक्ति से दें रवना मक कार्यों को अपक्षा

⇒ भारत म राजनीतिक सामाजिक एव छास्कृतिक स्तर पर किनन हो युवा सगठन हैं। उदाहरण के लिए राजनीतिक पार्टियों के युवा सन अथवा मगीतकारी एव चित्रकारों के युवा सगठन अथवा छात्राकी यनियन। ये मगठन भारत के उद्यान में किस प्रकार सहायक हो गक्त

जिन युवा सगठनों का जसा सक्य है कीर उनका जो उद्देश है वे सामाजिक श्रीवन के उसी पहलू को परिष्कृत कर काम कर सकते हैं। सामाजिक सगठन कामाजिक सगठन कामाजिक नामाजिक सगठन कामाजिक नामाजिक सगठन कामाजिक नामाजिक सगठन कामाजिक स्वाचित्रकारी कामाजिक सगठन कामाजिक स्वाचित्रकारी कामाजिक सगजन कामाजिक स्वाचित्रकारी कामाजिक सगजन कामाजिक स्वाचित्रकारी कामाजिक सगजन कामाजन कामा

च्कालको और स्कूलासे क्यायुवाको का उचित निन्धान मिल गया है? यदि आपका स्नका नेतन्व करन की प्राथना की जाग ता आप क्यावया सुधार लाएगे?

यह प्र"न अप्रास्तिक ना है औं भी आपका आग्रह है ता मैं अपनी राय अ को देता हू। मिस्ता नस्वाओं क दाय बरण मनोपजनक नहीं "। मिस्ता सर्वाओं का बातावरण और अपने विद्या प्रिया की मन स्थिति नोत हो प्र"व त बरण के लिए उत्तरणायी हैं सक प चार के लिए बहुत कठार प्रयास अपिन

मिनमा और नाटका का यवाजनो पर कैंटा प्रभाव पढता है?

अनुकूल नहीं कहा जा सकता चिक नाटक या फिल्मे उद्दश्यपुण न हाकर व्यावसायिक होते हैं। उनके निर्माण के पीक्षे अर्थोपाजन की झावना निहित होती

च्याभा तर्राघ्टीय युवाके द्वाबीर नेदक युवक केन्द्रों का संचालन अपक्षित

उगस हो रहाहै? क्याइनम किसी सुवार की अवदश्यकता है?

स तराज्येय यवा के द्रा एव नेहरू युवक के द्रा स मेरा बहुत सम्पक नहीं रहा है इसलिए ज्वके सम्ब स में कोई राय जाहिर करना वायमगत नहीं हागा। ऐसे मगठनों में सुगर की सावश्यकता तो निर नण बनी रहती है।

च्यामीण तत्रों संयवा आंदालनो का क्लिस प्रकार गति प्रदान का जासकती है? प्रौढ शिक्षाण्य साम्परता असियान संदनका क्याबाग्यान हा सकता है?

प्रामाण क्षणा म युवायितित को सम ठित करना बहुत आवश्यक है। प्रामीण क्षणो मान करना कहे कि नहा अपार नमान कि निक्का के स्वाम कि निक्षण का ना विष्ण के स्वाम के स

— राधी जो और बाद मंज पी ने भी जन आदोलनों को चलान में छात्रा का सहयोग लिया आपकं इम विषय मं क्या विचार के?

ग्रधाजीका दस्टिकण रचनामक था। हनयवाणावितका वण्णीसर कार क खिलाफ संघव करने की प्ररण नेथ और वह गुलामी के खिलाफ न्सक विषरात् । पा क आ। निविस भा दृष्टिसे रचनामक नह करान सकता बहुआ।दलर निवंचन बन बन प्रतिनिधि क विलाभ ध अंड भ परिस्थितिय म छ।त्राके र ङ नानि मऋिय सागलन को एक मय व है उ निमक सस्याकाका बहिस्कार करक पडका पर आत लन करने के ।लए उक्सान को मैं किसी भा दृष्टि से उचित नहीं मानता। गांघी जांग्रीर जंपी के बाह्यान से अमीन और जासमान का अतर है। एक रचनात्मक है जीर दूसरा नका

 च न अय जी युवा आन्दोलन के मेश्दण्ड थ। परिवार नियोजन बृक्षारोपण
 आदि कायकम देश को समिद्धिकी बौर ले जाने वाले थे। बाशाकी आती है कि जाप जोर आपके साथी इस दिशाने भर-सक प्रयास करेंगे।

देश की पुनाशक्ति को रचनात्मक दिवा मेंने का पूण जय जी सजय गावी को है। जी सजय गावी को है। जी सजय गावी को ना चुक वक्त पर जपना सक्तम नेतर ज्यान किया जब मह दिवाहीन हाला। जब मह दिवाहीन हाला। जन के पाच भूत्री का भी मान दवक सद्धा तो के रूप में स्वीकार करता व्यक्त सद्धा तो के रूप में स्वीकार करता

े नेहरू जी का जम दिवस हम बालदिवस के रूप में मनात है। वह बालको से क्या क्या अपेक्षाए रखते थे? क्या हम बाज उनके सदेश को बज्बों में प्रमारित प्रवास्ति कर पास्ट्रे है?

प० जवाहरलाल नहुक बच्चो मे राष्ट्र के मुख्यि को देलना चाहत थ कि मारत के प्रयेक बालक का सर्वा गीण विकास है। ताकि वह नेन का नामकक नामरिक बने और राष्ट्र के हिना की रखा कर सके। प० जी के जादकों सिद्धा ता और मा यताओं का प्रचर जोर प्रचर क्षिक गापक हाना चहिए विनेष रूप से देहाती जा गम

च्यासम्यूणभारतकी भावासक एकनाके लिए युवाआ दोलन किम प्रकार

महायक हा सकते हैं?

हैं जो साम्प्रदायिकता जानीयता और का हमारे देश में ऐसे तत्त्व सिक्रंय हैं जो साम्प्रदायिकता जानीयता और का तीयता का विष्य फैलाकर राज्येय मात्रा मक एकता का ताडकर अपने मकु चित त्यीय हिंतो को पूरा करता चाहन है। युवाशित ऐसे तत्त्वा का गार्ति तुवक दढ़ता के माथ मगिज तुवक कर बढ़ता के माथ कर गिज हो हिंत के नो कि स्थान कर गिज एसे नो के बिलाफ लाक्मन नया। कर।

युवाओं का अग्रणी हाय है ि जसम की समस्या किस प्रकार हल हो मकती है ?

प्रयक्त रूप से देखने से ऐसा संगता है सदम मा दोलत का नेतृ व युवका के हाम म है। जिले वास्तव मा एसा नही है परोक्त में उनकी प्ररक्त शक्ति के राज नीतिक तस्व हैं जिनकी द्रिक्ट गिला और हित गौण और दलगन हित मवापरि है।

अब आप ही देखिए असम आ दोलन ने ऐसा हिसा सक मो किया है। बहा का जन जीवन अरूप्स हा गया था बद्दारना कराव बहा की दिनव्यां हा गर्वथी तेलशोक कारखाना महाना स करपढ़ या। परिवहन व्यवस्था सग हो गर्दथी सरकारी कमचारी कय पर नहा जात था स्स स्थिति का कीन ठाक

सरकार ने आद लन कार्यों के ननाओं को पास्त्यरिक बातचीन के लिए कई वार लामि जन किया उनकी बहन सार जामि जन किया उनकी बहन सार जामि जन किया उनकी बहन सार जामि जन किया जो की सरकार इस बात की सामन्य और सका के स्वाप्त कर किया की सामन्य और सका के स्वाप्त कर किया की जा किया किया जा किया जिस के स्वाप्त किया जा किया जा किया जिस के स्वाप्त किया जा किया जिस के स्वाप्त किया जा किया जिस किया जिस किया जा किया जिस किया जिस किया जिस किया जिस किया जिस किया जिया जिस किया जिया जिस किया जिया जिस किया जिया जिस किया ज

आंप ब्स अवसर पर यवाआ। के लिए कार्डसदेग नता चान्ते।

मे अपन यस मा थिया से कहना साहगा कि वा एन के हिना के खिलाफ अंत्रण केने बार राष्ट्रपाना तत्त्वा के खिलाफ एक्ज होकर मचल कर उन कत की क्यारणनामक होना साहिए तथा प्रीनन बके प्रति वे अपनी आस्थ का बन ए रख

युवक रचनात्मक सोचे रचनात्मक करे।
— असम अण्यन का बलानम एव ४४ गम मरवण गली १३

● ४११४ ४१४४४४४४४४४४४४४४४४४४४४४४००歳●

एक सटाल

र वस स्वरूपान तसरवता अधिष्ठत । दप्रचार

एक यक्तिन नन्मन न स्व से उन्नियं अबक्तिन कर ज्वक्तर प्रभक्तीर स्मामायः । स्वायः नमार्गन्मन भ जात्र जिति जनर क्याकौतन प्रभ जपन जना नहीं पसर। रात रात सर जायना स्वार्गनमार्गजायः । क्याकौतन से मुक्तः लगीनीर दवयः । प्रमुक्तपति सत्यम का विस्तर कामल फनः । वेल तमाशे स्वार्गके विद्धे सेव पर गूलः ।।

तीन्न शूल लक्षकर वहा नीद नही ठहराय। पूज्य देशकर चैन की बाशी देय बजाय।।



जनता शांति और सद्माव बनाए रख

श्री शालवाले द्वारा व्यापक हिंसा की मर्त्सना

सार्वदेशिक आर्थ प्रतिनिधि सभा के प्रधान सासा रामगोपास झालवासे ने दिल्सी में और देश के विभिन्न स्थानों में हुई हिसा की मरसेंगा की तथा जाना जा जा खात तथा जानीय तद्भाव बनाए रखने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि बीमती इदिरा गाधी ने माल्व कीर एकता के लिए अपने प्राण न्योधावर किए। उनके बादखों के जनुसार राष्ट्रीय एकता के लिए कार्य करके ही हम उन्ह मचची अद्धाविक अपित कर सकेंगे।

स्वर्गीया श्रीमती इन्दिरा गाधी के लिए स्रार्यसमाजो मे शोकसमाए

सना प्रधान श्री सूर्व रेव भीर नहान-ती हा वर्ष गाल ने हिन्दनी की सभी बार्यसमायों से बनुरोध किया है कि वे अपने सार्गाहिक बोववेशनों मे स्व० श्रीमती इन्दिरा गाणी के लिए गोक सभाए नवा शांति यह न सो बिन करें। शोक प्रश्नावों की प्रति राष्ट्रपति, प्रधानमत्री और गृहमत्री को भेजें नवा समाचार पत्रों में भी दें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती पार्कका उद्घाटन महर्षि वयानन्त सरस्वती निर्वाणोतसव सम्पन्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती निविणी तब दिनाक २८-१०-६४ को प्रात ६-३० के १०-१५ तक महर्षि दयानन्द सरस्वती पाक मे इस जीव को समस्य समाजो केशव पुरम (बारेन्स रोत) अशोक विहार केवा !-। रानी बाग प्रवासी बाग तथा जिनगर के सहयाग से वा स्वामी इष्णानन्द जी को जम्मकता में वसे उत्साह तथा चूनवाम से मनाया गया। इस अवस्य रूप सुद्ध यह हुमा जिससे बहुता श्री एक पाजवीर सास्त्री में ।

इस जबसर पर महर्षि दयानन्द सरस्वती पाक का उद्काटन श्री दीपचन्द्र कन्दू (उपसहापीर द्वारा किया गया। इस पाक के नाम करणा कराने का अंग्र हस अंग्र के श्री निगम पायद श्री साहित सिंह जी वर्गी को प्राप्त है। जिनके व्यक्तिगत जवक प्रयासो हो दिल्ली मा पहलीबार एक बहुत करें पाक का नाम महर्षि के नाम पर रखा गया।

श्री दरवारी लाल का स्वागत किया गया। महींच का श्रद्धात्र ति देते हुए समस्त समाजो को इस पाक में प्रतिवर्ष इसी प्रकार उत्सव मनाने के लिए प्रेरणादी तथा अपना पूण सहयोग देने का वचन दिया।

हिल्ली आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूपदेव जी कास्वागत किया गया। श्रीस्वामी विजयानन्द जी ने श्रद्धाजिल देते हुए धायसमाजो को सतर्क रहकर और अधिक शक्तिसाली बनने का बाह्मान किया।

उपमहापीर श्री दीपचन्द जी बन्चु के स्वागत के लिए बाए सहदेव मन्हीजा बार्य पत्लिक स्कूल के बच्चो द्वारा बजाया गया बैण्ड वास्सव मे सराहतीय था।

बार्यं विद्यामन्दिर शायसमाज केशव पुरम (सारेन्स रोड) तचा कुसाबी हस-राज मॉडल स्कूल अखोक विहार के बच्चों के रगा रंग कार्यक्रम उपस्थित सभी जनो मोह रहे थे।

मनेन्द्र शक्ति विद्यालय जिनगर के बच्चो ने भी बासुरी वादन से ब्राजिय का अपन मोह सिया।

मुख्य प्रतिषि ने मच पर बोलते हुए अपना समाज से अट्ट सम्बन्ध बताया और कहा कि बार्यसमाज जैसी खेष्ठ सस्या ससार में कोई दूसरी नही है। उन्होंने बागे कहा कि हमे पार्टी विशेष से दूर रहकर समाज कल्याण में लगे रहना चाहिए।

श्रीमती सुषमा वार्या ने वपने मधुर गीतो से श्रोताओं को सुग्व किया। श्रीमती प्रेमशील सहेन्द्रकी उपस्थिति ने सब की शोधा से चार वाद लगा दिए।

स्वर्तीय श्री दीपबन्द जी बार्य (काति साबुन) वालों के जेव्ठ बुपुत्र श्री बेदपाल जी ने पाक के स्तम्म में लगाए गए महर्षि के नाम, नियम तथा शिक्षाओं से बुदी सीनी शिलाओं का व्यय करींब २००० घरए सहर्ष बहुन किया।

मुच टैन्ट बादि की व्यवस्था श्री दरवारी लाल थी ने स्वय कराकर समाजो को अनुनहील किया।

भारतीय संस्कृति का भ्रपमान-लता

बर्ल्य । स्वर कोकिया सता यगेषकर ने कहा है कि श्रीमती इन्दिरा गांधी की हर्या से वह सारी जारतीय सस्कृति हिल गई है, जिसमे महिलाओं के लिए विशेष सम्मान है।

लता मगेशकर ने श्रीमती गांधी को श्रद्धाजिल देने के लिए बुलाए गए एक समारोह में मजन बोलने से पूर्व यह बात कही।

हत्यारो ने श्रीमती नावी की हत्या करके हनारो सालो से चर्की बा रही भारतीय संस्कृति को चोट पहुंचाई है। उन्होंने भारत का अपनान किया है, उन्होंने भारी संस्कृति को तहरू-नहरू कर दिया लेकिन हिंसा का अवाव हिंसा नहीं है। चुचा को घुचा से समाप्त नहीं वा सकता। चुचा तो प्यार से ही समाप्त हो सकती है।

स्रार्य स्त्री समाज स्रशोक बिहार का वार्षिकोत्सव

बार्य स्त्रीसमाज अखोक विहार फेन-१ दिल्ली ५२ का १०वा वाधिकोत्सव बुक्नार दिनाक १६ ११ च के प्रायंतमाज मंदिर एक ५ व्यक्तीक निहार दिल्ली ५२ में श्रीमती सरसा महुता की प्राप्यवात में वीपहर १२।। वे भी। तक ही रहा है, जिसमें श्रीमती हा जाति वेद बाला प्राचार्यों लखनऊ विक्विबासय के बोजस्वी भाषण, श्रीमती क्रियर देवी जी तथा बन्य विद्यों कहिनों के प्रचल होंगे।

यक्ष की बहुरा श्रीमती खान्तिदेवी अग्निहोत्री तथा कविता पाठ कविश्री श्रीमती पदमा सर्मा मेरठ वालो के होगे।

सभी बार्य बहिनों ने इसमें भाग लेने के लिए जामनित किया जाता है। जार्य समाज अयोक जमोक विहार केश । F5 का वार्षिकोत्सन भी १२ ११ ८४ से १८ १२ ८४ तक होगा।

भजन श्रीपविक भी के रात्रिको हुवाकरेंगे। २००५ कोटि के विद्वानो के मायण भी होगे।

सभी बामत्रित हैं

सयोजिक श्रोमती प्रेमशील महेद्रू होगी। --पदमा तलवाड मतिणी आर्थ स्त्रीसमाज



एक सामधिक ग्रन्थ तूफान के दौर से पजाब

तुफान के दौर से पजाब — लेखक श्री क्षितीश वदालकार प्रकाशक — दि वर्ड पब्लिकेशन्स ८०७।६५ नेहरू प्लेस, नई दिल्ली १९। पृष्ठसस्या २२०, अजिल्द का मूल्य ४८)।

यह तथ्य है कि सतलुज से लैबर तक बोर लहाल से सि यू की सीमाबा तक कैना दिन्तु प्रमान का ४० वर्ष का खालता राज केवल दस वय की बल्याविधि में विदेश तथ्यान निहित्त क्याचों पारस्परिक फूट के कारण विदिश्य साम्रान्य में विलीन ही गया था। खालता राज के लारण होते ही समस्त सिख सैनिकों को निहत्त करके वेतन वेकर घरों पर वागत परने कुट्टी पर भेज दिया गया, दूसरे देवा में किसों की निहत्त करके वेतन वेकर घरों पर वागत परने कुट्टी गर भेज दिया गया, दूसरे देवा में किसों की मर्ती जन्म कर से गई तीमरे सिखों ने विना किसी विराय के हृष्यार बात विर । कुछ ही नर्यों से वेरोवगार खालया सैनिक रिखों के समूह बेतरतीब यूपने लगे। उस समस्त प्रमान का स्त का लोग सार खाल सार बेतर सार बात मार की सार सार बात मार की साम किसी में किसों के समस्त की के स्त वात सार की सिखों से मानना के पर वात मारों से बार पर सार के किसी में के का स्त वात के वे किसी पायों के हाथ के खिलोंने जन ना गए, उन्होंने जानादी की सबाई में यस जो का साथ दिया।

बात बबी जटपटी लगती है परन्तु है सी टके सच्ची कि महाराजा रणजीत सिंह के बालसा राज को समाप्त करने वाला लाड वसहीजी जूते पहनकर स्वणमन्दिर गया या जोर उसके स्वागत में बहा दोवाली मनाई गई यो स्वणमन्दिर की वाबिया अब जो को सीप दी गई यो सिंह लमा का सदस्य एक प्रत ज हो सकता या परन्तु सहवयारी हिन्दु नहीं, सन १०५७ कं स्वत जता मुद्ध में प्रते जो के विरुद्ध लोहा लेने वालो का गहार कहा गया या गोला के लिए प्राण -योखावर करने वाले नामवारी कुलावा को पण-भन्द कहा गया था।

पिछले जून मास में पाकिस्तान, अमेरिका कताड़ा और ब्रिटेन स्थित तत्वा के सहयोग से मारत के परिवासित एक से सांतिस्तान बनाने का प्रथम न पनप रहा था। विषत है वर्षों से पत्राव से हत्याओं, वर्कतियों, लटमार बीं कराजकता का नम्न नृय प्रचित्त या पढनन्त्र पृष्ठ काण्यों से करत होत्य के पत्रावत सांति हता होता है। बहा आपरेशन न्तृ स्तार करना पड़ा । आपरेशन के फलस्वरूप वह वडमन्त्र नो सकारय गया पत्राव से परिवास का नाम माहील लाया। इस बटनायक के बातनूद आत्रक्वादियों ने बुरसा सैनिकी के साध्यम से उन्हें प्रसासन है। अनुबाद के दिन भारत की लोकप्रिय प्रचानमनी की हत्या करना वी है।

पि उने वर्षों में पत्राव तूकान के भीषण दौर से गुवरा है उस दौर की भीषण प्रितिकार प्रवानन-नी इन्दिरा जी की हुना से भारतीय राष्ट्र को भी सहनी पत्नी है, पत्राव की यह सारी समस्या क्या है उसकी पृष्टभूमि किन तत्वी ने तैयार की है, और जनका समुखित क्याबात क्या हो तकता है इस सकता सामिक निवेचन प्रस्तुत सामिक कि क्या नया है राजनीति सद्वात के अध्येताओं के साथ सामान्य पाठकों के लिए भी यह सन्य उत्तरीय है।

'एकला चलो रे!'

नइ दिल्ली 'एकला चलो रे अी गुरदेव रबीडनाय की यह कविता श्रोमती इन्दिरा गांची को कुछेक चूनोदा पस दीदा कविताओं में से एक यी। इस कविता के लिए श्रोमती गांची के दिल में एक खास बगहुयी। अवसर वो इस कविता को बगला में सुनाबा करती थी।

हत्या से एक माह पूज हो एक विदेशी लडकी ने उन्हें एक कविता भेजी वी जिसे उसके दिल ने कही गहराई में छुरा था। शीमनी गांधी उस लडकी का एकता चनो भेजना न्याहरी थी इसलिए उन्होंने इस कविता के कई अनुवाद करवाए और उनमें छाटकर सुद अपनी कलम से उसमें कर बदल किए ताकि जो माजना वा कविता में चाहती हैं वो उसमें आ एक। श्रीमती गांधी ने अपनी कलम से उस लडकी को एक स्रत लिखा कि गुढदेव की कविता का मैंने यह टूटा फूटा अनुवाद किया है।

त्र्राह इदिरा।

रक्षक ही अक्षक वन जाय नहीं मिनेनों कहीं मिनेना । कुर कमीने हत्यारा ने, कैमा रचा मिनीना बात । क्षीन लियावयी हाय हमसे ? इंदिराजवाल यह नाल । कैसा विभिक्ताव अपराज यह, बोकाकुल है भारत भास ।

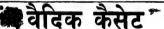
---प्रकाश प्रभाकर (सोनीपत)

इन्दिरा हत्या-योजना का ब्लूर्पिट कनाडा स्थित उग्रवादियो ने भेजा था।

नह दिल्ली ६ नवस्त्रर। दिवगत प्रधानमंत्री श्रीमती इतिरा गांधी की हत्या के खिलािन में केन्द्रीय गुप्तवर अपूरों को कुछ ऐसे सूत्र प्रिले हैं, जिनसे हत्या के यदयन्त्र में कुछ विदेशी शास्त्रों के शहरात्र में कुछ विदेशी शास्त्रों के साध्यम से आधातिया फैलाए जाने की पुष्टि हुई है। इसके साथ ही इन चौकाने वाले सुरागा से जाव की दिशा हो वदन गई।

गृहम त्रालय के सूत्रा के अनुसार श्रीमनी गांधी की हत्या के निलंतिले म गुप्त-चर ब्यूरो के प्रिकारी चार विभिन्न कक्षिया को परस्पर जाडकर आव पडतात कर रहे हैं। वे किंद्रया राम मनाहर लाहिया अम्पताल म मर्ती हत्यारा सजवत सिंह उसे अपय दिलाले बाला ज्ञानी चरणबीत मिह जो डुम्पत म घायल हाकर तीचरान अस्प ताल मे भर्ती हे और कुछ सूत्रा के प्रनुदार विदश्च भाग गया बनाया जाता है, एक विस्टब् पुलिस अभिनारी और हत्याग का एक बन्ध साथों ओ फिलहाल हिरासत म है।

दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में निर्वाण शताब्दी के ग्रवसर पर भव्य स्मारिका का प्रकाशन अपनी रचनाए ग्रोर विज्ञापन मेजिए



प्रसिद्ध फिल्मी गायक महेन्द्र कपूर द्वारा महर्षि दयानन्द की अमर कहानी सन्ध्या-यज्ञ, शान्तिप्रकरण, स्वस्तिवाचन आदि प्रसिद्ध भवनोपदेशको-

सत्यपाल पीयक, ओमप्रकाश वर्मा, पन्नालाल पीयूब, सोहनलाल पीयक, शिवराजवती जी के सर्वोत्तम भजनो क क्मन्स तथा य बृद्धदेव विद्यालकार के भजनो का सग्रह ।

आय समाज के अन्य भी बन्त स कैसेटस के सूचीपत्र क लिए लिख कुन्द्रोक्षम इलेक्ट्रोनिक्स (इण्डिया) प्रा लि प्रा माकिट || फेरा || अशोक बिकार दहली 52 फोन 7118326 744170 टैलेक्स 11-4623 AKC IN

प्राप्ति स्थान यह कैसेट तिल्ली बार्य प्रतिनिधि सभा,
 १५ हनमान रोड नई बिल्ली पर भी मिलते हैं।



30 वे सस्करण से उपरोक्त मूल्य देय होगा।

श्रद्धा-सुमन

सत्य का सदा छला जनत्य ने, रही सत्य की परम्परा थे।
छलवाता रहा सदा लयने को कभीन पाछ हटा कदम य।
बलियम पर ही चलता चीरो का कम रहा है।
विभय बीर न्व निवच उनका मम रहा है।
बलियम के बलितम छोर पर लम्पर का कुम्म करा है।
जो भी है उस छोर पे पहुचा उसने उसका वरण करा है।
बलियम के ये मनुवाती, युगयुक्त सभी कहलाते हैं।
जनमानस की लेवा कर, ये सभी अपर हो जाते हैं।
जनमानस की लेवा कर, ये सभी अपर हो जाते हैं।
उनमानस की लेवा कर, ये सभी अपर हो जाते हैं।
उनमा हुना आज नवासिक, इन्दिरा जो का नाम।
तुमने वपने अभिक्तम से मारत का ऊचा माल किया।
जो भी निक्चम लिया देशाहित पूर्ण उसे तक्काल किया।
तुम वपर मन्त्य में लीन हुई तुमको प्रणाम हमा। है।

---बानन्द रक बन्धु

इदिरा दहेज-हत्यात्रों के विरुद्ध प्रवल जनमत पैदा करने की पक्ष में थी

दिवगन प्रधानमन्त्री श्रीमती इदिरा गांधी भारतीय महिलाओं के जीवन स्तर स्त्रीर जनको स्थिति मं सुधार लाने की प्रवल समयक थो लेकिन बहु यह थी चाहती थी, कि भारतीय महिलायें भारतीय समाज की बढ़ी सस्वाधा को व्यान से रखकर सथती समस्यावा पर विचार करें।

उनका विचार था कि दूसरे देशा के महिचा आदालनो अहा पुरुषो के बराबर अधिकार प्राप्त करो का समय है और प्रार्थिय स्थिति स्वहुत अन्तर है। उनकी इच्छा था कि महिलाओं को अपने व्यक्तित के का इस उस से विकास करना चाहिए कि समाज के दिन स उसका अध्यक्षित प्रयाग हो सके। उन्होंने स्पट किया चा कि जैसे पुरव कीर महिलाओं न एक जुट हाकर भारत की आजादी के लिए सबय किया या उसी प्रकार अब प्राप्त की साजादी के लिए सबय किया या उसी प्रकार अब प्राप्त की लाजादी के लिए सबय किया या उसी प्रकार अब भारत व विकास भीर प्रयान के लिए इक्ट काम करें।

।। आ३म् ॥

आर्य जगत की शान २०० बिस्तर वाले

निर्माणाधीन नेत्र चिकित्सालय (त्रमुमानित लागत दो करोड़ रुपए) के लिए

दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि आयकर अधिनियम जी० ६० के अन्तमत करमुक्त हागी।

सारा बान चैक समीखाईर/चैक हुम्स्ट द्वारा

मन्त्री माता चननन्थी जाय बर्मांच नेत्र चिकित्सालय सी १, जनकपुरी नद्द दिस्सी ६६

के पते पर भेजा जाए।

दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर मकित किए आएगे।

निवेदक

रामगोपाल शालबान सरक्षक सूयदेव महाश्रय समपाल अवासक्रकाय आस्य चिकित्मालय प्रचान दिल्ली क्राय प्रति प्रचान आस्य सनी सहाश्रय साठ आठ प्रतिठ समा, निघिसमा केंद्रीय समा चुल्लीलाल चेरि ट्र सौज यसे सहा शासी देवा विविधित ६४४ की निगा जो प्रोग कक्ष त्र नई दिल्ली ११००१

उत्तम स्वास्थ्य के लिए गुस्कुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार की ग्रौषिघयां सेवन करें

क्षाला कार्यालय - ६३, गली राजा केवारनाव

ान न० २६६८३६

बावडी बाजार, दिल्ली-६



दिल्ली आर्य प्रतिनिधि समा का साप्ताहिक मखपत्र

मुख्य एक प्रति ५० पैसे

ne 8

रविवार १८ नवस्वर १६८४

वाय यह यर ११६०६५३०६४

३ मागशीष २०४१

दयानन्दास्य — १ ४ =

इंदिरा जी का निधन मानव मात्र के लिए महती क्षति

सभी राष्ट्रवादी शक्तिया शहादत से सीख ले : श्रखराडता की रहा करे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि समा द्वारा दोवान हाल में शांति-यज्ञ व श्रद्धांजनियां

नई दिल्ली। इन्दिरा गांधी पुग्मानवी थी, बहु भारतीयता का जीवन्त प्रमाण थी, यह मत्यन्त वेद की बात है कि प्रमान के लोगों ने बहा लावपत्राय पदमलाल होगरा बोर भगत किंद्र जो के लोगरा बोर भगत किंद्र जो कहार होगर स्थान है। अभवी इन्दिर गांधी की हत्या में अवस्य हत्या का अपराच किया। " पिवार ११ नवस्यर को प्रात १० वर्ष दोशान हाल में दिल्ली भाय प्रतिनिधि वभा द्वारा श्रीमती इन्दिरा गांधी की स्मृति में भायोजित एक श्रद्धावित समा में लोकसभा के भाष्यक्ष श्री बलराम जालक ने उक्त उदगार प्रकट करते हुए बागे कहा— खुढ आत्या, कम व तपस्या से ही यह मृणित पाप भोषा जा सकेगा। कितने दुक्त को बात है कि रक्षक ही मसक हो गया। ठीक उत्ती प्रकार भेरी एक बाकूने वाचू के क्षेत्र में सन्त हरिदास के बाद पर कम्बा कर विवास ।

इस ध्वसर पर के-प्रीय ऊर्बा गन्त्री थो पी शिवशकर ने श्रीमती इन्दिरा नाघी के प्रदिवीय गुणो व बहाबुरी की प्रशसा की । प्रमुख पत्रकार श्री शैवान द्वारका खोसमा ने श्रीमती गाणी को राष्ट्रमाता की स्वत्रा वेते हुए बननी श्रद्धावित वर्णित की । समा म सावदेशिक समा के प्रशान ताना रामगोपाल शासवाले, दीनक हिन्दुस्तान के सम्पादक श्री किनीर कुमार मिश्र बायसमात्र कृत्यन विद्वान न्यासी स्वामी सस्यप्रकाश सरस्वती आदि ने दिवनत बात्यक को बतानी प्रस्तुत करते हुए चनके उज्ज्वन व्यक्तिल एव कार्यों से प्रराण केत का प्राह्मात किया।

म्राततायियों के विरुद्ध कायवाही हो

अदार्जल सभा से गुर्व दिवगत बास्मा की सद्गति के लिए साति यह किया गया। सभा में एक प्रताद त्यों कर में भित किया गया। किया गया कि देवी विदेवी । प्रभाज्यवादी, जलगाववादी ताकतो के हुतक प्रदार है भारतीय राष्ट्र की वनता है सारताया के प्रसाद की प्रदास के प्रसाद की स्वतं हिया से भारत की स्वतं नित्त प्रसाद की प्रसाद की स्वतं नित्त की स्वतं की स्वतं नित्त स्वतं नित्त स्वतं नित्त स्वतं नित्त स्वतं नित्त स्वतं नित्त स्वतं की स्वतं नित्त स्वतं की स्वतं नित्त स्वतं स्वतं मता की स्वतं मता की स्वतं मता की स्वतं मता की वेदी पर बलिवान कर बा।

बीमती नाथी एक महान बात्मा थी उन्होंने भारत को बन्दर्राष्ट्रीय स्तर पर धम्मानवनक स्थान दिलाने मे महत्त-पूर्व भूमिका निवाही । उनका निवन केवल मारत के लिए ही नहीं विशतु मानव मात्र के लिए एक महती लाति है। इस धवसर पर सभी राष्ट्रवादी धनितयों को वनकी खहादत है सबक लेकर राष्ट्र

की प्रक्षण्डता तथा प्रमुखता के निए एक जुट होकर प्राणपण से काय करने का सकल्प लेना चाहिए।

इस समा मे उपस्थित आर्यजनो ने दिवगत आत्मा की शांति के लिए प्राथना करते हुए उनके परिवार बनी तथा मानव मात्र को सान्त्वना के लिए प्रमु से प्राचना की ! साथ ही यह प्रण भी किया गया कि श्रीमती गांधी के बताए हए माग पर बलकर सदा राष्ट्र की उन्नति के लिए काय करते रहेगे। आर्यसमाज भी राजीव गांधी के नेतृत्व में राष्ट्रीत्वान के सिए सभी कार्यों को पूरी धक्ति से पहले की ही भाति करता रहेगा। साथ ही हम सरकार से अपेक्षा करते हैं कि बातता-यियो, उसटा श्रीवा लिखने बोलने वाले देशी विदेशी समाचार पत्री सामाजिक और वार्मिक कार्यकर्ताको तथा नेताको के यिरुद्धन्याय सगत कार्यवाही की आएगी।



कर्जानन्त्री भी पी० शिवशकर श्रद्धाजिल प्रस्तुत करते हुए। बाए से लाकसभा वध्यक्ष श्री बनराम जाखड गावरशिक सभा के प्रधान श्री सालवाले को वाष्यक्ष श्री मरवाहा बादि।

इन्दिरा जी शताब्दी की सबसे महान महिला

बायसमाज लन्दन के प्रधान प्रो० सत्यदेव एन मार्ग्डाज ने ब्रिटन स्थित भारतीय उच्चायुक्त की माफन भारत के प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी को सन्दश भेजकर भारत की प्रधानमन्त्री श्रीमती हिन्दरा गांधी पर किए कायरतापूण घातक हमले की तीव मरसान करते हुए श्रीमती गांधी को देश सालान्दी की तबसे महान महिला घोषित किया है। बाखा है कि यूच परम्पराओं का पासन करत हुए भारत को समृद्ध शक्तिसाली और इसरे देखों के लिए अनुकरणीय बनाया जाएगा।

पुलिस अधिकारियों की सराहना

प्रायसमाज दीवान हाल के प्रधान थी सूपदेव ने एक प्रस वक्तव्य म पिछले दगे दौरान चादनी चौक मे क्षत्र मे स्थानीय जनता की जान माल की युरला मे स्थानीय पुलिस बिधकारियों की दूरदेखिता व काव कुशक्ता का सराहा है फलत यहां के किसी धार्मिक भी स्थान को क्षति नहीं पहुंची।

श्रद्धाजलि निमित्त हवन भजन-कीर्तन

रिववार ११ नवम्बर को ससद सदस्य एव विश्व ति भी समाज के अध्यक्ष बाजाय प्रगवान देव के सानिष्य मे १३ लोभी एस्टेट नई दिल्ली २ में विशेष श्रद्धाजिल कार्यक्रम बायोजित किया गया। इस अवसर पर विवगत प्रभानम त्री इन्दिरा गाभी की स्मृति में अद्याजलि परक हवन भजन-कीतन किया गया।



परमात्मा सब सृष्टि के उत्पादक

त्वमस्य पारे रजसो व्योमन स्वभूत्योजा अवसे भृषत्मन ।

चकुषे भूमि प्रतिमानमोजसोऽप स्व परिभूरेष्या दिवम्।। ऋ० १।५२।१२।।

जागरिस सध्य ऋषि , इन्द्र देवता, निष्टिषद्प् छन्द, धैवत स्वर। शब्दायं — हे परमैपूबमंबन् परमा-

त्त्रन् । [स्वम्] बाप [ग्रस्य] इस ससार के रिजस पृथिक्यादि सब लोको (तया) [ब्योमन] आकाश के (भी) पारे पार ग्रमीत् परे ही (अपीर) [स्वभूत्योजा] अपने अनन्त ऐश्वर्यवा परात्रमं से विराजमान हो के [पृपन्मन] दुष्टो के मन को घर्षण सर्वात् तिरस्कार करते हुए [अवसे] (हमारी रक्षा के लिए [परिभू] सब पर वर्तमान और सबको [एषि] प्राप्त हो रहे हो (किञ्च मापने) विोजस विपने बोज मर्यात् धनन्त सामध्यं से [प्रतिमानम्] अवधि सहित ठीक मान से [भूमिम्] भूमि को (क) स्व] सुब विशेष मध्य सोक, (वा) [दिवस्] परमाकाश सबवा सूर्यादि बुलोक को (तथा) [अप] मन्तरिक्ष लोक काजल (इन सबको) [बायकुथे] बच्छी प्रकार रचा है।।

व्याख्या--पृथिवी सूर्वं चन्द्रमा तारा गणादि विविध प्रकार के सब लोक लोकान्तरो की ठीक परिमाण से ज्ञान-पूर्वक रचना करने वाला परमात्मा ही है। वह भनन्त है वह इस समस्त सुव्टि के अन्दर और बाहर भी व्यापक हो रहा है। उसका पार कोई नहीं पासकता। बह ग्रनन्त ऐरवर्य वा अनन्त बल वाला भी है

धौर हमारी रक्षा के लिए दुष्टो के मनो को सदा विरस्कार कर रहा है जिससे उन को पाप करते समय भय, शका व लज्जा उत्पन्न होती है और फिर भी यदि हम दुस पाते हैं तो इस लिए कि हम इसके लिए पूर्ण पुरुषार्थनहीं करते हैं अथवा जिन को हम भूनाव द्वारा शासकाध्यक्ष (प्रधानमन्त्री मुख्यमन्त्री बादि) बनाते हें वह ऊ वे बाचार का अथवा बलवान मन बाला नहीं होता और अपने कर्तां व्य का पालन नहीं करता। यदि हम अपनी सहायता स्वय नहीं करेंगे, तो परमात्मा हमारी सहायता नहीं करेगा।

भावार्थ-परमेश्वर सबसे उत्तम और सब दुक्तों से परे अपने बनन्त ज्ञान बा बनन्त सामर्थ्य से इस समस्त बगत की बदभूत रचना करने वाला है और सर्वत्र व्यापक होकर इन सब लोकासोको की ठीक व्यवस्था भी कर रहा है भीर सब जीवो को उनके पाप-पूज्यो का फल यथोचित देकर पूर्ण न्यायथीश सिद्ध हो रहा है। ऐसे ही सभेक्ष (प्रवानमन्त्री श्रयवा मुक्यमन्त्री) को भी चाहिए कि ठीक शासन द्वारा प्रजा को सुख देवे अर्थात् कोई चोर-डाक्, हत्यारा, छसी, कपटी, विषयी, जुद्यारी, जाससी अववा विधा-हीन देश मेन रहे और प्रजा की रक्षा पूर्णतया करे।

बी० १०३, नीतिबाग, नई दिल्ली-४६



धर्मकी दुहाई।

महाभारत के युद्ध का प्रमग है। कौरवो और पाण्डवो की सेनाओं के मध्य भीषण युद्ध चल रहा था। कौरवो के पहले दो प्रधान सेनापति भीष्म पितामह और गुरु द्रोणाचार्य गुढ कोत्र से विदा हो चके थे। कौरवो की सेनाओं का नेतृत्व योद्धा कर्ण को सौपागयाथा। कर्णने एक सर्पाकार बाण डोरी पर चढाकर फेंका चतुर सारबी श्री कृष्ण ने रथ के घोडो की लगाम सीचकर उन्हें घुटनो के पर बैठा दिया। ग्य नीचा हो गया, पहिए पृथ्वी मे गड गए, कर्णका तीर सिर पर गुजरते हुए उसके मुकुट को गिरा गया, युद्र के नियमों के अनुसार कर्ज को युद्ध बन्द कर देना चाहिए था, परन्तु वह युद्ध करता रहा, श्री कृष्ण ने पहिए को निकाल दिया और अजु न लडता रहा, कुछ ही देर मे अर्जुन के तीर से कर्ण बेहोश हो गया, अर्जुन ने युद्ध बन्द कर दिया।

इतने मे कण के रब का पहिया पृथ्वी मे घस गया, कर्ण ने अर्जन को सग्राम-धर्मकी दुहाई दी तब श्रीकृष्ण ने उत्तर दिया— 'जब भीमको जहर-भराभोजन दिया था, तब तुम्हारा धर्म कहा गया था, जब माता कून्ती समेत पाण्वी का जलान के लिए लाक्षागृह का निर्माण किया गया था, तब तुम्हारा वम कहा गया था, तेरह बरस का बनवास पूर्ण होने पर जब तुम लोगो ने पाण्डवों का राज नहीं लौटाया, तब तुम्हारी धर्म की दहाई कहा गई थी, अकेले बालक अभिमन्यु को छह महारथियो द्वारा मारते समय तुम्हारा घम कहा गया या अाततायी लोगो द्वारा घम की दुहाई शोभा नहीं देती।" कर्जल डने लगा, उसक बाण से अर्जुन सुन्न हो गया। अवसर पाकर कण गाईए को गढे से निकालने लगा, तब तक अर्जुन सचेत हो गया था, उसने कर्ज के सम्मलने से पहले ही उसकी गर्दन पर निशाना जमा दिया।

श्रार्यसमाज को ऋाय का एक प्रतिशत या ऋधिक क्यों?

-- रामस्वरूप

भारत मे आयसमाज के प्रातीय सग-ठन व विदेश में राष्ट्रीय सगठन प्राथमिक (कम से कम १० सभासद्) आर्यसमाजो से बाय का १० प्रतिशत लिया करते हैं। प्रातीय सगठनो को प्राथमिक सार्यसमाओ से विकायत रहती है कि प्राथमिक सभा-सदो की बाय के बसावा धन्य बाय (किराया बादि) का भाग नहीं मिलता प्राथमिक बार्यसमाजें परेवान हैं कि समासद् उनकी आय का एक प्रतिशत नहीं देना बाहते । बहुत बोडे से ऐसे सभासद्हैं जो स्वेच्छा श्वे एक प्रतिशत या अधिक देते रहते हैं। अभी अधिक बार्यसमाज तो ऐसी ही है जिनके सारे अविकारी भी १प्र नहीं देते हैं। सभासदी मे जहातक प्रेरणाभरने की बात हैं बह कार्य तो पुरोहित एव यति कर सकते हैं। संगठन या प्राथमिक समाज के अधि-कारी तो व्यवस्था को इस प्रकार से करे कि एक प्र० मिल ही बाए, बरन् इससे मी अधिक ही मिले। प्रावनिक आर्थ-समाज में जो उपस्थिति-पुस्तक हो इसमे निम्न सूचनाए हो-१ सभासद् बनने की विकि, २ नाम । इसके साथ वर्ण-व्यवसाय-विद्या-उपाधि बादि को पैत्रक मान रसे उपनाम नहीं हो। ३ पिता का नाम या पति । अथवा पत्नी । नाम. ४ स्ववशानामः विवाहित स्त्री समा-सद्है तो उसका वद्य, पति का नही। ४ व्यवसाय। अपनी मेहनत की आय का सावन । ६ पूरा पता । जिसमे विद्ठी मिले, साथ ही कोई वर पहुचना बाहे तो पहुच सके। ७ स्व अजित आय —

अपने शारीरिक या बौद्धिक श्रम द्वारा प्राप्त बाय तो एक भाग है। यदि मेहनत की कमाई से बचत होती है जो अधिकोष (बैक) मे जमा है तो उसका ब्याज भी। साथ ही अपनी मेहनन से कोई मकान बनाया या बनाए हैं तो उनका

३१ तक सकेतित होती है। अत समासद अपने हस्ताकार जिस दिन आएगा, उस दिन कर देगा। बाय मरने का जो स्थान है उसमे भी सभासद्के हाथ की शिका-वट होनी चाहिए। कोषकार एक प्रतिशत आदिकी रसीद अपने हाथ से बनाऐ। समासद स्वय ही बाय भरेगा तो अपने का अधिक उत्तरदायी मानेगा। आमदनी के लिए जो साना (कालम) हैं उसमे से तीनो स्रोत लिसे जाएगे। हर स्रोत मे जो बाय उस मास विशेष मे होवे वह समान्द्द्वारा लिली जाए।

विना मेहनत की बाय भी हो जाती हैं। जैसे उपहार। मास या वर्ष मे जो

उपहार मिलते हैं--यदि कुछ, तो उसका भी सकेत हो। पिता या दादा आदि की ओर से मिला धन व उसका ब्याज भी जायबाद व उसका किराया ये तो उप-हार है ही। उसकी पत्नी अभिभावको से किसी प्रसग में उसको कोई वस्तु मिले या धन-सम्पत्ति बादि ये सम उपहार ही हैं। कारण इनकी प्राप्ति से उसकी अपनी मेहनत तो कुछ है नहीं। ससुरास बासी से प्राप्ति बाहे विवाह के समय सबवा विवाह के बाद में वह तो सारी उपहार

वार्यसमाज, वेद प्रतिपादित आश्रम पढित को स्वीकार करता है। किसी भी प्रकार का वश्यत वा पैतृक अथवा अस-हीन व्यविकार वेदानुकृत नही हैं। बास्रस जन्द ही बताता है, सब ओर वानी ६ दिशास्त्रों में जो हैं उनके लिए श्रम करना हैं। जत बायं समासद्होने को सार्वक करना है तो पितृबश्च-मातृबश पत्नी के माता-पिताके वशः सा अन्य किसी **से** किसी भी प्रकार का उपहार नहीं शिया जाए ≀ 'उपहार' हे जो मासिक या वार्षिक बाय है उसका एक प्रतिशत ही क्या वह तो पूरी ही वार्यसमाज को दी कारी। उषित है। यदि समासद् कही बन्य सोक कल्याणकारी सस्वाओं का भी सदस्य है तो उपहारको आयमे से उनको भी दे सकता है, परन्तु आयं सभासद्के लिए योग्य तो यही है कि अप रहित-पैतृक विधिकार वादि की बाय स्वय के उपभीग मे नहीं लें। ऐसा होने से वार्यसमाजो की आय तेज गति से बढ जाएगी। एक प्रति-शत स्वथम बाय देने से ही वायंसमाजो को जाय बच्छी मात्रा में बढ सकेगी।

समासदो की बाय का एक प्रतिकत या अधिक ? इस बारे में हर प्राथमिक आर्यसमाज मे परिचर्चा आयोजित की उण्टिचिति पिजका में दिनाक १ से जाए। किस किस प्राविमक समाज में किसने सदस्य एक प्रतिशत देगे, कितने अधिक प्रतिशत देंगे। ये आकडे भी एकत्र किए जाए। एक प्रतिशत या अधिक वासी को पदाधिकारी का प्रतिनिधि बनाने मे वरीयता दी जाए। सार्व ब्यार्थसमाज सगठन को योग्य है कि सब बाय पत्रों में यह निबन्ध प्रकाशित कराए । प्रान्तीय-राष्ट्रीय सावदेशिक सभा की जाय बढाने का वातावरण इस रीति से बनेगा।

> स्वाध्याय-सुस्र, गर्वेष कुटीर, गेदालाल मार्व, वजमेर-३०५००१

भववान् शांतिप्रव हो ।

क्षोदम् स्रानो मित्र [।] स्रावरण सानो प्रवत्वयंमा। सान इन्त्रो बृहस्पति सानो विष्णुरुरुका। ऋ०१-१०६,

यजु॰ ३६ ६, अपर्य० १९ ६६

मित्र न्वरूप भगवान् हमारे लिए सुबकारी हो, सर्वेश्वं पर परोस्वर सुबदायक हो, न्यायकारी ईश्वर हमारे लिए शांतियद हो, नियामक इन्द्र एव सत्विवेकी बृहस्पति सवा कत्याणकारी विष्णु रूप परमेश्वर हम सबके लिए कत्याणकारी हो।



शक्तियों के संघर्ष में हमारा दायित्व

वेख में बावन चाहें कियी भी दल का हो, परन्तु प्रत्येक राष्ट्रवादी को कुछ मीलिक वृतिवादी विषयों में स्पष्ट नीति घर्गीकार करनी चाहिए। बाधुनिक प्रजातन्त्री राष्ट्रों के कि तर हुसे यह घर्गीकार करना चाहिए कि देश उन्नति कैसे करे, वह किस प्रकार की रीति-नीति माशाकर करे, वह किस प्रकार को रीति-नीति माशाकर करे, वह किस प्रकार का रीति कर के बावजूद राष्ट्र को बातरिक वन्यवस्था एव बाद्य प्राप्तकाणों से सुर-क्षित करने के बावजूद राष्ट्र को बातरिक वन्यवस्था एव बाद्य प्राप्तकाणों से सुर-क्षित करने के लिए किसी प्रकार का मतभेद नहीं होना चाहिए। गण्यवाँ के राजा चित्ररथ द्वारा करेरव पत्र के ने तीवां को निरण्दार करने पर युधिष्ठिर द्वारा वपने माहयों को दी हुई सीख हमारे लिए बाज भी मागदर्यक हो सकती। युधिष्ठिर ने वपने माहयों को परापर्य दिया था—कीरन मी हैं बौर हम माई राज। हमारे बाएसी विवाद वा मनभेद हो सकते हैं, उन्हें सुक्तकाने के लिए हमें यन्तवीत होना चाहिए। परन्तु विद हमारे विवद कोई बाहरी यिन्त वाए तो हमें मिलक्ट एक तो पाच के क्या व्यवहार करना चाहिए। बाज हमारे राजनीतिक नेना स्वस्थ प्रवातन्त्र की हम भीव को मानकर राष्ट्रीय व्यवहार में कार्य के रीत ब्रनेक समस्याए मुक्तक सकती है।



चेट्ठी- आर्यसमाज सगठन और पत्री पौरोहित्य अधिष्ठाता

सावदेषिक-राष्ट्रीय-प्रदेशों को आये प्रनिनिधि समाओं में वेदप्रचार अधिराता हुना करता है। श्रीक ऐसे ही पौरोहित्य अधिकाता मी हर स्तर पर हो। सावदेशिक का पौरोहित्य अधिकाता हे। स्त्री प्रकार के राष्ट्रीय पौरोहित्य अधिकाता में हे। कि ऐसे प्रकार के राष्ट्रीय पौरोहित्य अधिकाता प्रदेश पौरो अधि का जिल्ला में राष्ट्रीय पौरोहित्य अधिकाता प्रदेश पौरो अधि कि ता प्रदेश पौरो अधि को तहे। इसी प्रकार के राष्ट्रीय पौरोहित्य अधिकाता प्रदेश पौरो अधि का हो हो हो हे हर प्राथमिक आयश्यमात्र म पुरोहित हो। सबकी विविध (शारीपिक-आसिक-आसिक-सामा-जिक) अन्ति करने की समया उत्तरन करना भी एक काय है पौरो अधि का। जिला पौरो अधि के आये प्रकार है (या कि नगरपालिका) हतर पौरो अधि का। जिला पौरो अधि के आये प्रकार है (या कि नगरपालिका) हतर पौरो अधि का सकते तो बहुत कच्छा। अवस्था तत्र तक जिला पौरो अधि आधिक आयश्यमात्र का सकते (शाम प्रचायते या नगर सक्त) तथ कर दें। सस्त योग के नाध्यम से शारीपिक-आसिक जनति तथा परिवार (था हुट्स) मधुरता से सामांबक उन्नित करन का उत्तर प्रयास कार्य के लिए। यो कि करें। योध्ठी या शिविर कोई मी एक माध्यम बनाया जा सकता है इस कार्य के लिए।

वार्यक्षमान मकन मे को पुरोहित वह बार्य समास्यो की परिवार (प्लो-स्तान) गोग्टो कराके ही नियमित क्य है । बाबयकतानुसार बाय प्ली, बाय पुत्र (वा पुत्री) इन इक्ती गोध्याम के सहाई बाए । बलार-क्ला तथा पुत्र (वा पुत्री) इन इक्ती गोध्याम के हाई बाए । बलार-क्ला तथा पुत्र परिवार के सिम्म-स्तित गोध्याम के बाद पत्री के सिम्म-सित तथा व्यक्तिगत चर्चाओं के माध्यम से पारिवारिक स्वास्थ्यवर्धन करें। तथा के सिम्मित तथा व्यक्तिगत चर्चाओं के माध्यम से पारिवारिक स्वास्थ्यवर्धन करें। तथा कि समायद के परिवार को में परस्पर मित्रत-मुद्दात बढ़ती रहे, और ये परस्पर व्यक्ति विकास करते रहे। यह कार्य इतना प्रमावधानी हो सकता है कि जो बार्य समायद नहीं से भी जाय पुरोहित की बुलोन समें । पुरोहित हर सवासद की सखानों का पूरा विवरण पुरोहित की सुन्न (वा पुत्री) के विवाद सम्बन्धी माग दर्चन कर सके। कार्य का विवरण पुरोहित की प्रवाद वा वा वाना) गौरो. बांव की । देखें कर सके। कार्य का विवरण पुरोहित की प्रवाद वा वा वा वा विवार वा विवरण से ही हो तथा जा सकता है। विवरण को में सि की स्वरण वा वो । यदि की ई समा तथार ही। जो उस को के पुरोहितों को प्रविक्षित किया जा सकता है।

--- रामस्वरूप द्वारा स्वास्थ्य-सुल, गणेश कुटीर, गेदालाल माग, वजमेर-३०५००१

"महाकवि रवीन्त्रनाथ ठाकुर भौर इतिहास चिन्तन"

शिवाजी के प्रथल से समूचे देश में एक सस्वामी उत्साह फीन गया और हमने समक्ष विचा कि देश सगिठत हो गया। परन्तु समूचे समाज कभी सारीर में पड़ी हुई दरार कीर खित्र मुल कभ से काय किया करते हैं। उनके कारण हम किसी उच्च काश्य को चिरकात तक बनाए नहीं एक सकते । शिवाजी ने इन दरारों को बंधी की बनी बनाए सहना चाहा। बहु मुनलों के बाक्षमण से एक ऐसे हिन्दू समाज की रक्षा करना चाहता था, तो जानिभेद के विभाजन और असमाज की हो जीवन का स्वाम समस्ता है। वह विचमता से भरे हुए गगा-वमुनी समाज को समूचे भारत का विज्ञा समस्ता बाहा। बहु मुनलों से बाक्षमण से एक ऐसे हिन्दू समाज की स्वाम समस्ता है। वह विचमता से भरे हुए गगा-वमुनी समाज को समूचे भारत का विज्ञा बनावा चाहता था, इसनिए मानी बहु बाजू को दीवार बड़ी कर रहा था। वह अस-भव को सम्बद्ध बनाने जा रहा था। जाति पात से बुरी तरह दवे हुए भीतर से फटे और स्विद्ध हुए हिन्दू समाज का भारत जैसे विशास सहादीप पर स्वराभ्य स्वाधित करना मनुष्य की शक्ति से बाहर और निवन के विच्छ है। (शिवाजी एण्ड हिज टाइस्ज, एक-भीव)

प्रोपक प्राथमेन्द्र घीषा, ओकार कुज, खारीबाब रोड, बडोदरा ३६०००१

स्वामी दयानन्द और महात्मा गांधी

दि ७ सक्तुबर के आयमदेश में डा कमन किशोर गोयनका ने उपशुक्त शोपक लेका के कमनीत महास्या गांधी के स्वामी रयागन्द एव आवेदमान विषयक विचारों की मुन्द विवेचना की है। यहा यह स्मरणीय है कि २६ मई १६९४ में 'यन इण्डिया' में महास्याभी ने सत्यार्थप्रकाश को एक निरावाजनक पुत्तक तथा स्वामी दयानन्द को सहिष्णु, अनुदार तथा हिन्दू थम को सकीण बनाने वाला जादि विका था। कालान्तर में दिस्सी के लावा जानवद ने नत्यनिर्थय सीपंक पुत्तक तक्कर महास्याभी की इन आपत्तियों का उत्तर दिया था। यह पथ १६३ ई से प्रकाशित हुआ था। इसका उद्ग सक्कर चहुत हो के स्वर्था की स्वर्थ स्वरूप स्वरूप इसका उद्ग सक्कर बहुत हो के स्वर्थ हो सक्कर सहास्याभी की उत्तर दिया था। यह पथ १६३ ई से प्रकाशित हुआ था। इसका उद्ग सक्कर बहुत हो हो के स्वर्थ हो सक्कर स्वरूप हो सक्कर स्वरूप हो हो के स्वर्थ हो सक्कर स्वरूप हो हो हो सक्ष्म स्वरूप हो हो सक्कर स्वरूप स्वरूप स्वरूप हो सक्कर स्वरूप स्वरूप हो सक्कर स्वरूप स्वरू

बा भवानीलाल भारतीय, चण्डीगढ़

दक्षिण एशिया की सांस्कृतिक तीर्थयात्रा

ह्वारो पर्यटक प्रतिमास भारत से याईलंड कीर विसादुर जाते हैं। उनमें से इक्ष पूर्व दिया में और भाने बढकर हाग-काम तक वले जाते हैं और कुछ जापान तक। पयटकों के लिए ये दश विशेष जाक-राम भी श्री श्री श्री श्री हिम कर स्टम भी (आसात कर से मुक्त) नगर हैं। बहा टेलीविजन, पडिया, उनी वस्त और वीदियों जादि तस्ते मुल्य पर प्राप्त किए जा सकते हैं। जापुनिक, भीविक सम्मता का उल्बंध जापान में देवने की मिलता हैं। और हामकाग तथा पटाया (वाईलंड की एक नगरी) विलासिता के प्रसिद्ध केन्द्र है। इस दक्ष भी आप पटाया (वाईलंड की एक नगरी) विलासिता के प्रसिद्ध केन्द्र है। इस दक्ष भी आप पटाया (वाईलंड की एक नगरी) विलासिता के अप स्वार्ध से आप पटाया (वाईलंड की एक नगरी) विलासिता के साम जान कर हो ना सब की ओर पटायें को साम आप कर हो हो सुवा स्वार्ध मार्थ कि है।

पर सिंगापूर के दक्षिण-पूर्व में इण्डो-नेशिया के जो बीप हैं, उनकी ओर भारत के पर्यटको का अभी ध्यान नही गया। प्रकृति की रमणीयता तथा आयुनिक सुख-साधनों की दृष्टि से ये द्वीप विश्व के किसी भी पर्यटन-स्थल से कम नहीं हैं। बाली द्वीप मे अमेरिका, आस्ट्रेलिया, जापान और यूरोप में लाको पयटक भ्रमण के लिए आते है। और दक्षिण-पूर्वी एशिया म एक पर्यटन केन्द्र के रूप में उसकी वडी स्थाति है. पर भारत से कोई भी पर्यटक या यात्री वहा नहीं जाते । यह बात इस कारण और भी अधिक आस्चर्यकी है, क्यों कि बाली द्वीप के ६५ प्रतिशत निवासी हिन्दू धम के अनुयायी हैं, और धम तथा सस्कृति की वृष्टिसे भारत के साथ उसका घनिष्ठ सम्बन्ध है। फेदल बाली में ही नहीं, श्रपितु इण्डोनेशिया के जावा व सम्बक बादि द्वीपो मे भी लाखो हिन्दुओ का का निवास है, अपरिये द्वीप सास्कृतिक दृष्टि से अब तक भी भारत से प्रभावित है। सोलहबी सदी के प्रारम्भ तक इण्डानाशया के प्राय सभी द्वीपों में हिन्दू वम का प्रचार था और वहा के राजा हिन्दू घम के अनु-यायी थे। उस समय तक दक्षिण पूर्वी एशियाका यह क्षेत्र बृहत्तर भारत का ही भंग या। पिछली चारसदियों में इण्डो-नेशिया के बहुसस्यक निवासी को इस्लाम को अपना चुके हैं पर अपनी प्राचीन सास्कृतिक परम्परात्री का उन्होन परि-त्याग नही किया है। वहा की भाषा, कला, रीति-रिवाज, त्योहार, उत्सव, मनोर्रजन आदि सब पर भारत का पूरा-पूरा प्रभाव बाज भी विश्वमान है। हिन्दू धर्म का अभी बहा लोप नहीं हुआ है। इण्डोनेशिया के जो लोग हिन्दू धर्म के अनुयायी हैं, उनकी सस्या अस्सी लाख व लगभग हैं, जिनमें से पच्चीस लाख के लग्भग बाली द्वीप मे निवास करते है, और दस लाख के लगभग सम्बक्दीप में । इण्डानशिया के ये हिन्दू भीजी, मारीश्य के सुिन स और केनीया आदि हिन्दुओं के समान गत सी बेड सी वर्षों में वहा जाकर नहीं बसे हैं। भारतीय हिन्दुओं के समान वे भी हजारो वर्षों से हिन्दू धर्म का अनुकरण कर रहे हैं। बाली द्वीप तो सध्वे अभौ में हिन्दू प्रदेश या बार्य राज्य है। कोई-कोई मारतीय हिंदू पिछली सदी मे वहा अवस्य गए हैं, और वहा के भी कोई-कोई विद्यार्थी साति निके-तन व हिन्दू विश्वविद्यालय सस्वास्त्रों मे किसा के लिए आए हैं, पर सुदूर दक्षिण-पूर्वी एशिया के इन लाखी हिन्दुको के साथ भारत का सम्बन्ध नाम मात्र का ही रहा है। गृप्तवस के काल (चौथी-छठी सदी) के परचात विद्वानों व पण्डितों की कोई भी मण्डली इस क्षेत्र मे नहीं नई, जिसके कारण इण्डोनेशिया के हिन्दू वर्न का भारत के हिन्दू धर्म के साथ सम्पर्क नही रह गया, और मध्यकास मे भारत मे जिस भवित बादोलन का प्रादुर्माव हुआ, और कृष्ण ने विष्णुके अवतार के रूप मे जो महत्त्वपूर्ण स्थान इस देख के हिंदू अर्म मे प्राप्त कर सिया, इण्डोनेशिया के हिन्द उससे अपरिचित रहे।

यह प्रसन्नता की बात है, कि इस क्षेत्र के हिन्दुओं के साथ सम्पक स्थापित करने की ओर कतिपय महानुभावों का घ्यान गया, जिसके परिणामस्वरूप हिन्दू पर्यटको की एक मण्डली भारत से दक्षिण-पूर्वी एशिया की यात्रा के लिए गई और वाई-लैण्ड तथा सिंगापुर के साथ-साथ वह जावाओर बाली द्वीपो में भी गई। इस मण्डली में बीस नर-नारी थे, जो समी सुशिक्षित एव उदबुद्ध वर्गकेथे। पराप-कारिणी सभा के प्रदान स्वामी बोमानन्द सरस्वती (अपन दा उच्च चिक्ति शिष्यो तथाएक शिष्याके साथ), चित्रकला के अप्रणानिस्य ति प्राप्य क्याकार श्री बेन्द्रे, धमस्यल कर्नाटक के प्रतिनिधि श्री लक्ष्मीनारायण आल्बा, विश्व हिन्दू परि-षद् के प्रचार-मन्त्री शांदत्तात्रीय तिवारी, आर्य वानप्रस्य आश्रम हरिद्वार के डा० मेहता, लखनऊ विश्वविद्यालय की प्रोफेसर डा० शाति देवबासा, कानपुर के प्रसिद्ध पत्रकार श्री सत्यनारायण जायसवाल, डा कमला प्रधान श्रीमती रिक्मणी देवी, श्री रामाज्ञाठाकुर बादि कितने ही सम्भ्रात एक सुशिक्षित नर-नारी इस यात्रा-मण्डली सम्मिलित हुए थे। मैं भी इस यात्रा से साथ गया था। यात्राकी सब व्यवस्था ट्रेंबल ट्रस्ट (बी, २४ निजामुद्दीन ईस्ट,) नई दिल्ली द्वारा की गई थी, और इस कम्पनी की ओर से यात्रा का प्रवन्ध श्रीमती ऊषा त्रिसा के हाथों में था। इण्डो-नेशिया की बात्रा पर गई इस प्यटक-मण्डली को सचने बनों मे भारतीय हिंदुको का प्रतिनिधि कहा जा सकता है। तीन दिन बैंगकाक तथा पटाया का परिश्रमण — डा∘ सत्यकेतुविद्यालकार

कर २५ सितम्बर, १६६४ की रात के नी बजे हम जकार्ता पहुचे । जकार्ता जावा का सबसे बढ़ा नगर है, भीर इण्डोनेशिया की राजधानी है। उसकी जनसंस्था ७५ लाइस से भी अधिक है। शान शीकत और सास्कृतिक पैमाने मे वह किसी भी आधु-निक नगर से पीछे नहीं है। अकार्ताकी भूमि पर पैर रकाते ही मुक्ते राजा पूणवर्मा का ब्यान जाया, जो छठी सदी मे इस प्रदेश का शासक या। उस समय इस नगरी का नाम अकार्तान होकर तारूम वा। राजा पूण वर्माने वहाएक नहर कानिर्माण करायादा, असिका नाम ग'मती वा। चन्द्रभागा नहर बहा पहले है विद्यमान वी, जिसे पूर्णवर्माके पिता शवाधिराज ने बनवायाया। गोमती नहर के निर्भाण के पुरा हो जाने पर राजा पूण वर्माने एक हजार गौर्वे बाह्यणो को दक्षिणा से प्रदान की थी। मैं तारूम नगरी के प्राचीन शिला लेक्यों के स्मरण में मन्त आर्थ। नमस्ते शब्द सुनकर मेरा ध्यान भग हुआ। सामन देखा, तो इण्डोने किया की पालिया मेट के हिन्दू सदस्य श्री पुष्पात्मज हमारा स्वागत करने के सिए खड़े थे। भारत से आए इतने विद्वानो को अपने देश में देखकर उन्होंने प्रसन्नता प्रकट की, और अगले दिन का कायकम निर्घारित कर हम अपने होटल मे चले गए। जकार्ता मे इसने बहुत कुछ देखा, पर ६५ एकड के विस्तृत क्षेत्र मे निर्मित लघु इण्डोनेशिया ने हमे विशेष रूप से आकृष्ट किया। इण्डोनेशिया का निर्माण बहुत से छोटे बडे द्वीपो से मिसकर हुवा है। इनके निवासियों की सभ्यता, संस्कृति, रहन-सहन तथा सान-पान बादि में बहुत अन्तर है। लगुइण्डानशिया मे विविध द्वीपो की संस्कृति को संजीव रूप से प्रस्तुत किया गया है। जावा, बासो, सुमात्रा, कलिमन्यन (बोनिया) आदि सभी द्वीपा के लिए उसी शैसी के भवन बनाए गए हैं। और उसी प्रकार के भोजन आदि की वहा व्यवस्थाकी गई है, जैसे कि उन द्वीपो मे यथायँ पाए जाते है । उनके प्राक्त-तिक दृश्य भी वास्तविकताके बनुरूप हैं। मिनी इण्डोनेशिया का अवलोकन कर सारे देश का यथार्थ आ ला के सामने स्पट हो

लबु इ होने विधा के समीप ही एक मन्य हिन्दू मन्दिर है। इस मुद्द वेश के हिन्दू किस बग से दैनिक प्रापंता-वयासना करते हैं, इसे देशने का व्यवसर दुसे इस मन्दिर में जाकर प्राप्त हुवा। साथ काल का समय था। जाठ से अधिक नर-नारी बहा उपस्थित थे। मन्दिर के प्राप्य में एक जये चनूतरे पर सब बेंटे हुए थे। इस भी एक जोर बेंट गए प्रापंता-उपा- सनाप्रारम्भ हुई। बोरम् भूमृंव स्व के गायत्री मन्त्र के साथ सन्ध्या के मन्त्रो का उच्चारण प्रारम्भ हुवा । सब उपस्थित नर-नारियों ने समवेत स्वर में वेद के मन्त्री तथा महाभारत बादि के दलोकी से प्रार्थना-उपासना की। जकात्ती के हिन्दुको की सध्या के बाद हम सबने महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा विहित विधि से सन्ध्या तथा प्रार्थना मन्त्री का पाठ किया । कैसा अद्भुतद्श्य था । हम इन्होनेशिया की भाषा नहीं समऋते थे। और वहा के लोग हिन्दी के अनिभिक्त के पर हमे परस्पर जोडने वाली हम सब मे एकात्मकता की भावना उत्पन्न करने बाली वेद शास्त्रों की वे धार्मिक एव सास्कृतिक परम्पराष्ट्र बी, जिन्हे हुमने समान रूप से विरासत मे प्राप्त किया षा। बो३म के नाम, गायत्री मन्त्र तथा वैदिक सूत्रो व महाभारत के इलोको ने हमें इस दग से एक मजबूत सूत्र में बाध रक्षा वा, कि सैकडो वर्ष बीत जाने पर भी उसके सुदुढ बधन मे ढील नही आई थी। भी पुण्यात्मज इस अवसर पर हमारे साम में। वह भी अपने देख के हिन्दुः, } के पूजा गाठ में अन्य पण्डितों के समान ही भाग ले रहे थे। पार्लियामेट के सदस्य होने के नाते उनमे उच्च व श्रेष्ठ होने की भावना प्रादुर्भुत नहीं हुई थी। हमारे स्वागत मे जकार्ता के हिन्दू मन्दिर मे जसपान की भी व्यवस्था की गई थी। हमने इन्होनेशिया के हिन्दू भाइयी के साथ बैठकर फल, मिष्ठान्न, चाय, दुख बादि प्रहण किए । सब कोई यह अनुभव कर रहे थे, कि दो सुदूरवर्ती देशों के हिंदू सैकडो वर्षों के परचात् आर ज फिर मिल कर एक साथ बैठे हैं। वर्गबीर सस्कृति की उनमे ऐसी एकात्मता है, जिसे न हजारो मीलो की दूरी शिथिल कर सकी है और न सैकड़ो वर्षों का अन्तराल।

दो दिन जकार्ताका परिश्रमण कर हम लोग जकार्ता गए। यह मध्य जावा का प्रधान नगर है। बोरोबदूर का विद्याल बौद्ध महाचैत्य उसके समीप ही है। उस की गिनती ससार के शांत आ दश्यों मे की जाती है, जिसे देखने के लिए अमेरिन यूरोप, जापान बादि सब देशों से लास्तो प्रतिवर्षं लोग अकार्ता आते हैं। इन्डो-नेश्विया का एक बन्य द्वीप सुमात्रा है। जिसके सैलेन्द्र वर्मा राजा बौद्ध धर्म के जनुवायी थे। इनकी राजधानी श्रीविजय थी। शैलेन्द्र राजा वडे प्रतापी थे। अपनी शक्तिका विस्तार करते हुए बाठवी सदी मे उन्होने जावा को भी जीत लिया या। श्रीविषय (मुमात्रा) के इस वैभवशासी बौद्ध सम्राटो ने ही जावा मे जोगजकार्ता के समीप बोरोबदूर के महाचैत्य का निर्माण कराया था। महाधैत्य नौ विशाल चवृतरो या चनकरो से मिलकर बना है,

(शेष पृष्ठ ६ पर)

श्रस्तेय-चोरी न करना

—सुरेश**चन्द्र वेदालकार** एम ए एल टी

'अस्तेय'न होने से लाखो रुपए का नुकसान सरकार को और दूसरे शब्दो मे जनता का हो रहा है। एक घटना सुनिए।

रेलवे कर्मचारियों को रेल में बिना टिकट चलने का अधिकार सरकार ने विया है या नहीं। पर उन्होंने स्वय ले लिया है। इसके लिए उन्हे एक मत सीसना पडता है। मत्र बतलाने से पर्व एक बटना सुनाक ? मैं एक बार देवरिया से गोरसपर वा रहा था। मेरे पास टिकट भी था। मैं बिना टिकट यात्रा करना अपने प्रति, जनता के प्रति और राष्ट्र के प्रति अपराध मानता ह। बहुत यात्रा भी नहीं करता, परन्त बहा मैं रेल में बैठा वा, वही मुक्छो दाई जोर तीन अप ट्रदेट सज्जन भी बैठे थे। बाते वे कुछ हिन्दी जौर कुछ अग्रेजी मे कर रहे थे। शायद रेलवे मे कुछ अच्छे क्लक थे। टिकटचैकर ने एक व्यक्ति को टिकट न होने के लिए दण्डित करने की घमकी दी और कुछ ले देकर विना रसीद के उसे छोडा और वह बागे बढ़ा और उन सज्बनो से भी टिकट मागा। उन्होने एक मन्त्र पढा। मन्त्र था 'स्टाफ'। अर्थात टिकट मागने पर स्टाफ शब्द उच्चारण किया। टिकट चैकर आगे बढा। दूसरे ने भी कहा स्टाफ'। बह तीसरे के पास पहुचा वह भी बोला **'स्टाफ । उसके बाद 🐔 था। मेरे पास** टिकट तो बापर मैंने भी साचा कि 'स्टाफ' शब्द की शक्ति का परिचय प्राप्त करू अत टिकट मागने पर बड़ी गम्भी-रता से बोला 'स्टाफ'। बाप विश्वास की जिए, वह मुक्ते भी छोड कर आगे बढ

गेट से बाहर जाते हुए भी मैंने उन लोगो के माग का मनुसरण किया। जब मैं बहा भी स्टाफ कहने से बिना टिकट दिखाए बाहर जाने लगा तो उनसे इसका अनिप्राय समभ्रते के विचार से अपने टिकट लीटाया और उन्हें उनका कर्तव्य सुफाया। पर मेरी कीन सुनता है?

जावीयता के नाम पर चुनाव लड़ने वाले, मुसलमानो और हिन्दुको की धामिक मावनाबो को उमार कर एम एल ए बनने वाले राजनीतिक नेता, महा-राष्ट्र, सहम, पजाब, बगाल राजस्थान को मारकर सम्पन्न होने बाले दूसरे प्रान्तीय सज्जन चारो की गिनती मे बाएगे। इसी प्रकार हिन्दीमापियों को हटाकर प्रस्ते के हिमायती लोग ऊची नौकरिया पाने पर स्नयबृत्ति बाले नहीं माने बाएगे? किमानो को मजदूर बना कर, राज-दिन गुलामो की माति उन्हे कर देकर उनके हारा पैया किए मुक्त के जनाव के स्पर्ण को प्रस्तुत बनावा के स्मान कर स्वाम का स्मान वाले

वाला जमीदार चीर है। मजदूरी से दस-दस घटे तक बैसो भी तरह काम करवा कर उन्हे पेट भर भोजन न देने वाला. उनके रहने की ठीक व्यवस्थान करने वाला, उनके बाल बच्चो की चिन्ता न रखने वाला और इस प्रकार घनी बनने वाला कारबानेदार चोर है। ग्रध्यापको से विद्यालय मे ६-६ वटा पढवाने वाला, उन्हे पार-पार मास तक बेतन न देने वाला, बेतन कम देकर अधिक पर हस्ता-क्षर करवाने वाला स्वय जाली हिसाब रसने वाला विश्वालय का प्रबन्धक और प्रमानामार्थक्या चोर की श्रेणी से न बाएने ? इनका कार्य बन्याय और अधर्म पर बाधारित है। किसानो पर चाहे उनके यहा बनाज हुआ हो, यान हुआ हो, मनमानी ब्याज की दर लगाने वाला, उनके अनाज को जब्त करवा कर उसके धर-बार को नष्ट करवा देने वाला, बाल-बच्चो को ग्रनाज का मोहताज बना देने बाला, स्वय मौज उडाने वाला, हृदयहीन कृपण, साहकार अधम का स्तेय का अध-शास्त्र चला रहा है। ये सभी चोर हैं। हमे समाज मे इन कार्यों के प्रति वृणा के भाव भरने होगे? परन्तु, साथ ही हम बुराई से घुणा करने वाले हो, बुरे से नही यह भी ध्यान देने बोग्य बात है।

बडी बडी खुटियों के अवसर पर रेलवे कम्पनिया जोनल टिकट चालू करती हैं, उन पर लोगों के नाम और उम्म दक रहती हैं पर बहुत से घनी और राष्ट्रीय कार्यकर्ता दूसरों के टिकटों का प्रयोग करते हैं और इसे अनुभित नहीं समम्जे।

क वहरी के जनके या पेककार से बापको मेट हुँ हो बोर हाण उठा कर तोगो को में जैन करते हुए बापू के चिन को विसाकर उगके नीचे तिसे सन्दी पूध नेना बोर देना पाप हैं की बोर मकेत किया हो तो धापको वह व्यक्ति अरा पुरुकराते हुए करी नकात बोरी विश्वास के साथ यही कहता मिनेगा, 'माई, बाप बानते नहीं, इस्का क्या मस्तक हैं? देखते नहीं राष्ट्रिया बापू हाथ उठाकर स्पष्ट कप मे अपनी अपुलियो से इसार कर रहे हैं कि प्रश्ने जो के समय जो स्वा स्पर्य की दक्षिणा या बुस की बाती थी बहु नेना-पाप उनके उसके स्थान पर पाच स्पर् केने चाहिए।

इस प्रकार उचित या अनुचित उपायो का अवस्थन करके मनुष्य धन कटोरने न तमा है। अभी आपने देश के बढे से बढे वनस्पति ज्यापारियों के गाय की नबीं वनस्पति में मिलाने की कथा सुनी ही है और उससे गाय को माता आनने वाले तथाकियत बहिसक सोम हैं। इस सेंच समाकर चौरी करने वालो को चूमा की दृष्टि में देख रहे हैं किसी के बर आकर स्थाए पर सम्य बसुय उठाते वाले को नकरत की दृष्टि से देखते हैं, परन्तु देखा जाए तो समान के सिकतर स्थितत खपने-अपने दायरे में गठकतरे, चोर, डाकू जौर जुटेरे हैं। डानरर वड रहे हैं। आज बारदरों के साथ रीत बढ रहे हैं। बतील बहररों के साथ देश हैं। बतील बहर हैं हैं। जाज का सामदर रोग को जेव रहे हैं। आज का सामदर रोग को जेव राम प्राप्त कर रहे हैं। आज का सामदर रोग को जेव राम प्राप्त कर रहे हैं। आज का सामदर रोग को जेव राम बढ रहे हैं। आज का सामदर रोग को जात साम प्राप्त के साम प्राप्त के साम प्राप्त के साम प्राप्त के साम करने के तरह हो। गोरखपुर के सिकतर को जान-मन बता करने साम करने के सामदर रोगों के विषय में कितने जन-मिक्क हैं।

अभी १०-१५ वच पूर्वकी बात है। मेरी धर्मपत्नी के कान के पास दद प्रारम हुआ। मैंने एक बाक्टर को दिसाया। यद्यपि वह कणरोग विशेषज्ञ नहीं वे परन्तु कान देसने के बाद नाक भी चढाते हुए तथा कुछ जिल्लाब्यक्त करते हुए बोले, वेदालकार जी जानते हैं, कान का पर्दा एफैक्टेड है। एफेक्टेड शब्द सुनते ही मैंने उन्हें अच्छी दवा देने को कहा। उन्हों ने ऐसी दवा डाली कि बभी तक दर्द कान और गाल के बीच में या बब वह कान के बन्दर भी होने लगा और वह छटपटान लगी। मैंने कहाडाक्टर अच्छे हैं दवा लगती है तो मबराती क्यो हो ? अब तो ५) सर्चमी हो चुके है। परन्तु उस दवा को द्वारा डलवाने को वह किसी तरह तैयार नहीं हुई और रात भर छटपटाती रही। अच्छाही हुआ, वह दवा पहती रहती तो बवस्य ही उनका कान का पर्दा जाता रहता।

अब मैं दूसरे डाक्टर के पास पहुचा। उन्होने कान देखकर जरा गम्भीरता से कहा कि कान में छेद हा गया है। आप यह दवा डालिए और लाल,पीली नीली. हरी पचासो गोलिया एक के बाद इसरी बाने को दी और १०) प्रतिदिन का नुस्खा तैयार हो गया। दिन ४-५ विकित्सा के बाद हालत वैसी की वैसी रही तो मेने उन्हें एक प्रसिद्ध डाक्टर के पास भेजा। उन्होन उसका कान साफ किया और कुछ दवाए में साने लिए बौर एक-दो इजैन्शन देकर कहा, 'मास्टर साहब, बब बस समस्टिए। पन्द्रह रुपए प्रतिदिन के हिसाव से ४-५ दिन चिकित्सा के बाद भी कोई लाभ न होने पर मैंने अपने पुत्र के साथ दूसरे प्रसिद्ध बाक्टर के यहा भेजा । उन्होंने तो गजवकरदिया। वहजब मेरेपुत्र के साथ लौटी तो उनके सिर के चारा आरेर प्लास्टर चढा हुआ या और वे एक कमाडर सी दीक्ष रही थी घर अपने ही मैंने उन्हे सैल्युट मारा अपेर कहा 'अब ठीक है।'

वह वरा उद्धिग-सी दीक्ष रही थी। परेक्षान होकर सगले दिन वह पट्टी उतार कर फेक दी बीर दर्द बरा भी कम न हुआ। जब मैंने कण रोग विशेषज्ञारकारी बस्पताल के डाक्टर की खेबा में उपस्थित होकर अपनी गाया गाई। उन्होंने कान देख कर किता स्पक्त करते हुए बड़े भें म से घर काने की सलाह दी। मैंने सोचा कि डाक्टर मरीजों से सहानुभूति रखता है बीर घर आने की स्वीकृति उन्हें दी तो तत्काल उन्होंने कहा बैसे घर पर देखने की मेरी कीम दस दप्प है पर आप अध्या-पक हैं बत आप से आठ लूगा। नेते साइएगा।

अभी उनसे निवट कर मैं घिल्ता से मेड्बाहुआ। वर आ। यहा वाकि एक दुकान पर बैठे डाक्टर को देखा। उन्होंने मरीज को देखा-अच्छी तरह देखा आखिर वे परिचित डाक्टर थे। भोडी वेर बाद अत्तन्त गम्भीर और चिन्तित मुद्रा में कहा वेदालकार जी, यह कान का दर्द नही, यह उपद्रव दात दर्द का है, और यह सावारण दात का ददं नहीं बल्कि मेरा स्याल है कि यह कैसर है। कसर? कैंसर सुनते ही मेरा दिमाग विगडा। कैसर – ठीक हो या न हो, यदि मुक्के चिकित्सा करानी पड़ी तो कहा से बाएगा पैना ? अब मैंने दात के कैसर को दिखाने के लिए दात के डाक्टर की शरण ली। उनका आयसमाज से प्रेम था- समया-माव से आते तो कम थे पर उनका परि-बार महिला बायसमाज मे आता रहता था । उन्होने कहा 'शास्त्री जी सब डाक्टर कुछ नही जानते। याद रखिए कान का दर्द यहा नहीं होगा यहा तो दात का दर्द होगा और दो तीन दिन दवा देने के बाद उन्होने दात उक्साड दिया और अब वह कैसर गायत्र हो गया, कान ठीक हो गया, विटामिन की कमी पूरी हो गई। आज भी जब डाक्टरा की याद बाती है तो हृदय काप उठना है।

२०-२२ दिन मे पूरे ४००-४५० रुपए डाक्टरा की सेवामे गए। उनके भव्य प्रासादों के निर्माण में काम आए। नया डाक्टर और वकील, बच्चापक और उपदेष्टा यजमान और पुरोहित राष्ट्रो-द्वार के लिए अस्तेय वृत्ति अपनाने का प्रयत्न करेगे। महाराज शिवाजी न सन्त तुकाराम के लिए पालकी, मदाले, बोडे और सवारिया भेजी। उन्हे देखकर तुका-राम ने कहा 'भगवन् ये बोडे ये पालकिया ये छत्र चामर सब किस लिए है ?' तुका-राम तो सेवा के लिए सेवा चाहते थ, उन्ह मोक्षफन भी नहीं चाहिए था। स्वामी श्रद्धानन्द ने कहा मोक्ष के स्थान पर दुक्षीजनताकी सेवा पुनजन्म लेकर चाहता हू। यह है अस्तय वृत्ति।

आप विक सस्कृति का दृष्टिकोण देखिए पैमा एक सामन है सा य नही, रास्ता है मजिल नहीं। यही अस्तेय वत है।

१७५, जाफरा बाजार गोरखपुर



आर्यसमाज पानीपत की सफल शताब्दी

ग्रनेक ग्रनकर णीय यञ्ज एव ग्रन्थ-प्रकाशन

भागसमाज (बडा बाजार) पानीपत को स्थापित हुए सौ वब हो चुके हैं आव समाज (बडा बाजार) पानीपत का शताब्दी समारोह बडी चूमचाम के साथ सम्पन्न हजा।

रिवरार १४ १० ६४ का बहु दस्य मध्य था अबिक आध्यसमाज के सम्मूष भारत के उच्चत्तरीय विद्वानों को जिहोंने अपना जीवन वैदिक साहित्य के अवगाहर में फ्रोक न्या सम्मान्ति किया गया। जन समाज में विद्याल मुख्य पर बैठ विद्वानों को अब्दा से कल मालाओं के साब स्वागत किया प्रत्येक को १४०० रुपए व खाल दो पुस्तकें प्रयस्ति पत्र तथा जाने जाने का माग व्यय दिया। प्रस्मानितों से एक बी अमर खहाँव श्री रामप्रसाद विस्मित की बहुन श्रीमती शाश्मी देवी जी।

समारोह के बायोबको ने जाम जनता को जानकारी के निष् जायगण दि (नवप्रविद्धि) तथा पौण्याविद्धि यही को कराने की व्यवस्था को इस बते को कराने के लिए दिवाण के बिहान भी रानाब कुल समुक्त बावजेयों को महाराष्ट्र के भी जिनहानी रामानुज ताताचाय कुम्मकोणन को तिस्तानकुष्ठ तथा प० विश्वनाथ मी हानी को जाग्र प्रदेश से आमिनत किया गया। इनकी देख रेख में सक किए गए। इन विद्यानों के विचारा को जनता ने जपार अद्यान वाति से जुना सक्षयि ने मावण सक्कृत मावा में थे।

प्रायतमाज की शताब्दियों व प्रत्य शताब्दियों के ब्रवसरों पर स्थारिका किका लने की परम्परा म बायवसाब पानीस्त ने एक नई परम्परा स्थारित की है। स्मा रिका के स्थान पर एक बय प्रत्यतित किया है। यन बीर सस्कृति के नासक रख पत्य में देर विषयक उन्यकीटि के विद्यालों के लेख हैं। जेखों की विशिवता इसी से स्पष्ट होंगी है कि उतने वेदिक गणित जैसे लेखपूण बायपामों के साथ है। इसके विशिर्त वह पुस्तक का व्यन्त चित्रों व कविताओं के साथ एक पूषक विशेषता रखती है। बायसमाज ने यह पुस्तक बय की वृद्धि से नहीं विषयु वैदिक साहित्य के प्रचार की दृष्टि से प्रकाशित की है।

सायसमाज ने इस प्रवसर पर नेत्रहोंनों के लिए भी आयोजकों ने बैं नीसिंपि में में प्राथमितिनय का प्रकाशन किया जो घोज़ ही नेत्रहोंनों के हाथों में बहुच जाएगा। है इराबाद के सामन्तित सुन्दि विकास की प्रवसनी भी वस्त्रमीय थी विसर्वे वेदानुसार सन्दिकाल को गणना चित्रित की गई थी।

"ताब्दी तथा गोह या सम्बाधी प्रस्ताव पारित हुए तथा लोगो शराब न पीने व साम साने का प्रण किया।

ान •ी सनारोह में सम्मिलिन विद्वानों की अनेक विषयो पर गोल्टिया हुई या ावरन परिवर के नाम से एक परिवद का गठन हुवा। स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वनी को सवसम्मिति से इस परिवद का प्रधान मनोनीत किया गया।

प्रधानमन्त्री पर घातक हमले की मर्त्सना

विल्लीभर की बायसमाओं में विशेष शोकसभाए

दिन्ती प्रदेश की लगनग सभी बायसमाओं ने ४ नवस्तर के दिन साप्ताहिक सत्सा के बाद बन्तर्राष्ट्रीय पुटनिरपेल बादालन को नेत्री एव बारत की प्रवानमन्त्री श्रीभनी दिदरा गांधी की निमम हत्या पतिथे खोकसभाए कर हादिक सोक एव सदस्ता प्रकट की गई साथ ही न्विगत बामा की सदस्ति के लिए सालि एव सौक मनन्त्र परिजनों की सार्थना के लिए प्रायना की गई।

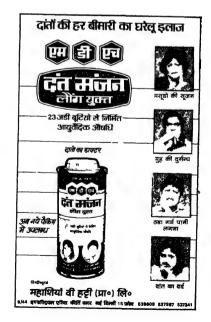
आयामाज नरेला म प्रस्ताव के बाद हिसक घटनाओं की रोकबाम के सिए मरक प्रय न करने का कनता किया। जायसमाज के पदाधिकारियों व सदस्यों की एक बाति समिति बनाई गई। जायसमाज बाजार सीताराम ने बोक प्रस्ताव के साथ कठिन परिस्थितियों म प्रथानम त्री का कायमार सम्मालने वाले श्री राजीव गांधी की सफ्तनता की कामना की। जायसमाज मदर बाजार और आयसमाज गुजराबाबा टाउन ने और गांक पुन्तक के साथ प्रथानम त्री श्रीवती इदिरां गांधी पर किए हुमने की तीज मरनना की।

बायसान मोतीनगर ने शोक प्रस्ताव स्वीकृत कर यह माग भी की कि किन लोगों क पूना जीर द्वय भरे प्रचार के परिणामस्वरूप यह पृथित आय हुवा है, वे तुरुत ऐसा पृणिन प्रचार व द कर और राजनीति को हिंसा के मुक्त करें।

दक्षिण एक्षिया की सास्कृतिक तीर्थयात्रा (पृष्ठ ४ का शेष)

जिनमें से प्रत्येक ऊपर का चक्कर अपने से नीचे वाल चक्कर की तुलनाने थोडा भीतर की बोर सिमटा हवा है। नी चनकरों या चब्तरों मे से निचने छह समकोण चतुम्ब के रूप मे है और कपर के शव तीन चक्कर बोलाकार हैं। सबसे निष्में चब्तरे या चक्कर की लबाई ४०० फुट है और सबसे ऊपर बाले की ६० फूट। महाचैत्य के चयुतरों की दीवारी पर रूपाविषया बनाई गई हैं जिनमे दुद्ध की जीवनी को प्रस्तारो पर उल्कीण किया गया है। मूर्तिकला की दृष्टि से वे रूपावाशिया बस्यत उत्कृष्ट है। इस प्रकार जो चित्रावसिया बोरोबदर के महाचैत्य पर उल्कीण हैं उन्हें यदि एक साम एक पक्ति मे लगा दिया जाए तो उनकी सम्बाई साद तीन मीस हो वाएगी। वित्रावितयों के बीच बीच मे नवाक्ष बने हैं जिनमें से प्रत्येक में ध्यानी बुदो की एक एक मूर्ति प्रतिष्ठापित है। सारे महाचैत्य मे ऐसी ४३२ मूर्तिया हैं। हमारी मण्डली से अन्तर्राष्ट्रीय स्थाति के वित्रकार भी बेन्द्रे भी थे। वह इन मृतियो और रूपावलियो को देखकर इतने अभिभूत हो गए कि उन्हेन अपना ध्यान रहा और न समय का। वे एक टक हो इस बदभूत महाचीत्य जीर उसकी उरक्रव्ट कला को देखते रह गये।

जोग जकार्ता के स्त त्र में कितने शी हिन्दू मन्दिर भी विद्यमान है। प्राम्बनन का शिव महादेव का मन्दिर इनमे सबस्थे अभिक महत्त्व का है। यह मन्दिर एक ऊने विशास चब्तरे पर बढा है। और इसके चारो बोर चार द्वार है। मन्दिर की दीबारों को खलकृत करने के लिए प्रस्तरो पर पदम पूष्पो, आदि की आकृ तियों को उत्कीर्ण किया गया है और रामायन की सम्पूण कवा रूपावलियो के रूप में व किस की गई है। पौराणिक देवी-देवताओं की भी किननी ही मूर्तिया मदिर की दीवारों के साथ निर्मित हैं। शिव महादेव के इस विशास एवं गगन चुम्बी मदिर के दौरी और दो अप मदिर हैं भौर उनसे कुछ हट कर छोटे छोटे मदिरों की शुक्रताने चारी कोर उन्हें परा हुआ है। इस प्रकार मुख्य मदिर के अतिरिक्त जो जय मन्दिर जो वन्य मदिर वहा कण्डित या अवश्वित दशामे वहा विश्वमान हैं उनकी सस्या २४० है। इस उस समय की कल्पना कर रोमान्वित हो गण जब कि ये सब हिन्दू मन्दिर पूण व अखण्डित दशा मे थे, और जब इनमे पूजा पाठ के शिए श्रद्धालु हिंदुको की भीड रहा करती थी। उस समय भगवान शिव महादेव के विशाल (शव पुष्ठ ७ पर)



समाज का कार्य देश-विदेशों मे फैलाएं

दयानन्द के स्त्रादर्श पर चलें : ऋषि मेला सम्पन्न

क्षेत्र पार्थित कर्षाव उद्यान प्रत्यात् एवं या उत्याहि व ववर हिस्त कर्षाव उद्यान में दिनाक रेक, रह, रेट कर्ष्यूवर के शिक्षाक में कराना गया। वसाराहि के ववरूप एर सक्तूबर की पावन क्ष्याकों से ऋषि उद्यान स्थित दिशाल सक्ष्याना से यज सम्पन्न क्रिया गया। २६ वक्सूबर को विस्थामित्र मेथाबी कुष्पति पुण्कुल सिराम् के बह्यात्व में वक्ष का प्रारम्भ क्ष

बेदराठ का कार्य मो रामचीर खास्त्री, प० मदनमोहन बास्त्री, प० रामचेव एव प्रो क्यंबीर बादि विद्वानों ने क्यरन किया। स्वामी बोसानन्द नी सरस्वती डा० सत्यदेव ब्रादि के वर्षांपदेख हुए। इसके वितिरत्तर इस बवसर पर बार्य कन्या महाविद्यालय की छात्राको तथा पत्रनोपदेशक की पन्नालाल की पीयूव ने अपने मबुर सगीत और अपनो छे बार्य जनता को बार्यरव का परिचय कराया।

व्यक्तिम दिन २६ वक्तूवर को यज्ञचाला में विशिष्ट कार्यक्रम सन्यास दीझा का सम्यन्त हुवा। कस्यपदेव वानप्रस्थ ने स्वामी जोमानन्त्र जी महाराज से सन्यास की दीक्षा लेकर देश में पून-पून कर वायसमाज के प्रचार का सकल्प लिया।

यज्ञ के अवसर पर जलग-अलग दिन श्री श्रीकरण शारदा शीमती कमला शारदा आई कर्मबन्द श्री गुरा सर्पलीक, श्री प्रमधिह श्री कोठारी सप्लीक श्री पुत्रम पन्दकी आयाय अल्प अलेक स्थानीय एवं वाहर से पश्चारे स्वत्रनो ने प्रवसान बनकर अपनी श्रदा पुर्ण आहार्षि प्रदान की।

ऋषि मेले का विधिवत प्रारम्भ यज्ञ के पश्चात् व्यवारीहण से हुआ। २७ अक्तूबर को प्रात काल यज्ञ के उपरान्त समा प्रधान वार्य वसत् के प्रसिद्ध सन्यासी स्वामी आमानन्य की महाराज ने ध्वज का उत्तोलन कर ऋषि मेले का प्रारम्भ किया।

इस सबसर पर स्वामी जी ने बार्यजनता का बाङ्गान किया और कहा बाज समाज को देश और विदेश में फैलाने के लिए सगठित होकर हुमें बडी सक्या में प्रपने व्यक्ति-गत कार्य को छोडकर देश-देश तक सन्देश लेकर जाना चाहिए।

बार्यसमाज भटिण्डा के नए पदाविकारी

प्रधान-- श्री रोशनकाल, उपप्रधान-- श्री अन्तरवाल, मन्त्री-- श्री कृष्णकूमार उपमन्त्री--- श्री विहारीलाल, कोषाध्यक्ष --- श्री सम्ताबी ग्राटिया, लेखानिरीक्षक --- श्री कोम्मप्रकाश मगला

दक्षिण एशिया की सास्कृतिक तीर्थयात्रा

(पुष्ठ६ काश्येष)

मन्दिर का यह चुवितृत परिसर कितना मध्य एव बाक्षंक होगा, इतनी कल्पना मे ही चित्त मे एक वात्विक मावना तथा आदा का प्राकुर्माव होने नगता है।

श्चिव-महादेव के विशाल मन्दिर के अतिरिक्त अन्य भी बहुत से मन्दिर प्राम्बनन के क्षेत्र में हैं। इनमें चण्डी कासमन, चण्डी सरी, चण्डी मेन्द्रत और चण्डी सर जोग्रड़ के मन्दिर उल्लेखनीय है। हमने इन पर भी दृष्टिपात किया और यह तथ्य स्पष्ट रूप से हमारे सम्मुख आग गण कि अब से कुछ सदी पूज तक सम्पूज जावा में हिन्दूधर्म का प्रचार था। अब जावा के बहुसक्यक निवासी इस्लाम को अपना चुके है पर उन्होंने अपनी सस्त्रति का परित्याग नही किया है। प्राम्बनन के मन्दिरों का दर्शन करते हुए इमने एक कृषक परिवार से बातचीत की। पूछने पर ज्ञात हुआ कि वे सब मुसलमान हैं, पर उस परिवार की गृहिणीकानाम सूत्री था। और सन्तान से दुष्यम्त तथा मुकीति । जावा मे सर्वत्र यही दशा है। हम चाहते ये कि पूर्वी बाबा भी बाए। इसवी सदी के द्वितीय चरण मे इन्होनेशिया की राजसिन पूर्वी जावा में कैन्द्रित होनी प्रारम्भ हो पुकी थी। वहाके सद राजा हिन्दू धर्म के अनुयायी थे, और उन्होने बहुत से मन्य व विद्यास मन्दिरो का निर्माण करावा था। पूर्वी जावा के इन मन्दिरों में सूर-

बाया मन्दिर सब ये प्रसिद्ध है। समय के बनाव से हम इनका घनकोकन नहीं कर सके। इस बीझ वे बीझ बाली द्वीप जाना बाहते ये जो वर्तमान समय में भी बस्तुत एक हिन्दू प्रदेश है। २० जितन्बर को तीयरे पहर हम बानी की राजवानी देनपार एक गए थ।

ए-१।३२ सफदरजग एन्स्लेब, नई दिल्ली-२१

ऋषि मेले पर टकारा चले

महींव दयानन्द बन्म स्वसी टकारा में टकारा ट्रस्ट की बोर से ऋषि मेला १६,१७, १८, फरवरी १६८६ को मनाया जाएगा। दिल्सी से एक विशेष रेजगाडी का प्रकल्प किया जा रहा है। इस समय ऋषि दयानन्द बन्मस्पत्ती टकारा म लन्दर्गाट्टीय उपलेख महाविष्यालय, गीधाला माहर से बाने वालिष्यों के लिए मिनिय नृह बादि कार्य पुषाक कर से चल रहे हैं। जिन कार्यों पर ट्रस्ट का बढाई लास रुगए वार्षिक व्यय हो बाता है। ऋषि मेले के ब्रवसर पर ऋषि लगर की भी ट्रस्ट द्वारा नि सुक्क व्यवस्था होती हैं। बत ऋषि मने के ब्रवसर पर ऋषि लगर की भी ट्रस्ट द्वारा नि सुक्क व्यवस्था होती हैं। बत ऋषि मने के ब्रवसर दानी महानुमात्र दक्के लिए ब्रायक से ब्रविक दान की राश्चि महान्द दाना पनि १६२६६० व्यवसा महींव दयानन्द स्मारक ट्रस्ट के उप कार्यों लय—वार्ष्यमान मनिर माग नई दिल्लों को चैक, द्वारट बयवा मनीबार्षर द्वारा विजवाने की कुण करें।

गुरकुल होशगाबाद का समुचित विकास होगा

दिनाक २१-१०-६४ को गुरुकुल हासगावाय मे व्यवस्था समिति को बैठक हुई जिससे निजंग किया गया कि, गुरुकुल की (कृषि गोशाला) यज्ञ साला का विकास सुध्यवस्थित हम से किया जाएगा। गुरुकुत होसगाबाद की व्यवस्था पर आय प्रतिनिधि समा (स० प्र० विदर्भ) ११२००० २० प्रतिवर्ष व्यय करती है। जत सानामी वर्षों में ४० एकड बसीन हरित काति के साध्यम से घाटे को कम किया बागामी वर्षों में ४० एकड बसीन हरित काति के साध्यम से घाटे को कम किया

🏄 वैदिक कैसेट

प्रसिद्ध फिल्मी गायक **महेन्द्र कपूर** द्वारा महर्षि दयानन्द की अमर कहानी

> सन्ध्या-यज्ञ, शान्तिप्रकरण, स्वस्तिवाचन आवि प्रसिद्ध भजनोपवेशको-

सत्यपाल पश्चिक, ओमप्रकाश वर्मा, पन्नालाल पीयूच, सोहनलाल पश्चिक, शिवराजवती जी क सर्वोत्तम भजनो के क्रेसट्स तथा

प बुद्धदेव विद्यालकार के भंजनों का सब्रहें। आय समाज के अन्य भी बहुत से कैसेटस के सूचीपत्र के लिए लिख किस्टोकों विषयोगिकस (बिण्डवा) क्रांति

• कुन्दाकाम इत्तरहानका (इण्डिया) आ । त 14 माकिट || फेस || अशोक विहार दहली 52 फोन 7118326 744170 टेलेक्स २1-4623 AKC IN

प्राप्ति स्थान : यह कैसेट विस्ती प्रार्थ प्रतिनिधि सभा,
 १५, हनुसान रोड, नई विल्ती पर भी सिलते हैं।

उत्तमता का एक मात्र विश्वास



पैरिस ब्यूटी सेल्स कापीरेशन

२६६५ ए/२ ब्रीडन पुरा अनमन रवारोड करोल बाग नई दिल्ली - १९०००५ ९ दूरभाष ५६९२२४ ५७४२०० -५८२०४६

ऋषि निर्माण शताब्दी हम मिलकर सभी मनाएंगे

ऋषि निर्वाण-शताब्दी हम, मिलकर सभी मनाएगे। वेद प्रचारक दयानन्द का, गुभ सदेश सुनाएगे।। लहराएने जीम पताका, दयानन्द नगर बसाएने। उढे सुसद, सुगध हवन की, वेद मन्त्र गुवाएने।। होगा बातावरण शातिमय, सकट दूर भगाएँगे। कर नष्ट अविद्या अन्यकार, सत्य माग दरशाएगे।। सभी करेंगे प्रेम परस्पर, दुव्यंबहार मिटाएगे। निज देश धर्म पर तन, मन, धन, अर्थण करना सिखलाएगे ।। पाबन वैदिक सत्य डगरिया, भूले उन्हे बताएगे। है वेद प्रमाणित सत्य ज्ञान, जन-जन को पाठ पढाएरे।। मच, मास मादक द्रव्यो से, रहना दूर सिस्ताएगे। दहेज बादिक कुत्रवाए, जग से नाच कराएगे।। सब मिच्या पन्य-विसार प्यारकी, बन्धी सथर बजाएगे। करकब्ट विकार मिटाने की, सुख जात सुधा बरसाएगे॥ कव, नीच और भेद-भाव तज, सबको गले लगाएगे। ऋषि निर्वाण शताब्दी हम, मिलकर सभी मनाएगे।।

अविष्ठाता वेद प्रचार विभाग लेब-स्वामी स्वरूपान-इ सरस्वती,

वेदविद्याजय गौतमनगर मे विश्वशांति महायज्ञ

श्रीमद्वानन्त वैदविधालय, ११६ गौतमनगर, नई दिल्ली-४६ में १८ नवस्वर से ६ दिखन्बर ८४ तक विदव धार्ति महावज्ञ स्वर्गीया प्रवानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के पवित्र सपनों को साकार करने के लिए वारों वेदों के बहुा पारावण सहायज्ञ के माध्यम से सम्पन्त होगा।

यज्ञ समय---प्रात ६ से ६ । साय--- ३ से ६ ।

बचन्य हत्या की निन्हा

वार्यसमान सङ्गापुरा वाराणधी के साप्ताहिक विधिवेशन में एक प्रस्ताब द्वारा भागत की प्रपान मन्त्री शीमदी हस्तिरा गांधी की जकत्व हत्या की नित्वा की गई। बाय समाज सल्लापुरा का होने वाला ३८ वा बाधिक स्तरस्त वो १५ नवस्वर हे १८ नवस्वर ६४ तक होने वाला वा उसको स्परित किया गया।

।। ओ३म ॥

आर्य जगत की ज्ञान २०० बिस्तर वाले

निर्माणाधीन नेत्र चिकित्सालय (ऋनुमानित लागत दो करोड़ रुपए) के लिए दिल स्रोलकर दान दीजिए

दान की राशि आयकर अधिनियम जी० ८० के अन्तर्गत करमुक्त होगी।

सारा वान चैक/मनीमार्डर/बैक ड्राप्ट द्वारा मन्त्री माता चन्ननदेवी बार्य वर्मीयं नेत्र चिकित्सालय, सी-१, जनकपुरी, नई दिस्ती-५८

के पते पर भेजा जाए।
दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर अकित किए जाएगे।

निवेदक

रागगोपाल शालवाले सरकार सुयदेव महाश्रय वमपाल बोमप्रकार वार्य चिकित्सालय एव प्रचाल, दिल्ली बार्य प्रतिः प्रचान बाय अभी महाश्रय साल बाल प्रतिल समा, निष्ति समा केन्द्रीय समा चुल्लीसाल चेरि ट्र सौजन्य से बहाश्रिया दी हुट्टी प्रा० निविद्य, १/४४ कीर्तिनमर बौचोगिक स्रोम

उत्तम स्वास्थ्य के लिए गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार की ग्रौषिधयां सेवन करें

शाका कार्यालय - ६३, वसी राजा केवारनाव

कोन न० २६६८३८

बाबडी बाजार, दिल्ली-६



दिल्लो आर्य प्रतिनिधि समा का साप्ताहिक मुखपत्र

स्थिएक प्रति ४० पैसे वय ६ अक्ष रविवार २५ नवस्वर १६६४ अन्नय स्वत्सर १६६०८५३०८४ ३ मागशीव शु० २०४१ वि० दयानन्दास्ट—१३८६

निर्वाण शताब्दी को निर्माण कार्य मे बदल दो-सभा प्रधान

दिल्ली मे महर्षि दयानन्द निर्वाण ज्ञताब्दी, व्यापक स्तर पर दिसम्बर १६८४ के

अन्तिम सप्ताह मे मनायी जायेगी।

नई दिस्ती। दिस्सी बार्य प्रतिनिधि समा के प्रधान श्री सुयदेव ने बताया । दिस्सी बार प्रतिनिधि समा दिसस्य र १८०४ में महुषि दयानन्द निर्माण सतास्थी। बायोजन कर रहा है। इस बंदगर दर बायनसङ्ग का गरेश यर कर पहचाने में सिए स्त्री में लियन स्वानों पर यह, भवन एक वेदोपदेश बायोबित किए जाएंगे। प्रधान ति की सोभावाश ध्रीर धन्तिय दिन के कार्यक्रम समूहिक कर से केन्द्रीय स्थान पर योजित किए जाएंगे। वेद तथा मार्य प्रधा के माचार पर सिल्य ट्रेंक्ट छपवाकर मंत्रकल का जनसावारण में प्रधान करने हेतु वितरित किए जाएंगे। दिस्सी के प्रदेश में प्रधान पर सिल्य ट्रेंक्ट छपवाकर में स्थान पर स्थान का जनसावारण में प्रधान करने हेतु वितरित किए जाएंगे। दिस्सी के प्रदेशन स्थान स्थान पर साथ प्रधान स्थान स्

सभा प्रवात ने दिल्ली की सभी बार्यवसावी, श्वी समाओं बी ए वी स्कूली तथा म्य साथ सस्वाती के अधिकारियों तथा वाती महानुभावी से बपील की है कि वे इस । सं को सुवाक रूप से कराने में तन, मन, वन से सहयोग में । नयोकि सहयोग के बिना हु कांस प्रव्या रूप से स्वस्था करता सभा के लिए सम्बन न हो बकेगा। उनकें गतिक सम्बन्ध स्वस्था करता सभा के लिए सम्बन न हो बकेगा। उनकें गतिक स्वता का स्वस्था कार्या । मन्त्रोने वायवनों का माह्या किया कार्या । मन्त्रोने वायवनों का माह्या किया कार्या । मन्त्रोने वायवनों का माह्या किया किया कि वै निर्माण स्वताब्दी को निर्माण कार्य में बदलने । लिए प्रदी स्वतित लगा दें।

हरियाणा प्रान्तीय आर्यवीर महासम्मेलन

बायबीर वल हरियाणा का प्रान्तीय महाधम्मेलन वो कि गत २४ नवस्वर को तिस्वन या प्रधानमन्त्री सीमती इन्दिरा गांधी की जबन्य एवं निमम हत्या के शोक से स्वित कर दिया गया था। अब पर्युहित से वह माननीय की मोमप्रकाश जो त्याणी, ह्यामनी साववेशिक काय प्रतिनिध वस्ता, नई दिन्ती की कायस्वता में मागामी १ तवा । इस्तम्बर साववेशिक काय प्रतिनिध वस्ता, नई दिन्ती की कायस्वता में मागामी १ तवा । इस्तम्बर हन खनिवार एवं रिवार को मीमनगर गुडगान से होगा। इससे १००० । सर्वीर पूण गणवेश में माग लेंगे। देश के मुखन्य युवक बाय विद्यान भी सम्मेलन को स्वीपित करेंगे

आर्यसमाज पाण्डव नगर का पांचवा वार्षिकोत्सव

श्रीमती इन्दिरा गाधी के ६६वे जन्मदिवस पर चननदेवी ग्रार्थ धमार्थ नेत्र [[]चिकित्सालय का संकल्प

—प्रोमप्रकाश प्रार्थ

महावाय चुन्नीलाल चैरिटेबल ट्रस्ट हारा सचालित माता चन्नन देवी बार्क बनायं नेत्र चिकित्सालय के बविकारियो, कर्मचारियो एव दाक्टरो द्वारा प्रातः काल यस के पच्चात् श्रीमती इत्तिरा गांधी जी को अदालित वेते हुए प्रतिवा की बर्क कि यत पाच वर्षों की फ्रांति प्रचान मन्त्री के २० सूत्री कायकम के अन्त्रगत सन्धाद्भव निवारण में कोई कसर बठा कर नहीं रखी जाएगी।

स्मरण रहे कि यत पाच वर्षों है जगातार यह चिकित्सालय स्व प्रचान मन्त्री का जन्मदिन मनाता चता जा रहा है। जिसमें नेत्र विविद लगाकर १०० ते १००० तक ति सुस्क नेत्र आपरेशन किए जाते हैं। हुआरो बच्चे एव प्रामो में आकर हुआरों माई बहुतों के नेश्च परोक्षण किए जाते हैं और बहादमा बाटो जाशी हैं। स्व प्रचान मन्त्री ओ के २० सूची कायकम के बन्तमत चिहित्सालय ने एक चतता किरा। नेत्र विकित्सालय बनाया है, जो प्राम में जाकर बहुत नेत्र विना किसी जाति चम जादि भेट प्राव के परीक्षण करता है, तथा राष्ट्रीय एकता का भी प्रचार करता है।

अखिल भारत वर्षीय श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा की ग्रोर से विदेश यात्रा

सभा प्रचान की रामलाल मलिक ने बताया कि इस मिनी विदेश यात्र के लिए दिस्सी पालम से २२ १ ८५ रात्रि को १ वजे बेकाक के लिए प्रस्थान होगा। पटेम्बा (बेकाक) बाईलेम्ब कुलाला सम्पूर, पिताश (मेरीशिया) शिगापुर, प्रवाई होठे हुए दिल्ली २७ ८५ को रात्रि २ वजे वापस प्रचेरे । विस्तृत निवारण के लिए बायसमान्न करोलवाग ५६७४५८ वार्यसमान बनारकणी ३४३०१८ श्री रामलाल मलिक १६७२६२ १६२४१० पर सम्पर्क करें।

प्रधानमंत्री राजीव गाधी के लिए दीर्घायुकामना

श्रीमती इन्दिरा गांधी की निमय हत्या पर दित्सी की विधिन आयसमाबी की विधिन वैठकों में शांति यज धौर श्रद्धाजिल मंत्राएं आयोजिन नी गयी। इन बैठकों में प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी की दीर्घांयु के लिए भी कामना की गई। आर्यक्रमाख खबोक नगर सकेनी नगर में बौर दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मन्दिर ४३ प्रार्थसमाजी तथा केन्द्रीय खाय युक्क परिवद दिल्ली में उपरोक्त खाय के स्व



परमात्मा सबको हच्छी प्रकार जानता है हम भी उन्हे जाने ?

-प्रोमनाथ एडवोकेट

विजानीह्ययानय च त्रस्यवो बहिमत रन्धयाशासदत्रतान। गानी भव यजमानस्य चोदिता विश्वेना ते सघतादेषु चाकन ।। ऋ० १।५१।।

आगिरम मध्य ऋषि इन्द्र देवना विराड जगनी छ द जैवत स्वर।

हे सबको यथा योग्य य दाव जानने बान ईश्वर । आप [आर्यान] घामिक विद्वात परोपकारी मनुष्या को [विजानीहि] विशव रूप से जानने हो चि]और मि]जा दिस्यवी चोर डाक विद्यामधाती मूख स्वाधी अनाय मनुष्य हैं उनको भी जानत हा। आरप कृतया यह जा दस्यु हैं इनको [बहिप्मत] उनम धम्य व्यवाहार आदि की सिद्धि वा शाति सम्पान कंलिए [र घम] समल नध्टकर दीजिए (तथा) यत्य भाषण ब्रह्मचय वनो से रहित अनाचारियो पर

समस्त जगत अदभूत रचना करने वाला है। और सवत्र व्यापक हाकर इन मब लोक लोकान्तरों में ठीक व्यवस्था भी कर रहा है और सब जीवों को उनके पाप-पुण्यो काफल ययोचित देकर पूण न्याया-धीश वतमान हो रहा है। ऐसे ही सभश (प्रधान मन्त्री अथवाम्ह्य मन्त्री) का भी चाहिए कि ठीक शासन द्वारा प्रजा को सुख देव अर्थात कोई चोर डाकू हत्यारा छली कपनी विषयी जुआरी देश मे जालसी अथवा विद्याहीन न रहे भीर प्रजा की गक्षा वा उसका पालन पूजतयाकरें।

बी १०२ नीति बाग नई दि ली ४६

गरुकुल शिक्षा प्रणाली की देश-व्यापकता

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के मूल मिद्धाताके विषय म पूजा जा सकता है कि आ। ज के परिवेश म वे क्या व्यवहारिक हैं? क्याउ ह कियाबित किया जामकना है? आरजका गुरु उन आ देशो पर चलन क लिए नैयार नहीं है जो हमारे क्थना नुमार गुरुकुल जिला पद्धति म मार्तीनहित हे। वह प्राचीन गुरुओं कासातपस्यामय जीवन विताना नहीं चाहता। वह कहता है कि "से नप नहीं करना दूसरों की तरह आराम की जिदगो है। उस आराम का मकान चाहिए गर्मियो मे एयर कन्डी शनर चाहिए सर्दियो मंगीजर तथा ही रर चाहिए आमोद प्रमाद क लिए रेडियो तथा टलीबीजन चाहिए। इस सबक लिए उनका वेतन दिनोदिन बढना चाहिए। जहानक शिष्यों का सम्ब घ है वे गुरु को न पिना क समान मानत है न पिता का मा उमे व्यान्य दंग्वनतं ⇒ उनकं लिए पुरुष्ट बननभागा संबक्त है अयन पन कात्रएनोकराकरना है प्राचानकाल का तरह वह अपने गृर का पूर म नकर बह सम्मान दने के लिए नैयार नहीं जो प्राचानकाल के शिष्य गुस्कुला म रहत हर अपन गम्आ का दिया करत थे। वहा तक शिशा मस्याम कुल को भावना क अनुभव करने का सम्ब ध है गुरु भी शिष्य भी उमे एक टोचिंग गाप अण्यापन की दुकान ही समऋत हैं और कुछ नही। माज जितना बडा विद्यालय है उतनी त^ने राशि शुल्क की पब्लिक स्कूलाम पढायातो वही जाता है जो अन्य सामा रणस्कूलो मे पढाया जाता है परन्तु

पिलक स्कूल के नाम से उनमे शुल्क सैकडो गुणा ज्यादा लियाजाता है। पब्लिक स्कूल—यह एक चालू मिनका हो गया है न इसमे पिन्नकपना रहा, न स्कृलपनारहा। पब्लिक स्कल यह नाम रख लिया ताकि न्याडा न्यूना शु~क वसूल कियाजासकै याबच्चो को अप्रजी रहन महन सिखा दिया जा सके।

ऐसी स्थिति मंगुरुकुल के वे भादश जिनकी पिछल लेख में चचा को गई है, कहातक समयानुकूल तथा व्यवहारिक है। अन्यापक ता वसे ही मिलगे जैसे मिल रहे हैं। बाजीविका के लिए ब॰यापन काय तरन बाल बच्चों का जीवन बनाने के लिए तप त्याग और तपस्या करने वाले

शिक्षा किही अगदर्श को सामने रख कर दी जाती है। जब ध्रयज लोग मारत आए नव इन उद्देश्य से कि राजकाज म ग्रग्रजा नया जननाक बाचसम्पक स्था पित हामक और शासन करन म सुविधा हा आग्ल िक्षा प्रणाली का सूत्रपात हुआ जिसकाश्रय मैकाल को है। इस युग मे अनक बादोलनाकाज महुआा जिनमंसे शिक्षा के क्षत्र मंजिस अगदोलन ने जन्म लियावहगुस्कुल शिक्षा प्रणाली का आदालन या। गुरुकुल निक्षा प्रणाली का बादशायाकि ऐसं व्यक्ति तैयार किए जाए जो प्राचीन वैदिक सस्कृति से बोत प्रोत हो भारतीय सस्कारो तथा बादशौ की जीवन में घटाकर देश की स्कतन्त्रता के लिए अपने को सिपाही बना सकें।

इस प्रणाली का बीज ऋषि दयानन्द

इत्त सत्याथप्रकाश मेथा परन्तु इसे मृत रूप दिया महात्मा मुक्तिराम जी ने गुरु कुल शिक्षा प्रणाली का केन्द्र हरिद्वार के समीप रस्तागया। जिस समय हरिद्वार के समीप कागडी बाममे गुरुकूल की स्था पना हई उस समय देश परतन्त्र वा और परतैत्रनाकेयगकी प्रतिक्रिया का रूप ही शिक्षाके क्षत्र मे गुरुकुल था। शिक्षा कामाव्यमहिन्दी को रखा गयाऔर रसायन गणित ज्यामिति भौतिकी आदि विषयो का ग्रग्नजी के स्थान में हिन्दी मे पढाया जाने लगा, इन विषयो पर हिन्दी मे ही पुस्तकों प्रकाशित की गई। विद्या वियोको बुडनवारी नीरदाजी जदि सिक्षाए गए। विद्याधियो की दिनचर्या ऐसी रस्ती गई जैमी सैनिको की हाती है। प्राप्त काल चार बजे उठ जाना, सध्या-उण्यसनाके बाद भिनभिन्न प्रकार क योगासन करना दड बैठक व्यामाम कृष्ती करनाजिससे खरीर पुष्ट हो सर्दी गर्भी सहना जुता घारण न करना आदि दिन चयाऐसी रसी गई जिसे देखकर वरवस कोई क्हदेता या कि यहातो मैनिक तैयार किए जात हैं।

सरकारी क्षत्रों में प्रसिद्ध वाकि गुरु कुल कागडी मे काति के सैनिक तैयार किए जाते हैं। इसी किवद-ती का सुनकर लाड नेस्टन लाड चेम्सफोड तथा बरता निया के प्रधान मंत्री रैम्जे मैग्डीनाल्ड गुरुकुल देखने के लिए आए थे। वे लोग चाहते य कि गुरुकुल सरकारी मदद ल ल ताकि काकि कातिकारियों का दल गुरुकुल से उदासीन हा जाए। महामा मुश्लीराम जीन सरकार के हाथों जाना अस्वीकार कर दिया।

स्वतत्रता प्राप्ति के बाद देश का रूप-रग बदल गया स्वत-त्रता प्राप्ति के रूप मे वेशवासियो का उद्दश्य बदल गया, उसके अनुरूप गुरुकुल शिक्षा पद्धति का सरकार से किसी प्रकारकी सहायतान लने की नीतिभी बदल गई। सरकार अपनी थी सरकार चाहती थीकि गुरुकुल शिक्षा पद्धति के म्ल सिद्धान्त बने रहे और उनमे सफलता प्राप्ति के लिए गुरुकुल पद्धति के मचालको के हाथ दृढ किए जाए। दु स की बान य≃ के कि सरकार ने जिस ‴ह इय से हम आधिक "प्यता देना गुरू किया उस उह बय का कियात्म रूप देने में हम सफल नहीं हुए। हम सफल नहीं हुए --इसकायह कारण नहीं या कि हमने सर-कारी सहायना प्राप्त करना शुरू किया हम इस कारण सफल नहीं हुए क्यों कि हम भी बहाव के साथ बह गए।

इसमे कोई सन्देह नहीं कि गुरुकुल शिक्षा पद्धति के जो बाबारभूत सिद्धान्त हैं वे शिक्षा क्षत्र में सवमान्य हैं कोई उन उनसे इन्कारनहीं कर सकता। गुरुका अपने छात्राको पुत्रवत मान कर उनके साथ देते हैं वहा पाइचात्य विद्वानो को भी जीवन दिताना, सब छात्रो का एक साथ रहना, अपने को दूसरों के साथ भाई भाई

भाई का सम्बन्ध रखना जैसा परिवार से होता है, ऊष नीय का भेदमाव न होना न जातपात का भेदभाव होना, अल्दी सोना जल्दी उठना सन्ध्योपासना करना. तपश्चर्या तथा ब्रह्मचर्यं का जीवन विताना भोजन करना और व्यायाम आदि स शरीर को हुष्ट पुष्ट बनाना-कौन सी शिक्षा पद्धति है जो इन बातों को स्वीकार न करेगी। इसी का नाम आश्रम-बास है इसी का नाम गुरुकुल बास है।

गुरुकुल कागडी की विश्वविद्यालय की मान्यता प्राप्त हो चुकी है, पर तु इस मे गुरुकुलीयता नहा आई। विश्वविद्यालय के छ।त्र साइकिलो पर चढकर बाहर से आते है, और पढकर अपने-अपन घरो की चल जात हैं प्रोफसराकाभी यही हाल है। अन्य स्कूलो कालजो की तरहवे पढ़ा-कर अपने घर बावठत हैं। रहनासहना उनका उसी तरह का है जसा दूसरे अध्या-पको काहोताहै। तपक्चर्याका किसी प्रकार का बाताबरण नहीं है। व गुरुकुल मेरहनवाल गुरुया आवाय नहीं है लेक्चरर रीडर तथा प्राफसर है।

गुरुकुल शिक्षा पद्धति का मूल। वार तो गुरकुल कामकी ही है। वतमान स गुरुकुल कागडी को दो भागा म बाटा जास्कता है। एक भागता वह है जो चालू पद्धति पर ही चल रहा है, दूसरा भागवह है जिसम गुरुकुल पद्धति के सिद्धात लागूहो रह है या हो सकते हैं। दूसरे भागका गुरुकुल कहकर हम ग्रान पहले भाग के लिए ले रह हैं। पहले भाग म छात्राकी सल्याक्षत्रिक है परन्तु वर्ठ नाममात्र का गुरुकुल है, दूसरे भाग म छात्रों की सक्या कम है पर तुबधाध म बही गुरुकुल है। इस गडबडफाले में से निकलने का उपाय यही है कि हमा दूसदे भागको इतना बढाए कि उस भाग से पढन बाले छ। त्र ही पहले भाग मे प्रविदट हो और घीरे घीरे स्थिति यह का जाए कि पहले भाग में सिर्फ गुस्कुल में शिक्षा प्राप्त छात्र ही रह बाए, ऐसे छात्र जिन्होने गृह-कुल के विद्यालय विभाग में शुरू से शिक्षा प्राप्त की हो। गरकुल शिक्षा पद्धति को देश व्यापक बनाने की पहली खत यह है कि गरकल कागडी मे विद्यालय विभाग से विष्वविद्याल विभागतक वे ही छात्र भर जाग जो गुरुकल शिक्षा पद्धति से पृत्र हा जिनका सोना जागना साना पीना, बोलना चालना, देश भूषा--सब कुछ गरकलीय हो।

जहातक पुस्तक शिक्षाका प्रश्न है हमे यह समफ्रकर चलना चाहिए गुरुकल शिक्षा पद्धति वास्तव मे जीवन की पद्धति है। शिक्षा के क्षत्र में हम जहा सस्कृत साहित्य, दशन तथा वेदादि प्राचीन ग्रन्थो एव उनकी रिसक्ष पर विशेष ध्यान पाठविधि में स्थान दते हुए यह ध्यान से (शेष पष्ठ ६ पर)

प्रभुका ग्राथय मिलता रहे

को ३म उद्वय तमसस्परि स्व पश्वन्त उत्तरमः। देव देवता सूममगम ज्योतिरुत्तममः।।

हे प्रमु, जाप समस्त चरावर जगत के बात्मा हैं मुमुक्ष वो गुणी वर्मात्माकी जीर मोगियो जावि को सब प्रकार का बानन्द देने वाले जगत के प्रवय के बाद भी निष्य स्वकृष में विराजमान सर्वाल-स्वक्य अज्ञाना पकार से परे बतमान सापको हुने प्राप्त हो।



राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानो।

बृहस्पतिवार १५ नवम्बर १६८४ के दिन दिल्ली के कास्टीटयूशन क्लब में एक विवारोत्तजक परिवर्जा हुई। परिवर्जाम तूफान के दौर मे पजाब की समस्या पर विभि न पहलुआ। चर्चासे की गई। चर्चाम भाग नेने वाले दिल्ली के कुछ प्रमुख पत्रकार थे। पत्रकार श्री सशव तसिंह ने न्हा--- पजाब की समस्याहि दूसिका सरकार और विपक्ष की दरिट से नहीं दसना चाहिए। उहींने कहा कि किसी भी स्थित म देश का विभाजन नहीं ह ना चाहिये क्यांकि अनेक विषमताक्षा के बावजर भारतीय अनेता एक ≯ा≂स अवतसर पर नवभारत टान्स्थ के सम्पादक श्रीराजे द्रसा नर ने कहा . राष्ट्रपति को सर्वापरि मानत हुए अलग पहिचान बनाए रखन वाली प्रवत्तिया का सफाया किया जाना चाहिए। जनसत्ता के सम्पादक श्री प्रभाव जोशी न कहा हि द्वा और सिनका का भारतीय दृष्टिकोण अपना कर अपनी समस्याए हल करनी चाहिए । और आध्यात्मिक परम्पराक्षांको आये बढाना चाहिए । परिचर्चा मे अभि विचारों से यह तो स्पष्ट है कि सभी वक्ता इस बात म तो सहमा थे कि अनेक वियमताओं के बावजद भारतीय जनता एक है इसलिए उसका विमाजन नहीं होना चाहिए। यह ठीक है कि विभि नताओं एवं विरोधों के बाब बद भारत एक और असण्ड रहा है पर तुयह भी ठोक है कि उसकी एक्ताको खण्डन करने के लिए व्यवस्थित ^फप्रयान किए गए है ।

उन्ते परिचया में भाषण देते हुए पण्कारा ने इस बात पर प्रकाश डाला कि कुछ वय एवं सिख पम की पथक पहचान लगमग समाप्त सी हो रही थी बहु ममाप्त न हो प्रस्पन उमकी पड़चान करना बनी रह दिसे लिए व्यवस्वित प्रयत्न किए गए। सिख प्रवा स्थाना में इस शताब्दी के प्रारम्भ में भारतीय हिंदू मिदरा में निवृत्त किए गए। सिख प्रवा स्थाना में इस शताब्दी के प्रारम्भ में भारतीय हिंदू मिदरा में निवृत्त किए गए। सिख प्रवा स्थाना में उन्त हिंद्य सासका के इसारे पर हटाया गया। इसी प्रकार पशक्त दिनो परिवसीलर का न को पटनाए हुई उनन स्पष्टत्या एक तथ्य काम कर रहा वा कि हिंदू प्रवास्थानों में अपवित्र बस्तुए कि कर दिया जाए। एक सुधा पत्रकार ने स्वृत्त किए हिंदी हिंदी स्था अए। एक सुधा पत्रकार ने वह सित कि हाई बढ़ा ति कि सिख पुरुष्त विद्यालया नामक वाणों का प्रवत्त ने वह सित कि किए वारि सात्र वाप स्था कि स्वास्था स्था सिक परस्पराओं पर कर दिया आए। और उनकी स्थासिक परस्पराओं पर कर दिया आए। और उनकी स्थासिक परस्पराओं पर कर दिया आए। और उनकी स्थासिक परस्पराओं पर कर दिया आए। बीर उनकी स्थासिक रस्पराओं पर कर दिया जाए। बीर उनकी को तर के स्थाकों है। वस्त स्थासिक प्रवार किया लाए से तर दिया पर विस्था काए से कर दिया पर विस्था का स्थान है। वस्त का के स्थासिक परस्पराओं पर कर विस्था काए। बीर उनकी को नर कर स्थासों के स्थानियों के बदानियों के सिए विदेशी साम्राध्यवारी वस्तिया मदर कर रही है।

पिछ ने दिना नानक जयली के बास पास वाकिस्तान मे परिवर्ध देशों से समय खलगाववादी उपवादी सिखों को बहु के सारका ने खुला में संस्वाह दिया। प्रधान में नी भीमती है दिया नाम के हता है सारका ने खुला में संस्वाह दिया। प्रधान में नी भीमती है दिया नाम के हता है ने पह चुला भी दी है कि प्रखुत हरादे कमत के हि या के निमित्त कोस्त्री दिवस ने पुण नाख पौण्ड निए थे। और दूनरे हत्यारे नतवन को भी ६५ हवार डालर की पनरिश्व वक्त मिनने की बात स्वीकार की है। कहा वा सकता है कि विदेशी सामाज्य की श्रामित की को यह स्वीकार नहीं है कि भारत एक एव समुक्त उहते हुए एश्विया कीर विवय की एक महाजित्त को 12 उसके के हिया खात को निवक करने के विवर प्रथानवीत है के स्वावाह मिननों को मारत की प्रधानमंत्री भीमती को भारी आर्थिक प्रलोभन एव खस्त्राधियों को मदद से भारत की प्रधानमंत्री भीमती है दिया साथी के बतासर्थिक विवस्त है का में सुर्य को स्थिति यहा हो और केन्द्रीय सत्ता किसी भी तरह निवस न हो, सान ही भारतीय साथों के मूल बाध्यास्तिक साविक तत्व एक वर्ष है हमें मिनकर रहना वाहिए सकस की पूर्त कि विवस्त स्वावाह करना साहिए के सिंद साववास्त के लिए साववास्त का संवक्त करने है हमें मिनकर रहना साहिए करने राष्ट्र को स्वव्य एव सुद्द करना चाहिए।



बहेज लानत नहीं समाज के लिए एक प्रया है

साज का प्रचलित दहेज कब्द का पूज नाम गौदान या क्यादान सा। यह सिलसिला रामचद्रजी के बक्त से चला झाया है। जैसे कि सीताजी का विवाह राम के साच हुआर या तब राजाजनक न सीता को दान करूप टबहुत मुख्य दिया था। स्रत इस्ताम गोदन या क्यादान था। मतलह यह होता है कि गाय माय में जाये अव्यति उसका लाना करमा जच्छा मिलता रहे।

प्रत्यक पारिवारिक जन अपनी प्रिय पुत्रीको प्रसन रक्षनं के लिए अपनी तरफ से ज्याराय श्यादादेने की को लिख करताहै। सांकि लडके के मानाप भी लुख रहतक। लच्काकाहक भाजर ह जाय।

एक बात समक्र मे नहीं बाती किसी की सास का जलन का खबर न_ा मिलती लक्ति जब भ**ं**त्र हया सुना है लडकान **लून्कु** भी करली माम स्मर से तग आ कर

नया ॰ पार्शे लडकी घर का क″ काम नहीं करनी। यह एक अश्रीद मामसा है। जब तक नौदान की प्रचाप्रचलित थी तब देश में यह सब कुछ नहीं हाता था। लेकिन तब में यण्ण्येज प्रचाके क्य में बाया है तभी से भगड सुक हा गय है कि तु अब भी कण्यान हे बासतीयों बीद है जो कुछ मिले सब ठीक है। अपना सब धार्ति में पन काट परोत्रे हैं।

जब लडकी काज स होता है तो घर सिक्सी प्रकार की स्वधी नहीं मनार् जानों है चण्डी को पराया नंत साना सवा है। पराये परण किस भी व्यक्ति को प्रमीती किला या परण हुँ के अब जब प्रवास को स्वधी के स्वधी साम का उन्हों है तब उसकी नौकरी को चित्र पारायों है जायक का निजेश वाली सामना है। यमे नेवा जाय नौकरी बातों मिल जाए तो सान क उपर सुहागा होता है कहा लडका पर की अपन की हैं विकाह कि जब पढ़ किसा सामना सामा तहा जाता है तो की ह्या सामित समामता साना है कितना देना पड़ना है किननी परेगानी उठानी पण्डी है। अपनी इन्बत की साविर कवों लेना पढ़ना है। क्या हुवांनी है?

बैसे देखा जाए तो दृहिन स्वय एक प्रकार का दहेव पढी लिखी नौकरी व ना है साथ सब कुछ लाई है। बगर नौकरी वाली नहीं ता उमे गहिणी सेविंग मना आता है।

सबसे महाकुर्बानी नौ साह पुत्र पुत्री को कोस मे रखा जा है सगर उसके साम मनुरु व पनि का नाम ाके नाम केसान केसा व दिस् जाता सदन वारी का नाम नहीं क्या जा बक्षा क्वांनी है प्रक व याद्यान केन मंग्र निमंत्र और म मनुष्ट रहान टाइस्वर का चार्यक्त क्यों फिर के च भ किना स्वाधि वासि रहती हैं। या असन करा जा म

वैदिक अन्त्येष्टि कर्म से सम्बन्ध नहीं

एक ऐसी बात तो ज्ञायसमाज न "े अपनी स्त्रीर प्राप्त । स्वात सीचना चाहतान। प्रधानर अधीमनो नियाधी का जा भावत। भरा अन्तर्योक्ति कम देली विचल कुरनान परशानना के नम्बदर १६६४ के दिन दिखाया गाबा उससे आयससमाज के ज्ञो की बाव व भी मुनाई देती थी। व होने प्रथमासत्र एके शांति प्रकरण के सन नयं न्या पनिषद का पाठ भी किया वा तथा गायत्रीसत्र के स्वाहाबार के साव आहंति भी नी

हुन तब का बन्कि अपेरिक का के साथ काई सम्बन्ध नहीं। क्या आपं बता कुकते हैं नि वे कीन के आया बिद्वान था। यपि कोई सज्जन वैदिक विधि से अन्त्यस्टि कुछ नहीं कराना चाहते ता आयाबिद्वान वहां जाकर हास्यस्पद क्यों बन। अद्धातनि तो सालीन बग से भी यो जा सकती है।

---सत्यदेव विद्यालकार शान्तिसदन १४५।४ सैण्ट्रल टाउन जालण्यर

पटाखो की करामात

हिनाक २४१० ८४ अक्तूबर दोपावली की रात्रिको झापके प्रिय प्राय प्रकाशन से झान लग गई यह पटाझो की करामात थी। हम प्रपने नृष्ट पर दोपावली यज्ञ कर रहे थे। प्राय दस बजे मूचना मिली आस पास के लागाने बहुत शीष्र आग पर काबूपा लिया पिर भी हवारो रूपयो का साहित्य जल गया तथा लोगो हारा सुट लिया गया। झाप लागो से साहित्क सहयोग की आशा करते हैं। खेसा कि पहल झाप हुसारे प्रकाशन से स्नेह करते हैं— करत रहेंगे।

— निलकराज साथ अध्यक्ष झाय प्रकाशन ८१४ कूण्डैवालान, अजमेरी दरवाजा दिल्ली

दक्षिण-पूर्वी एशिया को सांस्कृतिक तीर्थयात्रा

(२) बाली द्वीप में

जब हम हवाई जहाज द्वारा बाली पहुचे तब एक अद्भुत दृश्य देखने मे आया। हवाई बन्ड पर वाद्य संगीत की समाब्बाथा, और दादर्जन के लगभग बायको और गायिकाओ द्वारा मगलगान माया जा रहा था, हवाई जहाज से उतरते इष्यात्रियाकी कोर गायिकाओं की यह मण्डली जागे बढने लगो । सबके हाथो मे पुष्पमालाए तथा फूला के गुच्छे थे। हम सीच रहे थे कि इण्डोनेशिया के काई मन्त्री व उच्च प्रशासक बाली आए हैं, विनके स्वागत मे यह भायोजन किया गया है। पर हमारे बाश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जबकि स्वागत के लिए आगे बढती हुई बृत्यागनाए हमारे सम्मुख रक गई। बै हमारी मण्डली के नेता के गले मे पुष्प-ञाला डालना चाहती थी। बार्यसमाज के मुर्द्धन्य नेता स्वामी आमानन्द सरस्वती ब्रमारे साथ थे। मेरे सकेत पर जब एक क्त्यागना उनके गले मे माला डालने लगी, जी स्वामी जी को नकोच हवा। पर मेरे अनुरोधपर उन्होने यह औपचारिक कम्मान स्वीकार कर लिया। अन्य सब यात्रियो को पूष्पगुच्छ समपित किए गए । इन्हें वाली की परम्परागत कला के अनुसार अत्यन्त खुन्दर रूप से बनाया गया था। हमारे इस शानदार स्वागत का बायोजन टेवल टस्ट द्वारा किया गया था।

हमारे स्वागत के लिए बाली के अनेक हिन्दू नेता एव विद्वान भी हवाई अड्डे पर बाए हुए ये। हमने उनके साथ अगले दिन का कायकम निर्धारित किया, और इम विश्राम के लिए होटल चले गए। उन-पसार (बाली की राजधानी) के जिस ह्रोटल में हम ठहरे, वह समुद्र तट पर एक रेमणीक उद्यान संया। निवास के जिल् छोटी छोटी कुटिया बनी हुई थी। बाहर के देखने पर वे भोपडिया दिखाई देती थी, थार उनके अन्दर आरथुनिक वैज्ञानिक युग के सब सुब साधन विद्यमान थे। प्रत्येक 🖘 बरे के साथ पृथक् बाथरूम या जिसमे ठवडे पानी के साथ साथ गरम पानी के -वल भी थे। सब कमरों में टेलीफोन भी कौर उनकी सज्जा आधुनिक ढग से की गई थी, कृटी के अन्दर वैठकर ऐसा प्रवीत होता था मानो हम रमणीक प्राकृ-निक वातावरण के हरेभरे उद्यान मे अव-स्थित किसी अत्याधुनिक होटल मे ठहरे हुए हैं। ओग जकार्ताका हमारा होटल भी 🜪ळ इसीढगकाथाः जावाऔर वाली मे भारत की जो प्राचीन साम्कृतिक पर-म्पराधाभी तक सुरक्षित है, ये हाटल उसके असनरूप ही थे। इनके दरवाओं तक पर रामायण की कथा की रूपावलिया उतकीण बीं, बीर हिन्दू देवी-देवताओं के चित्र वित्रित थे।

२ हसितम्बर, शनिवार को बाक्षी की सदयन यूनिवसिटी के इन्स्ट्यूट आफ हिन्दू घम म एक विशेष आयोजन किया गया। इण्डोनेशियाने सरकार काएक विभाग धर्म मन्त्रालय (मिनिस्टी बाफ रिलीजन) ने नाम से भी है। इसके अधीन हिन्दू धम के लिए एक प्यक्डाइ-रेक्टरेट (निदेशालय) है, जिसके डाइरे-क्टर जनरल पद पर श्रीपृज याश्री पूज्य नियुक्त है। श्री पूज वेदशास्त्रो के प्रकाण्ड पण्डित है । गीता, मनुस्मृति, ईश्वोपनिषद, व्वेताश्वर उपनिषद आदिका बहु इण्डो-नशियन भाषा में अनुवाद कर चुके है, और आजकल देदों का अनुवाद करने में लगे हैं। ऋग्वेद सामवेद बीर अथववेद का वह अनुवाद कर भी चुके हैं, और इनके कुछ प्रशापकाचित भी हो गए है। इन सबका प्रकाशन इण्डोनेशिया की सरकार द्वारा किया जा रहा है। सरकार के हिन्दू हाइरेक्टरेट की ओर से बासी की उदयन यनिवर्सिटी के तत्वावधान में इस्टिट्यूट आफ हिन्दू धम का सचालन किया वा रहा है। हमारी बहुत इच्छा थी, कि इस सस्यान मे जाकर बाली के हिन्दू विद्वानो के साम सम्पर्ककरें, और वहा प्रचलित हिन्दू वर्ग के सम्बन्ध में जानकारी ब्राप्त करे। श्रीपुज के प्रयत्न से इसके लिए समुचित वायोजन की व्यवस्था हो गई। हिन्दू धर्म के ये महान विद्वान एव नेता इसी प्रयोजन से जकार्ती से एक हजार मील से भी अधिक दूरी पर स्थित डेन पसार आए थे और उनके निदेशन में हमे उस बायोजन में सम्मिलित होने का सुब-वसर मिला था जिसमे बाली के अनेक प्रमुख विद्वान् उपस्थित थे। हमे यह जान कर सुखद बाइचर्य हुआ। कि इस्टीटयूट बाफ हिन्दू धम में दो हजार के लगभग विद्यार्थी वेदशास्त्र, हिन्दू दर्शन, कमकाण्ड, पुराण, महाभारत तथा सास्कृतिक इति-हास का अध्ययन कर रहे हैं। सम्भवत भारत में भी कोई ऐसी शिक्षा सस्था नहीं है, जिसमे इतनी अधिक मस्या मे विद्यार्थी हिन्दू धर्म के बध्ययन मे रत हो।

हिन्दू घम सस्यान (इस्टिट्यूट) मे हमे बाली में हिन्दू घम का जो स्वरूप है उससे परिचय प्राप्त करने का व्यवस्था सिता। हिन्दू घम बहुत प्राचीन है। समय समय पर उनके नए विचार-सम्प्र-दायो तथा पूजा पदितयों का विकास होता रहा है। आरत वे हिन्दू यम के कितने ही स्वरूप हैं। योत, वैष्णान, वाक्त जादि विविध सम्प्रदाय हिन्दू धमं के अन्त-मंत है। अद्देतवाद, विखिष्टा द्वेतवाद और नैतवाद तीनों हिन्दू दार्थनिक विचारचार संविध्यात है। प्रतिसास पुजा के साय-साथ याजिक कर्मकाध्य और निगु ण बद्धा की पूजा को भी हिंदू वर्म में स्थान प्राध्त है। वेदशास्त्र में सामान्य क्य से निष्ठा रखते हुए भी हिन्दुओं के विविश्व सम्प्रधाने के श्रेष प्रधाने के प्रवाद तथा दाश्यनिक मन्तव्यों में मारी बन्तर है हुस दशा में बस्तामात्रिक नहीं है, कि भारत से हुजारों मोल की दूरी पर स्थित वाली के हिन्दू यम की पूजा परित्य मारत के हिंदू अमें से कुछ भिन्त हो सक्षप में उसका परिव्य महत्त है। बाधी के हिंदू यम के पाच मूज सिद्धात हैं। एनेस्वरवाद, बातमा की अमरता, पुजनम्म, कमफल और मोला। ईस्तर एहें। बहाने कि से ही सी कप है। सहार परिदे के उत्पादक के स्थान में ही तीन कप है। सुर्विष्ठ के उत्पादक के कप में ईस्तर सह्या

— डा० सत्यवेतु विद्यालकार

कहता है। सुब्टि के पालनकर्ता के रूप मे उसे विष्णुक हते हैं और जब वह सुध्ट को अपने में विलय कर लेता है तो उसे शिवयामहेश की सजादी जाती है। बाली के हिन्दू यह नहीं मानते कि शिव सुध्टिका सहार करता है। उनका सत है कि सब्दिया प्रकृति भी बनादि व अनन्त है। प्रलय में परमेश्वर सुष्टिका विश्वय करता है, सहार नहीं । विश्व की इस सर्वो-परि शक्ति को बाली के हिंदू शिव महोदय कहते हैं। वही उनका प्रधान या एकमात्र उपास्य देव है। जिसे हम मृत्यु कहते हैं, वह बस्तुत खरीर की मृत्यु होती है, आत्माकी नहीं। बाल्माभी अंतर तथा अमर है। पच महाभूतो से निर्मित शरीर के अन्त के साथ आत्मा का अन्त नहीं हो जाता। अपने कर्मों के अनुरूप आत्मा का पुनजंन्म होता है।

मन्यकाल में इण्डोनेशिया के हिंदू देवी देवताओं की प्रतिमाओं को मन्दिरों में प्रति-व्यापित कर उनकी पूजा किया करते थे. पर बर्तमान समय ने बाली के हिन्दुओं की पूजा पद्धति के प्रतिमाओं या मूर्तियों की पूजा का स्वान प्राप्त नहीं है। वहा प्रत्येक परि-बार के घर में एक पुजास्थल होता है। जिसके एक भाग को पद्मासन कहा जाता है। पद्मासन मे पश्चिगर के लोग त्रिसच्या करते हैं। त्रिसध्या के मनत्र वेदछास्त्रो से लिए गए हैं। मन्त्रोक्वारण करने के परचात् ध्यान किया जाता है। इस बहा-यक के अतिरिक्त अन्य यक्त भी किए जाते हैं, पर केवल विशेष अवसरो पर। पितरो की पूजा बाली से प्रचलित है भीर परि-बार के पूजास्थल का अन्य भाग इसी नुजा के लिए प्रयुक्त किया जाता है। परिवार के पूजा स्थलों के अतिरिक्त प्रत्येक ग्राम मे एक-एक केन्द्रीय पुजास्थल (जिसे बासी में 'पूर' कहते हैं) होता है। जो सार्वजनिक सामूहिक पूजा के काम बाता है। इसी

प्रकार प्रत्येक जिले मे एक एक केन्द्रीय पुजास्वल या 'पुर'की सत्ता है और सम्पूर्ण बाली का एक सर्वोपरि या सावभीम मन्दिर है, जिसे वे साखी का मात् मन्दिर कहा साता है। यह केवल बाली के हिंदुओ का नहीं अपित सम्पर्ण इण्डोनशिया के हिंदुओं का सबप्रधान 'दुर' है और यहा पूजाके लिए सारे देशा के श्रद्धाल नर-नारियो का भागमन होता रहता है। विश्व हिन्दू परिषद ने इसे विश्व भर के हिन्दुको के लिए तीर्थ के रूप में स्वीकार कर लिया है और अब भारत के हिन्दुओं के लिए भी इसका यही महत्त्व हो गया है, जो बदीनाय या रामेश्वरम का है। यद्यपि बाली में मूर्तिपूजा का प्रचलन नहीं है, पर कतिपय देवमूर्तिया जब भी बहा विद्यमान हैं, और बनता उनके प्रति श्रद्धा भी रखती है। ऐसी एक प्रतिमा भगवती दुर्ग की है।

इध्योनेषिया के हिन्दुकों का यह विद्वास है, कि महां अगस्त्य ने बहा मा कर वर्म का प्रचार किया था। सागस्य के प्रति उनकी अगाध अद्या है हमने वह अगस्त्य गुफा भी देखी, जहां महांच ने तपस्या की वी बौर वहा रहकर उन्होंने वर्म की स्थापना की थी। अगस्स के रवनान् महांच माकच्येय स्थोनेशिया गए थे। वहां के हिन्दू वर्म तस्यापक के रूप से उनका भी संध्येषक आदर करते हैं। गुण-वर्मा नामक एक सन्ध्य भाषामें भी दक्षिण पूर्वी एशिया के लोज से बम प्रचार के लिए गुष्वे साली के लोग उन्हें भी सम्मान-पूर्वक स्माण करते हैं।

जनताके जीवन परहिन्दूधर्मका क्याप्रभाव पडता है ? इस विषय से श्री डाक्टर शर्माने हमे कुछ महत्त्वपूण बातें बताई। डा॰ शर्मा असम (भारत) की गौहाटी युनिवसिटी मे सस्कृत विभाग के बच्यक्ष है, और गन सवा साल से बाली की उदयन यनिवर्सिटी में डेप्टेशन पर जाकरसस्ट्रत के प्रोफेसर पद पर काय कर रहे हैं। उन्हें इण्डोनशिया भाषा का समुचित ज्ञान है, और वाली के जनजीवन का उन्डे बच्छा परिचय है। उन्होने हमे बताया कि सवा साल के बाली निवास मे चोरी की कोई बारदात चनके सुनने मे नहीं बाई। वहां के लोग बापस में सहते-मगबते भी नहीं है। यदि किन्ही की मोटर साइकिले जापस मे टकरा जाए, और किसी को चाट भी लग जाए, पर वे लडने या एक दूसरे को दोष देने के बजाय मूस-कराते हुग ओ ३ म्स्वस्ति 'कहकर अपने-अपने रास्त पर चले जाते हैं क्यों कि वे कमफान पर विश्वास रखत हैं, केव मानते हैं कि जिसका दोष होगा उसे परमेश्वर कर्मफल देगा ही, परस्पर लडने से क्या लाभ । हिन्दू समाज का ऐसा ही उज्ज्वल रूप चीनी यात्री फाहियान ने भारत से

(शेष पृष्ठ ५ पर)

मानव-जीवन का सर्वश्रष्ठ मार्ग

बैदिक साहित्य और साथ ही सस्कृत साहित्य के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि पश-पक्षी. कीट-पतग---रेगने इत्यादि योनियों के प्राणि अधम स्तर के हैं, भीर भयकर पापो के फलस्वरूप हैं। अधववेद द ४२२ मन्त्र 'उल्**यमातु**' इत्यादि के अनुसार उल्लु, भेडिया, कुत्ता, चिडिया (कोक) गिद्ध, गरुडर ६ राक्षमो से बचने और इन्हें समाप्त कर देने की प्राथना की गई है। इसके विपरीत देनिक यज्ञ है जिस मन्त्र को ४ बार पढा जाता है -- 'अयन्त इध्म आत्मन्'मे प्रजा, पशु, ब्रह्मब्बस, अन्न और अन्न को खाने वाले 'अन्नाघ इनकी बुद्धिकी प्रार्थना की गई है। यज से पूर्व स्वतिबाचन के मन्त्रों में प्राथना की गई है - 'गौपतीस्थात बहीय जमानस्य पश्नृ पाहि' गौए के स्वामी हो और यज-मान के पशुकों की रक्षा करो। शान्ति करण के मचो मे 'समुसन्तु गाव' शानो अस्तुद्विपदे चतुष्पदे' और 'खी शान्ति' सत्र में तो जब चेतन सब प्रकार के पदार्थी मे और उनके द्वारा शान्ति की कामना की गई है।

धमानव योनि, प्रेरक आवर्श

इसके साथ यह भी ध्यान देने योग्य तथ्य है कि साहित्य-विशेषत 'सस्कृत साहित्य' में श्रेष्ठ गुणों की जितनी उपमाए है, वे सब पशु-पक्षियो अववा अचेतन यदायों पर हैं। उदाहरण के लिए शक्ति और पराक्रम के लिए सिंह, सौन्दम के लिए कमल, पवित्रता और शुद्धता के लिए हस' अदृष्ट योगी जनो के लिए परम हस, मीठे स्वर और नान के जिए को किल जाशा और प्रतीक्षा के लिए 'चातक' सम्रहकी भावना के लिए मधुकर (भ्रमर), भारत का राष्ट्रीय पक्षी 'मयूर' कानन्द अवस्था मे नावने वासा, प्रसन्न, सुन्दर नासिका के लिए तोता (शुक), आशा में बठने के निए बातक, बालाकी-बूतता के निए सोमडी, स्वमिभन्ति के लिए कृता, सीवा सरल व्यक्ति के लिए गी, परिश्रमी के लिए बैल, अन्धकार में भी प्रकाश के लिए जुगनू, सेवा अपैर परिश्रम के लिए हाची, मस्ती बौर उछल-कृद के लिए मृग, मेह-नत के लिए बैस, चचलता के लिए बदर, भूर्तताके लिए गीदड टेडेपन के लिए सप इसी प्रकार वृक्षी में कल्पद्रुम, चन्दन, पारिक्षति चम्पक, अशोक, मालजी, केतकी दाडिम,द्राक्षा, नारियल, शाल्यलि नीम, इक्षु (गन्ना), कपास, करीर, बास, सता इत्यादि चेनन अचेतन पशु-पक्षी, पदार्थ इत्यादि की उपमाओं से भारत का संस्कृत साहित्य भरापडाहै जब कि मनुष्य सबश्रेष्ठ प्राणि कहा जाता है।

ध्र व सत्य मानव सर्वश्रेष्ठ है

ष व सन्य यही है कि मनुष्य सबश्रेष्ठ है। क्यांकि उसके पास बुद्धि, मन, ग्राभा सहित वह अदभूत शक्ति मण्डार है जिस के सहारे सवगुण भण्डार परमात्मा से बस और प्रकाश की बाचना और उसके लिए बहुनिश सिकारहता हुआ अध पतन के अन्वकारमय गर्तसे निकल हिमालय की सर्वोच्च खोटी तक पहुच सकता है। विदव इतिहास इस प्रकार के अ्वलन्त जीवन के व्यक्तिया से आप्रित है। अधववेद मे भक्त प्रभु से प्रार्थना करता है-

माचार्य दीनानाच सिद्धान्तालकार

पठात हथिव्या अहयन्तरिक्ष मास्हय अन्तरिक्षात्। दिवमारुह्य दिवो नाकस्य पुष्ठात् स्वज्योति रगहम् ।

वर्षात् पृथ्वी की पीठ से अन्तरिक्ष पर पहुचू। अन्त से बौलोक और बौलोक से सुक्षप्रद ज्योतिको प्राप्त करू। पर कैसे ? क्या खलाग मारकर ? नही -- इस के लिए नोतिकारों ने तीन मार्गबताए

प्रथम मार्ग-पिपीलिका

१ पिपीलिका मार्ग--- विकटी का मार्ग। मकान के फाश के एक कोने में अन्न पडा है। चिकटी उसे कपर छत पर ले जाना चाहती है। वह अन्न कण को अपने मुहमे हाल बीमे-बीमे जागे बढती हुई छत पर चढना प्रारम्भ करती है। आप घ्यान से चिऊटी के किया-कलाए का निरीक्षण करें। जहा एक बोर बागे बढ रही है वहा साथ ही रास्त में मिलने वासी चिकटिया के मुहसे मुहल गाफर्श पर पडे अन्य के बारे मे वह सन्देश देती जाती हैं। एक भन्ने ज विद्वान ने इस तुच्छ और अति स्वल्प प्राणी के बारे मे चिरकाल तक अध्ययन करने के बाद अपनी पुस्तक मे लिखा है कि 'सगठन और पारस्परिक एकता और सौहार्दकी दृष्टि से चिऊ टी मनुष्य से कही अधिक आगे हैं। वस्तुत श्रोममार्गं पर चलने के लिए नियमित और अटूट भले ही स्वल्प धंय सहित प्रयत्न वनिवाय है। गीता मे श्रीकृष्ण का निस्न उपदेश साधक के सम्मुख बहुनिश रहना बाहिए---

धनै भनै रुपरयेन् बुहुपाधृति गृहीतया। माम सस्य मनद कृत्वा न किचि यि

चिन्तयेत्।। ६।५ वर्षान्-वैय से काबू की गई बुद्धि

की सहायता से बीमे-बीमे अपने मन मे सासारिक विषयो के उदासीन रहने का अभ्यास करो । इन दोनो साधनो के बाद मन को बाद्या के बाधीन करे। इसकी फलप्रति कही फिर किसी प्रकार की चिता

महासारत. उद्याग पर्व ३३।४२ मे व्यासमुनि कहते है कि जिस प्रकार दीपक वन्मीक (अपनामिद्री से घीमे-धीमे घर घर बनाता है, इसी प्रकार किसी प्राणि को कष्ट न देता हआ। पर लोक सहायता के लिए धम का धीमे-धीमे सचय करे। नीतिकार कहते हैं 'प्रतिविन मनुष्य अपने आचरण की पडताल कर यह देशे कि क्या मैं पशुमाग पर चल रहा हुआ बवाश्वेष्ठ पुरुषो के मार्गपर। हे मनुष्य । बार-बार सावघान होकर यह देशों कि क्यार्ने पश् तुल्य हु अथवाश्रेष्ठ पुरुषो की तरह। तुम्हारे जीवन का आज के

दिवस याद रखो सूथ बस्त हो जाएगा।

२ कपि मार्ग

दूसरा कपि--वानर मार्ग है। सदा चचल, अस्थिर भीर एक बाब्राव वृक्ष से दूसरी शास्ताव वृक्ष पर सदा छलाग मारते रहना। सारा जीवन इस प्रकार च बलता में ही नष्ट कर देना, इस मार्ग का यही परिचाम होता है।

३ विहगम मार्ग

बिहगम अर्थात् आकाश मे बहुत ऊचा उडने बाले पक्षी को कहते है। ससार मे कुछ व्यक्ति ऊचा उडने वाले पक्षी की तरह इतने उच्च चरित्र के हाते हैं कि सामान्य पुरुष उनकी ओर आश्चय और भ्रमसेनत मन्तक हो देखतो सकता है पर उनका उस सामान्य व्यक्ति व लिए सम्भव नहीं हाता। कबीरदास न ऐसे महापरवों के लिए ही शायद कहा था ऊचा ऊचा सब कोई कहे. क चन मे ताल खजर।

बैठन को छाया नही, फल पाना अति दूर।।

योगवर्शन का माग-वृद्ध मूमि महाकवि कालिदास न रधुवश के प्रारम्भ से ही श्रीराम के जीवन की तुलना उस आस बृक्ष से की है जो छाया और फलो से भरपूर है। थके यात्री को इसके नीचे बैठ पूर्ण शान्ति और भूका मिटाने के लिए फल-दोनों की यथेटठ प्राप्ति होती है। इसी लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयत्न म।नव को करना चाहिए — अपने और दूसरों के कल्याण के लिए। इसे ही योगदशन के प्रथम पाद में 'जीवन की दुढभूमि' कहते हुए दीवकाल निरन्तर और श्रद्धापूनक' पालने का उपदेश दिया गया है। के सी ३७ वो अधोक विहार दिल्ली-४२

पृष्ठ ४ का शेव

वर्ग से परिचय रक्षते हैं।

बाली के राज्यपाल श्री मन्त्र हैं। हम उनसे भेट करने के लिए उत्सुक थे। अपने व्यस्त समय मे से दस मिनट निकाल कर उन्होने हमसे मिलना स्वीकार कर लिया। पर जब हम उनसे बात करने बैठे, तो समय का किसी की ज्यान नहीं रहा। एक वण्टे तक उनसे बातनीत होती रही। मारत की विद्वत्मण्डली से मिलकर उन्होंने कहा सदियों के बाद भारत के इसने विद्वानो ने हमारे देश मे पदार्पण किया है। भारत से हजारी प्यटक अमेरिका, युरोप, जापान माबि जाते हैं। पर दक्षिण पूर्वी एशिया के इस क्षेत्र में भारतीय यात्रियो की यह पहली मण्डली आई है। प्रकृति की रमणीयता की दृष्टि से यह देश अनुपम है। भारत के साथ हमारा सम्बन्ध हजारो साल प्राना है। हमारी और बापकी सास्कृतिक तथा धार्मिक परम्प-राए एक है। इस दशा में हमारे और मापके सम्बन्धों से वृद्धि हानी चाहिए। मुक्ते जाशा है, कि मविष्य म भी भारत के विद्वानी व यात्रियों की मण्डलिया वाली आती रहगी। राज्यपाल महादय न जल-पान द्वारा हमारा जातिच्य किया और हमारे माथ फाटो भी खिनवाई। जिस आत्मीयता क साथ श्रीमन्त्र ने हुम स मेट की, उससे सबके हृदय गद्गद् हो गए।

उसी दिन सायकाल हिन्दूषम सस्यान मे एक बन्य आयोजन हुवा, जिसमे स्वामी ओमानन्द सरस्वती के शिष्य बहुाचारी

(शेष पुष्ठ = पर)

देखा या अब बहु गुप्त देश के शासनकाल मे भारत बाया या। डा॰ श्वर्मा के अनु-सार हिन्दू वर्म से प्रभावित बाली के बन जीवन का बाज भी यही उज्ज्वल रूप है। बाली के हिन्दू जब परस्पर मिलते हैं तो भोस्वस्ति वस्तु['] कहकर एक दूसरे का अभिवादन करते हैं। विक्षान व बहें लोग आशीर्वाद देते हुए 'ओ दीर्षायुरस्तु' तथा 'बो विष्ममस्तु' भी कहते हैं। वहा के जनजीवन पर संस्कृत भाषा के इस प्रमाव को देखकर गौरव की अनुभूति होती है। केवल बाली में ही नहीं अपितु अन्यत्र भी मस्कृत का यही प्रभाव विद्यमान है। वहा के होटलों के नाम स्वस्तिक' 'अम्बर रक्त' और 'आय' बादि है। एक बैक का नाम 'अर्थलोक है। इण्डोनेशिया मे राजपति की 'कपाल नगर' सज्जा है। वहां की भाषा मे नगर का अर्थ है राज्य और सस्कृत मे भूषिका पर्याय है। हेनपसार के हवाई अब्देकी दीवारो पर रामायण की कथा रूपावलिया विजित है। बाली मे प्रवेश करते ही यह अनुमव होने लगता है, कि हम आर्यावत्त'मे बागए हैं। जहाकी प्रत्येक व्यक्ति हिन्दू या बाय है, और जहा बहुत से लोगों को गायत्री मनत्र कण्ठस्य

इण्डोनेशिया मे धर्मेशिक्षा सबके लिए वनिवार्य है। हिंदुबी को हिन्दूधम की मिका वनियाय रूप से दी जाती है और उसमे उत्तीर्ण हुए बिना कोई विद्यार्थी कपरकी कक्षामे नहीं जासकता। यही कारण है कि वहा के सब निवासी अपने



महिष का सदेश विश्व मे फैलाश्रो

त्रारबी भाषा मे सत्यार्थप्रकाशकाप्रचार-प्रसार ।

बम्बईमे महर्षि निर्वाण शताब्दी

क बन्बई महानगरी की समस्त जायसमाजों की जोर है जायसमाज सान्तकृत्व केत बावबान में रामनीचा मन्त वर्षाने हैं में महींच दयान-द संविदान खताब्दी न्यामी स सफका स सरवती की अध्यक्षता में १० ११ अन्तुत्वर को मनाई मंदी । आयक्तम १० अन्तुवर का कि मी कलाकारो एवं समीतकारों ने महींच दयान द की समीतमय अद्धा जाति से प्रारम्भ किया। आवशायिका सुन्नो जयनी धिवराम एवं बीचक चौहान जादि के गाये मह ए इस तेरे उपक र न जूना। 1 य है तुमका महाच तू ने हम जमा दिया गीत बहुत सराहे गए।

"१ ८ बस्तूबर को विभिन्न कमों के प्रतिनिधियों ने महुष्टि व्यानाय के प्रति कमाने प्रदानिष्या प्रस्तुत की। वस्तालों ने महुष्टि को युन्युट्ट हमान्युष्टाएक कण्ड विद्यामा क उ मुनक एव भाग्नीय सम्हित का पुनस्दारक बतलाया। डा॰ नुवाद ने कहा जारि दुष्प छोडकर व य मन्द्रहों में चल गये से शुद्धि का चक्र चलाकर द्यान द बोर उनके अन्यायिया ने उ है पुन गल लगा लिया। अध्यक्षीय भाषण में हमानी न प्रकार ने कहा महुष्टिन मोई हुई जझानता एव व । विश्वसास में प्रकारी काय जाति को सही म गण्यान ग्यर एकता क सुन म व पन की कार्रिख की। २० व्यवस्वर का भ्यान ने कल पहला जीर स्वामा संस्थाका जो न कहा कि महुष्टि के स देश को फलाने के लिए हुमें निचनरी तथार करने हांगे जा भारतीय मह्कृति 8-म्यता का ग्य विदेश तक पहला कर स य की प्रतिच्छा कर। बार क्याय न मक्त्य किया कि वह एक लाल स या प्रमुक्ताय वर्षों भाषाम प्रकारित करके स्वामी ग्यान द मरस्वती के महेश का वि व के काने को ने पहलाएये।

ग्रन्थियो की राजनीतिक भूमिका रोको हरयाणा रक्षाबाहिनी के प्रधान प्रो० शेरसिह का आहुवान

ह य णा रक्षा व हिनी एव साथ प्रतिमित्ति सभा हरय णा के अध्यक्ष प्रो सानितृत गरू बदत्य म कहा है दरसार गाह्व अमेनसर के प्रथियों को चर्चा आज कल खन "गवाणा तथा समाचार पत्रा म हा रही है। जिस प्रकार मन्ति म पुरोहित होने है उसी प्रकार गरदाराम थी न्यिक्त किए जाते हैं बतमान प्र-मूक्ष प्रथी अपना सम्प्रचार काय छोडकर राजनीति क दसदल से कसने लगे हैं। ब होने हाल है म शिर मणि अकाली न्य की नर्य समिति को प्रग करके नह समिति का गठन किय है। सन्तर प्रकालसिंह स्वीठ कायक्सी प्रथन का इसलिए हटाया है क्योंकि बहु न प्रधानमात्री अमिती इदिरागाधी को छोक स्वदेश सेवा था

रामकृष्ण का आदर्श अपनाए

नेपाल में व्यापक वेद प्रचार

आ। प्रमहाराधी के ज म दिवस पर दिनाक ६ नवम्बर से १६ नवम्बर तक वीग्य ज गीता प्रवत क प्राण्य में गायजी महायज तथा वेद प्रवचन हो रहा है। जिसमें स्वामी काव्यान वे जी थी पर गायान न शास्त्री स्वीप न गायर शास्त्री उपदेशक तथा की द्वार न स्वामी काव्यान परेशक पर हुए हैं। दिनाक १०१६ भें को भी रामाश जरामी प्रवानक की जध्यक्षता महुई जिसमें ज य बीर दक के गठन पर प्रकाश शासते वताया कि किसी भी वेश के युवक और युवदिया का जीवन चरित कथा होना चाहिए तभी रास्ट की उन्नति होती है। अत राम और हम्भ के जीवन चरित सावश जपना कर वपना कर वाचा वपना कर वपना वाचा वपने रास्ट की उननित होती है। अत राम और हम्भ के जीवन चरित सावश वपना कर वपना वपने रास्ट की उननित होती है। जत राम और हम्भ के जीवन चरित सावश वपना कर वपना वपने रास्ट की उननित होती के उन्हों हो उन्हों ए

ग्रक्ल सस्याची द्वारा हमले की भत्सना

महासभा गुरुकुल विद्यापीठ हरियाणा असवाल कथा (शोनीपत) एव कचा गुरुकुल खानपुर कला के वरिष्ठ सरको एक विभिन्न विश्वण सरवाला की समुक्त बँठक म पन्मश्री सुभाषिणी देवी की लम्मकता में अरताब स्वीकार कर भारत की प्रवान म त्री श्रीमती इतिद्या गांधी की निमम ह या की कडी अस्तना की गई। साब ही भू पुरिश्वाम त्री हरयाणा सरवामी के प्रवान चीठ साबुविह के बाकरिमक निवन पर शोक प्रकट किया गया।

मानवता के लिए बड़ी चुनौतो

सर्वजातीय सर्वस्वाप पचायतद्वारा

जघन्य हत्या की निन्दा

बेरी जिला रोहतक। नवम्बर को सवजातीय सवलाप पंचायत के सम्मेलन म २३ सापों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। सवसम्मित से प्रस्ताव स्वीकार कर बोधित किया। प्रधानमंत्री सीमती इन्दिरा गांधी की उनके प्रगरसको द्वारा निमम हाया देश

की एकता को त्र बसण्डा के लिए ही नहीं बल्कि मानवता के लिए मी बदो चुनौती है। साम्प्रदायिकता के जहरीने रंग में रहे हुए एक सम्प्रदाय के लोगों के हाथों विदव की महान नेता की हत्या एक जमय अपराय है और देख की अस्मिता और एकता पर गहरी चोट है। सबचातीय सबसाय पद्मायत का यह सम्मेसन इस वणित अपराध और वदय न की थोर निदा करता है।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की देश व्यापकता (१६ठ२ का शेष)

रखते है कि हमारी शिक्षा गरकलीय जीवन पद्धित को प्रपता भूल समक्ष कौर जीवन निर्माण की उस दिशा को सबस मुद्ध म समक्षा गुरुकत जीवन पद्धित एक आदोसन है जिसका उद्देश उप प्रमुक्त का निर्माण करना है जिस अकर का मानव हम समाज में देश म और विन्व में देखता बाहते हैं ऐसा मानव जो जब पतन के सब असोभनों से भुक्त होक शब्द मानव जीवन का निर्माण करें। इसके लिए नीव का काम गुरुकुल जीवन पद्धित के 

वह देश के लिए शहीद हुई

इन्दिराजी को श्रद्धांजलिया

नई दिल्ली। भारत की प्रवानमंत्री श्रीमती इदिरा गांधी की उनके सुरक्षा सैनिको द्वारा हृस्या किए जाने पर व्यापक प्रतिक्रिया हुई। बायसमात्रा वायसस्वामा एव स्वामान्य जनता ने इस पर यहरा हुक्क विभव्यक्त किया है। भारतीय हिन्दू रक्षा समिति एव दयानन्य नस्यान की अध्यक्षा पण्डिता राकेद्यानी ने अपन श्रद्धासुमन अध्यक्षित करते हुए कहा इदिराजी का मारा जावन रास्ट और समाव के लिए वर्षित स्वामान के लिए वर्षित करते हुए कहा इदिराजी का मारा जावन रास्ट और समाव के लिए वर्षित स्वामान के लिए वर्षित हुए से सहानुभूति का सागर नहराता या वह देश के लिए वर्षित हुइ।

आयसमाज विडला लाइ स कमलानगर क्षत्र ने अपने ताक प्रस्ताव म पाणित किया—भीमती गायी क दूरदर्शी साहत्रपुण नेतृत्व म देश ने प्रत्यक क्षत्र में जो कीर्तिमान स्थापित किए हैं उनके सिए श्रीमती गायी विडव इतिहान में विरविस्पर-णीय रहनी। उनके नियम से पाएं की बाबगार क्षति हुई है, वह अयुरणीय है।

आयसमाज कृष्णनगर ने एक प्रस्ताव द्वारा अपन ही सरकाका द्वारा विश्वासभात-पूत्रक प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या के कृत्सित कृत्य तथा घनोने पडयत्र की निन्दर की।

बिना लाइसँस तलबार रखने की छूट हो

एक अर्थ प्रन्ताव द्वारा आयममाज कुष्णनगर ने मास्त मरकार और प्रधानमत्री से मागकी कि अपनी रक्षा के लिए दिल्ली क सभी आयब बुआ कादि तीव पत्राब की माति बिना लाइनस तलवार रक्षन की छटदा जाए।

आयतमाज नक्ष्मीनगर विस्तार दिल्ली ६२ न एक प्रस्ताब द्वारा उन तत्वा की भोर निदाकी बाइन जय य कुइत्य क निष्ट जिल्लासार है भारत विराधी सालियों क इसारे पर ही एक पडयत्र द्वारा भारताय र प्टीय नन्व का समाप्त करने की कालिया की गाँड है।

आयसमाज रानी तालाब गुरकुल विभाग फोराअपूर गहर न एक प्रस्ताव मे दिवगत आत्मा की घार्मिक सामाजिक एव राजनीतिक उपलब्धिया का चर्चाकी

शास्त्रार्थ महारथी प० गणपति शर्मा की मृति प्रतिष्ठित

चुरू श्री मे श्री झर्मा के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाल जाएगा

पूर्के। बास्त्राध्य महारती प० गणपित दामा को जावल प्रतिमां उनक ज म स्वान राजस्थान पूरुनगर के इदमिल पाक में स्थापिन की गई है। प० गणपित लामी पुरानक पीकी के आप विदान नवा जपूर बक्ता था। उनका निषत १८१ में हुआ था। इस प्रतिमा की स्थापना पूर्क नगर की एक मास्कृतिक मस्था नगरबी ने की है। प्रतिमा के लिए नगर पालिल हे ने प्रमुख पानिक उद्योन में स्थान उन्तवक कराया तथा नगर के बनी मानी मण्डनों ने उनुस्त कर के धन प्रदान किया। यह स्मरबीय है कि इस नगर में आयसमाज भी नहीं है।

प्रतिमा का बनावरण बायसमाज के प्रमुख बोध विद्वान डा भवानाताल भारतीय के किया। मुक्य बिविध क क्ये में बालते हुए उन्होंने प० गणति समि के बेडुच्य पर विद्याएवक प्रकास डाया तथा नगरसामिया को प० गणपति बी की स्मृति को विस्पत्ता नोते के लिए वन्यवाद दिया। नगरशी के म त्री प्रसिद्ध पुरातत्विक्व बौर क्ष बेवक श्री मुद्दोव प्रयान ने सभा का मयालन किया और समारोह की वच्छावता डा० बहानन्द यागी (वृद अ-धक्ष याच्य विद्या प्रनिष्ठान ओष्ट्रांग) ने की। श्री सुवाच प्रवान न विद्यास दिलाया कि निकन्य मित्रक म नगरश्री के द्वारा प गवपनि वार्मी के जीवन एव व्यक्तिर के क्ये ने मार्गक प्रवान के विद्यास के जीवन एव व्यक्तिर स्थान के कि कर्य से प्रकाशित विद्यास विद्यास कि निकन्य मित्रक एक विद्यास के ज्ञान से रखते हुए प्रतिमा पर कृत्र साम मिन्य स्थीन है के वर्ष सामाजिक मर्यादर के च्यान में रखते हुए प्रतिमा पर कृत्र मालाए बांचत नहीं की गई बीर समारोह एक इतिहासपुरूव को स्मृति की सुरक्षित रखने की भावना वे ही नम्यन्त किया गया।

भारत को बन्तर्राष्ट्रीय शिखर पर पहचाया

१० नवस्वर का महावाय समयांत की अध्यक्षता में महावाय सुनीतात धर्माय हस्ट के देव प्रवार विभाग की बोर से श्रीमती इन्दिर गांधी के अवन्य हिंदा काष्ट्र की निन्दा करते हुए वीवित किया गया कि औमती गांधी ने अवना द्यारा जीवन राष्ट्र सेवा में समर्पिन किया तथा भारत की अन्तर्राध्येय क्षत्र में उनत दिख्य पर पहुंचाया। परमात्या से यह प्रथमा भा की गई कि प्रमानमन्त्री राजाब गांधी को श्रीमती गांधी के अबरे काय को पूण करने की सन्ति प्रदान करें।

—आयसमाज मन्दिर मांग द्वारा गायत्री मन्त्रोच्चारण के बाद दिवगत खात्मा की शान्ति के सिए प्रमु से प्रार्थना की गईं।



सार्थक पूजा

सहाराष्ट में एक बढ़ नत हुए है— मत एक नाय। गक बार तीर्थाटन करते हुए बहु यागराव पण्डे वहा होने वपनी बहगी म नी कावरी विवेधा करवित्र बख से मरी। सोचा उसे रामेक्दरम में बढ़ाएगा। उन साथ पूरा मनम न्यी थी। साम करते के राजों की टाली रामेक्दरम में पास वा पण्डे । नक्ष मामीप हां था कि मत एक नाथ ने देखा — रामेक्दरम नीय के मृत्य द्वार क समीप रास्ते पर एक गया पाना की प्याप्त से आपूक्त तक्षर रहा था। जलाय हि नगरा था कि यि हुए पुनी में ही उस पानी न मिना तो बहु तक्षर रहा था। जलाय हि नगरा था कि यि हुए पनी में ही उस पानी न मिना तो बहु तक्षर नहरकर जान देवा। उसका रूपा देखकर मन गक्नाय द्वित्त हो गए। उन्होंने अपनी बहुगी में कावरे खानी और उससे पिक निवेधों का लेकर उसर ारे या मार्थ पिका दिया। और वहस्त स्वाप्त हो कर पान बहुन निवेधों का

भतो की उस मण्डली का स्त एक मण का यह व्यवहार सह र नहीं आया।
एक बढवाना साबु बान उठा एक नावजा आप तो बड सत समक्ष बाते हे पर सु
आप नो महामूल निकर। इनना कष्ट तपस्या कर प्रयागरा के बाति वा सावजा बार रामेक्टर सक मिटर पर भट चढाने के लिए नाए उस प्राप्त वे अप ही एक मूल नाव को पिता दिया। आप रामेन्द्र समे के निव पर जल ज्वान के पुष्प से बचित रह गए। सत एक नाव ने हाथ जो चक्र कहा—हमारा द्यालु अगवान ता सभी चरावर जोवा में व्याप्त है सारा ससार हो उसका असकी स्वक्ष है देने ता एक नीवित दुक्ती प्रामी का पानी पिता दिया। उसका प्रामण्डला की। समझा मर्गे द्वाता नायक हा गइ। नरे प्र

वैदिक कैसेट

प्रसिद्ध फिल्मी गायक महेन्द्र कपर द्वारा महाष दयानन्द

की अमर कहानी सन्ध्या-यज्ञ शार्गन्तप्रकरण स्वस्तिवाचन गादि प्रसिद्ध भजनापदशका-

सत्यपाल पथिक आमप्रकाश वमा पन्नालाल पीद्रप रोजनाज पथिक शिवराजवनी जी के सर्वालम भजना ४ ४म स्वार प बद्धद्य विद्यालकार के भजन का संग्रह ।

आय समाज क अन्य भी वं तम सम्माक मर्जापक कर नगण्तर करूरोक्स इतैन्द्रानिस्स (इण्डिया) प्राप्ति

र्रे | 4 मर्किट | 1 पस | 1 अशार्घवहार दहली 5° फान 7||18326 | 744|| 70 टेलक्स २| −46°3 \ KC | N

- प्राप्ति स्थान -

यह कैसेट विस्ली द्वार्य प्रतिनिधि सभा १४ हनुमान रोड नई विन्ली पर भी मिलते हैं।



30वें सस्करण से उपरोक्त मूल्य देय होगा /

मार्यसमाज जगपुरा का बाविकोत्मव नवनीतलाल सत्यप्रिया दुस्ट का जानोपयोगी काय

बायसमाजभागल के ४४ वे वार्षिकात्सव पर २६ शक्तूवर को श्रीमती प्रेमशील की अध्यक्षता में महिला सम्मेलन हुआ। श्रीमती उपा घास्त्री एवं माता लाज-बल्ती जो न बनमान समय में नारी का कलेल्य विषय पर उदवीधन किया। सत्यासिनी मीरा यतिजी न अरुन्दती तारे का जवाहरण देते हुए सहनशीलता द्वारा परिवारी को सुस्ती करने का परामश दिया।

शनिवार २७ अक्तूबर को नवनीतलाल सत्यप्रिया द्रस्ट के तत्त्वावचान मे श्रीमती सत्यप्रिया जन्मदिवस बनाया गया। चामिक परीक्षाओं मे प्रथम द्वितीय, तृतीय खाने बाले छात्र-छात्राए पुरस्कृत किए गये। आर्थ पाठकाला अगपुरा को ट्रस्ट की बोर से १०००) का दान दिया गया।

महींच निर्वाण दिवस कविराज क्वानचन्द की बच्यक्षता भे भनाया गया। इ.स. अवसर पर वैच रामकियोर श्री कर्णदेव झास्त्रीश्री क्वलास सास्त्री, श्री कर्लदेव मञ्जनोपदेशक ने महर्षि के जीवन पर प्रकाश डाला ।

श्रीमती सत्यवती सूद बाय सैकेण्डरी स्कूल मे आर्य वीरागना प्रशिक्षण शिविर

की सफल छात्राए पारितोषिको से सम्मानित की गई।

मानव-जीवन का सर्वभेष्ठ मार्ग (पृष्ठ ५ का खेव)

रामबीर तथा बहाचारी विरजानन्द वेद-कर्णीने योगासनो काप्रदर्शन किया। ब्रह्मचय के पालन तथा योगाम्यास से मनुष्य कितनी शक्ति प्राप्त कर सकता * जिससे कि लोहे की छट त माडी जा सकती है, इसे कियास्म देखकर सब कोई बारचयचकित रन सस्यान के दो हजार के लगभग छात्रो तवा आचार्यो पर इस प्रदर्शन का बच्छा प्रभाव पढा। इन्डोनेशिया क हिन्दुओं की दर्ष्टि में गंगाजल का बहुत महत्त्व है। ये उसे पवित्र मानते हैं। गगा के व्यतिरिक्त यमुना, नर्मदा, गोदावरी शादि अन्य भारतीय नविया भी उनकी दृष्टि मे पवित्र हैं। वहा के हिन्दुकों को उपहार मे देने के लिए हम बगावल साव

से गए वे । उसे उन्होने कृतश्रतापूर्वक स्वी-नार किया।

गली में हम उन बाकर्षण पर्यटन ⊣सो के अवसोकन के लिए भी गए,पर े लिए वहा का प्रधान बाकवंण वह

त्व या, जिसमे भारत की प्राचीन मः था सास्कृतिक परम्पराष् कोत-२ थीं। हम बहा की भाषा नही जानते र रवहाके लोग हमारी भाषा नही धमानं वे, पर यह जानकर कि हम भी हिंदू हैं उनके मुख्यमण्डल पर बात्मीयता के वो भाव उजागर हो वाते थे, उनके माधूर्यको जब्दो द्वारा प्रकट नहीं किया

> ए १/१३२ सफदरबन एनक्सेक, नई विल्ली-२६

बार्यसमाज पहाङ्गज चुना मण्डी का ४८वाँ उत्सव

भायसमाज पहाडगज चनामण्डी नई दिल्ली का ४८ वा वाधिकोत्सव १६ से २५ नवस्वर तक मानाया जाएगा। इस अवसर पर १६ से २४ नवस्वर तक प्रात ६ से द बज तक चतुर्वेद शतकम यज्ञ तथा उपदेश काकायकम होगा। इन्ही दिनो रात्रि को दा। से १० वजे तक वेदक बाहागी। २३ नवस्थर को प्राप्त ११ से ४ वजे तक आय महिला सम्नेलन २४ नवम्बर को रात्रि के ७-३० से १० वजे तक आयग्वक सम्मेलन होगे। ४५ नवस्वर को प्रात स्से १० तक यज्ञ की पूर्णाहृति के बाद १० से १२-३० तक राष्ट्र रक्षा सम्मेलन होगा।

॥ अगे३म् ॥

आर्य जगत की शान २०० बिस्तर वाले

निर्माणाधीन नेत्र चिकित्सालय

(अनुमानित लागत दो करोड रुपए) के लिए

कर दान दीजिए

दान की राशि आयकर ~ म जी० ८० के अन्तर्गत करमूक्त होगी।

> सारा बार मनीमार्डर/बैक ड्राफ्ट द्वारा

मन्त्री, माता चन्ननदेवी बार्य । नेत्र चिकित्सालय, सी-१, जनकपुरी, नई दिह्सी-५८ के पते पर भेजा जाए।

दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर प्रकित किए जाएगे। निवेदक

रामगोपाल शालवाले सरक्षक स्यदेव महाश्वय धर्मपाल श्रोमप्रकाश आयं चिकित्सालय एव प्रधान. विल्ली बार्य प्रति- प्रवान बार्य मत्री महाशय सा॰ बा॰ प्रति॰ समा, निषि सभा चुन्नीसास चेरिट तीयन्य से महाशिक्षा दी हट्टी प्रा० लिमिटिक, १/४४ कीर्तिनमर बीक्षोपिक क्षेत्र नई दिल्ली ११००:

उत्तम स्वास्थ्य के लिए फामसी, सेवन करें

शासा कार्यालय - ६३, गली राजा केशरनाव

काम न० २६६८३८

चावडी बाजार, दिल्ली-६



दिल्ली आर्य प्रतिनिधि समा का साप्ताहिक

मूल्य एक प्रति ५० पैसे वय क भक्ष रविवार २ दिसम्बर १६८४ बाव सबत्सर १९६०८५३०८४ १० मागशीय सु० २०४१ वि० दयानन्दाब्द--१४८

जनतन्त्र का त्र्याठवा महाकुम्भ प्रारम्भ रणभरी बजी : नामांकन

बनारे के लिए अपना मत दे" प्रार्थ समाज की घोषणा

नई दिल्ली। भारत मे लोकत त्र की झाठबी ससद के लिए चुनाव घोषणा हो चुकी है। २४ दिसम्बर एव २७ दिसम्बर ८४ को लगभग ३८ कराड मतदाता विश्व के सबसे बढ जनतन्त्र के लिए ५१५ प्रतिनिधियों का चयन करेंगे।

महर्षि दयानन्द और बायसमाज ने देश की स्वतन्त्रता और जनतन्त्र के लिए सतत प्रयत्न किया है। देश के हित की आयसमाज ने सदैव सर्वोपरि माना है और ठीक उसी दिशा में प्रयत्नशील रहा है। क्योंकि यह बायसमाज का वपना स्वभाव है, कलव्य है। बायममात्र का अपना सत है कि देख से सुराज्य स्वापित किया जाए। फसत यहा पर स्वस्य स्वच्छ न्याय परायण सोकश्रिय प्रचासन के लिए राष्ट्र के समस्त नागरिक विवेक से काम लेगे ऐसी सायसमाज की मान्यता है।

रामगोपाल शालवाले की विहार यात्रा सफलता पूर्वक सम्पन्न डा० दुखनराम से विचार-विमर्श

दिनाक २४ नवम्बर ६४ गया रेलवे स्टेशन पर सैकडो की सख्या म विभिन्न आध्यमात्रों के अधिकारियों एवं कायकनाश ने लाला रामगोपाल शालवाल का खान-दार स्वागन किया । रेलने स्टेशन पर ही प्रतिनिधि सभा के प्रधान पहित बासुदेव सर्मा, मन्त्री हरिदास ज्वाल आर्थवीर दल के सचालक रामाश्य वैरागी नवादा के मत्री द्वारका-प्रसाद आदि भायजन स्वागताय उपस्थित थे।

रेसवे स्टेशन से लालाजी बायसमाजमन्दिर में पथारे वहा हजारा की सक्या मे लोग उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। लोगो ने सावदेशिक प्रधान का हार्दिक स्वागत किया और उन्ह पूर्ण मालाओं से लाद दिया। लालाजी का ओजस्वी मावण हुवा। इसी प्रकार के कार्यक्रम विहार के अन्य जायसमाजा - नवाद रजीली से भी हुए। पटना म सालाजी ने दूसनराम से भट की। मन्त में समस्त आयद्यव्यनों ने समा प्रधान को रेलवे स्टेशन पर भाव भीनी विदाई दी ।

वैदिक धर्म-महासमा का चुनाव

हाल ही मे वैदिक थम-महासभा के पदाधिकारियों का जा चयन किया गया वे निम्न प्रकार से है ---

स्थामी र नदेव जी सरस्वती --सस्थापक एव प्रधान । महात्मा जानन्द मूनि बानप्रस्थी -- उप प्रधान । स्वामी जगत मूनि जी--- उपप्रधान । स्वामी गारक्षा सरस्वती --- उपप्रवान । डा॰ सुदशन देव वाचाय (एम॰ ए॰ पी॰ एच॰ डी॰ रोहतक) --- महा-मन्त्री। बाल ब्रह्मचारिणी बहिन कलावती शास्त्री।---मन्त्री एम० ए० प्रभाकर---स्वामी बागानस्य सरस्वती-मन्त्री । श्री अन्तरसिंह वाय कातिकारी-- प्रचारमन्त्री एव कीवाञ्चव ।

देश में डाकघरों की स्थिति

- 🕳 १५ अनस्य १६४७ को स्वतंत्रता प्राप्ति के समय हमारे देश में केवल २२ ११६ बाकवर थे।
- ३० सितम्बर, १६०४ तक डाकचरो की सस्या बढकर १,४४ ७७२ हो गई।
- 🕳 ग्रामीण क्षात्रों में डाकघर इस प्रकार से खोले जा रह हैं कि ग्रामीणों को डाकघर पहुचने के लिए तीन किलोमीटर से अधिक न चलना न पड । पिछडे और जनजाति क्षेत्रों को डाकवर खोलने में प्रावमिकता दी जाती है।
- 🗆 बचत करने की आदत डालने के लिए प्रत्येक डाकबर में बचत बैक की सुविधा है और यह देश का सबसे बडा बैंकिंग तत्र है।
- 🗁 देश की कुल पाच लाख पेटिकाओं में से चार लाख से अधिक ग्रामीण क्षत्रों में हैं। देश के विभिन्न भागों के लोगों के बीच सम्पक की कडी होने के कारण डाक तत्र राष्ट्रीय एकता का एक प्रमावी यन्त्र बन नया है।

भारत का समुद्री तत

- मारत का समुद्री तटकर्ती क्षत्र ६०८० कि० मी० सम्बा है तथा इस तट रेखा पर १० प्रमुख तथा १०५ छोटे बन्दरसाह के बलावा असरय छाट छोट पवन हैं।
- ा हमारे देश म समुद्र मे चलन वाले °० लाख जी० आर० टा॰ स अधिक जहाजी
- मारत का विदेशी व्यापार ५०००० करोड ६० का है और लगभग यह पुरा ·यापार समुद्र स होता है। विदेशी व्यापार की ३३ प्रनिशत से अधिक की दलाई भारतीय जहाजो द्वारा होती है।
- अपतटीय क्षत्र में तेल की खांच के लिए देश में 2-20 करोड द० का निवेदा
 हुमा है और हम श्रीघ्र ही ३०० साख टन तेल निकार्त करो ।
- ा हमारे पास हिन्द महासागर मे अधिकतम विशिष्टि आर्थि**क को न है जिस्सें स**निज एव जैब सम्पदाबी का विशाल महार है।
- भारत मे समुद्री सतह के खनन मे अप्रणी निवेशक की स्थिति प्राप्त कर ली है और सनिज सम्पदाओं के विभिन्न स्रोतों की साम के प्रयत्न किए जा रहे हैं।

बाई० बो० चह्नाण नहीं रहे

भूतपुत्र उप प्रधान मन्त्री वय वृद्ध स्वतन्त्रता सैनानी एव देश के मुख्य राजनेता श्री यशकत राव चह्नाण का ४५ नवस्वर का दिल्ली म दहावसान हो गया। उनको आयु ७१ वष की थी।

हिन्दू परिषद् के अध्यक्ष का निचन

विक्व हिन्दू परिषद के अध्यक्ष महाराणा भगवत सिंह जी का निधन हो गया ! उन्हेदिल का दौरापडाचा। वे ६० वय के थे।



परमिता नरमेक्बर न सृष्टि के बादि में बाज से एक जरब छियानवे करोड गाठ लाख और हजारो वय पूज सानव-कर्याण के लिए बार ऋषियों की बारमाजों में एक-एक वेद का बान दिया इसीलिए वेद का जान श्रुति भी है। वेद ईस्वरीय जान है यह तर्क युवित खारम प्रमाण एव स्वय वेद प्रमाण से भी सिंद किया जा सकता है। जैसा कि बजुबँद में कहा है — तरस्मादयजात सर्वेद्वतान्ह्य सामानि

वितरे।

छन्दामि जित्तरे तस्माद यजुस्तस्माद जायत्।।

(यजु॰ ३१।७) ग्राचीलसी परभेदनर से ही ऋग,

यात्री उसी परमेक्बर से ही ऋग, साम, यजु और अधर्व वेदो की उत्पत्ति हुई।

एसाही हम अथव वेद काएक और

मन्त्र लेते हैं — बस्मादुनो बपातक्षन् यजुयस्माद पाकवन् । सम्माति यस्य लोमान्यपर्वाज्ञि रसो

सामानि यस्य लोमान्ययबीद्भि रसो भुस्तम्॥ स्कम्भत बृहि कतम स्विदेवसः॥

१४ अ० ४)
ध्रमित् है मैत्रयी । जो बाकाशादि
से बडा सब व्यापक परमेश्वर है उसी से
स्कृत, यूज् शाम और अध्य य चारो वेद
स्वरमन हुए हैं। जैसे मनुष्य के शरीर से
स्वास बाहर आता है, वेसे सुष्टि के प्राप्य से वेद इंदर से प्रकट होते है और असे
स्वास बन्द को जाता है, वेसे ये प्रस्य
काल में ईस्वर से प्रकट होते है और असे
स्वास अन्द को जाता है, वेसे ये प्रसय
काल में ईस्वर के जान के अन्दर विद्यमान
पहते है। इनका नारा कभी नही होता।

च्छत हा कारता ताल क्या ग्रह हाला। अब कुछ शकाओं का समाधान कर ≹नामी उचित है—

(१) निराकार ईश्वर से शब्द रूप वेद कैसे उत्पाद्गे

समाधान सब रानिनमान देवर बिना जुख प्राण के भी उनका काय कर सकता है। जैंदे मन में विचार के समय गुजारि की जावादवनना नहीं होनी है। अतन मामर्था-जाव देवर कद्मुल महान सृष्टि की रचना क्षाव देवर कद्मुल महान सृष्टि की रचना

निराकार होते हुए भी करने में पूर्ण समर्थह वैसे ही देद ज्ञान प्रदान में भी वह निराकार होकर भी समर्थहै।

(२) ससारकी उत्पत्ति मे जीव समर्थ नहीं है पर ज्याकरणादिकी माति वेद भी बनासकता है।

सप्ताधान — जैसे सनुष्य मकान, सडक, पुन,नहर, रेल, बहाज, रोकेट ब्रादि ईसवर की सुष्टि से पदाच लेकर ही बना सकता है से ही ईस्तर है दिए येद बाव के बाद ही प्रपना बान विस्तृत कर पुस्तके भी बना सका है। प्रन्यमा नहीं।

अगर किसी बालक को एकान्त में रक्कर पाला जाय जीर उससे बातचीत न किया जाय तो उसे मरण पर्यन्त मनुष्यपने का जान भी नहीं हो। अभी भी बिना सिक्सारे कोई कुछ नहीं जानता जैसे कि बगली मनुष्य कुछ भी उन्नति नहीं कर पाता है। बेदोपरेख के बिना मनुष्य पशुन्त ही रहता, प्रम्य पना को बात ही नया? जैसे भेडिये के पास का बालक देक्सा जा सकता है।

(३)स्वाभाविक ज्ञान से मनुष्यो ने विकास कर वेद बनाये।

समावान — उपरोक्त बालक धौर वनवासी जैसे स्वामाविक जान हुछ भी उन्नित नहीं कर पाते हैं वैसे ही स्वामायिक जान, देवादि को सममने मे मान बहायक होता है उत्तर्थ जान बढाकर मनुष्य अपना विकास कर सकता है। जैसे अभी भी विद्वानों को शिक्षा बद या । बढानों के सन्यों को गर्द बिना कोई मी विद्वान नहीं हा ७०दी ह।

ईश्वर सब विद्यायुक्त है श्रत वेद भी सब सत्य विद्याओं से युक्त ग्रन्थ हैं।

वेद मे भ्राति कारण-कुरान, पुरान बाइ-बिल, जैन, बौद्ध, चार्वाक झादि की बातो का प्रचार ईश्वरीय झान के रूप से हो जाने तथा इनका सुब्टिकम युक्त प्रमाण तथा विज्ञान से विरोध होने तथा सामण रावण, महीधर, उब्बट, स्कम्द स्वामी, मैक्स मूलर ग्रादि के गलत वेद भाष्यों से इनका विज्ञान युक्ति और सच्चाई से विरोध होने के कारण, तवाकथित मजहवी को घर्म मानने तथा वेद, घर्न ग्रीर ईव्वर के नाम पर एव परलोक कादि के नाम पर ठगी प्रारम्भ होने के कारण तथा वेद विरुद्ध वेद के नाम पर प्रचार हा जान के कारण, वैज्ञानिक आदि इन बातो को गलस मानने लगे पर, जिल्होने भी सच्चे बेद माध्य को जो कि महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने पूर्ण प्रमाण पहिन किया है देवा उन्ही

देद की श्रोष्टता अपैर महला कापूर्ण कायल हो गया।

अप्ता कि महर्षि वरिवन्द ने भी निकाहै—स्वामी दयानन्द ने वेद भाष्य कुवी देवी है।

मैक्स मूलर ने कट्टर ईसाई होने के कारण सन् १०६६ ई० में वेद के सबख में लिखा है—-

यानी 'वैदिक सूत्रों की एक बडी सरुपा बचकाना कठिन, अधम और साधा-रण है।"

वह तो उसे चरवाहे का गीत तक मानता था। मैक्समूलर ने १८६८ ई० मे भारत के सचिव क्यूक आफ आरगाइल' को पत्र लिखा था—

यानी भारत का प्राचीन धर्म नष्ट प्राय है। भौर यदि ईताई धर्म उसका स्थान नहीं लेता तो यह किसका दौष होगा?

वहीं मंबस मूलर स्वामी दयानन्द के वेद भाष्य और ग्रन्थों को बेखकर ''भारत हमें क्या सिखा सकता है।' नामक पुस्तक में लिखता है—

यानी मानव मस्तिष्क का जैसा मी बातावरण अपने स्वाध्याय के लिए उसे बुनना चाहिए—वह चाहे धर्म हो या फिलोसफी (विज्ञान) साइ स हो या कला, कानून हो या व्यवहार परमाच विज्ञा (ईववर) या वेव पूजा तुम्हे भारत में हो जाना चाहिए। क्यों कि अत्यन्त प्रत्य-हो जा पदाचें में से कुछ पदाच के सादत में ही है। जागे वह कहता है—

यानी कठिनता से ही पठन-पाठन का महकमा कही होगा जिसने मारत के प्राचीन साहित्य से नया प्रकाशन लिया है।

इसी प्रकार वर्तमान समय में भी कम एक दर्जन इसाम अनेकी पी एक डी तथा जमाइत इस्लाम के प्रधान बादि भी ऋषि दयान-द सरस्वती के वेद आध्य एक धन्यों से प्रमाणित हा वेद प्रधार में लग गये। जत हमें भी ऋषि दयानन्द के सन्यों एक उनके वेद आध्यों को देखकर वेद बास्त्र की सत्यता और सावभीमिकता को स्वयं जानना एवं सब को जनाना चाहिए।

लेखक — विन्देश्वरी कु० सिंह स्वा० स० निदेशक ५०२, केन्द्रीय जल आयोग सेवा सवन राम कुष्ण पुरस नई दिल्ली-६६

हास्य विनोद

जैसा सवाल बैसा जवाब

बनाल के नवाब सिराज्यूद्रीला ने अपने हिन्दू दरबारियों से प्रवन किया, "आप सोगों के प्रवाग ने प्रवृत्त वा ज्योतिक सम्बद्धी बार्ज पहुंत है व बता दी जाती है। पर प्रकृत्त के बारे से आपका व्योतिक क्यों कुप ए स्वृता है ? वेचारे पिष्टत कुछ वरण न वे खके। कृष्णा नगर के राजदरबार से एक हसीड दरबारी गोपाल भाव रहता था। वे उछके पास गते और उससे जबाब केने को कहा। यह सिरायुद्रीला के दरबार से हाविद्द हुपा। वरं उच्च पहुंच का विद्याल के प्रवाद के हाविद हुपा। वरं उच्च पहुंच हाविद विद्याल के प्रवाद के हाविद हुपा। वरं उच्च पहुंच हाविद के प्रवाद के आपका की प्रोर जाती है। वहां के अपने कुट्टियों के आवाल तथा नक्षत्र आर्थित का बावा की प्रोर जाती है। वहां के अपने कुट्टियों के आवाल तथा नक्षत्र आर्थित की वा बावा की बोर जाती है। वहां कुष्याल हो अपने के भीतर के प्रवाद के होता है इसलिए यह सवाल अपनी कीम बातों से यूक्य तो बसीन के भीतर के होता है इसलिए यह सवाल अपनी कीम बातों से पृष्टिये वहां की बातों बही बता सकते है।

नवाब लाजवाब हो गये।

हेवी इलंबिट्रकल्स ग्रायंसमाज को शोक

्या विकास किया है। इस हो हिन्दु कि साथ के प्रधानमन्त्री श्रीमती इस्तिरा गांधी के दुखर निधन पर बोक प्रस्ताव पारित कर इस्तिरा गांधी की हत्या के बाद हो रहे जबस्य कुरुओं को समान्त कर देख से बातिपूर्ण स्थिति कायम करने की मांग की गयी।

क्षमा ने दिवगत जात्मा की शांति के लिए दो मिनट का मीन घारण कर परस-पिता परमेक्वर से प्राथना की।

विसम्बर के प्रन्तिम सप्ताह मे

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दो

कार्यक्रम

🕳 शोभायात्रा

 विभिन्त क्षेत्रों में यह भजन और वेदोपदेश

 वैदिक साहित्य का वितरण 🖂 सावजनिक भद्रावलि सभा

आर्थ सन्देश

हिन्दू सिख एक है।

विक्त में जितने भी सिक्स हैं। व सदा से हिन्दू थे, हिन्दू है और हिन्दू नहेंगे भी। श्री गुरू गोविन्दसिंह का जन्म पटना मे २२ १२ १६६६ई० मे हुआ वा। श्री गुरूगोविंद सिंहजी महाराज ने केश कथा,कड़ा कुपाण और कच्छ बारण कराकर हमे सबस बनाया इससे पूर्व के गुरूओं ने इन्हें रखने की प्रेरणा नहीं दी थी। यह किसी से खिया नहीं है कि भारत में पहले किस बेरहमी से हिंदुओं और गुरूबों को विवर्भी बनाने के लिए विवस किया जाता या । विवर्षियो से सडने के लिए वसर्वे गुरू गोबिन्दसिंह जी महा राज ने दशमेश सेना का सगठन करके उहे पश्चकरार से अभिसिक्त किया और कहा कि सबा लाख मे एक लड़ाऊ तब गोबिन्दसिंह कहलाऊ ।' पाच प्यारे भारत के विभिन्न जातियों के लोग थे। माई दयाराम सत्री थे बमदास दिल्ली के बाट थे. भीकमचन्द द्वारका के बोबी थे हिम्मतराम जगन्नाथपुरी के कहार थे, और साहबचन्द बिन्दर के हज्जाम (नाई) ये। गुरू जी मुगल बादशाही के साथ कई बार लडाई लड । सेना को मुसगठित शक्ति के लिए और मुगलो की शक्ति को दीका करने के लिए वे जीवन पयन्त युद्धरत रहे। गुरुओ ने अपना जीवन सपरिवार हिन्दू हिन्दू स्तान वस बौर गोरका मे उत्सग कर दिया। येहि देह बाजा तुक को खपाऊ गोवात का दुल जग से मिटाऊ।' सिलातो यह भूल रहे है कि परमात्मा को निरन्तर मजने बाले माला जपने वाले गुरू महाराज ने जब हिन्दूओ पर सकट तथा घमपतन देखा तो कृपाण को मालारूपी रक्षा कवच मान लिया । वे जीवन पयन्त लडकर भी दिल्ली के सिहासन को विद्यामियों से मुक्त नहीं करासके। दूरमन हमारी फूट और कमवोरी को जानते थे। फलत उ होने कई राजाओं को प्रलोभन देकर मिला लिया था। अपनी स्वाथ लोलुपतावश राजाओं ने गुरू भी को हिन्दू थम रक्षाथ याथना को ठुकरा दिया। फलत हमारा मध्यमवर्गीय और निम्नवर्गीय हिन्दू समाज विभाजित हो गया। सैकडो वर्षों की गूलामी के बाद जब हम स्वतत्र हुए तो बाज सिख राष्ट्रपति भी भारत के सिहासन पर विराजमान हैं। क्या वे हिन्दू सिक्स सम्प्रदायवादी पाकिस्तान मे बफसर पद पर विराजमान हैं? आप नकारात्मक उत्तर देग । भारत विभाजन के बाद पाकिस्तान से हिन्दुओं और सिक्षों को भावल और गेह बादि से ककड मिटटी की तरह निकाल फेंका गया। वसस्य नारियो ने वपनी इच्छा रक्षा के लिए ड्वकर या जात्मदाह करके अपने प्राणो की बलि चढा दी। उन्हाने हिन्दुओं के घन सम्पत्ति, इज्जत, जवान बेटे बेटियो तथा लोगो के प्राण छीन लिए। प्रथम गुरू श्री नानकदेव जी की जन्मभूमि ननकाना साहेब पत्रा साहेब और पजाब की राजधानी लाहौर थी। इसे विधीमयी के हाम से हम स्वतत्र नहीं कराते हैं। इसके विपरीत आज विवर्गियों के उकसाने पर उनका साथ देने के लिए भारतीय सिस्तों ने अपने ही हिन्दू भाइयों पर बाबात करना प्रारम्भ कर दिया। सिक्ष भाइयो ¹ आप कहते हैं कि स्वण मदिर की पवित्रता बनाई रसी जाय । जाप चाहते तो गुरूद्वारो की पवित्रता के लिए प्रारम्भ से ही उग्रवादियों को मदिर मे शरण (तरजीह) नहीं देते। पत्राव में चल रही हिंसा की आतकवाद के विलाफ सिवाएक गुट होकर अवाज उठाते। सैनिक प्रवेश से पवित्रता नष्ट नहीं हुई अपितु स्वण मदिर की पिवत्रता और मदिर दोनो सुरक्षित रह गये। नही तो उग्रवादी स्वण मदिर को उडा देते । इदिरा जी ने स्वण मदिर बचा लिया पर इदिरा जी को नहीं बचने दिया। स्वण मदिर टूटे भौर बन भी गये। लेकिन हुजारो लोग मिट गये। जिस मा की गोद साली हो गई। जिस बहुन की माग उजह गई। जिसके माता पिता भाई बहन पति पुत्र समाप्त हो गये क्या उहे अब प्राप्त हा सकते हैं ? देश के अन्दर ये श्वमनाक काण्ड से देश कमजोर होगा। दुश्मन आप पर हावी होगें और आप सभी गुलाम हो जायेंगे। यह खूनकी होली बन्द माई चारा, प्रम शांति स्थापित करें और र्देश की एकता अखण्डता को बनाये रखें। खालिस्तान समथक उग्रवादियो के विरुद्ध देश के सभी सिक्त एक होकर अनवाज बुलाइ करें। इसी मे देशा और देशवासियो का मसा है। बद सिख माई गुरूओ की वाणी औरकूर्वानी को भूलते जा रहे हैं। हम अब उनकी वाणी पर नहीं चलते। श्रीराम को हिंदू भी और सिख भी मानते हैं। फिर एक क्या है ? गुरू ग्रन्थ साहब मंतो अनेको जगह राम के नाम तथा ब्रह्मा विष्णु महेश आदि के नाम भाये ही हैं। गुरू जी ने भी कहा कि श्रीराम गुण गाबो।' श्रीराम बोलन वाले सभी गुरू के शिष्य हैं। सिफ केश दाढ़ी रखने वाले ही शिष्य हैं ऐसी बात नहीं। कहीं भी हिन्दू सम्मेलन होता है तो गुरू को के नाम पर द्वार सज्जा दी जाती है। गुरू को के चित्र और जीवनवृत प्रदक्षित किये जाते हैं तथा उनके अनुकरण करने की प्ररणादी जाती है श्री गुरू गाविन्दसिंह के दोनो पुत्र घरे हिन्द बनकर हसते-हसते सरहिन्द की

बीबारों में चून दिये गये। समर विवसीं नहीं बने। गुरू तेगवहादुर ने दिल्ली संधीख करा दिया। लेकिन हिंदू खम की रक्षा दे मुद्द नहीं भोड़ा बीर न विवसीं बने। ऐस ही जानेको जान हुनीनिया देकर नर नारियों ने अपनी जीवन गांवा असर कर तो। २६ सितन्दर हिंदर और जार्ड १९६४ में तीन बार भारतीय बायुवानों का अपदुरण कर ताहीर ने बाया गया तथा वपहरण करों को शस्त्र दिये गय। पाकिस्तान के उपवासियों को तैन्य विकास दी गई। पाकिस्तान के मुसलमान मुक्यूची जानते हैं ≽ जक्षावियों को तैन्य विकास दी गई। पाकिस्तान के मुसलमान मुक्यूची जानते हैं ≽ गुम्पाई किया। सिक्तों के दोस्ती कर उन्हें मुक्पाई किया।

यही नीति है 'फूट हातो राज करो की। मिदरी मुख्यारो से गा काट कर करना गुरू बाज रामायण गीता सादि को जमाना या पविज स्थलों को विनस्ट करना हत्यादि अने सिख कभी नहीं कर सकते। सत्ता की हत कर मार से तर कही नद नारियों कच्चे व्यवसायी सफतर सेना, बादि मारे गे। ऐसा करने कि किसकी अति हुई 'तम्पत्ति लूटे गये कुलाने में बाज मनायों गई। उपवादी सिखने ने बुत्त सिखा को सारा। ये सब क्यो हुए 'व सन्तत पाकिस्तानी सिखी के नेय से पकड गये। पाकिस्तानी सामस्ट व क्या हुए क्या इन सब बातों से मारादीय सिखा की तर सन्तावशिद्या की सामस्ट व क्या हुए क्या इन सब बातों से मारादीय सिखा की तर सन्तावशिद्या की सामस्ट व क्या हुए स्था इन सब बातों से मारादीय सिखा की सामस्ट की स्था हो सामस्ट की साम सामस्ट के साम हो बात्या । उपने सामस्ट की स्था सामस्ट की साम साम सामस्ट की साम सामस्ट की साम सामस्ट की साम साम सामस्ट की साम सामस्ट की साम सामस्ट की सामस्ट की

लेखक कातिकारी सूर विश्वस्थार आर्क समस्तीपुर (विहार)ः

र्मै बाधुनिक मारत के महान पष प्रदेशक स्वामी देशानन्द केप्रति श्रद्धान कि प्रस्कुत करता हु जिन्होंने मत मता तरो और अनुग्ठानों के वीहद जगन में से निसर्वे देश केपतन के काल में गहरी वास उग जायी थी साग को परिष्टत किया ताकि हिंदू लोग परमारमा केप्रति निष्ठा और मानव सेदा का सादर और विवेकपुण जीवन स्वयोग कर, सक।

— स्वी द्वाप रामुद्र



राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय नवजागरण ग्रौर महर्षि दयानन्द

—श्री रामगोपाल जी शालवाले

यह कहने में हमें सकोच नहीं है कि इस समय राजनैतिक बल वर्ष निरपेक्षता की झाड में भारत के बहुमत की पग-पग पर अबहेलना कर रहे हैं। इन सबका मुकाबला करने के लिए झाउँ समाज को हिन्दू जाति का एक प्रचण्ड सगठन खडा करके ईशाई, मुसलमान और सिक्खो, के अलगावबाब के नारं का वैद्या भर में सक्तिय विरोध करते हुए जन झान्बोलन चलाना चाहिए।

ससार के इतिहास से प्राय देवा जाता है कि समय समय पर मानव-जाति को उठाने के लिए कुछ विशेष आत्माए इस परती पर अवतीण होती हैं। सृष्टि की उत्पत्ति एक अरब सतानवे करोड वर्ष पुरानी हो चुकी है। अहायुवधो की सम्बी सुधी से अनेक पराक्रमी न वकतर्ती राजा-महाराजा, ऋषि धुनि, वडे-बटे बोद्धा एव उच्च कोटि के महा-मानव इस वरती पर पैदा हुए और वपना-अपना काम करके उसकी छाप ससार पर छोड़ गए।

ससार की राजनीति से सबसे पहले समाद वैवस्वत मनुद्वार, उन्होंने राज्य-प्रणाली का वाविष्कार किया और वेद के आधार पर उस समय को जनता को व्यवे-व्यवे कर्तव्य के पालन की ओर अम्रतर किया। इसी प्रकार सदिया बीतती गई और बडे-बडे महापुरप व्यवना व्यवना काम करते चले गए, किन्तु इतिहास में उनकी व्यवर गावाए बाज भी सुरक्षित है।

आर्थभूमि भारत मे लगभग १ हजार वर्ष पूज महाभारत के युक्क के पहचात् बहे-बढे राजाओं जीर महाराजाओं का स्नास हुआ और वैदिक धर्म का लोग होने लगा। महाभारत के पश्चान् भारत से वर्ष का ओ ह्नास हुआ, उसका दिख्य के पृष्ठों में भी रेखा जा सकता है। राजनीतिक गिरावट के साथ-साथ चार्मिक गिरावट भी हस देश में जाई और वैदिक धर्म अनेक रूपों में यट गया। वाभमार्ग का उदय हुआ और वाममार्ग के कारण जैन और बौद्ध धर्म ने जन्म लिया। हिन्दू समाज वैष्णव तथा धाकत आदि अनेक सम्प्रदायों में विभक्त हो गया, जिसके परिणास स्वरूप अनीस्वरवाद का प्राकृत हुआ।

यंन और बौद यम के प्रचार का सामना करने के लिए सकराचाय भारतीय मन पर उपरे बीर इन गास्तिक मती का नुकासक्ता करने के लिए उन्होंने नहीं ते बहु का प्रतिपादन विया। भर्न नास्तिक नोग प्रष्टिन नो अंग ना प ते थे भेर देवर की स्तुति व सता से इस्कार करते थे, यही बावाय सकर ने प्रकृति का सकन कर एक हिंदरवार के निर्माण के स्तुति के स्तुत्ति के स्तुति के

सन् १०५७ ई॰ मे महॉप दयानन्द ने बार्यसमाज की स्वापना की। बपने कमर प्रय सत्याय प्रकाश' में खुले रूप में अपने देश में अपने राज्य का समयन किया और विदेशी राज्य की बूराह्मों पर खुले रूप से अपने विचार जनता के सामने रखें।

सन् १६०५ वे भारतीय राष्ट्रीय कार्यस की स्थापना एक प्रयेज मि॰ स्पूनने की, किन्तु उस समय कार्यस के सामने पूर्ण स्वतन्त्रता का कोई लक्ष्य नहीं या, विल्क लक्ष्य यही या कि जिलामीश जौर पुलिस अधिकारी भारतीय हो। इसी आधार पर मिंठ स्पून ने तरकालीन खासको से विचार-विमक्ष किया। किन्तु इससे १० वष पूर्व ही महर्षि स्यानन्द ने धार्यसम्ब की स्थापना करके पूर्ण स्वतन्त्रता की माग कर दी थी, स्वीकार किया था।

स्वामी दयानन्द ने १८०२ ई० में कलकता के प्रमोद कानन से बैठकर शर्रकाशीन वायसराय मि० लाड नार्यंद्र के के साथ जो भेट की बी, उसमें बायसराय महोदय ने महींच दयानन्द से कहा था----'स्वामी जी ! आप ईसाई, मुसलमान, पौराणिक व जैन बादि वमों का सम्बन करते हैं, धापकी सान को कोई सतरा दो नहीं है? धन्यवा सापकी सुरक्षा का प्रबन्ध कर दिया आएगा।" महर्षि दयान-द ने जबाब दिया था— "नहीं महोदय, सापके तातन में मेरे वर्गप्रधार में किसी प्रकार का सतरा नहीं है। मुके सवेंगिकतान देखर पर विद्याद है, वही मेरा वरका है।" एव पर वायसराय ने बढ़े गम्भीर भाव ते कहा— "महाराय ! यदि हमार राज इतना सम्झा है तो साप अब उपदेख करते हैं तो परमाराम से प्राचन कर दिया करे कि प्रधान का वहता तियो तक चनता रहे।" वायसराय की यह बात सुनकर महिंद यानच्य का बेहरा ताम्ये की तरह सात हो गया। उन्होंने कहा— "धर्य स सरकार बहुत दिन तक चने, ऐसी प्रधान नहीं कर सकता। मैं तो मगवान है यही प्रधान करता हूं कि वह कैसा प्रकादिन होगा जब प्रपंत आरत छोड़कर चने वाएगे।" इस मुकाकात के बाद ही प्रयंव सरकार का रवैं या स्वामी दयानन्त के प्रति बहुत कठोर हो गया सौर उनके पीछे ही। आई। विरा हो स्वाम स्वामी दयानन्त के प्रति बहुत कठोर हो गया सौर उनके पीछे ही। आई। वार का रवैं सा स्वामी दयानन्त के प्रति बहुत कठोर हो गया सौर उनके पीछे ही। आई। अवीं का स्वाम हो। स्वामी दयानन्त के प्रति बहुत कठोर हो गया सौर उनके पीछे ही। आई।

जोधपुर ने डा॰ वती मदीन खा, जिसने महुचि का इनाज जन्तिम समय मे किया था, वह भी प्रश्नेजों का पिट्टू या 1 राष्ट्रीय और वामिक चतना कं क्युट्व महुचि दयानन्द ने प्रजमेर में बाज के ठीक १०१ वर्ष पूर्व दोपावली के दिन इस ससार को सर्वेज के लिए त्याग दिया।

३ नवम्बर से ६ नवम्बर, ६३ तक हमने युगपुरय सहींच दयान-द का निर्दाण बताब्दी-समारोह सोत्साह मनाया था लोग पुछते हैं, बायसमात्र का जनता को वया कार्यक्रम देना चाहिए। भेरा कहना है कि महींच दयान-द न बायसमात्र क दश नियम बनाकर वर्ग के विद्वात का जो स्वरूप हमारे वामन रखा है, वह द्याना पूण है कि उससे बाहर कोई चिन्तन की जीज ही नहीं रह जाती।

मैं आर्थ बन्यूओं से इतना ही कहना चाहता हुकि वे बापसी फनाडे सन ग्रुटाव को दूर करें, यही, बायसमाज की प्रगति से रोडा है। हमे एक-दूसरे पर विरवास करके समफने का प्रयास करना चाहिए। यज्ञों के याथ्यम से हम बामिक वृक्ति का प्रचार करें, वर-कर में नैटिक ज्योति जगाए और इसका प्रचार-प्रसार करें।

नया जन आन्दोलन अपेक्षित

३७ वर्ष की राजनीतिक स्वतन्त्रता का विहायलोकन करते हुए यह कहने में हमें सकीय नहीं है कि इस समय राजनीतिक दक्त यम निरंपेशता की आड़ म भारत के बहुमत की पमन्पम पर जबहेलना कर रहे हैं। इस सबका मुकायला करने के लिए जाय-स्थाय को हिन्दू जाति का एक प्रचण्ड साठन खड़ा करते हैं। ई, पुरुष्पान जीर सिक्स्यों के जलागावाद के तार के बहा सर से सिक्स्य विरोध करते हुए हुए जन-जा-दालन चलाना चाहिए। जाज चुण्याप होक्स काम करने का अवसर नहीं हु, जांपतु प्रचार की भी बड़ी पायस्थरण्या है। आध बन्धू इस दिसा म भी सदेव आगरक रह।

दक्षिण पूर्व एशिया की सास्कृतिक तीथ यात्रा दक्षिण पूर्व एशिया की जो सास्कृतिक तीथं यात्रा सामती ६/२रा गांधी क निवन के फलनवरूप स्वर्गात कर दी गयी भी उसकी विषया अब २ फरवरा १८२४ सु १६

फरवरी १६८५ कर दी गयी है। विश्लेष जानकारी हेतू सम्पर्ककरें ---

श्री बचोक त्रिया, टेवन ट्रस्ट, बी $_{--}$ 24 निजामुद्दीन इंस्ट, नथी दिल्ली--13 (हुरमाय-980216)

वाषिक चुनाव

बार्य समाज सान्ति नगर, सोनीपत, (हरियाणा) की प्रबन्धक समिति का गठन निम्न प्रकार हुआ - श्री बेंब व्यकुष्ण दास (सरसक), श्री रामसास मदान (प्रवान), श्री हरिबन्द रनेहीं (श्रो), श्री मेहरचन्द, कोबाध्यक्ष

भी वर्षदेव चक्रवर्तां, 10 माज्यवस्तां दिल्ली, 5 ने सुम्माव दिया है कि आयं सन्देख पारताहिक एत्र में कुछ परिवतन किये जाय। असे उपदश्यको की सम्मी सूची न प्रकाशित की जाय साथ ही साथ कारने यह भी बताया कि महिताको, खिछुकी, ज्ञान विज्ञान, बोडी राक्ष्मीत्वत कर सहायुरव्यो की जीवन गाथाये नियमित रूप से छमनी बाहिए। जिससे कि धार्व संदेख पत्रिका का स्तर सुभारा जा सके। खार्थ सन्देख के सम्मादक मध्यक ने उनके सुम्मावो को स्वीकार करके तरनुक्य पत्र का सम्मादन कार्य प्रारम्भ कर दिया है।

राम जन्म भूमि के मुक्ति हेतु प्रकाशवीर शास्त्री के प्रयास

- स्वामी वेदमुनि परिवाजक

उन दिनो भारत के प्रधानम त्री श्री जवाहरलाल नेहरू व भारत सरकार न देश में साम्प्रदायिक तनाव के कारणों को दूर करने तथा हिन्दू मुसल माना मे साम्प्र दायिक सदमाव उपान करने की योजना के नाम पर यह निश्चय किया था कि जो मस्जिदें हिंदुबों के अधिकार में हैं वह हिंदुओं से लेकर मुसलमाना को दे दी जाय ।

सन १६४७ मे पाकिस्नान बन जाने पर जिन स्थाना के मुसलमान उधर चले गयेथ वहां की मस्जिद बकार हो गयी थी। पाकिस्तान से बघर होकर लाखो की सक्या में हिंदू इचर भारत में आये थे इहोने जहा जहा पाकिस्तान गये हए मुसलमानो के मकान रिक्त पह देखे वह उही मकानों में रहते लगे। जिन स्वातो तयाजिन नगरों के जिन कात्रों के सभी मुसलमान पाकिस्तान भाग गये थे वहा की मस्जिद बकार पढी बी। पाकिस्तान से जाने वाल शरणार्थी व घुको ने ऐसी मस्जिदों में भी रहना प्रारम्भ कर दिया या ।

भारत सरकार की योजना उन्ही मस्जिदों को मुसलमानों को देने की बनी व्यो । मुसलमानो ने बद्यपि ऐसी कोई माग नहीं की थी। न तो ससद में और न ससद से बाहर ऐसी कोई बाबाज सुनाई दी थी। सुनायी देती भी तो कहा से और क्या सुनायी देता जिन मस्जिदो म पाकि तान से बाये हुए हि दू शरणार्थी बसे हुए थे उनक्षत्रों में कोई मूसलमान था ही नहीं तो वहां कौन नमाज पढने जाता श्ववा किस प्रकार उन मस्जिदो के लिए बाबाब उठती ?

वास्तव मे बात यह है कि स्वत त्र मारत मे प्रथम बार उन दिनो भारत सरकार के गांधीबाद में धम निर्यक्षता का उवास मारहाथा और उस समय के मारत सरकार के प्रमुख भी जवाहरलाल नहरू ने मुसलमानो को मस्जिद सींपने की योजना बनाकर उस उबाल को प्रकट किया। बहु मस्जिद रिक्त करायी गयी। उन वर्बाद होकर आए भारत भक्त हे दुषों को एक बार फिर शरणार्थी बना दया गया और इस प्रकार वापू के लाडलो रेबपने पूज्य बापू के संयवहिंसा |त्रकी जाने या बनजाने मे हया कर

मस्त्रिद रिक्त करायी गयी और सलमान सगठनो को बाह्वान किया गया कि वह उन्हें सम्भाल। पता नहीं कहाकहा से मुल्ला स्रोग लाकर उन मस्जिदा में अजान देने और नमाज पढ़ने के लिए बठा दिय गय। उनमें में से बहुत सीमस्जिदों को तो वर्षों तक मूल्ला उपलब्ध नहीं हो सके।

ससद-केसरी स्व पण्डित प्रकाश बीर जी शास्त्री उन दिनो लोक सभा के सदस्य थे। १६६१ की श्री कृष्ण जम बष्टमी के भवसर पर उद्योगे लोक समा मे यह प्रदन एक प्रस्ताब के रूप मे उठाया उन्होने अपने प्रस्ताव मे कहा या कि मैं भारत सरकार की इस मावना से सहमत ह कि देश में साम्प्रदायिकता के विषय को समाप्त करने के लिए विभिन मतो के नागरिको मे पारस्परिक सदमाव उत्पन्न करना आवश्यक है इस सिल सिले मे पाकिस्तान बनने पर बहुत से मुसलमानो के उचर चले जाने के कारण वकार पडी जिन मस्जिदों में पाकिस्तान से आये हुए श्वरणार्थी बस गये थे भारत सरकार ने उन मस्जिदों को मुसलमानो को सौंपने की जो योजना बनायी है उसी के सादभ में मेरा यह कहना है कि साम्प्र दायिक तनाव का कोई भी चिन्ह सेथ नही छोडा जाना चाहिए। इसीलिए नेरा यह प्रस्ताव है कि श्रीकृष्ण जामाध्यमी के धुभ अवसर पर योगीराज श्रीकृष्ण के जम स्थान मचरा मे श्रीकृष्ण जम मन्दिर का तुडवाकर मुगल सम्राट बीर गजेब द्वारा बनवायी गयी मस्जिब हिंदुको को दिलादी जयतथासाथ ही विदिशा (मध्य प्रदेश) का विजय मन्दिर राम जाम स्थान अयोध्या की व बरी मस्जिद विष्वनाथ महादेव काषी के मन्दिर का जो भाग मुसलमानो के अधिकार में हैं वह और सम्भल जिला मुरादाबाद का हरिहर महादेव का मदिर भी जो मस्जिद बना हुआ है हि दुओ को दिसा दिया जाय।

उससे ठीक अगले दिन आय समाज दीवान हाल दिल्ली की उस महती सभा में जो श्री कृष्ण जमाष्ट्रमी के उपलक्ष्य मे अथ्योजित की गयी थी श्री शास्त्री जी ने अपने माथण में सोक सभा के अपने उक्त प्रस्ताव की चर्चा करते हुए कहा याकि मैं यह जानता याकि लाक सभा में मेरे इस प्रस्ताव पर विचार भी नहीं होगा कि तुफिर भी मैंने इस प्रस्ताद को रक्षायातो इसलिए कि इसकी चर्चा लोक समाकी फाइस मे बाजायेगी जो एक दस्नावेज के रूप में सुरक्षित रहेगी बौर मविष्य में मारत की मावी सन्त वियो को प्ररणा का कारण बनेगी तथा उद्देयहस्मरण करायगी कि यह भावना अतीत में भी कभी मरी नहीं थी।

अब सन १६८४ में ठीक २३ वष बाद हम कुष्ण भक्त राष्टवादियो से कहना चाहते है कि प्रयक वय श्रीकृष्ण जमाष्टमी मनाने वाले क्या आप लोग ससद केसरी स्वर्गीय श्री पण्डित प्रकाश बीर शास्त्री के उन उदगारों से सहमत

हैं जो उन्होने १६६१ की श्री कृष्ण ज माष्टमी के बवसर लोक सभा मे प्रकट किय थे और क्या उन भावनाओं का मूल्याकन कर खाप उनकी रक्षा के जिए तयार के जो उ हाने उस समा मे व्यक्त की थी। यदि हा तो सगठित हो कर इसके लिए प्रयान की जिए यदि प्रयान किय गया तो सफलता आपके पास होगी आने वाले ससद के निर्वाचन से पहल ही इस बावाज को उठाइय।

स्वार्थी पच

ले॰ स्वामी स्वरूपानन्व सरस्वती प्रधिष्ठाता वेव प्रचार [काञ्यमय बच्टान्त]

कुछ स्वान इकटठ हुए जहापर समन वक्षकाथी छाया। मिल करके एक पचायत की जो हुवाफसला समक्राया। बचा काल थे पच बड प्रधान बने पचायत कर। प्रस्ताव पास यह कर दीना बात य प्रम सहित कर कर।।

को लंगनिये जय [।] जाति व घु[।] तुम वाज न आर्थे हरकत से । हद मेन तुम्हारी पगचारताहै कोई भाई दहसन से॥ तुम लडते रहते सापस में बदनाम नाम है स्वानो का जब लडो नही आदर करिये अपने आये मेहमानो का॥

एक तो जमाना बहुत बुरा मुन्किल है नहीं पेट भरता। महगाई भी जोरो पर है अब दिल भी बीर नहीं वरता।। वर वर इकारे जाते हैं कुत्ता कुकर कह कह बोल। कुछ गाई वड भाग्यशाली वो वठ कारों में डोल ।

> बूचा बोला जाति व भूओं अब लडना परस्पर करो बन्दा। जो करे उल्लाबन उसका भी दे दण्ड करो मिलकर प्रवास । हो गया पास प्रस्ताव सभी ने पत्नी का माना कहना। माई माई सब लड नहीं आपस म मिल जुल कर रहना।

उस बक्ष के ऊपर एक चील उडकर दूरी से आह थी। एक मन काटकडालगाचोच मे उठाकही स लाई थी। था बजन अधिक उस दुकड़ में या रखाचाच में दाड सिरा। गया सूट चोच से अकस्मात पचो के बीच मे बान गिरा

> देखाओं बीच सास पद्धा तो मृहम पानी भर आया। भटकालू उस पर टूट पक्षा बूचा भी आरोगे को धाया। हो गयी भग पचायत सब होन लागी छीना ऋपटी। क्याकर समासद बचारे जव पच होय छलिया कपटी।।

ऐसे ही पच स्वार्थी जोस्वाय हित टूट-टूट पडते। अपनीही उदरपूर्तिका मित्रो केसाथ लड रहता। यह स्वाय सगठन की रस्ती का पल मे तोड फाड देत कहे स्वरूपानन्द स्वार्थी पलमे प्रम तोड देते ।।

दिल्ली साय बीर दल की बठक

बाय वीर दल दिल्ली प्रदेश का एक अन्यावश्यक बठक दिनाक २ दिसम्बर १९८४ रविवार को प्रात ११ वजे बायसमाज चूना मण्डी पहाडगज नई दिल्ली ४४ मे होगा। सभी बाय व चुबो से विनम्न बनुरोध है कि समय पर पद्मार कर बाय नी रो का उत्साह बढाय । प्रायक आयसमाक के प्रधान तथा मित्रयों से विश्वय प्रायना है कि निश्चित समय पर अवस्य पथारें तथा अपनी आयसमाज से कम से कम दो आय बीरो को साथ साथ ।

अध्यक्ष वैदिक सस्थान नजीवाबाद उत्तर प्रदेश



हैदराबाद सत्याग्रह

भारतीय स्वाधीनता सम्मान योजना गृहमन्त्रालय की शिफारिश

- बहादत्त स्नातक

सन् १६७२ में स्वतन्त्रना रजत जयन्ती के अवसर पर केन्द्रीय सरकार ने स्वतःत्रता सेनानी पेंशन का श्रीगणेश किया। यह १००० रूपए वाधिक आय से कम वालों को ६ मास का कारावास, प्रमिगत नजरबन्द (भारत की भूमि में होने पर) वा सम्पन्ति जन्त होने बादोलन के दौरान बपन होने अथवा रोजगार के स्रोत समाप्त हो जाने पर मिलती वी । आ जादी के पूर्वकी रियासतों मे प्रजातन्त्री अधिकारो तथा भारत में विलय के प्रकृत पर पीडियों को जी इसमें चामिल किया गया था। बाद में १६८० में ५००० रुपए की सीमा हटाकर अपन्य रियायते भी दिया जाना सुक करके उसका नाम सेनानी पेंशन की बजाय स्वाधीनता सेनानी योजना १९८० कर दिया गया। इस दिखा मे आवस्यक प्रशासनिक एव वित्ताय कदम केन्द्रीय सरकार ने उठाये। भारत म विलय के प्रक्त पर पीडिलो को भी इसमें भी शामिल किया गया वा। बाद ने १९६० मे ५००० की सीमा हटाकर अन्य रियायर्ते भी दिया जानाभी घुक करके उसका नाम स्वतन्त्रता सेनानी पेंशन की बजाय स्वाधीनता सेनानी सम्मान योजना १६६० कर दिया गया, इस दिशा में आवश्यक प्रशासनिक एव वित्तीय कदम केन्द्रीय क्षरकार ने उठाए। मारत सरकार ने इस काम को करने के लिए बृहमन्त्रासय के बन्तर्गत गृहमन्त्री और राज्य के गृहमन्त्रियों के अतिरिक्त बाठ ससद सदस्यों की एक समिति गठित की। इससे पहले यह नहीं बनी थी। गत वर्ष तक इसकी ६ बैठकों में स्वीकृत अनेक सुफाबो को सरकार ने माना है। पूतपूर्व ससद सदस्यों को यह सम्मान पेंशन व्यविरिक्त दी जाती है। वर्तमान में केन्द्र सरकार इन सम्मानितों को २००) और इनकी विधवा पत्नी को २००) मासिक देती है।

११७२ की ताज्यन की की योजना ११७६ में बन्द कर दी गयी। वरस्तु
११८० में नह पुन जारी कर दी गई मीर केजीय वरकार के जुरोब पर उनको
त गुक विकित्स, गाम जादि की युविधा भी बहुत सी राज्य सरकार दे रही है।
वेंबान की बीधा में भी राज्य सरकारों के हारा थी जाती है, मिल-निक्स है। १००-११०
के बीच। १६ सम्बन्ध में वामिक जान्योजन मानकर ध्रायंसमाज ने सामूहिक रूप के
दैरराबाद बायं स्त्याबह १९३६ के पीडितों के लिए कोई नाग नहीं की। मृतपुर
तिजाम रियावत के व्यविधान वायसमाजी थी दितों ने व्यविधात रूप में वामविधा
कार्यारह १९३६ के वीचा वायसमाजी थी दितों ने व्यविधात रूप में वामविधा
के प्रमाण स्वकर १९७२ की योजनाधों के तहत यह साम उठाया है। वोच बारत में मी
हुछ लोगों को वायसमाज नाम के छोड के पर पंचन मिली है। बेद यही है कि बाज
तक हत सम्बन्ध में सम्बेत कर में कोई प्रमाण नहीं हुआ है। वार्वदेशिक बाध रितिनिष
समान वनमान प्रचान श्री रामनोपाल वालवान ने गत वर्ष २० नवस्बर को उरकासीन
प्रधानमन्त्री स्व श्रीमती इतिरा गांची को एक विस्तृत पत्र तिसकर प्रधान होचा। जिस
पर गृहम-नालय ने हैरराबाद वार्यक्षमाज के १९३६ के बत्यावह को इस योजना के
कत्यात प्रस्वीकार कर दिया।

हन पिनन्यों के लेकक ने भारत सरकार की सेवा में प्रविच्ट होते समय १६५३ में स्पष्ट कप से तम जीकरीवा आयोग की लिख दिया वा कि हैदरावाद वार्यसत्याग्रह में लगमन ६ माद वह जेज में रहा वा। जब १६०२ की योजना स्वान्त्रता होनानियों के लिए तिकली तब उसने १६०४ में तास्त्रण गांव (वेतन १००० वार्षिक से ज्यादा था) और इस प्रीणी के सरकारी कर्मवारियों के लिए दी जाने वाली रियायों के लिए त्याय पूर्वक मान की परन्तु कुछ नहीं बना। सरकार का उत्तर या कि उक्त आयोशक की सरकार ने स्वतन्त्रता जादीनन का मध्य कभी तक नहीं माना है। इस सम्बन्ध में तक्ता तियायों के लिए तो माना है। इस सम्बन्ध में तक्ता तियायों के लिए तो माना है। इस सम्बन्ध में तक्ता त्रीन्ता तथा विव्यत्त की सरकार ने स्वतन्त्रता जादीनन का मध्य कभी तक नहीं माना है। इस सम्बन्ध की सरकार ने स्वतन्त्रता जादीनन का मध्य कभी तथा ने बीर बुद्दानाव्य से उनका उन्तर नकारात्मक मिला। में देश सामसे के बारे में सावविधिक समा के पुष्टा प्रवास की स्वत्य की प्रवृद्ध प्रवास एवं मुंद्र प्रवास की स्वत्य प्रवास की स्वत्य की सम्बन्ध स्वत्य की स्वत्य की स्वत्य करने पर पर मी परिणाम सूच्य रहा।

बन्त में मैंने २८-१३-६२ को स्व प्रधानमन्त्री श्रीमती इत्विरा गांधी को ब्रान्त्यम् एक डाक द्वारा व्यक्तिनत सनोधन के साथ निक्का विसमें सरकार के पिछले निर्णयो की अवस्कता और पुनर्विचार के लिए सिक्का गया। उन्होंने वह पत्र गृह मन्त्रालय को ब्राहरूपक कार्यवाही के लिए भेज दिया। उपर मैंने प्रक्रिक गारतीय स्वाधीनता सेनानी सन्तर्जन को निचार नोट और परिचिच्छो के साथ भेजने के असावा इस सम्बन्ध में हिंदी-सर्वजी पत्री में आवाज उठाई कीर समस्त्र के सरस्यो के साथ बैठकें की।

धार्यसमानी जनता को यह जानकर हवं होगा कि गृहमत्रालय की सम्बन्धित सनाहकार समिति ने सर्वसम्मति से हैदराबाद के बार्यसमान सत्वायह को स्वाधीनता सवाय के कप में स्वीकार कर सिया है बौर प्रतीमण्डम की मजूरी के सिए गेजने का

निश्चय किया है।

बाजा है कि स्व इनियर नाबी के बीवनकाल ये वो विजय तिया बया है, उठे सनिवण्यत की भी स्वीकृति बवस्य प्राप्त होगी। सम्पन्त कराने के लिए उद्योग कर रहे हैं। एक युग के बाद वन स्वाधीनता सेनानियों और उनके वारियों के लिए यह एक सन्दी अदावित होगी।

आर्य केन्द्रीय समा दिल्ली राज्य की अन्तरंग समा की बैठक

सभा के महामन्त्री श्री सुर्यदेव ने एक विक्राप्त हारा बताया कि बार्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य की बन्तरम सभा की एक ब्रस्थावस्यक ढेंटक स्वामी श्रद्धानन्त्र विल-सान विक्स, केन्द्रीय के बार्यिक ब्रम्थियन तथा दिल्ली जायं प्रतिनिधि सभा द्वारा आयो-बित महींच स्थानन्त्र निर्वाण श्रद्धान्त्री के सम्बन्ध से विभाग करने हेतु शानिवार १ दिसम्बर १९८४ को साथ ५-३० वन्ने बार्यसमान मन्दिर, करोल बाग, नई दिल्ली से सभा प्रधान श्री महास्य बमरास जो की बायसता में होगी।

निर्वाण दिवस के अवसर पर विशेष लेख

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि समा (पंजीकृत) की आवश्यक बैठक

सभा के महामन्त्री बा॰ जमपाल ने एक विक्षांत्र द्वारा बताया कि दिल्ली प्रदेश समस्त आयंक्षमात्रो, स्त्री समात्रो, विक्षण तथा बन्य सम्बद्ध सर्थाको के अधिकारियो एक मार्थकाली की एक व्यावस्थक बैठक महिंच स्वानन्द निर्वाण बताब्दी के सम्बन्ध में कार्यक्रम की बन्तिम रूपरेक्षा और चन सग्रह की योजना बनाने हेतु बृहस्यति २६ नवस्य १९८५ को प्रच्यान्हीतर ५-३० बचे आयंसमात्र मन्तिर, १५ हनुतान रोड नई ' दिल्ली में होगी।

कानपुर मे सिस्तो को मुसलमान होने से बचा लिया गया

कानपुर हाल के हिलक दो। मैं यहां से काफी सिक्ष की आयं समाजी नेता औ देवीदास आयं ने समय पर मुखसमान होने से बचा लिया। घटना इस प्रकार बतायी आती है कि हिन्दू सिक्ष के नाम से हुए सचये में नवाबयज छाननी खेकों में काफी सिक्स आहसी ने अपने परिवारों के साथ छात्रनों में मुससमनों के यहा घरण भी थी। सिक्सों के मन ने बस समय हिन्दुमों के सिक्द बत्तेवना भी थी। उस उत्तेवना को और अवकाया गया। और उन्हे पराम्या दिया गया कि वह मुसलमान हो जायें। इसके लिए वह तैसार हो गये। मस्विद में पर्यं परिवर्तन का कार्यं क्रम बनाया गया।

कम्पू के बीच किसी ने केन्द्रीय बाय सभा व जिलाबायँ प्रतिनिधि सभा कानपुर के बायब की वेबीदास पार्य को फोन द्वारा सुचना हो। इस पर की बाय ने तुरत्व ऐसे एक बाइयो से सम्प्रके किया। बीर उनसे कहा कि यम सीदा बाजी की बस्तु नहीं हैं। काफी सम्प्रके ने बाद उनके कोच खात किया। श्री आप ने उनको बाय मिस्टर में रहने का बायह किया। इस पर इन सिख परिवारों ने मुसलमान होने का विचार बदल दिया बीर मौके पर पहुचने के लिये श्री आप का चन्यवाद किया व उनसे हुस्ड सहायता वी प्राप्त की।

एक परिवार की शुद्धि '

हिन्दू शुद्धि मरलपीय समिति समालका मदी में ता० --११--४ को साम के ४ बजे की हरिविड प्रमान आयंध्यमान याव भोरा रहलपुर विका सोनोपत के महा की वेदग्रकाश सादनी पुरीहित वार्यसमान समालका मण्डी से पारिवारिक सक्त करावाया गाव के काफ़ी रूनो और पुरुष सम्मितित हुए सांध्यमान समालका मण्डी के भी अधि-कारी व सदस्य बाए हुए थे। १० व्यक्तियों ने मकोपबीत भारण किए। स्वामी संवानद ने वो हिन्दू शुद्धि मरकाणीय समितित समालका के महामन्त्री है वैदिक वर्ष को विशेषता कीर शुद्धि की वावस्थकता पर प्रकाश बाना। इस अस्वसर पर औ क्वरसिंह पुन्न और सत्वक मूना बाट ने स्वेष्णा है परिवार सहित वैदिक धर्म की दीशा सी।

ब्रार्यसमाज बेलामेघ (समस्तीपुर) मे देवयज्ञ

- (१) बायसमाज नेतामेच (समस्तीपुर) ग२०१००४ को देव यज्ञ तथा मजदूर नरनारियों को भोजन कराकर दस्त दान कम उददर आय ने किया। अपने पूजा के वार्षिरिक अवसर पर इस कायक्रम में कातिकारी सूर विदवस्थार आयं ने कहा कि असहाय की तहायता करना ही सच्ची पूजा उत और सबसे बडा धम है। इस वजदर पर श्री नवस किसीर शास्त्री थी चन्द्रदेव सत्याचीं न अपने बचने विचार प्रकट किए।
- (२) बायसमान समस्तीपुर में राष्ट्रीय गोरक्षा सच की बंठक कार्तिकारी सुर विद्यम्पर बाय की बण्यस्ता में की गई तथा जिल के सभी प्रवृक्त मक्ताप्रक्रम जमान के तिए एक समिति बनाई गई संयोजक श्री नवल कियोर दास्त्री नगरपातिका बण्यस्य श्री एरसेवर चौबरी कबीर ब्राध्नम के सबूरत जी श्री० मदन जी (सबू) श्री० अवतेवस्व सौ अधिवस्ता श्री गातीलाल जी तथा दीनदयान कालरा जी। इस बठक में एक प्रस्ताव पात किया गया कि प्रवाशियों संगीहत्या पर प्रतिव व लगाने के लिए तिश्वित बायस्य नता की नहीं देने पर जनता उ ह काले स्म्यूष्ट दिखार रागे हुत्यारे वायद वालों के नारे लगाये।
- (व) समस्त्रीपुर में ११ ११ -४ को बायसमाज विश्व हिन्दू परिषद राष्ट्रीय स्वय सेकस सम भारतीय जनसम्, विद्यार्थ परिषद तथा गायत्री परिषदार के सदस्यगण में । कातिकारी मूर विश्वमन्त्र को जनस्वता में एक बैठक म गायत्री महाराज सहर के कई मम्बार किया गाया। इस बैठक से ए० बीठ एम० कई व्यक्तिकारी गण तथा खहर के कई प्रमुख अपित उपस्थित थे। विश्वमन्त्र भी ने कहा कि हुगारा देश बम सकट मे हैं। इसिक्त समी राजनीतिक गार्टी वासिक मस्त्राए जो हि दू राष्ट्र में जास्या रखत हैं उन्हें एक कुट होकर हिंदू राष्ट्र मोहराज पर प्रतिव व मुक्तमाना को मत्र नहीं देश का और नहीं बजा होने पर प्रतिव म लगाया जाए भूवपीं दियों को निकासा जाए अक्ताववादी उपस्थी कर में तथा मत्र कर स्वत कर स्व

होक सभा

मारत की भूतपूर प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के निवन पर देख भर के बाय समाजों में उनके द्वारा वायोजित शोक समाजों के सदेश जो हमारे कार्यालय को निरन्तर प्राप्त हो रहे हैं उनमें से कुछ निस्न हैं —

ानर-तरप्राप्त हा रहे हुण्यान युद्धानामा हु—— प्रान्तीय आय महिला समा लयोकनगर फीजरोड आय समाज सान्ताकुम्ज बम्बई १ मोझीबाग नयी दिल्यों त दन विवेक विहार दिल्यों फिक्रमिल कालोनी शाहदरा दिल्ली

जिला हिसार मे वैदिक धर्म प्रचार

दिनाक 10 से 16 नवस्वर1984 तक हिसार जिले के निम्न ग्रामों में कवारी सातराडकला धमाना उमरा, ब्रा बासाबास में वैदिक घमके प्रचार का प्रोग्न(म किया गया । जिनम निम्न विद्वानो ने भाग लिया-- आय जगत के प्रकाण्ड विद्वान हा सुदशन देव आचाय महामत्री वैदिक घम महासभा स्वामी मेचान द जो स्वामी बानन्द मुनि स्वामी रामान-द जी स्वामी कीर्तिदेव जी व नारायणदेव प तेजपाल भजनोपदेशक (बाय प्रतिनिधिसमा हरियाणा) ब्रह्म चारिणी बहुन कलावती आचार्या कन्या गुर्केकुल गाठीयार बहन सावित्री महाध्य रिसाल बिह बादि विद्वान सन्यासी उप देशक आदि के महत्वपूण प्रवचन एव भजन हुये। उपराक्त विद्वानी ने इन गाव मे प्राप्त काल यज्ञ व साम काल ईव्चर वेद पासण्ड अहेत्र चराव, सोरी, अध्दाचार बन्द करी बादि विषयो पर विस्तार से प्रकाश डाला। गाव के प्रति ष्ठित लोगो ने इन बाब बिद्वानो का हृदय

से स्वागत किया। सभा को व क या गुरू कुल गणियार को दिल काल कर दान दिया।

सत्यार्थ प्रकाश

—श्री राषस्याम आय विद्यावाचस्पति मुसाफिरखाना सुल्तानपुर उप्र सत्य माग विक्रनाने वाला ज्ञान—विवक बढान बाना। भूषर फैसी गहर तमिला—को निहिच तमिटाने वाला। विससे दिव्यालोक गहण कर हुवा प्रकाशित भ्—वाकाश। दिन्य वही सायायप्रकाश।

> भ्राति समस्य मिटाने वाला दूर क्रमाद भगाने वाला। सग्री घरतीपर निभय हो—डकासत्य बजान वाला। अन्नेय शस्त्र हैं इसके चौदह—मत्य शिवम सुदर समुल्लास।

> > दिव्य वही स याथप्रकाश ।।

सञ्चा इष दिखाया जिसने जीवन मागबताया जिसने। सारे विवर्धियो की शेखी—क्षण मे घूल मिलामा जिसने। कान्ति प्रणनावन युवको का मा की सहस जगाया ग्रास।

दिव्य बही स याथप्रकाण ।।

पांखण्डो को ललकारा मानवता का मिला सहारा पोल खुली मत मतातरो की—जाग उठा भारत सारा। जिसके रहते कमी विश्व जन किंचित होग नही हताशा।

दि॰य वही सत्यायप्रकाश ।

भवैदिक कैसेट

प्रसिद्ध फिल्मी गायक महेन्द्र कपूर द्वारा महर्षि दयानन्द की अमर कहानी

सन्ध्या-यज्ञ शारितप्रकरण स्वस्तिवाचन आदि प्रसिद्ध भजनोपवेशको-

सत्यपाल पविक ओमप्रकाश वर्मा पन्नालाल पीयूव सोहनलाल पविक शिवराजवती जी के सर्वोत्तम भजना क क्नेटस तथा प बद्धदेव विद्यालकार के भजनो का सग्रह ।

आय ममाज के अन्य भी बनत स केसटस क सचीपत्र के लिए लिख कत्त्वोकांन इत्तेत्रवीत्रस (इण्डिया) क्र लि

14 मिकट II फेस II अशोक विहार देहली 52 फोन 7118326 744170 टैलेक्स 31-4623 AKC IN

- प्राप्ति स्थान -

यह कैसेट विस्सी ग्रायं प्रतिनिधि सभा १४ हनुमान रोड नई विल्सी पर भी सिक्ते हैं।



श्रीमती इदिरा गांधी के लिए प्रान्तीय आर्य महिला सभा द्वारा शोक सभा

सुक्षी कुमुद बेन जोशी के द्वीय स्वास्थ्य राज्यमंत्री ने शोक समा मे श्रीमती ग भी को महामानवी की सज्ञादी। १७११ ८४ शनिवार माय बहिन सुत्री ईश्वर देवी जी की अध्यक्षता में स्वर्गीय प्रवानम त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की निमम हत्या पर बीक समा हुई जिसमे दिल्ली की प्रमुख बाय प्रतिनिधि बहिनो ने खद्धाजिलया वर्षित की।

इदिराजीको भारतीय प्रगतिकी बामा विश्व जातिकी वयद्त और बद्धितीय राजनेत्री कहा गया। निर्मीकता से राष्टिहित जीने मरने की बमर प्रेरणा बन

सबप्रथम सभा प्रथाना श्रीमती सरला महता ने शोक प्रस्ताब पढा जिसके समयन

में बहिनों ने अपनी वेदनाए अभिव्यक्त की।

पुरुष ब्रतिथि कुमुद बहिन जोशी बाबर विद्या बहिन शाह बौर कौशल्या समी ने उनके सस्मरण सुनाए? बहिनो का हृदय मारी वा और नेत्र सजल थे।

सभा ने प्रतिज्ञा की कि हम शांति सदमाव राष्ट मे स्वापित करके राजीव गांची को अपना सम्पूण स्नेह समयन प्रदान करने । यही उस महान जात्मा के प्रति सच्ची श्रद्धाजलिया होगी।

'शत शत तम्हें प्रणाम' (राघेश्याम एडवोकेट)

भारत की है भाग्य विवाते मानवता की ज्योति पुनीत । युग युग तक ऋणी रहेगा तेरा सारा जगत विनीत।। गौरव की गाथाए तेरी बनी बरा पर दिब्य सलाम। गत-शत तुम्हे प्रणाम ॥

अपने सौय तथा माइस से देश महान बनाया। कण-कल मे इस पुष्प भूमि के जायत ज्योति बनाया। जब तक सरजंब द रहेगा अमर रहेगा तेरा नाम। शत सत तुम्हे प्रणाम ।। चतुमु स्नी बह प्रगति राष्ट की कहती समर कहानी ।

शक्ति पूज्य । हे इन्दिरा गांधी बीर जमी। बलिदानी।। दीन-दलित की बहेरिक का तुम को युगका बाज प्रणाम ।

शत शत तुम्हे प्रणाम ।।

पहलबान ऋषि प्रकाश का अन्तर्राष्ट्रीय विवाह सम्बन्ध

नई दिल्ली ४ नवम्बर गुरु हनुमान के क्षिष्य राष्ट्रीय पहुसवान ऋषि प्रकाश (बाकनर दिल्ली निवासी) सुपुत्र श्री मागेराम बाय का शुम विवाह बायुष्मती सक्सी ((मि सुको) सुपूत्री अ बुताका कात्सुसी टोकियो (आपान निवासी) के साथ बिना दहेज बैदिक रूप से सम्पान हुआ। दिल्ली के प्रबुद्ध नागरिको पत्रकारो पहलवानो ने बर बध को बाशीर्वाद दिया। इस अवसर पर विभिन्न सस्वाओ को एक सी एक रुपया दान दिया नया ।

।। भो ३म ॥

आर्य जगत की शान २०० बिस्तर वाले

निर्माणाधीन नेत्र चिकित्सालय

(अनुमानित लागत दो करोड रुपए) के लिए

दिल स्रोलकर दान दीजिए

दान की राशि आयकर अधिनियम जी० ८० के अन्तगत करमुक्त होगी।

सारा बान चैक/मनीम्राडर/बक ड्राफ्ट द्वारा

मात्री माता चन्ननदेवी बाय वर्मांच नेत्र चिकित्सालय सी १ जनकपुरी नई दिझ्सी ५० के पते पर भेजा जाए।

दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर घकित किए जाएगे।

निवेदक

रामगोपाल झालवाले सरक्षक सूयदेव महाश्चय धमपाल जोमप्रकाश आय विकिसासय एवं प्रधान िल्लो बाय प्रति प्रचान आय मत्री महाशय निषि समा सा० आ। प्रति० समा के द्रीय सभा सीव य से महाशिया दी हुट्टी प्रा० लिमिटिड १/४४ कीतिनगर अवैद्योगिक सत्र

नई दिल्ली ११००१

उत्तम स्वास्थ्य के लिए

फामरी,

ग्रोषधियां

सेवन करें

शासा कार्यातम ६३, गली राजा केदारनाव

कान न० २६६८३८

चावडी बाजार दिल्ली ६



दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

मूल्य एक प्रति ५० पैसे रविवार, १० फरवरी, १९८३ धार्य सबत्सर १६६०८५३०८४

दयानन्द शताब्दी दिल्ली का अभूत श्रद्धाञ्जलि समारोह धूमधाम से सम्पन्न

राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह एवं केन्द्रीय शिक्षामन्त्री श्री के० सी० पन्त मुख्य त्रातिथि के रूप में सम्मिलित हुए। दयानन्द स्वतंत्रता के

महान् समाज स्धारक थे-महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह

महाव बयानन्व निर्वाण सताव्यी के समापन समारोह में समापन भाषण करते हुए राष्ट्रपति ज्ञानी जैलीसह ने कहा —

मुक्ते महर्षि दयानन्द निर्वाण श्वताब्दी समारोहका उदघाटन करते हए बढी प्रसन्नता हो रही है। महर्षि दबानन्द सरस्वती इस देश की उन महान् विभूतियों में से वे जिन्होंने समाज में फैली कुरीनियों को मिटाने, लोगो को प्रन्यविश्वास से मुक्ति दिलाने भीर स्त्रियो तका पददलितों के कल्याएं के लिए

निर्भीक होकर घावाज उठाई थी। उन्होने भारतीय समाज मे नई जागृति पैद्धा करने की कोशिश की। वे सच्चे समाज सूर्घारक ये।

उन्होने भारतीय समाज को एक नई रोशनी देकर उसे फिर से अपने पैरो पर खडा होने की प्रेरणा दी। उन्होंने शिक्षा का प्रसार, श्रञ्जतो

का उद्धार बाल विवाह का विरोध भक्त ये ग्रीर उन्होने भारत के नव भौर विषवा विवाह का प्रचार कर के जागरए। में बहुत ही महत्त्वपूर्श समाज मे एक नई क्रानि पैदा को। वे स्त्री शिक्षा और नारी स्वनन्त्रना पर बल देते थे ताकि समाज का यह भग किसी भी प्रकार से पोछे न रह

ऋषि दयानन्द सच्चे देश-

मुनिका निमाई भीर देश में स्वदेशो बान्दोनन की नीव रम्ती। सन १८४७ को भाजादी को पहली लडाई में भारतीयों को जो प्रसफलता मिली थी उस से हार न मानते हुए उन्होंने लूल कर कहा---क्षेत्र पुष्ठ २ पर

महर्षि दयानन्द राष्ट्रीय पुनर्जागरण के प्रकाश-स्तम्भ थे-

राजीव गाधी

सर्वात वयानस्य निर्वाण शतास्वी के ध्रवसर पर प्राप्त प्रवान मंत्री का सवेश

महर्षि दयानन्द हमारे राष्ट्रीय प्राथमिरण के प्रकाश स्टब्सों में से एक वे। वे हमारे प्राचीन गौरव के श्रमक प्रचारक के, लेकिन साथ ही वे श्रम्य विश्वास के कट्टर विरोधी के। वे विवेक सम्मत जीवन दर्शन के समर्थक थे। महर्षि जी जैसी महान विश्वतियों से ही हमारे देश की सास्क-तिक परम्परा कायम रही है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के निर्वाता बताब्दी के भवसर पर में उनको धपनी अद्वाजलि धर्पित करता है।



महानि बयानम्य निर्वाण शतान्त्री समापन समारोह तासकटोरा इन्होर स्टेडियम मे समापर शासीत वार्णे से-राष्ट्रपति भी ज्ञानी वैवसिष्ठ, शिक्षा नत्री भी कृष्णाचन्द्र पन्त, समा प्रचान भी सूर्यदेव श्री स्वामी दीक्षाचन्द जी. वेठ महातम वर्नपास बी एवं तमा नन्ती ठा॰ वर्नपास बी ।

हे नर! तू अपने को जान

एम० ए० एल० टो० ६ ए० इ १, ग्रोवरा मिर्जापुर

सुपर्गोऽसि गरुतमान्

ण्डे पृथिव्या सीद । भासाऽन्तरिक्षमापुरा

> ज्योनिषा दिवमूत्तभान तेजमा दिश उदद ह ॥

> > यजु० १७ । ७२

हमनुष्य (सुपला आस) तूपसो बाला ऊची उडान लेने वाला है (गर <मान् श्रसि) महान् श्रात्मा वाला है तू (पृथिक्या पृष्ड सीद) पृथ्वी के पृष्ठ पर बैठ (भासा) धारनी जनक से (धातरिक्षम्) चात्ररिय का (ग्रापृण) भर दे (ज्योतिया) ज्योति से (दिवस्) य लो ह को (उत्तभानः) ऊपर वाम ने (तेजसा) तेज से (दिश) विशासी को (उदद ह) सर्थात् हे नर ! तू सुपण है अवी उडान लेने वाला है ऊ वी **मह्बा**क नावनाहै जीव[।] तूगर त्मान् है गुरु झामा वाला है पृथिवी के सिहामन पर बैठ वहा बैठकर ऐसा चमक कि अपनीच शक से अपतरिक्ष को परिपान कर दे धानी ,जनमन करती ज्योति से बनोक को थम ले "ग्राने तेज से दिशामी को उठाले।

मनुष्य के लिए कितना प्रेरसादायक है यह मत्र सफलनान मनिष्य के गम से खिपाहुई है नवह अगस्य है वह तुम्हारे निकट ै तुम्हारी पकड के भीतर है। सुधातसर घने वाना नहीं वह भागया 🕏 । स्वगन्नाक न में ब्रैखिपी हुइ चीज नटी है वहतुम्हार ग्राटरहै। समार की सभी श्रद्ध वस्तुण जीवन क सारी सफलताए तुम्हारेपाय ब्रा 🛪 🍍 । ब्रपनी शक्ति में विद्वस जन प्रनामाणा ऊचारम ग्राह उस के लि **भपना** शक्तिको "मफलना चाहिए यह मात्र कहता है ---

हमरा शरीर खड़ है गरीर का चलान व ना जावामा चतन है। गबित से भराहै यन नाव जन अविवा मनुष्य जान नन है तो वह उनति की भरम मीम र च जाता है अरे मनुष्य मस्तर उनित करने वाले अभूपराहानुम गन ग्रामा वाले ग मान हो । उसे यह समक 🤚 ग्रीरजिम दिन वह यह मस अवगतो उप नि उस यह प्रतात हो जाएगा कि वह एक घर का एक देण काया एक जलि का नही किन्तु सम्प्रता पृथ्वीका पुरुष है। तब विक्रे अब अपनेको विन्य का पुरुष समसेगा विन्व मे एकताका धनुभव करेवा और ग्रपनी उनित की भौर भपनी महानता की भीर जाने के माग की जान जाएगा तब इस एकत्व भावना का यह परिस्ताम होगा कि पदाय ही उस का पुरेक्क्यन्त्र वेदालकार

स्वाय हो जाएना भीरतव वह धपनी दिना से अन्तरिक्षको भर देवा। उस विश्व ॰ बापक बीबात्मा की मानसिक नमक इस अगत् को चकर्चीच कर देगो । हे जीव[†] तू भानी चक्ति को जानता नही समऋता नहीं। इस अगत को बादश वित्व के रूप में परिवर्तित करने की क्षमता रखने वाने राम कुष्ण शकराचाय स्वामी दयान द स्वामी श्रद्धान कमहामा गांधी की गक्ति तुक मे नी है। बस तू अपनी श्विपी ज्योति को प्रकट कर वसका तब तेरा तब दिय दिगतोतक ऐसा फैलेगा कि विश्व के सब प्रात्तातरे तज के प्रकाश में अपना यज्ञान भीर मभाव दूर कर सकते। तब तू अपनी उनित से न होकर सब की उनित में भपनी उनित समभेगा भपने को देख। इस मन्त्रित को मपनी चमक स चमका अपनी ज्योति से बलोक को भर पृथ्वीतवादिशाझीको उनतकर।

हनर तूसाधारण बादमियो की तरहरूयो बैठा है तृतो वह अग्नि है जो कि झाने प्रदीपन से सम्पण ससार को ∘बाप्त करने कासाहै । तूउ∞ भपने को जान त्सुपरा है त्यरमन् है।

[पूछ १ का धेप]

स्वामी दबानन्द स्वतन्त्रता केश्रग्रदूत थे

कोई कितना ही करे, परन्त जो स्वदेशी राज्य होता है वह सब से उत्तम होता है।" विदेशी राज्य कमी अञ्चा नही होता।

राष्ट्रपति का भाव न

सन १८६३ में इन के गुरु स्वामी विरजानन्द ने ग्रु दक्षिगा के रूप मे ऋषि दयानन्द से यह बचन लेकर उन्हें विदा किया था कि वह प्रपना सारा जीवन लोक कल्याए के लिए लगादगे। इसीकी पूर्तिके लिए ऋषि दयानन्द ग्रगले २० वर्षीतक देश भर मे भूग भूग कर जन कल्याए। स्वदेश प्रम धौर सत्य का प्रचार करते रहे। लाला लाजपत राय भीर स्वामी श्रद्धानन्द जसे महान लोक नेता उन्हीं की देन है। उन्हीं के सन्देश से अनेक भारतीय नर नारी स्वतन्त्रता सग्राम मे कूद पड दे।

वह समाज में सभी वर्गों की उन्नति के समधक थे। उन्होने ग्राय समाज की स्थापना करते समय जो १० नियम बनाए थे उन मे से ६ वा नियम यह रखाथाकि प्रत्येकको श्रपनी हो उन्नित से सतुष्ट नही रहना चान्ए बल्कि सब को उन्नति में अपनी उन्नति सममनी चाहिए।" यह समाज के लिए उन का मूल मन या और इसी के लिए उन्होंने समाज के हर कमजोर वग को ऊचा उठाने की कोशिश की बी।

वे भारतीय संस्कृति भारतीय मावा भीर भारतीय शासन के हामी थे। वे देश के लिए स्वदेशी भाषा चाहते थे और इसी के लिए उन्होंने भपने ग्रन्थों की रचना हिन्दी भाषः मे की थी। जिसे लगभग १०० साल बाद स्वतन्त्र भारत मे राज भाषा का दर्जा हासिल हुआ। उन्होने इन प्रन्थों की रचना उस समय खडी हिन्दी नैं की थी जब कि मभी तक हिंदी गद्य का पूरी तस्ह विकास भी नही हुमा था। इस प्रकार से उन्होने हिन्दी के विकास मे भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया था।

श्री सरविद्योष ने उन के विषय में कहा या-

वे परम्पराकी इस विचित्र मुष्टि के एक भनोसे योदा भीर मनुष्य तथा मानवीय संस्थामी का सस्कार करने वाले महान्

यह देश स्वत बता के श्रग्रद्रत, महान



महींप दयान द निव स अताब्दी पर स्मारिका का विभावन करत है राष्ट्रपति जान जल सह ानकाम ती कें व्सी व्यात एव श्र रामगोपाल शालवाले

समाज मुघारक ग्राध विश्वास भौर रूढिवाद की बेडियो को कारने वाले महान सयामी महर्षि दयान द सरस्वती क सदा ऋगी हेगा। महाकृति रवी द्रनाथ टेगौर ने भी उन के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हुए

में सादर प्राणाम करता हू

उस महान गुरु स्वामी दयान द को जिन की दूर इंटिंग्ने भारत की ग्रात्मामे सत्य ग्रीर एकता का बीज देखा।

ग्राज देश की एकता श्रीर श्रलण्डता के लिए जो चुनौती दी जा रही है "स का सामना करने के लिए हमें सेव को ऋषि दयानन्द द्वारा दिखाए गए दंग प्रम भीर भारता यताके मूल मन्त्र से प्ररुगा लेनी चाहिए ।

इन शब्दों के साथ मैं महर्षि दयान द सरस्वती को श्रपनी श्रद्धाजिल प्रपित करता हू।

। जय हिन्द ।

राष्ट्रीय एकता और त्रार्यसमाज

सपादक धनपति वाचकः मनोचकुमार निश्र

ल०-डाक्टर धर्मपाल प्रार्थ

राष्ट्रीय एकना और असण्डला सद्ता प्रश्न पर्याप्त समय से मारतीय मानस को किंभी बेरेर हैं ग्रेंद देश के लिए सकटापन्न स्थितियों का कारण भी बनते रहे हैं। राजनातक साथाजिक और सास्कृतिक मची से यह सवाल बनेक बार उठाया गया है भीर इस पर चिन्नाभी प्रकट की बयी है। यह दुखद स्थिति है जिसका हम एक दूबरे को ब्रह्मास ता कराते हैं, पर राष्ट्रीय एकता के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठा पात । इस वध तो यह सवाल इतनी तेजी से उठा कि सारे देश की धारणा को ही तिमनिला गया। राष्ट्रोय एकता के लिए श्रीमती इन्दिरा गांधी के बलिदान न हमारा भ्यस्य साली है। इतिहास इस ब'त का साक्षी है कि दं सकट के समय इस देश न धारचयजनक एकात्म सनदन भीर शक्ति स काम लिया है। हर ग्राम ग्रादमी जाह बहुपजाब काहो या तामलनाडू का उत्तर प्रदेश काहा वा करल का, हिन्द हा या मुखनमान, सिल-ईवाई हा या कोई घन्य मतावलम्बा सभा का चिन्नन सददना की क्सी मुलायम पर सुदृढ सास्कृतिक डोर सं जुडा है जिस कवियों ने झपने वाल्य मे ग्रमिन्थिक्त प्रदान का हं विज्ञकारों न ग्रपना राजपूत, कागडा और मुगल ग्रादि धीनियों में निजित किया है, जिसकी घात्मा नानक मारा, सूर कवीर, टैगोर और सुकहाव्यव भारती की बुना में माल्यसात् है। एकात्म की इस बारा का, जो राजनैतिक विचार दशन पहचान सकेगा वहाइस दशका धरती को प्रसण्डता म बाध रख सक्या । क्षत्रीयता वा क्षत्रीय स्वायत्तता की माग दोष नहीं है पर इसका राष्ट्राय एकता स जुड रहना परमावश्यक है। इस बहुभाषी बहुधर्मी और विविधतापूरा भारतीय राष्ट्र क जाम बादमी हा की सबेदनश्रील सांस्कृतिक एकता से परे होकर यदि कोई राज-नीतिक चिन्तव का विचार उठा भा तो बाम बादमी उसे स्वीकार नही करेगा।

राष्ट्रीय एकता के लिए प्रयास झाज से नहीं किये जा रह है। इतिहास के साक्ष्य बतमान है कि दुराने समय म भा राष्ट्र का एकता की कड़ों मा पिरान क लिए प्रयास किय जात रह है। राम सीर कृष्ण का युव आ एकता के लिए प्रयास का युज रहा है। बुन्तकाल में भा एसे प्रयास किए गए है। युगल सामान्य के दिनों में मो सनवरत प्रयास किय यदे, वस कोटे-कोट राज्यों का सपन वह सामान्य में मिलाया जाता रहा है। सम म स्रांत होता है, इस शत को उन्होंन जान लिया था। केवल राजनातक स्तर पर नहा, तालांक, सामक, आजान स्तर पर भी एसे प्रवास किये गये।

सन् १८७७ मे महर्षि दयानन्द सरस्वतो ने एकता सम्मलन किया, विसमे सर सैयद प्रदुष्ट सा और वो केशवचन्द्र सेन सम्मिनित हुए थे। सायसमास के प्रवतक युग पुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वता महाराज के निर्वाण का सौ से श्रीवक वय बीत जुके 🐧 पर अंखा कि सद द्वाता आया है नहापुरशों के जीवन तो प्रत्तुदायी होने ही हैं, उनका निवास मा, उनका बिबदान भी प्ररणादायक होता है। महर्षि दवानन्द सरस्वती भारत मा के एसे हा सपूत ये जिनका मन-हृत्य इस वेश की दुरवस्था को वेसकर रो पढा था। उनका इस भारत-मूपर अवतरण उस समय हुआ जब यह देश पराजीन षा। स्वत्र प्रविद्या प्रार प्रवकार की घटाएँ छाई हुई थी। बारतीय सम्पता, संस्कृति भोर साहित्य की द्वाला हा रहा था। इतिहास ने परिवर्तन करके वसे विकृत किया जा रहावा। सत्य-सनातन वैदिक वम जुप्त हो रहावा। वारो बोर बनाचार का खामाञ्य वा । नारा जाति की स्थिति दयनीय थी । सूद्र को धीर नारी को वेद पढने, विका प्रकृत करने का अधिकार नहीं था। बती प्रया का दानव हुने असित किये था। इस बोरतम अन्यकार से हमें निकासने के सिए, असस्य से सत्य की धोर से वाने के विय महा्व दयानन्द सरस्वती ने हमे सहारा दिया था। उन्होंने देख की एकता के विए, राष्ट्र के कल्याल के सिए, मनुष्य को बास्तव में मानव बनने के खिये जो प्रयास किए वे अमृतपूर्व है।

त्र साबों की सक्या में शिक्षित सोय उनकी बोर प्राक्षित हुए। गुबसमान, सिख बोर ईसाई भी उनके दवाँन ने प्रचाबित हुए बोर बजुबायी बने।

परम झावरणीय मन्त्री जी श्रीमती मित्रणी जी,

बहुदि दयानन्द निर्वाच सदास्त्री की समूतपूर्व वफ्तवता ने सापकी समा के सविकारियो कायकर्ताक्षी का तन, सम बन से जो सहयोग और स्वयुग्न कर ससमा को प्राप्त हुआ है। उसके लिए मैं सपनी धोर से तमा इस बमा के सन्य सविकारियों की तर से साथ सभी का हुदय से सामार प्रकट करता हूं और साथका सन्यवाद करता ह।

आसा करता ह कि मनिष्य ने भी इस सभा के सभी कार्यक्रमों में आपका तबा आपकी सभा का सहयोग निरन्तर हमें आप्त होता रहेवा।

चन्यवाद ।

डा॰ वर्मपास ग्रावं, महामत्री

मान्य सुषाशु जा

सप्रेम नमस्ते

भागं सन्देश का सम्पादन भार बायनं सभान कि है हम की मुझे घायन्त प्रसम्पता है। भाग जैसा कवि हम्म पता की नीभा का चार जाद लगायगा । ससी पूर्ण भागा है।

प्रापका भ्रपना

उत्तम चद शरर'

क्षापका ३० दिसम्बरकाश्चक बहुत सनयक्ष चुनापूर श्रयसं इति तक पढाश्चीर बहुत पसद श्राया।

इससे पहल कभी पूर का पूरा प्रदू 🕶 पन्द ही प्रया।

भवदीय मनोहर विद्यालकार

सम्पादक जी ।

सप्रेम नमस्ते।

माय मन्देश साप्ताहिक का शुभ सन्देश मिला। लगा कुछ तरुगाई बोधगम्यता का सन्देश आ गया। पर कुछ प्रश्न भी मन मे हैं

१ क्याइस के पेज बढ़ाये जा सकेंगे?

२ क्या लेखो का स्तर भी ऐसाही भच्छा रखा जासकेगा?

३ क्याराजनीति से ऊपर उठकर वैदिक ग्राध्यात्मिक दिष्टिकोस्। लेकर चल सकेगें

यदि हा तो एक भ्रच्छो शुरुमात के लिए मैं भीर मुक्त नेस प्रबुद्ध पाठक आभारी हैं।

> मावत्क हरिदत्त बेदालकार कैलाझ कालोनी नई दिल्ली

मान्य सम्पादक जो

बहुत बहुत बघाई।

क्षार्थ-सन्देश के २३ दिसम्बर और 3० दिसम्बर के दो श्रक पढ़ने को मिले। दोनों श्रक पड़कर मन सुप्रन लिल गया। सारे ही नेख खोजपूर्ण, रोचक शिक्षाप्रद थे। कृपया इस श्राच्यात्मिक और आदर्श स्नर को बनाये रल।

पुन हार्दिक बघाई डा॰ श्चियमूर्ति माडल टाउन दिल्ली

महर्षि के स्मति चिह्न

सार्यव्याच में इतिहास बुद्धि का दिनो दिन हास हो रहा है तथा चमत्कार-वाद तथा समीकिकता की बार्चे बढ रही हैं। आवश्यकता है कि समय रहते महर्षि हारा पदिन्नी कुट स्वानों की मौगोनिक स्थावता का पता लगाया जाए और वहा पर सहिंद की पुनीत सादवारें स्थापित की बावें।

मवानीलात भारतीय चण्डीबड



वेटों में समाज शब्द की उदभावना का मूल स्रोत

-पं० बद्धदेव विद्यालंकार

वह्या से लेकर जैमिनि मूनि-पर्यन्त मनीवियों ने जिस वेदसदन का निर्माण किया था उसके तोरण द्वार पर भगवान सन का ग्रमर वाक्य ग्राज भी ग्रकित है-'वेदो चलिलो धर्ममूलम्'। यहां वेद शब्द पे ऋक् यजु, साम धीर ध्रयवंदेद एव श्रसिस शब्द से कुत्स्नता खोतित होती है। मनुद्वारा प्रयुक्त धम शब्द वर्साअम कर्त्तव्यों का वाचक है। यहा का वर्ण शब्द समाज-निर्माए का और प्राथम शब्द व्यक्ति-निर्माश का बातक है। किसी भी स्वस्य राष्ट्रका निर्माण व्यक्ति भीर समाज के समन्त्रय में है।

व्यक्ति प्रार समाज एक खड़ के दो किनारे हैं। जब तक इन्हें जोडान जाये तब तक न राष्ट्रहित होगा न विश्वहित। भल से समफायह जाता है कि व्यक्ति सुमाज कः भीर समाजव्यक्ति का विरोधी तत्त्व है। यही कारश है कि इन दोनों तस्वों को ग्राधार बनाकर धनेक वादी का जन्म हवा है। बाज का यूग समाज-बाद भीर साम्यवाद का युग माना जाता है। विश्व के वायुमडल में इन दोनों शब्दों की इतनी ग्रंब है कि जिससे भावाल बुद्ध प्रभावित हैं। इन दोनों के प्राचार पर ही रूप धीर बीन जैसे राष्ट्रों का निर्माण हुमा। समाजवाद पर विशाल साहित्य निर्माण हो चुका है। विश्वालयों, विज्व-विद्यालयों में इसने पृथक् विषय कारूप बारसाकर रखा है। इन महत्त्वपूर्णवादों के सम्बन्ध में बेद में भी कोई व्यवस्था है या नहीं, इस पर विचार करना प्रावश्यक है, परन्तुहम इस लघुले ख मे इस पर विचार न करके मात्र वेदों में समाज शब्द की उद्भावनाका मूल स्रोत तक ही सीमित रहेंगे।

वेदों में हमें जहासमाज के पर्याय ग्राम, समिति, समा, इत्यादि शब्द मिलते हैं, वहाँ समाज गब्द की उद्भावना जिस शब्द मे निष्टित है उसका प्रयोग बहुधा देखने में भाता है वह है सम उपसर्ग, इसी को हम समाज, समता समानना, एकता भादि शब्दों की उद्भावना का मूलस्रोत कह सकते हैं। वेदों का प्राम शन्द भाज प्रचलित सनाज शब्द की उद्भावनाधी को जितना सजीये हुए है सम्भवत जतना समाज शब्द भी नहीं। ग्राम ग्रीर समाज दोनों शब्द समूह, सगठन और सथ के बावक है। समाज शब्द में क्यात्र समूह के सभी श्यक्तियों का एक होकर चलने की भावना निहित है, जबिक ग्राम शब्द मे समह के सभी व्यक्तियों का परम्पर एक इसरे की बहुए करने और उनके ग्रास का प्रवन्ध करने की भावना निहित है। मनुष्य को ग्राज की भाषा में सामा-विक पशु (Social animal) कहा जाता है। बेटों में जसके निए वास्य-पण का प्रयोग हक्षा है। इन ग्रास्य पक्कों की सल्या एक नहीं पांच है और शतपच बाह्मण के बनुसार सर्वप्रथम बनुष्य, शहर, गी, प्रवि घौर सब से धन्त मे घणा है। इन सभी पशुक्षों को अहा एक-दूसरे के साथ मिलकर रहना विकर है, वहा अपनी ही जाति के साथ भी मिसकर रहना चाहते हैं। अब तक मिलकर रहने की भावना मनुष्येतर पशुषों में है तब तक उस सगटन का नाम समज है। जैसे ही उस भावना की उत्क्रान्ति मननशील मनुष्य में हुई, तो उस समूह का नाम समाज हो गया।

ब्राम्य पश्चर्यों के परिगत्तन में ब्रन्तिम पश प्रज है। प्रज भात का धर्य नित है, समाज शब्द में भी वहीं धन घातु प्रयुक्त हुई है। जैसे ही गति में एकता आई कि ऋटिति समाज का निर्माण हमा। उससे धागे ज्यों ही वाणी में एकता बाई कि समाज में उल्क्रान्ति हुई उससे उलकान्त ग्रवस्था वह है कि जब समृह के व्यक्तियों के मनन भी एक हो जाए। इसी को कहेंगे समज से समाज धवस्था में उस्क्रान्त हो जाना। ऋग्वेद के धन्तिम सूक्त मे प्रादश दिया जाता है 'सगच्छध्यम्' तुम सब मिलकर चलो, 'सबदध्यम्' तुम सब मिलकर बातबीत करो, 'स वो मनांखि जानताम्' तुम सब के मन मिले हुए हों। जब तक व्यक्तियां सगच्छव्य का पालन फरती हैं, तब तक वह समज-अवस्था कहलाठी है। जैसे ही बहस व मनासि में उल्हान्त हो जाती है, वैसे ही समाज निर्मित हो जाता है। इस प्रकार समाज-निर्माण के लिये जहा एक उच्चार, एक आचार और एक विचार का होना साब-श्यक है, वहां इन तीनों मे भी एकता होनी बावस्यक है।

जहायह गर्व का विषय है कि वर्त-मान समात्र शन्द जिन-जिन उद्भाव-नामों को समृहीन किय हुए है उन सनी भाव गन्नो को वेदों में ग्रहपन्त उदान बन्दों मे प्रकट किया गया **है वहां** यह जानकर पादच्यं होगा कि वेद ग्रीर वैदिक माहित्य में समाज बार का प्रयोग नही हुआ है। हम यह दिस्ताचुके हैं कि ग्राम्य परुप्रामे श्रवः रु जिल्लासिका उस की गति के कारए। है, उस बति को किमी अन्य सामन के द्वारा एक कर देने का नाम समज है उसी गति को धन्तमंत्र के द्वारा एक कर लेने का नाम समाज है।

वेद भौर वैदिक साहित्य में सक भौर भजा शब्द बह्या, जीव भौर प्रकृति के वावक हैं। इन की यह सन्ना दो कारगी से है एक तो निरन्तर वितशील होने के कारए 'न वायते इति प्रव'। इन तीनों में ही दो तत्व नेतन हैं भीर प्रकृति जह है। प्रकृति को बलाया बाता है, उस को पसाने वासी सर्वातियायी सत्ता बहा भीर एकातिशायी सत्ता बीव दोनों ही बेतन भीर भवन्या है। जब यह नित एक होकर किसी भी बेतन सत्ता से जमाई जा रही हो तब उस का नाम समज-अवस्था या सांस्य के धन्दों में साम्यावस्था है। लेकिन जब ग्रह मित बीव में देखी जाती है, तो वह सपने ज्ञान और प्रवल्नका प्रयोग स्वतन्त्रता से करता है, उसे किसी चनाने वाले की धावश्यकता नहीं होती। तव को धवस्था उत्पन्न होती है उसे समाज धीर साम्यावस्था जी कह सकते हैं। वेदों को सजाप्रकृति की समय भीर साम्यावस्था प्रशिप्रेत नहीं, जिन के बलाने वाले कोई धौर हों, उसे ज्ञानवान प्रयत्न-शील व्यक्तियों की वह समाज और साम्यावस्था प्रभिप्रेत है, जहां की व्यक्तियां किसी के द्वारा न चलायी जाकर स्मयं वर्ले। इस का वर्लन अवर्ववेद के निम्न मन्त्र में हवा है

नाम नाम्ना जोहबीति पुरा सूर्वास्तुरोबसः । यवक प्रवस संबूधक सह सस् स्वराज्य-मियाय यस्मान्नाम्यत् परमस्ति जूतम् ॥

\$6 101 38

जिन ग्रज नामवाली ग्रजीत मित्य कहसाने वाली सत्ताओं को धव नाम से बुसाया बाता है वे पुरा सूर्यात्; पुरा उवसः, वृष्टि के धारम्भ के होने वाले सूर्यं ग्रीर उवा से भी पूर्व विश्वमान दे, दे सम्पूर्ण गतिशील, प्रजायमान व्यक्तियाँ एक हुई, निश्चय ही वह स्थिति स्वराज्य श्रवस्था को प्राप्त हुई, इस से परम उल्क्रुब्ट सबस्या और कोईन वी। इस ऋचामें सुष्टि-रचना की पर्वावस्था से लेकर परमोत्कष्ट स्वराज्य भवस्था तक का वर्णन है। यही वह सूत्र है जिसे समाज धवस्था का जनक कह सकते हैं। जब-जब नये समाज का निर्माण होगा तब-तब प्रजा (प्रकृति) ग्रजायमान ग्रवस्था में रहेगी, धराज विवत राज श्रवस्था में रहेगी। जैसे-जैसे इस भवस्या से उभरने का विवार बढेगा. वैसे ही वैसे प्रजापति विजायमान ग्रवस्था की मोर मग्रसर होगा। (यजु०३१।१८) इस को हम वैदिक भाषा में अजायमान धवस्थान विजायमान धवस्था मे उल्क्राति कहेंगे। अथवः 'विगनो र'ट् यस्मात् विराट् **अवस्था से** 'त्रिशेषेण राजत इति विराट् कहेंगे। विशेषेण राजने विराट श्रवस्था की

विशेषता बहु है कि उस संबठन की सभी व्यक्तियां स्वय राजते इति स्वराट प्रवस्था को प्राप्त हीं। यह श्रमिप्राय है 'स्वराज्य-नियाय' सब्द का ऐसे व्यक्तियों का एक होकर नति करना कि जिस का प्रत्येक व्यक्ति स्वय राजमान हो, समाज कहवायेगा ।

सामाजिक परिप्रेक्ष्य में 'प्रवापति-श्वरति गर्भे शन्तरजायमानी बहुधा विकासते । (यजु॰ ३१ । १६) मन्त्राचे में उन दोनों प्रवस्थायों का स्पष्ट उल्लेख है। पहली को अजायमान और दूसरी को विजायमान, पहली का विगत राट् धीर दूसरी का विशेषेण राजते इति विराट. पहली को समय भीर दूसरी को समाब धवस्था कहेंगे। धजायमान से विजाय-मान और समज से समाज में उत्क्रांति होने के लिए किन-किन सबस्वाओं से वाना होना प्रवना क्रमिक विकास करना होना उस का उत्कृष्ट वर्शन समर्ववेद 🕏 निम्न सुक्त में है ---

विराड् वा इदमय वालीसस्या वालावा सर्वजिमिवियमेबेर मविष्यतीति ॥

सोवकाणत्सा गार्हपत्ये म्यकामत्।। मूहनेची गृहपतिर्मवति य एवं वेद ॥ सोबकामत्साहवनीये न्यकानत् ॥ यन्त्यस्य वेवा वेवहाँत प्रियो वेवानां महति

य एव वेद ॥ सोबकानत् सा दक्षित्वान्ती न्यकासत् ॥ यसर्तो विकासीयो बासतेयो भवति य वर्ष

वेद ॥ सोबकामरसा समायां न्यकावत ॥ यन्त्यस्य समा सम्बो नवति य एव देव ॥ सोबकानत्सा समिती स्वकामत्॥ वन्त्यस्य समिति सामित्यो अवति व एवं

वेद ॥ सोबकामत्सामन्त्रऐ न्यकामत्॥ बन्त्य-स्यामन्त्रमामन्त्रशीयो नवति य एव वेद ॥

भववं० ८।१० सृष्टि के बारम्भ में सर्वप्रथम विराह भवस्या बी, भज भवस्या तो थी, सम्राट भवस्था न थी। ग्रज भवस्था तो बी, परन्त समाज प्रवस्था न थी, व्यक्तियाँ थीं,प्रवह-पृथक तो थीं, परन्तु संगठित न थीं, वह प्रज बी गतिशील तो थी, परत एक होकर(सं) गतिशील (अज) न ये नमाज न ये। सर्व-प्रथम विराट् प्रवस्था में उत्काति हुई ग्रीर दो व्यक्तियों ने परस्पर एक-दूसरे की (शेष प्रव्ठ ४ पर)

रहन्द्र कपर द्वारा महर्षि दयानन्द

का अस्य कहानी

सन्ध्या-यज्ञ, शर्मन्तप्रकरण, स्वस्तिवाचन आदि प्रसिद्ध अजनोपदेशकों-

'सत्यवाल पाँचक, आमप्रकाश वमा, पन्नालाल पीयुष, सोहनसाल र्ण्यप, शिवराजवती जी के सर्वोत्तम भजना के कैसेटम तथा

५ बुदुदेव विद्यालकार क भजनो का सग्रह । आय समाज के अन्य भी बहुत म केसेट्स के मुचीपत्र के लिए लिखें क नत्यकाम इसेक्ट्रोनिक्स (इक्टिया) प्रा लि

14 मॉक्ट-11, फंस-11 अश्पप्त विहार दहली-52 फोन 7118326, 744170 टैलेक्स 31-4623 AKC IN बदो म समाज शब्द संब पुष्ठ ४ का

प्रहुख किया। जिस ने प्रहुख किया वह यहा बार जिस को प्रहुण किया बहु बृहिणा कहसाबी । इस से गुहुपतिसस्या का गृह बाधन वर्ग तमील हुवा। यह सूत्रपान थाकि श्रव समाजकी शार सरकान्त कर रहा या शयवा विराट् (बिगत राट) बिराट् (बिशंधसा राजत) का बार उसकान्तिकर रहा था प्राप भी गुहुस्थ।ध्यम बाहुपत्य।बार का नीव ब्रिवाह सस्कार की पात्मप्रहण विधि से बासी जाता है। कन्या का पिता स्वय धपना कन्या के हु य वर क हाय में सौंपता हुधा कहत है- असङ्खा कन्या प्रति-गुह्मातुभवान् उत्तरमं वर वधू कं हाय प्रकृत करक कहता ह गुम्लाम त सामगरवाम इस्तम् । यहा ग्रहा गृहिणा, प्रकृत क्षिताम, यह, गृहस्वाधन खब्दा स ब्रह्माथक बातुक प्रयोग स पता चवता हाक विराट् भवस्था स अगला बरण बाहुपत्यसम्दन ह । इस स अगसा बरण बहुद्द । अस म एक ग्रहत्य दूसर ग्रहस्य का भ ल।यसः। पर काह्मान करका है। यह बाह्यनाय अवस्था हाता है। साम्मालव ग्रहस्य जहा परस्पर एक दूसर स मगन।वसरा पर अपना अपना भट (बाधक) वत ए वहा वालकर भ भपना सम्मात प्रकट करत ह । बहु होव अक्षा वन्तार रहाताथ वहा अन्ताद क इत्यम का होताय उसाका होत क वाम सं (यातक परिभाषा में, बुवाया जान लगा भीर जब यह हाव सब मार से

(धा इत्ली जाने लगी नो इस का नाम धाञ्चनीय हा गया। सन धार से हिंब प्राप्ति कापि साम हुनाकि वह गृहस्य दक्षिणायुक्त होकर दक्षिणान्ति को प्राप्त हो नया समृद्धि को प्राप्त हो नया ऐस्वर्ध को प्राप्त हो गया। दक्षिएताका बाथ ही समृद्धि है। (निरु०१।७)

बाह्यनीय बबस्था मे जब एक गुहस्य ने अपने मगलकाय में दूसरे गृहस्य को ससम्मान बाहत किया और दूसरे गृहस्य ने भी समझा बाहति हासी नो सहज परिएाम हुवा कि ग्राम सस्या का निर्माण हुया जिसे उक्त सुक्त ने सभा शब्द म शमिहित किया है।

इस के विपरीत एक गृहस्य ने बापित की सकट की अवस्था ने सहायता दूसरे गृह्म्य को बुसाया तो इन सब ने मिलकर (सम्) बावाओं का प्रतीकार किया तो उस सगठन का नाम सम्राम हो गया जिसे सूनत ने समिति सम् वित शब्द से समिहित किया है।। यहा सम्राम शन्द के रूढाय की छोडना होया।

शयबवेद (७।१३।१ मे समा भौर समिति को प्रजापित की दो पुत्रियाँ कहा है। बाबकल की गावा में लोगर भीरभपर हाउस कहाचा सकता है इन शब्दों के साथ व्यामन्त्रण सभा भी लगाहै जासम्भवत मित्रमण्डल की घोर सकेत हा

इस प्रकार उपयुक्त सुक्त ने समज से समाज मे उन्हान्ति हेत् य सात चरण विराट गाहपत्य श्राह्वनीय दक्षिणान्नि सभा समिति और माम त्रल दर्शाय है।

वसन मेला हरीकत राय दालदान दिवस समात पूवर सम्पन्न

मिलल भारताय हकीकत राय समिति भीर भायसमाज विनय नगर नइ दि नी की मोर संरविवार दिनाक २७ जनवरी १८०५ को प्रान ३ वज संदोपहर २ बजे तक ग्रायसमाज मन्दिर वाई ब्लाक सरोजन नगर नई निया म बड समाराह पुरुक मनाया गया। प्रात २० बजे से ६३० उज प णदन रामा शास्त्री जी पुरोहित सायसमाज ने ही स्वय बृहद यश कराया । ६ २० वज मे १० वजे तक श्री श्री गुसाब सिंह राघव के मनोहर मजन हुए। भीर महाशय धमपाल जी प्रधान भाय के द्रीय समाने बीर हकीकत को श्रद्धाञ्चलि श्रपित की । १० बजे से १ ३० बजे तक बच्चो ने वीर हकी कत क जीवन पर कविता भाषण प्रतियोगिता मे भाग लिया। विसम कर ६ द्रप्रस्य भीर भागबालगृह गैहा व उच्ची ने भी भाग शिया। रतन च द भाग पब्लिक स्कूल सरोजना नगर क बच्बो न वि ाप कायक्रम प्रस्तुत किया । जो भायसमाज क विचारा से भ्रोत प्रात था।

धन्त में स्वामी दीक्षान द जी संरस्वत - ग्रह्मक्षाा म अद्वाजिस सभा हुई जिसमे औ सूयदेव जो प्रधान दिल्ली माय प्रतिनिधि सभा श्रो ९ टर नारायण जी हावा दात वाले श्री कृष्ण चोपणा सुपुत्र स्वर्गीय श्री उत्तमचल्य चोउढा श्रा रत्नचढ बी मूर् भी जगरान राय सूद आ देवतत समृदु ग्रामीपद । श्री हरवस लाल कोहसी प्रधा । दक्षिण दि ली बाय प्रचार मण्डल श्री सरदारी लाल वर्म व दक्षिण दिल्ली की सभी भायसमाजो के मिषकारी उपस्थित हुए और वीर हकीकत को श्रद्धाजील

भी रतनलाल सहदेव प्रधान समिति न स्वर्गीय श्री उत्तमचन्द श्री चोपडा अभिनती पुरुषोत्तम देवी चोपडा सूद श्रीमती सत्यवती सूद की झोर से सभी के लिए प्रीति भोज का प्रवास किया गया । कायक्रम मे हजारी सीग उपस्थित थे।

रोधननाल गुप्ता

वैवाहिक विज्ञापन

एक सुदर स्वस्थ्य डाक्टर (एम० बी० वी० एस० एस० एस०) प्रायु २६ वय कद १६७ सै० सा० वजद शाक हारी युवर के विवार न्तु सुरूर नेड नास्टर की भावश्यकता है। लडका विदेश में कायरत है गोझा तशाझ सम क कर।

> प्ता—वीर॰ **॰मार** ईं न्यान•इनगर गाजियाबाद यूर पा०

महाबलिदानी प० लेखराम से

—शरर एम० ए०

865E3 #R \$#\$

क्याविचित्र विह्वपनालेकरतुम द्याये थे। दीपक पर जलते पतग का भी दलाई लेकराम तरी उमय का नी दखा है बह बनता है जैसे कुछ साच साचकर दीपक के वृद्धिश मंडरा साहस बटोरकर

पर तूसीमा द पक की लीस टकराया तेरी विञ्चलता को क्कना तनिक न भावा क्या धरमान हृदय में जलने के पाए थे

क्या विचित्र विह्नसता

विद्वसता जो लकीन समर्थों से जूसकर किया निमन्त्रित मृत्युको भी जान बूम्सकर विस के दश में विकल हृदय कुछ सोचन पाया हसते-हसते बाधकार मे कदम बढाया

हृदय रक्त से सीच दिया उजड उपवन को। निज जीवन से मृतकों में फूका जीवन को। प्राणों में बङ्गार धमकते से लाए वे। न्या विचित्र

पुत्र मोह जिसमे दशरम को गरते दका। पुत्र मोह मानव मन की कोमलता दक्षी। ह्योड न पासे वे प्रनाप मी जिस समता को से अवराम[ा] तूने जीता उन दुवलताको ।

बन्य घमकहताहै जगतेरी श्रद्धा पर धमर रहेगा नाम नराजम की जिल्ला पर दवानन्द के सच्चे सैनिक बन तुम माये वे क्या विकित्र विह्नयता नेकर

बाय सन्दश साप्ताहिक

पत्रिका क प्राहक बन, ग्रीर [बनाएँ]

क्योंकि यह पत्रिका-

(१) वदिक मान्यताभ्रोको उजागर करती है।

(२) मार्यो (।हन्दुमो) की महान परम्पराम्रो की याद दिलाती है।

(३) महर्षि दयान द की वैचारिक क्रानि से ग्रात्म चेतना जागुन

(४) भारतीय संस्कृति के भूले विसरे प्रसंगो, महापुरुषो तथा भादर्श

सस्कारों को प्रकाश में लाती है।

(४) ऋषि मुनि तपस्वी ग्राप्तिबद्वानो की वार्गी का बोध कराती है। (६) परमेश्वर की पवित्र वागी वेद का जीवनोपयोगी मचुर सन्देश

लाती है।

(७) नय लेखको कवियो चिन्तको, प्रतिभाषाली विद्वानो साहित्य सैवियो को प्रोत्साहन देती है।

(८) घार्मिक, सामाजिक भीर भाष्यात्मिक ज्योति से मन-मन्दिर को प्रकाशित करती है।

(६) वेद उपवेद, दर्शन उपनिषद्, स्मृति, कल्प सूत्र, आरज्यक बाह्यसम्ब गीता, रामायण नीति ऐतिहासिक अमूल्य प्रार्थ प्रन्यो जिन को प्रविकास लोगो ने पढा तो क्या देखा भी नहीं, समस्त बाध्यात्मिक जगत् को जिन ग्रन्थो पर सदा गर्व रहेगा उन सभी के बहुमूल्य मोती हर सप्ताह बटोर कर भापकी **भज्**ली भर देती है।

(१०) ग्रतएव देर न की जिए भाज ही भपना वार्षिक चन्दा २० रुपये भेजिये, वध मे अनेक विशेषाक तथा महर्षि बयानन्य निर्वाण सताब्दी पर प्रकाशित ५० रुपये मूल्य की भव्य मनोहारी स्मारिका नि शुल्क दी जायेगी।

सम्पादक ग्रार्य सन्देश

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समापन समारोह पर

त्र्यार्यसमाज ने त्र्याजादी का भव्य महल व बनाया है समनन्द्र विकास समस्य

मर्टी दयानन्द धार्मिक सामाजिक एवम् भ्रार्थिक नता ही नहीं एक महान राजनीतिज्ञभी थ । उन्होन कहा था--विदेशी राजा प्रजा क साथ पुत्रतुल्य व्यव हार करने वालाभाग्र-खानही हाता। उनके इन्हीं दो शब्दा न पराचीन भारत में राज्य क्राति करदा। १८५७ की क्राति की शुरुमात भी नर्गे दयानन्द द्वारा हो हुई। व रूनन्त्रनाक प्रथम प्ररणास्रोत थ । उनका प्ररणा स ही क्रातिकारी किरोमण स्याम जी करण बमा विदेशो में बैठकर क्रांति का सूत्रपात क∢ते रहे। देश के समस्त आय बन्धु एवम् प्राय महिलाए गुरुकुल और नी ए बी कालिज एवम धनेक ग्रायं सस्थाए ग्राजादी के यज्ञ में ब्राहति देन कद ५०। एक भी भायसमाजी परिवार एसा नही है जिसने देश की आजादी के लिए अपना बिलदान एव सहयोग न दिया हो। महर्षि दयानन्द के सुयोग्य शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द ने स्वतन्त्रत के 'लए प्रश्यविक बढकर काय किया। अलियादाला बाग के अवस्य काड के बाद काग्रस समाप्त प्राय हो गयी वी। स्वामी श्रद्धानन्द न काग्रेस का पन जीवित किया। अमृतसर काग्रेस अधिवशन के स्वागताध्यक्ष बनकर एव जनशास्त्रान कर उन्हान देश की अनता म उत्साद की लहर दौडाई।

दिली म जब स्वामा श्रद्धानस्त्र मुहक्तन र-,प्रा- म रहते थ वहा उनस्र मिलते तथा प्रेरणा नन ए जवाहर लाल नेहरू महात्मा गांधा तथा सुभापचन्द्र बोस सामा करते थे।

सा॰ लाजपन राय से लकर शहीद मगतिहिंद चनान्यर झाजाद, र मप्रसाद विस्मित सभी झायसमाजी परिवारो की सन्तानें थी।

मैं निसकोच होकर कर सकता हू सबि महीप दसार-द सौर उन द्वारा प्रस्ता कित प्रायसमाज न होता तो देश साजाद न हाता। प्रायसमाज के कवियो नायको ने गीत दना बना कर देश की निराश जनता में माशा का सचार किया। ऐ मादरे हिन्द गमगीन न हो दिन अच्छे आने वाले हैं।

दिन प्रच्छे झाने वाले हैं। भाजादी का पैगाम तुम्हें इस जल्द सुनान वाले हैं। स्वकृषि ट्यानन्द की कृपा से आय

समाज ने स्त्री िाना बातविबाह विषवा विवाह राष्ट्रनापा हिन्दी का प्रवार स्वदेशी का प्रवार हरिवन उदार खुषा-छुत निवारण कोई भी ऐसा काय नहीं जो राष्ट्र को भजनूत करने वाला कार्य महो बो बार्यसमाज ने शुरून किलाहो। जार सामाजिक कार्यों को खपनाया।

द्याजादी मिलने के बाद द्यार्यसमाज राजनीति से उदासीन हो गया है। आर्य समाज ने बाजादी का महत्व बनाकर दूसरों को सौंग दिया उसमें भाड़ लगे न लगे कोई देखने वाला नहीं। यत मैं पाह्यान करता ह ग्राप राजनीति मे बाये। कुछ वार्मिक संस्थाए जिन मे राजनैतिक वेतना है राशिय वेतना नहीं है जिनकी सल्या देश नर के बायसमाजियों के मुका-बले बहुत कम है वे अपनी माग मनवा नेते हैं। भीर भाप बस दूर लड़े देखते रह जाते हैं। जब नब देश पर आन्तरिक वाहरी सकट ग्राया ग्रायसमाज देश की रका के लिए हमेशा बागे बाबा है। ताजा ज्वलन्त उदाहरण है हमारे समने की मती इन्दिंग की इत्या के बाद देश हिल गया वा। धायसमाज तथा श्री ला० रामगोरात्र गानवात बचाई के पात्र हैं उन्होने राष्टिहित मे नथा देश की ग्रस ण्डता के जनरे को समकत हुए काग्रेस को सन्तर्नादया। यह समयन काग्रेस को ही नही देश की विषटनकारी शक्तियो को लखकारने वाली समय की शावाज थी। जो बायसमाजकी राष्ट्रभक्ति की

त्र्राधुनिक भारत के निर्माताः महर्षि दयानन्द कृष्णुचन्द्र पंत



महामहिम राष्ट्रपति जी सार्व प्रति-निधि सभा के पदाधिकारी गण, देवियो धौर सुज्जनो ! मैं धापका सामारी ह जो मुक्ते इस बनसर पर नाये कि मैं महर्षि दयनम्द जी को श्रद्धांजनि श्रपित कर सक। भ्राच राष्ट्रपति ची यहा पचारे हैं धौर सारे भारत की धोर से श्रद्धांचित धर्पित करने का घषिकार उन्हीं को है। इसकी मुक्ते बढी प्रमन्त्रता है कि वे स्वय पधारे हैं। महर्षि हमारे देश के चोनी के बहापूरवी में से हुए हैं। हमारा प्राचीन देश है, हबारों साम का इसका इतिहास है नीरवसय इतिहास है। इसका हमें गवं है। इसमें चप-छाया दोनो रही हैं। विवय के ऋण्डे भी हम ने देखे पराजय का सनुभव भी इस देश को है। जब-जब इतिहास में यह दश बक गया, निराण हो गया हतोत्साहित हमा, उस समय मे इसके सन्दर महापुरुष पैदा हए । जिन्होने हमें नया जीवन दिया है। नई चेतना दी है। एम महापुरुषो मे महर्षि दयान द भी थे। मैं नमफना है जैसा कि श्री रामगोपाल जी ने कहा कि "म महर्षि जी के जीवन से बहुन कुछ सबक ले सकते हैं। वे तो सोच दृष्टि ग्रीर कर्मतीनों के बनीये। लेकिन जिम चीज का प्रभव बाज तक मिला वह मन ही मे है उनकी

देश अनिस । जैसा कि सभी उन्होंने १८४७ की चर्चाकी वह चर्चा ससल में स्वराज्य की थी और महर्पि जी ने ही की बी और इसको बाद रजना चाहिए कि १८४७ मे जब भारत की जनता निराश हो चकी बी उस समय कोई रास्ता दिखाने बाला सही या। कई वर्गिक सकीसे लीग हमारी स्वतन्त्रता के लिए एक दूसरे 🗣 सड रहे थे। जो जमाना था जिस वस्त स्वामी औ ने एक नया रास्ता दिलाया । मैं समस्ता ह कि वही दिलवस्य बात भी विसकी मोर रामगोपाल जी ने इसारा किया। भारत-वासियों के अन्दर स्वाभिमान अवाया और उन्होंने भारत के अतीत का फिर से भारत बासियो पर विश्वास पैदा किया. जनमे शास्त्रत मिलावट को उनके सामने रका जो द्याज की दनिया से मेल नहीं स्नाता जनको क्रोडने का प्रयास करवाया। वे एक समाज सुधारक थे। वो खमाना ऐसा था जब बाल-दिवाह प्रचित्त था धीर कई कूरीतियाँ समाज के बन्बर थी, इन सभी के खिलाफ बाबाज महर्षि दयानन्द जी ने उठाई। जो सुवार वर्षों से सुरू हमा भीर १०० साल से चलता था रहा है, इसमें बहुत सी चीजो का झारम्भ छन्होने अपने जमाने में किया था। बहुत से लोगों का (शेष पृष्ठ ६ पर)



केन्द्रीय क्रिक्ता जन्त्री भी कुच्लचन्द्र पन्त का स्थावत करते हुए समा प्रधान भी सूर्यदेव जी

nर्य नेताओं के ओजस्वी भाषण एवं श्रद्धाञ्जलिया<u>ं</u>

हिमिगिर सा उद्दाम-दयानन्द

श्रो स्वामा दोक्षानन्द का शताब्दी पर ग्रावाहन



किसी भी महापूर्य को कुछ विश्व-वत् नाम दिया जाता है भीर उस नाम से खसे स्मरण करते हैं। जैसे कि राम को अनुष वासा, कृष्ण को मुरलीवाला गुरु सोविट सिंह को पजाब मे एक नाम दिया गबा कमान वाला। इसी तरह महर्षि क्यानस्ट को जब कोई नाम दिया जाए हो कहा जाएगा 'वेदो वाला''। वेदो पर चून जम गई थी, जिंदगी स्माप्त हो वाती, किन्तुलोग वेदो तक नहीं पृत्व बाते थे। जितने महापुरुष बाए, सुवारक श्राये, वे वेदो तक नहीं पहुच पाये थे। श्वमाज की दशा उल्टी हो गई वी अनेक *छल्टी उल्टी प्र**याएँ चल पडी थी। जब क्र**विने वेदों की भीर लौटों का नारा दिया तो सोगो को लगा कि कोई उल्टी बात कही जा रही है। लेकिन उन्होंने जो कुछ उल्टा या उसको उलट दिया, उल्टे को उलट देना ही सीवा करना है। उलटे कोच को ऋषि ने सीवा कर दिया, व्यक्ति के लिए वेद का मार्ग सरल कर दिया। इसमिए उन्हें वेदो वासा कहा जाता है। चो बरा उतरा उसे ने लिया, जो व्यवं सवा उसे छोड़ दिया।

हिमानि से बना बहुबी हैं, सारी दुनिया बही कहती हैं। प्राप्त किसी ने हरिद्वार में नंगा स्वस्ट बयी। ऋषि की बुन्दिन बज गयी।

सारी दुनिया के सामने महर्षि दयानन्द लकेला था और निर्मय होकर दुनिया को निर्मयता का पाठ रवा या। छन्होंने कहा बा स्थित "व्यापना करती है तो बेदों को प्राचार बनायो। मदार के समस्त महान् कार्यों के व्यापन्द प्रत्यों वनके सदेश देवा

एक बार की बात है एक खण्डन राम-राम जप रहे वे पाछ में एक मुस्का बी बठे थे। उन्होंने कहा कि चला बत कर रहे हो? उम क्यांचिक कहा में स्थापना इस्ट क्य पहार। मुस्का जो बोने में स्थापको इस के बढ़िया नाम बताउना जो नाम पुस क्य रहे हो वह बहां बल्स होगा है बहा में में पाल होगा है। तुम राम अपते हो राम में 'म' नाव में है म से मुहम्मद होना है, तुम मुद्रम्मद अपा करो। वह व्यक्ति मुल्ला की वात कुल पुर हो गवा, पर वात नैठे एक महावाय जा बोल नैठे, मुल्ला जो, में खापको खाप वाले नाम से भी बिंदवा नाम बताऊ, वहाँ से मुहम्मद बत्म होता है वह नाम बहा से खुक हाता है धौर वही पर साम करा होता है — द्यान नाव हुक होता है — द्यान हो तो है।

दूसरी बातः बयानस्य ने देशभक्ति दी। अपने को परखना है तो वेदों से परखों बौर इसरों को परसना हो(इसरी सस्थाधी मबहबों को) तो राष्ट्रभक्ति से परलो । बार्यसमाज इस क्षेत्र में सारा उतरा है। सस्याकोई भी हो, पर मह सस्या ही एकमात्र ऐसी है जो धार्मिक बाद मे, पहले राष्ट्रवादी है। राष्ट्र पर कही भी चोट होती है। वो पीड़ा इसे ही होती है। देश के विभाजन की जहरी ली वार्ते जब बार्यसमाब सुनता है इसका सीना दर्द से फटता है। हम सदा शान्ति के उरासक रहे हैं। हम ने अनुन दिया, अनुन किया नहीं। हिंखा के रास्ते से हम सदा दूर रहे हैं, यदि धाज भी बलिदान की धावश्यकता पड़ी तो धार्यसमाजी दयानन्द का प्रत्येक अक्त कभी किसी से पीछे नहीं रहेगा। दुवा होता है यह देखकर कि जिन शहीदों ने श्रपने जुन से भाजादी के वट वृक्ष को सीचा। भाज उन का नाम तक नही जिया बाता। प० रामप्रसाद विस्मित को मुना विया गया है। मैं मान करता हु, प्रधान-मत्री को देशा को एक रक्तने के लिए यदि कठोर कदय भी उठाना पडे तो उठाना चाहिए। जनगणना के समय जाति वर्ग द्यादिको प्रसग-द्वसम् न रसकर एक सूत्र मे पिरोया जाना चाहिए। गौ को शीझाति शीझ राष्ट्रीय पशु मोवित कर बच से बचाना चाहिए।

हमारी नाव है बाप बाबा कोई भी पढायें, पर उसकी लिपि देवनावरी होनी

श्रमेत्री या उर्दू सबकी लिपि देव-नागरी होनी चाहिए।

अध्यक्षीय भाषण

समारोह के मध्यक्ष श्री रावगोपाल शालकाल ने मधन भाषण में देश की स्थ-तन्त्रता प्राप्ति भीर सम्रेजी राज्य के अन्त के सदमें मे महर्षि दयानन्द धौर धार्य-समाज की सर्वोपरि मृमिकापर प्रकाश डालते हुण कहा कि काग्रेम ने १,४० म भारत छोडो का नारा दिया या जब कि महर्षिने काग्रेस के जन्म से १३ वर्ष पूर्वही १८७२ में भारत के गवर्नर जनरल में बेंट होने पर नरकारी महायता और सरमाण की पेशका को जो उन्होने ब्रिटिश राज के कुछक बच्छे कार्यों की मान्यता के उप-लक्ष्य में की बीठुकराते हुए कहा वाकि "मैं तो यह चाहताह कि देश शीघ्र से चीझ ब्रिटिश जुए से मुक्त होकर स्वाधी-नता प्राप्त करे।"

श्री शालवाले ने धपने भाषण मे हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिए जाने भीर गोहत्या बन्दी के लिए महर्षि की सर्वोशिर पृमिका की चर्चा करते हुए कहा कि महर्षि ने प्राप्ते सव प्रत्य हिंदी में सिखें। प्रप्ते जीवन काल में हिंदी को राष्ट्रभाया वनाने के लिए कई प्रेमोरेडम भारत सर-कार को निववाए। बोहत्या वदी के लिए हवारो व्यक्तियों के हस्ताक्षरों से पुक्त महारानी विकटीरिया को भेजे जान के लिए मेमोरेण्डम तैयार कराया। उन्होंने नारका विषय पर योकस्थानिक स्रुपम पुस्तक सिवस्य पर योकस्थानिक स्रुपम पुस्तक सिवस्य पर योकस्थानिक स्रुपम

श्री शालवाले ने सार्यसमात्र द्वारा किए गए कार्यों एव प्रयामी पर प्रकाश डालने हुए भारत सरकार में एक बार पुन सम्पूर्ण गोहत्या बदी और गाय को रास्ट्र पक्षु उद नेषित करने की भी मार्गे की।

उन्होंने महाँव के घन्तिम समय के प्रभूतेरी इच्छा पूर्ण हो का हवाला देते हुए आयों और आयं तस्कृति के प्रेमियो को उनके छोडे हुए काम को बढाने और उमे दुढ रूप देने का ग्राह्वान किया।

श्री शालवाले की अपील शक्तिशाली राष्ट्र की कामना थी

झाठवी लोकसमा के चुनाव से झार्यसमाज के चिरोमणि वगठन नालंदिशिक खार्य असिनिंव सचा के अवान ओ रामगोपाल शाल वाले द्वारा कावेस (बाई) के समर्वन की सपीन के विकट कुछ बसाचार पत्रों ने झार्यसमाज के करियम महानुवादों के विचार पढ़कर सारव्यते हुआ।

जब जामा मजिस्स के इमाम प्रन्तुत्ला बुलारी की प्रध्यक्षता में प्रानन्तपुर माहिब का प्रस्ताव पारित हवा, भारत के कई क्षेत्रों में प्रराष्ट्रीय गन्तिया सक्रिय कप से विदेशी वन के बल पर भारत की एकता को खडित करने का काम कर रही थी। पाकि-स्तान द्वारा उप्रवादियों को इतने घरत-शस्त्र दिए गए कि स्वर्ण मन्दिर फौजी किला बन गया, पजाद में झल्पसख्यक हिंदुओं को बेरुनी से मारा काटा गया। लाहौर हवाई धड़डे पर पाकिस्तान द्वारा विमान अपहर्तामी को पिस्तौल दी गई। खालिस्तान के स्वय मूराष्ट्रपति जगजीतसिंह चौह।न द्वारा इंग्लैंड मे भारत को टुकडे-टुकडे करने की साजिश की वोगणाए होती रही और वृत वृतकर राष्ट्रीय व वार्मिक नेताशों की हत्या की योजनाए बनाई गई, वसवादियों द्वारा दिस्ती व पंजाब में मविष्ण जलाया गया, जम्मू काश्मीर में राष्ट्राय ब्वज का अपमान करके पाकिस्तानी भण्डा फहराया गया। जस्मू काश्मीर मही भायसमाज मन्दिर व भाय कन्या विद्यालय का उपवादियों द्वारा जला कर लाखो रुपयो की सम्मत्ति स्वाहा कर दी गई। उस समय उक्त ब ये बख्यो को इनके विरुद्ध बोलने का माहम नहीं हुआ। । लाला रामगोपाल जी शालवाले द्वारा समय समय पर इन राष्ट्र विरोधी कारवाइयों के विरुद्ध बोलने पर मिडरवाला के समयकी द्वारा श्री जालवाले व श्री स्रोमप्रकाश त्यागी महामत्री सार्वदेशिक सभा को जान से सारत का बमकी पत्र मिला। उस समय भी ये लोग चुप रहे क्योंकि राष्ट्रीय एकता व श्रक्षण्डता के लिए जिसन भी शाबाज उठाई थी उनम से श्रीवकाश की अपने जीवन से हाथ घोना पडा था। प्रधानमत्री श्रीमनी इन्दिरा गांधी तक को इमीनिए विसदा होना पदाः

भारत के सबस्य राजनीतिक वस जो लोकसभा के कुल एक चौचाई सीटो पर सन्ते वस पर चुनाव नहीं तक सके उन दलों की मिनी-युक्ती नरकार के साथ देख का मास सौंपना जिंदन नहीं था। ऐसी स्थिति में कायेस (धाई) के समयन क प्रलावा दूसरा विकल्प जनता ने सामने नहीं था। सन् ७७ म जनता ने एक प्रवसर विरोधी बनों को जनता सरकार बनाने का दिया था जो पूर्णनया समकल सिख हुमा।

सन दिन हमदद लोगों के समयन में किनियय याय बचुयों न धायक्षमाज समजन के सर्वोच्च नेता व मुख्य राष्ट्र अस्त की रामगागान शानवाल पर धपना आक्रोण निकान के अपनी लिया है उनकी हमारी मलाह है कि ने एक्ट स्वय पार्थ प्रस्ता के साम के स्वर्ण के साम के स्वर्ण के साम प्रस्ता के स्वर्ण के साम प्रस्ता के सिकार करें। शा मुंगि वयानन के विचार पर मनन करें। शा मंत्रीम राष्ट्र के धिलार पर विचार करें। रिकर विहींन धिलार एक प्रिनेश्चन राजनीतिक दलों की स्वर्ण पर विचार करें। यदि की रामगोपल शानवाले की धपील में देश की एकता, खबण्डता एवन इंग्ले धरिलार को सत्तरा पर हां। या धाय जानि या धार्य साम के स्वर्ण करें आरोह स्वर्ण के स्वर्ण के

रण्डीव मेहरा बावडी एक्सटेशन, घोडा, दिल्ली



श्री महाँच दयानन्द स्मारक द्रस्ट टकारा

श्री महाँच दयानन्द स्मारक द्रस्ट टकारा

श्री सहाँच दयानन्द स्मारक द्रस्ट टकारा

श्री सहाँच द्रयानिक व्याप्तमा, ज. मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-१

एजत जयन्ती विशाल समारोह निमन्त्रण

मानवा

सादर नमते

हर वर्ष की भानि इस वर्ष भी १६, १७, १६- करवरी १८०५, धनिवार, रिवार, धोमवार को कृषि
व्यवस्तान करानो ने वर्षीच को वर्ष को वाला समारोह होने वा रहा १३ देवदेवान्तर ने चमारे मार्ग
विवारना करानाण कृषिभवत प्रयोग अद्याज्यीत कृषिक के प्रति मार्गत करेंचे। इस वार लामी सम्पति
स्वारत नमते

हर वर्ष की भानि इस वर्ष भी १६, १७, १६- करवरी १८०५, धनिवार, रिवार, धोमवार को कृषि
व्यवस्ता करानाण कृषिभवत प्रयोग अद्याज्यीत कृषिक के प्रति मार्गत करेंचे। इस वार लामी सम्पति
स्वारत नमते

स्वरत नमते

हर करवाने मार्गत में वर्षीय के प्रयोग अद्याज्यात वर्ष में धामिनिक होना चाहें हुल्ल कररोस्त तो पर
सुध्वकरें।

श्रीव में प्रता मार्गत मार्ग वर्ष में १९ स्थानिक होना चाहें हुल्ल कररोस्त तो पर
सुध्वकरें।

श्रीव में प्रयाग मार्ग मार्ग वर्ष में १९ स्थानिक होना चाहें हुल्ल कररोस्त तो पर
सुध्वकरें।

श्रीव मार्ग मार्ग मार्ग मार्ग पर

१ स्मार्ग मार्ग मार्ग

त्र्याप बधाई के पात्र हैं

२० तारीस को प्रत्यक्षकप से दिल्ली नहीं पृष्य पाया, लेकिन टी॰ बी॰ पर तवा समाचार पत्रो से बापके समारोह की पूरी जानकारी प्राप्त हो गई। यह सारा कार्य जिस कम और अनुसासन के द्वारा सम्यन्त हुसा, उसका सारा समस्त श्रेय केवल अपका देना स्रतिशयोक्ति न होथी. बहाँ बाप जैस कर्मठ, परिवामी तथा वानरूक कार्यकर्ता हाने, वहा कोई सी, बडे से बड़ा कार्य पूरा किया जा सकता है। टी० वी- के परदे पर मैं विशेष रूप से बापको दूउ रहा वा लकिन बाप तो उस समय भी प्रबन्ध के कार्य में न आने कहा-कहा माग-वीड कर रहे होगे। बास्तव में बाप बैसे व्यक्ति तो भवन की नीव के पत्थर की तरह हैं। नीव का पत्चर बवन को पूरी मजब्ती तथा सुरक्षा प्रदान करता है लेकिन हमें वह दिसाई नहीं देता। वास्तव में सापकी यही भावना मुक्त जैसे साधारण मुवक को मागे बढने की प्रेरणा देता है,इसीलिए मैं समय-समय पर भागत मिलकर मार्थदर्शन सथा नवीन योखनाओं के विषय में जानकारी प्राप्त करता ह।

भापने ताबकटोरा स्टेडियम मे इतने वड कार्यक्रम की सहज उग से करा डासा साय मे पुस्तक भी प्रकाशित करा डाली. भापकी को भी प्रश्लसाकी दाए कम होयी ।

— प्रो० सनिस्त भा**रती** यह पत्र समारोह समिति को एक कार्यकर्ता के लिए नहीं बल्कि उन सभी का प्रशन्ति पत्र है जिन्होंने नाम की कामना न करके समारोह को सफल बनाने में योग दिया।

दीप

─रामेश्वर 'हिमाञ्च' जग मे दवानस्य दीप,

को तुमने जला दिया। प्रज्ञान-प्रांचियों से जला.

ये बुक्तेना क्या।

तव वरापर श्राम का, इक मन्दिर बना दिया।

उसमे फिर 'प्रकाश' का,

करना बहा विद्या !! बारत माँ वी वधी हुई,

युलामी के पाक्ष में 🛭 स्ववेशी राज्य धण्हा—,

हमे यह पाठ पढा दिया।

भी रम मिलादिया ॥

बमर रह गणतव हमारा

राष्ट्रयाम सार्व

हिमानिरि से ने हिंद जनिष तक छा जाए चेतना सुवासित। भारत के प्रायण से मागे विस्तत जो प्रायाय प्रसित।

पा**खण्डो के** गढ पर किर से चले ग्रमय हो तीत्र दुवारा। ग्रमर रहे गणतत्र हमारा।।

मानवता के तत्त्व सिसकते— हुए वरा पर हो प्राध्वस्त बानवता का घट्टमुख सब भूका हो पताने मुख पस्त ।

वेद ज्ञान की दिल्य गग से धनुत पान करे जय सारा। धनर रहे गणतत्र हमारा।

साय सनातन धम सुवैदिक वेदो का फैले धरती पर। सम्य सुसरक्कत अध्ठ वन सव — वसुधा के वासी नरनारी

कृष्यतो विश्वसायम् का— गजे भू पर भविरस्न नारा। भ्रमर रहे गणतत हमार॥

सुसी तथा सन्द्र गुणी हों ऋषि मुनियों के हम धनुयायी। ज्योतिष्मान करें मानव मन फटे स्वाय शिप्सा की काई।

> बढ सुपथ पर निभय होकर भारत यह प्राणी से प्यारा। समर रहे गणतन हमारा॥

श्राय विद्यालयों के प्रबन्धकों प्रिसिपल महोदयों के नाम

भ्रावश्यक परिपत्र

दूरमाष ३१०१५०

श्राय विद्या परिषद् वित्ती द्वारा प्रत्येक श्राय शिक्षण क्ल्याओं ने नैतिक शिक्षा की पुस्तकें लगबाई अपती हैं। उन्हीं के अनुवार चार कक्षामों की परीक्षामों का सायो जन भी करती है।

जन भा करता है। परिव्य इंड वच नीति प्रवेशिका (कारा १) शीति प्रविकारी (कारा ०) नीति वाणि (कारा १०) नीति वाणि (कारा १०) नीति विधारवं(कारा १२) की गरीजाए तमी विधारवं। मे २५ करवरी १२०१४ कीमवार को सामीतिक कंगी। गरीजा जाना धानवं देवा ने धाने कार्य किया कार्य प्रविक्रा के सामीतिक कंगी। गरीजा जाना धानवं देवा ने धाने कार्य किया निव्य कार्य कार्

प्रस्तोता चन्द्रदेव झाय विचा परिण्य बिल्ली १९ हतुमान् रोड नई दिल्ली ११०००१ कृष्णाचन्द्र पत्न (ण्डः ६ का नेप

निवार है कि वे बापुनिक विचारों का रिस्कार करते थे एत नहीं है व व विज्ञान के श्रीवोगीकरण शादिक प्रव न वे। वगर राज्य की य वण्यकना की ग्रहोने पहले समस्या ज्ञान य ववस्तना स्व वात की है कि हम नंजर जनवा शास्त्र न कर विकि देश की एकन ध्रयक त स्वामियान ने जि दे चित्र हैन्न नवसुककी ये शाव यक काल प्रण ला को परा करें व वारे शावना को जिहें हमने सामने महाँच ने रखा है उनको धाज हमने धपने चरित्र म उासकर साथक बनाता है। महांच ने बस्पक साथा के क्य में हिंदी के महत्त्व को समक्षकर उसे सीका और धपनाथा और उाह में उसे राष्ट्र भाग के कर में प्रचारित किया महाँच दमान्य धाष्ट्रीनक नारन के निमानाओं

श्राज ६ स भारत की ध्रमण्डता के लिए हमें यदि बलिनान भादेना पड़ तो हम पीछे न रहे।



गोतिका रामनिकास विद्यार्थी

परपेश के गुण गाते चली।

मद्भावारा बहाने चली।

गाहो से झाए जो सवरोय बन।

कब्रुतपन मन से हटन्ते चली।

सालस्य बढता को निमल कर।

पुत्रवाय में जनमगाते चली।

तब बृद धनुन्तर दुर्भावना।

समुद्रार निज सन बनाते चली।

ईरवर के बत से बती मक्त बन।

तुन साम सब को बनाते चली।





त्रार्यसमाज वाकनेर दिल्ली में बृहद् यज्ञ एवं वैदिक धर्म प्रचार

दिस्सी ब्राय प्रतिनिधि सभा के तत्वावचान में ब्रायसमाज मन्दिर बाकनेर में १३ जनवरों से २० जनवरी तक मूर्वीय द्वागन्द निवाण सात्रा मी हर्गस्सार के साथ मनाई गद। प्रतिदिन प्रात ६ वने से ११ वने तक हुदद यज हुवा। यज के कहार पुश्च स्वामा प्रमृतान द कार्य विकास निम्नालंबित यजनानों ने सैकड़ी चमप्रमी श्रवालुओं सिंह्त जाण तथा सवनी माणेराम प्राय जनप्रकार बाजू उदयविह, मेहरसाल पवार प० प्रजीवाल जिनतिह साथ, रिखालवार रार्लीख स्रोपक स्वाण पुष्प प्रस्थान्यायक सूर्वीव्य हुवासिक जा। यज के परवात महीं ब्यानन्द सरस्वतों के जीवन तथा ब्राय सिवालवो पर कथान्य कथान्य स्वा

१६ जनवरो को दिल्ली बेहात की सायसमाजो के प्रशासकारियो तथा सुप्रसिख मनाज देश एक कारकतामा न नाग निया। बृह्य सक के पण्य न अद्वाजिल समा में स्वामा सामान-द वा सरस्वता का साजस्वा एव प्रणादायक जायज वृज्य के लिए सामीण युक्त एवं विश्व सिंह मुझ्य के स्वामा सामान-द वी साम के कर हुए स्वामा सामान-द की मा सिंह क हस विद्याल जनवनुह को सम्बाधिक करते हुए स्वामा सामान-द की महाराज ने हुरियाना और दिल्ली देहात से सामानाक क कार का प्रमावकारी वचन के स्वाम का कार प्रमावकारी वचन के स्वाम का साम कर हो प्रमावकारी वचन के स्वाम का साम कर हो प्रमावकारी का स्वाम के सुव्य को स्वाम का साम कर हो सामा का स्वाम के सुव्य को प्रवृक्त के प्रवास विल्ली देहात के सामस्वम के प्रवास किया हो सामा कर का सामस्वम के सुव्य की सुव्य की सामस्वाम के सामस्वाम के सामस्वाम के सामस्वाम की सामस्वाम के सामस्वाम की सामस्वाम के सामस्वाम की सामस्वा

महर्षि दयानन्द निर्वाण शती

एव मानव जागृति सप्ताह

> मार्यसमाज भार्येषुरा बब्बो मच्डो, दिल्बी-५

कन्या गुरुकुल हाथरस

ग्रागरा निवासी श्री कौ॰ त्रिलोक खिंह जी, बोर्ड आफ रेकेन्द्र के पूर्व सदस्य ने छा"तृत्ति की स्थानीय निष्ठि के लिए दस हवार रुपये दान दिवे हैं। ग्रागरा निवासी श्री विक्लुदेर गोहार एटबोकेट वे कन्या गुरुकुल मे प्रनिदिन होन वाले यज्ञ के निए १०० रुपये मासिक वेने का शुम सङ्कल्य किया है।

ग्रावश्यकता हे-

बन्या गृहकुल के लिए अवकाश प्राप्त विकित्सक धौर अनुमनी नसं की आवस्यकत है साथ ही आर्थ कि ते हैं की ऐसी महिलाओं की आव-स्यकता है जा छेनी कन्याओं की देखशा करसक।

मुख्याविष्ठात्री कन्या गुरुकुल महाविद्यालय

विज्ञापन सुचना

झायसमाज लुचियाना रोड, फिरोजपुर छावनी के लिए योग्य पुरोहित चाहिए। झपनी योग्यता अनुभव और सस्कारादि करवाने में दक्षता सम्बन्धी विवरण भेजे। पत्र व्यवहार मत्री, मार्यसमाज मन्दिर, लुचियाना रोड, फिरोजपुर छावनी, (निवास स्थान व विजली झादि की सुविधानि सुन्क होगी)।

शास्त्रार्थ संग्रह

ष्मार्यसमान के इतिहास में भाज तक जितने भी शास्त्रायं हुए हैं, उन सब का एक सबढ़ श्री स्वामी भागर स्वामी जी प्रकाशित वर रहे हैं। अतः स्वाप सब से प्रार्थना है, यदि झाप के पास शास्त्रायं विषयक सामग्री। तो कुपया रजिस्ट्री द्वारा २५ फरकरी तक बिजवाने का कष्ट कर। पुरत्तक छपने के बाद पुरत्तक के उपहार सहित तथा भागके सहयोग का उल्लेख करते हुए भापकी सामग्री साद जिजवा दी जायोग। पता—भागर स्वामी प्रकाशन विभाग

३/३६ , दयानन्द नगर, गाजियाबाद (उ० प्र०) वास्त्रार्थ संप्रह प्रकाशन समिति

देशान्तर प्रचार के लिए प्रचारको की धावस्यकता

लावेशिक आर्य प्रतिनिष्ठ सभा ने देखान्यर प्रचार पर विशेष व्यान के का निरुप्य क्या है। पिछले यो वर्ष के दौरान विश्व के अनेक देशों में आर्यसम्बद्ध का वहंच पहुँचा। गौरिक्स, विद्या बाराना और निर्मादक की देशों में आर्यसम्बद्ध के वहंच है जा है। उसका नेव कुछ कानिकारों की स्वत तर आर्यसमाय का वस्त्र का वस्त्र के विश्व के उसका है। उसका नेव कुछ कानिकारों की स्वत प्रेरमा और मारत से वह विश्व के अनार के शाय ही आर्यसमाय ने इन बतों में वैद्य क्या के प्रचार के शाय ही आर्यसमाय ने इन बतों में वैद्य क्या के प्रचार के शाय ही आर्यासमाय के प्रचार के स्वत की मार्यास्त्र के आर्यास की प्रमुख मुग्तिक वेदान का निरंप स्वत की प्रमुख मुग्तिक की प्रचार की । पर यह ऐसा स्वृत्य हो एस है कि वैद्योधिक प्रचार ना हो मार्य की । पर अप ऐसा स्वृत्य हो एस है कि वैद्योधिक प्रचार ना होता वा रहा है, स्वीक विश्व स्वर र एर सर्वास्त्र प्रचार की कमी पर्शि । अनी तक विश्व के बहुत सीमित जन में ही आन्तसमाय का प्रचार हो पाया है, इसे विश्व व्याप हो स्वर हो पाया है स्वर स्वर पर स्वर पर स्वर्ण के काल हो स्वर स्वर पर स्वर पर स्वर हो स

प्रश्नुक महानुमार्थों से निवेदन है कि वे इस विवस्ति के करण में हम वे पक-व्यवहार करने का कर करें। धरने प्रचोत्तर में में धरनी बानु, विवस्ति का नोमका, बावाधों का जान, धार्मतमा के परम्मल, प्रमार काई का बहुचन, प्रकाशनों की सूची एक्स क्ष्म धारमध्य कानकारियों का विवस्त वेने का कर करें। प्रकेशी शास का धम्बा जान धरिमा है। बारत धम्बा वेशान्य के तीन ऐसे प्रकुष प्रामें बनों का नाम धौर पता भी विवह, वो धाएक कारों के विवस्त ने जबी-वाशि वनकी हो। बखी बी तृत्वित करने का कर करें कि वे विवस्त तम्म इस कार्य में दे सकते हैं। बखी महानुमानों को क्षमते प्रवस्त पत्र में हो पूच विवस्त दे देना नोम्ब होना। धारा है कि वेशान्यर प्रचार के बहुनोद प्रचान करने हैंतु बाप करना धमुख्य तमय हम तथा बहुने

> जनसी का० सामन्य जनस उपयंत्री सना स् संयोगक-निर्वेश जनार उपस्थिती

त्रार्यसमाज दीवान हाल मे यज्ञ श्रीर वेद प्रचार



धायसमान सैवान हाल ने सहाँव दयान द निर्वाण खता दो के उपलब्ध में ।योजित यज एवम वेदक्या समारीह पूरक सम्यन हुई। इस शवसर पर प्रात्त काल अपनी प० रजगढ का सम्बद्धता ने भी प० यदायाल सुमाधु एवग प० सुनेट कुनार ।त्यों के द्वारा सप्तन हुआ। राति ने भी प० राजगुरु के धानस्ती प्रवाण हुए। जिनसे नेक आव गर नारी जोवन का सिन्गाप्त रिकाशो द्वारा प्रमास्ति हुए।

१३ जनवरी यक्ष में चावनी चौकक्ष त्र के सासद श्रा जयप्रकाश अग्रवाल ने रेयक्ष में ब्राह्मति प्रदान का।

मणी

मूलचार गुप्त आयसमाज दीवान हाल दिल्ली

स्मारिका प्राप्ति के लिए घ्यान द

जिन प्राथ सदेश के प्राहकों को स्भारिका नहीं मिली व १७ फरदरा खिव त्रि की फिरोजबाह कोटला सैदान ने सभा कार्यालय से या १५ हनुमान रोड से पनी प्राहक सक्या विकासर कभी भी से सकते हैं।

—सम्गदक



30 वे सस्करण से उपरोक्त मूल्य देय होगा।

आर्यंसमाज तीमारपुर, दिल्ली मे शताब्दी समारोह पर यज्ञ तथा वेद प्रवचन

१३ जनवरी २० से बनवरी तक प्रात यह एव सायकाल प्रवचन श्रो प० दिनेश च द्र पाराशार के द्वारा सम्मन्त हुए । श्री तुलसीराम बी की भवन मण्यली द्वारा मनुर भवन हुए। मारी जनसमूह ने इस सबसर पर बदकान एव मनुर भवनी द्वारा थम लाभ

> रामेश्वर दास प्रधान भायसमाज तीमारपुर दिल्ली

ईसाई युवनी की शुद्धिव विवाह

११२ ८४ को आयसमान गाँवर प्रटर कैलाध २ में कुमारी उसा सौरी को उनको इच्चानुसार बुट करके वैदिक (हिन्दू) थम में लेकर नाम उसा रखकर श्री चैता सौनी है विवाह कराया गया वर वयू दोनो पत्नो ने नव-स्पती का श्राहीबॉट

> रघुनवन गुप्त मत्री बायसमाज बटर कैसान II नई दिल्सी ४८

प्रयाग निकेंतन, जवाहर नगर मे महायज्ञ पूर्णाहृति रविवार १० जनवरी को ११ ३० बजे होगी

स्व व्यामी प्रमु पालित जी महाराज के १८ में जन्म दिवस के उपलक्ष्य ने सायोजित सक के सम्बद्ध है एक्य महास्मा स्वामत । स्वामी बीलानन्व महास्मा बलवेब पर रामप्रसान वेदालकार जी पच्चीराज झाल्झी भी नरेश बहाजारी सादि विद्वानों के जीवनोपसीन विचार भी सुनते को मिलने ।

ऋषि लगर—१२ वजे ऋषि लगर का भ्रामोधन है। भारी सब्या मे पथारकर थम साम उठावें।

निवदक

ग्रनिहोत्री परिवार प्रयाग निकेतन

३१ यू० बी० जवाहर नगर तिली ११०००७

मार्यसमाज कृष्णानगर मे ऋग्वेद परायण यज्ञ एव स्वागत

सायसमाय मिंदर कृष्णा नगर दिन्ती ११ मे १७ १२ परे से २० १२ परे तक स लेप कप प्रतिनिधि सना बमनापार के तत्वावचान से व्हावेद परायण यस महाँच दवान द बितदान शताब्दी समारोह के कप में मनाया नया। विभन्ने भी भोग फ्रांता ची गास्त्री सतीबी शासों के अवचन एवं एवं स्वादेव जी स्तातक के भवन हुए। सन्तिम दिन २० १० भे को मास्त्र सोमप्रकाश जी बाय एवं श्रीमती उथा गास्त्री के मा प्रवचन हुए। जाला रामगोपांच साल वाने ना सावदेशिक प्राय प्रतिनिधि समा के प्रधान चुने बान पर दिन्ती प्रतिनिधि गमा के प्रधान भी मुयदेद ची के तत्वावचान में स्वागत किया गया पूणीहृति प्रवचनी सन्ति एकम प्रधिन न क प चात व्हावि सन्तर भी किया गया।

> जगदीशनाथ भाटिया भायसमाज मदिर कृष्ण नगर दिली ११

श्री रामगोपास शासवाने का स्वागन करते हुए ग्रायसमाज कृष्णनगर के प्रजान स्री डा॰ जगन थ।



ऋषि मेला (ऋषि बीघौत्सव) रविवार १७ फरवरी १६८४

रविवार १७ फरवरा १६८४ स्थान--फिरोजशाह कोटला मैदान

प्रातः ८-०० बजे : यज्ञ

प्रातः १-३० बजे : ध्वजारोह्रण

प्रातः १०-०० बजे : खेल-क्रद प्रतियोगिताएं

प्रातः ११-३० बजे : भाषमा प्रतियोगिता

विषय-राष्ट्रोत्यान मे महर्षि दयानन्द का योगदान

दोपहर १-०० बजे : सास्कृतिक कार्यक्रम

श्रपराह्न २-०० बजे : सार्वजनिक सभा

अध्यक्षता--लाला रामगोपाल शालवाले मुख्य अतिथि--श्री बलराम जासङ्

लोकसमा ग्रध्यक्ष

प्रमुख वक्ता—श्री ग्रोमप्रककाश पुरुषार्थी श्री शिवकुमार शास्त्री श्रीक्षितीश कुमार वेदालकार, श्री पृथ्वीराज शास्त्री (वैदिक मिश्वतरी)

अधिक से अधिक सख्या मे परिवार सहित पहुँच कर कर्त्तंच्य पालन कीजिए।

नोट कुपया भपनी भार्यसमाज के सत्सग स्थगित कर समय पर पद्मारने का कब्ट कर।

— निवेदक — महाजय धर्मपाल

महासय यमप प्रधान सूर्यदेख महामन्त्री

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य (पजीकृत)

श्री दौंनानाथ सिद्धांन्सालंकार का श्रीमनन्दन

बाव समाब बस्तोक सिहार फेट-१ विस्ती २२ वें १६ विस्तार को विशेष उत्तव तम्मल हुत, १४ वर्षण प्राप्त वर्षण प्राप्त के ११ वर्षीय विद्वान उपयेशक विराक सेवक, राष्ट्र वेषक स्वामी अद्यान्त के प्रमुख विषय बाजाय दीनानाक विद्वान्ताककार का साववनिक वर्षण प्रसाद वर्षण वर्षण वर्षण वर्षण वर्षण वर्षण वर्षण प्रतो के व्यापक रहे हैं।

—कुलमूबल सहनी मत्री



श्चार्य जगत की शान २०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन नेन्न चिकित्सालय (अनुमानित लागत दो करोड रुपये) के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि ग्रायकर अधिनियम जी० = के अन्तर्गत करमुक्त होगी। सारा दान वैक/मनोभावर/वैक कृष्ट द्वारा

मन्त्री माताच ननवेबी बार्सं कर्मार्थं नेत्र चिकित्त्वालय, वी १ जनकपुरी नई दिल्ही ३ म के एते पर भेजा जाए ।

दानदाताओं के नाम विकित्सालय की शिला पर अकित किए आएगे।

निवेदक

रामयोगास शासवास सरणक तुबदेव महावय स्वयास स्रोमप्रकास सार्व सिक्टसाइव एव प्रवान प्रचान तिल्ली मान प्रचान साथ सभी महासव सा० मा० प्रति० सभा प्रतिनिधि स्वया केन्द्रीय सभा पुलीलास केरि ट्र सीजन्य से महासिया के हिटी प्रा० लिमिटेड १/४४ कीतिनगर सौसीनिक नेत्र नई दिल्ली ११००१

उत्तम स्वास्थ्य के लिए गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार की औषधियां सेवन करें

> शासा कार्यालय—६३, गसी राजा केवारनाय, फोन २६६८३८ वासरी बाजार, किसी-६



अवस्य सम्द्रमा

दिल्ली आर्य प्रसिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

मूल्य एक प्रति १० पेसे वर्ष ह प्रकार ३ रिवार १७ फरवरी १६०३ आय सवस्त्र ११६००४३००४ फाल्नुन २०४१ दवान वाल्य—१६०

शिवरात्रि के महापर्व पर विश्व भर की आर्यसमाजों में ऋषि बोधोत्सव की धूमधाम

महर्षि दयानन्द विश्व के महान् धर्मोद्धारक एवं समाजसुधारक थे

भायसमाज साहदरा दिल्ली द्वारा मायोजित महर्षि दयानन्द बोघोत्सव के भवसर पर मुख्य भतिथि के रूप मे बौलते हुए केन्द्रीय सस दीय मत्री श्री एवं के एल भगत रे महर्षि दयानन्द द्वारा किये गये अर्ध न समाज सुधार के कायों की विस्तृत जानकारी देते हुए उन्हें महान सुधारक धर्मोद्धारक एव क्रातिकारी बताया । उन्होने ग्रार्य समाज के द्वारा किये गए महान कार्यों की प्रशसा करते हुए कहा-समस्त सूचार के काय स्त्री शिक्षा प्रछतो कार सस्कृति और सम्यता की रक्षा सब बाबसमाज ने घपनाया है। मैं समभताह सरकार का २० सूत्रो कायक्रम जो राष्ट्रीय कल्याराका सूत्र है वह स्रायसमाजने पूत्र ही



एच० के० एल० भगत

भ्रपनाया हुम्रा है। उन्होंने भ्रार्यसमाज को उसके द्वारा किये गए महान कार्यों के लिए साधुवाद दिया।

सप्यक्षीय भाषणं करते हुए श्री रामगोपाल झालवाल के कहा ऋषि दयानन्द ने प्रायक्षमाल को एक प्रवल प्रादोलन के रूप में जन्म दिया है। प्रायक्षमाल अपने जम से हो प्रराष्ट्रीय तत्त्वों से अन्याय अस्तान जहालत सेल न्दी चला वाया है। इस प्रवसर पर हम ऋषि के कार्यों को पूणा करने का बत प्रकृष कर।

दिल्ली स्राय प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्पर्यदेव ने कहा— ऋषि दयानन्द ने राष्ट्रभित मानुभन्ति पितृभन्ति गुरुभक्ति (भाषायसम्मान) भौर प्राणिमात्र के प्रति प्रम सिखाया है। उन्होंने वग जाति से करर उठकर मनुष्यता का पाठ पढाया। उन्होंने कहा—महिष्व द्वारा सस्थापित भायसमाज दश समाख की विषम परिस्थितियों में भी अपने सुधारवादी दिष्टकोस्ण से सलान रहा है। हमें बाज भौर भा अधिक प्रबद्ध होकर कार्य करते रहने की प्रराणा जानी चाहिए।

ऋषि मेला (ऋषि बोधोत्सव)

रविवार, १७ फरवरी १६८४ स्थान--फिरोजशाह कोटला मैदान

प्रात ६०० (ज यज्ञ प्रात ६३० वजे ध्वजारोहरा प्रात १००० वजे बेल-क्रव प्रतियोगिताए

प्रात ११३० बजे भाषाम् प्रतियोगिता विषय --राष्ट्रीत्यान ने महर्षि दरानन्द का योनदान

क्वय --राष्ट्रास्थाव में महाव वयानय का याववान वीपहर १०० वजे सास्कृतिक कायक्रम धावराख्न २०० वजे सावजनिक समा

सम्मकता—सामा रामनीपाम शामवाने सम्बद्धाः सविजि-स्त्री वनराम बासव (सध्यक्ष मोकसमा)

> तुची कुमुब वेन बोशी प्रमुख वक्सा--वी सीम्प्रकाश द्वावार्थी

भी मिचकुमार खारंत्री भी विक्रांतिस कुमार वेदानकार

यो पृष्पोपुत्र श्रुक्तमा (वश्यिक निवानरी) यो व॰ प्रविध्यक्षय वास्त्री व्यविक से व्यविक वर्षात्र ने परिचार प्रवित गृहैंच कर व्यवस्य व्य पासन कीवित्र । नोट कुँचका कामुक्ती कामुस्ताना के बस्सन स्वानित कई समय पर प्रवीहरने न

का संश्व करें। विकार-महास्त्र वर्षेत्र - निवैदेव - महासूनवी - वृद्धेदेव

केन्द्रीय सभा, दिल्ली शाज्य (पक्षीकृत) १६ हमुमान रोध, मेर्ड विस्कृत
> सरल मिक्सनको कौन विवाकर बनाजवत से जब खाया वातिसर प्रमार ? विक्य त्रम का बिचु रहा वा किस के उरसे लेहरूर आर ? वीर निराखा के पताकर से लाया कौन नवलत सहार ? व्या दृष्टि से कान नृद्धि से दूरिकिये किस के सक्तियार ?

बनानन्य से बनानन्य से बनानन्य से न्यूपि वातार॥ १॥ कीम जरित यह अबस हैच की सहुर गए विश्व के तथ हार? कीम जा। वा करूबार सहात तिहु के करते पार? हराजार पालक्क हटाकर दिया जीत 'स्वसत महार'? नारत पूरा नेकर उत्तरा कीन म्हणाओं की नवार?

द्यायन के द्यानक्द ने द्यानक्द के ब्रांच वातार।। २ ॥ कीन 'नेंच जर्बर समाध्य का किया सफस जिसने तक्कार ? कीन नाक्कारी निर्वति जुंब से बही बान की स्वित्तव चार ? बटक खूँ ने दूबर जबर को मुठे बन्नों में फड़ मार ? वे श्वाराण जुंकार किया किसने सबय गढ़ को विस्सार ?

बाब अभ्यायों का विचयिकों का या कीन बना प्राथार? शीव द्वीय को बले अभ्याया गठकों की किन सुनी पुकार? स्थल बाँठ-बेड्डी वर्ष देकर किम जे शासक किया परर? किस ने किस्सा विरक्ष अपने विच देने वाले को भी प्यार?

अयानन्त व दय नन्द वे दयानन्त वे चित्र दासार ॥ ४ ॥ 🥻

बबान द वे दयानम्थ के दयानम्द वे ऋषि वातार ॥ ३

यज् १६। १२

इन्द्र वर्षन्तो ग्रष्तुर कृण्वन्तो विश्वमार्यम् । ग्रपष्नन्तो ग्रराव्णः ।

死0 & 1 もさ 1 %

पदार्थ—(इन्द्र) परमेश्वर का (बक्ता) बुषवान करते हुए (प्रप्तुरः) कर्यों को करते हुए (बिज्बम् धार्यं कृष्यन्तो) विश्व को खेळ करते हुए (धराव्य धपजन्तः) धराति भावना तथा कृष्णों को दूर करते चने चनो ।

गीतिका

परमेश के गुण वार्त वकी। सबर्मणारा बहाते चकी। राही में श्राए जो सबरोध बन। कलुसमन मन से हटाते चकी।। श्रालस्य चक्रवा की निर्मृत कर पुरुषार से जनस्वाते चकी।। तब खु समुदार दुर्मानमा। सबुदार निज मन बनाते चली।। इंडियर के उत में उती मत्त बन। इस चल बारों चली।। इस सु को चलाते चली।। इस सु को चलाते चली।।

उपास्मै गायता नर पवमानायेन्दव । ग्रभिदेवा इयक्षते ।

पदाब—(नर) हे उपासक नेता जनो (ससी) इस परमास्मवेव के निए (वेबान् सनि इसको) दिव्य गुमों के सम करने के निए इच्छुक तुम सब (इन्सवे वक्सानाय) आञ्चायक पावनकर्ती प्रवाह रूप प्राप्त प्रमुक्ते निए (उप) उपासना करो (वासन) स्वति मान करो ।

गीतिका

प्राप्त बढ़ने ने प्रशिनाणी नर दिखर का गुण गायन कर। कर समुप्तप्तन पातन कान र प्रमुख का गुण गायन करना वाला है जो उससे जीवन मन कर पावन। प्रथमान होन एक खार का पायकर का उपायक कर प्रथमान होन एक खार का प्राप्त का उपायक कर प्रशास के प्रथम करा। जानत कर खान के प्रथम करा। खान करा खान करा। खान करा खान करा। खान करा खान करा।

भन्मा भनिता भवत शीर्षालोऽहय इव। तेषां वो भन्नितुरनानामिन्द्रो हन्तु वर वरम्॥

वार्य — (व्यक्तिका) हे बस्तेही जन (अत्या नवह) अने हो। (अपीर्याण है। (अपीर्याण है) अपीर्याण है) (अपीर्याण है) (अपी

जो प्यार नहीं करते जो है नवान्य प्राणी।
बाजों के होते थी घन्ये हैं व्यक्तिमानी।
है नहीं दूर तरण जो रजार्क प्रमन्दित्ती।
विराणि हैं ने प्रविचेकी प्रकाली।
विराणि हैं वेप्ति ने प्रविचेकी प्रकाली।।
विराणि हैं वेप्ति ने वेप्ति के विराणि विराणि हैं
बातानी।
जानान्ति जन्तें कुन नुतकर नाहर कर देवे।
जेमानून रह पी से हुनिया बानी बानी।।
जनान्ति जन्तें कुन नुतकर नाहर कर देवे।
कर रजेह वानी है है बही होत्यानी।
जन स्लेह सुवा हारा कर सफ्स विन्यानी।।

भो शन्नो देवीरभिष्टय आयो भवन्तु पीतये ।

श्रयोरिम स्नवन्तुनः॥

पदार्थ—(वेसी साथ) तथे प्रकाशक सर्व आपक प्रमु (न स्राविष्टये पीतवे सं वक्तु) हमें सभीष्ट शानम्य रह पान के तिए कस्याणकारी हो। (न सभी अपि सक्तु) हमारे तिए युक्त की सर्वत्र कृष्टि करे।

वहीं किया है तुम से बारम्बार। वया पृष्टि कर इक्ष्य पृष्टि कर इक्ष्य पृष्टि कर कर्यना क्रणामार।। है बन को वनकाने वाले नव्यविन सरकाने वाले। हिस्स कार्य वनकाने वाले वालित पृष्टि करताने वाले।। दिस्स ब्याप कर्यामाणी बारा नर्या प्रविष्ट कार ।। हिस्स ब्याप क्ष्याणी बारा नर्या प्रविष्ट कार। है धानन्य कन्द सुक्रासि नेरे प्रमु है घट-मटवासी। क्ष्या क्ष्य है विश्व प्रकारी हर बीतन दुक देन दवासी। कर विभाग कर्या क्ष्या क्ष्या कार्य है विश्व प्रकारी हर बीतन दुक देन दवासी। वन्य विभाग क्ष्या हो। बाता हिस्स प्रकारी हर बीतन दुक दन हो हो। वनवासिक धानन है हुआ। विभाग हर विभाग हुआ। हरने वन क्ष्याण हुआ। हो वाताल विष्य रस नत्य-नक कर बीतन क्यार।

नावान्तरकार--- रामनिवास विद्याव फलनपुर, सुन्दर नगर, (नेरठ

आर्य पर्व सूची (१९८५)

सावदेशिक पार्थ प्रतिनिधि सभा प्रायसमाजो की सूचना के लिए स्वीकृत पार्थ पर्वो की सूची प्रकाशित किया करती है।

स॰	पव	सौरतिथि		चन्द्रतिषि धन्नेजी	दिन
8	मकर सक्राति	१ माघ २०४१	माचबदि ८, २०४१	१४-१-१€=¥	सोमवार
2	वसन्त प्रमा	१२ मात्र २०४१	फा॰ सु॰ ४, २०४१	₹4-1-18=4	गनिवार
Ę	सीताष्टमी	१ फा॰ २०४१	फा० व० ⊏, २०४१	१२-२-१६ =४	मगसबार
٧	दयानन्द बोधरात्रि (शिवरात्रि)	६ फा० २०४१	फा॰ व॰ १३,२०४१	\$0-7-86=8	रविवार
4	वीर लेखराम तृतीया	११ पा० २०४१	फा० सु० ३,२०४१	२२-२-१६=४	शुक्रवार
Ę	नवसम्येष्टि (होली)	२४ फा० २०४१	पा॰ सु॰ १४, २०४१	€-3-8€=¥	बुबवार
19	नव सवत्सरोत्सव एव स्रायसमाज स्थापना दिवस	६ चैत्र २०४१	चैत्र गु०१ २०४२	२२-३-१६८%	शुक्रवार
4	रामनबमी	१७ चैत्र २०४१	चैत्र जु० ६, २०४२	#23\$-F-0F	शनिवार
٤.	हरि नृतीया	इ आवण २०४२	श्रावस श्रु० ३, २०४२	₹0-9-१€=₩	शनिवार
₹•.	श्रावणी उपाकम	१४ भाद्रपद २०४२	श्रावण सु० १४, २०४२	३०-५-१६५४	जुक्रवार
22	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	२२ भाजपद २०४२	माद्रपद बदि ८, २०४३	¥=39-3-0	शनिवार
१ २	गुरु विरजानन्द दिवस	२३ प्राव्यत २०४२	धा० वदि १०, २०४२	¥=39-09-3	बुधवरि
१ ३	विजय दशमी	६ कार्तिक २०४२	मा० स् ० १०, २०४ २	२२-१०-१६८५	मगलबार
\$ 3	महर्षि निवाण दिवस (बीपावली)	२७ कार्तिक २०४२	कार्तिक बदि ३०, २०४२	१२-११-१६=६	मगसवार
?%	श्रद्धानन्द बलिबान दिवस	द पौष २०४२	ग्रव हन सु० १२ २०४२	₹₹-१२-१६=३	सोमबार
टिप्पणी	—१ इन पर्वों को वैदिक धर्म २ देशी तिथियों के घटन		ति के प्रसार का महान् सावन	बनाना चाहिए।	

शोमजकाश त्याची कथा मन्त्री

लघु कथा _(व्यंन्य)

आवश्यकता

साने की मेज पर पूरे परिवार ने साम कैंठे रिटायडं नाबू सकटाप्रसास ने प्रपने बेटे से कहा "बेटा, मैं सोमता हूँ कहे के पास विस्सी रह धाऊ।"

"बाबू वी भाप ठीक ही सोच रहे हैं किंतु भापके चले जाने से यहा बड़ी तक लीफ हो जायेगी।"

'क्यो, भलामेरे जाने से [?]"

हा बाबू जी अपना नौकर भी हो खुट्टी पर गया है, दूब, राशन, सल्बी, ये सब लाने के लिए घर में कोई तो होना चाहिए," बहू ने अपनी दिक्कर्ते श्विना दी।

"हा बाब् औ, मधु ठीक कह रही है, बेबी भीर पिटू की परीक्षाए भी इसी माह में हैं, ये दोनों ही हिसाब में कमजोर हैं, आप देख लेंगे तो "

नानू संकटाप्रसाय को बडकऊ का पण् बाद हो आया—"मैं एक माह के लिए घर से जा रहा है, बाप बा जामें तो कर मुद्रिक्त हो बोने।" बाबू बी का मन विलयिना उठा और बहु ध्रवसाये ही उठ बये।

११७/एब/२३३ नवीन तबर, कावपुर

सम्पादकीय

घटना ग्रौर बोध

बह १-३६ को महामिबरानि थो जब एक छोटो-सी घटना ने बाल क मूलवाकर के जीवन में महानू क्रांति कर दी। धीर वे सच्चे खिव की जोज में एक दिन घर से निकल पढ़े। घटनाए घपने धाप में छोटो या बड़ी नहीं होती। उनके परिएाम से ही उनको छोटा या बड़ा कहा जाता है। हमारे जोवन में इतस्तत घनेक घटनाए घटित होती रहती हैं परन्तु उनका प्रभाव हमारे जोवनों में क्रान्ति नहीं कर पाता। इसिलए उनका घटित होना इतना कोमती नहीं। प्रत्येक घटना एक खिला है, बही कीमती है। जेम्स वाट की केतली के बक्कन को माप से उठते गिरते देख जमक्कारिक धनुमान हुमा कि माप से घर्ष्यिक धानत होती है। यही व्यक्ति माप के इबन का बाविकारक प्रहान वैज्ञानिक बना। न्यूटन को बाग से पेड से टूटकर गिरते सेव को देख खह कीतृहल जमा, फल नीचे ही क्यों पिरा उत्पर क्यों नहीं गया ? वे घनती की गुरूव भाकर्यण सन्तित के ममंत्र हुए। इसी तिव्रात पर धनेक विज्ञान के सामकर्यार चरकार उन्होंने ज्यात की दिए। समर्थ गुरू रामदास को पिडत हारा "खाववान" कहने मान से वैराज्योध हो गया।

मूलशकर एक घटना से ही सच्चे शिव को लोज मे ग्रहत्याग कर चले सौर महर्षि दयानच के नाम से विश्व विश्वात हुए। बहन भौर चाचा को मूरपु उनके बैराग्य को कारण बनो महारमा बुद्ध भी शव को देखकर ही सुद्धार को नश्वता से जिल्ल होकर महल त्याग बन को चल पड थे। पर महारमा बुद्ध के बैराग्य में कर्तव्य विश्वस्ता स्रिषक थी।

महर्षि दयानन्द को एक ही बार बोध हुआ, ऐसा नही कहा जाना चाहिए, प्रतेक बार जोवन के घटना क्रमों ने उन्हें बोध कराया।

ें योगी ऋषिराज समाधि के भानन्द मगन, एक बोस्कार से हिल उठते हैं। विख्वा मा भ्रमने बच्चे को लाध को नदी में बहा उठ पर लिपटा वीचडा भी प्रपनी लाज को डापने के लिए उतारकर चलो जा रही है। और भ्रमनो गरीबी बबसी पर चीस्कार कर रही है। उस कार्याएक रूप ने महर्षि को भारत की दोन दशा और गुलामों का महसास कराया। भाषों से विहीन गृह विश्वानन्द ने भी स्वामी दयानन्द को ज्ञान, विज्ञान भीर देश, समाज के प्रतिकृत्य वोष कराया।

महॉच दयानन्द ने सच्चे शिव की उपासना का ससार को बोब दिया।
महॉच दयानन्द ने सच्चे शिव की उपासना का ससार को बोब दिया।
महॉच दयानन्द का एक मनुष्य से लेकर समाज और राष्ट्र से लेकर विश्व
तक को मूल भूत समस्या एव विषयता के खिलाफ सशक्त धान्दोलन धीयरेसमाज एक दिखा बोध है। इसीलिए तो इन महापुरुषो ने कहा था— प्याठित कार्य दुवता, उत्साह भीर समन्वयात्मकता की दृष्टि से धार्यसमाज की समता कोई समाज नहीं कर सकता।

जहा जहा बार्यसमाज है वहा-वहा जावन-ज्योति है।

षटनाक्रम से हम बोध ग्रहण कर सकते है।

—सहात्त्रा नाथी

श्रार्यसमाज एक वास्तविकता है जिस से बन साधारण का श्रारचर्य-जनक उत्थान हुआ है । इतिहासकार बहुनाब सरकार आयंसमाज दिशावीघ है परन्तु व्यक्ति से ही समाज बनता है साज श्रावस्यकता है व्यक्ति-व्यक्ति में बचारिक कृति एव दिशा बोघ की। जो प्रत्येक दशानन्त्र भन्त भीर वैदिक धर्मी को पूर्ण करना है। जीवन के प्रत्येक-

आरक्षण की नीति पक्षपात का द्योतक

> बसधीत बास्त्री बावंचगाच कासकाची

–थवापास सुचाञ्

कुलपति सम्मेलन गुरुकुल कानडी विश्वविद्यालय की सस्तुतिया

आरक्षण आवश्यक है-

१६ जनवरों के विविध परिचर्चा सत्रों में यह निश्चय किया गया कि वर्तमान सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक प्रवस्थामों के पिंग्रेक्ष्य में मारतीय शिक्षण संस्थाभों में मृतुर्मिजत और जन-आतियों के लिए आरक्षण गरी रक्षा आए। शुग शुग से चले भा रहे शोषण नथा भेदमाव के विरुद्ध एक मुमाबचे के रूप में, शिक्षक तथा मार्थिक विकास में योगदान के रूप में शक्ति तथा प्रभाववाली स्थान प्राप्त करने के साम्रन रूप में, प्रमुद्धित वर्ष में प्रतिमा के प्रोरसात करा प्रभाववाली स्थान प्राप्त करने के साम्रन रूप में प्रमुद्धित वर्ष में प्रतिमा के प्रोरसाहन नथा उसके मशुविन विकास के निए समानता नथा सामाजिक स्तर के उत्थान के लिए मिंदियों में प्रदान करने के लिए तथा एक खाविहोन समाज के निर्माण के लिए मारक्षण मायद्वयक है।

मावश्यकता इस बात की भी है कि ग्रारक्षण नीति का पूनम्ल्याकन किया आगए। अनसचित वर्गके विद्यार्थियों में जागृति के लिए नि शुल्क शिक्षा, नि शुल्क भोजन पुस्तक छात्रवृत्तिया विकित्सा कपड तथा भारम-निर्भरता को प्रेरणा तथा सुविधाए दी जाय। प्रशिक्षण के लिए कक्षाए तथा भन्तरिम पाठमक्रम शुरू किए जाय । उनकी आर्थिक स्थिति सधारने के लिए रोजगार के मधिकाधिक नाधन उपलब्ध कराये जाय । शिक्षा का व्यवसायी-करण करते हुए मनसचित वर्ग के विद्याधियों के लिए पोलिटेकनिक स्थापित किये जाय। प्रनुमुचिन वर्गके विद्यार्थी शिक्षा प्रघुरो न छोड इसके लिए उन्हें तथा उनके मिमावको को विशेष प्रोत्साहन दिया जाये। माथिक पिछडापन दूर करने के लिए ल्यावहारिक स्तर पर उनकी सामाजिक आवश्य-कनाओं को पर्याप्त रूप में पूर्णता देने के लिए इन वर्गों के मेवावी छात्रों को विशेष रूप से कपर लाने के लिए ग्राधिक सामाजिक शैक्षणिक मनोविज्ञान तया राजनैतिक रूप से झारक्षण नीति का पूनम ल्याकन किया जाना चाहिए शिक्षा समानता तथा समान अवसर दिये जाने के सिद्धान्त पर आधारित हो भारक्षित विद्यार्थियों को उनकी मानुभाषाधी में शिक्षा ग्रहण करने तथा सामाजिक प्रशासनिक सेवामी मे उनका उपयोग करने को छन हो। सब लोग सुखी हो, वे समान रूप से जानि घम वर्ग तथा किसी भी भेद-माव से मुक्त होकर राष्ट्रीय धारा में जह सके। इसके लिए एक भावनात्मक बाता-वरण बनाने के लिए प्रचार तन्त्र का मजबूत होना ग्रावश्यक है।



सत्य के प्रबल समर्थकः स्वामी दयानन्द



मायमम व कीस्यासा नो जरूर द्रिद्रश्रमे हई। पर इसमे गह रेभी स्वामी दयान-दन ऐसे ही कुद और सगठनो की भी नीव वाली थी। उत्तर प्रदेश में साय समाज की स्थापना स एक साल पूर्व नैनी साल में स्वामी जी न एसा ही एक संगठन बनाया जिसका नाम सत्य शोधक समाज था। प्रतीत ऐमा होता है -- ब्रह्मसमाज प्राथनाममाज ग्रादि सगरनों से लगता भिडतानाम भागसमाज सभवत स्वामी भी को ग्रधिक रुवा हो। इसीलिए उन्होने बाद मे उसे प्रपनालिया। पर वर्शनक भौर सामाजिक क्षेत्रों में स्वामी दयान द जिस सत्य का प्रचार करना चाहन य उसका धामास सत्य शोधक के नाम से ही म्राच्छापता लगताहै। सत्यकाश्रचार करते समय स्वामी जी कमन मेन तो कोई पूर्वाग्रह ही या और न ही दसरे वर्मा चायों की तरह किसी बात को उ होने यह कहा यह ही अन्तिम सत्य है कोई बिन्दू इस पर लग ही नही सकता। बल्कि कही कही तो उनक लखी में यह नी सकेत मिमता है - जो क्छ उन्होंने लिखा है उसमे प्राप्त तथ्यो से यदि परिवनन की स्वाइन दिलाई दे तो वह निन्मकोच कर सिया जाए।

सत्य शोधक समाज की ही राह पर चलन हए ऋषि न्यानन्द ने भवनी प्रमुख पुस्तक का नाम भी सत्यायप्रकाश रखा। सरय की तह में पंचने के लिए स्वामी चीने इसके बौदह समुल्लासी से यो तो प्राव हर प्रमुख विषय को ही उठाया है। ग्रन्थ का प्रारम्भ भी उन्ही दिनो ग्रास्ति-कताकी धाड में भिन्त भिन नामी स चल रही ईब्बर की आप दुकानो की श्रस सियत नया है ? यही से उन्होंने किया है। यह समय वह बा जब शैव लोग बैध्णवो की पगड़ी उछालते य भीर वैष्णव उन्हे बुरा भला कहते थे। स्वामी जी न सप्रमाण ञ्चन सब नामो की व्यान्या करते हुए कहा यह तो सब ही नाम उस एक ग्रहितीय श्राक्ति के हैं फिर फनडा किस बात का है? मीता के शादों में यह तो सारे रास्ते पहु

वाते ही एक मिलन पर हैं। ऐसे ही भीर गी प्रतेको सामाजिक प्रस्त खरमार्थमकास त्यामी को उठाये। जन्मना जाति, न्त्रियों को शिक्षा से विचत रखना वाल-विवाह बृढ विवाह धौर पुनर्ववाह का निपंत्र धारि धानेको सामाजिक धिष्ठधाए ऐस व विवासे से पार्थ सामाजिक सिष्ठधाए ऐस व विवासे से पार्थ सामाजिक सामाजि हो रह थे। स्वामी जीने धाने बावाधी में सौर ध-यों में इन्हें बढ़े साथे हाथों निया। मारत ने प्रत्यंत्रत खी सक्त मतान्यों को बढ़ घणना मानते थे। इसी-निय उनकी कमजीरियों का भी इस प्रथ में उन्होंने प्रप्त उठाया है। खरमाचंत्रकास से इस मुम्लिक से बढ़े ही निजयं भाव से उन्होंन यह लिखा है—

मेरा इस ग्रव क बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य धर्मका प्रकाश करना है। मर्थात जो सत्य है उसकी सत्य भीर जो मिथ्या है उसको निथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य भवें का प्रकाश समक्ता है। वह सत्य नहीं कहलाता जो सत्य के स्थान में प्रसत्य भीर प्रसत्य के न्यान में सत्य का प्रकाश किया जाए। किन्तु जो पदाथ जैसा है उसको वैसा ही कहना लिखना भीर मामना सत्य कहलाता है। को मनुष्य पक्षपाती हाता है वह भपने ससत्य को भी सत्य भौर इसरे विरोधी मतवाले के सत्य की भी भसत्य सिद्ध करने ने प्रवृत्त होता है । इसीलिए वह सस्य मत को प्राप्त नही हो सकता । इसीलिए विद्वान बाप्तो का यही मूख्य काम है कि उपदेश वा लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्वासत्य कास्वरूप समर्पित करदे। पञ्चातु वे स्वयम् भपना हिताहित समक्र कर सस्यार्थ का ग्रहण धौर मिष्याय का परित्याव करके सदा धानन्द मे रहें। मनुष्य की भात्मा सत्यासत्य की जानने वाली है। तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि हेतु हठ दुराग्रह भीर भविवादि दोषी संसरव की खोड बसस्य में भूक जाता है। परन्तु इस ग्रन्थ में ऐसी बात नहीं है धौर न किसी कामन दुलानाया किसी को हानि पट्टें-च।ने का तात्पय है।

इससे विधिक निरमियानीपक बीर क्या फिली का हो तकता है। हुसरा कोई होता तो पिक्क चाता इस में यह कोई स्वोचन की गुँजाइस नहीं है। पर स्वामी थी का मंत्रिक इस विषय में बहुत साफ सा—सार की बीक बारी रहनी चाहिए बीर कर भी कोई नया साथ सामने भावे दो जसे जुने हुस्य से स्वीकार कर लेना चाहिए।

धार्यसमाज के दस नियमों में एक नियम के तो शब्द ही यह हैं-- 'सत्य महरू करने और मसत्य के त्यानने मे सर्वेदा उद्यत रहना चाहिए। इन दस नियमों में भी सब से प्रधिक वस स्वामी जी ने सत्य पर ही दिया है। दस मे से तीन मियमों में तो बत्य का स्पष्ट उल्लेख भी है। पहले ही नियम मे आया है --'स्वय सत्य विद्याशीर पदार्थविद्यासे जाने जाते हैं छन सब का धादि मुन परमेश्वर है। पाचवें मे- सब काम धर्मानसार सत्य धौर धसत्य को विचार करके करने चाहिए। इसी तरह तीसरे निषम के प्रारम्भ में निसा है--'वेद सब सत्य विद्याची की पूरनक है। उसका पढ़ना भीर पढाना सब भागों का परम षमं है।' वेद का ज्ञान किसी जाति प्रयवा देश विशेष की सम्पत्ति नहीं है। मनुष्य मात्र के कल्यासा के लिए धादि सुष्टि ने मिला यह ईश्वरीय ज्ञान है। प्राणिमान को मित्र की दब्टि से देखने का घादेश भी सब से पहने वेद ने ही दिया।

स्वामी दयानन्द के समाज सुधार कार्यक्रमो भीर सैदातिक सञ्चाहमीं की उन दिनों देश विदेश दोनों में भी सम्बद्धी चुम मची हुई थी। थियोसोफिक्स सोसा-यटी के सचालकाण तो ग्रायंसमाज के विचारों से इतने प्रभावित वे कि एक बार तो उन्होंने सोसायटी को बार्यसमाज मे मिलाने का निश्य ही ले शिवा। स्वामी जी से बहुत दिनो तक इस सम्बन्ध में उन कापक्र-व्यवहार भीचला। अन्त ने उक्त सोसायटी के सस्वापको ने से दो प्रमुख व्यक्ति कर्नेस समकाट और मैडम ब्लेड-बट्स्की बम्बई प्राकर स्वामी भी से मिने। कई दिनो तक यहां भी विचार विनिधय चलता रहा। लगभग सभी बातो पर दोनो पक्ष सहमत भी हो गये। पर यह ही बात ऐसी रही जिससे बेल गढेन चढ सकी। धायसमाज के तीसरे निवस मैं जो यह वाक्य है-विद सब सत्य विद्यार्थी की पस्तक है. उसमें से सत्य शब्द को वियो-सिफिकल सोसायटी वाले हटाना बाहत वे । उनका कहना वा -इससे दूसरे वर्ध-बन्धो का बप्रत्यक्ष सदन होता है। स्वामी जी ने उनकी बात बडी गम्भीरता से सूनी भीर सहस्रभाव से उत्तर देत हुए कहा सत्य पर तो सार्यसमाज की नीव ही मैंने रक्षी है। यदि सत्य ही उसमें से निकस गया तो रह क्या जाएगा। सत्य से सम-भौते का भागपाय ही असत्य को प्रोत्साहन देना है। इस तरह वियोसिफिक्स सोसा-यटी की वह विशय वार्ता बीच में ही ट्र वर्ष ।

ऐसा ही एक प्रकरण उदयपुर ने स्वामी ब्रयानस्य के जीवन ने धाया। महा-

राजा स्वयपुर उनकी विद्वला पर मुख्य थे। स्वामी जी भी महीनों-महीनो रह कर वहा उपवेश करते रहे और सत्यार्थप्रकाश तथा वेदभाष्य के लिखने का काम भी उनका वहा पश्चता रहा । महाराखा उदयपूर ने एक बार स्वामी जी से कहा---महाराज यह तो बाप जानत ही हैं यह मेरी गही एकलिंग महादेव की की गही है। मैं भीर मेरा परिवार तो उनकी घरोहर का रख-वाला है। पर मेरी बजाय धाप जैसा विद्वान साध् यदि इस घरोहर को सभाले तो कितना सन्दाहो । धर्म प्रवार मे श्री बह सहायक होगी भीर दूसरे मले कामा में भी इसका सद्भयोग हो सकेगा। पर बहाराज । एक छो ने सी शत इसके साथ यह है - मूर्तिपूत्रा का जो लडन प्राप करते हैं वह अरूर बन्द करना पडेगा। भले ही भागस्वय चाहे पूर्ति न पूर्जे। स्वामी जी उठे और कमडल हाथ मे लेकर उदबपुर से चल दिए। कहने लगे राजन एक दौड मे तेरी रियासत पार कर सकता ह। इसका प्रलोभन देकर मुभे सत्य से डिनाना चाहता है। मैं तो उस राजा की बाज्ञा का पालन करने सद्यार मे बाया है विसको रियासत मे जीवन भर दौडुगा तो भी उसे पार नहीं कर सकता।

लोकेवस्मा भीर वित्तेवणा यह दो प्रसो-भन ऐसे हैं जिनमे साधारण मनुष्य फस कर रह जाता है। पर स्वामी जी की यह दोनों प्रलोभन भी धपने पथ से डिगान सके। तीसरी स्थिति वस प्रयोग की भीर थी। जब उनसे धमृतसर में किसी ने काश्मीर यात्रा मे प्रास्ती के सकट का भय विसाकर रोकना बाहा तब स्वामी जी ने कहा-सत्य का प्रचार करने से यदि मेरे हायो की अगुलिया भी मोमबत्ती की तरह तिल-तिल करके क्लाई बार्येगी भीर उनने श्रसत्य का श्रषेरा दूर होने मे मदद मिलेगी तो मैं अपने प्रवान को सफल समभ्या। तरह बार तो उनके शरीर पर विष का प्रयोग किया नया। कभी पान मे कभी दब में बोर कभी भोजन से खहर मिलाकर दिया गया। कर्णवास मे तो एक जागीरदार ने समबार से ही उन पर वार कर दिया। पर स्वामी जीने तक्तवार रोककर ज्यो हो उसका गट्टा पकडा तो ऊपरका खन ऊपर और नीचे का नीचे बन्द हो गया। तलवार ही उसके हाथ से खटकर गिर पड़ी। इसी तरह हरिद्वार के सर्वे कुम्भ के मेने मे उन दिनो पासड के विरुद्ध प्रावाज चटाना कितना कठिन काम था। वह भी तब अन कि सबी-साथी कोई न हो। पर सत्य पर जमी भ्रात्या ने जनमे न जाने कहा का साहस भर दिया। जो वह प्रकेश ही पासण्ड सण्डिनी पताका हाथ में नेकर वहां डट गये।

सरवायंत्रकाल में स्वामी जी ने कई ऐसी सैंदातिक समाहमों का जी प्रतिपादन किया है जो स्ववहार में प्रांज तक आर्व-समाषियों के मने से नीये भी नहीं उत्तर सकी। इनमें एक नियोध का सिंदात में (शेष पुरूष पुरूष पर ११)

सांख्य ईंश्वरवादी है

--श्री पo सत्यत्रिय जी शास्त्री, एम ए साहित्याचार्य प्राचाय, दयानम्ब बाह्य महाविद्यालय हिसार (हरियाणा)

सास्य १।५६

बास्तिक एव नाम्निक इन दो मागा स विमन्त है। इन भ भार्यावत का दशन भास्तिक कोटि म भारत है। जिन म याय वैदेखिक शास्य याग प्रदात एव मीमासा इनका प्रमुख स्थान है। ये सभी इ वरवादी इन्द्रन है। इनमें स सारय के सम्बन्ध म निरीइवरवादी हान का सर्वाधिक प्रचार जिसके मूल में एक कारण नो यह रहा कि बौद्रकाल के प्रभत्व काल मे उनक विद्वाना ने साक्ष्य परम्परा के पुरातन श्चाचाय वाषगण्य के सम्ब व मे नास्तिक होने का बढचढ कर प्रचार किया जो कि सा"य एवं कपिल के साथ झट्ट सबय के कारण धनायास हो करिल के साथ बुड मया। उसा ब्राधार पर बाद म ग्रनि इद्ध एव विज्ञानभिन्नु जैसे साय के विख्यात भाष्यकारों के द्वारा तदन्रू भ्राप्य लिखे जाने स साय के सिद्धार्तका मजबूत सग बन गया। दूसरा कारण यह है कि सारय का एक सूत्र देवरासिख क सम्बन्ध में कपिल का बयाय मत न जान सन्न के कारण स उत्पन्न हुई भ्राति ची प्रसगयह सम्रारम्भ होता है

यत्सबद्ध सत तवाकारोल्लेकि विज्ञान तत प्रत्यक्षम ।

धर्मात जिसके साथ सम्बाध होता हुआ उसाके प्राकारका उल्लेखन प्रथमा निद्धान करन वाला जा विज्ञान वह प्रस्पक्ष हु। यह प्रत्यक्ष का लक्षण कहा है। इसमे शका यह है। क इसमे ता केवलमात्र बाह्य स्थूल विषयो काहा ग्रहण होन से इस ल-नण स सुइम विषयो का ग्हण न होने से इस लक्षण में भव्याप्ति होगी

त्तव झागे कहा--बोगिनामबाह्यप्रत्यक्षत्वान्न दोष ।

बिरव का सम्पूरा दशन शास्त्र लीनवस्तुलक्षातिशयसम्बन्धाद्वाऽ बोव ।

ग्रयात यागाजना कातो भातरिक प्रत्यक्ष होता है। इसलिए उक्त साग मे यह दोन नहीं है ताना स्रय स्वरूसियां स भी सूर्म वस्तुमो का शान हा जाता ह बत किसा भानग्हसे दाप नही है। यहा पर प्रकृप का नत्त्व समकान के अभिप्राय से आशक की जाता है कि बास्त्री मे कहाकतीपर परमात्मा का जगत का जपादान कारण माना गया है तो पिर प्रकृति को मानन की क्या ग्रावत्यकता रह जाती है। तब कहा है-

सास्य १।५७ धर्वात उपादानकारण रूप परमात्मा की सिद्धि नहीं हो सकती है यहाँ ईश्वर के अगत का उपादान कारण होन का ही की सलासंद कार कर रहहैं क्यों कि ग्रंचकी घन्त साक्षी "सम विद्यमान है। जैसे--

स हि सववित सवकर्ता।

ईंबुझेरबरसिद्धि सिद्धा।

सास्य ३।४६

सास्य ३।४७ ग्रथात वह परमात्मा सवत्र एव समस्त विश्वका रचयिता है भीर इस प्रकार ईन्वरकी सत्तासिद्ध है। इसी स्थान पर कहा है —

सकासत्वेऽपितकोय पारवश्याद । साक्य ३।४४ भ्रमात जगत ईन्वर का काय न हाने

पर भाजगत काई त्वर के साथ नियम्य नियामक बारचना तथा रचयिना का सम्बाब के क्यांकि प्रकृति जह हान स सबद्याही परतत्त्र है ग्राकी इस अन्त सानाम कपिल का ईवर कामानन सभीष्ट है। इसके ग्रनि।रक्त कपिल स्थान स्थान पर अपनाम तब्य का पुनिर मंबर को उद्मृत करता है जिसका ग्रनिप्राय है कि सप्रकार वर्णी मरे मन की पृटि करता है। इस प्रकार करिल न घरन सम्प्रसाग्रचमे श्रुति याश्रुन ⊤∞द को इकतास बार उदध्न किया है। कपिन क्तना बढ़ा भारी वदमक्त है। परन्त्र मनुजी लिखते है कि नास्तिका बटनि दक धर्यात देद का निन्दा करन वाला नास्तिक होता है। कपिल जी नो बेद का प्रशसा मे जुटै हैं फिर वह नास्त्रिक कैंग हो गय। किसो भी दशनकार ने न्तना बार बद सुत्रकार ब्यास्थान कर रे है न कि ई "वर को उदधुत नहीं किया है फिर यह है कि कपिल जीवन का चरम लक्ष्य मान का मानते हैं जो मील की मानता न वह नास्त्रिक कैसे हो सकता है ? न्त्रना ही नहीं बल्कि भ्रपने य का उपसहार मार पर ही करते हैं---

बद्दा तद्वा तदुष्टिञ्चति पुरुवायम्त बुच्छिति पुरवार्व ।

बर्यात जैसे भी हा मोक्ष प्राप्त करना बाहिए श्रव बनाओं ये नास्तिक कसे ठहरे गीता में श्री कृष्ण कहते हैं कि

सारययोगी प्रथण्डाला प्रवदित न मना शिए । प्रधान बचान बुद्धि वाला का कहना है कि साम्य भीर योग ग्रलग ग्रलग है बुद्धिमान पसान ाक्त हते हैं वैमे भी सा य ग्रारचीगाच सर कपूरक हैं तब मवया विरद्ध मत व लो का परम्पर प्रकता वैसी कलाचित हाहा तर सकती है साप्रकार सान्यक र जात का भस्ति व नियव क्मल पूर्वजम चिदि कर करता है ना क्या एसी म यनार नानिक स्व कर किया करने है बगभाकिल जा∼₊म ऋसि कंपूत्र द्यंत्रयं वक्षमानाजाकनामदेवहूति बा जाकि वयस्यत मन् कापूत्रा वी म नाभी चिंपकान न पिनाभा ऋषि न्तदनो संउत्पन हुन्ना पुत्र नास्तिक कैस हो सकना है जिस पिन बा पर स्परात्यामातवश परम्परास वद का ज्ञान मिला ना उसका नातिक होना कदा-चित सम्भव नहीं है। इसी प्रकार कपिल जी यागक ग्रगा का वरान भ्रपन कास्त्र म करत है योगागों का वणन परमा मा की प्राप्ति तथा र्ववर का सक्षात करने क इच्छातथ सिद्धान को प्रकट करती है नास्त्रिकको इसम क्यालनादेना**है ⁹** इन सभा प्रमाणांस कपिल जी के संस्विध म फैलामा गया य भ्रम कि व नास्तिक हैं सवबा हा दूर हो जाना चाहिए तबा हमे कपिल क व स्नविक स्वरूप क दशक करन चाहिए जानि वैन्दि स क्यो 🕏 धनुक्ल तथा सबया ही वशक्त है तथा आ क पत्न काएक पक्काईश्वर वित्वासी सिद्ध करत हैं।

ऋषिवर को याद करके !

—मोहन लाल शर्मा रिश्म '

हात न जो झगर तुम रहते न हम कियर के। न हना है मन मेराय ऋषिवर को याद कर के।।

सद ज्ञान का गरान्सादिखलाता कौन हम को। य बदो के मत्र पावन सिस्तलाता कीन हम का ॥

दुनियाकाप्यार बाटा वातुम न ताजी भर के।

कहता है सन मेरा ये ऋषिवर का बाद करके॥

सारे वे झत्याचारी थे तुम से डर के भागे। सोय येजा भन तक वेसारे केसारे जागे॥

ध्यज्ञ ग्रोम का यहा पर ऊचा हुग्राफहर के। कहताहै मन मेरा ये ऋषिवर कायाद करके।।

सच्चे शिव का खातिर दर दरका साक आहनी। म्रालिर को बात देरी यहासारे बहा ने मानी।।

दयानस्य इतमी भी न रहाजगमेडर के। कहताहू मन मेराये ऋषिवर को साद करके।।

बोगी महा नपस्वी वा वो वाल बह्मचारी। सेवा मे थी गुजारी यहा जिस ने उम्र सारी।।

धायबीर हम हैं बस उसकी ही डगर के। कहता है मन मराय ऋषिवर की बाद करके॥

चुन चुन के काटैजिस ने सुमन यहा विछाये। जिसके गीत रहिम यहा सारे जहा ने गाये।।

श्रमृत देके **जब को** प्याले पीय जहर के। कहुंता है मन मेराये ऋषियर को याद करके।।

भीलैंग्ड गंज दाहोद (गुजरात)

गुरुदेव ! है जीवन मेरा ससार के लिए

स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती—वेद प्रचार ग्रिषिटाता

गुक्देव है जीवन मेरा नसार कलिए। सम्पूल मनुज जाति के उपकार के लए।

> वेदो की ज्योति सब जगत्मे जगाऊमा। पालडकी लकामे आपनि मैं जलाऊमा।।

उद्यत रहगायज्ञ के विस्तार के लिए। गुरुदेव है जीवन मेरा ससार लिए।।

प्रचलित करूना शुद्ध वर्ग प्राथम अवस्था। कर दगानव दूष भद भाव की दुरवस्था।।

कोई नहीं प्रखूत है यद प्यार के लिए। मुक्देव [।] है जीवन गरा समार के लिए ॥

प्रियम तृत्कित को नहीं विद्याचो पढात । कहनक द्वार जिनको जूती पर्गका बताते ॥

तस्पर र_ूगा उनने में उद्घार के निण। गुरुदेव[।] है जीवनमेरा ससार क लिए।।

वस ब्रह्मचय क युरा गाजन्म पालगा िला पूर्नित ग्रापका जीवनमेटालगा॥

सवस्व हैसदयम पर बलिहार के लिए। गुरुदेव [।] है जीवन मरा ससार क लिए।।

यज का वैज्ञानिक स्वरूप

(१) यज्ञकर्म-यज्ञ मानव जीवन का परम ग्रावश्यक कत्तव्य कर्म है। जब तक मनुष्य प्रपने जीवन को यज्ञमय नहीं बना नेता, उसका मानव जीवन सफल नहीं होता। यदुर्वेद के प्रार-भ मे ही पहले मत्र में यह प्रार्थना है कि "इवे खोजें त्वा वायव स्य देवो व सविता प्रापंयतु श्रेव्ठतमाय कर्मले" हे सविता देवता हम सब को धन्न, बल, शक्ति ऊर्जा भीर पराक्रम के लिए श्रोष्ठतम कर्मों मे दीक्षित करो । यही श्रेष्ठ-सम कर्म यज्ञकास्वरूप है। शतपय ब्राह्मण् का ऋषि स्पष्ट घोषसा करता है 'बन्नो वै बोच्ठतमम् कम" १। ७। १। ४ इस प्रकार स्पष्ट विदित है कि मानव जीवन में यज्ञ-कर्मका बढा प्रभाव है भीर प्रयास पूर्वक यज्ञ कर्मों से कभी भी विमुख नहीं होना चाहिए। मनु महाराज लिखते हैं---"पर्ज-तांस्तु महायज्ञान् यचाशक्ति न हापयेत्।" अनु० ४।२१ । गीता में योगिराज भगवान् श्रीकृष्ण की स्पष्ट घोषणा है यज्ञ दानतपः कर्मन त्याज्य कायमेव तत्। यज्ञो दान सपरचंच पावनानि मनीविज्ञाम् ।। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भी धपने चन्य सत्यार्थप्रकाश ग्रीरगृह्यभूत्र ग्रन्थ संस्कारविधि में यज की महिमा गाई है भीर प्रत्येक नर-नारी के लिए यज करने का विद्यान किया है। विना यज्ञ के मनुष्य प्रपूरा है भीर मनुष्य क्या परमात्मा भी विना यज्ञ पूर्ण नही । सुष्टि के प्रारम्भ मे उसने भी महान्यज्ञ किया एव सृष्टि-निर्माण किया। 'सह बज्ञा प्रजा सुष्ट्वापुरोबाच प्रजापति ।'गीता । इस प्रकार यज एक महान् कर्तव्य है स्रोर इस 🖘 प्रकाश जनसामारए। के मध्य होना स्रावस्यक है।

- (२) यस का सर्च यत सब्द धव चातु से बनता है जिसका प्रव है, देवपूजा के कमों की समित बर्तमान चुन के परि-प्रेक्च मे लगानी पड़गी भीर देवताओं के नाम पर नाना प्रकार की ऊटपटौन पूजन प्रशानियों को ठीक रूप मे लाना पड़मा। स्माठिकरण भीर दान का प्रव हर एक व्यक्ति को सम्भाना पड़ेगा। यह केवल मात हदनकुष्ट में थोडी सिमया प्रज्ञा-नित करके थोडा युत भीर सामयी मात्र सास बेने का नाम नहीं है। इसकी जित्त विवेचना की सावस्थकता है।
- (व) वर्तमान मुन विज्ञान का युग है। वैज्ञानिक परिप्रेट्य मे प्रत्येक बात का स्थ्यटीकरएए बातवसक है। पाज का मानव किसी भी बात को कहने मात्र में मानवे के निए चयत नहीं है परनु वह प्रत्येक बात को वैज्ञानिक दृष्टिकोण में परल्या बाहता है। कोई भी कार्य करने से पहले या किसी भी तान्यिक विश्लेषएए के विद्यान का प्रतात करवी गहराई में तक्ष्यूर्वक पहले का प्रतात करता है। प्रत्यं यक कर्म को भी वैज्ञानिक दृष्टिकोण से पूर्णक्ष्येण

लेखक शिवाकान्त उपाध्याय समम्भना पढेगा, क्यों कि वैदिक वाङ्गब मे यज्ञों का बढ़ा महत्त्व कहा गया है। जैसा ऊपर कहा जा चुका है। शतपय बाह्माल की स्पष्ट घोषणा है —'यज्ञो वै मेक्टतम कर्म । इस घोषणा को वैज्ञानिक द्ष्टिकोण से सिद्ध करना पहेगा। इसना ही नहीं शतपव बाह्यण तो एक कदम भीर ग्रागे बढ़कर उद्घोष कर रहा है कि सम्पूर्ण प्रत्यक्ष यज्ञ प्रजापति का ही स्वरूप है---एव वै प्रत्यक्ष बज्जो यत् प्रकापति । जिस प्रकार सूर्य इस विस्तृत यज्ञ का केन्द्र है। उसी प्रकार यजकुण्ड इस मुवन का केन्द्र है-इय वश्व मुबनस्य नामि । इस प्रकार यदि सम्प्रलं विश्व ब्रह्माण्ड की रचना पर गौरपूर्वं क विचार किया जाय तो इस को यशका प्रतीक कहा जा सकता है।

(४) धब धाइए समष्टि से व्यष्टि में

इस यज्ञ के स्वरूप को देखने का प्रयास

करें। जैसे ससार के ग्रन्दर नाना प्रकार के सुजन भीर विनाश में सूर्य का प्रमुख स्थान है, जैमे मानव शरीर के निर्माश भौर विनाश में भ्रम्ति रूप प्राणु की ही प्रधानताहै, उसी प्रकार यज को भी सुसम्पन्न करने के लिए धरिन की ही प्रधानता है। यह प्रन्नि ही यज का देवता है, पुरोहित है, ऋत्विज, होता और रत्न, धाता है। ऋग्वेद के प्रनुसार "ग्रग्निमीके पुरोहितम् यजस्य देवमृत्त्विजम् होतारम् रत्नवातमम्।" इस प्रकार एक एक बात स्पष्ट उभरकर सामने मा जाती है कि सम्पूर्ण विश्व (विराट् शरीर) के साथ सूर्यं, प्राणी नात्र के शरीर के साथ प्राण भीर यत्र के साथ भ्रग्नि का एक ही प्रकार का सम्बन्ध है। जैसे सूर्य धपने लाप, प्रकाश से तथा धपनी किरलों के माध्यम से मेजी हुई कर्जा के द्वारा ससार में फल-फुल, भ्रन्त, वनस्पतियाँ, भौषिष भ्रादि का निर्माण करता है, सम्पूर्ण पृथिवी को रतन-गर्भा बनाता है, जैसे स्वस्य प्राण अपने विभिन्न रूपों ने शरीर के मन्दर प्रवेश करके वर्मी पैदा करता है, सजीवनी शक्ति का निर्माण करता है और शरीर के पोषण के लिए भावश्यक पदार्थों के निर्माण में सहयोग करता है, ठीक उसी प्रकार यज्ञकुण्ड मे प्रज्वलित प्रन्ति भी यज्ञीय पदार्थों को घारमसात् करके उन्हें उनके सुक्ष्मातिसूक्ष्म कर्णों ये विश्वक्त करके उनके धन्दर खिपी कस्याणी शक्ति को हजारी गुणा विकसित करके प्राीमात्र के कल्याण के लिए सुल म भीर उपयुक्त बनाता है। जो कुछ हमारे पूर्वज ऋषि विद्वान यज के माध्यम से जन-कल्याज काकर्मकरतेथे। वहीसव कुछ ग्राज वैज्ञानिक धपनी प्रयोगशाला में पदार्थी का उचित सगतिकरण करके ग्राप्नेय तत्त्वीं के माध्यम से कर रहे हैं। विभिन्न प्रकार की भौषषियों का निर्माण भी उसी पढ़ित पर ही हो रहा है। भाज का वैज्ञानिक इस बात पर विश्वास रसता है कि किसी

रोग के निवान में Tablets से ज्यादा बामकारी Liquids है जीर Liquids से ज्यादा Gaseous form में दी हुई दवा-इयां हैं। सीध्र प्रभावी बनाने के लिए Tablets की खगह पर Injections भीर Injection की जनह ने Gaseous form में दबाओं का परीक्षण सर्वमान्य हो चुका है। जिन जडी-बृटियों प्रयवा मौतिक पदावाँ को विभिन्न प्रकार के रासायनिक प्रयोगों द्वारा Tablets, liquids या Gaseous form में भाग का Chemist दबाधों का रूप दे देता 🖔 उन्हीं तमाम बड़ी-बूटियों और भौतिक पदार्थों को हमारे पूर्वज विद्वान् यज्ञकुण्ड की प्रज्य-भित प्रानि में डासकर सम्पू विश्व के निवान के लिए मुफ्त में दिया करते वे। कुछ सत्रोच नासमक शपनी कृठी विद्या का दिखावा करके यह कहने का दूरसाहस करते हैं कि यह में डाला पदार्थ तो जल-कर रास हो बाता है धीर महनाई के यून में यह सब करना व्यर्थ है उनसे नम्र निबे-दन है कि प्रथम तो वे बज की प्रक्रिया को समर्के भीर फिर विज्ञान के सिद्धान्त को समभने का प्रयास करें। विज्ञान के बाबार T Matter can nither to created to distroyed (Industructivities of matter) पदार्व न तो बनावा जाता है और न विशवा जासकता है केवल धाग्नेय तत्त्वों के प्रभाव से रासायनिक परिवर्तन करके उनकी दशाओं में परि-वर्तन कियाचा सकता है। विना गर्मी सिये या दिये कोई रासायनिक क्रिया सम्भव ही नही है। इसी को विज्ञान की भाषा में Indothermic reactions भीर Exo thermic reaction की सभा दी जाती है। इस प्रकार धरिनहोत्र के माध्यम से पदार्थों का उचित समतिकरण करके विभिन्न प्रकार के राखायनिक परिवर्तन के द्वारा सोगों के हित के लिए उन्हें सुलभ करना ही यज्ञ का प्रयोजन है। chemist दवाओं का मूल्य लेकर नोवों का हित करता है परन्तु मजमान वज्ञ के द्वारा विना मूल्य लिये ही सव-साधारण का हित करना भ्रपना कर्लम्य कर्मसम्मता

इस प्रसग में एक बात और निवेदन करना चाहता हू। धाज के बुध में वायु, जस, मन्न मादि हर एक पदार्थ में प्रदूषण की विभीविका का प्रकोप है। सारे संसार के सामने इन प्रदूषणों को मिटाने के लिए एक समस्या उत्पन्न हो गई है। मेरा विश्वास है भीर नम्न निवेदन भी है कि यदि घर-घर यज्ञ का करना कराना प्रारंग हो बाय तो यह सब कुछ सुबर सकता है धौर विश्व सुल की सांस ने सकता है। शिकारो में एक विश्व विद्यालय की स्था-पनाहुई है, जिस का नाम ही है Agnihotra univarsity है । इस विश्वविद्या-लय में नाना प्रकार के प्रयोग किए जा रहे हैं भीर उन्हें यज्ञ की प्रक्रिया पर विभिन्न चफलताएं भी जिल रही हैं। इस दिशा में वहां के वैज्ञानिकों का प्रवास और परी-

क्षसा स्तुत्य हैं।

(१) अब बोड़ा-सा यस में प्रयुक्त सन्ति के स्वरूप की भी वर्षा करता उपित समस्ता हैं। भनि तीन प्रकार की होती है। (१) प्रवमान (२) पावक (३) सुचि।

व्यनी पर की प्रतिन को प्रवणन कहुते हैं। इसी को निर्माग्य प्रतिन भी कहुने हैं। पावक धारिक को धानिन है तथा प्रविच ब्यूनोक की धानि है। यहां तक इनके स्वक्रप का वर्णन मिलता है, प्रवान पार्थिक धानि का स्वक्रप है जो वन (Sold) हैं। ध्यन्तरिक की धानि 'पावक' करत्व (Luqui) है धौर कुलोक की धानि विरक्त (Gascous form) में है। वही Solid Liquid Gas प्रवार्थ के धीन ही स्वक्रप है, जिनके परिपर्दान में धानि ही साधक है। धाज का विकाल बाहे जितना भी समर्च हो नया हो पर च्यूनियों की बोच धीर उनके जान के धानने धारी जी वह विकाल धारा है।

श्रुवियों ने प्रपने तर से जान के उपा-जैन और अनु के सान्तिष्य से प्राप्त शक्ति के द्वारा इन तमाम प्रिनियों को बहुएस्ट से पिण्ड में और सामिट के स्थाप्ट से पिण्ड में और सामिट से स्थाप्ट ने सानिक दम से इस प्रकार को प्राप्त को सजकुण्ड के प्रन्य प्रज्यस्तित करने का विचान किया है। प्राप्त्ये इस यज्ञ की प्राप्त करें—

जड जगत् में श्वापक यज्ञ का केन्द्र सुर्य है---

स्य विष्णुर्वज्ञसः। स्यास्य यज्ञोऽसीस्यविष्यः।

या० १४ । १ । १ । १ इसी ज्यापक सक्त का चित्र हमारे प्राचीन ऋषियों और विहानी ने अपने तप और जिलता से इस पृथिशी पर चित्रित करने कामल किया। और सक्त वेदी ती रचना कर उत्त के मध्य में सक्त कुण्ड बनाउस में मिन की स्थापना करने की स्थापना करने

यह सर्वविदित बात है कि घरणि
प्रत्यन से यह की घरिल 'देश होती है।
पुराने समय में से कलकियों के प्रतेश है।
प्राने प्रत्यन कर के प्रजुल्य के लिए
प्रतेग करने की व्यवस्था थी। धावकल
भी कहीं कहीं लोग इस प्रकार धरिल देश कर के यह करने का विधान करते हैं के यह धरणियन्त्रन किस बात का रहस्थ स्वरूप करने का विधान करते हैं के यह धरणियन्त्रन किस बात का रहस्थ स्वरूप करने का की विधान करते हैं के यह धरणियन्त्रन किस बात का रहस्थ स्वरूप करने का की विधान करते हैं के वह धरणियन्त्रन किस बात का रहस्थ स्वरूप करने के स्वरूप की विधानक प्रवास

चु लोक, पृथियों लोक और अन्तरिक्ष लोक ये तीन लोक हैं। चुलोक दसवें उत्पर अन्तरिक्ष अध्यों और पृषिक्षी तल वें तीवें या तील में। अब दश चुलोक के पृष्मी लोक का त्यन्त्य अस्ति के साध्यक्ष से स्वापित करने के लिए यह की व्य-स्त्या की गई। बाला तचा पृष्मिती कें अपना में अस्ति पैदा होती है। विज्ञान की आपा में सहीं Positive और Negative Charges है जिन से विख्त पैदा होती है। वैदिक बाङ्गय में स्थान-स्थान पर विभिन्न रूपों में इसी बात की कहा गया है। उदाहरणार्थ जीवन की सम्भावना के लिए प्रश्नि तथा सोम, ऊच्मा तथा शीत, बित्र तथा बरुए, बुसीक तथा पृथियी का पारस्परिक सम्बन्ध बढा झावश्यक है। यजुर्वेद के एक मन्त्रांश को देखिए-'विद्याते भग्ने जेला जवाणि' पृष्टिबी और श्वलोक को मिलाने में धन्तरिख की धरिन का बड़ा ही महत्त्वपूर्ण योगदान है। जो कि एक माध्यम का काम करती है। हम सोबों ने विज्ञान में ऊष्मा के विकीरता का विदान्तों में Conduction, Convection और Rediation के बारे में पढ़ा है। क्या यहा वेद में बुलोक की स्रस्ति पुषियी पर पहुँचाने के जिए Rediotria की पुष्टि नहीं होती। पात्र के नैज्ञानिकों स्त्रीर सुबी पाठकों के सिए वह एक विचार-श्रीय भीर भनुसन्धान का विषय है।

इसी प्रस्तिको ऋषियो ने घरित्र मन्यन के द्वारा यज्ञ कुण्ड में स्वापित करने का विभान किया है।

४ इस सन्दर्भ ने यज्ञवेदी और यज्ञकुण्ड के वैज्ञानिक स्वरूप का भी विक्लेषण ध्रपेक्षित है। पृथियी के ऊपर जहां यज की बेदी बनती है उसी को यज्ञ का केन्द्र स्थान भी माना जाता है। यह यह वेदी शारे विश्व की नामि है। इस यज वेदी को वामन विष्युकारूप कहा है। यक्को वैविक्तः। यहां एक पौराणिक उपा-स्थान की चर्चा कर देना उचित सममता है। लीव कहते हैं कि विष्णु ने वामन ैं इत्पर्ने बलिको खलाथा और तीनों श्लोकों को तीन पन में नाप लिया था। इस का रहस्य ऋग्वेद के निम्न मन्त्र से स्पष्ट हो जाता है-इद विष्णुविषकमे त्रेवा निदचे पदम् । ₹ • १ । २२

यह इस यज्ञवेदी का भीर यज्ञ का प्रभाव है कि देवता तो क्या सावारण मनुष्य मी तीनों लोको का राजावन शकता है भीर प्रनिहोत्र प्रादि कर्म के द्वारा तीनों सोकों में अपने यश को फैला सिकता है। यही यज्ञ कर्म जामन विष्णु 🛊 रूप में तीन पर्मों मेस व कुछ नाप श्रीता है।

यज्ञवेदीकी रचवाको जिलनी मी सवर्कता भीर नम्मीरता से देखा जाए उतनाही सुस्पष्ट धीर सुद्ध विचार बनता जायेबा कि व्यापक सुब्दि की प्रत्येक गतिविधि को ऋषियों ने यज के माध्यम से बडी कृशसतापूर्वक चित्रित किया है। यज्ञ की व्यवस्था के माध्यम से सम्पूर्ण सृष्टि के नियमों का वैज्ञानिक रहस्य मीर ज्ञान प्राप्त कियाजा सकता है।

यज्ञकृष्ट का निर्माण भी कितना वैज्ञानिक भीर ज्यामितिशास्त्र (Geometrical Science) से परिपूर्ण है, इस का उल्लेख भी विचारणीय है। यज्ञकुण्ड में धन्तिचयन के लिए ३६० ईंटों का विचान है। मानव शरीर में भी ३६० बस्थिया होती हैं। भौर सबस्तर में दिनों की सस्या भी ३६० ही होती है। इस विचार की पुष्टि शतपब बाह्यण में उपलब्ध है। एक पाइवात्य वैशानिक डाक्टर R. Hoernle ने भी भपनी पुस्तक Medicion of Ancient India Part I Ostreology में इस बात नी चर्चा की की है और इस सिद्धान्त की पुष्टि की है। क्या बाज के वैज्ञानिकों के लिए यह सोज का विषय नहीं हैं कि ३६० ईंटों, ३६० ग्रस्थियों और ३६० दिनो का मानव जीवन ग्रीर सृष्टि है वातावरण के साथ क्या सम्बन्ध हो सकता है ?

इस बजवेदी का उतना महत्त्व है कि यज् ३।५ में इसे देवयवनि पष्ठ कहा है। "देवयजनि पृष्ठे प्रनिमन्नाद-मन्नाचायादघे।" इस पर बैठने वाला देवत्व को प्राप्त कर नेता है। वो इस वज चक्र को समक्त लेता है, वह सारे ब्रह्माण्ड चक्रको समझ लेता है। यज्ञकुण्डके चारों तरफ मेसला, यशवेदी को अच्छी प्रकार से सवाना भी एक नहत्त्व का विषय है भीर मावश्यक कर्तव्य है। केलों के सम्मे बन्दनवार, पत्तों के गूल्म भीर फुलों के गुल्हे से सारी वेदी सजी रहनी चाहिए। मेसलाएँ जल से भरी रहती चाहिए। इन तमाम प्रयोगों का बहुत बढा वैज्ञानिक रहस्य है। यह केवल दिलाने के लिए या वेदी को बाकर्षक बनाने के लिए ही नहीं है, बल्कि इन के द्वारा Cog (कार्वन- डाइ बाक्साइड) या इसी प्रकार की श्रीर धनावरएक विवेशी गैक्षो का जो यज्ञ कृष्ट से निकलती हैं, प्रह्नण कर ली बाती हैं घोर यज्ञ का प्रमाव पूर्णंत लाभदायक

बजकण्डके निर्माण में एक और बात भी विचारसीय है। महर्षि दवानन्द सरस्वती ने कुण्ड बनाने का विस्तृत वर्णन धपने गृह्यसूत्र प्रत्य संस्कारविधि में बडे विस्तार से किया है। हवन कुण्ड के नीचे की तका ऊपर की चौडाई तथा कुण्ड की जचाई का धनुपात वैज्ञानिक दब्टिकोण से गवेत्रमा का विषय है। विभिन्न प्रकार के दन के कुण्ड बनाने की प्रया के पीछे शी ज्यामिति की विभिन्न रचना का विशान खिपा है।

६ बजकुण्ड के धन्दर किस प्रकार भन्यात्राम करना चाहिए, इस का भी वैज्ञानिक-स्वरूप वडा रोचक है। ऋग्वेद में एक नन्त्र बाता है-समिक्को अग्नि-निहीत पृथिक्याम् । प्रजापति ने शन्ति की पृथ्वी के केन्द्र में रलकर प्रज्वलित किया। इस मन्त्रास ने समिद्ध शब्द इस बात का प्रतीक है कि प्रजापति के द्वारा जिस मन्तिका प्राचान पृथ्वीके गर्भने हुमा वह मन्ति प्रज्वलित नहीं बी। वह प्रज्वलित प्रन्ति के पूर्व का रूप था जिसे हम बाग्नेय परमाणु कह सकते हैं। यही ब्राग्नेय परवासु पृथ्वी के ब्रम्बर प्रविष्ट हुमा भीर फिर पार्विव परमास्त्रों में हरकत के कारण उन के धन्दर Electric Charges की सृष्टि हुई भीर फिर सुक्स रूप में पडेब्राग्नेय परमासु वर्षस के द्वारा क्रियाशील हो उठे तथः सन्ति का प्रज्य-लित रूप प्रकट हो उठा। इस प्रकार की कियाने पृथ्वी के बन्धर क्रिपे पदार्थी को नाना प्रकार के रूपों मे परिवर्तित कर दिया और धरार ऊर्जाशक्ति का निर्माण हुमा जिस ने पदायों के मन्दर निहित शक्तिको कई गुणा विकसित करके नाना प्रकारकी वस्तुओं का निर्माण किया और पृथ्वी रस्नगर्भा बन गयी। देखते देखते सारी घरती भौषणि फल-फूल वनस्पत्ति, बन्न बादि से लहलहा उठी यह सब कुछ पृथ्वा के केन्द्र में प्रजापति द्वारा स्वापित धन्नि का प्रकट और ब्यापक रूप बन गया। इसी कारता पृथ्वी को धानि की पत्नी कहा है। पृथिक्यग्ने धस्ती। गो० उ० २। १। बिवाह सस्कार में पति इसी बात को स्मरण करके प्रतिज्ञा करता है कि "बौरहव पृथिकी त्वव ।" पति अनिकारूप है और पृक्ति जेका रूप है पत्नी। उपरोक्त कवन की पुष्टि में यजुर्वेद का यह मन्त्रांश प्रस्तूत है---"माता पुत्रं बयोपल्ये सार्गित विनर्तुगर्भे द्या''। यजु०११। ५७। जिस प्रकार माता अपने पतिका प्रतिरूप अपने नर्ममें भारण करती है उसी प्रकार पुरुवी सनिव को अपने केन्द्र में बारला करती है। उसी प्रकार पृथ्वी धन्ति को धपने केन्द्र में

भारण करती है।

बस इसी किया का एक छोटा सा चित्र हमारे ऋषियों ने यज्ञ कृण्ड में ग्रांम का भाषान करके दिखाया भीर फिर कक्ष प्राप्त करने के लिए उसे प्रज्व-लिल करने का बादेश किया। महर्षि स्वामी दयानम्द सरस्वती ने इन दोनो कियाओं को सम्पन्न करने के लिए दो मन्त्रों का विद्यान किया है। मनुष्यों को जीवन में उन्नति भीर भपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए यजों का अनुष्ठान करना पहता है चौर भ्रग्नि प्रज्वलित करनी पहती है। अपने पुरुषाथ और तप से इस प्रज्वतित अग्निको शनै शनै सूर्यं के समान तेजस्वी थी र प्रकाशमान करना पहता है। शतपथ बाद्मण में एक बादेश है-बिनवें बन्न-स्यावराध्यों विष्णु पराध्यं । ५।२३६ बदि यज्ञ की धारिन प्रज्वलित नहीं होगी तो उस यज में डाली हुई ब्राहृतिया व्यर्थ हो जार्येगी। प्रज्वलित प्रस्ति पर पत्नी बाहुतियाँ हुव्य बन ज'ती हैं और सार्वक होती है तया वही देवताओं को प्राप्त होती हैं। सहदेवेषु गच्छति 😁 ऋषिबों ने कितनी बुद्धिमत्ता पूर्वक यज के रहस्य को स्पष्ट किया है। स्वय यवमान पर-मात्मः द्वारा रचे हुए इस ब्रह्माण्ड में विस्तृत विशाल यज्ञ की करने का सङ्खल्य करता है और अपने जीवन में सकल्पानित को प्रज्वलित करके जीवन बजमय बना डासवा है।

७ ब्रह्माण्डकायज्ञसूर्यकेताप के सहारे वल रहा है तथा परमात्मा उस का सनालक है। घरती का यज्ञ, यज्ञकुण्ड मे प्रज्वलित प्राप्ति के सहारे चल रहा है भीर यजनान उस का सचालक है। इसी प्रकार शरीर के मन्दर का यज्ञ प्राणों के द्वारा चल रहा है। और भारमा इस कासचालन चररहाहै। इस प्रसन में मैत्रावणी उपनिषद्की एक स्पष्ट घोषणा है ---

षयोगांशुरन्तर्याममभि भवन्नन्तर्याम उपाञ्च च । एतयो रन्त रादेवीष्ण्य प्रासुबत् । बदीव्यस पुरुष । श्रथय पुरुष स्रो धनिर्वेदवानर । भैत्रायणी उ०२। ६

श्रवीत प्राण भीर श्रपान सा उपाशु भीर भन्तर्याम के पारस्परिक वर्षण से उच्यता उत्पन्न होती है। वही पुरुष भीर प्राणियों मे वैश्वानर भग्नि है। यही धनि यदि ६८ ८°F से बढकर १०७° F के ऊपर पहुँच जाती है तो भववा घटकर १७°F के नीचे पहुँच जाती है तो जीवन समाप्त हो जाता है। प्राणी के अन्दर प्राणात्मक स्पन्दन सदा के खिए बन्द हो जाता है। जैसे ताप की कमी से वज्ञ समाप्त हो जाता है प्रविकता के कारण शरीर का यज्ञ समाप्त हो जाता है। उसी प्रकार यज्ञ के घन्दर प्रज्वलिय श्रानिका भी प्रभाव है। किस मात्रा में कितनी उच्चता की धावश्यकता है यह विचारणीय है। किस प्रकार की समिधा

शेष धवले धक में

प्रसिद्ध फिल्मी गायक महेन्द्र कपर द्वारा महर्षि दयानन्द की अमर कहानी

सन्ध्या - यज्ञ, शान्तिप्रकरण, स्वस्तिवाचन आदि प्रसिद्ध भजनोपदेशकों-

सत्यपाल पथिक, ओमप्रकाश वर्मा, पन्नालाल पीयुष, सोहनलाल पियक, शिवराजवती जी के सर्वोत्तम भजनो के कैसेट्स तथा प बद्धदेव विद्यासकार के भजनो का सग्रह ।

आर्य समाज के अन्य भी "रुत सं कैमेट्स के सूचीपत्र के लिए लिखे कन्स्टोकॉम इलैक्ट्रोनिक्स (इण्डिया) प्रा लि

14, माकिट-11, फेस-11, अशोक विहार, देहली-52 फोन 7118326, 744170 टैलक्स 31-4623 AKC IN ईशोपनिषत् का अध्ययन-

कर्म-महिमा

जगदोश ग्रार्थ, सि० रत्न

सासाराम, बिहार कुवंन्नेबेह कर्मीिंग विजीविषेण्यतः एसमा । एवं त्विम नान्ययेतोऽस्ति न कर्मसिम्यते नरे॥

ा ना (इह) इस समार में (क्यांनिण) कमा वा (कुबन एक) करते हुग म (अत ममा) भी वर्षों तक जिब्बी-विकेषे जो के हेच्छा करो । (एक) यही एक माग में (ब्बाबि नेशे) जुम मतुत्व में (ज विषयने कम) कर्षों निप्तन नहीं। (ज विषयने कम) कर्षों निप्तन नहीं।

मार्ग (न ग्रन्सि) नहीं है।
ग्राम्या न्या करना मनुष्यों का
स्वभाव है। दिना नम किए मनुष्य एक
करए भी नहीं रह नकनी। बीता में
ग्राम्य रून नहि कि देसलापि जातु।
स्वभाव है। जाति में
ग्राम्य रून नहि कि देसलापि जातु।
स्वभाव सर्मे
सर्व प्रकृति वीगी।।' (अ०३।४)

भ्रात कोई पुरुष किसी भ्रवस्था में भी बिना स्मिक्त लगा भर भी नही रह सकता। क्योंकि सम्पूर्ण जन प्रकृति जन्म स्नामाविक रागादि गुर्गो से पराज हो, कमें में प्रवृत्त होने हैं। (गीता)

वैद माता भावण देती है कि नुम कर्मकरने हए ही जीन की इच्छाकरो। यहा जिजीवियन् पद विधि लिड्से भाषाह।

जीने की इच्छातो सभी करते हैं। मरना कोई नही चन्हना, मरणासन्न व्यक्तिभी जीनाचहना है। किसी कवि ने कहा है - 'ग्राह्म गलिन पलित मुख्ड दशनविहीन जात नुण्डम् । बृद्धो याति गृहीत्वा दग्र न दपि न मुञ्च-याशापिण्डम् ॥ ' भगगल गर्रे सिरहिल रहा है, दात गिर गए है, लाठी के बिना चला नही भारहाहै, फिर भी जीने की बाशानही छुटती। जब जीने की इच्छा है, नो भाल सी बनकर क्यो जीया जाय । परन्त्र भालसीभीतो कुछ न कुछ, करता ी ह। जैसे खाना-पीता, बलना-किरना ग्रादि। परन्तु यहा कर्म करन काजा आदेश हे, वह ऐसे कर्मों से है, जिस का सस्कार सूक्ष्म और करण शरीर पर पडता है भीर वे ही सम्कार धगले जन्म को प्रभावित करते हैं।

जब कर्म करना जीव का स्वभाव है तो प्रश्न उठता है कि कैसा कर्म किया जाए। बन्धन का कारता कर्म है। इधर माश्रुति कहती है कि तुम कर्म करो, इस से तुम मे कर्मलि[्]। न होगे। यह कैसे [?] इस के लिए कर्म की फिलासफी समक्ती होगी। कर्मों की तीन श्रेशिया हैं-'कर्त्तम्-ग्रकर्तम् ग्रीर ग्रन्यथा कर्त्तम्। कर्मकरना कर्मन करना भीर उल्टा रूरना। इस मे कर्मन करना भीर कर्म का उल्टा करनाही बन्धन का कारए। है। भार्ष ग्रन्थों में जहां भी 'कम' करने कानिर्देश ग्राया है। वह वेद विहित कर्म से ही भ्राशय रखता है। सत्यायं प्रकाश मे स्वामी दयानन्द जी धपने स्व रिचत इस्रोक मे 'कर्म' का सर्थ वेद विहित कर्म ही करते हैं।

य बुं ० घर् ४०, पर २ । ईवी ० घन २ ।
कर्म करन वाले का विद्यान लीग त्यार करने हैं। वेद म आया है— 'इच्छित वेदा सुन्त-त न स्वप्नाय स्पृट्-यन्ति।' (वेदा) विद्यान लीग (सुन्वन्तव) कम करन वान पुरुष की (इच्छिति) वाहन ह (स्वप्नाय) धालती प्रमादी की (न स्प्रद्रपति) प्रेम नहीं करते।

मन्त्र का प्रनितम पद है स्वधि नरे न सिप्पते कमं कमं तुम में सिप्प न होगे, भ्रमात् बन्धन के कारणः नहीं होगे। यह कैस। अन्यत साधा है 'सोकोऽस कम-बन्धन' नोक से कम बन्धन के कारणः हैं।

इस मन्त्र के पूर्व जो मन्त्र झाया है, उस में दो पद महत्त्व के हैं — तेन त्यक्तेन भुज्जीमा बौर दूसरायद है 'सागूम'। इन का क्रमण झर्व है त्याग पूर्वक भोगो को भोगना अर्थात् कर्म करना, श्रीर दूसरे पद का अर्थ हे ब्राप्तिक लालचन रक्ती। इन दा पदो की संगति इस मन्त्र से लगावे। मन्त्र में, कैसा कम किया जाय, इस का रहन्य खोल दिया है। यजीय कर्मकरना अधात् स्वार्थरहित कम। एक उदाहरण से इसे स्पष्ट करताह। एक मनुष्य किसी बन्य मनुष्य का, अपनी स्वार्थ-सिद्धि मे बाधक समभ कर हत्या करता है, ना वह निन्दा का पात्र होता है, उस दण्डभा मिलता है। वही मनुष्य जब राष्ट्र या समाज का हित ध्यान म रख नर-सहार करता है, तो वह यश का नात्र होता है भौर उसे पुरस्कार मिलता है। ऐसाक्यो हुमा? इसलिए कि पहले कर्म में बज की भावना, ग्रर्थात् निस्वार्थ भावना नहीं है, जब कि दूसरे कम मे यज्ञीय भावना, निस्वाय भावना प्रवल है, यही त्यक्तेन भूडवाया 'है।

कर्तव्य समक्त कर भी वो कर्म न किये जाए, प्रकत्तच्य कम किए जाए तो बन्धन के कारण, बनते है धौर जन्म-भरण के चक्कर में फखाते हैं। ईशो० का तीखरा मन्त्र कहता हे —

असुर्या नाम ते सोकाऽग्रन्थेन तससाऽबृताः । तास्ते प्रेत्यापि गच्छन्ति ये के बात्महनो जना ।

इस मनन में आया हुआ 'श्रास्त्रह्न ' पद महत्त्वपृण है। झारमहृत महत्त्वस्य है जो मजीव भाव सेन किया जाए, अर्थात् जो धासांत्त पूर्ण, स्वायमय एव लोग की भावना से परिपूर्ण हो। ऐसा ही कर्म बम्बन ना कारण है धौर सिस के चलते औव धावायमन के वक्कर में पड़ा रहता है।

'बन्यन' शब्द का सामान्य ग्रम् बायना या फासना है। परस्तु दर्शन शास्त्र मे एक नित्र ग्रम् रहता है। न्याय दर्शन मे एक नित्र है—'बायना-सक्षण दुखर्' धर्यात् बन्यन ही दुख का सक्षण है, पहचान है।

गीतामे, बजु० ४०। २ के मन्त्र पर धाधारित एक स्वोक है -- 'कर्मच्येवा-थिकारस्ते वा फलेषु कवाचन ।' तुम्हारा प्रविकार कर्म करने मे है, पल मे श्रषिकार नही है। इस स्लोक को समभने मे एक बडी भ्रान्ति फैली हुई है। ग्रर्थात् फलोकी धाकाक्षान रखते हुए कर्म करते रहो। ऐसी विचारधारा घस्वा-भाविक सी लगती है। किसान गेह बोता है तो इसी फल स इसी विस्वास एव प्राकाक्षा से कि पसल ग्रन्छी मिलगी। ग्रगर उसे यह विद्वास हो जाए कि मैं जो गेह बोने का कर्म कर रहा है वह निष्फल जायगातो वह कर्म करेगाही नही। कम न करने वाला व्यक्ति सालशी एक प्रभादी है। महाभारतकार (गीता का यह श्लोक सूल पे महाभारत के भीष्म पव मे है) की यह मशा नहीं है कि कर्मकरने के पूर्वही फल की कामना कर नी जाए। महाभारतकार यह कहना चाहता है कि तुम्हारे चिन्तन का क्षेत्र 'फन' नही है। प्रश्न चिन्तन का है। अब यह निश्चय हो गया कि हमारा यह कर्म कर्लव्य के क्षेत्र मे भाता है तो उसे निष्ठापूर्वक कुशनसा से कमें करना है। फल तो उसे मिलेगा ही। केवल फल का चिन्तन कत्तव्य कम करने में बना रहेगातो कर्त्तव्यका पालन ठीक से न होगा।तथा भ्रपेक्षित फल न मिलातो दुल भी होगा। क्यों कि यह कोई अनि-वायता नही है, ग्रापका फल मे ग्रीधकार तो है नहीं। एक उदाहरण से स्पष्ट करताहा जो धपने पुत्र को अपना कत्तव्य समभ्रकर उस कालालन-पासन-शिक्षा-दीक्षाका प्रबन्ध करते हैं, इस भावना, इस धाकाक्षा से नही करते कि मेरे बद्ध होने पर या अशक्त होने पर यह पुत्र मेरी सेवा-घुश्रूषा, देस माल करेगा। यहावह किसी प्रकार के फल की आणानहीरसता। अव अगर पृत्र अपने कत्तंब्य का पालन नहीं करता है, तो भी पिताको दुवा नहीं होगा। क्यों कि प्रारम्भ में उस ने किसी पन की प्रपेक्षा नही रखी बी। भौर भगर कही पुत्र ने अपनेकतंत्र्य का पालन किया तो पिता को ग्रचिक प्रसन्तता होगी। क्योंकि यह एक सामान्य नियम है कि कोई भन्नत्याशित रूप से धनपक्षित सुखद फल मिलता है तो धत्यधिक प्रसन्नता होती है। इस उदाहरसा से यह साफ हो गया कि फल का चिन्तन धगर कम पर हावी रहे, तो वह दू स भौर बन्धन का कारण होता है। जिस पर बाना प्रविकार नही, उस की चिन्ता करना सार्योक्ति मार्ग नही है।

अब कम के दूधरे पहलू पर विश्वार करे, कम ही बन्धन का कारपड़ है न कमें से ही बन्धन का कारपड़ है वह कमें से ही बन्धन का कारपड़ है वह क्षेत्र ' जो कमें बन्धन का कारपड़ है वह बन्धन से प्रस्ति कैरी दिवायेगा। अगावार है, बन्बन में बक्ड जाता है। दूधरी तरफ उच्छी रोत का उपचार करने से रोत खुट जीता है। एक और कटान्स से छूट जाता है। एक और कटान्स से, एक मुख्य किसी के साथ बार सी के करता है। नायाजीश तक अपराम के कारपा उसे कारपाइ से जान बेता है। अस वार चरा सी बीक कमें है, और बेस से जाना उस काफल है, धर्मात् बन्धन है। चार सौबीस करने मे वह स्वतन्त्र या परन्तु कारागृह मे जाना उस के ग्राधिका की बाल नहीं थी। धब धगर वह जेल वें इशासन में रहता है, जेल के नियम असी कैदी के लिए बने हैं, उन का सच्चाई से पालन करता है तो वह नियत श्रविध से पूर्व ही छूट भी जाता है। क्यों कि जेल का नियम है कि जो कैदी धनुशासन में रहते हैं, उन्हें जेल मैनूबल के बनुसार सजा की श्रविष में उट मिलती है। यहा बनु सित ट्रम मे रहना भी कर्म है और यही कर्म बन्धन से मुक्ति दिलाने का कारण भी है। भौर जो कैदी जेल के नियम-कायदे का पालन नहीं करते हैं, जेल नोड कर भाग जाने का प्रयास करते हैं, व पकड़ जान पर पुन जेल में भंज दिए जाते हैं धौर उन की सजाकी धवधि बढ जाती है। यहा बन्धन कडा हो जाता है।

श्रद कर्म के एक श्रन्य पहला पर भी विचार प्रस्तुत करताहु। कम के बुरे संस्कारी को अर्थात बन्धन को कर्मों के द्वारा हलका भी कर सकते है भीर कर्नो के बुरे सस्कारी के प्रवाह का रोक भी सकते र्हेतथा उन्हे ग्रच्छ सस्कारो मे परिवर्तित भी कर सकते हैं। यह कैसे ? विद्यालय के एक विद्यार्थी को नकल करने के अपराख के कारल बीस रुपये पाइन हुआ। फाइन भुषतान करने की उसे एक माह की धविष मिली। श्रद वडी छात्र, श्रविष के बीच में किसी घच्छे कर्मक कारण उसे चालीस रुपये का पुरस्कार मिला। प्रव इस मे बीस रूपये का दण्ड माफ कर दिसा गया। प्रच्छे कर्मके प्रभाव न बुरे कर्म के प्रभाव को कम कर दिया। इसी प्रकार पूर्व जन्म के किए हुए बुरे कर्मों के सस्कारों को भ्रच्छे कर्मों के द्वारा पूर्व सस्कार को प्रभावश्रीन कर सकते है या उसकी क्लिको हल्काकर सबते हैं। बुरे कर्मों के सम्कार के प्रवाह को रोक सकते है। यह इस प्रकार म होगा, श्याम ने राम को किसी कारण से एक घप्पड लगा दिया। इयाम के मानस में उस कर्स कासस्कारपडाः। उधर राम ने वप्पड काजवाब दियातो उस पर उस के कर्म का संस्कार पढा। हिमा-प्रतिहिंसा क्रिया-प्रतिक्रिया से सस्कारों का प्रवाह चन पडा। सब धगर राम, न्याम के थप्पड का जवाब न दे चुप हो जाए, शात रहे, मन से भी शात रहे तो सस्कार का प्रवाह रुक गया। स्थान कामी क्रोध शांत ही गया, उस के बुरे सस्कार वही एक नए, क्यों कि दोनों तरफ सल्कार के बीज को कोई खाद नहीं मिला। सस्कार के प्रवाह को जलाने वा रोकने मे दोनो स्वतन्त्र हैं ह

इस नेद मन्त्र द्वारा परमपिता एक-मारमा इसे यह निर्देश के एहे हैं कि वेद विहित कमों को सर्चाट्, सजीय भावना से करते हुए ही जीने की इच्छा करो। बुरे कमें प्रयांत् सर्वेदिक कमों का लेक्क चढता है। सेद का मात्र है सस्कार, वासनाक्षों का लेप। बार-बार जन्म-परस्स क्र कर कर हुनी सस्कारों के कारस्म होता है।

पहुँतवादियों ने इस मनत्र का धर्ष किला प्रकार ने किया है। साझ सकरा-वार्य गुपने ईसोपनिषद के प्राप्य मे इस मन्त्र का भाव यह वतलाते हैं कि प्रकाशी ही कमं करते हैं। जो सन्यासी हैं, जिन्हें ज्ञान निष्ठा है, उन्हें कमें करते की साब-स्थकता नहीं है। यह मन्तव्य वेद विद्य है।

ससार में कोई प्राणी ऐसा न मिलेगा, बो धपने धस्तित्वकी रक्षान करना चाहताहो। 'मैं मिट जाऊ'' इस माव का प्रकाश कोई प्राशी करना नही बाहता । इस के बिपरीत यदि कोई उस के विनाध का यस्त करे तो वह अपनी रक्षा के लिए जो कुछ उस से बने पूरा ब्रवल करता है। वह बस्तित्व वो प्रकार का है 'वैयक्तिक' भीर 'सामाजिक''। इन दोनो का परस्पर गहरा सम्बन्ध है बदि व्यक्ति विकृत या नष्ट हो जावे, तो समाजका धगभञ्जही जाता है और समाब का अस्तित्व न रहे, तो व्यक्ति के श्वस्तित्व का कोई प्रश्न ही नही रहता। हमारे धार्मिक साहित्य में व्याहतिया, सों भू, घो भुव, घो स्व, घो मह, घो वन , भी तप , सत्यम् ये सात हैं। मनुष्य के व्यक्तित्व निर्माच का रहस्य तथा उस की सामाजिक श्वक्तियों के विकास का तत्त्व इन्ही सात व्याहतियों में गागर में सागर की माति भरा हुआ है। इन में ने पहली तीन न्याहतियों को महाव्याहति कहा जाता है भीर शेष को केवल व्या-हृति कहते हैं। इन व्याहृतियों के द्वारा अनुष्य के अस्तित्व का निर्माण तथा उस की रक्षा किस प्रकार होती है। यह इस लेख का प्रतिपाख विषय है।

व्यःहति — व्याहति नाम ऐसे वस्तव्य काहै जिस में अनेक रहस्यों का संप्रह बोड शब्दों में किया गया है। जिस सक्षिप्त से वाक्य में गुप्त और ब्रह्मन्त महत्त्वपूर्णं उपदेश भरा हो उसे व्याहति कहते हैं। सागे व्याहृतियों के सर्थों का उस्तेस किया जायेगा।

'ब्रोम् जू'--यह पहली व्याद्वति है। 'मू ' इसकी उत्पत्ति ' मू" बातु से हुई है। भू धातुके प्राप्ति चादि और मी कई वर्ष हैं, परन्तु सत्ता इन सब में मुख्य है। यो कह सकते हैं कि सत्ता में ही शेष सब अर्थ समाये हुए हैं। सनाका अर्थ है 'ग्रस्तित्व"। इसलिए यह शब्द सन्देश देताहै कि मनुष्य का सबसे पहला कत्तंव्य अपने अस्तित्व की रक्षा करना है। मनुष्य के प्रस्तित्व को स्थिर रखने के लिए उसे जिन साचनी, जिस सामग्री घणका जिस कार्यक्रम की भावश्यकता है उन सब की रक्षाकरनानी श्रस्तित्व की रक्षा के लिए भावश्यक हो जाता है।

हुम पहले लिखा धाये हैं कि अस्तित्व हो प्रकार के हैं। एक व्यक्तियत और दूसरा सामुदायिक। येदी प्रकार के जीवन ही मनुष्य का कार्यक्षेत्र है। मनुष्य भै जितना प्राकर्षरा प्रपने व्यक्तित्व के किए है उतना ही समाज के लिए भी है तब तो ठीक है, धन्यथा उस के जीवन का एक ग्रश ग्रथूरा है। सब के विना मनुष्य द्मसहाय है। यद्मपि कई लोग स्वेष्ट्या से ग्ररव्यवास पसन्व करते हैं तथापि उन का धन्तिम उद्देश्य सामुदायिक हित के बिए प्रपने प्राप को शक्तिशासी बनाना ही होता है। साबुसन्त जङ्गम मे यहते हैं, बात्म साक्षात्कार करते हैं, परम्तु

बन्त में ऋषि दयानन्द जैसे सम्पन्न महा-पुरुष अपनी उस सचित बाक्ति का प्रयोग जनता की अवृत्ति समुदाय की सर्वाङ्गीता उम्मति के सिए ही करते हैं। इस प्रकार व्यक्तिगत, जातीय तथा राष्ट्रीय अस्तित्व की रक्षाकरने कासकेत इस पहली व्या-हृति से मिलता है। साज मानव सपने सामाजिक प्रस्तित्व को भुला बैठा है, वही कारख है कि समाज का सहयोग न होने से बहु अपने व्यक्तिनत अस्तित्व का भी पूर्ण विकास नहीं कर पाता जितना खिल्ल हम अपने व्यक्तिगत स्वार्थ की हानि के होते हैं उतने अपने सामाज्यिक बन्धन के स्वार्य की हानि से नहीं होते और यही दशा हमारी हानि के समय हमारे सामा-जिक बन्धुकी होती है, इस प्रकार परस्पर सहयोग न होने से हम दोनों ही अपने व्यक्तिगत स्वार्थों से वजित रह बाते हैं। ऐसे प्रवसरो पर गम्भीर सच्टि-पात कर हमे निर्माय करना चाहिए कि इमारा सामाजिक जीवन हमारे लिए कितना धमर ज्योति का सवारक है। यह सामाजिक जीवन ही तो है जो विशेष का विष्वस कर प्रेम को गही पर बैठाता है फूटका सिरफोड सबोग का समाधान करता है और मै का मान मदेन कर हम के अव्या भाव को श्रन्त करण मे आसुत

मोम् भूव — 'भूव' यह शब्द भी मू बातु से ही बना है। इसलिए इस के भी सत्ता भीर प्राप्ति दोनो सर्वने कोडासा मन्तर भी है। भूका धर्य है धस्तिस्व का निर्माण करना और भूव का अर्थ है निर्माण की भावना करना। मूब्या-हृति के कार्यक्रम मे शरीर और इन्द्रिय का प्रयोग है और भुव के कार्यक्षेत्र मे हृदय का प्रयोग है। भू का सम्बन्ध पृथ्वी से हैं तो मुख का कार्यक्षेत्र हमारे स्यूख शरीर का निर्माण करताहै भीर भुव के कार्य क्षेत्र में सूक्ष्म शरीर को उन्नत बनाया बाता है। स्यूल शरीर तथा स्यूल इन्द्रियो की चाहे कितनी भी उन्नति कर भी आवे, परन्तु सूक्ष्म शरीर के प्रधान तत्व मन्त -करण ना उत्थान हुए बिना व्यक्ति भीर समाच दोनो की एक साथ उन्नति करनी कठिन होगी। यह ठीक है कि स्यूस शरीर के द्वाराहम ग्रनेक पदार्थों का निर्माण भौर उस की प्राप्ति कर सकेंगे, परन्तु मन्त करण मे उदार भावनाभी का विकास क्ये बिना उन प्राप्त की हुई वस्तुन्नो को समाज का समक्तना हवारे लिए कठिन होसा। साजके युगने भूका साक्षय लियाजारहाहै भुव कानही। यह ही कारए है कि बाज प्राएगी-जगत् दुक्त के सास स रहा है। भूव का ग्रव दू सो का

प्रवेश है। इस कार्यक्रम की धपनाने के बाद ही हमारा प्रस्तित्व पूरा होना है भीर हमे वह बस्तु मिल जाती है जिसकी प्राप्ति के बाद और कुछ प्राप्त करने योग्य नही

इम पहले लिस बाये हैं कि इन तीनो व्याहृतियाँ को महाव्याहृति कहते हैं। सक्षेप में इनका भाव जान लेने के बाद पाठक यह समक्त गये होते कि ये तीनों व्याहृतियो मनुष्य जीवन के पूर्ण लक्ष्य पर पूरा प्रकाश डालती हैं। इसलिए इनका यह नाम सार्थक है। इन तीनी महाव्याहृतियो द्वारा प्रकट किये परम लक्य की प्राप्ति क लिए ही शेष चार अ्याह्तियो के आदेश का अनुसरण आव-स्यक है, यह भाव आने की चार व्याह-तियो में स्पष्ट किया आयेगा।

बोम् मह ---इम स्याहृति का श्रय है है महत्त्व-बडप्पन । समार के कायक्षेत्र में भाकर खड़ा होते ही मनुष्य को समभ नेना चाहिए कि मैं महान् हू। जब मनुष्य ऐसा समभः कर कार्यक्षेत्र मे झाकर खडा होगातो उसके लिए यह सम्भव है कि किसी समय वह भपने महत्त्व पर भागे हुए धावरण को उतार कर फेक सकेगा भौर अपने वास्तविक स्वरूप महत्त्व को प्राप्त कर सकेना । परन्तु जिसने अपने आप को पहले ही हीन समक्त लिया है उसका धयन आप तो महत्त्व की धोर धप्रसर होना कठिन दूर की बात है दूसरे के महारे से भी भागे बढना ग्रसम्भव हो जाता है। न उसका व्यक्तिगत उत्थान होता है भीर न वह समाज का धगही बनने योग्य होता है। भारत व दलित वर्ग की धोर भारत के ही नहीं सारे ससार के की दक्तित वर्ग की चिरकाल में ऐसी ही सबस्वा देखने में भारही है। भारत के उल्लक्त वब ने उन्हें समय-समय पर, महाश्रव हरिजनादि जिन जिन उत्तम शब्दो से सम्बोधित किया ग्रपन महत्त्व की मोर ध्यान न देने के कारण वे शब्द उनके कास्पनिक हीन स्वरूप के माथ जुरूने के क।रण हीन ही होते चले गय।

बारमा बौर ब्रान्मा मे परस्पर मेद क्या है। मानव शरीर ग्रीर मानव शरीर एक जैसे ही नो हैं। भेद केवल इसना ही है कि एक ने अपने महत्त्व को समक्ष कर उम मौज घोकर निस्तार लिया है भीर दूसरा लान मे पडे हुए मिट्टी से लथपथ हीरे की तरह अपने आप को होन ही समकता था रहा है। दलित वर्ग की इन मावना को घपनाने में इस वर्गका ही हाय नही है समाज का भी इसके पतन मे गहरा भाग है। स्वार्थी समाज ने अपने दास ही बनाये रम्बने के लिए ग्रथवा किसी और कारण से, इनके महत्त्व को मलिनता के भावरण से बाहर निकलने ही नही दिया। धपने इस कर्म के फल को भी समाव ने कम नहीं भोगा। भारत के पहले (शेष पृष्ठ ११ पर)

व्यक्ति त्रौर समाज व्याहृतियों की छाया में

लेखक स्व० स्वामी ग्रात्मानन्द जी महाराज करताहै। 'मू' बातुका दूसरा मय है प्राप्ति । अपने बस्तित्व की रक्षा के लिए मनुष्य कुछ। न कुछ। प्राप्त करना चाहता है, "मूमि, भवन, भोषन, भगवान्, यश,

थन, बल, सुब, बोज, महान्। प्राय ये ही उस की प्राप्ति की वस्तूए हैं। इन के प्राप्त कर लेने पर उस के धस्तित्व का पूर्ण निर्माण होता है। इन में से प्रत्येक वस्तुकी प्राप्ति के लिए कितने ही मनुष्य पशु झादि सहयोगियो की भावत्यकता पडती है भीर दिना सामाजिक जीवन को सुन्दर बनाये उचित रूप मे यह सयोग सम्भव नहीं । यजुर्वेद के बासीसर्वे ग्रध्याय में स्वष्ट कहा है ' सब की बात्माको को बपनी बात्मा मे और धपनी धातमाको सबकी धालमाधीने समको, सामाजिक भावना को और भी सुन्दर बनाने के लिए भागे चलकर दूसरे मन्त्र में कहा-- 'सब की धारमाधी को अपनी आस्पा और अपनी म्रात्माको सबकी मात्मा समस्रो। तात्पर्यं यह हो है कि अपनी तरह सब ही को सुस्ती बनाने का यस्न करो। कैसा सुन्दर मार्व है—हम के बिना में का धौर मैं के दिना हम का शुन्दर निर्माण प्रस-म्भव है। बस बहु ब्याहृति हुसे धपने धस्तित्व की रक्षा के जिए व्यक्ति धीर समाज दोनों का साथ साथ ही निर्माश सिखावी है।

दूर करना इसनिए किया जाता है कि भुव का साश्रय लेने पर ही हम प्राणी मात्र के कल्यासा की भावना कर, स्वय मी मुखी हो सकते हैं और दूसरों को भी सुखी बनासकते हैं।

योग्स्व — स्वर्'यह तीसरी व्याहिति है। स्वर का धर्म धानन्द भी है। "स्वर् ज्योतिरगामहम्" (मैं स्वर् नामक ज्योति के पास पहुँच गया) इस मन्त्र **माग के ध**नुसार स्त्रर का ज्योति धर्षभी है। भीर 'सुवर्गाय शक्त्या'' (शक्ति के उत्तम वर्ग में जाने के लिए) इस मनत्र भाग के धनुसार इस स्थान को उत्तम वर्ग मे रहने का स्थान भी माना गया है। मानन्द शब्द उपनिषदों में ब्रह्म के श्रवीं में बाता है सब से महान ज्योति भी बहा ही है। इन दो प्रयों को जानकर यह विना कठिनाई के ही सनक में ग्राजाता है कि उस उत्तम वर्ग का निवास स्थान भी ब्रह्म ही है। ब्रह्म में मुक्त बात्माबों का प्रवेश ही सम्भव है, इसलिए यहाउत्तम वर्ग का अर्थ होना मुक्त बात्माओं का भुष्ट।

स्वयु शब्द का धर्व जानने के बाद पाठक समभ वये होगे कि हमारे पहली दो व्याहतियों के द्वारा प्रकट किय गये, स्यूस भौर सूक्त दोनो ही क्षेत्रों के कार्यक्रम का मन्तिम सक्ष्य स्वज्योति की प्राप्ति है। मर्थात् बहा रूपी परमञ्चोति के अन्दर

आयंवीर दल शिविर

समस्त धायबीर बन्धुयों को सृचित किया बाता है कि नहीं तथा जून १६८४ में नवादा तथा हुआरी नाग में जिसक प्रशिक्तण धायबीर दक विविद का धायोक्त किया जा रहा है जिसकी निविद्य तिर्धित क्या स्वाम की बोध्या थी। प्रश्नी काएगी विनाप कर खात्री की मुक्तिया ने किए नमीं की छट्टी में ही विविद सवाया जा रहा है लाकि विज्ञास्त तथा महाविद्यात्रय के धाविक देवास्त छात्र भाग ने स्कें। वैदार रहे, सुबना की प्रतीक्ता कर प्राप्त है। सीरी एंदिन स्वाम वाएगा।

निवेदक रामात्रा चैरागी प्रचान स्वालक, सार्वेदेशिक ग्रायवीर दल, विद्वार

वार्षिकोत्सव सचना

धादरणीय मन्त्री जी

प्रार्थसमाज बाँकनेर का ३३वा वार्षिकास्सव विवाक २, ३ मार्थ १६-६ शनि तमा रिववार को इगोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर मैजिक सावटेन थो बजन के प्रदुषार कुरती कवड़ी डॉब शुद्ध वेदमनोच्चारण, प्रार्थमतस्यो पर माण्य तथा निवस प्रतियोगिताए आयोजित की जा रही हैं। प्रात बृहद बजोपरात आयवसाय के न रोनिष्ठ मन्यादी महात्यायो के बीवनदायी प्रवचनो की समुचित अवस्या है।

> मेहर लाल मत्री धार्यसमाज बाकनेर दिल्ली-४०

वेद प्रवचन

प्रार्यसमान वालीमार बाग के तत्त्वावचान में की वेदप्रकाश मेहता के निवास स्वाम पर स्वामी दवान-द जी मरन्वती महाराज का शनिवार और रविवार को वेद प्रवयन हुआ। इस प्रवस्त पर धनेक शामिक जन उत्साहपूर्वक उपस्थित रहे।

रचुबीर वेदालकार

भाषण प्रतियोगिता सम्पन्न

आयंतमाज सदर बाजार दिल्ली मे २७।१/=५ को नाप्ताहिक मत्सङ्ग से हुकीकतराय के बितदान दिवस के उपबन्ध में माध्यमिक स्तर के खात-बाजाओं के लिए नापण प्रतियोगिता का प्रायोजन किया गया।

प्रितयोगिता से स्वान प्राप्न करने वाले खान-खानाओं को विशिष्ट पुरस्कारों एव प्रत्येक प्रतियोगी को प्रोत्साहन से पुरस्कार पुरस्कृत किया गया। पुरस्कार विनरण का प्रवन्य श्री लाला किंगोरीलाल जी के द्वारा किया गया। सम्पूर्ण कार्य कम सबया प्रेरणाद्याकर एव सकल रहा।

> सयोजक साचाय रवीन्द्र सात्रेय सार्यसमाज सदर बाजार दिल्ली ६

आर्यंसमाज भवन निर्माण के लिए धनराशि की अपील

प्रार्थसमान किदवई नवर नई दिल्ली की स्वापना १८६० में हुई थी। परन्तु उन समय प्रवन प्रस्थायी रूप में बनाया नया था। जो इस समय पूर्ण रूप से जीव-धीरा हो गया है। इस काय म आप सभी वामिक बहन-भाइसो की सहायता एव सह-योग की पाव-परूना है। पत्रन में समयन २१ हजार की सामन आने की सम्पावना है। इस्पता प्रपना बैक, उापट मनीबार्टर, 'सायसमान ए २६६ किदबई नगर नई दिल्ली २३ करन पर भिजवाये।

> निवेदक मन्त्री मदनपास बर्मा

आर्यसमाज नीलोखेडी मे वेद प्रवचन

म्रायसमान्य मन्दिर नाली खेबी, करनाल से महात्या वैद्य रामकियोर की १३ से १७ फरवरी तक वेदकमा हो रही है भौर ली प० नुम्मीलाल के मयुर अजन भी होंगे।

> मर्ग्जी स्टोक्ससम्बद्ध

बार्यसमाज राजौरी गार्डन में वेद कथा सम्पन्न

४ फरवरी से १० फरवरी तक सार्यतमान राजीरी वार्वन नई विस्ती में भी प० यसपात तुवासु एम ए द्वारा मनोहर वेदकवा वृत्रवाम से सम्पन्न हुई। कवा से पुत्र भी विजय मक्स सार्य के मबुर सकत हुए।

नम्बकिसोर महिसा

आयकर परिसर (आई० टी० ओ०) में वेदप्रचार

दिल्ली मार्थ प्रतिनिधि सभा के प्रचार वाहन द्वारा मायकर परिसर (इनकम टैक्ड साफित) ने दिनाक ४ फरवरी से द फरवरी १६८४ तक मध्याझ मोजन के विकास के समय वहें मुख्याम से सम्पन्त दुष्ठा। यह सपने प्रकार का एक नया प्रयोग होने पर काफी सफल रहा। चम प्रेमी राज्य कर्मचारियों ने काफी उत्तराह दिखाया तथा इस अवसर पर साहित्य वितरस्य मी हुया। कार्यकम की सफलता का थेय स्वामी स्वरूपानन, प० वेदव्यास तथा श्रीक कलाकार व्योगि प्रसाद को है।

> प्रचार मन्त्री सार्य प्रतिनिधि सभा, इनुमान् रोड नई दिल्ली

पुरस्कार घोषणा

साचार्य गोवजन बास्त्री पुरस्कार १८८५ सम्ब निवा समा दूस्ट अपनुर की स्रोर से इस विरविवालय द्वारा प्रति वर्ष एक ऐसे विद्वान् को सम्मानित किया जाता है जिसका कि वेद प्रचार में सस्सेसनीय बोगवान रहा हो।

गत वर्षों में यह पुरस्कार कमछ धावाय राजभवाद वेदालकार, श्री सवाकी साम भारतीय श्री विश्वनाय विद्यासकार भाषाय श्री सत्यकाम विद्यालकार को दिया वा चुका है।

संबद्ध विद्यासमा ८ स्ट बयपुर ने इस वव उक्त पुरस्कार वैदिक विद्वान् पण्डित भगवट्त वेदासकार को प्रदान करने की स्वीकृति दी है।

जातव्य है कि यह पुरस्कार विश्वविद्यालय के वाधिकोस्सव के सवसर पर कुलावियति महोदय द्वारा मेट किया जाता है। इस पुरस्कार मे १००० रूपये की राजि एवन समक्तक मेंट किया जाता है।

> मनदीय वीरेन्द्र वरोडा कुससचिव, गुरुकुस कामडी, हरिहार

मार्थ गुरुकुल ऐरवा कटरा, इटावा

त्र्यपील

इस गुरुहुक में १६ वहाजारी वेदाध्ययन कर रहे हैं। जिनका जोजन खादन रहन वहुत बाए सभी बानी महानुभावों के सहयोग पर निगर है। यह पुरुक्त एवं पिछड़े लोज में राजाण कार्य कर रहा है जहां कर्ता पुरुक्तमान सर्थावक वनस्ति का सर्थाय्य करके समत्त से नीय जनता को सरमा गहे हैं। यह गुरुकुक व्हाय द्वानान इतरा प्रतिसादित जिल्ला सीलो पर सावारित है। यत आप का सहयोग परमावश्यक है।

धाचार्य स्वामी रामदेव

ग्रायंसमाज मन्दिर शकरपुर का वाधिकोत्सव सम्पन्न

१० फरवरो रिवबार वाधिकोत्तव के सुभावसर पर इस कों न के काफी वार्मिक बनो ने उत्साह पूर्वक मात्र किया। इस उत्सव की प्रध्यक्षता की रामयोगास शासवाले ने की । तथा प्रचान को सूर्यदेव तथा गुलावस्तिह, राषव" स्वा तै स्वरूपानन, मा॰ श्रीमञ्जकाश सार्य स्वादि गीतकार एन वस्ताकों ने सपना प्रेरणाञ्चर सन्वेतिया।

> प्रधाव---नारायस दास सम्मा

मार्यसमाज भिलमिल, शाहदरा, दिल्ली-११००३२

हर समाथ में एक 'शराब मना' व बक्याला के उपर ''गुम्बर' बनाने का कार्य का के बनाव में काठी दिनों हे दका रहा है। सभी बड़ी बड़ी खनावों के समि-कारियों व दुवरें सभी सक्याने हे जावेंगा करते हैं कि इस सपूरें कार्य को पूरा करने वे हुनारी सहस्ता करें। वस्पवार---

निवेदक-सूर्यप्रकास ,गरिक (प्रकार)

व्यक्ति और समाज-

(१९०० १ का खेव) के बौर अब के सब के सब अब अब समाय की इसी होन नीति के परिणास है। परन्तु अब भी समाव उसी माग पर चल रहा है।

समय-समय पर ऋषि दयानन्द बीर बहारमा नाषी जैसे महापुरुष बाये और वसे बये, परन्तु फिर भी समाज के कान पर जून रेंगी। समाज कह सकता है कि हम ने उन्हें भागे नाम दिया महाश्व माम दिया भीर हरिजन नाम दिवा, परत बाप किसी निधन का नाम करोडपति रसते रहें उससे उसे क्या नाम। यह श्चव्य तो उस्टा उसके उपहास का कारण बनेवा। माना वा सकता है कि यदि समाच उसे वन केता, मूमि वेता, विका बैता, वर्ण देता और रोटी वेटी देता तो यह वर्ष समाज का प्रवस सब रीढ की हड्डी बनता, भीर समाच के हाची उसका महत्व निकार जाता । हम मह कहना चाहते हैं कि जब तक समाब धौर समाज के व्यक्ति अपना और अपने भगो के महत्व को जानुत नहीं करते तर तक महाच्या-इतियों के क्षेत्र में जाने का प्रवसर मिलना कठिन है। इस चौची व्याहृति का लक्ष्य -तब ही पूरा होना जब कि समाच अपने एक भी व्यक्तिको हीन देखकर तहप चठेगा भीर उसके वास्तविक उत्वान मे ध्यपना सर्वस्य सवाने को छखनहो आयेगा । व्यक्ति समाज भीर राष्ट्र महान् हैं, यह ही इस व्याहति का निर्देश है।

धोम् जनः — यह पाचवी व्याहृति है। इस ब्याहृति का अय है प्रजनन सन्तान का उत्वान । व्यक्ति भीर समाज के अस्तित्व तया उसके महत्व की ग्राधार विकाप्रजनन से रकी जाती है। यह ही कारम है कि भार्यजाति ने नर्भाधान सत्कार को बहुत महत्त्व दिया गया है। एक मार्व बहा से ही मपनी सतान का निर्माख जारम्भ कर देता है। यदि बास्य-श्चवस्था में ही उसके महस्य को जगाना धारम्भ न किया तो उसका श्रस्तित्व निर्जीव हो जावगा, या किसी महान् भाव-रण के गम मे जा कियेगा। इसलिए श्यक्तिगत भीर सामाजिक दोनो ही जीवनो के उत्थान का बारम्भ प्रजनन से ही होता 🛊 । इसलिए माता पिता बनने बाले नब-मुक्को को सन्तरि निर्माण के सब उपायो को प्रयोग मे लाकर इस व्याहृति के शादेश का पालन करना चाहिए।

श्रोम् तप — तप का सिल्प्त धर्य है करट सहन करता । सन्तान निर्माध्य, महत्य का विकास, धानवर की माध्य, महत्य की विकास, धानवर की माध्य, की कर्म क्षेत्र के प्रवर्ति, ये सारे ही कार्य ऐसे हैं कि उनके मार्च से कच्टो का प्राना धानवरक हैं। इन कच्टो के धववचर पर सो मनुष्य चीद बनकर पर पीचे हटा केमा, उसे बसाने का कोई सीर सी प्रवर्ष विना कठिनाई के मिल करेगा नह सम्बन्न
नहीं। महर्षि दयानन के बीवन के धारनिजक भाग को हम एक तुत्र से बोत-मीत
पाते हैं। यन योगी जागो ने हमें स्थल ही
हैं। यन योगी जागो ने हमें स्थल ही
हैं। यन योगी जागो ने हमें स्थल हैं। योग
नम्म राजनी के फर्मजों ने होकर न टूटमा
हम, नह तुत्र धारा तक कैते जा पहुचा।
स्स प्रका की कामनीन कर उत्तर देते
सनव कृषे एक ही सावन स्टियोचर हुआ
है, और उचका नाज है तथा। याता-चिता
को भी सत्तान के निर्माण ने इसी प्रकार
के तम का धायब लेगा परेगा, तो ही वे
स्त माइति से लाम उठाकर प्रपणे समान

भ्रोम् सत्यम् — सत्य का श्रय है सन, वाणी और कर्म में समानता। यह एक ऐसा सिद्धान्त है जिसे विश्वास का जन्म-बाता कह सकते हैं। विश्वास के समाव मे समाज टुकडे-टुकडे हो जाता है और व्यक्ति विकार कर अमहाय पढे रह जाते है। इस व्याहृति के इस प्रकार निरयंक हो जाने पर शेव सब व्याहृतिया भी अपने अपने काम को करने में असमयें रह जाती हैं। थम की सबसे पुष्ट बाबार क्षिणा सत्व है भीर यह ही भाजार का सब से बढ़ा मूलमन्त्र है। समाज के सम ठन का यही मुसाधार है भीर व्यक्ति के विकास का भाषार वह ही है। ऋषि बयानन्द जैसे महापुरुवो के जीवन इस सत्य के ही प्रकाश से जनक रहे हैं और चमकते रहेंगे। हम व्यक्ति और समाज ने सत्य को पैदा करें यह ही सातवी व्याहति का उपवेश है।

हमने सक्षेप में इन सातो व्याङ्गियों है भाव को व्यक्ति और समाज के स्त्यान में परम सामन कहा है, पाठक इस विषय पर विचार करें। सत्य के प्रबल :

(पृष्ठ ४ का शेव) है। समाज को अध्ट होने से बचाने के निए महाभारत में को काम युद्ध 🕏 बाद महात्मा विदुर ने किया लवभव वैसा ही सुक्ताव ऋषि दयानन्द ने दिया है। श्चिप-श्चिपकर पाप करने के बजाम यदि उसे वार्मिक प्रथा का रूप मिल जाय तो समाज में बनाचार भी नहीं फैसेना ब्रीर मर्वादा बनी रहेगी। सत्यावंत्रकाश मे उन्होने निसा है-बहुत-सी परिस्थितियाँ एसी होती के अब वश चलाने के लिए और मन्द्र होने से बचने के लिए नियोग धावश्यक है। स्त्री पुरुष दोनों से से काई भी सन्तानोत्पत्ति के लिए बशक्त हो बयवा लम्बे घरसे के लिए प्रवास क्ले गये हो तो बजाय ख्रिप छिपकर दूराचार करने के उसे वैष रूप ही क्यो न दिया जाए। वैसे यह भी कोई नया सिससिला नही है। स्वामी जी ने निस्ता है-

पाण्यु राजा की स्त्री कुल्ती धौर बादी ने नियोग किया। ब्यास जी ने विज्ञागद धौर निजित नीयें के मर जाने के परचार् उन अपने नाइयों की रित्रयों में नियोग करके अध्विका सम्बा म युद-राष्ट्र धौर सवासिका से पाण्यु धौर दानी में विदुर की उत्पत्ति की। इतिहास भी इस बात में प्रसास है।

कुछ दिन पहने तक यह बात सुनने में भी सदण्दान्सी समानी थी। पर धत्र अवकि विज्ञान ने विध्वाधी और प्रविद्याद्वित मानामों का कोर पुरुष सबोध के बिना हरी करनी प्रारम्भ कर बीधो किसी को भाष्यमं नहीं नवता। द्यूव से जो बातक धाककल नग्म से रहे हैं शासिर वह भी तो विनियोग का ही परिवर्धित कप है। पीछे नई दिन्सी के बातक इसिया में बिकल इस्टीटयुट में तब एक देवी ने स्थी विधि से वर्ष को नग्म दिया तो बहुत कुषा बीप रूप हुए ही बिका यहां उसे रही— वालक का नाक बैठी हुई

है उसका चेहरा कुछ ठेठ पहाडी बीसा है। बाक्टर ने कहा—सम्बी बार वो भी चेहरा धागपत्रक करें। पहले उस व्यक्ति को हमारेपाल भेज दें। फिर धाप को दुवारा विकासत का धनसर नही धाएसा, बन बताइये यह नियोग नहीं तो क्या है?

युक्ति-तर्क भीर प्रमाणी से पृष्ट सिदातो के प्राचार पर सत्यायप्रकाश जब स्वामी जी लिख चुके नी उसके मत में पृथक से भी कुछ पुष्ठ उन्होंने बोडे। न पृष्ठो कानाम उन्होने रहा। 'स्व मन्तव्यामन्तव्यप्रकाश' धर्णात कुछ वह बातें जिन्हें वह मानते हैं सबवा जिन्हें नहीं मानते। इन में मनुष्य की परिश्राचा करते हुए स्वामी जीने लिखा है—जो बन्याय को मिटाने में प्राणी तक की बाबी लगा दे मैं उसे ही मनुष्य कहता ह। यह परिभाषा दूसरो पर घटती हो बान घटती हो पर स्वामी जी पर एक देशी रिया-सत (बोघपुर) में इसी तरह के झम्याद का सःमना करते हुए उन्हें विष दिया गया भौर उसी में उन कानिर्वाण भी ह्या। सत्य का प्रचार करन मे कठिनाइयाँ हो धानी स्वामाविक ही हैं। जिनक स्वा**र्य** पर भयवा कमजारियो पर चोट पडती है उनका तिलमिलाना भी स्वाभाविक है। पर यह ही वह समय है जब व्यक्ति के वैर्यभीर साहस की परीक्षा होती है। इन्ही पृष्ठों से सहिंच सतृ हरि के एक श्लोक का उद्धरण भी स्वामी जी ने दिया है। त्रतीत होता है यह श्लोक उन्हें बहुत पसद या।

निन्वन्तु नौतिनिपुराः विश्व वा स्तुबन्तु, लक्ष्मी समाविष्ठातु गच्छतु वा बचेच्छन् । बरोव वा मररामस्तु युवान्तरे वा, न्वाय्यात पच प्रविवसन्ति पव न भीरा ॥

राजनीति क पहित प्रश्वसा करें चाहे निन्दा कर। सम्पत्ति रहे चाहे बाए धौर मृत्यु भी घाज घाती हैं या कल घाती हैं, इसकी परवाह किय दिना घयवान् पुरुष कभी सत्य घीर-याय का मगनहीं छोडते।



भाषण प्रतियोगिता

ऋषि बोघोत्सव के उपलक्ष्य में बाय युवक परिवद (पर्वोक्कर) दिल्ली की घोर से सदैव की भाति दिनांक १७ फरवरों १९८५ को ऋषि मेंसे के धवनर पर मुख्य-नव से प्रात ११ २० वर्ज भाषल प्रतियोगिता का धारोजन किया गया है।

विषय— राष्ट्रोत्वान में महर्षि न्यानन्य का योगनन्त कायक्रम की क्रम्यलता माननीय डा॰ व्यवपात जी करने । प्रतियोगिता में एक वस्त्या संस्कृत (श्वाचा चार जिन्द तक वोक्स वर्कने । प्रयम द्वितीय तृतीय खात्र झात्रामों को यो यो प्रोत्माहन पुरस्कार विए जायेंने ।

निवेदक ---

प॰ देवव्रत वमन्त्रु प्रभान मूलबन्द गुप्ता संयोजक श्रोमप्र**क**ाश मंत्री

शाय युवक परिषद् (प**वी∘) दिल्ली**।

श्रार्य जगत् की शान २०० विस्तर वाले निर्माणाधीन नेत्र चिकित्सालय (अनुमानित लागत दो करोड रूपये) के लिए दिल

खोलकर दान दीजिए दानकी राशि ग्रायकर प्रधिनियम जी० ०० के श्रन्तर्गत करमुक्त होगी। सारा सल वेक/मनीकार्डर/वेंक कुल्क हारा

सारा वान विक/मनाआवर/विक द्राला द्वारा मन्त्री माता बल्लनदेवी प्रार्थं वर्माय नेत्र विश्वितस्थाल वी-१ जनकपुरी नई दिल्ली ३० केपते पर मेजा खाए ।

दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की खिला पर अकित किए जाएगे।

निवेदक

रामगोपाल गालवाले सरक्षक सूचवैव महाखय कर्षपाल झोमझकाछ झार्य चिकित्सालय एव प्रयान, प्रयान दिल्ली झार्य प्रयान झार्य मश्री महाखय सा॰ झा॰ प्रति लक्षा प्रतिनिधि स्वया केन्द्रीय खष्मा चुनीसाल चेरि ट्र स्रीजन्य से महाशिया सी हट्टी प्रा॰ लिमिटेड १/४४ केन्द्रिनगर, सौखीयिक क्षेत्र मही सिक्सी-११००१

वार्व सम्बंधे साप्ताहिक

पत्रिका के बाहक बने, ग्रीर बना एँ क्योंकि वह पत्रिका—

- (१) वैदिक मान्यताओं को उजागर करती है।
- (२) बायौँ (हिन्दुक्रो) की महान् परम्पराग्नी की बाद दिलाती है।
- (३) महींब दयामन्द की वैचारिक क्रांति से म्रारम चेतना जागृत करनी है।
- (४) बारतीय संस्कृति के भूले बिसरे प्रसगो, महापुरुषो तथा झादई
 सरकारो को प्रकाश में लाती है।
 - (१) ऋषि मुनि तपस्वी भाष्तविद्वानों की बाग्गी का बोध कराती है।
- (६) परमेक्वर की पवित्र वार्गीवेद का जोवनोपयोगी मचुर सन्वेक्ष लातीहै।
- (७) नय सेखको, किंबयो, चिन्तको, प्रतिभाशासी विद्वानो, साहित्य सेवियो को प्रोत्साहन देती है।
- (α) धार्मिक, सामाजिक और माध्यात्मिक ज्योति से मन-मिक्टर को प्रकाशित करती है।
- (६) वेद उपवेद, दर्शन उपनिषद्, स्मृति, कल्प सूत्र धारम्थक बाह्यसम्बन्ध शीता, रामायण, नीति, ऐतिहासिक, अमृत्य धार्ष प्रत्यो जिन को प्रीयकास लोगो में पढ़ा तो क्या देखा भी नहीं, समस्त धाम्यारिमक जगत् को जिन प्रत्यो पर सदा गर्द रहेगा उन सभी के बहुसूल्य मोती हर सप्ताह बटोर कर खायकी धजनी भर देती है।
- (१०) घतएव देर न कीजिए फ्रांज ही धपना वाधिक चन्दा २० स्पर्के क्रेजिके वर्ष में धनेक विशेषाक तथा महिष दयावन्द निर्वाए। शताब्दी पद प्रकाशिन ५० स्पर्य मुन्य की अच्य मनोहारी स्मारिका नि शुल्क दी आवेणी १

सम्पादकः भार्यं सन्देशः

उत्तम स्वास्थ्य के लिए गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार की औषधियां सेवन करें

> शासा कार्यालय—६३, गसी राजा केदारमाय, फोन . २६९-३= वाजडी बाजार, विक्सी-६



मांख विनाह कुण्वन्तो विश्वमार्थम

आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

मूल्य एक प्रति ५० पैसे

वष ६ सक १४

रविवार, २४ फरवरी १९-१ बाय सबस्सर १९६० - १३० - ४

फाल्गुन २०४१

दयानन्दाच्द---१६०

नन्द बोधात्सव समा मनीषी स्वामी दयानन्द का जोवन प्रेरणा देता रहंगा

दिल्ली आर्थ केन्द्रीय सभाद्वारा बायोजित ऋषि दयानन्द बोधोत्सव के धवसर पर भाषण करते हुए श्री बलराम जालड ने कहा-माज का दिवस बोध का, कुछ जानने का, सत्य को लाजने का दिवस है। भाग उस महामना मनीषी ऋषि को सच्चाई का बोध हुआ था। व सच्चे शिव की प्राप्ति के लिए गृहत्याग कर चल पड **दे। समस्त विश्वको उन्होने सत्य** पष दिलाया। वे ऐसे उच्चकोटि के धादस पुरुष वे जिनका जीवन यूग-बबो तक ससार को प्ररेशा देता च्हेगा।

श्री बलराम जाखड ने भाह्यान करते हए कहा-ऋषि दयानन्द ने सस्कत, संस्कृति गौको रक्षा करने के लिए बल दिया था। संस्कृत सभी भाषाभी को जननी है, गाय हमारी माता है उसकी पूरा सुरक्षा की जानी चाहिए। उन्होने कहा-मैं मनुरोध करूंगा, भाज हमे मानव कल्याण के भाषरा न देकर भहाँच दयानन्द द्वारा बतलाये गये मन्तव्यो का अनुसररा करना चाहिए। मैं ससद मे यथासभव 浦 कुछ हो सका अवश्य करूगा।

श्रीप• राजगुरु शर्मा नै

सम्बोधन करते हए कहा-प्राचीन भारत मे राजा भश्वपति ने ऋषियो को कहा था मेरे राज्य मे कोई चोर व्यभिचारी स्त्री पुरुष न्त्री कोई ऐसा व्यक्ति नहीं जो यज्ञ रोपकार न करता ही ब्राप मेरे गाज्य मे प्रवेश कर अन्न जल ग्रहण कर। दुर्भाग्य से ग्राज ऋषियों के देश में चारित्रिक पतन पराकाड्या पर है। तथा भारतीय ससद और विधान सभाएँ इससे

ब खुती नहीं हैं बत निर्वाचन से पूर्व



चित्र मे— भी बलराम जासड मावसा करते हुए, मच पर बैठ हुए श्री सच्चिदानन्द कास्त्री श्री पृथ्वीराच शास्त्री श्री प॰ राजगुरु कार्मा भी स्रोमप्रकाश त्यांगी श्री महाशय वमपाल श्री जासा रामगोपास शालवाने दिखाई दे रहे हैं।

लोकसभा ग्राध्यक्ष--श्री बलराम जाखंड विधानसभा ग्रौर ससद के लिए स्वच्छतालाने के लिए किये जा रहे

खडे हए प्रत्याशियों को घोषणा

करनी चाहिए कि वे किसी प्रकार के

मादक द्रव्य का प्रयोग नही करते

नथा उनका व्यक्तिगत भीर सामा

जिक जीवन निर्दोष एव स्वच्छ है।

ऐसे लोग ही देश का कल्यारा

कर सकते हैं। इसके साथ देश के

प्रत्येक नागरिक को अपने महर्षियो

से प्ररुणा लकर जीवन और चरित्र

को सुधारना चाहिए। मैं प्रशासन मे

प्रधानमन्त्री के प्रयास का स्वागत करता हु उन्होने सरकार से माग करते हए कहा संस्कृत हमारी देववासी है जिस पर प्रत्येक भारतीय को गर्व है उसकी रक्षा के लिए शासकीय सेवाओं में प्राथमिकता दी जानी चाहिए। तथा सस्कृत के अध्ययन एवम अध्यापन हेलु माध्यमिक विद्यालयों से ही सस्कृत ग्रनिवार्य घोषित करनी चाहिए।

श्री रामगोपाल शालवाले ने कहा गौको राष्ट्रीयपञ्चोषित कर गैकी सरक्षाकी जाए तथा सस्कृत के भ्रष्ययन करने वालो को विशेष प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

श्री पथ्वीराज शास्त्री ने नागा लिण्ड और उडीसा मे अपने कार्य की चर्चा करते हुए कहा कि ईसाई पानी के गिलास पर गरीब लोगो का ईमान जुट रहे हैं। झन सरकार की चर्मा-न्तरण रोकने के लिए कानून बनाना चाहिए क्योंकि इससे राष्ट्रद्रोह उत्पन्न हो रहा है।

इस् अवसर पर श्री भ्रोमप्रकाश त्यागी एव श्री सच्चिदानन्द शास्त्री ने भी भ्रपने विचार प्रस्तृत किये।

यज्ञ पर अनेक कार्य करने का संकल्प ग्रहण

फिरोजशाह कीटला मैदान मे धार्य केन्द्रीय सभा के तत्त्वावधान मे धायोजित यज्ञ प्रात द बजे प्रारम्भ हम्रा।इस यज्ञ मेश्री महासय वर्मपाल, श्री के० ए० भाटिया श्री तीर्ष राम टन्डन एव श्री योगेश मार्य यजमान रूप मे उपस्थित हुए। यज्ञ के ऋत्विक के रूप मे श्री प्रकाश चन्द्र शास्त्री एवं श्री प॰ यशपाल सुमाशु

ने मन्त्रोचारए। तथा यज्ञ सचालन किया। श्री प० सुधाशु ने इस ग्रवमर पर उपस्थित जनसमूह की यज्ञ पर वत प्रहराकरने का उपदेश दिया। जिससे प्ररित होकर लगभग ४४ स्त्री एव पुरुषो ने यज्ञ पर धपने दोव त्याग एव परोपकारी एवम् बाध्यात्मिक कार्य करते रहने का वत ग्रहरा किया।

ध्वजारोहण

यज के पश्चात ध्वजारीहरा पर श्री सूर्यदेव ने आय जनता की सम्बोधित करते हुए कहा -हमारी संस्कृति भौर सम्यता का प्रतीक ये घ्वज हमें राष्ट्र एवं धर्म के प्रति कर्त्तव्य निभाते रहने का सन्देश देता है। हम अपने आपको और विश्व को श्रष्ठ ग्रार्थ बनाने का सकल्प ल। ध्वजारोह्न क पश्चात् श्री मूलचन्द जी के मयोजन मे खेल कूद एव भाषण प्रतियोगिता का छात्र छात्राम्रो का कायक्रम हमा। जिसमे युवा पीढि ने महर्षि के राष्ट्री-त्थान सम्बन्धी निर्देशो पर प्रकाश

वह मृत्यु से नहीं खरेगा

बशपाल सुषांशु

ग्रकामो धीरो ग्रमृत स्वयम्भूरसेन तृप्तो न कुनश्चनोन । तमेव विद्वान् न विभाय मृत्योरात्मान घीरमजर युवानम्॥ ग्रमकं । १०१८।४४

धर्व--परमेश्वर श्रकाम ' कामना रहित, "धीर धीर धचनायमान, धमत ' धविनाशी कभी न मरने वाला "स्वयम्भू 'स्वय-भू भपने भ्राचार से सदा विद्यमान, रसेन तप्त प्रानन्दरस से तृप्त 'क्तरकान न ऊपन कही भी न्यून नही न्यूनतारहित 'तमेव बीरम् बजर युवानम्" पर । उस बीर, प्रजर, सदा नवीन युवा "बात्मानम्" सर्वे व्यापक परमात्मा को "विद्वान् न मृत्यो विमाव' जानकर ही मनुष्य मृत्यु से नहीं बरता । मृत्यु से निभंय ह्रो जाता है।

बहेद्य-मनुष्य भगवान् को जान कर मृत्यु के दुल से बचे निमय होवे।

व्याख्या-धनादि काल ने जन्म-मरसाका चक चलता रहा है, भीर चलता रहेगा। क्या विद्वान क्या म्खं गरीव-श्रमीर बलवान निवल, योगी-भागी सब मृत्युकी पकड स हैं। काल बडा कराल है दे पैर वाले — पक्षी मनुष्य द्वादि द्वौर चार पैर वाने --- पशुकीट मादि सभी पर अक्ट शासन करता है।

"मृत्युरीके द्विपदा मृत्युरीके चतुष्पदाम्।

मृत्यु — मृत' मिट्टी यु'निश्राणा-मित्ररुषो मिलना भीर बुदा होना। वह यम रूप परमात्मा इस जीव को 'मृत्' ग्रमात् पत्रभूतयुक्त शरीर से जोडना भीर (मरण के रूप मे) मलग करता है। मृत बौति विबौति च ' एक पिंड में जुड़ना धीर एक ने घलन हो जाना ही मृत्यु है। केवल मात्र इतनी ही प्रक्रिया का ज्ञान न होने से ही समस्त भाणीमात्र समृत्युका भयव्याप रहा है। मृत्युते डरना दर्धन की भाषा मे श्रमि निवेश कहनाना है जिससे जानी प्रजानी सभीपीकित है। सारा ससार भय से जस्त है। सब से बड़ी सबा मीत सब स बहा दु व मौत इसी से टर धीर हरा रहा श्चादमी ।

बद काऋषि कहता है—

तमेव विद्वान न विभाय मृत्यो । उसे जानकर मृत्यु का न्रतही रहवा। तमेव विदिन्यातिमृत्यूमेति नान्य

पन्या विद्यतेऽयनाय ।

यजुवद ३१-१८ उस परमेरवर का जानक कही मृत्यू मे पार हुआ। जा सकता है और कोई रास्ता है ही **नहीं**।

⁷-चा डर गया, किसी धनजानी बस्तुका दलकर चीलापण बचनेका राम्ताहै केवल मा की गोदी। गली से चीलना नैश्ताहबाद्याकरमा के बामन को पक्रड कर सहमा-सहमा हाच ऊपर उठाता है। बासुबाँ से बेहरा भीवा है। माने नोद मे ले किया, श्रव उसे किसी का डर नही, जो हाथ काप रहे से दे सब तन वये, मुटिठवाँ कस गयी भीर मुक्का तानता है धव उस डरावनी मयावह वस्तू

काल के पजे से इरे मनुष्या। पर-मात्मा हम सब की मा है, वह जनवस्वा है उसकी गोदी, उसकी शरण सभी भयो से मुक्ति दिलाने बाली है । उसकी उपासना कर उसकी गोदी में बैठ। पर पहले उसकी बोदी में बैठने योग्य बन । देख बह कैसा है?

बकामो बीरी बमृत स्वयम्म् ---वह कामनामों से रहित है भीर हम कामनाधों से चिरे हैं। ये कामनाए ही हमारा बन्धन बन गई हैं। जो बधन हमने बाघलिये हैं उनसे निष्कान होकर ही वचाजासकताहै। ससार वाटिका का वह माली बीर है, उससे बढ़ी कोई शक्ति नहीं जो उसे प्रकम्पित कर खके वह मचलायमान है भीर हम हर एक फोके पर कापने लगत हैं, थोड़ा साभी दुव हमारे दिस को दहला जाता है। पर जो उसका सम्बल नेता है वह भीर हो जाता है। पहाड से भारी विद्याल दुस को वह तुरा समक्रकर मेल जाता है। मनुष्य मर्त्य कहलाता है क्योंकि शरीर नरश जर्मा है। बात्मा बमर है, इस इन्द्र का बोग्य साथी 'इन्द्रस्य बुज्य सन्ता' परमात्मा धजर धमरहै,तो तृभी धमृतकाच्ट भर धपने पूज्यो से क्ला, बर्म, महान कर्मों से यश प्राप्त कर झमर हो जा। 'किन्तु यह तभी सभव है कि जब तु उस स्वयम्भ (प्रपने बाधार से विद्यमान परमारम-

बद्र ग्रानन्दघन प्रभु रसेन तृप्त स्नानन्दरस से भरा-प्रा है। सानन्द का स्रोत निरन्तर वह रहा है। तू ईर्प्या, इप भूणाकी भ्रागम मूलसता, **क**धता रहता है। सफ्लताए बहुत दूर तरा मजाक खडाती रहनी है। बा, बाडी सी मस्ती ला पा उस धानन्द स्दरूप ही गोदी म बैठ, कुछ पल के लिए घपन द्यापका विस्मत कर देनेवल माकी गोदीका चरम सुख, तुम युग युगो से प्यासे वातक को प्राह्माद से चमत्कृत कर देगा। उस मस्ती म कलव्य के उन्माद में भरकर संसार यात्रा में प्रवृत्त हो। पर देखां कोई त्रृटिकोई

स्वरूप) के स्वामाविक गुल को अपने

भीवन म उतारेगा। भ्रपना भाषार स्वय

बनेगा दूसरो के सहारे की भाकाक्षा नही

कमी जीवन में मत रहने देना। नहीं तो शौंधे मूँह गिरेगा भीर फिर उठना भीर भी कठिम हो जाएमा। तेरा धावर्श तो पूर्ण बहा है, 'न कुतक्चनोन ' कही से न्यून नही है। भीर तुब न्यूनताथी, संयुताबी, हीनताओं से भरे हो। याद रख एक दोष ही बगरता के स्वच्छ वारि को जीवन घट से रिक्त कर देता है। इन खिद्री से बचना होना, बीवन नैय्या को एक छेद से, एक दोव से ही इबने का सतरा हो जाता है। उस चतुसनीय से घपनी तुसना करते हुए, धावमर्थमा करते हुए धनुषव बना।

ज्या की है इवास्त, सुवासा हो बाऊ।

विकासा की इस धमुपम सृष्टि से उस विचित्र चित्रकार को हर कण मे, हर वस्तु में देख । उसकी शक्ति हवाबी के देव भे, सिंघु की नरवाती सहरों में विसाई देगी। उखकातेज सूरज की किरएनो मे दुव्टि-वो वर होना। उसका वैर्य पहाडी की श्रव-लता में नक्षत्रों के प्रशासन में दिखाई देगा, उसका भानन्द रस कुत्रो के सौंदर्य भीर सुगन्ध में करत निकंरों ने प्रतीत होगा। यही रस पिलवों के स्वरों में चहक रहा है। हर रचना में उसकी पूर्णता दिखाई पहली है, कोई भी रचनाक ही से भी न्यून नहीं है। फिर उसी परमात्मस्वरूप को हर बात्मा मे, हर प्राणी ने दल । सब एक विभाता की सन्तान हैं सबसे हमारा बहरा नाता है, सब धपने हैं हमारे घपने । फिर किस को किसका डर, सर्वत्र त्रेम, ग्रानन्द के ही दर्शन होने। धारमवत् देखना ही वर्गहै, धपनी घारमा से मिन्न व्यवहार करना ही धवन है।

मृत्यो स मृत्यु माप्नोति य इह नानेष पद्म्यति ।

जो व्यक्ति अपने से इस संसार वे नानात्व, भिन्नता देवता है, वह मृत्यु को प्राप्त होता है। वो एकत्व प्रास्ति बात में बास्मवत् व्यवहार करता है उसे व कोई मोह, न कोई शोक होना। वह समस्त भयों से मुक्त रहेगा।

तत्र को मोह क शोक एकत्वमनु-पत्रवत ।

उस बीर, प्रवर, सदा नवीन, बरा-मरण रहित युवा को जानने वाला मृत्यू बादि के सबी से दूर ही जाता है। न्योकि---

यस्य बाबाऽमृत बस्य मृत्यु ।

उसकी खाया, धाष्य ही मोझ सुब-दायक है उसकी मन्ति न करना, उस की लरण से जलन हटना ही मृत्यु प्रावि कुला का हेत् है।

मन्त जब उस परमात्मा की उपा-सना से उसके रग में रग जाता है जिस्त के रस में बहने सनता है फिर वह मौत की एक सेल समस्ताहै। शरीर का छुटला पुराने बस्त्रों के स्वाग से धाविक महत्व नहीं देता। वह इस ससार को सराय **धीर** भ्रमने को गास्वत वात्री (जो सदा से ^ह यात्रा पर है) समक्रता है। फिर उसे वह वर्मशाला यह सराय छोडने मे कैसा कुल होगा बरिक प्रपनी मजिल पाने की कौनूहलता में वह सराय की तरफ पीखे मुड के भी नहीं देखेगा। वह तो मस्ती से गा उठेगा।

जिस गरने से जगडरे मेरे मन झानन्द। मरने से ही तो पाइबे पूर्णपरमानन्द ॥ ^{६३}

ऋषिवर महामना

नायशरण ग्रायं

स्वशक्ति से किसने विश्वव्यापिनी-

उठा लिया बरली के सुव्योग को,

न्वयम् प्रसूता कलिताम्बरा नयी-फैली कछार मे पादपावसी ।

प्रबद्ध रूपा सूभ पावकायना---

प्रचण्ड की बासी पुण्य मगसा, सप्राण थी असे श्वेत चन्द्रिका---

महत्सका सी सुदुषा पयस्विनी !

सत्तकं श्रदा कीराम्बु सी मिली-जहा न थी ककंशता कठोरता,

भाषाढ का वर्षणशीसमेघ

सुपुत्र थावह गीतम क्याद का। सुबीयं गुल्का, नदशस्य ध्यामला--

क्षमा सदश वह पृथ्वी स्वरूप था। विरत कियापीडा के कुपम्य से

स्वधातको को स्वद्रव्य दान है।

सिदात मे धगदपाद सा घडिग-सरदूपणो मे मौमित्र राम था. करस्य धगीकुत बदको किया — उदार चेता ऋषिवर महामना। स्वराज्य का पोषक मंत्रह्रष्टा---

> साकेत कृत धर्मा वा कृतार्थया, बढे उसी का हम सम्ट बिन्दू ने---सहस्र चेता स्वराष्ट्र के सिए।

सम्पादकीय

आर्थ सन्देश

धर्मवीर पं० लेखराम

अमर बलिदानी

धम पर बलिदान होने वाले वीर योद्धा प० लेखराम का स्मरमा आने ही एक दि॰य ब्राकृति मानसपटल पर उभरती है। एक ऐसे मासी की थाद बाती है जो उफननी नदी के प्रवल वेग का विपरीत धारा मे बपनी नाव हेता चलता है और कभी यकता नहीं निराश भी नहीं होता। ससार ऐसे लोगों को उन्मत्त कहा करता है। धम की धन के धनी प के लेखराम का जीवन महर्षि दयानन्द और वैदिक धम के प्रति पूरा समर्पित था। व अपनी धम-प्रचार यात्रा में कभी यके नहीं एके नहीं। विदेशी पडयन्त्रों के जाल में भारतीय संस्कृति विगत शताब्दियों से जकड़ी चली आ रही है। इस देश के भील भाल नागरिको का छल बल से धम परिवतन किया जाता रहा है। १६वी शदी में हिन्दू धम उस कच्चे माटे के दीपक की तरह हो गया था जिसे बर मे रख तो बहे ला जाय भीर बाहर रखते हे तो कौए उठा ल जाए। किसी के छुने मात्र से ही धम से घलग जाति से घलग कर दिया जाता था। होसे कच्चे धागे जसे अम को तोडने के लिए अनेक मतावलम्बी ईसाई भीर भूमसलमान हिंदुग्रो को ग्रपने जाल मे जकव्ते चल जा रहेथे। उस काल मे महींब दयानन्द द्वारा दिया शुद्धि सुदशन चक्र प० लखराम ने अपने हाथ मे जठा लिया। और उसका ऐसा कुशलता के साथ सचालन किया अनेक बिछड भाई फिर हि दू होकर अपने पूराने घर मे लौट आये। उनके जीवन की इस घटना से तो शरीर रोमाञ्चित हा जाता है। जब उन्हे पता चला अमुक ग्राम में कुछ लोग मुसलमान होने जा रहे हैं। वे उस समय घर बठे भोजन करने ही जारहेथे कि पत्र द्वारा उन्हें सूचनामिली उसी भवस्था मे उठकर व रेलगाडी द्वारा उस गाव के लिए चल पड । उस गाव मे कोई रेल्व स्टेशन नहीं बा उन्होंने चलती गाडी से छलाग लगा दी। रेल से गिरने से उन्ह भीट भी लगी खून से रगे वस्त्रों से ही व उस स्थल पर पहुंचे जहा कुछ हिन्दू भडकाव मे आकर अपना धम परित्याग करने जा रहे थे जैसे ही उन्होने प० लेखराम को भौर उनके त्याग को देखा वे भाव विभोर हो गये। उन्होंने यह कह कर धमपरिवनन से अपना निश्चय बदल लिया कि जिस धम मे ऐसे हमारे रक्षक भाई हैं जो अपनी जान पर खेल कर हम को बचाने आये हैं हम उस धम को कदापि नही त्याग सकत ।

प० लेखराम ने प्रपने जीवनकाल में प्रतेक पुस्तक लिखी जो लगभग ३१ हैं। ये मभी पुस्तक विद्यानियों के प्रस्तों के उत्तर में लिखी गयी। महिंच दयानत्व के प्रामाणिक जीवन वारत को लिखने का श्रय भी चमबीर लेखराम को ही जाता है। देश के काने काने में जाकर उहाने जलस्य तरण एकत्रित किये। हिन्दू देवी देवता और सस्कृति पर कीचड उद्यालने वाले प्रनेक पुस्ला मोलवी विधिनयों से उन्होंने अनेक शास्त्राय भी किये। उनकी विद्यास से तकप्रहारों देविषमों जाने में मातक कल गया। उन पर मिर्जापुर प्रयाग लाहौर मेरठ दिल्ली बम्बई की धदालतों में मुकदमें भी बाल गए परसु प्रदालत द्वारा उनके लखे। भाषणों में कोई भी बालप की वात न पाकर मुकदमें लार्ज कर दिए गए। चारों बोर से लोहा लेने स मुखलमान मतान्य मुद्ध हो गए। ऐस ही एक नीच हत्यारे की व बिल चढाये।

उन्होंने ध्रायममाज के भव्य भवन को बनाने में नीव का काय किया है। ऐसा उपदेशक ऐसा लवक ऐसा ध्रमर वेवक ऐसा कातिकारी पाकर भ्रायसमाज मर्वित है। उनके बलिदान के परवात उनकी पत्नी का त्याग भी स्तुत्य है। उनके बीमें स २००० रुपये मिल। व उहीने पुरुकुल कामधी में दान कर दिए छात्रवृत्ति के लिए। उसी छात्रवृत्ति स प० बुद्धदेव विद्यालकार जैसा बोजस्थी विद्वाल भ्रायसमाज को मिला है। चन्य है जीर लक्षराम धन्या है उनको पत्नी श्रीमती लक्ष्मीदेवो। चन्य हैं महर्षि दयानन्द जिन्हें ऐस बलिखानी थिष्य मिल।

शार्यसमाज का मतीत बिलदानियों स धोमित है परन्तु बाज हम उन वीर बिलदानी शहीदों को शौथ कथायों को मूलते जा रहे हैं। स्वामी अबानन्ट धोर महारमा हसराज को तो फिर भी श्मरण किया जाता रहा है शहीद लखराम कुछ उपेक्षित हो रहे है। यदि वीरता को न पूजा न सराहा तो वीरता की जननी बाक हो जायेगी। क्योंकि—

> प्ररेशा शहीदों संयदि हम न लगे भाजादी ढलती हुई साक्ष हो जाएगी। यदि वीरों को पूजा हम नहीं करगे तो सच मानो वीर ाबाफ हो जाएगी।

> > वशपाल सुधाश

स्मारिका के प्रति

मान्यवर

दिल्ली बाय प्रतिनिधि सभा की धोर स प्रकाशित स्मारिका का बवनोकन किया। यद्यपि इस स्मारिका का बायोजन सयोजन एव प्रकाशन सभी कुछ ममीचीन है पर इसका सवप्रधम सम्पादकीय नल महर्षि दयान द एक ज्याति स्तम्भ सचमुच इस स्मारिका की भी एक ज्योति है। सन्प धनुन्छेदीय इस लघु निवन्ध में नक्क ने महर्षि के सर्वाङ्गाए न्विय गुए। को मञ्जूल भीर प्राञ्जन माथा में जिस साहित्यिक विधा स प्रस्तत किया है यह स्मारिका में भपना एक प्रनीषम्य प्रतिज्यापत करती है।

ात न्सिस्वर के ग्रायसन्देश के एक भ्रक में स्वामी अद्धानन जी को प्रदत्त लक्ष की एक भ्रमुपम अद्धाञ्जिल भी देवन को मिली थी। पर तु उसस भी कही प्रविक बढ चढकर महर्षि दयानन्द के प्रति समर्पित यह अद्धाजित है।

च्स को परकर मैं इस विचार में पर गया कि क्या महर्षि के प्रति इसल भी मच्छ कोई अद्वाजिल हो सकती है? यद्यपि कालो य निरविध विपुताच पृथिती इस उदिन के प्रनुसार क्लिसी क्षमता को प्रतिम कहना कठिन है पर तुमेरा मन यह निश्चित रूप स स्वीकार कर रहा है कि महर्षि के प्रति यह सर्वोत्तम श्रद्धाजिल है।

पर्म पिता परमात्मा ऐसी प्रतिभ के घनी ऋषिभक्त सुघाषु एक नहीं अनेकानेक समुत्पन्त करेजा प्रतनी न्थिय प्रतिभा की नथ्य रिक्स्यो स भ्राय-साहित्यिक यगन को सदा समानोकित करते रहें। इस मगन कामना के साथ।

मगनाभिलाषी

दिनाक १०२ ८ ४

नगरा। नगरा। शुरेद्र कुमार शास्त्री साहित्याचाय

स्मारिका सम्पादन

स्नाप की नेबी हुई स्मारिका प्राप्त हुई बहुत बहुत घयव र। स्मारिका का राज्यादन बहुत सम्ब्राहुस है जल सन्ध भी है प्ररणादास्त्र के बात निवस्त सा सभी कविताप सम्ब्री एव सुदर है। साप कोगों ने इस स्मारिका क समादन में न्वस्य शिक्तिश्चा नैनीसिट सीर मुख्याहकर ना सुदर समिनव परिवय निया ने

> हार्दिक बधाई प्रिसिपल मायो सिंह बडीस (मरठ)

लेखक महानुभावो से--

हम आपके लेख एव कविता का स्वागत करते है किन्तु-

- श्रमने लेख वद दशन उपनिषद स्पृति कल्पसूत्र धारण्यक ब्राह्मण्यस्य गीता रामायण् नाति ऐतिहासिक प्राप श्र को को धादश परम्परा की ध्यान में रलकर भंज । किसी एक विषय से सम्बन्धित लेख भी अपेश्तित है।
- २ सत्सग वाटिका स्तम्भ के लिए वेदापदेश (मन्त्र व्याख्या) जो सरल एव भाव पूग हो को नितान्त धावश्यकता है।
- इंदवर भक्ति ऋषि दयानन्द एव बलिदानी वीरो का शौय कथा सयुक्त कविता गीत भी प्रकाशित किए जासकगे।
- ४ जिस लेखक एव कवि की रचना और लेख प्रकाशित होगे उर्ज्य आयसम्देश एंक्टूवण तक विशेषाक सहित नि शल्क दिया जाता रहेगा।
- (किसो लेख एवं विवास के प्रस्तीकृत होने की दशा में वापस भेजने के लिए हम बाध्य नहीं है।

— सम्यादक ब्रायसम्देश

ग्राज की जलझनों के दर्पण में--नारद श्री कृष्ण संवाद

दो प्रकार की ग्रापत्तिया-स्वकृत-परकृत

महाभारत गान्ति एव ग्रध्याय ५१ मे नाग्द श्रीकृष्ण सवाद शाता है। श्रीकृष्ण पारिवारिक कलह के हेतु बहुत बिल्न भीर दुवी थ। श्रीकृष्ण कहते है --

हे महामत । जैसे दो जुड़ारियो की एक ही माता एक की जीत चाहती है तो इसरे की पराजय भी नहीं चाहतो । उसी क्कार मैं भी इन दोनो बाहक और बहुर धापस में लढ़ने बाल दोनों ही जिसके स्ववन हो उसके लिए इसस बढकर दुल की बात क्या होगो ? और व दोनो ही जिसके मुहुत् न हो उसके लिए भी इसने बढकर दुल की वात क्या हो सकती है [?] नारद जी ^{। इ}स प्रकार मैं सदा उभय पक्ष काहित चाहने के कारण दोनों स्रोर से कव्ट पाता रहता हू। एसी दशा मे मेरा धपना तथा इन जाति भाइयो का भी जिस प्रकार मना हो वह उपाय वताने की कपाकर।

व्यक्तिण की यह समस्या भाज की परिस्थिति में प्रत्यक सवेदन गील मानव की समस्या है। डोलचाल की भाषा मे कहें तो प्राय कहा जाता है कि दा नौकास्रो पर पैर मत रक्षा किमी एक नौका पर 🛍 पैर रखना होत्र[ा] सामान्यन यह ही प्रतीत हाता है। पर प्रत्नता यह है कि बदि बही साम न्य रूप स समक में बाने वासी स्थिति ही इसका स्वल समाधान होता तो श्री कुग्ण नहश बीमान् व्यक्ति को नारव में पृक्षने की सला क्या भावव्यकता थी ? वन्तृत समस्या पंचीदा है, दो नौकाओं पर पैर रखने के सदल है। इसोनिए श्री कृत्ण को नारद से पूछन की इतनी प्रवल माकाक्षा उसी प्रकार हुई जिस प्रकार गीना क नूसरे अप्राय के सातवें "लोक में घजन धपनी दयनीय मानसिक समस्याग्री म उद्धिन है। श्री कृष्ण से निवदन करता है -

बत थेय स्यात निश्चित बृद्धि तस्मे । किञ्चम्तेऽह शाबि मा त्वा प्रपत्नम् ॥

हे कृत्ण । मेरे लिए एक निन्वित भीय मार्गवताओं में भाषका विष्य ह तेरी शरण में भाया है।

यहास्रज्न का जामानसिक द्वन्द्व है ठोक उभी प्रकार की रावाणेल स्थिति श्री कृष्ण जीकी नारद मुनि के सम्मूख थी। नारद का जो उत्तर है वह झाज के पारस्परिक ईंच्या, इ.व. हिंसा प्रतिहिंसा से पूर्णंत ब्रापूरित बातावरसामे ब्रवस्य सजदन प्रतोन नहीं होता पर इस तहब की दिष्टिम रसन हुए कि---"हिंसासे प्रति-हिंसा का प्रायुर्भाव स्वाभाविक ही है नारद का समाधान सर्वथा रोममूल निवा-रस है। नारन मुनि कहने हैं— ग्राप रियादो प्रका की हाती हैं बाह्य धौर

—बाचार्य दीनागाव सिद्धान्तालकार ब्राम्यन्तर । ये दोनो ही स्वकृत भीर पर-इत भेद से दो दो प्रकार की होती है। स्वहत का सभिप्राय सपने ही कर्मो द्वारा उत्पन्न धौर परकृत वो किसी दूसरे के निमित्त से पैदा होती है । नारद मूनि कहते है --विना लोहे का वह शस्त्र विश्वसे भाग विजय प्राप्त कर सकते हैं निम्न है-(१) बन्त दान करना (२) सहन-

बीसता (३) सरलता (४) व्यवहार सौर वचन में कोमलता तथा (५) यथायोध्य चावर सस्कार पूर्ण व्यवहार ।

यह तो बह साधन है जिनका सम्बन्ध दूसरों के साथ है। पर संजातीय बन्धू घगर भाग के प्रति कटु और श्रोक्षा व्यव-हार करें तो उनके निवारण का उपाय मधुर वचन द्वारा उनके हृदय बाद से सन को शान कर देता है।

उपनिषद् ग्रौर गीता के शब्दों में उपनिषदा की झाध्यात्मिक भाषा से

यदि नारद मुनि के अभी कुप्ला की दिये गये उपर्युक्त उपदेश का प्रस्तुत करें तो बोष भीर प्रतिवाध इन दो शक्दो द्वारा श्रमिव्यक्त कर सकते हैं। जब मानव का हृदय बहिमल होना है भ्रयांत वह सदा दूसरो क दोष देखता है भीर दूसरी द्वारा भाग्ने प्रति व्यवहार ने सदा दोन भौर तृटि पर ही चिन्तन कर अपने भीतर मानसिक ग्रान्ति उत्पन्न करता रहता है तब उसे उपनिषत् की भाषा मे बाउ कहा जाता है। जब इसके सबबा विपरीत वह सन्तमक हो तनिक वैयं भौर चारमचिन्तन से विचार करेगा नव वह प्रतिकात की स्थिति का प्राप्त करने याग्य हागा। नारद मुनि ने श्री क्रप्शाको स्वक्रन भीर परकृत भापति सम्बन्धी जो उपदेश दिया है वह उपनिषत् के बोध भौर प्रतिवाव के माग का ही बोतक है। इसी प्रकारगीता के १६वे बच्चाय के पहल चार क्लोबो मैं दो प्रकार की सपत्ति दैवी भौर दूसरी झामुरी सम्पन् का वर्णन किया है। देवी सम्पन् के अन्तगत -- (१) भ्रमय (२) भ्रन्तःकरण की विश्वनता (३) ज्ञान भौर योग म निष्ठा (४) दान (५) दम (६) यज्ञ (७) स्वाच्याय (-) तुरा (६) सरलता (१०) व्यक्तिसा (११) सत्त्र (१२) बकोच (१३) त्याम (१४) शाति (१५) दूसरो क दोव न ढढना (१६) प्राणियो पर दया (१७) लोभ कान हाना (१८) स्त्रभाव में कोमलता (१६) नज्जा वीलता (२०) तेज (२१) अमा (२२) वैद (२३), पवित्रता (२४) द्वेव न होना (२५) मेक्क मनियान स हो। - यह वैंबी सम्पत्ति के गुण हैं।

धासुरी प्रकृति के बन 🕽--(१) दम्भ (२) दर्ग (३) श्रमिमान (४) कोब (४) णारुव==कठोरता (६) । श्र**ञान** श्री कृष्ण कहत है कि दैवी सपद मोश्र देने वाली और बासुरी सम्पद् बक्त में डालने आक्री है।

यादव वश की रक्षा-

नारद द्वारा उपाय

थी कृष्ण बादव वस के प्रवृत्तम नेता वे। नारव मुनि इसी पृष्ठमूमि मे भी कृष्ण को परामशं देते हुए कहते हैं --

हे केशव । बाप गावब वश के मुखिया हैं। यदि इसमे फूट हो बबी तो इस समूचे वश का विनाश हो जायेगा। भार ऐसा मार्गं भपनाएँ जिससे भाप का नेतरव पाकर इस बादव गए। तन्त्र राज्य का मुक्तोच्छेद न ही जाय। बुद्धि, क्षमा और इन्द्रिय नियह के बिना तथा धन वैभव का त्याग किये बिना कोई राज्य ध्रयवा सम किसी बुढिमान् पुरुष की भी बाजा के बाधीन नही रहता है। महाभारत सान्ति पर्व भ्रष्याय - १ के इस प्रकरण में श्री कृष्ण के प्रथनों के उत्तर में नारद मुनि कहते है कि — हे ओक्टण । ब्रापने पक्ष की ऐसी उन्नति होनी चाहिए जो धन यश तथा बायु की तृद्धि करने वाली हो बौर कुटुम्बी अपनों में से किसीका विनाश न ही यह सब जैसे भी समान्त हो वैसा ही व्याप करे।

परिमार्जा यौर अनुमार्जन-नारद यादव गणतन्त्र क ग्रह्मण्य एकमात्र नेता श्री कृष्ण का इस गणतन्त्र की रक्षा, उन्नति ग्रीर पारस्परिक सद्भावना की वृद्धि भीर मतत विकान की दिशा में दिये जा रहे अपने उपदेश का उपसहार करते हुए नारद मुनि कहते हैं कि ब्राप परि-मार्जन भीर अनुसार्जन इन दोनो सागों का समन्त्रित भौर मतत भवनम्बन करने वाले हो ।

श्रीकृष्ण का यह प्रश्नमञ्जल स्वामा-विक ही था कि परिमाजन और बनुमाजन इन दोनो प्रकार के मार्गों को बाप मुफें विस्तार स समका दे। तक नारद भूनि इसक उत्तर में कहत है-

परिवाजन क अन्तगत यह साधन हैं (१) क्षमा — यह निवल का नहीं नशक्त का साधन है। प्राय यह समका जाता है कि सब नवुसक व्यक्ति ही क्षमा अपनात हैं। महाभारत म पाडवी को कौरवी द्वारा पाण्डवो कं प्रति किय जा रहे श्रपमान-जनक व्यवहार क प्रति सहनशीलता का उग्देश दन हुए मजून भीर भीम को क्षमा के नारे से कहन है 'ग्रन्ति संतपे जाल श्रक्तारे को हथे नी पर रखने के सदश क्षमा बिसाउ व्यक्तिका ही गुसा होता है। समा बनवता हि भूषसम् '--धमराज क शब्द है --क्षमा बलवान् का भूषण है। नीतिकार कहते है-

- (१) सामा शस्त्र करे बस्य दुर्वन कि करिव्यति। अतुले पतितो बह्वि स्वयमेव उपसाम्यति ॥
 - नरस्य धात्ररस् क्य क्यस्य बासूबल गुरा । नुसारब बाबुक्स ज्ञान ज्ञानस्य ग्रानुषस् क्षमाः

मावार्थ-जिसके हाथ म समा रूपी हिंचयार है दुजन उसका नमा विनास सकता है। जिस जमह कोई तिनका नहीं है वहां प्राप्त स्वय ही शान्त ही जाती है।

मनुष्य का आभूषरण रूप है रूप का भाभूवता गुण है, गुरा का धामु-वण ज्ञान भीर ज्ञान का भागवण क्षमा है।

परिमार्जन के प्रन्तर्गत दूसरा साधन सरलता है भर्यात् युजवान होना। नोतिकार कहते है-

पुला कुर्वन्ति इतस्य दूरेऽपि बसता सताम् । केलकी नन्धमात्राय स्वयम् प्रायान्ति वटपदा ॥ माबार्थ - सरलवा सब्ध श्रेट्ठ

पुरुषो के बुगादूर होते हुए भी दूत का काम करते है जैसे भ्रमर कतकी की सुगध के लिए स्वय ही दूर से भाते हैं। (३) परिमार्जन के प्रन्तर्गत दीवरा

- कोमलता है इसका दसरा नाम है कील इसका धिमग्राय गीतिकार के सब्दो मे-

बहोह सर्वभूतेषु कर्नेस्ता मनसा विरा। प्रमुप्रहरूब दान च शीलमेतत विदर्भुषा 🛊 🖫

मावाय -- मन वयन कम सीर वासी स किसी के प्रति द्रोह का भाव न होना इसके विपरीत दया कृपा भीर दान यह शील है भीर यही कीमलता है।

अनुमार्जन — न।रद मुनि ने आदी कुष्णाको सादवगणतस्त्रको रक्षाके आहे जपाय बताये है उनमें सनुमार्जन' के बाद दूसरे माधन सेवा सत्कार उपकार द्वारा दूसरे के हृदय मे प्रीति उत्तन्त करना है। प्राचीन मारत के नीतिकारी ने परोप- थ कार की बहुत प्रवासा की है। जैसे-

- वरोपकाराय फलति वृक्का परोपकाराय बहुन्ति नद्य । परोपकाराय दहन्ति व ब वरोपकारायमिव शरीरम्।।
- परोपकार कर्त व्य प्रासीरपि धनैरपि। वरोपकारक पुच्य न स्थात् क्रतुशतेरवि ॥
- तृए चाह बर मन्बे नरावनुपकाि ए। वासो भूत्वा पश्-पाति भीकन्पाति रसागसे ॥

भावार्य — (१) परोपकार के लिए वृक्ष फल देते हैं, परोपकार के लिए नदिया बहती हैं। परोपकार के लिए बौए दूध परोत्रकार के लिए यह शरीर है।

- (२) प्राण देकर और धन देकर भी वरोपकार करना चाहिए । परोपकार 🏖 जो पुण्य प्राप्त होता है वह सौ यज्ञो स भी नहीं होता।
- (३) धनुपकारी पुरुष की अपेक्षा मैं तिनके को भी समिक श्रव्छा मानता म तिनक का ना नानक मन्या हुक्योंकि बात क रूप में उसके द्वारा गौर्मों से दूध मिलता है और युद्ध में जब हरपोक उसे मुख में हाल भागता है तब वह प्रपनी रक्षा कर लेता है।

माज को पारिवारिक सामाजिक राष्ट्रीय और बन्तर्राष्ट्रेय - पेबीबा सौर एक दूसरे मे प्रवत रूप से उलकी परि-स्थितियों में नारद द्वाराकी कुष्ण को बताये वये उपाय भौतिक रूप ये सर्वधा संगत सबल और अनुकरणीय है-ऐसा हमारा रह विश्वार है।

के सी रेप/बी under famer ---

भारत की मौलिक एकता

लेखक-प० इ.द विद्यावायस्पति

[१] यदि गम्भीरता से विचार किया जाय ता प्रतीत होगा कि भाज तक जितने प्रश्न उठाय गये हैं उनमे से शायद हो कोई ऐसा वे मतसब प्रश्न हो जैसा निम्नसिखित प्रश्न है—

क्या भारत एक देश है ?

इस देश का नाम कुछ ही रहा हो ,परतुसदाकोई न कोई नाम तो रहाही है। जब नाम रहा है तो नामी भी रहा ही है। सदिया गुजर गयी हम कहें कि युग गुजर गय तो भी श्रत्युक्ति नहीं यह देश और इसका नाम विद्यमान रहे है। एसी दशा में यदि कोई व्यक्ति यह प्रश्न जठावे कि यह देग एक देश है या नहीं क्षो इसे बहदा प्रश्न ही कह सकत हैं। भ।रतकानाम चाहकुछ ही रहाही जब स इतिहास का काई भी निशान मिलता 🖁 तब से यह एक देश माना जाता रहा है और बाब भी माना जाता है जब यह } देश उनति के मर्थो • च निखर पर पहुंचा ह्या य तब यहाक स्मृतिकार ने कहा **41-**

> एतबदेशप्रसूतस्य सकाञावप्रजन्मन । स्व म्य चरित्र शिक्षरन पृथिक्या सबमानवा ।।

्स देश में जल्द न हुए बाह्मणों के समीप साकर पुश्वी भर के मतुष्य सपन चरिल को सीलें उच दिन भी यह प्रक देश या सौर साज भी। बस्य दूप परा चीनता की सबस्य दिला के मीचे से निक सन का यत्न कर रहा है तब भा यह एक देश ही है। जो जीग न्मकी एकता से साफ इन्कार करते हैं यह स्वयम् धपने मह से सपना सर्थन कर देते हैं।

उनका प्रत्ताव है कि हिदुस्तान के टुकड कर दा। टुकड एक चीज के किय जाते है। यदि वह पहन दुकड है ता उनके विभाजन का प्रश्न ही पैदा नही होता। जो लोग इस देश के विभा जन का प्रवन उठात है वह इसकी मीलिक एकता का स्वय स्वाकार कर लते है। वह जब विभाजन का प्रस्ताव करते **₿हैं** तो वह बाक्य क झारम्भ मे जो शब्द सिखते है भान मे उसी पर इडताल फेर देत हैं। प्रश्नजों न प्रपने शव 'गासनकाल के १५० साल तक यह सिद्ध करन का यस्न किया किन इण्डिया कभ एक रहा भीर न रहेगा। वस्तुत बात यह है कि इस सारे समय में श्रयज इस दश को एक मानते रहे भीर भाज भी मान रह है। भो उन्होने एक समभक्तर इसका शासन किया और माजभी कर रहे हैं। सोग देन का अब भग करना चाहत है बहुविभाजन का प्रदन उठाकर ही यह सिद्ध कर रहे हैं कि माज तक यह देश एक है। इसे में भारत की मौलिक एकता कहता हूं। बादू वह वो सिर पर चडकर बोलें। वो किसी राजनीतिक त्याय की क्षिद्धि के लिए भारत की एकता से इकार करना चाहते हैं उन्हें भी स बार होकर मानना पहता है कि जब मानवीय इति हास की किताब खुलती है तब मा यह वेस एक या मध्यकाल ये यी एक रहा धीर साज भी एक हैं।

रहेपरत् साम्राज्य की परिचिलममन समान रही। उत्तर में सिघू दक्षिण मे रामेन्वर पूव मे ग्रासाम ग्रौर पूर्वीय समुद्र भौर पन्चित्र संकाठियाबाड भौर सह्याद्रि भारत की यह सीमाए छाटे मोटे परिवतनो के साथ स्थिर रहा। कभी उत्तर दिशा संयवनान बाक्ष्मण कर दियातो कभी सिमीयन हण नथा शक लोगो ने । कुछ समय के लिए उन्होने देग के किल टस्डको ग्रपने श्रधीन भी कर लिया परन्तु नीझ हा भारत मे काइ विजेता उठा भीर उसने विदशा भात्रमण कारियों का परास्त करके देश को फिर स्वाधीन कर दिया। द लण मंभी थाण बहुत उलट कर हाकर रहे। उस समय के बाय विजेताओं की यह नीति नहीं थी कि भूमि के जिस माग का जीता जाय इसकी स्वाधीन सत्ता का मिटा दिया जायं। महाराज रामचान न लका पर विजय प्राप्त का बार उसे विभीषण को सौप दिया। दक्षिण कराजाओं क सबध मे उत्तर के गासको को यही नीति मय काल में भी रहा ब सारे भारत पर धपन चन्नर्नीराय की सत्ताको स्था पित करना पयाप्त समभन वे न्सम दा का एकता भी कायम रहती था भीर प्राप्ती

हिमालय से लेकर बगाल का लाडो तक प्राक्रतिक मोगाबो से बबा बलण्ड भारत एक हैं। कभी कभा जहरोली हवाए चलती है सोगाए सिक न का ब्राचकाए परा कर जाती है। ब्राज फिर ऐमी बागी हवाए देश में विषय-च फ ना रहा है। लोकन सदियों का इतिहास कहता है युग बाबे चन गये सिहासन बदलते रहें ताज बदलते रहें लेकिन देश ग्रावण्ड थीर एक उगहें

बडी लोज के साथ हम ग्रह लेख प्रस्तुत कर रहे है प इ द्व जो (नपृत्र स्वामो अद्धानतः) उच्चकीटि के साहित्यकार पत्रकार इतिहासकार ाज नीतिज्ञ थे। उनकी लोह लेखनी से कोई विषय श्रखता नही ररा। बाज के सन्दर्भ में यह लेख पत्रोग है।—सम्मादक

कितना सदिया तक जारां रहे यह कहना कठिन है। प्राचान साहित्य के धनुनीलन स प्रतीत होता है कि वह आय धनाय सघष धनेक सदियों तक जारी रहा होगा।

धात में वह संवय समान्त हुया जिसन भारत में बागों की सवाधित सता को बड़ता से स्वाधित कर दिया यहा भारत के प्राचीन दितहाय का दूसरा ध्रध्याय नुस्हाता है। देग के धनाय धीर दस्युया तानस्ट हो गये है ध्रष्या शक्ति हीन होकर राज नियम के नीचे धा मये है। यानव यमशास्त्र और सम्राट भरत का एकच्छान्त्र शासन — यह दो उस युग की मूलमूत घटनाए है।

भारत की र जनतिक एकता स्था पित हो भाने का यह प्रमित्राय नहीं सम् फना चाहिए कि एक नार देव का एक खुत्र बासत हो जाने के याचान् उसकी स्थिति में फिर काई परिवतन नहीं साया उससे सनक परिवतन प्रातीय सामा ज्या का केन्न द्यारतीय सामा ज्या का केन्न द्यारतीय सामा ज्या का केन्न द्यारतीय सामा अक्सा केन्न द्यारतीय सामा सम्या-या में जाता कभी द द्रमस्त में कभी सम्या-या में जाता कभी द द्रमस्त में कभी सम्या-या में जाता कभी द द्रमस्त में कभी सम्या-या में जाता कभी द द्रमस्त में

का स्वाधीन मत्ता भा। एस समय बहुत कम भाष जब लगभग सारेदा को ध्यवाय कहे देश के बड भागका एक द्वत राजाकोई न रहा हा। कभी राववता क्याकौरव क्यामीय नाक्यी गप्ता वशाबदलत रहे पर एक सत्ताकिसी न किनी न्यान पर कायम रही यदि किसा बाहरी बाघात के कारए। कुछ, समय के लिए भारत का भग हुआ भी तो बाड ही समय में युद्ध द्वारा या विदेशी जातियों क भारतीय बन जान के कारए। एकता किर स्थापित हो गई। हम कह सकते है कि शायद सैकडो सदियों क उतार चढाव भारत की भौतिक एकना को नप्ट नहा कर सके। भारतवासी जानत थे कि यह हमारा देश है भौर विदाी स्वीकार करते थे कि शास्त वय भारतवासियों का देश है भीर वह भ्रय सारी दुनिया न भ्रतन भौगोलिक राजननिक घोर सामाजिक स्थिति रखता

(३) मुसलमानो के खासन काल में भारत का मौलि ह एकता मौर भी प्रविक स्वण्टता से प्रकट हो गई। मुसलमान धाक सएकारियों के प्रनेक बत्यों ने योड यो? समय के पक्षात् उत्तर दिखा से भारत पर साक्षमण किये उनमें से किसी बत्ये के सरदार की भारत का चौडा सा हिम्मा

जीतने में सफलता हुई धीर किसा को श्रविक हिस्सा जातने म । दोनो ही दशाश्रो म मुसलमान शासको का प्रवृत्ति यह रही किवहसारे हिदुस्तान क स्वामी बन सकें। उन लोगों की विष्यं से साराहिन्द् स्तान वही था जिसका ग्रपना परना नाम भारतवयथा। जितने बनो ने राय किया उन में में सभीन निर तर यह यन जारी रखा कि वह मारे नेश पर ग्रपनी हुकमत शयम कर। कानि । तासभी राजवशोन की परत् उनमंस ग्राशिक सफलतामुगल वरा के राजाओं का हुँ। वह प्रेनही तो द० जसन भरत के हाकिम बन गयं थे। यह ध्यंत दन योग्य बान नैकि जब तक न्हाक्ति सम्पन र न सारे देश पर नामन स्थापित करने का उनकी प्रवृत्ति जारा रती उनका इस्टि म यह बात एक निचित संयक्ष रूप म विद्यमान रही कि हि टूक्श पवत से लकर गमे वर नक का निदुस्तान एक हा देश है। हिंदातान का बादगाह वहा कहला सकता है जाइस सारे देश का बादपाह

मृतल साल यदा प्रत एक विगाल र यजाति के मध्य से हमा । हम विवास स्वरूप सकते हैं नियदि वा कि कि मेंच सर्पा मिनी शतियान प्रापटती ना साल स्वरूप यह ले तारत-० में पूण स्वराय का पित हो गया ना पर न स्व सा कुछ सी नियान जयस प्राप्त से स्वरूप से नाति की जयस प्रयास मार्ग होति की जयस प्रयास मार्ग हैं या समय यहा पण्चिम के नोग साव- पण्य नाहर सा गये भीर न रतव पर स्वष्ठा का प्रमुख

प्रप्रजो के गासन सा का मा स स की विषयाया यह के कि उमन प्राप्य से ही सारतवर का भ्रमिम गम्पा को धपना लब्द कर्मा लिया कि हि दून्नान का मक्स कही ही सारते के कि है है नियम है और सारादे के वही है जिसका पूराना नाम नारदे के पह सपने लक्स की प्राप्त में माने के सारादे के वही है जिसका पूराना नाम नारदे कर है। एक सा के निर नर प्रपन्त के यह सपने लक्स को प्राप्त में सफल मीनि कोव में तारा मारन खण्ण प्रवानों के राख मीनि कोव में तारावा मारावा है। एक सा प्राप्त मारावा स्थान स्थान सिंद्रां क्या प्राप्त प्राप्त मारावा स्थान में सिंद्रां क्या मारावा स्थान स्थान में सिंद्रां क्या स्थार अध्यवहारिक क्य म भारत व्यवका एक भ्रा स्थाप्त होनार

ग्य प्रवार हम देखत हैं कि जब कभी
मनुष्य जाति के प्रिश्म पर में प्रायदात का परांच कर होगा नज में यन देश एक दार खरण स्थान गाना गर्म है। युग धार्य धीर चने गय भिन भिन जातियों के नाम गर्मिया पर देउ धीर काल का गाल में दिल्लीन हो। गय परस्तु खाल तक भागन की मीतिकर एकता की उपना वाई भीन कर सका जा सारे देश का न तक बन गया। यह है भारत की गीतिक एकता।न वह धाज तक सच्चित हुई धीर न दागे वाध्य तक सच्चित

यज्ञ का वैज्ञानिक स्वरूप

८ मृष्टिविज्ञानमे इस यजका एक धीर स्वरूप हम लोगा क सामने उप स्थित होता है जिस प्रकार जीवन की रक्षा के लिए बाक - प्राण - मन तीनो का हाना ग्रनिवाय है उसी प्रकार मृद्धि रचन के लिए धरिन बायू धादिय का होना भी परम भावत्यक है। यही धानि वायु और धादिय त्रयी विद्या के स्रोत है अपिन ऋग्यद का ऋषि है बायु सामवेद का और अस्तित्य यज्ञवद का ऋषि है वैज्ञानिक दिस्टकोण से यदि इस बान पर विचार करें ना एक बान स्पष्ट हो जानी है—ग्रानि ऋग्वेद क म्बदर पिण्ड के निमाण का विज्ञान देता है। वायु पिण्ड मण्डल को घरने वाली परिवित्था द्रादिय पिण्ड मण्डलका कद्रविदुहै जहास गतिका स्फुरण होता है। यह भन्ति हो तो है जो सुप्टि रचनाके के निमेसमायाहुआयाहै व्सी धारिन के द्वारा ही ज्यवान पदार्थों की सृष्टिहो रही है इस झनि को ही यन बेदी में प्रज्वलित कर मुस्टिनिमाण का एक यत्र चक्र ऋणियाने प्रस्तृत किया इस के वैनानिक रहस्य पर धनुस बान अपेक्षित है।

१ यज्ञकी समिषा —

मर्हीय स्वामी त्यानन्द सरस्वत न यज्ञ की समिब का चयन करन हुए नी ऐसी सुनिधामी का वणन किया है जो चलने के बाट कोबलान बन पार समि ष ए जल कर राख हो जाए ऋ यमस्कार विधि में निखने हैं पत्नाना नामी पापल वड गुलर ग्राम बिन ग्रादिकी समिना चरी मे चनना चाहिए। समिवाए कीडा सर्गान ना मलिन दे । पन्न न हो भीर भपवित्र पन्थ भानि मन्धित न हो एसी समित्राको का विधान ऋषियो न क्यो किया[?] इसका नै≈ निक पश बाज के बनानिक युगम विचारण य 🤊 । जो लक्खी जलकर कोयला बनाती हैं उनमे क वन Carbon का मात्रा ग्राप्त होती है भीर Co² Gas का निमाण अधिक होत कैपरतुजो समिधा जलकर राजा हो जाता के उसन Carbon की माजा विल्कुस हो नगण्य होती है भीर जो कुछ Carbon होता है वह भी मजीय पदायाँ 🕏 साथ नाना प्रकार के भौर उसरे सूक्स रासायनिक पदाय बनाने में प्रयुक्त हो चाताहै भीर Co₂य इस प्रकारकी दूसरा भीर कोई गस जिसमे नुकसान हो सकता है नहीं जान हा सकती। नस प्रकार सम्पूर्ण यज्ञाय पटाय ग्रीर समिधा ग्र[ि]न के साथ ध्रात्मसान होकर वाता बरण नोपवित्र करने कारसायन बन वाती रे गौर यनवरी के कार्रों ग्रोर सुर्गा उन भीर स्वास्य व उक सब्दिका

निम ण होने सगता है। यदि प्रसाववाती के कारण कभी कोई विवेशी गैस या Co. ग्रावि का निर्माण हो भी जाता है तो वदी मेल गेपसो के गुरुम भी ग्रहन बार केले के लम्भे बादि के द्वारा इन तमाम गैसी का ग्रहण हो जाता है भौर श्रव बाक्सीजन का निर्माण हो जाता है। यज के चारो तरफ मेलालाओं ने घरा जल इन विषैली गैसी को प्रपने घटर घला नेता है भीर उनका कोई बुरा प्रमाव नहीं पडता। हा यज के माध्यम से निकसा सक्ष्म गैस के रूप में विभिन्न पदाय वाला वरण को शुद्ध पवित्र करने से सहासक हो जाता है। क्तमान युग में वैज्ञानिकों को इस सन्दर्भ ने धवस्य धनुसवान करना नाहिए और वज के माध्यम से ससार के भग्दर व्याप्त ब्रद्द्यण की दर करने का प्रयास करना चाहिए।

१० वज्ञ स प्रयुक्त द्रव्य--

यज के बादर प्रयोग से झाने वाले पदार्थों के उत्पर भी विकार करना आव यक है महाँच स्वामी दय नद ने कार प्रकार के ज्यों के प्रयोग का वणन अपने याय सम्कारविधि में सिखा है।

- (१) सुर्गावत कस्त्री केशर सगर तगर देते वन्दन इलायची आस फल जावित्री स्थार।
- (२) पुष्टिकारक—सतदूष फल काकान चावल गह उक्द शादि।
- (३) मि^र गक्कर शहट खुधारे दक्कमादि≀

(४) रागनाशक--गोषसता मिलोय बादि बौषधिया ।

ण्न पदार्थों के साथ भात कियडी (बिनानमक) और सडबू बोहन भाग स्रादि पदार्थों को भी यज से डलने का विद्यान है।

उपरोक्त विचान से स्वयः विदित
नोता है कि यह में एक एक पन बन
स्पतिया सौर सौगिषियों को ही डालता
नारिए। न्य प्रस्त में नातप्य बाताया का
निवश वस्ट्य है — प्रतिन्हा व यन।
कतस्पतियाजिय हीत वतस्पत्यों हि यशीया
नहि मनुष्या प्रकान यहतस्पत्यों न स्युत्त
स्मावान्य नतस्पतियजिय हीत । नः। हो। हो।
प्रयोग होना चाहिए। यदि वस्पत्तक प्रदाव
न जिल और यह करना हो तो किस स
यह किया जाए नक प्रकान में शतप्य
बाह्या से सावस्त्य धीर जनक का
सवार प्रवो स्वास्त्रक सीर जनक का

तद्वीतानमको वैदेह याजवल्का पत्रच्छ वेरथा सनिहोत्र याजवल्का वेद सम्ब्राहिति किमिति पथएवति । २ यत पयो न स्वात

लेखक शिवाकान्त उपाध्याय

केन बहुवा इति । वीह्यवामासिति। यह वीह्यवो न स्वातास केन बहुवा इति । वा धारस्या भोषक्य इति । यदा उरस्या भोषक्यो न स्यु केन बहुवा इति । कानस्ययोगेति । यद वानस्यस्य न स्यात केन बहुवा इत्यदिनरिति । तदायो न स्यु केन बहुवा इति । ३। स होशाय न वा इह तहि किचनाशीवयैतत सत्य स्वदा धार्मिति । वत्य यानस्वयानिकां वेनुस्वान्ते दराशीविह हो वाण ।)

SING 991212

जनक ने याज्ञवरनय से पूछा—हे याज्ञवरनय क्या तुम प्रनिहोत्र का तत्त्व जानते हो ⁹ याज्ञवरनय ने उत्तर दिया कि सज्जाट मैं प्रनिहोत्य का तत्र्व जानता हु।

जनक ने पूजा — किस प्रवाप के हवन करना चाहिए ? इस ते। यदि इस न मिले तो ? जो चावल हो। यदि वो चावल मिले तो न जानी प्रनाज से। जनकी धनाज कर धादि कुछ भी न मिले तो उसके द्वारा स्वन करना चाहिए और वक जल भी न मिले तो किस प्रवाप के यह करना चाहिए? इस पर शाजवल्य ने उत्तर दिया कि वदि कुछ भी पास न हो तो सम्बा आ अस्त में अस्त करते रहना चाहिए। इस अकार का उत्तर हिना चाहिए। इस अकार का

उपरोक्त कथानक से स्थप्ट है कि
यानीय पदाय प्रामा एकत तुल अस्पति
भोगवी बार्सि हो सकते हैं। दूसरी पीते
हिष्य नहीं वन सकती। सोय यतके बादर धमानत यस प्रवसा मानकतावता ऐसे
पदाय भी गान देते हैं बिनका निषय है
धीर यस तामशी वन बाता है। अच्छे
प्रमाय केशान पर हुएँ प्रमाय का साम यम पर हुएँ प्रमाय का साम

इस प्रसान ने एक बात की चर्चा धन्य करना बाहता हूं। कुछ लोग यह से पगलों को बार मारकर उनका माह गानते है भीर प्रमास्य में पत्नु बित बाते धन्यकेन यहा मादि का उदाहरूल होते हैं। धानकत इस प्रकार के प्रमास प्रवार सिता पारि पित्रकाक्षों ने बहुत और से किए जा रहें हैं। किए जा रहें हैं। किए जा रहें हैं। किए जा रहें हैं।

बदमत्र के दुष्ट विनियोग का निस्न जवाहरख देखने योग्य है—पश्चति के समयक जब बकरी के बच्चे (मैगने) को फासी सगाकर मारते हैं तो यजुर्वेस के निम्निसिक्ति मन्त्र को पढते हैं म्हलस्व त्या बेवहिंव पानेन प्रति मुज्यानि । यकु ९ १६ नम्त्र का स्वप्त है कि है निदानों की हुर्वि । तुन्हें प्रविद्यानि व नम्त्र के तुन्हें के पाने में बायता हूं। (न्यामी स्थानन्व प्राच्या) यहां बकरे के तने में फन्या वालने का कोई विष्यान नहीं है। पर स्वाय वाला सालाहारियों ने कर सम्त्र का पत्रत ध्रव करने के एक हो हो है। पर स्वाय का सालाहारियों ने कर सम्त्र का पत्रत ध्रव करने कर हो दुर्ग विचित्र करने का दुरावह प्रारम्भ कर दिया। इसी मन्त्र से ध्रवले मन्त्र में निम्म सान्य है सनु स्वापात सम्य में निम्म सान्य है सनु स्वापात पत्र में निम्म सान्य है वह स्वापात सम्यों नु बन्ना सनुष्य । यव ६ १६।

इसका सथ करते हुए मासाजारियों ने वीयवाए की कि है वकरों के कच्छे तुन्हें गारने के लिए तुन्हारे गाता पिता आहें न जु सब कर्मन के हिन्दू कराने के लिए तुन्हारे गाता पिता आहें न जु सब सुनान हो। क्या कोई हुदिमान व्यक्ति उपरोक्त कथन को सथ मान सकता है। ककरों के माता पिता कहा मिली भीर स्पने ही वच्चे को मारने का उच्चित कथा है कि माता पिता न जु वग सब लीव प्यनी सन्तान को भाष्यय को ने के कर सज्जी शिवा और इहाच्य शाहित हु प्राप्त हु की सन्तान को भाष्यय को ने कर सज्जी शिवा और इहाच्य शाहित हु प्राप्त हु कर को सन्तान ही ।

एक धौर प्रसम देखिये — यब्बद का भन्त्र है — बाब ते बुन्बामि प्रारा न श बामि बन्यू हो शु बामि श्रोत्रको श बामि नाभिन्ते श बामि भेडल्न शु बामि प उन्ते बुन्बामि बरित्रास्ते शु बामि।

यजुवद ६।१४

इस मात्र का दुष्ट विनियोग किया गयाधीर निम्न प्रकार से इस के गलत अय का प्रचार हथा।

जजान की पत्नी बकरी के मारे बच्चे के विभिन्न धनों का 'परफ कर के कहती हैं कि हे मेमने तेरी वाण' प्राख बच्च कान नामि उपन्येदिक पुरा तथा तेरे वरित्र को जुढ़ करती हैं। एक बात विचारणीय हैं वर बकरा की मार नया तो लाक को छ कर बमा कुछ यह किया का सकता के छोर कौन हव प्रकार की भाव नामा को छुनेया। बात तो मरी पत्नी हैं पर गुडिकरण हो रहा है। कैसी विभिन्न विस्तरना है। इस न का उचित्र सब जिस्तर प्रकार है— मानाय बचने शिष्य के कहता है कि मैं गुन्तारी बाणी प्राय जब्दा है कि मैं गुन्तारी बाणी प्राय जब्दा वो का मारे खुनों ने प्रवृत्त हु।

विन लोगी न उपरोक्त मत्रो का तुष्ट विनियोग किया है उनके सामने एक धीर प्रत्न उपरिचल हो गया। इसी घम्याय का समला मत्र घाधीयोंट का सब है। प्रकरण के सनुसार साथाय प्रपत्ने शिक्य को साशीबांट देशा है कि वाक द्यारायनाम प्रचल्दा साथायान चलुन्दा साध्यायन सन्दा साथायान चलुन्दा साध्यायन ताब स्रोन जायायानस्य । ६११

नेरी वणी उन्नत हो प्राण बलादि गुण युक्त हों दिंग्निम सहो कार्न

सदगुल व्याप्त हो तथा तेरे दिन सुखपूर्वक बीतें। परन्तु इन मासाहारियो ने इस मत्र को भी घसीटने का प्रयास किया और मन्त्र का दुष्ट विनियोग करके इसे मरे हुए बकरे के लिए भाकीवंचन बना दिया, मरे हुए बकरे से कसाई कहता है कि-कि मरे हुए बकरे नेरी बाणी फले फूने, तेरा प्राण कने फूले, तेरे बल कर्ने-फूलें, तेरे कान कर्में फूले और तरे दिन सुख शान्ति से

इस प्रकार की धतुम्भव घीर धसगत हात का प्रश्रय इन पशु बलि का विद्यान करने वाले पासण्डियों ने वेदों के मन्त्रों का गलत विनियोग करके सोगो मे किया ग्रीर बजो में पशु बिल का भ्रामक ग्रीर गलत प्रचारकिया।

यहा एक बात स्पष्ट कर देना चाहता ह कि पशयाग में सास-भक्तियों ने मन्त्रो का दुष्ट विनियोग भीर उनका गलत ऊट-पटान वर्ष इसलिए कर दिया कि इन बन्त्रों का प्रयोग पशु सजयन में किया गया है। पञुष्मीर सज्ञपन दोनो शब्दो को न सममने के कारण यह भूल हो गई। पश् भूज्य की उचित व्याख्या समक्रने पर यह भूल न होती। पश्यतीति पशु। पशुका प्रचं है बालक । श्रवनं १४।२।७६ निति-छन्त्राम् मातुरम्या उपस्थात् नाना रूपा पश्चवो कायमाना । यहा पशुधी का धर्य बासक की है। Grifeth ने भी इसने पश् का प्रयं Babies ही किया है।

सङ्घन का धर्य भी मारता लिया मुद्धा जो कि सम्भवनही है। सज्ञपन का वर्षहेसस्यक प्रकारेण जान देता। पशु प्रज्ञपन का धन पशुओं को मारनान होकर पशुद्रों को सम्यक् प्रकार से ज्ञान हेना। सजपन क धर्यमारना नही हो सकता । इसमे अतपन का प्रमाण उल्लेख-

जीवमेव देवमा हविरमृतममृता-गाम् । ३।८।२।४

देव लोग जीवित है मुदें नहीं - इस लिए उनकी इवि भी सजीव हो सकती है मुद्दानही। जीव वैदेवाना हवि.। इस क्रप्र पशुसज्ञपन का अर्थ हुआ कि विनीत शासक अपने आचाय से विद्यावान् होने की प्रार्थना करे और प्राप्तार्थ उसे उचित उपरोक्त मलो द्वारा विकास देखार धाशीवदि दे भौर उसका निर्माण करे।

इस प्रकरण मे पशु शब्द का वैज्ञानिक पक्ष भी विचारसीय है। शतपय बाह्यण मे एक स्थान पर भाता है कि --- (प्रजा-पति) तेषु (पशुषु) एवम् (धन्निम) धप-श्यत् तस्माद्वै ते पश्चव । ग०६।२।१।४ प्रजापति ने इन पशुस्रों में सन्निको देसा, इसी कारण इन्हे पशु कहने है। ये पशु खुलोक भीर अन्तरिक्ष लोक के अन्दर चत्पन्न वे कल और रेल् हैं जिन्हे रात्रिया व्यवकार मे देखा जासकता है। इसलिए इन्हें पशुकहते हैं (पञ्चतीति पशु) यहाइन चानुरासमी बाह्यसम्बन्ध । श०६।४।४४ पशुसीका कर्णन नहीं है जो पृथ्वी पर बूमते रहते हैं। इन पशुप्रों में घारनेय करा हैं, इनके घल्दर चमक है। इन पशुधों के

भन्दर से विकीरण होता रहता है तथा निविध्न अन्तरिक्ष मे ये पशु भ्रमण करते रहत हैं। इन्हीं आग्नेय तत्वों को यश के भन्दर प्रयोग करने का विधान है। यजुर्वेद में स्पष्ट बाता है-देवा यद् यज्ञ तन्वाना धबष्नन् पुरुषम् पशुम् । विद्वान् जो यज्ञ करते हैं उसमे पुरुष पशुद्रों को बाबते हैं। य० ३१।५१ बाधना शन्द यहाँ सगति-करण की धोर हमारा ध्यान बाकुष्ट कर रहाहै न कि पशुर्कों के बाधने की झोर। सोगो न पशुका वैज्ञानिक स्वरूप न सममः करयज्ञ के निमित्त घोडा—गधा, बकरा प्रादि साकर बाधना शुरू कर दिया और देखते देखते इन पशुची की

बाबा होता है। इन उदाहरणी से स्पष्ट है कि बहा पशु शब्द का धर्य घोडा गवा या गाय बादि के रूप मे पशु नहीं है यहाँ तो पशु वे धरा परभारा के रूप हैं।वे बौलोक, अन्तरिक्षलोक मे आग्नेय शक्ति के साथ विचरण कर रह है। इन्ही पश्ची को यज के निमित्त उपयोग में लाया जाता

इन पश्चा में सम्न ग्याप्त है और उनकी चनक से ये कण चनकते हैं। एक भीर प्रसम प्रस्तुन करना उनयुक्त होगा। भ्राप्ने बाव सर्वपञ् । ऐ० द्वा० २।६ श्राग्नेया पश्चव । तै० ब्रा० । १।१४।३ सर्वे पश्चवो यदग्नि तस्माव् भ्रम्नी **बै॰ ३।८१ द। यहा पशुधाठ प्रकार** बतलाये गये हैं। यह ग्राठ प्रकार के Charged करेंगो का ही बरान है जा प्रकाश युक्त हैं और भ्रपनी रहिमयों का विकीरण करत रहन हैं।

ततो रेवतय पशकोऽ सुरुवन्त । के शाहरवा

भ्राग्नेयाइच मदलइच पण्।

B 0 212371 ये अग्नि भीर मस्त के Sarticles चमकन वाले होते हैं। इन माठ प्रकार के पशुमी (Charged Sarticles) के ग्रन्दर विभि-न्नता का कारण भी जैमिनी ब्राह्मण मे बडे वैज्ञानिक रहम्य का सकेल करता है। कनातिरिक्तो मिथुनौ प्रधननौ । उनम्

बन्यस्य ब्रितिरिक्तम ब्रन्यस्य क्रनम् द्मतिरिक्तादि वै मिथुनात प्रजा पशव प्रजायन्ते । जै० २।६६१ ।

नाना प्रकार के मिथुन की क्रिया प्रयोत् षषण से विभिन्न Charged Sarticles "पशु'की उत्पत्ति होती है। धन्तरिक्ष के अन्दर कायुद्धाः अपिन पृथ्वी सादि के परमाणु विभिन्न परिस्थितियो मे बिन्न भिन्न सं समीग घपण सादि द्वारा भनेक प्रकार के पशुधों का निर्माण करत हैं। इन परमाणुको का दिव्यत्व Reflecting Properties भी भिन्न भिन्न होता

मीमासा दशन मे धरिनप्टोम का बणन मिलता है । इस प्रग्निप्टोम के बाठ प्रकार भी इन्ही बाठ तरह क Charged Sarticles of Reflecting Properties का प्रारूप है।

इन तमाम उपरोक्त उदाहरणी द्वारा यह बात र ध्ट हा जाती है कि यज्ञ के पशु ब्राग्नेय परमाणु ही हैं ब्रीर इनका किञ्चिन मात्र भी सम्बन्ध इन साधारण पज्ञों से नहीं है। ग्रत यज के भन्दर बकरे घोडे बादि पशुक्रो की बलिका कोई बग्गन अथवा विधान नही है। सुधी पाठक भीर ग्राज कल क वैज्ञानिको का यह उत्तरदायित्व है कि इन तमाम बातो को विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में देखने ग्रीर समभने का प्रयत्न कर । सम्पूरा वैदिक वाडमय इस प्रकार क धनेकी वैज्ञानिक रहस्यो से परिप्रा है । हमे प्रयास पूवक इन बातो को समभना पडेगा और पशु बिल ऐसे महान् पाप को सम्पूरण रूप से बन्द करने भीर करान का सकल्प लेना होगा ।

थाव ग्रन्थों का पठन पाठन बन्द होने के कारण और परस्पराध्नो से पौराणिकता के सन्निवेश के कारण यज्ञो का दास्नविक विज्ञान सम्मत शास्त्रीय स्वरूप हमारे सामने बहुत घुचले रूप मे प्रकट होता है क्षाज ऋषि परम्पराए उनका वैज्ञानिक स्वरूप, उनकी महत्ता भीर उग्योगिता हमारी सूभद्रभ स बहुत उपर की वस्तु जान पहती है। कि भी प्रयास खड़ाय होना चाहिए। उसी दिशा में एक हल्का साप्रयास प्रस्तुत करने का प्रयत्न इस निबन्ध में किया गया है। - यज्ञ मे प्रयुक्त क्रियामी का वैज्ञानिक स्वरूप

दानवता के पथ पर बढ़ते

मानवता के त्राज चरण

राघेश्याम ग्रायं, विद्यावाचस्पति

मानवता का होता है उपहास नप्ट हुमा है जुचिता का विस्वास, कन्दन ही क्रन्दन का अवती— तल पर, हुमा मनर सा वास।

> विकारा है चहु इन्द्र-दुराव, होता है दुर्गुण का स्नाव, भ्रमित हुई है बीच भवर ग्र--माज मनुबद्धाकी ही नाव।

वर हैं सभी बने अभिशाप वडारकत का अनुस्तित चाप, मातो है वसुषा कण कण से--दनुत्र वृत्तियों की कटु बाप।

> लुठित त्याग तथा विवदान, कृठित स्वर्गिक स्वामिमान, सोया पढा हुमा है युग का --विमय व्यक्तिता नवव्यक्तिमानः

दुरमिसन्धियो का जजाल, विरता वने तिमिर का बाल, दूराग्रही मानस की वृत्ति---दिखाती भैरव रूप ग्रकास ।

> करता है युग हाहाकार, सकट बढता भगम भपार सर्वनाश की ज्वालाधी मे--जनताम् पूकर ससार।

नही रहा प्रव सत्याचरण, कही उपद्रव कही मरण, दानवता के पथ पर बढते--मानवता के भाज चरण।

> युद-लूट है, बरबादी, विष्वसोन्मुस धावादी, युगकी सकट ने है फसी---धजर-धमर सी घाजादी।

साहस-प्रतिमा व उत्साह, करते प्रतिक्षण ब्रात्मदाह माती वसुषा के प्रतिकण से--करणामरी श्रसीमित श्राह ।

> पाशविक प्रवृत्तियो की सत्बिट करती भपनी मोहक पुष्टि बिल देकर करत रहते हैं---सत्प्रवृत्तियो की, हम तुब्दि।

है ब्राह्माद जरा श्रामवण देता इस जयती का कण कण मनुषुत्री । बब उठी । बढी तम--स्वीकारो, समग्र निमत्रण।

> युगकाहै इतिहास बुलाता मनुज मनुज का श्रमिनव नाता भावी पृष्ठों में स्रोलो तुम---दिव्य शक्ति ले, भ्रपना स्नाता ॥

बिल प्रारम्भ हो गई जबकि बहुत स्पष्ट वर्णम है--

राष्ट्रवाधवनीय । भ्रन्नहिनौ । ग्रस्निर्वा ग्रह्मा । प्राज्य नेव । शतपव बाह्यरा । शतपव बाह्यण मे एक प्रसम पर इन घोडो सघो भौर वकरो का दर्शन मिलता है ---

क्षत्र वा सम्बद्धा बैदय व सूत्र

घोडा क्षत्रिय के धनुकृत मुख-बालाहै बैस्य शूद्र—वधे के गुण वाले हैं तथा बाह्यण वकरे के गुण- पशको रमन्त । शत् ६।१।४।१२

इन उदाहरणों से स्वष्ट विदित होता है कि जिन पक्षु घो का यज मे वर्णन है वे साचारण पशुनही हैं। ये पशु अनिन से रमा करते हैं भीर वे पशु भ्राग्नेय परमासु दुलोक से भन्तरिक्ष लोक होने हए पृथ्वी लोकतक अनगकरन रहते हैं। एक पर्गु सववा परमारण Electricaly Changed Graficles हैं जो Positive Charge के साथ तीनो लोको मे षुमते रहते हैं। जैमिनी बाह्यण मे एक बर्णन मिलता है---बच्टातमान् पञ्जन्।

कांगड़ी पुस्तकालय में सन्दर्भ सेवा गुरुकुल

जगदीश विद्यालकार पुस्तकालय प्रध्यक्ष, गुरुकुल कांगडो विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पुस्तकालय ग्रान्वोलनके प्रखेता ऋवि दयानन्द—गुरुकुल पुस्तकालय कीस्या-पनाभी गुरुकुल कामडी की स्थापना के साथ ही हुई । गुरुक्ल की स्थापना स्वामी श्रद्धानन्द जी ने १६०२ मे ऋषि दयानन्द सरम्बती के शिक्षा सम्बन्धी विचारी को मृत रूप देने इन् की। ऋषि दयानन्द सरस्वती ने ग्रायंसमाज की स्थापना करते हुए अपना यह मत भी प्रकट किया था गुस्तूल के छात्रकातचा गुरुकुल के कि ग्रायसमाज के माध्यम से प्रत्येक ग्राय जन स्वाध्याय मे रुचि जागृत करें तभी विद्याकी वृद्धित गाधितद्याका नाग हो सकता है। ऋषि दयानन्द ने सज्ञान से ज्ञान की भोर स्नाय जनो को प्रवृत्त करत हुए ग्रायसमाज के सविधान में इस

श्रायसमाज की इस सरवना से पुस्त-काल याध्य अके पद का सुजन ऋषि दया-नन्द सण्स्वती की उस दिव्य इव्टिको प्रका-शित करता ह जिसक ग्रन्तर्गत ग्राय जनो को ऋषि नेय श्राह्यान किया कि प्रत्येक द्याय स्वाध्याय मे लीन रह तथा विद्या की वृद्धिकरे। पुस्तकालयाध्यक्ष के इस पद की व्यवस्थाके साथ ऋषि दयानन्द का यह एक अपूर्वस्वप्न था कि प्रत्येक भाय सभासद अपन स्वरूप को पहचानने हेत् श्रेष्ठ ग्रथो का पारायण निरन्तर करता रहे। स्वामीश्रद्धानन्द ने भी गुरुकुल की स्थापना के साथ ही पुस्तकालय निर्माण की भोर गम्भीरतास व्यान दिया।

ध्यवस्था को अगीकृत किया जिसके अनु-

सार ग्रायसमाज के पदाधिकारियों में

पुन्तकालयाध्यक्ष का प्रतिस्थापित किया।

धार्यसमाज ग्रीर गुरुकुल पुस्तकालय-

स्वामी दयानन्द सरस्वती को भारत मे पुस्तकालय ग्रादोलन का पितामह कहा जा सकता है। स्वामी दयान द सरम्बतीने उससमय समाजों की स्थापना के साथ ही प्रत्येक समाज में एक पुस्त-कालय की कल्पनाकी तथाउस पुस्त-कालय की देख रेख हतु पुस्तकालयण्ड्यक्ष के पद का सूजन किया।

सत्यायप्रकाश के रूप में स्वामी दयानन्द ने जिस कृति का जल समुदाय के रूप में सामने रखा, वह कृति भी हजारों सन्दर्भों से सत्यासत्य के तत्त्वी की उद्-भाषित करने के महान् सन्दर्भ ग्रन्थ के रूप में ग्रावेप्ठित है। वैदिक विषयो पर प्रमाण सहित जनाव देन वाला ऐसा सुन्दर सन्दर्भं ग्रन्थ वित्व के पुस्तकालय को स्वामी दयानन्द से प्राप्त हुमा।

गुरुकुल कांगडी पुस्तकालय मे भी ऋषि दयानन्द केइन विचारों का प्रति-विस्त्र बृहत् रूप से देखने को मिलता है। ऋषि दयानन्द के समस्त ग्रथ तथा उन ग्रथीं पर निसी विस्तृत समीक्षाए पुम्त-कालय में भाय सामाजिक संग्रह के रूप में पृथक् कक्ष मे सयाजित हैं। इसके प्रति-रिक्त बैदिक सिद्धातों एव बाय सामाजिक जीवन मूल्यों पर प्रकाश डालने वाले सहन्त्रो प्रथ भी इस कक्ष के साथ सम्बद्ध

पुस्तकालय का भतरम गभस्य सम्बन्ध है। गुरुकुल ने प्रत्येक छात्र ज्ञान की जिज्ञासा प्राप्त करने हेतु पुस्तकालय की शरण में भाताहै, तथा पुस्तकालय के द्वाराउसकी त्य ज्ञान क्षुषाको विपूज वैदिक साहित्य के मागर द्वारा तृप्त किया जाता है। पुस्तकालय में रखी उपस्थिति पजिका के धनुसार गरुकुल मे पढ़ने वाला हर दूसरा छात्र पुस्तकालय का उपयोग करने पुस्तकालय भ्राता है।

पुस्तकालय की मदभ सेवा का श्राम-प्राय समभने हेन् पहले सम्कृत कोश के धनुसार सन्दभ शब्द का ग्रभिप्राय श्रयं ममभ लेना चाहिए। सदभ शब्द सस्कृत धानुद्रभ (बाबना या बुनना) मे 'सम्' उपसगलगकर बनाहै। धर्यात एक माथ वाषने वाला, सयोजित करने वाला, मिलाने वाला जो कि प्रतिपादित करते हैं। दो या श्रिषक वस्तुश्रो का सयोग । पूस्त-कालय के सन्दर्भ में दो बिन्दू हैं पाठक तथा पुस्तक पाठक का पुस्तक मे लग हो जाना ही सदर्भ सेवा की चरम सफलता है।

पुस्तकालय के द्वारापाठकों को दी जाने वाली वैयक्तिक सहायता को ही सन्दर्भ सेवा कहा जा सकता है। सन्दर्भ सेवाकाकेन्द्र विन्दु पाठक ही होता है जिसका प्रसाय पुस्तक से कराया जाता है। एक विदेशी विद्वान् जैम्स ब्राई वायर ने पुन्तवालय की सन्दर्भ सेवा की व्याख्या इन शब्दों में नी- 'म्राच्ययन और शोध काय हेतु पुस्तकालय सम्रह की व्याख्या करने म प्रदत्त सहानुभूतिपूर्ण धौर धनौ-पचारिक वैथक्तिक सहायता को सन्दर्भ काय कहते है।"

उपर्युक्त परिभाषा के सन्दर्भ में गुरू-नुस पुस्तकालय का मर्वाधिक उपयोग यहां के छात्र, प्राघ्यापक एव समीपस्थ रहने वाले शोष श्रव्येता निम्न प्रकार से उठाते

बांखित पाठ्य सामग्री में सहायता---

गुरुकुल में पढने वाला प्रस्थेक छात्र प्राध्यापक एव शोधकर्ता पुस्तकालय में **उपलब्ध** पाठ्य सामग्री निम्म प्रकार से कोजने का कार्य करता है।

- १ ५० प्रतिशत छात्र, प्राध्यापक एव कर्मचारी सम्बद्ध पुस्तकासय कर्म-चारी से पुस्तक के नाम या लेखक के धाषार पर सोवे कमचारी से बांखित पुस्तक प्राप्त करते हैं। इस कार्य मे पुस्त-कालय में २० वर्षों से कायरत बुकलिपटर गोविन्द एक धनश्याम का वांछित पुस्तकों के सम्बन्ध में प्रजित लम्बे प्रमुभव का नाम बहुत के छात्र एव प्राध्यापक त्वरिक्ष रूप से उठाते हैं। पुस्तक का नाम कहते ही य कर्मचारी उस पुस्तक को पाठकों तक पहुचा देते हैं। इस के श्रतिरिक्त पुस्त कालय के २० प्रतिशत पाठक वाखित पाठ्य सामग्री स्रोजने हेतु पुस्तकालय मे उपलब्ध विषयानुसार रजिस्टरों की सहा-यता लेते है । जिस के धन्तर्गत उन्हें पुस्त-कालय के विषयवार संग्रह की जानकारी प्राप्त हो जाती है। वांखिल पुस्तक का वर्गीकृत नम्बर इन रजिस्टरों में देखने में मिल जाता है। जिसे पुस्तकालय कर्म-चारी को देकर प्राप्त कर लेते हैं। २० प्रतिशत पाठक वर्ग केटेलाग की सहायता से वास्तित सामग्री की खोज करते हैं।
- २ नवीनतम विश्व साहित्य की जानकारी निम्न सन्दर्भग्रन्थों के आर्थार पर दी जाती है।
- १—बुक्स इन प्रिन्ट (यू एस ए) १६८३ — समेरिका में १६८३ तक प्रका-शित समस्त पुस्तकों की जानवारी लेखक विषय एव शीषक के भनुसार।
- २—क्रिटिश बुक्स इन प्रिट १६८४--ब्रिटेन में प्रकाशित १६८४ तक की समस्त पुस्तको की जानकारी।
- ३--ब्रिटिश नेशनल विवलोग्राफी ब्रिटेन मे उरलब्ध समस्त प्रकार की १६८३ तक नी पुस्तको की सूचना।
- ४-इण्डियन बुक्स इन प्रिन्ट १६८४-भारत मे १६८४ तक प्रका-शित समस्त पुस्तकों की जानकारी देने वासा सन्दर्भ ग्रन्थ।
- ५---पुस्तक समीक्षा पत्रिकाओं द्वारा नवीनतम पुस्तकों की जानकारी पुस्त-कालय में निम्न पुस्तक समीक्षा पत्रिकाए घाती हैं।
 - १ बुक रिब्यू डाइबेस्ट
 - २---इनप्रिन्ट
 - ३---इडियन बुक क्रोनिकस
 - ४-इ डियन बुक इहस्ट्री
 - ५-साहित्य परिचय
- ६---विकास न्यूज इत्यादि

विभिन्न प्रकाशकों के केटेलाव जो विववानुसार व्यवस्थित है, श्रवसोकन

हेतु पाठकों को उपलब्ध हो सकते हैं। शीय के क्षेत्र निश्चित करने में सन्दर्भ सहायता-

गुरुकुल का कोई छ।त्र शोध उपाधि हेतु पत्रीकरण करामा चाहे तो उसे पुस्त-कालय के द्वारा शोध के उसके दिव के विषय की जानकारी दी जा सकती है तथा बहुत से शोध छात्र भपना विषय चुनने में इस सन्दर्भ सेवा का लाभ उठा रहे हैं। शोध छात्रों को सेवाए निम्न प्रकार से दी जारही हैं।

- १ पुस्तकालय के सन्दर्भ विभाग में भारत के सभी विश्वविद्यालयों मे १६८ ई तक किये शोध कार्यों की जामकारी 'एसो-सियेशन बॉफ इंडियन यूनिवर्सिटी' द्वारा सपादित "बिब्न्योग्राफी ग्रॉफ डॉक्टरल डिबर्टेशन १८७०-१६८३" नामक सन्दर्भ ग्रन्थों की सहायता से दी जाती है। इन बहुसडी सन्दर्भ ग्रन्थों से शोध छात्रो को यह जानकारी हो जाती है कि उनके दिन कै विषय में शोष काय भारतीय विषय-विद्यालयों में कहाँ हुमा है तथा किसके निर्देशन में यह कार्य किया गया है।
- २ इसी प्रकार समाज विज्ञान, कला तथाविज्ञान के शोब छात्रो को भारतः वर्षं के विश्वविद्यालय के ही शोध काय नी जानकारी नहीं दी जाती वर्लक विश्व के प्रमुख विश्वविद्यालयों मे उनके रुचि के शोध क्षेत्रों में क्या-क्या कार्य हुआ है इस की जानकारी "डिजर्टेशन एक्स्ट्रक्ट भाग-ए एव वी" के माध्यम से दी जाती है। यह सन्दर्भ ग्रम मासिन पतिका के रूप में मिसिनम विश्वविद्यालययू एस ए क्षे निक्लता है। इसके भ्रन्दर विषय का वर्गीकरण के अनुमार किये गये शोध कार्यों का सार सक्षेत्र भी प्रकित होता है। पुस्तक चयन में सहायता-

पुस्तकालय मे प्रध्यापकों द्वारा श्रेष्ठ माहित्य को कथ करने की सस्तुति देने हतु चन्हें निम्न प्रकार की सन्दभ सहा-यता पुस्तकालय में उपलब्ध कराई जाती

- (क) विषयवार पुस्तक विक्रेताओं के नवीनतम केटेलाम पुस्तक चयन 🤌 सम्बद्ध विभागों को भेजे जाते हैं।
- (स) पुस्तक समीक्षा पत्रिकाए उप-लब्ध कराई बाती हैं।
- (ग) नवीनतम पुस्तको की प्रदर्श-निया धायोजित की जाती है। पुस्तकीलय द्वारागत एक वर्षमे विभिन्न पुस्तक विक्रेताचो को सामत्रित कर तीन पुस्तक प्रदर्शनियो का भायोजन हुआ। इन प्रद-र्श्वनियों के माध्यम से प्राध्यापकों द्वारा पुस्तकालय हेतु २ ४० लाख रुपये मूल्य की श्रनमोल पुन्तको का चयन किया गया। ५ विश्व में प्रकाशित पत्रिका साहित्व
- की जानकारी-विश्वविद्यालय के प्राध्या-पकों को विश्वमें प्रकाशित उन के विषय में सम्बद्ध पत्रिकाओं एव उन में

शेष पृष्ठ ११ पर

ग्रमर शहीद पं० लेखराम ग्रार्य मुसाफिर

कुछ अकाव था।

--प० भवानी प्रसाद

साज इस सलाब्दी के सहितीय सम-सरमापक, बायसमाज के सावाय महिष बसानन्य के एक एसे ही भावक शिष्य सविकान्य समेशवारक के पवित्र वरित्र कृती पर्याकोचना का प्रसङ्ग प्राप्त है।

धार्यसमाज के परिन्ति मडल में तो कोई भी ऐसा व्यक्तिन होगाओं वर्मवीर प० केकराम के नाम भीर काम को न जानता क्षे किन्तु धायसमाज से बाहर भी करोडो मनुष्य प॰ लखराम के नाम से परिचित 🖁 । प० सखराम की भावुकता ही सर्व-साधारणामे उन के इस परिचय की मूल-ूकारण बनी थी। वैसे तो वे पजाब के केसम जिले के एक अप्रसिद्ध सारस्वत बाह्यसा कुल से जन्मे थं परन्तु उन में प्रपने पित्कृत की सैनिकवृत्ति स प्राया हुआ हारीर कासगठन तथाक्षात्रतेज का कुछ इस्त्रामी प्रवद्य विद्यमानथा। उन के पितामह महता नारायणसिंह पत्राव के सिक्सकालीन विष्तव के वीर योदा ये और कई सबाभी में घपने हाथ दिखा चुके चे। उन्हीं महता नारायणसिंह के पुत्र महता तारासिंह हुए जिन के पुत्र प० क्षेत्रराम का जन्म द सीर चैस सवत् हिश्ध विक्रमी को युक्त के दिन उनत श्रीदपुर ग्राम मे हुझा था।

वे बाल्यकाल से ही अन्वुक तथा कार्मिक थे। प्रपने चचाप० गडाराम जी को एकादशी का तत करते हुए देखकर र्वासक लेखराम ने ११ वर्षकी भवस्या में बड़ी अञ्चास एकादशीका तस विधि-पूर्वक रखना भारम्भ कर दिया या। उन को बाल्यकाल में केवल उर्दुफारसी दी शिक्षा मिखी थी, क्योंकि उस समय पंजाब भौर सयुक्त प्रान्त मे उसी के पढाने की यरिपादी प्रथलित थी । यह शिक्षा भागे पसकर अन के मोहम्मदी मत की बाली-चना करके में बहुत सहायक हुई । उन के किराधी-बीवन में केवल वही वाठ उल्लेख होंग्य है कि वे तब भी स्वतन्त्रतात्रिय, इत्तुल्यन्मरित तथा तास्कालिक प्रस्युत्तर क्रबीख वे और कविता की धोर भी उनका

सवत १६३२ वि० के पौष मास मे व प्रवने चना पहिता गडाराम इन्स्पेक्टर पुलिस की सहायता से पेद्यावर पुलिस मे सः जेंग्ट के पद पर नियुक्त हो गए। ऊपर बताया जा चुका है कि प० लेखराम के बालहृदय में ही भावुकता तथा वार्विकता का प्रकुर विद्यमान था। धार्मिक सिख सिपाही के सत्सग से उन की प्रवृत्ति पूजा-पाट में किशोरावस्था से ही हो बुकी थी। वे प्रात काल स्नान-च्यान में निमन्न रहत ग्रीर गुरमुक्ती में लिपिबद्ध भगवद् गीता का पाठ किया करते थ। श्री कृष्णा की मक्ति मे तन्थय रहते थे। जीव ब्रह्म की एकता के विञ्वासी भीर वैराग्य प्रवस्त वे। २१ वर्ष की ग्रवस्था में उन के माता-पिता ने उन को विवाह बन्धन में ग्राबद करना चाहा पर उन्होने अपने वैराग्यवध उस को स्वोकार न किया। उन का अर्थ जिज्ञासा दिन प्रतिदिन बढती ही गई। उन्ही दिनो उन को लुवियाना के प्रसिद्ध स्वतन्त्र विचारक मृशी कन्हैयासाल अलख-धारी के प्रत्य पढने का भवसर मिला। ग्रलखबारी जी के ग्रन्थों सं उनको ऋषि दयानन्द के बायं वस-प्रकार भीर भायं-समाज की स्थापना का वृत्तान्त ज्ञात हुआ धौर उन्होने डाक द्वारा ऋषि दयानस्य प्रणीत ग्रन्थों को मना कर पढना भारम्भ किया। इससे उनके विचार सर्वेशा बदल गण भीर वे भागें बन वए। घटनाकम की कैसी विलक्षण समानता है कि पहित लेखराम जी के समान इन पक्तियों के लेखक का विचारप्रवाह मशी कन्हैयासाल जी अललकारी की पुस्तको द्वारा ही बार्य-समाज धौर उस के धानायं के ग्रन्थों की भौर फिराया, किंतु जुगनृ भौर सूर्य मे

चिकना घडा वैसे का वैसा ही विद्यमान है। वैदिक धर्मावलम्बी बन कर पडित लेखराम ने सबत् १६३६ वि० के धन्तिम भाग में सीमाप्रान्त के यवन प्राय पेशावर नगर मे भायसमाज की स्वापना की थी। उस समय पेशावर बार्यसमाज के सव-सर्वा वे ही वे । वे धीर उनके चार-पाथ साथियो से ही पेशावर भायसमाज सगठित बा। पडित लेखराम के मन म जीव ब्रह्म की एकता भादि के विषय में कुछ शकाएँ उस समय तक बनी हुई थी। उनकी निवत्ति के सिए उन्होंने बार्यसमाध के सस्थापक्र ऋषि दशनन्द के स्वय दशन करने का निस्थय किया बीर साढे चार वर्ष की नौकरी के परवात् एक शास की खुट्टी लेकर १७ मई सन १८८० 🗫 (स॰ १६३७ वि०) को भ्रज-

क्या साम्य हो सकता है ? पहित लेखराम

की खुद भौर भावुक प्रकृति ने उनको

ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों से प्रभावित करके

धर्मेवीर सार्थे श्रीकड बनादिया भीर यह

मेर पटुँचकर सेठ फतहमल जो की वाटिका में ठहरे हुए ऋषि दयानन्द के प्रथम और सन्तिम बार दशँन किए। इस समायम का बृतान्त उन्होंने स्वय इस प्रकार दिया

स्वाभी दयानन्द के दर्शन से यात्रा के सब कब्ट विस्मृत हो गए और उन के सत्योपदेश से सब सशय निवृत्त हो गए। उन्होंने महर्षि से उन से अयपुर मे एक बगाली की उपस्थित की हुई यह शका पूछी कि जब भाकाण भीर बहादीनो सर्वें व्यापक हैं तो दो व्यापक एक स्थान पर कैसे यह सकते हैं ? महर्षि दयानन्द ने एक पत्थर उठाकर कहा कि जिस प्रकार इम मे मन्नि, मिट्टी भौर परमात्मा तीनो ब्यापक हैं। उसी प्रकार बह्याण्ड ने बाकाश और बह्य दोनो ब्यापक हैं। सूक्ष्म बस्तु मे उस से भी मुक्ष्मतर वस्तु व्यापक रहती है। बह्य सुरुवतर होने के कारण सर्वध्यापक है। लेक्सराम जी निस्तत हैं कि इससे मेरी शान्ति हो गई। ' उन्होन महर्षि के धन्य सराय उपस्थित करने की भाजा देन पर उन से उसाप्रकापूछे थे। उनमे से ३ उन्होने उत्तर सहित स्वय निसे है। श्रेष उनको विस्मृत हो गए थे।

१ म प्रत्न—जीव ब्रह्म की भिन्नता मे काई वेद का प्रमाण बतलाइए।'

२य प्रश्न — ग्रन्थ गतो के मनुष्यो को शुद्ध करना चाहिए या नही ?

उत्तर-धवन्य शुद्ध करना चाहिए? ३य प्रश्न-विजुत् नवा वस्तु है धौर कैंबे उत्पन्न होती है ?

छत्तर— विद्यान सब स्थानी मे है ग्रीत रगड से पैदा होती है। बदलो की विद्युत्भी बादलो ग्रीत बायुकी रगड से उत्पन्न होती है।

ध-त से मुक्त भादेश दिवा कि ' २५ वर्ष की भाग्नु से पूज विवाह न करना। ऋषि दवानन्द के स्वत्य सत्या से पण्टित तिक्षराम के वार्षिक विचार वह हो। गए और वैदिक चम पर जन का विवास चन्नान के खमान सटल हा गया।

भ्रजमरसे लौट कर उन को दिन रात प्रचार की ही बुन सभी रहती थी। उन्होने पेशावर शायंसमाज की धोरसे अपने सम्पादन में धर्मी देशक नामक उर्दकामासिक पत्र जारी कराया। उस के साथ ही मौद्धिक व्याल्यान भी प्राथ दते रहते थे। कुत्र दिनो पश्चात उन की बदली पानिर से बन्य पुलिस स्टेशनों को हो 🐗 । उन की घार्मिक लगन के कारश उनके विवर्गी श्रफसर उन से मनोबालिन्य रकाने लगे के। उधर प्रश्लेक्टराम की स्वतन्त्र कारका विगहित स्वकृति (सेवा-वृक्ति) ने विको दिन क्षिम्य हाती जाती भी। अल्ख**ें** उन्होने २४ मुनाई सन् १=७४ (ब॰ १६४१ के) की सदा स्मरा**गीय तिथि को पुरिवत** की सेवा से

त्यागपत्र द दिया और उस मे यह भी लिख दिया कि दो महीन की कान्ती सियाद के परचात सुक्त को राकते का अधिकार किसी को भी न होगा। दो महीने पञ्चात १० सितम्बर सन् १८८४ ईं (स॰ १६३१ वं ०) की उन्होन मनुष्यो के दासत्व से सदा के लिए मोक्ष लाभ किया। इस दामत्व श्रवला के कटत ही सार्जेण्ट नखराम, पण्ति लेखराम बन गए। धन वे दिन रात ग्राय धर्म के प्रचार मंश्तरहन लगे। एक धौर वे वैदिक घम के विराधियों की धाक्षेपपूरा पुस्तकों के उत्तर लिखने में सलग्न रहत ये तो दूसरी ग्रोर मौलिक प्रचारार्थं वराबर पयटन करते रहत थे। इस शहनिका की य त्राके कारण उन का नाम 'आर्थ मुसाफिर ग्रार्थयात्रीवाशार्थपथिक प्रसिद्ध हा गया और कार्यं जनता म आय पथिक पण्डित लखराम के नाम से विरुधात हो गए।

उनके लेखबद्ध प्रचार वा पुस्तक प्रणयन का सुकरात उन के मुसलमानी के बहुमदिया सम्प्रदाय के प्रवर्तक कावि-यान जिला गुरदासपुर निवासी मिरजा गुनाम प्रहमद कादियानी के साव समय से हुआ। था। उत्तर मिरजाने एक पुस्तक बुराहोन ए ग्रहमदिया निस्ती वी, जिस मे ब्रायंसमाज पर बडे कटु ब्राक्षेप किए गए थ । प० लेखराम न उन क उत्तर मे धकाटय तकपूण 'तकखीव ब्राहीन ए-श्रहमदिया ग्रन्थ लिखा। 'फिर मिरजाने धनुचित धाक्रमणोस परिपूण सुम-ए-चन्म प्रारिया लिखा जिस के उत्तर मे पण्डित लेखराम न युक्तियों के जाल से परिप्रां नुम्स ए-सात ग्रहमदिया प्रणीत किया। मिरजान घोषणानी यी कि मेरे पास इविरकदून सदेश लान है भीर में ग्रलोकिक चमत्वार दिवला नकता*ह* तथाजिस मन्द्यको मृयुके लिए मैं ईन्बर से प्राप्ताकरूगा वह मनुष्य एक वयको शीतर मर जाएगा। यदि मैं य दानो काय न कर सक तामै कान्यिगन बेद्यापके पास रहकर उनकी पर्णक्षा करने बाल मनुष्य को २००) मासिक की दर से २४००) दगा। पण्डित लेखराम ने उन के इस ब्राह्मान को स्वीकार कर के उसकी परीक्षा करनी चाही और उस की २४००) जमाकर देन को लिखा किंतु उस ने नानाप्रकारके बहान बना कर टाल दिया। पण्डित ल्लराम ने स्वय कादियान पर्चकर मिण्जासे मौसिक विवाद किया त्रिस मंबह निकलरही गया। जनतामे उस के हेत्वाभासो धौर वामत्कारों की पोल खुल गई धीर उसके बहुत से धनुवावियो पर से उसका प्रभाव चठ गया । मिरजासे पण्टित लेखराम का बहस्त्रव दिन प्रतिदिन प्रतानी नया भ्रोर उसन एसा नयकर रूप घारण किया कि मन्त में पण्डित लेखराम इसी की बलि हो गए। (ক্ষয়)

आर्य जगत् के समाचार

कृष्ठ निवारण धाम का शुभारम्भ

नागदा। धायसमाज द्वारा सवालित धायुवदिक वर्माय धोषवासय के तत्त्वाद-धान में कुरु निवारण बाम का गुभारम्म शहाशिह्म ब्रो० कै० एम० वाण्डी राज्य पाल मध्य प्रदेश के कर कमलो द्वारा दिनाक २३ १ ८५ को सम्पन्न हुआ।

हम धवसर पर राज्यपाल महोदय न उपस्थित विश्वाल जन समूह को सम्बोधित करन हुए कहा कि प्रायतमाज के सस्वापक महिष् दवानक सरस्वती ने समाज स्थार न लिए महान कानिकारा काय किये हैं उनके ह्यार स्थानिक सायसमान की ता समाज सुधार एव राष्ट्र निर्माण के कार्यों से प्रमुख प्रीमका रही। धामुजिक चिन्स्सा पढ़ित का हचारो बचा पुत्र हमारे बहा धानिकार किया गया था। धामुजिंद ते हा पश्चिमी जगत ने ऐलोपमी का धानिकार किया। बुधी की बात है कि स्थके महत्य को हम किर से सहस्य करने लगे हैं। हमे इसमे धामुनिक नये तरीके धपना कर रहकी विकास के एय पर धाने बढ़ाता है। कामचेनु बीषचिमो ने कुछ निवारण में सफलना मिले यही नरी गुन कामना है।

समय से पूज समारोह स्थल पर राज्यपाल महोस्य के पवारने से जनता का हृदय गुद्दा हो गया। स्थापन द्वार से कुठ निनारण भाग तक कदार से को नहीं बालिकाफ़ी ने सारके सुभागनन पर पुण्य जवा करके स्वापत किया। सन प्रथम सारकी क्यापने यह जेदी पर हो। रहे यक में पत्र से पूण्याहित ही। स्वके बाद दीप प्रथमित करके कुठ निवारण व म का सुभारम्म किया। प्राप का बहा हिन्दू मुस्लिम दिखा है साई सपुदाय के प्रतिनिधियों ने मालाख़ी से स्वापत किया। इसके लाख ही प्रायममान नावरा का भोर से आ वार के था तेवार में स्वापत मालाखी से स्वापत का स्वापत किया नावरा की भोर से श्री क्यापीय प्रीयमान ने पुर मालाख़ी से स्वापत किया। कायकम की सम्बन्धता श्री के की क्यापत की भी के की काय से स्वापत की भी काय से स्वापत की स्वापत की

प्रयक-जोबासह राठौर

म लो-धायसमाज नागदा

पद्माव केसरी लाला लाजपतराय के सस्मरलो का सकलन

एक निवंदन

प्रात स्वरणीय पवाब केसरी साता नावणतराय का परिचय केने की साव स्वरण नहीं है। जैसा ज्वाविद्य है वे महान् देशमक्त दूरवर्षी रावनेता राष्ट्रहित के मवग प्रहृति न्वत त्रता प्रादानन क अमर खहीर प्रवार विचारक कुशस्त स्वल्याक्त स्वाति प्राण लक्क प्रावन्य वक्ता प्रगतियाल गिलाशास्त्री खाषिक विकास के प्रवत उनायक सावन्य वक्ता प्रगतियाल गिलाशास्त्री खाषिक विकास के प्रवत उनायक सावन्य वक्ता प्रगतियाल गिलाशास्त्री खाषिक विकास के सनेक जावन वरित्र उपल च है जिनम उनके बोवन तथा सवतो मुखी काय कलायो का विनाद विवरण विकास है। पर उनकी सस्मरण प्रधान काई पुरवक नहीं मिलती। सदस्यरण अमिन के अस्थितत्व तथा चरित्र की मूक्ष्म तथा प्रवरण विगेषताक्षों को उद् चाटित करत है।

में ताला लाजपतराय के तस्यरण सकतन के काय मे गत धनक वधा से सवा हुआ हू तथा इस काय मे पर्याप्त सफता जो मिली है। देश विदेश क जनजन १३० व्यक्तियों के सम्प्ररण प्रधान लेल प्राप्त हो वृक्त है। नस्मरण लिकने के देही धर्मिकारी हो सकत हैं जिनका लाला जो या व्यक्तियत सम्प्रक ट्या हो—यह सम्प्रक निक्र का रहा हो प्यवा दूर का—जिम्होन उनक साम्मिक्य मे रहते हुए उन्हें देशा सम्प्रक हो बिन महानुभावों से लाला जी का सम्प्रक रहा हो उनसे मेरा विनम्न धामह है कि वे धपना सम्परण प्रधान लेल मेजने का कष्ट कर। उन महानुभावों क नाम तथा पत की सूचना क लिए भी मियेदन है जो ताला जी क विषय में व्यक्तिसम्ब जानकारी

आशा है पजाब कसरा की स्मृति से सर्मापंत इस पुनीत कार्ब से सब सम्बन्धों का सहय तथा पूज सहयोग प्राप्त होगा।

विञ्ल शरस

एस १७५ कोटरा सुसतानाबाद भोपास ४६२-००३

बलवीर हकीकत राय को याद किया गया

ह्यायसभाज गन्दिर न्यू नोती नगर ने वमधीर बाल हुकीक राय का बिलदान दिवस वस समारोहपूरक मनाया नया। धनेक रूकूत क खात्र छात्रायों ने भाषण् कविता नाटन एव सामूहिक नान में भाग लेकर विस्तामी नीर क कार्यों को स्मरखा

इस अवसर पर दानवीर महाश्रय धमपास की ने सगक्षग १५०० र० क पारि-तोषिक सिल्वर शीस्त्र कप मे तथा बहुत सी क्षानवयक पुस्तकें विजयी खासखात्रामी को प्रदान की।

> तीयराम थाय सयोजक---धमवीर नाल हक्षीकतः राय नलिदान समिति ।

आर्यसमाज दरियागज का निर्वाचन

घायसमाज दरियागज नई निरुषी २ का वाधिक चुनाव विनाक १०२ ८५ में विविचत् सम्पान हुवा जिसमे निम्न धविकारीमश् सव सम्मति से चुने गये ।

- १ श्री बी० बी० सिंहल-प्रधान
- २ की क्षमपाल गुप्ता—उपप्रधान
- ३ की एस एम मटनामर
- ४ श्री वीरेन्द्रपाल रुस्तगी-मत्री
- ५ श्री दत्त बादव द्याय उपमत्री

स्रातरक सदस्यों क चुनने का अधिकार अधिकारी वय को संगाने प्रदान किसा।

मन्त्री आयश्रमाज दरियागव नण्दिल्ली २

सीताष्टमी एवम् ऋषिबोधोत्सव

प्रातीय साथ महिला सभा कतत्त्वावधान में साथ कृष्या गुरुकूल न्यू राज्ये नगर में २७ फरवरी को प्रात ११ ३० वजे में ४ ३० तक श्रीमती शांतिदवी सिनिहोत्त्री की सम्पक्षता में समारोहपूबक मनाया जा रहा है।

इत प्रवक्त प्रविधासी सुन्ना वर्गा है। है। इत प्रवक्त प्रकीपती सुन्ना वर्ग श्रीमती प्रवादमं द्वाविका (नेर्ड), इत विविधासी श्रीमती सुप्या सल्होत्रा प्रांति प्रशेत आपक एवं कविवादार करेंने। प्रथमा स्वरमा सहसा सन्विली—अकात प्रार्थ

बन्तर्राष्ट्रीय युवा नय पर फुटबाल हर्नामेन्ट का ब्रभूतपूर्व बायोजन नेता जी सुभाष शाखा प्रथम, भगतसिंह शाखा दितीय: सर्वोत्तम खिलाडी का प्रस्कार त्र्याशे थाऊं ने जीता



केश्रीय धाय गुनक परिषद् दिल्ली प्रदेग के तत्त्वाधान से गुना वन के उप-सदस से गस्तुतन्त्र दिवस पर २६ व २७ जनवरी - ४ की छुतकाल स्टीवयम माइक्स टाउन्न दिल्ली से फुटवाल पुकासती का प्राधानन किया गया। परिषद् की साक्षाओं के इस आयोजन से २२ टीमो ने भाव लिया जिस से नेता जी मुख्य साला राती बाग प्रस्त व निकान्त नगर की सगत साला द्वितीय ताण गुनतम बहादुर नगर का सीसरा स्थान रहा।

इस के प्रतिरिक्त समोच पुरी जहागीर पुरी किश्वनगण ऋषि नगर, पूर्वा चिननर सब्बी वर्ण्डा समय पुर बादबो की टीमो ने मान निया। प्रथम ग्रिड्रीझ खाला को शील्य तथा खिलाबिको को मैदल दिए गए। दवॉल्स विचादो भी प्राह्में बाठा किशन्त नगर को फुटबाल खेलता लिखाडी के प्रतीक चित्र से दिवेष पुरस्कृत्री, किया गया। गुरुकुल कागडी पुस्तकालय (शेव पृथ्ठ = का)

प्रकाशित सामग्री की बानकारी निम्न श्रन्दर्भ स्रोतो से दी वा रही है।

(क) श्रविकास विषयो में अन्तर्रा-ब्टोब सार सक्षेप पत्रिकाएँ मनवाई जा रही हैं जो उन उन निषयों ने प्रकाशित सामग्री का सार सक्षेप प्रस्तुत करती हैं। वैसे साइक्लोजिकम एम्सट्टब्ट मासिक-बनोविज्ञान की ५००० पविकामी का क्षार सकतन प्रस्तुत करती हैं। पिलीकस रिक्यू एव्सट्टर, भौतिक विज्ञान की १००० विकामो का सार प्रस्तुत करती है। विवर्देशन एब्सट्रक्ट कला एव विज्ञान में विभिन्न विष्वविद्यालयों में स्वीकृत त्रह्येक पाक्षिक सक मे १५०० शोध कार्यो कासार सक्षेप दिया जाता है। इसी ब्रकार कन्टेन्ट कस्टैन्स के नाम से साप्ता हिक पत्रिका में कॅला एव विज्ञान की ३०० धन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकास्रो की विषय सूचिया दी जाती हैं। मैथमैटिकस रिब्यू के द्वारा गणित के विषय में प्रकाशित ⊿चिकाश साहित्यका सार सक्षेपसक-किन किया जाता है। ये सब पत्रिका सदम ग्रन्थ पुस्तकालय में सदमं हेतु हर शबय विद्यमान रहते हैं।

(क्) बहुषा प्राच्यापकों को 'सकरिष इन्टरलेशनल पिरियोडिकस्स' निर्देशिका के प्राच्यम से यह जानकारी नी प्रिविक्तन के प्राच्यम से यह जानकारी नी प्रिविक्त 'साहित्य कहा कहा से किस तरह का निकल रहा है। प्रारतीय पनिकामों की जानकारी प्राप्यापकों की हायरेक्टरी म्याक हिन्द्रमन पिरियोडिकल एव प्रेस एक एस्टरटाईक्टर वाविक निर्देशिका के हाएश से जाती है।

६ वंदिक सिद्धास्तो की गुष्ठपोषित करने काले प्रमाणो की प्रवितस्य चान-कारी वेना-गुरुकुम पुस्तकालय का प्रचान सब्द गुरुकुक के स्थापना पूल्यो से जुडा हुआ है। बहुचा यहा पदने वाले

त्रों मे तथा प्राध्यापको मे वैदिक सिद्धान्ती के सदभ जानने की जिज्ञासा पहती हैं। इस बब्दि से पुस्तकालय के रूप से हम ने यहां केनन शाफ नेमोनिक्स^{*} का सर्वेवा नवीन प्रयोग किया। उस के र्मानंत विद्यार्थी काल में लेखक के द्वारा माद किए गए लगभग १००० वेद मन्त्र एव दर्शन सूत्रीया सवयन किया गयाजिने वर्गीस्थतः विवयानुसार बाटा गया । बहुषा भी भी जिज्ञासु इसत्र वैदिक सिद्धान्तापर प्रमास बानना चाहे उस याद किए गए मन्त्री का उदबाट्य तथा सदभ विना किसी विलम्ब के दे दिया जाता है। इस प्रकार की सदर्भ सेवामे सदन कर्ताका वैदिक बाहमय में गहरी पैठ होना भाव रवक है यह एक सर्वथा नवीन प्रयोग है तया मुदकुल पुस्तकालय के पुस्तकालया-म्यक्ष की हैसियत से से**सक इस** का किया-जबन सदर्म सेवामें कर रहा है। इस

प्रकार की एकेश्वरकाद पुनर्वन्य नैत-वाद, पूर्तिपूजा, कर्मफल सोखा, बोड्या सस्कार खादि के बारे ने तुरन्त सदर्म दिए जाते हैं।

गुरुकुल प्रकाशन सबर्य सेवा— गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय द्वारा शोष एन प्रनाशन के बेद में यत ८० वर्षों में बडा भारते कार्ये हुमा है। स्रिक्शांत लोगों को इस की जानकारी न होने से उन्हें गुरुकुल साहित्य के शोन में सोयदान नव्यय दिक्शांत एवता है। बाहर के बिद्यानों के तथा गुरुकुल के खानो एन प्राध्यालयों को भी गहा के प्रकाशनों स्व शोध प्रवृत्तियों की बानकारी सब निम्म प्रकार से उपलब्ध कराई खा रही है।

रै पुस्तनालय के द्वारा गुरुकुल विश्व-विश्वालय के समस्त शोष एव प्रकाशन कार्यों को एकीकुत कर दिया गया है। जिस क धन्तर्यत किम सुबनाएँ पाठको तथा विश्वासु शोष खालों को एक ही प्रकाशन में उपलब्ध हो जायेंगी।

(क) गुरुकुल के स्नातको द्वारा प्रका-धित प्रमुख साहित्य।

(स) गुरुकुम के द्वारा प्रकाशित सम्यूण साहित्य की जानकारी।

(ग) गुरुकुल के द्वारा प्रकाशित प्रमेजी साहित्य की जानकारी।

(घ) गुरुकुल द्वारा स्वीकृत पी० एच० बी० शोध प्रवन्त्रों की सूची। (ज) शोध कार्य प्रगति मे।

(म) गुरुकुल में स्वीकृत शोध उप-कम।

(ट) गुरुकुल के प्राध्यापको के प्रकाशन।

(ठ) गुरुहुल खात्रो की हस्तिसिक्षत पत्रिकाएँ। पुस्तकालय में उपभव्य उपयुक्त पुर्वे साहित्य का पृथक समझ गुरुहुल स्वास्त्र प्रस्तात स्थार के नाम के

सम्प्रण साहित्य का पृथक समह गुरुकुल स्नातक प्रकाशन समह के नाम से बनाया गया है। सन्य १ मोनियर विलियम्स एम० ए०

सस्कृत इमिनश विकासरी १८६६ पृ० ११४३। २ वायर बे॰ रेफरेन्स वर्कं १६३०

पृ०४। ३ रनानावन एस० धार० रेफरेन्स सर्विस एण्डह्यूमनिज्न १६०४, पृ०३३।

४ विंचल सी० एम० साइड टू रेफरेन्स बुक्स पु०३७ एडीश्चल सन्तम।

वैदिक कैसेट

प्रसिद्ध फिल्मी गायक **महेन्द्र कपूर** द्वारा महिष दयानन्द की अमर कहानी

सन्ध्या-यज्ञ, शान्तिप्रकरण स्वस्तिवाचन आदि प्रसिद्ध भजनोपदेशको-

सत्यपान पथिक आमप्रकाश वर्मा, पन्नालाल पीयूच सोहनलाल पथिक, शिवराजवती जी क सर्वोत्तम भजना क कसटम तथा

प बुद्धदय यिद्यालकार के भजनो का सम्रह । आय सुमाज क अन्य भी बर्त स कसटस क सुचीपत्र क लिए लिख

कुस्त्योवसँग इतेवडानिक्स (इपिडवा) क्रा नि 14 मक्टि 11 फस 11 अशाक विहार दहली 52 फोन 7118326 744170 दैलेक्स 31-4623 AKC IN

वैदिक कैसेट सभा कार्यालय १५ हनुम न् रोड पर भी उपलब्ध हैं।





आर्य जगत् की शान २०० बिस्तर वाले

निर्माणाधीन नेत्र चिकित्सालय (अनमानित लागत दो करोड रुपये) के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि श्रायकर श्रिषिनियम जी० ८० के ग्रनगंत कर मुक्त होगी।

सारा दान चैक/मनीझार्डर/बैक डाफ्ट द्वारा

मत्री, माता चन्ननदेवी ग्रायं धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय. बी-१ जनकपुरी, नई-दिख्ली-५८ के पते पर भेजा जाए।

दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर पर अकित किए जाएगे।

निवेदक

सूर्यदेव महाशय धर्मपाल स्रोमप्रकाश सार्य रामगोपाल शालवाले सरक्षक विकित्सालय प्रधान विल्ली प्रधान क्रमी ब्रायं प्रतिनिधि ब्रायं केन्द्रीय महाशय बुन्नीलाल एव प्रधान, सा० ग्रा० प्रति० सभा सभा सभा सौजन्य से महाशियाँ दी हट्टी प्रा० लिमिटेड, १/४४ कीतिनगर

ग्रीद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-११००१

आर्य सन्देश साप्ताहिक पत्रिका के ग्राहक बने, भौर बनाएँ क्योंकि यह पत्रिका-

- (१) वैदिक मान्यताभी को उजागर करती है।
- (२) भार्यों (हिन्दभो) की महान परम्पराभो की बाद दिलाती है।
- (३) महर्षि दयानन्द की वैचारिक क्रांति से झारम चेतना जागृत-
- (४) भारतीय संस्कृति के भूले विसरे प्रसंगी, महापुरुषी तथा आदर्श संस्कारों को प्रकाश में लाती है।
- (x) ऋषि मूनि तपस्वी आप्तविद्वानों की वासी का बोध कराती है।
- (६) परमेश्वर की पवित्र वागी वेद का जीवनोपयोगी मधुर सन्देश लाती है।
- (७) नये लेखको कवियो चिन्तको, प्रतिमाशाली विद्वानो, साहित्य सेवियो को प्रोत्साहन देती है।
- (c) धार्मिक, सामाजिक धौर बाच्यारिमक ज्योति से मन-मन्दिर को प्रकाशित करती है।
- (६) वेद उपवेद, दर्शन उपनिषद, स्मृति, कल्प सन्, भारण्यक, बाह्य एप्यन्य गोता रामायण, नोति, ऐतिहासिक, अमल्य भार्ष ग्रन्थो. जिन को श्रधिकाका लोगो नै पढा तो क्या देखा भी नहीं समस्त भाष्यारिमक जगत् को जिन ग्रन्थो पर सदा गर्व रहेगा उन के बहमूल्य मोती हर सप्ताह बटोर कर भापकी भजली सभी भर देती है।
- (१०) अतएव देर न कीजिए आज ही अपना वार्षिक चन्दा २० रुपये भेजिये वर्ष में धनेक विशेषाक तथा महर्षि दयानन्द निर्वास शताब्दी पर प्रकाशित ५० रुपये मूल्य की जन्म मनोहारी स्मा-रिका नि शुल्क दी जायेगी।

सम्पादक भार्व सन्देश

२४ फरवरी, १६८४

स्वास्थ्य कांगडी फार्मेसी. हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

शासा कार्यालय-६३, गली राजा केवारमाय. षावडी बाजार, दिल्ली-६ फोन . २६६८३८



कुण्यन्तो विश्वमधीन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

क्षम एक प्रति ४० पैसे

बष ६ सका १४

रविवार, ३ मार्च, ११८३

बार्यं सबस्सर ११६०८५३०८४

फाल्गून २०४१

दयान-वाब्द --- १६०

आयसमाज

-रामगोपाल ज्ञालवाले

२४ अनवरी रविवार को प्रार्थ समाज मन्दिर नागयसा विहार, दिल्ली का उदघाटन करते नए सार्व-देशिक ग्रार्थ प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने कहा-बैदिक बर्म भीर संस्कृति की रक्षा के लिए तथा माने वाली पोढी को सस्कारित करने के लिए देश के कोने-कोने मे आर्थसमाज मन्दिरो का निर्माता झाबदयक है। विद्व में सम स्थाएँ बढ रही हैं, मानवता का लास हो रहा है, श्रक्षान्ति के घरे बढ रहे

हैं। भाज भावश्यकता है ऋषि दयानन्द के सैनिको और अन्यायियो की जो ससार में प्रम प्यार ग्रीर सेवा सहयोग का दीपक जलाय । ऋषि दयानन्द के मन्देश की घर-घर मे सनाने की भाज नितान भावश्यकता हैं। उन्होने बाह्यान करते हुए कहा-आधो हम अपने तच्छ स्वार्थ और धीर द्रष भाव से ऊपर उठकर धार्य-समाज के मिशन को और भी भागे बढाय । श्री शालवाले ने झार्यसमाज नारायणा विहार के कार्यकर्ताको एव

सहयोगियो की भव्य भवन एव सन्दर यज्ञशाला बनाने पर प्रशमा की।

इम मञ्च यज्ञशाला का उदघाटन श्रीपाद स्वामी दीक्षानन्द जी ने किया। इस अववसर पर श्रीस्वामी विद्यानन्द जी प० शिवकुमार शास्त्री एव प० सच्चिदानन्द शास्त्री भी उपस्थित थे। धार्यसमाज ना ।यगा। विहार के उदघाटन के भवसर पर एक विशाल शोभा यात्रा भी निकाली गयी जिनका नेतृव दिल्ली धार्य प्रतिविधि सभा के प्रधान श्री सुनदेव ने किया। इस भवसर पर भनेक बसी, टेम्पुक्षो और पैदल स्त्री पुरको तथा सस्याओं के छात्र छात्राधों ने बढ चढ क भागलिया।

श्रद्धानन्द जन्म-दिवस

दिल्ली नगर निगम द्वार आयो जिन स्वामी श्रद्धानन्द जन्मदिवम समारोहपूर्वक मनाया गया अवसर पर महापौर श्री महेन्द्रसिह साथी ने कहा—भारतीय स्वतन्त्रता के इतिहास पर जब हम दब्टि डा नते हैं तो भायसमाज हमें हर कोने पर स्रवादिस्वाई देता है। त्सनी उपेक्षा नहीं की जा सकती। उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द को ग्रष्ट्रन एव दलिनोद्धारक तथा भारतीय स्वतन्त्रता सग्रामका महान् योदा बनाया ।

दिल्ली गार्थ प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्यदेव ने उदबोधन करत हए कहा-स्वामी श्रद्धानन्द समय को चुनौती का प्रवल जवाव थे। श्रयजी साम्राज्य के काल में भारतीय शिक्षा भौर सम्यता की मजाक उडाई जाती थी। ऐसे चुनौनीपूर्णवातावरशामे उन्होने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की स्थापना कर ससार को धाइचर्य-चिकत कर दिया। उन्होने इस

२४ फरवरी, रविवार, धार्यसमाज कीर्तिनगर के वार्षिकोत्यव पर बोलते हुए श्री रामगोपाल शालवाले ने गी-रक्षा की भ्रपनी माग को दोहराते हुए कहा- भारत सरकार को गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लागू करना चाहिए। गीको राष्ट्रीय पशु घोषित करना चाहिए। उन्होने उपस्थित जनसमूह को बाद दिलाते हुए कहा

प्रगाली में प्राचीन जात-विज्ञान से लेकर ब्राब्रुनिकतम विज्ञान, तकनीकी नथा भौतिक ग्रभौतिक विद्या विज्ञान को ग्रपनामा अग्रज परकार हैरान थी कि वैसे एक वियाबान जगल मे विना किमा सरकारी सहायता के इतना बाकार्य किया जा रहा है।

उन्होंने कहा-स्वामी श्रद्धानन्द का जावन एक दिशामे नही सर्वा-द्वोग् दिवाई पन्ना है। वं अनाथ रक्षक दलिनोद्धारकव श्रष्ठतोद्धारक. हिन्दू मुस्लिम एकता के प्रतीक, एक नपस्वी पत्रकार-शिक्षक के रूप मे भी दिचाई प-ते हैं।

बार्यसमाब बनकपुरी

धार्यसमाज जनकपूरी बी ब्लाक मे भी स्वामी श्रद्धानन्द जन्म दिवस मनाया गया । इस ग्रवसर पर महाशय धर्मपाल ने ध्वजारोहरण किया तथा भनेक विद्वानी ने स्वामी श्रद्धानन्द को प्रपनी श्रद्धाजलि धर्पिन

गो-हत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध की मांग

कि गत वर्षकी निनगर मही एक मार की फबट्टी के विराध म ग्रार्थ-समाज ने काय किया था भौर हम अपने उदृश्य में सफल हुए थे। ग्राज हमे भ्रपनी यह माग भीर भी जा दार शब्दों में उठानी चाहिए। साथ ही हमें गोपालन के लिए भी हर सम्भव सहयोग देना चाहिए।

ये आवाज कहां से ग्राई !

बोये बीज फूट के किसने वैर की ज्वाला ये भडकाई। जहर जोलने वालों की यह प्रावाज नहां से बाई।।

> माई-भाई हम सदिमी से वे एक ही मा के बेटै। किसने आकर हम सब की ये दौलठ बाज लुटाई ।।

हर मुश्किल ने सदायहा हम निम जुल के रहते ने। सन्तो की विका तक को, है विसने बाज भूलाई ॥

> क्यो छामा ये सन्त्राटा क्यो सहसी राखें। क्यो सामोश हर स्वर है यहा वजती वी शहनाई॥

सवा सम्मान रहा यहां पर हमारी इन माता बहनो का। हैं किसने कुकर्ग किये थे, यह किसने जूट मबाई।।

सुख के सातिर जापस में हम सब रक्सें माईवारा। चीवन के हर क्षेत्र से भावों ! हम दूर करें बुराई ॥

सब का मन दुलताहै हर बरवादी के कारण। फ़ुट परस्ती की बातें ये कब किस की यहाँ सुहाई।।

> —हम रखें नजर ऐसी पर, को धर मे ग्राम समाते। श्चन कोई भी कम हमाराना 'रिषम हो दुवादाई।।

> > — मोहनसाम शर्मा "दरिम" फीलैंग्ड गब-बाहोद ।

वाटिका सत्संग

पाप-निवारण

—स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

त्व हि विश्वतोमुख विश्वत परिभूरिस । ग्राप न

ज्ञ**ढवार्थं** —हे (विज्वतोम् म) मर्वद्रप्टा भीर सब ग्रोर ने उपदेश करने वाले प्रभी। (हि) क्योकि (त्वम्) तू (विश्वत) सव स्रोर चारो स्रोर (परिसू) परिव्याप्त (श्वास) है श्वन (न) हमारे (श्रवम्) पाप को (ब्रपभो पुचद्) जलाकर भस्य कर दे नष्ट कर दे।

बवास्या -- मन्त्र मे ए ह ही उपदेश है, परन्तु है भत्यन्त उपयोगी भौर कल्याण-कारी । इस दिव्य उपदेश पर विन्तन ग्रीर मनन कीजिए---

स्रप न शोशुचयसम्।

प्रभो[।] हमारे पाप को जल। कर भस्म

पाप एक रोग है भीर यह गारीरिक रोगो से प्रधिक भयकर है। यह रोग मनुष्य को निवन बनाकर बुद्धि को नप्ट-अब्द कर देता है। पापी को सुख की प्राप्ति नहीं होती । महर्षि मनुकहने हैं---

> द्मवामिको नरो यो हि यस्य चाप्यन्त वनमा हिंसारतक्व यो नित्य नेहासी सुस्रमेधते ॥ --- मनु० ४ । १७०

जो मनुष्य धवानिक है, जिसका बन

पाप के द्वारा उपाजित है जो नदा दुसरी की सताता रहता है, वह इस लोक में सुस्ती नही होना फलना और फूलता नही। नाथमंदचरितो सोके सद्य फलति गौरिव। श्रानैरावर्तमानस्तु कर्तुर्मुलानि कुन्तति।। यवि नात्मनि पुत्रेषुन चेत्पुत्रेषु नप्तृषु। न स्वेब तु कुनोऽधम कर्तुभवति निष्फल ।। —मनु० ४। १७२-१७३

भ्रनुप्टान किया हुमा भ्रषम लोक मे गी-प्रिवी के सदश तत्काल फल नही देता। जैसे पृथिवी बोने ही फल नहीं देती किन्तु घीरे-घीरे फ्लोन्मुख होती है वैस ही पापकर्मभी नत्काल ही फल नही लाता किन्तुर्ध।रे-धीरे पुष्ट हाना त्रमा प्रन्तन पापकता की जड़ी को कार नेता है।

यदि पाप काफ्लम्बय का नहीं मिलनातो पुत्रो को मिलना हे यदि पुत्री अन्य केन प्रयुक्तोऽय पाप वरति पूरुव । को भी नही मिलता तो पौत्रो और प्रपौत्रो छनिच्छन्नपि बार्व्लिय बलादिव निघोजित ।। मे भवा प्रतिलता है। किया हुन्ना भवम कभी भी निप्तल नहीं होता।

न्स त्रिपय मे एक सुन्दर स्टान्त है। एक स्हिप्यास मध्याकृत था। पानी पीने 🗣 लिए वह एक नदी मे प्रविष्ट हुआ।।

उसकी प्यास तो बुभी, परन्तु वह कीचड मे फस गया। बहुत जोर लगाया परन्तु निकल न सका। प्यास दूर हुई प्रव भूस सताने समी । तीन दिन पश्वात् एक मीवड उधर से निकला। शेर ने कहा--''मेरे पास तेरे पिताका एक सन्देश है, उसे सून जा। 'गीदह बोला - नुमें तेरे पास माने से डर लगता है तूदूर से श्री कह दे। शर ने कहा-'तेरा पिता और मेरा पिता दोनो मित्र वे घत मुक्त से तुके कोई हानि नही होगी। तुमेरे निकट गा। मैं तेरी पीठ पर हाच फेरकर तेरे पिता का सन्देश नुमे सुनाऊगा। यदि मैं तेरे लाव बुरा करू तो मेरी सन्तान के बावे बाये।" मीदह भारवस्त होकर कुछ मागे बढ गया। जेर ने भपनी सारी शक्ति लगाकर एक छलान लगाई परन्तु गीवड तक पटुँचने से पूर एक ठ्ठ पर जा विरा, उसकी झाते निकल बाई। शेर की यह दशा देख गीदड मुस्कराता हुआ आगे बढा। शेर ने पूछा, 'स्रोगीदड[ा] बदि तुमे पता हो तो बह बतादे कि मैंने तो सन्तान पर भाने की बात वही थी मुक्ते यह फरा क्यो मिला।" गीदक ने उत्तर दिया - यह तो तेरे बाप न जो कसम लाई बी उसका फल मिला है तेरी कसम नरी सन्तान के आयो

पाप का पल तो भोगवा ही पहता है, ग्रत पापो न बचने का प्रयतन करना बाहिए। परन्तु धौषष सोचन से पूर्व मनुष्य पाप क्यो करता है, यह जानना भी ग्रावश्यक है।

वाप का कारण क्या है ? ईसाई और मुसलमानी न जैतान की करनना की हुई है। वही सारे पाप कराता है । यदि शैनान ही पाप कराता है नो रण्ड भी उस ही मिलना चाहिए। वस्पुत यह एक मिथ्या कस्पना है।

मनुष्य कम करने से स्वतन्त्र है। वह जो कुछ चाहना ^{के} करना है। ग्रपनी कर्म-स्वतन्त्रना से ही वह पाप में प्रवन होता है। गीन में इस विषय पर उत्तम प्रकान डाला गया है। ग्रर्जुन ने श्रीकृष्ण से पूछा---

—-गीला०३।३६

ह वाध्र्णेय [।] **यह मनु**ग्य **इ≕छा न** होते हए भी जबरदस्ती से, दबाकर जोता गया या किसकी प्रेरणा से पाप करता है? र्श्र कृष्ण ने उत्तर दिया---

-- धर्मा १ । ३३ । ४ काम एव कोच एव रखोपुरसस्युद्भवः। महाज्ञनो महापाप्का विद्ववेनविह वैरिलम् ।।

गीसा० ३। ३७ रबोगुण से उत्पन्न, बहुत धाविक साने वासा, महापापी काम भीर कोच ही

मन्ध्य को पाप में लीवते हैं - ये ही बस्तुत शत्रु हैं।

महाशारत में लोश को भी पाप का कारण बताया गया है-

पापानां विद्वयविष्ठान लोभनेव द्विबोत्तम ।। सुक्षाः पाव व्यवस्यन्ति नरा नातिबहुश्रुता । — महा० वन० २०७। ४०

हे दिजोत्तम ! सोभ को ही पापी का घर जानो । जिन्होंने शास्त्रो का बहुत श्रवण नहीं किया है, ऐसे लोभी मनुष्य ही पाप करने का विचार करते हैं।

रोग का निदान। अन इसकी भौपणि बोजनी बाहिए। ईसाई वहते हैं कि ईसा पर ईमान लाने से, मुसलमान कहते हैं हजरत मोहम्मद पर ईमान साने से धौर पौराणिक कहते हैं गया में दुवकी सगाने से पाप नष्ट हो जाते हैं परन्तु ये बातें तक भीर युक्ति विरुख हैं। भार्ष ग्रन्थों में पाप से बचने के उपाय निम्नक्य में बताये वये हैं —

क्यापनेनानुतापेन तपसाऽध्ययनेन 🗷 । वापक्रुन्मुख्यते वायात् तथा दानेन बायदि ।। — मनु० ११। २२७

भपने पाप को सर्वशासारण मे प्रकट करने से, पश्चात्ताप करने से कठिन तपश्चरण से वेदाध्ययन जपादि से मीर बापत्ति में पडे हुए व्यक्तियों को दान देने से पापी मनुष्य पाप से छूट बाता है।

ये वाच उपाय है जिनसे पाप में फैसा हुआ व्यक्ति पाप के संस्कारों से बन जाता है और उसकी धगली पाप।रिमका वृत्ति नष्ट हो जाती है। उसकी वृत्ति का युक्त पारम हटकर धर्मकी छोर मुख जाता है। धाडए, तनिक एक-एक उराय पर विवार करे।

१ क्यापन — मैंन यह बुरा कम किया है, इस प्रकार अपने मुख क्ष प्रपने पाप के कथन करने का नाम 'ल्यापन' है। मनुष्य पाप की बुरा समम्ता है, धन उस खिपाने का प्रयत्न करता है जिससे दूस रो की दृष्टि में बहु घृणाका पाण्य न वने। यदि मनुष्य पाप को द्वापने मुख से स्वीकार कर ले तो उसका झात्मा पाप से बचने का अयरन करता है, क्योंकि वह समभता है कि मुमे पाप को खिपाना तो

है नहीं फिर मैं पाप कर्म को छोड क्यों न र्वं ? विद्वार्मों के समक्ष धपने पाप को स्वीकार करना और एकात मे परमारमा के समक्ष प्रपने पापी का कथन करना और उनसे सुटकारा पाने के लिए प्रार्थना करना पाप से बचने का हेत् है।

२ अनुताय-परचाताप से भी मनुष्य पापी से बचता है। पाप करके सन्तप्त होने से [शीक | मैंने प्रमाद से यह क्या कुकमं किया है, इस प्रकार मालक क्षेद से] मनुष्य पापो से वच जाता है। 'फिर ऐसा नहीं करूंगा'—इस प्रकार व्यतिज्ञा द्वारा वह पवित्र होता है।

ग्रपने दुष्क्रस्यों पर पश्चालाप या अनुताय करना कितना अधुमय है [।] पश्चात् का धर्य है बाद। 'धनु' का भी बही सर्व है। ताप का धर्व है उच्छाता, वर्मी। बनुताप भीर परवात्ताप-इन दो शब्दों से ही प्रवीत होता है मानी शुद्ध, स्वञ्छ, स्वर्णमधी हार्दिक भावना अपने दश्करवाँ के कारण बन्दी हो गई है और वह एक बलती हुई वापपूर्ण शड़ी के समान विश्व-मान है। बन 'बनुताप' पाणी, दुष्कृत्यों के परचात् होन वाला यह ताय---पूर्वकृतः कर्मों को भस्मी मृत करके उस धारमा को सुम्दर एव निर्मेशरूप प्रदान करेगा।

भनुताय से मनुष्य कैसे पवित्र ही काला है, इस विषय में एक भारूवाविका

एक मुमुक्षु वीस्तित होने के फिल्ए कवीर के पास गया। दीक्षा देने से पूर्व कवीर जी ने कहा---

तुंबी गरके साना पुरु ने संगःवी। पहले बक्त तू पटनी लाना, नदी ताल के पास न जाना। कूंबा बाबली स्रोड़ के लाना तुबी भर के लाना रे। तूबी मर के लागा रे, बेटा ! गुरुने मर के मगाबी।

कैसा अमृत्य जल मेंगवाया है। कुछा, नदी, ताल, तलीया भील, पोकार का जल नहीं। उन्हें उदाजल से क्या कास⁹ गुरुका भाव था—"पुत्र[†] तुमः **प्राच मुक्तसे दीक्षा लेने भागे हो परन्तु क्या** तुम नही जानने कि तुम पर धावरशा पका हुबा है। अपने कुकमों पर जब तक तुम परवालाप नहीं करते तब तक मैं तुम्हें बीक्षा नहीं दे सकता। तुम सनुताप करो। अपने पापी के लिए इतना अनुताप करी, इतनारो दो कि तुम्हारे नेत्रों के जल से यहत्वाभर जाए।

वेद मे कहा है-

इवमापः प्र बहुत यरिक च दुरितं शबि । यहाहमभिकुत्रोह यहा क्षेप उतान्तम्।। ऋ० १० । १ । व

हेजलो [!] मेरे गरीर भीर मन में जो दुष्प्रभाव, दुष्ट इच्छा, वासना या मसिन (क्षेत्र पृष्ठ ११ पर)

सम्पादकीय

आर्थ सन्देश

प्रकृति का महोत्सव

भारत देश अपनी गरिसामयी परम्पराम्नो से, बाध्यारिनक सम्पदाम्नो से, सस्कृति सम्पता को विशेषताम्नो से सम्पत्न रहा है। इन्हीं विशेषताम्नो से एक विशेषता है। हन्हीं विशेषताम्नो से एक विशेषता से सम्प्रता एव जातियों में भीर देशों में कोई न कोई दिन नियत है जब वे धपने समन्त हु व दर्ष सुला कर उत्सव मनाते हैं। व्यक्ति विशाद घवसाद में चिरा न रहे एक ही रस में वह लिन्न न हो जाये, वह जीवन के समस्त रगो रसो का स्वाद ले सके हमी पारणा को हो लेकर सम्भवत हमारे पूर्वजों ने पर्वों को सरवला को भी। समस्त विषय में सरवला को भी। समस्त विषय में सरवला को

वसन्त ऋतुका आगमन हो गया है। नौ रसो से रसित नव रगो के परिचानों से विभूषित प्रकृति अपनी नाटय कला का समस्त अुवन से परिचय दे रही है।

सेम्बल की केंची-केंची डालियो पर खिलते लाल-लाल फुल, बेत मे फुलती पीलो-पोली सरसो,बागो में महकती धमराई वन की कटीली फाडियो में सजे फुलों के गुच्छे, शुष्क वृक्षों की चोटियों से निकलते अकुर पर्वत की उजाडी भू बला पर उगती हरी-हरी चास भौर ऊँचे शिखर से घरती के सीने पर गिरता गर्जता भरना, मचलती इठलाती नदियों की निर्मल घारा, बासों के ऋरमूट से जाती पपीहे के मधुर रागिनी, कीयल और बुलबुली की कुक से गुँजते उपवन यह महोत्सव है उस परम विघाना को सुष्टि का, जो महोत्सव श्चविराम चल रहा है। हर ऋतु मोहक उत्सव लेकर ग्राती है और कह कर जाती है मानव क्यो तू निराश है, उठ । उत्सव मना गुनगुना खिलखिला ऋम ऋम कर उस परमें भानन्ददाता के गीत गा। जब प्रकृति में उत्सव है फिर मानव जीवन मे पर्वों का, उत्सवों का उल्लास क्यों न हो, ऐसा ही एक उल्लास है होली। जी हा, होली जो यज्ञ का अपभ्र श है। नवीन फमल के झागमन की लुशी का महोत्सव है। समस्त भेद माव भुलाकर गले मिलकर एक हो जाना और सानन्द सिन्धू में हुव जाना इसका सन्देश है। रवीन्द्र नाथ टैगोर ने गाया था — उत्सव अमार जाति धानन्द अमार गोत्र। उत्सव ही हमारी जाति है और मानन्द ही हमारा गीत्र है। सब कुछ भूलकर मानन्द-उत्सव में मस्त हो जाना पर्व है।

वेद मे कहा है—हसा मुद हसा मृत । प्रसन्नता मे सूम मौर हसते-नावते जीवनयापन कर । जीवन मे समस्याए हैं कठिनाइया भी है परन्तु उन्हीं से दूजी होते रहने से जीवन कुबूस मुरक्ता जाता है।

इस ऋतु में गेहू चना, सटर, सरसो, जो झादि के पकने की दशा में यह पर्व मनाया जाता है। इस में फसल काटने पर किसान अपने समें सम्बन्धियों एवं मित्रों को दावत देकर उत्सव मनाते हैं। जापान में पान की फसल कटने पर उत्सव मनाते हैं। चावल ने रोटिया एवं मादक इत्यों से झानस्व मनाते हैं। इङ्गलेण्ड में पोल (May Pole) का उत्सव मनाया जाता है। योरीप में (St Valentines day) सेन्ट वैसन्टाइन का दिवस मनाया जाता है।

इस प्रकाद की उत्सव परम्परा होती भी है। परन्तु भाज यह पर्व वडा विकृत रूप ने चुका है। ग्रसम्य भीर भिष्ट वनकर रग फकता, गरीबों के एक दी मात्र वस्त्र को रग देकर केकार कर देग तथा गोवर, कीचड, तेजाव, रेत भ्रादि प्रमत्त होकर फेक देगा मुख्यता से नीचे गिरना है। होती के वक्ते भाग, श्वराव पीकर क्रवस मचाने वालों ने भी सन्दा कर दिया है।

रग की ब्राड मे ब्रश्लीलता भी हैय है। हमारी सस्कृति मे भाभी

भादि को माना की इन्टि से देना जाता है उन के नाथ अभद्रता का व्यव-हार होलों की भ्रान्त केर करना स्रवस्ता है। सभी सम्य ज्ञों को ये दोष दूर करने का प्रयन्त करना चाहिए। हर नौजवा को अपनी हिम्मत भौर क्षान्ति से दीन दु निया के स्रासू पोछ नक्षियों के फ्रन खिलाने ज्हान चाहिए। ''ओख'ने सचकहा है—

> नवीन युग के उपासना की प्रभिलाघा की नुभे कमन है तू अब नये विचारा के भगवान पैदा कर। बहार मे तो जभीन से ही बहार उग प्राती है, गर तू मर्द है तो खिजा मे बहार पदा कर॥

- यशपाल सुधाशु

अपने पाठकों से

भाप पाठकों के अनेक पत्र प्रति सप्ताह मिनते रहते हैं। आपकी प्रयसा प्रयस्तिकि लिए हम आमारों हैं। स्माप्तिक के लिए प्राप के अनेको अने पत्र पत्र प्रयस्तिकि कि एक प्राप के अनेको अने पत्र प्रयस्ति में निवे मिने हम उन में से कुछ हो प्रकाशित कर पाये। सभी को प्रकाशित करने के लिए स्थानामात्र हैं। केवल मात्र सम्पादकीय के लिए मी बहुत पत्र मिने हैं जो आप के द्वारा स्नेह सिक्त थे। पिछले दो मास में लगभग २०० आहक तीवता के राथ बने हैं, इस से आप के प्रमुख्य हात्र सिक्त थे। प्रकाश के प्रमुख्य हात्र शिक्त को विश्वरूट प्रमाण मिलता है। हम आपकी आकाशाओं के प्रमुख्य इस पत्र को स्वान में सलगन हैं।

हमारे कुछ पाठकों को शिकायत थी कि इस के पृष्ट वहाए जाए, यह शिकायत हम ने उन की दूर कर दी है। पाठकों की माग पर सत्सग बाटिका" स्तम्भ हम ने शुरू किया है जिस में हर बार सत्सग में सुनाया जा सकने बाता वेद व्याख्यान हुमा करेग। वहर्ष हम यह भी सूचित कर रहे हैं कि एक प्रजिनव विशेषक २४ मार्च को चूमचाम से प्रकाशित कर रहे हैं। यह विशेषक सपने उन का मानेखा ही होगा। आशा है आप का प्रेम स्नेह, एबम् साक्षीय इस साप्ताहिक पत्र को अवस्य मिलता रहेगा।

> शुभकामनाम्रो के साथ— सम्पादक—यशपाल सुवाशु

शुभकामना

श्रीयुत सुषासु जी [|] सादर बन्दे मानबम् ।

धार्यसम्बेश के पिछले सकों को देख कर मन प्रसन्त हो गया।

सापकी सम्पादन सैनी प्रेरलादायक बाथ सस्कृति प्रमविनी है। श्राशा है स्वापके कुशक सम्पादन में साबसन्देश आय जगत् में प्रसिद्धि प्राप्त करेगा।

> धानन्द सुमन तपावन धाअम देहरादून २४८००८

स्मारिका बेहद अच्छी

'धार्य-सन्तेष के विशेषक के रूप में ख्री मध्य मनोहारी गना वा स्मारिका प्राप्त हुई। स्मारिका वास्तव में धाकणक एव प्रमाव गाल थी। इसका मुखपूट्य प्रति सुन्दर एवं बोमगीय था। इसमें सभी लेख पड़नीय एवं गिनाप्रद थे। जिन्हें पढ़कर काफी प्रराप्ता मिली तथा काफी आनकारी प्राप्त हुई। स्वारिका से सध्यादकीय स्वत का की सबन ही महन्व रहा। स्वारिका के इस हु गल सम्पादन के लिए वचाई स्वोकार करें।

— रामङ्गमार ग्राय ग्राम० पो०-दुल्लागढ ग्राहाना (सोनीपत)

साप का 'स्वारिका पत्र प्राप्त हुमा बन्यवाद प्रध्ययन करन पर पता चका कि साप ने इस की सफलता के लिए बहुत प्रयस्त किया है। इस सफलता हेतु झाप सब को बहुत-बहुत ववाई हो।

> निवेदक — योगेन्द्रपःल सेठ प्रचान ग्रायंसमाज जासन्वर

वेदों हारा विश्व को भारत की

अमूलय देन

दुनिया में भ्राव भी ऐसे कई सिद्धाल व सायन ए हैं जिनका सही विव ज (परिचय) उपलब्ध नहीं हैं जात नहीं हैं या फिर फ्रम पूण हैं ऐसा ही एक जटिल प्रश्न पिएत की पूल मौलिकताका है। जिसका प्रशासिक उत्तर वेटों के साथार व सीजय से साथके सामने रखरहा हूं। वहुंभी चृत्तीती है।

विण्य को विषय का कोई श्री गिए।
तक यह नहीं बता पा रहा है कि प्रक गणित बीवगणित कहा के प्राई ? कि प्रक दी ? कद दी और कैंदे दी? कई सानते हैं • जीरो (ग्रुच) भारत ने दिया। कोई सकावली भारतीय होना मानते हैं। विदेशी गणितक इसे बदीलोन कीन रोमन धीक दिल्प्ट मिथ की देन कहते हैं। फाख वाले बसमलक प्रणाली प्रपानी देन कहते हैं सब विद्यान् विचारक काल्पीनक वार्ते करत हैं। प्रपाने देश को गौरव दिलाने की पत्र कस करते हैं और प्रयत्न किये भी हैं। कि गुनने पार प्रयत्न विये भी हैं। कि गुनने पार प्रयत्न विये भी हैं।

सत्य की लोज करना विज्ञान वेलाधी का काम है। सत्य का प्रचार व प्रसार करना विज्ञान सवाददाताधीका कत-थ

वेद सब स यनिकामो का पुत्तक है। बाज वेद पर मनुसज्जन व सोज मनिकास है क्योंकि वेद भारत की मनूत्य निधि सस्कृति व वाडश्य की मक्ष्य बरोहर हैं। जिस पर प्रत्यक भ रतवासी को यब हाना

नीड का नव निर्माण —डा॰ मानन्द सुमन

वित्व का नाड दगममा रहा है। राक्षक्षी प्रवृत्ति बन्ती ही जा रही है। मानव मानवका शतुहुयारा भाई मा बहुनो कासती व उजाडने वाला सुहाग श्रीनन दाला पितासतानो का टब श्रीन कर गराब की बोतलों में न्वन गला ग्रस्रता की सामा पार करता सकल मानव समाज प्रस्थिर हो गया है। भौतिकतावाद के नशे में हमारी सस्कृति के हमारे नियमो तक को तोड दिया है मानव समाज कराह रहा है इस कराहट में भाशा की एक किरण सभी भी नंप है असुरता की प्रवृत्ति समाप्त की जा सकती के मानवता को पुन विवमं प्रतिग्ठापित किया वा सकता है। बहुनों के उजन सतीत्व वापम नौट सकते हैं। स्तानो को पुन भारतीय संस्कृति के रग में रगा जा सकता है। भारतीय संस्कृति कोई ऐरी गैरी वस्तु नही जो लिएक स्पन मात्र सं चूरचुर हो जाये। समय समय की बात है कि विद्व मुद्द की सन्तानो न अपन ही हाथो अपनी विश्ववारा संस्कृति को समाप्त करने का चडमात्र किया दोप दो हजार साल की

-डा० मिट्टनलाल ग्रायंत्रेमी चाहिए ग्रीर है भी।

ब्रायुनिक विरव के समस्य इतिहास बता पुरातत्त्वकता व जीवज विद्वान् मानते हैं कि विश्व का प्राचीनतम अय ऋत्वद है। इसके बाद यजुनव है।

आव मैं गव के साथ कह सकता हु कि श्रक्षणित बीजगणित व दशमस्व प्रणाली विश्वको भारत की श्रमूल्य व सैटातिक देन हैं।

मैं घापके सामने प्रकाशित वीव-गणित की मूल मौजिकता सिद्धात व मन पेश कर रहा हूँ वो अनुर्वेद के सौजन्य से है। उसमें मकित है जिसका सरम सन्याप व भावाय साथ है।

यजुनद सम्माग १७ सत्र (२) इसा में मुर्फिमल्लोके (एक को दस से दस दस ते सौ बानी दश्चमलद

विषय भिन १+२=३ एक धौर मेरे २=तीन ३+२-५ इत्यादि ३३ यजुबद झच्याय १८ मत्र २५ बतलस्य

सम जिन ४ + == १२ चार झाठ मेरे बाहरा इत्यादि ३२ झाच तक वो आ यताए एव उदाहरण प्रस्तुत हैं इच्टि गोचर हैं। झाये हैं व सब इसके बाद के हैं। इसके बसक हैंन कि पुत्रवा।

मुलामी का है जिसन हमे **चित**न सून्य बना दिया हमारे विकारों में ब्रामूल परिवतन कर दिया हमारी शिक्षा पद्धति जीवन पदित तक को विषरीत दिला में मोड दिया। इस क्या बहके सारा ससार ही बहक नया क्योंकि सारा ससार तो हमारे पथ पर ही चमताथा। ब्रावश्यकता है हम सब मिल कर कूसस्कारों को समाप्त करें सुसस्कारों को प्राप्त करें। लिखने बा कह देन मात्र से तो सस्कार बनत नही। यदि हम पुन अपना सनातन प्रतिष्ठा को प्राप्त करना बाहत हैं तो हमें निनकोच पान्चात्व भौतिक धासुरी विचारो को त्याग कर सनामन वैदिक सस्कृति के विचारों को स्वीकार करना होगा। यही इस युग की प्रचम सावश्यकता है। सामवा न्सी प्रकार हम लुटते रहेगे पिटते रहेगे। अपन हाथो अपनी माताओ बहनों से बलात्कार करते रहेगे। जानो मानवो! मानवता को ग्रामा मे बारख करो बहुनों व माताम्रोको पुन यत्र नायस्तु पूज्यन्ते के सदेशानुसार स्थान दो । सलानी को मुसस्कारों ने शिक्षित वीक्षित करो। तभी विन्व रूपी नीड का नवनिर्माण सम्भव है।

सत्य और वेद

---रामसुमेर मिश्र एम०ए०

महर्षि दयानस्य की घोषणा है कि वेद सब सस्य विकाशो की पुस्तक है। यदि यह कहा जाए कि वेद सस्य हैं ती सायण महीचर को भी सत्य कहना होना। महर्षि ने सायसा महीवर को प्रसत्व कहा है। वेद पुस्तक है। यह तो अवकार से बपेक्षा की जाती है कि वह उनका तत्म धर्व करे प्रचति शोषकर्ता से इस बात की धपेका की बाती है कि वह पुस्तक का सब किसी रूढि पक्षपात वा उन्नाद से प्रेरित होकर न करे। महर्षि जब वेद को सत्य वोषित करते हैं तो उनका निर्देश होता है कि वेदों ने इतिहास नहीं है वह देश कास सापेक नहीं है । वेदों में घाक्यान सब काल सब स्वान और सभी व्यक्तिको के लिए हैं उनमें देश काल और व्यक्तियों के अनुसार परिवतन नहीं है। वेद किसी बाद सा नत का दिन्दञ्जन नहीं कराते वह सत्य के लिए दर्ष्ट देते हैं। भावना और उनाद से प्ररित व्यक्ति तो स्वय किसी इंटि के मानेश में मानत है वह सत्य र्ष्ट ब्रहण के सिए दीक्षित नहीं है। केवस सत्य विद्यामी का विद्यार्थी ही यह दिन्ह वारण कर सकता है जिनमे नेदी का ब्राख्यान निदश व सदेश है सावण मही-वर बादि इस दक्टि के बमाव ने किसी दिष्ट से प्ररित होकर वेदों का सब कर नए जो सत्य से बहुत दूर हो गया।

सत्य वह है जो एक जैसारहे। बदल जाने वासाया होकर न रहने वाना सत्य नहीं कहा जाता। दूसरी भाषा में इसे त्रैकाल प्रवाचित कहते हैं । वेद सत्य इष्टियों के बारुपान सत्य थम के निर्वेश व दुष्टो से रक्षित होने के बादेश से बर पूर मत्रो व छदो की पूस्तकों हैं। इनमे जो जैसा है उसका वैसा ही वर्णन है। यदि पदाथ बदल जाने बाला है होकर न रहने वासा है जैकाल बाधित है तो उसका वैसा ही बाख्यान है। पदाच सत्य है या बसत्य यह प्रदन करने वासाही अभित है। जो वतमान मे है उसके नहीं का प्रश्न ही भ्रम है। हा हम उसके सही स्वरूप की खोज कर सकते हैं। वह मूख में नहीं था भवि व्यत मे नहीं रहेना वदलने वासा है। इस स्टब्सि बिनाश बाले का बतमान मे मस्तित्व कीसे होता है। यह लोज हमे द्रि लाभ करा सकती है जिससे हमारा व्यव हार व धन हमे सुक्त और दुक्त प्राप्त करा सकता है।

हमको बण्टि से करन का बोक होगा है और सोक-कर्ता हरन से बण्टि की बोक करता है। कड़ैतनायी बरन से नहीं बण्टि की कोज करते हैं और न बण्टि से बस्य का सास्थान ही। वे एक प्रका को बण्टि के सिए संपेक्षित वा उसे करन पर नवकर क्या प्रकार हो। से साह से उसार क्यार पन का पनिक बन बहुरे ससार क्यार पन का पनिक बन बहुरे सकार में वृक्ष नया। यह प्रस्त तो पदार्थे विका का प्रस्त है। पदाय विका का विकासी वस्ते कि सांचा को सेवता के सकता है। यह पाय विकास के सकता है। यह पाय विकास की पुरतकें नहीं हैं। यह पाय विकास की पुरतकें नहीं हैं। यह पाय विकास विकास नहीं हैं मूल सत्त का नतान निकास कि प्रदेश के से हो बीचन मोर पहार्थ की प्रदेश के से हो बीचन मोर पहार्थ की प्रदेश के सकता हुए हैं। इसीनित्र सहित को बोच मा प्रदेश हुई है। इसीनित्र सहित को बोच मा प्रदेश हुई है। इसीनित्र सहित को बोच मा दि पूल है। नहीं का पाने सकता वहनी है कि प्रपाद विवास से भी बाना साम दि कि प्रदान विवास से भी कुछ भी बाना साम है कि प्रदान विवास से भी भी भीनित्र साह है है।

मून इंटिंग के सभाव ने मनुष्य दश्य का बोच नहीं कर सकता। यह सस्य आर्व-समाब की मूल मान्यता है। मूल सत्य की बच्टि पाने के बाद बिद्वानों से अपेका की बाती है कि बतमान प्रमतिशीस बटिस परिस्थितियों में मानव के लिए वे प्रशस्त पव की सोज करें जिससे जीवन समाझ के किए समस्या न बनकर एक झावर्श सफलता प्राप्त कर सके। वनमान की देनो को नकारने वा उहें दुराकहने से इस्व और बच्टि में टकराव उत्पन्न होगा जिसमे जीवन की हार ही सम्मुक्त है। पदाव युज दोष मय हैं। जीवन मुख प्राही बने इस सक्य की प्राप्ति में वैदिक बच्डि सेवा रत बने इसकी भपेका विद्वानी से है। १२४ बी/६८६ गोविन्दनगर कानपुर

बलिदानों के गुण गाने का युग है

रोने का नहीं झव तो बलिदानों के गुरागने का युव है। यब से मटके हुए पन्य को फिर पथ पर सखे का युग है।।

रोने से ज्योति घटती है

भाशाकी डाली कटनी है। अपने पले हरेक बुटै पर

भव तो फल लाने का युग है।।१॥ वीर क्रांति कर देते हैं

वीर भ्राति हर देते हैं। धपनी सोई हुई चेतना जना भाग नाने का युन है।।२॥

पाय का अगह ॥२ पूर्णं रूप से बिक्कार समक्र कर सब कुछ समब प्यार समक्र कर। कब जीती तसवार सत्य को

फिर से ने बाने का युन है।।३।। प्रम मोल कर देवस्थर को, प्रेम जिला देमुतक नर को।

भ्रपने घरको बढ़े प्रेस से स्थाकुत ' समदाने का दुव है।।४॥

> रविता प्रकाशवीर 'स्थाकुल' भागसमान नवा वास दिल्ली

भारतीय संस्कृति कें गौरव-स्तम्भ : वेद

— ग्राचार्य रामानद शास्त्री महोपदेशक विहार ग्रार्थ प्रतिनिधि सभा विहार

'वेश' का अर्थ भाग है यह भाग सुष्टि के प्रारम्भ में परमिषता परमात्मा के द्वारा चार ऋषियों के ह्वय मं प्रेरित हुआ। जिन के नाम अप्ति, वायु आदित्य और अगिरा है। वेद स्वयं कहत हैं—

> वज्ञेन बाच पदबीमायन् । तामन्यविन्दन् ऋषिषु प्रविष्टाम् ॥

श्रवात्—परमाध्या के द्वारा ऋषियों के द्वदम ने या गई वाएं। पदस्त होकर श्राई। परम्परा के द्वारा 'श्रुति कहलाई। पूत्र ने कहा गया है कि 'बद का सर्थ 'श्राल' होता है। वहीं श्राल चार माणों के विषयत है। उन्हें ही ऋष्, यह, तान एव

भगवात् सतुका कहता है कि —
भूत सम्य सविष्यज्यवर्ष वेदात्
प्रक्षित्रपति सर्वात् सर्वोत, वर्तमान तथा
विषय का ज्ञान वेदों से प्राप्त होता है।
क्योंकि सर्वं वेदाति निवंगी —

द्मर्थात् सम्पूर्णं ज्ञान वेदो से ही प्रका-स्नित हुमा है।

महाभारत के रचमिता वेदव्यास जी कहते हैं कि — 'सवबिदु वेदबिदो वेदे सर्व प्रतिध्वतम् ।

सर्वात् वेदो का झाता सब कुछ, जानता है क्योंकि वेद से ही सारी विद्याएँ प्रका-शित हुई हैं।

वेदव्यास तो इतना झागे वडकर कहते हैं कि — 'को यहां (वेदों में) है वहो झम्पन है झोर वो यहाँ नहीं है, वह कहीं नहीं है।'

महर्षि स्थामी दयानन्द सरस्वती घपने धार्यसमाज के तीसरे नियम मे लिखते हैं—

"वेद सब सत्यविषाधों का पुस्तक है। वेदों का पढ़ना एव पढ़ाना सब आयों का पदम बम हैं।" शिक्षा, करद, निषण्ट, निस्स्त, स्वाकरण और ज्योतिव, इन्हें वेदस, क्ष्मकरण हैं। इनक द्वारा वेदों का सत्वार्य बाना जाता है।

धायुर्वेद, षनुर्वेद गन्यववेद, वास्तु-कत्ता, गालिहोत्र धादि प्रयो के कर्ता धुनियो ने लिका है कि — यह सब ज्ञान हुम ने वेदो से प्राप्त किया है।

सास्य, न्याय, वैशेषिक, योग, पूर्व-सीमाखा एव नेदालावि दशन शास्त्रों का सार्त्यय यही हैं कि वेदों की प्रपोश्वेयता सिद्ध की जाय।

वेदो के महान् विद्वान् वेदसमुद्र मधु-सूदन घोमा ने कहा है कि---'गौरस्त्य पारचारप दर्शनों का उल्लेख ऋग्वेद मे उपस्थित है।' उन्होंने ऋग्वेद के नासदीय- सूक्त मे १० पाश्चात्य दाक्षतिक विचारो कापूर्णं विवेचन किया है।

मैक्समूलर के राज्यों में क्लवेद के घटर सारे श्वाधित कमी के सुरक बीज है। उन का मह जी कहना है कि —क्लवेद विदय की दक्षेत्र प्राचील पुरतक है। इतनी पुरानी होते हुए भी इसमें पुराचिराम घथवा धर्म-विराम म परिवर्तन नहीं हुआ है। घण्डी कही पर इसन गाठ-भेद नहीं निकता है। इसका कारण परम्परा से बेदो का परपाठ, वनगठ, जटापाठ बादि - प्रकार स पढ़ने की परम्परा तथा पटने की विधि है। इसी प्रकार जैकडो पण्यितों ने बेदो को कण्डल किया है।

बाषाविज्ञाम-बेत्ता यह मानते हैं कि सुष्टि की धादिम धनस्था में कुछ ही भाषाएँ वी। कुछ लोग यह भी कहने लगे है कि एक ही भाषा थी, जिस से सारी मावाएँ सपभाषा रूप मे प्रकट हुई। बाइविस की पुरानी पुस्तक, बिसे 'बोस्ड टेस्टामेण्ट' कहते हैं, मे कहा गया है कि धारम्म मे एक ही भाषा बी, बहोबा ने बहुत कर दिया । इससे स्पष्ट सिद्ध होता है कि बहु 'भावा' वेद की भावा ही हो सकती है। यहाँ हम बहुत शब्दों को न लेकर केवल ईश्वरवाची शब्दों को ही लेते है-पारसी सपने ईश्वर को 'सहुरमज्दा' कहते हैं। ऋग्वेद में इन्द्र को 'झासुरमध्य' कहा गया है। इसी प्रकार यहूवी अपने ईस्वर को 'यहोदा कहते हैं जबकि नेद मे यहातम शब्द इन्द्र के सिए भागा है, जिसका धर्य ब्रविशक्तिशाली होता है। मैक्समूलर का कहना है कि- बोम्' शब्द स ही 'श्रस्सा' श्रव्य निकसा है। कुरान के प्रसिद्ध माध्य-कार मुहस्मव प्रली ने अपने कुरान माध्य मे लिखा है कि—'धस्ता प्रव्युत्पन्न शब्द 🖁, यह धरव में ईश्वर के लिए पुरानन कास से बोसा जाता है।

कालक्रम के बेदायं की परम्परा बन्द हो गई। केवल कण्ठस्य करने तथा पाठ-मात्र की परम्परा प्रचलित रही। प्रम की परम्परा के ववह विवाह उपनयन, शब-हाइ शादि शक्कारों में बन्तो का विनियोग मात्र रह गया।

सीकिक संस्कृत माथा धौर नेय की माया में धन्तर है। वैदिक सरकृत तथा वेद के प्याकरण तथा वैदिक कोष से सच्छित तथा विद्यक्त कोष से सच्चित कोष से साथ वेदार्थ पूर्वित हो गया। वहाँ मैं कुछ सच्चों का उस्लेख करता हुं— वैदिक सम्ब

वेश्या

विसी

बपारा

ष्टुताची पानी नारी-विशेष कष्य भेषावी ऋषि-विशेष स्रोता हल का कर्षम् नारी-विशेष विश्वामित सर्वमित्र ऋषिविशेष विष्टम् सूय ईम्बर सा बिष्टम्

इत्यादि वेदाथ में स्वरकी भी प्रधा-नता होती है। इस प्रकार मनमानी अर्थ चल नया है।

वेदमत्रों से पशु-हिंसा भी बल पड़ी बिसके लिए वेदव्यास महाभारत से कहने हैं कि—' धूर्ग प्रवित्तस् एतद् नैतद् बेदेषु विद्यते। सर्वात् ' धूर्तों ने इसे बलाया है सन्यया बेदों में पशुहिंसा नहीं है।

राजा कूटबन्ता के यहा बहुत पशु भारने प्रयाद बलि के लिए साए गये थे। बुद्ध ने कहा कि— हे राजन । पहले के बाह्यण जी दूस से हवन किया करते थे।"

धाव से ४०० वय पूर्व के लगवब विजयननर से राज्य पीच्यत धावाम सायण ने सनेक पश्चितों की हायवा से नेदों का गाय्य किया किन्तु वेदायें में कहि तथा व्यक्तिवाचक शब्दों को लेकर इतिहास-परक घर्ष कर दिये। जैसी प्रतिक्षा उन्होंने सपने पाच्य की पूर्विका से की पी उसका पानन उन्होंने नहीं किया। कही-कही धरवील धर्म भी लिख दिया। विवसे वेदायें द्वित हो गया। वेस्तमूलर ने उसी के प्रमुपार धरना धर्म किया तथा उसका सम्मावन भी किया।

महीचर तथा उल्बटादि आध्यकारो ने नेदार्ष नाममान के मनुसार किया, जिससे प्राप्त करो ने हृदय में नदी के प्रति पृणा होने कशी। लोग बही सममने को कि नेदो ने कुछ नहीं है, नहु-ईचनरबाद का उल्लेख है। प्रमित्त का प्रजी यहाद सादि की प्रचाह हुए स्वारित।

ऐसी स्थिति में सहित स्वामी द्यानन्द का प्राप्तर्गत हुया। स्थामी जी न देवालें की सेनी प्रस्तुत की तथा बतलाया कि बेदो का स्था नियक् निकल्त आकरण सादि प्राचीन ग्रन्थों के साथार पर करना चाहिए। उन्होंने कन्ने प्रचौं का दिख्खन कगाया। सहा पर केवल एक मत्र नमून के तोर उच्चित्तक कगाया।

वे वाजिन परिपश्यन्ति पक्वम् । य इमाहु सुरमिनिहरेति !

यह मन्त्र राज-प्रकरण का है---

ये (वो) नाजिनम् (घोट) को परि-पद्यन्ति—पदवम् (परिपदव स्रवात् योग्य) हो त्रया। इससे सुर्पन—(गन्य) निकसती है इसे (निहरेति) निकालो ।"

सर्थात् भोडा जब युवा होता है तो उचले एक विशेष गम्ब निकलती है। इसी हैं सावन-पा नामक प्रौपित भी वेंसी ही गम्बाली होती हैं। राजा मा चाहिए कि ऐसे घोड को कार्य से लगाये। किन्तु विदेशी भाष्टकारी ने जिल्ला है कि यज में भोडा सारफर डालों जब पक जाने ली प्रवासान तमें लाये।

कुछ लोग वेदो का इतिहासपरक धर्म कर उसने आर्थ घीर धनार्य की लडाई का वर्णन करते है। किन्तु उन्हें समक्रमा चाहिए कि धाय' कोई चारि नहीं धपितु जो बदगुण सम्पन्न हैं नहीं 'धायं हैं। इसोलिए इंज्यन्नो विश्वमार्थम्' कहा गया है। धर्चांत् 'धायं बनाघों, इस्लिए धाय और धनायं का युढ नहीं, धपितु सरीर म भीतर हुए दिचार ही दुष्ट तथा सुध निवार ही हुए हैं।

यहीं इन्ट-हुनाधुर' के युद्ध का रहस्य है। इसी का क्यातर कही खैतान कहा स्वा है क्योंकि दुक को 'स्तेन' वहा गया है। महाजिद्धान् प्रस्टर ध्रम्बेटकर ने ध्रमनी पुस्तक Who Were the Shuttas स्वच्छ तिका है कि ध्रमार्थ वाहर से नहीं ध्राये। बास्टर साहत कहत है कि—

जो लोग 'धनान् शब्द से विपटी नाक वाले का प्रत्या करते हैं कि वे गलत सर्पे करते हैं क्योंकि 'धनास ऋग्येद का शब्द हैं। धरफ़्स बोलनेवाल के लिए कहा क्या है। उन्होंने पाशिति व्याकरण का प्रमाण मी उद्युत किया है।

सैक्समृतर ने एक व्यास्थान से कहा या कि साथ जातिनाचक शब्द नहीं अपितु भाषायाचक शब्द है। भाषा के वो प्रमुख विभाग हैं—साथ भाषा एवं सनायं साथा।

कुछ नायाविजान के साधार पर सर्थ कर वेदों मां प्रमय करते हैं किन्तु महाँग स्वामी दयानन्द के प्राप्तमाव के विदिक सूर्य का उदय हो गया है। भीरे-भीरे लोग खमफ़्त लगे हैं कि देद ही मानव के लिए प्रकाशन्द स्म है। बेदों के स्थावित की पूजा नहीं हैं सारे विद्य के प्राणियों की मित्र की दिल्ल से दबत का स्वादेग हैं। वेग, जाति काला-नार सांद का नेद वेदों में नहीं हैं? सत वेदों कर प्रभार एवं पटन पाटन होना थाहिए।

कृण्वन्तो विश्वमार्थम ।

यह सच है सिकन्दर हारा था और पोरस विजयी

लेखक-पी० एन० ग्रोक

भारत ने यानुना करने बाल धाज के पढ़ौसियों के सुगम धाक्रमणों ने सर्वया विभिन्न प्राचीन भारत की सुब्द सुरमा-पित के कारण उस समय के धाक्रमण्-कारी लडकारत धीर नाक रचते हुए बागत जाने पर विवश हुए थे।

ऐसाही एक दुन्साहकी यूनान का सिकन्दर था जिसने भारत की सीमाघी के साम खेडकानी करने पर प्रयने जीवन की कटुतम बूँट का पान किया और दुर्शत के कारण जो प्रतने प्राण ही गया बैठा।

किंतु सिकन्यर की पराजय होने पर जी हमारे इतिहास उनके पुनांचा को मारत की धलेग तम्लान परेख पर उसकी महान विजय का नहांन परेख प्रधात नहीं। प्रसत्य का नहांन करते प्रधात निव इतिह स ने इसलिए पैठ गया है बजी किहम को उस नहांन स्वयं के जितने भी कर्णन निले हैं वे सक के सब जुनानी इति-हासकारों के किए हुए हैं। और यह तो सर्वजात हैं ही कि बीर पराजयों ने प्रपना कुछ काना करने बान साक्रमणकारी भी सरने परामशे को निजय के सावरण में, क्षम कर में प्रस्तुन करते हैं। यही बात सिकन्यर की भारतीय बीर पुन्नशे से निकन्त ने हुई है।

सिकन्दर महान जैवा कि वह पुकारा जाता है हैवा पून ३५६ में जन्मा था। वह मेंनेनिया के राजा फिलिप विजीय और एरिटीन के शाहरात्री मानियास का पुत्र था। घपनी राजनाति निपृजना एक द्विव्य नुर्य के लिए हिनस्य को ना, किन्तु कहा जाता है कि निकस्य को सा, किन्तु कहा जाता मानक्त अधिकार परोप्तन एक समिनारिणी एव शाससी सहिला थी।

सिकन्यर के बाश्यकाल से मेसेब्रोनिया के दरबार का बातावरण प्रपन राज्यों को सीमायों का विस्तार करने और दर्शी हुनु स्वक्त युद्धों की जोजनाए बनाने से सापू-रित रहता था। प्रतिकागणात्मक युद्धों से बचार्जन करने एव तभी युनानी राज्यों का सापनी बनने के महान् प्राकाला मेसेब्रो-निया में स्पष्ट इंडिटगोचर हो रही थी।

जब सिकन्दर १४ वर्ष का हो गया, तब उसकी शिक्षा के नियु प्रसिद्ध यूनानी मार्चित कर रहतू को नियु के किया गया। विकल्प कर कर के नियु के किया गया। विकल्प कर के स्वी प्रस्ता मार्चा के प्रमुख प्रदस्य बाहुस सैतिक कर मुद्देशों अथवा वार्सीन क्राप्ता परामर्थों के स्वीमृत न हो पाया। अपने गुरु के पास विनीत मान से बैटे रहने की अपनेता वार्सी साहसी व्यक्तियों, सैनिको और राजदूरी के मुक से नथे-नथे वर्णन सुनना सिकन्दर को अधिका प्रस्ता के मुक से नथे-नथे वर्णन सुनना सिकन्दर को अधिक करिकर से। उसकी सम्म सोगों के मर्मन्यन से रीडा प्रवास का सम्म साम्य स्वाम प्रम्म सम्म सम्म साम्य स्वाम प्रम्म सम्म स्वाम । एक बार

जब उसका पिता राजधानी से बाहर बा, तब उसने राज्य की सैनिक टुकडिया लेकर पहाडी वोज के विद्रोहियों को दबाने के लिए चढाई कर दी बी।

लगभग इसी समय सिकन्दर के माता-पिता के मध्य पारिवारिक कलह बढती जा रही थी। उन कोगो ने पृथकृ हो जाने का निश्चय किया। फिलिय ने क्लियोपैट्रा नामक दूसरी पत्नी बना भी । रानी स्रोलि-स्पियस राजमहल छोडकर चली गई। सिकन्दर, जिसका सहड स्वभाव धानी मा के स्वभाव से ही अधिक मिलता था. अपनी मा के नाथ ही चला वया। फिलिप को क्लियोपैट्रा से एक पुत्र प्राप्त हुवा, जो राजींसहासन के लिए समान दावेदार बन गया । कुछ समय पन्यात् फिलिप की हत्या कर दी गई और इस पितृहत्या के लिए इतिहास ने सिकन्दर पर सदेह किया है। व्यपने पिताकी हत्या में भागीदार होने की बात असम्भव प्रतीत नहीं होती क्योंकि वह मन्ताके साम साठ-गाठ किया ही करताया।

धनेक वर्षों तक सेना को यह बात रहा था कि सिकन्दर ही गाही पुतराज एव राज्य का वास्तरिक उत्तराजिकारों है, सत उसके पिता की मृत्यु के परवात् राज्यासन को बलात बहुल करने से उन लोगों ने सिकन्दर की पूर्ण सहायता की। राज्यासन पर बैठने के पत्रवात जिकन्दर ने धर्म वर्षेर में सीतेन भाई को मरवा साला था निकसे राजमिहासन ने लिए धर्म प्रति स्थिकारी न रहे।

भ र सिकन्दर समाहरण और विस्तारण के मार्गपर चल पड़ा। उसने सबसे पहले विद्रोही पहाडी लोगो का दमन किया। फिर वह पश्चिम की झोर चल पड़ाझौर डनूब नदी का तटवर्ती क्षेत्र सपने श्राचीन कर बैठा। इस बीचा वेबस की जनताने उसके विरुद्ध विद्रोह कर दिया। सिकन्दर ने उनके ऊपर धति चपसता से भीषण भाक्तमण किया भीर उनकी राजवानी को घल में मिला दिया। इस घटना ने भावी योद्धा के रूप मे उसका यश चहुँ मोर प्रसा-रित कर दिया। एथेन्सवासियो तथा ग्रन्थ सभी यूनानी समाजो ने सिकन्दर के सम्मुख षुटने टैक दिए भीर ईराज तथा सन्य देशों को जीतने में उसकी सहायता देना म्बीकार किया।

इस प्रकार सभी प्रकार की सहायता ते बाज्बस्त हो २३४ ई० पू० में सिकल्यर विज्य-तिबय करने को निकल पडा। में प्रवासनों की निकल पडा। में प्रवासनों की ४०,००० तेना केकर सिकल्यर पूर्व की झोर क्ल पडा।

सिकन्दर सर्वप्रथम ट्राय की यात्रा पर

नया और विजय की आबी यालाओं के लिए इंस्वरीय धाशीर्वाद प्राप्त करने की इंज्डा से उसने विस्थास धौर मिष्ठापूर्वक ट्रोबक-युद्ध के हुलात्माधों की पूजा की।

विकन्यर के प्रस्थान का समाचार सुनकर करान के राजाने विकल्पर की विवयामालामों को सीधवायस्था में सिं रिंग डालने के विचार से उससे भी सिंक सब्या में बपने तीरीक मेंच विद्या विकल्पर मनी 'एसिया लच्च' को जीतने में वफल नहीं हुमा था। योगों की देनाएँ सेनिकस के तट पर मिड गई। धमासान मूड हुमा। सुनांस होते-होते हैं रान को देना के द्वारा प्रतिरोध दोला पड नया और रह माम

'एतिया लम्' से बाहर जाने वाले सभी मार्थों पर धक सिम्म्बर का पूर्ण प्रिकार या। उतने सामीय युनाती उत्प तिवेशों को स्वतन्त्र हो जाने की पोवस्ता कर दी विकित प्रदेशों पर राज्यपाल नियक्त कर दिए धौर स्वयं को सम्राट् घोषित कर दिया। नये मृहीत क्षेत्र विकन्दर कें समिन की प्रक्रांसिक्त हो यर क्योंकि इसकी विवास पुनानी जनसस्या एवं सैनिक-बाक्त सहासक विद्य हुई थी।

एक वर्ष वश्यात् विकल्यर ने उत्तरी फिक्रिया में गौरहियस के राज्य पर धाक़-मए किया भौर जने अपने अधीन कर निया। किवदन्ती के अनुसार यही पर प्राचीन फिज्यन-शज्ञा गौरहियस के एक वे नथी गौरहियन गाठ को विकल्पर ने अपनी तमवार ने काटा था।

यस सेनामिशन के साथ-साथ सिकन्वर की नी-नैना है लेक्पोल्ट क्षेत्र से कल गई वी। यह बनी बेड़ा सिकन्दर को स्वदेश से सम्पर्क बनाए रकने से सहायक हुआ या। किंतु अर वृक्ति कह दूरस्व अदेशी तक बाने का इच्छुक वा, सत उसने अपनी नी सेना को अपने मुख सहदे पर सीट वाने का सायेख वे दिया।

हैलेस्रो-ट लेन से सिकल्यर की नो-सेना को उछके राजा का झादेश निका कि जह जुनान के राज्य पर साक्रमण करने के लिए तैयार रहे। धपनी नृहमृति पर साक्रमण की सावका दूर करने के लिए सीरियाई लगुरी तट पर बडाई कर केने के लिए ईरान का राजा बेरियक स्वय ही एक बहुत बडी देना लेकर सीरिया में प्रविष्ट हुआ। दोनों सेनाए ई० पूल ३३३ में ईवल में एक-दूसरे से पित वहाँ। सोक हतिहासकारी ने लिका है कि सपने महिला वर्ष को पीखे ही कोक्कर ईरानी देना सर्थ-प्यस्त हो भाग कडी हुई, किन्यु स्ववहन र ने पकडी गई महिलाओं के साब स्ववहार करने में कुरता एव स्वव का परिचय दिया। डेरियस ने प्रपता प्राचा राज्य सम्प्रित कर देने का प्रस्ताव रखा किंतु सम्पूर्ण राज्य-समर्पण से कम कोई बात सिकन्दर को सन्तुकट कर ही नहीं सकती थी।

उसने सब 'टायर' को जा घेरा।
वेरा बात मास तक चला, धौर सम्पूर्ण प्रतिविद्या उसके सकीन हो क्या। वाद में पाजा पर अधिकार कर सिकत्यर निक्त में चुला। ईता पूर्व ३२५-१३१ के वर्व की धीत ऋतु निक्त से ही व्यक्तीत करने वाले सिकन्यर को ही इसी समय सिकन्यरिया की स्थापना करने का सेय दिया बाता है। कि जिसी पुक्तानीन न्यरी पर ही सिकन्यर ने यथना नाम बोर दिया हो।

मध्य सागर के सम्मूर्ण पूर्वीय को को को परवात् । सिकन्दन ने प्रपत्ती । को की के एववात् । सिकन्दन ने प्रपत्ती । प्रोत्त के एववात् । है । है । हु ० ३३१ में उसने २० सिसाम्बर्ध के दिन टिप्सिस नदी पार को । ज्यों ही वह मोसोपोटामिया से पार कथा और प्राप्त का और प्राप्त का और प्राप्त का और प्राप्त का अपने हो । स्वयंकर कम्मूक था कही हुई । स्वयंकर क्षात्म का सम्मूर्ण था । इंतनी सेना को किए पानिक होना पढ़ा थी में देरियस में मिट्या को साम प्रया । श्रीमिक क्षेत्र के सम्मूर्ण था । श्रीमिक के मुख को हो 'पर विका-मूर्ज के नाम से भी पुकारा का साम हो स्वयंकर को साम स्वयंत है । श्रीमिक इर एक नाम है ।

सिकन्दर ने परशिया-साम्राज्य के बेबिलोन प्रदेश को भी सपने स्वीत कर किया और र्रप्ता की राजवानी परतो स्वीत कर उस समुद्र नगर को स्वप्त में प्रवेश कर उस समुद्र नगर को स्वप्त ने पैरी तक रींद डाला व किर इसकी साम लगा दी। कहा जाता है कि किसी पूर्व राखा अरखे हारा यूनानी मिल्दरों को व्यवस्थ कार्य किया बया।

वेरियस उत्तर की भीर भागा। किंदु सब उचकी सोन निरस्तर की गई। एक राजा दूसरे राजा ना मीखा कर रहा था। वेरियस की मेरे निया गया। उन्नके साथ उसका चमेरा भाई एव मोडे हे सरसार ही वे ई० पू० ३३० की भीम्म ऋतु मी। रुप्ते पूर्व ही कि विकन्सर के साथी भागे बढ़कर वेरियस को कस्त्री कारों, बेरियस के साथियों ने उसका प्रास्तान्त कर दिवा भीर उसका मृत सारीर सिकन्यर को सीप सिया।

इसके बाद क्यम (क्षोर) सावर के तटीय पहाडी प्रदेशों को रॉडला हुआ सिकन्दर भकगानिस्तान की भोर बढमया बद उसको धपनी बीठों पर भमण्ड होने

श्रमा वा। धन वह स्वय को धर्मेदवर सममने सवा वा और मपने को पूजने का श्रीवकारी समक विनान नच किए बप्रतिरोचित समर्पेस चाहता वा । उसने **ई**रानी राजिल्ह्न व राजीवित वेशम्या सनीकार कर सी। इस काय ने उसके क्षेत्रेडोनियनों की सैनिक टुकडियो मे रोव ब्रह्मक्त कर दिया । उनको सदेह होने लगा कि तनका मृतिवद समादरित नेता उनका तिरस्कार करने संगा या और उनसे बिरक्त होने लगा वा क्योंकि वह ईरानी राजीचित वेशभूवा को पहनकर दरबार मै बाता वा और बन्य लोगों से निविचत श्वमर्पस मान की अपेक्षा करता वा। निकल्डर की सेना के विभिन्न वर्गों में बोर बसम्तोव की सहर फैल वई । सिस्तान वे प्रोपवेशिया के स्वान पर डेरा डाले हुई √ सेनामे घोर विभेद फैल गवा। प्रस्व-क्षेताब्यक्ष फिलेटस एव कुछ बन्य लोगों पर विकल्दर की हत्या करने की योजना बनाने का धारीन सगाया। धिकन्दर ने उनकी भीत के पाट उतारने का निश्वम लगमग किया ही हुआ। या किंतु फिर कुछ सन्पति गा वई । उसकी स्पन्ट हो स्या कि ऐसा कोई भी पन और भी विभेद पैदाकर वेवा इसीलिए वह नरम पत्र गमा।

ई०पू० ३२० की वसमा ऋतुमे सिकन्दरने हिन्दूकुछ पार किया और सम्पूर्णं वैषिद्वा अपने अधीन कर निया। बिलुप्त होते वील पडने वाले विभेद फिर है सभर भाये। उस समय तक सिकन्दर पूरे रूप में मदोदत समिपति वन चुका ना । अनेक सैनिक-अधिकारीयए। पर भाने झजिनायक के विदद्ध यहयन्त्र करने का **्रधा**श्चयोग सगाया गया श्रीर उनको मार

ज्यो ही उसकी सेनाए सिंधु नवी की ब्रोर बढी. त्यो ही भारतीय पठान कता ह-कियों ने उनको निरन्तर खिये हुए स्वानो से सत्रभी पर साधार पहुँचा पहुँचाकर, तुन किया। ये उस समय भारत की बाह्य प्रतिरक्षा पश्चिया थी। एक किंवदन्ती के श्रमुसार यही वह समय वा वन सिकन्दर ने पनित्र मारण्ट हुसा और उस पर दियो-नियस का पत्र सोज निकासा था।

प्रव सिकन्दर सिंघु नदी पार कर भारतीय उप-बहादीप की सीमाओं पर मा सदा हुमा बा। सिंघु पार भारतीय प्रवेश में उत्तरी क्षेत्र में तीन राज्य थे। बेहसम नदी के चट्टे सोर के क्षेत्र पर राजा धान्मि राज्य करता था । तक्षशिका उसकी राजवामी वी। वेनाव से अवते हुए क्षेत्रों पर पोरस का राज्य वा, और एक तीसरा राजा कश्मीर के वहुँ ग्रोर की ग्रमिसार भूमि पर श्रासन करता था। राजा भ्राम्त्रि का पोरस से पुराना बैर वा, बस उसने सिकन्दर के धाक्रमण के समय को धपनी श्चनुताका पूरा-पूरा बदका नेने का उप

युक्त भवसर समग्रा। पश्चिसार लोग पोरस गौर सिकन्दर, दोनो को नित्रतापर्ण व्यवहार बनाए रखने का बचन देकर तटस्य बैठने का निक्षय कर बैठे। इस प्रकार पोरस सकेला ही रह बया जिसको सिकन्दर का सामना करना था। सिकन्दर को बास्सि से सभी प्रकार की सकिय सहा-यसा प्राप्त थी।

पारस्परिक बर्णनो ने कोई तिथिया उपसम्ब नहीं है। सिंधु के ऊपर एक स्यायी पुत बना श्रिया गया और सिकन्दर की सेनाए भारत में प्रकिष्ट हो गई। बाक्रायक सेना ने घटक के उत्तर में १६ मील पर पदाव हाला। ग्रीक-वर्णमी ने धनेक धसर्गतिया त्रुटिया धौर न्यूनकाए बूढी का सकती हैं, क्योंकि उनके सिए इसका स्पष्टीकरण करना कठिन है कि उनके मूर्तिबत् समादरित एव बारमस्माधी सिकन्दर ने भारत में बपकृत्य क्यों किए ! इसी कारण वे यह जित्रण करने का डॉंग करते हैं कि अपनी विशासता के कारण सिकन्दर ने अपनी भारत विजय के परि-शाम व्ययकर दिए ये घोर वह घपनी मूल भूमि को लौट नया या।

यह विस्मरण नही करना चाहिए कि सिकन्दर जब प्रपने देश को बापस चला, नव तक उस का गद भाड़ दिया गया था । उसका दिल टूट चुका या वह विषम रूप से बायल हो चुका या एव उस की विशाल शक्तिशाली सेना बुरो तरह तहस नहस हो चुकी थी।

प्लूरावं के झनुसार २०००० पदाति एव १५ ००० प्रक्वारोहियो की सिकन्दर की सेना पोरस द्वारा युवनेत्र से एकत्र की गई सना से सख्या ने बहुत ही प्रथिक थी। मिकन्दर की सहायता चार्टिम की सेनाची भीर पारमी मैनिको ने भी की।

महाराष्ट्रीय ज्ञानकोष के सप्तम भाग कें पृथ्ठ ५३१ पर लिका है कि सिकन्दर बीर पोरस की सेनाबी का परस्पर समर्व वेनाव नदी के तटो पर हुआ वा। किंतु कटियस सिसता है कि, 'सिकन्दर जेह्सम के दूसरी कोर पडान डाले पडा था। सिकन्दर की सेना का एक साथ जेहल म के द्वीप में पहुँच गया। पोरस के सैनिक **उस द्वीप वे तैरकर पहुंचे उन मोगो** न उसका घेरा डाल दिया और यूनानी धान्निम दस पर हमसा बोस दिया। उन्होने शनेक यूनानी सैनिको को मार ठावा। बत्य से बचने के लिए अनेक यूनानी नदी में कूद पड़े, किंतु वे सब उसी में दूव गये।

ऐसा कहा बाता है कि अपनी सेना श्रृष्टित सिकन्दर ने जेहसम नदी को एक धनी ग्रवेगी रात में नावो द्वारा हरकापुर से उत्पर ६० मील की दूरी पर तेज कटाव के पास पार किया । पोरस के ब्रक्तिय-वस का नेतृत्व उसका पुत्र कर रहा वा। अय-कर मुज्नेड में वह सारा नवा। ऐसा कहा वाता है कि इस दिन नवीं हो रही की और पोरस के विशासकाय हाथी दलदक मे फसबबे । किन्तु बूनानी इतिहासकारों द्वारा दिए वये बर्समों की भी यदि ठीक से

मुक्तम-विवेचनाकर सी जाए तो यह राष्ट हो आएमा कि पोरस की मजसेना ने सब् शिविर में प्रतय मचा दी भी भीर सिकन्दर नी लक्तिसासी फौजको तहस-नहस कर

युवराजने सिकन्दर को घायल कर दिया भौर उसके बोडे बूसे फेसव को मार राखाः ।"

प्रारम्भ हुआ पोरस ने महानाश करन का बादेश दे दिया ।'

पोरस ने (उदारतानश) केवल सिकन्दर से शकेले ही निपट लेने का प्रस्ताव रखा। ब्रिकन्दर ने उस (बीर-प्रस्ताव) को धस्वी कार कर दिया। भागे जो युद्ध हुआ। उसमे उसका मर्मान्तक भाषात के कारण उसी के नीचे डेर हो नया। 'बकाम से युद-सूमि में सिर जाने परसिकन्यर को शत्रुधो से चिर जाने का मग उत्पन्न हो गया किंतु उसके धनरक्षक द्वारा वह बहा से तुक छपकर विश्वका दिया ।

पोरस के हाथियो द्वारा युनानी सैनिकों

एव थे सियमी को ग्राजा दी कि वे गंबसेना के विषद्ध कायवाही करे। इस प्रत्माचात स विडकर उन बाहत पश्यो ने कुड़ हो माकमराकारियो पर भीषए। हमला कर विया, जिसके परिक्षामस्वक्षप व लोग उनके एरियन ने लिखा है कि, 'भारतीय पैरो तन रौद डाले गये। सर्वाधिक हृदय-विदारक इत्य तो वह या जत वह स्मूल वर्म पशु अपनी सुड से युनानी सैनि ह की परुष लेता था उसको घपन ऊपर वाबु मण्यल मे प्रथर हिलाना या धौर उस अपस्टिन कहता है कि ज्यो ही युद सैनिक को अपन बारोही के हाथों में खींप देतावा को तुर-त छसका सिर घड ने धनव कर देवा था। इस प्रकार परिणाम धनावश्यक रक्त पात रोकने के लिए सन्देहास्यद वा कभी मेमेडोनियन लोग हाथियों के पीछे भागत में भीर कभी उनसे

> वियोबीरस सत्यापित करता है कि, विशालकाय हाथियों ने सपार बल या, और वे सत्यन्त लाभकारी सिद्ध हुए। उन्होंने भारते पैरो सल बहुत सारे यूनानी सैनिको की हडिडया पसलिया चूर चूर कर दी। हाबी इन सैनिकों को बपनी सूटों से पकड लेते वे और भूमि मे जोर से पटक देते थे। वे अपने विकराल गण-दन्ती से सैनिको को गोद गोदकर मार डालते

कुर दूर भागने को विवस हो जाते थे। इसी

प्रकार सारा दिन ज्यतीत हो जाता या,

और युद्ध चलता ही रहता वा।

बे सब वर्णन स्वप्टत प्रदक्षित करते हैं कि युद्ध यातों सूची जमीन पर लडा यया या अथवा यदि भूमि मीली भी श्री तो भी उसमे पोरड की सेना दशदल मे नही फमी बी--जैसा कि ग्रसत्य प्रचारित किया जाता है।

वोरस की बीर सेना इ रा शतु हुद्य मे प्रस्थाति भवकर मातक के इन वर्णनी के होते हुए भी पक्षपातपूग्य कुद यूनानी वजनों में दावा किया गया है कि पोरह वासन आर्था, पकडा गया था और उसकी सेनाको शस्त्रत्यागकरने पाये। —'इतिहास की सयकर भूजें से सामार

(क्रमा)

मे उत्पन्न बात र का बर्शन करत हुए कहि-यस ने लिखा है --- इन पशुक्षों ने चोर धातक उत्पन्न कर दिया वा घौर उनकी (तूर्यवादक जैसी) प्रतिष्वनित होने वाली भीषरण चीतकार न केवल घोडों को सया तुर कर देशी थी जिससे व विगडकर भाग उठते अपितु घडमवारी के हृदय भी बहुआ। देती भी। इसने इनके वर्गों में एसी अग दड मचाई कि अनेक विजयों के ये शिरो-मिंग सब ऐसे स्थान की लोज में लग गये नहा इनको शरस मिल सके घन सिकन्दर ने खोटे शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित धग्रेनियनो

> तेरी लीला ललित ललाम है - स्वामी सोमानन्द (शीतल)

बन्तर्यामी स्वामी तुम को बारवार प्रशाम है। तुमने लोक रचाव है, सूर्व चन्द्र चमकाये हैं। कप धनुप बनाये हैं।। क्या में सन्व्या वे तेरी बीला ललित ललाम है ॥१॥

विद्युत्की यति वचल मे बन पर्वत जल मे बल मे। मित-भवति फूलों मे फल मे ॥ संघन सताचो मे पद्मीनण नाय रहे गुरा-ग्राम हैं ॥२॥

> तू महान् से महान् है धौरन कोई तेरे समान है। में वेदों का प्रमास है। दिया ऋषि ने यह जान है।।

'शीतल' जनती तन पर तुन को सुमिर मिझे विश्राम है ।।३।। धन्तरीमी स्वामी तुम को बारबार प्रणाम है।।

त्रार्यपथिक अमर शहीद प० लेखराम जी के बलिदान दिवस तथा होली के पवित्र पर्व के एक ही दिन ६ मार्च को पड़ने पर हमारा कर्त्ताव्य

उपास्मै गायता नर पवमानायेन्दवे । ग्रभिदेवा इयक्षते ।

भावात-प्रभ उपदेश करत हैं ह मनुष्यो महतीय दिव्यगुण बाल समाजसबी पृत्यों के चरित्रो का बहु ग्रास्त्र से मनन करके उनके पद्धचित्रो पर चलकर अपने चरित्र को भी उनक सम न उनम बनाबी ऐस बनु करगीय महान् व्यक्तियो की ध यसमाज के गौरवमय इतिहास में कुछ कमी नहीं है। भायसमाज का इतिहास विसदानी का इतिहास है व्समे बायसमाज के सस्या पक महर्षि दयान द जी सरस्वती संबप्रयम ऐसे महान् व्यक्ति हुए हैं जो देश जाति भौर राष्ट की निष्काम भाव से सेवा करते करते कुछ स्व यीं झीर वस विरोधी लोगो के यडवन्त्र का शिकार हुए भीर विश्वास घाती श्रपन रसोइया जबन्नाव के द्वारा दूध में हलाहल विष दिये जाने के कारए। देश की वेदी पर सपने प्राणो की बसि दे द । इसके पन्चात् झायसमाज स्थापना के पहिल प्रवास साठ वर्षों में बलिदानी की मन्द्री सीलय गइ दिलाई देती है। इन से स कुछ वर्माच लोगों के छुरे बौर गोली का शिकार हुए भीर कुछ ने निवास हैदराबाद की जेल म परम प्ररणामय द्मार ग्रंथ सत्याथप्रकाश का बादोलन करते हुए भ्रपने जीवनो की बस्ति दी। इन में म महर्षि की बलि के बाद धमबीर इस्सर शहीद प० लेखराम जीका नाम स्वर्णाकरों में लिखने योग्य है जिन्होंने ब्रावसमाज का प्रचार करते हुए हिंदू बाति की रक्षा में अपने जीवन की शाहति ३६ वय की छोटी सी बायू में ही ७ माच सन् १८६७ से दे थी। वह जालिम घमा ध मुसलमान युवक पण्डित जी के पास शुद्ध होने के लिए द्याया था परन्तु उसने खुरा पेट मे जोप कर उनका जीवन समाप्त कर दिया। ऐसे महान् पुरुष द्वारा उप स्यित ग्रादशों को जीवन म वारए। करके देश भीर जानि के गौरव को ऊवा कर सकते हैं। प० लखराम जी महर्षि स्वामी दयान द के सच्च भक्त भीर भाग हिन्दु जाति के निष्धावान् सबक थे। पण्डित जी का प्रतिक्षण भ्रय सस्दृति एव वैदिक र्षामया और हिन्द्रभी को ईसाई मुसलमान श्व बनन जने माज व्यक्ति होता था। स्राप का छोटास ३० ०प का जीवन वड मप्रथ भीर भागतीत का एक प्रराणादायक कहुनी है। मा उट फारसी क महान् विद्वान होने के घलावा घरबी के भी पण्डित थे। यही कारए था कि मुसल मानो के स शास्त्राय में आपके कुरान के ज्ञान ग्रीर भरवा न प की स्ट्रिला का देखक बड बड मेलव चक्ति रह जाते वे । लक्षराम जी वड कुशल व्याख्यानदाना थे। द्राय धर्मों की त्रुटियो पर द्राप इस कूशभाता से प्रकाश डासते थे कि उसमे

किसाप्रकार की कटूता एव खिछोरापन न धाने पाला था। भीर यही कारसा था कि साप के व्याल्यानों में सभी अर्मों के लोग विशयत मुखनमान नोग भारा सल्या मे सम्मिलित हाकर रस लते थ ? यद्यपि ब्राप सभा वर्मों का खण्डन मण्डन समान रूप से करते वे तो भी मुससमानी के बलावा शय बम बालो को ब्राप के प्रति कोई विशेष शिकायत न थी क्योंकि आप की सुधार भावना का व ग्र-व्ही तरह समझते थे। प्रवास सनातन धम सभा के महोपदेशक प॰ दानदयालु जी ता झाप को हिन्द धम बाति का परम रक्षक मानते वे बौर कहा करते ये कि प॰ लेखराम जी के होते हुए हिन्द्रमी की जह कोई भी सोलली नहीं कर तकता। मुखन मान विशयकर ब्रह्मदी कादियानी धाप से बहत द्वारसते वे धीर माप की पान के वी के प" रहते थे इसका एकमात्र कारसा वह या कि बाप उनको बार-बार शन्त्राय के वास्ते श्राह्मान करते रहते ये भीर उनके भूठ कक्षामी का मुह तोड व्यवाब देते **ये** बीर एसा यूक्ति समत माण्डा फोड करते बे कि उन को नाई जवाब न देते बन पहला था। जब ही सहमदियों की कोई पुस्तक प्रकाशित होती अथवा कोई लेख पढने को मिलता आप तुरन्त अविलम्ब पुस्तिका द्वारा लेख वा व्याक्यान मे उसका ऐसा भाण्डाफीड करते कि वे दगरह जाया करते थ । उन्होंने इससे छुटकारा पाने के लिए धनेक स्थानी पर बाप पर कोटों ने अभियोग चनाये परन्तु लाहीर मेरठ बम्बई तथा दिल्ली बादि सभी अगह बाप निर्दोष सिक्क हुए। प्रचार कार्यों में भाग इतने व्यस्त रहते ने कि द्माप का भाई वाएकमाल पुत्र की मृत्यु की सबर भी किसी प्रकार की वाथक नहीं होती थी। बर्दी गर्मी यात्रा का बकाबट और तकसीप भी किसी प्रकार की बाबा उपस्थित न करती थी। कई बार ती हिन्दुशो का मुख्यमान बनने स बचाने के लिए प्राणी की बाबी लगकर चलती टन से खलाग अगाकर यथासमय वहा प चत थे। ऐसे थ निर्मीक प्रवारक हमारे लेकराम जी।

पण्डित जी का व्यक्तिगत जीवन बडा सादा भाडम्बर स कासी दूर वा। वह बालकपन स हा पूजापाट वार्मिक ग्राची के पढन मे रुजि लत थे। पूरी परिपक्क ६ वय का धायुमे उन्होंने विवाह किया भीर कुल तान बव बड़ी सादनी स ग्रहस्थ की जुम्मरारिया पूरी क्शी परंतु प्रचार काय निरक्तर चलत रहा ग्राप ग्राय समाज धयवा हिन्दू थम पर कोई भी ब्राक्षय सहन नहीं कर सकते ने। ब्राप का कामकात्र वटा व्यापक वन वया था।

किसी भी हिन्दु को मुनक्सान ग्रयवा ईसाई बना सेमा तब तक ही सम्भव वा जब एक कि बाप को इसका जान न होता बैसे ही बाप को पता चलता बाप तुरन्त दौडबूप करते और उनको पतिल होने से बचा नेते थ । बापने बहा सहस्रो सास्त्राय किये वहा लगभग तीन दबन छोटी वडी पुस्तकें भी लिखी । महर्षि स्वामी दयानस्य की तरहधाप का भी पूण विश्वास वा कि वैदिक शिक्षा के प्रसार क बिना ससार का उदार कठिन है । इस हेत् वह विदेशी मे भी प्रकार करने क लिए जान की बोजना भा बनाते थे । उन्होने कुछ पुस्तको काध्यरवी में भी धनुषाद किया था। परम्त दुर्माग्यवध दुष्टाचारी विरोधी मुससमानो ने जनका पीखा न खोडा भीर बीबा कि पहिले लिख चुक हैं। ७ माच सन् १ ८६७ को काहौर में उनक पेट में खुराघोपकर एक दृष्ट ने उनकी हुत्या कर दी और सदैव के लिए उस वैविक जगमनाते हुए सुय की शस्त कर विवा।

बाद रहे लेकाराम जी का विलदान हिंदू ज/ति की रक्षा करते हुए हुना। परन्तु दुस है कि हिंदु वाति फिर से सकट ग्रस्त है। विधर्मी सोग घरव देशो तथा पारचात्य देशों की विपुल धनराधि के बल बूते पर अशिक्षित सामन हीन पिछाड हिन्दुसो को एव तथा कथित हरिवनी सौर ब्राञ्जतो को प्रलोभन देकर श्रवना हरा बमका कर उनको धम परिवतन करने पर वाधित कर रहे हैं। मीनाक्षीपूरव वैश्वी घटनाए फिर से घटने सगी हैं। यही नहीं जिन हिन्द बाति के लोगों की मुसलमान न होने देने धमना पहिले से हुए मुसल मानो को हिन्दू धम मे वापस लाने के सिए हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्य ने शुद्धि का वक्र बसाया वा धौर जिसके परिणाम स्वरूप उनको एक विषयीं मुखलमान ने उनकी खाती में गोली दाग कर उनकी हत्या की थी धाज वहीं मेव पून मुसल मान होते जा रहे। यदि ऐसा ही होता रहा भीर हम न अने तो वह दुर्दिन दूर मही है कि जब बाज की वहसत्यक हिन्दू वाति शल्प सस्यक घोषित की आवे और विश्वमी लोग इस स्थिति का राजनैतिक लाम उठाकर श्रपना श सम स्थापित कर हैं। स्थिति नहीं भयकर है। इस वय प० लेखराम जी के बलिदान दिवस पर सभी हिन्दू विशय कर धायसमाजी सभी भेद भावों को शुलाकर कुछ ऐसे ठोस कदम उठाने की योजना बनावें जिसस स भय कर स्थिति का सामना करके विवर्शियों के नापाक इरावे निफल कर व और उनकी मुहकी खानी पड़। यह वच और त्री महत्त्वपूरा इसलिये थी है कि होसी का पृश्चित पत्र भीर लेकरान जी का बनिवान विवस हमारी बाद में शत्तेची तारीकों के

धनुसार एक ही दिन ६ माच की घा पढा है जब कि इन हिम्बी तिबियों के धनुसार बलिदान दिवस फाल्गुन तृतीया (नेसराम ततीया) भीर होनी फाल्मुन पूर्णिमाको होते हैं जो कभी भी एक दिन नहीं पढा करते। प० सेसाराम जी का जहा एक मात्र यही सवेश या कि सब हिन्दू सवए। और बख्त सोटे बढे सब मिसकर सगठित होकर एक सब्द हिन्दू जाति के तौर पर धपना धस्तित्व स्वापित करें। वहा होती का एक सबेश मञ्जूषा मिलन भा है कि सब लोग बापसी मेद बाद मुलाकर छोटे-बढ सभी मिलकर रहें और पुरखो का इस दिन के लिए वह बी कहना है कि बाज के विन कोई सरप्रय नहीं है सभी एक दूसरे की सहश्तुभूति के पात्र हैं। देव का पवित्र सदेश भी यही है कि सब छोटे बड़ो के साम मिलकर काय कर और मानन्द रह हों।

> क्लेकिरिक्किसिस स रमामहे। ऋग्वेव १०।१३४।७

भत हमारा सब का कतव्य है कि हम समय के प्रभाव को देखें भीर हिन्द वातिको विनाश के गड्डो में विरने से बचाय । बही समय की पुकार है।

उत्तिन्छत बाग्रत डाप्य बरान निबोधत ।

बाबो जरा परिवत जी की जीवन तालिका पर बष्टिपात कर लें---

सैव्यदपुर नाम के प्राम तहसील चक बाल जिला बेहलम (पाकिस्तान)में महता तारा सिंह के बर ने जन्म -1=15 दिहाती स्कूल मे उद फारसी पढ़ने के

१८६४

शिष् स्कूल ने दाखिल-चचा गण्डासिंह क पास पिशावर 2=48 वान।--चचा की नौकरी स्थानान्तर होने पर

प॰ जी का वापस वर-१८७३ वृश्चिस में नौकरी वेसाबर में --- १८७४ ऋषि दवानन्द क दक्षनों क सिए धज

मेर जाना--3025 नौकरी खोडना---\$550

पेशावर में बायसमाज स्वापना-१८६० कुम्स मेले पर सहास्था मृजीराम के साव प्रवार काय--9929

३४ वय की बायु में २६ वर्षीय लक्ष्मी देवी से विवाह-1581

> पुत्र जय---2 4 E X 2528 पुत्र मृत्यु

एक वर्गाच मुखसमान द्वारा पेट में खुराधीप कर हम्या--- ६ माव १८१७ धन्तिम सस्कार जाहीर में सहस

कोनों का शब बाता ने सम्मितित ७ मार्च १८१३ वैज्ञानिक

वैज्ञानिक वैदिक चिन्तन

--- प्रो॰ प्रतापसिंह समीक्षक हा० किका विकेशी

प्रकाशक -- धार्यकुलार समा (रक्षित), किलवे दिल्ली-६ ऋषि कोबोरसक १६८४। गुरुष १७४, पुष्ठ ४०

श्राव का विरव भौतिक विकास के यब ये उत्पात होकर पैवाधिक नृत्य कर खा है। बसी बीवों में पपने को सर्वेषण्य मानने वाका मानव बौतिकता के बहुव मानवे में हिक्क बीव बजुवों को पी लिजतत कर रहा है। इसका धन्त कहा होगा, हु भी बताना जब बिन्त है। परन्तु इतना निश्चय पूर्वक कहा वा बकता है कि ताब की रक्तम्पापी परिस्थितियाँ कम्मापुरी वेदवाशी का मुख्यण न करने के कारण है पैदा हुई है। विदक विज्ञान का सामव भीर परिवर्ध कि क्यापुरी वेदवाशी का मुख्यण न करने के कारण है पैदा हुई है। विदक विज्ञान का समाय भीर परिवर्ध के सामव है वाह कि विद्याद का प्रमाव न्याप्त हो। के स्वत्य का एक हो। एत्याह क्याप्त का प्रमाव प्रकार हो। कि वेष हो वेष वा एक हो। एत्याह ने वेष का वाष प्रकार हो। हो हो वेषण कर पत्र विद्याद का स्वत्य विवासों है। सीव स्वत्य का पत्र विवास का सामव सीवन सीव हो। वेष का वाप विवास हो। के सामवा का सामव सीवन से पीवा होने वाली वास्त्यामों के सामवाण का सामव सीवन से पीवा होने वाली वास्त्यामों के सामवाण का सामव सीवन से पीवा होने वाली वास्त्यामों के सामवाण का सामव सीवन से पीवा होने वाली वास्त्यामों के सामवाण का सामव सीवन से पीवा होने वाली वास्त्यामों के सामवाण का सामव सीवन से पीवा होने वाली वास्त्यामों के सामवाण का सामव सीवन से पीवा होने वाली वास्त्यामों के सामवाण का सामव सामवाण का सामव सीवन से पीवा होने वाली वास्त्यामों के सामवाण का सामव सामवाण का सा

प्रस्तुष्ठ पुस्तक में प्रो० प्रवापविद्य ने सपने चार केशों से वेदिक-चिन्तन को एक, स्पष्ट एवं वैद्याणिक जावार्षीजों में निकारित किया है। 'विषय-प्रवेश में कराना या है कि जीवन और जमय ने इन्द्र की सावन्त स्थिति होने के सावन्त्र सी मिलने से स्टर पर एकक्पता 'किसी है।' बहुवनिहिताय, बहुवनहुकाए ही विषय चेतन का जहान व प्रयेश है। 'प्रकृति और तृष्टि सक्याय में विजिन्न वर्धनों के इन्द्र से क्षान्तने के लिए ने कान ने वैज्ञानिक प्रवृत्ति का ह्यार तिया है। इसी तरह 'वास्त्र में लिए ने कान ने वैज्ञानिक प्रवृत्ति का ह्यार किया है। उसी तरह 'वास्त्र-परमाना, ज-'जीवन वर्धन तथा समार्थ कर्म- कक्षान-निकार्श 'प्रथमायों के इन विषयों पर स्तरीय में कियु गहुराई के साथ क्षान्त का निकार को विवेचना यौनी विजनी रोपक है तक भी जतना ही इल्लाइन है। यह पुल्तिका गहुन प्रथमें को के तिए विजनी उपयोगी है, उतनी है। साथ के लिए में। बेवन पुल्तिका का विरोगामा एक स्वयन पैरा करता है कि वया विकार के छह ऐका नी है जो वैज्ञानिक नहीं है ?

प्रेयक — विकय द्विवेदी महाराजा पूर्णवन्य महाविद्यालय बारीपदा (७५७००१) (उदीसा)

ग्रपराधी अधिकारियों को फांसी हो

जानूची काम्ब के ब्रांश्युश्य अधिकारियों ने देश के बाब जो निश्वाचयात किया है, तह एक अमिट कसक है। भारत सेंवे देश में, जहा पर राष्ट्र के सिए सबंदर वस्तित करने वाले बहुत पैदा होते रहे हो, दस प्रकार का विजीना हरय सम्भूषे बीट के समस्य है। इस बाहूबी काम्ब ने यह प्रमाचित कर दिया है कि हसारे देश में प्रमाच्या कर तक तथा मुद्या पर विज्ञान कर तथा मुद्रा के सवस में किसी भी प्रकार की विज्ञा है पहला है। इस काम्ब के सवस में किसी भी प्रकार की विज्ञा है पहला है। इस काम्ब के सवस में किसी भी प्रकार की विज्ञा है अस्ति कर तथा में स्वाच के स्वच में किसी भी प्रकार की विज्ञा है। इस काम्ब में विज्ञाने भी असि मुक्त विरुद्धा कर तथा है। इस काम्ब में विज्ञाने की स्वच में बात की स्वच स्वच की स्वच साम्ब की साम्ब की स्वच साम्ब की स्वच साम्ब की स्वच साम्ब की स्वच साम्ब की साम्ब की स्वच साम्ब की साम्ब की स्वच साम्ब की स्वच साम्ब की स्वच साम्ब की साम्ब की स्वच साम्ब की साम्ब की साम्ब की साम्ब की साम्ब की सह साम्ब की सा

रावेदबास बार्व, मुसाफिर साना, सुल्तानपुर, ४० प्र०

श्भ विवाह सम्पन्न

विल्ली। वार्षवेषिक वसा ने ऋग्वेद के सनरेजी नाध्य के सम्पादक एव रजकार पिक्ट बहुदल स्नातक एस० ए० की सुपुनी वीरिका सानेय एस० एव-सी० का बुव विवाह बम्मू निवासी की रामधृति सर्मा के सुपुत्र बा॰ रवील समी एस० बी० बी० एक के साथ १० फरकरी - १३ को नैदिक विशिष्ठे सम्मान हुमा। इस मवसर पर सार्थवन्द के प्रविद्ध विद्यान् स्वाक्त एव प्रीतिमोन ने उपस्थित के। जम्मू ने बम्बन्न ने स्वाक्त पर प्रतिनिधि समा के प्रवान बा॰ वोर्थन्प्रपास सारक्षी ने यह एव स्म कराई।

> निवेदक— रचुनाय प्रसाद गाउक

नभ के तारे

—डा० रमेशकुमार सौ' समीका⊸ डा० विजय द्विवेदी

प्रकासक — सार्थेकुमार समा सिकारे दिल्ली । प्र० लिपि —सातवा सत्करसा २०४१ विकासी । जुल्य १ ५०, प्र० स० ५०

धानीच्य इति वाल शाहित्य का विषय है इसमें शियुयों को सस्यधिक उन्नित से सम्बन्धित तथा उन्हें चरित बल से पुष्ट होने की प्रेरणा देने नाली सठारह रचनाएँ हैं। इन रचनाओं के कुछ कवानावक हमारे इनिहास के महान् हैं तो कुछ ऐसे लीव मी हैं जो सपेशाइन कम साने माने जाते हैं। इस में बस्तुत नाम को ही नहीं काम को महत्त्व विषाय गाहै। लेक का उद्देश 'सही रहा है कि हसे यथासम्मय रोजक व उपयोगी बनाकर सपने कुमार आहमों के हाथ में दिया आए। कहने की बकरत नहीं है कि वेखक सपने ज्यार में इस रहा रहा है।

निम के तारे' में उन महामनाक्षों के जीवन प्रसम है बिन्हीने बहुवनहिताय, बहुवनसुकाय के महत् सावशों के सामने स्वार्थ मीर श्रात्म शुक्त को हय माना तथा कर्तव्य की विमिन्ने पर बड़ी बढ़ी बाहुतियाँ ही। प्रपने त्यान बनिवान के कारण ही वे तिवाराक्कन प्रावृत्तिकता के नव ने व्यश्तिक्यान् वितारों की तरह वाममा १ है है। इनमें महिस्यावाह महात्मा गांधी और दुर्गावाह, स्वार्थ मान हामना मानवीय स्वार्थ वाह स्वरक्ती भीरण वितासह यन केक्सराम मन्यान् भीराम नावपतराय, मृह तेम बहुत्तर नेता जी सुभाय बोड़ प्राविक नाम उत्केसनीय है।

भारत श्रीम सवा से जीर प्रवीवती रही है। यहाँ काल के हरेक लव्य से सरक्ष विच्य त्याची, तथी परोपकारी केशवादी समाध अुवारक ग्रीर शुगानकरारी महामानव पैदा हुए हैं। इन महाकवी हारा विकाए गय पय को मुकालर पान हमारे किशोर इस धोर भाव रहे हैं वहां गीतिक सुब सहजता से मिल सकें। अभिजावक मी इसी नाम की ग्रेरणा दे रहे हैं। हमारी विकास सक्ष्माएं य दमी को आवाभी बनाने की जवाह हृदयहीन वैज्ञानिक मानव निमित कदने की फैक्टरिया बन गई है। साहिश्त धपनी तमाथ विकृतियों के खाद धादशों का महा दमखान तथा चर्म यथा वन गया है। प्रयटावगर को रावर्तिक प्रशासन ने आव के जीवन का अपरिहास प्रव मान लिया है। ऐसी स्थित में किशोरों को चरित्रबल कहां से मिने? श्री 'जी ने इस छोटी सी पुरित्का के विरूप साथी श्री को धारतबल से श्रीय करने का चरित्र निर्माण करने का सराहतीय प्रयास किया है। पुरित्रका के आत सरकरण इसकी लोकप्रियता के प्रवाण है। कामना है इसके और सरकरण हो, ताकि धाने वाली पीडियां उनके प्रकाण ने वेश वाणि हित सपने जीवन के ध्येव की सही एडिवान कर सकें। इति को सकते हैं।

प्रेयक—विकस दिवेदी महाराजा पूर्णंचम्ब महाविद्यालय बारीपदा-७५७००१, (उडीसा)

आर्यंसमाज किदवई नगर, नई दिल्ली की अपील

क्स निवार की स्थापना १२६० में हुई थी उस समय एक प्रस्थायी भवन बना सिया स्थापा। सब इसका मथन बहुत ही बीए शीणें हो गया है। तस्यायिकों को नवस में बैठने में कठिनाई होती है वर्षाक्रम के उन टपकरी रहती है। यह हम बबस निर्माण के लिए प्रापक्षा सहयोग जाहते हैं। इसके साथ हमारी घोजना है—

(१) दलित वन के लिए नि शुल्क प्रौडिशिक्षातचा सन्ध्याकाल मे दलित वर्गके शिक्षमी को नि शुल्क खिक्षण।

(२) वर्मार्थं होस्योपैधिक हिस्पेन्सरी।

(३) धर्मार्थं पुस्तकाल र एव वाचनालय सवालन ।

इस समस्य पुष्य के महान् कार्य थे घाप सब भाई बहुनो का तन मन घन से सहयोग प्रपेक्षित है। दिस सोसकर अधिक से अधिक दान वें। प्रपना मनीप्रावेंट, चैक, द्रापट इस पते पर भेजे।

ए-२७४, ग्रायेंसमाज किदवई नगर, नई दिल्ली-२३ ग्रामार सहित डा॰ नदनलाल-सन्त्री

वार्षिकोत्सव

महानि दवानन्याचे गुरुकुण कृष्यपुर मसना [करुखावात] उ० प्र०वे पावन प्राञ्जम में महाचि बयानन्य बरितान सतास्त्री सपारोह का प्रायोजन १६-१७-१८ मार्च ८६ को बढ़े ही हमाँक्ताल के साथ किया जा रहा है। जिससे साथं जबद के सुप्रसिद्ध सामें विद्वान क्यांकी महोपदेखक प्यार रहे हैं।

> निवेदक सार्यं चन्द्रदेव शास्त्री कुलपति

आर्य जगत् के समाचार

आर्यं आदशं विद्यालय, आदशं नगर, दिल्ली मे ऋषि बोधोत्सव तथा भाषण प्रतियोगिता

पाय प्राद्यं विद्यालय, ब्रादम नगर, दिल्ली में ऋषिवोधोत्सव तथा सावस्तु प्रतियोगिता 'प्राय नेश्नीय सभा के तत्वाववान से तथा स्वासी विद्यालस्य से सरस्वती की सम्प्रकता में महींय द्यालस्य सरस्वती के बोचन की तीन प्रेरणादायक परनाए विद्यालय प्रावसिक कक्षा के खात्रों की भाषण प्रतियोगिता का धात्रोवन हुया। कार्यक्रम होत्र में स्वासी की ने सच्ची को प्रावसिक क्षा के सावसी की कार्यक्रम निवासिक स्वासी की से सच्ची को प्रावसिक क्षा कार्यक्रम निवासिक स्वासी की से सच्ची के सावसी की स्वासी कार्यक्रम क्षा सावसी की कार्यक्रम की सावसी की स्वासी की से स्वासी की स्वासी की स्वासी की स्वासी की स्वासी की स्वासी की से स्वासी की से स्वासी की स्वासी की से स्वसी की से स्वासी की से से स्वासी की से स्वासी की से स्वासी की से स्वासी की से

सयोजक--- महाबीर बत्रा

दिल्ली सभा द्वारा वेद प्रचार

में ११-२-५ को ह्यात रोजेम्सा किसो काय से करीक १२-३० वजे दोपहर गया था। जहां से जब मैं प्रांते लगा तो उसके पीछे सरकारी कार्यालय है जहाँ पर आर्थ प्रतिनिधि सभा जिल्ली का प्रवार बाहुन नहर पड़ा। बहुा पर औप ० सरयदेव की स्नातक के अजन व उपदेश तथा अध्येय स्वामी स्वक्थानन्दनी के प्रवार का लोगो पर कालो प्रभाव पड़ा। बहु दैनिक प्रवार की मावस्थकता है। क्योंकि वहाँ पर कई राजकीय कार्यालय है बोट नसब से प्रायक प्रभाश प्रवार रहेगा।

देवेन्द्रकुमार शास्त्री भायसमाज मन्दिर, रमेश नगर

क्षि अनुसधान सेवा परीक्षा मे हिन्दी माध्यम

कृषि भनुसवान देवा परीक्षा में कृष्ठ समय पहले तक अधेजी माध्यम ही बा। सन् १९८५ में होने वाली गरीक्षा में सभी विषयों के प्रस्तपदों के उत्तर हिन्दी में देने की खुट रहेगी। यह परिवतन सभी दिव्ह ने दवानत सोग्य है। हिन्दी-मायों लेजों के विद्याप्योगी को इस पुनिया का पूरा साथ उठाना वाहिए। वे हिन्दी में सपने विचार बहुत प्रच्छी मकार व्यक्त कर पाएंगे तथा उनकी सफसता के सबसर पहले की सपेक्षा सविक सच्छे रहगे।

हिन्दी-मानी क्षेत्रों के इसि विस्वविद्यानयों को भी वाहिए कि वे सपनी सभी कलाओं में विभिन्न हुयि विवय हिन्दी माध्यम से भी पदाए जाने की व्यवस्था करें। इस समय विद्यानी का का शिल्या हुए अपने का करने में जन जाता है। दिन्दी माध्यम हान स उत्त समय का काफी सान वक्ष सकेना विद्यं वे हृषि विपयों से पारवत होने से लगा सकेंगे। जहा-जहा उज्य स्तर की इसि शिक्षा हिन्दा भाष्यम से देने भी क्ष्यवस्था है उनकी गुम्बना इन्या "महामनी हिन्दी व्यवहार साध्यम से देने भी क्ष्यवस्था है उनकी गुम्बना इन्या "महामनी हिन्दी व्यवहार साध्यम से देने भी क्षयवस्था है उनकी गुम्बना इन्या भारता है से का कष्ट करे। भिन कृषि तिशाला सम्यानी से सुरुषिया सभी नहीं है, जहा के स्विकारियों से सम्पर्क करते उक्षी उश्वस्था स्थान से सिकारियों से सम्पर्क करते उक्षी उश्वस्था स्थान से सिकारियों से सम्पर्क करते उक्षी उश्वस्था स्थान से ति स्थान स्थान से स्थान स्थान से स्थान स्थान स्थान से स्थान स्थान से स्थान स्थान से स्थान स्थान से स्थान स्थान स्थान से स्थान स्थान स्थान स्थान से स्थान स्थान

हरिवाडू कसक महामत्री, हिन्दी व्यवहार सगठन, डी-३५, माउथ एक्सटेशन, भाग एक, नई दिल्ली-११००४६

आर्यसमाज मन्दिर सैजपुर

भायनमाज मन्दिर, सैजपुर वोषा, महमदाबाद के वार्षिक चुनावों से प्रधान की गोविन्दराम सदोरोमन उपप्रधान श्री गुरदासमन छागाराम, सभी श्री हरीलाल गुरदासमल उपस्त्री श्री नेपाराम मासहमल, कोवाध्यक श्री दोसतराम जी व निरोक्क श्री सक्ष्मीचन्द मोहनसाल जी सर्वानुमति से चुने वए।

वार्षिकोत्सव

' ध्राय कन्या गुरुकुल नरेला दिल्ली का वाधिक महोस्सव विनाक १-१० वार्ष १८८५ सनिवार, रिववार को कुल भूमि से समारोह पूर्वक मनामा वायेका। इस सुब ध्रवसर पर धनेक सन्यासी, महास्मा विद्वान अपदेशक अवनीक तथा आजनीय राष्ट्रीय नेता पथार कर उदेशामृत पान करायेगे।'

निवेदिका-- आचार्या कन्या गुरुकुत गरेमा, किली

आवश्यक सूचना

वैदिक यति मदल की ओर से वैदिक सन्यास झाश्रम गाजिबाबाद में १६ मार्च से ३१ मार्च १६८६ तक स्वाध्याय संस्कृत शिक्षण शिविद लगाया जावेगा। घत सव इच्छ्रक मान्य विदियों (सन्यासी, नैडिडक ब्रह्मचारी तथा बानप्रस्थियो) से प्रार्थना है कि समय पर पहुल कर श्रवश्य लाग स्वताई। सत्यार्थप्रकास, सस्कारिविच झावि पुस्तक केणी लेखनी तथा चहु धनुताद वस्त्र अपने साथ धवश्य लागे। मोचन का प्रवन्य बाज्य की ओर से होगा।

> निवेदक क्रम्यक्ष स्वामी सर्वानन्द वैदिक यति सहस्र

ऋषि बोधोत्सव शिवरात्रि

धार्यसमान महु होधियारपुर, सद्धानन्द वाजार, वालन्दर धार्यसमान धहुव होधियारपुर (स्वामी अद्धानन वाजार, वालन्दर से १७ फरवरी ११-६, प्रात - वजे से १२ वजे तक ऋषिकोधिय विकास पर्व के उपसम्भ में बड़े समारोह है प्रमादा गया। कल्या प्रायंग के उपसम्भ में बड़े समारोह है प्रमादा गया। कल्या प्रायंग के उपसम्भ में बड़े समारोह है प्रमादा गया। कल्या प्रायंग के उपसम्भ मुझा। कल्या हावा हायर सै० स्कूल के तथा हावा माडक गर्ल्य हाई स्कूल के प्रधापक तथा हावा हावा हावा स्वाव प्रमादा के प्रमादा हुए वह के प्रथम प्रमाद हुए वह के प्रथम हुए के स्वाव तथा हावा हावा हो तथा हिस्स के प्रमुत्त की बाला, योगेष्ट्रपत की स्वाव तथा हावा हो तथा है स्वावेद है अधान स्वाव की ऋषिपाल विद्व की एक्वोकेट, भी प्रोण भागनस्वार की के उपवान स्वाव की ऋषिपाल विद्व की एक्वोकेट, भी प्रोण भागनस्वार की के

महर्षि दयानन्द वेद वेदाङ्ग गुरुकुल का द्वितीय वार्षिकोत्सव

महर्षि दयानन्द सरस्वती को बड़ी भावभीनी अद्धाञ्जली मेंट की।

२— इस क्षेत्र को ४० वर्ष पूर्व धार्यसमाय ने ईसाइसो के चमुल से मुक्त कराया था। यच्चात् कार्य पुत्रस्य धवस्था मे हो गया था। पून इस क्षेत्र को चरित्र एव नैतिक सिकारे ने हुत थानिक सिकार को से प्रचार प्रचार समझ माह में १२५ पुत्रक को त्रीव शिकार वे वीकिल किया वायेथा। इस कार्य हेतु भी कालीराम की धनम, की सिवसिंह की धार्य कानव भी रमेशक्य की वार्या इकलेरा, की सक्तीनारायण की वोस्तानी तथा वां वोस्तानसहाय की पेस्टर विज्ञकार कही दिया, सी रमेशक्य की सिवसी तथा वां वोस्तानसहाय की पेस्टर विज्ञकार कही दिया, सी रमेशक्य की सिवसी तथा वां वोस्तानसहाय की पेस्टर विज्ञकार कही तथा की स्वाप्त कर करके की प्रकृत के साथ कार्यक्रम समाय हुया।

वक्षिकाता स्वामी ज्ञामानम्य सरस्**वती**

त्र्यार्यसन्देश विशेषांक

्रथं मार्चं धार्मसमाज स्वापना विषयं पर प्रायंतन्त्रेयं का हुमः स्मर्राशेव सम्रह्शीव विद्योगीक प्रकाशित कर रहे हैं। विद्वान् लेखक सपने लेख निम्वाकित विषयी पर प्रेवनेकी कृपा करें।

- १ स्वामी वयानन्द ने ग्राच्यारिवक जगत् को महान् देन दी है।
- २ महर्षि दवानन्द भाष्ट्रनिक तकनीकी के पोपक एव वैज्ञानिक थे।
- ३ भारतीय समाज के जागरण में बार्यसमात्र का योगदान।
- ४ मार्यसमाज क्वा चाहता है ?
- प्र हिन्दी भाषा के उत्थान में बायसमाज की मुमिका ।
- ६ वैदिक दार्श्वनिकत्व ।
- ७ ऋषियो और योगियो की तेजस्वी परम्परा मे द्यानन्त ।

सेल मेजने का पता---

सम्पादक-मार्वं सन्देश साप्ताहिक १६, हनुमान् रोड नई दिल्ली-११०००१

पाप-निवारण

(पृष्ठ २ का क्षेत्र) श्रंस है उत्त सब को बहाने वासी। विद विकिती के प्रति कोई होड़ करूँ, कोई निम्बनीय वचन बोनूया प्रसस्य वचन कहू, उत्त सब को दूर कर दो।

कुंए और तालाव के जल में वह मस्ति कहाँ हैं, जो दुर्रात प्रोह झादि को को सहे। परवाताप का जल ही यह कार्य कर सकता है है

३ तथ--पाप से बचने कातीसरा अपाय तप है। वैद में कहा है---

पायतपहावयमकहाह— विद्याशहत् तपसा तपस्वी।

— सम्बंग् १३।२।२५ वपस्थी तप से ऊपर उठता है जन्नति करता है।

पाप से बचने का उराय थह है कि बजुबब वर्ष कार्यों में लगा है। तर क्या है? तप का प्रबं घरने चारी प्रोर माने बजाकर बैठाग नहीं है। एक पांच पर बजे हो जाना भी तप नहीं है। तप का वर्ष है हम्म सहन। मुबन्द का मुक्यमाल, पर्मी तर्दी, हानि-जाम जीवन-मरण-वर्मी हमें, हानि-जाम जीवन-मरण-पर्मी तर्दी, हानि-जाम जीवन-मरण-पर्मी तर्दी, हानि-जाम जीवन-मरण-पर्मी देश हमें का नाम तप है। मनुष्य पाप कर काला है। इस से मुक्य प्राप कर काला है। हम सहन से मनुष्य प्राप कर काला है। हम सहन से मनुष्य पापों

४ देशस्थान —चेद का स्वाच्याव तृष्य को पानो छै वचाता है। वेद के गारी उपरेक्ष मनुष्य को धानिष्ट वे वचने गैर दक्ट की ब्रामित के नियु उपरोग वेदें १। वेदो का प्रस्थयन मनुष्य को पाप धार त्यास के मार्ग से हटाकर प्रमुख्य इह-तिकक उपनाति धार पित्रक्ष मोज्य स्व गंपर कमने के नियु हुरम ये उत्खाह १९ बाह्य मर देते हैं।

बनु महाराज कहते हैं— बेबाम्यातोऽत्वह जक्त्या जहायज क्रिया जना। माह्ययस्थासु पापानि जहायातकसम्बद्धि ।

---मनु० ११ । २४६ अतिदिन वेदों का स्वाच्याब, पञ्च- नहायतो का अनुस्तान भीर तथा — सहन-धीसता — वे कर्ने महापातकों से उत्पन्न होने वाले पापो को भी शीध्र नष्ट कर देते हैं फिर सावारण पापो की तो बाल ही क्या है भन इनका भ करण यथायतिक करने पहना चाहिए।

१ बान—पान देना पापी से बबने का पावबी उराय है। दीनों के दुल दूर करने और शाबकों की साशा पूर्ण करने में बन का व्यय करना सन्तकरण को नियान पत्त पत्रिय करना है। पान को दियान्या दान व्यय नहीं हैं समित् लाम है।

किंभी कवि ने क्या सुन्दर कहा है— जिलका नैक निकान्ते बोचवित गृहे गृहे । दीवता दीवता निस्यमदातु फलमीहसप्।।

प्रिमुक मायते नहीं हैं अपितु वर वर आकर जोगों को बोच प्रदान करता हैं। वे कहते हैं जिस्स दान दो दान न देने पर तुस्हारा बता हमारे खेंबी हो आएसी।

दीन-दुक्षियों को दान दो। बादश्य-कता से अधिक वन जब दीन और दुक्षियों की सेशा में जग जाएना तब मनुष्य मधा-मास प्रादि के तुरावार से बन बाएगा।

वैदिक कैसेट

प्रसिद्ध फिल्मी गायक **महेन्त्र कपूर** द्वारा मर्हाष दयानन्द की अमर कहानी

सन्ध्या-यज्ञ, शान्तिप्रकरण स्वस्तिवाचन आदि प्रसिद्ध भजनोपवशको-

सत्यपाल पविक, ओमप्रकाश वर्मा, पन्मालाल पीयूष, सोहनलाल पिषक, शिवराजवती जी क सर्वोत्तम भजना क क्सन्स तथा प बढादेव विज्ञालकार के भजनो का सप्रह ।

आय समाज के अन्य भी बंग्ल से कंसरम के सूचीपत्र के लिए लिख कुन्नेशेक्स इतेन्द्रानिक्स (इन्डिया) प्रा वि

कुन्स्टाक्सम इलक्ट्रानक्स (इण्ड्या) फ्रांसि 14 माकिट 11 फेस 11 अशाक विहार दहली 52 फोन 7118326 744170 टैलेक्स ३1-4623 AKC IN

वैदिक कैसेट सभा कार्यालय १५ हनुमान् रोड पर भी उपलब्ध हैं।





वालाहिक वार्यसनेव ११ ह्युगन् रोह, व विकास १ आयं जगत् को शान २०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन नेत्र चिकित्सालय (अनुसानित लागत दो करोड रुपये) के लिए दिल खोलकर दान दीजिए दान की राशि प्रायकर प्राधिनयम जी० ६० के प्रनर्गत कर मुक्त होगी। सारा दान केश्रमतीयार्थर शिक श्रमद हारा मन्नी, माता चन्नवदेवी प्रायं धर्माय नेन चिकित्सालय, वी-१ जनकपुरी नई-दिल्ली-५६ के पने पर भेजा जाए। दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर पर अकित किए जाएगे। निवेदक रामगोरान प्रांतवाले सरतक विकासतालय प्राव प्रधान नाए सर

सरक्षक चिकित्सालय प्रधान विल्ली प्रचान नवी भावं प्रतिनिध्य भाव केन्द्रीय महाश्रय कुन्नीलाल एव प्रधान सा० ग्रा० प्रति० सभा बेरि द सौकम्प से महाक्रियां वी हट्टी प्रा॰ सिनिटेड श्रेथ कीतिनगर श्रीक्रोगिक क्षत्र, नई बिस्ली-११००१

アンドング かん かん かん かんりんりょう

- निबन्ध प्रतियोगिताः

स्वर्गीय श्री लालमन आयं को पूज्य स्कृति में एक श्रविल भारतीय निवन्ध प्रनियोगिता का अध्योजन किया जा रहा है। निवध के विषय निम्नाकित हैं।

१- महर्षि दयसनन्द के सपनो का धारेस २- वर्तमान चारितिक सकट.

• अस्यस्याओं का समाधान

किसी एक विश्व ने हिन्दी ने २ क्ष्मार सन्दों ने विश्व वर्ष निवन्य की तील; प्रतिया भेजना धानस्यक है। जिन्न जिसने की धन्तिम खिव २० आई 28=x 8 1

प्रथम पुरस्कार १००० रुपये, द्वितीय ५०० रुपये, तुतीय ३०० रुपये ५ सात्वना पुरस्कार प्रत्येक को

प्रतिष्ठित विद्वानी का एक निजायक मण्डल निवाको का मुख्याकन करेवा. व्यस का निणय सर्वेमान्य हरता।

निवाध नेजने का पता--

थी निलकरात्र गुप्न स्योजक-श्री लालमन ग्रामं, निबंध मतियोगिता प्रधानाचार्य-हमाज माडल स्कूल, पजाबी बाग, नई दिल्ली-२६

उत्तम स्वास्थ्य

कांगडी फार्मसी. हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

गाला कार्यालय-६३, गली राजा केवारमाय. कोन २६६८३८ बावडो बाखार, विल्ली-६



दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

वर्षं श्रेषक १६

रविवार १० माच १६८३

मार्गसबत्सर १९६० ५३०८४

फाल्गुन २०४१ दयामन्दाब्द--१६०

पं० लंखराम ने आत्मबल से ईसाइयत की आंधी को रोका

धार्यसमाच शालीमार बाग के बार्विकोत्सव पर बोलते हुए दिल्ली द्वार्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने यह उद्गार व्यक्त किये। उन्होने बार्य जनता को बाह्यान किया कि हम धमर शहीद लेखराम के बताये हुए मार्ग पर चलते हुए बार्यसमाज की दुन्दुमी बजाते हुए सार को धार्य बनावो, इस नारे को क्यान्वित कर।स्वामो श्रद्धानन्द ने o लेखराम की हत्या पर कहा था-हिंद के खुन की एक एक बुद से एक कि बीर उत्पन्न होगा जो धार्य घम हो रक्षा व प्रसार में अपना जीवन रगा देगा। हम सब को चाहिए कि हिंद की चिता के समीप खड होकर तिज्ञा करे कि भ्रापस की फूट मिटा-हर सब से 🌉 पूर्वक मिलकर कार्य रने तथा शहीय के अनुसार लेखन कार्यको निरन्तर जारी रखगे।

धार्यसमाज शालीनार बाग मे लेखराम पुस्तकालय का उद्-रित बार्य केन्द्रीय समा के प्रधान महाशय जी ने किया तथा ११००/ रु का पुस्तकालय हेतु सात्त्विक दान दिया।

इस व्यवसर पर भायोजित वेद सम्मेलन मे श्री स्वामी जगदीश्वरा-नन्द सरस्वती, प्रो॰ रतनसिह, डा॰ वाचस्पति उपाध्याय, प० प्रमचन्द्र, श्रीवर तथा डा॰ ग्रानन्द प्रकाश ने वेदो की महस्राका प्रतिपादन करते हए प्राम जनता को उदबोधित किया कि वे वेदानुसार भपने जीवन को

इस ब्रवसर पर स्वामी विद्यानन्द जी का उत्तरप्रदेख सरकार द्वारा अपनी पुस्तक तत्त्वमसि के लिए पुरस्कृत होने पर धभिनन्दन किया गया । स्वामी जी ने ध्वजारोहरा करते हुए धोश्मू ध्वज की पताका लहरात रहने के लिए मार्थ जनता से मनुरोष किया कि वे वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिए पूरो शक्ति से काम कर । २ करवरा १६८५ को चुन्नीलाल मेहता भाषण प्रतियागिता भायांजित का गई जिसम क्षेत्रीय

लिया । चल वेजयन्ती टी॰ ए॰ वी॰ स्कूल शालीमार बाग को प्रदान की गयी। मेहता परिवार ने सभी बच्चो को भारी पुरस्कार प्रदान किये। १ जनवरी १६८५ को श्रीमनी ईश्वर

विद्यालयों के छात्र/छात्राधों ने भाग देवी की अध्यक्षता में धार्य महिला सम्मेलन सम्पन्न हुम्रा, इसमे श्रीमती प्रमशील महेन्द्र श्रीमती शकुन्तमा दीक्षित भीर डा॰ वर्मा ने महि-लाम्रो के उत्थान के लिए अपने विचार प्रस्तुत किए।

धामिक उन्माद का नमना

इण्डोनेशिया के धर्मान्ध मुस्लिमी ने बोरोबुदुर के विश्वाल बौद्ध मन्दिर को बम विस्फोट से व्वस्त कर दिया। भनेक स्तूप कई विस्फोटो से टूट गये। विश्वप्रसिद्ध इस मन्दिर मे महात्मा बुद्ध के जीवन चित्रों के साथ रामा-यण की दर्शनीय कथा भी उत्कीर्श है। इसका निर्माण झाठवी शताब्दी मे प्रसिद्ध राखा शैनेन्द्र के वद्यजो ने

यह कारवाई बार्मिक उन्माद तया मदान्वता से कही मधिक सब-कर भीर मानव जाति के विरुद्ध है। स्मरणीय है दो वर्ष पूर्व सयुक्त राष्ट्र सघ ने शिक्षा, विज्ञान और सास्कु-तिक सगठन (बूनेस्को) ने लगमग ३० करोड रुपया व्यय कर इसका जीसोंदार किया था।

श्र ति का गान करो - उत्तम बन्द शरर

नक्षत्रों से बालोकित यह नम का प्रापण इरा मरा वह स्लेह सिक्त करती का बाना क्या का सामा समज्य स्मित ध्रवर विस्व पर धरण सारची का गुलाल कहें विश विकासना रवि शशि की यह श्रांस मिचीनी रैन बिवा की वादी की सरिता का वस सा का इठमाना सौरम पूरित वर्ण वर्ण सुमनो के स्नांबल मसय पवन का बात पविक को बीर बचाना किसी सहदय कवि का है यह काव्य मनोरम बादल के ब्रवबुष्ठन में खिश का मुस्काना देस काव्य कवि को जानो यदि जान सकी रे। इस के विक्य की तो का अनुति के वाल करते है।

श्रायेसमाज स्थापना दिवस

शार्व केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्त्वावधान ने दिल्ली की समस्त आर्य ौाओं का सामृहिक विश्वाल कार्यक्रम २४ मार्च, १६८५ को दोपहर २ बके ध बजे तक बिट्रल भाई पटेल हाउस, रफो मार्ग नई दिल्ली के प्रामगा मे मारोह पूर्वक बनाया जायेगा। प्रधिक से अधिक सक्या मे प्रधारें।

> निवेदक सूर्यदेव महामन्त्री.

शोक प्रस्ताव

दिल्ली बार्य प्रतिनिध्न समा के समस्त स्विकारी एवं कर्यचारी शार्यसमाब सन्तिनगर, अमृतसर के यशस्त्री प्रवान श्री जगदीसराज भी के झाकरियक केशवसान पर गहरा दु स एव सोक्र व्यक्त करते हैं। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह विकास धारमा को सब्बति अदान करे भी दू उनके वियोग में सतप्त दू सी पारिवारिक जमों को इस महान् हु स को बहुन करने की क्षुनित प्रवान करे !

डा॰ वर्षैपास (महामन्त्री)

महात्मा इंसराज जन्म दिवस

अनर्य प्रादेशिक समा दिल्ली की घोर से हर वर्ष की माति इस वर्ष भी २१ भन्नेल रविवार को त्यागमूनि हसराज जी का जन्म दिवस समारोह E-३० बजे से १२-३० बजे तक तालकटोरा गार्डन के इण्डोर स्टेडियम मे समारोह पूर्वक मनाया जायेगा। इस समारोह के बच्यक्ष आर्य जगत के मुर्घन्य विद्वान् एव सन्यासी स्वामी सस्यप्रकास जी महाराज होगे। उदन अवसर पर समस्त भार्यजन भारी सख्या मे पथारे।

डा॰ वर्मपाल-महामन्त्री, दिन्लो बार्य प्रतिनिधि समा

सत्संग वाटिका

ससार बाग्तन में मसार है। इसे व्यर्थ ही उदासीनो ने झसार बता विया। इस मे एक से एक सार पवाथ भरे पड है। दिव्य रत्न दिव्य ग्रीविधया धन्य धनेक धद्भुत चमत्कार दिखाने वाली जडी बृटिया भीर धातुएँ इसी ससार मे है। विजली इसी ससार से निकली जो रात को दिन बना रही है और महीनो का काम मिनटो में कर डालती है। ऐक्सरे (सूर्यं की किरण विशेष) इसी ससार का चमत्कार है, जो शरीर के भीतर हड़ियो को प्रत्यक्ष दिला देती है ! सहस्रश रोगियो को इससे लाम पुत्रताहै जिजलीकी चिकित्सासे भी रोगियो को सपार साम हुआ है। रेडियम जैसी बातु जिस पारस मणि ही कहनाचाहिए इसी ससार की श्री देन है। रेडियो यन्त्र कितना ऋद्भूत है जिसके कारण बहाजों से जैठे जैठे समुद्र के बक्त स्थल पर ही स्थल-वालियों से बातचीत करिये गाने का रस सीजिये। एक देश के व्याल्यान दाता के व्याक्यान दुसरे दूसरे देश में अपने कमरे में बैठे वैठे सुनिए। हवाई बहाज में, प्राकाश में उडते-उडते भूमि बालो से बातचीत करते रहिए। यह सब चमत्कार इसी ससार ने से निकल पडे। यूरोप का सब विज्ञान-वैभव इसी ससार में तो पहल खिपापडा चा। वैश्वानिक लोग इस ऐश्वर्य की कही स्वम संतो नहीं माग लाये। इसी मिट्टी मैं से जल मैं से भनि वायु मे से, यह विव्य चमत्कार प्रकट हो गए। केवल पुरु चाय का फल है। मेहनत की, जान तडाई बृद्धि को कष्ट दिया इन्द्रियों को धकाया जीवनों को गला दिया तपस्या से दीवाने हो गा, तब यह दिव्य चनत्कार देखने को मिले। जब नप किया तो प्रकृति देवी की इन दिव्य विभूतियों को पासा। विना त्तप किए क्या पानी मे से प्रकाश (विद्यत्) निकस सकता था। क्या यह बात समक में प्राप्ती थी कि पानी के गिरने मे भी एक गुरत शक्ति है जिससे बिजली मिल सकती है [?] पर बाज वस्वई नगर को यही पानी के ऋरनों से प्राप्त हुई बिजली प्रकाश प्रदान कर रहो है। यनेक कल कारखान इसी की बदौलत चन रहे हैं। इस समार मे अनेक सार गुप्त हैं। तप करो प्रकट होगे। खन्दमहीन बैठा रहे कुछ नही पाएगा । एक उर्दू कवि कहता है --

इस्नी के शखर में ग्रगर

स्वाहिश है चमक बाग्रो। •इच्चेन रहो विलक किसीरङ्गवैँ पक बाग्रो।

जिम प्रकार भौतिक ससार में सनेक मुप्त सार यं जो प्रकट हो वए सौर सभी हैं, जिनकी प्राप्ति के लिए वैसानिक तप

जीवन में तप का महत्त्व

-प० बिहारीलाल शास्त्री काव्यनीयं

पवित्र ते वितत ब्रह्मगुस्पते प्रशुर्गात्राणि पर्येषि विश्वत । ग्रतप्ततन्त्रं नदामो श्रश्नुते शृतास इद्वहन्तस्नत्समाश्चत ॥

*

कर रहे हैं ठीक इसी प्रकार धाष्पारिषक सक्षार में भी धनेक गुरा वसस्कार है, विश्वकी घषमी ह्याया प्राव सैस्परिवम, हिलाटियम, पाटरीविव, प्लेंचर पर कहां को बुसाना धारि कियाओं ने दीक पढ़ी है। परन्तु इन कार्यों में धमी इनके कर्ता ही आनित के शिकार है। इनके उत्तर कार्य है योग, विसके हारा धाष्पारिषक नियुत्तियों का सत्तेन होता है। जब योग करता है तब —

उत्तर्राह्व विमल विलोचन ही के। मिटाँह दोव दुक्त अव-रजनी के।।

अति तत्त्वज्ञ ब्रह्मनिष्ठ गुरु की सेवा रूप तप से, मन को एकाम कर अन्तर्जनत् की बोर से जाने वाले बस्थास रूप तप से इन्द्रियो द्वारा सदा गमन करने वासी मनोवृत्तियो को रोककर अन्तर्मुकी करने रूप तप से वाद मनुष्य ग्राम्यन्तर दर्षिट को प्राप्त कर लेता है तब बाघ्यात्मिक शिभूतियों के दर्शन पाता है। एक दो विश्वतियों से ही यदि वह इतकरण हो नय। तब तो गया बीता, और यवि बरा-बर स्रोज करता चत्रागया भौर तप से न विचला तो पूर्ण विमूति तक, परम ऐव्यय तक वहा तक कि बहा जाकर फिर फिर कुछ क्षेय न रहे, पहुँच बाएना। वही ब्रह्म तत्त्व है। उसी के लिए म्रास्तिक जगत् इच्छक है। उसीकी स्तुति प्रार्थना मे वार्मिक सनार लीन है। जान बजान यूक्न किसी भी रीति से उसी की उपासना मे मतमतान्तरवादी बहे चले जा रहे हैं। धर्मिलाया सबको है। नाम्बिक भी निवृत्ति बाहता है पूर्णता का श्रामिनाची है। हा उसके पाने का उपाय उसका भीर है। वह बालू में तेल दृढ रहा है। उसे भी उसको तलाग है। वह शान्त और परि बतनशील प्राकृत रूपो मे विराम चाहता है जो ग्रनहोनी बात है। विरनि तो एक-रम ग्रखण्ड तन्त्र में ही हो सकती है यह तो केवल बहाही है। वह ग्ररूप है इन्द्रियातीत है वाचामगोचर है इसमिए नास्तिक कहता है कि वह नहीं है। जस प्रपात मे विद्युत् है आकाश में ईयर व्या-प्त है परन्तु विज्ञानज्ञय स्यूलबुद्धि ग्रामीण कहना कि नहीं एसा नहीं है वैनानिक तो प्रत्यश कर चुका और उस सन्य को दिना जुका है वह कैमे निवेच करे। व्सी

प्रकार बहानिष्ठ ऋषियों न बहा का

(बहुएएसते) हे बेद के पति प्रमो (त) आपका (पविन) पविन बहुगति । वर्षनितत) यह बतह कीता हुगा है। (अपूर) आप सबके स्वामी (गामाण) सरिपो में (विचता) सब भोर (पर्योष) आपका हो सर्वाह हमारे सरिप के साथ सह बतह स्थापक हैं चट-बट में आपका धानम्य स्थापक हैं चट-बट में आपका धानम्य स्थापक हैं चट-स्टु—

(यतंपवन्) जिसमें धरमें सरीर को, मन को जुढि को मोनानि में नहीं तपामा सीर (यान) कच्चा है, प्रमास्य की सनि में नहीं तपा है (न तदरजुदे) मह धापके उस पतिस रह को नहीं चस्र तकता, (म्युलास इडहन्त-स्वसमासत) सान वप सोनानिम में सो पक नए हैं के ही तके बारण करते हुए सच्छी प्रकार क्सार है, इसानन्य पतिम है, सर्वेज फैसा हुआ है, इसारे सारीर से स्वास्य है पर हम कहती है तपसा चीयते बहा (मुच्छक) बहा तप के महा पा सकते। उपनिचद कहती है तपसा चीयते बहा (मुच्छक) बहा तप के मुना साता है। कसीर साहस्य

हवस करे त्रिय मिलन की

भीर सुता चाहे सव। गीर सहे विन पदानी

पूत न लेत उछप।।

प्रयात् विना कव्ट उठाए भगवान् से प्लिना नहीं हो सकता। सूपी सरमद कहता है —

उन्ने वायद कि यार ग्रायद व किनार ! ई वौलते सरमद हमा कसरा न दिहुन्द ! धर्मात् ईववरीय सम्पत्ति हर किसी को नहीं मिस सकती । भगवान् के दर्शन

धनेकथण्यसिद्धस्ततो याति परा गतिम्। श्रीका

पाने को बहुत समय चाहिए।

धनेक जन्म सिद्धि करनी होती है सब परमबति मिनती है। साराश यही है कि बिना तप किये भगवान् को नही पा सकते । परन्तु तप ज्ञानपूर्वक होना चाहिए। साधन वह जो साध्य तक पहुँचा दे। धगरसाध्य तक नहीं पहुँचाता तो वह साधन व्यवं है और पहुँचने बासे में. यदि साध्य का लक्ष्य नहीं है, तब भी सामन व्यर्थ है। तथ सामन है, ईश्वर भाष्ति साध्य है इसलिए ईश्वर प्र प्ति को सदय करके तप किया जावे और तप की वही विधि हो जो ईश्वर प्राप्ति में साधक हो धत ज्ञानपूर्वक ही तप होना चाहिए, एक मनुष्य बाहता है दूब लेना और सेवा करताहै कोड की। उसके असमें कमी नहीं परन्तु यह साधन साध्य के निए ठीक नहीं। साध्य (दूध की प्राप्ति) के सिए उसे मौकी सेवाकरनी चाहिए। एक नवदूर भी शारीरिक अम करता है और एक पहलवान भी। पहलवान का लक्क है भपने सारीरिक सवयबी को पृष्ट करना धत उसके धन पुष्ट धीर सुदह हो जाते है। मजदूर का सक्य है मजदूरी पाना, मत मजदूरी पा सकता है। इस सिए तप की विधि ग्रौर सक्य शास्त्रा≥े नुसार होना चाहिए। भारत मे स्त्रिया धीर सामु लोग कायक्नेश तो बहुत उठाते हैं परन्तु उससे बारियक काम कुछ नही होता। कारण---विधिकाठीक न होना तप के बर्शन में योग दर्शन आध्यकार अ्यास मुनि कहते हैं - तथो इन्द्रसहनम्, इन्द्र व जिवल्सा पिपासे, स्वारासने. काष्ट्रमोनाकारमीना च, ब्रतानि चद ययायोग कृष्यं चान्द्रायस्यसान्तपनादीनि ।

भूस प्यास, स्थाम, धासन, काष्ट के समान मौन नहना, कञ्चूबान्द्रायक भान्तः न भादि वत तप हैं।

त्राँखों का विशाल निःशुल्क शिविर

लासा रीवानचन्य चन्य खताओं के उपलक्ष्य में रीवानचन्य ट्रस्ट द्वारा रीवान चन्य ट्रस्ट द्वारा रीवान चन्य सिंग्स होटल २ जैन मिन्दर मार्ग, नई दिस्सी-१ में निम्मुख्य नेत्र विविद्य समार्ग को प्राप्त हु। १४, १६,१० मार्ग को प्राप्त ट वर्ष से रीवियों की जान होगी। धापरेसन वासे रोवियों को जान होगी। धापरेसन वासे रोवियों को जान होगी। धापरेसन वासे रावियों

जोकन वकाइयाँ, खापरेकन सका करमे का व्यय काठ बीवानकम्ब ट्रस्ट हारा किया जाएगा। क्रपमा घपने विस्तर, जोजन के बर्धन साथ कार्ये।

निवेदक बूरमाण ३४३३३६ **श्रक्तोक मस्होचा**

★ दयानन्द

मैंने धार्यसमाज का उद्यान लगाया है। इसमें मेरी धवस्था मालो की सी है। पौधों में खाद डालते समय राख थ्रोर मिट्टी माली के सिर पर पड हो जाया करती है। शुक्त पर राख थ्रोर इल चाहे जितना पड़े, शुक्ते इसका कुछ भी घ्यान नही, परन्तु वाटिका हरो भरी बनी रहे, ग्रीर निर्विध्न फूले फले।

वचनामृत 🖈

मेरा उद्देश्य इस प्रकार लोगो को मिलाना है, सकल समु-दायो को एकता में लाना चाहता हूं कि कोल भील से लेकर ब्राह्मएए पर्यन्त सब में एक ही जाताय जीवन की जागृति हो। चारो वर्षा के लोग एक दूसरे को अग अगी समक्षे।

सम्पादकीय

आर्थ सन्देश

एक भारी षड्यंत्र

"भारत तरह तरह के भगड़ों से भर गया है, वह हुताश दोन होते हैं, उसमें मीत का काला साया मडराता नजर था रहा है। हिन्दू बम ने हिन्दूजों में द्वय भीर सम्ब विश्वास सदा सदा के लिए भर दिया है। हिन्दु घो के लाखों देवना हैं उनकी कोई एक समान पूजा पत्रीत नहीं है भीर के बन के नाम पर हस्या करता है। भारत को ६६ करोड जनता को हु को भीर के नाम पर हस्या करता है। भारत को ६६ करोड जनता को हु को भीर किटो स प्रनित पान के लिए ईसा मसोह का खुरुयाया बन जाना चाहिए।"

ये शब्द पढकर बापका कसा लगा है? इस स भी कटु पूणित शब्द समिरिका के इवजीतकल सगठन ने ५ जनवरी को न्यूयाक के प्रपने टेली-विजन प्रदारण में कहें। दो चण्टे के प्रसारण में भारत की बहुतस्थक जनका का जिस भड़ रूप में प्रस्तुत किया है, उससे न केवल हिन्दुसों का बाल्क सारे हिन्दू घम का अपमान हुमा हु, आंचनु यह सारे भारत देश का भाषनान है।

एं। तहासिक बिष्ट से यदि देशा जाये, दुनिया में युद्धों का पूणित सुज्यात देशाइयत से हा हुआ है। जितना सम्बिदिश्वास बाइश्वित और स्वाह्मय में दे इना सायद कहा हो। ईसाइया ने जितना जून सपने हों माइया (ईसाइया के जितना जून सपने हों माइया (ईसाइया) का जहां के हाथा है उतना उन्होंने दूवरे का नहीं बहुाया। विज्ञा साइया है। उतना उन्होंने दूवरे का नहीं बहुाया। विज्ञा साइया है। जहां सावया व्याह्म करा का सावया का माइया का सावया का माइया का सावया का माइया का सावया हो। का सावया करा माइया का सावया हो। हमारी बिष्ट निन्दा करने को नहीं है, हमारा सर्कात ता 'बसुबन कुटुन्वकम् की सरकात है, जहां साच सदतों के हमा को सपना दुस समझा जाता है। हमारी पावन वेद ऋचा कहती ह—

नित्रस्य बक्षुषा सर्वाचि भूतानि समीकामहे।

समस्त प्राधिमात्र को हम मित्र की बच्चित देव। सर्वा बाधा सम् वित्र अवस्तु। सव । दबाए हमारो भित्र द्वां लाग । हमारी धार्य सस्कृति से तो ईसाई वन, पुश्चलमान वन, हिन्दू वन का उपदेश नही है, यहा तो कहा गया ह—सन्नुक्षव। मनुष्य वन, इन्सानियत सीख। इससे वडा धम धौर क्या हो सकता ह

्र इसेंजिलिकल सगठन ने घपने प्रसारण में घन की मपील भी की है जो ईसाई निधान के वर्मपरिवर्तन के काम प्राये। भीर बाप जानते ही हैं यह पैसा भारत में ईसाईकरण के लिए प्रयोग किया ही जा रहा है। इस वह-यन्त्र से नागालेण्ड और मिजोरस, गोवा तो ईसाईयत के चतुन से मा हो गया है। यब उनका लक्ष्य मिणुपुर, त्रिपुरा, सेवानव तथा मारखण्ड का क्षेत्र मुख्य है।

भगर भारत सरकार ने तुरन्त ही कोई विशेष कदम नहीं उठाया तो भारत के अत्रुको के नापाक इरादे जरूर सफल हो जायने।

भारत सरकार को चाहिए, भाविवासी, वनवासी, गिरिजन सेवा तथा विक्षा के नाम पर जी ईसाई सगठनों को करोड़ो क्या धनुदान विचा बाता है यह दुरन्त बन्द कर दिया जाये तथा इस प्रकार के प्रसारखी का विगेष किया जाये।

पब्लिक स्कूलों की संस्कृति

भारतीय परिवेश की उपजाऊ भूमि मे पब्लिक स्कूलों का विकराल वृक्ष दिनोदिन बढता जा रहा है। इस पौचे का बीज ग्रग्नेजो हारा बोधा गया। अग्रेजो के मानसपुत्र तथाकपित उच्चवर्ग द्वारा पोषा गया। ग्राज इस वृक्ष के कुफल मारतीय संस्कृति पर गिरकर सहाध पैदा कर रहे हैं। कान्वेट स्कूलों में क्चों का पढ़ानां फंग्नन नहीं, मजबूरी सा होता जा रहा है। मेरे एक परिचित की सुपुत्री का सम्बन्ध एक सम्भ्रान्त परिवार से होने की बात चली, तबके बालों ने साफ-साफ कहा—'देशों जो लडका कान्वेट में पढ़ा है, इतने हजार रंपने पड़ाई में क्या हुए हैं लडकों भी पिल्किक स्कूल की पढ़ी होनी बाहिए।' जहां विवाह सम्बन्ध हैं लडकों भी पिल्किक स्कूल की पढ़ी होनी बाहिए।' जहां विवाह सम्बन्ध हैं तडकों भी पढ़िक स्कूल की यह वर वृक्ष को बढ़ावा दिया जाता है वहां नौकरों में तफा समाज में पढ़-निखे व्यक्ति को सम्य कहलाने का भी बिधकार सिलता है।

इंग्लण्ड में इरो, हैरो, विन्वेस्टर, राबो खादि लगभग एक दर्जन ऐसे स्कूल हैं जो तथाकथित उत्तम शिक्षा और सम्यता के जनक कहलाते है। ये स्कूल बेहद खर्जीले तथा अफसरखाही के लिए सुरक्षित बने हुए हैं।

भारत में भी भग्नेजों ने यही ग्रु खला प्रारम्भ की । पहले इनमें राज वश के सपूत प्रविष्ट हुआ करते थे, उसके बाद ये व्यापारी वर्ग के प्रधिक आय वाले व्यक्तियों के लिए सुरक्षित हो गये। भाज भारत में ख्याति प्राप्त ये स्कूल सट जेवियर (कलकत्ता), सेट पाल्ज (दार्जिलिंग) ला मार्टिनरी, (लखनक) विशय काटन (शिमला), लारेन्स स्कूल इनमे बढे-बडे राजनेता, भिमनेताकरोडपतियो के बच्चे शिक्षापा रहे हैं। इन पब्लिक स्कूलो मे बच्चों को प्रवेश दिलाना भी किला जीतना है। भारत भर में जितने भी विख्यात पब्लिक स्कूल हैं, अधिकाश ईसाइयो के द्वारा ही सवालित हैं और इनमे पढने वाले छात्र अपनी सस्कृति अपना धर्म अपने महापुक्ष राम, कुष्ण भादि तथा भपने पर्व त्यौहार भूलते जा रहे हैं। भीर एक दिन ऐसा आयेगा जब मैकाले की नीति पूर्णत सिद्ध हो जायेगी। उसके स्वप्न के अनु-सार ये मारतीय तन से भारतीय होगे पर मन से पूर्ण ईसाई हो चुके गे। ईसाइयो ने अपनी प्रचार योजना में मूलत दो लक्ष्य रखे हैं, शिक्षा पर प्रधि-कार तथा अस्पतालो का प्रसार। आज उनकी यह योजना मूर्तरूप घारए। कर चुकी है। अञ्झे अस्पताल, अञ्झे स्कूल सब ईसाइयो के हाथ मे हैं, इनके माध्यम से ही ये ईसाईकरएा में लगे हैं। भारत सरकार की इस समस्या को समऋते हुए इन सबका राष्ट्रीयकरए। कर लेना चाहिए। शिक्षा क्षेत्र मे केंच तीच का भेद मिटाकर देश के भावी कर्एचारी का भविष्य उज्ज्वल

प्राविध्याज की कार्य योजना ईसाई, मुस्तिय तस्वो के बढते सतर-नाक पको से प्रपनी सस्कृति भीर सम्प्रता को बवाना है। देश से प्रतास्त्रीय तस्व बढते जा रहे हैं, इसका एक कारण यह भी है कि हम मजन नहीं है। स्वामी द्यानन्द में जिस शिक्षा पदित को स्वार के सामने रक्षा वह गौरक-पूर्ण पदित है। उसके प्रपनाने के लिए हमें भरसक प्रयत्न करना चाहिए। महास्ता मुन्तीराम के सामने जब यह जुनौती मायो, वर में प्रपनी हो बच्ची को जब यह गाते सुना—ईसा-ईसा बोल, तेरा क्या लगेगा मोल। ईसा मेरा कुच्ण कन्हेंगा, ईसा मेरा राम रमेंगा। उन्हों दिखायी दिया राम कुच्ण को सम्कृति गिरती जा रही है बस स्वामी द्यानन्द की शिक्षा पदिन के स्वप्त का एक प्रावद्यो नमूना उन्होंने हरिद्वान में गुरुकुल कागडी के रूप में स्थापित किया। विसे देशने इस्लेफ के मुत्तपूर्व प्रचानमन्त्री रेग्ने मेक्डानस्ट धाये, श्रीर देशकट सत्यप्रिक प्रश्वका की।

भाव भावस्थकता है इस बात की, जितने स्क्रूल ईसाई सोनते जा रहे हैं, हम उनके मुकाबले पर उनी स्नर के वैदिक सम्क्रुनि के मनुष्प स्क्रूल

क्रोलं और वही सुविधाएँ प्रदान करें। — अञ्चल सुधांशु

ममुद्र धपनी उत्ताल तरगी से फेन उगल रहा था बार-बार एक लहर किनारे को नोडने की असफल कोशिश करती भीर बन्दरिया के द्वारा सेलते हुए नवज त शिक सम सीच सी जाती। लहर फिर समूद्र माता की गोद से निकलकर हहराती हुई किनारों को तोड इस पार जाना चाहती लहर की इन्द्रा होती इस समुद्र के घरे से निकल उस पार क्या है? यह जानन की समुद्र की गांद में लौटी लहर को समुद्र ने उत्तर दिया — बत्स ! सुनो इस रहस्य को तुम नहीं जान पाधीमें। (ससार झागर के किनारे खड़ा दर्शक भी यही जानना चाहता है कि उस पार स्था है [?] मै इसको जान् पर कोशिश श्रसफल जाती है फिर किनारे पर लीट जाता है।) किनारो का नैयें देखों जो सदियों से सागर को मर्यादा में बाबे साउ हैं। ज्ञान एव क्सक्पी किनारे से बधा मनुष्य काज बन सत्तित टहराहमाहोताहै। ठहराव मन की वृत्तियों का चैतना का नहीं। हिम कंसमान बाहर से सघन भन्तर मे तरल सोता बहता रहे। बाहरी बाकमणो से सुरक्षा के लिए कटीरता बीर भन्दर दया करण। सेवाका स्रोत हृदय से बहताहुआ। जन अपन तक पटुचे। यह है जीवन का सगीत।

सनुद्र के किनारे विकारों से कुवा सनुप्य कहा सोच रहा है— यह सागर किनना विशान है सौर बाहर है किनना सात है सपनी किनारों की नर्यादा से, परन्तु 'खके सन्तर से एक लग का सी ठहराव नहीं हर पन धान्तोलन हो रहा है। नहरे एक दूसरे से टकराती हुई बड़ी कली झा रही हैं, मिनने निनारे से धौर फिर लीट कारी हैं। यह कम धनन्त कान से कल रहा है। कभी दकता नहीं न कभी रहेगा।

यह शात दिखने वाला समुद्र है महान् पुरुष । ऋन्दर की लहरे हैं उसक हृदय मे उमहते विचार लगातार मधन हो रहा है। बाहर भारहे हैं किनारे पर उन प्यासे कोगो की प्यास बुकाने जो पिपासित हैं। कोई बावे और शात करे स्वास को भीर माग दिला दे सी**वा** जिस से सारी भटकन मिट जाये। विचारी के मधन से ही निकलता है प्रमृत और यहा श्चाकर जीवन शात हो जाता है। मधुर सर्गत की अकार निकलती है सारा वातावरण उस मध्र सकार से स्निक्ध हो जाता है। ऐस बनाकर चसना इस जीवन को, बहु जीवन का सगीत तुम्हे भानन्दित करेगा तो बाहर भी भानन्दमय बातावरसाबनेगा। जो भी तुम से सम्पक करेगा वही अकुत हो उठेगा। चञ्चल धारापर्वतसे अब दलीकस-कल छल-फुल करनी मैदान में आकर शात हो गर्या गम्भी रहो गयी भीर सागर मंमिल कर रात्हो गयी । वचपन की चञ्चलता का अवानी में समलना प्रौढावस्था मे

विचार मन्थन

लेखक बलजीत शसात्री

लाकर धात गम्मीर स्थिर बना बेता है मुज्य को तभी पूर्णता भाती है। उनके अपने भी प्रति माना बाता है। इस्य के धन्दर जरान्सा भी मनुष्य क्वा प्राप्त के धन्दर जरान्सा भी मनुष्य क्वा प्राप्त माना का दुव देवा और कल पडे उठे दूर करने। यही स्थ्य देवा भा रत्नाकर माने के बाहु ने—एक विकारी ने काम-मोहित हुए कोन्य स्थ्यती को तीर द्वारा एक को मार स्थित दूषरा कोन्य उडके पात में वैठा दिलाप कर रहा वा। यह स्थ्य देवते ही उनके हुदय ने निकल पवा (मा निवार 1) कींव बन गये।

दूसरी घटना ने डाकू से महर्षि वाल्मीकि वनः दिया। चोर या साधुने रतना ही पूछा था जो पाप तुम करते हो क्या उन पाप के फल मे तुम्हारे परिवार वाले भी भागीदार बर्नेंगे। जिनके लिए तुम यह पाप करते हो । पूछा [।] जवाब नकारात्मक था। वस वही से मस्तिष्क में विचार मा गया, मन तक जो जीवन-भारा उल्टी बह रही थी वह सब सीधी बहुने लगी। नीचे की ऊर्जा श्रव ऊपर को बहुने लगी थी। जो विचार प्रवरुद्ध नदी मार्गकी तरहवाबासे रुके वे वह एक ही भटके में उस सारी बाधा को पार करके ब्हुचल। प्रादिकवि बना दिया। ऐसी शक्ति सब में है उसे पहचानने की ग्रावश्य-कता है । पड़वानो और वस वड़ो । परोप-कार भावनातो रत्नाकर के मन मे बी, पर मार्च मलत था। वेद सन्वेश देता है ---कालो प्रस्वो वहति । समय रूपी (बदव= म + दव जो बाज है कम नही) घोडा भाग रहा है इसकी पहुंचान उठ भीर उसके ऊपर सवार हो जा। कर्म-क्षेत्र में कर्मवीर बनकर कर्म करते हुए धाने को मुक्त कर लंस**व ए**वणाओं स धौर इन बंद की ऋचाओं को धपन जीवन का उद्देश्य बनाकर चल ।

उपह्नरे विरोधा सञ्जये व नदीनाम् । विवा वित्रो श्रवायतः ॥ 'पर्वतो की गुफायो मे घोर नदियो के सगम पर विद्वान् वण्डितो की बुद्धि पवित्र बनती है।'

महात्मा मुशीराम ने हसी मन्त्र को सपते जीवन म उतारा मौर सर्वस्य स्थाम वये । गगा के किनारे गुरुकुक कामको की स्थापना की। मुशीराम न स्थामी अद्धानन्त्र वतकर एक सुरुक्त द्वानन्त्र अर्थे । स्थापना की निकर स्था की बित देकर मिल क्या उस परम सान्त किनारे से सपने को मुन्त कर निया जन्म मुख्यु के कह से ।

भीर इस भवत्वाका वर्शन एक सायर ऐसे करता है---

'खुदाकरे के खुदा भी वहा पर न हो, मैं हू और सनम हो, और कोई दरिनयीं न हो।'

कबीरवास ने भी ऐसे ही कुछ अनु-मृति को व्यक्त किया है---

> अव 'मैं' या तब हरि नहीं। श्रव हरि है मैं' नाहिं॥

प्रातः काल की नन्हीं विविध्या सन्तेया देती हैं, सोने वालो यहां। सराने प्रत्ने क्षाने वालो कर से हिए पहुँच साधी करिकेश में, सोबीराख बीकुण्य बी का गीता के प्रवास करोक में ही यह सन्तेया है—सर्वेत कुरुकोंने समर्थता. । सर्वेत के से में के समुसार कर्म के लेने में वर्षो की समुदार कर्म के लेने में वर्षो की सम्बाधा में रहक कर्म के लेने में वर्षो और सर्वेत की सम्बाधा में पहुंच कर्म के लेने में वर्षो और सर्वेत की सम्बाधा में पहुंच कर्म के लेने में वर्षो और दिल्लामा ने बेकते हुए वह विविधा (साव्य) की लांक की और ही निधाना साथे और हुए निधान स्थान कर्म कर्मनीर होते हैं। ऐसे ही कर्मनीरों के लिए क्षाने

बहु विध्न सबराते नहीं रहु सरोते शास के, बुत नोव सकताते नहीं। काम कियता ही कठिन हो, किन्तु उकताते नहीं। सीड से सबस बने सो सी दिस्साते नहीं। हो वए एक धान से उनके हुरे दिन सी सने। सब बनह सब कास से, मे ही सिसे फुरे-फसे।।

देसकर बाधा विविच,

प्रमात की प्रथम किरण जब बरा पर पड़ी चारो धोर से धन्यकार ने धपना साम्राज्य समेटा भीर भग्नने समा। नन्ही किरए। जवान हो गयी ग्रंबेरा भागकर पुल के नीचे छिप गया। सूर्य की नन्ही किररा जब दूर सागर ने अपने पिता सूर्य के साथ विश्वाम करने हेतु सागर में विलीन हो वयी। ग्रन्थकार का साम्राज्य फैल गया, प्रात काल सूर्य रहिस को ब्रवेरेने देखा बीर भागा। परेशान हो प्रजापति के पास शिकायत लेकर वया। सूर्य से प्रजापति ने पूछा — 'तुम धन्बेरे को परेशान करने हो क्यों ? उसकी शिकायत है भाग उसके पीछे भागते हो।' लुर्व ने कहा-- 'ठीक है, पर उस सबेरे को बुलाधो । मैंने तो बाज तक उसे देशा ही

नहीं। सबकार से कहा गया—तुम सूर्य के सामने साकर कुछ कही। सबेरे के कहा—कैसे साऊँ उसके सामने मेरा सस्तित्व नहीं रहता, नष्ट हो जाता है।

बात सामान्य शे हैं प्रकाश के सामने भवेरा हैं ही नहीं। प्रकाश की अनुपरिवर्षित का नाम प्रवेरा है। प्रपास होगा तो भवेरा हो ही नहीं सकता, यह न बानकर हम प्रकार से प्रयमीत होने रहते हैं। प्रकाश धौरतम (प्रवेरा) हम सबके ध-वर विद्यमान है। बिसने प्रकाश देस लिया अज्ञान का तम दूर भाग क्या। ज्ञान की नहीं रिवस हदशकाश पर चमक कर कमन कर देती है। सा स्थार ऐसे अनुष्य के मुख्य साने सम्वत्य है।

प्रवस पाठ गाँ की कोस से निकलकर सिंखु साँ की नोह ने नोरों के साथ पढ़ता है और उन्हीं नोरियों के सस्कारों के के किया है जोर उन्हीं नोरियों के सस्कारों के के किया है जोर जन जाता है वर्ष राख पुष्टिप्तर और कोई दुर्वोचन सम्मायी। कुस रिस्ने कर्म और वहाँ की वगति के नाता पिता है, समाय से निले सस्कार से मनुष्य का वृत्तियों करती हैं, वो उसके जीवन को सपने सनुष्ट प्रकार की है। तुलबीदात जो > रहे मनुष्य की दिवांत का विषयों करती हैं समुष्य की दिवांत का विषयों करती हैं मनुष्य की दिवांत का विषयों कर्म

तुलसी पिछने पाप से हरि चर्चान सुहाय। जैसे ज्वर के ताप से भूख विदाही जाय।।'

दुर्योचन को श्रीकृष्ण ने कहा — दुर्यो-चन इस तरी हुठ के मयकर परिशास हींगे युद्ध से महाविनाश हो नावेगा, स्वर चरा बीरो हे सुन्य हो बायेगी। ६६ किए धरने पाण्डव जारयों को पांच में वे हे। धारा जगडा समाप्न हो जायेगा। दुर्योचन तथ्म तम्म कहा था — है। ' के कृष्ण मैं जानता हु कि मैं धरमाय कर रहा हु, इसके प्रयक्ष परिणाम स आजवान का विनाश हो जायेगा, धरि वर्ग वंकरणा वेका वहां से स्वार से स्वार्थ हैं। इन दुराइयों की धोर के नहीं हटली इधिनए— प्रयुक्ष म दास्थानि विना युद्धेन केशव। ' स्वस तो युद्ध हो धरिल्यु पेस्सा करेगा।

महर्षि भारभीकि जी ने भी रामायक्ष में इस बात को स्वीकारा। वह कहते हैं— विनाशे बहवो दावा जीवम् प्राप्नोति मद्रकम्। १।(३।४५

'विनाश में बहुत सारे बोप रहते हैं। बीवन के रहते हुए ही मुख्य भनाई को कस्याण को पाता है।' इन सब इतिहास के पन्ती है विशा के सपने को समास सपनी वृत्तियों को समास । निरासा को रसास कोर साशा का दीप सपने पवित्र हायों में लेकर उस मजिल को सोक, साध्यक्त का निर्माण करते हैं ...

'जीवन है एक फूल की मुस्कान । जो औरों के लिए जुटाता झाखा।' अनु का भारतावर्ष एक पुष्पमुमि है। वह सह देवनितित देश मानते हैं। इस समित देश में जो भाषा प्रवित्तित हैं। इस समित देश में जो है। वह सहके निए मनु के हरन में नरे हैं। वह समानते हैं। वह सामानते के साम जातते हुए सामानते के साम जातते हुए समित हैं। इस मकार की भारत के सामानते हैं। इस मकार की भावना ही राष्ट्र के समर जीवन का हेतु है, को वसे सम्मानत है। सम्मानत सम्मानत सम्मानत है। सम्मानत सम्मा

वृत्तद्वेसप्रसूतस्य सकासावप्रवान्यतः । स्व स्व वरित्र शिकोरम्पृषिक्या सर्वेमानवा ॥

धर्मात् इस देश मे जन्म पाय हुए श्रोष्ठजन्मा पुरुषो से पृष्मिती के सब मानव स्वपने चरित्र की शिक्षा ग्रहण करें।

राज्य में राजा की वासवी (गही) वसके क्षा स्वान है, वहीं व रण प्रवृत्त होता है। मनु को धरावक राज्य वे पूणा है। प्रावकता की व्यवस्था में मास्यव्याय के होशा समझ्या में की सास्यव्याय के होता समझ्या में की प्रवृत्त की प्रवृत्त

मनु और राष्ट्र

डा० वासुदेवशरण ग्रग्रवाल

दण्ड है। दण्ड के निर्वत होने पर धर्म रसातम को चना जाता है। यह स्मरश् रसना चाहिए कि मनुका वर्ग बोबा पर-लोक-विश्वास नहीं हैं, बल्कि वह प्रजाशो का भारता भीर सबबंग करने वाली जीवन की एक शक्तिशाली पद्धति है। दण्ड ही न्याय का मूल है। जब दण्ड का प्रसीता सामु मर्यात् निष्पक्ष मान से दण्ड का प्रयोग करता है, तभी प्रकाएँ एक-दुसरे को दबाना नहीं चाहती। ननुके धनुसार दण्ड ही राजा है, दण्ड ही नेता है, बण्ड ही वासिता है और वण्ड ही राष्ट्र में सकेसा पुरुष है। दण्ड के सामने अन्य सब कुछ स्त्रीकी तरह प्रतीत होता है। सब भूतों का बोप्ता प्रचार्यत का पुत्र ब्रह्मतेज स बुक्त दण्ड ही है, विससे राष्ट्रीय थमं विचलित नहीं होते। इस प्रकार का सबसे निकर रहने बाला और सबको निकर रखने बाला दण्ड जब तक राष्ट्र का ककूद बा सबसे ऊषा स्थान बना रहता है, तभी तक राष्ट्र की भारमसम्पदा पनवती बहुती है। मनुका बादर्शराष्ट्र के वाहावर्गबीर ब्राज्यमं का (जिल्हे ब्राज्यस की राष-नीतिक परिमापा में Legislative धौर Executive वस्ति कहते हैं) सुन्दर

समन्बय है---

नाबहा तत्रमुष्टनीति नासत्र बहा वर्षते । बहा सत्र च सपुस्तमिह चासुत्र वसते ॥

> ---६।३२२ केक्षत्र और विना

सर्थात् विना ब्रह्म के क्षत्र और विना क्षत्र के ब्रह्म का विकास नहीं होता। ये सितकर ही इस नोक से और परलोक से सर्वाद्धत होने हैं।

इस प्रकार की व्यवस्था में मस्तिक का सौर बस दोनों की प्रशाकी जाती है। मनु के धावस ब्राह्मएत में हैं जिन में कर राष्ट्रीय सस्कृति मूर्तिमान क्य बारण करती है। वे ब्राह्मण वमं के कोश है। राष्ट्रीय वमों का निर्माण हती प्रकार के ब्राह्मण वमें के कोश है। राष्ट्रीय वमों का निर्माण हती प्रकार के ब्राह्मण वमें के कोश है। राष्ट्रिय वमों का निर्माण हती प्रकार के विशेष की परिवर्ष में होता है, राजवण्ड तो उन वमों को प्रवित्तित रक्तत है। मानव-सस्कृति बहुक्ख्या पर निर्मर नहीं है। एक ब्रानी दस हवार मुक्तों से बेष्ठ है।

एकोऽपि वेदविद्धर्यं, य व्यवस्थेदृद्धिकोत्तम । स विज्ञेच परो वर्गो नाज्ञानामुदितोऽयुतं ॥

मानव वर्मशास्त्र बुद्धिका समादर

करता है। वह अकड़ने वाले वर्मों का पुलिन्दा नहीं है। युगवर्म के अनुसार कानूनों की वृद्धि और विकास करने के बदार बीज इस सारत में जान-तृत्रकर रहे नमें है। विष्ट विदानों की दशावरा परिपदी को समस्तित करने का विवान इसीलिए था।

मनुके बनुसार विद्वान् या कमशीस ज्ञानी का मूल्य सबसे अधिक है। धन, बल्धु ग्रायु कर्मग्रीर विद्या, येपाच मादण की चीजे हैं, इस में बाद की वस्तु पहले से श्रेष्ट है। धन से ज्ञान बहुत ऊचा है। यह ऋषियों का पैमाना वा विससे मानव की ऊचाई नापी जाती थी धीर मनु ने इसी को अपनाया है। मनु की दिव्ह मे 'मनुष्य सबके केन्द्र मे है उसी का निर्माण सब शास्त्र और वर्मों का ध्येय है। सनुष्य की समृद्धि के लिए ही शादर्श-सस्यामो का विकास रुप्ट मे किया बाता है मनुकाविचारहै कि गजाही युग का प्रवतक होता है (राजा हि युगमुच्यते), प्रतएव सप्नाग राज्य की ठीक व्यवस्था मानव समाज की नबसे बडा ग्रावण्यकता है। इसकी खिडि के लिए जहाएक स्रोर बीयवान् दण्डकी स्थ पना चाहिए, वही दूसरी भोर राष्ट्र की प्रज्ञामे निमलता भीर तेज भी भाना चाहिए।

(हिन्दी वि वभारती स सामार)

चलितवाँ के बारण्य तथा धान्य में बाबारणत तीन वालि-मन्त्रों का प्रवोध किया बाता है। उनने वे एक प्रविद्या क्रम्म पूर्णम्य, पुर्णम्यन है। इससे पूर्व कि हुन हैगोपनिय के मन्त्रों का क्रमण स्वाद्यमन करें इस वालित मन्त्र के बारे में कुष्ट क्ष्मिय पुर्णम्य इस प्रकार है- पुर्णम्य पुर्णम्य पुर्णम्य प्रवाधनायी ॥ पूर्वास्त्र की पूर्ण है और यह भी पूर्ण पूर्णम्य पूर्णम्य को तीन विद्या गया है। पूर्व से पूर्ण मार को तीन पर भी पूर्ण क्या पहुता है। इस मन्त्र में, निम्न बिन्नु

- ४ (१) 'श्रदस्' और 'इद सर्वनाम किस पदार्च की भ्रोर इनित कर रहे हैं।
- (२) वह वस्तुमी पूर्ण है सौर यह वस्तुमी पूर्ण है।
 - (३) पूर्ण से पूर्ण ही उत्पन्न होता है।
- (४) पूर्णको निकाल केने पर भी क्षेत्र पूर्णहीरहताहै।

सन्त्र-विश्वत इन प्रश्तों पर विचारने है एक बात तो स्पष्ट है कि एक पदार्थ वह है कि जिस में से कुछ निकाला जाना है और दूकरा पदार्थ वह है कि जिसे विकाला वका है और वे दोनों के बोनी

उपनिषदौं का शान्ति-मन्त्र

स्वामी दीक्षानन्द सरस्वनी

पूर्ण है। शबस्य ही ऐसा पदार्थ नेतन-तत्त्व न होकर जड-तस्य होना चाहिए। सत इमारी तुन्छ सम्मति में बदि 'वह' सर्व-नाम बहाापड का बाचक है तो 'यह' सर्वनाम पिष्ड का बावक है। इद शब्द का प्रयोग प्रपत्ने चति निकट प्रत्यक पदार्व के जिए किया जाता है। व्यक्ति के बस्यन्त निकट उसका बपना देश ही है। स्रोर वह-सर्वनाम का प्रयोग दूरस्य परोक्ष बस्तु के लिए होता है सो हमारी दिन्ट मे वह-सर्वनाम से मनिप्रेत बहुगध्य है धर्मात् हम कहेंने वह ब्रह्माच्य भी पूर्ण है बौर यह पिण्ड भी पूर्ण है। इसी के ब्राधार पर 'विण्डबह्याण्डवोरंक्यम्' 'बचा विच्छे तथा बह्याच्छे' द्यादि सूत्र प्रवित्त किये वये । यदि यह सत्य है कि को कुछ बहुगक ने है, वह पिन्ट मे भी है तो 'धरम्' सर्वेनाम का वाचक ब्रह्माण्ड होवा धीर इद सर्वनाय का वाचक पिन्ड होवा। ब्रह्माण्ड और निण्ड के तुल्ब होने से और

पूर्ण होने से इन्हें पुर कहा बाता है। ब्रह्माच्य ने से पूर्ण विषय के निकलने पर जी उससे न्यूनता नहीं बाती और सेष पूर्ण ही रहता है।

'वह' धौर 'यह' खबंगम (उपावान) कारसा और कार्य के भी वाचक हो सकते हैं। प्रकृति कारसा में इस कार्य-बग्द को निकाननं पर कारण प्रकृति से कोई सन्तर नहीं आता, वह खबा पूस ही बनी रहती है।

'वह' धीर 'यह के तुत्र की हम तुज धीर बीज पर भी लाबू कर सकते है। बही तृज पूर्ण है वहां बीज भी पूर्ण है। पूर्ण तृज्ञ में से पूर्ण बीज को निकासने पर भी बृज पूर्ण ही बना रहता है।

वैदिक तृष्टि-विज्ञान से दो समुद्र बाने बाते हैं—एक बाकाबीय समुद्र और दूसरा पाँचिव समुद्र । ये दोनो ही समुद्र पूर्व हैं। बाकाबीय समुद्र वाष्ट्रमध्य है

भीर पार्थित समुद्र जलमय है। जलमय समृद्र में से यदि जल का वाष्पीकरण द्वारा निकासा आरमे तो भी इसमे न्यूनता नहीं आती। बाष्पीय समुद्र यदि अस मे परि-वर्तित होकर नदियो द्वारा समुद्र मे पहुंच बाय तो बाकाशीय समुद्र में कोई न्यूनता नहीं आती। यही प्रयोग हम पिता भीर पुत्र के लिए भी कर सकते हैं। परमात्मा मे यह सूत्र व्याप्त नहीं होता क्योकि उसमें से कोई वस्तु न निकाली ही जाती है भीर न डाली जाती है। हाँ यदि उसे ज्ञानसम माना जाय तो कहा जा सकेगा कि उसमे रहने वाला ज्ञान भी पूर्ण है भौर उसके द्वारा प्रदत्त वेद ज्ञान भी पूर्ण है। उसके ज्ञान में से वेद-ज्ञान को निका-सत पर भी सविशव्द पूर्ण ही रहता है। भौर यही सूत्र परमात्मा के बानन्द-गुरा पर भी चरितायं हो सकता है। बत हम कहेंने पूर्वम् बाव पूर्वम् इश्म्।



तथाकथित विश्वविजेता सिकन्दर, सम्प्राट पोरस से

लेखक--पी० एन० ग्रोक

धनुवर्ती घटनाधी से यह स्पष्ट हो वाता है कि उपयुक्त बारला भनगढन्त एव स्वाथप्रेरित विभ्रान्ति है। यूनानी इतिहासकारों की इच्छा यही रही है कि हम विश्वास कर कि असल्य नरमेध कर हत्याची और सम्पूल समृद्ध नगरियो का व्यसकर्सा सिकन्दर उस समय प्रत्यन्त प्रकृत्लित हथा या जब बन्दी बनाये जाने पर पोरस ने उससे निश्वीकता से अगने साथ राजा जैसा व्यवहार करने को कहा बाकि सिकन्दर ने न केवल उसे उसका प्रदेश उदारतावश वापस कर दिया था. श्रापित अपनी घोर से भी कुछ घौर प्रवेश पोरस को द दिया।

^{र्श्}योपियासी महाकाव्यो का सम्पा-इन कारन वाले श्री ई० ए० डब्ल्यू० बैज ने द्मपनीर नामे सिकन्दर के जीवन और उसके विजय ग्रभियानो का वर्णन सम्मि लित किया है। उनका कहना है कि, **"खे**हलम के युद्ध में सिकन्दर की घरव सेनाका प्रविकाश भागमारा गया था। खिकन्दर ने अनुभव कर लिया था कि बंदि मैं लडाई जारी रक्तगा, तो पूर्ण रूप से श्रापनानाश करलुगा। भत उसने युद बन्द कर देने के लिए पोरस से प्राप्ता की। भारतीय परम्पराके सत्यानुरूप ही पोरसने बरमागर शत्रुका बचनही किया। इसक पाद दोनो न एक सन्धि पर हस्ताक्षर किय। घन्य प्रदशो को धपने साम्राज्याधन करने में किर पोरस की सहायतासिकन्दर न की।

सिवन्दर •। पराजय के लिए श्री बैज द्वारा दिया वया कारण यह है कि उसके सैनिक यद में अपने हजारी साथियी की अति से दुखित हो चुक ये। उन्होंने अपन शस्त्रान्त्र फेक दियं और अपने नेता से जान्ति के लिए प्रयन्त करने की प्राथना की। श्री वैज का कहना है कि शान्ति की प्राथना करन समय सिकन्दर ने निवेदन किया चा— श्रीमान पोरम ! मुक्ते क्षमा कर वीजिए। मैंने भापकी जूरता भौर सामय्य शिरोषार्यं कर ली है। धर इन कष्रों को मैं और प्रविक सह नहीं सकूमा। दुक्षी हृदय हो मैं ग्रद ग्रपना जीवन समाप्त करन का इरादा कर चुका ह। मैं नही चाहता कि मरे सैनिक मेरे ही समान विनाट हो। मैं वह अपराधी हू जिसने इन सी को को कराल काल के गाल मे चकेल दिया है। किसी राजा को यह को भा नही देता कि वह अपने सैनिकों को इस प्रकार मीत के मह में चकेल दे।

ग्रनुवर्ती घटनाधी द्वारा प्रस्तुत ऐसे स्पष्ट साक्ष्यों के होने हुए भी इतिहासकार उपयक्त उद्धरण को प्रक्षिप्ताश कहने भौर इसी।लए उनकी अवहेलना करने के दूरा-ब्रह पर धड हए हैं। तर्क के लिए यह मान केने पर भी कि उःर्युक्त उ**द्धरण** प्रक्षिप्ताश ही हैं हम यह प्रश्न करते हैं कि पोरस के सिरकाडरियस के सिर की भावि कव्ट

बाले सिकन्दर ने न केबल पोरस को जीवन दान दिया अपित उसको बन्दी सवस्था से मूक्त किया उसको उसका सम्पर्श राज्य लौटा दिया और सदभावना वश पुरस्कार रूप कुछ बौर प्रदेश भी भेंट मे द दिया। यह उतना ही ध्य नितय्कत है। जिलना यह कहना है कि किसी परस्कार-वितरण-समारोह में सहसा प्रकट होकर श्रपना शीश तीत्र गति से क्रद्धावस्था मे हिलाने बासा अयकर विवचर धकस्मात

यह शिक्षित तथ्य भी कि प्रशिसार ने सिकन्दर से मिलने से इन्कार कर विमा था सिकत्थर की पराजय का सकेतक है। जैसा कि दावा किया जाता है, यदि वास्तव में सिकन्दर ने पोरस की शक्ति क पराभव किया होतातो मभी तक तटस्य रहने वाला ग्रमिसार शान्सि बनाए रक्षने एव भित्रता सर्वन करने के सिए मत्पट सिकन्दर के वास बीडकर गया होता ।

श्री ई० ए० डब्स्य० बेज का कहना है कि शाति की प्रार्थना करते समय सिकन्दर ने निवेदन हिया था— "श्रीमानु पोरस ! मुक्ते भ्रमा कर दीजिए। मैंने भापकी शूरता भीर सामर्थ्य शिरोधार्य कर ली है। अब इन कब्टो को मैं भीर प्रधिक सह नही सक्या। दु सी हृदय हो मैं अब प्रपना जीवन समाप्त करने का इरादा कर चुका हू। मैं नहीं चाहता कि मेरे सनिक मेरे ही समान विनष्ट हो। मैं वह अपराधी ह जिसने इन सैनिको को कराल काल के नाल मे बकेल दिया है। किसी राजा को यह शोभा नही देता कि वह अपने सैनिको को इस प्रकार मौत के मृह में धकेल दे।"

ही मुस्कराता हुमा माक्वंक राजकुमार वन गया और पुरस्कार विकरण करने लगा ।

यहो तथ्य, कि पोरस ने सिकन्दर से भपना प्रदेश सोने की भपेक्षा कुछ जीता ही या, प्रदर्शित करता है कि सिकन्दर ने न केवल शान्ति के लिए क्षमा बाचना की अग्रित यह भी कि उसका पराभव इतनापूल याकि उसे अपने कुछ भूक्षत्र भी पोरम को भेंट करने पह थे। इन यनानी वर्णनो पर भी विश्वास करते हुए कि सिकन्दर ने कुछ भू-प्रदेश जीतने मे पोरस की सहायता की बी यह भी विल्कृत सम्बद्ध है कि अपना चमड विस्कृत चर चर हो जाने पर मिकन्दर ने ब्रह्मन्त दस नीयायस्था ने पोरस का सहायक हो सेवा करना स्वीकार कर लिया और भारत मे श्रतिक्रमण कर प्रविष्ट होने क वण्डस्वरूप पोरम के लाभाय कुछ नूप्रदेश जीतने का वचन दिया। यह हा सकता है कि वह अतिरिक्त मुप्रदेश घोषित कामे शक्ष भाव बनाए रखने वाने तक्षशिला के राजा ग्राम्भि भीर राजनियक-सटस्थता बन।ए रखने वाले भ्रमिमार लोगों का रहा हो।

सिकन्दर का सामध्ये प्राचीन भारत की प्रतिरक्षात्मक सीह-दीवार से टकरा कर ऐसा चूर-चूर हो गया था कि पोरम के साथ यद के पश्चात जमके सैनिको ने भागे युद्ध करने से साफ इन्कार कर दिया। यह भली माति कल्पनाकी जा सकती है कि जब पोरम अकेला ही सिकन्दर भीर भामित की विली-जुली सामध्य को पूल मे मिलासकता वा ता मिकन्दर कभी भी मिखु नवी के पार नहीं ग्राता यदि केवल ग्राम्भि की राष्ट्रभक्ति भीर न्यायबृद्धि पोरम के प्रति उसके गत्रु भाव की दास न हो जाती।

वापम जाने का निष्यय भी कर लेने के पत्चात् यह स्पष्ट है कि सिकन्दर को उन प्रदेशों से होकर जाने की प्रनुपति नही मिसी की, जिनको उसने पहले जीता बा

ग्रीक-इतिहासकारी के प्रमुसार तो हमे विश्वास कर तेना चाहिए कि सिक-न्दर की सेनाएँ विना प्रतिरोध के विना किसी रोक-टोक के चेनाव तका राजी नदीपार कर गई थी। यह स्पष्ट रूप में दर्शाता है कि जब पोरस ने अपने तत्कास शत्रु सिकन्दर को साम्भि के उत्तरी प्रदेश धौर वहां से सिन्धु के पश्चिम की घोर बापस लौट बाने से मना किया था तब पोरस ने विद्याल-हुदयतावश भपने प्रदेश के बार्ग से सरकित जले जाने में सहायता देने का बाहवासन दिया बा. यदि सिक-न्दर दक्षिण की बोर जाता।

पोरस का धोर से यह अल्यन्त दूर-दक्षिता का पम बा क्योंकि गदि उनने सिकन्दर को धारिम के क्षेत्रीयमार्वधौर वहा से धफगानिस्तान जाने की धनमति है दी होती, तो बैसा कि अनुवर्ती मुस्लिम धाहमणकारियों ने धनेक बार किया. वैसा ही सिरन्दर ने भी कतध्नतापवंक धन्य धाकमण करन के लिए सेना का पुन एकजीकरण किया होता ।

ज्यो ही सिकन्दर की सेनाम्रों ने राबी नदी पार की त्यों ही भारत की द्वितीय सुरुभा पक्ति ने भपना औहर दिसाया। पोण्स ने अपने ही मू प्रवेश द्वारा उनको श्वर शत्मक व्यू**ह-रचना में सन्नद्ध कर दिया** था। किन्तु उसे ज्ञात या कि हमारे वीर क्षत्रियो द्वारा पूर्ण सन्नद्वता एव उस्साह पूर्वक प्रारक्षित मारत के घन्य भागी से भी मिकदर सम्पत नहीं जासकता था। इतनाही नही, जब वह सन्य राग्ते से लौटकर जाता तब उसकी वापसी पर उसकी पूरी चरनी बनाई जाती धौर विश्व विश्वेना होना तो दूर उसे तो ब्रस-हाय एव प्रक्रियनावन्या मे पुत्रा दिवा जाता। यही हबा भी। यत इतिहास को यह भवस्य ही स्थान रखना चाहिये कि एक पराभूत शत्रुकी ग्रपेमा पोरस का मम्मान तो उस मारतीय महान् नेता धीर

छसकी सेनाको चर चर कर दिया छ। और निर्मंद शोकाकुल एव प्रायविश्वल-कर्ता के रूप में ही सिकन्दर को बाउस घर मेजने के लिए बाध्य कर दिया था।

रावी भीर व्यास नदी के मध्य भाग में निकन्दर की सेनाओं को अनेक विकट सडाइयाँ सडनी पडी थी। प्राचीन कास वे बारतीय सेनाए इतनी सावधान एट सतकं भी कि वे किसी भी प्रकार का समस्य अतिकमण सहम नही करती थी। ब्रत्येक नागरिक एक सैनिक था । राष्ट्र-मक्ति का स्थान किसी भी प्रकार सक-विज दयामाय नहीं ले पाता था। ध्यास के तट पर पहुंचते पहुचते सिक्त्वर के सैनिको ने भीर भागे कोई भी सहाई लडने से साफ इन्कार कर दिया क्यों कि यत्त्रवारी होने के कारण चनको प्रत्येक पन पर रोका गया वा। विकट सशस्त्र प्रतिरोध कियागयाचा वेभू से रहे थे, उनको घर की याद बताने लगी थी अत-विक्षत एव युद्ध करने से चक वके के । ह अनेक युद्ध लड चुके थे। पोरस के साब उनका युद्ध एशिया मे चौथा एव अन्तिम महान् संपर्व या । इसकी भयावह स्मृतियाँ उनके लिए इदयकपित कर देने वाली थी।

जिन मार्गे से सिकन्दर वापस आर रहा था, उनमे उसका धायमन धमिनन्द-नीय न होने के कारशा सिकन्दर के भूखे मरते सैनिको ने घसावधान नागरिक-समुदायों को लूटना शुरू कर दिया। किंतु इस तब्य को यूनानी वरानों में इस धसस्य दाव का प्रमाश कहकर प्रस्तुत किया गया है कि पोरस के तथाक वित पराभव के पश्चात् भीर समिल प्रदेशी का जीतने एव लुट का माल एक न करन के लिए शिकन्दर दक्षित की छोर सह यया।

सिकन्दर सिन्ध और मकरान के मानी से बापस गया । प्रत्येक स्थान पर उसकी शोजनीयावस्था की प्रप्त सेना के विभिन्न वर्ग भारतीयो द्वारा छटर् धाक्रमणी भूजमरी एव रोगो स बस्त होकर सस्या में कम ही कम होते गय।

इस वापसी के समय मलावी नामक एक भारतीय जन जाति न सिकन्दर के युनानी राक्षसी भूण्डो का कडा मुकावला किया। इनमे होने वाली अनक मुठनेडी मे स्वयं सिकन्दर भी घायल हुआ। वा। एक सथय में तो उस के टुकड-टुकडे कर विय जाने वाले थे। व्लूटाक ने उस्केख किया है 'भारत में सबये अधिक संसार सडाकु जाति मलावी शोगो के द्वारा सिकन्यर की देह के टकडे-टकडे होने ही बाले वे भदनी छाटी सी टुकडी भीर स्वय अपने को ही इन वर्गर सोयों के तीर-भासी के मयानक सवाती से परेशान पाकर वह इन स नो के मध्य में कृद पड़ा। उन लोगों ने हावापाई तक में भयकर राजनीतिक के क्ष्री विवस्त किया बाला ... बाक्यक किया । बलकी क्षत्रकार बीर

हार मान अपने देश चल पड़ा

उसे जवानक रूप में बाहुत कर दिया। सनु का एक सर-सवान रहने प्रवा की से हुआ का कि उसके कि सह-सवार को लगार कर नया और उसकी प्रतिकार को लगार कर नया और उसकी प्रतिकारों के कृत था। विस्तर उसका वीच उतारों के किए बीठ जबा। पूर्वेस्ट्स और किल्मेयस ने स्वय को खिक्त्यर की रहाये कर दिया, भिन्नु उनमें से एक दी मार काला बया अरोर दुसरा अराजन का विस्तर की एक दी मार काला बया अरोर दुसरा अराजन सामक हो दया।"

इसी नारकाट के बीच ने सिकस्थर जी गर्दन पर भारी मोटे सिरे वाली खड़ी का प्रहार हुखा । उसका धनरक्षक उदे ससकी प्रनेतावस्था मे ही किसी सुरक्षित स्वान पर ने नया।

सीटते समय मी यूनानी राजसी ने सक्यनीय अस्याचार किया है। विवयो-श्वाद समया परावय-ज्ञ्य नेरायम, बोनी ही सबस्या में सिक्त्यर की यूनानी सेना प्रभुत्त कूर व्यवहार करती थी। जब जनता उनकी सहायता करने से इन्कार कर बात्में नाविरकीयर क्यर प्रकृत से स्वार वन्यों का सिंह्य के स्वार स्वार वन्यों का सिंह्य के सार प्रकृत से स्वार वन्यों का सिंह्य के याट स्वार क्यों का सिंह्य को सार के से

मलावियो की ही माति स्यूजिकन, श्लॉक्सीकन व साम्बुख (सभी बारतीय कातिया) सिकन्दर की घतिक्रमराशील सेना पर मीवन प्रहार करने की डब्टि से श्रॅबठित हो गईँ । घरपन्त कठिनाई से स्त्रीर बुरी तरह पिटी हुई बोडी-सी सेना मात्र के साथ सिकन्दर सिन्धुनदी के अब्रुहाने तक पहुँच पासा । चूकि अपने अस्त्रो एव सैनिको की प्रजियता में सिकन्दर का विश्वास भय हो नया था, इसलिए क्रमने स्थल-मार्ग छोडकर समुद्र के रास्त आतो का विचार किया। उसने एक दल सैन्य-गतिविधि--- अनुसवानकार्य के लिए आयोरि,नेज भी दिया। किन्तु उस में समुद्र आरम से जाने का भी उत्साह नही था। श्चत अत्यन्त सकोचपूरक उसने बलूचि-क्लान पार कर पश्चिम की ग्रोर जाने का विवार किया। इस क्षेत्र में भी झोरिटस को लें ने यूनानी सेनाओं को भारी पीडा वहचाई। रसमालन भौर पासनी पहुँचते पहुँचते बहाका मीवराताप उसके शुषातं विकस सैनिकों को ले बैठा। उनकी सस्या खौर भी कम हो गयी। थका-मादा सौर निरास्त हो उसने महेसिया पार किया और वह कारमेनिया पहुच गया। वहा क्रेटसंके नेतृत्र मे एक टुकबी भीर नी सेनाका एक भाग उससे भा मिला। कुछ कम सत्रुत्वपूर्णकोत्र मे इस प्रकार सेना के प्रशों के जा मिलने से मार-मार कर **बिरा दी गई और सबभग बिनष्ट कर दी** नवी सेनामे कुछ भाषाका सचार हुया। इव विजित प्रदेशों में भी विकम्बर द्वारा . प्राथमाओं के बातके कर्मावकी

भावरण् स स्वानीय बनताको कृषित कर रक्षा या। लोगो ने उन के विषद्ध सम्बद्ध विद्रोह कर रक्षा या। इसलिए सिकन्यर का उन राज्यपालो को बदलना

सिकन्दरको बहुत वार एक महान् भीर नक राजा के रूप में विजित किया नया है। किन्तु एरियन निसता है कि "अन नैक्ट्रिया के वसूस को बन्दी बनाकर सिकन्दर के सम्मुक्त काया गया, तब सिकन्दर ने अपने सेवकों से उस को कोड लगवाए, धीर उस के नाक भीर कान कटबा डाले। बाद में बसूस को अरवा हाला गया। सिकन्दर ने कई फारसी सेनाध्यक्षो को नृषसतापूर्वक मरवा दिया वा। फारसी राजचित्नी को वारस करन पर सिकन्दर की बालोचना करने के अपराथ में सिकन्दर को स्वय अपने ही गुरु घरस्तु के भतीने कलस्थनीन को गरवा डालने में भी कोई सकोच नहीं हुमाया। क्रोबावेश मे उसन मपने ही मित्र क्लाइटस को मार हाला चा। उस के पिता का विश्वासपात्र सहायक पर-मेनियन भी सिकन्दर के द्वारा मौत के बाट उतार दिया गया था। जहा कही भी उस की सेना गयी, उस ने समस्त नगरों में भाग लगा दी, महिलाओं का ग्रपहरस किया ग्रीर बच्चो को भी तलवारो की घारो पर सूत डाला। ग्लि-म्यसिस घाफ बरढं हिस्ट्री'के ७२ वे पृष्ठ पर स्वर्गीय ववाहरलाल नेहरू ने लिला है 'सिकन्दर वृथानिमानी उद्धत भौर अनेक बार अस्यन्त कूर व हिसक था। बहु स्वय को ईवतर का आग ही समान ही समान ही साम सा वा को का जिस्सान ही स्वर्ग के स्वयं के

धन्य वर्मों की महिलाधों में ईरान की दो शहुँजादियों का तिकन्दर न भएन वर में डाल निया था। उस के छेना पतियों ने भी जहाँ कही वे यथे धनेक महिलाधों के वस्तुर्वक धपनी रखेल बना कर रख निया था।

भारत में उस का समर्थ उस की मीत का परदाना बन गया था। धपने घर बापस जाते समय जब नह भीडिया शिविर बांग उस की सेना में भी भवकर विट्रोह फैल बया। सिकम्दर ने मेसे बोरा का बिकास कर देने भीर और सम्य जातियों में से सेना में भरती कर लेने की पसनी था। बहुत कठिनाई से बिट्रोह खाला हुमा और निकन्दर ईंग् पुरु ३२३ में बेबिलोन पहुला।

वेविजोन से प्रस्थान करने की निष्मित्त तिर्थि से दो दिन पूर्व दिकन्दर प्रमुने मिन मीडियम के घर पर एक मोज ने यदा हुआ। था। मारत-विजय करने का गर्वीला मन्तक नीचे फुक जाने की कटु स्मृतियों को भूला देने के लिए प्रस्थाकि मत्यान के कारण वह ज्या-स्वराधिक मत्यान के कारण वह ज्या- वर्षं काथा। ज्वर चढारहाव भीर भी तेज हो सया। १० दिन के बाद उस की वाक-शक्ति लुप्त हो गयी भीर फिर ई० पू० ३२३ मे जून की २० तारीख का वह अप्ताबस्थाम मर गया।

सिकन्दरक मरणापरात 'भ्रोगस नामक एक पुत्र जन्माथा किन्तु कुछ, महीने के भ्रोतर ही सिकन्दर की पत्नी एवं ध्रवीध शिखुमार डालेगये।

सिकन्दरका उ^हे खनीय जीवन वृत्त धकस्मान् धतिकम् से प्रारम्भ हुमा, किन्तु जब उस का साहस न्याय एव विवक की परिधि की माम्रो को लाथ गया भीर जब उस ने भारत की सुद्ध प्रतिरक्षा पक्ति से टकराने का यत्न किया तब बह विषयाता हुमा लडसहाता हुमा वायस भेज दिया गया था। वह भारत मे मरते-मरते बचा। प्रशेत रह से घायल हो जाने के कारण जब वह भारत से लौटा तो अपने घर पः चने से पूर्व ही मर गया। उम की शक्तिशाली सेना पूर्णत नष्ट अब्द हो चुकी थी। धत इतिह सकारो को पून पोरस सिकन्दर सथय का म्ल्या-कन कर पारस को निर्विवाद रूप मे विजेता घोषित करना चाहिए। ग्रव उपयुक्त समय है कि यूनानी वृत्त नक्षको के पक्षपालपुण दावों की घत्यन्त स्क्मता से जाचापडताल की जाए जिससे सिकन्दर के भारतीय प्रभियान की स्रत्यताका ज्ञान हो जाए। 'इतिहास की भयकर भूले से साभार

गृहस्थ त्राश्रम के लक्षण

(सत्यार्थंप्रकाश से)

जिस कुस में आयाँ से सची और पति से पत्नी सम्बेद सकार प्रकृत रहती हैं की कुत में रास्त सीमाय सी पेर्स्य में निवास करते हैं। बहुत कतह होता है। को स्त्री पति से शिंत कोर पति को प्रकृत स्त्री पति से शिंत को प्रकृत होने से कास उत्पन्न नहीं होता। जिस स्त्री की प्रसन्ता में सब कुत प्रकृत होते हैं उसकी प्रप्रकृता में सब प्रश्न स्त्रीत हैं उसकी प्रप्रकृता में यह प्रश्नमा सर्वात हुं ब-सायक हो नाता है।

वर्षे कुछ भी न करे परन्तु वर्ध के नाम से लोगों को उने। वर्षदा लोग से मुक्त कपटी सलारी महुम्लों के लामने सपनी दबाई के गयों है मारा करें प्राणियों का सावक प्रवाद से वर्डु कि रखने नाला, सब सण्छे धोर बुरों से भी नेम रक्के उसकी वैद्याल दिखाले के समान पूर्व और नीच समस्त्री। कीर्ति के लिए नीचे सिंग रक्के हैं क्यांत किसी ने उस का देखा मर प्रपाल किया हो तो उसका बदसा प्राण तक सेने को तरपर रहें चाहू क्यांत हो तो उसका बदसा प्राण तक सेने को तरपर रहें चाहू क्यांत हो ता वह सा प्रवाद प्रवाद स्थाव प्रवाद स्थाव स्था स्थाव स्थाव

मूटी क्यों न हो परन्तु हुठ कभी न छोडे एसे सोमों को बगुले के समान नीव समक्ती। ऐसे-ऐसे लक्षणी वाल पासच्यी होत हैं उन का विश्वास वा सेवा कभी न करे।

सवा दबकारी कोमल स्वभाव जिते न्द्रिय हिंसक क्रूर दुष्टावारी पुख्यों है पृथक् रहनेहारा धर्मात्मा सनको जीत भीर विद्यादि दान से सुख को प्राप्त होवे। परन्तु यह भी ध्यान रक्से कि जिस काणी मे सत प्रय प्रयत् व्यवहार निश्चित होते है वह बाग्री ही उनका मूल घौर वाणी ही से सब व्यवहार सिद्ध होते हैं उस वाणी को जो जोरता ग्रर्थात् मिथ्याभ पण करता है वह सब चोरी भादि पानो का दरने बास्रा है। इसलिए मिथ्याभाषगादिरूप श्रवमं को छोड जो धर्माचार ग्रवीत् ब्रह्मचय जितेन्द्रियता े पूण ग्रायु भीर धर्माचार से उल्लाम प्रकातका प्रकार धन को प्राप्त होता है तथा को धर्माचार से वर्लंकर दुष्ट सक्षणी का नाश करता है उसके झावरण को सदा किया करे।

जैसे नदी और बडे-बडे नद तक तक भ्रमते ही रहते हैं बब तक समुद्र को प्राप्त

भाश्रम स्थिर रहते हैं। (जैसे बायु के **बाश्र**य सब प्राएी हैं वैस गृहस्थाश्रम स**व** बाधको काध श्रय है) दिना इस बाशक के किसी बाध्यम का कोई व्यवहार सिद्ध नही होता । जिसस बहुरचारी वानप्रस्थ धौर संवासी तीन बाश्रमी को दान और श्रम्नादि दके प्रतिदिन गृहस्य ही भाग्सा करता है इससे गहरूप ज्यव्ठाश्रम है धर्यात् सब स्थवहारो मे धूरन्वर कहाता है। इसिनये जो मोक्ष भौर ससार के सुख की इच्छा करता हो वह प्रयत्न म गहाश्रम का भारता करे जो गृहाश्रम दुवलन्द्रिय धर्मात् भी क भीर निर्वेत पुरुषो से बारश करने भयोग्य है उसका भ्रन्छ प्रकार बारण करे। इसलिए जितना कुछ व्य बहार समार मे है उसका भ्राधार गृहाश्रम है। जो यह गृहाश्रम न होता ता सन्नाना-श्रात्ति कन होने से ब्रह्मचय, बानप्रस्व भीर सन्यासाश्रम कहा से हो सकते। जो कोई गृहाश्रम की निन्दा करत है वही निन्दनीय है भौर जो प्रशसा करना है वही प्रशसनीय है। परन्तु तभी गृहाश्रम में सुख होता है अब स्त्री और पुरुष दोनो परस्पर व्रसम्ब विद्वान् पुरुषार्थी धौर सब प्रकार के व्यवहारों के जाता नो । इसलिये नृहा-श्रम के सुख का मृख्य कारण प्रह्मचर्य भीर पूर्वोक्त स्वयवर विवाह है।

आर्यंसमाज के पुराने साहित्य सेवी पं० बदीदत्त शर्मा जोशी

डा० भवानीलाल भारतीय

पत्रकार धीर लेखक प० बदीदत्त जोशी का जन्म १८६६-६७ ई० (१६२४ वि॰) में काबीपुर जिला नैनीसाल मे हुआ। इनके पिता प० पुरुषोत्तम जोशी व्याकरण साहित्य एव ज्थोतिष 🖣 प्रकाण्ड विद्वान् थे । संस्कृत की प्रारम्भिक शिक्षा बढ़ी रत जी को धपने पिता से ही मिली। घर पर ही उनका कारसी शिक्षण भी ह्या। १८८१ मे वे मुरादाबाद ग्राये भौर वहाँ की संस्कृत पाठशाला मे प्रविष्ट होकर उन्होने व्याकरण एव साहित्य का झाने ब्रध्ययन किया । इस पाठशाला मे प्रवेश के समय उनकी बायु मात्र १४ वषकी बी। यहा उन्हेप० भव।नीदत्त जोशी से पढन का सुयोग प्राप्त हुवा चो द्मपन युग के बाच्छ वैयाकरण ये। उनके सहाध्य यियो मे प्रसिद्ध पत्रकार प० पद्मसिंह शर्मा तथा सुप्रसिद्ध सनातनधर्मी विद्वान् प॰ ज्वालाप्रसाद मिश्र भी थे। स्व० साहृ ऱ्यामसुन्दर की प्रेरला से जोशी जी भार्यसमाज मे प्रविष्ट हो नए। जब प० रहदत्त शर्मा श्रायसमाच सुरादाबाद के उपदेशक पद की त्याग कर कलकत्ते प्रसिद्ध हिन्दी साप्ताहिक भारतिमत्र के सम्पादक वन कर चले नए, तो उपदेशक कापदप • बद्रीदत्त जोशी को मिला। भार्यसमाज मुरादाबाद कं पाक्तिक मुख पत्र प्रायंविनय का सम्पादन भी कुछ काल तक उन्होने किया था। जब धार्यं प्रति-निचिसमा परिजमोत्तर प्रदेश (वर्तमान उत्तर प्रदेश) की स्थापना हुई भीर मुन्शी नारायस प्रसाद (महात्मा नारायण स्वामी) को इस सभा का मन्त्री बनाया गमा, तो पहिन बदीदत्त सभा के कार्य मे भी मुरादाबाद रहत हुए सहयोग देने सर्व। उन दिनो सभा का कार्यासय मुरादाबाद मे ही था। यह स्मरणीय है कि मुन्नी नारायण प्रसाद के हृदय में धार्यसमाज के प्रति धास्या के बीज का वपन करने वात स्था उनका उपनयन सस्कार कराने वाल भी जोशी जी ही वे।

१८६० से १८६६ तक प० वदीदल जोशी ने बार्य प्रतिनिधि सभा के उपदेशक पद पर कार्य किया। इस धवधि मे उन्होंने भनेक शास्त्राय किए तथा भनेक स्थानी पर भायंसमार्जे स्यापित की । मुरादाबाद मे सनातनी पांडत गोकुलचन्द से मूर्ति-पूजा पर उनका प्रसिद्ध शस्त्रार्थ हवा या। १८६६ मे बापने प्रतिनिधि सभा मे त्याब-पत्र दे दिया भीर मेरठ कालेज सोसायटी में चले गए तथा लवसव पांच वर्ष तक ऐंग्सो वैदिकस्कूल डी० ए० वी० काल-

पुर का (पुराना कप) में धर्मशास्त्र के ग्रच्यापक रहे। डी०ए०वी० कालेज देहरादून के सस्वापक मुन्शी ज्योतिस्वरूप बाप क्रपा भाव रखते वे। १६०१ मे जोशी जी मेरठ से प्रजमेर गाये धौर वैदिक बत्रालय में ग्रन्थ संगोधन का काय करन लगे। तीन वर्धातक बाबूराम विसास भारदा के मार्गदर्शन ने कार्य करने के उपरान्त ये पून मेरठ आग वए।

१६०४ मे प्रसिद्ध टिहरी शास्त्रार्थ िहरी भहाराचा श्रीमान् कीर्तिशाह बहा-दुर के निमत्रशापर हुमा। टिह्ररी नरेख ने धार्यसमाज के नेता मुन्शो ज्योति-स्वरूप को प्रार्थ विद्वन्मण्डल के साथ शास्त्राथ हेतु धामतित किया। तब प० बड़ीदत्त जोशी महामहोपाध्याय सार्य मुनि पष्टित तुलसीराम स्वामी मार्यसमाब के प्रवक्ता के रूप में श्रम्मिलित हुए। १३ दिन तक यह शास्त्रायं महाराज के सभा-पतित्व में सम्पन्न हुमा सनातन वर्ग 🕏 प्रवक्ता रायबहादुर पडित दुर्गादल पत तवा माहौर सनातन धर्मसभा के पहित कालुराम बास्त्री वे । इस घटना के पश्चात् बोशी जी कामपुर चले बाबे धौर डी॰ ए॰ वी॰ कालेज बोसायटी की धोर से मर्गप्रचार करने सगे। प्रचार हेत् सब उन्हें महाराष्ट्र बाध तवा बिहार बाबि प्रान्तों के सुदूर स्थानों ने भी बाना पढता था। कानपुर की डी०ए० बी० कालेख सोसायटी के तत्त्वावदान से प्रकाशित होने वाले ग्रामं समाचार उर्दू मासिक का सम्पादन भी धापने सगभग ८ वर्ष तक

१६१३ में ओशी की कानपुर से पुन मुरावाबाद चले बाए भीर भागसमाज के प्रभार तथा ग्रन्थ लेखन के कार्यमें जुटै रहे। १६१६ में सलीगढ के पी० सी० द्वादशक्षेणी प्रेस मे रह कर महामारत के सभीवन का कार्य किया । १६१७ में इलाहाबाद साथे और हिन्दी प्रेष्ठ मे कार्य करने संगे। कामातर मे मुद्रीगज स्थित कन्या पाठशासा में बाध्यापक बन गए। यहा ठाकुर बबनाब सिंह की प्रेरला से धापने विश्वता विकाह के समर्थन से एक पुस्तक विसी जिस पर मापको एक सङ्ख रुपये पारितोषिक स्वरूप ठाकुर साहब ने प्रदान किए और स्वब्धव से पुस्तक की तीन हजार प्रतिया खपाई । ११२० मे जोशी की मुरादाबाद वले झाने । प० श्वकरदल शर्मा की शर्मा मैशीन प्रेस से प्रका-शित होने वाले धंकर का सम्यादम करने नवे । १६२६ में मुरावाबाव की बक्षवेवार्थ (१६६४ के बन्ध क्य) पुनः लाड़ी वेश र्र्य

त्र्यार्यसन्देश विशेषांक

२४ मार्च बार्यसमाज स्वापना दिवस पर ग्रार्यसन्वेश का हम स्मरस्रीय सम्रहस्रीय विशेवांक प्रकाशित कर रहे है। विद्वान् लेखक प्रपने लेख निम्माकित विषयों पर मेवने की कृपा करें।

- १ स्वामी दयानन्द ने बाध्यात्मिक वमत् को महान् देन दी है।
- २ महर्षि वयानस्य प्राधुनिक तकनीकी के पोषक एव वैज्ञानिक वे ।
- १ भारतीय समाज के जागरण में प्रार्थसमात्र का बोनदान !
- ४ आर्यसमान क्या काहता है?
- हिन्दी भाषा के उत्थान में भार्यसमाध की मूमिका ।
- ६ वैदिक दार्शनिकत्व ।
- ७ ऋषियो और बोगियो की वेजस्वी परम्परा से दबानन्छ।

लेक भेजने का पता-

सम्पादक—धार्यं सन्देश साप्ताहिक १६, हनुमान् रोड, नई विस्सी-११०००१

कैसे होली आज मनाएं ?

—राषेक्याम धार्य विद्याबाचस्यति मुसाफिर बाना, सुबतानपुर (उ०प्र०)

गूज रहा है जहाँ भ्रमय हो मानवता का क्रन्दन, होता जहाँ निरन्तर नियमित दानवता का, पशु प्रवृत्ति का कलुषित-कृटिल-कुमार्ग-स्वार्थ का स्वागत व ग्रमिनन्दन. होता नही मनुजता का श्चिता का, समरमता का, सौम्यता का स्पन्दन, वसम जलता हो, जलती हो पञ्चनदो की घरती, ऋषियों का यह देश जल रहा भारत माँकी पूण्य धस्मिता जलती हो निशि-वासर, होता हो मुखमरी, गरीबी, महगाई का ताडव नर्तन भ्रष्टाचारों का फैला हो जाल ग्रमन्द-विवर्तन, **जहाँ सरे** वाजार नारी की बस्मत लुटती हो नव वचुएँ भी जहाँ विह्न की हबि चढती हों वहाँ भाज हम कैसे-होलीकात्यौहार मनाए? देख जल रहा, जलती है मानवता, फिर---**क्या** होली घाज जलाए ?

सस्कृत बाठवाका में अध्यापक बने । १२ वर्ष परकात् १६२७ मे प्रेम विश्वासय वाडीचेव में बध्यापन कार्य स्वीकार किया । पश्चात् पुरकुतः महाविद्यासय ज्यासापुर मे तीन वर्ष तक रह कर बम्बा-पन कार्य करते रहे। बीच में वेड वर्ष तक

कर ज्यालापुर या नवे । स्वस्य समय पश्चात् मुराबाबाव चले वये भीर वहीं बन्य नेखन कार्य में संसभ्त रहे। १९४१ इँ० में बह वर्षे की बायु में बायका नियम

विश्व में सार्वभीम चार महादु स हैं। इनकी श्रत्यन्त निवृत्ति का नाम ही पुरु-बार्च है। इनकी निवृत्ति के लिए प्रत्येक पुरुष को एक न एक दुल के निवारण का बात सेना होताचा। एक कहताचारी स्वविद्या दुल का नाश करूना, दूसरा कहता में धन्याय-युव्य का नाश करूना, तीसरा गहता या में अभाव-दू व का नाश करूग भीर चौथा कहता था भें शासस्य कुल का नाश करूगा। प्रत्येक बार्य को एक न एक बत लेना ही होताथा और बद्धा भी बहुजो समाज, राष्ट्र झौर विश्व का बाधार हो। उसे धनम्य तत होना होता वा । निष्कमण्य वतहीन व्यक्ति को बस्यू माना जाता था ! इसीसिए द्यार्थे राष्ट्र प्रयोध्या में कोई भी (नासत) तत-हीन मनुष्य नहीं था। इस दतरूप अनि को प्राचान करनेवाला ही पार्व कह गता था। भूद्र वहा बालस्य निवारखार्थं कर्म-मय जीवन व्यतीत करना पसन्द करता वा बहाउसका वह कर्म ग्रन्य विश्वियो वा अनुकरण करनाथा। फिर सूदीका बत क्या वा - 'शुद्रा स्वत्रमनिरतास्त्रीत्वर्णा-मुक्तारिस वे इन तीन वतवारियों में से कसी बनवारी के समीप रहकर असकी सैवा बत लेते थे। किसी समाजसेवा-ब्रत-हीन की नौकरी हम किसी प्रवस्था मे नहीं करेंगे यह उनका बलया। इस प्रकार उस नवरी में कोई वतहीन नहीं बा। इस-लिए सब सुसयत थे। जिसके जीवन का एक निश्चित बन व पित्रत्र ध्येय होता है, उसे दूराचारी दनने की फूबंत ही नही रहनी। यही सर्वाच्या के दिव्य जीवन का

तस्या मञ्च

तुम किधर जा रहे हो ?

लेखक प० बुद्धदेव विद्यालकार

रहस्य था।

वर्तमाम युगमे इस उस घोर जाने का यत्न कर रहा है। वहा १ नर नारी तम्बाकू पीना छोड रहे हैं, २ शराब पीना खोड रहे हैं ३ वट-बुढ़ों का तथा अपने वेश का भीर भपने देश के वीर-पूर्वको का पूर्व बढा से सत्कार करते हैं, ४ ग्रह-स्वाध्यम को सुझी बनाने के लिए कुटुम्ब का बादर करते हैं। जो माता जितने श्रविक बच्चो की ना होती है उसको उतना अधिक सादर दिवा जाता है भीर राज्य से हर बच्चे के लिए उत्तरोत्तर मिषक सहायता मिलती है। १ व्यक्ति-चारी की लुब निन्दा की काती है। ६ तलाक की प्रवा दिन-प्रतिदिन कडे नियमों ने जकड़ी जा रही है, जिस से ग्रहस्थों के लिए एक दूसरे को खोडना हची केल का सामान नहीं रहा, ७ वहा लडके लडकियाँ इकट्ठे पढते वे परन्तु इस के बुरे परिणाम वेलकर उन्होंने बहा वर्य-रका तथा विपाहियों में वीरता उत्तन्त करने के लिए लडके-सडकियों का इकट्रा पढनाबन्द कर दिया। ८ वहाँ बच्चे खुट्टी के दिन के श्रतिश्क्त दिनों में सिनेमा

वियटर ब्रादि में नहीं का सकते धौर छटी के दिन भी किसी बच्यापक बचना किसी बडे के साथ जा सकते हैं, धकेले नहीं। ६ स्कूल में छुट्टी के पश्चात् भी कालको पर कहा नियन्त्रण रखा जाता है, वे व्यर्थ इचर-उघर चूम नहीं सकते। १० मास्को में दस बच्चे के बाद १६ वर्ष से कम ब्रायु के बच्चों को सडको पर घूमने की छूट नहीं। देखों । वे कितने देग से तुम्हारी सस्कृति की घोर भा रहे हैं भीर तुम सिग-रेट के पीने में अपना गौरव मानते हो। शराब तुम में बढ रही हैं, तुम्हारे वर्गप्रव तुम्हें मनाकरते हैं, पर तुम उल्टेचलते हो तुम्हारे देश के कम्युनिस्ट बढ़ो का ग्रनादर, देश से द्रोह, तथा राम कृष्ण, चाणक्य शिवाजी शकवर सरीचे पूर्वजो से पूरा करनासिवाते हैं। हमारे देश मे ग्रहस्याध्यम की खिल्ली उढाई जाने लगी है—तलाक पर जोर दिया जा रहा है— बज्बो की माका धनादर होने लगा है। यहा सज्के-लडकिया इकट्ठे नही पढ़ते थे, उन्हे प्रेरणाकरके इकट्टापढ़ाया जारहा है। हमारे देश के कम्युनिस्ट कालेखों मे

हुडेतास करवाते हैं जिससे सिनेमा टिकट

सस्ते दामो मे मिन्नें। तुम्हारे देश में कृष्यु-सुदामा रात-दिन गुरुकुल में गुरु थी के साथ रहते थे। धात्र स्ट्ल के समय के पद्मा प्रावारान्धीं करते हैं। यहाँ रात को स्था पुनने पर निय-त्रण लगाने का को स्था पुनने पर निय-त्रण लगाने का कोईन म भी नहीं लता।

रूस के लोगों न जिन वातों को बुरा समक्तर छोड दिया है, उन्हे तुम ग्रहण कर रें हो। ऐसे लागो को हमारे शास्त्र-कार वालाशी कहते हैं। बान्ताशी का मर्थ हैं - वमन (उलटी) किए हए को स्वानव'ला। मेरेप्यारै नौजवानो [†] तुम बन्तानी मन बनो। साची तुम किंधर जारहेही। यह रास्ता श्रयोध्या जाना तो दूर रहा मास्को भी नही जाता। तुम बयो॰यानी स्रोर क्यो नही जाते। जो **बुख मास्को मे है वह सब ग्रयो**ब्याम है परन्तु उससे भी मधिक कुछ है वह है सबम । जिसकी धोर मास्कोवाले जा रहे हैं। एक और मुक्त भी है वह है, परमात्भा काप्रेम । जब मास्को सयम की धोर चलाहै तो प्रभु-प्रेम भी वहा बाकर रहेगा परन्तुतुम तो सवासे सथम भीर प्रभु-प्रेम के वनी रहे हो। इसी के बल पर महाश्मा गांची ने बिना हथियारी के विदेशियों के हायों से अपना राज्य ने

सव तुम स्वतन्त्र हो। सव तो तुम्हारे पास हिपियार भी हैं। सबम धौर प्रभू प्रेम के साथ शहन-वस को मिलाकर धपने राष्ट्र की रक्षा करो। चलो धयोध्या नी धौर—सीचो तुम किवर आ रहे हो?

जाग ! ज्वाला जाग !!

लेखक . यशपाल सुधाशु

परमात्माने जब सुष्टिको रचा भीर धपनी सर्वोत्तम इति यनुष्य को बनागा, तो उसे युवक के रूप मे ही जयतीताल पर र इरित किया। विशास हृदय, मविष्य की बाबामी को निहास्ती प्रसन्न भासे, कुछ कर गुजरने को बातुर कसी मुद्रिया, सक्य की धोर बढते तीवनामी पन, ये ये बै युवा जिनके लिए ईश्वर ने बादेश दिया कि "अस्काम महते सीमयाय' ऋऐ पुत्र ! महान् सीभाग्य के लिए उत्क्रमण करो, तुम्हारा पग उठे अपर उठने के किए, बाने बढने के लिए। यब मेरा कार्य समाप्त हुआ यन तुम्हारा कार्य भारम्भ हुआ है। वयना भाग्योदय करने के लिए उल्क्रमण हरता होगा। पुत्र ने पिता के मावेश को शिरो-बार्य किया, उसने उत्क्रमण किया, परिक्रमण किया, विक्रमण किया। झावश्यकता पडी डो बाक्रमण भी किया। क्या नहीं जानते कि इतिहास को गढा है युवासकित ने । यूग-हुनों को हिलाया है बुवाशक्ति ने । गौतम, हपित, कवाद, वैमिनी की वरती पर

बाष्यारम धारा युवाको ने ही बहाई। चीवह वर्षों तक बन मे रहकर मातता-यियों के सिर कुचले हैं युवाघों ने। सयम की विषय जजीर को पहन, सेवा-साधना से श्रीरामको जिलाने वाले श्रीर हनुमान् युवा ही तो थे। कस के धन्यायपूर्ण शासन को पददलित करने वाल इच्छा युवा ही तो वे। रक्तरजिल रहा भूमि मे सक्षस्त भशोक को धहिंसा और बौद्ध धर्म की दीक्षा देने वाले उपमुख्त सूचा ही तो दे। अस्याचारी राजानन्द के वश का विनाश करने वाले चन्द्रगुप्त बुवा ही तो वे, बौड ग्रीर जैन नास्तिक-मतो का जन्मूलन करने वाले भाषायं शकर कुल ३२ वर्ष के युवा ही तो थे। वर्तमान युव के निर्माता वेदी के पुनरदारक महर्षि दयानन्द गुवा ही दो वे । विदेशों में बाजाद-हिन्द फीज को तैयार करने वाले नेताजी सुभाष बोस क्यायुवा नहीं के [?] धपाह शक्ति के प्रतीक हैं युवक। परन्तु क्षेत्र है कि बाज

का युवक पलायनवादी हो बया है। दिनो-दिन वह माग रहा है पलायन कर रहा है, प्रपनी सम्मता-सस्कृति सेवा-भक्ति देश-मर्गसभी से। गाँव के युवा सहरो की भ्रोरभीर शहरों के युवा लि।सिताकी द्योर उम्मुख हैं। द्यपने द्यापको, समाज को रिक्ते-नातो को भूलाने के लिए नशीले पदार्थों का ग्रथाधृत्र उपयोग कर रहे हैं। १६६१ से अमेरिका से उठे हिप्पी धादोसन ने विस्व भर के युवाशो को क्रककोर कर रख दिया है। इस बादो-अपन की देश है पॉन (पाप) सगीता। प्राचीन धमरिकन जार्ज सगीत की तो ताल-स्वर की एक विद्या थी भी, परन्तु इसमें न तालान स्वर वस है तो समर्था-वित हो हुल्ला, अब अब। उसकी देन है जीन्स, कैंबरे, डिस्को तथा नशों का बढता

मेरे पुत्रा साथी प्रथम को गुलाने की सावस्थारका नहीं, सपने को गुल्लाने की जरूरत है जानने की जरूरत है। जुस्ती हो में बिन्तोंने मीर मतत नकर फायों के फन्दे पर चुन-युगी तक माया बाने बाता गीछ गाया था। सपने जुन हो प्रपता बेहुर सरकाने नाले, तकसार्ग के ताले हैं हिन्तु चर्च की पताक, फहराने नाले मीर सैरानी पुत्री तो के कसारी मर में दण्ड बैठक लयाकर मृत्युको डरान वाले विस्मल तुम ही तो थे। राम-इत्याकी परती के सपूर जाग। उठ देल तही वरती वर्षेती हुना सं-तुनम रही है। रोक दो हुना के कदम जो चली है प्राज, सैक्टल की जुनो थे गाय, जिल्ली के माज राष्ट्र को बहकता हुआ, प्राण चाहिए, स्वाभिमान चाहिए शोर वलिदान चाहिए।

तुम्हारे बास पास नया हो रहा है, धन्याय, धरवाचार छोवण, बलारकार बबते विघटनकारी तत्व नृशम हत्याएँ और तुम देखते हुए भा नहीं देखते सुनते हुए भी नहीं सुनते।

> बारात हो, या वारदात श्रव लिबक्षिया नही खुलती । क्या लहु पानी हो गया है?

सुन पुरुष स्थानन्द ने कहा था, सन्याय, स्थायारा करने बान से प्रिक्त सहने बाता पापी होता है तो नथा पाप के भागी हम नहीं बन रहे ? मरे सुन तरे स्थायार के स्थायार के स्थायार हो । बात, बाव ज्वाता जाने । व्यक्तियर के ऋषि के स्था मन्त्र को या गुनगुना - उत्तिस्टक बात्र का प्राप्य स्थान विश्वीस्त । उठी ! बात्र का या गुनगुना - उत्तिस्टक बात्र का प्राप्य स्थान विश्वीस्त । उठी !

आर्य जगत् के समाचार

दिल्ली की आर्यसमाजो के नाम अत्यावश्यक-परिपन्न

म्रायसमाओं का वितीय वर्ष ३१ मार्च १८८४ को समाप्त हो प्हाहै। झाप ३० प्रप्रेल १८८५ तक निम्नलिखित विवर्ण तथा बनराशि सभा कार्यालय में मिल-वाने की करा करें।

- १ १ धप्रैल १६ मर्थ से ३१ माच १६ म् ५ तक का वार्षिक विवरण।
 - (म) यज सस्कार, शुद्धियाँ, मन्तर्जातीय विवाह, दिन के समय सावारण रीति एव विना दहज कराय गये विवाहो का तथा समारोहोँ का विवरण।
 - (धा) समात्र के घर्षान चल रही संस्थाधो, विद्यालयो, विकित्सालय, पुल्तका-लय सेवा समिति धादि का विवरण।
- २ १ अप्रैल १६८४ से ३१ माच १९८५ तक शाय व्यय विवरण।
- ३ सदस्यता गुरूक का दशाश वेद प्रचार न्यूननम १०१ वपये और आर्यसन्देश का वार्षिक गुरूक २०/- वपये।

द्याशा है कि आप समयानुसार कायवाही करके सक्रिय सहयोग प्रदान करेंगे।

निवेदक— डा॰ चर्मपास महामन्त्री दिस्सी धार्य प्रतिनिधि समा

आर्य केन्द्रीय मभा दिल्ली की मासिक बैठक

प्राय केन्द्रीय सन्ता की सागानी जासिक बैठक साथसमान ननिवर नास्क टाउन दिल्ली-६ म १० नार्च १९६६ को सगराह्व ४-०० वर्षे सार्वसमाव स्वापना दिवस (२२-१-६४) के सारोजन के सम्बन्ध में विचार करने हेतु सारोजित की वर्षी है।

स्रापसे विनम्न सनुरोज है कि इस नैठक म पद्मार कर अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करें।

महामन्त्री—चुर्वदेव

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

मार्यसमाओ विराना लाइन्स का वार्षिकोत्सव १८ फरवरी से २४ फरवरी सक्ष धूमबान से सम्पन्त हुमा। इस म्रवसर पर श्री प० रामकिशोर वैच की वेद कवा हुई।

तथा श्री प० हरिदेव, आश्राय गुरुकुल गौतम नगर द्वारा सामवेद पारायसः यज्ञ हुआ।

मन्त्री-वयकुच्छ झार्य

अनाथ महिला का विवाह

३ २-८५ को मार्यसमाज समस्तीपुर के सरक्षण में रह रही एक धनाव कन्या सबना कन्यती का विवाह सरकार की लाल बाहू सिंह साम सबी पुर विवाह सन्तरती पुर के साम व इंडी सुमनाम से सम्पन्न हुआ। समस्तीपुर को बनता पर सार्यस्थाव के इस रचनारमक कार्य का बहुत प्रमाव रहा है।

मन्त्री--नवल किसोर

वैवाहिक विज्ञापन

२८ वर्षीय, गुरुकुत स्नातक, एम० ए० हिन्दी, तस्कृत, आर्थ प्रचारक तथा निजी कारोबार में प्रच्छी प्राय (बाट बातीय) वर के लिए एक दुयोग्या एवं सुम्बर कन्या चाहिए। बहेज एन बाति बन्धन नहीं।

पत व्यवहार का पता--

भोगराज झास्त्री वार्यवसाय माडल टावन सोनीपत (इरिवाचा) १३१००१

भाषण प्रतियोगिता का पुरस्कार

सार्य युक्त परिषय (रिवि० दिल्सी के तरपावचान में ऋषि वोच उत्सव के घुन्न' सक्तर पर 'राष्ट्रोरवान से सहर्षि वयानद का योजदान'' विषय पर जायरा प्रतिवोचिता का स्नासील करेखा किरोबसाह नई दिल्सी है महासब वर्षपास जी (प्रवान सार्वे केन्द्रीय काम, दिल्सी) की बस्पसता से ह्यांत्लाक से सम्मन्त हुया। इस प्रतिवोचिता में २१ सार्व तस्मन सार्वे के सान-साजायो ने भाग विषय निसमे सर्वप्रवस पारितोचिक ने 'सरपारिय जन 'विवयोगहार' सार्यसमान जोशी रोड के सान राजू विज्ञानिक ने प्राप्त किया।

सनी बनता बन्नी को उत्साहबर्यनामं पुरस्कार स्वरूप तीन सी ६० का वैदिक साहित्य परिषद् द्वारा एव एक हवार रूपये की नगद राश्चि समाने उपस्थित सार्यकनता द्वारा विकरण की गई।

---कमल किशोर ग्रावं

त्रार्यसमाज की कृपा

आर्यक्यान वीताराम बांजार के मनती भी बाबूराम गुला के गांछ २३ कर-वरीं = १ को गोंस बाक्काना मह दिख्ली में बैठा था। वे बहा प्रक्रिटेण्ट गोरस्टमस्टर है? ख्यानक उनके कमरे कें उन के गोस्टमास्टर जी देवा विद्वार्ग वितका स्वा-नामरुख्य क्वी दिन बन्दि में हुमा था। उनके शांच नमें गोस्टमास्टर जी थे।

सुक्ते अस्थला प्रसम्मता हुई जब दोनो पोस्टमास्टरो ने स्नेह-पिट व गुप्त की को देखा और जी सेवा जिंह ने मुस्कारते हुए उन्हें एक प्रश्वसापन दिया किय से का पो० गास्टर के तौर पर उन के निष्ठापूर्वक कार्य की वराहना बहुत जुन्दर सब्दों में की कई जी।

मैंने उस पत्र को पढ़ा और पुन्त भी को बचाई दी। उनका केवल यही कड़ बाकि 'यह सब आर्यसमान की हगाहें, उस साकी ही यह एक बड़ी शिक्षाहे कि अपने कर्तक्य का पालन कम समझ कर भी-वान से करो।

बोमप्रकाश, प्रिसिपस

श्रार्यसमाज श्रशोक विद्वार फेज-२ का वार्षिक निर्वाचन

धार्यवसाम बायोक विहार (तुरकुत) फेब-२ का वार्षिक निर्वाचन वित्तीक २४ फरवरी =५ को बायार्थ की बीनानाच जी विद्यान्तालंकार की श्रव्यक्षता में वर्ष सम्मति से निम्मानिकत प्रकार से वस्त्रन्त हुधा---

प्रवाम--श्री पी० एन० तरीन सन्त्री--श्री अशोक वदन

कोवाध्यक्ष-धी वसदेव राज समदेवा

अन्तरग सदस्यों के जुनने का अधिकर प्रचान जी को सन्ना ने प्रदान किया । मन्त्री, आर्यसमाज असोक विद्वार, फेक्ट-व

वार्षिक यज्ञ, उत्सव

कान्युदयान रपानन्य वैदिक सम्यास सामान, वयानन्य नगर, नामियासाय २-वां वार्षिक वज्ञ बहोत्तव विनाक ७ समेंस रिवार से १४ समीब १८०५ रिवार तक सामरोहपूर्वक सामीजित किया गया है जिसमे चन्त्रकोटि के मिहान्, सन्यासी कं अवनोपवेषक वचार रहे हैं।

--स्वामी प्रेमानन्य सरस्वती

वार्षिक चुनाव

सार्थं द्वक परिषद् (रिवि०) दिल्ली का वार्षिक चुनाव १७ सार्थ, १६०६ रिवेशर को झार्यं समाज बीदान हाल, चादनी चौक, दिल्ली-६ में सच्चाझ २ वर्षे≱ें सम्पन्न होगा।

-कमल किसीर पार्व

बार्यसमाज गंगागंज प्रयाग का वार्षिकोत्सव

इस आर्थसमान का वार्षिकोत्सन १२ नार्ण से १७ मार्थ तक होने या पहा है : इस अवसर पद अनेक विद्वान, यायक पवार रहे हैं ।

पन्ती-विश्वपृथय विद्



आह्वान

—स्व॰ कृवर सुजलाल धार्य मुसाफिर

गफनत में क्यों पढेही भारत के नी निहाली। जाको हुआ। सर्वेरा हिन्दुस्ती के क्षाली।।

दुनियाकी गैर कौमे देखो तो कहा पहुँगी। फिर क्रपनी दुदशापर तुम इकालवाह डालो।।

्रवा मानिये कि नेशन पत्त भरमे उठ उड़ो हो। तुम इसको उठाने का बीडा सनर उठा लो।।

फूट धीर अविका ने अधेर मचाया है। इन दूरमनो को अपने घर से असी निकासो॥

पासक्य की चट्टानें बढने ही नहीं वेंगी। क्यादेखते हो इनको मिल जुल के पीख डालो।।

नीच भौर सञ्चल कह कर ठुकरा रहे हो जिनको। भाई हैं ये तुम्हारे इनको गले अनग जो।।

ध्रव्यक्त तो तुम किसी को गिरनेन वो "मुसाफिर'। गकती से सबर कोई गिर जाये तो उठा को॥

बोधोत्सव एवं यद्ग

सार्वतमान परिचम विहार द्वारा २४ फरवरी १८-१ को कृषि बोधोत्सव बहुमेंद (शक्क) एव नायाची महायक के साथ नडी पुनवाम से मनामा नया। यक के सह्या माता प्रास्ता रानी जी बी व यक के संयोजक जी भरत सिंह मुख्य थे। उन्होंने ४ जुक्क स्प्यतियों को यजनान नगाया। इस अवसर पर समाज के प्रधान जी हीरासाल बाबना ने कृषि बोध सम्बन्धी विषय पर प्रकाश डाला। तरावचन्त् ऋषि सचर का भी सारोजन किया नया था।

> हरिचन्द अधरम A I/११० परिचम विहार, नई विल्ली-६३

वैदिक कैसेट

प्रसिद्ध फिल्मी गायक महेन्द्र कपूर द्वारा महर्षि दयानन्द की अमर कहानी

सन्ध्या-यञ्च, शान्तिप्रकरण, स्वस्तिवाचन आवि प्रसिद्ध भवनोपदेशको-

सत्यपाल पश्चिक ओमप्रकाश वर्मा पन्नालाल पीयूष, सोहनलाल पश्चिक, शिवराजवती जी क सर्वोत्तम भजना क क्सरम तथा

प बुद्धदेव विद्यालकार के भजनो का संग्रह । आय समाज के अन्य भी बात से समार के सचीपत्र के लिए लिख

कुन्ददोक्षम इतेवदानिक्स (इण्डिया) फ्रांस 14 मकिट 11 फस 11 अशान विहार देहर्सी 52 फोन 7118326 744170 टैलेक्स ३1-4623 AKC IN

वैदिक कैसेट सभा कार्यालय १५ हनुमान् रोड पर भा उरलब्ध है।



निर्वाचन सम्पन्न

धार्य केन्द्रीय सवा गुड़वाँका वा सावारण अधिकेशन १७ २-८५ को सार्य-समान भीमनार, गुड़वाँका में हुया। इस मे वर्ग १८-५ के सिए निम्नितिखित अधि-कारियों का चुनाव बी भीमर्वेन वीवान की घम्पसता में सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ।

क्षणा — ची मुस्तीरास सबदेवा इत्त्रज्ञान — ची सस्वपात झार्य महामन्त्री — ची कन्हैवालाल झार्य मन्त्री — ची बोमज्ञकाल हानवा केशाम्ब्रल्ल — ची विचानुक्षण शास्त्री 'मब्बारी — सी दोलदस्य बेल केशा विरोक्षक — ची हरियस बास्त्री ।

इस स्वतर पर आयेसमाज नीमनवर, मुख्यांचा की घोर हे सहभोज का बायो-श्रम हुआ।

भन्द विशीत -कन्द्रैवाकाच मार्वे



यार्य जगत की सान

२०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन

नेत्र चिकित्सालय

(अनुमानित लागत दो करोड रुपये)

के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि आयकर श्रिषिनियम जी० ६० के अनर्गत कर मुक्त हांगी।

सारा बान विक/मनोबार्डर/विक द्राषट द्वारा मत्री, माता चन्ननदवी ग्रायं धर्माय नेत्र चिकित्सालय, बी-१ जनकपुरी नर्ड-दि ली-४= के पते पर भेजा जाए । दानदाताओं क नाम चिकित्सालय की शिला पर किंत किए जाएगे '

निवे "क

व महारायधमपः।ल श्रोत्तप्रकाशकार्य बल्लो प्रयान सन्ती ७ ग्रेतिनिष स्राय केन्द्रीय महाययधुन्नीलाल । सम्रा वेरिट टट-

> ही प्रा० लिमिटेड १/४४ कीरितनगर १४ नेज, बई दिल्ली-११००१

आर्य सन्देश साप्ताहिक पत्रिका के ग्राहक बने, ग्रौर बनाएँ

स्योकि यह पत्रिका-

- (१) वैदिक मान्यनाओं को उजागर करती है।
- (२) भायों (हिन्दुभो) की महान् परम्पराभो की बाद दिलाती है।
- (३) महर्षि दयानन्द की वैचारिक क्रांति से घारंभ वेतना जागुव करती है
- (४) भारतीय सस्कृति के भूले विसरे प्रसगी, महापुरुषो तथा धादर्ख सस्कारो को प्रकाश में लाती है।
- (ध) ऋषि, मुनि, तपस्वी भ्राप्तविद्वानो की वाशी का बोध कराती है।
- (ई) परमेश्वर की पवित्र वाणी वेद का जीव-नेपयोगी मधुर सण्वेसः साती है।
- (७) नये तेसकों कवियो, चिन्तको, प्रतिभाशासी विद्वानो साहित्य तैवियो को प्रोत्साहन वेती है।
- (a) वार्मिक, सामाजिक धौर माध्यात्मिक ज्योति से मन-मन्दिर को प्रकाशित करती है।
- (६) बेद उपवेद, दर्शन उपनिषद, स्मृति, कल्प सूत्र, घ्रारण्यक बाह्यएपतन्व 'ा, रामायरण, नीति, ऐतिहासिक, अमृत्य धार्ष ग्रन्थो पषिकाख लीवों ने पढाती क्या देवा को न क बगत् को जिन बन्यो पर सदा गर्वे ोती हुव घरताह बटोर कर प्रापकी

पपना वार्षिक चन्दा २० वर ० ग महर्षि दयानन्द निर्वाण पेश्रम्य मनोहारी स्मान

भार्य सन्देश

5 . H . F27

ग के ं इड़ी फी।

हरिद्वार की और्षाधया

सेवन करें

शासा कार्यालय—६३, गली राजा केवारनाय, कोन २६६५३८ वावडो बाजार, दिल्ली-६

कण्वन्ती विश्वमार्थम

दिल्ली आर्य प्रतिनिध सभा का साप्ताहिक पत्र

मुख्य एक प्रति ५० वैसे

वर्ष ६ सका १७

रविवार, १७ मार्च, १६८३

मार्थं सक्तसर १६६० ५ ५३० ५४

फाल्गून २०४१

वद्यानन्त्रास्त्र --- १६०

पंजाब का उपेक्षित हिन्दू और अकाली नेताओं के

मत लोंगोबाल के साथ सात धान्य अकाली नैताओं की रिडाई पजाब समस्या हल करने मे सह मौगी कदम है। लगभग सभी राज-नैतिक वर्गी द्वारा स्वागत भी किया गया है, परन्तु प्रकाली नेताको के तैवर प्रभी बदले नहीं हैं। शिरो-मिंग प्रबन्धक कमेटी के कार्यवाहक धाष्यक्ष श्री प्रेमसिह लालपरा ने झपनी मार्गे पून दोहराई है। जब तक वे सात मार्गे पूरी नहीं होती, उनका अल्टीमेटम बरकरार है। उन की मागे हैं--सभी श्रकाली नेता रिहा किये जाये। धालिल भारतीय सिल

छात्र फेंडरेशन पर से प्रतिबन्ध हटे। उन सिख सैनिकों को फिर से बहाल किया जाये, जो स्वर्श मन्दिर मे सैन्य कार्रवाई के दौरान अपनी बैरको से जोश में बाहर निकल प्राए वे। प्रकाली दल की तदर्व समिति के सयोजक श्री सुरजन सिंह ठेकेदार का कहना है-पजाब और भन्य स्थानो पर गिरपनार सकाली नेतासो भौर सिल युवको को रिहा किया आए, विशेष न्यायालयो की समाप्ति हो, पजाब में काला कानून समाप्त हो ।

दूसरी मोर १३ गार्च से २७ मार्च

तक दिल्ली में घाल इण्डिया सिख कान्फस ने "विरोध दिवस" मनाने का निश्चय किया है। वे दिल्ली दगी में गरे लोगों की त्यायिक जान के लिए २७ मार्च को वोट क्लब पर घरना भी दगे। विस्मय की बात तो यह है इन श्रकाली नेताओं का बयान भी भटल नहीं है। लगता यह है कि इनके पीछे उग्रवाद की शक्ति अधिक प्रभावी है। जब तक उग्रवाद की सक्तीसे नहीं दबाया जाता और शास्तिप्रिय नेताधी को विश्वास में नही लिया जाता समस्याका समा-बान सम्भव नही।

पजाब में गैर सिख या हिन्द ५० प्रतिशत से कम नही हैं। सिखी में आध से प्रधिक नामधारी, निर-कारी, उदासी, राघास्त्रामी बदहै सिख, राम गढिये भीर कम्युनिस्ट सिख अपने को अलग कीम नही मानते। इन सबको मिला-जलाकर जो बहुसस्या है। ये सब हिन्दू समाज के भग हैं भीर सरकार को चाहिए कि बकालियों से बातचीत करते समय पजाब के हिन्दू प्रतिनिधियो को शामिल किया जाये तभी समस्या का सही हल सामने बा सकता है।

देश में प्रजातंत्र और उसका हृदय ठीक कार्य कर रहा

विधानसभा के निर्वाचन मे श्रविकास राज्यों में काग्रेस (बाई) की प्रवल लोकमत मिला, जो इस बात को प्रकट करता है कि देश की सामान्य जनता ने राष्ट्रीय एकता धीर धलण्डता को ही इस चुनाव का भी मुख्य मुद्दा माना है। परन्तु साथ ही जिन राज्यों में जनता ने यह समका कि कांब्रेस (बाई) का स्थिर विकल्प है वहापुन विरोधी दली को व्यवसर प्रदान किया। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि देश में प्रजातन्त्र भीर उसका हृदय ठीक स्थान पर हैं। इन चुनावों ने पुन यह दर्शामा कि विश्व में सबसे परिपक्त लोकतन्त्र भारत में ही है।

साब हो यह भी सिद्ध कर दिया कि बुताको मे जनमानस का स्थान ही सर्वोपरि होता है। चुनावो मे प्रयुक्त प्रचार साधन धादि की बात गौरा है। जनता नये सिरे से देश का पुन-निर्माश चाहती है, यह भी असदिग्ध है। पिछले लोकसभा निर्वाचन के उपरात युवा अवानमन्त्री माननीय राजीव गांधी ने प्रशासनिक एव न्याय व्यवस्था का सुधार, काले धन पर ग्राचारित समानान्तर ग्रर्थम-बस्था की समाप्ति, पडोसी देशों से स्पष्टवादिता एव विरोध पक्ष की ग्रावर देने सम्बन्धी जो घोषणाएँ की उनका बहुत ज्यापक प्रभाव हुछा। प्रगति के भनेक कार्यक्रम समयबद

रूप से चलेंगे. ऐसा विश्वास प्रकट किया गया । ३५ वर्षों मे दलबदल रोकने का प्रभावकर उपाय नहीं हो सका। वह एक मास के भन्दर ही दलबदल विरोधी कानून के रूप मे सामने था गया, जिससे लोकतन्त्र की नर्यादाकी रक्षाकी जासके। इस विषेयक के पारित होने से विरोधी दलों को ही अधिक लाभ होगा, जिनके विषायक सत्ता पक्ष की भोर सरलता से बाकवित हो वाते थे। पत्रकारों की स्वतन्त्रता से भी लोक-श्रमिञ्चिति को बढावा मिलेगा। पर साम ही पत्रकारिता के सही विकास के लिए पीत पत्रकारिता से भी बचना चाहिए।

केन्द्र सरकार की उपरोक्त प्रगतिशील एव जनहितकारी नीतियो ने जनमानस को प्रभावित किया धौर उसका परिलाम विधानसभा चुनाव परिलामों के रूप में सामने है। नि सन्देह बहुमत ने पुन श्री राजांव गाधी के नेतृत्व में विश्वास व्यक्त किया है। इस सदर्भ मे एक विचार-शीय बात जरूर है। वह यह कि चुनाव इतने महगे हो गए हैं कि ६६ प्रतिशत लोग चुनाव नहीं लड सकते। इस प्रश्न पर भवश्य विचार होना चाहिए श्रन्यया श्राम जनता की चुनाव-प्रक्रिया मे दिलचस्पी नही रहेगी, जो जनतन्त्र के लिए घातक होगा । --ৰা০ মানন্ব সকাল

दक्षिए। दिल्ली वेद प्रचार मण्डल द्वारा आर्यंसमाज स्थापना दिवस

२४ मार्च, १६०५ को मार्थसमाज मन्दिर मालबीय नगर मे प्रात ८ बजे से १ बजे तक बार्यसमाज स्थापना दिवस वह समारोहपूर्वक मनाया जा रहा 🛊 । भ्रतेक उच्चकोटिके विद्वान् एव नेता प्रधार रहे हैं। इस अवसर पर ऋषि लगर का भी भागोजन है।

---रामसरन दास बार्य, मत्री

स्थापना दिवस पर प्रसाद वितरण

बार्यसमाज क्षालीमार वागकी बोर से कृत्नी कोपडी कालोनी मे प्रात द वजे से ११ बजे तक वेद प्रचार एवं मिष्ठान्न बितरसा का प्रायोजन किया गया है।

—डा॰ रचुचीर 'चुमुक्षु', प्रवान

आर्यं केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्त्वावधान मे आर्यसमाज स्थापना दिवस का भव्य समारोह

२४ मार्च, रविवार को २ बजे से ध बजे तक विद्रल माई पटेल हाउस रफी मार्ग नई दिल्ली के प्रागरण में भूमधाम से मनाया जा रहा है। इस श्ववसर पर अनेक गण्य-मान्य प्रतिष्ठित विद्वान एव देश प्रसिद्ध नेता प्रधार रहे हैं।

ब्रध्यक्ष-की रामगोपाल जालवाले

वक्ता-श्री जैन मूनि सुशील कुमार, श्री सीताराम केसरी, श्री रामजन्त्र 'विकल', भी ए० शिवकुमार शास्त्री, डा० वाचस्पति उपाध्याय

विविक से विविक संख्या में पद्मार कर धर्मलाभ उठायें।

त्रधान-महाद्यय वर्मपाल

महामंत्री-सूर्वदेव

सत्संग वाटिका

सुख का आधार 'सेवा'

स्याम सुन्दर स्नातक, श्रार्यं महोपदेशक

यो श्राध्राय च त्मानाय पित्वोऽन्नवान् सन् रफिताय उपजम्मूषे ।

स्थिर मन कृरणुते सेवते पुरोतो चित् मर्डितार न विन्दते।



सर से सप्तमाने की प्रपत्नी घरूर्व वीची
हैं। "सा मान से कहां हैं— तेवा करते का घरणात करता 'चाहिए। यह मी एक प्रकार की सावना है पुण्य है। धन्य म इसम मुझ मिलवा है। यो एसा नहीं करते उनकी गति का इस बेद मान में वरण है। कहां हैं— महिलार न श्लिते उसे दुख नहीं मिलवा जो परीव की सेवा नहीं करता। उसे दुकरावा है उसकी सव नहीं करता। उसे दुकरावा है उसकी सव मार्ग हरता। उसे दुकरावा है जसकी सव मार्ग हरता। उसे दुकरावा है सकी करोर कर तेता है और सेवते पुण्ये तो चिल् पुण्ये हम की सेवा पुण्ये तो चिल् पुण्ये हम सेवा है सेवा पुण्ये तो चिल् पुण्ये हम सेवा हमें सेवा पुण्ये तो चिल्

हीं तुक्त में प्राये नहां है — मनुष्य को दूरवर्शी बनना शाहिए तथा करना बहुत करिन कार्य है ठीक है। परन्तु वेबा करने बान धनना ही नदसाए कर पहें होत है क्योंकि घो हि वत्तन्त र-पेव कका मनुष्य के तक दिन एक हमान यह सही रहते । एक के वक क समान यह औवन है — एक कु तमाने मोबन कराना साय जलते हैं। जब मनुष्य देखे कि दिन भ्रष्ये हैं वो रोटी भाराम से मिल रही हैं, यही उपयुक्त धनसर है तेना का। पर सेना उसकी करें निसका तहारा कोई मही, जो इस हैं दुखी है। वेद में देवे इस कर में कहा हैं

> को३स् पृरणेकात् इत् नावमानाव तब्यान् ब्रावीवासम् क्षतुप्रयेतः पन्नाम् । कोहि वसंन्ते रज्येव बका बल्बमन्य उपतिष्ठन्ति राव ॥

यह जन जैन है हाय का प्राक्त है कल नहीं। छैवा भी उसी की दोती है जिसने पहले की हो। आज हम दूसरी का स्वाम करते हैं कल हमारा भी दूसरे स्वाम करते हैं कल हमारा भी दूसरे स्वाम करते हैं

धपने धर्मित या सञ्चित वन या साधना धन्यास से प्राप्त बल क्रादि से दूसरों का भनानहीं करते ने समय धाने पर सुक्त से बचित रहते हैं। कहा है—

कोश्य न वा उ वेदा अवभित् वंध बहु, बताधितयुपमण्डान्ति मृत्यव । बतो र्रात पृत्यते नोपबस्मति, बतापृत्यत् महितार् न विग्यते।

किन्नी भी जगम-प्राप्त व्यक्ति को मृत्यु व्यवस्थनावी है। व्यत्तर जीवन-वापन की निविधता में है। एक बात व्यापन की निविधता में है। एक बात व्यापन के नोग है—बहुत से मन्त तीव —बार्गिक जन एगा मान केते हैं कि जो भी बार पर वार्ष थे। इससे पुपा-वता ना ध्याप कृति बातस्वक कहा है— इसाय कृतविबाय कृतिकतीत्वाव बीतते।

ममुस्पृति में मनुषी में लिखा है जो समये हीकर भी फार्य करने की स्वतित होने पर भी काम न कर के पान मागति है में समले कम में उन्हीं परो में पश्च नगते हैं। सस्कारिविच में और सस्वार्यक्रकात में महीं स्वामी स्वामन्द की शरस्वती में में स्वीक वेकर स्पष्ट निवा है। बहुँ सब्ब हैं—

बप्त्रम्बात् भृषा वस्तु न तेन बुववः समः।।

(बांक्के) ते हु प्रेत्यामियक्क्ष्मित यमुताय् बन्नवाधिनाय्।

सुल प्राप्ति के चार बाबार है-चप।सना के प्रतिरिक्त वर्म शान्ति, सतीव भौर सेवा। इस लेख में सेवापर विचार व्यक्त किये हैं। साक्षा है स्वाध्यामशील पाठक सार प्रहरा करेंगे। सन्त में समापन करते से पूर्व भी चकवर्ती राजगोपालाचार्य भी के जीवन की घटना भी लेखनीबद्ध करता है। बहुत पुरानी बात है एक व्यक्ति ने बाकर मदास में इन से ब्रमनी व्यक्ता सुनाई — मेरी जेब कट गई है, सैने बाहौर बाना है, ये पता है। मैं Advocate हू, बकासत करता हू । सन्होंने कहा कल बाध्येगा । इतने मे उन्होंने साहौर पोन कर के मित्रो द्वारा वाच कराई। सब कुछ भूठ निकला प्रगले दिन वब वे महानुसाव झाये तो युक्तिस देख कर न्तक्व रह गये। सेवा की जिए वरन्तु सचेन होकर । सेवाधमं परम-गष्टम योग्निनामप्यगम्य ।

पता बी० २०१ ब्रेटर कैसास, नई विस्त्री

हम प्रसन्न रहें

सुरेशचन्द्र वेदालकार

विश्वदानी सुमनस स्थाम पश्येम नु सूर्यमुच्चरन्तम् । तथा करत् वसुपनिवसूना देवा श्रोहानो प्रवसामभिष्ठा ॥

ऋ० ६।५२।५

हम (नि नदानी) सदा, सनकाल (सुमतक) ज तरित प्रकल्प मन (स्वाय) रहे (तु) या (उ-नदानम्) उदय होते हैं (प्रय) मुन का (पदेवा) देकत रहें। (नम्म) एनव्या को (नसुपति) ऐक्वय पीन (दवान् दवी का (पीहान) वहन करने ना धार (प्रवसामिपट) रक्षण करने ने ना धार प्रवसाम

इस ससार मंदुल और चिन्ता, ये मनुष्य का घर रहते हैं। इस रख और चिन्ताका महाद्रद्ध धनादिकाल से अन- वरत कर म चल रहा है। ज्यो ज्यो वेशा-किस उन्मीत हो रहा है य बिन्नाएं बढ़ती जा रही है। सवार म फैनी हुई क्याबियो रोगा और दुन्नी का कारण बिन्ना है। बिन्मा ही मुद्दण के सुखबय जीवन क किए सबस बढ़ी बया है। स इन के एक किये ने लिला है—

चिन्ता चितासमा व्युक्ता विन्द्रमात्रविशेषिता ।

विन्दुमात्रविशेषिता। सभीव दहते चिन्ता,

निर्जीव दहते बिता ॥

इसी माय को व्यक्त करते हुए दूसरे कवि ने इस बात को इस प्रकार कहा है— चिन्ताचिताहबोमध्ये

विन्ता एव गरीयसी। चिता दहति निर्जीव

बिन्ता दहति सजीवकम् ॥ चिन्ता भीर चिता की तुलना में जिल्ला समिक असकर है। जिला निर्जीव शरीर को जलाती है भीर चिन्ता सजीव शरीरको जलाती है। जिल्ला मनुष्य को एसे ला जाती है जैसे चुन अकड़ी को सदर म व्यात्रानाहै। चिन्धाद्यरीरका नाम कर जाती है। उसम हृदय की वीमारिया. रक्तवाप हो जाता है। ग्रन विन्ताको **धारना चाहिए । विला चरित्र और** स्वभाव पर प्रभाव डालती है। मुक्ते एक ब्रद्ध की कथा का स्मरल हो बाता है। वे पे ान न रहं छ। उन्हें पशन लते सेते उससे भ अधिक समय हो गया था जितने वर्ष उन्होने वास्तविक नौकरी की बी। अम लोग शक्सर उनके विवय में चर्चा करत रहते वे कि यमराब के दरबार मे उनके कायज गायक हो यए हैं। इस सम्बी

बाबु वे भी व सदाप्रसम्म धौर बुख न**जर** बाते थे। एक बार एसा हुआ कि जब वे अपनी पेंशन लेने ट्रेजरी में गए ती ट्रेजरी के पेंशन देने वाले बाबू ने कहा बाबू जी, धापका पेशन का कामज इसर उसर हो गया है, मिल नहीं रहा। प्रगत महीने बोनों महीनो की ल लीजिएमा। बाबू बी, मुस्कराते हुए वसे भाए। ऐसी घटना बो॰ तीन महीने लगातार हुई पर उन्हें तब भी कोई जिल्ला स हुई । एक बार उनका कागव मिल वया। बाबू ने उनसे क्षमा-याचनाकी भीर उन्हें पेंशन दन लगा। वे बडे जोर से हसे। सभी उनकी हसी की आवाज सुनकर उधर देखने लगे। एक ने ऐसे हसने का कारस पूछा । बाबू जी गोने मैं तो समऋता वाकि मेरा वहां का (यमलोक का) ही कागज गायब हो गया है पर मनीनों में पताचला कि यहाका भी गायब हो सकता है। उन्होंने धपनी प्रसन्नता का कारता भीर दीर्घायू-व्य का कारण जिल्ला न करना और प्रसम्न रहना बताया । उन्होंने यह मी

(क्षेत्र पृष्ठ ११ पर)

★ दयानच्ड

हुँ भने लोंगों के कठोर हृदयों को कोमल बनाना है, दूर भागतों को भाकर्षित करना है। यदि वे भ्रत्याचार भी करें तो भ्रपने उदात्त उद्देश्य को हिन्द्र में रखकर हुमें तो उनसे प्रेम ही करना चाहिए। धर्म के नाम से बदला लेने की भावना सर्वया भगद है।

बचनामृत 🛨

हमारे उपदेश माज विरेषक मौषि की भाति धवराहट म्रवस्य लाते है। परन्तु है वे जातीय शरीर के सशोधक और म्रारोग्यप्रद, वर्तमान मार्थ सन्तान चाहे जो हमें कहें। 🗆

सम्पादकीय

आर्थ सन्देश

पंजाब समस्या

उचित बातावरण की प्रतीक्षा

सरकार ने पजाब समस्या के लगाधान के लिए लॉगोवील एव तल बती के साथ ख़ बब पकाली नेता रिड्डा कर सद्मावनापूर्ण कदन कठाया है। यह फेसला औं राजीव गाधी के इल वर्षान के लाबार पर लिया कि तरकार पंथाब समस्या को जल्दी से जल्बी हम करने के निए सही मोहौल बनाएंगी।

्रवृह्णभी जी एँसै०वीं० चर्रहारा ने अंक काम्प्रेंस में स्वय्दे कियो कि व्यव्हार हूर तरह की धार्तकवायी मर्लिकियों ने सकती से निपटेंगी। आयुक्त बीद क्येक्स्या की स्थित की रियर रखने को बचोंच्य प्राविभकता होंगे और इम्रवियित, राष्ट्रियरोबी व समाजीवरोबी तत्त्वों के सिलाफ कडी कोर्टेबाई की बांएगी। उन्होंने यह भी कहा है धगर कम्भण हुआ तो वरकार संसद के बंबद अधिवेदोंने में ही एक विधिक पेश करेगी, जिसके राष्ट्रियरोबी गरिन विधियों को बडीवों देने गंते धाप्रवासी बारतीयों की कम्मति बन्त करने का प्रावकार होगी।

श्री राजीव गांधी पंजाब समस्या का जल्दी से जल्दी समाधान चाहते हैं। सरकार सही नाहील बनाने का प्रयत्न भी कर रही है परन्त श्रकासी विस प्रकार जानन्दपुर साहब त्रस्ताव को मुख्य मुहा बनाकर चल रहे हैं तथा बलगाववाद को बढावा दे रहे हैं, ऐसे शासावरण में समझीते के शासार नबर मही बार्ब । बकाली दल प्रवने मोर्च की बीर जी संसक्त करने के लिए सभी सिलादलों को एक जुद्द करने के प्रयत्न में लगे हैं। इस समय विचाद किया था रहा है लीगोवाल अकाली दल, तलवडी अकामी दल, स्त्री प्रकाली इस, मास्टरतारासिंह अकाली दल, यूथ विंग धकाला दल और माल इच्डिया सिल स्टूडेंक्ट्स फेंडरेशन को एक मञ्च पर लाया जाये। सभी क्रकाली दलों का नाम अल्म कर एक नाम शिरोमिए स्रकाली दल रखा काबे। यथ विग प्रकाली दल की जगह जाल इण्डिया स्ट्रडेक्ट्स फ्रेंडरेशन अकाली दल के हरावल दस्ते का काम करे। सभी सिख वार्मिक सगठनी बिरोमिए। गुरुद्वारा श्रवन्थक कमेटी के घेरे में लागे जाये। इन सगठनो ने भिरुरावाला सम्प्रदाय, शलक्त कीर्तनी जत्था, निर्मल सम्प्रदाय तथा निहग सगठन हैं। इस सारे काम को सिरे बढाने के लिए सिंह साहेबान को अधिकार दिये जाने की सम्भावनाएँ हैं। सिंह साहेबान जो हुक्मनामा जारी करने वह सभी को मान्य होना।

धानन्तपुर साहुव प्रस्ताव का प्रांच्य अत्वेदार टोहरा के कहने पर सरदार कपूर्तसिंह भाई 60 क्षिप्य (से सामुक्त) ने तंया? किया वा। वाद में धानवपुर प्रस्ताव को धन्तिम रूप देने के लिए धकाली नेतावों की कमेटी बनाई गई वी। उसने बहुमत अत्वेदार टोहरा की विचारधारा वाले तदस्यों का वा। इस प्रस्ताव का सबसे धविक राजनीतिक लाग अल्वेदार गुरवरण टोहरा को हुआ जिसके कारण वह माज तक पूर्ववत् शिरोमिण गुरुवारा प्रवायक कमेटी के प्रधान चसे धा रहे हैं। इस प्रस्ताव के प्राव्य को बताते ब्रम्य किस हो- ' सिंघा विच पचक माजाद हस्ती दा एहसास कायम रखना है मन्ये भजेहा देश, काल घडना जिस विच सिख पथ दे कौमी जजवे तथा कौमियत दा प्रगटावा पूरन तौर ते कुदरती तरीके नाल प्रफुल्लित हो सके।''

इस प्रदेनाव के साथ प्रतग-धलग घटको द्वारा प्रनेक प्रसम्भव माग उठाई जाती रही। पिछले मालो में पजाब के हरे मरे प्रदेा में जिस प्रकार जून को बारे बहाई जाती रही यह सब धलगाववाद की उन्मादी विचार-भारा के कारण ही बहाई गई।

श्व देशना यह है कि जिस एकता भीर अलण्डता का नारा देकर श्री राजीव गांची सत्तास्त्र हुए हैं, जिस एकता भीर भीर स्वच्छता का जाहों जनता जनादंन को श्रह्मास विलाया है, जस स्वता भीर कटोरता का जाहों ने भी अपनाए एस सकरों या नहीं। हमारे नीति प्रयोग में साम, दाम, दण्ड भीर भेद—चारो प्रकार से से जिस से काम निकल सके अपनाने के लिए कहा गया है। सबसे उचित तो सीची उगली से ची निकल जाने यही अच्छा है भाग्या है। सबसे उचित तो सीची उगली से ची निकल जाने यही अच्छा है सम्बादंदी तो करनी पहती ही है। लोक कहावतों में कहा गया है—राज्य कारों गरम की, कुकनबारी सरक की। दुकनवार प्रच्छा वह वो ज्यादा मुद्द प्रीतिकारक व्यवहार करे। राजा भच्छा वह है जो अपने कानून के पालन के सिए कठीरता अपना सके। गृहसम्त्री वे जैसे कहा है उपवादी तथा अराष्ट्रीय तत्वा से सस्ती से निपटा जायेगा—यह उनकी धोषए। अजिनलतीय है।

—यद्मपाल सुषाञ्च

प्रतिक्रिया

सम्पादक सुचासु जी !

श्रीपका सम्पादन पढकर हुई हुछ।। जाप ने बनता के रूप में तो चाक जमाई ही है देखना यह है कि सम्पादन के सेत्र में नहां तक चाक चनावे हैं।

कविवर सनीवी के सम्पादन के बाद हे आर्थकन्त्रेय का स्तर पिछड गया था। श्रव बहुत कुछ सावाएँ जंगी हैं। नेरी घोर से शुनकामवाएँ।

-- बमंदेव बक्रवर्ती १६ माडल रस्ती विस्ती

धार्यक्रमध्य के साथ द्वारा संस्थादित लगकंग सभी धंक पढ़े। यह कर मन बहुत मक्त हुआ। क्यो सको के तेस हैरणायायक एव विश्वाप्रव थे। ३ मास का सम्पादकीय 'शक्कित का यहांस्वन' जो होती सौर करना दोनों के उत्तव पर सांतर को उजायर कर रहा था, बेहद पतन्य साथा। ऐतिहासिक विकायर सम्पायी नेस नवीन सोव प्रस्तुत करता है। यस वी प्रविद्य पहारिक व्याह । — सुशील कुमार सार ५ ६० म्यू राजेग्द्र नगर मई दिस्सी

बार्यसम्बेश'की प्रति निरन्तर मिल रही है। इस कृपा के लिए धापका हृदय

१० करवरी १६८६ के सक ये सुरेखचन्द्र वैदालकार हारा लिखी गई उनित सराक्ष्तीय है । सम्पादकीय, महूचि दयानन्द सराक्ष्तीय समारोह सम्पन्न एवं प्रन्य समाचार बहुत ही गहन न उपयोगी जानकारी देने वाले हैं।

पत्रकारिता के क्षेत्र में धापका बहुत ही गौरवशाली स्वान है। धाप निरत्तर प्रवृत्ति के पत्र पर बढते रहे, वही मेरी हार्बिक समलकामना है।

अपनी कृपा सहयोग व सद्धावना निरन्तर बनाये रिसयेगा ।

--स्थामसुन्दर सर्मा सम्पादक पालिका समाचार

बाप वैसे सुवोध्य मणीपी विचारक युवा विकास के द्वारा सब साथ सन्देख में विकास सामी है। सापकी पवित्र कर्मेट्या एवं सुललित सम्पादन कला से 'सार्य सन्देख' निरन्तर निवारता रहे यही सुनकामना है।

---प्राचार्य रवीन्द्र ग्रात्रेय

जगरीरवर को इस कलापूर्ण पृष्टि में मानव भीने के लिए क्लींचम और अर्थी-के के दे नाएँगे! जिसके द्वारा मानव अपने हृदयवात किवारों को माकार रूप वेता है। यदि मानव को वाएँग प्रदान न भी गई होती तो मानव भी पत्रुपों की कर पाता। इसकी जानकारी के लिए पूर्ण नो देशा जा सकता है जो कि वेचारे प्रपने विचार भी सकतो द्वारा ही प्रकट कर राति है। पत्रुपकी और वाएँगे-विहानों को देखकर ही मानव ने पुकार की है —

वाक् म धास्येऽस्तु ।

अर्थात् "मे झास्ये वाक् झस्तु' मेरे मुद्द मे बोलने की शक्ति वनी रहे। वासी हो भौर बोलने की शक्ति-वाक समित न हो तो वासी कान होना बरावर ही है। बैद ने तो—

पावका न सरस्वती वाजेमिव विनीवती। यज्ञ बच्दु विवा बसु ॥

(ऋ०१।सू०३।१०)

इस मन्त्र से बालियों का वर्लन किया गया है। वे पावका अपित्र करने वाले व्यवहारों को वस्ताने वाली, सरस्वती अप्रवादी को देश उत्तम विचाइयों की प्रदात्रों, वाजिनीवती अविद्यायों के तिद्ध की हुई कियायों से युक्त वाली को प्राप्त करों। खाब ही वेद प्रावा ने कहा— वोदियायों जुन्तानां बेतन्त्रों खुनतीनाम्। यस बहे सरस्वती।।

(ऋ०१।३।११)

जो ब्राप्त प्रयांत पूरा विवा युक्त भीर क्षम ब्रादि शंव रहित विद्वान् मनुष्यो की सत्योपवेश करने नासी यथाय नार्छी है, बही दक्ष मनुष्यों के बरण कात होने के लिए योग्य होती है। प्रविद्वानों की नहीं। बर वेद ने पून कहा कि मनुष्यों को— क्षणि सत्यां मही तिस्ती वेदी स्वाप्त सामित्र मही तिस्ती वेदी मंग्री स्वाप्त सामित्र मही तिस्ती वेदी मंग्री स्वाप्त सामित्र स्वाप्त मनुष्यों को— क्षणि सामित्र स्वाप्त सामित्र स्वाप्त सामित्र स्वाप्त सामित्र स्वाप्त सामित्र स्वाप्त सामित्र सामित्र स्वाप्त सामित्र साम

(ऋ०१।१३।६)

इळा — बो कि पठन पाठन की प्रेरखा केने वाली सरस्वरी — बो उपरेश क्या झान का प्रकाश करने और मही— ब्या सब प्रकार के प्रकाश करने योग्य है ये तीनो वाली कुतकें से खण्डन करने योग्य नहीं हैं तथा सब दुख के किए सीनो प्रकार को वाली सदेव स्वीकार करनी चाहिए, विम म निक्चनता से प्रविद्या का नाश हो।

चतुष्पाद गौ

गो का अप वाणी भी है। यह 'वाक् चतुष्पाद अर्थात् चार पाव वाली है। वाक् चत्वारि पर्वानि परिमिता।'

नाभि, उर और कच्छ में तीन पास तो गुप्त है धोर को चतुर्य गाद है वह स्थानत है। इस प्रकार ये वाशी के चारा पाद है। इन चार पाद धावीं स्वानों में यह वाशी उत्तम होती है। परस्तु इन वाशी के स्वानी को सामारख मनुष्य

वाणी

लेखक प० सत्यपाल शास्त्री

जान नहीं सकते, इन्हें योगी सोग ही ज्यान बारणा से जान सकते हैं।

मनीविख बाह्यस्या विदु ।

जानी बहा को जानने वाले ही इस बात को बान सकते हैं। धयर्ववेद ने तो भादेश दिया है कि—

> कर्षा समुमती बाक्। समुमती बाक्य उदेवस्। सम्बन्ध २।काम्बर १६। स०१, २।

बाणी मीठी हो बौर बलशासिनी हो। मनुष्य मीठी बौर बलयुक्त बाबी से बापस में बातचीत करें।

हतनी बाहरणक बस्तु भी जह पर-मेरबर ने बिना माने प्रदान की हैं। बहु जहार्ज कितनी बडी दवा है। इसे प्राप्त करते गर्दि बस्तुकूल उपयोग न कर पाये तो कहीं ऐसा न हो कि निवन विशास धरनी व्यवस्था के धस्त्यांत हम से इस परस हेन वाणी का सम्बन्ध विक्लेस्ट कर हैं और परिणामत हम मूंने की भारित सांक, नाक और हाव धार्षि के सकेत करते दिलाई दें

वास्ती का उपयोग किया और कर्कशा वास्ती के रूप में, को क्या जला ककशा-वास्ती का समार में कोई पूर्य द्वीला है? वास्ती की सार्यकता तो मसुर- मानी रहने में हैं। किन्युहम इसे स्वीकार क्योंकर =7?

देकिये । उस शिशु के जीवन पर दिकार कीजिये जो मनी-मनी सतार में माया है। ससार में माने पर उसका सर्वप्रमा सरकार नहींग ट्यानन्द जी महाराज ने जातकम तिका है। उससे एक जिमें हैं कि जब बालक दरान्य हो उसकी वाणी पर सोने की शताका से शहर में हुनोकर, धोरेम् सिक्सा जावे।

इस प्रकार की विवि का बाशय क्या है ? इस पर बोडा सा विचारना बाव-श्यक है। सोने की शकाका से ही वर्षों लिखा जाये ? किसी धन्य बातु की सहा-यता से क्यों न शिला जाये ? यत चातुची वे सोना सब से प्रविक मुख्यवान् है । साथ ही सौन्दर्य में कमास है । चमक सब से निरामी है, जो चमक सदैव उसके साथ रहती है। यहा बाबक पर सस्कार डाला जारहा है कि स्वर्ण के सारे गुणो का बालक में समावैश कर दिया जाये। बालक की वाशी से निकलने वाला एक-एक शब्द स्वर्ण की भावि चमकता हुवा, सौन्दर्य से परिपूर्ण होकर मूल्यवान् निकले । सनिज विद्याविशेषको की राय है कि "सोना पहिनने, लाने बादि से कैसर नहीं होता है। वत इस मातुका विवान ऋषियों

ने स्वसाहै।

फ्रिंस क्या धावश्यकता पढी कि शहद में ही भिनोकर किया वाये ? किसी पाग धयवा चीनी, गुड, धीरा धादि से जिसाजा सकताया। किन्तु ऐसा नहीं किया गया।

बस्तुत चीनी, युक-पाम प्रादि वितनी भी मिठाइया हैं ये सब की सब एक एक एक वनस्पति का सार है भीर कारए। का नाश करके बन पाती हैं किन्तु शहद फूल को नष्ट करके नहीं निकसता श्रपितु फूल भी सुरक्तित रहता है भीर शहद भी बनता है। शहर में सभी वनस्पतियों का सार, मधुमक्षिकाची ने एकत्रित किया होता है। फिर वसत जैसी ऋतुका शहद तो और भी घषिक वनस्पतियों के रस से समुक्त होता है। साथ ही शहद की खारिवकता भी निरानी है। परिशामत बालक जब बोने तो शहद की भाति मधुर-वाषी हो। सस्कृत ने शहद को "मधु कहते हैं। सर्व बालक जब से बोलना सीचे तभी से सोने की मौति मुस्यवान् और शहद की मौति मीठा ही बोले। इसमें बाणी की उपयो-गिता है। रही बात बाशी पर धो ३म् लिकाने की। यह भी रहस्य की बाला है साहित्व ने धन्य धनेक सब्द भरे पडे है उनमें से चाहे विश्वे शिश्व लेवें ?

वेद ने इसका उत्तर दिया-

बो ३स् प्रतिष्ठ

श्रवीत् 'ब्रो३म्' का ही प्रतिस्ठान करो । श्रम्य किसी श्रम्य का नहीं । स्थोंकि ब्रो३म् को देद ने—

'सो ३म् स बहा'

कहरू पुकारा है धर्मात् ''धोश्नू' सबस्यापक भीर सब स महान् है। साथ ही सानव जीवन के प्रारम्भिक समय से लेकर जीवन के धरसान पर्यन्त वेव ने एक मान्न साधन 'धोश्नू' को ही बताया । और कहा—

'धोर्य कतो स्पर'

हे जती । कर्यशीस नागव । तू सपने स्रीवन यर "सोशेश्र" का स्वरूप कर । इस तब का समित्राय है कि सीवन पर तू सारित्यक बना खु । बीवन की कडिज से कठिमतन पश्चिमों से भी ईनवर-विस्वास बनाये रख । इंग्वर-विश्वात से ही सार्थ-विश्वात उत्पन्न होता है । इसी का माम स्वाचिमान है । इसी से मानव स्वश्ती पर पूर्वाता है।

यह वातकर्म सस्कार जहां बाबक के निए बीवनीपबीनी है, वहां विदेव-क्पेण इस सरस्वती देवी कस्थाशी वेद-वाणी को महत्ता प्रवान करने बाला है.1 बार निक्जा कि नामक की वाणी से निक्का ने नामा एक-एक शब्द देवत में निक्ना सीर सात्मा प्रतिच्वित करते हुए क्वें की गति मुल्यना सीर मधु की भाति मनुगम हो। वसी तो मानव सात्म-विक्वाक के सावार पर प्रमुक्ते सामने अपने की प्रस्तुत करता हुमा, उपासक के रूप में कहता है—

'बाबा बदानि सबुमत्'

परमेश्वर ! मैं बब भी मुँह कोलू तो मणु की मांति मीठा ही बोले । वाणी का नामुर्ये वेमानों को धपना बना लेता है । धपनों को बेमाना बना देती है वाली की कर्कशता, कवापन और निष्ठुरमाधिता।

इसी भाव को लंकर वेद ने कहा---

'ऋष बाब प्रवर्षे'

वेद कहता है कि वास्त्री को ऋषा बनालो—

> एक कवि ने इसी भाव को सिसा— बनोगे जुसदये-श्रदली मे दिलकोरी जुवा होकर। जहाजीरी करेगी ये

सवा पूरेकहां होकर।।

महुरता वाणी का सत् प्रयोव है।
वाणी ऋषा वन बाये। वाणी के कंवता
बीर कट्टा से महा प्रवक्त एरिएाम
निकसते देवे गये हैं और वाएंगी के माधुर्व
से वडे से वडे विरोधियों को पिणकरे
देवा गया है। विवक्ता इतिहास साली है।
वानकारी के लिए भारत का इतिहास
स्व वाहये। विसमे झापको सनेक ववाहरए। इस प्रकार के मिल बायें।

सन्तो की सुक्तियां जूरवीरों के उद-बोचन, समरांगण की समकारें, कवियों की कविसाएं और नाकी सोरियों पावि के विभिन्न रूपों में प्रमुक्त वासी राष्ट्र की उम्मति का कारण बनती है इसके सत्प्रयोग से जहाँ राष्ट्र उन्मति की चरम-सीमा पर पहुँच जाते हैं, बहुा बसत्प्रयोग से धवनति की पराकाष्ठा करके ही दम लेते हैं। वैदिक वैजयन्ती कन्धी पर रख यूरोप के श्रम्बकारमय बातावरण में श्रमक बवाने वाले पुजरूत्व, ज्यास और नारद भावि ऋषियों ने विस भारत की वयद-शुरु के स्वान पर पहचावा वा, महर्षि नीतम, कपिस, कखादादि ने वहाँ बैठकर धारमा परमास्मा के गुप्त रहस्यो का उद्बाटन किया था, उसी पावन मूमि मे वाणी के कुपयोग से लका और कुस्केत्र के महामयकर युद्ध जी हुए। शताब्दियो तक, सहस्राध्यिमों तक भी उनके वाब न भरे का सके। महारानी कैकेबी के वचनों की कीमत महाराजा दशरव को ही नहीं, पीढियो तक को चुकामी पड़ी।

वर्तमान विस्ती, पूर्व नाम इन्द्रप्रस्थ, में निमित पाष्यवों के चामरकारिक राज-प्रसाद के फरोके में बैठी हुई द्वीपवी ने भूव के "धन्यों के प्रस्थे हैं। होठे हैं" वहि ये शब्द नहीं कहे होटे दो सायद सम्भव हैं

पाटकगण । लोहे का लगा तीर निकल सकता है परन्तु वाणी का बाण जीवन मर कसकता रहता है। प्रताप भीर मानसिंह पृथ्वीराज और जमजन्द के इतिहास झभी पुराने नहीं पडे हैं। परि-श्रामत मानसिंह ग्रीर जयवस्य परायो से बिलक्र परका सत्यानाश कराबैठ।

पानीपत की तीमरी लडाई में भोसला बद्दा के मराठों ने भरतपुर के राजा सुरजमल धौर इन्दौर के महाराज होल्कर को वाणी के बाणों स घायल न किया होता तो व क्यो वापिस रातो रात घर सीट जाते ? इन महा भयकर परि**गा**मी को देलकर ही मानव पुकार कर कहता है कि---

'जिह्नामूले मदूलकम्

प्रभो । मेरी वाणी में मधु भर दो । इसे मधुमय करदो। मधुमयी वाणी ही बास क्षीर की की जनगी है। यत सतपय ब्राह्मरण ने वाणी का कामचेनु कहा है।

वान्धं कामधेनु

बाणी सफल कामनाम्रो की पूर्ति की साबिका है। कोई भी काय ससार मे ऐसानहीं जो मीठी वासी से पूरा न हो सके। कहा है कि-

कागा काको वन हरे कोवल काको देय । एक बिह्ना के कारखे, बन अपुनी कर लेग।।

महण्यना माचार्य प्रवर चास्त्रक्य महाराज ने अपने शास्त्र मे राबदूत का विशेष सक्षण मृदुभाषी होना माना है। पाण्डवी ने योगेरवर श्री कृष्णुचन्द्र सहा-राव को सम्भव है इसीलिए धवना प्रति-निधि बनाया हो। प्रिय जावा ये कहे नये बाक्य विरोधी पर भी सपना प्रभाव किये विना नही रहते। सप्तिय सस्य भी होना तो नले से नीचे नहीं उतर पायेगा। अत यत ब्यास जी ने कहा-

> सत्य बुवात् प्रिय बुवात् न बूबात् सत्यम प्रियम्।

प्रियवाणी से कहा बया दोष भी मानव सुवमता से स्वीकार कर लेता है महाकवि तुलसी ने मीठी वास्ती को ही वश्चीकरण मन्त्र कहा है-

> वज्ञीकरसा एक मन्त्र है तकि वे उचन कठोर साथ ही रहीम ने जूते साने का

सस्ता नुस्का लिका-विद्वा कह जीतर नई जूते सात क्यास ।

ससार में हम देखते हैं कि शनेक मनुष्य अत्यत ही कटुनावी होते हैं। बनकी कर्कशा वास्त्री के कारण वात की बात में लड़ाई हो जाती है। ऐसे कठोर-भाषी सोगों के लिए वेद के माधुर्य की एक कवि ने यो प्रकट किया---

बुबरत को नापसन्य है सक्ती बयान में । इससे नहीं लगाई है हडडी जवान में ।।

ब्रह्म वाणी को ब्रत्यन्त सरस धीर मधुर रक्ता वाये । बुद्ध से विमुख के निम्न शब्दों ने मैदान में लाकर सड़ा

सुवित क्षत्रिया पार्वं! युद्धमीहशम् ।

वेद की भाषा मं यू कहा जा सकला है — मैत पन्यामश्रुवा भीम एव ।

एक साधारण से सकदहारे को वाणी की बोट ने महाकवि कालिदास बना दिया। जिस का संस्कृत साहित्य मे एक ही स्थान है। वास्तीके इक हाबाण ने प्रेम मे प्रमत्त नवयुवक को सन्त तुलसीवास बनाकर छोडा। बात हा तो थी सब गई। देश जारत को दो भाषापी के हीरे जिल गये दो महाकवियो के रूप मे।

वीरमूमि राजस्थान के तो कण कण मे ने इकारें धीर ललकारें बाज मी सुनाई देती हैं कि-

उचान ते पुरुष । नावबानम्

जब झूरबीर चडावत पत्नी के प्रेम-पाश में बच्चे कह उठे कि-नाह युद्धे गमिष्यामि युद्धन कि त्रयोजनम् । इस निवल भीर कायर पुरुषो जैसी वाणी को सुनकरक्षत्राणी सवल उठी धौर अपने पति को बद की भाषा में बोली---

कृत ने दक्षिएं। हस्ते जयो ने सन्य ब्राहित । राजपूतल नाथ ! बाब ते नित पदारो रख नाहि। तलबार बताको ह बास्यू वे चूडि पहिन सो वर नाहि।। क्षत्राणी की इस स्वामिमान बरी जापान बुबावत को फिस्टोड सा दिवा भौर साथ ही सीवा हाव तनवार की मृठपर चापडा। वस फिर क्या वा कुपित क्षत्रिय कुमार शत्रु की मौत बनकर

टूट पडा। वाणी का प्रभाव सूर्य बनकर चमका। जयपुर के महाराज जयसिंह को महाकवि बिहारी की मीठी बोट-झली कली ते ही विष्यो

रास्ते पर ने भाई। जिससे व्यसिष्ठ की कमान सीची हो गई। भूषरा स्नीर चन्दवरदाई ने खिवा जी भीर पृथ्वीराज को कभी भी दुवैल नहीं होने दिया। 🖈 पता - वेद सदन ककर लेखा मेरठ।

वार्षिक निर्वाचन

धार्यसमात्र पूरनपुर का वार्षिक निर्वाचन दिनाक २७२ ६५ मे विभिन्त सम्पन्न हुमा । विश्वमे निम्न पदाविकारी सर्वं सम्मति से चुने गये ।

प्रधान-श्री तुलसीराम धार्य -की जय जयराम प्रायं

श्री बहा॰ सियाराम सार्व मत्री--बी सुललाल पार्य उपमत्री -बी बितेन्द्र कुमार धार्व

थी केशक्दल खार्य कोवाच्यक्ष---श्री विजय कुमार बार्य पुस्तकाच्यक--वी द्वारिकात्रवाद गार्थ सूचना एव प्रसार मत्री-

बा॰ चनवान सिंह बार्व

हिन्दी बोली 'आई' से

रचयिता-मुरेन्द्रकुमार शास्त्री

हिन्दी बोली बाई म तूबाई मैं छली मई। मेरे कारण त् बाई थीं तू बाई मैं बली गई। मैंने तुम्कको बोट दिलाय तूने मरी बाली बोली। जब बार्द बारी ससद मे, तुने निज बोसी बदली।

> तु पत्नी स्वदेशी बोली म. पर शपथ विदशा मे क्यो ली ' उपकार मेरे सब भूल गई क्या हथा तुमे वतला पगली? यदिऐसागतिविधि रहीतेरी क्या बरशकी अनता अगला? मेरे ही दुकड़ी पर पलत मेरा ही चार हरण करती।

मैं बनीराष्ट्र की जब भाषा नेरा श्रवमानन करता लकर के रूपच विदेशी सं सम्मान तुमे मिल पायगा? कोई पैदा होगा रूसी जा तुम्कको सबक सिस्तायगा। विजयासक्सी पहित का जो तुम को बाद दिलायगा।

> को बाई । इस कलव्य ने देवो नहि दोष अक्लातेरा है। बच्छे बच्छे सिंहो को भी इसी दाय न चेराहै। रसते हैं नाम दमकिया जो, व भी तो मुक्त को मूल क्या। टी० वी० पर राप्ट प्रसारण में ग्रग्नजी वे भी बोल गय।

हिन्दी हित दावा करते जो हिन्दी पर घाना बोल गये। रासी पर नाज यह वालड'न सस्कृत मे जिनकी शपय हुई। स्त्री नारायसः की कृपाहुई,सम्कृत म यह भ सपय हुई । बलराम नारायण मिल करके हिन्दी की नैया पार कर।

> राजीव सिवैया नैय्या के उनसे मिलकर सुविचार करें। अब समय है समा विद्यानी का, उनमे हिन्दी में शपब बले। बदर्ने सब भी सपने पथ को, सब तक जो यह कृपय चल।

फार्म ४ नियम ८ के ग्रतगंत

श्रार्यभन्देश साप्ताहिक की घोषणा

प्रकाशन स्थान नई दिल्ली प्रकाशन प्रविध साप्नाहिक मुद्रक का नाम डा० धर्मपाल (क्या भारत का नागरिक है?) भारतीय (यदि विदेशी है तो मूल देश)

प्रकाशक का नाम (क्या भारत का नागरिक है?) (यदि विदेशी है तो मूल देश)

सम्पादक का नाम (क्या भारत का नागरिक है ?) (यदि विदेशी है तो मूल देश)

उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूजी के एक प्रतिशत से प्रविक १५-हनुमान रोड, नई दिल्ली।

के साभेदार या हिस्सेदार हो।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि समा, १५-हनुमान रोड नई दिल्ली।

दिल्ली भार्य प्रतिनिधि सभा.

दिल्ली घार्य प्रतिनिधि सभा.

१५-हनुमान रोड, नई दिल्ली।

डा० घर्मपाल

यशपाल सुवाशु

मारतीय

भारतीय

१५ हनुमान रोड नई दिल्ली।

दिल्ली झायं प्रतिनिधि समा.

मैं डा॰ वर्मपाल एतदद्वारा घोषित करता है कि मेरी ग्राधिकतम कानकारी एव विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य है।

> डा० धर्मपाल प्रकाशक के हस्ताक्षर

विनाक १७ मार्च १६८५

परम पिता परमात्मा ने भन्नी इस विपाल मृदिर में जीवों के कल्यास के लिए नाना ऐसे पदाथ उत्पन्न किय है कि जिनके बिना जीवन की कोई कल्पना भी नहीं कर सकता। वयु भीर जल उनम स सबप्रमुख है। इन दोनो के बिना जीवन की कस्पना की ही नही जा सकती। किंतुद्रनाय यह है कि यही दोनो झाज सर्वाधिक दूषित हो रहे हैं। यह प्रदूपण ईंग्वर प्रदत्त नहीं मानव निर्मित है। हम उनम प्राणप्रद वायु को निरन्तर स्वास प्रश्वाम द्वारा दूषित करते रहते हैं। किंतु यह तो जीवन की श्रनिवास शावश्यकता है। साम लिये बिना प्राणी जें बित नही रह सकता। यत श्वास-प्रव्वास द्वारा बायुके प्रदूषण को राका नहीं जा सकता। दूल भौर भारपय तो इस बात के लिए है कि जो मानव बिना किसी सनिवार्य धावध्यकता के वायु को दूषित करता रहता है-वह है धूजपान के द्वारा वायू प्रदूषरा । बुद्धपान स होने वाला वायु प्रदूषरण देखन में बढ़ा नगण्य सा लगता है किंतु यदि सामूहिक रूप से इस प्रदूषशा का भक्तन किया जाये तो सृष्टि मे प्रदूषए। कासबसे बढा कारए। सिद्ध हो सकता है। बुज्रपान से होने वाली व्यक्ति-गत हानिया एव रोग तो होते ही हैं, प्रदूषण भी चत्यधिक होता है।

माज मानव ने जिस प्रकार की भी चानिक सभ्यताका विकास कर रखा है, उसम प्रदूपण दिन प्रतिदिन बढ रहा है। भौर स्थिति इस विस्फोरक स्थिति को पहुँच चुकी है कि यदि इसे तुरन्त न रोका गया तो जायद हम पीन क लिए स्वच्छ जल भीर सास लने के लिए स्वच्छ प्राणप्रद वायु भी उपलब्ध न हो सके। कल कारलानी से उठने वाला बुधा तथा भन्य प्राणनातक मैसें तथा इजनो भौर मोटरो स निक्सने व लाधूबा बायूको द्यत्यिक मात्रामे दूषित कर दता है। इसकी कल्पना हम इसी बात से कर सकते है कि समरिका सादि में बड़े-बड़े महा-नगरो क बड बडे चौराही पर ट्रैफिक पुलिस वे मि । ही को सास क्षेत्र के लिए ग्राक्य जन का सिलण्डर ग्रपने कल्बे पर उठा उसना पहता है। प्रन्यवा मीनरी के घूए संउप सास लेगा भी दुश्वार हो सक्ता है। यनी हाल ही म भोगाल मे घटी भय र र गैस दुर्वटना कितनी भयावह थी कि जिस ना कोई कल्पना भी नहीं नहीं कर सहत । ये सब बीदांगिक सम्यता के ही ता मिश्याय हैं।

फरवं । ८४ के दूबरे खानाह के वायरिय ने प्रदूषण विषयक होतिनार में पर्य मध्य पर के प्रदूषण को प्रकार में पर विषय की प्रकार में पर विषय की प्रकार के प्रवास की प्रकार के प्रवास की प्रकार के प्रवास की प्रवास की प्रकार का प्रकार की की प्रकार की प्रकार

प्रदूषण-समस्या और समाधान

लेखक यशपाल भार्यबद्य,

डा॰ दुवे के अनुसार सारणी ताप विजली घर से प्रतिदिन उडन बाली एक हुजार टन कोयले की राखतया सल्फर बाक्याइड गैस घास पास के क्नो के लिए खतरा पैदा किये हुए हैं। स्थिति की यम्भीरता इसी से बाकी जासकती है। इस पर भी हु स इस बात का है प्रदूषमा से होने वासी हानियों से हम भारतें मदे बैठे हैं। किन्त भारते मुद लेने से खतरा दल नहीं जाता। लगता है भोपाल की घटना को शोग भूल से क्ये हैं। क्योंकि मरने बाले तो वेषारे मर गये। जिन की सार्वें गईंसी तो चली ही गईं। जिन्हे पक्षाचात हो गया, वे बेचारे उसे भोग ही रहे हैं। ये सब तो हो चुके। अब किसे चिन्ता है कि इस से भविष्य में कुछ घौर भी हानि हो सकती है।

वायुमण्डल में जो गदगी मानव निर-न्तर प्रक्षिप्त किये जा रहा है वह वर्षा मादि के द्वारा पृथ्वी वर लौट माती है। इससे नदियों का जल ही नहीं भपितु पृथ्वी के भीतर काजल भी कु**छ** सक्ष तक दूषित हो जाता है। फिर कीटनाशक पदार्थों के नाम पर क्रितना विव हम पृथ्वी पर फैक रहे हैं इसकी बीन कल्पना कर सकताहै [?] विश्वानत जल तथा वायु से पेड पौध भी विवास्त होते जले जा रहे हैं। किसना विष हमारे भीतर पहुच रहा है इसका अनुमान लवाने मात्र से ही हृदय काप उठता है। यह भीर बात है कि विष का प्रभाव हमे तत्कास दिखाई न देक्यों कि वह बीरे बीरे पिसाया जा रहा है भीर हम भी उसके भ्रम्यासी होते **व**ने जारहे हैं पर ऐसानहीं कि इसका दुष्प्रभावन हो। वैज्ञानिको का कथन है कि इस विषमम वातावरण का प्रभाव जीन्स (प्रजनन प्रस्तवी) पर सर्वाधिक होता है। इस कारण माने वाली पीढी त्मारी तुलनामे **इ**ससे श्रविक प्रमावित होगी। भावी सतति के निर्वल क्षीणकाम भौर विकलाग होने की सम्भावनाए दिनो दिन वद्ती जा रही है। वैज्ञानिक निर-न्तर चेतावनी वे रहे हैं कि यदि प्रदूषण की यही गति रही तो पृथ्वीका सम्पूर्ण बीवन गम्भीर सकट में पड सकता है। मुस्लिम विश्वविद्यासय प्रसीमढ के मेडि-कल कालेज के शरीर रचनाशास्त्र विभाग के भव्यक्ष डा० मेहदी हसन का सत है कि वृद्धावस्था मे जिस प्रकार स्मरण शक्तिका हास हो जाता है, उसका कारण एक प्रकर के पिशमेट्स होते हैं जो कि वृद्धावस्था में मस्तिक में तेबी से बनने लगते हैं। इन पिगमेड्स रे कारण

स्मरणशक्ति इस प्रकार की हो आती है

कि बीस साम पहले की बाते तो याद माने लक्ती हैं किन्तु दो दिन पूर्व की बटनाए विस्मृत होने सन बाती है। डा० मेहदी इसन ने बेलावनी दी है कि यदि प्रदूषण इसी प्रकार बढता रहा तो छाने वाले बास पञ्चीस वर्षों से यह स्थिति ही वायेगी कि किसी भी सबस्था के व्यक्ति में इस प्रकार के विवमेट्स मस्तिष्क में बनने लगेने भीर वह दो दिन पूर्व की घट-नामो को भूसने लगेगा। राजस्थान बोर्ड बाफ इण्डियन मेडिकल के बाध्यक बैद्य श्री ब्रह्मानन्द त्रिपाती ने वियतनाम की घटनासे सिद्ध किया है कि प्रदूषण विक-लागता का कारण होता है। वह बात भोपाल की गैस दुर्घटना के सदमें मे भी सिक् हो चुकी है। यह विकलागता केवल महि-सामो के वर्तमान गर्मस्य बालको तक ही सीमित नही घरित माबी सतति के लिए भी हानिकारक हो सकती है। ऐसा वैज्ञा-निको का मत है।

वैज्ञानिको की इस चेतावनियों और प्रदूषराके दुष्प्रभावों को स्थान में रक्षते हुए संयुक्त राष्ट्रसंघ ने बिदव के सभी देशो के नाम एक धपील जारी की है जिसमे कहा गया है कि — 'धरती केवल एक है, यह चरती तथान्स पर उपलब्ब पानी, हवा भीर दूसरे जीवनवारक तत्त्व यदि एक बार विवासत और भ्रष्ट हो गये तो दुवारा इनका निर्माण करने का सामध्ये ननुष्य का नहीं है। इसमिए इस प्रदूषण को रोकने के लिए यथासम्भव उपाय किया जाना चाहिए।' (देखें---लेसक की पुस्तक 'हवनयज्ञ की वैज्ञानिकता पर बाचार्यवागीस द्वारा सिकित भूमिका प्राप्ति स्थान ग्रायंसमाज रेलवे हरवला कालोनी मुरादाबाड)

वाचार्य वागोश ठीक ही लिसते हैं कि 'सयुक्त राष्ट्रसम ने यह भ्रापील तो जारी कर दी है किन्तुप्रदन यह है कि प्रदूषसा को रोकने का उपाय क्या है?" किर स्वय ही इसका उत्तर देते हुए सावार्य जी लिलते हैं कि — 'हमारा **सुविदारित** नत है कि चरिनहोत्र ही इस समस्या का एकमात्र समाधान है।" हुमारी भी यही मान्यता है कि इस समस्या का एकशाल समाधान प्रस्तिहोत्र ही है। हमने प्रपती पुस्तक हवन यज्ञ की वैज्ञानिकता' से इसका विस्तार के साथ वर्णन विमा है। लेख का कलेवर हमे उन सबका यहां वर्तान करने की ग्रनुमति नहीं दे रहा। फिर भी इम यहा यह बता देना चाहते हैं कि प्रदूषरा की समस्या का ससार के पास एकनात्र नमाबार वृद्धि कोई है तो निश्चव ही वह अभिनहोत्र ही है। श्राचार्य वासीस भागा का शहरा। श्रद्धत करना आक्रा हो।

जी के इस कथन से इस पूर्णतया सहसत हैं कि—' विश्व के तमाम वैद्यानिक मिल कर बहुत सोच विवार और ब्रमुसन्वान के बाद जो भी कोई उपाय सोचेंने। किसी न किसी रूप मे व्यक्ति के साथ प्रदूषण नाहाक पदार्थी का समीग अवस्य सम्मिलित करना पडेगा भीर इस तरह वह भरिनहोत्रका ही बदला हुन्ना रूप होगा ।' (देखें-मृभिका हवन-यज्ञ की वैज्ञानिकता)। इस सम्बन्ध मे महर्षि दयानन्द सरस्वतीका कदन है कि — ब्रह्माण्डमे समार करने वाला जो बायु है वही जीवन का हेतु है। प्रन्तर बायु द्वारा ठीक-ठीक व्यापार होने इसलिये बाहर का ब्रह्माण्ड वायु शुद्ध रहना वाहिए। ब्रह्माण्ड वायु गुद्ध करने के लिए बक्र कुण्ड में चृत कस्तूरी केशरादि सुगधित पुष्टिकारक द्रव्यो का ह्रवन करना चाहिए।" (देखें — पूना प्रवसन — यज और संस्कार विषयक) नहींव बागे सिसते हैं कि—'सब कोई शका करे कि होस एक खोटी सी इति है इससे बह्याण्ड वायु कैसे शुद्ध होगी ? समुद्र मे एक चम्मच भर कस्त्री डालने से क्या सारा सनुद्र सुवित और सुद्ध होना[?] इसका समाधान यह है कि सी बड़े रायते मे थोडी सी ही बचार से रुचि आ जाती है, यह प्रत्यक्ष है। इसकी जैसी उत्पत्ति समक्री वाती है तद्वत् यह प्रकार भी है। कोई ऐसी सकाकरे कि होम तो यहाकरो धौर भनेरिकामे उसका परिणाम कैसे होगा[?] तो उसका समाचान यह है कि वायुद्वारा शुद्धि सर्वत्न फैले यह वायुका वर्ग है।" (पूना प्रवचन-वही) भीर वायु अपने वस का निर्वाह करता हो है। फिर अनिन से डाला हुया पदार्थ सूक्ष्म होक्क लूर्यको प्राप्त होता है चौर सूर्य अपनी किरलें समस्त संसार पर विशेष देता है. स्त इसमे सका कहारह जाती है।

वेद में अनेक स्थली पर प्रस्ति की वेबबूत कहा गया है । यही समस्त देवो तक हिंव पट्टचाता है। ब्राह्मण ग्रयो ने इसे देवतामी का मुझ कहा गया है। जिस प्रकार हमारा यह मुख सभी जोग्य पशायाँ को प्रहण कर एवम् उन्हें दातो द्वारा पीस कर फिर शरीर के बग प्रस्थम को परिपृष्ट करता है, ठीक उसी प्रकार देवताओं का यह मुझ भी समस्त देवों को परिपुद्ध करता है, इसमे तनिक भी सदेह नही। वृत विशेष करके गोवृत अत्यन्त विध-न।शक है। यबि ससार के समस्त विकों को एक प्रकेल बोचुत से हरना चाहें तो निविचाव हर सकते हैं। ससार वृत जैसा कोई भी सन्य ऐसा पदार्थ सत्यन्य नही कर सकाजो प्रज्वसनशील भी हो धौर स्मिग्ध भी सुगन्धित भी हो भौर पुष्टि-कारक भी तथा इन सबसे ऊपर जो विष-नाशक भी हो। ऐसे उत्तम पदार्व से ससार के कल्याण की जावना से जब हबन यज किया जायेगा नो निरमय ही

(शेष १९८ ११ पर)

द्रौपदी चीर-हरण एक कोरी कल्पना : महाभारत की अन्तः साक्षी

भारतीय पुरातास्त्रिक सर्वेक्षण के भू० पू० महानिवेशक श्री घो० बबवासी सास का कथन है कि रामावण धीर महा मान्त कोई काल्निक इतिहास नही है किन्तु उसके मूल में सत्यता है। भले ही जसमे बाद में कवि की कल्पना की ज्हान -धौर सबद्धन के कारण बढ चढ कर बात शिक्षां नयी हो। श्री नान ने महाभारत बाम की सापता जानने के लिए हस्तिना बुर इ न्त्रस्थ वरनावा कुरुशत्र मधुरा, श्रानीपत प्रादिका उसनन व सर्वेक्षण करके उपरानत विचार प्रभिव्यक्त किये हैं। इसमें कोई शक नहीं कि मून रूप में ब्रटना में सत्य है। महर्षि दयान द सरस्वती ने मा धपने ग्रंच सस्यायप्रकाश मे महासारत की इसोक सस्या ने निरम्तर अदि की चर्चा की है। स्वामी जी के **विचार** पठनीय भीर मननीय हैं।

हम भी यहाँ महाभारत की अन्त साला के बाधार पर उस तब्य का निक थण करने जो हमारे हदयों से घाष शबा की जहता वश पाज भी उलस्ता नहीं है। अब्रामारत की विशिष्ट घटना है -- दौरवी का भरी समाने प्रथमान कीरव वश 🕏 विनाश में इस घटना का महान् महत्त्व है। न जुआ। (बुत) होता और न यह चूखित काय होता। विनाशकाले विपरीत बुद्धि । ज्ञानी मानी शूरवीर परस्पर कट कट कर मर गए। वेद के ज्ञाता होने पर भी युधिष्ठिर ने जुझा खेला। वेद कहता है — भनीमां दीव्य कुविमित् कुवस्य कहते हैं। शकुनि की चालाकी से हार गए। क्यो बी[!] स्वय हारने पर भाषों को बाब पर श्रमाने का क्या प्रविकार या ? सर !

द्रौपदीका भरी समा मे धपम।न ह्या । उसे कटुबचन कहे गए दु शासन ने उसकी केस राश्चि पकड कर जबरदस्ती सभा में शाकर जोर प्रपमान किया। किन्तु द्रीपदी विदुषी थी उसने स्पष्ट रूप है सभासको से पूछा कि - महाराज -पुत्रिक्टिर ने सपने साप हार जाने के बाद बादि मुक्ते वान पर जनाकर हारा है तो मैं वैसे हारकर दासी म व को प्राप्त हो गबी। इस बात को सुनकर जहाँ दूसरे -सोय मृह सटकाकर वा फेर कर बैठे रह अप कहां सभा के मध्य विदूर जी न सम बोचित सत्यवाणी का प्रयोग कर द्रीपदी के सभा में साए जाने भीर उसके भपमान को महान् बुष्कृत्य छीर समहीन इत्य असाकर कौरवों के विनास की सासका श्रीभव्यक्त की। समस्त दुष्ट मण्डकी की निन्दाकी। वे कहते हैं---

न हि वासीत्ववायन्त्रा क्रम्स्या अवितुसर्हति । श्रमीक्रेन हि राबीवा यसे त्यस्त्रीति मे नति ॥ सभा यव ६६।८

श्रदमन्तर विकल ने मरी सभा में जो

साहस का परिचय दिया वह इतिहास की महारु घटना है। विकरण ने सब समासदो से प्रश्न किये तो किसी ने उसे इत्तर न

साबाराणी च सर्वेवा पाण्डवानामनिम्बता वितेन पूत्र चानेन पाण्डवेन कृत पर्ण । इस च कीतिता कृत्या सोबलेन पर्णाचना एतत् सर्वे विवासीह मध्येन विविद्यानिमासु ।

दिया। तब विकण बोला---

अन यह बात विकण ने कही तो सभाभे हगामा सदा हो गया। महाभारत सामी समझ गैपरी का रानिवाल में भेवा एव पालवों को रास्तान से मुझ्त कर विसा महा सामद एक प्रभास समारत हो बाता है। न यहाँ तक चीर हरण की बात है न कुछ यह समार यही तमाण हो बाता है कि पुत्र प्रदेश बात में स्वतीक्कशा का पुट देने बातों ने प्रदोश की बहु मरनार की है कि सममा सम्बाय पूरा द्रौपरी के चीर हरण का देकर आ कुछा जी का उठका वस्त बताते चित्रक र दिया है। वक कि चीर हरण जी सी चटना बहा हुई

लखक महावीर नीर विद्यालकार गुरुकुल कागडी विद्यालय विभाग हरिद्वार

महामारत की अन्त साकी के आधार पर—जब जूझा खेला गया और बौंपदी को सभा मध्य अपमानित किया उस समय श्री कृष्ण जी महा राज अपनी द्वारिकारी से भी और हस्तिनापुर की भी भ्रति दूर थे। इन लिए एक महान पुरुष को चीर हरस्ण जैसी वीभस्स घटना में विजित करना बुद्धिमानों को प्रका का श्रेष्ठ उसहरूण नहीं।

मे पहिये —

एतक् त्वा महान नाव समायामुवतिष्ठतः।

तन्त तर विदुर जी ने कहा — बौपवी प्रश्नमुक्तव रोरवीति द्यानायवत् । न व विवृत त प्रश्न सम्यावसीऽत्र पीडपते ।।

साब ही विकण की बात को पुष्ट करते हुए विदुर जी कहते हैं—

विकर्तेन यदा प्रज्ञमुक्त प्रक्रमो नराविष । भवन्तोऽपि हित प्रक्ष्म विज्ञवन्तु यथामति ।।

इस प्रकार विकण और विदुर जी ने द्वीरती के सभा मध्य साए जाने का थोर विरोध किया। या सभाती को भा एकक्षाया। तब दुष्ट मण्डली का विरोध होते जगा। भरी सभा मे नयकर विस्कोट होता देख। यथा—

त वै खब्ब विदुश्स्त्रत्ववेशे
धुन्नात पोर बुस्तास्त्रजा च ।
भीक्यो हाणी गोतमस्त्र पि स्वान् स्वस्ति स्वस्तीलपिष वनाहुरुष्ण ॥ त्रती नात्वारी विदुश्य पि सितुषा मुत्तात घोरम सस्य राज्ञ । निवंश्यामास्तुरातिष्ठ तथान्त्रतो

पाठक इन श्लोकों से स्पष्ट क्या से कुट मण्डली के बिरोच में एक कान्ति का उदबोब है निर्दोच दीपदी के प्रपत्तान को क्या पाण्डल द्वितीयों अञ्चा पुण्याप यह स्वक्षी थी। तदनन्तर सुतराष्ट्र की साल सुत्री में बोलें —

> हतोऽसि दुर्वोधन मन्त्रबुद्ध सस्त्व सभावां कुरुपुत्रवानाम् । स्त्रिय समाजावसि दुर्विनीस विश्लेवतो द्रोपदी बमफ्लीस् ॥

बहाराब धृतराष्ट्र ने बहान् विषद

नहीं भी। बहुत तो द्रीपदी को समा मध्य लाकर सका कर दिया नया पा बहुत उनका घोर सपमान था। क्योंकि द्रीपदी स्वय कहती हैं— समा में इस्से पुव क्यों बाति को इस प्रकार कसी सपमानित नहीं किया नया यदा सम्बर्ग हिन्स समा पूर्वेन न स्वस्तित मुस्ति । स नम्बर कीरकेषु पूर्वों सन सन्तातन ॥

हाँ हरू मण्डली उसका महान् धर मान कर सकती थी यथि विदुर धौर विकल मण्डली ने थोर निरोध न किया होता। उनके विरोध करने का ही यह एक हुआ कि सामे औरत पक्ष के बीर भी हनके साथ हो गए धौर हर दुष्ट धाथ एण के विरोध से बोल पड़े।

इसी प्रकार उच्चोग पन में कुम्ली जी जी कुम्म को स बेच बेचे हुए चीर इरण की बात कही नहीं कहती विल्क वह सबम ही दीपती के प्रपान और दु सासम तथा दुर्वोचन हारा कहे गए कडु स्वास वचनों की बात ही कहती है कुनी को सन के स्विक दु का हवी बात का है कि—

न राज्यहर्त्त हु स धून चारि पराचय । अवानन सुताना वा न में तदहु सकारणम् ॥ यन वा नृहती स्थामा समाया रखती त्वाह स्थामीये प्रवास वास्त्र में व स्वतर सहत् । स्वीमर्माण बरारोहा कान्यवरता सवा। नाज्यनम्बत्तवा नाष कृष्णानायवठी सती॥

बह कहती है— भी कृष्ण मुक्ते राज्य के किन जाने का स्तान दुख नहीं जूए वे हारने बीर बनवात होने का भी मेरे सब वे बतना नहान् दुख नहीं है। पर पु भरे बचा में मेरी सुखरी मुद्दती पुत्रवष्ट्र भेरस ने रोते हुए जो दुसाँका के कुद बचन भुने वे बही मेरे लिए नहान् दुख का क्रारण बन गए हैं।

इसी प्रकार श्री कृष्ण महाराज जब सिंघ के लिए हरितनापुरे जाते है तब मेंपती जो उहे तबन कहती है के स्वा अवींना का चयकता रूप ही है। वह कहती है द गावन ने जा प्रदी समा मे उस बास सोच कर प्रपमानित किया चा उमसे बहु सब तक जब लही है। सेरे उस प्रपमान को मत जूनना। प्रजून की कृष्ण जो म कहते हैं कि पार बुद्धि दु खावन ने जे मेरी में का मा मध्य जीचा वा उस स्पमान को कैसे जुनामा वा चक्का है।

प्रकारात्तर से ह्य बहा महाकवि वास के द्रवावकम् नाटक के बी कुत उदा इरण वे रहे हैं। सवा— ब्रोपकी केस व्यवसम्बातिकम् । तवा — एव कुता स्वती बीचारी केसहस्ते मूरीतवान। इनसे बात होता है कि जास के समय तक वीर हरण वेंसी घटना प्रमान्य यो प्रसिद् दुसासन द्वारा औषा के केस पकडकर समाम चल्लाकर उसे प्रपानित करत की घटना का हो सहस्त वा।

इसी सदम म हम यह भी लय महाभारत की अस्त साक्षी के आधार पर रखना बाहेगे कि वब बुधा बेता गया और ब्रीवदी की समा मध्य अय मानित किया गया उस समय थी कृष्ण की महाराज अपनी डारिका पुरी से भी और हस्तिनापुर से भी अति दूर थे। इसलिए एक महान् पुरुष को चीर-हरण जसी बीधस्स घटना में चितिस धरना बुद्धिनानों को प्रता का आध्य उदाहरण नहीं। पिंद उच्छोग वक गह स्कोक-

महत्त्वनेतसः प्रवृक्षः मे हृवया गापसपति । यव गोनि वेति मुक्तोसः कृष्ण्या या दूरवासिनस् ॥

षपांत निषय समय कौरव बना में दीपती का प्रपानन हो रहा चा मैं (मी क्रम्म) हॉस्तागुर से बहुत हुर बा उस समय क्रम्मा ने सातामांत से भोविंच कह्कर जो मुझे कुकारा चा उसका मेरे उपर म्हण बढ़दा ही बा रहा है मेरे हुट्य से हुर नहीं होता। प्रपराधी कौरवी चा सहार किए बिना उसका मार हुर नहीं होता। बस्तुत गरित सम्बान के समय कुरम बहां होते या पहुन वह होते तो महामारत नहीं हो बया होता। स्वींकि कृष्ण उस समय के सहान् पमस महान् पराइमी सहान् पावनीतिक व नूटनीविंड धोर राष्ट्रीय सेता है।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

सत् चित् कीन है ? बीर यह बानन्द यात्रा क्या है? यहाँ हम इसकी चर्चा करेंगे। जीवात्माका स्वरूप सत्य ग्रीर चैतन्य है उसमे ग्रानन्दका (सुक्रका) श्रभाव है । इस भ्रानन्द भ्रथवा भूख की प्राप्ति मे ही जीवात्मा सलग्त रहता है। उसकी यही मलग्नता उसकी धानन्द के लिए यात्रा है जिसमे धनादि काल से लगा हुन्ना है। जीवात्मा का सत् विल स्व-रूप जिस क्षण द्यानन्द स्वरू। (सुलमय) हो जाएगा। उसी पल उसकी यह यात्रा समाप्त हो आएगी। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए समय-समय पर धनेकानेक सम्प्रदायो ने जन्म लिया । धनेक धम गुरु पैदा हए, जिल्होन अपन-अपने तरीके से इ.स. झानन्द (सुख) की प्राप्ति का मार्ग सोजा भीर उमे जनता के समक्ष रसा, जनता ने उसे कितना समका कितना माना, यह तो कहना कठिन है किन्तु समय के साथ इन मार्गों में सकी जता या वर्ड भौर मनुष्य मनुष्य के बीच दीवारें सडी होती गई।

प्रस्त यह है कि मनुष्य बानन्द (बुस)
तक क्यों पर्रम्व नहीं पाता है ? हस क्यों
व उसने बहुत बार मोज की प्रीर उसका
पानन भी किया किन्दु कालान्दर थे
प्रत्येक बस्तु को सरस्त से सरस्तवम बनाने
र प्रयास ने उसमें विकृति उरन्य कर दी,
६८ समुख्य मार्ग से मरक गया। इसका
कारण यह है कि मनुष्य ससार ये कुस
हस प्रकार से रहता है कि वह सरीर धीर

सत् चित् की आनन्द यात्रा

श्रीमती सुभाषिगो वर्मा, विलासपुर

भारमाको एक में मिला लेता है, इस धानन्द की भोर जाने वाली यात्राको भी सबरीर पूर्ण करना चाहता है। बारीरिक सुख की पूर्ति के लिए प्रधिकाधिक सुख सुविधा के सामान एकत्र कर बानन्द का एक कल्पित भवन बना नेता है। ये सुन सुविधा के सामान साधन हो सकते है साध्य नही, साध्य तो कुछ भौर ही है। जिन्होने इस साध्य को समक्रा है उन्होने पूजा-पाठ या उपासना को धपनाया है। द्याज पूजा-पाठ स्पासना के नाम पर जो कुछ करते हैं वह भी केवल कर्मकाण्ड होता है। बाहे बहु हवन हो अववा सूर्ति पूजा हो, चाहे भजन कीर्तन हो। उसका किंचित् मास भी प्रभाव हुमारे सन्तरसम पर नहीं पडता है और यही कारण है कि हम सच्चे भागन्द की धनुभूति नहीं कर पाते हैं। पूजा-पाठ प्रथवा उपासना वह प्रक्रिया है जो सनुब्ध के धन्तरतम की माभोड़ कर रख दे, उसका मन्यन कर दे, मनुष्य का व्यक्तित्व निकार कर सामने द्या जाए। ऐसा हो नहीं पाला है। इसका कारण यह भी है कि पूजा-पाठ-उपासना बोड समय के लिए होती है। अधिक समय

मनुष्य बाह्य जनत् मे कियाशील रहता है स्रोर बाह्य जनत् का दूबित वातावरण मनुष्य पर दूबित प्रभाव डालता रहता है।

इमें बीने की कुछ ऐसी कला चाहिए कि हम प्रपने में ही जी सकें। यह बात निर्विवाद सत्य है कि मनुष्य किना कुछ किए नहीं रह सकता है। मनुष्य सम्पूर्ण दिन किसी न किसी कार्य में व्यस्त रहता है। इसलिए बानन्द प्राप्तिका सीवा-सरस एव जन सामान्य के लिए एक ही उपाय है कि वह अपनी एक रुचि बना से, उसके धनुकूल कार्य लेकर उसमें रम जाए, इस रम जाने को इस साधना कह सकते है। सामना मनुष्य को सदा प्रानन्द देखी है, वह सावना चाहे सगीत की हो, चाहे कत्वा की हो, चाहे साहित्य की हो, या समाज सेवा की हो। सावना का रूप कुछ ऐसा होना चाहिए कि बनुष्य स्वय को भूस जाए, उसी में भीन हो जाए। एक कार ऐसी साथना में लीन हो जान से ग्रह्य-नीय बानन्द की प्राप्ति होती है। शक्ता करके देखिए, ऐसी साथना, जिसमे साचक और साध्य का भेद मिट वाता है। जिस क्षण, जिस पल ऐसी सावना में शीन हो जाएने, सच मानिए जीवन का बहु आफ, वह पल बन्य होगा। उस क्षण उस पल ही उस परम प्रानन्य का साक्षास्कार हो बाएवा ग्रीर मनुष्य जीवन बन्य बस बाएवा।

१७ मार्च, १६८%

साबना से सद कुछ बिल बाता है साबना कभी अपूरी नहीं रहती है। वसे ही किसी को यानन्द को अपूर्मूण में कब समय कमेगा। किसी को अधिक सफलता अवस्य मिनेगी। सफलता के रहस्य के सन्वय्य मैं किसी नयमुबक ने क्यी लेखक टास्टाय से पूछा, आपकी सफलता का रहस्य क्या है?

"वैटे— इस रहस्य का नाम है वैसे।" टालसटाय ने मुस्कराते हुए कहा— "क्षसार में ऐसा कोई काम नहीं जिसे पूरा म किया जा सकता हो बसतें कि करने वाले में वैसे हो।"

नवयुवक ने कहा — "किन्तु एक कास ऐसा है जो बहुत चैंगें रखने पर भी नहीं किया वा सकता।"

"वह क्या ?"

"वसनी से पानी करना।"

"श्रीह ! इसमें क्या बड़ी बात है" टाल्सटाय ने मुस्कराते हुए कहा—"इसे जी किय' वा सकता है बच्चों कि पानी के जमने तक कोई वैबं रक्ष सके।"

श्रत परमानन्द की प्राप्ति भी हो सकती है बचार्चे कि हम में उतना पैसे हो।

पृष्ठ ७ का शेष

द्रोपदी चीर हरण एक कोरी कल्पना

स्रव साथ महाभारत के बन-पर्वे का एक उदाहरण वैक्षिये। निस्त समय पाण्यव मनवामी हो जाते हैं नव भी कृष्ण की उनके कुराज-मान पूढ़ने बहुरें दत-बन सहित पहुने। बाते होने लगी। बातो हा बातों में भी कृष्ण भी ने बढ़े कप्ट से कहा—

एव निहत्य समरे सीम ज्ञाल्य निपात्य व । बानर्तान् पुनरागम्य सुद्वदां प्रीतिमाबहम् ॥

तबेतत् कारत् राजन् वबह नागसाह्मयम् । नामम परवोरम्न न हि चीवेत सुयोधन ।। व० प० ४१

सध्यागतेऽचवा वीर द्यूत न मविता तथा। स्रक्षाह् किंकरिष्णामि मिन्नसेतुरिवोदकम् ॥ व० प० ४२

सक्ति राजन क्यों के मैं सीम सीर सालक को युद्ध में क्यून्स करने के निर्मास हिस्तनापुर दे हुन का (शास्त्र के क्यूने स्वस्कर विस्तादक पदार्थों के मुक्त एक यान निर्मात किया का विसन्ता नाम सीम या, इसमे अयकर मारक शक्ति थी, विश् करूट करने में कृष्ण जी को सहा परिश्वम कोर पराजम करना पड़ा) इसीविष्ण कृत सभा में उपस्थित न हो सका। यदि मैं वहाँ पूर्व कमा होता तो पूर्व क्ला किया नहीं रह करता सा प्रकार मेरे वहीं पहुं-को पर कुछा होता ही नहीं। किन्तु रासन्। वस पर से शुन्न ट्टेहुए के समान धन सुमें बताओं में आपका नहीं प्रिव

पाठक । यह एक क्लोक ही 'बीर-हरण' की वैचला को चुनौती वेकर उसे धर्वेष वोषित कर देता है, उसकी मान्यता के भ्रम को सण्डित कर देता है। जीर-हरण जैसी घटना महामारतीय इतिहास में हुई नहीं, इसे हमें सत्य परित्रेक्य में लेकर देखना चाहिए। विदुर भीर विकर्ण मण्डली के साहसिक एव ऐतिहासिक वचनों का बहाँ महत्त्व है, द्रोपदी के बोर ब्रपमानित करने के लिए दुवींबन की बाज़ासे दुशासन के बढते कदम बीर दुेष्कृत्य करने को **उदात हाण निक**र्ण मण्डली के विश्वमित होने और अवावनों के विरोध एव उत्पात के कारख वही सक बए। समस्त समासद भीर भूतराष्ट्र स्था गान्धारी एक अनहोनी घटना को नहा-जारतीय इतिहास ये जुड़ने बचा वए। (

स्वास्थ्य के लिए लाभपद दोहे

-स्वामी स्वरूपानन्द तरस्वती

ज्ञात कास जो नियम से, बाए चूमने रोख। वस बुद्धि दोनो बहें, मिटे कव्य का रोब।।

> प्रवस मुख बोचन करे, तेत असे स्नान। रहे स्वस्थ नीरोव तन, सुची रहे इन्छान॥

नावर, बबुधा, धावला, जो खाये मनलाय। पुचाबके कम्बी मिटे, खून खाफ हो बाय।।

> धगर कब्ब है उदर में, मूच विदा हो जान। रस गन्ने का पीजिये, शेबू धदरक साम।।

गरकमचोर दियाग है, तो कर इतना काग। साम सहद के साइवे, नीये हुए बादाग।।

> हरड, बहेडा, बांबसा, चौची नीम मिसोब । चौ इनका सेवन करे, सुन्दर सामा होत ॥

नाय, सम्बाकु डाजडा, जो नहीं करे प्रयोग । इससे डरकर सामते, जांति-मांति के रोग ॥

> हरड, बहेडा, धांबचा, चस में रखो जिलोय। खीटे बारे बांख में, निर्मण ज्योचि होय।।

श्रार्थसमाज बांकनेर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

धार्मसमाज बाकनेर (विल्ली) का ३३ वा वाधिकोत्सव २ ३ मार्च १६८५ को धारमन्त सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

धार्यवागाय बांकनेर (विश्ली) का ३३ वा वाधिकोत्यव हुगाँत्वाछ के वाध खम्मल हुखा। उत्तव का प्रारम्भ बृहद् यज के वाध हुखा। यज के बहुता वे प॰ वेवेन्द्र जाव शास्त्री। स्वामी धमृताम्मत्र वी महाराज की घम्पलता में "वेव वम्मेलन" हुखा। आण्यों ने निक्तम प्रतिवोधिता (विश्वस—स्वामी द्वानस्त्र तरस्वती)त्वा धाषयु-प्रतिवोधिता (विषय—धार्यवागाय का पार्थ कावक्ष) में उत्त्वाह के वाध प्राप्त विचय। निक्रमण प्रतिवोधिता के विश्वना वे देवकाल्य प्रवाद, कुलवीय कुमार तथा रावेख कुमार और माच्या प्रतिवोधिता में प्राप्त काव्य, प्रवेद्धित कुम्मति के प्रतिवेद्ध के प्रत्य प्रवाद, हितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त किया। य॰ धावानस्य वो अवनीक ने 'विश्वक लैक्टने' द्वारा धायंवस्त्र के विद्यातों का नामिक विश्वमत्र किया। युवकों से वगठन की प्रावता यन बहुत्यमें राता के किए विधिन्त लेक-विद्यातिताबों का धायोजन किया गया। वृत्त प्रतिवोधिताधों से ब्रारा की श्रवास में प्राप्तीय, राष्ट्रीय व धन्यराष्ट्रीय स्तर के विश्वाओं युवकों ने पान निया। विश्वेदा विवासियों का विवरण व्याव वा प्रवार है—

- १ बाली बाल शूटिंग--प्रथम--प्रिसस्पोर्टस बसब नई दिल्ली । द्वितीय--सिंहल स्पोर्टस बसब, देवली ।
- २ कबड्ढी सीनियर (राष्ट्रीय) प्रथम--एल०एस० न० २ स्कूल, नरेसा वितीय --विल्ली सन्नि सेमा सेवा

६ कुरती--२१ कि० ते ७४ कि० तक के बचन की कुरितयों ने कबय स्वानन्त, नवीन, जुतीक, तीरेक तबकरण, पुरशीक्त, रमेश किनोड बीरविंद्ध तथा युवकीर अध्य स्वान तर रहे तथा लोकेल अध्यक्षका, सतीय, रमेश, बीरेव्द, विबय, विदेव, अध्यक्षित, प्रवच तथा क्वत्रकान ने क्षत्र (दिवी स्वान प्रान्त किया। ११०० मीरव-सी तौब से प्रशोक पराया, समन्दरित्व, पुरेन्द्र कुमार काथ प्रवम, दितीब तथा तृतीय स्वान पर रहे। सर्वधी विधित कुमार जैन, स्वानन्द विद्व, वालीवाल), सुरीक, नरेक तथा दुरेन्द्र क्वता का कब्द्री का बेक प्रवक्तीय था।



'धार्य पुषक सम्मेशन' भी विधा प्रकाश केटी की प्रभ्यकता में सम्मन हुया।
विद्धी भी ने प्रपने कर कमलों द्वारा विजेताची को साकर्षक पुरस्कारों से सम्मानित
किया। प्रायतमान के उत्सव में इतनी बड़ी तस्या में पुषकों के सोत्साह गाग लेने
की उन्होंने मूरि-मूरि प्रयाश की। धन्तररिष्ट्रीय पुता वर्ष मनाए जाने की सही दिखा
में इसे एक सही कम नतावा। दानवीर सेटी भी ने धार्यसमाय को मारह सी स्पर्व का पुष्प बान दिया। धार्यसमाय बोकनेर के प्रभान की मारह सार्व ने सभी को हास्कि बनवाद दिया।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

"प्रार्थसभाक सबूर विद्वार का तृतीय वाधिकोत्सव रविवार दिनाक १० मार्च ८१ को प्रात ८-२० बचे से दोपहुर १-०० बचे तक समारोहपूर्वक मनाया गया ।

(स्थान पाकिट तृतीय शापिन सेन्टर के सामने)

वितर्वे आर्थकमान के सन्द प्रतिष्ठित विद्वानों के प्रवचन हुए तथा धार्य प्रति-विविध सभा के स्वनोपवेशक के मचर भजन भी हुए ।

> भववीय ठाकुर दत्त सन्ना (मन्त्री)

देशान्तर प्रचार के लिए प्रचारकों की श्रावश्यकता

उपरोक्त शीर्षक से एक विज्ञान्ति वस अनवरी मास में आर्यसमाब की पत्रि-काम्रो में प्रकाशित की गई थी, जिसके उत्तर में कुछ पत्र हमें प्राप्त हुए हैं। देशान्तर प्रचार के कार्य में एसे उच्च शिक्षित सज्जनों को वरीयता दी जायगी जो धार्यसमाज के संगठन को शक्तिशाली बना नहीं। इन प्रचारको को विवेशों की सामाजिक व राजनीतिक परिस्थितियों के अनुकृत प्रचार प्रणाली को अपनाते हुए आर्यसमाज के सगठन को नई दिशा देना साप्ताहिक सत्सग और आर्थ पर्व-पद्रति का आन कराना. धार्य बीर दल व महिला संबठन की नीव डालना धार्य साहित्य के स्वाध्याय की पेरणा देना, बार्य शिक्षण सस्याओं ने ब्रध्यापको एव छात्र-छात्राक्षों को वैदिक वर्म के मुल सिदातो का परिचय देना और समाचार पत्र रेडियो, टैलिविजन के माध्यम से जन-सामान्य को धार्यसमाज के सिदातों का ज्ञान कराना होगा। एक देश में अथवा उस क्षेत्र में कम से कम एक वध का समय देना अपेक्षित है । सार्वदेशिक सभा अपने निर्देशन एवस धनशासन ने यह कार्य करायगी। कालान्तर में विश्व के सभी आगों में धार्यसमाज के कार्य का विस्तार करना, देशान्तर की आर्यसमात्री व प्रतिनिधि सभाग्री से निकट सम्बन्ध स्थापित करना तथा आर्यसमाज के अनुकृत विश्व संस्थाओं से अपने मन्तव्य को पहुँचाना, हमारी दीर्घकालीन योजना का सहय है। इसकी प्रथम कही के रूप मे कुछ बोम्य मार्य जनो की सेवाए इस कार्य में ली जायेंगी।

इन्सुक महानुषायों को पत्र व्यवहार के लिए हम पुन प्रवस्त दे रहे हैं। प्रयोग वावेवन पत्र में वे धरानी मानु, वैकिक मोन्यता, भाषाओं का ज्ञान, सार्यसमाक से सम्बन्ध, अचार कार्य का स्वपुत्रक, अकावनों की सुधी एवस सन्य सार्वपत्रक खान-कारियों का विकास के को कार्य करें। स्वप्नेयों आप का सम्बन्धा त्यान प्रतिवादों है। भारत समया वैद्यान्तर के तीन ऐसे प्रमुख सार्य बनों का नाम और पद्या जी विवादों को सार्विक कार्यों के विवय में भवी माति वानते हो। यह भी सुध्यत करने का कच्ट करें कि कितात समय हस कार्य में दे बकते हैं। सभी महानुनावों को सपने प्रयम्भ पत्र में हैं पूर्ण विवय में देना योग्य होता। सामा है देशान्तर प्रचार ने सहस्रोग प्रदान करने हें पुष्ट क्यूड सतुनुवाब स्थना सहस्रोग प्रसान करें।

> भवबीय डा॰ सानन्त प्रकास उपमत्री सभा एव सयोवक—देशान्तर प्रवार समिति

आर्यंसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली द्वारा होली मिलनोत्सव सम्पन्न

सार्य समाज हुनुवान रोड के तत्वावधान में ७ मार्च १६०६ को प्रात ६ हे १२ बने तक क्या.द स्वेयर काशीवाड़ी मार्च महि दिख्ली में बढ़ उत्तर हु एव प्रामिक रीति है जमावा गया। इस लेज में रहने वाले सरकारी प्रक्रिकारिया एवं डांग स्मानतोहर लोहिएत हुस्पत्राक के बाक्टरों ने इसमें तोरसांह मार्च किया। कार्यक्रम यह से प्रारम्भ हुसा, किर स्वामी स्वच्यानन्द को के मगहर गीत एव प्रकात हुए। श्री प० क्य किशोर हास्त्री ने होली के सहस्य को बताते हुए कहा कि यह एक प्रविक सीर मेल दिलाय का स्वीहार है। हमें सब मेद मार्च मुलाकर सोर मन पुराव को मुलकर सक को वने काला वाहिए समुख्य-मनुष्य में मेद सामन्त्र सामा सामान के ने काला वाहिए समुख्य-मनुष्य में मेद सामने वाली उन्हें मेन कीर समस्य विचारों में को छोड़ देना वाहिए। इस लोज के बच्चों ने भी सुन्दर मचन एक पीत गाये। इस लाज की एक सीरिय्यन करें एव इस सामस्य सामें के समस्य मी स्वीविच्छन के प्रथान डांट एस० के विनोवा ने सामस्यक्रम करने एव इस सामस्य सामें के स्वरित्यार सामें करने पर इस सामस्य सामें करने एव इस सामस्य मार्च के स्वर्ग की सरसाम करने एक इस सामस्य मार्च के सम्बन्ध की सरसार सामें के स्वरित्यार सामें का स्वत्यवार किया।

(के॰ एस॰ भाटिया) मन्त्री

वानप्रस्थ दीक्षा

मार्थसमान नारायण विहार के वाविकोत्सव पर प्रसिद्ध समाजसेवी भी दीनानाक गुप्ता एव उनकी वर्मपत्नी श्रीमती साविजी देवी ने "वानप्रस्व" ग्रह्सा किया। इस ग्रवसर पर सैकडो स्त्री पुरुष उपस्थित थे।

चतर्वेद शतक यज्ञ

वार्षसमान रानी बाव के काँठ कार्यकर्ता मी इम्प्यवन्त्र गुप्त के निवास १००/११ रेसदे कालीती, बकूर बस्ती में त है र मार्च तक चतुर्वर उत्तक प्रश्न सम्मन्त्र हुसा । वक के ब्रह्मा त्याची वीचनानस्य वीचे । तैकडों स्त्री गुप्तों ने गत्र एव प्रत्यवन का स्रान्त्र विचा । इत स्ववहर एर की कुम्लक्त गुप्त ने सपने पीके नामकरस्य एर ११ स्वयं सार्थस्यक्तेष्ठ के लिए प्रदान किए। संगोजक तुसतीवास मस्त्रीमा

आर्य जगत् के समाचार

गुरुकुल महाविद्यालय ततारपुर के लिए अपील

वज्ञशासा जिसका शिसान्यास शिरोमिए। प्रायं प्रतिनिधि समा के प्रधान श्री रामकोषाम कामवासे ने किया वा यह ग्रभी प्रपूरी है।

१ खालाबार क्या २ विचालय अवन करा ३ स्रतिथि करा ४ कार्यासन क्या ३ सरसीन अवन, ६ सक वेदमलिय ७ वेद प्रचार वाहुन, = स्नानाबार, ६ ईकी, १० टेम रिकावर नाहुच, ११ गोसाला ।

इन संघ में नवीमय १ लाख र॰ का व्यय माने की सन्तावना है।

प्रात एवं सार्य वैविक यज संस्थल होता है। उसके लिए वी वी-सामन्नी एव खानों की आजनुत्ति का भी सहयोग कर सकते हैं।

 बो सज्बन उक्त योजनाभी ने सहयोग करें ने उनके नाम से ही शंक्यर सवावा जायेगा। ५०१/-देने अववा प्रविक देने वाले सक्त्रनों के नाम भी परवार पर आयेने।

> वन नेवने के लिए स्व वस्त्रिकालन समारकर करून

नुश्वाविष्ठादा --- नुक्कुस महाविकासन वतारपुर हानुब, गाविवावाव (१०००)

चैक अमना बैंक ट्राप्ट एवं मनिआईर द्वारा भेज सकते हैं। निवेदक आचार्व कर्मपाल

निर्वाचन सम्पन्न

४-३-५५ सोमबार, दौवान हाल मे वैदप्रिय सुवीका झानन्द की खब्बकता में वर्षा का पुनाव सर्वेश्वस्मति से सम्पन्त हो गया।

and a great and a development			
प्रवाना उपप्रवाना	सरला मेहता सुत्रीला सामन्द	सहमत्रिणी उपमत्रिणी	कृष्णा नश्दा शकुन्तका दीक्षित
उपप्रवाना —	प्रेमशील	,,	चन्द्रकता
,	शकुन्तला प्रार्था	कोवाध्यका	वारा वैद
,	शास्ति देवी मलिक	बह "—	सत्या वैव
सङ्खामत्रिणी	प्रकास सार्या	, , —	कृष्णा उक्सान

आर्य कवि सम्मेलन

कार्यवामान सबर बाजार ने वर्मवीर प० लेकराम के बिलदान दिवस के उपलब्ध में २४-२-६६ को आर्थ किंव सम्मेलन का बायोजन किया गया जिलने जी उपलब्धन में १५-६९ को कार्य किंव विकार को व्याप्त की बाद कि जहानुमानों ने पर लेकराम की के बीचन के प्रेरणादायक प्रसर्गों की काव्य गठ के हारा प्रस्तुत करते हुए उन समर निल्दानी के प्रपत्नी सादर कदाजिल समर्पत की। सम्पूर्ण कार्यक्रम के मुक्बारशी ला० किशोरीसास की के सुम्यास से १६००) की बनराणि की साम कम में प्राप्त हुई सारा सायोजन प्रेरणात्यद एवं सफल रहा।

बाचार्यं रतीन्द्र बात्रेय

वार्षिकोत्सव आर्यसमाज नरेला

आपको जानकर प्रति हुने होगा कि धापके धार्यसमाज नरेला का ११ वां वार्षिक उत्तक विमाक १० व ११ मार्च १८-११ को बढी प्रभावन से मनावा जा रहा है। इस धनवर पर लागु, सम्बोधान, केन्द्रीय नेता एक सहुर सब्बोधकेयक पर्भार रहे हैं। वर्ष साम उठाएँ।

धानन्य कुमार (सम्मी)

आर्येसमाज हजारी बाग मे आर्येवीर दख प्रशिक्षण शिविर

खमस्त आर्थ वीरो को सूचित किया जाता है कि वितांक ११, नई से ३० मई १६८६ तक एक आर्थ कोर वल प्रशिक्षण विविद हवारी वाद आर्थसंत्रज विद्वार में लगावा जा रहा है। आप अधिक से अधिक तस्त्राते जात केर प्रशिक्षण अपना करे। ताव ही तभी समार्थी के सकाशा एक्स भिकारियों से निवेदन है कि विहार कर की प्रयोक आर्थसमात्र से कम से कम र आर्थ पुक्क समस्य इस शिविट में भेजें।

बस्तुत वही एक मात्र रचनात्मक पक्ष है जिबके द्वारा धार्वकमाओं में वैविक सिद्धान्तों से परिचत युवकों को धमसर कर साथ धानन्तित होकर विद्वार राज्य में सार्यकमाय के बोरव की रक्षा कर सकते हैं।

वासदिवाकर हस-प्रचान सवालक

महात्मा वेदभिक्षु । जयन्ती समारोह

दवानस्य सस्वान भीर हिन्दू रहा। समिति के सस्वापक स्वर्गीय महारमा वेद-शिक्षु वी का १७ वो जन्म दिवस वेद मन्तिर (इवाहीमपुर गाँव) मे १४ मार्च छे १७ मार्च तक मनाया जायेगा।

चमारीह १४ मार्च को प्रात - बचे बजुबँद गरासण यस से प्रारम्स होगा। इसकी पूर्णाहिति १७ मार्च को प्रात १० बचे होगी। १४ और १६ मार्च को यह यस प्रात - बचे से हुमा करेवा। १६ मार्च को दोगहर बाद दो बचे कार्यकर्तामां की तेवल बीर हिन्दू रसा सम्मेसन होना। १७ मार्च को पूर्णाहिति के तुरस्त बाद सादे बस बचे नहारमा वेदनिज् बचनती सभा होनी जिससे स्वर्गीय महारमा ची को बढावांसमा मेंट की बार्येश।

वार्षिकोत्सव स्चना

हुरुकुत महाविधालय ततारपुर (हायुर) जि॰ वास्त्रियायाय का वार्षिकोरखय १६ से १व नार्य तक वडे यूमनाम से अनावा जा रहा है। जिसमें बारत वर्ष के उच्चकोटि के विद्वान एव बार्यनता रखार रहे हैं।

धन्यक्ष चन्द्रपानं सिंह

आर्यसमाज पुल बंगश का निर्वाचन

दिनाकं १०-२-मंद की साथें बनाज का वार्षिकं समिवेकमं की बुवसं निसीर मी(बुरपूर्व प्रमान) की सम्मासता में सम्मान हुया। विश्वने निम्म प्रवाधिकारी चूने वसे »

ह नी वायनपंत्र जो प्रचान ३ वी कुत्यनभाध वी उपस्पत्ती २ ,, पुत्रक क्रिकोर वी उपप्रधान ६ ,, रहेस क्रुशार वी ,, ३ वा॰ वेंचराज वी ,, ७ ,, हरीयान्त्र की सीधान्यक्र ४ वी बुदेशजुनार वी जन्मी व ,, चुनाम वी प्रकार्य वपसीय रहेक्ट्रकार उपन्तर्भ

वार्षिकोत्सव आर्यसमाज नजफगढ

धार्यवानाच नवफान्ह नहें दिल्ली-४३ वा १३ वां वार्षिकीत्वान दिलांच १९, २३, २४ नाचे १८०१ को नवी पूर्णान के मामा वा खा है। विक में वाले जनह के युप्तित्व बार्य विद्यान् बन्धानी महीचेदान तथा नवजीपदेशन चर्चार खे हैं।

सिन्धी आर्य सम्मेलन

सभी आर्थ बन्तुमों को सुनकर यह प्रसम्मता होगी कि, दिवाक १७, १८, १६

धिक भारतीय सिंधी आर्थ कमा के द्वारा पुणे में आंधेकमाज पिव्यरी कें तीन दिन का सिंधी आर्थ सम्मेकन मनाया जा रहा है।

(१) सम्मेनन करने का वर्षस्य झाएस में मिनना (२) एकीकरण (६) विचारों का आवान प्रचान करना (४) कुरीविधों से खुटकारा (६) नैविक वर्ग की जानकारी जीर राज्यक का विचास करना । निवेदक सन्त्री

आयंसमाज रक्सील का वार्षिक चुनाव

 बाब दिनांक ११-२-०३ को खार्यडमाव रखनैल १० वम्मारण के धस्तरक वचा का वार्षिक पुराव सी धिवसकर प्रवाद धार्यडमाव सवाही की बस्मलवा में: सम्मन्त हुमा। विसक्षे निम्मलिबित बविकारी एवं त्वस्थ पुने करे।

१ प्रवान─ श्री ग्रोमप्रकाश/राजपास

२. मन्त्री— की० के० शास्त्री

कोवाध्यक्ष— रामनारायण राम सोक्षिया

गग्त्री सार्वसमास रक्तीक



प्रसन्न रहे (१९७२ का केप)

कहा कि मैं यपने पुन, पौनो और प्रपोजों से बेलवा हैं, चित्ता में नहीं रहता। बड़ी नेद बीयांद्रम का रहता है। सद ने कहा है, स्वर्ग भीर कहीं नहीं इस पुन्ते पर हो है। ऋत्वेद १०-२४-४१ नन कहता है— बहुँच स्त्र मा वियोद्य विस्वतायुर्वस्तुतम्। अफीळत्यों पुनैनेस्तृमिसींदमानी स्वे गृहै।।

भी नोयो, इस ससार से रहो, झलग मत होसो हमेशा पुत्रों भीर पौत्रों के साथ बेसते हुए सपनी सायु वितासो।

विक्ला और धप्रसम्तता से मनुष्य का मानस्क हाय होता है। उत्तराह, स्कृति, सान्ति मौर धन्ति नच्ट हो बाति है, व्यक्ति, स्कृति, सान्ति मौर धन्ति नच्ट हो बाति है। उत्तराह, स्कृति, स्वान्त्र मौर प्रदेश के सीवार्य की ध्वस्ता है। यह रोगी केवल स्वयं ही पूर्व को स्वति की सी प्रदा और हितिन्तकों को नी ध्वप्ता और बता है। इतिन्त्र पत्र में प्रमान की वर्ष है—'है प्रमा, हम खदा प्रसम्त हैं, प्रानित्त रहें, 'पुनना' रहें। ऐस्वयं के स्वार्थ मन्त्र में केवल सही मांच है कि है सानस्क के सार्थ मानस्त मार के स्वत्र में सी प्रस्त में सी प्रस्तु हमें भी सी रवकी लिए हमें 'पुनना' बनायो। हम सानत्त्र रहे।

यह जीवन केवल फूलों की शःबा नहीं, इसमें काटें भी हैं। इन काटों को हटाने का मार्ग हैं 'सुमना' होकर प्रापे वढो-प्रापे बढों। प्रसन्नता तुन्हारा दरण करेगी।

€ ए ई-१, बोबरा मिर्जापुर

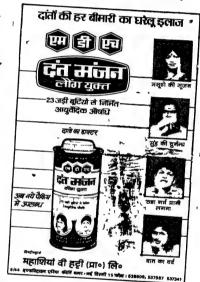
प्रदूषण समस्या (पृष्ठ ६ का शेष)

ससार के विश को हरने से सकता प्राप्त होगी। महिष का कवन है कि — "बब बादु और दृष्टि जल को विवाबने वाला सब हुगेन्व मनुष्यों के ही निजित्त स्थ उत्पन्न होता है तो जबका निवास करना भी जनको मोग्य है।" और निवा-रण का उनाय है हवन-यज्ञ। महिष् का सुस्पन्ट कथन है कि "बह कार्य प्राय किसी प्रकार के सिख नहीं हो जकता। यस सनवर है सार्यच्यास हवन-यज्ञ के प्रचार और प्रसार द्वारा विश्व का विश्व हरने के लिए सांगे साथे। बहि सार्य-समाब ऐसा कर सका तो फिर विश्व कर मे सैनों में बड़े बेर नहीं कहेगी। पर यह कार्य कहने ने नहीं करने के होता।

> भागं निवास, चन्द्र नकर, मुराबाबाद-२४४०३२

प्रसिद्ध फ मी गायक महेन्द्र कपूर द्वारा महर्षि दयानन्द की अमर कहानी सन्ध्या—यन शान्तिप्रकरण, स्विस्तवाचन आदि प्रसिद्ध भवनोपदेशको— सत्यपात पर्र क, ओमपकाश वर्मा, पन्नाताल पीय्च, सोहननाल पर्यक, शियाजवती जी व नवींचम भवनो के कैसेट्स तथा प्रबुद्धव विद्यालयार के भवनो का सम्माप अ आय ममाज व जन्य भी वत्न स क्वेट्स क मूचीपत्र के लिए लिखे क्वेटिं

14 मारिट-॥, एस-॥ अशाक विहार, वेहली-52 फोन 7118326, 744170 देनेक्स ३१-4623 AKC IN वैदिक कैसेट ममा कार्यालय, १९ हनुमान रोड पर भी उपसन्ध है।



तुम भारत के भाग्य विधाता थे

रबयिता इ शकुनबन्द गुप्त, विद्यावाधस्पति

तुम स्वराज के ज्यावयाता ये प्राष्ट्रितक राष्ट्र के जिन्मदाता वे भारत के मान्य दिवाता वे वे पार्ष्ट्र के मान्य के निर्माता के वेदपंच के प्रदर्शक के प्रत्यों के प्रतिरोधी के प्रतिरोधी के प्रतिरोधी के प्रतिरोधी के

तुमने पुकराष्ट्रको राष्ट्रमावा वी पीवियों को नई प्राचा वी पर्म की नई परिमाण की पूर खर की निरावा की नये मारत की पुष्टि की सर्वेत्र झान की बुध्दि की केंद्र कर पुन्यारा पुण्यान स्वयु व्यानक तुम के माराष्ट्र



श्रार्य जगत की शान 200 बिस्तर वाले निर्माणाधीन

नेत्र चिकित्सालय

(अनमानित लागत दो करोड रुपये) के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि ग्रायकर ग्रधिनियम जी० ६० के श्रतगंत कर मुक्त होगी।

सारा दान चैक/मनीग्रार्डर/वैक ड्रास्ट द्वारा मत्री, माता चन्ननदेवी आर्य धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय, बी-१ जनकपुरी, नई-दिल्ली-५८ के पते पर भेजा जाए। दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर पर अंकित किए जाएगे।

निवेदक

राजनोपास ग्रासकारे महादाय पर्मपास योगप्रकास कार्य तंरकक चिकित्सासय प्रवान, दिल्ली water. एवं प्रवान, सार्थार वार्य प्रतिनिधि प्रार्थ केन्द्रीय ाशय पूर्णीलांस बेरि॰ इ॰

सीक्य से . बहाकियां वो हटी प्रा० लिमिटेड , १/४४ कीतिनगर, श्रीकोमिक क्षेत्र, वई विल्ली-११००१

स्वास्थ्य

उत्तम

वार्य सन्देश साप्ताहिक पत्रिका के ग्राहक बने, भीर बनाएँ क्योकि यह पत्रिका-

- (१) वैदिक मान्यताओं को उजागर करती है।
- (२) भायों (हिन्दुमों) की महान परम्पराभों की बाद दिलाती है।
- (३) महर्षि दयानन्द की वैचारिक क्रांति से झारम बेतना जानूत करती है।
- (४) मारतीय सस्कृति के मूले बिसरै प्रसगों, महापुरुषों तथा भादर्श सस्कारों को प्रकाश में लाती है।
- (४) ऋषि, मुनि, तपस्वी माप्तविद्वानों की वाली का बोध कराती है।
- (६) परनेश्वर की पवित्र वासी बेट का जोवनीप्रयोगी नकुर सन्देख-लाती है।
- (७) नये लेखकों, कवियों, चिन्तकों, प्रतिमाशाली विद्वानों, साहित्य सेवियो को प्रोत्साहन देती है।
- (द) धार्मिक, सामाजिक और भाष्यात्मिक ज्योति से मन-मन्दिर को प्रकाशित करती है।
- (ध) बेद, उपवेद, दर्शन, उपनिषद, स्मृति, कल्प सूत्र, सारण्यक, बाह्यराग्रन्य गीता, रामायरा, नीति, ऐतिहासिक, बमूल्य आर्थ प्रन्थों, जिन को प्रथिकांश लोगों ने पढ़ा तो क्या देखा भी नहीं, समस्त भाष्यारिमक जगत् को जिन बन्यो पर सदा गर्व रहेगा उन के बहुमूल्य मोती हुए सप्ताह बटोर कर भापकी मजलो गर देती है।
- -(१०) अप्एव देर न कोजिए बाज ही अपना वार्षिक चन्दा २० स्पर्धे भेजिये, वर्ष मे अनेक विशेषाक तथा महर्षि दयानन्द निर्वास्त्र शताब्दी पर प्रकाशित, ५० रुपये मूल्य की मध्य मनोहारी स्मा-रिकानि शूलकदी जायेगी।

सम्पादक : प्रार्थ-सन्देश

लिए कांगडी फार्मेसी.

हरिद्वार की औषधियां

सेवत करें

शाला कार्यालय-६३, गली राजा केरारमाथ, कीन । २६१८३८ षायड़ी वाबार, विल्ली-६



अोरम् स्टिस

दिल्ली आर्य प्रतिनिध सभा का साप्ताहिक पत्र

मृत्य एक प्रति ५० पैसे वय ६ श्रक २०

रविवार ७ धप्रैल १६ ३

द्यार्थं सबस्सर १९६०-४३०८४

चैव २०४०

दयान ना न -- १६१

देश की स्वाधीनता व एकता के लिए आर्यसमाज ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है —हंसराज भारद्वाज आर्यसमाज स्थापना-दिवस पर आर्य नेताओं का उद्बोधन

द्यार्थ केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्त्वावधान मे २४ मार्च १६८५ को द्यार्यसमाज का ११०वा स्थापना-दिवस समारोह विट्ठल भाई पटेल हाउस के प्रागण में दिल्ली की सभी व्यार्यसमाजी एव शिक्षरण सस्यामी द्वारा बह बमघाम से मनाया गया। इस ग्रवसर पर बोलते हए समा रोह के मुस्य ग्रतिथि केन्द्रीय राज्य विवि मत्री श्री हमराज भारद्वाज ने अपने उदगार व्यक्त करते हुए कहा कि ग्राज देश की एकताव ग्रन्वडता को हमे हर कीमत पर बनाये रखना चाहिए नेयादेश को बाहरी खतरो से सामना करने के लिए हमें एक जुट होकर कार्य करना है। इस श्वदर्भ मे प्रार्यसमाज ने अपनी महत्त्व-पूर्ण भूमिका निभाई हैं। उन्होंने कहा कि भारत ऋषि मूनियों की पुण्य भूमि है। समय-समय पर यहा महापुरुषो ने जन्म लिया है। इसी भारत भूमि पर आर्यसमाज के सस्थापक महिंब दयानन्द ने जन्म लिया और उन्होने धार्यसमाज की स्थापना कर देश में फैली विभिन्न कुरीतियो का डटकर विरोध

दिल्ली के मनापौर श्री महेन्द्र सिह साथी ने कहा कि जब मैं भारत की आजादी के श्रान्दोलन का इति-हास पढता हूतों मेरे सामने यह

कल ही मुक्ते एक चिट्टी मिती है जिसमें लेलक ने अपना नाम नो दिया है नेकिन पता नहीं दिया। उट चिन्टी में मुक्तसे कहा गया है कि १०



धायसमाज स्थापना दिवस पर बोसत हुए थी मह इसिंह साथी मच मंबैठ वार्ये से श्री रामगोपाल शालवान केन्द्रीय राज्यसन्त्री श्री हसराज भारद्वाज अ वल राज सचीक श्री सोमनाय स्परवाह श्री क्षितीश नुमार श्री सहाशय घमणल जी।

एकदम स्पष्ट हो जाता है कि उस इतिहास में से यदि आर्थसमाज के इतिहास को निकाल दिया जाय तो ऐसा लगता है कि जसे आजादी के आन्दोलन को ही निकाल दिया हो। उन्होंने साव विद्वल होकर कहा कि स्रप्रेल तक तुम यह बना दो कि तम हिन्दुचो के साथ हो या मिलो के माथ क्योंकि १० स्रप्रेन के बाद हमने हिन्दुओं का साथ देने वाले सिलो को सरम करने का फैसला कर लिया है। पता न होने से मैं उस चिट्ठी के लेलक को जवाब तो नहीं दे नक परन्तु इस मावजित्त सभा पांचा कि नमें हिन्दु के साथ है ना निश्चों के साथ है ना निश्चों के साथ है ना के साथ है ने के साथ है ने के साथ मही ने को साथ मही ने को साथ मही ने को मा निश्चों के साथ मही ने को साथ मही ने को के साथ मही ने को साथ मही ने को साथ के साथ कि साथ मही ने को साथ की साथ की साथ की साथ मही है नो साथ मही के साथ की साथ की साथ की साथ की साथ मही की साथ मही है नो सी हान से मही है साथ की साथ की साथ मही है ना से मही है साथ की साथ मही है ना से मही है साथ की साथ की

उन्होन पजाव की समस्या व चर्चात ते हुए नहा कि जब म अ बादियों ने अपनी अन्याववाद व भावना फनायों है नव स पजा व दिकास क्का गया है। नहना संप्ता के खेत उजण्यों है। श्रीर कारवा वन्द्र हो गये हैं। पजाव के नाम प वन्द्र को गोली से अपना इन्द्र पूरे करने वालों ने जहां सारे देश क अपने विरुद्ध कर लिया है वहा पजाइ

(जेष पृष्ठ १० पर)

पंजाब समस्या पर श्री शालवाले प्रधानमंत्री जी से मिले

सावैदेशिक प्रामं प्रतिनिधि समा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले साज प्रात प्रधानमन्त्री श्री राजीव बाजी से मिले। उन्होंने प्रधानमत्त्री बी को पजान की समस्या थीर उस्त्र पर हिंक्ड जनता के विभारों से उन्हें स्वगत कराया। बारचोत के दौरान श्री शालवाले ने पंजाब में वातावरणा के सुकान के लिए प्रकालों की मंति वहीं के नजरवन्द हिन्दू नेताओं

किया।

को भी अविलम्ब रिहा करने की मौगकी।

श्री सालवाने ने सिरोमिए। गुर-द्वारा प्रवन्धक कमेटी के बन से गुर-द्वारों में शरनास्त्र के ट्रेनिंग देने के प्रावधान तथा द्वाल में चण्डीगढ़ धादि मे हुए डिसास्मक चटनाधों की धीर भी प्रधानमन्त्री भी का ध्यान भाइच्ट करते हुए साबह किवा कि (बैच पूळ शे पर)

डा. हरिप्रकाश ने गुरुकुल कांगड़ी के मुख्याधिष्ठाता पद का कार्यभार संभाला

सावंदेशिक धार्य प्रतिनिधि सभा के प्रवान श्री रामगोपाल शालवाले श्री घोमप्रकाश त्यागी (मृत्री) तथा श्री खिनवदानेन्द शास्त्री, प० क्रमाशी वेद विद्यालकार गुरुकुल कांगशी हरिखार में पधारे। श्री रामगोपाल शालवाले घपने साथियों के साथ सीधे गुरुकुल कागशी फार्मेशी गए बहाँ पहले ही संकडों कार्यकर्ता एवं कमवारों उनकी प्रतीक्षा कर रहे

थे। प्रम एव स्दमाव के वातावरण मे उक्त भवसर पर डा॰ हरिप्रकाश ने गुरुकुल कागडी फामेंसी के व्यव-सायाच्यक्ष पद से त्यागपत्र दिया तथा भी बलवेद आपूर्वेदालकार को फामेंसी के व्यवसायाध्यक्ष पद पर नियुक्त किया गया।

फार्मेसी के हाल मे सैकडो कर्म चारी एव मिचकारियो के मध्य श्री (शेष पृष्ठ दो पर)

सत्संग वाटिका

प्रस्तुत सत्र मर्थादय न द काश्य स विक प्रिय था। ग्रन सदप्रथम उन्हीं के किय ग्रन प्रस्तुत कर रहे।

प्रस्तुन सत्न प्राप्तनापरक है घीर प्राथनाका अथप्राय लागयाचना या मागना कर निया करते हैं हमारी द्रष्टि मे यह भय यथा । नहीं प्राथना का वण्स्त विक प्रथ तो चाहना है मागना नही। चाहने भीर मागने म जो अन्तर है उसे हृदयगम कर लने संबह तथ्य प्रमाणित हो जायेगा । मानने में मानने वाले का किसा वस्तु की प्राप्ति मे ग्रामी माग प्रत्तुत करने के भ्रतिक्ति भ य कुछ नही करना होना। हा मागन मे बाल एव दोन भाव लाने झवस्य ही झवस्यक । यदि ऐसान किया जाये नो फिर उसका प्रमाव भी नहीं पड़ता। कि तूचाइने वे झपने पण पुरुषात की परम भाव यकता हवा करती है। बस्तुन प्राथना है ही -- सपने पुण पूरुवाय के पश्चात सहायता की इच्छाकरने का नन्म । साथ ही याचना मे जहा मन मे हीन भाव उत्पन्न होन सगत ? वहा चाहने म ऐस बात नही होती प्रिवित उसमे ता बाल्मतीय तथा भात्म दिवस जागृत हो उठता 🦥 । कवि वर रहाम ने क्यासुदर कहा ह—

> रहिमन याचकता गहेै व छोट ह्वै जात ।

अय न मागन संबद्धा व्यक्ति भी छोटा हो जाना है। प्रायना—मानव गांधा न प्रायना को याचना के धाय में कभी स्वी कार नहीं किया उनका कथन है कि प्रायन करना याचना करना नहीं। वह

आध्यात्म सुधा

ले॰ यशपाल ग्रायं बन्धु

ग्रो३म विश्वानि देव सविनदुरिनानि गरासुव । यद्भद्र तन्न श्रासुव ॥ यजु०३०।३



नो ग्रत्माका पुरुष है। वैसे प्राप्ताका धामी प्रक्रव्याच स्थात उत्कृष्ट प्रयोजन के लिए पुरुषाथ सदैव अपक्षित हमाही करता है। प० चनुपति जो ठीक नी जिलते हैं कि उपासकों की परिभाषा मे प्रायना भीर प्रतिका प्याय हैं। हाथ पसारे हैं तो हाथ हिलाने भी स्वय होंगे। (ब्रष्टब्य-सच्या रहस्य पृष्ठ २५) इसी प्रकार प० लेकराम सन्य मुसाफिर सपनी सुत्रसिद्ध पुस्तक कुलियात बाय मुसाफिर में लिखते हैं कि — सच्ची प्राथना को सकल्प कहते है और सकल्प सुम बुखो को धारताकरने की इच्छाका कहते हैं। जबकि म्हर्षि दयानाद का कथन है कि ---अपने पूर्ण पुरुषाय के उपरान्त उत्तम कमाको सिद्धि के लिए परमेश्वर वा किसी सामध्य वाले अनुष्य के सह य नेने को प्राथना कहते हैं। (बार्यो व्यय रस्त माला)स्पष्ट है कि उपरोक्त किसी भी महामनीषि ने प्रायमा का श्रन याचना करना नहीं माना। वस्तुत अब धपने पूगा पुरुषाय के पश्चात व्यक्ति यक कर चर हो जाता वधीर फिरभ काय की पति दिस्ता नही देनातो वह ॰ याकुल हा उठता ै। उस ०याक्लता भर ८ णामे सत करण से जो पुकार उठती है यहास चा प्राथना है डा॰ रामचरण सन्त क धनु सार मनोवितान का इंग्लिस प्राथना एक प्रकाश "मसकत ३ जीवन मंसकत या सूचनाए ह हमें ग्राग बढाती है। हम चुपचाप ग्रपन की जसा कड़ते हैं या मानते जाते हैं वैसे ही निरतर बनते जात है। हमारी प्राथन ए भी एक हमारी ग्रानती ही भावनाए हमारे पुस्त से मिकलकर हमारे गुप्त मन का निर्माण करता हैं। (कत्याण प्राथनाक पृष्ठ ३८३)

यही भाव लक्र अब हम इस मन पर विचार करते है तो चाहने वाली बात भीर भापुष्ट हो जाती है। क्यों कि इस मत्र में जो दुगणों क दूर करने की प्राथना की गई हे उसमें यदि हुम स्वय दुगरा त्याने का कोई प्रयस्त ही न कर तो फिर यह हमारी प्राप्ता किस काम की ? जब हम स्वय दुग लो को त्यानने एव सदगुणो को बारण करने - रहेलए प्रवत्नशील होते हैं दौर किर में म सफल नहीं हो पाते, दुनण हठात हमें भा नर घेर सेते हैं तब भ्याकुले हो उठना स्वामाविक है। भौर व्याकुसता भरे इन क्षराों में न्मारे अन्त करण ने जो पवित्र पुकार उठगी अस्ती वास्तविक प्राथना होगी । भीर बहि ऐसा नहीं हभा तो फिर प्राचना एक आन्दिक न्यायाम बनकर ही रह वायेगी । बदि हम अपने प्यारे प्रभू से दुगुणों धीर दृव्यसनी को नर करने की प्राचना करते हैं तो हमे स्वय भी उसक लिए कुछ न कुछ पुरुपाथ करना होगा। इसीलिए हम प्राथना को बाहना कहते हैं। यदि हमारी बाह होगी तो फिर हम भी दुगलो और दुव्यसनो को दूर करने भीर सद्गुली को बारण करने के लिए खबस्यमेव प्रयत्न करेंगे। फिर प्रपने पुरवाय भीर ईंग्वर की सहा वता में हमारा मनोरख धवदयमेव सिद्ध होगा इसमे किचिन्मात्र भी सदेह नही

यह मत्र एक व्यावहारिकता की धोर सकेत कर रहा है। वह यह है कि प्रथम हमें दुवुचों और दुब्बंसनो को त्यागना है फिर सद्युणी को बारण करना । यह ध्रत्यन्त •्यावहारिक बात है । प्रथम **ह**म अपने मलिन पात्रों को स्व छ करते हैं फिर उनमे स्वादिष्ठ पदाय डालते हैं। यदि हम ने पात्र स्वच्छा नहीं निया तो उसमे डाला दबा खादा पद व भी मिनन हो जायेगा। धन व्यावहारिकना न्सी मे है कि प्रथम हम अपने अपत करण की पवित्र कर उसकी मिलनता को दूर करें फिर सदगुणो को चारण कर। यटि अत्रम भन् प्राप्त न भी कर सके केवल दूरित की हीं दूर करने ने सफल हो गये तो भी यह बहुत बडी उपलब्धि होयी। किं तुज्ब प्रमुकी कृपा और अपने प्रवास से दूरित भी दूर हो गये भीर भद्र भी प्राप्त हो जाये तो फिर कहना ही क्या? मत्र भी प्रथम दूरित को दूर करने की बात कहता है पक्कात भद्र प्राप्ति की।

इस मत्र की एक विशेषता और भी है। वह यह कि यह सब बहुवचन से है। एक अकेला दुरित नहीं त्याने हम सभी दरित को त्याग कर सदगुणो को बारण कर। एक भकेला उन्नति को प्राप्त हो भौर केव सारा समाज भवनति को तौ काम नही चलता। एक भद्र हा और शेष सभद्र तो भी नहीं। इसीलिए सत्र से बहु-वचन का प्रयोग होकर यह कहा गया है कि हम सक दुगण पुरुषसनो भीर दुस्ती से छूट कर सद्गुण सुकम धौर स्वभाव तवा पदार्थों को प्राप्त हो । भागसमाज का नियम भी है कि प्रत्यक को प्रपनी ही उनति में सतुष्ट नहीं होना चाहिए। प्रतः हम सब मिलकर दुगणो दुव्यभनो को त्यागने भौर सद्गुर्गों नो प्राप्त करने के लिए पुरुषाथ करें और सविताओं कि क्प्त प्ररक देव है उससे सहायता की इच्छाकर इसी मे हमारा कल्याण है।

> - बाय निवास चारनवर मुरादाबाद १४४०३२

हरिप्रवाश न कार्यभार (प्रष्ट १ का शव)

(१५० रका बध)
रामगोपान जो चालवान ने चालखा
की कि प्राज से चाठ हरिप्रकाश
गृठक कागरी के मुद्राधिकराना
पद पर धामीन होगे। हाने सभी
कमचारियों और ध्रिमिनियों से
श्री बनदेव जी को भी पूग मन्योग
हेने की ध्रिमाना जी मरबाह गर्
कल कागरी विद्वविद्यालय के कल
पति श्रा वनभद्र कमार हजा तथा
मत्यान मिद्रासालकार भी वहाँ
पहन वार् में पहन स्रा स्वाह स्र

पामसी से श्री समा प्रधान जी के साथ उपरोक्त सभी लाग गुरुकल कागी के कायात्य गए वनौ पर श्री बलग्रद कुमार हुवा ने गुरुकुल कागी के मुख्याधिष्टाना के पद से प्रधान (यागपत्र दे दिया धीर उनके स्थान पर डाठ निराक्त को गरु कुल कागी का मुख्याधिष्टाना नियुक्त किया गया। उरु हरिप्रकाश ने अपने पद का चार्ज ग्रहए। कर लिया है।

प्रकार की मूचनाए या सकत ही हैं।

इस श्रवसर पर संभी महानु भावो ने डा॰ हिंग्जिकाशः के मुख्या घिष्ठातापद ग्रहुण कन्ने पर श्रपनी राभकामनाए प्रकटकी। प्रनारविभाग सावदेशिक सभा दिल्ली

पजाब समस्या

(पृष्ठ १ क नष) पज व न्मस्थाके सम्बन्ध मे पजाब के विशिष्ट हिन्दुम्रोसे भी प्रधान मन्त्री जीकाविचार विमश्चकरना म्रावन्यक है।

श्रा शाल्वाले ने बाद में एक प्रसंबद यमें कहा कि प्रधानमन्त्री जाने उट ग्राध्वासन दिया है कि सरकार प्रजाब के नजरबन्द हिंदुकी को रिहाकरने पर विचारकर रही है।

श्री घालवाल ने यह भी कहा कि प्रधानम त्री जो ने श्राव्वासन दिया है कि जुनाव के समय जिन नीतियों के बोचगा की धी सरकार उससे पाछ नहीं हरेगी। उन्होंने यह भी बताया कि पजाब के हिन्तुजों का एक घिडटमण्डल थी। प्रधान मन्त्रों जो स्मित्तर प्रधान स्थित स्पष्ट करेगा। प्रधानमन्त्री जो ने खिछटमण्डल से मिलने की स्थीकृति दे दी है। प्रचार विभात सार्व दिस्सी सार्व स्थाप विभाव सार्व सिंही सार्व विभाव सार्व सिंही सार्व विभाव सार्व सिंही सार्व विभाव सार्व सिंही

🖈 वचनामृत 🖈

"ईसाइय्त और परिचमी सम्यता के मुख्य हमले से हिन्दुस्तानियों को सुवधान करने का सेहरा यदि किमी व्यक्ति के सिर बार्षिने का क्ष्मीभाग्य प्राप्त हो तो स्वामो दयानन्द जी की ब्रोर इशारा किया जा सकता है। १६वी सदों में स्वामी दयानन्द जी ने भारत के लिए जो ब्रमूल्य काम किया है जमने हिन्दू जाति के साथ-साथ मुसलमानो तथा श्रम्थ धर्मावलम्बियों को भी लाभ पहुँचा है।"

--पीर मोहम्मद यूनुस

'महर्षि दयानन्द भारतमाता क उन प्रसिद्ध और उच्च घान्यग्यो मे से थे, जिनका नाम समार क इतिहास मे सदैव चमकते हए सिनारो की नरह प्रकाशित रहेगा। वे भाग्नमाता के उन सपूतो म से है जिनक व्यक्तित्र पर जिनना भी प्रभिमान किया जाए थोडा है। नपोलियन भौर सिकन्दर जैमे ग्रनेक सम्राट एव विजेना समार म हो चुक है, परन्तु स्वामी जी उन सब से बढकर थे।'

--खदोजा बेगम एम ३ए०

सम्पादकीय

भिडरावाले के उत्तराधिकारी बनने की होड़

पजाब को समस्या धव केवल धकाली दल और सरकार की समस्या नहीं रह गई है, सारे देश का हिल इसके साथ जुडा हुआ है। जब कुछ समय पूज उपवादियों और पृथक्तावादियों ने देश की किलता और सजकरता को चुनोतों दी भी तब सारा राष्ट्र जितित हो उठा था। पजाब भारत का सीमावतीं राज्य है और सगर यहा कोई गढ़वड़ होती है इसका सबस सम्य राज्यों पर भी सबस्य गढ़ता है। प्रधानमन्त्री का यह कथन यथाय है। प्रकाल नेताओं का जारम्य देश हैं। उनकी साम धारणा वन गई है गएका स्थान्यों नेता को का साम धारणा वन गई है गएका सान्योंनत की वनकियों से दरकर मुक लायेगी। उनके दवान में आकर सरकार का मुकना समस्य उत्तावीं नेता है। वेसे भी समक्षीते का माग दिखाई पढ़ने से पूर्व ही उप्रवादी कोई न कोई धमाका करके वातावरण विवादत कर देते हैं।

साबने प्रीर विचार करने पर दिखायों यह देता है पजाब सकट की जड़ में राजनतिक प्रतिब्रिन्दता है। इसी से राजनतिक वात-वरण में जहर चुन रहा है, घोषों-सच्ची नात नहीं कही जातो। नित नयी माग शर्तें समभीतें के लिए पेश की बातों रही हैं। पजाब को जनता की समस्या देश के ब्रन्थ राज्यों की जनता की समस्या जसी ही है। परन्तु साम्प्रदायिक भाषार पर राजनीति चलाने का परिणाम यह हुआ पजाब दो देशों के वट मया है। जहां गुटबन्दों हो, साम्प्र-दायिकता का बोलवाला है। बहां पर शान्ति भीर स्थिरता को कस्पना नहीं की जा सकती।

व्यव अनरेल सिंह जिंदरावाले वे इन पूरूप दो गुटो से सलग प्रपना गुट बाडा कर लिया या, तब तखबडी ने उसका समर्वन किया वा सीर श्री लॉथोबाल ने उसका विरोध करने के बजाय उससे भी बढ बडकर उस जक भाषण देने शुरू कर दिये थे। पर-तु अब जनरेल मिह मिंबरपानों तो नहीं है पर अब ये नेता उनके उसरापिकारों बनने की होड़े से शामिल है। मिंबरपानों को शहीद करार दे रहें हैं। मुंबरपानों को शहीद करार दे रहें हैं। मुंबरपाना जीवित है कहकर लिखकर पजाब की प्रामीण जनता को बरगला रहे हैं। इसर त्ववडों कह रहे हैं सरकार पहले झानवर्ष महित है करकार मिंबरपाना जीवित है कहकर लिखकर पजाब की प्रामीण जनता को बरगला रहे हैं। इसर त्ववडों कह रहे हैं सरकार पहले झानवर्ष माहित सरवात स्वीकार करे तब बातजीत का आयेगी। जलवर 'आवजर्ष' में उन्होंने एक करवात्य मुक्ताधिक कराया है। जिसमें वह तिस्तों के लिए अलग विधान अलग अच्छा अलग सरकार की भीग करते हैं। उनके एक साथी ने कहा कि २५ वच के लिए अला का बातान तिस्तों के इसे कि स्वाप्त स्व के लिए अलग का बातान तिस्तों के इसे कि स्व मार की से से की से के आधार पर चुनाव कराए आप सतत्व यह है कि अमाल के साथ हो साथ है। साव से मार्ग लियानों पर जो कुछ मिल जाए उसे स्वीकार कर लो परन्तु धमने बस के की निगाहों से आकल सर होने दो। र

उप्रवादी फिर श्रपने बिलों से बाहर निकलने लगे हैं

बत शुरू सही ध्रकाली नता पजाब की जनता को उत्त जित करन में लगे हैं। फ्लानियों स किसी भने की प्राथा नहीं करनी चाहिए। वह सम्भौता करना नहीं चाहते क्योंकि वह जानते हैं रि कोई भी सम्भौता किया तो जिन लोगों को तरह नरह के सब्ज बाग ख्लाकर उन्होंने उत्त जित कर रखा है वह उनकी जान के दुश्मन बन्कर सामने था जायों। वेसे भी अकाली उट की नकेल उपवा-दियों के हाथ में है। जब तक उपवाद का इनाज कठोरता से नहीं होगा समस्या मुद्द बाये भागते खडी ही रहेगी। मुद्दम-ली भी चन्हाएंगे राज्य सभा में कहा कि पजाब में उपवादियों को मदद व प्रोत्साहन देने बाले स्वएमनियर व अन्य धमस्वानों में शहन तस्करी करने वाले व उपवादियों को प्रश्चित्र एवं ने वाले विवेदी तस्त्वों की पण्याल का काय जारों है।

हाल ही में कुछ पकरें गये सिक्ष उप्रवादियों से दिल्ली में पूछ-ताछ की गयी तो उन्होंने स्वीकार किया कि पाकिस्तान में विभिन्न कितिरों में प्रशिक्षण प्राप्त २०० उप्रवादी भारत में प्रविष्ट हो गए हैं। प्रवास से जो सबरें था रही हैं उनसे पता चलता है कि पत्रवास के तीन सीमा से लगे जिलो—गुस्सासपुर प्रमृतसर बीर किरोजपुर के साम काने वाली सीमा से गुमराह नीजवानों को पाकिस्तान भेजने का सब्सा बोर-सीम स चल रहा है। कहा जाना है दीनिक कारवाई स पहले लगजग १५०० उप्रवादी भागने में सफल हो गये थे। सम्मवत वे सपने विलो से निकलने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। जैस-जैस पत्राब स सेना हटनी गुरू हुई है, उप्रवादियों की गतिविधि फिर बढती जा रही है।

भारत का भाग्य सक्षक्त योग्य युवा हावों मे है पर यह समय ही बना पायेगा कि हमारे कर्णधार इस मबर से नैया से पान मे कितने कुखल सिद्ध हो पायचे ?

---यशपास सुधांशु

प्रसुव यज्ञम् – यज्ञ का प्रसार करो

लेपर पर वीरसेन वेदश्रमी, वेद विज्ञानाचार्य, वेद सदन, महारानी पथ इन्दौर

(१) वसो पवित्रमसि। यज्ञ पवित्र है। यज्जुर्वेद १।२

यत्रो का प्रचार प्रावस्यक ह तथा ग्राज की परिहिश्ता यत रार श्रावस्यक तथा प्रतिनाय है। ग्राज की सर्वे पोणी ग्रावस्यकता यन ही है क्याकि यह पवि-न्रम्मि— यहान् रिवन्त है परम पविन-कर्ता भी है एक ही प्रकार न नहीं प्रपित् सैक्टो एव सस्त्रों प्रकार से पविनकर्ता है तथा पवित्रता का हेतु है— ऐसा यजुबद कप्रया प्रधान के तुरी नक्त भी कात्रा है। पुन वेद तीसरे सन्त्र भी कहता है—

(२) बसो पवित्रमित सतधारम्। यज्ञ सैकडो प्रकार से पवित्रता करता है। यज्जुर्वेद १।३

यह यह सत्यात सवार वा घारण करने और छिंड करने वाना कमेंहैं। तथा वहीं यह प्रमेन प्रवार के ब्रह्माण्डो का बारण करने और जुड़िका निमित्त मुख वेने बाला है जीता कि—चसी पवित्रमासि कहन्यचारम् यहर्षेद के प्रकार प्रमा के तीसरे पनन में बताया है। वेद ने यह की महान् सामध्य का यहां प्रतिपादन किया है। यह जहां पित्रता समस्त क्यार की ही। गहीं प्रपित्र प्रमेन प्रमार के ब्रह्माण्डो की भी करता है वही "हु माथ साथ प्रमेक प्रकार के हात एवस् प्रसात प्रकार से ससार को पारण भी करता है। म्रत बेद ने कहा -

(३) बायुर्वा सस्ति बायुर्मे देहि। यस सायु प्रदाता है। यसुर्वेद ३।१७

ध्यक्तं ना निवाद देने नानी है हम को वह साद्र प्रतान करे। यह रहाय स्था स्था जीवन गम्त बीवन तम्ब समस्त विक्व में प्रसारित कर देना चाहिए। वर्षमान समय में जीवन मुखु (स यमस प्रमुख्ति ना वरण ने बायुमण्डक ने प्राया पृक्त जीवनीय प्रमुत प्रदाता स्वित का विनास एवं अव मिरतरही खाहि कोर प्राच्यासक स्वयुक्तक विश्वपृक्त को में प्राच्यासक स्वयुक्तक विश्वपृक्त को के सम्बार की नीसों की वृद्धि तीवका से सैसती वा नहीं है। इनसे बचने के लिए

(४) माह्या। यज्ञको कमी मत कोडो । यजु० २।१

इस पविजकर्जा वायु के साथ देख देख न्तरों में फंकन बाने वायु की खुद करने वे ससार को बारण करने बाने उत्तम स्थानों से सुखी को बढ़ाने वार्क यक्ष को यह खोड़ी- प्रवर्त्त यक्ष का अनु उठान प्रतिदिन प्रवस्य करो। ऐसा बैद

का स्पष्ट रस सम्ब्रण मन्त्र में स्नादेश हैं
तथा इसी वेद के मन्त्र में सी पिल-भी
कहकर विज्ञान के प्रकास का हेतु भी
सोर सुर्वं की किरणी में पिसर होन
वाला भी हैं यह भी बताया है यत करोगे
तो यज के विज्ञान का प्रकाश होगा । वह
यज्ञ न ट नहीं हु। मा। मूर्यं का किरणों में
स्थिर होने वाला है। यह भी जात साले सावेदा सीर वायु के साथ देश देशानारं मं भी फैलता है, यह भी सिंद होगा। बायु को शुद्ध करने वाला है यह विज्ञान भी सिंद होगा। वायु को शुद्ध के कारणा विवयं की जीवन देकर भारणा करने वाला है यह भी समूभुत हो जायगा।

(१) प्रवृष्ण के धातक परिस्थाम --

भोपाल के वायु प्रदूषण ने सिद्ध कर दिया है कि उसके श्रमेक प्रकार के दूर्ण िए। म हए भीर उत्तरोत्तर प्रकट हो रहे है। मनुष्य मरे भी बीमार भी पड़। पशुपक्षी, जलीय प्राणी मरे जो बचे उनमें भी न्यूनाचिक विकार हुए ग्रीर हो रहे है। वृक्ष वनस्यति, भ्रन्न, फल शाक स॰जीनष्टहुई विषयुक्त हो गई भीर जिनने सेवन किया उनको रोव न्यूनाधिक हो रहे हैं। गर्भस्थ शिशुधो पर भी धनेक प्रकार के दुष्परिणाम प्रकट होने लगे हैं। य सब क्राभाव पयावरण के दूवित होने से हुए। धत दूषित पर्यावरण के शोधन के लिए विशाल रूप से यज अवस्य करना चाहिए। कारलाने बन्द नही हो सकते। मोटर कार ट्रक, रेल, ह्वाई बहाज चलना ब ट नहीं हो सकते हैं। पर्यावरण को शुद्ध पवित्र निर्विष करा के लिए उसम जीवनीय रोग निवारण एव पुष्टि प्रदाता तत्त्वी का प्रसारता यज के द्वारा सरलता से सम्भव है। यत वर्तमान समय मे यज्ञ ही सर्वश्रेष्ठ स्ताय है।

(६) इम यज्ञ नगत ग्राग्ने। ग्राज की पहिचित में यज्ञ को प्रधानतावी। यज्ञु०१।१२

शान के समय में यह के तुमन एवं विज्ञानकुक कर्म को वर्तमान कमन के गारतीय वैशानिक हृदय से समीकार करते हुए भी सार्वजीनक कर ते व्यापार में लाने में अपनी प्रतिष्ठा की हानि अनुषक करते हैं और वैदेशिक वैशानिकों को सोर नार्ग दर्धन की प्रतीका में रहते हैं। वे बो उपाय करें वैशा ही हम भी प्रतुक-रण करें तो यपनी प्रतिष्ठा है। परन्तु ावदेश के वैशानिकों को यह का ज्ञान तही हो। ज्ञारनवादी तो जानते हैं। मारत के वैशानिकों ने हस समय पर्वाचरक के वैशानिकों ने हस समय पर्वाचरक योधन काय में ससार के वैज्ञानिकों का मार्गदर्शन करने में बग्रसर होना चाहिए। इस यज्ञ कार्यकों प्राथमिकता प्रदान करें।

(७) महान बीज्ञानिक महर्षि वयानन्द--

महिंव स्वामी दयानन्त सरस्वती ने समार के महान् उपकार के किर प्राणि-माल के जीवन क लिए यज्ञ करना सर्वि बावञ्यक बताया। पर्यावरमा को शुद्ध करने के लिए और जीवनीय बनान है लिए वायुमाडल को शुद्ध करने, वृष्टि वल ग्रादिकी शद्धितया उमे सुसस्कृत कर समस्त देश देशान्तरो एव पृथिवी बन्तरित्र भौर खुनोक ने फैलाने के लिए लक्षाहुति के यजो का विद्यान किया। अर्थात् एक लाख या अधिक आहुति वाले यज्ञ कुण्ड भौर उनके लिए विविध प्रकार के हञ्यपदार्थों का विधान किया। एसे लक्षाहुति कुण्ड चारचार हाद्य लम्बे, चौडे गहरेतवा २ लाख बाहुतियो के सिए स हाथ के कुण्डो के निर्माण का विघान किया। २ मीटर -३ मीटर लम्बे चौडे कुण्डो से विशास परिसाण में बडे-वड यज्ञ होने चाहिए, तभी पर्यावरता के प्रदूषस्य शान्त होने ।

(=) लकाहृति यज्ञो से शान्ति एव सुक

ये लक्षाहुति कुण्डदैनिक श्रविनहोत्र के लिए नहीं है। किसी बीत योग व इष्टि के लिए नहीं हैं और वोडश संस्कारी के लिए भी नहीं हैं घपितु सार्वभीस प्रदू षित पर्यावरण के नाक तथा प्रमुक्त पर्यावरण बनाने के लिए ही हैं। ऋग्वेद दशम मण्यल के सुक्त ६ व के मन्त्र दसवें एक ग्यारहवें मे ६६ हजार माट्रिक का उल्लेख वृष्टि यज्ञ के लिए हैं । शत पर्वा-बरण शोधन ऋतुसृषार, अवर्षण रोक कर वृद्धि करने, उत्तम कृषि, मेघो की वृद्धि प्रादि के निये बढे-बढे, यज्ञी का करना परम भावस्यक है। इससे भवि वृष्टि धनावृष्टि, तुफान धादि भी शास्त होते । ऐने लक्षाचिकाहृति यज्ञ धनेक स्वानो पर होने चाहिये । एक कुण्ड निर्माण के द्वारा ग्रयना ग्रनेक वडी-बडी कुण्डों मे यज्ञ हो सकते है। परिस्थिति विशेष में ही इनका भागोजन होता है। ग्राज के समय में जब पृथिवी शन्तरिक्ष, सवन प्रदूषण हा प्रदूषण फैल रहे हैं, तो इनका धनुष्ठान करना परम धावस्यक एव हितकारी है। अन्य कोई उपाय है ही नही।

(१) बृतेण वर्षमामति। वक्ताम्मिको मृत ते प्रवण्ड रक्षी। बक्तु० ३।३

सस यज्ञ की व्यन्ति को वृतादि की बाहतियाँ से बढाते हैं। (यजु ३३) यज का प्रधान द्रव्य घृत है। प्रावश्यकता धनु-सार उसमें चार प्रकार के होम द्रव्य सुगन्बत रोग नावार्क, मिष्ट पदार्थ धीर पुष्टिकर्ता पदार्थों की भी बाहिन होती है। ये ही पदार्थ पर्यावरण को निर्विष करते हैं शुद्ध पुष्ट भीर रोगनाशक बनाते हैं। प्रकृति के शेग या उपद्रव गति-वृष्टि धनावृष्टि भाषी तुमान भादि का भी निवारण करते हैं। पृत की मायुर्वेद में विषशामक बताया है। अनेक विष, उपविषो का शोधन वृत दुव, तकादि में होता है। साप काटने पर या सिखवादि विष सा लेने पर वत पिलाकर हो चिकित्सा हमारे देश मे प्रचलित थी धीर है भी। अर्थात जिस प्रकार वत को पिलाने से शरीर निविष हो जाता है उसी प्रकार पर्यावरण के प्रदूषशों के शसनार्थ वायुमण्डल को बृताहृति के घूछ से पूर्ण कर देने स आरथ्यं जनक लाभ धवस्य होगा। पर्यावरण जीवनप्रद बनगा। स्रत यज्ञ परम धावस्यक है। यज्ञान्त के मन्द ने सर्वान्त कामान्समध्य शब्द है। धर्मात्यको से सब कामनाधी की पूर्ति होती है। यही कामना पूर्ति का माब यत्का-मास्ते जुहुमस्तन्नो बस्तु-मन्त्रम है। उससे भी घाहति यज्ञान्त मे है। घत यज्ञ सब कार्यों की सफलता का प्रवल साधन है। ऐसासुनिध्यित विचार सब ने ग्रहण कर यज्ञानुष्ठान करने में सम्रहर होना चाहिए।

श्रुति सुधा

सुस्रदा जीवनवा, कल्याणी, अमृत है वेदो की वाणी ।

दुको का भजन करती है, मानस का रबन करती है।

भातिन पास फटकने देती, जनमनकोन सटकने देती।

सब युरितो की नाशक है यह, मंगल मार्च प्रकाशक है यह ।

जीवन मर्यादा - विधि इसमें, सद् विकासों की निधि इसमें।

विसने मी श्रृति-सुवा वसी है, उसकी कामा पलट नमी है।

का राणा प्रताप सिंह 'राषा' गन्नीरी एस० ए० पी० एच० की० ५ प्रोफेसकं काकोनी कैवल (हरि०)

आर्यसमाज के उत्थान के लिए कतिपय सुझाव

लेखक---डा० रघवीर मुमुक्षु

- (१) श्राय सन्यासियो एव वान प्रस्थो का एक ग्ला संयक्त संयठन है जो कि समस्त प्रचार व्यवस्था को समास स । ये प्रचारक केवल निधारित तिथियो मे हा समाज। क उत्सवो धथवा कथायो मेन जाए भपितुएक एक व्यक्ति एक जिल तहसाल प्रयवा एक निश्चित पारींच वाल कुछ नगरो गावो को ल ल सथा योजनाबद्ध दग स वहा क जन जन शे प्रवश करके स्राय व का प्रचार कर। य व्यक्ति बादक चम एव संस्कृति क प्रवाराथ पूर्णतया प्रशिक्षित हो। मोखिक प्रचार क बार्तारक लखन विक्ता यज्ञ श्रध्यापन साहित्य वित रण भाव क द्वारा भा भायसमाज का सन्दब घर घर पहुच सकता ह। सन्यासा एव बानप्रस्य अपन गृहस्य काल क घरा मे रहन का माह खाड द। भारत न समी ऐस बहुत स स्थान ह जहा उनकी महता धावश्यकता है।
- (२) जा लोग बानप्रस्य ध्यवना सन्यास्य बारण नहीं कर सक्क तथा गोलपा ध्यवन अपने बरण कार्यों सानन्य हां पुके हैं एवं स्थान स्थान न्यान्य हां पुके हैं एवं स्थान स्थान प्रहरूर स्थान वार्ष कर कर साम स्थान कर सक्क एवं हा लागा का गायक वग आप स्थान क स्नुत्यान कार्य का स्थान कर स्थान क स्नुत्यान कार्य का साम स्थान क स्नुत्यान कार्य का साम स्थान का सुत्रास्थान या स्थान तथा
- (३) याजनाबद तराक स उपदशक विद्यालयान सम्बद्धासम्बद्धाः स्व चपदश्चक प्रचारक बनन का ट्रोनग दा काय । जिसक अनुसार पौराणिक मुसल मान इसाई बाब जन तथा धन्य नय सम्बदाया क सिद्धाता क पूण जाता विद्वान् तयार । क्यू आए। अन्य सम्प्रदाय वालो का शास्त्राय का चलव दिया जाय। इसके साथ हा वरिक सिखातो क जाता क्ष्यबेखक उन सिखातो का प्रचार करत रहे। किसा भी सास्त्र का नम्भार ज्ञान न करक कहानियो पुटकतो क माध्यम स कुरुद्धेदार भाषा में श्राताक्षी का मनोरजन करने की प्रवा समाप्त होनः चाहिए। उपवेशक बनने से पूज उसी प्रकार की टुनिय वी बाम बैसी कि देवबन्द मे भौसवी बनने क लिए तथा बैसूरमठ मे राम कृष्ण मिलन का प्रभारक बनने के लिए बी॰ए॰ परीक्षापास होने पर भी कई बच तक प्रशिक्षण विया जाता है।
- (४) समाचो तथा समामो का काय देवस साप्ताहिक स्तरत वार्षिकोत्सव तथा सम्मेतनों तक सीमित न प्रकर पूरे

- वय के लिए एक ठोग्न कायक्रम बनाया जाए तथाजन सम्पक्त कियाजाए । वय की समाप्ति पर कायक्रम की पूलता ब्रपू सप्ता सुकार पर विचार कियाजाए ।
- (१) प्रचार का एक सधक माध्यम ह -साहित्य। इस दिगा में ईसाइ कितने मत्त्रचाल है वह इससे ही बाता जा सकता है कि सटकी पर चौराहो पर यहाँ तक कि सायक बरा में जा जाकर य माग साटे साट टूनटों के द्वारा इसाय-त का प्रचार कर रह है। सावसीयक सभा सम्ब्र साहित्य का प्रकाशन करता है किन्तु उसका सपसिला किमी नहीं हो पाती। सावसे पाकस्त्रचार प्रचारण मामी समा सा को तथा व समार्थ चयने से सम्बर्धिय सभी समाजों को प्रनिवास क्य में वह साहित्य केय, जिसका कि उनके सबस्य मा सर्वार तथा देशर साथा में उसका प्रचार भी कर।
- (६) प्रस्थेक धान्दोलन का प्राण उसका युवा शक्ति होती है। राष्ट्राय स्वय सेवक सव ने इस शक्ति को शस्ति मारतीय विद्यार्थी परिषद् के रूप म साय लिया। राजनोतिक क्षेत्र मंभी युवा कारस युश लोकदल सादि के माध्यम सं विभिन्न सगठनो ने इस खक्ति का उपयाग लिया है। श्रायसमाज नंभा भाग कुमार समा भाग युवक परितद भाग वीर दल की स्थापना इसा उद्दय से हुई थी। इन सगठनो मे शक्ति भाषा तभा तो महात्मा हसराज तथा स्वामा श्रद्धान द जैसे लौह पुरुषों का सञ्यक्षता इनको प्राप्त हो सकी। भाग इन सगठनो की शिथिसता के कारण ही गुक्क वक बायसमाज मे नहीं भारहे हैं। जा भायसमाज के लिए चिन्ता का विषय है।
- (७) आयसमाच के साप्ताहिक सत्सनो ने निरम्तर घटती हुई उपस्थिति तया बच्चो एव युवा वय की अनुपरिवति सभी के लिए जिन्ता का विषय है। इसके सिए भावश्यक है कि सत्सगों से प्रीढ दासनिक एव वैदिक व्यास्थानी के साथ साथ बच्चो के लिए रुचिकर सरस-सुबोध कायकम हो तथा उनको इतना क्रियात्मक बनावा जाए कि जिससे युवको के लिए भी वे साकथण का केन्द्र वनें। वैसे यह भी सत्य है कि यदि माता-पिता बच्चो को दो भार वय का होने पर सवादार भाग समाज के सम्पक्त में रक्त तो ऐसा हो नहीं सकता कि बढा होने तक समाज के प्रति उनकी दिव न बनी रहे। मेरी दढ़ बारका है कि माता पिता अपने बच्चो को जैसा वाहें बना सकते हैं। यदि वच्ने प्रवदा बुबक बायसमाब में नहीं वाते हो इसमें

भविक दोय उनके भगिमावको का है।

- (c) यत तथा योग क द्वारा भी हम जन ममुदाय की अम्पसाय का और आकृष्ट कर नकन है। यवि इस शि कियों का बनाद् परित्र नहा निया जा मकता किन्तु विद शायसमाय में कुछ बाबु सन्त बानज व स्त्यासी पाणित्या में शास्त्रत हो नाए तो जन समुदार योग तथा ग्राम्मारिकका के नाम पर टाग रूने वाले प्रकार का नाम पर टाग रूने वाले प्रकार का नाम पर टाग इसी प्रकार का नी जन समुदाय की कहा का के प्रकृ है। खुने स्वानो ग्रामी से स्वका प्रवार करियारों में इसका प्रवार करके हुन जनसमुदाय की कहा समा प्रवार करके हुन जनसमुदाय की समा प्रवार करके हुन जनसमुदाय की समा प्रवार करके हुन जनसमुदाय की
- (१) उत्तर भारत मे तो णियल **श्रवता संशक्त किसी न कि**मी रू^ल मे द्यायसमाज का प्रचार हो ही रहा है। दिन्दि भारत का स्थिति तो भीर मा शोचनीय है। वहा के लिए इसे प्रत्येक प्रान्त की भाषा में प्रचार करने वाले उप देशक तैबार करने होंगे । यह काम सभाको के द्वारा ही सम्भव है। प्रयक प्रात मे उपवेशक विद्यालय सालकर वही की भाषा में झलग झलग प्रातों के लिए झसग उपदे कि तैयार किय जाए अथवा उत्तर भारत सही दक्षिण की भाषाधी 🕏 आजन वाले प्रचारक भेषे जाए । इसी प्रकार प्रत्येक प्रान्त की भाषा में साथ समाज का साहित्य प्रकाशित करके वित रित किया जाए। प्रत्येक प्रान्त में हिन्नी शिक्षण केन्द्र स्रोलकर भी ग्रायममाज वहापर हिन्दी राष्टीय एकतातवा धाय समाच का प्रचार कर सकता है।

सृष्टिका नियम ही महहै कि

विकास के साथ हास भी जुडा रहता ³। ससार का प्रत्यक जड चतन पदाय पदाथ इससे युक्त है। कभी भाय वैदिक वस ही तो ससार मंप्रचलित था भारत षम गुरुषा। काल ऋम से वह वदिक घम भारत पंभी तिरोहित हो गया। यही बात ग्रायममाज के माब है। वह भा फ्लाफुलादेश विदेत मे फला कि त समय के प्रभाव से श्रद्धतान रहा तथा पहल का अपका हासी मुख हा पया। न्स स्थिति क न तो नकारन का अरू रत हैतथान ही इसस रकर हनासाहित होन की बान है। यति बृटिया धनिव य हैं तो उनका इलाज भी सम्भव है। इस लिए ग्रब हमे न तो भ्राम मृदकर विना कोई ठोस कायक्रम बनाए प्रचार मन्न करते रहना चाहिए तथा न त्रुधि से घवराकर साहस छोडकर बैठना चाहिए। ब्याम पराश्यक करना बुरा नहीं किन्त् धनिवाय है।

हम समस्याक्षी पर विचार करने के सिए प्रावत्यकता है कि प्रावस्यान का तेतृवय पण्टित वय तथा उपरोक्त कय रम बार ध्यान है। उम्मेनन उत्तवक माहि करने के साथ साथ हम यातो पर विचार करने क सिए भी कोई बैठक प्रयवा समोध्ये बुलायों जाए। यह गोध्ये चाहु कई दिन चन कि तु कोई न नोई निम्य लक्षर हा रहे। यह वहै कि राम स्वाहु स्वाय उदका उपनार की सम्बन्ध है?

यदि इस तगठित रूप में इस प्रोर तोचें तो काई कारण नहीं कि धायसमाय के प्रति कोंगों को बही बारणा वन जाए जो कि दोनब हु एल्प्यून न इन करने में अवन्य की बी पुम एक प्रग दिस्तवायी पढती है जो स्वय पंजी हुई है। यह धान सनावन प्राय वम को स्वामार्थिक पश्चित दशा में बान के तिए एक प्रट्टी में है जिसे घ प्रसास बहुते हैं मैं च्छ धान को साइसिक समस्ता हू

लहरों में नेया बही जा रही है

प्रकाशबीर व्याकल'-लहरों में नैया बही जा रही है सुनी जा रतो न कही जा है। असूर मन में बैठे असूर दल डरे क्यों यह मार कब से सही जा रही है।। बहुत दूर है देश इतिहास से अब इरगर फठ की ही गही जा रही है। वतन के किनारों पे खतरे बने हैं बचाएकोई जोरही जारहा है। बने मौडर्न तज पुराने चलन को न जाने किंघर ये वही जा रही है। पिला के बहुत दूष हैं नाग पाले मनुष्ता उन्ही से दही जा रही है। हमारे हो हैं जो विधर्मी बनाये बताए पुरानी वही जा रही है वही फूट भीर खुट रक्षक है मक्षक बनी बात बिगडी रही जा रही है। विकट यह समस्या है ज्याकुल कवि की

कोई तुक मिलाई नहीं जा रही है

१८५७ के संग्राम में महर्षि दयानन्द

लेखक-प्रो० सत्यवत सिद्धान्तालकार

मानव का इतिहास मनुष्य द्वारा किए पुनिल के अपनित कि का इतिहान है। वाबता से पुनित कोई बहु राजाओं की हो या व्यक्तियों के हो या व्यक्तियों के ही या व्यक्तियों के ही या व्यक्तियों के विश्व या इतिहास के प्रत्य के त्या इति हम से खुटकारा पाने के लिए मनुष्य पदा में प्रयान करता था रहा है। पूरिप में १४ की तता दी में पोपवाद में मुक्तिय के सिए तूपर ने की विश्व की तह सम की (जा वातत में प्रध्य या) मुक्ति के लिए यो। इत मुक्तार का जुरू कहा जाता है। इतके बाद १७ १० काजा को प्रतिक्रिया प्रौर दसके पत्र हो जाता है। इतके बाद १७ १० काजा की प्रतिक्रिया प्रौर दसके पत्र हो जो हो हो के लिए या की प्रतिक्रिया प्रौर दसके पत्र हो और इती में नह प्रपर्व सिए उपविदेश मान की हूं इते का, नवा मार्च बनाने का जवास करता है।

वित तरह स पूरांप में मानव को गांड तिहा से जगाने के लिए कुपर ने उसे मद्रणा दिवा उसी मद्रार भारत में जो है को ठीक है राम-भारता परेंगे की पूर्व्या में के इस देश के मानव का निकालने के लिए १- जी तथा १६ वी तथी में राजा राममोहन राखा नामी द्यानन्द के शब-पत्र तेल र्राज्य राममोहन राखा नामी द्यानन्द के शब-पत्र तेल र्राज्य राज्य होना माने म

इनम स्वामी व्यानन्द तथा महात्या गाथी को खोडकर बाकी समी समाज मुवारक है। राजा रामसाहन राज का काल १७०२ से ६-२३ का हमानी व्यानन्द का १८०२ से १८२३ तक का १८०२ से १८०२ तक का, रव्यरक्त विवास का काल १८०२ से १८०२ तक का, रव्यरक्त विवास नामी का काल १८२० से १८०२ तक का ही राजा रामसीहन राज ने बाह्य समाज को जावि द्यानन्द ने भावसमाज को, केशवचन्द्र सेन ने प्राचंता समाज को इव्यरक्त को जावि द्यानन्द ने भावसमाज को, केशवचन्द्र सेन ने प्राचंता समाज को इव्यरक्त के के जावि द्यानन्द ने भावसमाज को, केशवचन्द्र सेन ने प्राचंता समाज को इव्यरक्त से सावसमाज को, केशवचन्द्र सेन ने प्राचंता समाज को इव्यरक्त सिंह स्वाप के परिलाग स्वच्य प्राचंता हुए जावन राष्ट्रवर्षी समाज को विटिश दासता सं मुनित के लिए शहिसक धारोलन का मीनिक हिम्पर राष्ट्रवर्षी समाज को विटिश दासता सं मुनित के लिए शहिसक धारोलन का मीनिक हिम्पर राष्ट्रवर्षी

यह काल १८ वी तथा १६ वी शताब्दी का या जिसम भारत में ा नातिकारी लहरों ने ज म लिया। यदो लहरे की सामाजिक क्रांति तथा राष्ट्रवाद की चेतना के जागरण की क्रांति। राजा राममोहन राय केशवचन्द्र सेन तथा ईव्यरचन्द्र िसेसागर का कार्य सामाजिक काति तक सीमित रहा । स्वामी दयानन्द तथा सहारमा गांधी का कार्य सामाजिक नदा राजनैतिक भववा राष्ट्रीय दोनो क्षेत्रो मे छा गर्मा । राजा राममोहन राय न तो अपने भारमचरित्र मे यहा तक लिख दिया कि अ ग्रेजो का शासन इम देश क उत्थान के लिए लाभप्रद सिद्ध होगा। इसके विपरीत ऋषि दयानन्द न ग्रपने ग्रन्थ सत्याथप्रकाश के द वें समुल्लास मे लिला कि कोई किननाही करे परन्तुओं स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। प्रवदा मतमता-तर के बाग्रहरहित बाने भीर पराय का पक्षपाल शन्य प्रजा पर माता पिता के समान कृषा न्याय भी र दया के साथ विदेशिय का राज्य भी पूर्ण सुकादायक नहीं है, स्वामी दयानन्द न अपन यथ ग्रावाभिविनय मे लिखा-- ग्रन्य दश-वाशीर जाहमारे देश मंकभी न हो तथा हम लोग परा-थीन कर्ने, न हो।

स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश आरा प्रणयन १८७४ रेकिया। १० ग्रप्नेन १९७५ में अध्यक्ष ग्रायं- समाज की स्वापना की उनका जन्म १-२४ ो हुआ या। इसका अर्थ यह हुआ कि जन वे ११ वर्ष के ये तज उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश २ चा और तभी आर्थसम् ज की उन्होंने स्थापना की।

इस बीच स्वतन्त्रता प्राप्ति का १०५७ का नदर हो पुका चा। उस समय वे ३३ वर्ष के थे। ४१ वे वर्ष में प्राक्त उन्होंने सम्पार्थप्रकाश रचा, और दश में चणह-बनह धार्यस्वायों की स्वापना में लग गय, इससे पहले की शाजु में वे क्या करते रहे? की प्रवस्ता में ने स्त्रामी विरक्षानल के बराएं। में पहुने, जो स्वय तास्त्रातीन खडाहत क्रांति के सूत्रवार थे। उनके स्वयमकं में रहक रहाती स्वानाल्य महीक खडावनर हो गए क्योंकि बर्चार विरक्षानक स्वय प्रमावलु वे तथाकि स्वानान्य की मार्स खोले देने का काम बन्होंने किया।

इस समय दयानन्द को समम पढ गया कि किसी भी देस की गयामें तथा स्पिर सामादी सामाजिक बातनरण के बाद साती है, सौर सामाजिक जागरण कढिवाय से मुस्ति प्राप्त करने पर हो साप्त होता है। महाच दयानन्द

जब सबत् १६१४ के वर्ष में तोपों के मारे मन्दिर-मूर्तिया ध्रमेंजों ने उड़ादी थी तब भूति कहीं गई थीं? प्रस्तुत वाघेर लोगों ने जितनी बीरता की और लड़े शबूबों को मारा, परन्तु मूर्ति एक मक्की की टौंग भी न तोड़ सकी। जो श्रीकृष्ण के सदय कोई होंगा, तो इनके दुरें उड़ा देता धौर वे भागते फिरते। —स्वामी दयानन्द (सत्यार्थप्रकाक्ष)

स्वामी दवानन्द बच ३३ वय के बुदा थे तब देश में स्वतान्ध्रता प्राप्ति क लिए सन् ४७ की क्रांति हुई। उस क्रांति की फलक सत्यार्थकाग में जो ११४ में प्रकाशिय हुसा पामी जाती है। यहां से समुक्ता १६ में व निकार्त हैं बच सबत् १६१४ के वस में होणों की मार स मन्दिर मूर्तिया बर्यों को ने उद्या दो बी तब मूर्ति कहा गई थीं प्रस्कुत वाथर सोगों ने जितनी नीरता की, धीर सब सबुधों को मारा परन्तु कृति एक सक्की की टाव भी न तोड सबी। जो श्रीकृष्ण के उसका हो होता, तो इनके पुरं उदा देता, धीर के माराने पिरते।

सबत् १६१४ के वर्षका सर्य है सन् १०६०, सर्पात् वह वर्षज्य भारतीय स्वनन्त्रता का प्रथम युद्ध हुसा।

१८५७ के स्वत-त्रता सन्नाम के विषय में यह जिक्कना कि प्रगर उस समय कोई बीक्नच्छा सरीला होता का प्रवेजा के पुरं उबा देता वे नागने फिरते। प्रयेजी की खत्रकामा में रहत हुए १८५० में ऐसा सिलान वाला कोई गाई का लाल हो हा सकत था।

रेमा प्रतीत होता है कि १०५७ सर्थात सपनी ३३ वर्ष तक की यवावस्था तक स्वामी द्यानस्य क सम्मूख सिफ राष्ट्रीयता का ही साना था। पण्डित दीनवधु शास्त्री ने कलकत्ता मे शहर्षि के समवर्ती महागयों के घरों से सामग्री एकत्रित करके महर्षिकी जिस बात्म कथा का सकलन किया है जिसे स्वामी सिन्चवानन्द योगी ने १६७२ मे नारायस बाध्यम नैनीतास से प्रकाशित किया है उसमे स्पष्ट होता है कि १०५७ तक स्वामी दयानन्द देश का भाजादी के लिए ही दिन रात व्यस्त रहते थे। इसी समय उनका द्वितीय बाजीराव पेशवा के दत्तक पुत्र बुन्धु पन्त (नाना साहक) उनके बन्धु धजीमुल्ला ला, नानासाहत्र के गार्ड वासा-साहब, तात्याटोप भीर जगदीशपुर के जमीदार कु बरसिंह से परिचय हुन्ना। इस समय स्वामी दयानस्य न निश्चय किया कि वे लाखो सामुग्नो को सगठित करेंगे। इस जीवन कथा मे ऋषि दयानन्द कहते हैं कि जारो मठो के साधुस्रो ने हमारे सगठन को जगत् मिष्या कहकर टाम दिया।

बह सब कहानी १-५७ की है। १७ का ससस्य कारित का विद्रोह विकल हुझा। इस समझ न्यानी रयानव्य की विचार बारा ने पत्रदा सावा। विषाही विद्रोह के विकस होने के परिणाम स्वक्ष जब स्वामी स्थानव्य को कोई रास्ता नहीं कुछ रहा वा तब १-६० को घपनी ३६ वर्ष का प्रस्ती कात १६ वर्ष की छ पुके बाद से खुक होता है, ब वर्ष व्यामी दिखानक से दीशा नेने के बाद करियाद पर महार करने के लिए कार्य को न में उत्तर पह । इस बीच १८६० से बब के स्वामी विद्यानक क पास पहुंचे १८८३ (जब उनकी मृत्यु हुई) तक के बीच के वर्षों में, उन्होंन की देशव्यापी काम किया उन्हों के खाचार पर भाव हम उन्हें स्वामी न्यानस न कहकर महाँच द्यानक कहते हैं। इस बीच उन्होंने राष्ट्रीय बेदना को जयाग के जिए उचकी धाषारमुत सामाध्यक बेदना को जयाय।

स्वामी विरजानन्द के यहा रहकर स्वामी वयानन्द का इंटिकोण बदला। भाजतक जिन सन्यों के साचार दर हिन्दू वर्गका ढावा सडा हुमाया, उन प्रन्यो का धर्म वह नहीं है जो साधारए। पण्डित करते वे यह गृठमन्त्र ऋषि दयानन्द को स्वामी विरजानन्द से मिला। ऋषि दयानन्द समकते वे कि हिन्दू समाज का ढावा विगडा हुआ है परन्तु भगर यह बांचा वेदो उपनिषदो पुरास्तो के भाषार पर लड़ा है तब न्से कैसे बदनाजा सकता है ? इस देश की जनता सब कुछ छोड सकती थी, धर्म-प्राण होने के कारण वेदों को तो नहीं छोड सकती थी। स्वामी विरजानन्द ने ऋषि दयानन्द को यह सन्त्र दिया कि बेदों के आरथ ही वे नहीं हैं जो किए जाते हैं। झगर बेदों के वे धर्य नहीं वे जो किने जाते वे तन तो ऋषि दयानन्द के हाथ मे हिन्दू समाज के डाचे को बदलने का एक बढाशस्त्र हाथ मे भानमा था। यही कारण है कि ऋषि दयानन्द ने सब देदों का नवीन ब्राप्टकोण से भाष्य किया, भारतीय सस्कृति को मारतीय सस्कृति रखते हए उसकी धन्तरात्मा को सवा दिया।

ऋषि दयानन्द का रूढिवाद पर प्रहार

वर्तमान तृग के भारत के सामाजिक विचारकों में कृषि दयानन पहले व्यक्ति में जिन्होंने सदियों से परम्पया- मत किंदवाद पर कठोर प्रहार किया। धव तक के सामाज्य किला किया हुए से की की सोर देखते थे। जो कुछ चना बार रहा है वही ठेक है, उसी की हमें रक्षा करनी है। कृषि दयानन पीछे तथा आगे सोनो ओर देखते थे। हमारा जो करवा हुने पीछे के साथ वाधता है, ऐसा वासता है कि हमें आगे बढ़ने नही देता वहन तक है। कृषिवाद में किलाविक के का नारा करवार में एस पान पर पर साथ प्रवाद के कि का नारा करवार हमें हमें हम तहने के साथ करवार में स्वात है कि हमें साथ करवार कर साथ साथ हम तहने कि साथ करवार करवार कर साथ हम तहने के साथ करवार करवार हमें हम तहने हम तहने

सरस्वती ने सक्रिय भाग लिया था

से भारत के हर क्षेत्र म हलवल मच गई। पुराने आधार हिलायने, धौर पीछे को लौटने वाला या एक ही जनह साडा-साडा भारत सदियों की नीद छोडकर झाने को कवम साडाने सगा।

(क) धार्मिक क्षेत्र मे रूढिबाद पर प्रहार-सारत का बर्म वेदा से बधा हुआ था। जो कुछ है वेदों के आधार पर है। स्त्रियों को नहीं पढना चाहिए बणव्यवस्था जन्म से होनी चाहिए अदी को यद पढने का अधिकार नहीं दलित वर्ग को समाज के निम्न स्तर में ही दासता के रूप में पड रहना चाहिए देवताची की पूजा करनी चाहिए । यह शब क्यों होना चाहिए क्योंकि वेदों में ऐसा सिखा है। ऋषि वयानन्द ने रुढिबाद पर प्रहार करने के सिए सब से पहला प्रहार वेदों के अथ पर किया। उनका कहना था कि वेटों में बह सब कुछ नहीं लिखा, पण्डित लोग वेदों के बाय औ नहीं सम मते वेदों के व जो अर्थ करते हैं वे अर्थ ठीक नही, गमत हैं। हिन्दू धर्म वद को ईश्वरीय ज्ञान मानता है इस-लिए वेदो मे जो कुछ लिखा या उक्षी को ईएवरीय जान मानताया।ऋषि दयानन्द ने बेदो के प्रकलित द्वार्थों पर प्रहार किया। रुटियाद के वे इतने क्षत्र थे कि वेदी के शब्दी के भी क्दि-मर्चों को मानने से उन्होंने इन्कार कर दिया। वे सस्कृत के समास पण्डित से। निश्वत के सामार पर उन्होंने सिद्ध किया कि वेदों म को शब्द प्रयुक्त हए हैं उनका कोई रूप नहीं है। एक ही शब्द को सनेक सर्थों ने प्रयुक्त किया जाता है। इन्द्र का ग्रय पौराशिक इन्द्र नहीं इन्द्र की निरुक्ति के मनुसार जो भी एववयवान हो बहु इन्द्र कहलाता है। परमेश्वर भी इन्द्र है, राजा भी इन्द्र है क्षभी मानी व्यक्ति भी इन्द्र है। स्थपने पक्ष की पुष्टि मे बन्होने प्राचीन प्रामासिक यन्यो का सहारा निया। ऋषि ब्रह्मानन्त न बढो के रुढिवादी सर्थों पर प्रहार कर सारे अस्टिकोल्य को बटल दिया। जिन मन्त्रों से स्त्रियों का पढना निधित कहा जाता था. उन्हीं से उन्होंने सिख किया कि दिल्ला को सबके समान पढ़ने का मधिकार है जिन गन्त्री क्षे बाग ब्यावस्था जन्म परक कही जाती थी उन्हीं से उन्होंने वता स्थवस्थाको कम परक सिद्ध कर दिया जिन मन्त्रो से हेकी-देवताओं की पूजा की जाती वी उन्हीं मन्त्रों से उन्होंने हे भी देवताओं के स्थान में एक ईश्वर की उपासना का विचान सिद्ध किया। इस युग में ग्रन्थ जो भी सामाजिक विचारक हए उन्होने या तो प इचात्म सस्कृति के प्रभाव मे

साकर नारतीय-सस्कृति को तिलावाल दे दी या रूडिवाद से सपने को मुक्त न कर सके। ऋषि दयानन्द ही एक एमे विचारक वे जिन्होंने जारतीय सस्कृति को स्रोडा भी नहीं, पारचारय सन्कृति को लियासीर उस में डब भी नहीं।

(क) सामाजिक क्षेत्र में कडिवार पर प्रतार — कृषि रयानम्द के विचार का रिटकोश तर्ववा मोसिक रिटकोश मा। वे मूल वनमान तथा मक्षिय को पिछले तथा स्थान से सिमाकर चनना चाहते थे। यही कारण है कि तिक मूल के वाय लिपटे रहते वाले कडिवार का सामाजिक सत्र में मी उन्होंने वहिष्कार क्रिया। समाज में विचरता के यस पातो नहीं ये चरिवांशिता क एकपाती ये।

चनके समय का नमाज नवीनता से न्रता था जो कुछ चला बारहाया सामाजिक-क्षेत्र में उसी को चलाना चाहताया। स्त्री शिक्षाका इस देश में लातमा हो चुका षः बास विवाह विषवा-विवाह निषध दहेज की प्रया-ये सब प्रवाए परस्पराए इस देश में रूढ हो चुकी थी। इनके विद्य बोलने का किसी को साहस नहीं होता था। ऋषि दयानन्द ने इस सब कविवाद को जहा सामिक क्षेत्र से उलाइ फेंका वहां सामाजिक को त्र में से भी इसे निकाल बाहर किया। उन्होंने एक बिल्कुल नवीन रण्टिकीण समाज के सम्मुख रखा ऐसा इष्टिकोण जो पहले से बले झा रहे इच्टिकोश से सबया भिन्न था उससे उरुग वा। इस कास मे जो समाज समारक हुए वे बीरे बीरे समाज का सवार कर रहे थे। ऋषि दशानन्द ने एक ही प्रहार से समाज की सब रूढियो को उत्साह फेका। उन्होने समाज के स्वार का नारा नही सवाया, सामाजिक काति का नारा लयाया। ऋषि दयानन्द के उद्योग का परिस्ताम था कि स्त्रियों के प्रतिसमाब का रुस बदल गया। जहाँ पहले स्त्री गुड़ी नाबीयातामुका राम श्रमापा जाता था वहा कन्याश्री को पढाने के लिए पाठशालाए सोली जाने लगी। ऋषि वसा-नन्द तथा धन्य सामाजिक सुवारको में बाबारभूत भेद यह है कि जहा दूसरों ने हिन्दू वस को समाप्त करने का प्रयतन किया वहाऋषि दयामन्द न हिन्दुशो काहिन्दू रहते हुए उन्हें नवीनता के रग में रम दिया।

उन्होंने हिन्दू धर्मको हिन्दू धम रखते हुए उसकी ग्रन्दर से काबाप टनेका यत्न किया। यही कारणा है कि १६ बी खताब्दी के समकालीन समाज सुधारको मे जितनी बफ्तता उन्हें मिली उतनी सफता प्रान्य किथी को नहीं मिली। ऋषि दयानन्द ने समाब सुवार की जो क्यरेखा बना सी उबी की अकर २० वीं गतान्दी के सामान्दिक तथा राजनीतिक नताकों ने कार्य किया। महास्था गायों के २० वीं गतान्दी के धान्योतन की समझने के लिए ऋषि दया-नद है १ थीं गतान्दी के धान्योतन को समझना धानस्वक है।

(ग) राजनीतिक क्षेत्र मे कडिबाद पर प्रहार — ऋषि द्यानस्क की त्यारास का धावार किवाद का उन्ध्रस्त करना था। राजनीतिक क्षेत्र में विख्ता का उन्ध्रस्त करना था। राजनीतिक क्षेत्र में विख्ता का उत्त वसा धा रहा हो नहीं ेक हैं — यह किवादी विचार बना धा प्राचा । उत्तीन द्यानस्क तथा सामाजिक नेता होत हुए भी क्ष विवार पर प्रहार किया। सरवायप्रकाश में उन्होंने विख्या — "ध्यायोग्यय से सोर सामाजिक नेता होत हुए भी क्ष विवार के सामाजिक से सामाजिक से किया कहा है निवार के सम्य देशों पर राज्य करने की कथा ही न्या कहान किन्तु सामाजिक से भी सामाजिक से सामाजिक

भग्नेजी के प्रसिद्ध वाक्थ Good government is no substitute for self government तथा कवि दया-नन्द के उन्त रन्दर्भ में कोई भेद नहीं है। दादा आई नारौंकी तिलक भावि ने इसी विचार को भागे वडाया। मार्यसमाच से बाहर यह कम सोगो को पता है कि जिस स्वराज्य शाद का प्रयोग कांग्रेस के सब से दादा आई नौरोजी ने १६०६ में किया या उसका प्रयोग रुषि दया-नन्द ने १८७४ में किया था। ऋषि दयानन्द १-४७ के नदर के समय ३३ ३४ वर्ष के नवस्वक वे धीर धगर उस समय उनके वही विचार थे, जो उन्होंने सत्याधप्रकाश से प्रकित किए तो कोई सन्देह नहीं कि वे इस क्रांति के समय अपने उगस कियारी ल रहे होगे। जो है वह ठीक है उसके प्रति विद्रोह नहीं करना-यह भावना सर्विवादी नावना है और इसी रूडिवारा भावना पर ऋषि दानस्ट ने क्षामिक सामाजिक तथा र। जनीतिक ी त म सीधी चाट की ।

(3470)

पंजाब समस्या के समाधान के लिए पंजाब के सभी धार्मिक संगठनों तथा राजनीतिक पार्टियों को विश्वास में लेकर ही सरकार निर्णय करे

दिल्ली १२ मार्च । पजाब समस्या के समाचान करन की दिया में केट सर-कार के बावेख पर चिरोमिंग प्रकाली दक्ष पूर्व चिरोमिंग पुरुद्धारा प्रवम्मक कमेटी के कितप्य नजरवन्द नेताओं की रिद्धाई का स्वागत करते हुए सार्वेदियक धार्य प्रति-विश्व सभा के प्रचान की रामगोपांच सालवाले ने एक वस्तप्य में कहा कि स्वाप्य प्रवाद के स्वाप्य करने के हिए वस्त्र स्वाप्य स्वाप्य के स्वाप्य के स्वाप्य के स्वाप्य के स्वाप्य स्वाप्य में प्रवाद के स्वाप्य स्वाप्य में प्रवाद स्वाप्य स्वाप्य में प्रवाद स्वाप्य स्वाप्य में प्रवाद स्वाप्य स्वाप

श्री सासवासे ने कहा कि सकालियों का वर्तमान नेतृस्व विभावन का उन अध्यक्ति है। बस्ततः प्रधाव की समस्या सभी बैर सकालियों विशेष रूप स मार्थ-समास स्थातन वर्ष, जैन, नामपारी, रावास्त्रामी सार्वि स्थान वर्षे और स्था राजनीतिक वार्टियों को विश्वास से सेक्टर हल की बानों चाहिए। स्थ्याचा सकासियों को सन्तुष्ट करने वाजी नीति स उस प्रात तथा वेशा से सर्वेद प्रधाति की स्थिति बनी रहेगी। रिहा कि येदने नेपाओं को स्थय्ट रूप से हिसक कार्रवाह्यों की निन्दा एव प्रजातन से स्थान रहत विश्वास प्रकट करना जरूरी है।

समाचार पत्र से प्रकाशित धकाशी नेता श्री सुरजिन्दर सिंह डारा प्रकट जारतीय सनिषात के दायरे ने साजि-स्तान दशाने की गाँ<u>द पर टिप्पणी करते</u> हुए भी शालवाले ने सरकार को धागाह पिया कि धकालियों की मौजूदा कार वाइयों से क्यानिएकेलता का स्वरूप लग स्मा समाप्त हो स्वया है। धकालियों को स्मा का समर्थन दिक्की का केवल एक शीकिन वर्ग कर रहा है किन्तु व प्रपमी स्माग के। सारे दिक्की के नाम तथा प्रवास केरहते वाले सम्य वर्गों के नाम पर कार कर रहे हैं जो सवपा सम्बद्धानिक एव धानुचित है। राष्ट्रीय एकता भीर सक्वता के दासरे में सम्बद्ध पात्रों की स्मापकी सह स्मित से ही सरकार प्रवास स्मापकी सह स्मीत से ही सरकार प्रवास स्मापकी स्मापकी

इस सम्बन्ध में समाप्रधान जी ने कहा कि सभी बागरूक बनों नो सक लियो की देश तथा विदेशों में चल रही वितिदिषियों पर कडी नजर रक्षनी चाहिए। प्रचार विसाग

सार्वदेशिक सभा, विल्ली

दिचिगा दिल्ली वेद प्रमार मण्डल द्वारा आर्थसमाज स्थापना दिवस

धार्थसमाज मासवीय नगर मे विकास दिस्ती वेट प्रचार मण्डल दारा धार्यसमाज स्थापना दिवस घूमधाम से सम्पन्न हमा। इस अवतर पर मुख्य स्रतिथि अपी ललिस माकन सासद चौ० सरे-इ सिष्ठ चयरमैन दक्षिण दिल्ली जोन (नगरनियम) की देवन्द्र कुमार सुद सबस्य नगर निगम ने भार्यसमाज भीर महर्षि दयानन्द के उपकारों को स्मरण किया। धायसन्देश के सम्पादक की बक्षपाल सुवास, विद्या-रस्न प॰ मदनमोहम शास्त्री ने अपने बाजस्वी भाषसो से जनता को मत्रमुख क्या तथा वैदिक समें की विशेषताओं महामन्त्री से बनगत कराया। रामसरन दास बाय

महाँव दयानन्द सरस्वती ने ध्रपने प्रन्थों मे जो ग्रानेक इतिहास विवयक मन्तव्य प्रतिपादित किये हैं उनमें मुख्य निम्नलिखित हैं—

- (१) सुष्टि के प्रारम्भ से पात्र सहस्र वह पूज समय पर्यन्त पृषिती पर झायों का साबभोग चक्रवर्ती राज्य रहा। यह दक्षा न्यायम्भुव मनु से शुक्र कर पाण्डव राजा पुषिष्ठिर के समय तक रही।
- (२) जितनों भी विद्या, सस्कृति, विज्ञान न मत मसार में कैसे व सब प्राया-वर्त (मारत) से ही प्रसरित हुए। प्राचीन समय म सवत्र वैदिक धम का प्रचार था, या सन्य देशों के निवासी एसे मतो के समुदायों के विनका प्रादुशन वैदिक धम से हमाया।
- (३) महाबारत पुद्ध व कोरव-गाण्यतो बा काल धन में लगमन पाण हुलार तथ पूर बा। स्वासमुन नमु स पुलिस्टर तक को राजा माराय हे हुए, उनका हरित्रहाण महाबारत खादि प्रत्या में निका है। पुणि-रि के परचाद समेक राजवाों ने मारा के ।वित्य प्रदेशों पर राज्य किया। हमें हि ती, ६-रमस्य के राजधों की महावानी महा ने करणायमक्तामा म वी है, विवक्ते धनुवार बारह्मी बसी के सन्तिम माय में दिख्ली का राज्य प्रथान क्या जिसे प्रस्त कर बहासुटीन सीरी न मारत में धपने प्रमुक्त का सुक्यात किया था।
- (४) प्रायुक्तिक विद्वानों ने भारतीय इतिहास के जिस विधि-कम का प्रतिपादन किया है वह महर्षि को स्वीकार्य नहीं था। सायुक्तिक विद्वान् वदी का रकनाकाल

महर्षि दयानन्द सरस्वती के इतिहास विषयक मन्तव्य और श्रार्यसमाज

सस्यकेतु विद्यालकार

२००० इस्ली पूज तक मानते है। पर महाप बदो को क्योरस्य मानत प। मार्चानक विद्यासकर का महानारक क काल का १००० ईस्तो पूर्व के लक्षम मानत है धोर राजा विक्रमादिस्य के समय का जा पाचनी सरी इस्तो म नानत है, वह बहाव का स्वाकार नहीं था।

(५) प्राचान प्राय सम्मता को उन्नित के दबाज्य शिवस र पर दुने हुए से । प्रतु-ध्य को सम्मता का धादि तुग रावाय हो। या, जब कि वह जवाजी घोर श्रवस्य जीवन अवशत करता था, जोरे-कार प्रमुख्य सम्मता क माग पर प्रप्रसर हुआ, यह जत महाय को स्नाकाय नहीं था। सम्मता घोर सस्कृति के क्षेत्र म व विकाशवाद को नहीं स्मता के।

(६) आयों का आदि निवास स्थान जिलिस्टम (तिन्बत) था, जहा से बाकर वे अन्यत वसे। आय किसी बाति विशेष का नाम नहीं है, और न हो उसस किसी नसस का बोष होता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदो की प्रपौक्षेत्रता, एकेवनरवाद पब्दव्रानी में प्रपौक्षेत्रता, शत्रवम आदि के सम्बन्ध ने बो मन्तव्य प्रतिपादित किये हैं, उन की पुष्टि के लिए धायसमाय के विद्वानी ने पर्याप्त

परिश्वम किया है। पर उनके इतिहास विषयक मन्तव्यों के सत्यासत्य का जाच के लिए या उनक समयन में धभी तक कोई महत्त्वपूरा काय नहीं किया गया। केयल पर अगवद्वा जा बीर एर रिसर्च-स्काजर तथा भाषार्थरामदेव जी नं इस दिशामे काय किया था। प्राचाय जी त भारतका प्राचीन इतिहास तीन खण्डो मे लिखा था जो महर्षि क मन्तन्यों के पूर्णंतया धनुरूप था । इस इतिहास के दो सम्हो के लिसन में मैंने भी प्राचाय जी को सहयोग दियाथा। पर नतः पचासः वर्षों मे न डा० ए० व ० कालिको ने इस सम्बन्ध में कोई काय किया, न गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय न भौर न ही किसी भाग प्रतिनिधि सभा व सावदेशिक भाग प्रतिनिधि समा ने।

सारत ने स्कूबी, कालिजो धौर यूनि-वांतिद्यों में भारत का वो इतिहास पदासा जाता है वह सक्षित के मत्त्रकथी क धनु कर नहां है। सायस्तान की जिल्ला सस्वाभी में भी ऐसा हा इतिहास रखाया बाता है। इसका परिखाम यह ह कि केवल उच्च विकास प्राप्त जोगों से ही नहां, भिष्तु (विकास कथार कथार के कारका) सर्वेदाबारण, जनता से सी इतिहास विषयक ने भारभाए बढ्यूक होती वाती हैं यो महर्षि के मन्तस्थों के मिक्द हैं।

गत वर्षों में विश्व के विविध देशों में प्रातत्त्व सम्बन्धी जो स्रोज हुई है, धौर प्राचीन साहित्य का जो विवेचनात्मक ध्रष्ययन किया गया है, उससे बहुत से ऐसे सकेत व प्रमाश उपमन्ध हुए हु। यो महर्षि के इतिहास विषयक मन्त्रव्यो की पुष्टि करते है । उनसे झात होता है, कि भत्यन्त प्राचीन काल म ईजिप्ट, एशिया माइनर, मध्य एशिया ब्रादि स्वत्र बृदिक वन का प्रभाव विद्यमान या स्रोर दक्षिए पूर्वी एश्चिया के देशी मंभी प्राचीन हिन्दू (थाय) बम की बत्ता थी। विवय दशा धाय राजाची के शासन के प्रमाण भी प्रकाश में भागे है। पर महाव क मन्तन्सा के सत्यासत्य के निराय क लिए सभा बहुत खोज व परिश्रम की बावश्यकता है। यह काय विद्वानों की एक एसा मण्डलां द्वारा किया जाना चाहिए। जा जहा सस्कृत भाषा के पूर्णतया ज्ञाता तथा, प्राचीन भारतीय साहित्य व इतिहास ने पारमत हो, वहा वहा साथ ही जिनमें से धनेक के ञ्च,जसन, रूसी, चीनी व तिव्यतः मादि भी जानते हो। भीर जिन्हे इजिप्ट\$ ग्रीस चीन एशिया नाइनर, ईरान भादि दशों के प्राचीन इतिहास की मी समुचित जानकारी हो। ऐसे विद्वानी द्वारा गम्भीर रूप से शोध के धनन्तर ही महर्षि के इति-हास विषयक मन्तव्यो की पुष्टि कर सकना सम्भव होगा । क्या कोई झाय शिक्षण-सस्था इस महत्त्वपूण काय को घपने हाथ में नेने को उचत है।

त्रार्यसमाज हजूरीबाग श्रीनगर (कश्मीर) का पुनर्निर्माण

—नेत्रपाल शास्त्री

भाप का स्मरण होगा ही कि ७ जून १६८४ को दिन के १०। बचे मात्रसायियों ने भ्रामसभाव हबूरीबाग श्रीनगर को पुलिस के बेसले-वेसले पेट्रोल विश्वककर प्रस्म कर दिया था। परिणाम रवक्य सम्मर्थसमाय को चालीच पैरालीस बास समये की शांत उठानी गयी।

बबद् १६४६ में स्वापित प्रार्थक्रमाव का विध्यास एवं जब्द प्रंत का विद्र वना दिवा विध्या गया । उठ जवन में दिवाद बाठ वर्ष से देवकी बामें पुत्री गाठ-सुक्ता (दवसी तकने का रही है विध्यमें स्कू द्विक क्याएं पद रही हैं। चाठकावा का जबन पुत्रकासब प्रदेशकासम्हर्ण, क्योंबर धारि बन कुस्त प्रस्ता कर दिया।

में आर्थसमाय ने पुरोहित पद पर निरन्तर २६ वर्ष से कार्य कर यहा हूं। आर्थसमाय ने यहता था। सुके और नेरे

परिवार को बीविय क्या देने का योकना-बढ़ बढ़मन रचा बया। बहुत बहुर से रदावों बन्द कर दियं बये और पेट्रोम ब्रिडक कर प्राय बना दो गई। यदि मेरा ब्रोटा सकका कुल्हारी स दरबाजा टोकने मे सफल न होता तो नेरा परिवार सब्स हुए बाता। देव योच से चल सम्बर्ध में पर से बाता देव योच से चल सम्बर्ध में

सांग्न काम्य ने नहीं वासीय हवार स्थवे मृत्य का गेरा म्यांतवाच प्रतकावाव ब्रता। वहा दो क्यांवाधे के वहें का सामान, परेलु सामान विकका मुस्य साझो थे हैं, शस्त्र कर दिया। वाठ वही वक्त सीमित नहीं रहीं, वक्ष मैं क्यां सहित सक्कर राधा वर्षा, तो एक सम्बन्ध हुए को सपने पर से यो। उनके नहां रहते हुए दो दिन ही हुए वे कि सरकार का धीर के थेरे साम्ययसाताओं को विविवतक्ष में चतावनी पत्र प्रेषित किया। निवास वा नेत्रपाल हास्त्री सार्य- क्याको तीहर है, उसके रूने से सार्य- क्याको तीहर है, उसके रूने से सार्य- पत्र के स्वर उसके व्यत्ने के सार्य- अपने कार्य के स्वर उसके सार्य का सार्य का पर्य के सार्य का सार्य का पर्य के सार्य का सार्य का पर्य का तीहर के सार्य का सार्य का पर्य का तीहर के सार्य का सार्य का

धव तो यह बात स्पष्ट हो पुषी है कि पनाव बौर बस्तु काशीर ने बोने बस् नावी उपाय हुए जाने पीक्षे विश्वेषी वीचयों का हुए जा। धव भी देखतीही तत्त्व वक्तिय हैं। ने बारत को उस्तव होने देखता नहीं पाहते। धाव देश यह बोर र चिर पुढ़ा है। देश के मीतर भी जन-नावों की देशा को ही हैं।

बार्वसमाम समने जन्मकास से ही

वेश जाति और यम की राश में तत्पर
पहा है यह निष्काम भाव हे राष्ट्र वेशः
में वसन्न है। सनाचारी मराचारी के
सम्बन्ध न कुम्मे वाली यह एक कारिकारी
दिव्य शासित है। हसलिए यह वर्षव वेशहोहियों की साजी में सटकती रही है।
वर्तमान की बात्मास की महान् सार्थसमान को जातमास की महान् सार्थसमान को जातमास की महान् सार्थसार्थ-सार्थ- सार्थसार्थ-सार्थ- सार्थसार्य-सार्थ- सार्थसार्य-सार्थ- सार्थसार्य-सार्थ- सार्थसार्य-सार्थ- सार्थसार्य-सार्थ- सार्थसार्य-सार्थ- सार्थसार्थ-सार्थ- सार्थसार्थ-सार्थ- सार्थसार्थ-सार्थ- सार्थसार्थ-सार्थ- सार्थसार्थ-सार्थ- सार्थसार्थ-सार्थ- सार्थसार्थ-सार्थ- सार्थ-सार्थसार्थ-सार्थ-सार्थ-सार्थ-सार्थ-सार्थसार्थ-सार्य-सार्थ-सार्थ-सार्थ-सार्थ-सार्थ-सार्थ-सार्थ-सार्थ-सार्थ-सार्य-सार्य-सार्थ-सार्य-सार्थ-सार्य-सार्य-सार्थ-सार्य-सार

"रव साती है हिना ध्यार में विश्व साते के बाद।" इस उक्ति के अनुसार ७ कृग (१६८४) को सार्वक्षाय हुन्यो-बार का कुछ मध्य कर कर देन रर भी सार्यक्षाय के प्रक्रिकारी सेवकान मी हरोत्साहित नहीं हुए। स्वामीय बनवा ने भी बिनके मनोबक को विराने-के मिए और कस्त्रीर से बाग जाने के खिए ही आयवाना को जनावा ना, सार्य-समाज के पुर्णानसंग्र को मिए साम्बर्ग किया, वाथ ही पूर्ण क्ष्मीय का साल्या-

(क्षेत्र पृष्ठ ११ पर)

आर्य जगतके समाचार

श्वार्यसमाज नजफगढ का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

रवनावसिंह प्रवान

शुद्धि सस्कार

सायवनाज मंदिर गोना गोकण माम में दिनाक १७ ३ २५ रिवेचार को एक मुस्लिम स्पार्ट के पुद्धि सरकार एक प्रवारवासी साम प्रवान साय समाज की सप्याता तथा प० केशवदेव जी साम के प्रीरोहित्य में सम्मन हुमा। कहें समातन वैदिक सम्म को शीला देकर कमान भी मणनान दीन तथा शीमती समाजेंकी कोरित किया गया।

> मात्री हरवश लाल पायसमात्र गोकणनाव

श्रार्यसभाज स्थापना दिवस एव नव सवत्सर पर्व

य नवराज विजाजी चौक खडवा जिला पूर्व निवास (अ०४०) में दिवाक २२३ - १ मो नव नवर-तर पर बाय समाज स्वारण—विदस समारीह सनाया गया प्रांत सांव पान बने से प्रगात फेरी निकासी गई बो नायर के फिल मिला गीहरूमों से होसी हुई समाज मिला में समाज्य हुई। व रण्यात च्या व दन गीत के सांव च्यारोहण काय स्वस्त हुआ।

इसी सुभाग्यर पर प्रात साढ नौ से श्री रामच प्रजी प्राय के नाती प्रस्थिति कुमार का सनप्रायन एव मुकाकम (पुण्यन) सस्कार समाज के पुरोहित सुख साम प्राय सि॰ सास्त्री द्वारा सम्पन्न हुसा।

साय ६ वर्षे वे पय प्रवृक्ति अनुसार हुइद यह स्वस्था प्राप्ता के परकात की पानप्रदार को शीमाशी नवती शाल कर पोनीस्वय प्रदेशिक शुक्रपान साथ वे बीगों पर्यों की विशेषता पर सारशांकित बोजस्वी भाषण दिया प्रवाद विश्वपक्ष प्रवृक्त विशेषता कासक्रम स्वाचित पाठ के प्रवृक्तात कासक्रम

बायतमात्र सम्बद्धः

निर्वाचन

भागसमाज मामबीय नगर का वार्षिक जुनाव २ ११८८५ को सब सम्मति से हुआ जिसमे निम्न पदाधि कारी सबसम्मति सं धुने गये

प्रचान भी समसीर मसीन उपप्रधान दा सीघराज का स्त्री श्री भूपिसह गुन्ता भी नन्दताल ग्रोवर महानती—भी ही-धारु जुनेज भी बेटरन भी एन-धारु जुनेज भी बेटरन भी पुरुष द धारु बेटा प्रचारम त्री श्री मूलक द धार को वाध्यक भी चुनीलाल सैंस।

धायसमाख रमेग नगर का वाधिक जुनाव ३३ - ५ को श्री हरियंश व की प्रस्मक्षता ने हुधा जिससे निम्नपदाधि कारी जुने गये।

8	प्रधान	श्रीन दल ल
2	उपत्रधान	श्रीवधगक
?		श्रीभ मसन गुलाटी
8	म त्री	श्री सुरे इपाल महाजन

३ उनमंत्री श्रीसतपालनारग ६ कोपाञ्यक्ष श्रीमदननाल

७ वस्तु भडाराध्यक्ष की हरिवाद - पुस्तकालयाध्यक्ष श्रीकिशनवाद १. नेवानिरीक्षक श्रीजस्वतराय

भायसमाज रमेश नकर सुरेट महाजन सत्री

श्रायसमाज नारायण विहार का साधारण प्रविवेशन तिथि १०३ ८५ को सम्बन्ध हुए और निम्निसिस्त पदावि कारी सवसम्बन्धि से निर्माधिकत पुर। १ प्रधान भी भूपे द्रनाथ से तिथा र मणी के केसाध्यक्ष भी देकपदा सहुवा ३ कोसाध्यक भी दक्षपदाल करणाल

> भवदीय भूपे न सेतिया प्रभान

गुरुकुलकागडी विश्वविद्यालय का ८४वा वार्षिकोत्सव

जुक्कुल कानवी विश्वविद्यालय का गांविकतियान राज वार्ची कांगित इस जब मीर धार्मेल के १४ धार्मेल १८=१ राक बजी पूमकान के मनावा का रहा है। इस सबकर पर वेच विज्ञा राष्ट्रिमारील धार्मित नामनेनानी के बात शांच देशांत खार्मोर का भी आयोजन किया नाम है किस में उपकार के सिका बारणी राजनेता पणार रहे हैं। साल साम इसने सपरितार सारद आयोजन है।

> बैप्टन देशराब सहा॰ मुस्याविष्ठाता मुस्कुन कॉनडी हरिकार



महासम वसपाल को बाक्षीप एवं शुभकाशना वेते हुए श्री रामगो । ल शासवाले एवं श्री लेखित मारून ।

महाशय धर्मपाल जी दीर्घाय हों।

साय के नीय हवा के प्रवन दिल्ली साय प्रतिनिधि दान के वरिष्ठ दश्यक्ष न सारा चनन देवी प्राय ने क पर तब के सम्बद्ध तथा प्रतिद्ध श्यादम थिक सस्यान एम० की० एक० के स्वत्र धिकारी का महायब स्थापना की के ६२ वें बास सहायब स्थापना की के एवं वें बास विद्या पर खनकप्रदी स्थित स्थलतान के सायोजित सन्य स्थापीह से स्थलूता की सायोजित सन्य स्थापीह के स्थलूता के तथा वित्त सन्य स्थापीह के स्थलूता के रायोजित सन्य स्थापीह के स्थलूता के रायोजित सन्य स्थापीह के स्थलूता के सायोजित सन्य स्थापीह के स्थलूता के रायोजित सन्य साराह स्थलूता के

सावदेशिक बाय प्रतिनिधि शधा क प्रचान लाला रामगोपाल शालवाले न सामाजिक कत्य ग के लेज में महाशय चमपाल जी की सवाबो की प्रश्रश्वा करते रहने के लिए सपना प्राधीवॉल विया।

दिल्ली भाग प्रतिनिधि समा क प्रचान भी नुषदेव तथ महामात्री ३० धमपाल ने उन्हें भ्रपनी सनक सना दो भीर कहा कि महाशय खमपाल का बरद हस्त साम जिक सस्य भ्रोपर लम्बे समय तक बना रने जिससे व पलती कूलनी रहे।

भी लिनत माकन ससद सदस्य भी धमदास नास्त्री भी मन्त्रचन्द्र बरवा तास सनक समाज नेवियों ने कहा जा स स्वतः दिशे मनाये जाते हैं भी स्थाने लिए नहीं उत्तरों के लिए श्रीत हैं। महाध्य जी ऐसे ही जिस्स महायुक्यों में से हैं।

इस प्रवसर गर घायसमाजी शिम्लण सरवाधी तथा १० य समाजसेवी सश्वाधी की बोर से महागय जी को पुरुपयुज्य मट किये गये। इस समारह का धायाबन एवं संयोजन टट के महामजी सोम प्रकार साम ने किया

भायस देश परिवर की स्रोर स महाशय समय ल की दीय युके लिए सुमक मनाए

श्रार्थसमाज नरेला का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

धायसमाब नरेना १३ वा वाधिको स्तव "० एव ११ साथ को नदी पुत्रपास के सम्भन हुआ। इस धवसर पर प्रवम विज एक पोधा यात्रा भी निकासी गर्म विजयें हुआरो स्त्री पुरुष शिक्षण सरमाजी के पुत्र पुरुषियां आसीण कात्र के साने समेक कृषि अक्सो ने बढ चढकर सान किया।

राणि को बाग धुषार सम्मेनन हुमा विवने चौक भरत विह सांस्व चौक हीराविह बुक्षुक क बकारी पायद दिल्ली सावि समेक नेताओं ने प्राम सुवार के विष् सुकाव तथा प्राम समस्या को दूर करने के विष् स्वय सी प्रयस्त करने का विकसाय विवास ।

प० देवेन्द्र नाथ शास्त्री एव दिस्त्री समा के मक्तनोपदेशक श्रीप० पुन्नीकास के प्रवचन एवं भजनोपदेशों ने सामीसा जनताको सायसमात्र की झार झाकुच्ट किया।

> संत्री अन्दक्रमार

यार्यसमाज का वाषिक निर्वाचन

आयसमाज बहराईच की साधारण सभा दिनाक १७ साथ ८५ को धाय समाज मदिर बहराईच में हुई जिसमे निम्नलिखित पदाधिकारीमण एवं प्र १२ग सदस्य निर्मलित हुए।

- श्रीकृद्शामाधवसरन प्रभान
- श्रीवरतसिंह मती
- ३ श्रीहरीराम वर्मा कोषाध्यक्ष ४ श्रीजगदाश प्रसाद पुस्तकालयाध्यक्ष

(चरवर्षिष्ठ्) सन्त्री सायसमाज वहराइच



भागसन्देश विशेषाक का विसोधन करते हुए दार्थे श्री एव के एस अथत तथा सभा प्रधान श्री सूर्यदेव।

त्रार्यसन्देश विशेषांक का विमोचन

३१ मार्च। धार्यसमाज दोवान हाल विल्ली में सर्यांवा पुरुशेतम राम के जन्मोत्स्वन पर एक विशेष झार्योचन किया गया। इस धवसर पर सार्वदेशिक आर्थ प्रतिनिक्त सार्व प्रधान श्री रामगीयाँ गालवाले महासन्त्री श्री सोस प्रकाश स्वागी डांग वाचस्पति उपाध्यान, श्री

प० सन्विदानन्य सास्त्री, दिस्ती आर्थे प्रतितिशित सभा के प्रसान श्री सुर्यदेव तथा सत्तरीय कार्येक्षणी श्री एषण के रुप्य भवत उपस्थित थे। उपस्थित विद्वान नेताओं ने औरातचन्द्र की श्रीवन सर्वादाओं पर प्रकास डाला। इस सवसर पर आर्थ-सन्देश के स्वापना दिवस विशेषाक का स्वी एव० के० एस० जगत ने विमोधन निया।

आवश्यक सूचना सावंदेशिक आयंबीर दल शिक्षक प्रशिक्षण शिविर हजारीबाग आयंसमाज मन्दिर में १५ मई से ३० मई ८५ तक

सार्वदेशिक प्रायबीर दल बिहार की भ्रोर से १५ दिनों के लिए भार्यवीर प्रशि-क्षरा शिविर हकारीबाग भागसमाज ने सनाया जा रहा है। इस श्रवसर पर केन्द्र से माननीय प्रचान सचालक श्री बाबदिवाकर हस तथा उप संचासक श्री देववर व्यायामाचार्य एव कई कुछल विश्वक प्रवार रह हैं। विश्वार्थी उनके धनुशासन मे एह कर शासन, व्याचाम, साठी तथा बनेक झारम रसार्थ कला कौसम का ज्ञाम प्राप्त करेंने। प्रार्थ बीर दल सदैव विविदो द्वारा युवको मे परित्र निर्माख एव बनुवादन का पाठ पढाकर याता पिता का सेवक, आज्ञाकारी एव सच्चे देशमक्त नानरिक वैदार करता है। धत सभी बन्धुओं से तथा सभी

धार्वसमाओं से निवेदन है कि धपने धार्यसमाओं से कम से कम ५ युवक स्वक्य मेर्जे।

> नियम निर्देश १. व्येत सुल्क २१) स्परे मात्र ।

२ जोजनादि शुरू नि शुरू रहेगा।
३ भोजने निकाने के लिए ऋतु अनुकूस
यरी, चादर अवस्य ताले। ४ लोटा,
वाली कटोरा तचा कान तक की लाठी।
३ जाको हाफ पैन्ट, सफेस सैनिक कमीक
काला कच्छा भोर रोक्सो गजी चफेर सोचे
तथा बाजन नृते हुरी डोपी लम्बी सीटी,
नोट कुक सार पेन सारि।

द्रष्टच्य — १६ वच क उत्पर भागुके युवक भागकोंगे।

> रामाझा वैरागी सवासक सनदेशिक मार्थेवीर दल, विद्वार

प्रिटिंग पैस कारीगरों की श्रावश्यकता है

हिन्दी-सम्मेजी के कम्मोबीटर और वैन्द्रद प्रिन्टिंग मैंस के कारीवरों (मधीन मैंन) की बीझ सावस्वकता है। सक्का वेतम व सन्य सुविवास ।

सम्पन्नं करें ---

(अवस्थापक) **वृषक कितोर** वैदिक मुद्रशासय, धार्यधमान पुलवसक नवा मोहल्ला, धानाव नामिट दिल्ली-६ दूरप्राव ५१६२४७

श्रार्थो ! गुरुक्कल कांगड़ी हरिदार चलो देहली से स्पेशल बर्से चलॅगी

पुरुकुष कावधी हरिखार का उत्तव रू. १३ १४ वर्षित हरेट र को हो दूर है। इसमें नाग तेने हेडु आये परिवारों की सुविधा के लिए ११-४-६५ राणि १०-२० वर्षे आयंसमाच मन्दिर नामें करिए र केता, नहें हेडुली वे रेप्टर केता, नहें हेडुली से रेप्टर के सामें के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त केता है। माने अवस्था के स्वाप्त केता है। माने अवस्था पहले की माणि पुरुक्त के स्वाप्त करें से सामें अवस्था पहले की माणि पुरुक्त के होगी। चलने वाखे आई-वहन, सम्पर्क करें।

१ श्री प्राशानाव वर्ष, DS, कैसाख कासोनी, नर्ष विस्त्री फोन-६४११६१४ २ श्री वर्षे-क मासवीय, आर्यसमाव मंदिर मार्ग नर्ष विस्त्री, फोन ३४३०१६ ३ टकारा प्रिन्टिंग प्रैस, गुरुद्वारा रोड, गुरुवाव । फोन — २६०७

विशेष---गृडगाव जिला के धार्य परिवार जोला-कुर्मा से बस में बैठ सकेंगे। विमीत

(श्री रामघन्त्र ग्रार्थ प्रवक्तक यात्रा, ४६६ सीमनगर, गुडगांव)

श्राभार

मेरे पुत्र्य भारताची को बाकस्मिक मृत्यु पर जिन बन्चुको तथा सस्याची ने पुत्रे सवेदमा के पत्र भेषे हैं 'बावंसन्वेच' बारा मैं तन सब का हार्विक बाभार व्यक्त करता हूं।

उत्तम बन्द शरर, वानीवक

श्रायसभाज पलवल का वार्षिकोत्सव

वि० १४, १६, १७ मार्च को समा-रोहपूर्वक ननाया बया। इस स्वक्टर पर स्थानी क्यवेदाराज्य, डा॰ अवनोनास की भारतीय, डा॰ प्रधात्तकुमार वैद्याल-कार, मो॰ रालमसार जी तथा मो॰ रतन विह जी के व्याच्यान तथा औ तोहमसास प्रीक एव की गुलाविहिष्ट रावव के सबन हुए।

- (

पाठकों और प्राहकों से निवेदन

बार्यसम्बेश साप्ताहिक बढि मिलने में बापको विसम्ब होता है तो इपया बपना यता चैक करे। बढि बापका यता वस्त बपा है वा बापका यता बरल मया है हो बाप कार्यासय को सुचित करें।
——व्यवस्थापक

आर्यं नेताओं का उद्बोधन '

को सबसे परिच हानि की है। क्या वे पत्राव की पानी की समस्या को लून की दिया बहाकर हल करना चाहते हैं और चण्डीगढ़ खहर का धादमियों की हिंहबर्गे से निर्माण करना चाहते हैं । इसी प्रकार चण्डी- गढ़ खहर पत्राव के नहीं सारे वेश ने बनाया है, इसी प्रकार वेश का सबसे बहा बाख पजाब के रहते वालो ने नहीं बर्लिक सारे देखानी के नहीं बर्लिक सारे देखानी के नहीं बर्लिक सारे देखानी के नहीं बर्लिक सारे देखां खिला है, बचाया है, इसी प्रकार वेश का खबसे बहा बाख पजाब के रहते वालो ने नहीं बर्लिक सारे देखां खिला है, बचाया है । इसर बाज पजाब को जकरत हो तो खारा देख उसके लिए खगाने कि पजाब के हमारे हम बहुके हुए साहयों की सब्दुद्धि हो। पर महर्यों की सुद्धिहां हो हुए साहयों की सुद्धिहां हो।

त्री प० चित्रकुमार चास्त्री ने बताया कि किस प्रकार चृत्रि दयागन्द ने सत्य स्नारण ने दिक कर्ष पर
पर क्षाना के बावरण को हटाकर
उसका बुढि तगा सबुज्यल क्या
प्रकट किया। विस्ती विश्वय विद्यास्व में प्रवक्ता डा० वाचस्पति उपाध्याय ने प्रार्थममास स्थापना-दिवस
को समस्त धार्यसामियों का सन्य
दिवस बताते हुए इसे सामूहिक रूप
यै मनाव का साह्यान किया।

प्रो० बलराज मजोक ने श्री साची के विचारों का समर्थन करते हुए कहा कि पजाब की झसली राज-वानी चच्छोगढ़ नहीं जाहौर होनों चाहिये और हिन्दुओं और सिखों को इसी मांग को लेकर खड़े होना चाहिए। इससे जहा देश में नव चेतना धायेगी वहाँ पजाब समस्या का सामान का रास्ता भी निक-लेगा।

अपने भव्यक्षीय मावरा में सार्व-वैशिक वार्य प्रतिनिधि समा के प्रवान लाला रामगोपाल कालवाके ने कहाकि आ ज के दिन ही महर्षि दयानन्द ने सर्वप्रथम बम्बई में आर्थ समाज की स्थापना की थी। साम ही उन्होने धार्यसमाच के गीरवपूर्ण कार्यों पर प्रकास डालते हुए आयं-जनो से कहा कि आत्महीनता की भावना को छोडकर सन्द्रनिर्माण के कार्य में तन-मन-धन से जुट जाबा चाहिए। यही बार्वसमाज दिवस को मनामे की सार्वकता है। सार्व केन्द्रीय सभा के महामन्त्री श्री सूर्य-देव ने मार्थ सस्वामों से मामे हुए समी पार्यवनो को स्थापना विसस की अभकामनाएँ दी तका आधित आठ के पश्चात् सभा विश्ववित बर्ड 🗈



आर्यसमाज हजूरीबाग (पृष्ठ = का वेष)

सन भी दिया।

सायसमान को विधेषना यही है कि

बहु निर्माल का कर तुप्तानी म तथा
समयों में हो करने पा मार्ग है। स्वयहर्त में महा किसात तथा परनाला के निक्त प्राप्ति की प्राप्ता को भीत प्राप्ता के निक्त प्राप्ति की प्राप्ता को भीर सामसमान के पुत्रानिर्माल का काय प्राप्त न करिया।

स वशीका समा न्लिल। के प्रयान भी

राममाप ल जा शाल बाले और उनके (चमत्री श्री धोमप्रकाश और त्यागी व बस्म कश्मीर बाय प्रतिनिधि सभा के प्रवान श्री डा॰ योगेड कुमार की छास्त्री हासात का जायजा लने के लिए गये थे। तीन दिन रहे। तात्कालिक मुख्य मत्री **की** बनोवत्ति को जानने की भावना से तीचो श्रविकारी मिले थे। उनसे मुख्यमत्री ने कहा था यहां लोग प्रायसमाज को प्रसाद नहीं करता व्याजकरत है इसके ¥माने की। धगर बनाधोगे तो फिर जसा दगे। मुख्यमचा के विद्वपपूरा बाक्यों ने सावदेशिक सभा धौर प्रति निचि सभा के अधिकारियों के सजित साहस को सुददता प्रदान की। उन्होने बायसमाय के पुनर्निर्वाण के लिए प्ररित किया । उनके वहा जाने से स्थानीय कायकर्तांशे का उत्साहद्विगुणित हो गया। भीर जुट गये भायसमाज के निर्माण मे।

बृत बद से घट अरता है यह जिला प्रत्यक्ष अनुमय में धाई। उमाणियों हिंदा है धावमान को चलाकर मरम कर दिवा है धावमान में इस समाचार को बहा भी जिसने पढ़ा वह ही विद्वाल हो का धीर सगन शिल्म का परिचय सहायता के रूप में दाई लाख करने से केकर एक क्यमा केक प्राप्त हुआ है। एक पांच वस सी करनी में राशि से ही सीन वीधाई घट मर चुका है। एक चौचाई कर देशी गेंगा पूज विश्वास है।

सब तक जो निर्माण काय महान हो चुका है ज्यका विवरण इस प्रकार है—पैतालीन कघरे दो बंद हाल ६२ ४३६ प्रीर एक खोटा हाल १४ १६ बनकर तैयार हो बवा है। सास खीवालय, पारस्नानाकोर निर्मित

स्नानागार ग्रीचालय ग्रीर यज्ञशासा २०×१५ बनना लेख रहगया है। इसके सिए दो लाख पिथत्तर हवार रायो की भावस्यकता है।

निर्माण काथ वरावर वन पहा है। इस समय बस्तीय हुआर रुपये का कल है। कल के चढ़ने उतरने का विक्तियाना तो बना ही पहुता है। कर एवं घन के स्रसाय में निर्माण राय की बद नहीं करते। काथ चमता रहता है मजदूरी बद्धी रहुवी है। बाहुर से पन मा जाता है सक्दुरी पहुजारी जती है।

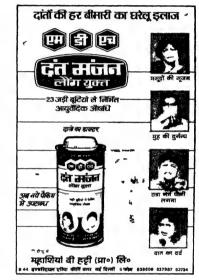
धायसमाज के पुनर्तिम क ते स्थान य हिंदू जनता का मनोबल बढा है। धीर उनके मन म धातक दूर होता का रहा है। धायसमाज के प्रति उनका विस्वास धीर सदा बडी है।

वेदिक कैसेट प्रसिद्ध फिर्म क एउन्द्र वपूर द्वारा महिंप दयानन्द की अमर उत्तानी पदा-दक्त शारान्यकर स्विस्तवाचन आदि पिद्ध गारपदेशवा-सन्यपार पायर अस्प्रकाश वम्म पन्नात्मल पीयव सोहनलाल

पंथक । ज्याकाना जी के सर्वोत्तम भजना के वस्त्रम नथा व रहव ग्लामकार के **ण्डना का सग्रह ।** आय नगा गांधि के किया के स्वीपत्र के निर्णालख

कर्मटोकॉम इन्स्रानिवस (इाण्डवा) फ्रांति 14 मारु 11 फना 11 ज्शाक विहार दहली 52 फान 7118326 744170 दैनकम 31-4623 AKC IN

वैदिक कैसेट सभाक यालिय / मान् रोड पर ना न्यल घह।





श्वार्य जगत् की शान २०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन

नेत्र चिकित्सालय

(अनुमानित नागत दो करोड रूपये) के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि भ्रायकर अधिनियम जी० ६० के अप्तर्गन कर मुक्त होगी।

सारा वान चंक/मनीमार्डर/वक कृष्ट द्वारा
मनी, माता चन्ननदेवी मार्थ घर्मायं नेत्र चिकित्सालय,
बी-१ जनकपुरी, नई-दिल्ली-४८ कं पते पर भेजा जाए।
दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर
अकित किए जाएगे;

निवेदक

राजगोपाल झालवाले पूर्ववेच महाझाव वर्गपाल घोणप्रकास झावं च पत्रक विकित्सालय प्रवाल, विस्ती प्रचान मन्त्री पूर्व प्रवाल वा॰वा॰ धायं प्रतिनिध झाय केन्द्रीय महाखय युन्नीलाल प्रतिन सना सना सना

ति क्या समा सार बार० हु० सौजन्य से महाशिया दी हुट्टी प्रा० लिसिटेड १/४४ कीर्तिनगर, स्रोक्षोमिक क्षत्र, नई दिल्ली-११००१ आर्य सन्देश साप्ताहिक पत्रिका के ब्राहक बने, और बनाएँ क्यें क्योंकि यह पत्रिका—

- (१) वैदिक मान्यताभी को उजागर करती है।
- (२) मार्यो (हिन्दुमो) की महान् परम्पराभी को याद दिलाती है।
- (३) महर्षि दयानृत्य की वैचारिक क्रांति से झारम चेतना जागृत करनी है:
- (४) भारतीय सस्कृति के भूने विसरे प्रमागे, महापुन्त्रो तथा स्रादर्भ सस्कारा को प्रकाश में लाती है।
- (४) ऋषि मुनि नपस्वी भाष्तविद्वानों की वाशी का बोध कराती है।
- (६) परमेश्वर को पवित्र वास्त्री वेद का जोवनोपयोगो मधुर ऋत्देश लाती है।
- (७) नय लेखको कवियो, चिन्तको, प्रतिभाशाली बिढानो साहिस्य सेवियो को प्रोत्माहन देती है।
- (二) वार्मिक, सामाजिक और ग्राष्ट्रकारिमक ज्योति से मन मन्दिर को प्रकाशित करती है।
- (६) बेद उपवेद, दर्शन उपनिषद, स्मृति, कल्प सूत्र, भ्रारण्यक ब्राह्मएय-पंगीना रामायए नीति, ऐतिहासिक अपून्य मार्थ पत्थो जिन को प्रिषकास लोगा ने पढ़ा तो क्या देखा में नहीं ममस्त प्राष्ट्रपारिक जगन् को जिन अन्यो पर सदा गर्थे रहेगा उन के बहुमूल्य ज्ञान ने प्रापका मार्गदर्शन करती हैं।
- (१०) जनएव देरन कोजिए आज हो अपना वार्षिक चन्दा २० स्पर्ये मेजिये वर्षे से अनेक विदेशाक तथा महर्षि दयानन्द निर्वास्थ अताब्दा पर प्रकाशित ५० रुपये मूल्य की बच्च मनोहारी स्था- } किंग नि शुक्त की नोयेगी। स्थारिका और विदेशांक का स्थाक कम है। अन यह सुविधा अपन नक ही है।

सम्यादक आर्थ सन्देश

उत्तम स्वास्थ्य के लिए गुरुकुल कॉगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

बाबा कार्यासय—६६, गसी राजा केशरमाय, कोन . २६८०३८ वानडी बाखार, विस्थी-६



न्तो विश्वमार्धम

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

मूल्य एक प्रति ५० पैसे

वर्षे श्रमक २१

रविवार, १४ धप्रैल, १६८६

धार्यं सबस्सर १६६०=४३०=४

वैशास २०४२

वयामन्दाब्द -- १६१

अकालियों से तब तक कोई बात न की जाये जब तक गैर-अकाली सिख और पंजाब के हिन्दू नेता उनके साथ न हों

श्री रामगोपाल शालवाले ने शिष्टमण्डल के साथ प्रधानमन्त्री को जापन दिया

८ भ्रप्रल, नई दिल्ली । श्री राम-गोपाल शालवाले के नेतत्व में एक शिष्टमण्डल प्रधानगन्त्री थी राजीव गांधी से मिला । शिष्टमण्डल ने प्रधानमन्त्री को राष्ट्रीय ग्रसण्डता की रक्षा के लिए किए जा रहे प्रत्येक प्रयत्न मे पूर्ण सहयोग का भारवासन दिया तथा एक ज्ञापन भी दिया। इस विष्टमण्डल मे धनेक वार्य सस्याको के प्रतिनिधि सामिल थे। साबदेशिक सभा के उपप्रधान श्री रामचन्द्रराव वन्दे मातरम्, महामत्री श्री भ्रोमप्रकाश त्यागो, कोषाध्यक्ष श्री सोमनाय मरवाह, श्री प॰ राज गृह शर्मा, दिल्ली मार्थ प्रतिनिधि समा के प्रधान श्री सुर्यदेव, महामन्त्री श्री डा॰ धर्मपाल, श्री महाशय धम-पाल श्री बेदप्रताप वैदिक', श्रा क्षितीक देदालकार आदि थे।

प्रदत्त जापन इस प्रकार था-भारत मे श्रस्थिरता पदा करने की साजिश से इसकी चारो झोर से घेरने और सोमावर्ती विधटनकारी शक्तियों को प्रात्साहन देन की जो प्रवृत्ति चल रही है। उससे राष्ट्र के सामने काफी मयकर सकट पैदा हो गया है। राष्ट्र को एक और अखण्ड रखने के लिए तथा एक राष्ट्रीयता कानिर्माण करने के लिए हमारे निस्न समाव है---

१ भारत के सविधान में सम्प्र-दाय निर्पेक्षता को स्वीकार करने के कारण किसी साम्प्रदायिक पार्टी को राजनीतिक मान्यता नही मिलनी चाहिए। न ही किसी वग विशेष के लिए अलग से बिल कोड हो भीर न ही धनचित धारक्षराका प्राथय दिया जाये।

२ शकाली दश सी एक साम्प्र-दायिक दल है वह सिक्सो का केवल एक सोमित वग का ही प्रतिनिधित्व करता है। इसलिए उसको राज- नीतिक मान्यता देना सविधान की हब्टि से अनुचित है।

३ राजनीतिक पार्टी के रूप मे उसकी मान्यता रह नही की जाती तो तब तक उस दल से कोई बात-चीत न की जाय, जब तक वे धकाल तस्त मे स्व॰ माननीय प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या की निन्दा न करे, उसके लिए पहचात्ताप प्रकटन करें धौर भारत की एकता भौर भ्रखण्डता के लिए तथा भार-तीय सविधान के पालन के लिए प्रतिज्ञान करे।

४ शकालियों के किसी ऐसे शिष्टमहल से बातचीत न की आये जिसमे उतनी ही सख्या मे गैर शका-लियों के भौर पजाब हिन्दुसों के भी प्रतिनिधि न हो।

४ मानन्दपुर माहब प्रस्ताव देश के विघटन का दस्तावेज है। उसी के विरोध में भापने भाग जनता से बोट मागे थे और जनता ने धापको धपुर्व बहुमत से जिनाया था । उस ग्रानन्द-पर प्रस्ताव पर किसी भी तरह की बात करना जनादेश का उल्लंघन होगा ।

६ हिन्दू नेताभी को जेली से बिना रिहा किये केवल शकाली नेताओं को छोडना पक्षपात पूर्ण कार्रवाई है।

७ प्रकाली नेता श्री लोगोवाल के जेल से छुटने के बाद दिये गये बक्तव्यों से यह स्पष्ट हो गया है कि वे भारत सरकार की सत्ता को स्वी-कार नहीं करते भीर उससे बातचीत के सदमायना प्रयत्नो को उसकी कमजोरी सममते हैं। गुरुद्वारो मे हथियार रखने पर उन्हें कोई मापत्ति नहीं है। श्रीमती गांधी की हत्या की निन्दा करने को भी तैयार नहीं हैं भीर उनके वक्तव्यों में से यह भी ध्वनि निकलती है कि शापको इन्दिरा गांघी से बड़ा दूरमन समभते हैं भीर यह अमुरक्षा की भावना भीर बढ राष्ट्रपति जी को अपशब्द कहने से बाज नहीं झाते हैं।

गुरुद्वारा एक्ट को पजाब के बाहर के गुरुद्वारों पर लागुन किया जाये। भीर भस्तिल भारतीय गुरु-द्वारा ऐक्ट न बनाया जाये।

१ विदेशों में जो सिक्स भारत विरोधी कार्रवाईयों में लिप्त हैं और खालिस्तान के लिए कार्यरत हैं। एक मध्यादेश बनाकर उनकी भारत मे विद्यमान सारी सम्पत्ति जब्त की जाते ।

१० जो उग्रवादी गिरपनार किये गये हैं उनके ऊपर पजाब के बाहर विशेष धदालन में मुक्हमे चलाये जाये भीर उनसे कोई रिया-यतन की जाये।

११ शकाली नेताओं ने छटने के बाद जो बक्तव्य दिये है उनसे प्रजाब के हिन्दुन्त्रों में ग्रस्रक्षां की भावना पुन व्याप्त हो गयी है। उन्हें लगता है कि फिर जुन १६=४ से पूर्वकी स्थिति या रही है। शकाली नेताओ को छोडने की एकपक्षीय कर्रवाई से

गई है।

१२ ग्रबोहर फाजिल्का हरि यागा को देने की और लिक नहर को बनाने की व्यवस्था तरन्त की जाये। चुकि ऐसा न करने से जहाँ हरियासा की जनता मे ज्यादा ग्रसन्तोष वढ रहा है, वहा श्रीमतो इन्दिरा गांधी के दिये हुए वचन को भी भग किया जा रहा है इससे देश की सीमा पर भी सकर की सभावना बढती है।

१३ विभाजन से पूर्वऔर उसके बाद भी पजाब के सामाजिक जीवन मे ग्रायसमाज का बहुत बड़ा योग-दान रहा है भीर भ्रायसमाज ने गाज तक बिना किसी राजनीतिक स्वार्ध के निस्वार्थ भाव से देश सेवा के ग्र ने प्रश को निभाया है। इसलिए पराव की कियी भी समस्या के समाधान में श्रार्थ नतायों के परा-मर्श पर विचार करना पहा सरकार के हित मे होगा वहा ाप्टीय द्वित मे भी होगा।

महातमा हंसराज दिवस समारोह

२१ मर्पल, रविवार ६ बजे प्रात से १२ बजे तक

स्थान-तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम, नई दिल्ली

ग्रघ्यक्ष-स्वामी सत्यप्रकाशानन्य

मुख्य ग्रतिथि-श्री के ली पन्त (कन्त्रीय शिक्षामन्त्री)

वक्ता-ला॰ रामगोपाल शालबाले (प्रधान सार्वदेशिक समा) प॰ शिवकुमार शास्त्री, प्रो॰ रस्नसिंह प्रि॰ कृष्णसिंह ग्रार्थ श्री क्षितीश वेवालकार सयोजक भी रामनाय सहगल

सभी आर्यसमाजो एव आर्य सस्थाओं से निवेदन है कि भारी सख्या मे पहचकर कार्यक्रम को सफल बनाय ।

> निवेदक डा० धर्मपाल महामन्त्री-दिल्ली भार्य प्रतिनिधि सभः

सत्संग वाटिका

धय स्पाट ह—हम लाग सूम धीर पन्द्रमा की तरह कत्याण के पम पर सन्साग पर जल। म वार्ष धच्छाई बाय के पम पर प्रतिग रहे।

व्याच्या-प्रव हम करा विचार कर के बेख सुय क्या क्या करता है ?

> सूय एकाकी चरति । (यजुर्वेद) सूय ग्रकेला चलता है।

यहार्कर हमें सदेश वरहे है है मानव बर्म कल-प्र-याय परीपकार सस्य माग में प्रार कोई तरा साथ न भी बेता हो तो भी परबाइ मत कर फकेबा ही धनने स यप घपर घांगे बढते रहो। एक्ता चनो रे (हिंत रबीन्द्र) यही बान बाह्य यप न भी कहता है—

चरन् वं विन्यते मधु चरन् स्वादु उदुम्बरम्। सूबस्य पश्य श्रमाराम् यो न तन्त्रयते चरन्। चरवेति वरवेति ।

हे मनुष्या चनने वाला काय करने बाला वानि पुरुवार्षी व्यक्ति ही सपलवा गाता है। बही सम प्रम काम प्रोते मोला को लिंद्र कर सकता है। प्रालबी नहीं। वारा मून की घोर देखी जो चलने से प्रमाद कभी नहीं करता है। प्रम चलते गहीं। प्रस्तशील रहां। उसम करते रहीं। काम वा साम प्रात्ति वा सम्म

उद्यमेन हि सिच्छान्ति कार्याशित न सनोरकै । नित्र सुप्तस्य सिहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगा ।।

धर्मात प्रयस्त करने से ही हुने कार्यों में सप्तता निकती है मात्र मनो एक करने म कमा नहीं। जैसे मुग्होये सिंह के मुख में सपने सा प्रवेश नहीं करते सिंह को पुरुषाय करके हा उसे प्राप्त करता पहता है।

वैव देव चालसी पुकारा।

जैना कि बाल्भीकाय गामायण में प्रामय जनम में सीत हरत्य के पण्यात् कहते गाय न मुन्यद्व पाण वृक्ष हरताया में पुरा के भाग्य का बदक्त दूबा और बहोत्र बदका भाग्य कुछ भी नहीं है। हमारा मंत्र विद्या कम ही नो है। सन भाग्य के भरी-धापता होण्य ने ना बात का अन सबया विद्या

सहाव दयानन्त घरने स्वसन्नव्या सन्तक्य म घोषणा करते है—मैं पृत्वाव को प्रास्त म ब मानना हु। विश्वके सुखारत से मह सुघरता और स्वावत है स्वादत है। साथ ही वे कहते हैं। यम का पन सवव दहलोक सीर परखोक

आदर्श जीवन का वैदिक सन्देश

व्यास्याकार-विन्देश्वरी प्रसाद सिह

स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव । पुनदटताघ्नना जानता सगमनहि॥

¥

बोमों में मिलता है

पुन जब हुम मूच पर घरिटात करते हैं तो पाते हैं कि मूच निजय से धराना काष करता है। धालस्य प्रमाद से खण कर की स्तार निष्टा है। यहां इस मन्त्र से परमेश्वर हमें यह सबैख दे रह है— मानव धालस्य प्रमाद से समय जब्द मत करो। समय नहुत ही मुख्यवान है।

इंतर न सभार के महान् - अंकिया भी जोशीख पर के गाम ही दिया है और हमें भी उतना ही दिया है खैरूक भर का भी अल्टर मही है। पर वे उसी समय का सहुपयोग करके ससार में भण्ड तम बन मारे। कानीराज बालमीर्क धार्ति सम्बन्ध मारे। कानीराज बालमीर्क धार्ति समम्बाणा सदार में उन्हों सम्बन्ध मार्थ मृत्य समका सदार के प्रचल को मही सममाणा सदार में उन्हों सम्बन्ध मार्थ

जिसने भी समय के मूल्य को सबका वही विद्वान् वन नया धनवान ओष्ट-महान् वन गया। जिसने भी समय के मूल्य को नहीं समक्षा बही विख्ड गया।

धगर भरते समय हमारे पास घरें। गीसमानि हो और हम उतके बदले से बन्द सिनटो का नमय प्राप्त करना भी बाहे तो पाप्त नहीं कर सकते हैं—

धत बास्त्र घोषशाकरताहै—

श्चायुष्य सात्त एकोऽपि न लम्म स्वत्तकोटिनि । स चेल्निरचक नेति का नो गनिस्ततोऽभिका॥

यानि घरवो न्वण मुनाबो में भी एक जान की मी बायु न प्राप्त होने वाली है। न्ये जो वंकार कर नच्ट कर बेना है उसमें बडी और क्या हानि हो सकती है। धन समय का मून्य सममने हुए इसवा पुन मदययोग करन

पुन सूप के कार्यों की जोर देखत हैं तो हम पाने हैं कि बस स्वय प्रक रिव होकर तन को प्रकाशित करता है। यहा देखक स्वय वह "देख कर रहे हैं कि हे मानव तुम सत्सव स्वाध्याय उपासना योगाम्यास ने तप हकन सञ्द्यादि से स्वय ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित होकर सब को ज्ञान दिया करो जिससे मनुष्य प्रजान के प्रवेरे में न भटके। हदन की माहति का सन्त्र

सूर्यो नवाँ ज्योतिकच स्वाहा धौर धानिक गँज्योतिकच स्वाहा म त्री इरकर हम यही उपदेश कर रहे हैं कि को परपेम्बर हमें खनना जान केने बाला है। उसकी प्रसन्ता के लिए हम यक करते हैं घाहति बालन है।

यानी हमें न्वयं श्रातवात होकर स्रज्ञान भवेर मिटान से श्रवत्यं ही लग बाना चाहिए। साथ ही हमें दान श्रवस्य देते रहना चाहिए सौर सर्वेवानेक बाना ना बहुर बान विशिष्यते। (मनु)

जान विद्या जब हुमारे पास होमी तभी तो हुम उसका दान कर सकते हैं। श्रव पूर्ण जानवान विद्यान् होकर सर्वे जबन्तु पुलिन की भावना से सदा जान दान करते हुए ही धपना बीवन दिसाना वाहिए।

पुन हर बन्त में हैन्यर यह जारेख दे रहें हैं कि जैसे मूम तब लोकों को नियम में बनाता बाकरण से सब को बारण करता वर्षा ताए करका दिन राणि नालादि का कारण होता है बैसे हैं इसे मी बेच्टरम बनकर खलार के कर्मों में निकास बात से भोगवार के रहना नाहिए। स्वादि समेको उपकेस हमें देवना नाहिए। स्वादि समेको उपकेस हमें देवन नाहिए। स्वादि समेको उपकेस हमें देवन नाहिए। स्वादि समेको उपकेस हमें

पुन जा हन कन्द्रमा की बोर देखते है तो गाते में कि जन्द्रमा प्रपना प्रकास न होते हं नी सब के प्रकास से प्रनासकान होकर नव को प्रकास दे न न्हता है। ध्रत कम भी हर सावन स जानवान होकर नान कारा सनन फैसाना व्यक्तिए।

चा गानन पन में धीरे चीरे उदन प्राप्त करता है धीर कृष्ण पन में धीरे घीरे पटना। पहली प्रकल्म सह तुख बन चाता है धीर दूषरी धनस्था से से इसका नामोनियान भी मिट बाता है। यत धीरे धीरे प्रचनी घनस्या मुमार कर हम अ 55 वन सकते हैं धीर धनर प्रवास बतना के प्रति हम सारपाह है दू धीर की धीरे बीरे विलास की धीर जाने विवा ती एक दिन हमारा सामो निवाल एक निर्माणियां। यत माववान बहुर्येव से देखर एक जबहु हुने उपवेख हैते हैं कि एक प्रवस्था में दश खदार में कोई मी नहीं रहु बकता है। वह सा हो नीचे बायेगा स्वथा उत्तर। स्वार हुनने प्रवर्गी स्वस्था सुचारने के निए प्रवस्त न किया हो नाम साज के दिनाया से मी हुन एक निन सक्वाया को पहुंच जायेंगे। स्रीर स्वस्था सुचारने के लिए प्रवस्तावील स्रीर स्वस्था सुचारने के लिए प्रवस्तावील स्रीर स्वस्था सुचारने के लिए प्रवस्तावील

द्वा करमा पर बीट बातने वर हम पाते हैं कि करमा का उठना भाग हम पाते हैं कि करमा का उठना भाग हम प्रकाश के जीत के सामने होता है धार हम उठना ही प्रकाशित हो पाते किया हम प्रकाश जान के ओत के पात पहुँचे। विजना भी हम प्रकाशित हो चलना प्रकाश हमें व उमा की तरह हो दते रहना चाहिए।

चार गहण के समय जब सूच और बारमा के बीच पृथियों प्रा जाती है तब वितान जाग वस सूच करेंचा का साता है। होता है उनने पर घंचेरा का साता है। धत हुँग भी जब कभी गान के लोग ने धलग हो जायेंगे अजाना-वाकार से उसी सपुगत से बुधते चले जायेंगे। धत सामका कहता है— स्वाच्चानमा प्रमुद। स्वाच्चार से प्रमाद मत करो।

इसी कारण परम ज्ञानी मनु भगवान् घोषणा करते हैं---

> यो द्वियो धनवीस्य वेदमन्त्रज कुस्ते धनसः। स जीव नेव गुत्रस्य धान्न गण्डति साम्बद्धः।।

यानि वेद जान है रहित द्विज तरत पुत्र पौत्र सहित शुद्रत्व की प्राप्त ही व्याताहै। न्सीकारल उन्होने दिव के कर्मों में हवन सन्ध्या और स्वाध्याय को श्रनिवाय स्थान दिया है। नित्य कम पे व्यास प्रकास की तरह ही कमी भी रकावट धनध्याय को उन्होंने स्थान नहीं विया। इसी कारसा बनुने घोषणा की-वेदमेव भाग्येसत् नित्यम् यथा कालमत-न्द्रित । तहि प्राष्ट्र परमोषम् उपवर्भ धन्यद् उच्यते । यानी निरासस होकर श्रविकाधिक वदाध्ययम ही सब बर्मी से व्येष्ठतम वस है। परम कत्तव्य है। बत महर्षि दयानन्द ग्रायसमात्र के तीसरे नियम में घोषणा करते है--वद सब सत्य विचामो का पुस्तक है।

वेद का पढता पढामा और सुनता सुनाना सब धार्यों का परम धम है। इसी बारण दब दयानन्द सारा समय वेसादि के सम्मयन प्रधार और योगाम्यास में ही सनाते हैं।

बन्द्रमा पर जब पुन हम बष्टि डासते है तो पाते हैं कि बन बन्द्रमा समावस को (बेस पुष्ठ ११ पर)

🖈 वचन-सन्देश 🛊

नवीन कान्ति का बीजारोपण

"स्वामी दयानन्द युग द्रष्टा, युग निर्माता थे। भेरे सस्कारो पर ऋषि दयानन्द का पर्याप्त प्रभाव है। स्त्रियों को वेदाधिकार दिसाकर महिलाग्रों में नवीन क्रांति का बोजारोपए। किया। नारों को स्थिति में सुधार को प्रनवरत वेष्टा करते रहे। नारियों की वेदना देखकर वह कहा करते थे, माई । इससे प्रधिक हृदय विदारक दु स क्या हो सकता है। विषवाधा को दुख भरी आहो से इस देश का सर्वनाश हो रहा है।

दयानन्द ने बदों की बैज्ञानिक व्याख्याए प्रस्तुत कर, वैदिक मध्ययन प्रणाली में एक द्वतन युग का सूत्रपान किया है। इन्हों सब कार्यों के लिए हम सब उनके ऋणी है।'

-श्रोमतो महादेवी वर्मा

दयानन्द और आयंसमाज

"ग्रायंसमाज एक जीता जागना सघ है। वह ग्राख खुली रखकर दुनिया की ग्रोर देखने वाली एक सगठिन सम्या है। दयानन्द सरस्वती जैसा तेजस्वी ब्रह्मचारी ग्रीर समाज हितैषी ही निर्भयता से किसी राजा से भी कह सकता था कि 'तूकुत्ता यन बन।"

जिस समाज में स्वामी दयानन्द में लेकर स्वामी श्रद्धानन्द तक बलिदान देने वाले वीर उत्पन्न हा जाते हैं, उम समाज का तेज सदा उज्जवल ही रहने वाला है।

–काका साहब कालेकर

सम्पादकीय

राष्ट्र की प्रतिष्ठा का सवाल है-पंजाब

पजाब की हरों भरी घरती, बीरता, बदम्य उत्साह धौर जावन जागृति का प्रताक रही है। गीत सगीत, नाच रग की यहा की पत्ती की पत्ती की पत्ती की पत्ती की पत्ती की राह कर उक्षतते गावते मन्य कर तो समस्य हुए हैं। डोल तासी की गमक पर उक्षतते गावते मन्य कर तो समस्य हुए हुए हैं। डोल तासी की गमक पर उक्षतते गावते में मूल बें डालकर गाती चुकी मनातो सुवित्या, कवी कर कारों के विशाल साने बात कर पुरुषा का प्रदेश हैं पत्तावा अवी सीर बहुउद्द हुए हैं बाकों सो बीरता के प्रताक, तो शानित सन्गीय के प्रतीक सन्न जा कम नहां हुए। विदेशी माकान्ता जब पहली बार प्रवास के रास्त भारत म मार्थ प्रवास की हरी भरी घरती को देश उन्होंने कहा या खुदा। हम ता जन्तत क स्वास ही देश ते है। ये लाग ता सम्मूब जनते में हो एउते हैं।

आरम्य स हो यह प्रवेश भारत का हृदय रहा है। सता मक्तो, सीर विरक्ता क इस प्रवेश का दानहाल राग भार बालदान से स्वाह हुमा है। दुस्त, गात, नावले खुषी मनात इस प्रवाद में भव खुन भीर मातु, आकाश भार अंतशाय का अवावह वित्र दिखाइ देता है। दुख्त ता यह है स्थल कहतान बाल तथाकायत सामका द्वारा हो यह वित्र बनाया गया है। बिनम भक्ता, क्षनी, सानिया का उपदेशामृत वित्रना था जहां कि द्वारा हुंचाहुल खुद्द बटा बा रहा है।

बहर उगलत, भडकात य सन्त

अब तक श्री लागावाल का शान्त मोर समकाता का समर्थक माना जाता रहा है। लाक ये लाव रास्त पर करन बड़ा रहे है उसका माना जाता रहा है। लाक ये लाव रास्त पर करन बड़ा रहे है उसका माना जाता रहा है। लाक रे दे हुए उन्होंने कहा— मुक्त पर यह कहन के लिए दवाव डाला जा रहा है कि सत अवरावाल से हमारा काई वास्ता नहा है। जन्हान कहा, हगारे सारीरिक सम्बन्ध दूट सकते हैं लेकिन सामिक सम्बन्ध कमी नहीं दूर सकते । उन्होंने बेताबनी दी- 'यदि सरकार पजाब समस्या काई वाहन हो करती ता सिक्ष युवको के म्रास्ट समकता तावास कुछ जलाकर राख कर देगा।''

सीमान्त गांव कलानीर के पुढ़ारा बन्या बहादुर से सन् तोगोवाल की उपस्थिति में एक दीनान म सीमती इन्दिरा गांधी के क्षित हुलार सत्वत विद्व को माध्यार कोर का करेंसी नाटो की माला पहुनाकर सम्मानित किया गया। वक्ताओं ने अपने मावएा में सत्वक्त सिंहु को जिन्दा सहीद घोषित किया। इरक्वित लोगो-वाल ने भावएंगे ने कहा-समझीता होने का तब तक सवाल नहीं उठता जब तक आनन्तपुर भरताव समेत सकाली दक्त की माँग स्वीकार नहीं कर ली बाती। बटाला में उन्होंने महा तक कह दिया-(इन्दिरा गाँधी की हुएया के बारे में) सत्वक्त सिंहु बौर बैम्मत्वीहर ने बही काम किया है वो सहाद कम दिह ने जनत्व नायर की हरवा करते किया था। बीवाम में साविस्तान जिदाबाद, और मिंबरावाले बिन्दाबाद के नारे लगाये गये । फिर टकराव की स्थिति

पजान के हालात दिन पर दिन विगडते ही जा रहे हैं। भड कती माग को सरकार जितना शान्त करने के प्रयत्न करती है उतने ही उप्रवादी भौर भकाली नेता उसे भौर भडका देते हैं। २३ मार्च को हुसैनी बाला सीमा की यात्रा पर प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी गये। यह उनकी साहिंसक यात्रा थी। उन्होंने सदभावनामय वातावरए। बनाने के लिए पजाब के लोगों के लिए उन्मुक्त हृदय में कुछ घोषगाएँ की हैं। पजाब मे थीन बाँच बनाया जायेगा। जिससे विजली और पानी की किसानो को किल्लत न हो। दूसरी घोषगा पजाब मे रेल के डिब्बे बनाने का बड़ा कारखाना लगाया जायेगा जिससे रोजगार की भारी रम्भावनाए वढे और बेरोजगारी हटे। जब कि अन्य प्रान्तो के मुकाबले पजाब में बेरोजगारी बहुत ही कम है। किमानो की जिन्स की मूल्यवृद्धि तथा गेह पर बोनस, भारतीय संस्कृतियों का केन्द्र भी पजाब में स्थापित करने की घोषणाएँ की । इन घोषणाओं से आशा की जासकनी थी कि सम्भवत अकाली नेताश्री का रुव कुछ नम्न होगा। परन्तु उनकी हृष्टि तो कही सौर लगी है वे बिना लागिस्तानी परचम लहराये बठना नहीं चाहते। झकाली नैनान्नो की रिहाई भी इसीलिए की गई की कि सम्भवत वार्ना की मेज पर बठवर कुछ सममौते की स्थिति इढ होगी। किन्तु प्रकाली दल टकराव के रास्ते पर खुलकर भाता दिखाई दे रहा है। उप्रवादी भानकवादियों के हाथ में पूरी शक्ति माती जा रही है। सरकार का दायित्व

ध्यजगर की तरह लम्बी होती जा रही इस समस्या का समा-धान जब्दी से जब्दी लोजा जाना चाहिए। देशमझन सिल धोन्हें एन्ह्युधों को विश्वास में लेकर जनता के हित को ध्यान में स्वकर उच्चा एक्स पार्टी मानकर एकनरफा निर्मुख कर देना चाहिए। उप्रवादियों से निपटने के लिए सरकार को ध्रपनी शक्ति का प्रयोग करना चाहिए। जिस प्रकार सिन्ध ब्लोभिस्तान (पाकिस्तान) में जिया ने ध्रपने दमन चक्र से स्थिति शान्त की है उस तरह का दमन चक्र न भी सम्मव हो परन्तु उथवादियों को शान्त करने का रास्ता तो ध्रपना ही होना चाहिए।

विरोधी बलो की भूमिका

राष्ट्र की बिगवती समस्या किसी पार्टी की नाक का सवाल नहीं है, सचमुज यह देश की नाक इज्जन का सवाल है। इसे हर प्रकार से हल करने के लिए समस्त बलों को मिलकर हल करना चाहिए। प्रव समय था गया है कि देश की प्रतिष्ठा दाव पर है, इसके लिए सभी राजनैतिक नेताओं के योगदान का समय था जुका है हमें अपने समस्त मवर्षेय खुलाकर पारत मा के फटते आवल को सीना चाहिए, यह समय की पुकार है।

मनुष्यो ! तुम ससार के धन्दर मानन्द और शान्ति से जीवन जीन के लिए आये हो। तुम्हारे मन वचन धौर कम मे वे श्रम शक्तिया भरी हुई हैं जो ससार भर के लिए कल्यालकारी है। तुम्हारे स्वय के कार्यों की समार सुख णाम्यि पर प्रतिक्रिया होती है। यदि तुम्हारे सकत्र धच्छे हैं और काय उत्तम भाव से होते है तो निज्वय ही तुम ससारकी सूख समृद्धि में बढोतरी कर

बाज हम बान लिए जा रहे है दूसरे के दुख नद म हम कोई वास्ता नही है जो दुल या वरी बात हम भ्रपने लिए नहीं चाहते वह दूसरे के लिए करते हुए क्यो नहीं डरते ? कारए। यही है कि हम लाडमेकाले की शिला पद्धति मे पढकर सस्कारवान् न बनकर एक कम्प्यूटर की तरह से जीवन जी रहे हैं। हमारा धातुन के बदय की तरह एक ही बदय है बन की प्राप्त करना शायद मतु हरि को इस काल का पहल ही भागास हो गया था इसलिए जिल्ला पडा सर्वे गुरा काञ्चनमाध्यति हमारी प्राचीन ऋषिया का शिक्षा प्रशाली स्व वलस्त्री एव त्या। आवना काविस्तार करन वालाधी कहीं बाज की शिक्षा जो चाद सिक्को के द्वारा धादनी से कुछ भी कराल । इन सब विषयों को से चना है। ग्रगर मुझे सुक्त चाहिए ती मुमेदूसरे को मूख देना प॰गा ग्रन्थया सलाकी कामना हा छोड द ।

ऋषि ने कहा धगर सुख प्राप्त करना है ब्रान्दप्रप्त करनाहै तो सयबद धम चर कवाक्यका अवन से उता-रनापडगा। सत्य का प्रयंग वाणा से क गे जीवन में उतारींगे तो धम तुम्यरा धनुगामा बनेगारशाकरगा। तुम्हारामस र मुनहुराहोगा। जीवन मे द्यभावन_ी होगाः जिनन भी सत्य को उनारा वही सितारे की तव्ह से गगन

आनन्द का शाश्वत मार्ग

प० बलजीत शास्त्री एम ए

सब के परस्पर मिलकर चलने से ही

समाज विकसित होता है याने बढता

है भीर प्लाता कुलता है। तुम किसी

- यक्ति पर हिसा बसात्कार, मूठ कपट

या प्रत्याचार करते हो तो वास्तव ने

स्वयम् भपने भानको ही वायस करते हो।

यदि तम नमाज में या राष्ट्र में रहने का

स्विकार माति हो तो इसरी को स्वत

न्त्रता पुरुक बातन्द से बौर निमयता से

जीने दो । तुम दूसरों को स्वधिक दिन

घोसे मेन रखसकोगे। एक न एक दिन

तुम्हारा पाप प्रकट हो जावेगा। फिर तम्हें

अपनान के पूट राने पहेंगे। उसकी पीडा

हजारी विच्युक्षों के डक मारने जैसी

हागी। पाप पर श्रविक दिन **तक प**र्दा

दुर्योधन समभता था कि भरी सभा

मे डोपदी की मानहानि करके वह कोई

पाप कम नहीं कर रहा है। कस समझता

था देवकी के पुत्रों की हरवा पाप नहीं है।

बाली बाई की सम्पत्ति एव पत्नी स्त्रीन

कर गर्वित होता वा रावस सममता था

महासती सीताका भ्रपहरए। कर लका

ले जाना कुछ बुरा नहीं है। किन्तू पाप

तो मिर पर चडकर बोलता है। पापी को

नष्ट कर देता है। दुर्योधन कस रावण

वासी बादिसबक गपही उन्हें सा गये।

सदा के लिए श्मशान म जलकर व राख

हो नए भीर छोड़ नग धपने पापो की

काली श्वाया [।] पाप श्रयवा दुराचार चाहे

र्वंम भी व्योन हो मनुष्य कासपरिवार

नाश कर देता है। पाप कमी न कमी,

देर सबेर अवस्य प्रकट होता है और

नही डाला जा सकता।

पर चनका। गांधी जी ने सल्य भीर ग्रहिसाको ही ग्रपनाया और राष्ट्रपिता कहलाये। विश्वमे नाम ग्रमर कर गवे धपना। हम भी किसी एक राहको श्रपना कर देखें क्या धानन्द भायेगा जीवन के भन्दर । भपने प्राचीन गौरव को पहचानकर चलना है। संस्कृति की सुरक्षा करनी है तो दूसरों के दुख में दू ली होना जानो सुख में सुखी होना मीखो।

तुम समार में धानन्द पुत्रक रहना चाहते हो तो दूसरो को धानन्द पूतक रहने दो। तुम यदि समभने ही कि दूसरो को सताने से तुम्हारा कुछ नही विवदता यह तुम्हारा भ्रम है। वान्तव मे तुम्हारी ठगी चोसे बाजी घत्याचार स्वय तुम्हे ही नष्ट करने हैं। तुम अपनी भात्मा का हनन करते हा। यमाज मे कोई भी श्रसम नहीं है। सब एक बड़े सरीर के सब हैं। पुरासमाज एक विशास गरीर है। स्या तुम बह पसन्द करोगे कि तुम्हारे शरीर का एक हाथ उसरे हाथ को का उतने एक पाव दूसर पांव का चोट पहुचाये दात खुद तुम्हारी जीभ को काट डाले, हाथ सिर को लोड डाने। नहीं तुम यह कदापि पसद नहीं करोगे। इससे समाज का स्रहित होगा सौर नुस्हारा स्रस्तिस्व सकट मे वड जायगा।

इस मानव सभाज के भिल्म भिल्म व्यक्ति भी इसा प्रकार तुम्हारे सामाजिक शरीर के प्रव हैं। कोई •पक्ति हाथ की तरह है काई बादमी पावी की तरह को र्वत हतो कोई कान नाक मुह, हृदय त्रिगर कार फफडो की जगह है। सर्वनास का कारए। बनता है।

तुम्हारा ईमानदारी, सज्बनता, सच्चाई निष्पक्षता बादि का बच्चो पर, बाने वाली नयी पीडी पर बडा प्रभाव पडता है। जैसे स्वय माता-पिता होते हैं, वैसे ही उनके पुत्र पुत्री सादि होते हैं। पापाचार के वातावरता में पले हुए बच्चे स्वजावत दृष्ट हो जाते हैं। सदग्रहस्बी मे हमारे मनोविकार स्वच्छ होते रहते हैं, जनका विष दूर होता रहता है। बच्चो भौर वर्मपरनी के सुबाद सम्पर्क मे लोश, क्रोध ईर्ष्मा हेव बादि मनोविकारों का शोध होता है। इस लिए ईमानदारी का जीवन ही हर प्रकार से वरसीय है पूरे समाज का हित करने वाला है।

ब्रत्याचार ब्रन्याय हिसा भूठ कपर खल व्यक्ति जार तुम्हारी घाल्य के गुरा नही हैं। इनसे नुम्हारा कोई सम्बन्ध नही है। इन्द्रिया तुम्हें गुनाम नही बना सकती।

तुम तो निविकार सत् चित् द्यानन्द बात्मा हो। पूर्ण शा त बात्मा हो। स्वतन्त्र हो । स्वाप्त्र हो । न्यायकारी हो । मानसिक सतुजन म पूर्णहो। परमात्मा सर्वेज्यापी भीर न्यायकारी है। भारमा के रूप मं वह तुम्हारे प्रन्दर विराजमान है। विवेक की सर्वोपरि मानना दिव्य शक्तियो का विकास करना मानवताको ऊवा उठाना--- इन सत्प्रवृत्तिको मे ही तुम्हारी महानता है।

धाधो जिलकर धपने हृदय में उस बात्मतत्त्व के रूप मे परमात्मा की लोजे, जाने भीर प्राप्त करे। वह दिस्य साबाना जो भक्षय है भनमोल है। स्वय को परिवार को समाज को राष्ट्र को सम-पित होकर वम एव सस्कृति के प्रति क्तज्ञ वर्ने । ॰ नक द्वारा जा हमारा निर्माश हौता है उसक करता के रूप में हम भारण करें ग्रीर स्वच्छ सम ज का निर्माण करें। तभी हम कह नकते हैं -- धाल्मन प्रतिक्लानि परेवा न समाचरेत्।

> बायसमाज कालवाजी नई दिल्ली---११

कारण ही हमारे देश को जो क्षति पहची महर्षि दयानन्द की देन है। उसकी पूर्ति खेकडों वयों तक नहीं की जासकती। वश्र व द्याध्यम व्यवस्था सम होने के कारण समाख बाख धनेक मोहनलाल शर्मा 'रिंम' जातियों में बट वया है। कुरीतियों के बढन व धापस में एकता न होने के कारण

धरा को ग्रामोक प्रदान किया।

किं समय ऋषि दयानन्द भारत के रगमच पर भावे उस समय हमारे देश की यही दुरवस्था थी। बहुत सी कुरीतियो ने धर्मकास्थान ल रसाया। ऋषि पर म्परा लुप्त प्राय सी बी ढोगी व पासहियो का खूब बोलबामा था। सभी जगह मिथ्या व भ्रष्ट ग्रथो का प्रचार चा। वैदिक बम का उद्धार प्रभी तक नहीं हो पासा था। ऐसे समय में ऋषि दयानन्द का प्रादुर्भाव हुबा। उर्ोने बपने सदज्ञान रूपी तेज से भ्रज्ञान रूपी सथकार को नष्ट भ्रष्ट कर हाला। वे ऋषि दमानन्द ही थे जिन्होने वेद ज्ञान की प्रचण्ड ज्योति से इस भागं

महर्षि दयानन्द सच्चे घचौ मे राष्ट्र. जाति, समाव तथा मानवता के सवय ब सच्चे प्रहरी वे । वे जीवन पर्यन्त अन्याय व प्रत्याचार के सम्मुख सर्वव प्रत्यन्त निर्भीक होकर सिंह की बाति हटे रहे। उनकी विशेयता ये थी कि वे परिस्थितिमी ते कभी नहीं धवराये बल्क परिस्थितिको को उन्होंने अपने अनुरूप बना शिया। ऋषि दयानन्द ने ही हमे बताया कि बेद मानव वाति का सब से पुराना पवित्र व महत्व-पूर्ण प्रथ है। यह सब सत्य विद्यासी का बाकर है। इसी वेद ज्ञान के स्नास के

मए हाते रहे। जिस समय मतो एव सम्प्रदायी तक ही वन ख॰ दका धर्म सीमित वा। तब महर्षि न वैदिक धर्म की वास्त्रविकता का सब लोगों को परिचय दिया। धर्म के नाव पर बजो मे पसुर्घोतचा मनुष्य सक की वित दिवे वाने का ऋषि ने वोर विरोध किया। सती प्रधा, वर्गहत्या, तथा व्यक्तिकार के विश्वापक उन्होंने श्रयनी घावाच बुलव की। तभी तो होनियाँ, पालविवयों सबा वर्ग के ठेकेवारों की प्रोश सूचने नवी । देवी देवताओं जूतप्रेव धीर

ही मूलकाल में बाहरी शक्तियों के बाक

पिक्साचों की पूजाएव धन्य पासकों के विवद ऋषिवर ने प्रवस बास्दोलन खेड दिया। उन्होने धन्य मतो के सर्वी का बी श्रव्ययन किया तथा गभीरता से विचार करने के बाद उन्होंने सत्य की स्रोध की तथा वेद मन्तव्य पर मानव मात्र को चलने के जिए प्रेरित किया। वर्ष क्षेत्र की व्यापकता पर विशेष वस देकर व बड मूर्तिपूजा बन स्वल तीर्व मे बास्वा ध दि अनेक प्रवैदिक मतो का उन्होंने निराकरण किया। सत्य के प्रकृष करने के लिए उन्होंने सोवों से प्रचलित कढ़िवाब-को तथा धन्य बुराइयो को फैंक देने का

स्त्रियो पर हो रहे अत्याचारो को देखकर उन्होंने हमे बताया 'यम नार्थस्यु पूज्यन्ते रमन्ते तम देवता '। नारियों की विश्वा से वनित नहीं किया का सकता

योग वनाया ।

(ब्रेय केट ह पर)

अ≱ क्यो**३म्** अ⊗

आर्यसमाज का भावी कार्यक्रम

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मानव मात्र के विवारों में क्रान्ति लाने के लिए धार्यममाज को एक सक्षम माध्यम बनाया । यो तो महर्षि के लेख के धनुसार उनके क्रान्तिकारी विचार बह्या से लेकर जैमिनी पर्यन्त के विचार ही हैं जिन का मूल आचार वेद ही हैं। आय जाति प्रपने प्राचीन गौरव को प्राप्त करे भौर मानव मात्र का जीवन की दिशा मिल सके, यह ऋषि की तीव म्रिजलाचा थो । गत सौ वर्षों के इतिहास में बार्यसमाज ने मानव समाज के हित के लिए चतुर्मुकी विकास योजनाए बनायी उन्हे क्रियान्वित भी किया। इससे बौद्धिक वर्गविशेष रूप से प्रभावित हुआ। सभी को मागे बढने की प्ररणा भी प्राप्त हुईं। परन्तु जीवन का चतु-र्मुली विकास कार्यक्रम शिथिल न हो जाए आगे चलता रहे। इस दिखा मे विचार करना बाज फिर ग्राव-इयक है। इसी विचार से भविष्य मे ग्रामसमाज के कार्यक्रमों की रूपरेखा मेरी इंटिट में निम्नांकित प्रकार से होनी चाहिए--

१ धायंसमाज के मन्दिर केवल बाह्य पूजा पदित के ही केन्द्र न बनें, घपितु उनमें धाने वाला प्रत्येक्ट क्यक्ति प्रात्मप्रत्या, वार्गिक मावना और धन्तज्योंति को प्राप्त कर सकें, ऐसी व्यवस्था हो।

२ प्रायं जाति की पूजा पदिते में 'शक्र' का निशेष स्थान है। वस्तुन यक्र मानव जाति के सर्वेक्सवार्ग मान का मानवं कर्म है। इस की प्रत्येक धार्मिक क्रिया को सस्त्रे हैं। यह बोहा क्रिया की प्रक्ति हैं। यह बोहा क्रिया की प्रक्ति हैं। यह बोहा क्रिया की प्रक्ति है। यह बोहा क्रिया मानव्यक्ति है। यह बोहा क्रिया स्वार्ग की क्रिक होगी। क्रिया गर्मे क्रिया गर्मे ही क्रिया वाहि है कि केवल वाहि के क्रिया भर्मे मानवा क्रीया प्रमाणक्ति—इस न समक्री भावना क्रीत प्रमाणक्ति—इस न समक्री भावना क्रीया ने उत्तरा आए।

३ वेदोपवेश—वेद ईस्तर की क्रंक्षांस्थी बास्यी है जो मानव तथा मीमन समाज में जीवन की प्रत्येक सर्वेश्या में विचार देने में सम्ब है। इस्तिया बाह्य के वेदोपवेश को होना सर्वेश्य क्यांस्थ है। उपिश्व की है में उपक्रिक्ट्योग्य आक्रिक्ट की है वित्तन के माधार पर भनुकूत साथा
में मर्थात् देश की माधा का ध्यान
एकते हुए वेदम्मवन करे। भाग्य
जन वेद का स्वाध्याय कर उसके
प्रवचन का भी मम्यास करे। भाग्य
बनों को यदिय सुर्यिवार प्राप्त न
हो सके, तो पुन्तक से ही वेद प्रवचन
पढ़ा बाये मथवा सुयोग्य विद्वानों के केहेटों का सदुययोग भी किया जाना जामकारी हो नकता है। ध्यान रहे कि वेदोपदेश से पूव वातावरएए को सास्विक बनाने के लिए मच्छे स्तर पर बामिक सगीत भी मावक्यक है।

४ योग साबना—महर्षि दया-नन्द ने यो तो बीज रूप में सन्ध्या के मन्त्रों में योग रूप ने का सकेत प्रथवा जाप का भी सकेत दिया है। उसका परम उद्देश्य जीवन में प्रमा-सक्त होकर धन्तर्मुकी होते हुए सारमा तथा परमारमा का दर्धन-लाम है। योग साधना के लिए प्राख्यायाम बर्ष सहित जप का धन्यास और मन्त्राम चिम्तन का धन्यास धावस्थक है।

५ विक्षरा-प्रत्येक प्रार्यसमाज को धर्म, सस्कृति, सम्यता ग्रीर बात्म-चिन्तन के विचारों का प्रसार करने के लिए शिक्षाको भी उसी दिशा में ढालना चाहिए । शिक्षा ऐसी हो जिसके द्वारा नवयुवक तथा नवयुवतियों को भी भौतिक और धाध्यात्मिक जीवन की शिक्षा धार्य-ममाज दे सके। शिक्षा एकागी न हो भर्यात् केवल मात्र भक्षर ज्ञान ही शिक्षाका लक्ष्य न हो। जागरता उसका उहेध्य हो। धार्यसमाज की सभी शिक्षा सस्याको ने नीतिक षार्मिक शिक्षा घनिवार्य हो, जिससे वैदिक धर्मका धन्य धर्मों से तुल-नात्मक परिचय प्राप्त हो ।

६ नवबुवक तथा नवबुवितयों को प्रार्थकमाय को बोर साक्षित के लिए वैदिक कि किया से सवाद, भावण और किवा से का कार्यक्रम देकर प्रोत्साहित करना चाहिए। डावाड़ी सारीरिक विकास के लिए ज्यावान सादि की रचि का कार्यक्रम मी होना चिहा और सवी प्रकार से वे नवबुवक सनुषासनीय होते हुए वर्षीप्रवाहीं।

७ पिछाडे वर्ग में सेवा—प्रत्येक प्रांत की प्रतिनिधि समाएँ अपना कर्तव्य कार्ये कि उनके प्रांत में कम क्रिक्त क्रम क्रिक्त ग्रांत में कम क्रिक्त क्रम क्रम ग्रांतिकाशमाँ हैं।

जिसमें जाति के उपेक्षित बच्चों को युवा वर्ग को अथवा प्रौड वर्ग को शिक्षा स्वास्थ्य सेवा और कुटीर उद्योग के माध्यम से सहायता मिले। उनका जीवन स्तर गिरने न पाये प्रपितु उसमें निरन्तर उन्नति हो।

प्रायंसमाज के ग्रविकारियों में प्राण्व सब से बड़ी कभी यह है कि पुराने लोगों की भाति जनसम्पक का कार्यक्रम लुप्त हो गया है, जिस के परिएगामस्वरूप बार्य सदस्या में सहानुभूति स्नेह ग्रीर हित की भावना नही रही। धावरयन है कि इस कार्यक्रम को पुन शुरू किया जाये। कस से रूम एक सास में एक स्पताह खबवा कुछ दिन जसी भी सुविधा हो सभी सदस्यों के सुख-दु स का पता भीर सहायता की धावस्यकरा को जाना जाय, जिससे सभी धार्य सर्मक नार्यक्रम के हाए। बुहन परिवार का रूप ले सक।

यदि उपरोक्त विचारों को मावी वर्षों में मक्रिय रूप से मप नापा जाये, नो मेरे विचार में निद्वय हो आयसमाजों की उन्नति होगी।

> श्रोमप्रकाश त्यागी (मर्ता) बावदेशिक बाय प्रतिनिधि समा दिल्सी

सिंह जाग! वीर जाग!!

—डा० कुरुगलाल ग्राचार्यं संस्कृत विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली ११००७

खिंह जाम तो रहा है तू कहाँपडा भीर जान को रहा है नयो यहाँपडा। बाल काल नोवने लगे हैं शत्रु खाब नीव स्टोड फिर भी हुमा तूनही सद्या।

तेरी जात्पुलि है यह तेरी जन्मजू तूबही पता यही का झन्न का बडा। उपनिषद का देद काहै ज्ञान वो बहा

उपागवद का दर काह जान जा यहा राम कृष्ण की कवाम्रोको भी तूपढा॥ विवेकानन्द स्वामी दयानन्द के महान्

शनुतोपबेध का किया है तूने पान । श्रदिनन्द तिलक मालबीय की पटेलकी प्रेरणाए वन्दे मातरम् का प्रक्ति गाव ।)

पूर्व विशा देश के करवट तो एक न वृर्व उदय हो रहा उसको तो देश ले ।

सामित्रा उपा की यह सन्वेष वे रही ब्लड्ड ग्रन्थकार को तू तोड फेम सं॥ बावक्य बन्त्रगुरत मौय श्री श्रशोक की,

मासवेश विकलादित्य की मी नीतियाँ । समुद्रगुप्त दिन्विजय प्रताप शीय को

त्रुलती नहीं है शिदा की की गीतिया ।। इंडा ऋषी रानी चेल्लमा देवियाँ

भगवर्षिह विलियस प्राचाद की पुकार । चुनाव विवायक सभी बीर वे विदे मातुष्ट्रीय के लिए देह को विसार ॥

सूर्व वन के जान निटा शन्तकार धाज जुल नहीं भूत नहीं इस सीय-स्वाय की।

स्वदेश - वेष - भाषा प्रेम की मझाल से

अलाह्दय में वर्गकी वयकती घागको ।। ब्रायबन कि बज्ञ श्रेष्ठ कम है न मूल,

शास्त्र वा रहे एक स्वर से वेद-नाव । कुछ बीकर तू वेद ज्ञान को नहीं मुला,

वही तेरा धाषार हैशी वही विहान ॥ श्रादश: स्वत्रण्याच्यम् न सूलना विकास केहाम हाम से उठा लेशाई को ।

शाला नेरी जूमि हैं, इडी का पुत तू पुत्र-पुत क्वों सहें दसायें बाई को ।।

पुत्र-पुत्र नवीं सडें दलायें बाई की श सिंह बाब बपने रूप को पहचान से

इस करा को, जी नगम-गनन को जान से। प्रथमी वर्णनाको, जगमी भाषा को समक्र, जोक्ट तेरी जाना है, रखी में साथ से श

धाध्यात्मिक जनत् की धायसमाध की देन का सीचा सा बच है, महर्षि दया नन्द की देन । महर्षि दक्षानन्द ने ही वैदिक बम के सिद्धान्तों मान्यताबी और सस्कृति के प्रचार प्रसार तथा प्रतिपादन के लिए धायसमाज की स्वापना की।

महान् णिक्षा शास्त्री एव कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने महर्षि को श्रद्धाञ्चली वर्षित करते हुए लिखा---

'My reverence to the great teacher Dayanand who e v sion found units and truth in India's spiritual h story whose mind huminiously comprehanced all departments of India's life whose call to Ind a is the call of awakening to truth and purity from mertness of unreason and ignorance of the meaning of

देव दयानन्द ने भारतीय जीवन का विविधताको ध्रयत सूक्ष्म इच्टिसे देखा था। उनका ब्राह्मन सस्य और पवित्रता ४ एकेश्वरवाद का प्रतिपादन सत्याथप्रकाश मे जिल्हा है-

प्रश्न- वेद ये ईश्वर धनेक हैं इस बात को तुम मामते हो वा नहीं ?

उतर--नहीं मानते क्यों कि चारी वेदों में ऐसा कड़ी नहीं सिखा जिससे सनेक ईश्वर सिद्ध हो। किन्तु यह तो लिला है कि ईश्वर एक है।

पाश्यात्य संस्कृतज्ञी ने भत्यन्त घृष्टता धीर दुर्भावना से इस बात का खुलकर प्रचार किया कि वेदों से बन देवत बाद है धर्वात् धनक देवा की पूजा उपासना का विधान है। देव दयानन्द ने धपना मत स्पष्ट करते हुए कहा कि ब्रह्म के स्रति रिक्त धन्य किसी भी देवी देवता की पूजा उरासना का कोई विधान नहीं है।

वेदो में बहुदेवतावाद है या नहीं इसका निराय इस पर निमर करता है कि वेदो का सप करने मे कौन सी शैंशी का श्रवसम्बन सिया नया है। प्राचीन नैश्क्तिक शैकी सावरा की कमकाण्ड बौसी बयवा पारवात्य सस्कृतज्ञो की प्रकृति परक नैती बेट के प्रति सत्य भारता के लिए निन्धित रूप से नैदक्तिक शैकी को

को परमात्मा के प्रतिरिक्त किसी प्रन्य की ज्यासना करता है वह पस् है।

महर्षि दयानन्त ने एकेक्सरवाद का प्रतिपादन करते हुए एक सूत्र दिया है धन्यादि नामों से मुक्त धन परनेश्वर का ही प्रहुण होता है। तका कहां तहा स्तुति प्राथना उपासना सबक व्यापक बुद्ध सनातन धीर सृष्टिकर्ता सावि विश्वेषण सिक्के हैं वही वही इन नामी से परमेददर का ब्रहण होता है।

यहाहम केवस दो मंत्री को उदा हरण के इस्प में प्रस्तुत कर रहे हैं जिससे स्पष्ट ने कि धने क शब्द एक ईश्वर के

त्तवेवाण्तिस्तवावित्यस्तद्वायुस्तवु च द्रमा । तदेव शुक्रतद् बह्य ता प्राप स प्रवापति ।

वही ज्ञान स्वरूप होने से धारित है सब को प्रहरा करने से बही आदित्य है मनन्त बलवान् होने से वही बायु है बानन्दमय होने से वही बादमा है शुद्ध भाव रुक्त ह'ने से वही शुक है सहान् होने से बहा बहा है सवत न्यापक होने से बाप है बौर सब का स्वामी होने से वही त्रजापति है।

विवाचित किया वा सकता है।

११) शमस्य विश्व का मूल एक मात्र जड़ तस्व है।

(२) दूसरा विकार है कि मूल में वास्त्वविक एक मात्र बेतन तस्य है ।

(३) तीसरी विचारवारा है जिसके बनुसार वड भीर चेतन दोनों प्रकार के तस्वी का प्रस्तित्व है और दोनो के सह-बोब से सुष्टि ब्रावि जगत् काय का निबहि होता है।

श्रव इन तीनो का पृथक पृथक विश्ले-षण प्रस्तुत करने । वैदिक काम मे आर्य स्रोगों का ईश्वर के सस्तित्व में पूरा विश्वास या । उस परम पुरुष की उपासना तथा तदनुकूल प्रपने जीवन के सभी कर्मी का धनष्ठान उनका धादर्भ था। परन्तु उसी काल में भायजाति में एक नवयुवक बृहस्पति नाम का हथा उसने परमात्मा की उपासना को इकीसना बताया और ईश्वर के मस्तित्व को मानने में इकार कर दिया। उसका विश्वास था कि ब्रह्म नाम का कोई तत्त्व नहीं है। ऐसा विश्वास केवल भूकता है। यह सम्पूरा जगत् मात्र उतनाही है जो कुछ प्रत्यक्ष है इससे परे किसी श्री धन्य सत्ता का धस्तित्व नहीं

को आर्यसमाज जगत् आध्यात्मिक

प्रेमचन्द श्रीषर एम० ए०

का बाह्यान वा क्योंकि उस समय तक भाग्तवस निध्या विश्वासीकी जडता भीर भ्रमन गौरव गा प्रतीत के प्रति श्रज्ञान के जाल में फस ५क वे। देव दया नदग्रयसम्ब के क्रातिकारी भाषा लन द्वारा भारतवासियों को निष्या साध वित्वासी भी जहता से मुक्त कराना बाहन वे

ब यसमाज ने ग्राध्यात्मिक जगत् मे भमग्रकाति व देवटून बनकर जिल सिद्धातो का प्रतिगदन क्याउ हे हम धरमन्त सूक्ष्म इत्य में सात स्वणिम सूत्रो का नाम दे सकते हैं।

- (१)धम के वास्तविक न्वरूप का उद्घाटन
- (२) वेद का ज्ञान ईश्वरीय है।
- (३ वेद ज्ञान का सबको ग्राधिकार है।
- (४) एकेव्वरवाद का प्रतिपादन ।
- (६) त्रैसवाद का सिद्धान्त । (६) वडदशन समावय
- (७) मुक्ति से पुनरवृत्ति ।

इन सब की धरयन्त विस्तृत रूप से व्याख्याकी जा सकती है परन्तु इस लेख मे प्रधिक विस्तार से प्रपनी बान को कहना सम्भव नहा है। इसलिए सक्षिप्त विक्ले यस भीर विवेचन प्रस्तुत करने का प्रवास

(पूर्व धक में हमने प्रथम तीन सूत्रो की व्याल्या की थी)

धपनाना ही होगा धन्यवा धय का धनव होने की सम्मादना बनी रहेगी।

योरोपाय विद्वान देव शब्द का अय ही (God) र्वहवर लेकर चलते हैं जब कि निरुक्त के धनुसार-- नेवो दानाद्वा दीप नाहा द्योतनाहा द्यस्थानी भवलीति वा । बर्वात दान देने से देव हैं प्रकाश करने से देव है जानेश व पालना भादि करने से देव हैं (मातानित) युन्यान भयीत् सूर्यादि सोको का भी जो प्रकाश है वह देव हैं। यहा वे सारे विशेषण परमात्मा में भी प्रयुक्त होने से वह देवों का भी देव धर्षात् महादेव है। परमात्मा सूय बद बद्र भीर मस्त सब को अपने हा शासन ने रखने वासा है।

इसी प्रकार विच्लु गब्द को सीविष् विष्ल धातुमे नुप्रस्थय मगाकर विष्णु शब्द सिद्ध होता है। विष्सु-व्य प्ती सब जगह व्यापक होने से परमात्मा का नाम विडल है। स्वामी न्यान व ने सत्याक्शकाश मे इसके लिए लिका है- वेवेष्टि व्याप्नोति बराबर बगत् स विष्णु इस प्रकार विष्णु शब्द से सवव्यापक प्रच लेना चाहिए। इस प्रकार उपासनीय ईवकर एक ही है प्रस्य देवता व्यावहारिक प्रवश्य हैं उपास्थ नहीं।

योऽन्यां देवतामुपासते न स देव । वका क्षुरेक स वेकामास् ॥ -शतपत्र बाह्यण १४।४।२ कव्टिक १६ २२

इन्द्र नित्र वदश्यमन्त्रिताहरणी

विष्य स सुपर्गो गस्त्मान्। एक सद्वित्रा बहुचा वयति

क्रॉग्न वस मातरिश्वानमाहु ।। - ऋग १।१६४।४६

विद्वान मेबाबी उसी एक सदरूप परमात्मा का धनेक प्रकार से वस्तन करते हैं। उसी एक को इ.इ. मित्र वस्ण श्रम्ति शौर जो वह शकीकिक उत्तम जान भीर उत्तम कमवाला गीरवयुक्त है इसी एक को ही यम धीर मात रिक्ता नायु भी बहते हैं

इस प्रकार चारो वेदों में यह तह धने कम ब हैं जिनसे सम्बद्धीता है कि वैदिक मत्र एकेन्बर का प्रतिपादन करते हैं। बहुपि दवान द का भाव्य सामग्र जब्बर महीबर भीर परिचमी सस्कृतज्ञी से शक्ति युक्ति-युक्त है क्योंकि उसका ब बार नैरुक्त बीर व्याकरण है।

५ त्रीतवाद

दशनों का मुख्य विषय पृष्टि की प्रक्रिया का ययाय विवेचन करके जिल्लासु को प्रध्यात्म में प्रवृत्त करना है। सृष्टि की प्रक्रिया के विषय में विशित्न विद्वार्गी ने धपने पक्ष एव सत्त की पुष्टि के लिए उसे इस हुआ। उसे वार्षिक सामाविक राजनैतिक प्रकार से जमारा कि वह तथ्य स्पष्ट होने की बचाए भीर अनेते में प्रमु नया। इन का वर्ती को प्रेमेप में तीन कोरियों में अपकर्त 1 set कर्तक में वो कार्यक्रिया &

है। बहु युक्क इतना प्रभावनाली वाकि उसकी इस घोषसा का यह परिणाम निकला कि भाय लोग दो वर्गों न विभा-जित हो नय-देव और बस्र । एक वर्ग की निष्ठा बच्चात्म मंथी भार दूसरे की श्रविभूत मे।

इन होनो वर्षों का जीवन दशन और तदनुरूप कर्मों का धनुष्ठान भी भिन्न भिन्न हो गया। वसा विचारधारा के प्रभारक और प्रसारक के रूप में वाविक का नाम द्याया है। उनके दशन को बार्बाकदशन तबा बाहस्पत्म दशन 🖣 नाम से जाना जाता है। सास्य दशन के बातमत भी एक वाष्यक्य प्राचाय की शासाहै जो परमात्मा को स्वीकार नहीं करते। इसी कारण कुछ विद्वान सास्य ब्रह्म को प्रकृतिवादी भागते हैं। काला-न्तर में बौद्ध दशन इसी विचार बारा से ही प्रमावित हुया ।

पाश्चात्य दशन जिसको हेगेल कार्ल माक्स जैमे प्रकृत दार्घनिको ने इसी घाषि-भौतिक विचारकारा के रूप में पुष्पित भीर परभवित किया । इसी विभारवादा का ही एक रूप है जो एकदम प्रकृतिवाबी है। इस का कितना दूरनामी परिवास क्षत्र मे नकारा नहीं वा सकता।

सोकायत दर्शन भी इसी का ही

आध्यारिमक जगत को आर्यसमाज की देन

वनका धात्र तक कोई युक्तियुक्त उत्तर मही भिसा। ये विवार वर्धन मे तर्क, वृद्धि और विज्ञान की कसीटी पर टिक नहीं पाते ।

दूसरी विचारधारा में केवल नाम परिवर्तन मात्र है। जब के स्थान पर बेतन शब्द का प्रयोग है । बौद्ध मन्तव्यों का बाधार वही है। ईव्वर की सत्ता को कही भी स्पष्ट रूप से नकारा नहीं गया। परम्यु ऐसा समता है कि वैदिक विचार-बारा में जो स्थावहारिक त्रृटिया द्या गई बी, बौद्ध धर्म उसकी प्रतिक्रिया मात्र है। कासान्तर मे बौद्धवन की इस विचारघारा के परिलाम स्वरूप जब पब प्रब्ट होने का भव उपस्थित हुवा भीर भाष्वात्मिक जीवन श्रम पतन की घोर उन्मुख हुवा तो उसकी भी प्रतिकिया हुई सौर यह माना बाने नवा कि वेतन सत्ता का अस्तित्व तो 🕏 पर वही बहाहै। शेष सब कुछ भ्रम मुझक है निष्या है। बहा सत्य जगि-म-क्या का प्रारम्भ यही से हुआ। इसी विचारवारा को प्राच बकरावाय ने सम्पुष्ट किया ।

ब्राचार्यक्षकर बदान्त के भाष्य मे श्चनेकत जग्द को बहा का परिसाम भानते हैं।

> 'बेतनमेक बह्य स्वय परिखयमान बनत कारखमिति स्थितम ।'

> > --- शाकर नाव्य २।१।२६

इस प्रकार वह चेतन और किसी श्रावस्था में जड़ रूप होकर भी प्रतीत होता है। स्पष्ट है कि चेतन यदि जड क्षो सकता है तो जब का चेतन होना भी स्वीकार कर लिया जाना चाहिए। बन्तर केवन बनुभूतिमात्र का है। विश्ने-अस्य भीर विवेचन की कसीटी पर एक बात तो निश्चित है कि जब सदा जड धीर चेतन सदा चेतन ही रहेगा। दोनी के ब्रस्तित्व को स्वतन्त्र तथा मूल रूप से स्वीकार करना धांधक युक्ति समत है।

इस प्रकार हमने देखा कि तीन प्रकार की इस दार्शनिक विवारभारा मे दक बढ सर्वात प्रकृति तत्व को महत्त्व बैली है। दूसरी चेतन प्रचीत् जीव को महत्त्व प्रदान करती है। तीसरी वड़ भौर चेतन दोनो को ही बहाकारूप स्वीकार करती है। तास्त्रिक विवेचन के बाधार वर तीनों ही अपने में अपूर्ण असमत और एकपक्षीय हैं। इनको भी विज्ञान, बुद्धि शीर तर्क की कसीटी पर युक्ति युक्त **श्वीकार नहीं किया जा सकता**ा

हम यहां इनका जो मूल मेद है उसे द्वारयन्त सक्षेप मे स्पव्ट कर रहे हैं। प -बात्मा भोक्ता नहीं है, जब कि जीवात्मा शोबता है। बेहेन्सिवादि के साथ सम्बन्ध सावरचा ने बीपात्वा पुरेशी और जीव्या विरोध नहीं है।

है। ब्रकृति भोग्य तस्य है।

हा सुपर्ला सबुबा सकावा समाम बुक्त परिवस्त्रकाते । तबोरन्य पिप्पल स्वाहस्थन-दनमन्यो समिकाकशीति ।।

ऋग्वेब १।१६४)२०

वेद का यह मति प्रसिद्ध सन्छ है। इसमे मूल मूत तीनो तत्त्वो का बरान है। जीवात्मा भोक्ता परमात्मा सभीक्ता भीर भोग्य फल युक्त बृक्त के रूप मे प्रकृति का उल्लेख हुया है।

व्वेतास्वतर उपनिषद मे भी इसी को-

मोक्ता मोग्य प्रेरितार व मत्वा सर्वे प्रोक्त त्रिविच ब्रह्म एतत ।

इस प्रकार ये तीन सनादि शक्तिया हैं-ईश्वर बीव और प्रकृति।

वाशनिक जगत् मे महर्षि दयानन्द का यही जैतवाद का सिद्धात ही बहुत बढ़ो देन है । भार्यसमाज इसी मान्यता का प्रचार भीर प्रसार करता है। इससे दार्ध-निक जगत् की सभी विश्वनतियो का स्वय ही समाधान हो जाता है। यह विचार ही तक और दुद्धि की कसीटा पर अपने मे पूर्ण है।

६ षड्दर्शन समन्वय

धनेक विद्वानों की वारणा रही है कि वहदर्शन परस्पर विरोधी है। वास्त-विकता कुछ भीरहै। साम्प्रदायिक विचारमारा ने स्व स्व पक्ष 🕏 🥽 पूर्वी-ग्रह की भावना से ऐसा मत बनावा और उसी रूप मे उमे प्रस्तुत करने का प्रयास भी किया है। मूलरूप से शास्त्रकारी की ऐसी भावना विलक्त नहीं थी। महर्षि दयानन्द ने इस विश्व नसता का को समाधान प्रस्तुत िया है वह प्रत्यन्त चमत्कार पूर्ण एव तकं सनत है। बाय-समाज की वही मान्यता है। यह बच्टि-कोण समन्वयवादी है।

सत्यार्थप्रकाश के तीसरे समुल्लास मे ऋषि दयानन्य ने शिका है "जैसा एक विद्या में अनेक विद्या के अबवधी का एक दूषरे से जिन्म प्रतिपादन होता है, वैसे ही सृष्टि विद्या के जिल्ल जिल्ल ख अवयवों का बास्त्रों में प्रतिपादन करने से इनमें कुछ भी विरोध नहीं है।

सम्यार्थप्रकाश के बष्टम समुस्मास के बनुसार कर्म समय उपादान कारण, विचा जान और विचार, तस्त्री का मेल तथा निमित्त कारण अर्थात् बनाने वासा इन स अवयवी के समाय ने किसी जी पदार्थ का शरितत्व में आना श्रमुक्त्रव है। मीमाशा वैधेविक, न्याय, बोब, सास्य भीर वेदान्तदर्शन इन सब की पुकक्-पुत्रक् व्यास्था का रूप है। सक्षः इनमें कही बी

इस प्रकार सह दर्धन एक दूसरे के विरोधी न होकर एक दूसरे के पूरक हैं। सृष्टिरचनाकी प्रक्रियाका पूराव्या स्थान हैं।

७ मुक्ति से पुनरावृत्ति का सिद्धात

बाध्यात्मिक जगत् मे महर्षि ने मुक्ति से पुनरावृत्ति का जो नम्भीर विचार दिया है वह निश्चित रूप से नवीन है यहा सब सम्प्रवायो की मान्यताओं के साब इस सिदात का तुमनात्मक विवचन दिया आराए ठीक तो यही है परन्तु लेख के सत्यम्त लम्बे हो जाने के कारल उम खोड रहे हैं। धन्य श्रेनक श्रावश्यक के न बिन्दु नहर्षि दयानम्द की भाष्यात्मिक जगत्को देन है। जिनका प्रचार बाय समाज करता है परन्त स्थानाभाव के भय से उन्हें भी छोड़ना पड़ रहा है। इस मन्तिम सिद्धान्त की सक्षिप्त रूप मे विवेचन भावश्यक है।

न्याय दक्षन मे तदस्यन्त विमोक्षोऽप वस ' भौर सास्य दशन मे भय त्रिविध-दु सास्यन्त निवृत्तिरत्यन्तपृथ्वाच कह कर सब प्रकार के दुसो की ग्रत्यन्त निवृत्ति को मोथ का स्वरूप बताया है।

इस अत्यन्त पद का धर्य धाषायाँ ने यह लिया है कि इस प्रकार दू ल की निवृत्ति होने पर जीवात्या फिर कमी ससार मे नहीं साता । महर्षि दयानन्द की मान्यता यह है कि धल्पज्ञ धीर शल्पसक्ति जीवास्मा मे ऐसी सामध्यं नहीं कि वह जनन्तकास तक ही ब**ह्याबन्द** का भोग करता रहे। दर्शनो केइस ग्रत्यन्त' पद का यथ महर्षि ने शक्त न करके 'श्रत्य विक किया है। वह काल ही इतना है कि उसके निए 'धास्त्रन्त पद का प्रयोग बकत्पनीय बचवा धसमञ्जस ने डासने वाना नहीं है। मोक्ष काल को महर्षिने परान्त काल कहा है। इस परात काल बागणनाकरके धवधि भी बताई है। इस प्रकार ऋषियों ने मुक्ति संपुनरा वृत्ति की बन्त को स्वीकार किया है।

भायसमाज ने इस प्रकार वैदिक मान्यताझो का प्रवार प्रश्वार करके बाध्यात्मिक जयत् ने जो क्वाति लाने का प्रयास किया है उसका बहुत प्रभाव पका है। बन्ध विश्वासी और पासण्ड की सभी मान्यतामी के प्रवाह की शोकने से जो भी सफलता मिली है उसका श्रेय भाग समाज को ही है।

विश्व आर्य सम्मेलन

माप को यह जानकर प्रसन्तता होगी कि उपरोक्त सभा, तारील १४, १५ १६ दिसम्बर को अपने होरक महोत्सव और बिव्य ग्रार्य सम्मेलन का ग्रायोजन कर रही है जिसके लिए सार्वदेशिक सभा (रामली ना मदान नई दिल्लो-११०००२) की बनुमति मिल चुकी है। हम बाजा करते हैं कि भारत से और अन्य देशों से अधिक से अधिक व्यक्ति यहा ग्राकर इसे सफल बनाये। इसके लिए प प निम्नलिखित तैयारियाँ अभी से चाल कर देव।

- अपना पामपोर्ट बनवा लेव। उसमे प्रयास करके मन्य देशों के साथ साउथ भ्रफीका का नाम भवश्य लिखवा लेव। स मान्य रूप से साउच बाफीका के लिए भारत सरकार अनुमति नहीं देती है। पासपोर्ट के सम्बन्ध में अपने स्थानीय विदेश सर्विस के एजेंट माप को मार्गदर्शन दे सकते। जाप हमे भी लिख जिससे हन यहाकी वीसा (Visa) फार्म भानको भेज देगे।
- भारत की प्रान्तीय आर्थ प्रतिनिधि सभाएँ सार्वदेशिक सभा से सम्पर्कस्थापित करे। सम्मव है कि उन्हें यात्रियों का अधिक कोटा न मिले, तो माप स्वतन्त्र प्रयत्न करे।
- भन्य भाई बहुन भी स्वतन्त्र रूप से पासपोर्ट ग्रीर यहा के प्रवेश पाने की अनुमति के प्रयत्न करें।
- अपने मार्गब्यय और प्रयास के लिए आवश्यक धनराशि इकट्री करें भौर एक्सचच के नियमों को समम लेवें।
- इस सम्बन्ध में हम से भी शोध्र पत्र व्यवहार चालुकर देव, जिससे हम धापको बावइयक मार्गदर्शन दे सके गे।

भी एस० रामभरोस

प० नरदेव वेदालकार

प्रकात बार्य प्रतिनिधि सभा, सन्दर्भ प्रफीका

समापति वेद निकेतन, साउच प्रमीका

३५ क्रास स्ट्रीट, ४०००१ डरबन, साउथ शकीका ।

ひかどうか およ なんなんだんれん

आर्योचित आदशौं के प्रतीक-राम

डा० भवानीलाल भारतीय

भारतीय भावशौं का पूख परिपाक हुने मर्यादा पुरुषोत्तम भनवान् राम मे डॉब्टमोचर होता है। मानव जीवन को सम्पूर्ण एव सर्वारीण बनाने मे जिन गुर्णो की भावस्यकता होती है उनका समग्र परिपाक राम क जीवन मे दिखाई देता है। रामकथा के समर शायक महर्षि बाल्मीकि ने महर्षि नारद से जिज्ञासा करते हुए एक ऐसे व्यक्ति के बारे मे पुद्धा था जो घत्यन्त गुणवान् शक्ति सम्पन्न वर्गञ्ज, सत्यवक्ता रह प्रतिक्र, चरित्रवान् प्रियदर्शन, बात्मज्ञानी तथा विश्वकोध हो। इस प्रस्न के उत्तर मे देवर्षि नारव ने इक्ष्वाकु वश म उत्पन्न राम का ही नाम जिया को उनके विवार ने बुखिमान्, नीविज्ञ, वन के जाता, सत्य निष्ठा वाले तथा प्रवाहित में जने रहते हैं। राज में विश्वासान विभिन्न गुर्जों का उल्लेख करने के पश्चात् नारव ने उन्हें समुद्र के तुरुव बरुवीर, वैर्व मे हिमानव के तुल्य, पराकम में विष्णु के समान तथा क्षमाणीलता में पृथ्वी के तुस्य बताया। नक्षेपत वे बार्य बुलो की समस्टिके रूप मे वान्मीकीय रामायस मे उल्लिक्ति

हए है।

रामकवा की लोकप्रियता और व्या पकता का इससे बढकर और क्या प्रमाण हो सकता है कि घरवन्त प्राचीन कास से ही समुद्र पार के दक्षिण पूर्वी एशिया के देशा मे रामायण के कथानक तथा पात्र बड़ी के लोकमानस में बसे हुए हैं। इण्डो-नेशिया देश में रामकथा श्रत्यन्त नोकत्रिय रही है। वहाँ के निवासियों का वर्ग चाहे इस्लाम है, किन्तु वे रामकवा को अत्वन्त श्रदा की बच्टि से देखते हैं तथा अपने नाम भी रामायस के फनो के अनुकरस पर रक्षने में सकोच नहीं करते। मारि-वस में तलसीबास रचित रामचरित मानस बस्यन्त अ दा से पढा जाता है। लगमन दस वय पूर्व जन मानस की रचना की चतु शताब्दी मनायी गई तो मारिशस बासियों ने लालो की सक्या मे रामचरित मानस प्रत्य भेकने की गाँव भारत के पुस्तक प्रकासको से की थी।

बस्तुत राम ने झपने मुरा कम एक स्वभाव से मानव की परिपूर्ण खिंब हमारे सामने प्रस्तुत की है। लोकरञ्जन के खिए वे बडे हे बडा त्याप करने के लिए भी तैबार पहुते हैं। अत्याचार बोर अत्याव का प्रतिकार करने में वे बचा आने पहुते हैं। प्रत्यच्य तीम्ब कोमल एव मृतु स्व प्राव्य बाले राम अवकर आने पर आयम्ब कठोर भी बन बाले हैं। उत्तररामचरित-कार ववसूति के रुखो में —

' बजाविष कठोरास्ति मृष्ट्रीत कुलुमाविप"

बज् से की कठोर तथा पुष्प हे जी कोमल राम का सोकोरत वरिज वसकता तासाम्ब इदि के व्यक्ति को लिए वस्त्रब ही बहुँ हैं। बीचन के प्रारम्भिक काल में हम उन्हें माता, रिया, पुत बाति पुत्रमांक सम्बन्धता की साक्षापालन ने तपर वेसित हैं। कर्मक पालन से उनकी उपमा किसी सम्ब हे नहीं वी बा बकती। जनकपुर में शिवजबुद मन के समय उनकी शिक्तमा गैर्व तथा माम्मीय का परिच्या माला गैर्व तथा माम्मीय का परिच्या माला पालन बन्हें सम्भन्त प्रिय हैं। इसलिए वे सपने राज्याभिनेक के सामोरक्ष्यक साची करते हैं। कि के सामोरक्ष्यक काली करते हैं। कि के सामोरक्ष्यक करते हैं। कि के सामोर बाह्रतस्वाविषेकातं वनाव वनवाव व । न मया लक्षितः कविषत् स्थान्योऽन्याकारविश्वासः ॥

राज्यारोहल के निए बुनाये चाने पर तथा बोडी देर परचात् वन के लिए जाने के आवेश मिलने पर भी राज की मुखाकृति ने थोडा भी विकार नहीं थाया । सुच-दुस हानि साम तथा निन्दा स्तुति में समत्व बृद्धि रखने वाले ऐसे ही महापूरको को स्थितप्रश कहा जाता है। भारतीय परिवार के बादशों को रामा-बस्त के पात्रों में जीव़न्त रूप से देशा का सकता है। यहां भी राम ही सन्य पात्री ने बादर्श नर्यादा तथा कर्लब्य पातन का भाव बाग्रत करने में दत्तकित दिखाई पडते हैं। सपने भाइयों के लिए तनका स्नेष्ठ भीर वात्सस्य समय समय पर प्रकट होता है। सीवा के प्रति सनका अनम्ब त्रेम भीर भनुराग एक बादर्श पति की नर्यादा स्वापित कर एक पत्नीवत की गरिमा प्रतिष्ठित करता है। इसी प्रकार गुरु शिष्य सम्बन्ध, स्वामी सेवक सम्बन्ध, मिलों का पारस्परिक सीहाद भाव, वहां तक कि सत्र के प्रति भी न्यायपूर्ण बाच-रख का कटान्ड राम के वरित्र में डिस्ट-गोचर होता है। महर्षि शस्त्रीकि ने राम के इसी सर्वेषुणान्तित चरित्र को व्यान में रक्तकर उन्हें वर्गका विग्रहवान क्य कहा है।

सस्कृति सत्य

साँस्कृतिक विरासत

सुजीत कुमार ठाकूर

नारतीय उस्कृति विश्व की प्राप्त स्वाप्त रखारी है। विश्व की अपेक प्रार्थी-स्वाप्त रखारी है। विश्व की अपेक प्रार्थी-स्वाप क्षेत्रकारियों का मोप हो गया है, परण्तु वारतीय उस्कृति का प्रशाह उसी विश्व चंक खा है। भारतीय उस्कृति कई उस्कृतियों का क्षण में वस्त्याय करके मात्र के पुत्र में सी स्वापा मस्तक कमा किए हुए हैं। इसके पीक्ष बहुत के कारण हैं।

बारत वर्ग प्रवान देव है। भारतीय सम्ब्रुति वर्ग प्रवान है। वर्ग से हमारा तालमं करोव्य से हैं। वर्ग से हमारा का प्रवीनकष्ट दिवान्य मह पहा है कि बो वर्ग का नाम के सित्त स्वाद कियान हो वाएना। इसकी पुन्टि के लिए इंटि-हुए के गणे भरे पड़े हैं। इतिहुए साकी है कि, जिब किसी ने हमारे वर्ग पर प्रावत किया चंडका स्वरित्त ही निर नगा। मही काण्या है कि वास्तीय बीवन की समस्य वालों में वर्ग की प्रावना सामार है। व्याप्त कर्म में वर्ग का सर्व नामा है। व्याप्त कर्म में वर्ग का सर्व नाम व कर्म से हैं। इमारी सरकृति विश्व की प्राचीनसम सरकृतियों में से एक है। पान से स्थात वर्ष पूर्व एक प्रामं सरकृति को ही हमारी प्राचीन सरकृति माना बाता बा परन्तु १८२२ ई० में हुई सिन्तुवाटी की जुवाई से हमारे समझ एक गई सरकृति सामी। इस सरकृति को हम भारतीय सरकृति की प्राचन मानी कह सकते हैं।

भारतीय संस्कृति में अच्छे निवारों का अपने में समन्वय कर लेने की एक बडी प्रवस समित है।

इसने प्रार्थ, यूनानी, विधियन, वक, हुन, युक्तमान, ईसाई समी कालियों के प्रण्डे नुस्ते का ग्रहम कर सिवा। विश्व पुर विवेकानन्त्र ने मारतीय संस्कृति की पायन समित की बडी सराहमा की है।

प्रत्येक व्यक्ति को धरना देख प्यारा होता है, नह वपने प्रतीत की उपनिक्वों के प्रति स्वामाधिक वर्ष का समुबद करता है। और जारत तो वह नहान देख है विश्वेन ने सिर्फ दुनिया को बहुत कुछ दिवा है वरन् दुनिया के विश्वम कवीओ से नाहे व धाकाय क वनकर धाए धववा वीदावर उनकी शास्कृतिक उप-तम्बिको को निष्ठकोच बहुन कर, उन्हें धारमधार कर, धरने बहुन् वस्कृति के बावर से उन्हें वितीन कर हवारों वात्र पुरानी इस वस्कृति का सवारार विकास किया। इस शास्कृतिक बरोहर पर वर्षे होना स्वावादिक है।

हमारी महान् सस्कृति की एक नहान् बरोहर है सुफियों और सती का तुक्रमन राय, कभीर तथा चैतन्य का यह मुन् विश्व में मानव-मानव की वसामता को स्वीकार किया नया। परिवरों की सच्छे-यार टिप्पडियों से पूरा परस्तु बासक हिंदा में तैयार की गयी, निक्समावती को तोव चाहे नक्त के कम में ही क्यों व हो—बाह-गीव की बोक्के वाला गरर यपनाया यमा, जांत-पांत पूर्व नहीं कोई। इटि को सर्वे से हरि के होई।

द्य सम्कृति मे प्रिल्पुता एकम् वदा-रात की मावना विशिष्ट कर में तावी बाती है। विश्व दिश्वार पुर में नकर दौबाने से बात होता है कि पूरोगीन वेकी में सविद्युता के कारण समेक मुद्ध हुए, विश्व वन भीर वर्ग की बगार की हुई। मेकिन जारत में हुत मकर के मुद्ध कमी नहीं हुए। सनेकता में एकता हुमारी विवेषता खी है। कई बनों का एव वस्मदामों का यहां एकतम हुत एव वस्मदामों का यहां एकतम हुत रूप किसी में मकार के मनुतार मुद्ध मही हुए। विभिन्नता में बारमूत सक्क मही हुए। विभिन्नता में बारमूत सक्क महारी बस्कृति की एक बकी क्लिं-भात है। यह है विरास्त विके हुने किस्न भाते हुए सीर साने बन्ता है।

यह नव वर्ष सभी को छसद शांति मंगलमय हो

---स्वामो स्वरूपानन्द सरस्वती

वक्षांनिम से दिव-दिवन्त हो, तुरनित व्यापि विश्वद अब धन हो वैदिक विचार कारानुकृत, जिब कन-बस का परिपूर्व इंदय ही

> बोग पराका वर-वर फहरे, ऋषिवर स्वातन्त्र की बस हो करुव शेरक बटल प्रत, मार्वों का प्रृत समझ्ड निश्ववही

नितंतक वेद पराचित हों, वैदिक वर्ग की समिषस अब हो सकान तम का नाम हो, समसी मा क्वोलिवेनय हो

> यो त्याच प्रापन प्रमाणित विशो पुत्री शह वर्ष शहर हो तथ विदि को कि वह प्राप्त को दूसर क्षेत्र होस्तरक है

दर्शनशास्त्र का आदिगुरु

लेखक-ग्राचार्य रामानन्द शास्त्री उपप्रधान ग्राय प्रतिनिधि सभा बिहार पटना

किसी बाति की महत्ता समग्रने के श्रिए भौतिक सम्यता का विकास पर्याप्त ही बड़ी है। मूतल की बहुत जातिया जैसे केडिकोन इकिपिणियन ग्रावि सम्बत्ता की बरिट से बहुत उन्तत भी कि तु आज पदा क्राम्त हैं। जाति की महसा उसके दशन क्षास्त्र से है। किसी जाति का बश्चपन जानने के लिए यह जानना परमावश्यक है कि उस जाति की दाशनिक विचारवारा क्या है। विज्ञान का सम्बन्ध ज्ञान प्रवदा बुखि से है किन्तु दशनशास्त्र तो बात्यानु श्रुति होता है। दशन बम्भीर चिन्तन या विव्य अनुभृति का परिलाम है। इसलिए बर्शन सास्त्र किसी ज ति की सस्कृति की झारमा है। जारतीय प्रजा इस चिन्तन मे अधनी अववा यो कहिये विश्वपुर है। यूरोपीय दासनिक येकिज (Theles) विश्वे दशन शास्त्र का पिता कहने हैं आज क्षे २५०० सी वष पूज यूनान के मायो निया नामक ग्राम में उत्पन्न हुसाथा। ब्रस ने जस तत्व से मुख्टिका विकास आना। उसके पदकात् और यूनानी दाश मिको ने किसी ने सम्मिया वायुतस्य से विकास की कल्पना की। यूनानी दाश किको से सिरमीर पाइयागारस ने सक्या बाद पर ही अधिक बल दिया भारत की क्रिप्ट में ये सब वाशनिक प्रवीचीन हैं।

बातिनक इतिहास से निरित्त होता है कि मानान् गौतम बुद के समय स्पर्धत साल से २६ ० सो नव यून ये तव विद्वात कारत में निल्कुल अपनित्त हो गए थे। स्वय बुद के समने प्रचननो म - ए बात कि सिद्धातों का समज किया है। गौतम बुद्ध ने यार में निकलक पारदा का ना

भारतीय दशन शास्त्र की परम्परा केवों से प्रारम्भ होती है। ऋग्वेद के नास बीय सुक्त में हुने सुक्त दाश्चनिन बातो का स्पष्ट एल्लेस मिनता है। यही विचार सपनिषत काल में प्रविक विकसित हुए। बृहुबारन्यक तथा छ। योग्य मे इन दाश किक सास्त्रों का भी उल्लेख मिलाता है। -क्षिणिलामिपति विवेहणनक केक्यदेशा विपति सःवपति काशीनरेश सवात शत्रु वशासनरेश प्रवाहण जैवासि मुख्य ये। ये राखा राजनीति ने निपुण ने । इनकी कासन व्यवस्था धरबुत्तम थी । राषा बारवपति के लिए कहा बाता है कि उसके राज्य में कोर कुपण शराबी विना क्षानिहीत्र किए कोई पुरुष मूखें (निरक्षर) अविषारी तथा व्यक्तिषारिणी स्त्रियां अक्षीं भी ।

धजातचनुकी राजधानी काशी में अनातक भी बन्दबास कि गार्थ के। सन को अपनी विद्या का नडा अभिमान था। उन्होंने सार अनपदों के दाश्वनिकों को चैनेक्ज कियाया कोई साकर शास्त्राय कर से। उपनिषत कहते हैं कि—

हत्तवालाविहित्रुचानो गाम्य प्राप्त । सहोवाच प्रकासक्षत्र काच्य बहुत ते प्रवचाराति । सहोवाच प्रकासक्षत्र सहस्रवेतस्या वाचि बङ्गो चनको जनक इति व बना पायन्तीति ।

इससे स्पष्ट बिदित होता है कि बत बासाबि को ध्रपनी विचा पर कितना ध्रमिक विकास था। राजा प्रवाहरा वसन के विशाबीं थे। पण्यात वस जात बासनिक हुए उपनिषद मे उनका भी सिद्धात धारपणिय माना जाता था।

राजाजनक उनमें भ्रम्नणी थे। बृह दारम्थक ने एक शास्त्राय का उल्लेख किया है—

> बनको ह बवेही बहुदिलिले यक्षन बि तम ह कुष्पञ्चालाना बाह्मणा प्रसिस्तता बनुबु । तस्य ह वनकस्य बेदेहस्य विविज्ञासा बनुब क स्ति वेश बाह्मणानामनुबानत्य इति । स गवा सहन्यमबदरोव रक्ष वहा पावा एककस्या 'रङ्गचोराबद्धा बनुबु । तान् होबाच बाह्मणा मनकन्तो यो बो बह्मिष्ठ स गता गा उदकता

सर्वात राजा जनक ने बहुद्दिक्त से सम्मन्न एक यह किया। उससे कृद्दशायात के बाह्मण उपरिक्त से। उस समय जनक वितेह को यह बानने की द्रश्या हुई कि उनमें सबक्षक विद्वान् कीन है। उन्होंने योषमा की—बाह्मणों । ये एक सहस बार्ये हूँ सप्लेक के प्रञ्जी से दश दश पार कीने वह हुए हैं। जो कोई साप से मंद्रक विद्वान् हो से उन्हें हाककर से बाबे।

सारी लगां ने तन्नाटा सा गया।
तव वाह्मस्त्रस्य प्रांत ने प्रशं विष्ण कोम
वा को प्रांत्रेण दिवा। सोम्म
वा को प्रांत्रेण दिवा। सोम्म
वा को प्रांत्रेण दिवा। सोम्म
वा मो प्रांत्रेण दिवा। सोम्म
वा मा से वा प्रांत्रेण दिवा।
है। उसमें माग केने वाके तमक के होता
सा प्रस्त्र का विकामिक एव साम्मा
विष्ण प्रस्त्र का विकामिक एव साम्मा
विष्ण प्रस्त्र का विकामिक एव साम्मा
वरूष ने प्राण का एइस वस्माया।
पुष्कुणाञ्चानि जनस्त्रमाया।
पुष्कुणाञ्चानि जनस्त्रमाया।
पुष्कुणाञ्चानि जनस्त्रमाया।
साम्मा

तीरों को बनुव की अत्यञ्चापर रखकर लक्ष्य को विधाना बनाते हैं उसी प्रकार शार्मीने अपने तकों का निशाना याज बल्क्य को बनाया। याजवल्क्य से शिक्षा केकर गार्मी बहावादिनी हो वर्ष।

याज्ञवल्य की दो स्त्रिया बी— कारपायनी और मैत्रयी। वेचारा कारणा यनी तो रोटी ककाने साथि गढ्कायों के ही सबी गहती वी कि त् मैत्रयों तो उन निषद् (परिपद्) के भाग सेती बी। गह पर्या निद्युची बी। जतने ही प्राप्त कार्या

गाजनल्क्य ने उसका बहुत झण्छा समाचान किया। आवा के दाशनिक उस परस्ताब हैं। ऋषि कहते हैं---

> न वा धरे परयु कावाय पति प्रियो भवति धात्मनस्तु कामाव पति प्रियो भवति ।

कोई बस्तु प्रिव नद्दी है अपितु आस्पा ही प्रिव है उसी को जानो यही एक उत्तर है जिससे सारा जवत भारत के आये नत मस्तक है। सारा वस्तुएँ आस्पा स सम्बद हैं इसलिए उसका ज्ञान धावस्पक है।

दश्चनशास्त्रका भारम्य यही से होता है।

न्सी को जानना ही दखनगास्त्र का परम सक्य है। प्रारतीय तकखास्त्र की भी ग्राधारिमला यही है। प्रारोप में नकखास्त्र का मुजन वाणी विकास के लिए हुमा था मिल गारत में इसका सजन ग्रास्वज्ञात के निए ही हुमा।

यूरोगीय नकशास्त्र के विशा सरस्तू नह जाते हैं जो तिन दर सहात के पुत्र के । तिन दर के मर जागे पर लड़े विसंधी मह कर तिरस्तुत कर दिया याया था। भारताय तकशास्त्र तो राजा वनक के दरवार से क्यांचित्र तुलमा नामक स्त्री के मुख से सुना या। जिसमें ६ त्या के सुत्र तो सारी समा हो औन कर विशा या "सीतिय तो महींच स्वामी दशानक सरस्तती ने कहा है कि मह देश कार पृष्ट ह। मूगोक में जातनी विशाय स्त्री है जब

मगोलपुरी पुनर्वास कालोनी में वेद प्रचार

सपुष्य को प्रशिक्षण की प्रावस्थकता होती है जबकि धाय जीव कुला बस्ती धारि वैधिक जान के परिपूण होते हैं। बत्ताक को दैरना जिलाने की धावस्थकता नहीं होती हैं। जाना प्रावगोग्याल की धालवार प्रधान सबसे धक धाय प्रणि निवि कथा ने स्पीलपुरी में महाध्य पुनीलात ट्रस्ट के देव प्रथार विभाग हारा धारफ किए गए काशकम का उद्धाटन करते हुए श्वाल किए लाला जीने कहा कि समीमपुरिक निवासियों के लिए यह स्वध्यम सबस्टर है व्यक्ति सानवपुरसी का इन काशकमों के मध्यय हे जान प्राप्त कर ककरते हैं। इस जान को प्राप्त करना तभी खायक है जब हुने इसे खपने जीवन में परिताय कर सक। उन्होंने क्ताया कि देद का सप्तेय कबक हिन्दु आते के लिए नहीं है यह प्रभी के लिए है। मानवमात्र तक सीमित न होकर प्राशोभास के लिए हैं।

इस ब्रह्मर पर यज भीर भवन के परचात महाबब बमय त की प्रमान बाय केडीब तथा डा॰ गाना द प्रकाश उपस्त्री स्वावदेशित स्थाप पर पायक की कर्मा प्रमान प्रतिनिधि सम्मान्यपारक ने उपस्थित बनों को सम्मेणित विद्या। कावक्रम का मयोजन प नुगराम जो स्वाविक्रम का मयोजन प नुगराम जो स्वाविक्रम का मयोजन प नुगराम जो

दयानन्द की देन

(पृष्ठ ४ का वेष)
उन्हें केवल पृश्य की इच्छापूर्ति का साधन
स सम्प्रका जाय। इसी प्रकार महाँच द्यानन्त्र ने धपनी वैचारिक ऋषि हाए नारी बाणि को किए वेंद्र सम्मान के पद पर सातीन करवाया।

महर्षि दयानस्य ने धापने झारम स्वस्य त्यान तप तथा निर्मीकता के कारणु मानव मात्र को कस्वराखु के बाव पर सबने की प्रेरखा थी। क्रूप्यत्वी विकरमार्थम् का मान्येख केकर एकता के सूत्र में बाबने का उद्योग गुजाया।

स्वयमम भारत की स्वतनता का बीचारीपरा महर्षि दवानन्व ने ही किया वा। यम के बान्ति वदाकर बाय स कृति एव हिल्दी भाषा का प्रम उन्होंने हा बहाया। सत्य को ग्रह्स करने धौर सत्य को क्ष्रीकने से स्वता उच्छत रहना बाहिए। महर्षि का उदमोप झाल मा गल रहा है।

महर्षि दवानन्य ने मानव मात्र ही नहीं प्रास्ती मात्र के कल्यास्त्र के लिए को देन वी है वह साज तक हमें किसी ने नहीं

> ६०७/ए डी साईट, फीनेण्डनच दाहोद गुजरास-३८१६०



समाचार-सन्देश

मार्वेदेशिक सभा के अधिकारियो द्वारा जन सेवा के निमित्त नया पग–

ग्रन्तर्जातीय विवाह केन्द्र की स्थापना

धाव देश की वतमान स्थिति को बेसते हुए रहेन प्रथा को समास्त करन तथा गुण नम स्वमान के धायार पिवाह करने के लिए धन्तवातीय विवाह करने के लिए धन्तवातीय विवाह केन्द्र महिल्यों के प्रथान केन्द्र महिल्यों के माम प्रवीकृत कराए। यह कार्य नियुक्त होता। आप धपने परिवाद पत्र में नियुक्त स्वाती का नाम प्रवीकृत कराए। सह कार्य नियुक्त स्वाती का नामकारी वैवान कृत नाम स्वाती कर नामन स्वाती करा नाम स्वाती कर नामन स्वती कर नामन स्वाती कर नामन स

शिक्षा वर्ण व्यवसाय (फोटो प्रवस्त्र मेज । प्रपनी प्रच्छा क्या बाहर त्रेवने के पक्ष में हैं परिवार के खदस्मी का परिचय शाकाहारी प्रचया क्या कोई रोग तो नहीं है।

प्राप संयोजक ग्रन्तवितित निवाह केन्द्र सावदेशिक समा नई दिल्सी के पते पर ग्रेचें।

> व्यवस्य चन्द्रप्रकाशः सयोजकः

'पूर्ण मद्य निषेध' पर पुनर्विचार हो

केन्द्र में कायस की सुबद सरकार नने धीर यवा प्रधानमन्त्री श्री राजीव बाबो द्वारा सावजनिक जीवन ने अच्टा चार समाप्त करने का बाह्यान करने से नि सदेह नैतिक मूल्बो में सभी भी प्रमाद बास्का रखने वासी को कुछ राहव मिसी है। बास्तव में बब तक हमारी सरकारें शराब बेक्कर बर्नाजन करती रहेंगी तब तक सावबनिक क्षेत्र से भ्रष्टाचार दूर करने का प्रश्न ही नहीं पैदा होता। बही कारण वा साजादी के पूज वह व्यक्ति कात्र स का सबस्य नही बन सकता या जो चरान पीठा हो । महात्मा नाची ने स्वयं कहा वा कि स्वतंत्र भारत की श्वरकार का पहला काय शराव की शारी कुकानों को बन्द करने का होगा। श्वराब पीने से मन व मस्तिष्क पूर्वत दूषित हो

बाता है सोचने समझने की खबित समाप्त हो जाती है। वराव पोने से राष्ट की वर्तमान व भावी पीढी वर्बाद हो रही है। एक बन कस्यालकारी सरकार विखने प्रारत्येय सविधान ने उल्लिखित नीविनिवशक विद्वांतो पर धमस करने की श्वरण की हो यदि श्वराव को प्रोत्सा हित करती है तो इससे बड़ा देश का दुर्भान्य धीर क्या होगा ? बाचा है भारत को इनकीसवी सदी के स्वर्शिम प्रमास की बोर ने जाने की योचना करने वासी भी राजीव शाबी की सरकार इस दिशा ने सकत्य बढ होकर पुत्रविकार करेगी धौर नाथी जी के स्वप्नो का रामराज्य लाने के लिए समस्त देश में एक साच पूरा मद्य निवेष की नीति बागू करेगी।

वार्षिकोत्सव

धायसमाय कृष्णुनगर का वाधिको स्वय २२ धार्में से २० धार्में त सक समारोह पूर्वक हो रहा है। इस ध्रयसर पर ध्रयसदेव पारायण यज्ञ तथा धनेक प्रसिद्ध विद्यानो एव समीराज्ञों के प्रवचन एव भावनोरोबी होंगि।

> मन्त्री-जगदीश नाष भाटिया

सत्संग भवन का निर्माण

ग्रायसमाथ मन्दिर गोविन्तपुरी काकका जी के सत्तव भवन का निर्माश काव ग्राप्त्य हो चुका है । समस्त वार्मिक जनो स शायना है इस पवित का है स्विक से सिक्क चन के डारा सहयोग कर पूष्प के भागी वर्षे । गन्ती

> भावसमाज, गोविन्दपुरी नई दिल्ली—१६

श्री मुस्यतार सान के परिवार द्वारा वैदिक भर्म में प्रवेश

राचेरवाम शाय

हिन्दू पुढि विशिष्त के माली स्वामी वेवान व बी के प्रवल्त वे साम कराबुद्धर जिला सोनीपत के वांबी भी मुक्क्यार खान सुदुत्र भी मोशा बान में अपने वर्रि बार सहित यह बच्चाह यह करने के परवाद स्वेच्छा ने वीवक कम में जेवा साम कराब्द स्वेच्छा ने वीवक कम में जेवा का स्वाम कराब्द करने के परवाद मुक्यार विष्ठु स्वाम वर्ष है।

> केवार विह शार्व कार्याक्याक्यक

श्रार्यवीर दल के मुख्य कार्यकर्ताश्रों का शिविर

धार्ववीर वल दिल्ली प्रदेश के मुख्य कायकर्वाधों एकस् धिक्कारियों की एक धारवरणक बैठक २१ दे--१ साम कार वर्षे धार्यवरणक सुनुमान रोक पर काम्यक हुई । इस कार्य वे वरहम्माति से निर्मुध विद्या बदा कि धार्यवीर वस के काम-कर्ताधों का एक स्थितर २० वर्षक स्थान वार साम बार वसे से राजी ७ वर्षे तक धारयसमाय वान्यर सुनुमान रोक स्थान धारयसमाय वान्यर सुनुमान रोक स्थान धारयसमाय वान्यर हुनुमान रोक स्थान धारयसमाय वान्यर हुनुमान रोक स्थान सभी कार्यकर्ताचाँ से प्राथमा है कि यह इस प्रस्तावित खिविर में भाव सेकर भावनीर वस को समस्य दस क्यांने में सहयोग करेंगे।

नोट (बीध्यावकाश में धार्यवीर दल के ध्रम्य बार शिविर सगावे जायेंगे। इन शिविरों का विस्तृत कायक्रम शीझ ही प्रकाशित करा विद्या बावेगा।

त्रियतमदास रसकत स्थामसुदर विरमानी स्रक्षिकाता मन्त्री

शुद्धि

सार्यक्रमाण नीभणाना विचा नुसन्त सहर (ठ०४०) वे ता० १७ १ १८०॥ को पुरुष्यामा परिवारों के पुरुष्ठ कराई गई। वनी परिवारों के सक्त्यों को सक्की-व्येषणार स्रिष्ठाता— दिस्सी झाम प्रति निष्ठ क्या द्वारा नचीन नान परिवान किया बना। सालकों सालक्ष्य नाये परे उनकी व्यापनी-स्त्रीवा वेषण के मीनदी सत्यवदी बनी थोर झें बच्चा से में मक्का के प्रत्य चारित में साथ प्रतिकृति स्त्रीवित में स्वापनी सीमदी गावणी वेषी बनावा गया। वो प्रम व पूनी के नाम भी वयने नये। कु जूनी से मनीयी नाम रखा नया। क्यों बा का नाम बच्चीर रखा नया। इट सवस्य रण्ट बोर्ने गुलियन परिवारों के उपस्थित हमी पुरुषों ने आसीर्याय विद्या। साथ ही सामा वयनस्थाय पान विदेक विहार (विस्त्री) पासों ने बोर्नो परिवारों की किंदिस नामों का चचन विद्या स्थेत वस्क न स्थापा भी विदे गए और प्रमच्य बाय-चया गालि पाठ के बाद कानकम समायन रुपा।

बार्य सन्बेस साप्ताहिक

पत्रिका के ग्राहक बने, और बनाएँ

क्योकि यह पत्रिका-

- (१) वैदिक मान्यतामी को उजागर करती है।
- (२) बायाँ (हिन्दुबी) की महान् परम्पराधी की बाद दिलाती है।
- (३) महर्षि दयानन्द की वैचारिक क्रांति से झारम बेतना जागृत करती है।
- (४) भारतीय सस्कृति के भूले विसरे प्रसगी, महापुरुषो तथा भादर्श सस्कारो को प्रकास ने लाती है।
- (४) ऋषि मुनि तपस्वी भ्राप्तविद्वानी की वासी का बोच कराती है।
- (६) परमेश्वर की पवित्र वास्ती बेद का जीवनोपयोगी मचुर सन्देश साती है!
- (७) नय लेखकों काँवयो चिन्तको प्रतिभाशाली विद्वानी साहित्य सेवियो को प्रोत्साहन देती है।
- (द) धार्मिक, सामाजिक भीर माध्यात्मिक ज्वोति से सम-मन्दिर की प्रकाशित करती है।
- (२) बेद उपनेद, दर्शन उपनिषद, स्मृति, करूप सुत्र झारस्थक, झाह्मएयस्य यीता रामावस्य नीति, ऐतिहासिक, ब्रमूल्य झार्च क्रन्वो किन को स्रिककास लोगो ने पड़ा ते स्पा देखा वर्षे नहीं समस्य भाष्यासिक कमत् को बिन इन्दो पर सदा वर्षे रहेंगा उन के बहुसूल्य झान से झापका मार्वदर्धन करती हैं।
- (१०) बतएव देरन कीजिए बाज ही धपना वार्सिक चन्चा २० रुपये वेजिये, वब में धपेक विवेदाक तथा महर्षि वयानच निर्वास्य बताब्यी पर प्रकाशित, ५० रुपये मृत्य की मध्य मनोहारी स्मा-रिका नि शुस्क दी जांगी। स्मारिका भीर विधेवाक का स्टाक कम है। मत यह सुविचा प्रमेश तक ही है।

सम्यादक प्रार्थ-सन्देख

आदर्श जीवन '

(पृष्ठ२ का शेष)

खरती निक्रस्त्तम धवस्या को बला जाता है तक भी वह पुन अपनी धवस्या सुवा पने के लिए प्रथल करता हुया एक दिन अंटक्तम धवस्या को प्राप्त कर लेता है। बल हमें कभी निराग नहीं होना चाहिए और खननी धवस्या का गुचारते हुए हम

पुन जब पूजिमा के बाद चन्द्रमा प्रबाद बदा ऐसा नहीं करता तो बिनाश प्रारम्भ हो जाता है। धत बिवाक धौर सापरवाही प्रमाद में प्रयत्न शिविस कभी नहीं करनाहै। इत्यादि धनेको शिक्षाए हमें चन्द्रयासंसिक्स्तीहै।

पुन वन हुम सूम की तरफ देवते हैं तो पाते हैं कि सूम को जब बाधाएँ (बादक) पे भे तेता में नो सूम पवडाता नहीं उससे सुद्र करता है धौर दिवसी होता है। यहां रिन्दर हम ग्रह सन्येवा दते हैं कि बाबायों से जरा भी विश्वसित्त मत होधों। उनम जुमले चल बाधों। उस्वा उठो सामें बड़े। तुम शब म विश्वसी होने। वित्तिता सबस्यमन दूर होकर होती।

इस ससार में विपत्तिया भी हमें अच्छ-तम बनाने के लिए ही भानी हैं। वह ईश्वर की तरफ से हमारी परीमा है। उसमें बुक्तकर हम विषयी होते हैं। सफ्त होते हैं निखरते चले जाते हैं। ससार में विपक्तियों ने भी व्यक्ति को महान् बनान में कम योगदान नहीं दिया है।

दन प्रकार हम देखते हैं कि एक एक वेद सन्त्र से कैंसे मेरी घरनुत जान विज्ञान गरे पड़ हैं। सब ही वेद सन्त्र एक भ एक बदकर मेंच्छ हैं। जितना ही जनसे हम धवनाहन करने उतना ही धानन्द भीर मान निज्ञान हम प्राप्त करत चन

इसी लिए वेदों के परम ममज दव दबानन्द उपदेश मञ्जरी के उपदेश में बताते हैं कि झाग सोग एक एक वेद मत्र को लेकर गहुन सनन चितन समाचि से रैदबर से प्रपक्षान प्राप्त करते वे भीर प्रकृत्य बार्ते सतार को देने था ध्वा हुम ती ऋषिनाध्यानुवार वद सनने का गहुन मनन करते हुए नई-नई बार्त नसार को देते रहें जिससे ससार का उत्तरोत्तर हित होता रहे। क्योंकि ससार का उप कार करना सकता मुख्य उद्स्थ हाना चाहिण। ब्रोडेस् शब्

. वित्वस्वरी प्रसाव सिंह ध० सहावक निदेशक ५०२ के ीय जल खायोग सेवा भवन रामा कृष्ण पुरम न⁶ दिल्मी ६६



घरेलू उपयोगी बातें

- ऊनी कपडों को कीडों और वरसाती हवा से बचाने के लिए उस पर खुब बारीक पिसी हुई फिटकरी छिडक।
- परके अन्तर उन पौचों में जिल्ह प्रकाश नहीं मिलता सुहाना निश्चित पानी डाल। हमशा ताजे बने रहेंगे।
- एक सर पानी में एक चम्मच स्मिस-रीन मिलाकर रेशमी कपड धोर्थे इससे न तो व सिकुडने भीर न ही कन्हाने।
- नये रेशामी मोजो को पहनने से पहले खूब गरम पानी में बो नें मोजे डीके नहीं हांगे।
- उनी व रेक्समी कपडो से यदि रम श्रूटने का बर हो तो उन्हें चरा सा नमक रीठे के पानी से कोर्से रम नहीं श्रूटेगा और कपड भी साफ व चमक दार युलेंगे।
- नये रसीन सुती कपको को कोने से
 पहल मध्य उन्हें कुछ देर कोड नमक
 मिन पानी में मिन्नी दिवस काए सो
 उसका रच बहुत दिनो तक सच्छा
 बना रहेला। स्वारण रहे पानी गरक
 करने की सावस्वकता नहीं है।
 देशसी करको ने क्षाक साते के लिए

- चुले हुए क्यडों को बोडी सी स्प्रिट | मिले साफ पानी में बोडी डेर के लिए डुबोये रखें।
- वायातीन रगकास्वैटर घोले समय | सोडासानमक डालने ने कथी भी | स्वराव नहीं होगा।
- बचे हुए आटे का कभीषा हान से बचाने के लिए उसे पोलीचिन की वैलियों में नालकर फिक्र म रखना चाहिए। जब आटे की आवस्यकला हो तो १५ मिनन पहले ही बैची को पानी ये रख वीचिए झाटा १५ दिन भी कराब नहीं होंगा।
- यदि ककडी का फर्नीचर पुस्तवा सा लक्ते लगा है तो सरखों के तेल से पानी सिमाकर साफ करिए फर्नी-पानी से पहले खैसी चमक धा चायेगी। □ नेल पानिका सक्त जाय तो उच्छे कुछ बुढें रिस्टर पान दीचिए, उच्छे।
- पत्तती हो ज्याएगी।

 विदक्षीय सक्ष जाय तो उसमे घोडी
 सी न्लिसरीन डाल टीबिए फहले
- की तरह मुलायम हो जायेगी।

 जादी के पामूचएा स्वयं विश्वों को उस पानी में सफ करिए जिसमें साधु करा प्रचान कर वें।
 साधु करा हो सा उन पर चूने का लेप कर दें। मूखने पर पुरान करते से रासकर साध कर दें।



वैवाहिक-विज्ञापन

एक १३७५ र० मासिक बाय वाल विद्युर धनासन्देण्ट के लिए तिस तन, सुन्द स्वस्थासया लम्बा विश्ववाया परि त्यवताकी धाव यकता है। सम्पक्त कर—

श्री ग्रमरनाथ खन्ना मनान न०३६७ सेक्टर न०१९ए० फरीदागद (त्रस्थाणा)

प्ररोहित की आवश्यकता

धार्यसमाज क्षीन पाकँ में एक नयोध्य विद्वान् पुरोहित की धानस्यकता है। उचित बेतन दक्षिणा प्रदान की जाएगी। इञ्छक महानुसाब बीघ सम्यकँकर।

प्रधान, लाला इन्द्र नारायण ए१६ ग्रीन पार्कनई दिल्ली

चार्य जगत की शान २०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन

साप्ताहिक 'बार्यसन्देश १५ इनमान रोड, गई किस्सी-१

नेत्र चिकित्सालय

(अनुमानित लागत दो करोड रुपये) के लिए दिल खोलकर दान दीजिए दान की राशि आवेरर प्रविभिष्यम जीव दा के अतर्गत कर मुक्त होगी। सारा वान : चेक/मनीसार्वर/बेक बावर हारा मत्री, माता चन्ननदेवी ग्रायं धर्मार्थ नेत्र चिकित्सासय. बी-१ जनकपरी, नई-दिल्ली-४८ के पते पर मेजा जाए । दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर अंकित किए जाएगे।

निवेदक

राममोपास झालवासे संरक्षक विकित्तालय जवान, विक्ती प्रवास बार्वे प्रतिनिधि बार्व केनीब एषं प्रधान, सा०धा० alle anima प्रति० समा चेरि॰ र॰

सौजन्य से महाशियां ो हुद्दी प्रा० लिमिटेड, १/४४ बीतिनवर, भौकोगिक क्षेत्र, वर्ष विस्ती-११००१

"आर्यं जगत" साप्ताहिक

- १ यह हिन्दू दियो के सबल प्रवस्ता और राष्ट्रवाद का प्रवस पोषक है। २ राष्ट्रीय समस्याओं पर इसकी सुविचारित टिप्पित्या राजनीतिक लेखों को जी प्रभावित करती हैं।
- अभागवा करता है। इ. बहु वन के नाम पर पासच्यो और अन्यविश्वासों डा कट्टर विरोधी है और वैविक वर्म के उज्यवस स्वरूप का पुरस्कर्ता है। ४ यह समाज ने जैनी जुरीतियों ना निवारका कर सामाजिक ऋतिक के जिए प्रेरिट
- करता 🧎 ।
- १, यह बनुष्य नाथ की सारीरिक सौर सारिशक उल्लित का मार्व सुम्राता है। ६ किसोरी के वरिक्ष का शौर उनके स्वास्थ्य का निर्माण इसका विशेष सक्य है।
- ७ सोसल नारो स बचाकर नारी उत्यान की सही दिया का सन्देश देशा है।
- वैदिक मस्कृति पर अपनी या पेशायो द्वारा किए वए आक्रमस्तो का तर्क कुक्त उत्तर
- र प्रार्थ सस्यो प्रीर प्रायसमाजो की महिलिक्कि का वरिषय देता है। १० व्यक्ति समाज धीर राष्ट्र ने यशिक केंद्रिक का या विकार के कार्य पुरुषों हो
- संबठित करना चाहता है। यदि इनमें स एक भी लक्ष्य बापको प्रिय है तो भाव ही इसके वार्षिक या प्राचीवन ग्राहक वनिये।

वार्षिक जुल्क २४/- ६० और माजीवन सदस्य २४१/- ६०। प्राप्ति स्वान-पार्व प्रावेखिक प्रतिनिधि समा धार्वसमाज मन्दिर मार्न नई दिल्ली-११०००१

श्रद्धेय श्री रामगोपाल शालवाले का श्रमिनन्दन

बशस्त्री प्रकान श्रद्धे व श्री रामगोपाल जी शासवासे के सम्मान में धावामी १२ जून, १९=४ को दिल्लीने एक समि-नन्दन समारोह का भागोजन किया वा रहा है। सालाजी ने अपने जीवन काल में बैदिक बम के प्रचार आयं जाति के उत्थान, श्रायसमात्र के सबठन को सुद्रह बनान एव राष्ट्रीय बारा के सरक्षण से गौरवशाली भूमिका निभाई है। उनका जीवन भौर उनके कार्य अनुकरशीय है।

सार्वेदेशिक यार्थ प्रतिनिधि सभा के इस धवसर उन्हें एक समिनन्दन ग्रम्ब श्री सन्पित किया जायेगा । प्रमुक्त कार्य कर्नो का एक कार्यकारी दल इस बायोजन की क्ष्मता के लिए कार्यरत है। बर्जन साला भी के सम्बन्ध में आपके प्रेरणा-वायक सदेश, सस्मरता एव सुकाव हते लाभकारी होंने।

> करे रा॰ सानन्द प्रकास उपमधी - सार्वदेशिक समा, दिल्ली सबोजकः प्रमिनन्दन समारोह

लिए स्वास्थ्य कॉगडी फार्मेसी. हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

सासा कार्यालय-६३, गली राजा केदारनाय, फोन: २६६८३८ चावडी बाजार, दिल्ली-६





का साप्ताहिक पत्र24.4

मूल्य एक प्रति ४० पैसे

रविकार २१ ब्राप्तेस १६८३

बार्वे संबरसर ११६०८५३०८५

वैशास २०४२

सम्पादकीय

महात्मा हमराज दिवम अंक

। वतारक महात्मा

अनादिकाल से सृष्टि का चक्र भविरत गति से चल रहा है। अगस्मित जन इस घरती धाम पर जन्मे और मृत्यु को प्राप्त हो गये। अनन्त आकाश में उभरते चमकते अनेक सितारे दिसते धासो से ग्रोफल हो जाते है किन्तु युग-युगो से ध्रुवतारा अपने स्थान पर गनिमान् है। अधि-यारी में भूले भटके पिषकों का वह सदा दिग्दर्शक रहा है। ऐसा ही मान-बता का मूतरूप घ्रुवतारक है महात्मा हसराज। पजाब की घरती का यह लाल अपने समय में प्रान्त भर में बो॰ ए॰ की परीक्षा में द्वितीय आया था। चाहता तो उस समय मे अच्छा सरकारो नौकरो प्राप्त कर समद्धि लक्ष्मी के फुलो से सुवासित पथ पर चल पडता । परन्तु उन्होने स्वोकार किया शिक्षा सरस्वती का माग जो काटो की चुनन से दहक रहा था। यह सहज ही सीधा सरल माग नहीं था। कंबड-लांबड कटाली फाडियो, हिसक जान-वदो को भयकर गजना के बोच से गुजरने वाला एक लम्बा माग, जिसकी मजिल बहुत दूर थी। सचमुच त्याग, तपस्या भीर बलिदान का मार्ग दुस्तर ही होता है। और इसे कोई माई का लाल ही अपनाता है। महर्षि दयानन्द को शिक्षा नोति के प्रसार का महान सकना बारण किया, महात्मा हसराज ने । डी॰ ए॰ वी॰ स्कूल एव कालिजा के महान् वट वृक्ष के रोपण का काय किया इस महामना ने। देश-देशान्तरी प्रदेश, प्रान्ती मे दयानन्त एग्ली वदिक स्कूल एव कालिज का फलाब उस महान् व्यान्त व को याद दिलाता है। उन्होंने कहा था वदिक वम एव सायसमाज के प्रचार का एक मात्र गुर है उच्च बलिदानी बोद एव समर्पित स्थागी सेवक। वे इसी एक विचार पर सम्पूर्ण जोवन चलाते रहे। बिना वेतन लिये, भूखे पेट रहकर बारत की गुलाम घरती पर देख के मावी करावार को खिखित करते रहे।

दिल्ली

वय ६ सक २२

महात्मा हसराज ने यह पग उस समय रखा था बब समस्त भारत के बन-जन को अग्रजियत भीर ईसा मसोह की भेडो मे बामिल करने का यहयन्त्र लार्ड मैकाले को शिक्षा नोति के अनुसार जनाया जा रहा था। किसा नीति एव पढित तब केवल मात्र अग्रव शासको के द्वारा अपनी योजना के अनुसार दी जा रही की। ऐसे विक सल काल को महान् चुनौती बनकर सह हुए महात्मा हसराज। महर्षि दयानन्द के इस घीर वार शिष्य मे सेवा दया और त्याय का भी महान् मुख वा। घगर मैं यह कहू कि सेवा भीर त्यान का वह देवता था तो भतिसमीक्ति न होगी ।

महर्षि दयानन्द के मिखन के लिए जहाँ उन्होंने धपना जीवन दान विया, साब ही बकाल पोडित जनता के लिए उनका सेवा कार्य एक देवत्व-पूर्ण कार्य था। उन्होंने १८६५ से १६२१ तक बोकानेर, राजपूतामा, सूरत, मध्यप्रदेश बडीदा, ध्रवथ गढ़वाल, उडीखा, ख्लीसगढ पंजाब स्नादि के भवकर बकास में तथा कांगडा के मूक्त्म के बहाविनाख के समय



उनके द्वारा किया गया सेवा कार्य तथा राहन कार्य उस महात्मा के मान-बताके चरमोत्कर्षका परिचालक है। युग-युगो तक मानव मात्रा के लिए महात्मा हसराज का पवित्र जीवन दिशा प्रदान करता रहेगा । सचमूच ग्राज उस महान् नाविक की स्मृति रूप लहरे रह-रहकर उनके प्रति प्रगाघ श्रद्धा जगा रही हैं-

लहरो से लड लडकर पतवार हाथ में थाने। ओ बक्ष चीर सागर का उस तुफानी बेला मे।। जब भन्ना के भौकि थे उन्माद भरा था सागर। मृह फाडे तकते वे जब लहरों के भूवे अजगर।। जिसके बदम्य साहस ने डरकर मृह जरान मोडा। जिसने बपनी नौका का पल भर भी साथ न छोडा।। उस नाविक को तकती हैं, मेरी यह माज नियाहै। "भो" अन्त स्थल से बरबस निकली पडती हैं भाष्टें ॥

—यक्रपास स्वांश

सत्संग वाटिका

(यज्ञस्य) जीवन यन के (शिवे) नुम प्रमुखान संसुमपानन से (मतिष्ठन्य) स्रस्थित दो जा नगजा।

सम्प्रा ससार की नाभि यह यज्ञ है। मेरी मति झौर मुमति यज्ञ से सामर्थ्ये गाली होने।

(बज जब्द यज धानुसे बना है! यज का अर्थ है देन पूजा सगतिकरस्य भीर दान। इन सन बालों का एक वाक्य म कहनाहो तो यत का सब है खेष्ठ तमयाप्रशस्ततमकमः। सबसे अष्ठ, सबसे प्रशस्त या सर्वोपयोगी जो कर्म होता है, वही प्रशस्ततम कर्म कहलाता है। जिस कम से श्रेष्ठी का सम्मान सबके साथ श्रमिन्नता भीर परोपकार होता है वह प्रशस्ततम कम है। इस प्रकार के कमों से ग्रपने प्राप्तो समर्पित करने से ग्रपना सन शक्तिशाली भीर समय होता है। तात्पय यह दै कि अपने आप को ऐसे कमी ने लगाना चाहिए जिससे सबका हित हो सबका कल्यास हो। एसा करी से मन की शान्ति बढती है उसमे सामध्ये आता #1

नक बार की बात है कि अपनी किशोगावस्थाम वंशबल्यु चितरजनवान ने अपने पितास अनुरोक किया पिताजी मुक्ते कुछ रुपये चाहिए।'

पिताने कहा क्यो कल ही तो मैंने तुम्हे पाच स्पये दिय व पिता हुछ नाराख हुए।

देश बन्धुने कहा 'हापिताजी कल आयपने मुन्ने रुपय ब्रावस्य दिये वे पर वे सबके सब सर्वहों नये।'

पितान उन्हें तीन क्यें दिने और कहा कि न्येंग सवाल कर कर्य किया करो। पुत वक बाते सवा तो अपने एक विक्वास्थान नौकर को मुलाकर उन्होंने उस सक्कें के पीझे सगा दिया और कहा कि तम पुण्याप जाकी सौर देवों कि वह क्युम का स्था करता है ?

भी । प्राथा " मने बालक को खाते हुए देला घोर यह भी देगा कि रास्ते ये खेत एक लडका मिला। जो देवते से प्रस्थान पान को स्वयान स्वाधान के प्रस्थान पान के प्रस्थान के प्रयास के प्रयास के प्रयास कर के से स्वयान के प्रकार को के प्रयास कर के से स्वयान के प्रकार के प्रवास के प्रकार के से स्वयान के प्रकार के से स्वयान के प्रकार पर गया। वहां उही गत्न वे क्यों के कुता के कि दूत के प्रकार के प्रवास के प्रकार के स्वयान के प्रवास के प्रवास के प्रवास के प्रवास के स्वयान के स्वया

जीवन यज्ञ है : श्रेष्ठ कार्यों के लिए है

सुरेशचन्द्र वेदालकार

यज्ञस्य चित्रे सतिष्ठस्त । यजुर्बेद २।१६ श्रय यज्ञो भुवनस्य नामि । ऋक् १।१६४।३५ 🚦 यनिष्ठच मे सुमतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्नाम् । यज्जु० १८।११

×

सालू मा क्ये और पुत्र के वर माने पर जन्होंने जसे झाती से खवाकर कहा, बेटा ¹ जीवन में गरीबों की सहायता दशी तरहा करते रहना । यहां सच्चा वस है। ¹⁷ से दशी शिक्षा का पालन करते हुए वासक चित्रवनवात देशक्यु चित्रवनवाल के नाल से आरतीय इतिहास में म्रमर हैं। सहायता के महिनाची दीनों, दुखिनों की सवा दीनवन्यु परसेश्वर की महित है। यहाँ पका है।

नोकसान्य तिलक के जीवन की एक पठना है। कवा में खिलक खाजी को रिहास निक्वा रहें पे। खाज निज तो रहें थे पर उनका मन बाहर लगा था। एक खान बैठा पाठ सुन रहा था निक नहीं रहा था। उनके पास न तो कापी को भीर न कलम। उन इस प्रकार बैठों के कर लिलक को क्रोज था नवा और वे बोचे बनवन पह क्यां पाठ क्यों नहीं निकार है? नुरु की धापने जो कुछ भी बताना है मुक्ते म्हास वाद हो गया है। फिर क्यों निक्कू ""

विक्षक कुड हुए कौर बोले 'तो फिर सुनावेगा यदि न सुनापाये तो बेंती से क्षमडी उथेड दना। व्यवताने सारा पाठ सना दिया।

स्वामी स्थानस्य एक बार आीमपुर आने लगे ता लोगों ने बहा वाने से रोकना चाहा भीर कहा कि वहाँ न बाइये बहु नवार देश है वहाँ के लोग सरास्तो हैं वरस्य स्थानी की के स्थान स्वीत-कोड क्यारी यबुलियों को बस्ती बनाकर जला वें तो भी परबाह नहीं हम जनता को सच्का मार्ग बचाकर रहेंगे हम जनता को सच्का मार्ग बचाकर रहेंगे विस्ता नहीं। "जब स्वामी को बहु बाने को तस्यर देखा तो एक अस्य बोला महाराज! मही बरा नरसी बरता तह हूर देख है। स्वामी जी पुरकरात ग्रीर को भी भी कब को जाटने के लिये पुरकराती होंगे "मैं महाराज भीर समर्थ के बनती हुआते की जब को जाटने के लिये पुरकराती ते ताम नूँगा, न कि नारियों की नेहरती से ताम नूँगा, न कि नारियों की नेहरती से तरामृता। मुके किसी बात का जम नहीं है। यह है महस्तान मार्ग विक पर बजी य पुरकर बना करते हैं।

बसार ने नवा काम करने के लिए सुचार करने के सिये वा कान्ति करने के लिए जीवन को बज्ञमय बनाना होता है। ससार ने एक यज हो रहा है। सूर्व बायु चन्द्र पृथ्वी भीर भाकाश यज्ञ कर रहे हैं। देखते नहीं दीपक की बली धपने को बनाकर मस्य कर देती है और मटकों को मार्व विससा जाती है। क्या देखते ही बीब अपने को मिट्टी में मिला बेता है और श्रपने स्थान पर अनेकों को अपना दे देता है। बीच्य ऋतु में जब पृथ्वी तथे की तरह गम होकर तप रही होती तब यही पानी की तम्ही तम्ही बूंदें एक के बाद दूसरी शारम बसिदान कर पूच्नी को शीतल कर वेती हैं। यह सव यज्ञ ही तो है। सूय को देखा है न[?] वह सारे ससार का दुल दूर करताहै। परन्तु यदि हम उससे कहें सूर्व देव । बापका हम पर किसना उपकार है कि आपने समार का ब्रावेश दूर वर दिया है तो सूर्य कहेगा मैंन कहाँ से अवेरा दूर किया है ? लाझो बुके योडासा विकामी तो^{'?} मैंने तो मधेरादेवाही नहीं है सो दूर कहाँ से करूगा[?] में ले केवल प्रकाश करना ही जानता हु। रात विन वसते रहना ही मुक्ते ज्ञात है। सूर्य ने अपने जीवन का यज कुम्ब सतत प्रवीप्न किया है । वही क'रसा है कि उसकी नहीं से ब्राण नाम जीवित रहते हैं फून फन उत्पन्न होते हैं बन-स्पतियां व ता है। शारे संतार का कार्य

की चारना है। 'सूर्व धारना वनकृति स्मुवस्य।

महास्था दुव, थंकर, स्वासी द्यालंध स्वामी सदायन्द्र और महास्था हूँ बर्धक का जीवन वज है। यह ही जीवन हुँ हमें यज की बर्धकर्म की आदत वालंधी साविए। सूर्व जनना बानदा है। अध्यक्ष बरताया बानते हैं। ह्वा बहुता बानदी है। सन्त दुखियों के ब्रांसू पोखना जानदे हैं। बीवन में सर्क्षम मुख्य बस्तु है। दिल्लंकि सर्क्षम करना निरिचत कर सिका के बीवन में संकार है बाते हैं।

श्री ईश्वरचन्द्र विद्यासागर का नामे सज्जनता एव दयालुता के लिए सारे भारत मे जाना पहचाना है। उसकी शिक्षा दीक्षा उनकी रूपाति उनकी सामा-विक प्रतिष्ठा व धन सम्पत्ति सादि सब उनके जीवन से मिन भिन्न भागों से साबे परन्तु उनके चरित्र की पूर्णता उनकी माता की देन थी। उनकी माता का नाम मनवती देवी वा । एक सच्या को भगवती वैवी वर के काम में जुटी बी। पड़ोस 🕏 एक नांव से वरीव स्त्री छाती से अपने छोटे से बच्चे को चिपकाए हुए ग्रायी। वह भीर उसका बच्चा दोनो सदी से काप रहे वे । वर्फीली हवा चल रही थी । उसने भववती बेवी से कहा माताजी सगर कोई फटा पुराना कपडा पडा हो तो दे दो बहुत ठड पड रही है। बच्चे को डांप सूनी । मगवती देवी का हृदय पसीज नया वै घर में गई भीर अपने विस्तरे ने से ही एक नई रजाई लाकर बोलीं लो यह पटे पुराने कपडे से अधिक गर्म रहेगी, भग-वती देवी के पास केवन वही रखाई थी। उन्होंने धाने कब्ट की बरा भी परवाह न की वह सोचकर कि सभी उस मा धौर बच्चे को भी तो जाड़ ने बचने के शिये कुछ चाहिए था। इसी माता के पुत्र वे ईश्वरचन्त्र विद्यासानर जिनके यज्ञमय जीवन की कहानिया वहाँ तहाँ सुवाई देती हैं। भौर जिनको जन्म देकर भारत माता नीरवान्त्रित हुई है।

माईकेस मधुसूदन दल बगास के साहित्य की में बहुत प्रसिद्ध है । वे जिलने प्रतिमावान् वे उतने ही उदार भी। ऐसे ही एक धन्य बनाली लेखक ये राजकृष्ण, राजागब के विषय में कहा जाता है कि वे कवि वे नाटककार थे, अनुवादक वे, निबन्धनार वे । मतला वह कि साहित्य के सभी धनो स उनकी शहुच थी। कहा जाता है कि एक नाटक में उन्होंने धपनी सारी सम्पत्ति सना दी। वह असफल हो गया और उनके शूबे भरत के दिन था नये। वे एक प्रकाशक के पास वये। यह उन्हें काने देने को राजी हो बया। उन्होंने क्षमा लेकर उर्वे मंत्री अन्यवाद भी नहीं नहीं विया वा कि एक सुरुवन बड़ी उनके पास का नवे । उन्होंने कहा कि उनकी पत्नी बांब मे बीमार पड़ी है और पन्तिक शर्थे से प्रहो है। यह उपके पास जाका

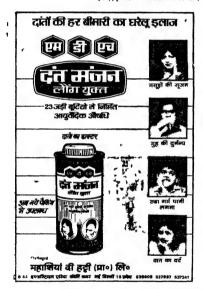
का रहा है स्की निए हो हार्र कार्र कार्रहरू 🧸 👙 (हेन्द्र कर 12 हुन)

तनिक और रुक जाते।

बीस रहाया निकट किनारा मिटला जाताया था प्रथियारा। -बमक रहा वा भाग्य सितारा क्षस अर ऋपकी पत्रकें और तम क्कोड नए सब माते ऋषिवर! तनिक सौर रुक वाते। तुम हम को वरदान मिले थे मानव को ग्रशिमान मिले भारत को मनवान मिले वे मानवता पूजित होता यदि हम तुम को भ्रपनाते स्वामी तनिक और दक जात।

शुमको कोकर जगरोता है पर रोने से खब क्या होता है जो सोना है वो ही होता है आई मानवता को जीवन भर, तुम तो रहे जगाते स्वामी तनिक और एक जात । अप भर को या ग्राम बनाना बेद का पावन गीत सुनाना धम ध्वजा को पहराना ग्रामकार मिट जाता विद तम भीर प्रधिक रुक जात स्वामी तनिक भीर रुक जात।

> सोमदत्त विद्यालकार एक ६११ नया रोड राजेन्द्र नगर दिल्ली ६०





११वे सरकाम स उपमेल

जीवन यज्ञ है (पृष्०२ काशेष)

चाहते हैं पर यात्रा के लिए पैसे नहीं। इस पर राय बाबू का हाथ तुर स जेव

मे गया भीर सब चन उनका व दिया उहोत यह भी नहीं सोवाकि इसी वन से वे बारती धान की सनिवाय सावाय कतापूरी करने वालेष उस व्यक्ति ने उन्हें बन्यवाद वियापर वह क्या जानता याकि रागवाजूने कितना वडा त्याग

बजीब भावना जब या पराजव सिद्धिया प्रसिद्धि यक्ष या भागवश सुल वा दुःस की धोर ध्यान नहीं दनी। समुद्र मे ज्वार बाता है भीर माटा भी लेकिन उसकी बीर गम्भीर गजना कमी नही दकती। बजीय व्यक्ति विश्वय से उमत भौर पराजय स निराश नहीं होता। यज करने बाले को चाहे फासी मिल या फूल की माला वाहे यश मिने या अपयश वह तो प्रशस्त कन की भोर ही बढता है। है। जीवन में विजय के नवाड मत बजाबी धौर पर जय का रोना मत रोझो। यज ही बहान् वम है।

महामा हसराज (पृष्ठ ५ का नेष)

कर बहे ।

≈रिद्वर साहन ग्राथम मे रहने के काण महामाजी का पेट स्वासी रूप से गर वहो गया और सही उनकी मृत्युका मूल कारण बना। हरिद्वार से मौटने पर महात्मा हसराज जी सोलन गए। बहा की जनवानु से उनका स्वास्थ्य तो सुवर नया किन्तुपेटकारोथ ठीक नही हुआ।। सितस्बर मास में लाहीर बा गए और कुछ दिन ठीक बसता रहा। परन्तु २५ अक्नबर १९३ व को उनके पेन्से उस समय सवा नक दद महसूस हुआ और साम तक तेज बुक्तार भी हो गया। टा० विश्वनाथ का इसाज शुरू हुआ। ह लत चिन्ताचनक होवे हुए भी धारोग्य लाम की सम्भावना व्यक्त की नई।

सारा काय अगन् महात्मा की की बीमारी से चितित हो उठा। हजारों की सस्याने तार पन भावि से पृक्कताश्व होती रही। ५ नवस्वर को कुछ हालत सूपरी थी और उन्होन बात व त भी की परन्तु **१ नवस्थर को हालत दिर खराव हो नई।** पेट की पीका अत्यन्त कच्टदायक हो वर्ड भीरन जभी श्रनियंगित हो क्या। सीस भी उलडने लगा १५ नवस्वर के दिन श्वास्थ्व और भी विगड गर्गा। महात्मा जी के मभी सम्बन्धी वह उपस्थित हो गत के न्यारह बजे उड़ीने धन्तिम सास विवा ।

१६ नवस्वर १६३ का वह समानी राजि । जिस मे महामाची ने धपने प्राणो का उल्सन कर विस्।

महात्मा हसराज जी का वेहात हो गया सनर एक सन्दश देकर कि वैदिक वस का प्रचार त्यान और तपस्था तथा बलियानी स हो सकता है। यही वास उन्होते अपने सम्पूज जीवन से सिंड की।



श्रार्य जगत् की शान 200 बिस्तर वाले निर्माणाधीन

नेत्र चिकित्सालय (अनुमानित लागत दो करोड़ रुपये)

के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि श्रायकर श्रविनियम जी • ६० के ग्रतर्गत कर मुक्त होगी।

सारा दान चैक/मनीम्राईर/वैक ड्राफ्ट द्वारा मत्री, माता चन्ननदेवी मार्य घर्मार्थं नेत्र चिकित्सालय, बी-१ जनकपुरी, नई-दिल्ली-४८ के पते पर भेजा जाए।

दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर अंकित किए जाएगे।

निवेडक

सुमंदेव TETR बार्व प्रतिनिधि बार्व केन्द्रीय एवं प्रवान, सा॰बा॰ हासय चून्नीलाल बेरि॰ दु॰ प्रक्रिक समा

सौकन्य से महास्त्रियाँ ी हट्टी प्रा० लिमिटेड श/४४ कीर्तिनगर, बौद्योगिक क्षेत्र, नई बिल्ली-११००१

केवल ५० रुपये में तीन वर्ष तक हर सप्ताह पढ़ते रहिए

रजि० नं० डी (सी०) ७४६

- क्या आप ऋषि, मुनि तपस्वी, सोगियो को प्रमृत वाग्गी पढना चाहत है ?
- 🛘 क्या भ्राप देद के पवित्र ज्ञान को सरल एव मधुर शब्दों मे जानना चाहते हैं ?
- 🗆 क्या भाप उपनिषद्, गीता रामायरा, बाह्यराग्रन्थ का भाष्यारिमक सन्देश स्वय सुनना और अपने परिवार को सुनाना चाहते हैं?
- 🗇 क्या भाप भपने शूरवीर एव महापुरुषो की शौर्य गायाएँ जानना
- 🗇 क्या धाप महर्षि दयानन्द की वैचारिक क्रान्ति से धारमचेतना जागृत करना चाहते हैं।

यदि हाँ तो आइये आर्यसन्देश परिवार मे शामिल हो जाइए।

केवल ५० रुपये मे तीन वर्ष नक हर सप्ताह पढते रहिए। साथ ही वर्षं मे चार अनुपम भव्य विशेषाक भी प्राप्त कीजिए।

एक वर्ष केवल २० रुपये मात्रीवन २०० रुपये।

प्राप्ति स्थान---आर्यंसन्देश साप्ताहिक १५, हनुमान रोड नई दिल्ली-११०००१

स्वास्थ्य कांगडो फार्मेसी. हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

शासा कार्याशय-६३, ननी राजा केशरनाय, फोन : २६१८३८ चावडी वासार, विल्ली-६



महात्मा हंसराज महान् शिक्षाशास्त्री थे

महात्मा हसराज ने वैदिक सिद्धांतों के अनुरूप मानव मुत्यों को स्वापित करने वाली शिक्षा पदिलें को अपनाकर वेश के शिक्षा जगत् में एक अमूतपूर्व कालि का विहास किया था। इन सक्यों में धार्य प्राये स्विक्ष सभा हारा तालकटोरा इच्चोच स्टेडियम नई दिल्ली में आयोजित महात्मा हसराज बन्म दिवस समा-रहे के अवसर पर मुख्य अतिब् केन्नीय सिक्षा मननी श्री इन्याचन्न पन्त ने अपने श्रद्धा सुमन अपित किये । सार्वविधक सार्य प्रतिनिधि सद्या के प्रधान श्री रामगोपाल खाल-बाल के कहा, यदि महास्मा हस्यत्व ने अपना खीवन विका के लिए सम-पित न किया होता तो भारत वेश में आब की अपेका कही अपिक मैकाले के मानवपुत्र होते और इनके प्रभाव को तमाप्त करना असम्भव हो गया होता।

बार्व प्रादेशिक सभा के प्रधान

प्रो॰ वेदव्यास ने महाला हसराज के पूर्ण व्यक्तित्व को परिचय दिया। उन्होंने डी०ए०वी॰ सम्बाध के दिवसार के दिवसार के स्वक्य पर मी प्रकाश काला। उन्होंने बताया झागामी वर्षों में डी०ए०वी॰ सत्वास काला। उन्होंने बताया झागामी वर्षों में डी०ए०वी॰ सत्वास के धनसर पर हम केवल मारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में जी प्रार्थसमाल के सल्वेस प्रेजने के लिए डी०ए०वी॰ सल्वोस के नो सार्थ फेला के सल्वासों को चारो और फैलाबे का

-के० सी० पन्त

सकत्य लेते हैं। इस प्रवस्य पर बाक मक्तराम पाराझर द्वारा लिखित महाराज पुस्तिका का भी महाराज पुस्तिका का भी पाराचा पारा पारा पर विवक्त मारा पारा पर विवक्त मारा पारा पर विवक्त मारा पारा पर विवक्त मारा पर विवक्त मारा पर की पर विवक्त मारा पर की पर विवक्त महारा के महत्य के महत्

केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री को ज्ञापन पत्र दिया

बायसगाज का एक प्रतिनिधि मच्छल के जीय पिकासम्ली भी कै। सीठ पत्त से उनके सारणी अवन कार्याण के स्वारणी अवें के कार्याण के सम्बन्ध के तथा एक राष्ट्रीय सम्बन्ध है तथा राष्ट्र के हितों के कार्य करने के लिए पूर्णत समिति है। श्री पन्त ने लां रामगोपाल सामयाले से कुछ दि पाल सम्बन्ध के समित्र के समित्य के समित्र के सित्र के समित्र के समित्र के सित्य के सित्य के सित्य के सित्य के सित्य के सित्य

ज्ञान (का वार्य) महास्व केन्द्रीय स्वा के प्रवान श्री महास्व वर्षगाल, विल्ली सार्य प्रतिनिवि स्वा के महामहास्वी डा॰ वर्षणाल, महास्वी श्री कुन्तीवाल ट्रस्ट के बहामन्त्री श्री कुन्तीवाल ट्रस्ट के बहामन्त्री श्री सोमजकास मार्य, दक्तिए दिल्ली वेद अपार सर्वेद्धल के महासन्त्री श्री रामसरस्वार सर्वेद्धल संग्रीमान्त्री श्री रामसरस्वार सर्वेद्धल संग्रीमान्त्री श्री रामसरस्वार सर्वेद्धल संग्रीमान्त्री स्वा के
प्रसान श्री कुंदिक की बोर से एक

ज्ञापन पत्न श्री माननीय शिक्षामन्त्री महोदय को दिया गया। इस ज्ञापन में माग की गयी शिक्ष-

(१) जारतीय इतिहास की पुस्तको ने जार्जी को विवेशी भाकान्ता होने के सन्दर्भको पूर्णत निकाल वेना चाहिए। क्योंकि इससे राष्ट्रीय एकता की जावना को टेस पहुचती है।

(२) सस्कृत भाषा को पाठ्य क्रम मे समुचित भीर प्रतिष्ठा पूर्ण स्थान दिया जाये।

(३) स्कूली शिक्षा मातृ मावा मे और विश्वविद्यालयी शिक्षा राष्ट्र भाषा हिन्दी में दी जाए।

(४) केन्द्रीय विद्यालयो के पाठ्यक्रमों पर भ्रामारित स्कूल भ्राधिक से भ्राधिक लोले वार्ये भौर पब्लिक स्कूलों पर प्रतिबन्ध लगावा

(१) মাৰ্মিক যিলা ভা पूৰ্যা মাৰমান কিবা বাব ।

(६) प्रस्पतस्यक समुदाय द्वारा बताये जा रहे विद्यालयों को मिससे बाबी सुविद्या तभी को दी बाबे। द्वाव धर्मपास ने आपनपत्र की उन पिन्तयों को शिक्षामन्त्री महोदय को पढकर सुनाया जो श्रीमती इन्दिरा गांधी के एक जावए। से उद्भुत की गई हैं तथा जिनमे वार्मिक

उद्धुत का पहुरुष । प्यापन पानक शिक्षा को झावस्यक बताया गया है। शिक्षामन्त्री ने इन विचारों से सह-मति प्रकट की सौर भारवासन दिया

कि वे इस दिशा में ठोस कदन उठा से सेंगे।

महाक्षय घमपाल जी ने कहा कि चुन्नीलाल घर्मार्च टस्ट खेक्ट्रीय विचारधारा के धनुरूप स्कूल खीर कालेज खोलने के लिए सहर्थ बस्सुत है।

वह भी क्या जीवन है ?

जिस में उत्साह उमग नहीं वह भी क्या कोई जीवन है?
जो अरा हुआ है रोगों से जर्जर है भौतिक भोगों से
जिससे न कर्म की धरित सेव तप तेज सावना का न लेख प्रति खिषल जीए। निवंत तन है वह मी क्या कोई जीवन है?
जिससे धुरिता सरमात नहीं अनुराग त्याग सुप्रभाव नहीं जिससे धुरिता सरमात नहीं अनुराग त्याग सुप्रभाव नहीं जिससे माया मद-मत्सर है प्रति दीन हीन पर-निमर है दुर्भाव रम्भद्रिता मन है, वह भी क्या कोई जीवन है?
जिससे होता निज भीय नहीं परिहत में भी उपयोग नहीं जो कूर कर्म का साथक है, प्रमुता प्रभाद धाराधक है एकत्र किया मुस्तित वन है वह भी क्या कोई जीवन है?
जिससे तन मन बन खुद नहीं, जो स्वस्थ मित्र बचुत नहीं, जो स्वार्थ-स्वाित का चातक है मानवता का माय पातक है, पसुता का प्रवत्त कर स्वानवता का माय पातक है,

सत्संग वाटिका

धर्थान् जिस प्रकार खसनी से सत् छाने जाते है जसा प्रकार बहा विद्वान् सोग द्वपनी व णीको मन से गुढ करके बोलते हैं वहा पर सक्सी ग्रीर मित्रता

वैदिक धम में साय की बहुत ही महिमा है। कहा गया है कि नास्ति सस्यात्परा धम नानतारगतक परम्।

स्ती प्रकार यज्वर १६ में भक्त अनु से प्राथना करता है— साने तरुपते तत वरिष्मानि जण्डतेय यो तरुपताम् । दस्यहमनवातस्यस्युरीय । सर्मात् हे परमेशवर में प्रतिका करता ह कि सपनी बक्ति पर सरय का पालन करूगा। यह मैं न्य स्थाप से निक्ककर स्य मान का स्वकत्वन करता हूं। इसी प्रकार कुठ ७१०४११२ में एक मन स्राया है—

युविज्ञात चिकित्व जगाय सच्या सच्या वरवी पर्व्याते । त्योपरस्य यदर् क्ष्मीयरतिस्तोमी व्वति सस्या स्व धर्मात् मनुष्य की स्विधा के निष् स्व धर्मात् के विज्ञान की एक पूचरे के विद्ध कहा गया है। इन दोनों से वो सर्य है वह सरक चौर धीमे स्वमाय से कहा बाता है तथा उससे कोमस्ता धाती है। यर जो सस्स्य है वह तो हर प्रकार से सत्यानाल ही कर देशा है।

इस प्रकार हम देवते हैं कि इन सत्य के प्रतिपादन करने वाली मात्री में सत्य जावण की समस्त जूबियी का बहुत सुन्दर वगान किया है।

परन्तु इसके विषशीत लोक व्यवकार

क्रैं— अवस्य वा अनुस्य मान्या की कई

सामली में कर ने पाई । एक न्यान पर

कृता गया है कि— न वर्मकुक्त वचन

हिनस्ति न स्त्रीतु राजन्तिवाहक ले

प्राखात्वरीत । अवात् हवी ने कृता गया

हिल्ली से मलील में दिवाह के समय

मा हुमा प्रण के सकट में पढ़ने पर

तथा सारे सम्पत्ति के अपहरण का अव

चर्मास्त्र होने पर न्न गया अवसरों पर

नेता हुमा रूप न न हुमार कहते है कि—

सत्य य वसन अय सत्यादि हित वर्षेत् ।

यद्भुतहितम यथम् एतत् सस्य म्स मम ॥

क्यांत् सन बोमना कल्याण करक है पर उसकी अपेशा भी हित कारक बात कहना भावक घन्धा है। जिसके नोकते से प्रणी का बहुत हिता है। वहीं सस्य भूभ मा यह एक प्रय स्थान पर तो उस धम को भी कोड देने को कहा नवा है जिसका परिणाम हुक सायक हो। वर्ष सत्य ग्रसत्य विवेचन एक कठिन समस्या

सत्य क्या है ?

सोमदत्त विद्यालकार

सक्तुभिव तितजना पुनन्तो यह घीरा मनसा वाचमकतः । स्रत्रा सखाय सख्यानि जानते भद्रैषा लक्ष्मीनिहिताघि वाचि । ऋ० १०। व्हार



वर्मावरण का परिकाम दुख दायक हो तथा को सोक द्वारा निन्दित हो यह धम सी स्थाज्य है।

व्यवहार वे जी हम देवते हैं कि छोटे बच्चे को मंतीरता या रहा प्रकार के फिसी रोग से पीसित होने पर जब उसे कुनीन बेसी कहती स्वार्ट रिकामी बक्टी समझी जाती है तो बाता उसे कहती है— बेटा यु ह बोगो दवार बहुत भीड़ों है— बेटा यु ह बोगो दवार बहुत भीड़ों है अच्छे के हिल के मिए फिसा हुमा यह अस्य मायशा भी खातम्य माना वादा है। ऐसे उदाहरणों से सम्य का बालन करने की प्रपेशा हितकारक काय करने को प्राचीमकता से वादी है।

यन्ना वासी ने रावकुमार के प्राण बचाने के लिए फठ का झालय लेकर हत्यारे के सामने सपने बालक को राज-कुमार बताकर यद्यपि फूठ बोला वा तो गी समी उसकी क्खसा करते हैं।

इसीप्रकार की एक कथा राजपूत साहित्य में भी भावी है। जुनानद के क्षत्रिय राजा राव महीपास देव युद्ध में थराशायी हो जाते हैं। शत्रु सेना की धन्त पूर के समीप पहुँचते देख कर राव का इकलोता पुत्र नीवण तथा राजरानी चितात्र हो गए। विश्वास पात्र नत्री को कत्तव्य की पुकार धुनाई पडती है। वह मुख्य माग से बाहर निक्सकर निरनार की जबकर चाटियों को पार करके विरि के जनस में स्वित छोटे से गाव में रानी व राजकुमार को सेकर पहुँचता है। वहा देवायत नाम का एक शहीर वासक की रक्षा का वजन देता है। मात्री के लौटने पर राप्ते में गत्रु सेना से घिरने पर जन वह राजकुमार का पता नहीं बतलाता छो वह करश कर विया जाता है। शतु को किसी प्रकार रामी व राजकुमार का शहीर के पास होने का पता जल जाता है। सेना वहाँ पहुँच जाती है। बहीर राज कुमार की उपस्थिति से इन्कार कर देता है। शत्रु प्रहीर को बाथकर घर के कोने क ने की तलाश में लगता है। आहीर ब्रयनी पत्नी को बुलाकर संख के इकारे से उसे उस का कलाव्य समझाता है भीर फिर स्वा सन्धों में बहु कहता है कि कुमारनीयण को वहा हाबिर करो। वस्य अपने ११ वर्षीय वाक्ये को पहुनाकर ऐसा करती है। उसके मेहरे पर विषाय की कोर्रे देखा विकासाई नहीं हैदी। ११ वर्षीय सामक के पूक्षने पर सह भी खरमा नाम नीमछा बरकाता है। विवेशी देशा पाँच उस सहीर नामक ने भाराता-विकास तथा खोटी सहम की शासों के छानने करना कर देखा है। पर किशी नी आसो से मांसू की एक तून भी नहीं निकसती। सभी के मुख पर परणानत कुमार की रक्षा जाने ने सबनाता हो किसाई देती है।

यसपि यह कुठ बोसा बया वा वो भी बाज वनी सहीर की प्रवस्ता करते हैं। पत्नावायी सहीर के काय को कौन तुरा कह वकता है। स्वयुप जोक व्यवहार में कई मीके ऐसे बा जाते हैं बहा संस्य बीर स्रवस्य में क्या स्वाप्त है बीर क्या कर्सव्य है इसका निश्च करना कडिन हो बाखा

नहामारत के तुद्ध में घन की विजय के लिए कुच्छ द्वारा खालिक तस्य के हरन के धनेत जराहरू खिनवे हैं। होशाचार की चरक परित्यान के लिए प्रारत करने के लिए धरनत्याना हव ' कहकर एक हाची का नाम धननत्याना रतना नगा धनत्य नहीं वा? तभी दो सरकार्या पुर्विन्दर के मुख के धरक त्यामा हव कहनवा कर बनके 'गरो ना कु बरो वा कहने के बनव विश्वन खादि बनवाकर उनकी गरो वा की वाल बना वा वा वर्ष वर्ष

सत्यवादी मी एक और कठिमाई जीर उक्का हुल —सस्य भाषण के सम्बन्ध में एक श्लोक बहुत प्रसिद्ध है थे। बठाता है कि सस्य क्लि प्रकार शोच विचार कर बोलना च हिए। श्लोक इस प्रकार है—

> सस्य ब्रूयात प्रिय ब्रूयात म ब्रूयात्सरपर्णीप्रवस् । प्रिय च नानृत ब्रुयात् एव क्या सनाहम ॥

क्षपंत् १ सत्य बोले २ प्रिय सत्य बोले २ क्षप्रिय सत्य न बोले ४ प्रिय सनके बाला कुठ थी न बोले यह क्षणासन अर्थ बताबा है ।

कुमारनीयण को नहा हाबिर करो। 'इतर बहुत बढ़ा बढ़ा है कि शहर हो चतुर महीरनी हपने करिक कहेंचा हो सीक्या करिक पर कि की

स्त्य नहीं बोखना चाहिए। काता को कामा कहना नवपि बस्त है नर बहु समिन होने के कारण त्याच्य है। वहां चर्च चय्य वर्णसा नी सिन क्यन बोलने की समिक संच्छा बतावा नवा। इसका समाचान करने के लिए उसकी सर्व बहु पढ़ी है कि सिन चनने वाली वात कहां पर वह कुटी नहीं होनी चाहिए।

इस कसीटी से सस्य आवण इण्युक्त प्रेमी मनुष्य के नम में नबी मुद्दिकत सफ-रिवत हो जाती है। नबा किया सन्ध्र।

एक मनोरणक कहानी इस मुक्किक का इस बढाठी है। एक राजा की खबू 🕏 साम बुद्ध करत समय बाबी प्रांत तीर सबने से वाली रही। और वाबी जुवा शब् के प्रहार से बाली रही । सुनते हैं कि राजा ने चतुर वित्रकारों को बुसाकर सपना चित्र बनाकर जान की सामा दी। एक चित्रकार सत्य बबात् के धनुसार राजा का ऐसा जिल बनाकर नाया, जिसमे उसकी एक ही बाक्त वी बीर एक ही हांच था। राजा ने उसे इनाम देना वो दूर रहा उसकी मत्सनाकी कि विद धन् इस वित्र को देखे तो हमारे देश पर चढाई कर देशा कि यहा का राजा एक हाम तवा एक बास वामा है। दूसरे चित्रकार को पताचला कि पहले चित्र--कार की यह दगति हुई है वह राजा का ऐसा विक्र ननाकर सावा विसमें उसकी बोनों बांकों शत्र को तरेरती हुई विकाई तया एक हाच में तमवार तथा बूसरे में डाख पकडी हुई दिखाई। राजा ने जिम को देखा तो डोटकर कहा यह किस का चित्र है[?] नेरी तो एक ही माल सड़ी समामत है और एक ही हाब है। उसे भी इनाम देना को दूर रहा डाटकर मना दिया । तीसरा चित्रकार बहुत समस्त्रार था। बहुरामाका ऐसा चित्र बनाकर साया जो उसकी साइड पीज में बा । एक बास चत्र को होय से देवती हई बी उसकी नाब की योग में होने से दिसाई ही नहीं देती थी। एक हाथ में समबार बी वो दूसरा हाब शरीर की शोट में होदे वे विवाद ही न वेता था। कहते हैं कि राचा ने उसी बुद्धिमान् चित्रकार की गर-पुर श्नाम दिया ।

क्रमर बनाये स्त्रोक के प्रमुखार सुख भावता की तीनों वर्तों को पूरा करने का दन चतुर धावनी को सोचकर बुद्धि से निकासना चाहिए।

शका मन में पैशा होती है कि विद कोई भी पातक गांव का कर करने के लिए लगवार नेकर उसके पीड़े सामा है इहा हो भीर नाम जगत में जाकर आही कि सामें तो मानक के पूछने पर सारे हुई सरकारी बनकर गांव के कि तो जा पता सरकारा तो हुए पोहरूपा का पान करे होर बिंद कुर शेल देंग तथकर पात्रका हुई स्वार करें दें ऐसी पता में बीच विद्या चार करकर कुछ पूर्व की की विद्या चार

★ ववन-सन्देश ★ मनुष्य कौन हैं ?

मनुष्य उसी को कहना कि मननशीस होकर स्वात्मवत् अन्यो के मुख दुख और हानि लाभ को समके। अन्याय-कारी बलवान् से भी न डरे और घर्मात्मा निर्वल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्व सामध्यं से धर्मात्माओ--कि चाहे वे महा अनाच निर्वल और गुएर-रिहत क्यों न हो---जनकी रक्षा, उन्नति, प्रियाचरए। और (अधर्मी) चाहे चक्रवर्ती सनाय महाबलवान् और गुएावान्

भी हो तथापि उसका नाश, ग्रवनित ग्रीर अप्रियाचरण सदा किया करे अर्थात् जहा तक हो सके वहा तक आत्याय-कारियो के बल की हानि ग्रीर न्यायकारियो के बल की उन्नति सर्वेधा किया करे। इस काम मे चाहे उसको किनना हो दारुण दुख प्राप्त हो चाहे प्रार्ण भी भले ही जाव परन्तु इस मनुष्यपनरूप धर्म से पृथक् कभी न होवे।

—महर्षि दयानन्द

सम्पादकीय

पंजाब समस्या फिर खतरनाक मोड़ पर

धकालियों की लगमग सभी धार्मिक माग मानी जा चुकी हैं खत्येदार टोहरा ने भी इसकी स्वीकारोक्ति की है। धकाली नेताओं की रिहाई, भालइण्डिया सिख स्टूडेण्ट फडरेशन मे प्रतिबन्ध हटाना, बकालिया की मागो के सामने सरकार का भूकना, बादि कदम आशा निराशा की विचित्र चित्र को प्रकट कर रहे हैं। देश की अख-डता का चुनातो देने वाले उग्रवादी विदेशी इसारी पर चल रहे है। उनकी माजल है अशान्ति, कहर, खून खराबा देश की प्रमप्रात और एकता का चोथड-चीयड कर देना। विगत वर्षों मे हमारा देश विकास क माग पर जिस प्रकार स आगे वढ रहा है उसको एक शक्ति के रूप मे देखना अनेक महाशक्तियों को अञ्छा नहीं लग रहा। अनेक विदेशी गुप्तचर एजेन्सी भारत में मनने खूनी पजे जमाने में सलम्न हैं। उनके सकता पर अनक आधिया इस देश को देखनी पड रही है। सरकार को ऐस अनेक सबूत निलं हैं, जासूसी में पकड लोगों से अनेक रहस्य उजागर हुए है। पाकिस्तान मे प्राचक्षाण पा रहे उप्रवादी भारत मे प्रविष्ट हाकर योजनाबद्ध दग से हत्या काण्ड कर जाते हैं। सरकार जब भी शान्ति जार माई वारे के लिए सपना पग बढाती है। सका लियो का समभोत की दिशा में लाने के लिए सफल होती दिलायी पडती है, तभी एकाएक नेपध्य से विस्कोट की भयकर गजना हो जाती

पजाब समस्या के लम्बे होते जाते से उग्नवादियों के हाथ मो मजबूत होते जा रहे हैं। पजाब इन्दिरा काग्नस के महासचिव श्री रचुनन्दन लाल माटिया पर किया गया हमला, पजाब के प्रन्य धनेक स्थाना पर गोला वर्षा भीर सामुह्क नरसहार भ्रावि घटनाभो से उग्रवादिया के फिर सक्रिय हो जाने के प्रवत्त प्रमास्त्र है।

दूसरी और प्रकाशने नेताओं के तोबे वन्त्रज्य और भडकाने वाले भाषण उम्रवादियों की मदद जरें ही हैं। श्री टोहरा का यह कहन समलार से वार्ता तभी करने जब सिखी की सम्पूर्ण माग मान ली क्षित्र कार से वार्ता तभी करने जब सिखी की सम्पूर्ण माग मान ली क्षाया होन्दरा गांधी के हत्यारे को बहुत कहना उनके विचान्त मिलक का परिवायक हैं। तथाकियत नरमपन्धी श्री लोगोवाल विच्छातालों के गाव जाकर उनके परिवार से मिले। उनसे सहयोग मागा और यह वीचणा की बी कि भिडरवालों से उनके कोई सबरी मागा और यह वीचणा की बी कि भिडरवालों से उनके कोई सबरी के हिस्सार को हिस्सार मागा के हत्यार को चहुनीन काम पान की सम्मानित भी किया। राष्ट्रपति ज्ञानी जैतिहरू को सिखी का यत्र नम्मर एक और प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी को सनु नम्बर रो भी उन्होंने करार विया है। ऐसे वालावरण में केवल सरकार का नम्न पडना कामरता का परिवायक है।

उन्नवादियों की तलाख स्रकार ने वो स्वर्ण मन्दिर की सरायों में खापा बाला भीर तलाखी ली एवं कई स्वतरामक उपवादियों को बल्दूक हुवगोलों और पिस्तौलों के साव गिरफ्तार किया है। इसवे लाहिर प्रमी भी ये बार्गिक स्वल उपवादियों के यह बने हुए हैं। सरकार को वाहिए वेख के किसी भी सन्देहास्यद वर्गिक स्वर्ली में खापे बालकर तलाधियाल। किसी भी प्रसामाजिक उप्रवादी तत्त्व क पकड जाने पर कठोर सजा दे। तथा विशेष प्रभियान चलाकर उप्रवादी तत्त्वा को सस्ती से कुचल दे। —यशपाल सुशासू

सम्पादक के नाम पत्न---

धर्मपरिवर्तन का कुचक्र

विगत कुछ वर्षों से हमारे देश मे हरियनो गिरियनों पिछडे क्षेत्रों के मोले-भाने लोगों के वर्मा-तरस का सत्य विक मृश्चित प्रशियान चलाया वा रहा है। एक समय था जब प्राज से सनभग वो इजार वय पूर्व सारी बरती पर हिन्दुस्व की विचार माराका प्रमुख छाया हुन्ना था। अन्य यवनो ने मारत को पदाकान्त किया तब तलवार के बस पर इस्लाम के प्रचार का दुर्भीग्यपूज श्रीक्षशाम चलाया यया था। स्र क्रेजी का भारत पर साधि पत्य हो जाने के उपरात पादरियों ने सेवा भाव के माध्यम से हिन्दुओं को ईसाइयत मे वीक्षित करना प्रारम्भ किया। ईसाइयो के चमुक्त में कुछ सीधे-साथे लोग को जननो पहाडो पर रहते थे फसे। देश में मौलिक अधिकार प्रत्येक नागरिक को निसा। बाजादी के बाद सरकार की तुष्टीकरण नीति के धन्तगत विभिन्न प्रकार की धराष्ट्रीय कायवाहियों को बढावा मिला। इसी सदभ ने विगत वर्षों मे तमिलनाडुके मीनाक्षीपुरम व राम-नावपूरम नावों के हरिखनों का और अब उ० प्र० के बहुराइच जिले में सगमग सास सौ नटो का वर्मपरिवर्तन पेट्रोडाकर के बल पर किया गया। लोभ धन भ्रम विस्तार के बाबार पर वर्गपरिवतम कराना भारतीय सविधान के प्रतिकृत है। वर्मान्तरम् के इस प्रराष्ट्रीय काथ ने विभिन्न प्रकार की सस्वाए सम्मन है जिन्हें अरब देशों से अकृत बन मिस रहा है। वर्मान्तरस धराष्ट्रीय इसलिए भी है क्योंकि वर्मान्तरित व्यक्ति की निष्ठा अपने राष्ट्र राष्ट्रीय सस्कृति राष्ट्री-विवारवारा के प्रतिकृत होकर धर बोम्मुखी हो जाती है यदि इस प्रवेध शस-वैधानिक वर्गान्तरण पर धविखम्ब कठो रता से रोक न सनाई वई, तो प्रविष्य मे

इसके असकर परिणाम राष्ट्र का मोसने पड़िंग। — राषेत्रसाम सास

हिन्दू चुढि सरक्षर्गीय समिति समा सक्त १५,४ ८५ समाचार पत्री में वह राईच उत्तर प्रदेश में हिन्दू नटों के सामू हिक बम परिवतन का समाचार सुनकर पढकर हिन्दू शुद्धि सरक्षणोय समिति के महामन्त्री स्वाभी सेवानन्द जी इस इलाके में जो नेपाल के साथ साथ लगता है हालात जानने के लिए प₂ चे जाने पर पता लगा कि यह हिंदू नटो का सामुहिक इस्लाम मे बन परिवतन कोई झामिकः तगी व सामाजिक तिरस्कारके कारण सम्भव नहीं है इसके पीछ पेट्रोडालर और विदेशी वडयन्त्र काम कर रहा है भीर यह वडयन्त्र १६८१ से चल रहा है और इसा कारण समय समय पर धन परिवतन होतारहा। जिस कोर किसी का विशेष ब्यान नहीं पट्ट्या बमला देश की सीमा से लेकर नैपाल की सीमा के साथ साथ बस्ती गोडा और बहराईन ग्रादि जिलो से यम परिवतन करवाकर मुस्लिम बेस्ट बनाये जाने का वडमन्द्र चल रहा है। इस काम मे प्रन्य मुस्सिम सगठनों के साथ साथ मिल्ली इमदादी सीसाइटी का बढा हाच है, जिनके पास करोडो की सम्पत्ति है जिसका धर्म परिवनन मे प्रयोग होता है स्वामी जी ने नटो को समकाया है। वह बीर शिवाजी के बशज हैं वह लोभ वा धन्य आकषण से धर्म परिवर्तन कैसे कर सकते हैं। उन्होंने तो हिन्दू धम की रक्षाय बढे कच्ट सहे हैं। जिनका उन लोगों पर ब अबा प्रभाव पढ रहा है भीर पुन हिन्दू वम से सौट रहे हैं। सन्य समिति के सदस्य वहा जायेंने । स्शामी जी सामान्य स्थिति हो बाने तक वहीं उहरेंने।

--मोमप्रकाश प्रधान समिति

वीवन भाषाभीर विश्वास का नान है। जीवन को धगर एक नदिया कहा बाये तो बाका और निराक्षा हो किमारे है। व्यक्ति कभी निरास हतास हो जाता है कभी भाषा उत्साह से युक्त । हरी हरी पत्तियो भौर तीले शुलो के बीच मुस्काती सदमाती कल्यों के होठी पर कल पूज सुमन बनने की धाशा होती है। कमल की कोमल पलडियों में बाद भीरे की कल तक जाने का स्वर्णिम श्रवसर का सहारा धाणा ने ही लो दिया है। वमन्त के बीत गातीको यस के स्वरमे जीन ग्रर ग्राका की मधुर तानें भरी हुई हैं लहल हाती प्रकृति के हरित पट स भाषा क हरा रग भरा है। क ची सुदूर ज्हान के प्रिक पक्षियो म जो मस्ती दिलाई पडती है उसमे प्राक्षा ही वलवती है। निर्मा जीवन का बाबन है दुल है एक जजीर

हुम कोयों में से प्रविकाश तो ऐसे हैं जो तीं के नेने वालं मुद्द है। क्योंकि उनमें कोई प्रारण नहीं कोई प्रावाना नहीं। बीवन वास्तव में एक गति हैं साथ प्रतीक हैं जबता की गतिहोनना की। बीवन प्रतीक हैं जारण का प्रगति का। हुसारा प्रसित्य कार्या पर नहीं है। हमारा प्रस्तित्य हुमारा प्रारम है। हैं। प्राप्त हुमारा प्रारम है। हैं। हमारा इन्हुं हुम सब पन्न हैं। हमारो हस्ती से सिमटे हैं जीवन के काल कलाग उवात प्राप्तमाए थीर प्रप्ती परिस्थितियों के उपर उठने की कालन। थाप इन्हें राजा है प्रस्त प्राप्त हैं से क्या भीत

तस्यामञ्च

आशा

यशपाल सुवाञ्च

तुम्हें मार देवी ? परिस्थितिया तुम्हे नता वधी ? बला देंवी ? दुवा देंवी ? नहीं विल्कुल नहीं । विश्वने यह विश्वता कर निया में हम् टु किसी से पराजित नहीं हो सकता उसे यह सारमविश्वता ही वितासा।

धाप शकर बनना चाहेगे धौर धपनी वासनाधो पर विजय प्राप्त करना नही बाहेंगे? बार दक्षान द बनना बाहेंग धीर सत्य के सामने कष्ट भोगने में भापकी कह बाप उठगी धाप बांधी बनना च हेगे भीर सत्य के प्रति आग्रह करने में फुक बाना पसाच करने । मेरे मित्र । जिसमे जीवन की शक्ति प्रविक हैं उस पर बीमारी के कीटाणुभी धसर नहीं करते। जिसमे जीवन की शक्ति अधिक है वह अपनी कमजोरी पर विजय प्राप्त कर लेगा। जिसकी जिन्दगी कमजोर है उस बीमारी सा जायगी। उसका प्रस्तित्व माधी में प³ पीले पत्त की तरह है जिसे बहाकर परिस्थितिया जहा चाहे ले जा सकती हैं। शक्तिहीन दुवल निराशावान् कभी एकनिष्ठ नहीं हो सकता आयेर न ही वह स्थिर रह सकता है। कभी उसे

दुष्ट भीर उद्दर्श शक्तिया भवती भीर वीचेंशीतो कमी वह देवत्य के छोर बाकवित होगा । इसी बींचातानी वें उसका मस्सित्य विसर जावेगा। आधा और स्वप्न में यही अन्तर है स्वप्न का कोई बाधारनहीं होता और बाधाका माथार होता है। माशा विस्वास की वाम देती है। विश्वास क्ल के मरोसे पर ही टिका है। निराश का बब्दिकोच शक्तिहोनता सौर अस्वस्थता का चोतक है। जवानी आका को जन्म देती ने वर्वोकि उसमें सक्ति है। बुढ़ापा नैरा य को जन्म देता है क्योंकि उसमे घपने ऊपर मरोसा नहीं। शक्ति होन टटे सण्डहरों में ही निरामा की साक उडा करती है। वहासदा भौत की उदास भीर कभी छाया ही महराबा करती है। मिराशा के बवण्डर में खबस स्विर पाव भी लडवडाने सनत है। पहाडी से टक्कर लेने के लिए सथलने वाले दिल भी वक कर बैठ वाल है। और ववानी सफेद ऋण्डे विकाकर निराशा है बागे घटने टेक देती है।

माज हर क्षेत्र में निराशा के अयावह यनकोर वादल आयों हुए । सारा वाता

वरण भारतक के पन्ने में समाया हका है। राष्ट्र की सीमाधी की घोर काशी खावा नवती भा रही है । अपने हो पर के धन्दर क्वानामुची पूट रहे हैं। रक्षक और श्वासक जनता जनादन का विश्वास को बैठे हैं। हर तरफ से चैतानियत की गरी चीकों सुनाई वड रही हैं। चरित्र ना बसा चींट दिया वशा है। ईवानवारी मुह खुगावे बैठी है। बेसमक्तों भीर प्रहरियो का उत्साह सो नवा है। निराशा की नहरी रात्रि जवान होती जा रही है। तो क्या सरव श्रव नहीं उगेवा है सूरव जरूर उनेका और जब उनेना तो अवने असस्य तीरों से इस राजि इप दैत्य का सीना चीर देगा। दूर दूर तक कही अन्वेरा नवार नहीं आयेना।

यदि निरागा ने प्रापके जन में कर कर सिया तो जान जाइने कि ब्राणकी हुउ। प्र जान है । स्वार का स्वार के ब्राणकी निर्माणकी स्वार की स्वर्णकी निर्माणकी स्वर्णकी किन्सा पहुंगा है। स्वर प्रापकी निर्माण को स्वर्णकी निर्माण की स्वर्णकी निर्माण के स्वर्णकी तरकाई ने कर उठगी। किना सावा के जिन्सी निर्माण को स्वर्णकी किन्सी निर्माण के सिकाइ के सिका

×××

भारतीय समाज के जागरण में आर्य समाज का योगदान

लेखिका-शामती प्रकाश स्द

बायसनाप की स्थापन से पूज भारत य समाज में नाना प्रकार का कूरी तियाँ पनप चुकी थी यथा बास विवाह स्त्रीसमाजको शिक्षासे दचित रस्तना खुभाखत वल व्यवस्थाको कम से न मानकर जन से मानना हिंदी भाषा के प्रतिप्रम का समाव मूर्ति-पूजाव साच विश्वामी के महजाल में फसना व देख प्रमुका प्रभाव। वन उपरोक्त बुराइयो का उन्यूजन करने का श्रय केवल भाय समाज को ही है। श्रायसमाज ने बसुर्वेव कुटुम्बक्स् का प्राणिमाल को पठ पढाया धौर कहा-- मनुभव यह कभी नहीं वहां कि मुसलमान वन ईस ई बन मुसलमान बन ग्रीर दूसरों को पीडा दे परातु सदव यही कहा है-मानवता सीस इससे बडायम और क्याही सकता है[?] भायसमाज संपूर्व देश के नवसूबक मात भ या हि दी को शमजी की वेदी पर बलि दन कर चुके थे। हिन्दी प्रत्तक वा सम चार पत्र जो हिल्ली में प्रकाशित होते वे

उन्हें पढ़ना फैशन के बिक्ट समक्षा बाता था परन्तुस्वामी दवान द ने अपने जनस् प्रसिद्ध प्रयो को हि बी में जिसकर हिन्दी को राष्ट्र भाषा का स्थान दिवा। आय समाध ने नारी जागरता व इसके प्रसार का मरसक प्रयत्न किया। समाज ने नारी को समानाधिकार दिलवाए। नारी के लिए शिक्षा के द्वार लोल दिए। बहुत से डी॰ए॰ वी ॰ विद्यालय व महाविद्यालय मुलवाए। जी लोग नारी को पांव की जूती समऋते ये उहें बतलाया कि एक नारी के सुचि क्षित होने से पूरा परिवार सुबोम्ब व शि। तही सकता है। स्वामी बद्धानन्द ने पुत्रवस्ता कोकैपसा व वित्तेवस्ता त्यानकर स्रोक सेवाकी धीर नुदकुल की स्वापना करके देशमन्ति से घोत प्रोत शिक्षण का बारम्य किया और देसवासियों को स्व राज्य प्राप्ति की प्ररक्ता दी। स्वामी बढा नद ने २ प्र ११०० को सार्वदेशिक धायसमान बनाई जिससे भारत नाता की देवा चीर शक्तिक व्यापक रूप के ही

सके। १८१५ में बडबाल में पढ सकाल में आंग्रस्थान ने नडवाल में तुम्बिस पीडियों की वहुत सवा करके प्रतस्थ लोगों को गौत के पुहु से बचाया। १८२३ ने सागरा में हिन्दू पुदि संगा को स्वाचना की गई विसस्ते प्रमेक हिन्दू वरों के हाब जाने से बच सके।

भागशन्दकाधव ही कुलीन व ववाचारी है इसी उह य से ७ सम्मार=७४ को बम्बई में ग्रायेंसेमाज की स्थापना हुई थी इसके सस्वापक का भूम नाम स्वामी दवानन्द सरस्वती है जो आदिश्य बह्रा चारी व सत्योप³शक वे। वेद और शास्त्री के मह न बिद्वान वे। इनके जीवन का सूक्य उद्दय संसार को निष्या ज्ञान निष्या विकार व मिथ्या विश्वास से मुक्त करके सत्य म ग पर लाना था। इसी उदृश्य की पूर्ति के लिए महाँच ने धार्थसमाज की स्थापना करके कई ग्रामों की रचना की। जिनमें मुख्य सत्यार्थप्रकाश ऋग्वेशार्थि माध्यमूमिका भीर तस्कारविधि भादि है जिनसे समाज को शसकी ज्ञान प्राप्त होकर बाच विश्वासों से खुटकारा हुया। मानवमात्र की भीर वार्मिक सेवा करते के लिए इस समाज ने दस निवम बनाए जिससे प्रविक से समिक संक्या में सोवों को बाहति व साम प्राप्त ही सुके। स्वाबी वयान्त्व ने दुवस्य व कृत्रप्रशासी का

सण्डन किया वा ताकि सोय सबेरे सूच में न बिर सक उन भी कोई समाबि न बनाए इसीलिए न होने निस्सा बा— जो साक हो मेरी हरिडयों की वह ज के लेती में बास प्राना।

साथ श्री स यनमाथ संनाय का प्रति वायक्क है। राथनैतिक सम्बन्ध कर्मसक सम्बाय के निए हमेशा धावाज उठाता है मोगो को पुढ व सारित्क झाम प्रदान करके सावनीतिक बत्याक की समस कामना करता है धौर बोगों को बकी चार्त करण उठाकर प्रकास-सन्ध की साति कर र को प्रकास देशा है।

> एव २ ग्रीन पार्ड एवस्टेंसन, नई दिल्ली

सूचना

भागतमाथ वासीमार साथ ने वरकार तथा नैकित वर्ग के प्रवार-जवार के सिए एक सुबोध्य विद्यान् औ प० अद्या प्रकार 'नागीक पुरोदित यस पर साक्षीत है। कथा तरकार भागि के सिए सम्बक्त करें।

मण्डी धार्वश्वमात्र प्राक्तीमार बाव (की॰ एक॰ पूर्वी। विस्तृति-११००० ६२ फोल ७१२७४४३

श्रनेकान्तवाद दर्शन की दृष्टि में

रामसुमेर मिश्र

भारत में बंग धानावों ने एक विट्ट वी बिंडे अनेक स्वायत कहते हैं। इस विट्ट की मानवात है कि प्रत्येक प्रयाप के क्षात है, ज्यात धरने प्रयो के समुद्राय का परिणाम है। अत प्रयाप का बोध तथी सम्मव है बन पर्यों का बोध प्राप्त कर निया बाये। धर्मों के बोध की विवान पर प्रयाप का बोध होता है कह सम्प्रयासक है, निरम्बास्तक नहीं। अत प्रयाप का जो भी बोध प्राप्त होता है, वह सत्य भी हो सकता है, प्रयाप भी हो सकता है सत्य प्रस्त्य मिला हमा भी हो सकता है यह सत्य प्रत्य प्रस्ता हमा भी हो सकता है यह सत्य प्रत्य प्रस्ता निया का

हर विध्व को मानने नाले एक उदा-हरल बेते हैं कि प्रका एक हायों का बोध करने जसा पेट को स्पर्क कर उठे ज्ञानों का बोध हुवा, पीठ को स्पर्ध करने पर त्रस्त का बोध हुवा, कान को स्पर्ध करने पर कुप का बोध हुवा, पुट को स्पर्ध करने पर कुप का बोध हुवा। हम धन बोधों को मिलाने पर क्य प्रके को पवार्थ का बो बोध होगा, यह व्यवसायक हैं, निक्ष्यास्थक नहीं। इस प्रकार कैन स्वावर्थों का प्रति है क्यित्य प्रवार्थ का बोध इस प्रक्रिया से प्राप्त करता है थीर कुछ उठका ज्ञान निरम्बसायक नहीं हो सक्ता धाँउ उठे करता से प्रपने कान

वैन बाचार्यों की यह बच्टि व्यवहार्य वी नहीं है। जब मधा पैर को स्पर्ध करता है तो उसे निश्चबात्मक बोध होता है और एक सक्षा, सम्मा उस वोण का ज्ञान है। यदि उसे इन्द्रिय स्पर्शद्वारा संखवात्मक, बोच बोता तो कोई कर्म या प्रतिक्रिया उत्पन्न न होती। यदि सबेरे में मा कम प्रकाश में रस्ती को देख-कर व्यक्ति सांप का बोच करता है तो श्रव की चपेट वे शसन होता है। उस कान में जो भी जान है वह निश्चवात्मक है। संसव तो न्याम की देन है बोच की देव महीं। ठहर कर जब व्यक्ति अपने बोक पर म्यास करने समता है तो उसे जिल्लाता के बुखों का भी प्रकाश होता है, और परिचास में जो बोध वह बहुन करता है क्स पर निश्वपारमक बृत्ति रखता है। संस्थात्मक बृत्ति से तो व्यक्ति कोई बोच रखड़ी नहीं खकता। मनुष्य में वृत्ति का क्षय वर्षि बंधवात्मक होता तो वह मुखा मर बाता, पेट भरने के बिए कोई पदार्थ भी प्रदुष न कर सकता । इसी समय में पटारकृताकि निष है या अपूतः। चैन धायाची की वह सासबुक्तकरों की कि बीव पदानें के सनों का होकर बुढि हारा बमन्तित किया बाता है तम पूर्व बंगा- विज पदार्थ का बोध होता है। बॉक्ट में पूर्ण पदार्थ इकाई बनकर बाता है। गेस्टा-स्ट मनोविज्ञान ने सिद्ध करके विश्वकाया है कि बॉक्ट में पूर्ण (Whole) बाता है बन पत (Parts) नहीं बाते।

दस नामबुक्तम्बन्धी का शाकार यह या कि पवार्ष सभी का समाज है और पवार्ष की सभी के जुगो सीर अवक्दारों के बीच से ही जाता बा सकता है। यह साम्यवा भी नक्तत चारखा रह है। पानी सोमवन सौर हाइड्रोजन को निवाले से कता है बीर धामसीजन चीर हाइड्रोकन के मुखो से जिम्म नुम प्रकट करता है। हैयानकर ने यह बोचमा की ची कि प्रशेक कचात के सपने गुण होते हैं वे नुम सोन के मुखो सा समुदाय नहीं हो सकते।

दर्धन ने पदार्थ के गुरा वर्शका अवनोकन करके उसके कारण की स्रोज की बाती है। इन सब से ऐसे सत्य का बोच किया वाता है को उस पदार्थ के धस्तित्व, सत्य धौर धर्मका ज्ञान करा देता है। जैन धाचार्यों ने विश्लेषसात्मक पढति सपनाई। पदार्वं का विश्लेषसा किया। विश्लेषसा रूप का किया और धवी का समुदान पक्रड में शावा। अब इस कल्पनाने जनको गकत राह विका दी कि पदार्व से नये नुस्तु धनों के समु-बाब का परिखाम है। कपिश्र ने सांस्य की रचना ने सही निवेंश दिया है कि कुण धन्मक्त से व्यक्त होते हैं. किसी सवात है कारण पैवा नहीं होते। प्रत्येक सवात से बो मुख बर्गन में बाते हैं, वे प्रकृति मे सम्बन्त रूप से मीजूद हैं ये धनेकान्त के समुवाय का परिवास नही है। सुष्टि नियम शारनत सत्व हैं। इन नियमी की स्रोब विज्ञान करता है। इन निवर्मों के धरितत्व भीर उसके निवन्ता की स्रोध क्षंत मे होती है। जैन वार्शनकों को धपनी मान्यता से स्वय ही पवार्व का बोध करते समय सक्षय हो नया फिर बी वे दर्शन को अजेयबाद का बाबा पहला कर चले वये ।

वास्तिकवा तो नह है कि नमुख्य के काल में संबंध बीर प्रवेश की कही रवान नहीं है। नमुख्य विख देश और काल में नहीं दी नमुख्य विख देश और काल में ना तो है। का बात्तर में यह जान प्रवेश की प्रवासक प्रविद्या हो। है। का बात्तर में यह जान प्रवेश की एक प्रवास का विख्य होता है। देशका कारण यह है कि अनुष्य पदार्थ का जान दिशी विष्ट (Concept) के प्रवास में पाता है, कोरा इतिय खम्मर्थ (Percept) कोरो सुद्ध परल (Tabularasa) पर कोई जात का कारण में वा वा कर का विश्व कर की सुद्ध परल (Tabularasa) पर कोई जात कर का विश्व कर की सुद्ध परल (Tabularasa) पर कोई जात कर का विश्व कर की सुद्ध परल हैं। चीन

बुढि की सहायता से ही जान प्राप्त करता है, बुढ़ि प्रकृतिक नियम से कार्य करती है। वन बीन वो सानो (Corcepts) को विरोक्तभास ने पाता है अववा ज्ञान को सम्मवहार्य प्रमुखन करता है तक उसे समय पैदा होता है। यदि पदार्व जेय न होता तो सक्षय को भी स्थान न होता मत सन्नेयवाद को तो दर्शन में स्थान ही नही है। सशय जिज्ञासा की जननी बन दर्शन को बच्टि स्रोजने में सहायक है। सत्य सभागात्मक व स्रज्ञेय नही है। इस क्षेत्र को स्पष्ट करने मे दयानन्द ने दर्शन को यह द्रष्टिदी कि जीव ग्रस्पक्ष 🖁, पूर्ण ज्ञान उसकी सामध्यं ने बाधय से ही प्राप्त होता है, बुद्धि या सर्वज्ञ का माश्रय ही उसका सम्दल है। बुद्धि उसकी सत्य के बहुए। करने भीर ससत्य की छोडने मे तत्तर रहने पर अपनी सामध्यं का पूर्ण सहयोग देने मे सहायक है। ईश्वर सबंह होकर मनुष्य को उसकी जिज्ञासा की वेदना दूर करने में सहायक है।

जीव ने जानने का गुरा है उसका यह गुण किसी घाषय से ही प्रकट होता है। सल्पन्नता चीव की सामर्थ्यका चिल्ल है। कम्प्यूटर धादि वनाकर मनुष्य ने अपनी बुद्धि और दर्शन की सीमा बहुत बढा भी है, फिर भी यह पूर्ण सत्य जानने वें बसमर्थ है। इसका धर्य यह नहीं है कि सत्य सन्नेय है। जो भी ज्ञान मनुष्य पाता है, यह सब जेय ही है, कुछ माग सभी जेय की परिषि में नहीं साया, सत शनै सनै प्रगति करता हुआ मनुष्य ज्ञान ने वृद्धि करता चला जाता है। इस क्षेत्र में बाबा हुठ गर्व और मिथ्याभिमान से से पैदा हाती है। जो व्यक्ति मनुष्य को किसी विश्वास क खटे ने बाधकर हठी. गर्वीसा प्रगति विरोधी बनाते हैं वे इस समाज के कोर शत्रु हैं। एसी इंब्टिया जो प्रगति और मुक्ति का विरोध कर अठे शान्ति और मानन्द का प्रलोभन देती है. मानव के विश्वास पर बलि देती है। दबानम्द ने दर्शन और धर्म की प्रगति धौर मुक्ति दिलाई है जो पूर्ण निश्चवात्मक भीर जेय है।

> १२४ वी/६२६ गोविन्दनबर कानपुर।

।। भी३म् ॥

वैदिक धर्म ही श्रेष्ठ है।

लेखक-स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वतो

वैविक वर्ग श्रेष्ठ वर्ग है। वैविक वर्ग हर प्रकार वे उत्तर वेकर बत्य गार्ग को वरखाता है। क्योंकि स्वका धावार मजहवो की भाति किसी मनुष्य का सल्यक्षान नहीं है किन्तु इंश्वरीय ज्ञान है, वो हर प्रकार से पूर्ण और महान् है। स्वतिस्—

जब तक वर्गे वैदिक न अपनायेगा। स्वारा जीवन तेरा नच्ट हो जायेगा॥

> तुके पण्डे पुत्रारी बहकाते रहें। राम कृष्ण को श्री ईश्वर बसाते रहें।।

साच्ये देश्वर का ना मेद तूपायेगा। सारा चीवन तेरा नष्ट हो चायेगा॥

> है निराकार प्रमुको मुलाया हुआ। सब के घट घट के अन्दर समावा हुआ।।

वेद विचासे इसका पता पायेगा। सारा चीवन तेरा नष्ट हो चायेगा॥

> तीयों मन्दिरों ने सवावा तमय। बोकताहीरहाधेरी वासीकी अस्य।।

वेकरनाव वरना व्यर्थही वावेगा। सारावीयन तेरा वष्ट हो अपवेगा॥

> को नई सो नई रास से तूरही। को स्मृनाम जप नहीं मार्गसही।।

वरन मामा तो फिरपीचे, पच्चतायेकाः स्राराजीयन तेरा शब्द हो जायेकाः। व्यासपीठ--

उपनिषत् कथा-माला-१

आओ आध्यात्मिक जगत् में चलें !

प्रवचनकर्ता-वीतराग स्वामी सर्वदानन्द महाराज

इन दिनों में मुक्त द्वापके सामने जो चर्चा करनी है उसका सात्यय एक बात मे यह होगा कि चाहे देदों के सिदासी की लो बाहे उपनिषदी है। जिन नियमो का वे वरान करते हैं वे लोक परलोक के लिए समान रूप से उपयोगी हैं। ईस्वर की प्राप्ति हो बाहे ससार सुझ की दोनों के बिए नियम एक ही हैं। बाप कहेंने कि लोक और परलोक एक कैसे हो गये ? इन में तो बड़ा मेद है। मेद है किन्तु केवल देखने मात्र का। जैसे सून्य भीर १ की सख्यामे । वास्तव में ये दोनो एक ही है। किसी सरुवा के ब्राये शू य [०] लगा दो ६ वढ जायगे। जैमे १ 🕂 ६ 🕻०। किसी हिन्दमें के बागे से शूर्या •] उड़ा दो तो १ घट जायने । इसकिए ईश्वर प्राप्ति दुनिया में सुख का एक माधन है। यदि कुछ मेद है तो केवस देखने मात्र का बास्तव म कोई नहीं ये दोनो साथ साथ चलते हैं। परन्तु मनुष्य इसका विचार नहीं करना। चपनिषदों में ईश्वर प्राप्ति भीर सासारिक सुब को एक ही बताया है जो ईश्वर की प्राप्ति कर लेता है वह ही सासारिक सल का प्रानन्द भी पाता है।

वेदों में तिसा है कि देश्वर को अपने दूवर में ही देसा जाता है। ह्वय में ही देस्वर का जात होता है। हिन्दु एक शव है बहु यह कि देखर को पति देख सकता है। यत यह है तो अब अपन पैदा होता है कि हम तो पति नहीं परस्तु बन तो सकते हैं। यदि कोई बानक पाठवाला न बाये तो बहु बान कैंद्रे प्राप्त कर सकता है? को चला बाता है जात तो नहीं पा सकता है। इसी प्रकार को मनुष्य मिन सनने का प्रमरन करता है यह पति क्यों न दन बढ़ेका?

यतिका अध्ययह है कि जो मनुष्य इन्द्रियों को सीच मागपर पत्नाने का यस्त करता है वहीं विति है। उसी का नाम नेता है। उसी को सीडर अपना पथ प्रवश्क भी कहते हैं।

बहु पुत्रय को इलियों की नियम में रहे जहें शीवे मान पर चनाये उसी को सुख मिनता है। बही स्वसर में सुल प्राप्त करता है । बो स्वस्त्रयों को विषयों के स्वस्त्रयों को विषयों की स्वस्त्रयों को विषयों की स्वस्त्रयों को विषयों स्वस्त्रीन परें वह तो सर्वेद दुखीं ही रहेता।

मनु भववान् ने बताया है कि

इन्द्रिया क्या है ? ये हर तरफ भागती हैं। भांसें विवर ने जाबो देखती हैं नाक वहा सम्मव हो सचती हैं कान प्रत्येक शब्द की बाहे वह कही हो युनते हैं हाब बहां भी कोई वस्तु छूनी वा पकडनी हो वही पहुँच जाते हैं। मनुभगवान कहते हैं कि इन इदियों को सबम से चलाओ अर्थात नियम मे रक्सी वैसे एक बोडे का सवार वोडा लेकर बाजार में भाता है वोडा सड वाता है। सवार उसकी गीठ पर एक चाबुक जवाता है। बोडा बान बाता है कि मेरी पौठ पर काई सवार बैठा है वह सीघा हो जाता है। यदि सवार निवल है समादी है बाजार में बोडा लेकर वाता है जोड़ा बड़ जाता है ऊपर बैठा हवा सवार भयभीत हो जाता है वोडा समफ जाता है कि सवार दुवल है। बहु धीर अधिक बढता है और बख ने नही रहता। दुवल सवार क्या सवारी करेगा?

मही ।

उपनिषय कहते हैं नियम में चला ? प्रका यह है कि बय तक बोप दूर न हैं। नियम में बैठे वर्ले योप क्या है? साव्य सारत के शायाय से शुर्व की यह बतायूमा वे बोप सोम मोह राग धौर से महैं। में बोप कहीं बाहुर से नहीं माते बाजार से से पैसी में नहीं सरीदे जाते। सम्बर से ही पैसा होते हैं। इन योगों से ही बुझि मिलन हो बाली है रस्तिए राग देव धौर सोम मोह सो से मनुष्य सोम देता है सही यति है।

बब जनुष्य में राव का बोव बढ बाता है तो उत्तको सोबने के लिए कितने बस की बायव्यकता पडती है। वास्त्तक ने बसी बहुई हैं जब्बें का वाम में राव इस और बोम मोह को जीत निया है। बुसस ननुष्य कार्डे कैंसे जीत सकता है? इसके

कफ से बकी चोटियाँ, दूर तक वादियों में गूजता प्रकृति का मणुर सगीत सारी दुनिया के सोर खार से सलग कह पर्वत की गुफा साह-माया से दूर योगी और मुनियों को पुकारती रही है परम सानव्य की प्राप्त के दूर पेगा और मुनियों को पुकारती रही है परम सानव्य की प्राप्त के चिर तर सक्ती का मन्द्र का प्रमुव क्या योगियों को ही मिल सकता है। नहीं नहीं यदि तुम पाना चाहते हो तो पुन्धी भी अवदय मिलेगा खगत को छोकर मागने की प्रावस्थकता नहीं। इसी जीवन के सवाम से तुम यह सव पा सकते हो। इस युग के परम योगी दयानच्य कि सुक्त में सुक्त महान तरी हो। इस युग के परम योगी दयानच्य ने यही तो कहा चा ससार नहीं वागना छो गो जो तुम पाना चाहते हो वह सवपुत्र सुरहारे पास है। तुमने उसे को योग मा हो तो तुम सो सकते से बतु प्रच से मुग में के । उसे याद सगति परसी मोह माया से हूर के। उनके प्रवत्न हजारों स्वाप्त सरहा योगी तपसी मोह माया से हूर के। उनके प्रवत्न हजारों स्वाप्त सरहा होकर सुनते के। साय सन्देश के माध्यम से हम यह साप तक पढ़वा पहें है। हर सत्ता ह से पत्त ना मुलियों।

—सम्मादक

इसी प्रकार हमारी इन्द्रियां भी जोडे हैं। उनके लिए भी बलवान सवार की भावश्यकता है। मनु मयवान कहते हैं कि यदि कोई मनुष्य निषम के विपरीत अपनी इन्द्रियों को मान से हटाकर उनका उप योज करता है तो उसने दोव पैवाही बाते हैं। नाना प्रकार की दुर्वनताए था वाली है। धन्त में पुरुष इन्तियों का दास बस बाता है। इस इन्द्रियों को यस मैं करके जो पुरुष सीचे मार्गपर चनता है वही सतार में मुख पाता है। वती विद्धि को प्राप्त होता है और को विवर्धों के प्रथीन होकर इन्द्रियों को सीवे मार्ग पर नहीं जलातकता वह क्या कवी सुचापा सकता है ? एक जितेन्त्रिय पुरुष जिस तिबि को प्राप्त करता है। विश्ववो का बास उसे की पा सकता है? क्यापि सिए शक्ति की धावश्यकता है वे पराक्रम से जीते जाते हैं। परन्तु की रे

त वात वात हा । परंचु करा "
विहार प्रान्य में हृष्यिर श्रेम का मेका
वाता है। उसमें हृष्यी निकने प्राते हैं। में
हृष्यों मे बृत सोर मचारे हैं। मेरि किसी
हृष्यों को बृत से बांचा माने तो महु टफ्करें
ते बांचा नारे तो बूता उसाब देता है। मेरि
सोन इस्त का हिम्म देता हुए हैं है है।
साम प्राप्त में प्रमुख्य के बांचा माने हैं।
स्वा प्राप्ता में प्रमुख्य के बांचा मेरि
स्वा प्राप्ता में प्रमुख्य के बांचा देते हैं।
इस्त प्राप्ता में प्रमुख्य के बांचा मेरि
एको के सिए किसी सीर सीर मोन-मोह
को रोको के सिए केशन सारिक्य सम्मा
सावस्त्र माता है। राज हैया मेरि किसाइ स्मीर
हैया कर रफ्का है, हैं हैं हैं

पीनाए हैं और मोह ने किशने मनुष्यों को नेपैन ननाया है ?

एक वसवान् ननुष्य को किसी ने वासी वी उबने कसको मारा। एक ने पूका, बाई । दुन कितना मोन्स कता कस्ते द्वो ? कमे उत्तर दिवा, से डाई वन । पहले मनुष्य ने कहा 'दुन दो एक नावी का बोक वी नहीं तहार सकते, इतना बोक कैंद्रे बठायोगे ? वही है वीच ! इन बोवों का शुवार करोचे दो ध्यमा सुवार होगा तभी दुव धवने देख कीर वादि का भी मुकार कर सकोचे। यदि स्वय नहीं सुपरे तो कुस भी नहीं वन क्लेगा। यो साप ही सुपरा हुमा नहीं वन किया । यो साप ही सुपरा हुमा नहीं वन

इसिनय आप देखें कि जिसने राव हैंव की जीत किया उठी ने हुव वप्ट विकास पानी। वह क्षा नाई राम की दबा तकता है जिस पाई हैन और मोह का प्रयोग कर सकता है। यदि उदे आपरेशन कराने की सावस्यकता है तो प्रयान हाल सामें कर देगा उतके सन्दर शहनवांकित होगी। यदि मनुष्य इनियों को सपने स्थान कर से छी उससे सन्दि सा जाती है। यदि यह सनके समीन हो जाने सी किर उक्से समित कहां? सनीन हो जाने सी किर उक्से समित कहां? सनीन हो जाने सी कर से सो समुद्ध है सह सु हो स्थान कर से छी उससे सानित सा जाती

धव मैं घाप से पूछता हू धापको इन में से स्था धण्डा मताता है? गुरू से पूछे तो हरनें से कोई मी अप्छा नहीं। धाप कहेंगे कैसे ? मुनियं। धापको पूरी' वहीं स्थाद करती हैं। धाप आकल्यर बा रहे हैं। नाई कहता है कि यर मे पूरी तैवार हैं बाते बाधों स्टेशन पर धण्डी पूरी नहीं मिसंसी। रे किन्तु धाप कहते हैं 'गाडी का सम्बद्ध हो गया। भापको पूरी ती बाती हैं धाप बल्दी जल्दी बाते हैं। धापको धानस्य नहीं धाता। राव तो स्टेशन की धोर है धानस्य केंग्रे धाते ? क्य समय आप रान के धर्मान है हरसिस्य सुक नहीं।

याप प्रतिदिन देखते हैं वश्ये हुठ करते हैं। जब वश्या कुड होता है तो बरती पर सोट बाता है। बातते हो क्यों वह खड़ा रहकर भी याना कोच प्रवक्ष कर सकता है। पर नहीं वश्या तताता है कि यो जातियां कठी रहती है वे सेटी ही रहती हैं। वश्ये त्या होता है ? बही कि राग हों व बौर मोह यह बाता है। खड़ार वे बही जातिया उस्तित कर सकती हैं विनको राग है क सौर मोह पर सिकार है।

एक बात और समक्षा हूं। कारत की सन्ताम दिन-प्रतिथित करों पूर्वज्ञ होती बाती है ? माता थिया वार्ते, जाहे म बावें इतका दोन विवक्तर उन्हों वर है। इतका कारम जह कि साली मुज्जियों की सुन्हित निवक्तमुचार नहीं । इसिनए सन्तान बुक्स होती बाती है । उसका परिवास यह है कि बान ही साम बाति जी निर्वेश होती बाती है ।

वैद नृहस्य में वाने से नहीं रोकते, विन्तु पृहस्य में कब बाना बाहिए? युर-जित होकर हुडील होकर। पृहस्य का बनुषय उनको ही फच्चा होता है जो निवमानुस्य दख्तें में से करें, न कि कस्ते विवस तोड़ सें । नित्र है। विषयी जोग ईस्तर की प्रास्ति गृहीं कर सकते, गति ईस्तर का वर्षण करता है किन्तु प्रस्ते हस्तर में हस्तर महे-स्तापक है, यह स्वानों ने विषयाना है, परन्तु विद्याही हुस्त में ही देता है। यद-एव हस्त्र की युद्धि की धावरणकरा है। यदि प्रस्त करण गरिना है तब ईस्तर-प्रास्ति कहां? ईस्तर-प्रास्ति तथी को हो बकती है विश्वका हरन युद्ध हो, को वित्रीत्रत्व हो।

को बित है वह परमारमा की सपने

जो मनुष्य घरना काम स्वय घरने हाच से करे वही तपस्वी है। यदि धाप कोई लेख लिख रहे हैं, और नौकर से कहें कि पानी का पिलास लाओ तो कोई हुमें नहीं। क्योंकि पानी के सिए उठकर जाने से लेख ठीक नहीं होगा। किन्तु यदि घाण बेकार बेठे हैं, सुराही और निलास भी पास रला है और नौकर को बाहर से पुकार कर कहते हैं कि "पानी लाओ।" वह कहता है, "बाइ जी बहारी और पिलास तो पास चरा है।" बादू जो कहते हैं, " प्रवे तुमें नौकर किस लिए रखा है। ऐसे लोग घपना बल और साहस सो देते हैं।

मृहस्य ने प्रवेश करने वाने पुक्य के विषय में वेद कहते हैं कि वह मनुष्य सुर-विता हो, सुबील हो। नृहस्य प्रवेश के समय वह बसवान् हो, दुर्वल कदापि न हो।

सिय बाता-पिया नियमानुवार गृहस्य में बार्यरे, तो ८० वर्ष की बादु में भी समयान रहेंगे। जनमी बलिय में को दे समयान रहेंगे। मार्वीको क्लोति ननी रहेंगी। बोन कहेंगे केसे मति गृह हैं। समयान को सम्यान होंगी, समयान होंगी, सीमारियों से बनी रहेंगी। यह सही कि कहीं बीचियों भरी पत्नी हैं कहीं सन्त-स्तार की तकांख है। धायक्य तो यह होंगा है कि सड़का समकत्ते जाता है तो सबस्य के तार भेजना। हतता सी सबस्य के तार भेजना। हतता सी सबस्य के तार भेजना। हतता सी

बरीर को वी भीच युरीब, कठन और कुछ बनाती है उचका नाम है 'बातु' उचका ही जीक प्रयोग होना चाहिए, बो मनुष्य चुनेस बौर बतवान है, पुरुष का कुछ भी क्ली को प्राप्य होगा, और बसार में वी मही चुल पा सक्का है। हुनेस बौर विकास का साथ कभी सुख मही कर सक्का।

enter erfere seit file

हुषम थे देवता है। सखार का कौन वा बाम है वो उचके बामने कर सकेता? जो मनुष्य बसुद में तेर सकता है वह दिरवा है तथा दरेग? विवका सन्त करख परिंत हो वह देवता को हर की तथाने देवता है जैंदे दूरवीन में हर की तथाने किया है जैंदे दूरवीन में हर की तथाना को सपने बीतर देवता है जैंदे ही बाहुर भी देवता। जैंदे तमुद का जल बाहे सरक दावर से नो सक्वा प्रवास वा त्या क वावह सारा ही होता, जैंदे ही युद्ध कफ करख जाना मनुष्य सकते एक जैदा और वह में परनात्मा को देवता है। हुकीम गुक्रमात का वचन है—

बार बन बार बत बन।

तुन एक पूचरे के बार बनो सबस्वार बनो सहायक बनो, किन्तु दूसरों के लिए बोक न बनो, दूसरों का सहारा बनो, जनके लिए कार कबी न बनो। बिंद सब्द करण में स्पितिकार है। वे दिस्सर-आप्ति कहा ? देवर की सोत का क्या प्रयोचन है। इसीलिए तो कहा है —

बार मन में, इंडे बन में।

यो कहता है कि नेपा यन नहीं सबता यह मन सवा से। उने रोकता कीन हैं "जन को तो सवाने की बाद-रणकता है। वह बात तो मानी बात की है कि बादुक मनुष्य का साम मेरे वस में नहीं। मिन्यु यह कैने माना सारे, कि बापना मन जी यह में ने मोन्ट होती है बाप उक्का पहिला हिलाते हैं किन्तु रोकना नहीं साता। परिचान स्वाह होती है जाप उक्का परिचान स्वाह होता है जा तो कह पदार्थ है ? बहु बात में स्वाह ने ? विश्वका समा हो वस में नहीं सह स्वाह देता है

मीनामा क्या का क्या है, कि वर्ति इ. महाम्या की दोन बाना जाहता है तो मिक्य देश तम कहता है उसके निक्रितेत क्या किए उसके निक्यता है। जानेती। एक दो दिन बाग को रोकों । इर काव नग की क्या के निक्रद करो। बहु स्वय वीका हो जाएका। इन्यानका ने भी बीवा वीका हो जाएका। इन्यानका ने भी बीवा हैं आहे कहा हैं। "क्या कक व्यक्तिकाइओर रोकान वावेगा, वन तक बद्र पुरुषों का सरस्य न होगा तब तक कुछ भी न होगा, तब तक कुछ बी न बन सकेगा, बन क्वापि स्विर न होगा, वस में न बायेगा।

सब दशका वाकन वी नुत को । दिवार कर कार्य महारा देवार है। वाजार के कार्य महारा दखार है। वाजार के कार्य महारा दखार है। वाजार के कार्य महारा दखार है। वाजार के दिवार के कार्य दखार है। वाजार के कार्य दखार है। दखार के कार्य दखार है। दखार कर दिवार के कार्य दखार होता है। वाजार मार्थ का अवहार होता है। वाजा करते हैं। दिकर वर पर ह्वारों साबों करते का अवहार होता है। वाजा करते की कार्य का अवहार होता है। वाजा करते की कार्य का अवहार होता है। वाजा करते की विकास करते हैं। दिकर की वीचार करते हैं। दिकर की वीचार करते की विचार करते की वीचार करते की वीचार करते हैं। विचार करते की वीचार किया की करती नहीं पूष्ण।

वाग्तव में खवार का काम सत्य से सवा है और स्था से हो ईवार प्राप्त होंगी है। वचार में वहीं बचाव का विकास की होंगा है जो वाय पर स्थित है। वचार में किया का होंगा है जो वाय पर स्थित है। किया को कुछ लान की होंगा स्थारन मुठ से किया की कुछ लान की सोर मुठ के किया है। कुछ लान की की सावस्थकता है। एक मूठ विलो की की सुठ बोलने की है। पर- पुर का वक की ना की है। एक मूठ वीलने पड़ी रे के सावस्थकता है। पर- पुर का वक की ला होंगा का की है। पर- पुर का वक की सावस्थकता है। पर- पुर का वक की सावस्थकता है। पर- पुर का वक की सावस्थ है। पर- पुर का वक की सावस्थ है। इसी से वचार से जनाति होती है और ईश्वर प्रारंज का वाचन में गई ही से सावस्थ में सावस्थ मार्च का वाचन में गई ही से स्थार का वाचन में गई ही है से पर ईश्वर प्रारंज का वाचन में गई ही है सोर ईश्वर प्रारंज का वाचन में गई है।

सान बीबिये मैं सिवरेट पीता हूं सौर साप से कहता हूं, कि डिगरेट मत पियों ! मेरा मन स्वय जुक पर विस्कार करेवा मौर कहता हूं, कि डिगरेट मत करोवा मौर कहता कि ति बीबिय में नहीं। सर्य पर स्वित्त बनती है यह मूठ हैं। मूठ पर स्वित्त बनती है। उस मा एक सावनी के पर कोई बाता है। उस मा इयर जुड़ हैं मन पित्त है सु बाता हुआ बाते वा सु का करते हैं सु बात सु या बात हुआ बात्या ? महीं, बहु तो जुता भीत स्वा बात्या ? महीं, बहु तो जुता भीत स्वा हुआ बात्य न हो बाते । दुरे काम करने में मुस्म को सर्वेस ही मब होता है। स्वाई में कोई सब नहीं

वो मनुष्य प्रपना काम स्वक प्रपने हाम है करे नहीं तपस्वी है। मिंद धान कोई तेन जिस रहे हैं, धीर नौकर से कहें कि पानी का विसास बाखो तो कोई हवें नहीं। क्योंकि पानी के किए टउकर वाने से सेव ठीक नहीं होगा। किन्तु मिंद धार केता बैठ हैं चुर्राही और निकर को बाहर के पुकार कर कहते हैं कि "पानी बाखो।" नह कहता है, 'बाबू बी! चुराही और विकास तो पास करा है।" बाबू की कहते हैं "बसे हुके नौकर किस सिव्ह एका है? ऐसे बीम बस्ता क्या कीर हाइकु को बेसे मुना करता वा सैने पूछा कि ऐसा स्थो किया बाता है तो उत्तर मिसा कि "यह इसिए करते हैं बिससे कभी भारतस्थकता पड़े तो सपना खामान उठा सकें। यह है एक व्यक्ति का साहस ।

पबाब में तो यह रिवाब है कि बिस बाबू का बेतन दो सी हो जाये उसके घर की स्त्री निकस्मी हो बाती है। उसे काम कांब के लिए नौकर की बायरवकता पडते है। किन्तुगुजरात देश मे बड-बडे घरों की स्क्रिया अपने हाथ से भोजन बनाती हैं। यह तप है। इसलिए दुम्स हो यासम्ब अवय हो बावराअवय । तुम अवने कर्तव्य का पासन करो ! किन्यु तुम्है तो न्सका अस्थास हो यमा है। छोटे-छोटे बच्चों को कठ सिमाया बाता है। एक बार एक बाबू के घर सक्डू बाए । उसके लडके ने मार्ग ती बाबू ने कहा कि स्कूस हो बाबो फिर मिल बावेंने । परन्तु सबके को चैन कहा[?] वह स्कूल स्रोडकर स्ना मया धौर ज्यों ही लड्डू उतारने समा टोकरी का सामान गिर वया। आव ने पूछा तो कह दिया बिल्ली यहा से नई है उसने गिरा दिया।

इसके साने एक बात सीर है वह है जान । जान नाम है बानने का । इसके निया फिली काम की पूर्त धारफ्य है। एक मनुष्य बिसका सारीर शवक तथा हुवेंन है, यदि वह खापसे कहे कि 'बहा-कर्य अपन्या है सरका रात्रमा वहास है' तो स्वका प्रमाद कुख न होना । यदि बहा-कहे कि मेरी सार देखी । मैंने बहा-करें को स्वका प्रमाद पढ़जा। जान के स्व प्रमाद है कि किस काम को हाथ में तो स्वका प्रमाद पढ़जा। जान के सह प्रमाद है कि किस काम को हाथ में तो उसका मनी मीति समक सकें, जो काद करते हों उसके स्वय श्रविकारी हों।

कव तप, सत्य धौर ज्ञान हो बाबा है त व धारमा का प्रकाश होता है। यह प्रकाश कथा है? जिल्ला उसे वर्शम नही कर सकती।

शायकन यह सहर बती हुई है कि हमारे युवक गास्तिक होते जा रहे है। माना कि धाप परमेक्टर को नहीं मानते ! माना कि धाप परमेक्टर को नहीं मानते ! का माने ! नेरे धाम्यर जो है कह परमा । मा है। उसके मान नहीं हो उसके ! मान निया कि धाप परमेक्टर को नहीं मानते ? क्या जान की पूर्ति जी युरी है? क्या क्या जान की पूर्ति जी युरी है? क्या करको भी नहीं मानोने, कि इसियों को नियमानुकूल बजाना वाहिए? बांब नहीं मानोगे तो बक्के बाधोंने ! रहीं मान विवा तो धापकी धारणा को धपने खाप ईन्वर के स्वरंग हो नायेंने !

दूसरे देशों के बीम परिवासी है, बाह्मी है हम में और बागानियों में यही मेंद है। बागानी प्रपत्ती दिल्लाके के बात नहीं और रिन्दुस्तानी बाब हैं। खतप्य उनके बिए उक्त खानन सामकारी हैं, करने बिए उक्त खानन सामकारी हैं, वेशे महुम्ब के खन्त करना मुख्य करके जबका जबार करते हैं बीर उन्ने परकारमा

Fao श्री लालमन आर्य जयन्ती समारोह

प्रसिद्ध दानबीर स्वत त्रता मेनानी कमठ खाय पुरुष महर्षि दवान द एव वैदिक म के धनण्य जपासक भी स्वर्मीय लालयन बाब के ७४ वे ज म दिवस पर १७ अप्रैस ो एक विकास समारोह हसराज माण्य स्कूल पत्राची वान मे सम्पन्त हुआ। इस **स्वत्य** ार भी सासमन बार्य की पुण्य स्मित में एक सबमगर की मध्य यक्तवासा विसमें बेद त्त्र्यों का प्रकत किया गया है उनके सुपुत्र श्री गज न द बाय श्री प्रकासानन्द श्राय री सरयानन्द श्राय ने यज्ञ याग धादि परित्र काय हेतु हसराज शाडव स्कल को सम वस की । इसका उदघाटन झाय सन्यासी स्वामी सत्यप्रकाश जी ने किया ।



भी जासमन प्राय प्रावर्श ईश्वर भक्त एव कवि वे उनके प्रक्ति रस में ड्वे हितो का एक कैसेट जिसको आ पुनार्नीसङ् रावद ने स्वर दिवा उसका विमोचन क्यानवाः

प्रो॰ वेवस्थास की बध्यक्षता ने एक श्रद्धाञ्जली समा भी की गई। जिसमे सिद्ध भायनेता भी रामनोपाल शालवाले तका भाय भाय विद्वानो ने श्री बार्य के । बार्स जीवन पर प्रकाश डाला।

भी बालमन प्राय निवान प्रतियोगिता के प्रतियोगियों को भी पुरस्कृत किया गया।

श्री लालमन त्रार्य निबन्ध प्रतियोगिता के परिग्राम

इस प्रतियोगिता में दो विषय थे - महर्षि दयानन्द के सपनों का भारत वा वर्तमान चारितिक सकट समस्या और समाचान जिसमे देश अर से २७६ क्तियोगियो ने जाम लिया। इन निवामो का मुल्याकन आयसमाम के तीन प्रसिक्त बद्धानों द्वारा किया गया । जिनके नाम इस प्रकार से हैं-

भी किसीस कुमार भी वेदालकार की डा॰ वाचरपति जी तपाच्याय सम्पादक ग्राय वनत्

श्री हा॰ बसपास सी

दिल्ली विक्व विद्यासय प्रधान सम्यादक शायसन्देश

120/-40

इस निबन्य प्रतियोगिता में निम्नलिशित व्यक्तियों को पुरस्कृत किया बया । बनके नाम निम्ननिस्ति हैं-

। वस पुरस्कार समुक्त विजेता---

भी कुष्मदेव शास्त्री पाणिति महाविद्याः बहासगढ सोनीपत ६००/-३० श्री महेख कुमार कौष्टिक द-जीवन भवन देवपुरा खामम हरिद्वार १००/ ३० इतीय पुरस्कार समुक्त विचेता-

स्त्री डा० सूत्रप्रकास विकासकार के०ए**व० १६७ क**विनगर गा०बाद २६०/ इ० भी निजीसास मीना प्राम मध्येता वावा विवाई वयपुर ₹20/-₹0

तीय पुरस्कार सनुबत विजेता --

। बी विनोध कुमार क्वाटर न० ७६१/११/१११ टाउनश्चिष बी**०एव०ई०एव०** हरिद्वार

स्व॰ श्री लालमन जी चार्य

एक प्रेरक जीवन



थी जालमन झाय का जन्म राज स्थान के सेरडा नाव में विश्वत १६६० की चैत्र सुक्ला द्वितीया को हुमा । बाल्य कास वाब के गरीब किसानों मे बीता लेकिन बीवन के साधना क्षेत्र बने-उत्तरी बगाल तथा क्सकता जैसे नवर । सम्प न्तता एव सादगी देशानराग तथा दान शीलता एव मानवीय मूल्यों के प्रति वड बास्या का दीप बलाकर कल्वाणमार्ग के पिकक बन गए।

ऋषि दयानम्ब एव महास्मा नाषी उनके बावच महापूर्य वे। बतिवर दमा नन्द के उपवेशों से प्ररस्ता प्रहण कर मतक शाद पूर्तिपुत्राका प्रवल विरोध किया तका विकवा विवाह का सशक्त समयन किया । स्ववेशी धान्दोशन के प्रति बाक्रव्ट हए महात्मा नाथी के कारहा। शकाम एव बाढ धादि से गीडियों की तम मन और वन से सहायता की।

प्रसन्नचित्र निरमिमान सासमन बी का मन काल की तरह कान्तिमान् एव स्कटिक की तरह पारदर्शी वा। वि•स॰ २०४० की क्येष्ट जुक्सा दक्षमी के दिन उमकी इहकीला समाप्त हुई।

स्व अध्याची ने धपने जीवन से तैक्टो कविताएँ गीत अवन भादि जिले । उन्हीं में से कुछ प्रभूमनित एव बात्मोत्वान ते सम्बद्ध नीतीं का चनन भी साथ बी की स्मृति में उनके वर्मानुरायी धारमधी, सक्त्री बनागद की ग्रांव श्री प्रकाशानन्त नी साथ एवं भी सत्वासम्ब भी माथ से समद बनता की तेवा में समर्पित किया ।

बी बासमन बाय जी ने एक कर्नेट बोनी की तरह समाज सुचार एक चर्मी बार के क्षेत्र में बनेक कार्य किए। क्लका अक्रिप्त विवरण नीचे विवासमा है---

- 🛘 वहेब झाडम्बर परवा प्रवा बास विवाह खुशासूत मृतक शोव शादि कृत्रवासी का सोवाहरण प्रवण विरोध 🛘 विश्वा विवाह व स्ववेशी वस्तुओं के प्रयोग का सोवाहरण समयन
- 🛘 सरोवर कुम्रो भीवशसय श्रमसासः श्रादि का निर्माश
- 🛘 बाइ दुर्भिका महायारी जैसी दैविक बाववाची में बन सहायता
- सरपच पव के कायकाल में प्राम सुधार व विकास के सनेक काय
- 🗆 धपने जिसे हुए तैकडों भवनों व नीको के नाष्यम से बायसमान का प्रचार व बुव्यसनो तका धा धविश्वास का सण्डन
- 🗆 गरीव विद्यार्थियों विद्वान् व प्रवा रकों को बार्षिक सहयोग

उन्होंने भारतीय सस्कृति के धारकों के अनुरूप ही सेवा बत को ध्येय बनावा धनेक वार्मिक सामाजिक और ग्रैकणिक सस्याओं से पनिषठ रूप से सविदा रहे । उनमें से कुछ सरवाओं का उत्लेख इस प्रकार है-

दवानन्त बाह्य महाविद्यालय हिलार

- 🗆 वयानम्ब कालेख हिलार 🗆 जगन्नाच बाय कन्या विकासय हिसार
- 🛘 विरवानन्द वैदिक सावना शाक्षम मथ रा
- 🛘 विषया विवाह सहायक सव 🛘 गुक्कूम बीरववास
- 🛮 पुरकूस बाबनगर 🗆 प्रावेट्स्ट प्रावसमाज वहा वाधार

प्रतिष्ठान

🛘 मारत टेक्सटाइस

 इकोनोमिक ट्रासपोर्ट बार्बेनाइकेसन आव स्टील्स प्रा॰ सि॰

मुस्बोकन के दिसाब से १० प्रतिबोनियों को सान्त्वना पुरस्कार विये वह-

क नाम इस मकार ह −−	
बी राजनीर सिंह गरिंग अपरीशी नेरठ	10/-10
थी विवपुरी योस्वाबी रावानांडा जोवपुर	20/-50
बीनती नार्वी मानुर इतुनान चीक जोवपुर	10/-He
	20/40
हा॰ वयरत्त उत्रती बाल्बी बञ्चल तस्कृत विवाग कुवाळ वि०वि॰ परितर सस्वीता	10/-00
बी कैंसाश विहारी वर्ग अपिरिक्त विका एवं सन न्यायाचील विविध कोट (विहार)	६०/ इ०-
वी बुनीवा नासनानी, कोसवाची के पास मोनास	40/-40
वी नोतुम्बर बसनव १११रामनवर नेरठ	20/40
वी स्त्येत्र सर्वाः, वार्यकार, सर्वाः,	20/40
	वी राववीर विह वीतक क्षांचेत्री केरठ वी विवयुरी वीरवार्थी कार्या वीत्रवार्थी कार्या वीत्रवार्थ कार्या विद्यार नवर हावरव वात्रवार वार्या विद्यार वार्या व्याहर नवर हावरव वार्या व्याहर नवर हावरव वार्या व्याहर वार्या

श्रद्धांजलि

चुना पत्रकार प्रमोदकुमार विनोद

—शिवकुमार गोयल



मरु से प्रकाशित कोक प्रिय दैविक "प्रचात के सह सम्पादक तथा जुग साम समाजी पत्रकार यो प्रमोदक्तार चिनोद का भूर वर्ष की प्रकाशु में ही निषद हो यया। वे वयोजुद स्वामीनता सेनाती तेकस्वी व निर्मोक पत्रकार तथा साम तैता श्री विश्वक दिनोद के व्येष्ठ पुत्र से।

श्री प्रमोव कुछ समय संभोजन की सभी में कैसर से पीडित ने। उनका कम्बर्ड के टाटा कैसर इस्टीटयूट का इलाज जब पहाथा कि स्रचानक तिबयत खराव हो यह तवा ने प्रमुको प्यारे हो गये।

मारीशस यात्रा अमिट छाप

जी जमोद विश्वसे वय जनदूवर माह ने ही जारतीय प्रक्रिमिय अध्यक्त में मेरे शाय जारीखत वये थे। बहुंग आववशंभा की कोर से सम्बाध स्थानुत किया गयां था। सम्होंने गारीस्थ्य के यक्तरेर जी शिव बावर रामगुमान तथा राष्ट्रपति जी प्रसिद्ध जनमान से जेट कर रूप्टरपूर् विश्वमा था। नहीं ने जारीस्थ्य के प्रस्थान हिल्ली साहित्यकार जी समित्यनु प्रशत के स्रतिस्थि से। सम्बी विश्वमस्यारिता तथा शुदु स्थान से उपनि सेता जी ने परि-वार सो मोह सिका था। वे परि-

वी प्रमोद ने भारीक्ष के भारत-वाहियों के तालने प्राने वाली वस्तवायों का वहन अध्ययन किया जा तथा नहीं हिंदुयों के वर्ष वरिष्ठतन में सहित्य हैताइसी व सीविया के गुसलमानों की सत्तवाके विवेच मांचा । उन्होंने वैतिक 'प्रमाण' किये मांचा तस्त्वराख में स्थप्ट कहा जा 'सानंतवाया तथा सन्त गांविक सत्त्वारों को सार्थिक्ष वर्ष प्रमुख्य नेवने चाहिए जो हिन्दू सभाव को स्वप्तित व स्वित्व-सार्थी क्या कर्षें"।

त्रवात की बोकत्रियता विक्रिकेट में बेंबीस सारे में वहा की मरोपासकर विद्यार्थी एव डा॰ सम्पूर्णानम्य की से पतकारिता की प्रेरका नेने वासे ८२ वर्षीय भी विश्वतः विशोद वी के निर्जीक सम्पादकीय लंखों का योग-बान है वही भी प्रमोद तथा श्री सुबोध इन बोनो भाइयों के सेसन तथा कुशस सबोजन को भी इसका श्रेव देशा होगा। थी प्रमोद प्रेस के हर काम के विदेवज्ञ वे। वेकम्पोक से तेकर स्पाई तक के कार्यमे पूरादसल रसते थे। सामग्रिक विवयो पर तत्काल सम्पादकीय लिसने में वे माहिर वे। श्रीमती इन्दिरा नाबी की हत्या पर उन्होंने को सम्पादकीय निकावा उसे पढकर मेरी बांबें खलक उठी थीं। प्रमोद बत्वन्त मिसनसार तथा मृदुमापी वे। सुके वे बपना बबाब जानते वे तथा सर्वेव झावर देते वे !

सस्यायु राजनो के बावजूद अद्वेय विजाय की राजा उनके दोगो पुत्रों अमोद म सुनीय ने वैतिक अमारत का स्वर काग्ये राजा । साम प्रमार्ग परिच्यो उत्तर प्रवेश के अपुत्र वैतिकों से विना बाता है। प्रवित पत्र की मात्रा के दौरान एक अपुत्र स्वरम्म बहु बागे से निर्वय ही प्रमात को नेहरा सामारत लगा है। सद्धेय विगोद जी का हृयय तो पूरी तरह विवीशों ही चुका है।

वे सस्कारी थे

भी प्रमोव को प्रायसमान के सस्कार सपने सार्वसमानी पिता भी वि-स-विनोद ज्वा मातुओं भीमती सुविदा विनोद से प्राप्त हुए के 1 वे क्षण्य से ही प्राप्त हुए के 1 वे क्षण्य से ही प्राप्त हमान के सरकार में प्रमुवे स्वाप्त करते थे हो नहीं ने सपने पिता भी विनोद भी कोच्या भी स्वाप्त मात्र के लिए पूर्वमानियों की मोशियों के सामने बाली तानने भी कटना सुनी थी। इस बालावरण ने उन्हें कट्टर राष्ट्रप्रमस्य व वैदिक कर्म का प्रमण्य प्रेमी बना दिया था।

श्री विजोब सपन पीखे प्रशी हुं, का वेशी तीन पूजिया व एक पुत्र क्षोड गये हैं। ८२ स्वर्षित श्री विश्वडि स्थितोद पर पुत्र विश्वोत का वह व्यवदेश धावाद सवा है। इंत्यर विश्व प्रशीस की सारमा को साहित तथा रिद्या भी विगोद भी क्या बतुष्ठ भी सुधेय कुमार विगोद व परिवार को कहन समित प्रवास पर, वहीं ग्रामेंगा है।

> — शिवकुमार बोबल पितसुवा (च०प्र०)



साहित्य समीचा-

नवजाबरण के पुरोबा दयानन्द सरस्वती

सेकक —डा॰ व्यक्तीलास वारतीय प्रवासक—वीविक पुस्तकालय स्रवनेर मृश्य ४० ६०।

डा॰ मवामीलाल आरतीय द्वारा प्रस्तुत "नव बागरक के पूरीका द्यानन्द खरस्यती' शीवक ग्रम्ब उनके मनोयोग एवं सवत अध्यवसाय का परिशास है। प्रस्तुत प्रन्य महर्षि दयानस्य के जीवन चरित के रूप ने हैं। जीवन चरित सिखने के लिए दो बातें अपेक्षित है-चरितनायक की विचार सर्वि का सम्मक प्रस्तती-करता तथा इस प्रस्तृतीकरता के प्रसन में सम्बन्धित एवं यथाय घटनाओं का सम्मिवेश । डा॰ भारतीय ने दोनी बाती का सम्यक निर्वाह किया है। प्रत इस प्रव के द्वारा महर्षि के जीवन चरित की बचाय चटनाम्रो का ही ज्ञान नहीं होता धापितु उनकी वह विचार सरिए भी स्पष्टता के साथ उभर कर षाती है जिसमें वे बटनाए सनुस्यूत है। चटनाम्रो के सन्तिवेश में डा॰ जारतीय की बष्टि तथ्यपरक रही है। बत उन्होंने महर्षि के जीवन चरित में उन्हीं घटनाओं का सन्निवेश किया है जो इतिहास सम्मक्ष एव प्रमामपुष्ट हैं। हा० भारतीय ने स्थान-स्थान पर इन प्रमाली का निर्देश भी किया है। प्रमासपुष्टल के समाय से किंवद तीमात्र पर बासित वटनामी का जीवन करित से बहिमांव करने ने डा॰ भारतीय सकोव का धनुमव नहीं करते । विचारसरिस को प्रस्तृत करने में डा॰

बारताय की बॉस्ट वस्तुपरक रही है।
यत ग्रन्होने उद्यक्षण कदा का विशेष किया है विकड़िक सावार एर महर्षि का सम्बाध ग्रेडी घटनाओं से जोड़ विचा बचा है जो न वेचन इतिहास निवड हैं अधितु जनशी विचारसारिय के भी प्रतिकृत की वहा इसके अविदिक्त इस सन्य के सकु बी पठा जनता है कि उस समझ भारतवर्ष की सावाधिक एव बार्बिक विचित्त क्या की स्वा महर्षित द्यानन्य में किस भारत उद्ये प्रधानित करके छही दिला प्रदान की । इस प्रकार तरकालीन सामाजिक एव वर्गामक् इस प्रकार जो इस्ट प्रकार तरका की ।

वण्य के लिए सामग्री शुदाने हेतु बाव बारतीय ने धनेक स्रोतो का उपयोग लिया है। इस सम्बन्ध ने ५० लेक्सरास स्वाद केनेद्रताच ढारा पूर्व प्रस्कुत सामग्री ही पर्याच्य नहीं मी। घरा बाव बारतीय ने दक्के बाद प्राच्य होने सामग्री करनरत सामग्री न स्वादानेजन किया है व प्याप्त परीक्षण के बाद इसका सपने ग्रम में उपयोग किया है। इससे इस सम्बन्ध परिपूर्णवा एव प्रामाणिकता निस्स्वित्य हो नई है। बार भारतीय इस प्रवस्त है किए निस्सप्येह सामुवाद के पात्र है।

--- डा० ब्रह्मानन्द शर्मा

घरेलू उपयोगी बातें

- कच्चे रेसो को बरमी से बचाने के लिए उन्हें पानी से अरे मटको पर स्त्रें। केले एक सप्ताह तक भी सराब नहीं होंगे।
- हरी सल्बो को बिना घोथे तीले सकावारणे सपेटकर रक्त वें स्निक समय तक सुरक्तित रहेती।
- इंड्ये कारियंक्त का यदि केवल प्राचा भाग ही प्रयोग में घा सका है शो बेच प्राचे भाग को उसी समय नमक विश्वे पानी में रक्त में काफी समय तक कराब नहीं होना।
- हरी निय को सुझाकर बोडे नमक के साथ कृट लें। वर्ष भर खराब नही होनी।
- नी सुको सुर्रालत रखने के लिए उन्हें काटकर नमक व हींग लगाकर बोटे से नी सुके रल में रख हैं। कभी कभी भूप दिखाते रहें नी स्वस्ताय नहीं हैंकि।
- मृती को विश्व अधिक समय एक एकोमा हो थीं उसे पछी से अध्यय न

- करें सूत्री सूखेगी नहीं।
- भागकाटकर सुझाल भीर समक क साव मिलाकः डब्बे मे रख दें। जालानहीं समेवा।
- यदि आपके नासून कड हैं और उन्हें काटने वे जकलीफ होती है तो हायो को एक दो मिनट तक पानी में भियोथे रखने के बाद काटिए। नासून आसानी से कट सार्वेगे।
- ☐ किसी स्थान पर लगी काई को छुडामा हो तो रात को उस स्थान पर चूना घोसकर डाल वें तथा सुबह कपडेस रवड कर साफ कर वें।
- जैन जैनी धौर टमान्ट की च नी को प्रथिक दिन सुरक्षित रखन के सिए उन्हें बोसली में मरने के बाद उत्पर मोम की एक परत जमाकर उक्कन कया व। इससे जैंका, जैकी धार्षि एक वो सहीने तक धासानी से रखे था सकते हैं।
- पिसी हुई सटाई को जाने और की के से क्याने के सिए बॉडा सा पिसा हुआ नेक्क शिकाकर रक्कें।

समाचार-सन्देश

फांसीसी युवती की शुद्धि एवं विवाह

धार्यसमास धनमेर हारा ३० वर्शया कविषीत तथा हाल में पुष्कर प्रवास पर धार्ष हुई मिस विश्वीत स्थानी हारा संच्या से प्राप्ता करने पर सुद्धि कर उसे वेदिक (हिन्दू) सम में वीचित किया गया। स्वसे स्वय बताया कि वह भारतीय वैदिक सम के प्राप्ता से झालत प्रमाचित हुई है। शुद्धि के परभाद सका नाम कु० नीना रखा गया।

धुकि के पश्चात् उसकी प्राथना तथा पारस्परिक सहमति ने ब्राधार पर पुष्कर के लोटस होटल में सेवारत की भावाल बास वायम के साथ वैदिक रीति से

गुरुक्क महाविद्यालय तता-रपुर-गाजियाबाद (उ०प०) वार्षिकोत्सव सम्पन्न

हापुड से ३ मील पूर्व गढ मार्ग पर स्वित ततारपुर गुक्कुल का वार्षिक मही-त्सव १६-१० मार्च तक बढी चूमकाम से सम्पन्न हुसा। यज्ञ एव विद्वानी के प्रव-बनो के प्रतिरिक्त ब्रह्मचारियों का व्या-याम प्रदर्शन वटा प्रमावशाली रहा । परोपकारियी समाके ब्रध्यक्ष भी स्वामी घोमानम्ब जी महाराज ने खेळ व नेवाबी छात्रो को पुरस्कृत कर ब्राशीर्वाद दिया एव सप्वैदेशिक प्रायंतीर दल के प्रवास सञ्चासक श्री वासदिवाकर जी हस ने बार्येदीरों को पुरस्कार देकर उद्योधन दिया। प्राचार्यं धर्मपाल जी ने सभी को बन्यवाद ज्ञापन देकर गुरुकुत की सहाबता हैतु अपील की तो प्राम के बार्य युवको ने **सम्भग**४ हजार रुपये एव ५० विवन्टल बेहू नुष्कुल को दान मे दिया। उत्सव प्रभावणाली रहा।

वेवेन्द्रकुमार ग्रार्थ, सन्त्री

बेवेन्द्रकुमार बाय, मन्त्री

सार्वे कुमार परिवद् गुरुकुल म०वि० ततारपूर के निर्वाचित सदस्य

श्रव्यक्ष ज्ञानेन्द्रकुमार धार्य सन्त्री देवेन्द्रकुमार धार्य कोवाध्यक्ष नेकपाल धार्य धाक्षानायक सत्यपाल धार्य

पुरोहित तथा सेवक की श्रावश्यकता

धार्यसमाय सफदर जग ऐतननेत से एक दुयोग्य विद्वान् पुरोहित तथा सेवक की बावस्यकता है। इच्छुक व्यक्ति सीझ सम्पर्क करें।

एच०एस० बेर प्रचान ए-२/५%, सफतरबंग ऐन्मलेव नर्षे विस्त्री-११००२१ पाणिबहुरा (बिव ह) सत्कार भी समाज मन्दिर में सम्पन्न हुमा। शुद्धि एवं विवाह सत्कार भी भावार्य गीविन्सीसह ने सम्पन्न कराया।

इस धनसर पर धार्थसनाय के मत्री श्री रासाधिह ने बाधोर्थसन प्रदान करते हुए फांसीसी पुत्रती का बैरिक वर्ष में बीजित होने पर स्वाबत करते हुए प्रवृत्ति स्वाबत एवं बैरिक बनें पर प्रदेशी जावा में प्रकृतिक स्वीदर फ्रिंस ग्राम

> (रासासिष्क्) मन्त्री भागसमाज, शजमेर

त्रार्यसमाज की स्थापना

११ नयसर छन् ११-४ दिन रवि-वार को प्राय समीरपुर (गृहसीस देवनन, जिला सहारनपुर) ने सार्वसाय की स्था-पना, सार्वसिख् (जुरुपूर्व चरणित्व सार्व) परिवार सदस्य, पुरुकुत महाविधासय स्वारपुर (बद रोड, निकट हायुड) द्वारा भी वर्ष । ११ सदस्य सहस्य स्थाय से सदिष्ट हुए । निम्नाकित महानुसाय प्रक्रिकारी चुने वथ ।

> प्रवान—श्री जहानसिंह जी मन्त्री—फूल सिंह वी कोवाध्यक पुस्तकाव्यक्ष

वाम सनीरपुर व निकटवर्षी के वो मे वैदिक दिखालों का प्रचार सनवन के स्प्ताह तक कराने का सामावन पुरुकुत्व की होर से किया गया। प्रचार कार्य के महास्थ्य मुक्तपिह जी का नचेत्र सह-योग प्राप्त हुसा।

> प्राचार्य गुरुकुस महाविद्यासय ततारपुर गांचियासाद (४०४०)

श्रार्यसमाज ततारपुर गाजियाबाद (उ०प्र०)

१६८५ मुवा वर्ष घोषित होने वर सार्यसमाज का दासित्व त्री त्रुवकों वर सौंप विसा गया सौर सर्वसम्मति से विश्व प्रचिकारी निर्वाचित किये गये।

एस०ए० (मन्त्री)डा० स्रोतनीरहित

मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि यह यज्ञाग्नि श्रलंड रहेगी



जानन्वर एव पत्राव के सुप्रसिद्ध योगी श्री बाबा मोहनदास जी महाराज ने अपने भी रचुनाम मन्दिर के प्रागसा में विशास त्रणमरमर की १६ सम्भी बाली वज्ञणाला का सब्बाटन ग्रपने गुरुवर राजस्थान के नहान् सत धिरोमणि श्री स्वामी भरतदास वी बहाराज शताबुके कर कमलो द्वारा सामवेद पारायण यज्ञ के नौ विवसीय महान् यज्ञ के धान्याचान द्वारा दिलाक २२-३-८५ सर्ग प्रतिपदा को किया। उव्चाटन यज्ञ तथा वेदापदेश आर्थ जगत के सुत्रसिद्ध वैदिक बिद्वान् भी प० राजगुरु की धर्मा विद्यावाषस्पति के त्रह्मत्व मे सुसम्पन्न हुमा । बाबा के सैकडो अ**दा**स् सिक्स एव हिन्दू परिवारों ने इस यह में भाग सिमा। नित्यप्रति रात्री को भी बाबा मोइएनदास जी जो कि जाने माने शास्त्रीय संगातज्ञ एव अक्ति संबीत के रचैंबिता भी हैं, अपन मक्ति समीत एव उपवेश द्वारा नोगो को दुर्गुएगे के त्याय **१व ई**श्वर प्राप्ति हेतु योग एव मन्ति का अस्यन्त ही मामिक एवं सबुर उपवेश भी

यज्ञ की पूर्णाष्ट्रित का दृश्य श्रवि-स्मरणीय एव वर्षनीय था। समस्य वय-यान गीने क्श्मों ने परिवार खहित सम् क्रिया थे ४ ४ ५० के विशास या क्रि की वषकती हुई सपटों ने भी बादा सोहन वास भी ने यज्ञ की पूर्णाष्ट्रित प्रदान की।

भी बह्या जी ने सक्त प्रेमियों को युका-

कीर्वाट प्रवान कर की बाबा मोहनदासर्जी को यज्ञ की सफलता पर बचाई देते हुए व्यक्तिस एव १०१/= रुपये मेंट किये बिन्हें स्वीकार करते हुए बाबा की माव विभोर हो नए तथा अस्यन्त ही मामिक दृश्य उप-स्थित हो नमा। जब नावा भी की आंखों मे प्रेम के बासुओं की बारा वह निकसी ! श्री सर्माजी ने बादा स यज्ञ की दक्षिए। की याद विकार तथा कहा कि यदि मुक्ते यक्त की दक्तिग्रा में यह बचन दीचिए कि बाप इस यक्षकुष्ट की अस्ति कभी नहीं बुक्तने देंगे तथा नित्यप्रति यज्ञ करेंगे। बाबा का कठ प्रवश्य हो बया था। अस उन्होंने सवस नेत्रों से हाथ जोडकर तबास्तु मात्र कहा । यज्ञ महप वैदिक वर्म की खय, महर्षि दयानन्द की अस वेद भगवान् की जय, भारत माता की जय, मर्यादा पुरुवोत्तम श्री रामचन्त्र महाराष्ट्र की बय, योगीराज कुष्मचन्द्र महाराज की वय घोष से बातावरण मानन्दित हो उठा। बायुर्वेदिक बडी-बूटियो एव पचनस्य द्वारा निर्मित सोमरस यज्ञ देवी पर वितरित किया स्मा।

इस यह ने गुरुकुल करतारपुर के आचार्य भी नरेश भी, गुरुकुल के वेदपाठी और बहुम्पारी एवं आचार्य वर्गवीर भी पवारे थे।

बाता बी ने दूवरे दिन गुरुकुत करवारपूर में प्रधारकर कुरुकुत के समस्त ब्रह्मचारियो स्वा गुरुकुत परिचार को दूर्ण दस्त्र प्रवान किए, एक टीन देशी चूट ब्रह्मचारियों के मोजन हेंदु तबा १ हवार सपसे मेंट किये ।

हत्त वैशिक यज ने पजाव प्रायं प्रति-तिक समा के प्रधान की बीरेन्द्र की, सहा नवी विश्वन कसवाजी प्रायां एव कई सार्य-परिचार सिमितिस हुए। यज का सायो-क्या पुत्रसिक्ष सार्व देवका स्वत की समुन्द्र वी नित्तल के सीक्षण से सफ्त हुआ जो कर्मुत एवं प्रस्तकतीय सा।

कास भारतवर्ष के धन्य महत एवं वाषु महात्मा भी इस प्रकार बायोजन कर सकें। भी बाबा मोहनदास वी महा-राज का अनुसरण कर सकें।

सुवाददाता

श्राचार्य की श्रावश्यकता

कम्या पृष्कुच वरिष्यार त० नारलील विज्ञा अहेल्प्स (इरियाणा) के निष् प्राप्त, निषारद वास्त्री परीक्षाओं के विश् बोमवापूर्वके बक्र के निष्ए एक सुबोम्य बाचार्य की बावदक्यता है। सपनी जैस-किंक्योगव्या एवं प्रपुत्त वास्त्रि के क्ष्मेख पूर्वक निम्निविचय पर्वे पर प्रावेष के बच्चा व्यक्तिपद सम्बद्ध के रे। इक १०० बावाद व्यक्तिपद सम्बद्ध के रे। इक १०० बावाद व्यक्ति के व्यक्ति स्वर्ग प्रपान के बावाद व्यक्ति के व्यक्ति स्वर्ग प्रपान के कनावादी है। कनावदी बावादार्य कन्या युक्कुच विकार स० नारणील,

विचा बहेन्द्रमङ् (हरियाचा)

शोक प्रस्ताव

विनाक ७-४-६६ रविनार को सार्थयमान बल्लापुरा नारावाची के सार्याहिक सविनेयन में भी नेवानान जो का स्वस्थान में भी नेवानान जो का स्वस्थान में भी नेवानान जो का स्वस्थान में सार्थ जनत् के युवा विज्ञान, सक्त विनाव रवण्यम स्मावकोत्तर महा-विज्ञानम्, स्वोठी के प्राच्यानक ने की जनवलकुमार जारती के प्रकार पर सोक प्रस्तान पारित हुमा, ईपर से प्राचेना की नई कि विनयन सारमा को सामित तथा स्वोक सन्तरमा परिवार को पैर्य प्रवान करें। पुरुविन सार्थावाको

सत्य क्वा है ? (पुष्ठ २ का थेव)

प्रमुख." वहां वह भी तो कहता है कि श्वास्त्रम् विद्यम् नापि गरी नवति किरियमी ' सर्वात किसी के पुछने पर क्सका उत्तर न देने वाला और या उसटी बाह्य बोजने वःसा मनुष्य पाप का मानी हीता है। ती क्या ऐसे मौके पर दीनों थापी से बचने के लिए अपने प्रास्ती की र्शकट में बालकर यूद करने के किए तैयार श्री भाए।

पुराक्ष में एक कवा बाती है विसमे एक सत्यवादी मुनि हारिद्रुत गीतम के

दांतों की हर बीमारी का घरेलू इलाज

T : T | T

लींग युक्त

23 जड़ी बुटियाँ से निर्मित

आयर्वेदिक और्वारी

टातें का शक्टर

क्षा मध

अम नदी पैकिय में उपलब्ध

वर में कुछ बाकृ एक वर्गात्या पुरुव का पीसा करते हुए बाते हैं। सत्ववादी जुनि को मासूय है कि वह वर्यात्मा जवल की किस साड़ी में खिपा है। डाक्ती के पूछने पर पहले तो वह मूनि मौन भारता करके डाकुओं को नहीं बताता पर डाकुओं के उसकी प्रश्रसा करने पर कि भाग तो सवा सत्य बोसते हैं सत्य को कभी नही फिपाते तो वह सत्यवादी प्रश्नसा में पूमकर उसके श्चिपने का पता बता देता है। परिचाम स्वरूप वे डाकू उसे पकडकर मार देते हैं। पुरास्त वे किसा है कि इसी पाप के कारख उस सत्यवादी मृति को कुछ समय नरक मे रहना पदा।

बास्तव ने सरव घीर धतस्य की पह-बाग करना, सामारख काम नहीं है। बहत टेडी सीर है। सोकमान्य बास बमा-वर तिसक ने अपने अपूर्व ग्रम्थ नीता-रहस्य' में इसका वड विस्तार से विवेचन किया है। इसमे करा जी अल्युक्ति नही है कि नास्ति सत्यसमी वर्म न सत्वा-ब्रिषके परम् । नहि सीवतर किंपिबन्ता

'साच बरोबर सप नहीं ऋठ बरोबर पाप

तुलसी का यह तथन सोलह धाने सत्य है कि धरम का रास्ता मुश्किल छुरी की तेज बारा है। 'जिस प्रकार सीने के कोटे या चरे की जाच करना कठिन है। कसौटी परवर ही उसकी जान कर सकता है। वैसे ही वेदादि सत्य प्रयो का प्रध्ययन तवा भूम बारला बनाने पर ही इस दुरुह कार्य को बासान करने ने बहु सहायक हो सकती है। इसीसिए गायत्री मनत्र मे बुद्धि के लिए याचना की यई है।

H ३११ न्यू राजेन्द्र नगर विकासी ६०

विष्ठ विषये ॥ "

लिपयाना में त्रार्ययुवक सभा की स्थापना

बार्यसमाच बग्न मगर लुचिवामा थे बान एक विशेष कार्यक्रम बायोजित किया यवा जिसमें यज्ञ के पश्चात् वेद प्रचार भवन मण्डली ने प्रमुभनित एक देखभक्ति के गीवो द्वारा खार्यंचनी की मनत्र-मुख्य कर दिया । इसके पश्चात् सार्य पुषक सभा पवाब ने सबोजक श्री रोशन लास धर्मा ने विज्ञान सौर धर्म के सम्बन्ध में बोसते हुए बताया कि विज्ञान और वर्स मे कोई बिरोध नहीं है बल्कि वे एक दूसरे के पुरक हैं। उन्होंने कहा कि बाज के नव-यवक भौतिक ऐक्वयों में भटक रहे हैं। जिससे उनकी बार्मिक, राष्ट्र एवं समाज देवा के कार्यों में रुचि कम होती जा रही है। भी सर्गा जी ने यूवकों से अनुरोध किया कि वे रचनात्मक कार्यों में अधिक से प्रविक समय सवाए।

इस सुधानसर पर शायनुवक सभा की इकाई का गठन किया गया तथा श्री यश जी बार्य को इसका संबोधक बनाया नवा तथा उन्हें समिकार दिए वर कि युवको को समा के सदस्य बनायें तथा सगठन को मजबत करें। बार्यनमास धर नगर के प्रधान भी कपिला जी ने देव प्रचार भवन गण्डली तथा सार्वनयमुक्तों को उनके कार्यक्रमों के सिए बचाई दी तबा समाख की कीर से १०० र० मजन मण्डली को इनाम दिया। सभी शार्थ बाइयो तचा ६हनो को भी सत्यवास जी अञ्चल, मन्त्री की और से मञ्जीय जित-रित किया नया । जस्त्रोष एव शान्तिपाठ के साथ कार्यवाही समाप्त हुई।



नगर आर्यसमाज साहबगज की साबारण समा की बैठक श्री देवीलाल बार्य प्रचान की बध्वशता मे नियाबाचार स्थित रमेश प्रसाद बृप्त की दुकान पर वार्षिक निर्वाचन हेतु सम्बन्न हुई जिसमें निम्नसिवित पदाविकारी एवं चन्तरव सदस्य निर्वाचित हुए।

(निम्त्रसिखित प्रवाधिकारियों के नाम)

- १ श्री देवीसाल धार्य ,, किश्चन प्रसाद वर्मा उपप्रचान
- ,, सगवान देवी झामा
- (महामन्त्री) रमेश प्रसाद ब्प्त (च रमबी)

सबीर भाटिया उपसमीजक, बार्ययुक्क समा प्रवास

- १० श्री मधोदानन्द केशरवानी कोषाध्यक्ष
- ११ नन्दरानी गोयल सञ्चा०कोषाध्यक्ष १२ शुनारवती मार्वा (प्रचारमध्त्री)
- १३ ,, ठाकुर देवी १४ विकायती सार्घा (यज्ञकासा-
- व्यवस्थापक) १४ ,, पारसनाव गुप्त (पुस्तकाच्यक्ष)
- १६ , बन्दरजीत वरनवास (बाय व्यय निरीक्षक)
- १७ बादित्य प्रसाद भी (प्रतिनिधि न्याय समा)
- १८ , ब्लवस्ती भार्या
- १६ , चन्पादेवी बार्या २०, ए० द्विजराज शर्माणी
- (बमधिकारी एव पुरोहित) इसके प्रतिरिक्त घन्तरन समा के लिए ग्यारह व्यक्तियों का गठन किया

निवेदक रमेश प्रसाद बृप्त (सहासम्बी) नवर बार्यस्वाच गोरखपुर



मार्थ नगत की शान २०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन

नेत्र चिकित्सालय

(बनुमानित लागत दो करोड रुपये) के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि ग्रायक्त ग्रीविनियम जी० ८० के ग्रतगैत कर मुक्त होगी।

सारा शन चैक/नगैकार्बर/वक कृष्ट द्वारा मधी, माता चन्ननदेवी प्राय धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय, बी-१ जनकपुरी, नई-दिख्ली-४८ के पते पर भेजा जाए। दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की झिला पर अकित किए जाएगे।

निवेदक

राक्योपाल सालावाले पुत्रवेष महासाव वापपाल स्रोत्प्रकास ताव संरक्षक विकित्तालय प्रचान विल्ली प्रचान वाण्या एवं प्रचान वाण्याण आस्य प्रतिनिधि साव वेण्यीय सहस्वय पुलीनाल प्रसिक्त वाणा संबा स्वर्ण वेर्षिण इ

तीबन्य से महासियां दो हुट्टी प्रा० लिमिटेड १/४४ कीतिनगर, बीसोविक क्षेत्र, नई दिल्ली-११००१

केवल ५० रूपये में तीन वर्ष तक हर सप्ताह पद्धते रहिए

- क्या ग्राप ऋषि मुनि तपस्वी, वोगिवों को श्रमृत बार्गी प्रकार बाहते हैं?
- क्या चाप बेद के पविस्न शान को सरल एवं मधुर सक्दों में जानका बाहते हैं?
- क्या भाग उपनिषद गोता रामायस साह्यसम्बद्ध का भाष्यारिमक सन्देख स्वय सुनना भीर भ्रपने परिवार को सुनाना बाहते हैं?
- क्या प्राप प्रपने घूरवीर एक महापुरुचों की सीर्थ गावाएँ जानना चाहेवे ?
- क्या भ्राप महर्षि दयानन्द की बैचारिक क्रास्ति से भ्रारमचेतक वायुत करना चाहते हैं ?

यदि ही तो झाइये झार्यसम्बेख परिचाप में खामिल हो आइए। केवल ४० रुपये में तीन वर्ष तक हर सप्पाह पबते रहिए। साथ हीं वर्ष में चार क्रमुपन मध्य विवेधाक की प्राप्त कीजिए।

एक वष केवल २० रुपये आबीवन १०० रुपये।

प्राप्ति स्वान---

आर्येसन्देश साप्ताहिक १५ हनुमान रोड नई विल्ली-११०००१

उत्तम स्वास्थ्य के लिए गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

थासा कार्यासय—६३, यसी राजा केंद्रारनाय, फोन : २६८०३० जानडी वासार, विल्ली-६





सर्व एक प्रति ४० पैसे

वर्ष क्षेत्रक २४

रविवार, ४ वर्ड, १८८४

धार्वे सक्तार १३६०५३३०५५

वैशास २०४२

दबामन्दाल्रे≃्र ६३

आर्यसमाज दोवानहाल का शताब्दो समारो

वेद-प्रचार, ग्राम-प्रचार (ग्रामोत्थान) तथा गौ-संवर्धन एवं मन्दिर निर्माण के लिए

इक्कोस लाख रुपये की अपील

ग्रार्यसमाज दीवान हाल की क्तरग समा ने निश्चय किया है कि भागामी दिसम्बर १६८५ मे नार्व समाज की जतास्त्री सनाई जाये।

वेद प्रचार, प्राम प्रचार ग्रामो-त्थान तथा गो सवर्षन केन्द्र की सहा यता के लिए १ लाव रुपये की तीन स्थिरनिधिया स्वापित की जाए।

इस अवसर पर एक विशाल-समारोह का बायोजन किया जावेगा।

धार्यसमाज दीवानहाल के मन्त्री श्री मूलचन्द गुप्त ने एक घोषणा मे कहा-शताब्दी स्मारोह की तैयारी जोर शोर से प्रारम्भ हो चुकी है। इस भवसर पर कुछ भन्य योजनाए इस प्रकार हैं।

- 🛘 मार्यसमाज दीवान हाल के विगत एक सौ वर्ष का इतिहास प्रकाशन
- नैतिक शिक्षा के लिए विद्यालयो मे विशेष प्रचार योजना
- सामाजिक क्रीति दहेज उन्मूलन यवको एव युवतियो से मादक

द्रव्यों के बढते हुए प्रयोग के साहित्य प्रचार से रोकना

 वैदिक पार्ष साहित्य प्रकाशन इस समाज तथा राष्ट्रहिन के पुनीन कार्य के साफल्य के लिए श्री गुप्त जी ने प्रार्थ भद्र पृष्वो से तन मन चन में सहयोग करने की भी प्रणील की है।

दक्षिण अफ्रोका नैटाल में

१४, १४, १६ दिसम्बर १६८४ को आर्यं सम्मेलन की तैयारी

दिल्ली सार्वदेशिक मार्थं प्रति-निधि समा के कार्यालय से प्रसारित एक सुचना के अनुसार दिनाक १४ से १६ दिसम्बर १८=५ को नैटाल दक्षिए। श्रमीका मे अन्तर्राष्ट्रीय सार्य महासम्मेलन की घोषणा की गई है। इस् प्रकार पर वैदिक सार्वजीम एव गोष्ठियो का प्रायोजन किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त

बिश्व के विभिन्न देशों में रहने वाले हिन्दुओं के साथ सास्कृतिक एव वार्मिक सम्बन्धों को प्रगाद करने की योजनामी पर वहा विचार किया जायेगा । सार्वदेशिक समा इस धायोजन ने धपना विशेष सहयोग देकर विश्व के भायों के सम्मूल एक ता के महान विद्वानों के विचार ठोस सक्रिय एवं ब्यावहारिक योजना रखेगी।

राष्ट निर्माण में आयंसमाज का महत्त्वपूर्ण योगदान -श्री शालवाले

विक्षाम् दिल्ली वेदप्रचार मण्डल का वाधिकारसर्वे आर्यसमाज बार० के॰ पूरम संकटर ३ में सम्पन्न हुआ। पुष अवसर पर ला० रामगोपाल बालवाले, भी ब्रह्मदत्त स्नातक, मी सूर्वदेव, झावार्व देवेश, श्री नौ प्रियक्त साथार्थ मनुदेव सास्त्री बादि बार्व मेता एवं विद्वार्गी ने बत-मान सम्बन्धि बार्यसमाज के वासित्व पर प्रकृति काला । वह माला राम-

गोपाल सालवाले ने कहा -राष्ट्र के निर्माण में सदा से ग्रायसमाज का महत्त्वपूर्णं बोगदान रहा है। चाहे वह स्वतन्त्रता समाम हो, अथवा दलिनोबार नारी उत्थान. या समाज सुधार। भाजःभी राष्ट्रीय एकता व ग्रह्मकता की रखा के लिए धार्य-समाज पूरी बनित के साथ जुटा हुमा है। कार्यक्रम के परवात् प्रीतिभीव का धारीभनं किया गया ।

नये सवेरे की तलाश

आका भी नया सवेरा नव जीवन देगा खड केतन सब के मन का प्रपतापन देना। भूडे पेटों को रोटी के दो टूक ग्रार नने झनाच तन को दो हाथ कफन देना।

> पर भाशा के विपरीत मीत ये प्रात हुआ। मां के सीने पर मावला वज्रपात हुआ । बरतीकी दिल्य विमूनि गुन्य में सीन हुई दुर्भाव देश की माशा पर मामात हुआ।

इन्सान दरिन्दी के हाथो मारा जाये रूपाण पारणा क हाण गारी आय इतने पर भी हिंछा का पुत्रकारा आय । डिंडाबीक्स्ड जयानक ये उचियारा है को द्वार द्वार मचियारों के द्वारा आय ।

> कैसा है यह सकम्प धरे । कैसा प्रज है ? मा मून गरीचिका सा मिच्या ग्राकवरा है। क्षता की श्लीना ऋपटी में ये हत्याएँ सब महाकास के ताय्य को धामन्त्रहा है।

सीमाधी पर सका के गदन महराते काले विश्वार अपने वर में आते जाते। हिंसा प्रतिहिंसा दुष्टबाद उद्दण्डवाद बदते बाते विद्वासपात शातकवाद,

अवजीत सम्मताएँ निवेदन लजाती है चलते चलते बूढी च्हुतुएँ वक जाती हैं। ऐसा बीजत्स विनाख देखकर घरती पर सूरव की किरचें साने ये सकुवाती हैं।

वरि अवकार से बचना है तो-याद रखी, शामक हामक के सच्य न नेद विवाद रसो । इस क्लिक्सों को स्रोतम में न वनपने दो, सवाद्यों में निर्माणों का प्रमुवाद रसी ।

> - कवि ऋषता बी-- ११ जवनपुरा विल्ली-

सत्संग वाटिका

व्याक्या यह मन्त्र महर्षि स्वामी दयानन्द ने सन्ध्या म पुन जोडा है। उपस्थान का सर्वप्रथम मनत्र संस्कार-विधि में उन्होंने इसे ही बनाया है। वास्तव में इस मन्त्र को छोडने से सन्ध्या भपूर्णं हो रह बाती।

इस मे प्रथम ईव्वर को जातवेदस् भीर भन्त में भन्ति से सम्बोधित किया है। तीसरे मन्त्र मे पुन 'जातवेदस् माया है-"चहु स्य जातवेदस देव वहन्ति केतव । इशे विश्वाय सूर्यम् । सन्त्र से श्रीम शब्द का प्रयोग मनसा परिक्रमा के प्रवास सन्त्र से प्रावी विम् अस्ति-रविपति तथा उपस्थान के दूसरे मन्द्रम भी चित्र न्वानः मुदयदनीक च वृक्तित्रस्य वरुणस्याग्ने । यन्त्र म -

जातवदम - का धर्म हमा जाते जाते वेद जातवेदः यानी जा उत्पन्न मात्र वस्तुको जाननाहा। सब मे वनमान प्रनम्त ज्ञान और धनन्त धन वालातवावेद वाएग जिसे भनी प्रकार म बताती है। इत्यादि सनेक सब 'जात वेदस के बनते हैं।

जब हम देवद को खर्जन क्यापक सन कुछ जानने वासा भीर हुन पर नवर रखने वाला जान लेते हैं तो हम सब पाप एव बुराध्यो से बनकर पूर्ण विश्विन्त हो बाते हैं।

जैसाहम देखते हैं सन्त्याके धन्य मन्त्रों में भी यही भाव प्रवानता से व्यक्त क्या गया है। जैने---

गन्नो देवीरभिष्टये बापो भवन्तु पीतये। श्रयोरिभ अवन्तुनः। मन्त्रका पाठ सस्कारविधि की सन्दर्भ मे चार बार हमा है। इस मे भी ईव्वर हो खर्ब-व्यापक बताया है।

पुन स बहा पुनातु सर्वत्र मे भी डेव्वर को झाकाश्चवत् सर्वत्र व्यापक माना है।

पुन धवमर्पेश मन्त्र में तो ईश्वर की सृष्टि रचनाका विकान, सब को बध में नियम में रखने की बातें बादि तो हैं ही उन के कार्य पूर्ण शास्त्रत एव अटि बहित होते ही हैं। मादि।

पून मनबा परिक्रमाने को अन्हो दिशाबी में ईश्वर की व्यापकता को खनू-भव िया नवाहै। हर धीर उन के शामध्ये बोषक विश्वित्व नाम आये ही है। विष्युका धर्व ही सर्वत्र व्यापक र्दश्वर है ही। उपस्थान के दूखरे, क्रीसरे भीर चीचे मन्त्र में हम 'सूर्व' नास के परमेश्वर को द्वारामते हैं। सूर्व वानि परापर का कृत्या पश्चेत्रकर । तय की

वेद में परमेश्वर को सर्वस्व समर्पण रहस्य

विन्देश्वरी सिह

जानवेदमे सुनवाम सोमम् श्ररातीयतो निदहाति वेद । स न पर्षदिति दुर्गीए। विश्वा नावेव मिन्धूम दुरितात्यग्नि ॥

धासस्कारी, पूर्व निकाप, बन ही निवयमे रक्षते बाका आस्त्राका भी

बन्तिय मन्त्र — 'तज्यकुर्वेनहित पुरम्ताच्युक्रमुच्यरत् । पश्येम में भी परमेश्वर को सर्वडक चेतव (बस्रा) तया मुच्टिके पूर्व, कश्चात् और मध्य में सत्य स्वरूप से विश्वमान रहने वाला (प्रस्तात) सब का करने वाचा (उच्चरत्) के रूप में स्मरता किया गया है। तथा प्रसिद्ध गायत्री मन्द्र एवस् ब्रोस् न म मे तो परमेश्वर को सर्वत व्यापक सुष्टिकर्तादि माना ही है।

माधी।

बब ईश्वर को अपनी एक-एक वेध्या को जानने बाला समझ गए तो फिर हम पाप करने की कलाना भी कैसे कर सकते हैं[?] फिर सब बुराइयो से बचकर हम सम्पूर्ण पञ्चाश्यों से युक्त हो काते हैं।

नद में सन्यत्र भी ईस्वर की सर्व-व्यापकताका उपवेश प्रकुर मात्रामे किया नया है। प्रसिद्ध ईशाबान्बोपनिवर् चो किय बुर्वेद का ही चलीस**व**ा श्रष्ट्याय है, का प्रथम मन्त्र ईश्वर की सर्वश्याप-कताकी घोषणा करता है। इसावा-स्वमिव सर्वम् यतिकञ्च अवत्या अवत्। तेन त्यक्तेन गुल्बीका मानुक क-य स्विद्धतम्। वे नी इस ससार वे वो कुछ भी जगत् है सम परनेश्वर से भाज्छादित है, का ही वर्णन है। यत यहा परनेश्वर त्यान पूर्वक भोगी की भोनने का उपवेख वे रहे है। किसी की भी वस्तु मात्र की बरामी इच्छा (अध्यम) बत कर, का विव्य सबेश दे रहे हैं।

इसी प्रकार से "स पर्यगाञ्छक्रम कायम् " " "परीस्य मूतानि परीत्य लोकान्, परीत्य सर्वा प्रदिको

'तद् विष्कृते परम पद सदा प वन्ति सरवः

'त नो बम्धुर्जनिता, सः विवाता, जामानि वेद भूवनानि विश्वा

इत्यादि बैकडो मन्त्रों में परमेश्वर की व्यापकता का उपदेश है।"

इस प्रकार धनन्त आन, जनन्त बन, सनन्त्र सामक्ष्यं केव के क्षारा कृषित वरमे-स्वयं जो अञ्चलिस हवल्या सुत्र करने, रक्षा करने में पूर्ण समर्थ है, को सर्वत्र गोपूर कानकर हम विजंब, निरक्क, मार्ग में सफलता की कुञ्जी यही है। साम ही योग दर्शन के साथववाद में प्रथम सूत्र में ही--तप स्वाध्यायेक्बर-प्रशिवानानि किमाबीकः ॥१॥ में सर्वस्य सप्रेम ईएवराएँ म करने को क्रिया से निमा है। तथा इसरे सूत्र में इस का उहेश्य--"समाधिजाननार्यं क्लेशतनकरका-बंध्य" ॥२॥

इस के सम्बद्ध बनुष्ठान वे समाचि-सिद्धि करता है और श्रविधादि पांचीं क्लेशो को उत्तरोत्तर सुक्षम करता बसमा है।

शासक्ति लोश योह मोक ईंघ्या-द्वेष, विषय तृष्णादि बुराइयो से वह बचता जाता है। परमेश्वर की धरीय क्रमा से वह व्यवहार और परमार्थ में भी पूर्ण समर्थ हो जाता है। ईश्वर की इपा भीर सहाय से ज्या नहीं हो सकता ?

इते नियम ने भी विना है विश्व का फल बर्गुडि क्षत्र और ज्ञान दीप्ति बकाया है। इस से बोग के विच्नादि जी दूर होते हैं।

बत पूर्ण प्रेम मावना से सर्वस्य ईश्वरापंज करने का विका सदेश बहाँ है। जिस से ईश्वर हम पर इत्या करके हमें मोक्स समावे । जैसाकि यज्० ४०। मन्त्र "बोश्म् हिरण्यमयेन पानेश् सर्य-स्वापिद्वित मुक्तम् । मोऽसावादित्ये पुरुष सोऽसायहम् । सो३म् व प्रह्मा ।" ने जी परमेश्वर को सर्वत्र व्यापकादि माना है। इस के भावार्थ में देव दवानन्य की निसते हैं "वो मेसी वारण को श्रीति और सत्यावरण के भावों से प्राप्त होता है, तो मैं क्य की शन्तवंत्री क्य के व्यविद्या को क्ट करके उस की आत्मा को प्रका-बित करके उस के गुसु कर्म-न्त्रमान शुच बनाकर, सस्य के स्वक्य का साचरख श्यापित कर बोक्च शुद्ध निशान देकेंद्रै सब पुर्वी के जुड़ाकर नोक्ष सुक्ष की त्रवान करता हू ।''

"बरातीयतो तक के बाद विदहाति वेद " भाग याता 🕻 । विस में दिवर से "बराती पूर्वा, वापी दुराचारियों के वन ऐस्क्यांबि के निस्य बहुन की प्रार्थना है। जिस से सह हमारा पुछ भी मुकसाच व कर केर्फेट " वह हमेशा हमारे बाबीन रहें।" कार्य की बार्चना है। यही भाष बनता परिक्रमा के सहीं जन्त्रों में हर बार सामा है। 'रश्चित्रम्यो नम इबुध्यो नम एम्बोऽस्तु। बोडस्मान् हेप्टि य वय हिप्मस्त बो बुक्से कम 1" का सर्व करते हुए ऋषिवर देव दवानन्य सिखते हैं-- को परमेस्वर के सर्वधिकारवादि युक्त एवम् इत के रवे हए बदावें हुनारी रक्षा करने वासे और क्रिक्स को बाजों के समान पीकृत केने बासे हैं, जन को हजास वयस्कार ही। बांड्य के हेफ करते हैं और विश्व कुछ वारियों वे इब देव अपने हैं जाई विश्राप के तथा से मुद्दे के अव्याग कक करते हैं। क्रांदि ।

(Be Lee 7 42)

सकते है।

उसी परमेक्बर को हम 'सुनवाब सीमम् जितने प्रपत्ने सर्वोत्तम पदार्थ है, वह सभी सर्मायत कर देते हैं। परमेक्वर के लिए ही सर्वस्य श्रमपंज करने की वैक समाह इस नश्त्र में है।

बबुवेंद के ही 'धार्बुबजेद करूप-ताम् योतम् वज्ञेन कल्पताम्, वाक् वज्ञेन कल्पतान्, नवी कानेन कल्पतान् बारवा वज्ञेन कराताम् यज्ञो वज्ञन कल्पताम्, स्वर देवागम्य प्रजापते प्रजासमूम**** इत्यादि मन्त्रों में तथा बेद में बान्यस भी ईश्वर के लिए सर्वस्य समर्पेश की नेक सबाह दी गई है।

जब सब चीव हम परमेश्वर के निए (संवर्षण) (ईश्वर प्रभिषान) प्रारा बारमा श्रीर मन के प्रेम माब से बारमादि सरपड़की का कर देते हैं तब हम जिल्ला मुक्त होकर फनाखनित से रहित होकर कमें की व वे उत्तरते हैं।

बजुर्वेद के चालीसर्वे प्रच्याय-ईसाबास्बोपनिषद्) के तूसरे बन्त्र में भी "कुर्वलेवेह कर्माण विकी-विवेत् कृत समा । एव त्वयि नान्यवेती-ऽस्तिन कर्म लिप्यते नरे।" मे मी "प्रनासक्ति भाव से करने योग्य कर्म को करते हुए ही हम कर्मासक्ति (बन्यन ते मुक्त रह सकते हैं।" यही बताया है।

फिर हमे बसफसता कभी दुसी कर ही वही तक्ती है।

बोगदर्शन मे भी बाया है-- "समावि-विद्विशेशकरप्रसिधानात्। " सब चीव ईक्बर को प्रयंश करने पर हम समाधि को प्रयता से बिड कर ही लडे है।

'ग्रम्यासर्वेशस्या तन्नि-रोझ।" जिन को इकाइ करने वें सम्बाह धीर वैराश्य प्रतस सामन कहे हैं। धारमास में भी हम बिना वैरान्त के कैसे सम सकते हैं। बत बीव बाबन वें करपास एवं बोस के नावें में वैशाय ही एकनाम प्रवस्ताम साथन होता है।

क्वोर्टिक क्षेत्रम् (कार्ज़ाः, व्याम ग्रीर सवापि) निर्मीत समापि तम विद्रियंत fit in tweit et er werte tige drimten mich femnie welch jet gegent imme uber

ŧ

🖈 वचन-सन्देश 🛊

आर्य कौन हैं ?

जो शान्त वेर को उजागर नही करता, गर्व नही करता, हीन भावना से प्रसित नही होता, मैं सकट मे हू, ऐसा सोचकर म्रजुचित कार्य नहो करता, श्रष्ट ग्राचरण वाला ही ग्रायं कह-स्नाता है। 'महाभारत

सत्पुरुषो की वाणी

सत्पुरुपो की उत्तम वास्तो दूसरो को जगाने के लिए,स्या-सत्य के बिवेक के लिए, लोक कल्यासा के लिए, जगत् म शान्ति के लिए भौर जीवन में वास्तविक तत्त्व के उपदेश के लिए प्रवृत्त हुमा करती है। "जानासँव"

बडे आदमी

ससार को ऐसे व्यक्तियों की ब्रावश्यकना है, जो धन के लिए अपनी धात्मा का घृिएत सौदा नहीं करते जिनके रोम-रोम में ईमानदारी हो जो सत्य प्रकट करने में बड़ी से बड़ी धाक्ति के सामने नहीं कुकते, किन कार्यों को देलकर हिचकते नहीं जो अपने नाम का ढिढ़ोरा न पीटकर साहसी कार्य करते जाते हैं। मेरी हिन्द में बही बड़े धादमी है। — स्वेट मार्डन

जिसने अपने स्वरूप को नही जान लिया है वह परमात्मा को नही जान सकता। इसलिए परमपुरुष परमात्मा को जानने के लिए पहले अपने को ही निश्चय पूर्वक जानना चाहिए।

' जानागीव '

सम्पादकीय

आरक्षण विरोधी आन्दोलन में जलता गुजरात

अुषरात से दिन प्रतिदिन धारक्षण विरोधी धान्दोलन हिसक होता जा रहा है। गुषरात सरकार ने जब कि म्रितिरिस्त धारक्षण के निर्शंख पर धमल रोक दिया है भीर हाईकोर्ट ने खात्रों को भरना धान्दोलन समाप्त कर देने के लिए कहा है। इस धान्दोलन ने पहले साम्प्रदायिक मोड लिया तो भव जाति युद्ध ने परिवर्तित होना जा रहा है। हिसा की भाग फलती जा रही है भीर मानवता कराह रही है। हिसा की धम्प्रदाय के नाम पर हो या जाति के नाम पर उसे उचित नही ठह रावा जा सकता। भान्दोलनकारियों का कहना है, 'यह मान्दोलन योग्यताबाद भीर कुशलता प्राप्त करने के भिकार की रक्षा के लिए म्रान्तिम लडाई है। उनके भनुसार भारक्षण से सामाजिक भीर संझ-एएक तौर पर पिख्ड वर्गों का अभर उठाने भीर उन्हें मध्यम वर्ग की मुख्यादार के साथ एकाकार करने का दिखान्त बेत्का है।

क्षात्रों ने इस मोर सरकार का ज्यान बाकुट किया और इसके बाद करी फारवर्ड पक्षीत वापिस ने लो गयो। लेकिन खात उच्च डियो में बायता प्रावस्थक का भाग को लेकर प्रड रहे।

गुषरात की जनमध्या पौने तीन करोड है जिनमें २८ लाल ४० हजार हारजन, ३६ लाज जनवासा है। खोटे प्रामी से बसे हरिजन १२ प्रतिशत खेनों के काम में जुड हैं। महानगर और नगरों में ३ लाख ४० हजार हरिजनों से से कुछ मारआए। प्यतिक का लाख उठा पासे हैं।

१६८१ में गुजरात सरकार द्वारा नियुक्त बक्शी आयोग की रपट के भतर्गत ४२ पिछडी जातियों के लिए ४ प्रतिशत भारक्षण स्वीकार किया था। इसके बाद फिर धान्दोलन चला भीर हिसा होतो रही। छात्र नैतिकता को छोड उद्दण्ड होते रहे। छात्रो के बग ने माग की. सभी छात्रों को परीक्षामों में उत्तीर्ण किया जाये। विश्वविद्यालय ने परीक्तान लेने की माग स्वीकार कर ली। बाद मे उच्च न्टायालय मे मामला दायर किया गया । न्यायालय ने प्राने निर्हाय मे बिना परीक्षा उत्तीर्ण करने की कडी झालीचना का। इसके बाद सरकार ने नया भायोग जिसमे न्यायमूर्ति श्री राण के भलावा तीन मदस्य और थे नियुक्त निया। इस प्रायोग को सिफारिश पर गुजरात सरकार ने उच्च शिक्षा के सभी स्तरो पर धारक्षण की सीटो में ४६ प्रनिशत बढोत्तरी का निर्एय ले लिया। इसी कारण फिर ग्राम का की। एक के बाद एक अनेक मोड इस झान्दोलन मे बाते रहे हिसा का नगा नाच चलता रहा। इसी बीच पुलिस भी निरकुश हुई। कुछ ग्रसामाजिक तत्त्वी की भी खुला खेलने का भवसर मिला कानून व्यवस्था के परखचे उडते रहे। छात्रो का उद्दण्ड होना और राज्य मरकार का उपेक्षित व्यवहार दोनो ही निदनीय हैं। बादोलन से समस्या का हल तो नही निकत सकता किन्तु हमारे गष्ट्र के कर्मधारों को बुद्धिजीवियों के विचार इस विषय मे लेने चाहिए। इस विषय को वैचारिक बहम का विषय तो बनाया जाना चाहिए किन्तु भान्दोलन भीर हिंसाका नही। महादेवी वर्माने दू सी होकर कहा है ' शास्याहीन छात्रों के सामने कोई स्वप्त नहीं है ' इसके साथ यह भी दु ख का विषय है कि कुछ तथाकथित राजनेता भी लोकेषणा के लोभ में ऐसे झान्दोलनो की पीठ थपथपाने लगते हैं।

सरकार को जनमत का घ्यान रखकर शीझ उचित कदम उठाने चाहिए अन्यया देश की सुहद दीवारे हिलने लगगी।

योग्यता भीर कुशलता को प्रश्नय देना वास्तव में राष्ट्र के हित में हैं। बाति या वर्ण की दीवार भारक्षण के नाम पर लड़ी करना भी उचित नहीं हैं। वैदिक वर्ण व्यवस्था ही इसका एकशात्र उचित समाचान है। जिसमें नोई जैंचा नीवा नहीं। जो जिस काय के योग्य है उसे बही कार्य दिया जाये। भच्छा हो महींद स्वानन्द द्वारा प्रति-पादित वर्ण व्यवस्था पर हमारे राजनेता भीर बुढिजीबी वर्ग विचार कर जिससे मनिष्य में इस तरह के प्रश्न ही न उठे।

—यशपाल सुषांशु

हर जनह मीजूद है पर पह नकर प्राता नहीं। योग साधन के विना कोई उसे पाता नहीं।

श्रायसमाज क उत्सव पर प्राय सभी भजनोपदेशको म भ्रपन विचार व्यक्त करने से पुत्र मैं यह पश वान्य सुनकर बन्धान मे यह सोचता था कि वह य ग साधन क्या है[?] जो र्वत्र को साक्षान् देखने का अव सर प्राप्त कर सक। मन मे जिजामा बढती निराधार बुद्धि धौर बन का प्रपच्यव किया चली गई भीर पूज्य स्वामः म्नीस्वरा नाद की महाराज त्रिवदशीय के सामने श्रपना प्रदन उपस्थित किया त उहीने कहा कि अभी वालक हो वह विषय आपकी ममभा मे नहीं धायेगा। सभी प्रारम्भ मे सच्या करो व प्राप्तः मेरे पास ग्राया करो। नियमित रूप में निनवर्ग प्र रूम की नीचानि के परचातु योगासन स्त न सच्या धौर स्वाच्याय स्वामी जी करान सर्गे। बोल यही योग साधन का प्रश्नम पाठ है। श्रदा भीर लगन से मैं दैनिक श्रम्यास से लग नया । यागी तपस्वी पुज्य स्वामी भोमान न जी सरस्वती के नगन हुए। बहुत प्रभावमेरे नत्य र हुआ। पुरा गानी है यह घरणा करके संव से लग गया तो प्राण याम भीर ब्रह्मचय पर उप देण दिया। तब म जंबर धाजतक उसा प्रतासीर नयम के पश्चन कर रहा हु। मैंन ग्रागे भी योग सम्बाधी साहित्य पटा भीर तत्नुसार धम्यास करते कन्ते एक दिन सच्या के धादर विचित्र सनुभृति सौर प्रसानताहुई भीर मुक्ते महर्षि दयानन्द जी महाराज पर थगाच सदा हो गई कि स्वामी की मनराज ने हमारे ऊपर किलमा बढा पकार किया है? व्यवर प्राप्त कत केलिए साम नसाज से कितना पासण्ड भीर सम्प्रदायवान पर

स्वामी दयानन्द सरस्वती की आध्यात्मिक जगत् को देन

माचार्यं धर्मपाल विद्याभाग्नर एम० ए० प्राचाय--गुरुकुन महाविद्यासय तत रपुर

जा रहा है। मैंने बड-बडे त्यामी साथ महात्मा विद्वान् जो भी समा कि यह ईश्वर विषय जानता होना पूछा कि कुछ ईक्वरानुमृति हुई ? उत्तर सभी के नका रात्मक ही मिले और विषयान्तर हो नये। बार्य विद्वानो बीर महात्माओं से भी चिर्वाकी तो कुछ पुस्तकाय ज्ञान के घठि रिक्त साधना धनुभूति बादि से सबया धनाएक उत्तर मिला तो विस्मय होता है कि शार्डमात्र विश्वमे आयसमाजी ही ईंग्वर को प्राप्त कर सकते हैं और वे इसस सबया शनभिज है तो फिर काई भी सम्पन्धयादी कैस प्रप्त कर सकता है ? बुद्ध लोग क्या स्वयम् ब्रायसमाजा श्री यही कहते हैं कि सच्या मे मन नदी लगता । ईश्वरीपासना म त्र मन्त्रीच्यारण करके ६ मिनट में अपना कलस्य पूरा करके समऋते हैं कि श्रव हम पूरे र्वदवर नक्त हो गए हैं एक जन्म नही शत अल्बों तक भी भाग वस प्रकार सच्या करके र्दश्वर को प्राप्त नहीं कर सकते। जबकि स्वामा जी बहाराज ने कम स कम १ वणा योग प्रतिदिन त्रात करने का प्रादेश विया है। उस समय में क्या कर कर्न कई बार मात्रोच्चारण करते रहें धयवा कुछ ग्रौर विकि है। रस पर जब वि तन किया ाये तब महर्षिकी सो बना एक धन्भूत विल रक्ता का ज्ञान होता है।

महर्षिकी दन---

ब्राध्यारिमक जबल् में स्वामी जी ने एक नई काति की है जिसका प्राहमीय उनके जीवन के किसोर बय में हुआ था। मृतिपुषा से प्रशा नई बोनी एव सहात्मा सन्धासियों को पहचानकर अपनी कोन सावना की । उसके पश्चात् हमारे कल्या शाय सन्ध्या का निर्माण योव दर्शन के श्राचार पर किया। योग दलन मे बष्टान बोग को महत्त्व दिया है। यही प्रकार सध्या का निर्माण किया भीर यम नियम भासन प्राणाबाम प्रत्याहार बारला ब्यान संग वि की स्थिति तक हम सन्ध्या के माञ्चम से प च सकते हैं। उसका जीवन मे जिवात्मक रूपेण पालन किवा जाये। सन्त्या मे बैठकर प्रत्येक मन्त्र के शब्दों पर गम्भीरता से जीवन का विचार करत हुए ग्राचरण करें। समप्रयम प्राचामा करके मन को एकाप्रवित्त होने पर शिका बन्दन करते हए गावजी मन्त्र द्वारा बुद्धि का वान ईश्वर वे प्राप्त करके मैं सन्त्या क्यों नररहाडू[?] उद्देश्य सुद्ध की वृष्टि हो दुस दूर ही भीर जीवन शास हीकर कल्यासकार वर्ने। यही ने यम का पालन शर्वात् शहिसा सत्य शस्तेय श्रह्मचय ग्रपरिग्रह का पालन औं बाक बाक से

बारम्य होता है और मार्चन नन्त्र के बाब निवम का पालन प्रारम्भ होता है - सीव सन्तोष तप स्वाध्याव ईरवर प्रसिवान इनका कमस मन्त्र में बिनियोग किया है। कों तप पुनातु पादको से बासन की सिद्धि करके पूरे शरीर में अग प्रम्यन को पवित्र एव बसवान् बनाकर प्राणामाम की साधना को सू प्रास्ताबास सन्त्र से की बाती है। प्रस्याहार की साधवा सब नवसा मन्त्री के द्वारा करते हुए ईस्वरीय चिति से अभिभूत होकर जीवन के कल्पव को साफ किया जान और मनसा परिक्रमा के मन्त्री द्वारा घारता की साधना की बाती है प्रचात् कंटकर मेरे बामे पीछे बावें बार्वें नीचे उपर गरी बार है ससने मैं बिरा हुआ सुरिक्तित बैठा हु। ऐसा निश्चय करसे पर उपस्थान मात्रों के द्वारा ध्यान केन्द्रिक्ष किया जाता है। निविषय होकर सन ईवबर के ध्य न में जिल्डन में मान हो जाता हं भीर पुन समाजितक पहुचने का मान प्रशस्त हो जाता है। इसी मासना से धपने जीवन का समप्रा ईश्वर के प्रति करते हुए कामन की जाती है कि है इतिकर[ी] दशानिके सापकी कृपा से हुन शीघ्र ही घन धन कान और मोक्ष को प्राप्त करल तक शन दम श्रमिभूत होता हुआ भक्त नमस्कार मात्र हारा अपनी कुन्तरा स्थवत करता है। इस प्रकार हमे सन्दर्भ करने का निर्देश स्वामी जी महा राज ने दिया है वह सोग के साकार पर है ईक्वर भक्ति। इस प्रकार से सहकि से ईक्बर वर्गित को बोग से सम्बन्धित किया है क्वोंकि योग साथन के बिना उसे कोई पा सकता नहीं। यह एक बाज्यारिमक जगत् को देन है। हमें इसी ग्राचार से साध्या करके ईश्वर प्राप्त करन का लिए त्रवास करना चाहिए। नास्य प्रधा विश्वतेऽवेशाये । *

भारतीय त्र्राध्यातम का विज्ञान सै अट्ट सम्बन्ध

डा० ग्रर्धेन्द्र शेखर चक्रवर्ती

कलकता २६ माच वेटों धीर उपनिषदों के प्रकाश में भारत के प्राचीन ऋषि महर्षियों ने श्रव से हजारो हजार वय पहल मानवता के समग्र कस्याम हेतु को सुत्र मंटित कर दिये थे आधुनिक विज्ञान तेज रक्तार से उसी भार समसरहै। शायसमाज के प्रवतक स्वामी दयानन्द बाधूनिक कास के उन तीन सबध्य मनी वियों में प्रथम स्थान पर रखे जायेंगे जिन्होंने विष्य मानवता को उपलब्ध प्राचीननम संस्कृत वारुमय की दर मिलि पर वह कर वैदिक ईश्वरवाद भीर विनान के साथ ग्रहट सबध हापित कर दिया। दयानन्द के इस दिगा में प्रवटान के बाद योगी श्री श्रास्त्रिय क्रीर स्वामी विवेकान द की भी सेवाए स्मरण रक्षी बायनी ।' ये उदयार हैं

सुपसिख वैज्ञानिक साहा इस्टाट्यूट बाफ पृक्तिवर फिविक्स के डा॰ धर्षे-दू केसर चक्रवर्ती के जो उन्होंने तर रात्रि सहीव मीनार मैदान ने धायसमाज स्थापना दिवस के उपसक्त में बाबोजिन एक विराट जन्समा मे बोसत हुए व्यक्त

ग्रार्थं प्रतिनिधि सभा स्थाल के तत्त्वाबधान में स्वानीय श्रायसवाकों की भोर ने यह भावोजन किया नया। जिनमे विभिन्न विद्वानी ने अपने उद्बार ब्यक्त कर बायसमाज की उपलब्धियों पर प्रकाश बासा। पूर्वांचल में वेदों के प्रसिद्ध विद्वान् प्रो॰ जमानान्त जपाव्याय ने भाज राष्ट के समझ उपस्थित सकटों का विवेचन करते हुए चनता का ब्राह्मान किया कि वह बार्यसमाज से ब्रापना नासा जोड कर स्वय प्रपना तथा देश का भी भसा करना सीचे। हैदराबाद की डा॰ युनीति एम०ए०पी०एष०डी० ने बचना पुत्रक मोवित किया कि बार्यसमान कोई मत पर्ययासम्बदाय न होकरसमी मानंबीं के कल्यासा का एक सर्वांबीख ग्रान्दीलन है।

समा की शब्दकता सुप्रसिद्ध समाज सेवी श्री वजानन्द श्री सार्व ने का तथा मुरव ब्रातिब के बासन से प्रसिद्ध नजकार श्री विवस्त्रर तकर (श्रम्यादक दैनिया खुपते छुपते) ने भायसमाज के क्रतित्व की सराहुना कर उसके और अधिक सक्रियता न सवसर होने की सावश्यकता बताई । श्री पास्टरतन दस्आर्थी ने बताया कि मारत एव जारतीयता के बस्तिस्व पर बाये सतरे से उवारने की जिम्मेदारी से भी बायसमान पीले नहीं हुट सकता धीर यह कर्य हमारे बिना राजनीति में भाग क्षिये राज्य की नीतियों को प्रमाणित करने की अमता बारत किये विना प्रसम्ब है। धार्यसमाय को पाहिए कि समस्त राष्ट्रवियों के एक ऐते बांका नेप ने रीवार करने में वह पहल करे को सर्वत्रकम

बताबारी दल वे राष्ट्रीय हित में समान नायरिक कानून सपूखें रक्षा धरीय वर्गा-मारणीं पर रोक वृक्षपैठियों पर कडी नवार वैसी कुछ अत्वावदवक बादो को लाख कराने हेत् कारवर स्पाय करे।

धैन्य वनताओं में प्रमुख में स्वामी जीवानन्द श्री अर्हेन्द्रपास सार्व श्री सत्य-नारायण सर्मा एव समा प्रवान श्री 🖦 कुष्ण बमन । सचस्य धन्य बहानुमानों से श्री फूलकन्द शाय श्री विश्ववादान गुप्ता व की जीराम आर्थ के नाम उल्लेखनोध्य हैं और जिनका बायोजन को सफस दनाने में सक्तिय योनदान रहा। सार्यंतमास वका बाजार एवन् धावसमाज विक्रह सरशी नार्वसमाज सबका एव बीका-सांच के अधिकारियों के संप्रवीन का श्री फल या कि कायकन इतना प्रक्रिक सफल रहा। समाका संयोजन भी सम्माणी कर रहे ने तथा बायबाद ज्ञापम किया विकास सरणी प्रयसमात्र के मंत्री श्री रावेन्द्र वाबब्रवास ने । यत में बैदिक शान्ति पाठ धीर अस थोवी के साब समा विसर्जित gf 1 -- चा चरतम वम्भानी कार्वेकमें संबंधिकें

सार्वे प्रतिनिधि बमा प्रवास

धोश्य तत्सत्" 'सत्य स्निव सुन्यरम् ।" 'सत्य पर चीमहि ।"

कुत पवित्र सननी झतार्था, ससुन्वरा पुष्पवती च तेन । स्रवारसनित्युक्तावरेऽस्मिन्, सीन परे सद्वास्त्रिकस्य वेतः ।।

इन खब्बों के साथ, सीम्य स्थान नवदीकित नवस्मातका । मेरा स्नेह बौर सरकार तुम्हें स्वीकृत हो ।

विश्वविद्यासय गुरुहुत कागडी के प्रविकारीयस ने ६स वय दीकान्त मावस देने के लिए निमन्त्रित कर मुक्ते पादत किया है, इसके लए मैं सब का प्राणारी 🛙 । मुक्ते अपने गुस्कुको से नियेप स्तेह है, को स्वामाविक है, क्योंकि मैं भी धापकी तरह से ही, गुरुकुतों ने ब्रह्मचारी रहते gu, इस्रो कुलमूर्गम से स्नातक रूप में दीक्षित हुमा वा। मेरेमन, दुढि भीर बाचार-विचार पर गुरुकुत शिक्षा का श्रमिट प्रमाव रहा है सीर उसके हारा असार की सब तरह की भिन्न भिन्न विप-वामो, सक्टो और आधि-व्यावियो ने वे बुकरते हुए, प्रभु वे अनाथ विश्वाक रखते इप् किसी भी रूप में सवा कर्मयोगी नि -श्रीयस् मानका दश्चन करता रहा हू। जीवन बाजा में समय-समय पर बुक्कुल बन्बुयो स मिलते हुए सवा एसा बनुवार हमा है जैसे प्रपने सगे-जैसे गुर-बाइयों ने भिसने का बीजाव्य प्राप्त हुमा हो। इस मिलन में किलना स्नेह, खडा, सरसता धीर पारस्परिक विश्वास प्राप्त होता है, इसके बारे ने तो यही कहूमा—'स्वय तबन्त करलेन ग्रह्मते।

प्रपने इस कुस की धारमा का स्व-इप इसपिता श्रदेय स्वामी श्रदानन्य के व्यक्तित्व से अनुप्रास्तित था। वैदिक ज्ञान की विशुद्ध चारा, बुद-शिष्य परम्परा हारा, शिक्षा दीक्षा की सरस्वती के प्रव ह इत्य में प्रसुज्य इत्य से प्रवाहित हुई थी। नुस्तु बीच मे या नवी बहुत-सी चट्टानी रकरा वर्ष भीर मिन्न-भिन्न वारामी में बहुने सगी। मुक्य भारा कुछ विसुप्त-सी प्रतीत होती है-जब से भारत विप्सव वा विधावन की प्रवस्त्रायों ने से युवर रहा है, मनिष्य ने इस सब का निर्ण्य कुरना। इसीसे वह कहने का साहस करता है कि महर्षि स्वामन्य की वैधिक बढ़ाफिर हे किल रूप में उमरेबी बह श्रव मक्तिम का विषय हो नवा है। वर्त-मान तो पूनपूर्वरित वा पूजिस है।

वैविक बाह्नव में, "प्रतेन वीका-मानोति वीकावा वीकामानानीति विक-माना स्वाधानानीति, स्वया सरकामानते। ' इस माना का समेस हमारी तन्मूने निका का क्षाक्तार नता रहा है। सहस्मने का का क्षाक्तार नता रहा है। सहस्मने का कार्ति प्रदेश महत्व स्वाधानी मानिस वीर सार्वि प्रदेश हिल्ल सहु स्वीव हां अञ्चल, गरुकुल कौगडो विश्वविद्यालय, हरिद्वार

के दीक्षान्त समारोह पर दीक्षान्त-भाषण

द्वारा--प॰ सत्यदेव भारद्वाज वेदालकार

वही परमार्थता है विश्वसे बास्युदय धौर निश्वेयस् कामान प्रवस्त होता है। 'यो विश्वेद व एवस ।

इन विनों में ससार विशेष रूप में दो विभागों में बट बया है। दोनों का स्वरूप विश्वचपक्ष (Right Wing) ग्रीर वामक वा वास पक्ष (Left Wing) मे हैं। नि वेयस् मार्गं की तरफ सदा दक्षिणपक्षीय वाते हैं जीर क्रातिसय सीकित प्रेयमानी बामक पक्ष के हैं। ये सत् और बसत् की विचारकाराएँ हैं। एक तरफ देवीय प्रवृत्ति चमरती है भीर दूसरी तरक बाधुरी प्रवृत्ति । परिलाम वैनी सपत् का सचय बासुरी सपत् की प्राप्ति होता है। इस पर बीता के विशेष प्रवचन स्थान देने बोग्य हैं। सखार को इन दो बच्टियों ने बासानी से समभा वा सकता है। दीक्षा से दक्षिण एव का अनुसरल करना ही वैदिक बाह्मय का झावेश है। श्रेय मार्ग श्रम्युदय को समुचित रूप से स्वय ही बीच नाता हैं और इसस बर्मसिद्धि प्राप्त हो जाती 'यतोऽम्बुवयनि श्रेयससिदि यम । ' श्रद धर्मका सदाध्यान रखना **एचित है- 'बर्मो शार्यते प्रजा ।**

निराहार रहने में सोनों ने ब्रत-दीका को समक्ष सिया है। वह बारोग्य का एक साक्ष्म है। हमारी बहान् विकाएँ इससे बहुत प्राणे वढ बाती हैं। योग दर्शन मे महर्षि पतञ्जलि ने सम निवर्धों के विवेचन मे बमोको शर्वात् शहिसासत्यास्तेय-ब्रह्मचर्नापरिप्रहा यमा , एत। वातिवेश-काससमयानविष्याना सार्वजीयाः महा-वतम् , कहकर ससार को सार्वभीम महात्रत का सन्वेश दिवा है जिनसे समित ससार सुस भीर शान्तिको भासानी से प्राप्त कर सकता है। ससार को सार्वभौम महावत में दीकित किया बाना विका का सार्वभीम बीमिक धव माना है जिससे क्षिका की पूर्णता होती है। बोगिराक प्रक्रजिति के सम-नियम (Law and Order) एक साम्बल समातम आयं वर्न है। इनके प्रति निरपेक्षता तो बारमहत्या के रूप में ही समग्री जानी वाहिए। यही वैदिक वर्ग मार्ग है।

वहार के प्रवम कानुनवादा गहरि वनु के 'शबकं वर्षववस्त्रम्' एव ''धापार प्रवमो वर्षः'', 'ग हि शब्दार् परो वर्षे इत्तरके वनुवाद स्त्वपुर्वितं वार्षि वर्षम तथा विकास कर्षे वा मानव वर्षे वया ही शब्दार्थ के ''श्रेषेत्रस्ति 'स्तरः'', 'वछर्यन हुट्यक्क स्वयंवनसुकाय', वर्धवनसिहाय 'वास्तर पक्षा निश्वास प्रमाणित स्वाप्त स्वयं वास्तर पक्षा निश्वास क्षा स्वयं स्वय

भौतिक विज्ञान की उपलब्धियों स

ससार एक बहुत स्होटी इकाई दन गया है। रेडियो टैलीविजन, टैलीफोन कम्प्यू-टर ग्रावि के शाविष्कार तथा तेथ रपतार से उडने बासे हवाई बहाबों से दुनिया धन एकदेशीय है। हमारे सन निचार शब सार्वभौम रुष्टि से ही होने चाहिए। ससार को विनष्ट करने वाली प्रवृक्तियो-वडे-बढ एटम बम मिलाइस्स जबी जहाज, विषेती गैसें कीटाया वस मादि के हवि-यारो का सम्बन्ध प्राणिमाल के जीवनी से है। शावस्थकता है कि जीवनमात्र को मध्ट करने वार्को--- शासुरी प्रवृत्ति वासी के प्रति विरोध मावना बच्चपन से ही बच्चो की शिक्षाका धामन्त घगहो। इससे बहा सदाचार या वर्गसस्यापना होती है भीर नैतिकता के वसवक का प्रवर्तन होता है मनुष्यो को सरका पाने में बनताके नैतिक प्रभाव का दल प्राप्त हो जाता है। पृथियी सूक्त के वैदिक लदेश को एक सार्वभीय शास्त्रत वर्वके क्य में संचार की सब गस्याओं शिश्रणा शवों, अमसस्यानों ने नर्व से रका सकते है। कोई भी मतमतातर इससे उच्च रूप **वें नेतृत्व न दे सकेगा । शब्द स्पष्ट हैं**—

"सस्य बृहद् चातपुत्र दीका तपी बहु। यज्ञ पृथियी बारयन्ति, खानी भूतस्य बच्चस्य पत्नी, उद्य सीक पृथियी न इन्ह्योतु।" "भानी द्विसत करवन यानो विस्तत करवन।"

नवर्षातात स्नातको, बहु पर बोसा' सब्द पर विदेष ध्याम देना। साथ के सारत वचनों को भी बाद रखना----सारता से पूर्विको देवी,

पिता देशो महैक्यर । जनुष्याः भागर सर्वे,

इसके बाद में बानको नाविक-वीका

क्षी तरम भी धार्कायत करना च हुना। हुनारी (ताला यीक्षा में यक की प्रयानवा है — 'यक्षी में ध्वन्य करना करना हुए । यहां की प्रयानवा महावको पर विन्तु को समाप्त नहीं करना का हिए। राष्ट्रीय इति वे राजपुर्य तथा राष्ट्रमेय यक्षी का भी नक्षी में कियान का नाहिए। इसते हुम जक्रवर्ती राज्य (One World Welfare State) की विद्या को नो इत्ति से एक सकते हैं। किन मिन्न मन्तर्राप्ट्रीय सम कर सावित कर सावित करना है। विन्तु में सह स्वरूप में प्रवृत्त हो एके हैं। हुन भी इस तप्प माने बढ़ना है। इन यक्षों में सीविकरता ना विद्या प्रवाद हो एके एक्सी करना ना विद्या प्रवाद हो एके परन्तु म्राप्टर्गात्मका प्रवाद हो हो को परन्तु मान्यारिक्ता ना विद्या प्रवाद हो हो हो परन्तु मान्यारिक्ता ना विद्या प्रवाद ना सावित स्वात सावित हो हो को परन्तु मान्यारिक्ता ना स्वात प्रवाद में हो हो हो परन्तु मान्यारिक्ता मान्य स्वान माहिए।

ससार में ब्राधुनिक वैज्ञानिक यूग मे मनुष्य झाकाश में दूर से दूर पहुँच रहा है। चन्द्रमा पर तो वह ग्रपने पैर भी फैला बुका है। चरती ने विस्तृत भूसव्हों पर, उत्तरी व दक्षिणी ध्रुवो के विशास प्रदेशो पर भी पस्त्र नोकन हो रहा है। समुनों झौर घरती की गहराइया भी मारी जा रही है। इन सब बडी बडी दूरियो धीर गहराइयो को मापने हुए लीकिक पुरुषों ने अपनी बढ़ी स बढ़ी विजयो के ऋण्डे गांड हैं। परन्तु इस बरती पर वसने वाले मानवो के हृदयी मनो भौर बुढि की गहराइयो को मापा मनी तक नीला नहीं नया है। मनुष्य क मन भीर हदय को धन्दर से जीवने मे भीर उनमे प्रेम सहानुभूति उत्साह, सहायता तथा भीरता मादि का शाति मय सच्चेश नहीं 'दया सहा है। यह मान समीतक प्रसस्त नही हुसा। यहा पर बाकर भौतिक विज्ञान बसपल हो गया है। यही स हमे श्रोयम गको प्रशम्सकरना है भीर यह यज्ञमय जीवन से प्र रम्भ होता है। बहुविषायज्ञावितता ब्रह्मणी मुक्ते काष्याम रखत हुए हुने बतमान मे इध्य यज्ञों के प्रति बहती प्रवृत्ति को ग्रन्थ श्रद्धाकी तरफ जाने से राकना होना। हमे यज्ञों की विविधता द्वा विशासना को भी समझना चाहिए। अपतेन्विता से ये यज ज्योतिमय हो जाते हैं। सम कता चाहिए कि-

हम्बयका तपीयका सोगयका तपावरे ।

यतयः एकितवता ॥ वेवान् प्रथ्यमयात् ज्ञात् ज्ञानवज्ञ परतयः।

तर्वे कर्माकिस, पार्व श्राने परितमाप्त्रते ॥

नाय लोकोऽस्त्ययसस्य, कृतोऽन्य कुश्तराम ।। महाभान् लमते,

शान तत्पर संबतेन्द्रिय । शान सक्त्या परी कान्ति-

श्रीवरेख्यानिनव्यक्ति क्ष श्रुडापूर्वक विभिन्त वर्तो ते, यसमय (क्षमदा) व्यामपीठ---

उपनिषत् कथा-माला--२

सुख का मार्ग-मनुष्यों का कर्त्तव्य और संसार की वास्तविकता

प्रव बनकर्ता-बीत राग स्थामी सर्वदानन्द महागज

वेद के एक मत्र से ग्ताहै कि समारक्यावन्तु है और मनुष्य काकतस्य क्याहै ? वेदाल वाली ने मार की मिष्या-दतायाहै।

वेदों में भन्त क्या है [?] जो वस्तु भाई है उसे किसी न विसी समय नाश भी होता है। बुखिमानी ने यही निन्चय किया है । बुद्धिमान् यह भलीभाति जानते है कि वैदिक समय को बोलचाल में धीर धाजकल की बोलचाल में बढ़ा भन्तर ण्ड गया है। प्रतएव यह समभना क्ख कारिन हो य है कि पन्वत्य साद के **ब**ाथ वटो ने ससार के किय हैं। प्र**च**लित भाषा मे तसक धार पीलल के हैं। इस ससार को भ्रष्टवाय इसलिए कहत है कि ≽ान नहीं वल कोर्ड ∘ार्ति विनाय यहा रहेनाकि नही। इस लिए इसका नाम **ध**न्वत्य है । क्या ग्राप **ब**ना सकत है कि धाप जैसे यण ग्राये थे वैसे ही ग्रव मा हैं ? यदि भाग कहें कि हम वैसे ही है तो न श्राप वन सकते हैं नाट सकते हैं।

कल्पना करो। एक सनुस्था राजी के किनार जा जनता है एक प्रावसी उद्योग पुराता के सहाजाते हो? उसने उत्तर दिया गांधी के तर पर जन्म दरव जाता चलनर गया। प्रसने पुत्री स्थाना सम्माथ हो? यदि उद्योग क्या स्थान से प्रस्तावन हो जी नह जहां इच्छा हरेल्सा जा।

गौरास्मिक शब्द झरवरण (भीपल) में यह पुण हे कि बायु के झाने से उसक पक्त हिमत के क्षाय के जाने से उसक पक्त नी अता से नहीं हिमत क्षाके पक्त तिमक कार्य हम पर भी तुरत्त हिमने सम

हम लोगो को मरत हुए भी देखते है

भौर पैदाहोते हुए भी। किन्तु विवार कम करते हैं। प्रदिमानी ने सोचा है कि जब बच्चा पैदा होता है तो हम उस पडते हैं जब नर गया तो रो पड़। किन्तु बच्चा पैदा होते समय रोता है। पर तु किसी ने यह कभी नहीं सोचा कि बच्चा राता क्यों है ? हम तो खुशी मनाते हैं वह तो इस लिए रोता है कि उसकी बात्मा को पूरा ज्ञान है किन्तु उसमे बोलने की जक्ति नही। उसको ज्ञान है। वह विकारता है कि मैं प्रकाशित स्वरूप को छोडकर श्रविद्याके भवन में जारहाह वह सम अता है बाकाश में उड़ने वाला एक पक्षी पिंजरे में श्रा गया वे और य लोग पैसे बात फिररहे है वह कभी बू॰ होकर सोता है और सोचता है कि शच्छा सब मैं बढ़ ! इस प्रकार बजान का परदा

प्राप्तक समुख्य की यहा सबस्था है जितना हम मरने ने हरते हैं मरना उतना दरानी। यदि मृत्युन हो सो प्रस्थेक प्राणी कि कि नि से फम जारे। यदि मरने के बनतर जिस्म ना के ता व ता यह बढ़ा कठिल है। जेससाने मे एक बदी है। ज्ये वहाज्य कि क्त तम्हे बाह्य जाना है। या उसे स्वतंत्र हो जाना है तब तो वह कुछ किन नहीं सम नता। दिन्तुयनि लाहौर के जैललाने ग समतसर केल ये जाना है तो किन्त है। ऋषि दयानद महात्मा बुद्ध धीर भ स बन बड बोना मृत्यु से क्यो नही बरते वे ? क्यों कि उस्हें ज्ञात था कि हम म भीर परभारमा में केवश शरार का ही मेड है। इसकिए जितनी सीध्र ही यह धरीर विरा दिया बाय उत्तना ही बच्छा है। तुम इस रहृस्य को नहीं जानते । जिस वन्दी को कम खटना है उसको प्रसन्नता है। क्योंकि वह जानता है कि कक्ष मैं स्वतंत्र हो वाऊगा। किन्तु हुमे इस बात का ज्ञान नहीं इसीलिय हम मरने से बतना उस्त

इच्छा जी महाराज ने गीता ने झारवा धीर शरीर के सम्बन्ध ने निका है। झारबा जब शरीर में झाता है तो पहन जच्चा होता है किर कुछ समय पीत्र युवा झवरबा को पहु ता है फिर ट्रब्ड सबस्वा को। यह भेर केवल वस वय में होता है एक बच्चा जब युवा खरस्या में बाता है तो उसा में मान पहुता है। यच्चे की सबस्या में बहु स्वरंग्य का, किन्दु बसने कभी नहीं कहा कि मैं बण्या वन बाठें। बवानी गुवप्ते पर वह बूखा हुमा, शब बुडापे से ही जग्म रहता है। इसकें बाद चीची भी एक वस्तवा है सर्वात् यह सार चीचें भी एक वस्तवा है सर्वात् यह स्वार चीचें को तेन केंद्रा ने बब बण्ये से बवान धीर जवान से बृढे होते समय धाप नहीं रोते तो सरीर खोड़ने पर रोगा हता ने बी धीर पुरुष है बहुत होंगे। धाप विद्यार स्वार स्वात्म स्वात

गी विद्याएर वस के नासक में होती है। वेसे पूर्ण्यों में सब कुल विद्यान है। किन्तु उसके निकानने के निष्य के सब्दा स्वता है। वेहू गन्ना चना सादि से बीस घरती से डाले ताते हैं और किर वे पूर्णी से उग माते हैं। किन्तु यह कभी नहीं होता कि गेडू का बीज बाना जाय और चना उस माने। वस मही हाल बच्चों काई उप चीर गम्मीर बनाना मारके प्रधीन हैं।

एक जबका जा उबका नाम उसी पाउसके दो जाएं और पिता थे। किन्तु बड़ इबका ने सीनी मिसकर बा=ार से उसे पीट रहे थे। यह बडा प्रदारा हुया जा। एक पादमा मेर उसा चार पाउसी हुया जा। एक पादमा मेर उसा चार प्रदारा। इसा हुया रे देवने मे तो तु "तजा हुट्टा कट्टा है। यह मुजने ही नह उठ खड़ा हुया और उन्हें परे खकेस दिया। स्राफ्त को समस्य प्रदार निर्माण कराने पिता ना पा परन्तु यह दातों की सह सरवा व कि उसमें दियान वा कि उसमें सिता वा कि है।

महता बेहुनि कामत करते हैं।
करालत छोड दी कीयके का स्थापार
किया उससे प्रवास्त करते के।
क्रिया उससे प्रवास्त करते के।
क्रिया उससे प्रवास्त करते के।
क्रिया उससे प्रवास समिति करते हैं।
साथे। दसी प्रशास आप में भी ने कर्म
परिका कोर निवास्त्र किया समाने हैं परस्तु
आप इता काम नेना नहीं सानते। इसी
निवा कराम प्रवास के स्वाह है
हि स र प्रपास प्रवास नहीं। अस्तास है।

थी पुरुष के सक्तम ने सही कि यह गरायान नाहोताहै। भीर पुरुष वही है थो दुव-सुकामने पर वस सम्बन्धकों में एक सा पहला है। जो मून्यू क जब और बीवन के सानन्य से अरपूर नहीं हाता वहीं पुक्व चीर हैं। क्योंकि वह समस्ता है कि बीवारना का सरीर को रुशम बेना ही नरस्य हैं। बुढिमान् बोनों प्रवस्वाओं में एक ही बेंदे रहते हैं।

कोर्ट सेण्डेमन में एक ठेनेबार की स्त्री का बेहान्य ही नवा। यह वह वोनि में ला। वह तर वोनि में ला। वह तर वोनि में ला। वह तर दे तोने में ला। वह तर दे तोने में ला। वह तर दे तर दे ते तर दे ते का उब ही निरासा और विश्विष्ठ है। कोई सम्बद्धा दिन यागा नहीं कि शासाओं ने इकटती बैठकर शोक मनाने के लिए रोना- की ना मा जब स्त्रा अने दिन यर रोना- कीना भी जब्द होता है जास्त्र के यह रोना- तरी होता ने स्त्र दिवार होता है। रोना किंद्र बात का रे प्रतु की वरो है। रोना किंद्र बात का रे प्रतु की वरो हर भी उन्हों ने नाथ ना भी।

अस्तु उम ठहेदार का एक नलकी था। स्वती नहीं ते देसकर पूछा बाजू की रोते नहीं हो? उन्नेवार ने कहा 'ने मेरी हती का देहान्य हो नया। नलक ने कहा 'इतना न रीको आप तो पत लिख हैं।' उन्नेवार बोला कि नेरी तो त्वीं का बेहान्त हो गया है और खप कहने हैं कि मैंन रोक एक पनी भी कोई सासता है, और जब वह उक जाता है तो रोना सो साला हो है।'

वह नहीं वामकता कि यह तो बकरों का एक रेवड हैं। वे वब के तब कजार के जा कर तेवड हैं। वे वब के तब कजार के जा कर तेवड हैं हैं। वब क्या ताथून कराई किय वकरों को पहुरे ने कर हुनाल कर डाने। सच्छा मानी से मराहुवा एक नोकरा कियी बाहारा के माने पूर्व हो। भीर उससे कहा कि मान पूर्व को। साय कर वेच कहा कि मान पूर्व हो। साय उनावर करेवा है। इसिन निक्र निकार नहीं कहा कि साम पूर्व हो। साय उनावर करेवा है। इसिन निकार नहीं कहा है। इसिन नहीं कहा की साइ ही इसिन रही नहीं। इसिन वाली सोर बुढिमान रोते नहीं।

बार्यों के काल में अच्चे रोते के किन्तुजवान भौर बूढ कभी नहीं रोते थे। यविक्रमी रोना बाला भी था, की उन्होने भावादी से बाहर एक घर बनाया हुमा होता था जिस रोना भाषा वह शुक्री चलागवाधीर रोधावा। वे आ मते वे कि हम सब को ही गौत प्रानी है। वसे बापके शरीर में इन्द्रिया है। इन इन्द्रियों का धपना धपना भिन्न भिन्न कार्व है। श्रील का काम है दलना तुम कान से कहो तो कमी देश सकता है कान देखते का काम नहीं कर सकता केवस सुनने का काम करता है। वहां कोई किसी पर क्षाक्रमण नहीं करता सबका मार्व जिन्त-जिल्ल है किन्तु सर्व मिनकर शरीर के सिए काम कर रहे हैं।

नेत्रों ने साथ को देखा नारू ने सूचा बोर आरमा तक उसका साम पहुंचा दिया। स्वयता काम नह देखना है कि यह रस सं त्ररा हुंचा है कि नहीं स्वृद्धिता सुबात किया। स्वय नह बहु। है या दीन्त्र, यह सिक्का ने केवा। स्वयं नह सहा है या दीन्त्र, ज़िला हैं चरन्तु सन्त में काम सब का एक ही है !

पसुमाँ भी घोर देवो ! महाति ने कर्में जो पाठ पदाबा है स्वे है मुच्छे महीं। यह दण्ये देने का तमय घाता कर कर वे बोदबा बना जेते हैं। यह वण्ये बढे हो काते हैं तद यह पोवर्गों की हुख विश्वा नहीं करते ! शालाओं पर हीं निवाह कर तेते हैं। उनमें नर पाता प्रत्येक पता मूटे सुद्धी स्वा एकन करता है। बो कम मूटे साक्षी रैवा कर सकता है वही बोगी वन जाता है। कियु पराव कर बात कर कर के न्या में इससे बवा मनद है। बाप करना करते हैं। मूट-सब बोजकर मीर सन्याय से कन इकटका करके अपना कुटुम्ब पानते हैं। पराव सरावार से साम हिम्म होना है। पराव सरावार की मीर होना नहीं का का मान इस बात का जाता नहीं हा इस्तिए जब मानुस्य को यह बात हो बाये कि युगे एक मानुस्य को यह बात हो बाये कि युगे एक

पणुमो की धोर देखी। प्रकृति ने उन्हें जो पाठ पढ़ाया है उसे वे भूनते सही। जब बच्चे देते का समय धाना है, तब वे घोमना बना तेते हैं। जब बच्चे बढ़े हो जाते हैं तब वह घोषता है, तब वे घोमना बना तेते हैं। जब बच्चे बढ़े हो जाते हैं तब वह घोषता है कुछ हो पढ़ावाघो पर ही निवंह कर लेते हैं। उनमें नर सपनी नारी का कितना घान रखता है? किन्तु मनुष्यों में ऐसा नहीं, मनुष्य धपनी स्त्री को देलकर जो भाव प्रकृत करता है दूसरी स्त्री की देलकर जो भाव

सनुष्यों में ऐसानहीं मनुष्य सपनी स्त्री को देखकर यो मान प्रकर करना है दूनरी स्त्री को देखकर भी वहीं करना है।

गी नाम है पृथ्वी का। पृथ्वी में साप एक ही स्थान गर कर बीज डाल थी। है माना मिथ मेहू जना जी तब सकत सलस बराज समें। मिन में करपन पुर्वदिवरेल) का साथ सा जाता है गर्ने में निठास का। यह कभी नहा होता कि मिर्च में गर्ने का सा रस सा जाये। इसी अकार सा भी खास र सा जाये। इसी उसके के इंग्डर भी भार्यन होगी धौर ऐसे ही सरने से स्वर न भी भार्यन होगी धौर ऐसे ही सरने से स्वर करने निट वार्यों।

किसी ने कहा या - आई रोते क्यों हो ? शक्स ही ऐसी है। ऐसा ही सलार का भी हाल है। मोटर को देखों, धनने यक (पहिंट) नम होते हैं पिछनों में बादु अधिक होती है। यदि सब पहिंचों में बादु अधान (एक बादु) हो तो चनना कठिन हो बायें।

धापके घरीर में बीमारी है किन्तु धाप बदैव ही रोगी नहीं रहते। कभी--कभी बीमार होते हैं। एक कवि ने कहा है--

रू दुसाबराबर सुसानहीं जीदिन वोडे होस।

जिस सावमी नो दद सकता काट हो, यो तीन नित् जर एवं जावे प्रकार करें कि वर्ष के वर्ष नीमार पड़ा रहे ज्वका स्वरीर हु-का हो जाता है। मन में शामित का साती हैं। फिर वह चीरे चीरे स्वत्य हो जाता है। इती लिए क्वो से कहा है वसी को परमेक्वर मिसवा है वो मनुष्य यह जान से कि मैं सर्वेद सवार में रहने के साथ प्रधाय न करे। प्रद्श स्वत पर-स्वत प्रमा ने हु-स-नुस्त से समितित वसे ।

काजकल ससार में भूठ का राज्य है। एक पुकरमा म्हाबासय में जाता है। दिन सहार छोड़ जाना है यदि वह इस बात को सब जान और प्राम ने तो वह क्वापि स प्रकर समने परिवार की पालना न करें। यह कुक कठिज नहीं, पुरुषों को ध्वराना नहीं चाहिए। कोई कठिनार्ण एसी नहीं जो स्वयम न हो जाये। ससार के सब काम उतने ही सुपम हैं जिनने ने किनन दिखाई देहें हैं। एक किंव ने कहा है—

> बुनिया में रहके सब से जुदा हो तो जानिये। राजा कभी विगड के निसारी हो तो जानिये॥

कमल बात ने रहता है परन्तु वह बाद नाई पानी को त्यान भी सहता है। इसी प्रकार मुजांकी जी पानी ने रहती है वहीं प्रफंड देनी है बच्चे निकासती है। फिस्तु बन चाहे सक्त मी हो सकती है। फसस के परो पर जल मालो कभी नहीं ठहरेगा। एक की को लो पानी उहरे मा एक की को लो पानी उसे भी हुनोधों बर वादेगा, क्योंकि की सा सौर कद्दार पानी से नहीं उड़ सकते परन्तु पूर्वाची की यह स्था नहीं। पीपस के पासे को पानी से नहीं उड़ सकते परन्तु पूर्वाची की यह स्था नहीं। पीपस के पासे को पानी से निहां वो मी सायेगा किन्तु कमल का परा नहीं। बीम सायेगा

बनवानु पुरुष प्राय प्रपने बच्चे पालने के लिए प्राया (भीकर) रख नेते हैं। वे बच्चे को विस्ताती हैं पिलाती हैं मबुलाती हैं पुलाती हैं ऐका प्रतीय होगा है मानो बच्चे की या वही है। बच्चा भी प्रपत्ती हैं परन्तु यह बानते हुए कि कच्चा मेरा नहीं। इसी प्रकार बुक्षिमान् पुरुष भी सब काम करते हैं किन्तु वह बानते हुए कि हमें यहा करेब नहीं रहना। बो मनुष्य ऐसा कराने हैं वह तवैब सुनी रहता है। ऐसा जानने बाले मनुष्य की बबी प्रवता होती है क्वोफि उसने इसका प्रमास कर रखा है।

हमारे वाता ^वपदा स्वय ही समझ

में कि हमें काहे कितना भी कष्ट क्यो न हो, किन्सू हमारी सन्तान को कव्टन हो वो बच्चे के विस ने भी अपने आप ही यह विचार उत्पन्न ही जायेगा कि 'मैं कोई ऐखाकार्वन करू जिससे मेरे माता पिता का निरादर हो। यज्यापक यह जाने कि यह विद्यार्थी मेरा जीवन है विद्यार्थी को स्वयमेव यह विचार होगा कि मरे किसी भी काम से मास्टर जी के सम्मान मे जुटि न हो। प्राचीन समय मे जब विद्यार्थी युरुकू से धपनी निकापूरी करके निक सताबातो प्राचय यह कहा करते वे कि 'हे शिक्य[।] श्राचाय के लिए वीर न धीर ससार मे यक्ष प्राप्त कर। आस्त्रक्ल लो हमारे सब काम धन देने से होते हैं। कोई शिष्य विका प्राप्त नहीं कर सक्ता जब तक वह ग्रपने प्रोफेसर को कालिज की फीस न दें परन्तु प्राचीन काल मे ऐसान था। प्रस्युत शिष्य की वृद्धि फलना क्लनातया उसकायश ही ग्राचार्यं के लिए या।

दूसरे का उपकार करना ही सपना उपकार होता है। धानकक के नवसुन है तिश्व कहा सिकते पर भी नक उन्हान है परन्तु वर्ण नाले पर भी नक उन्हान है परन्तु वर्ण नाले प्रकृत हैं राज्य वर्ण नाले प्रकृत हैं ति हैं। धरने पैसे की धाप रेखे परायों पर व्याप न करी वरन् रेसे मोल्य साधों जो पुल्लिकारक हो। सोवासाहर पीने से क्या जान है। धानकत के नवपुरकों के यदि कहा जाते कि यदि परवी मनाई साधा सरो सो जरार निवता है कि पनवीं नहीं। यादि पर्क केने रे तोवर-वाटर तथा वक ने तो आपके सारेर मे पावन नालि ही नहीं कोडा

एक पुरुष असे मुराद बाट सं बरेली ले जाने के लिए झाय भाग ने उसने सोडाबाटर की तीन बोतलें चटकी ! मैंने पूछा भाई इसकें पीने सेक्या लान ? इसकी जन्ह बवि तुम स्वकी काते तो तुम मे सक्ति आसी। उसने कहा कि पचती ही नहीं। चीम को देखों। जब वह वरती से उन्ती है तो दोनो पो को हिनाकर उडती है। अब वह भाकाश मे पट्ट बती है तो इनके पर ठहरे हुए दिखाई बेते हैं। जन कन उनकी समता में धन्तर पड जाता है तो वह फिर अपने परींको हिलाकर उसे पूरा कर लती है और जिर पर निश्वल हो काले हैं। इसी प्रकार बच्च बचपन से ही धम्बास न कर ता सब ठीक हो जाता है।

इन निवामों पर साथ विश्वार कर बकते हैं। तसार के नेरा मध्य-स्था है? इस्ताबि। इसते तुम ठीक मार्च पर शक बकते। बेदै परिस्तानी बातक पन हो बाता है और बनता उसकी बखें स्तुति करती है और कहती है कि 'वह बडा बनाना तथा परिस्तामी पुत्रक है। परस्तु परिस्ताव करणे वासा चाहे केस सी हा जाये तो सब यही कहत है कि उसके भाग मैं जात होना वा हो नहीं तो यह पास कहा से होता 'सी अन्तर यदि इस ससार में रहते हुए यह अप्यास कर कि मैं क्या हु 'इस ससार तथा गरीर के साथ मेरा क्या सम्बन्ध है' तो उसे मृत्यु से कभी भी भय न होता।

> षाये थ जिस बात को भूल गयी वह बात। श्रव क्या ले चलें प्रश्नू को, खाली, बोनो हाय।।

प्रयत्न करों सचाई म प्रेम करों।
माणे गंग पर चलों। हेलों एक सड़कां
प उमने तूपरे लड़ करों हो करा कि करें
पिता को चांचा कहीं के हतो की मान गय कर्ड न साते। परल्त यह कि समय नहीं। यदि वह प्रत्यक बानक के पिता की चांचा करें ती उसके पिता की सब्द प्रदेने झांव ही चांचा कहन नवीं।। इतसार स्वर कर्मे दिसाड़ी।

यदि वैं बा³ कि घोर लोग मेरी महारता कर हो मुझे न्यस भीरा की सहायता करती बाहिए। यही माचा था। है। पारती में एक नोनोक्ति है विदक्षा भावाय यह है योगित बाहता है कि मैं तुने हावी कह तो मुझुके हाबी कह। यही त्यस से प्रचली विधि में जिससे ससार मैं पुत्रपूर्वक बीवन असीत हो सकता है।

एक सहका था। उसका पिता प्रति दिन प्रश्ने पिता भयात् उस बालक के पितासह के साथ बुरा वर्ताव करता था। उसे गन्दे बतनी म भीत्रन देता था। कप्ने ने ब्राम पिनासे कड़ा कि बा बाबाजी के साथ ऐसा क्या उत्त ने ? ये आपके पिता हैं। उसन वालक से कहा कि तू वडी बुद्धि वाला है। तुन्ते इसका ज्ञान नही। दूसरी बार फिर यनी बाते हुइ। िताने उसके दो शीन थप्पड भी रस्ट द कर दिय यह बालव क्छ दृद्धि च ला था। जनने संभायह माग उन्टा है। उसने एक कापी बना ली और अब भी उसका पिता सके पितामह की कोई बुरी । वहतातभी ह उस उस क पी वे नोटकर लेता। ज उसक पिता ने कहा कि स बुढ को ग्रच्छे बरसमों मे भोजन न दो। तो उसने भन नोटकार लिया। एक दिन उसने पिताने कहा कि यह तुम सदैव क्या सिक्ते रहते हो? लडके ने उत्तर दिया वि प्राप बाधा जी को जो नुख कहते हैं वही मैं लिख लना ह जिससे कल जब प्राप बुढ होगे तो मुमे ये सब बातें याद रहे। तत्र से उसके पिताने बाबाको बुर 🗝 ग वहनाओं ड दिया। सीघा मान यही था।

वेथो के नियम बहुत शुक्ष है जिलु हमे उन पर सीधी तरह चलना नही बाता। सोचा समकातो बाप इस माय पर बा जाबोचे और सुख के चाणी नाने ।

सरकार ने श्री हरिहराव्य करपात्री उनके वेदाणं पारिवात ग्रन्थ पर एक सास रुपयो का पूरस्कार देना स्वीकृत किया है, जिसे उनके मरलोपरान्त उनसे सम्बद्ध संस्था को विनाक १६-४-८५ की राजभवन में झायोजित समारोह में दिया

सामान्य जनता नही जानती कि उक्त पुस्तक मे कितना विष घोला गया है। इसमे बेदो के सम्बन्ध मे भ्रान्तिपूर्ण वचन भीर तकं-विरुद्ध प्रवैज्ञानिक सिद्धान्ती को मान्यतादी गई है। (स मूप स वेदी के बद्धारक ऋषि दयानन्द भीर उनके अनू-बायियों को पदे पदे गालियाँ दी गयी है। पहले बाला उसकी भूमिका पढकर ही समक्त जायमा कि इस प्रकार लिखना ईव्या और द्वेष से परिपूरा है।

ऐसे ईव्या देव से भरपूर वैरामी को या उसकी सस्या को पुरस्कार देना नरीव जनशाके धन का केवल दुरायोग है भीर सरकार द्वारा स्वीकृत नीति के भी विवद है। निम्म प्रदन उपस्थित है-

१ क्या उक्त ग्रन्य की जौन निष्पक विद्वानो द्वाराकी जा चुकी है ?

२ क्या इलमें प्रतिपादित विद्यान्त न्याय भीर तकंतथा विज्ञान के बनुक्त एव बुद्धि-पूर्वक हैं ?

३ क्या यह पुरस्कार पा**लच्ड भी**र भन्यविश्वास तथा साम् ।दायिकता को दूर करन वालः होगा ?

इन तीनों का उत्तर है--नहीं, नहीं, व्यक्ती।

वेटार्श्यपारिजात सम्बन्धी वक्तव्य

वीरेन्द्रमुनि शास्त्री

श्री करपात्री के वक्तव्यों के कुछ, उन्हें धनेक गासियाँ दी गई है-नमूने दक्षिये ---

१ (भागसमाजी) चोरी करने वाले समय चोर बिल्नी के समाम चूपके से घर मे पुत्रते हैं किन्तु ये भाकमणकारी पूर्व सबके सामने उजाल में वेदबाता के केशी (भूमिका पृष्ठ १२) को सीचते हैं।

२ जनता और शास्त्र के साथ भी छल-काट करने की भागंसमाजियो तका बन्य कुछ सोयों की प्रवृत्ति बेद-जनक है। ये लोग सामने ही धाँक मे पूक फोकने का काम करते हैं। (पृष्ठ १३)

इत्यादि बादों के कारण इस ब्रम्य को तो जन्त किया जाना चाहिए या, इसके विपरीत १ लास का पुरस्कार दिया जा रहा है। भारत्यम् ।

कुछ सन्य नमूने देखिये-

१ त्रिपुर सुन्दरी से ब्रासिक्तित परमारमा शिव को इस प्रशास करते हैं। (इष्ठ रे)

(क्या परमात्मा का यही काम है कि त्रिपुर सुन्दरी से चिपटा रहे ?)

२ जोकवञ्चनहेतवे वञ्चनाकुशसेन (क्लोक १७, २० पृष्ठ २) जिनता निजय करे कि वचक कौन

३ प्रथम भाग के १०८ पृथ्ठों में से ४२४ मे वयानस्य-मत सण्डम करते हुए

है, दबानस्य या करपात्री?]

- (१) दवानन्द का लेख प्रमत्त-प्रसपितम् (पामसकी वकवास) है।
- (२) 'होम का करना बावस्यक है' --यह सब भी गमत है। पृष्ठ ४८१
- (३) कुमारिश ने मानो दबायन्द को सक्य करके ही कहा वा-मूर्वसकंटा (बस्दर) पिशाचा सादि।

[वृष्ठ १५१]

(४) स्वामी वमानन्द बाइविक-फूरान बावि बनार्य प्रत्यों से प्रशावित होने कं कारण ही यह मानने समे हैं कि ईत्वर के ब्रतिरिक्त ब्रन्थ उपास्य नहीं है। (१३६ छक्)

क्या एकमित् तमुष्टुहि' (ऋग्वेद ६४% १६), पतिरेक ब्रासीत् (ऋ० १० १२१.१, य० २३, १) न द्वितीयो स एकव्देक एव (ब्रवर्व देव १३ ४.१६) मादि वचन वेद मे नहीं है, को उपर्यूक्त निर्मुल बाक्षेप किया नवा? क्या यह वचन बायविस, कुरान के हैं ? स्या एक ईश्वर की जपासना को छ।डकर धनेक बढ देवताओं की उपासना बताने बासा शौरहोम का विरोधी ग्रन्थ एक लाख क्पये पुरस्कार का प्रधिकारी हो सकता है ? (नहीं हरनिव नहीं)

पुष्ठ ५६० पर सिका है— बहुसब

दयानन्द का मत चार्वाक का उज्जिष्ट ही है'। बाव विचारक बतायें कि परम ईश्वर विश्वासी ग्रास्तिक दयानन्द की चार्वाक नास्तिक बताना अवस्य है कि नहीं ? बिन्होने स्व-स्थापित ग्रायसमाज के पहले-इसरे नियम से ईश्वर को आदि-मूज बताकर उसी की उपासना करनी योग्य बताया, प्रपने सन्नी प्रन्यो सौर प्रवचनो को जिल्होने ईश्वर-प्राथना है धारम्य किया. धपने धमर प्रन्य सस्यार्थ-प्रकाश में जिन्होन पहले समुस्तास में ईएवर के सी नामी की व्याक्या की तथा भागे सातर्वे समुख्यास में ईश्वर को खिद्धि कर बावाक मत का सण्डन किया-उन्ही को नास्तिक बताना अनता की बालो मे चूल फोकना और उसे बरमसाना नहीं है?

जो स्त्रिमो भीर शुद्रो को वेद पढाने का बोर विरोधी था, ऐसे धकीखं विचार वारा बाले व्यक्ति को १ साम ६० इनाम, धारवर्वम् ।

भत जनता को सावधान किया बाता है कि वह ऐसे अब्ट, द्वेषयुक्त सन्य पर पुरस्कार विय जाने का भोर विरोध करे धीर सरकार को बनता का बन ऐसे न्यर्थं अनुपयोगी कार्यों मे सर्थं करने स रोकने का प्रयास करे । सरकार से प्रार्थना है कि वह ऐसे साम्प्रदायिक कोगो को पुरस्कार न दे। ससद-विधानसमा मे प्रक्त स्टावें बावें।

> -- भीनारायण बाबपेयी, बीरेस्ट-मुनि चास्त्री(बावशं प्रेस)ससनऊ उपाध्यक्ष विश्ववेद परिवद **सी ५१७ महानगर सस्रम**क

शिक्षा नीति में परिवर्तन

शिलाविदों की यह राय रही है कि विकाका सर्वोत्तम माध्यम मनुभावा होती है । किन्तु स्वाधीनता प्राप्त करने के बाद भारत में विपरीत लहर वली है और श्रव वडावड एसे स्कूल खुल रहे हैं जिनमें षिखा का माध्यम भारतीय भाषा नही, भन्नेजी होती है। इसस नम्हें मन्हें बच्चो पर कितना भार वढ रहा है, इसका कोई धनुमान नहीं संवाता। कई बच्ची की प्रतिया प्रप्रेजी माध्यम के बोऋ के कारण कुठित हो जाती है। अन्य देशों ये प्रयत्न बह होता है कि बच्च सबवित विषय का ग्रम्बद्धा ज्ञान प्राप्त करे, यहाँ इस बात पर कोर दिया जाता है कि बज्वे बग्नेजी की कविताएँ रहें तथा अन्य नातो के लिए समेजी सच्छी प्रकार बोसने में विशेष समय संगायें, चाहे धन्य विषयों में उनका ज्ञाव क्रयकवरा ही रह वाए।

भारत सरकार शिक्षा मीति मे परि-वर्तन करने का विचार कर रही है। सबसे महत्त्वपूर्ण परिवर्तन यह होना

हायर सेकेटरी तक शिक्षा भारतीय भाषाओं के माध्यम से दा जाए न कि मग्रेजी के माध्यम स । दूसरा सुवार यह होना ब।हिए कि पब्लिक स्कूलो की होड बद हो तथा धनुदान प्राप्त शिक्षण सस्वाधो तवासरकारी स्कूलो ने शिका कास्तर सुवारा जाए। अन्यवा सामा-विक विषमताए बढती रहेंनी और बारत मे समाजवाद का स्वप्न वास्तविक रूप मे पूरा नहीं हो सकेगा।

शिक्षा माध्यम के परिवर्तन के संबच मे देख की समस्त सामाजिक, वार्मिक, साहिरियक, राजनीतिक बादि सस्वाओं को भारत के खिक्षा नत्री तथा प्रधान मत्री आदि से अनुरोध करना चाहिए। माशा है सब के सम्मितित प्रवर्तों से माया-नीति मे बबोबित परिवर्तन हो सकेवा । नवदीव

> (इरि बाबू कवल) महाबंत्री, हिन्दी व्यवहार संवठन डी-३४, बायब एक्सर्टेसन, जान

वैदिक धर्म है मुक्ति दिलाने वाला

वैदिक क्षमं वासानीन जब बन्दर, रसना राहो न गुण दक्षान होने । बाषार इसदा वेद है ईश्वर वास्ती, मन वचन ते कर्म समान होवे। एकता न्याय ते समता दा पाठ बसे, भावें हिन्दू ते बाहे मुसलमान होने । वर्ण-जाति न जन्म तो मनदा ए, श्रुम कम दे नास कल्याय होवे।

> भारमाभनर न कदेवी नरदी ए, सच्चे झान वी गष्ठ दिव्हाण वासा। वही पासेमी पई आवाज आवै, वैदिक वर्ग है मुक्ति दिसान वासा ॥

कुरानी कहद वो तीचे बास्मान रहवा मुस्लिम सतवें बासमान निवास करदे। कोई पूर्ति बना अवतार मन्त्रे, मन्दिर, मस्बिद हे वित्र-हरे पा लडदे। बुरुवन ने पासा है जोर बाढा, इक दूवे तो राहो कुराह कर है। सबस्थापक को हरवा बस्दा ए, उसवे मुखादा नहीं जो नान करते।

> वेद ज्ञान जहे बेम तों पुस मोड़े, भौरासी संसमित चनकर हो बान बाका है नहो पासे वो पर्द बाबाच बावे, वैदिक वर्ग है युक्ति दिसान वाला ॥

बाबो जापनी विच मस्त प्रसमस्त होके, बन्दा मुलिया कर्म ते चर्म नू प्रज । पार्टी बाबी बुद वर्बी ने वर कीता, बन्दा भूतिया इञ्चल ते समै नु शवा। इंट द्रिक नी मैरी वे सक्य नासा, बन्दा मुक्तिया अमें वे मरहम मूं अख, चढ़दी कता विज्ञान वी क्षेत्र बन्दा, बन्दा भूमिया देशवर वे करम नू प्राप्त ।

> क्या बन्दवी बाक्त न वजे बन्दा, ऐटम हाइड्रोजन है पाहे बनान वाला ॥ बहाँ वासेयो पर्द भावाज शावे, वैदिक वर्ग है मुक्ति दिलान वासा ।।

> > —इरबन्स साम बना' नलिक एम-२१ बैस्ट प्रदेश-जन्द, नई विल्ली-११०००

समीक्षा-

वैज्ञानिक वैदिक चितन

(भाग दितीय)

सेलाम प्रो० प्रताप सिंह, सनीसक डा॰ विकाय द्विवेदी, प्रकाशक स्रायं कुमार सप्ता (रजि॰) किस्मचे, विस्ती ६, प्र० तिथि राम नवनी १६८४ पृ० स० (६४, सुस्य ड० २०० मात्र।

समय-समय पर वैदिक जीवन-पड़ित और चित्तन-मनन पर भारोप नगाए जाते रहे हैं कि यह बीवन न केवल बटिल तथा ट्रेंबर है प्रचित् समृतं प्रसहब प्रोर प्रवे-ज्ञानिक भी है। इन भारोपों से वेद भीर वैविक जीवन की महिमा तो कम नहीं हुई हो भी नहीं सकती क्योंकि यह लिय जात नहीं परमात्मा प्रदत्त है। इसके विपरीत ब्रारोपकारी धपनी ही धन्नामता से स्वय विकृत-विनष्ट हो गए। प्राचीन काल के बीड कीर पाज के बुद्धिवादी दोनो ही इसके बीवन्त प्रमास हैं। प्राचुनिक युग 🕏 ग्रन्थतम दूर द्रष्टा भीर दिव्यद्रष्टा मुहर्षि दयानन्द ने गुरु के घादेश से जारत-मूर्ति से लुप्त होती वेद-वाणी का स्टार कर मीतिक बाबी विश्व को चमरकृत कर विया, कुण्यन्तो विषयमार्यम्' की धूम सचादी। तदसीदासत्वज्ञार-वोद्याकान्त विवित्ति जारतीय चेतना भौतिक विज्ञान प्रदक्त जोनों के पीछे ही जानती रही झौर बाज भी सपनी बास्या के उत्त भन्यत्र कोचरही है। प्रस्तुत पुस्तिका में प्रो॰ प्रतापसिंह ने श्राषुनिक वैज्ञानिक विसन के नाम पर चल रही ज्ञान की विविध बाराओं से साक्षात्कार करने के बाद अवताया है कि बाज का जीवन तीन एव-णाधी सोक पुत्र, विश्त के नारों धोर चनकर कार रहा है और यही तीनो एव-साए ससार में संघर्ष तथा श्रशनित के कारक है। (मन काम, कामना पु० १७)

दूसरे प्रध्याय धर्म वर्णाश्रम उपा

वैविक मर्पं सत् मोर स्वतु कमं है। जिन नियमों के मामार पर सह पृष्टि कारण हो रही है तथा किन नियमों के मामार पर इस तमार का नवालन माबि हो रहा है, उन नियमों को यमें कहते हैं। (पृ० १०) वैविक शैवन पूर्णत वर्ष पर मामारित जोवन हैं। हसके बार कर्म यौर बार हो मामस हैं। यह वैश्वानिक स्ववस्था है। इसी से मामब जीवन मे मन्युरम और नि बेवल की प्राप्ति हो सकती है तथा इसी से सामाविक सीवन मे सनुतम वना इस सकता है।

सना में लेखक ने बताजा है कि 'बमें' का

'भूत्यु पुनर्जन्म मोक्ष' तथा शिक्षा-विचा' एव 'यज और शान्ति' के धन्तर्गत सम्बद्ध विषयों का बड़ा सूक्त्म, सरक्ष भीर बोधगम्य विवेचन प्रस्तुत किया गवा है। प्रो० प्रसाप सिंह के लेखन की सबसे बडी विभेवताको इस पुन्तक ने सर्वत्र दिक्त पबती है वह है सादगी तथा ताअगी। नेसक ने इसमें धपने ज्ञान का प्रदर्शन न कर उसकी सामाजिक उपयोगिता पर दृष्टि रकी है। इससिए इस छोटी-सी पुस्तिका के जरिये भी उसने वैदिक साहित्य पर धनिषकारियो द्वारा ल्याष्ट बाने वाले धारोपी का वितम्र किंदु बेबाक उत्तर दिया है। इसी'लए यह पुस्तिका पटर्न बाही नहीं सप्रहणीय बन गई है। पाशा है राष्ट्रवादी भारतीय जनना इनका हार्दिक स्वागत करेगी।

प॰ भूदेव शास्त्री का निधन

ब अमेर स्थित महर्षि दयानन्द निर्माण न्यास के पूर्व मन्त्री भूदेव शास्त्री एम ए एम एड सिडाम्न शिरीमिश (६१ वर्ष) का हाल ही में हृदय गति रुक ज ने से स्वर्धवन्स हो वदा। प० अूदेव जी एक अकर विद्वान मोजस्त्री बक्का और मिश-न्दी कार्यकर्ता वे । उन्होने मार्थ सिद्धाती का विशेष प्रध्यवन गुरुकुल वृग्दावन मे किया भीर सन् १६३= मे वह स्नातक मेरे साम ही हुए थे। बसवन्त राजपूत कालज भागरा कैन्द्रीय हिन्दी सस्यान श्रावरा धीर पठ जियासास ट्रनिंग कासक स्वामेर में वे प्रीक्सर रहे। उनकी यो बना शार्व साहित्य का प्रकाशन भीर भारत शका विदेश में प्रकार करने की बी। र्श्वकुर दिन्दी धीर वशेकी शीवों जानाओं

में में निकाल से। प्रभार धीर न्यास के कामों के उत्तर पारत के धनेक समास में कथा, यह नेको धीर भाषायों के द्वारा ने प्रक कार्य कर रहें थे। शक्तिक कर से ने पार्यसमान के लिए सर्वाप्त से। उनके निष्ण से प्रायंत्रमान की सहती स्रति हुई

उनके पीक्ष उनकी पत्नी व वज्ये है। बज्ये सब बीम्य एवं कार्यरत हैं केवल एक शिक्षिकाएम एं बी एक कम्या का विवाह होना केव या। मनवान उनकी स्थारमा की सद्गित व परिवार को सार-वना प्रवान करें।

> बहायस स्वातक भारतीय सूचना धवा (रिटायडं) सबै॰ प्रेंस एवं क्षणेंस्मके संसाहकार

वेद मे परमेश्चर

चुकि ईश्वर की पुरुपार्थ करने की भाजा है तथा कोई भीक वाले भीर देखने की इच्छा करने वासो को ही कोई चीज विश्वासकताहै। उसीप्रकार दुव्टो को वष्ट करने के लिए प्रयत्नशीस ईश्वर प्रार्थी ही चाणक्यादि की तरह नक्सतर पाता है। जैसा कि ऋग्यद क सन्त्र इन्ने जिष्ठि भ्रष्तुर । भ्रषक्तन्तुं भ्रशक्ता । क्रुष्ट न्दोविष्यमार्थम् । संभी विद्यंका थटः बनाने हेसु दुष्टों को जीतन दूर करन "एट करने का स्पष्ट आदशह। तभी हम स्व को भेष्ठ बनासकते हैं। क्योंकि एक स्वतन्त्र दुष्ट पापी अनको को विगाह सकता है अनिवनत व्यक्तियों को दक्षा बना सकता है। धत छसको दूर करन. पराजित करने धौर नष्ट करने में ससार का धनन्त उपकार होता है। तभी तो देव वयानन्द अपने मन्तव्य मे घोषस्या करते है, वर्मात्वा चाह महामनाय क्यो न हो उसके सर्वदा डरते रहना धीर पापी चाहे चक्रवर्ती सम्राट्ही क्यो न हो सर्वदा ही उसका अप्रियाचरण करते रहना।

स्रव हम मन्त्र के प्रतिस करता पर स्राते हैं। 'सन पर्वदित हुगासि विवा नावेव सिन्सु दुरितास्पनि ।' पर स्राने

वह शीझकारी परमात्मा 'स्रानि' सम्रमी होने से हमें शोझ ही निश्चित स्प से स्वय दुल कण्ड, रोत्त, 'गोक, उसकत पीजा, विषादा, विषादियों साहि से स्वयूद के में हैं ही सफलता गुरू को हम पर कर देता है। में से ही सफलता गुरू को हम पर कहाज या नहीं नोकाधों से सुमायता है पार कर जाते हैं। साथ ही तह परवेल्स स्वया या राज्य व्यक्ति कहते हैं 'पढ़ एक कं जानने से ही सार्य बाता है। सब मा जनने से ही सार्य बाता है। सब मा जनने से ही सार्य बाता है। सब मा जनने से बहु एक नहीं जाना बाता है। उपनिग्द 'रपोवत को जानने सास्ती मा में में साम्य का साम स्वात है। स्वया मा स्वया हमा स्वया हमा स्वया हो।

इस प्रकार हम देवने हैं कि सस्तार विश्व में ग्रहु-शामम प्रकरण में जाते तथ्या में ग्रहु-शा विश्व दी है सहार कर न्या में ग्रहु-शा विश्व दी से सी सार करा गये हैं। इसके बिना सारत्य में सन्या इक्त कुछ प्रमुख ही रह जाती है। या करिया में प्रमुख सरकानुखार हुये स्था मन्य सुम्बत सरकानुखार हुये

> विन्वेश्वरी सिंह केन्द्रीय बस स्नायोग ४०२ CWD सेवा अवन, रामकृष्ण पुरम नई दिल्ली-६६

पजाब "समस्या समाधान हेतु ११७० का ऐवार्ड लागू किया जाये"

'पजाब केसरी दिली में छपे १० अप्रैन १६८५ के सपने लेख की प्रतिनिधि मेजते हुए प्रो० शेरसिंह ने प्रधान मन्त्री रक्षा मन्त्री गृहम-त्री शिक्षाय-त्री तथा सभी राजन।तिक दलाके नदामा, ची० घरए।सिंह भी मोर रजा दसाई, श्री लानकृष्ण भावानी, श्रा मधुदण्डवते श्रा शरद प्यार, था एन०टी० रामाराव श्री इन्द्रजत नुप्त मादि को पत्र लिसे है। सभी नेतायों से अपील की है कि हरि बारमा के साथ हो रहे धन्याय को धन्याय माने धीर धकासियों की नाजायक खुरा मव श्लोडकर देश की एक्ता को बचाने के लिं उपवादियो धेर राष्ट्रक्रोहियो से सक्सी स निवटें। स य ही उन्होने यह श्री कहा है कि राजनीतिक दशो ने पजाब क मामन को सकालियों से सौदेवाओं करके

उसे मूत बनाकर सडा कर दिया है।

यदि (६७० ग पैसला लागू करन का दश राजन तिक वाग में नहीं है नो व बीच में स निवल वाग मोर सभी इसालो भीर शाव क लागो पर छोड़ वें बहा फैसला करें कि उनकी प्रशाब में बाला है या हरियाणा में चण्डीगढ़ मोर पाबिस्का साहर का फैसला भी बहा की जनवा स्वाकर करें

प्रा० शरसिंह प्रधान बाय प्रतिनिधि सभा हरयाचा व हरियाला रक्षा वान्नि;

केदारसिंह श्वाय कायालयाज्यक साय प्रतिनिधि सभा हरयासा सिंडान्ती मवन दयानन्द सठ, रोहतक

श्रार्यसमाज, परमानन्द बस्ती बीकानेर का वाषिक निर्वाचन

सर्वे सम्मति से दिनाक ७-४ ८५ को श्री समरताय जी की प्रचानता में सम्पन्न हुमा। सन्तरन सभा के पदाचिकारी एव सदस्य निम्नकितिक निर्वाचित हुए—

१ प्रधान-श्री समरनाथ बी २ वरिष्ठ उपप्रधान-श्री डा॰ रवीन्द्र श्री कुलभेष्ठ ३ उपप्रधान-श्रा॰ शिवनारायण सार्व ४ चप प्रमान श्रीमती सुभाग मुखी ४ मन्त्री वर्मपाल ६ उपक्रणी-भी हरभगवान भी ७ उपमन्त्री श्रीमती कैंसाश क्षर्या ८ कौपाध्यक्ष श्री सेठ ख्रमनलाल भी सार्य ६ तेसा परीकक श्री हरबक्ष भी बस्टी।

(धर्मपास) मन्त्री

समाचार-सन्देश

श्रार्यसमाज गांधीनगर का श्रीमददयानन्द वेद विद्यालय २१ वां वार्षिकात्सव शोभा **उद्घाटन समारोह** यात्रा का श्रायोजन

कार्यसभाज नाभीनतर, दिल्ली का २६ वा वार्षिकोत्सव ४ म. से १२ मई रविवार तक्त व धूमधाम स मनाया जा रहा है। इस क्षम अवसर पर १ मई रवि-बार को छाय तीन बजे एक शोमायात्रा कैलाधनगर, महावीर वाटिका से प्रारम्य होकर साम ६ वजे प्रार्थसमाज कृष्णनगर तक पहुचेगी। ६ मई से १२ मई तक, बेद पारायसा यज्ञ, कथा, भाय महिला सम्मे-बन, मानवता सम्मेलन एक राष्ट्रीय एकता सम्मेलन का भागोजन होगा। ग्रतिम दिन १२ मई को ऋषिल गर होगा। समस्त कार्यक्रमो से घायों का सहयोग प्रविनीय है।

दिल्ली की समस्त आर्थसमाजी है, विशेषकर यमुनागरकी समाजो से निवे दन है कि शोमायात्रा में सोम्मलित होकर ग्रार्थसमाज की शोभा को बढायें।

> श्यामसुन्दर विरमानी मन्त्री

प्रतिभावान् छात्रों के लिए सुश्रवसर २०० रू० मासिक छात्रवात प्राप्त करें

गुरुकुल सिह्पुरा-रोहतक मे महर्षि वयानन्द के मन्त्रम्यानुसार ग्रावं पाठविधि से अध्ययन करन के इच्छक छात्रों के लिए विशेष व्यवस्था की गयी है। ब्रध्ययनरत १० छ।त्रो को २०० व० प्रति म स छ।त्र-विस वी जावेगी। प्रवश के लिए न्यूनतम १० वी कक्षा उतार्ण होना बावश्यक है। आत्रो के लिए महर्षि दयानन्द विज्व-विश्वालय राहतक की भाग विभाव की विशारत, शास्त्री एव भाषाय परीक्षाए देने की भी व्यवस्था रहगी। आत्रों को वैदिक कर्मकाण्ड तथा मार्थ सिदान्ती का ममञ्ज्ञ बनाया जायेगा तथा वस्तृत्व कला एव लखन की विशेष शिक्षा दी जावेगी। गुरुकुल के धनुशासन एवं प्राचार सहिता का पासन करना छात्रों के लिए प्रनिवाय हांगा । वैदिक सिद्धान्तो पर निष्ठाबान् एव वैराग्यकान् छालो को प्राथमिकता वी बाबेसी। खात्रों का प्रवेश प्रारम्भ हो चुका है। छात्रवृत्ति के इच्छुक छालो का भावेदन-पत्र ३० जून तक भाना भनिवार्य

श्राचामं द्विवराज सल्कृत महाविद्यासय नुक्कृत सिङ्गपुरा-सुन्दरपुर रोहतक हरिवासा

गोतमनगर दिल्ली में

बापको यह जानकर ब्रस्यन्त हर्व होता कि श्रापकी प्रिय सस्या श्रीमद्दया-नन्द वेव विद्यालय गैतमनकर मे २१०० वर्ग फूट मे जनी सब्य बज्जवासा का जद-घाटन धार्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान आर्थ नेता अद्वेय की स्वामी मोजानन्य सरस्वती बारा ॥ मई १६८॥ रविवार प्रात ५-०० बचे सं १२ वजे तक सम्पन्न होना।

इसी पूनीत सबसर पर शी नामा जिलोक बन्द जी वैश्य द्वारा बनवाये गये १५ 🗙 १५ फुट मे निमित्त चार कमरो का उद्घाटन भी सम्पन्न होना । भीर इसके साम साम नेद विद्यालय की स्रोर से नव प्रकाशित ऋग्वेद का विमोचन भी होगा।

१२ से १ बजे तक ऋषि लगर की व्यवस्था है। झल झाप समय पर पचार कर कार्यक्रम की शोभा बढाये, और ग्राधिक से ग्राधिक शन्न धन का दान देकर पूण्य के भागी बने।

निवेदक

प्रसास सयोजक नी॰ दिलीप सिंह रामनाय सहगल

मानामं--- हरिदेव

हैशास्त्री पर विशाल शोभायात्रा

वैशासी, के पावन पर्व पर हिन्दू विकास परिषद् शकूरबस्ती दिल्ली-३४ के तत्त्वावयान म विद्याल श्वामागात्रा निकाली गई जिसमे हजारा कोयो न भाग जिया।

इसने १५ वस्तियों के द्विन्द्र मन्तिरी के सगठकों ने राष्ट्रीय व हिन्दू एकता की शपम भी व जनूस निकासा ।

केन्द्रीय धार्य युवक परिषद् के बुवकों तथा महारानी आसी विगेष की युवतियो ने इस धवसर पर गतका, तलवार, बाठी जुडोकराते के सुन्दर व्यायान प्रदर्शन दिखाय ।

> चन्द्रशोहन सार्थ मवाददाता, युवा उद्वीव

श्रावश्यकता है

दिल्ली आय प्रतिनिधि समा के कार्यासय के लिए एक सुवोग्य विद्वान् की ब्रावस्थकता है जो वेद प्रचार की व्यवस्था में समयोग दे सके । दिल्ली का गीनोलिक बान रहाने वाले महानुमाव को वरीयता दी बायेशी । वेनन योग्यतानुसार सीध सम्पर्क करें। बहाय जी दिल्ली बार्य प्रतिनिधि समा

बधाई स्वीकार करें

बादरखीय सम्मादक जी,

मावर नगस्ते।

''ब्रावंबन्देश' का ग्रावंसमाज स्था-पना दिवस विशेषाक मिला। विशेषाक वास्तव मे सुन्दर एव झाकर्षक था । मुक्त-पुष्ठ पर ऋषि दयानन्द काचित्र अस्यन्त सुन्दर एव मन मोहक था। इसमे सभी लेख शिक्षाप्रद एव प्रेरणादायक वे । सम्पा-दकीय लेख का तो बयना बालग ही महत्त्व

जब से धापने इस पत्र के सम्पादन का कार्य भार सम्भाता है तभी से पत्र की वृति में बान बाई है तथा वह बड़ी तीय वित से भारती सोकप्रियता की और बढ रहा है। आसा है कि यह पत्र सीध्र ही एक सशक्त एव प्रभावशाली पत्र का रूप वेबा । विशेषाक की सफलता हेत वयाई ।

- राजकुमार आयं ग्राम पो॰ दुल्मागढ गोहाना सोनीयत)

जब से धापने धार्गसन्देश के सम्यादक का कार्यभार सभावा है, पत्रिका उन्नति की झोर सप्रसर है। महर्वि दया-नन्द बसिदान शती स्म रिका बार्यसमाज स्थापना दिवस, महात्मा हसराज दिवस विशेषाक सम्रहणीय व उत्तम लक्षो से युक्त है। 'मार्यसन्देश' का मविष्य निश्चित ही बापके कुशत खम्पादन में उज्जनस

> चन्द्रमोहन द्यार्थ प्रेस सचिव

विद्वव्यर सुषाञ्च जी,

मैं पिछने प्रनेक वर्षों से साप्ताहिक 'आर्थसन्दर्श' का नियमित पाठक हु। इसमे नेव, उपनियद्, बाह्याम संयो तथा बजादि क सम्बन्ध मे दुक्द विषया को जिस सरल एव सुबोध गैली म लिखकर पाठको तक पहचाया जाता है वह सर्वेचा श्रवसमीय है। यो ता श्रायसन्देश के सभा म क पाठको का ज्ञान बधन करते हैं, लेकिन इसका धायसमाज स्थापना विवस विशेषाक विशेष रूप स सब्रह्मीय तथा पठनीय है।

एक पत्रकार के नाते में वह विश्वास के साथ कह सकता हू कि आर्यसन्देश का सम्पादकीय एव विवयनयन स्तर दिमानु-विन उत्कृष्ट हो रहा है। युक्ते बाधा भीर विकास है कि धापके सम्पादकरक में बह साप्ताहिक पत्र और वी उत्कृष्ट होता।

नेरा एक सुभाव है। वेबो, उपनिवदो, बाह्यस्य प्रन्थीं बादि से कोकहित की कवाएं जी धार्यसन्वेश में प्रकाशित होनी

> धाचार्व वयवधी का भूका **स्वतः**स्थादक 'गूनीवार्ता" नई विस्ती

निर्धन छात्रों की सहायतार्थ पस्तक संग्रह श्रभियान

केन्द्रीय सार्थ युवक परिषद् विल्ली प्रदेश के निर्धन छात्रों की सहायतार्थ १२ वी कक्षा तक पुस्तकें तथा पुस्तकालय उप-बोमी उत्तम साहित्य संग्रह ग्रमियान चला-

परिषद् के कार्यकर्ता घर घर वाकर धैलिएक पुस्तकें एकत्रित करेने तथा पिछडे व कमजोर वर्गके विद्याधियों से सम्पर्क करेंगे। युवा वर्ष के उपलक्ष्य मे निवंन विस्तु प्रतिभाशासी छात्रों को नई पाठ्य पुरतकों भी उपसब्ध कराई अधिंगी।

धार्य जनता ने धनुरोध है कि प्रगर इस रचनात्मक कार्य ने सहयान देना चाहते है तो हमारे नजदीकी कार्यकर्ता से सम्बद्धे करें।

> पत्र व्यवहार एवं सम्पर्क हेत् पता-चन्द्रमोहन ग्रार्थ ७०४८ बेरी बाला बाग, दिल्ली-६

ग्रार्य जनता से ग्रंगील

श्रार्य शिशु मदिर के लिए दिल स्रोलकर दान दें ५

भार्य निदान्तों तथा वैदिक विचार वाराम्यो का बच्ची की जान कराने के निए प्रार्थेसमाज रमेश नगर में "प्रार्थ शिशु मन्दिर" की विविदत् स्थापना दि॰ १-४-८६ से की वा रही है। आये वहिन भाइयो से अपील है कि इस नव स्थापित की जाने वाली सरका के लिए दिल सोल-कर दान दें।

कृपया साम दान सार्थं शिक्षु मन्दिर के नाम से बनादेश, नकद वा चैक द्वारा धार्यसमाज रमेश नगर, नई दिल्ली के पते पर मेजें।

> मन्त्री, धार्यसमाज रमेख नगर, नई विल्ली

प्रवेश सूचना

जबदगुरु ऋषिवर दबानन्द की जन्म-स्थली टकारा में 'श्री महर्षि दयानन्द स्मारक दुस्ट टकारा" द्वारा सचालित धन्तर्राष्ट्रीय उपवेशक महाविद्यालय 🦠 नये मत्र के लिए महान् उद्देश्य काले विधा-वियो का १ जुलाई १६८६ स प्रवेश प्रारम्भ है। प्रवेश की सन्तिम तिथि १५ जुलाई १६८६ है। चार वर्ष के प्रशिक्षण समय ने उपवेशक विद्यार्थियों को ट्रस्ट की तरफ से भोजन, धावास वस्त्र व पुस्त-कादि समस्य धावस्यक वस्तुए नि.शुरूक प्रवान की जाती हैं।

प्रवेशानी की योग्यहा कम से कम हाईस्कूल (मैट्रिक) उत्तीर्ग और १६ से २४ वर्ष की प्रादु एवं स्वस्थ होना प्रति-बार्व है प्रवेश के इच्छक स्नतिसीम निब-निवेदक नावसी नि सुरक गगायें।

हरीयोम् विदान्ताचार्य उपाचार्यं उपवेशक महावि**द्यालय** टंकारा रावकोट (सीराष्ट्र)

गुरुकुल किशनगढ़ घरेडा का वार्षिकोत्सव

महेत्रवद २० ग्रंपन (सनिवार) का बातवा वार्षिकोस्सव ४५ मई को वर्षा क्षम वाम से मनाया वायेगा । गुरुकुन प्रविष्ठाता श्री ब्रह्मचारी दयांवीर ने ■ताया कि हरियाणा विकासहेन्द्रगढ के विश्ववे क्षेत्र में स्थित इस पुरुष्ट्रण में बहा वारियों को नि चल्क शिक्षा सुविधाए दा व ती हैं तथा क्षात्र वास व्यायामशाला बोधासा यज्ञशाला की भी समृत्रित व्य बस्या है ।

वार्विकोत्सव के उपसदय से बुद्धूक में महासय हीरालाल गुरुकुल किशनबढ़ वसेडा शिक्षा समाब-सुधार राष्ट्र रक्षा सम्मेलनी का बाबोजन किया ग्या है जिनमे बाय समाज के उज्बकोटि के श्रासी विद्वान मजनोपदेशको क प्रतिरिक्त के ति एव प्रान्तीय मंत्रीय राजनता शी पदा

> च द्रमाहन संय सवाददासा यूना उदधान (पाक्षिक) मायसमाज कवीरवस्ती दिल्ला ७



प० सत्यव्रत सिद्धान्नालकार स जिज्ञासा

महोदय

धायस देश के ७ धप्रल के सक म प० सत्यवत जीका ≯ल विचार लजक है। उनसे निवेदन है क्रुपया वे प० दान ब धुकी द्वारा सकतित स्वामी दयान द की बजात जावनी का प्रामाणिकता के सम्बन्ध से के तस्य उपलब्ध करें सना स्पष्टकर कि क्या उन्ने इस ग्राम का वह कप माय है जो सावदेशिक मे वारावाही प्रकाशित हुआ वा प्रमवावह जो सना कार स्वामी सच्चिदानन्द जी द्वारा सम्पा दित होकर प्रकाशित किया गया न्योकि ग्रव अज्ञातचीवन के नय परोकर अब इसके बतमान रूप का भा नगोधित करने जारहे हैं

> भवानीलाल भारतीय खण्= ग्

वार्षिकोत्सव

ग्रायसमाज तिसकतगर (पo) नइ लिली १ का बार्षिको सब ५ मई १६८५ से १२ मर्ट १६८५ तक हो रहा है जिसमे यज्ञ तथा वेदकवा प० बगपाल सुवास जी की होगी।

विनेष समारोह १२ म^{र -}विवर प्रात ७३० से १०० बच्चे तक । वस्ता

१ औ रामनोपाल जी शासवाले

सभा दिल्ली

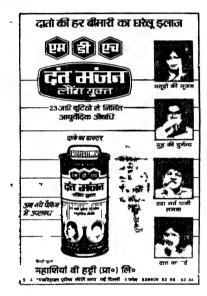
- प्रयान सावदेशिक ग्राथ प्रतिनिधि समा २ श्री सुबदेव जा प्रधान दिल्ली आस
- प्रतिनिधि समा ३ महाशय घमपाल प्रधन ग्रंथ के दि
- ८ १० त्रमपास की महासात्रा दिल्ली भाग प्रतिनिधि सभा दिस्सी
 - श्राय वन्या विद्यालय शिक्षा माग भिवाना

प्रवश सूचना

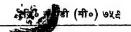
रन एव प्रभाकर का (केवल क साम्रो के लिए) प्रथम जुलाई १६=५ से प्रवेश बारम्भ है। यो यंव अन्त्रभवी अर्थ्या नामो की व्यवस्था है। इच्छक छात्राए सम्पक करें। सनी धाकक्या विद्यालय (हरिय पा)

घरेलू उपयोगी बात

- जल हए धवंपर गोल के तल को दिन मे रोज त न चार वार मालिंग करने पर जलन कद नान च न्निमे टीक हजता है।
- 🗆 हवीदातक चीजयदि पील पड गई हो तो उन की शे के फ स म रक कर बुप म रखद फिर से स्केश
- 🛘 यदि पद्मापर स्थाही के दाग प हो तो थोडा सा दूव डालकर रगडि स्वाही साफ हो जायेगी।
- 🛘 ६० जीको साम रम देने के सिक्ट् शाबुत शास भिष को बीब निकास कर एक बटा शानी में पड़ा रहन द । ब्रव इस पानी को सम्बी में डावों ब्रव्यों का रन विल्कुल बाक्ष हो वार्वेगा ।







श्चर्य जगत की शान २०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन नेत्र चिकित्सालय

(अनुमानित लागत दो करोड रूपये) के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि ग्रायम्र ग्रिषिनियम जी० ६० के भाराबेत कर मुक्त होगी।

सारा बात चैक/मनीमार्बर/बेक कृष्ट हारा मत्री माता चन्तनदेवी आर्थ धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय, बी-१ जनकपुरी, नई-दिल्ली-४= के पते पर भेजा जाए। दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर अकित किए जाएगे।

निवेडक

राक्त्मोपान तालवाले पूर्ववेष महास्तव वर्गपाल प्रोत्तप्रकार बांवं सरस्कर विकित्सालय प्रवान विक्ली प्रवान कल्पी एवं प्रवान शाव्या धार्व प्रतिनिथि प्राय केन्द्रीय प्रशास्त्र कुलीलाल प्रतिक समा समा समा केरिक दुक

सौजन्य से महाजिया ी हुट्टी प्रा० लिमिटेड १/४४ कीर्तिनगर, बोद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-११००१

केवल ५० रुपये में तीन वर्ष तक हर सप्ताह पढ़ते रहिए

- □ क्या ग्राप ऋषि, मुनि तपस्वी, बोर्सिक के वासी पढ़ना बाहते हैं ?
- चा स्वा साप वेद के पवित्र ज्ञान को सरल एव मधुर शब्दो में आनना चाहते हैं?
- क्या आप उपनिषद, गांता रग्मायरा बाह्यलम्ब्य का आध्यास्मिक सन्देश न्वय सुनना और प्रपने परिवार को सुनाना चाहते हैं?
- क्या प्राप प्रपने सूरवीर एव महापुरुषो की सौर्य गायाएँ जाननाः चाहेंगे ?
- क्या ग्राप महर्षि दयानन्द की वैचारिक क्रान्ति से ग्रात्मचेतनग् जागृत करना चाहते हैं?

यदि हाँ तो झाइये आर्यसन्वेश परिवार में लामिल हो जाइए। केवल ५० रुपये में तीन वर्ष तक हर सप्ताह पढते रहिए। साथ ही वर्ष में चार अनुपम भव्य विशेषाक भी प्राप्त कीजिए।

एक वर्ष केवल २० रुपये भाजीवन २०० रुपये।

प्राप्ति स्थान— आर्यसन्देश साप्ताहिक १५ हनुमान रोड नई दिल्ली-११०००१

उत्तम स्वास्थ्य के लिए

गुरुकुल काँगड़ी फार्मेसी,

हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

शासा कार्याजय-६३, गली राखा केवारनाथ, फोन : २६९८३० व्यवद्यी सामार, विस्ती-६





बूक्व एक प्रति . १० पैसे

वर्षे क्षांचा २ ॥

रविवार, १२ मई, १६=६

मार्थं संबरसर १६६०८१३०८१

वैशास २०४२

दयानन्दान्द — १६१

देश को अखण्डता के लिए आर्यो आगे आओ

—रामगोपाल शालवाले

आर्यसमाज मोतीबाग के वार्षि-कोत्सव के धवसर पर भाषण करते हुए श्री रामगोपाल शानवाले ने कहा इस समय राष्ट्र में भनेक विषम सम-स्याये मुह बाये लडी हैं। विदेशी ताकते हमे कमजोर करने में तत्पर हैं। देख की अलण्डता को भी चुनौती दी जारही है। महर्षि दयानन्द के समस्त अनुबाइयों की इस समय

भीर भी कर्मठ शक्ति सम्पन्न होकर धाने बढना होगा । धभी बापने धीम व्यक्त लहराया । इस सुष्टि मे पर-मात्मा का व्यव सूर्य है, सूर्य झाता है सोते प्राश्मिमात्र को जगाकर अपने कर्त्तव्यों पर चलने की प्रेरणा देता है'। यह ध्वज हमारी सामाजिक बेतना भीर जागुति का प्रतीक है। भायों । तुम्हारी यश कीर्ति की पताका धाकाशको खती रही है। धाज कही हम शककर या धालस्य में बैठ तो नहीं गये हैं हमें वर्ष में एक बार तो कम से कम झात्मा लोचन करना ही चाहिए। इतना आत्म विश्वास हमे होना ही चाहिये कि महर्षि का प्रत्येक शिष्य किसी से किसी तरह भी कमजोर नही है। जैसे आयों की परम्परा रही है.

हमारा भान्दोलन कभी ठडा नहीं पडा हमें कभी सामाजिक कुरीतियों के लिए लड़ना पड़ातो कभो देश की स्वतन्त्रता के लिए ग्राज देश की अखब्दता के लिए हमें फिर से धारी भानाहोगा। इस भवसर पर प० श्यामसुन्दर स्नातक प० यशपाल सुषाशुनै भी धपने भोजस्वी विचार प्रकट किये।

भारत की जनता देश को खण्डित नहीं होने देगी

आर्य नेताओं का उद्बोधन

आर्यसमाज करील बाग नई दिल्ली का विशाल वार्षिक समारोह सम्पन्न हुआ। उत्सव से पूर्व एक सप्ताह पर्यन्त श्री पः यशपाल सुभाशु की वेद कथा हुई। एक सप्ताह तक बृहदयज्ञ का धायोजन भी किया गमा। यज्ञ पर स्वामी रामेश्वरानन्द के अक्तिरस में भ्रोत-श्रोत प्रवचन हुए । प्रसिद्ध सगीतक भोनप्रकाश वर्मा ने प्रपने मधुर अजननोपदेश से बनता को मन्त्रमुग्ध कर दिया। भन्य यद्भशाला का उद्घाटन वार्षिकोत्सव में बर्गेक सम्मेलनों का भी भायोजन किया।

राष्ट्रीय एकता सम्मेलन मे बिद्वान नेताओं वे अपने विचार व्यक्त किये। प्रविकास वक्ताओं ने कहा, पवाब समस्या के हुल के लिए प्रधान मन्त्री को सीघ्र कदम उठाने चाहिए। कांग्रेश की भारत की जनता ने राष्ट्र सुरक्षा भीर एकता के नाम पर वोट दिवे। बानन्दपुर प्रस्ताव को न मानने धीर उपवादियों के साव सक्ती से वेश धानें के वक्तव्यों से निर्वाचन के समय जनता का मनी-

बल रढ हथा था। भारत की जनता ने खुन से सनी घरती को पाकिस्तान के रूप में बटते देना वा धीर शब यह भीर ट्कडे होती नहीं देख सकती। जनता के मानस में उठती माक्रोण की सहरों को ताडकर नर-कार को चाहिए राष्ट्रद्रोहियों, उग्र-वादियों को सस्ती से कुचल दिया

दयानन्त्र वेद विश्वाभय गीतमन्त्रर विल्ली में स्वामी भोमानन्द सरस्वती द्वारा एक अन्य बन्नशाबाका उद्चाटन किया नवा। इस भवसर पर दिल्ली धार्य प्रति-निषि समा के प्रकार भी सुर्वदेव की तवा प्रावेशिक बार्य प्रतिनिधि श्रवा दिल्ली के महासम्त्री भी रामनाव सहरक की उप-

धार्वसमाज असोक विहार केन I जी नवनिर्वित **वज्ञशाला का उद्**वाटन हुआ । इस वज्रवाता का विमीन शासा पुष्पावेबी के पवित्र बान से किया बया।

जीवन निर्झर है

यह जीवन क्या है ? ,निर्फर है, मस्ती ही इसका पानी है। सुस-दु ल के दोनों तीरो से, चल रहा राह मनमानी है। कब फ़ुटा गिरिके भन्तर से, किस भवल से उतरा नीचे? किस घाटी से बहकर आया, समतल मे अपने को खीचे ? निर्फर में गति है, यौवन है, वह आगे बढना जाता है। शुन एक सिर्फ है चलने की अपनी मस्त्री मे गाता है। बाधा के रोडा से लडता, वन के पेडो से टकराता। बढता चट्टानो पर चढता, चलता यौवन से मदमाता। लहरे उठती हैं, गिरती हैं, नाविक तट पर पखताता है। तब यौवन बढता है भागे, निर्भार बढता ही जाता है। निर्ऋर में गति ही जीवन है, इक जायेगी यह गति जिस दिन। उस दिन मर जाएगा मानव, जग-दुदिन की घडिया गिन-गिन। निर्भर कहता है-बढ़े चलो, तुम पीछे मत देखी मुडकर। बीवन कहता है-बढ़े चलो, सोचो मत होगा क्या चलकर। चलना है-केवल चलना है, जीवन चलता ही रहता है। मर जाना है इक जाना हो, निर्मार यह फरफर कहता है।

सत्संग वाटिका

ये सुविद्वास — वो उत्तम ज्ञानी विषयत + वारम् — सब धोर प्रवाह वाले यज्ञम् — यज्ञ — वेध्ठतम कर्म्स को विते-निरे— करते हैं फैलांठे हैं स्व + वस्त मोझ को बाते हुए [बे] न प्रपेक्सर्ये धन्य किसी प्रवास को] प्रपेक्षा नहीं करते।

वाम् --[बरन्] वी (बीर) रोवसी-पृथिकी भीर भन्तरिक पर भा रोहन्ति-पूरी तरह भारू होते हैं।

यह बात कभी नहीं भूतनो चाहिए कि यज वैदिकवर्म का प्राप्त है। वेद बारा का सारा यज का विधान करता है, किन्तु प्रक्र का माव वह नहीं, जो हमारे है। यज तो जीवन प्रति के हदय में है। यज तो जीवन प्रति का नाम है।

स्वय वेद ने कहा है — यज्ञेन यज्ञमयज्ञन्त वेदास्तानि धन्मीशित हैं। प्रथमान्यासन् ।। [य॰ ३१।१६]

ध्यानी जोग यज्ञ के द्वारा यज्ञ का यजन करते हैं यही मुख्य धर्म है।

चन्म का श्रयं है---यतोऽम्युदयनि श्रेयससिद्धि स वर्म ।

जिस से लोकोन्नति एव मुक्ति की सिबि हो वह वर्ष है।

भावार यह कि जीवन को ऐसा बनाना जिनमें प्रस्कुदय — चौनुकी उन्नति हो । जब एवा होगा, तो वह यज बन जायेगा। हा, उस यज में भी यज की भावना बनी रहनी चाहिए। इस माव को वेद से इन सब्जों ने कहा है—

> यज्ञो वज्ञेन कल्पताम्। 'यज्ञ यज्ञ से सफल हो।'

स्रवांत् वस्यं करने के लिए स्वयं का स्रवत्तन्त्रन नहीं करना चाहिए। वस्यां-नुष्ठान के विष्ए जब स्वयं का स्वतत्त्वन क्रिया जारेगा, तो यह स्वयं व जाएगा स्वयं का एक वस्यं या सुव कमी नहीं हो सकता। स्व जीवन को यज्ञस्य बनाना चाहिए।

बहुत को ड स्तोग इस तत्त्व को जानते है।

एक धनी धपनी निराहरी वाली की हुर्रवस्था देखता है। उस दु खदाधिनी खन्दमा से उसके जिस में बोट लगती है। धपनी उस करक को निरान के लिए नह कोई कारखाना सोल देता है भीर साव-धनता में इस बात नो देखता है कि उसके अभाव उसके दिवारों के धविरिस्त धीर कोई साव उसके दिवारों है। धुकि उसके ना दूसरों के लिए स्थान किया है। धुकि उसके मा यह मार्थ सुभ है। धुकि उसके चन का दूसरों के लिए स्थान किया है। धुक उसके मार सुभ मी है। इसके अपने दूस विकास प्रमान की है। इसके सुभ देखता सुभ सुभ है। इसके सुभ सुभ देखता सुभ सुभ है। इसके सुभ सुभ देखता सुभ सुभ है।

प्रभु की प्राप्ति का उपाय

स्वामी वेदानन्द तीर्थं सरस्वती

स्वर्यन्तो नापेक्षन्त ग्रा चा रोहन्ति रोदसी। यज्ञ ये विश्वतोघार सुविद्वासो वितेनिरे॥

---स० श्राईप्राप्त



एक वर्ष का उनकार होता है, किन्तु हस्ते विदेव उत्पान होने की सम्मावना सहती है, बीर उदसे उस यत के दूषित होने की सम्भावना भी रहती है। सस् सामि को सम्भावना भी रहती है। सस्

यज्ञ विश्वतोषार वितेनिरे। 'विश्वाथार यज्ञ का विस्तार करते

विश्वाबार यह का विस्तार करत हैं। इसका एक कारख है-वेद एवं हासूब

इवका एक कारण है-वह एव काह्मण प्रश्नों में यह का एक नाम निर्णण है। विष्णु का कर्ष है व्यापक। व्यापक सर्व-वेची होता है, एकदेगी नहीं। एकदेशीयम में वकीय है, वर्षदेशिता में विस्तार से वसी प्याप्त करते हैं। व्रत यह का विस्त-तीवार होना स्वामायिक हो है।

ऐसे झानियों के मन से अपने पराये का भेद नष्ट हो जाता है। उसका सिकात

श्रम निकः परो वेलि मलना सङ्गुष्टेतसाम् । 'यह मपना हैं, यह परामा है ऐवा

'यह प्रपना है, यह परामा ह एवा विचार शुद्रहृदय वालो का होता है।' जदारवरितानो तुवसुचैव कुटुम्बकम्।

'उदाराक्षय महाशय के किए हो सारा ससार निज परिवार है।

सर्पात् स्व-पर-निरपेक्ष होकर वे सबका हित सामते हैं। पापियो तक का पोषणा करना उनका सादखें है।

कई लोग पूर्तवावन घरने आपको उदार दिख करने के लिए परायो की तो सानादि ने दारा खहायता कर वेन हैं, किन्तु प्रयो की नहीं करते। वे रम्मी हैं नयाँकि उनके राग देने में कीर्ति की सानादि देने से कीर्ति की सामावना कम होती है। ऐसे लोग सामिक नहीं है, वे सो सानाहि है सामारी हैं। ऐसा न्यारारी कमी सफल नहीं होता।

समयं होने पर जो कुछ भी नहीं देता, वह कृपसाहै।

त्रिस का यज्ञ सर्वतोचार है उसका सर्वत्र बादर होता है। प्रमु बपने ऐसे सनुरानी के बिए परमञ्जूष-स्वः (मोसा-

तस्य) का द्वार बोल हेते हैं। तिष्काव नाव से विश्वादोशार वह का विश्वार करने वाले ऐसे महाल्या को मुक्ति-प्राप्त के तिए दाव्य किसी साथन की सावस्थ्यका नहीं हुमा करती। वह तो सावायक ही बरीराध्याक से उत्पर उठकर की (प्रकाश्यय सारमा) को प्राप्त कर लेता है। इस भाव को गण्य के दूवरे बरव वें ज्वनत किसा है—

भावां रोहन्ति रोवसी।

घवना वो कह सकते हैं कि उसे जूरिक प्राप्त के सावन बनावाह प्राप्त हो बाते हैं। वह पृथिवी:—कम्में विस्तार, धन्त-रिता = धन्त करसा के प्रधाद तथा बी-धारमा के सावारकार में सहब ने धाकड़ पहला है-

भा को रोहन्ति रोवसी।

यवनवेद [४।१४।३] में इस पूजिनी श्रावि पर प्राक्त होने की बात स्पष्ट करके कही वह है---

पृष्ठारपृथिकाः सहमन्तरिकमा-सहमन्तरिकाव् विवनास्त्रम् । विवो नासस्य पृष्ठारस्यक्वौतिरमामहम् ।

पृथियों की पीठ हैं, समीद वहिसूँक स्वा है उक्तर मैं स्वतिक्ष (सन्तर की स्वरुष्या) की सास्त्र हुसा है, समीद मेरी हृत्या स्वरुष्ठ हृत्य है की (आव सोक) को आपत हुमा हूं (की — झाल की स्वरुष्या — हु सामाद की स्वा)। देवीय-मान सानन के मैंने आपत किया है।

साक्षरण साथको को ये सीडिया धवस्य चढनी होती हैं। किन्तु को सर्वेदो-धार यज्ञ का विस्तार करते हैं, वे---

स्वर्वंग्तो नापेसस्ते

'मुक्ति की प्राप्ति के सिए किसी सामन की वरोक्षा नहीं करते।'

योग साघन

तुर्वातमस्य तंतीव्यावर्षा हुववं च वत् । मस्तिक्वादृश्यं प्रेरयत्वयमानोऽवि तीर्वतः ॥ तदा सवर्वत् शिरो केनकोक्तः

समुक्तितः काम, हो तत्त्रात्मे क्रमिरकाति क्रिटो क्रकमको मनः।। पाहिए। [क्र> १०१२।२६ २७]

वरितयकात् कर्ण —वस्तिम्क वे क्यर

रहने वाला यवनान अवनी —यदिश [अराएव] अवस सेमी

शस्य मूर्णानम्—इसके [—श्रपने] मूर्जा को [मन को == दिमाय को] च ह्रवसम्—श्रीर हृदय को

वर्षीम्य-प्क एव वीकर-बोड़कर बद्-यत [बाख को] वीर्षेत क्षींब-बिर के ऊपर को प्रैरवत-प्रीरत करता है। प्रवर्षेग्य-निश्चक बोगी का वद किर-बहु विर, वीर्यस्वानीय

समुब्बित --- इकट्ठा किया हुया देवकोश --देव-कोश [दिव्य स्वामा]

प्राण ---प्रास

बत् विरः--कत विर की [शीर्थ-स्वानीय ग्रम्मात की]

विश्च रक्षति—स्व तरहरका करता है।

सनो सम्मन्-और सन्त शोवन मन'--[और] मन [शीरका करता है।]

इन दोनों नची में सक्षेप से बोब की विभि का उपवेश है। बोब के जिए यहाँ कई बावरवक निर्देश दिए वए हैं—

१- सूर्वाननस्य संतीव्याचर्या हृश्यम्--

'दिस और दिमान को सीकर, सर्वात् हुदन और मन की एकता होनी चाहिए।'

विक्र मन कुछ और सोचे और हार्विक विक्र किसी क्षण्य और हो, तो योग हो ही तहीं सकता ।

२. सनवाँ —निम्चय (निश्चवता) ।

योग-सायक को चयमता का सर्वया स्वाय कर वेगा चाहिए। वयदाँ का एक बाय-खबर पहित है। कोर मार्च में पक्क बात-कार कर स्वार के संद्र्य बात को इस मनार के स्वाय कि में तरफ्ता हुवा दा गही, खर्चना स्वार के चाहिए। योग के विच्नों में पत्यक्षिय भी ने खबर को भी विक्रम बागा है। क्वत के बहुक हुगि होती है। बहुवा क्वेगाव हो बाता है। बेखा कि कहा बया है—

संश्रमातमा विमध्यति 'र्वसमालुनष्ट हो जाता है।'

ध्यवां का एक भाग यह भी है कि खाबनकाल में योगान्याखी का सरीश निष्करूप रहना चाहिए। जासन धडील होना चाहिए।

३ वयमान ==पवित्रता

सायक को धन्तरंत्र और बहिएव सीच ने सदा तत्त्रर रहना चाहिए। बाह्य पुद्धि स्तानादि सावगों से करते रहना चाहिए, जीर धन्तर की शुद्धि के सिष् काहिए, जीर धन्तर की शुद्धि के सिष् स्ताहिए, जीनादि को विचार से हटारी रहना चाहिए।

(क्षेत्र वृष्ठ ११ वर्)

🛨 वचन-सन्देश 🖈

शिक्षा

जिससे विचा, सम्यता, घर्मात्मता, जितेन्द्रयताथि की बढ़तो होवे भौर ग्रविचादि दोष झूट उसकी पिक्रा कहते हैं।
—स्वामी दयानन्य

शिक्षा का मतलब है व्यक्ति का समाजोपयोगी विकास।

 वास्तिविक शिक्षा का यह एक ब्रावश्यक ग्रग होना चाहिए कि बालक इस बात का ज्ञान प्राप्त करे कि जीवन सम्राम में वह प्रेम द्वारा घृणा पर, सत्य द्वारा ग्रसत्य पर ग्रौर सहनशीलता द्वारा बल प्रयोग पर बहुत सहज ही विजय प्राप्त कर सकता है।

शिक्षा का म्रथं है मनुष्य और बच्चो के शरीर, मस्तिष्क तथा मास्मा का सर्वागीया विकास।

---महात्मा गाषी

सम्पादकीय

सावधान ! शिक्षा-नीति में परिवर्तन हो रहा है

मारत सरकार शिक्षा नीति में परिवर्तन करने पर विचार कर रही है। शिक्षा के ढोंचे में भ्रामूल चूल परिवर्तन करने को सवाध-नामों पर चिचार किया जा रहा है। इस नीति में सरकृति और नैतिक मूल्यों का कोई स्थान न रस भारतीयता की भ्रमानना की चा रही है। शिक्षा को सरकृति निरपेश रलने का नतसब खुले रूप में मौबो-गिक हितों के दायरे में बन्द कर देना।

ला॰ लाजपत राथ के अनुसार अशेजों के भारत आने से पूर्व हमारी शिक्षा गैली एक व्यवस्थित रूप मे प्रवस्तित थी। ग्राम ग्राम में पाठशालाएँ स्वापित थी। छात्र व्यवस्थित रूप में प्रनेक खास्त्रों घौर विद्या का भ्रम्यास करते वे । त्रिट्सि साम्राज्य को स्थापना के बाद लार्ड मैकाले,ने शिक्षा पद्धति में एक योजनाबद्ध षड्यन्त्र रचकर परि-बर्तन किया। उसने १९३८ में प्रपने पिता के नाम एक पत्र निस्ता। "जो भी हिन्दू अभे नी शिक्षा ग्रहण कर लेता है वह अपने धर्म के प्रति सच्ची श्रदा व विश्वास लो बैठता है।" यही शिक्षा पद्धति भारत की भावी पीड़ी को केवल क्लर्क के व्यक्तित्व तक ही ले गयी। आज हम अग्रे-जिबत के रग में ऐसे रग गये हैं कि पढ़ा लिखा होने की परिशाषा इगिषक् का भाषाज्ञान होना ही मान लिया गया। भारत की शिक्षा पदित भभी तक भन्ने की पूर्वकालिक योजनानुसार चल रही है। इसमें सुवार के प्रयास न करके, मारतीय शिक्षा शैली को उपेक्षित करके केवल मात्र पाश्चात्य देखों की उचार ली गई तकनीकी को शिक्षा का भग बनाया जा रहा है। हमारी भारतीय पद्धति के भवसर पर थो बेसिक श्विसा है उसमें फिर भी बच्चे के मस्तिष्क को विकसित करने का, आत्मनिर्भर होने का प्रशिक्षण है। विकसित देशों मे प्रार-स्मिक शिक्षा के समय ही बच्चे उपकरणों पर निर्भर हो जाते हैं। बोडा सा सा लेन देन करने का गिएत जोडने की भी उनकी क्षमता नहीं रहती। उन्हें कैलकूलेटर का सहारा सेना पटता है। सरकार द्वारा कम्प्यूटर क्रान्ति लाने के प्रयास जारी है। नये बूग में प्रवेश करने के ग्रविकार से हमें विचत भी नहीं होता चाहिए परन्तु देखना यह भी है क्या बच्चों की मौलिक प्रतिमा को उत्कर्ष तक पहुंचाने में ये ससा-वन सहायक हो पाएँगै या प्रतिमा को लकवा कर देने में प्रतिशापक होंगे।

विषय में जनेक विकासिद हुए जिनमें श्री हरवर्ट, बा॰ मोरिया माण्डेसरी, श्री हरवर्ट स्पंसर, श्री स्थी, पेस्टाक्षोत्री और लार्ड मैकाले । बा॰ मेरिया माण्डेसरी ने बच्चों की चित्रवों पर ज्यान रत्कर प्रोसा-हिए करने पर बहा बल दिया। उनके प्रमुखार बच्चे को चण्ड वैचा बारीरिक कर से संतापित करना मणुनित है। श्री हरवर्ट की विचार- बारा वो धिक्षा में नैतिक और जारितिक विकास प्रावश्यक है। लाई मैकाले ने मारत में ७ मार्च १.८३ में प्रपत्ती रिपोर्ट देकर लाई विनिन्स मने देक के द्वारा खिला नीति की घोषणा करा दी जिन्स मने देक के द्वारा खिला नीति की घोषणा करा दी जिन्स का उद्देश्य विद्या सरकार द्वारा भारतीयों में यूरोपीय साहित्य और जान धिका का तबा ईनाई मन का प्रवार करना था। श्री मेंकाले को मारत के विकास को प्रवक्तार मन करने का पूर्ण दोव जाता है। दुर्माग्य है के कि विद्या को शिकालाल में विवारान है। भारतीय मनीवा प्रपत्ते आपे में इतनी वनी है, इसमें उच्चकोटि के धिकालिय मीत्र है। यदि उनको भारतीय पदित को प्रपत्तीया जाये। हमारा प्रपत्ता स्वरूप और मीत्र जिल्ला, नारदीय खिला, याजवस्त्र खिला, ज्याद खिला, ज्याद खिला, ज्याद खिला, ज्याद खिला, क्ला हमें दिरासत में मिली है। बहा। से लेकर जैवनी महित थी, महित्व दयानन्द पर्यं ने महान् विवारा मीत दी है। वहा। से लेकर जैवनी महित और महित्व दयानन्द पर्यं ने महान् विवारा में महित्व ध्वान के महित दयानन्द की कुल नीतियों में प्रस्तुत कर रहा है—

- श्विद्यार्थियों में शिक्षा के साथ चरित्र निर्माण मित माव-स्पक है। इसके लिए गुरुकुल शिक्षा प्रणाली मपनानी चाहिए।
- २ विद्यार्थियों के विकास, धादर्श विद्या धीर शिक्षा के लिए ऋषियों के ग्रन्थों के द्वारा ही पढाया जाना चाहिए।
- ३ ईश्वरीय ज्ञान वेद का स्थान जिल्ला में सर्वोपरि होना चाहिए।
- ४. शास्त्र के साथ बोबनयापन के लिए प्राविषक कला कोशल की सिक्षा भी दी जाये । इसमें कला शिल्ल, प्रायुर्वेद, इतिहाल, धनुबँद, गान्वर्बे, योगलन्त्र, नाट्यकला, तथा प्रशासनिक विद्या प्रावि दी जानी चाहिए।
 - ध्र वालक वालिकामो का सहित्रक्षरण बन्द कर देना चाहिए।
- ६ शिक्षा, गरीव समीर सब के लिए सनिवार्य श्रीर सर्वसुल भ, विनाव्यय के कर देनी चाहिए।
- ७. शिक्षा में स्वदेशप्रेम, स्वसस्कृति गौरव, ईश्वर भिन्त भीर भारमनिर्भरता भावि गुण अवेक्षित हैं।

--यसपास सुवांश

एक सर्वथा उपेक्षित परन्तु समर्पित जीवन

मुनिवर पं० गुरुदत्त विद्यार्थी एम०ए०

म्रोमप्रकाश भार्य



म्हर्षि दयान द के बेद प्रतिपादित सत्यज्ञान मूलक मन्तक्यो विदाती शिक्षाधी धीर विचारी की जिस सूबी के साथ मुनिवर गुरुदत्त ने समका जीवन में ढाला झौर प्रचारित किया उस पर विचार करके मनुष्य चकित एव स्तम्भित हो बाता है। बीवन मे केवल एक बार और वह भी इहलीला सवरता करते हुए ईश के सच्चे उपासक योगी यति तपस्वी दयान व को उन्होंने देखा वा । वार्तालाप करने या सका समा वान करने प्रववा महर्षि के ससव सम्पक मे रहकर उनके सद्पदेशों से लाग उठाने कातो गुरुदत्त जीको समय ही न मिला पर तुक्तमाल यह है कि १६ वन का यह नवयुवक यहाँव के प्राश्तो-सग के प्रद्भुत इ. य को देखने मात्र से जो कुछ प्राप्त कर पायावह किसी दूसरे को प्रथान हो सका। प्रायसमाज के प्रस्थात विद्वान् श्री पडित जमूपति जी एम • ए० ने इस चाम स्कारिक प्रभाव कानिस्त प्रकार से वरान किया है ---

— नवीन वेदात का सिद्धान्त इष्टि सृष्टि बाद के नाम से प्रसिद्ध है। पब्लि गुस्दत्त नवे बस्दत्त की सृष्टि

सचमुच ऋषि की बष्टिमाल से ही हुई थी यह सृष्टि असत् नही सत् भी। परमोक सिवार रहे ऋषि ने इन्हें एक दृष्टि देख लिया भीर ये कुछ के कुछ बन गए। धनेक साधु महात्मा ऋषि के शिष्य वन वे परन्तु जो शिक्षा आषाय के प्रतिम कुपा कटाक्ष द्वारा इस सरस विद्यार्थी को मिली वह किसी और के हिस्से नहीं बाई। गुरुदत्त ने ऋषि का सन्देश अपने हृदय पटल पर प्रक्ति कर लिया और समका इसके प्रचार का उत्तरवायित्व मुक्त ही पर है। ऋषि का बब्दि में भ्रातियों का क्रण्डन बाधीर वैदिक सचाद्यो का महन। धन पर बम का राज्य था सक्ति पर अक्ति का बाविपस्य था। गुरुवसः ने इस अप्रत्यकामण्डनका राज्यका**धा**वि यस्य का मानो चाज साल सिया। गुरु दत्त भानुविक सनिक था। ऋट दयानन्द की सेना में भर्ती हो गया भीर वयान-व की विख्याय अपने तन की सन को यन

याठक वृत्य [।] सस्कृत हिन्दी प्रमुखी

फारसी पदाय विज्ञान सुगम विचा रसा बन शास्त्र वनस्पति शास्त्र शरीर विज्ञान नक्षत्र विद्या बणित तत्त्व ज्ञान भाषा तत्त्व शास्त्र आदि विविध विद्यार्थो मे पारगत इस नवयुवक को किस शक्ति ने बायसमाज की घोर बाकुट किया? पारचास्यो की नास्तिकता बढाने वासी निकम्मी शिक्षा झौर विचारशारा से पूचक कर सञ्जी ब्रास्तिकता का पाठ किसने पढाया ? सस्कृत भाषा ही पूरा एव वैज्ञानिक जावा है यह ध्रुव सत्य गुरुदस्त को किश्र की कृपासे जात हुया? क्या किसी शास्त्राय में पराचित होकर उसने ईव्वर की सत्ता को स्वीकार किया? या किसी की तक्या शक्ति से पराशृत होकर उसे अपना माग बदमना पडा? नहीं बिस्कुल नहीं। कारण के बिना कोई काय नही हुमा करता। गुश्दत्त के जीवन की भिन्तनबारा में परिवतन भी विना कारण कैसे हो सकता था महान् सस्कारी बात्ना गुरुवल के एक दूसरी विजन्नात् त्रभु अक्ति के रगमे आसूल रगी ईरवर बलधारी दिव्य धारमा ने बिना कुछ कहे ही अपने समान धास्तिकता के रग ने रव डाला । महर्षि दयानन्द के प्राणोत्सव क्य ने मुख्दल का कीवन निन्तन रविटकीण सभी कुछ बदल दिया। श्रव उसे चाव है दयानन्द वन जाने की। धून है ईश्वर के सच्चे स्वरूप भीर वस्तो के प्रचार की।

एक बार किसी ने उनसे कहा परित थो धारको स्वामी औ के शोगी होने के बारे ने धनेक बातो का जान है। धार उनका बीचन चरित क्यों नही जिलते? ध्रस्यस्त नम्भीर होकर उत्तर दिया कि मैं प्रवास कर रहा हूं। प्रजनकर्ता ने पून मूझा—जीवन चरित कर क्षर चालेगा? बोले—धार कामज पर मिला जीवन चरित समक रहे हैं मेरे निवार ने महर्षि का जीवन चरित धरनी गूण बायु ने क्षित्रना चाहिए धीर हवी के लिए मैं प्रस्त कर रहा हूं।

इस सच्चे बारितक वेब बीर महर्षि द्यानन के मनन्यनकः प्रविभावानी विचारक सत्य और स्वाचार की सामी एव सामार प्रतिमा वृत्तमाही नृदया का स्मा २६ प्रमेश १८६४ हैं। को पुनत म निवासी सामा राजकृत्य सरवाना के बर

हुमाना। इनके वस्त्र विचातवा युद्ध दोनो में पारयस एव स्थाति प्राप्त कर चुके के।

जन्म, नाम तथा प्रारम्भिक शिक्षा—

भी नुरुदत्त का राश्चि के प्राचार पर नाम मूला रका गया। कुल गुरु ने वैरानी नाम श्रविक उपयुक्त समका परन्तु १२ वय का सायु में बालक गुरुवल अब सपने भारता के साथ हरिद्वार गया तब वहा के बोस्बामी रावेलाल ने वैरानी नाम बदलकर गुरादक्ता रस दिया को बाद ने अपने सुद्ध रूप नुस्वत्त में परिवर्तित होकर वावज्जीनम प्रचलित रहा । गुरुवत्त के पिता साझारामकण्य कय के स्कूस मे ब्रध्यापक ने । बत पहले स्वय नामक को घर पर पढाने के परचात् सपने स्कूल में ही प्रविष्ट करा दिया उत समय नासक की ब्रायुद्ध वयं की थी। ब्रह्म कास ये ही होनहार बासक ने मसनकी बौलाना रूम दीवान हाफिज खादि फारसी की पुस्तकों पढ डासी । डिस्ट्रिक्ट स्कूस ऋव से मिडिन परीका उत्तीमा करने के परचात द्यापको मुलतान के हाई स्कूल मे प्रविध्ट करा दिया गया । मुलतान में नाला वेतनानम्ब भीर जक्त रैनलदास भापके वनिष्ठ मित्र वे।

नत्कालीन परिस्थितिया भौर उनका प्रभाव

श्री सरवतत शर्मा दिवेबी सम्पादक नवजीवन ने तत्कालीन घवस्या का वराम निम्न प्रकार किया है—

धवेजी जान और स्कूमों से पढ़ने बाते जाय समस्त विद्यार्थी बमयब अध्य एव प्रम के सम्मीर समुद्र की धोर परिवार हो रहे थे। हिन्दू विद्यार्थी वर्णने वर्तमाम वर्ण के निवक और नक्ष्य होंगे के कारख तथा प्राचीन स्वासन वन के प्रमुचार से प्राचिक वस दिरोकी मुस्लमान और ईवार्ष बादि से पन बर र र डोकर बार है थे। बहुत तक कि कोई कोई दवार्ष और मुख स्वामों के पैनस्तरों से मुख्यानों के पैनस्तरों से मुख्यानों के पैनस्तरों से मुख्य प्राचना करते हुए विद्य तस हो रहे से और

प्राथमा कर रहे वे कि ऐसे धानकार के समय में मारत के दिला धीर परिचय के कोने से देशियमान धान साम उत्तर हुआ "कका नाम साम बसाथ है। इस पिका धानन ने समस्य विरोधी मतो के नवीन विद्यालों को प्रश्नीपुत कर किर से पिका कमातन बन के माकृतिक तिद्यालों को जो ध्रमानान्कार से प्रकट्टम हो रहे के प्रकाशित कर धाय बाति के होनहार नम्युक्त के बागिक सम पतन से सुर-तित कर दिया।

धार्यंसमाज मे

बुरुदत्त जी ने बाल्यकाल ने वर्ग के प्रति अतीव रुचि और शका बी परन्तु भग्नजी शिक्षा तथा पारचारवी के कतिपय प्रन्तों को पड़ने के कारण वह समिक दिनों तक स्थित न रहसकी । चन के प्रति **बरुचि और नास्तिकता की बोर भूकाव** को बस प्रदान करने में लुक्सियाना के स्वतन्त्र विकारक मुझी कन्हैयानाल धक बकारी के नेकाभी वे। मुसतान आर्थ समाज के साथ धापका सम्बन्ध जोडने मे मक्त रैमनदास तथा नाला वेतनानन्द जी का बढा हाच है। दोनो सुलके हुए सुयोग्य नवयुवक आर्यसमाज के प्रति पूरे निष्ठा वान् वे धौर बढी शरन से समाज का कार्यं करते वे । गुरुवसः जी से प्राय विविक विचयो पर इनका प्रेम पूरक बाद विदाद भी होतारहताबाः धन्तत इन दोनों की विजय हुई और महर्षिका सत्याय-प्रकास तथा ऋग्वेदादिप्राध्यभूमिका के स्वाध्याय ने बुन्दल की नास्तिकता को वहारना प्रारम्भ कर दिया तथा २ जून १८८० को यह विलक्षण प्रतिमाशासी युवक बायसमाज बुसतान का स्वेज्छा से समासद बन गया ।

लाहीर में आगमन-

नवस्वर १००० ई० में इट्टन्स की वरीक्षा गांव करके जनकरी १००१ ई० में वर्षा में

धास्तिक गुरुदत्त-

कालेज में पहते हुए ही आपने १ वन है के सत्त बीर १ वन १ कारफ में पत्ते कि विविद्य नवाब (Free Debating-Club) की स्वाप्ता की रात्त स्वय इस नवाब में पत्ती स्वयान की रात्त स्वय इस नवाब में पत्ती मार्ग पत्ती मार्ग प्रवास में के नवित्त स्वयान में के पत्ती मार्ग मार्ग पत्ती मार्ग मार

सामित्य ही ग्रंप स्टीर स्टाने ब्यूपादिनों के उस प्रवास की जो साइस पढ़ने के कारण वास्तिकताकी बोर वा रहा वा। एक दम स्तम्भ करके परमपिता जनकीरनर की प्रक्ति और विश्वास ने सवा दिया । बीड्रे हा दिना म दन विद्यावियो को पूर्ण विद्याध हो नवा कि वह ईस्तर विसकी विकार बार पुरक्षा का नवन आनेसमान के दूबरे निवय य किया है। ह्यारा सकता बाबपात भीर इस सुन्दि का एवांबता है। बस्तुह उब समब धपने सहुपाठियो का बण्या ब्रास्थक, ईश्वर यक्त, यह ब्रोर क्षेत्र का सम्बाधकानु गौर प्रेमी बकाना पांडर बुदरत या का विद्वता पूर्व बोय-स्वयी वक्तुवा का क्षा कार्य था। स्वय बामान् बाना बाबन्तयन सबत है कि क्वांचित् म हा वह प्रथम मनुष्य हु ।क विश्वके हृदय में पांडत मुख्यत का को वस्तुद्धाः चीर पापानुषाय न मायसमाच 🛊 पांच्या सकान्त्रों का व्हा निरम्ब करा स्वता बोर विसम्बर सन् १८८२ १० का प्राय-समाज आहोर क वार्षिकोत्सव पर वै बायसमाय का समाहर हा नया।

बुख्यल जा ने १८८३ ई० में एफ॰ ए०, १८८५ ईं में बी ए० तथा १८६६ ६० मे एम० ए० सर्वप्रवस रहकर पास की। कालेज ने पढ़ते हुए ही धापका धनिक समय स्वाच्याय, शाला-विन्तन तथा वैदिक वस के मुद्र तत्त्वों को व्यानने मे संबद्धा था। १८-३ प्रस्तुवर बासान्त ने ऋषिवर दयानन्त के छरीर त्यान के इस्य को वेखने केपश्चात् तो झाप सर्वात्यका वैदिक वर्ग के प्रचारक-प्रसारक श्रीवन नए वे।

भायसमाज का को साहित्य प्रश्नेजी भाषा व निसता है उसवे मुनिवर मुख्यत के प्रत्यों का नि सन्देह बहुत हो ऊचा स्थान है। उनक प्रन्थों, नेको धीर व्यास्थानी का संबह कर प्रकाशित कराने वाल बाहीर पार्यसमाय के तत्कालीन प्रधान भी साक्षा जीवनदास पैन्छनर वे। उनका यस या कि विचार का उच्चता, मानो की बेच्ठता, बैना की सुन्दरता और पास्ता, इंटि की विश्वासता और आपकता तथा सर्व को शक्ति और हुदव ग्राहकता की चच्दि हे मुनिन र का साहित्य महितीय है।

महर्षि ही स्मृति को स्विर रक्षने के **चिए स्थार ६ क्य में क्याए गए डी०ए०वी०** स्कूत द्वाबा कालेज की जन्मति के लिए व्यने स्वास्म्य की विस्कुत परवाह न करते हुए को सबक परिवास और प्रकार हारा सर्वसामारस को भाग्योजित कर वन समह क्या समका सहयोग और सहानुमृति प्राप्त करने का कार्य पुरवत्त थी वे किया बहुकोई सौरन कर शका। एन दिनों समके पार परित्र, विसक्षण पाडित्य एव उच्च कोटि को वस्तुताओं की बादो होर भूष बची हुई की। छनके एक-एक व्या-स्थान पर सैक्ट्रों ही नहीं कही-कहीं दो प्रमुद्धें वपनों के सिवाने का उन्हेच विवास

की परमावस्यकता क्यो ?

वचिप महर्षि स्वामी दवागन्य भी के प्रचार से विकित बनाब वान्सेलित और प्रभावित हो रहा वा परन्तु भावस्थकता एक ऐसे बिहान की बी, जो चिकित नर्ने को उसकी क्षेत्र जावा में वैषक सिद्धान्तों की सरवता का बीच कराने के साच-साच विदेशी धीर विदर्शी गतवाओं की धाप-तियो का निराकरता करते हुए उनकी वेव विका स्वकल्पित विष्या वारवाधीं धीर बान्दवाको को निस्धारतः प्रमाखित कर बच्छे । मुनिवर बुस्वस सस्क्रमण होने के हाथ-साथ पारपात्य निकान के मी महान् शता वे। यत वह कार्व वे ही उत्तव दीत्या सम्पन्त कर अकते वे बीर उन्होंने जीवन जर पूरी निष्ठा धीर निर्जी-कवा से इस वाशित्व का विश्वहम किया। विरोधी बाहे टी विशिवम्स रहे हो वा मि० पिनकाट सबवा ब्रह्मसमाज समित्र के कोई ब्रुज्बन भी परित की सब की सकाओं का निरन्तर सेख द्वारा सन्तोवसनक हन बे उत्तर बेते पहे। २३ वा २४ वर्ष की स्वत्व बायु मे विवेची सौर स्ववेसी प्रकाड पढिलो बीर विद्वानों के प्रश्तो का यवी-चित उत्तर देना पहित पुस्रक्त जी के बहुत सच्यवन तथा इनके सत्यप्रेम का खोतक है।

वेद भक्त गुरुदत्त-

वेद की सरवता पर गुक्दल की गुन्ध वे, बर कमी किसी वैज्ञानिक के कथित नये ग्राविष्कार की कोई उनसे चर्चा करना, तो वे फट से उत्तर बेते कि हा भाई वह वैज्ञानिक सच्चाई के निकट था बमा है। सस्पपूर्ण है और प्रभूदत्त नेव ज्ञान तवा वृष्टि नियम द्वारा पूर्व ही प्रकाशित है। जिस वैद्यानिक को बन जितना बोध होता है। उतना वह असत्य से दूर होकर शस्य के निकट का काता है। वस बही बाविष्कार 🕻, इससे बाने कुछ नही । अपने ऐसे ही पवित्र और सत्यक्षान यूनक विचारों को विसम्बर १८८५ इ० में बाहीर धार्यसमाच के वादिक उत्सव पर बिए गए अपने माचला में पश्चित भी ने व्यक्त करते हुए कहा वा-

"बाबुनिक विज्ञान बाहे उसमे कितने ही नुसा क्यों न हो, जीवन की समस्या पर कुछ भी प्रकाश नही डासता। वह अनुष्य की धारमा में धान्दोलन रैदा करने वाने सब से महान् और कठिन प्रश्न ममुज्य वाति के बावि मूल और इसके धन्तिम साम्ब के हुल करने में कुछ भी ब्हाबद्दा नहीं करता । बायुनिक विज्ञान वाहे तरदेव नाड़ी और हुड्डी को चीर हासे सीर सह की बूंद की सतीय सूक्य वर्शक बल्ब द्वारा को सम्भवतः उन्ने मिन्न सकता है, बड़ी क्षम परीक्षा कर से, पर इक्ष प्रका पर उसके कुछ भी बन नहीं पड़ता कि 'बहु बीवन के रहान को कोम नही अकता।' वाने ववानिकार्रे हक कीए-फार प्रोट करी-

गुरुदस्त जैसे प्रतिभाशासी विद्वान् अन करता रहे। बीवन की समस्या वेदो की सहायक्षा के जिला हम नहीं की जा बक्ती । वही केनम इस सब्नुत रहस्य का चदुवाट्न कर सकते हैं और उन्हीं की बोर वैद्यानिक नोडों को सन्त से माना

> पाठक वृत्य [।] कितनी संगाय अद्धा भीर अस्ति की मामना नेद शान के प्रद्रि नुस्वत्त के हृदय में विश्वमान थी। यह दढ साबना निरा विश्वास का क्य न होकर बेद को समझने और सत्य प्रमाणित होने के कारस ही बी। सम्बन्धितास तथा गतानुबतिकता की तो कत्पना भी गृहदत्त वैदे प्रबुद्ध निवारक से नहीं की बा सकती।

इस प्रतिमाधामी वेद मनीबी तपस्वी विद्वान् को पूरे र६ वर्ष की जन सेवा का धवसर न मिन पामा परन्तु इस स्वल्प जीवन में ही उखने प्रमित वस और कीर्ति का शर्जन कर सिया । स्वर्गीय पश्चित वमू-पति जी ने ठीक ही फ़िक्स था---

" "यदि इनकी बाबु कुछ सम्बी होती, तो इनके हारा जाने क्या क्या पांडित्य के, विकास के, तर्क के, बाध्यारिमक धनुभूषि के धमूल्य रत्न केवल आर्यसमाज ही को नहीं, किन्तु सम्पूर्णमानव-ससार को हस्तगत होते । इस मगरिपका मगस्या ने इनके लिखे हुए लच्च लेखा तथा पुस्ति-काएं ही इनके बसीम राहित्य के बीच ही में इक गए प्रवाह के श्रकाट्य प्रमाण हैं। गुक्दत्त केवल पहित ही न या, वह सञ्चाऋषि पुत्र वा। उसे न वन की पर-वाहबी,न जनकी।सचकी बदी पर उसने अपना सुल, सम्पत्ति, नाम और धाम सब स्वाहा कर विया।

भागं पत्रिका का लेखाश--

१६ मार्च १-६० ई० को जब युद दत्त का शरीरपात हुआ तब धार्य पत्रिका ने हुमारी क्षति शीवंक ते एक लम्बा भीर हृदय विदारक लेख शिक्षा वा जिसका निभ्नाषा प्रत्यत विचारणीय है।

"एक मनुष्य एक श्रसाधारण मनुष्य एक प्रश्नोकिक मनुष्य संस्कृत विद्या का एक सच्या और प्रद्वितीय पहिता प्राचीन ऋषियो का बराज इस संसार से उठ गया। श्रावंसमाज का भूषण भीर गौरव सत्य भीर ज्ञान का भादर करने वाले सभी शोषों के प्रशिमान परित बुददत्त विद्यार्थी श्रव हमारे पास नहीं हैं। हा बह पुण्या-त्था श्रव नव्यर शरीर में बन्द नहीं युवा भीर बुद्ध हम सब उन्हें दू व रहे हैं। सत्य तो यह है कि हमें सभी इस बात का विश्वास नहीं होता कि वे हमें खोड गए हैं। हा हम फिर सन बैसा मनुष्य कब देखेंने ? हम फिर ऐसा मनुष्य कर देखेंने जिसके रोम्-रोन में सक्लाई के प्रकाश बैहिक वर्ष के सनातन सिद्धान्तों को फैलाने की कामना और परवेश्वर की वाली तथा उन सोवों को बाबी के द्वारा जिल्होंने तम बाखी को चाना और समन्ता, बंबार के सामने वाने की कामना रम रही हो। हा बुक्दत्त विद्यार्थी। इस समय तेरी कति बसमाचेय है । बपने विशेष क्षेत्र में तू कोई भी ऐसा मनुष्य पीछ नहीं छोड नवा जो नह काम कर सके, जिसे तने

मार्थ पविका के प्रतिरिक्त धवष शसदार सलनक, रफी के हिन्द शसवार, रावी असवार, दूरबीन, पैसा असवार साहीर प्रस्तार, गमस्वारे हिन्द, पजाद निरर रावलपिण्डी, प्राफताब पजाब नाहौर, इम्पीरियस पेपर लाहौर, प्रसदार सरमीर गवट, कोहनूर साहीर, ताबुख धनवार रावनपिण्डी,सराजुल धनवार जेह-लग, सादक शसवार बहावलपुर, शलीवह इन्स्टीक्यूट गबट ससवार साम साहीर. वर्ग कीवन साहीर भारत सुनार साहीर, ईसाई पत्र दूनाईट लाहीर, नूर झफसां लुधियाना, राजपूताना गणट ग्रमभेर, सिविस एण्ड मिलिटरी नवट साहौर, धार्य समाचार मेरठ, भावै नजट फिरोजपुर, सढमें प्रचारक जालकर तथा दिव्यान लाहीर में श्री पहित जी ने देहान्त पर सम्पादकीय लेख बडी भावपूर्ण भाषा मे लिखेगए थे।

एक २६ वर्षका नवयुवक किस प्रकार इतना प्रमाव उत्पन्न कर सका कि धपने हो धपने बेगाने भी उसकी मृत्यु पर भाठ भाठ भास बहते देखे गए। बाबा श्रामिहोत्री भीर मुन्ती गोपीचन्द जैसे व्यक्तियो ने भी पडित जी की बोग्यता की भरपूर प्रशसाकी थी।

पर-त धाय बन्धुमी मुक्ते तो झापसे कुछ, पूछना है कि **बापने क**भी भू**ल क**र भी ऋषि मिनन के परवान बेद के सच्चे प्रचारक धौर वैदिक सिद्धान्तो की सत्यता मे विश्वास रखने वाले इस महामानव को स्मरण किया है। १=६० ई० के पश्चात् बाज तक क्या कभी किसी ध यंसामा-जिक पत्र पत्रिकायासभाने सपने पक्षो के विद्योगाक निकालने का प्रयत्न किया। मुनिवर प० सरुदस्त, ग्रमण्यहीद प० से अर-राम निशुल्क शिक्षाको गुस्कुलो के माध्यम ने प्रचारित करने वासे ताकिक शिरोमिष स्वामी दशनानन्द जी स्त्री शिका के प्रवत समर्थक और कन्या बहा-विश्वालय जासधर के संचालक सामा देव-राख जी, मस्ताने अचारक बलिवानी चिरजीसाल जी को साज हमारे नवयुवक तथा बच्चे कहा भागते हैं ?

धार्यबन्धुको-धपने पूर्वजो को जीवित रखोगे तो स्वय का जीवन ही सम्बा करोने तथा साथ ही इतध्नता के पाप से बच बाद्योगे ग्रन्थया जिस मार्ग का सब-सम्बन घज हम कर रहे हैं, वह मार्गन देवदयानर का है और न दयानस्य के बीवानो का । वह मार्ग हो यदि भाप दुरा म मानो तो वा मैकाले का है या ख्या-सीनों और कर्मद्वेषियो का । धार्यकीयो-भाई धीर वहियो-जानो धीर महर्षि के

(श्रेष पृष्ठ ११ पर)

व्यासपीठ---

उपनिषत् कथा-माला-३

सुख की प्राप्ति के विभिन्न साधन

प्रवचनकर्ता-वीतराग स्वामी सर्वदानन्द महाराज

उपनिषदों का कपन है कि सवय-क्षान क्षीर निपरीत-आन मनुष्य समाव के बी बढ़े अनु हैं। इन दोनों में नहां अन्तर हैं। जहां कोई जान विराज और दुविषा समुक्त हो जहें 'वंचय जान" कहते हैं। जनके मार्व पर चले आना और जब कोई बनायें तो हठ करना इसे 'दिवरीत-जान' चली हैं।

करणना करो धाप बोनानवर के रास्ते से मटक गए हैं। धापको यह विवार नहीं रहा कि मैं किछ मार्ग पर जा रहा है, किसी ने पूछा "धाप कहा वा रहे हैं?" धापने कहा, "शीनानवर" उसने कहा, "बीनानवर का यह मार्थ नहीं, यह तो धाप तीन मील गीखे खोड धार्थ हैं।" धापन मुसे वस्ताहए मैं किस मार्ग से जाऊं'। उसने कहा, "महागव तीन मील के धन्तर पर एक हुत हैं। बहुते से हाथ हुग्स को बीना-नगर का मार्ग जाना है।" धापने मुक्कर स्वस्ता धार्य पर धापने देनानवर प्रस्त वा पर सार्थ से सार्व से तीनानवर पर्य मार्ग पर सार्य पर सार्व से तीनानवर पर्य मार्ग पर सार्य पर सार्व से तीनानवर

परन्तु आशत को विपरीत शक्ति ने चे रा हुमा है। क्लू बन कहा जाए कि "यह काम न करी यह अच्छा नहीं।" तो भारतवासी मानने पर ही नहीं थाते। विपरीत शक्ति को भी मुधारा जाता है। पहने यह शबित कर दो कि यह मार्ग ठीक नहीं जसटा है। जन वहें दब बात का जान हो जाये और मान जाये तो बसे सीवा मार्ग बता थे।

यहा पर तो प्रतिक्त क्यवेश होते हैं। बदे-बड जोर जोर से कहा बाता हैं । बदे-बड जोर जोर से कहा बाता हैं । अहे जा के पर तुम चन रहे हों वह करते हैं। वह करते का लोग करते हैं और क्षिण कोर विपरित काल" कहते हैं और क्षिण कोर विपरित काल" कहते हैं और क्षिण कोर विपरित काल" करते हैं और क्षिण कोर का है। व्यायमतक से यह विदात करावा है कि 'होनवा में करते करता के काल करते नाले क्षण काल करते हैं।"

श्रव उपनिषत् कहते हैं "क्या माता, क्या पिता, क्या पुत्र, क्या खीर कोई सभी

के इत्य में एक गाउ है भीर वह भविका की गाउ है। इसलिए अनु अववान भीर पुक्षतीयात शहाराज ने भी कहा है स्व 'क्षीब यपने सजान के कारण घपने सन्त-करण को पविज नहीं बना चपने। पहले इस अविका की गाउ को कोलने की कोशिश करो।" अविक्या ही वो उसकी समक का कारण, है। व्हिपनों ने मानिक के निवय में कहा है कि 'कुट्ट जानमनिया' सर्वात् रोधपुक्त जान हो सनिया है।

ज्पनिषद् कहते हैं —
निकाते इत्यप्रस्थि
क्षित्वाते सर्वसम्या । स्रोयन्ते चास्य कर्मास्यि तस्यम् वृद्धे परावरे ॥

इस अविद्या से छुटकारा कैसे हो? इस प्रदन के उत्तर में जिल्ला समुख समय समुख्य की धन्त स्टूट जाती है तो सख्य जान निर्मुल हो बाता है। जिल्ला प्रकार को भूत सेने से उत्तरे अपने की धनित नहीं रहती, बान का खिलका उत्तर को तो उत्तरी अपने कही उत्तर का तो उत्तरी अपने का सिंद की धनित की सिंद की सिं

जन अनुष्य पैदा होता है तो भावा के साथ उसका क्या सम्बन्ध होता है? पिता के साथ उसका क्या सम्बन्ध है? परमधिता परमायके साथ उसका क्या सम्बन्ध है? ये सह बागें उसे विद्या ही तो सिवाती हैं।

नारतवर्ष मे दान की प्रशाली ही निराली है। दान बहुत श्रव्हा है, कौन-सासुख है जो दान से मनुष्य का नही मिलता ? किन्तु क्या भारतवासी दान करते हैं ? ये तीयों पर जाना, गमा मे स्नान करना, बस इसी को दान-पुष्य समक्र बैठे हैं। माइयो [†] स्नाय दिन कुम्भ होते हैं, हरिद्वार का तथा प्रयाग का कुम्म बादि । स्या कशी यह सोपा कि इस धव-सर पर रेल वालों को तुमने कितमा द० किराये ने वे विया। धनुमान से ढाई तीन करोड रूपया हर एक कुम्सीमें रेलावे को किराये का दिवा चाला है। वह किस लिए ? इतसे क्या मात्र हुआ ? यया मे स्नान किया वस इसी को साथ पुन्य समय बैठे । यह कहा की बुद्धिमत्ता है किन्तु इन्हें तो जिपरीय-समित ने चेरा हुमा है।

तनिक देशों तो सही। समेरिका ने एक महोत्सव होने, वाला है। उस पर दश करोड अपये सामत का धनुमान किया बया है। इसमे उन्हें गंगा यमुना मे स्नान नहीं कराया कावेगा। बस्कि यह बताया जायेगा कि वत सताब्दी में विज्ञान ने कितमी जम्मति की है ? कहा तक पैर फैनाये हैं। परन्तु तुमने यह स्पया किस सिए सर्च किया ? गङ्गा-स्नान से तुम्हारा नन कुछ पवित्र हुआ ? बोरुप समेरिका भौर जापान वाले करोड क्या ५० हजार राया भी ऐसी दिल्लगी में सर्व करने वासे नही। उचित तो यह वाकि अस्त करज की शान्ति होती। इन्त्रियों को क्यामे साया जाता। इनमे से एक कात भी हो जाये तो बस बेबा पार है। जिस प्रकार तीत बेग से वायु चलके वृक्ष को उचाड देती है, इसी प्रकार समाच का भी यदि ज्ञान से सम्बन्ध न हो तो वह ऐसे ही गिर जाता है, जैसे बायु वे बुक्त । परन्तु यहा तो घरना गुज गाना ही एक वहान् कार्य है, किन्तु ये जो कर्म हैं, ये सब जन्म और मरशुके देने वाले हैं।

एक बार में मुजनफरनदर से बरेली जारहाया, जिस डिक्बे में मैं सफर कर रहा वा उस डिब्बे में कोई और मनुष्य नहीं था। रहकी के स्टेशन पर चार सहके उसमे आ बैठे। वे कालिक के विद्यार्थी वान पक्ते थे। निकर, कोट श्रादि पहिने हुए वे। ऐसा प्रतीत होता वाकिये बनी पुरुषों के पुत्र हैं। उन्होंने मुक्त से पूछा, "बाबा जी ! यदि हम गायें तो साप रुद्ध तो न होंगे ?" मैंने कहा, "माई । ओ तुम्हारी इच्छा हो सो करो । गाने ने दोष कसा ? ' उनमे से एक दो नाने अने । एक मक्त बन मया उसने आयों बन्द कर ली धीर समा पुकारने—'हाय लैसा हाब लैला [।]" फट्टे के साथ जाकर टकराया । उसकी यह दशा देसकर मैंने कहा---

> वेस मजमूं का चुनून, तकता है केता ज़ार सु ? बढ में है सैना निहा, करता है किसकी चुन्तजू ?

तब तो चतने पांचें बोची भीर पाये वावियों से कहते जना "बहु बाबा तो पढा-विश्वचा है।" मैंने पूक्त, "वाही दे तिव संवा-नवन् की तुम सर्वे कर पहे हो, बढा बकड़े हो वे कहा के ये हैं क्यूनि वृक्त हुबरें को एक बार वेचा वा ना कहीं बार? इस बाढ़ ने उनके बीनन की, दुनिया के कुत कार-क्याचुर को देवा पकड़ा स्थान

उन्होंने उत्तर दिया, "वह तो शात नहीं।"

बहु है इस वेस की बचा। कहाँ का मजार् ? कहाँ की लीबा? परन्तु उनके स्वांक इस वेस के मुक्कों को भाष्ट करने के लिए रचे बारहे हैं।

एक भनी पुरुष बा। इसने अपने बौकर से कहा, "मेरा कमरा साली कर दे !" रात का श्रमव था। नौकर ने वीपक बसाया और कमरे के एक कोने में रख विया । कमरे की सब वस्तुएँ पुस्तक श्रावि निकासकर बाहर रस दी भीर कमरा कासी कर विवा । मालिक से कहा, "सर-कार ! कमरा खाली कर दिया वया है।" यालिक ने कहा, 'चनो वेसों।' जब वह कमरे में बाया तो उसने देखा कि दीपक कमरे मे रक्ता है। उसने कहा, 'जिस दीपक से तुमने प्रकाश किया दा, उसे तो कमरे ही ने रख नये।" वस यही हुमारी हाजत है। बिद्ध ज्योति से हमे प्रकास मिसता है उसे ही हम मूल जाते हैं। भाइयो, उस प्रकाश को पहचानो ! इसी ने तुम्हारा कस्याख होगा ।

जहां के लैंका समन् हुए हैं वहां की एक कहानी है। दो बादिशयों में एक माचा रुपये के लिए अमहा हो गया। मुक-दमा न्यायालय मे गया। कई हजार रुपने लग गए। झन्त मे उन्होंने यह निश्चय कियाकि इस प्रकार तो कुछ। फैसमा होता विसार्ध नही देता। असी चलकर मजनू से पूछे। उसे किसी का पक्ष नहीं होगा। उसकी तो केवल एक ही चुन है। दोनो उसके पास वए। मजन् अपनी सान से बैठा था । उन्होने अपकर उससे सवास किया कि 'यह रुपया किसे मिलना चाहिए ?" पहले तो उसने उस तरफ कुछ ब्बान न दिया। एक दो बार कहने पर उनकी तरफ देखा धीर कहा, 'लैला की।' उन्होने कहा, 'चलो लैला से पूछे।' वन उससे जाकर पूछा तो उत्ने कहा, 'मजनू को।' जैसामजन्से यही सबक सीको। जिस करह उनके दिस मे एक दूसरे का प्रेम या। तुम ईश्वर से उसी प्रकार प्रेम करके देशो । आपके अन्दर कितना तेज बाता है। यह क्यो ?

चुल यया राज जिसको पिनहानी। हेज है उसको साजे सुसतानी।

इसीसिए वर्गनवर्यों ने कहा है कि हृदय की प्रत्नि जन दृट जाशी है तो सन स्वय निर्माण जन दृट जाशी है तो सन स्वय निर्माण जो है। वैते करने के ये सन अम दुर हो जाते हैं। वैते मूर्यन की रस्सियां कर तक न केंब्री बावें करने से सक्त ठीठ नहीं निकलता। इसी प्रकार समने हृदय की रस्सियों को बीचों! अकार समने हृदय की रस्सियों को बीचों! समित दृह जावेंची धीर सब संस्था दूर हो साबेंच हुए सो साबेंचे।

विन सीगों ने शुभ कार्य करणा सपना सर्वे मान सिया है और फुठे तथा बुरे कामों का त्यान कर दिया है विक्होंने उन कार्यों को यहन कर सिया है। विनक्के ईश्वर-मार्थित होती है, उनका सन्यान्यक्ष निज हो जाता है। जनुष्य-महार्थि की वो श्ववस्थाएं हैं, एक उठने की बीर दुवरी निपने की। उठने की धवस्था में वह पर-शास्त्रा में श्वव को देवता है और विपने की श्ववस्था में वह परमेश्वर को सब में देवता है।

बस यही यो नियम पुनिया में काब करते हैं। यदि सामकी मुक्ति में यह कर सा बांचे कि परमारमा खब में विद्याना है और हम बस परेयेक्ट में हैं तो फिर आपसे कोई भी दुरा काम न होना। वरतु यहां तो बात ही उनती है। को ईरवर-प्रार्थित का समय होता है, उसमें हम समेक प्रकार की बुराइमां सोमले रहते है। फिर साय कहते हैं सम्ब्या में दिक नहीं मबता। वाचान को वेख थी। क्या उन्होंने विनेमा नहीं देवे। उन्होंने भी देवे चर्चार कोड़ मीर उनने विच्या प्रहुण की दिए फिर सपना वार्ष पकड़ विशे । तुम मन को सपने वस में कर तो, किर बाहे विनेमा भी देव तो, परन्तु तुन उनने कुछ सान ही उठाओं । एक कवि ने ठीक कड़ा है—

पुबरे समर नोबवानों की हालत। तो यह ठीक है उन्मति की बनावत।। वहीं मूंह में तिनरेट वहीं वा की जाली। कहीं नृह पे कीते एहेची यह नाली।। हो बब नीजवानों को

भारत में बान की प्रएाली ही निराली है। दान बहुत अच्छा है, कीन-सा सुब है जो बान से मुख्य को नहीं मिलता? किन्तु क्या भारतवासी दान करते हैं? ये तीचों प जाना, गगा में स्नान करना, सब हसी को बान-पुष्प समझ के हैं। भाष्यों! जाये दिन कुन्य होते हैं, हरिद्वार का तथा प्रयान का कुन्य भादि। क्या कभी यह सोचा कि इस सक्सर पर रेल वालों को तुम ने कितना रुपया किराये में वे दिया। मनुमान से डाई-तीन करोड रुपया हर एक कुन्य में रेलने को किराये का दिया जाता है। यह किसलिए? इससे क्या कहां की बुद्धिमता है किन्तु इन्हें तो विपरीत-शक्ति ने चेरा हुमा है।

विज्ञातो समता है तुम मनामी भी [?] जिचर भी दिस को लगायो तुम सगा सकते हो। उसका स्वमाव तो बढा सीमा है। बच्छा यह तो बताबो[ा] वाप सिनेमा चाते हैं, वहां भी विस्त लगता है या नहीं ? या जब कोई बुरा काम करते हो तो कितनी जल्दी भाषका मन उसमें जन बाता है? उस समय बापका मन कीन सवाता है ? मन को सीचे मार्गपर ले जाना भापका काम है। पर यहाँ तो कूपच्य फैल रहा है। मला कभी कुपच्य करने वाले रोबी भी सब्खे हुए हैं ? कुच्च महाराज से भी यही प्रक्त हुआ वा कि मन बायु से प्रविक चचल है। वायु को रोकना हो सुगम है, किन्तु मन को रोकना कठिन है। उन्होने उत्तर दिया, "यह बान नही। मुलाब के फूल को मसलना कठिन है, किन्तु मन को खीचे मार्ग पर सनाना सुवम है। केवल प्रम्वास को परिपक्त बनाने की बावश्यकता है।" बालक पाठशाला में पढता है, बी॰ ए॰ पास करता है। वह शन को न लगाता तो बी० ए० पास कैसे करता? अञ्चा भीर सो । पहलवान श्वचाडे में कुश्ती सबता है, उस समय वह भन सगावा है कि नहीं? वस विन्होंने मन अलावा जनका ही बेटा पार हो जाता है। मेरे बाई! प्रश्यास करने की खाबस्यकता है। विद्यार्थी के समान, पहलवान के समान मन समाधो । इतकार्यहो बाधोने । मेरे शार्ष ! मन को समाना बढ़ा मुसम है। तुम को अपने मन से सलाह करते हो। एस समय मन भी तुमते कहता है उसका शक्टा करो । यदि वह कहे कि सिनेमा देखों, दो दब न देखो । दोग दार्कों ने भी इसी प्रकार सिद्धि प्राप्त की है। उन्होंने कहा है कि बंदि मन उसटे मार्गपर क्या क्षेत्र प्रवर्ते निवह पत्तो ।

फैंकन ने घेरा । सनेपार किस बॉति मारत का बेड़ा ?

अरपेक बात कठिन भी है आखान भी। बब नगुष्य का मन अपने बचा में हो तब तो सुतम है, यदि बचा से बाहर हो तो कठिन है। इसीलिए कहा है—

चुन्त गया बित वै राचे विनहानी। हैच हैं उसको ताचे सुनतानी॥

जैसा तुम चाहते हो कि दूसरा बादमी तुम से व्यवद्वार करेतूम भी दूसरो के साथ वैसा ही व्यवहार करो । उसी कांटे पर तुम भी अपने आपको तोलो, जिल पर दूसरों को तोलना बाहते हो। किसी की निन्दान करो। सदैव घण्छी बालों का विचार करो । प्रच्छी पुस्तको को पढ़ो । विचा पढने से ससय दूर हो जाते हैं। बुरे विचार जब मन में पैदा होते हैं तो मनुष्य नष्ट हो जाता है। ऐसे मनुष्य को कभी सुका प्राप्त नहीं होता। एकका शरी र दुवंस हो जाता है। कभी मृत्यु की इच्छा करता है। कभी बेसुच हो जाता है। विद्वानो तवा बुद्धिमानों ने अपने मन को वश में रक्बा, फिर उनको किसी प्रकार का अब न रहा। एक कवि ने कहा है —

> स्रवत से कुछ काम से, बात सीटकर तु सपने बर । कब तत्रक किरता रहेगा, नारा मारा वर बबर ॥ वा बाद होकर मता तु, नमीं हुआ है वे बाद र रास्ता सेरा इस है, वा रहा है वु किदर ॥ परणु विसु बादि दुर्वस है। इसके

वन में हुमाई कृष्ट-कृषकर भरी है। सही

दो विश्ववार्धों का ऋषड़ा ही दन नहीं सेने देता। एक फारती शावर ने कहा है----

इका ई इस्मत, विवासय कर्व बूद । कि तुरा रजो-समस सहस्र रक्य ॥

व्यवित्युके बहुरोग बीझ ही दूर करना चाहिए जिससे तेरा दुस दर्व सब मिट चाये। विषयाओं का दुस सब वानते हैं, सब समझते हैं कि यह बढ़ा मारी दुःस है। परन्तु इसे मिटाने का कोई बाह्य नही करता । बार्यसमाव बनारस की बात है, वहां एक मनुष्य बावा। उसके साथ एक बासिका थी। उसने मन्त्री से मिनने को कहा। उससे पूछा, "भाई क्या काम है।" उसने कहा मन्त्री साहब से ही काम है। बस्तु मन्त्री महोदय को बुलाया गया। जब मन्त्री भी बावे, तो उसने कहा वदि तुम्हें इस सडकी को समालना हो वो समाल लो, नहीं तो जहां इसका जी बाहे बसी जाए, बाहे मुसलमान हो जाये या क्रिस्तान । उस वासिका से पूछा गया तो वह बडे जोर से रो पडी। उससे कहा, 'रोम्रो नहीं।' उसने कहा कि 'मुक्ते विश्वास कैसे बाये कि तुम मेरी सहायसा करोचे। बब माता-पिता ही सहायक नही हुए, तो तुम कैसे सहायक हो सकते हो।' उस कन्याको धीरज दिया गया तो असने बताया कि "जब मैं झाठ नौ वर्ष की थी तव मेरा विवाह हुआ। इस समय मेरी बायुपन्द्रहसोसह वर्षकी है। यह जो मेरे साथ मुके यहा श्लोडने झाया है, नेरा बाजा है। इसी ने मेरा सत्यानास किया। भव इसका विवाह हो रहा है। मैं कहा बाऊ निरासर्वस्य सुट गया । इस बाति का कल्याण कैसे होगा? यह ठीक है कि मैं बुरी हू, किन्तु जिसने मुक्ते बुरा बनाया, इस पाप में फैसाबा, वह भी तो बुरा है। पाप तो दोनों ने ही किया है। एक का तो विवाह हो रहा है भीर दूसरे को घर से बाहर निकाला जा रहा है। दोनों को ही निकासा जाना चाहिए था।"

माहयों । ऐसी सैक्डों घटनाएँ प्रति-दिन होती हैं। जियर देशों उपर यहीं दशा है। इस प्रमाणे देश का कर कुछ नेगा? यह कैसे यह कोमा? जो देखता है कि आये दिन ऐसी चटनाएँ होती हैं, परन्तु मन वण में नहीं। सार्यक्रमाज मी दुर्वस है। इसमें समुख्य व्यक्ति सार्योगी हो वर्ष कबा होगा नहीं तो दाना जाता में पड़ा इसा है। पश्ली साता है ताने को देखता है, लीस में सा जाता है, नीजे उत्तर जाता है, दोने पर चाँच मारता है, किन्तु खब उड़ नहीं वक्ता। ध्याज ने पकड़ जिया और चिजरें में साक्षण वस विवा। यह हुसा क्यों, उचके मन में दाने का सोम स्रविक सा।

बाइसी ¹ सोक कर करो। गत से दुढ करो। स्वार्य बोह सो। वदि प्रयने समको कुस बनावा सहो हो तो दिस सम्बद्धी : वृद्धिवालों की संबंधि करो। वृद्धि बां बायेगी, दुवृद्धि दुर हो बावेशी। विश्व काव का साथ से साथ सम्बन्ध नहीं होता वह कवाणि खिळ नहीं होता । जिसस सब संसय दूर हो, उसी विचा के बाने कोषों ने सिर मुकाया है बीर उनका बेड़ा पार हो जाता है ।

हमला बर चुव में कुमी ऐ सादा सर्व। हम चूं भी केरे कि वर चुव हमला कर्व।।

सर्वात् ऐ मूर्ज तू सपने ऊपर स्वय ही बाकमण कर रहा है उस सिंह के समान विसने प्रपने ऊपर ही प्राक्रमहा किया वा। बुद्धिमान् होकर मूर्ख न बनो। सुनो । एक व्यनस में एक सिंह रहता था। जब उसे भूस लगती तो जो पशु उसके सामने बाता उसे मार देता। इस प्रकार वह त्राय सात आठ पशुरोज मार डालता था, परन्तु साता या केवल एक ही। बन 🖣 सब वनचर दुश्ली हो गए। छन्होंने सोचा कि कोई उपाय निकासना चाहिए। इस प्रकार तो बोडे ही दिनों में हम सब मार दिये जायेंगे। वे सब एकत होकर सिंह के पास गए और कहा, हे बनराज। तुम झाकमरा करते हो तो सब वनचरों को मार डासते हो किन्तु जाते केवस एक को ही हो। सतएव तुम साकमरा करने काकष्ट न कियाकरी हम प्रतिदिन एक पशुदोपहर की तुम्हारे भोजन के लिए मेज दिया करेंगे । सिंह बढ़ा प्रसन्त हुसा । उसने कहा, 'बहुत सन्छा' । कुछ दिन तो पशुधाते रहे, बन्त में एक दिन सब जानवरों ने एक प्रहोकर एक समाकी भौर कहा 'आईं[†] इस प्रकार तो हम सब समाप्त हो बायेंगे।' सरगोश ने वहा, 'प्रच्छा कल मैं आकना।' दूसरे दिन दोप-हर को बया, १२ वज गये परम्तु कोई पसुसिंह के पास न द्याया । १ बज वया, २ वजनये परन्तुफिर भी कोई पश्चून पहुँचा।सिंह बड़ा घबराया उसे मूख लग रही थी। इतने ही मे लरगोश राम पहुचे। उसे देखकर सिंहराज ने कहा, 'झरे ! एक तो तूसमय पर नहीं भाषा। फिर तुम्ह से मेराक्या बनेगा? मैं सब पशुष्रों को सभी समाप्त किये देता हू'। खरगोश ने कहु', "मैं यहा तुम्हारे भोजन के लिए तो नहीं थाया । मैं तो तुम्हें तुम्हारे वैरी की सूचना देने आया हू। इस जगन में एक और शेर धानयाहै। वह कहताहै कि यदि तुम दूसरे सिंह के पास जामोंने, तो मैं तम सब को भार टाल्या। मैं तुम्हें इसका समःचार देने भाषा हूं । यह सुनकर सिंह को बडा कोच धाया। उसने कहा, "श्ररे चल । बतावह सिंह कहा है [?] पहले मैं उसीको गार साऊँगा।" उसने कहा, 'चलो' [।] खरवोश क्षेर को एक कु**ए के पा**स ले साया, जिसकी मुहेर बहुत ऊँची बनी हुई थी। सरमोश कहने लगा, "सिंह इस कुएँ में बा। पता नहीं अन कहां क्रिय नया ? में देखें इस कोह मे तो नहीं।" सरगोस ने मुढेर पर चढ़कर देसा । बोसा ''इसी श्रष्ट में हैं"। वेर भी मुडेर पर चड़ गया । उसका प्रतिबन्ध पानी से पहा । उसने समका कि सचमुच दूसरा दोर इसी वें है। मेरे भय के बारे खिप बया है।

क्रिक पद्र ११ कर)

(गताक से बाने)

श्रद्धापूर्वक विचिन्त बज्ञो से, यहमय जीवन से, ज्ञान प्राप्त करते हुए सास्ति की प्राप्ति सञ्चल हो जाती है। हमारे भूत-कास में ज्ञानयज्ञ का धनुष्ठान सदा तीव रूप ने अप्रसर होता हुआ, सामाचिक जीवनो मे विश्व दिट (Vision) वा चिन्त्नको प्रदान करता था। ज्ञानकी बारा लोकिक भीर अमीकिक, प्रेंब बीर श्रीय आसुरी तथा देवी, वामपक्की या दक्षिणपक्षी भावि हुद्दो मे समर्वात्मक र्षण्ट से मागे बढी थी। दर्शनजास्त्र या मान्बी-क्षिकी विद्या का इसमे विदेश भाग है। वडे-वडे ऋषि मुनि भीर ग्राचार्य जब वपरोक्त बसत् भीर सत् विचारकारामो पर बम्बीर मन्बन करते ये तो वार्षियों के बीखून परिवर्तित हो बादे थे । वर्ग, सस्कृति, सम्यता भीर समाय-रचना के मये-मये जोत वह निकलते वे और समार को नवबीयन प्राप्त होता था । मैं वर्तमान बुग ने जानी पुरुषों ने जारतीय धान्वी-क्षिकी विद्या या दर्जनशास्त्र की पूर्ण चर्चा का किया जाना ग्रावश्वक समस्ताहु। यह विश्वविद्यालयों की पुन्तस्मनी मे ही समुचित रूप से हो सकेया। जब 'धर्म-निरपेक्ष शब्द बार-बार सना बादा है वो सौक्षक दप्टि से यम सम्ब तिरस्कृत हो चाता है। जब वैदिकी ज्ञानकारा "बाबार प्रचलो पर्न', पर्न वर का स्टबोब करती है तो 'Secular खन्द वर्मनिरपेक्षका के प्रवाँ ने भावारनिर पेक्षता की तरफ सीच ने वाता है। यही कारख है कि बतमान भारतीय समाज ने 'श्रष्टाचार बुरात्तरहते के फैलता जा रहा है ग्रीर नैतिक ५ ल्य बिर रहे हैं। अम सस्यापन या धमचक-प्रवतन एक हसी-मात्र दिलाई बेखे हैं। यम शब्द महान् है-यह कत्वय, पुण्यकाय कानून तथा व्य वस्था झादि में मुल्यत प्रयुक्त होता है। धमनिरपेल पब्द को सरकारी रूप से तिसाञ्जलि दा जानो चाहिए । भिन विन्त मतीया सम्प्रदायों के साथ अम श्वन्दका व्यवहार हुमारी प्रशिक्षा का परिचायक है। सब सम्प्रदायों के प्रति उदारता का परिचय देना, विभिन्न मत शेटो में भी पारस्परिक भावर भाव रक्षता मानवमात्र को भ ईचारे से बतना ईस्वर के ब्रति श्रद्धा भीर विश्वास रचना Secular क्य का प्रथ नही है। भारत मे इस विषय में अब का अन्य किया जाना रोक्ना बाहिए। 'Secular विदारधारा वामपक्षीय भौकिक विचारवारा है जो प्रनीष्वरवादी नास्तिक विचारी से मोल-त्रोत्र ह्ये बातरे है ।

अब वैक्कि परम्पराम्रो मे बाजिक हिंसा भीर हुराचार प्रवृत्त हुए भीर लैकिक रिष्ट ही त्रमुख हो गयी तो बौद वर्ष ने पुरानी सवाचार की वर्ग-मर्वा दाओं को स्थापित किया था। नये नये विचारों से बन्टि परिवर्तन भी हुआ। करीवन वेड़ हवार वर्ष पूर्व से हमारे

गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के दीक्षान्त समारोह पर दोक्षान्त-भाषण

द्वारा--प० सत्यदेव भारद्वाज वेदाखकार

वैशिक भीर भवैषिक, सत् भीर ससत्, वार्शनिको का ज्ञानकर्वा-इह अत्वन्त यम्बीरता से पवता रहा है। वैदिक बार्व दर्शनों पर बौद्ध साचायों के वात-प्रतिवात वे । इस समय ने कई सवियाँ बीस वनी । धार्थं दर्शनो के ऋषि कपिस कर्याद, बौतम, पतञ्जिस स्थास, जैमिनी सादि का सम्पोषस्। समन्वयात्मक सन्टि से सन्न-शर करने में बारस्वायन, उद्योतकाचार्य, शकर, बावस्पति निभ, उदयनामार्थ बादि वे तो दूसरी तरफ बसत् विचार-कारा में बौद दासनिकों ने भी प्रतिचात किए। इनमे नागाजून, दिस्नाय, वम, कीर्ति, कल्याखरक्षित, शतिका, वसुवयु, मासन भावि प्रौढ़ विद्वानी द्वारा यम्बीर विन्तन होता रहा भौर ज्ञान का चतु-र्मुसी प्रवाह बहुता रहा । इस तरह से दीर्थ कास के समय ने सन्त ने वैदिक विचारवारा ने ही 'सत्पक्ष' ने जारत की विजय को स्थापित किया । धव वही विचारधारा आये सैमेटिक विचारों से टकरा वर्ष है। इसमे महर्षि बवानन्द का प्रकाण्य बाह्स, दूरविवता गम्बीर वितन तवा सावमीम संस्कृति, घम, सम्यता को समन्वय रूप से वैदिक वन के मानववाद मे पाना सभा गम्भीर चितन का विषय है बिसे विषय ने अपनी कसौटी पर रखना

भारत की सम्पूल विचारकाराएँ गुढ शिष्य परम्पराभी द्वारा बड-बड गुरुकुली या निहारों में पनपी भी। भववद्गीता की वैदिक कर्मयोगकी राजविद्या भी गुरू-विष्य परम्परा से ही विकसित हुई बी।

इम विवस्तते योग जीवलवानहमक्तवस् ।

विवस्त्रात् ननवे प्राह अनुरिक्याकते ॥ इत्यादि । रम्परा प्राप्त ज्ञान है। क्षत्रविद्या के लिए हमे तक्षशिला गुरुकुल के भावार्य विष्णुगुप्त चालक्य के शिष्य सम्राट च ब्रगुप्त को मूसमा नही चाहिए। इसी तरह से महर्षि पतञ्जलि द्वारा शिक्रित सेनापति पुष्यमित्र की भी भुकाया नहीं जा सकता । नवरत्नविजुनित उज्जवनी के महाराजाविकमादित्य को भी बदा बाद रसना चाहिए। इन्होंने सूतकाल में धार्व जाति की स्वतन्त्रताको शक्तव्य रूप से स्यापित किया वा घोर जारत को शिरो-मस्ति राज्य का स्थान विकास वा। उस

समय बह्य और सम के समन्यव से जारत राजवर्गको तमकाने ने की कार्य

प्रथमोक वय गया दा।

रामानस तथा नहाम। रत ने फिया है एव वारतीय स्युतिप्रन्यों ने वो ज्ञान वारतीय बनीवियों को समय-समय पर दिया है, उस सब का भी पून भारतीय बच्टि से भिन्तन भावस्यक है। बतमान सास्कृतिक वा राजनैतिक विचारवारावें भारतीय चिनाय ने से न पाकर विदेशी या पराने रूप ने ह्रम पर सद-शी नवी हैं। बह बम्बीर विन्तव बारतीय तमावदास्त्रियों का सब विशेष विषय है। हम सब पुत्र समयी की एक्फ वं देखते हैं और जैसा बीबता है उड़ी ने सत्य का दशन समझते है। अपनी स्वय की बाकों की विशूद चर्च्ट ही धन्तराः नथान होती, इसे जानना

बम्पूल माख को भौगोलिक एकता को कविकुतकुव कानियास ने कुमार-सभव के प्रारम्थ में सत्यन्त समुरता से विया है---

करपुरारस्यां विश्वि वेषतात्वा, हिनासवी नान संवाबिराब[ः] । पूर्वापरी तोयनिषी विवस्ता, रिचत पूजिन्या इव गानवण्या ॥

इस्ती तरह से रमुक्त में रमुकी सेनायो ने जिस स्वराज्य की स्थापना की बी धीर विसके द्वारा सूर्यवश या रमुक्स ने भारतीय राजतन्त्र में रामराज्य की विचारवारा का सनातन रूप दिया वा. वह भी भुसाया नहाजा सकता। रघुवक्ष ने भारत के भौगोलिक स्वरूप को स्थायी द्रष्टि वी भी। रावव वस के रामराज्य की बब्दि से मारत का केन्द्रीकरण सवाही इमारा उद्देश्य रहना बाहिए।

शबोच्यास निकल कर बच महा-रावा रचु ने केन्द्रीकृतार्थ (for integration) बहाबारत निर्माश में को सना प्रस्थान किया था बहु पहले पूर्व की तरफ बढाथा। सबब राज्य सीर सुद्धा राज्यों को परास्त करते हुए बनवेश के धन्तिम किनारे तक रचुके स्वय्दे वड वह वे । इसी तरह से नवासायर के सब द्वीपों को बस में कर उड़ीसा ग्रीर कॉलब देश को वश्ववर्ती किया । पास के सब पहासी प्रदेशों पर भी वयना ऋण्डा पह्नराते हुए रषु ने महेन्द्र पर्वत पर प्रतिकार जमाया । इस तरह से पूर्वीय माध्या पर विकास-पताका पहराकर के विश्वस्था विशा की तरफ बमुद्रकट के साथ-साथ पत्रे । कावेरी नवी के सब जुमाओं को---पान्कृष राखाओं <u>कृष्टिय</u>—नगरनर्यी करते हुए क्रेड्स प्रकेश् की बीतकर के बारत के बन्दर्श प्रतिकारी मकेंद्र पर का नए । सबर वे स्थव वार्य के ही पारक देश (पश्चिमा) में प्रविच्छ होकर क्समे नरे भाग को सबेटडे हुए क्रिम्यू स्थी के परिचयी प्रदेशों में उन्होंने प्रदेश किया, वहाँ प्रवचनत्यान के काबीब या काबूक के राक्त को सपने साथ मिखाया। इसके बाद हिमासब के महान् प्रदेशों में सब राज्यों की बस्वतीं करते हुए सपने परा-क्रम का शिक्का विठा दिवा । हिवाकक की जीहित्य नदी को पार कर वे प्राग्व्यो-विषया धासास में था पहुँचे हे। इस तरह से महामारत मूसि की पूरी परि-क्रमा जिल्लय द्वारा स्थापित कर उत्का स्थावी बावचित्र बना दिया नया वा। इस तरह से बार्व साम्राज्य की पूरा स्थापना कर वे बापस अयोज्या ने मा वए वे। विकेत्रित भारत एक महानू केन्त्रतः (integrated) महामारतः में वयस कर रामराज्य में वरनोत्कवं दर पहुँचा वा विसका वसान महामारह के शान्तिकां ने "रामे राज्य प्रशासित र प्रकरक ने देखा जा सकता है। इन सक विवयों में रच्ने सार्व मर्वादामी का कभी त्याय नहीं किया। विश्व राज्य की बीता बसे ही सन्माम पर समाकर सुराज्य स्थापना के सिए दे दिया । कोई बदले की भावना न वी। कोई ईच्यों या देव न वा : रच् ते विद्याल स्वराज्य या धर्मराज्य को पैदा किया और राम ने 'सुराज्य रूप के परमाचता का दशन दिया । साझाज्य स्थापना में विन्तिताय के बाद रमु ने 'विश्वजित् यज्ञ को किया और 'परोप' काराय सता विभूतम ', 'सर्वभूतहिते रता , 'सर्वजनसुकाय' के वैदिक माय सहेरवो की पूर्ति के लिए सब कुछ दक्षिणा क्प से दान ने देकुर उन सब राजाओं की सम्मानित किया को रचु से युद्ध ने हार काने से अपने को मक्कित तथा विरस्कृत बममते वे । सभी को पूजवत् मानवर्यादा बेत हुए स्वय एक तपस्वी, निमन, बान-प्रस्थी बन कर ऋषि झामसो ने चने वर् क्योकि वोनेनान्ते बनुस्यज्ञास् का उद्देश्य जो पूर्ध करना था।

इस तरह से मैंने भारत की प्राचीन गौरव याथा प्रापके सामन रखी है। इससे ससार की महान् सक्तियों को बहुत कुछ, शीखने को मिल सकता है। रचुबीर और बबुबीर जैसे सामबीर भारत के सवा वसकते सूर्व और चांद का तरह प्रकार धीर वीवन देने वासे हैं। यहाँच दयासम्ब के सामने भारत की यह कौरवनाथा सका क्योति स्तस्य की तरह अविषय का प्रव-प्रवर्शन करने बाकी रही है।

भारत में बहुत से साम्राज्य बाए धीर उन्नड वए । सनमे जिल्ल-जिल्ल संस्कृतियां वा सम्बताएँ बनी सौर जन-इती रहीं। परम्यु सर्वत्व शी महिमा पर धौर उसके उच्च आवसी पर क्षत्री शांच व था सकी। वरीर सर मद्रा पहल्लु

(45.00·)

राष्ट्र के सम्मुख चुनौतियाँ और आर्य वीर दल

नरेन्द्र ग्रवस्थी सवासक ग्रार्थं वीर दश, दिल्ली प्रदेश

देश धाज विस्त नाजुक दौर से मुबर रहा है सायद ऐसी विषम परिस्वितिया पहले कभी नहीं उत्पन्न हुईं। सीमानर्ती प्रान्त जम्मू-कश्मीर व पंजाब में विवटन-कारी तस्वों के राष्ट्रद्रोहिता ने घोत प्रोत हिसक काण्ड, गुजरात में बारक्षण की ब्रोट में मुस्सिम साम्प्रदायिकता का फन खठाता बचगर, उत्तर प्रवेश, विहार में उर्व की बकासत के पीछे बेनकाव होती बद-शीयती राष्ट्रवादियों के लिए गम्भीर चुनौतिया है। शिक्षा का मात्र प्रकार ज्ञान ब ब्यावसायिक गापदण्ड मानकर धार्मिक व नैतिक शिक्षा के समाव से मावी पीढी में पनपती नास्तिकता, किंकतंत्र्य विमूहता, सलरवाबित्व हीमता अविच्य के लिए राष्ट्रवाद के समाव का परिवासक है। पहले शराब जीवन में कोसलापन व भ्रष्टाचार सा रही थी। सब विदेशी से तस्करी दारा बाई हेरोइन हशीय, नशीसी लेकिया बादि की भारी मात्रा ने बामद देश की हरी-भरी तरवाई को जर्जरित व ब्रत्युके द्वार पर लासकाकरने का कूप्र-बास हो रहा है। अञ्लीन साहित्य व बाइजीस फिल्में, कला के नाम पर कैबरे नाच, फैशन के नाम पर मौडा प्रदर्शन बूबा पीढी को बहका रहा है, अटका रहा है। धनाव, धनान शोधन के जिलाफ भी क्रमकर लोहा केने की आवश्यकता है।

यहेब-बानब, अस्पृत्यता आदि कुरीवियो वे भी पिण्ड खूटा नहीं। धार्येखमाब खरैव पाखण्डवाद, राष्ट्रप्रोहिता, अस्टाबार धादि वे टकरावा है, उससे धमाब, धसान धोदश के सिवाफ भी धान्वीबनास्यक सब्दे किया है।

माज पून विघटनकारी हरवीं नखी व अन्य बुराइयों से टकराने के लिए बार्य-वीरो को बागे बाना होना। हमे महाराख वसरव की भाति अपनी सन्तामों को धार्यसमाज रूपी विश्वमित को श्रीपना होगा। हर द्यार्थसमाज कम से कम दस धार्वेदीर तैयार करे। यश तो इस प्रति-दिन करते हैं परन्तु जीवन को बज्जमय बनाने का सकस्प सेने की चकरत है। वस दस धार्यवीर भी प्रत्येक खार्यसमाच धाने साए तो धार्यंदीरों का एक भव्य संगठन तैयार हो सकता है। यूवा वर्ष में इस बाह्यान को रचनात्मक रूप देना होगा। बायंबीरों की यह शक्ति राष्ट्र की करी-वियों पुषकताबादी वर्त्जों के सन्तर्धों की वकनाचूर करके महाँच दवानन्द के सपनी ने भारत का स्वरूप प्रस्तुत करने में प्रब-त्नशील होवी। हर बार्यसमाच मन्दिर मे बार्ववीरों को बावे लाने के लिए वस्ती-रता ने विचार कर इसे क्रियान्वित करने की पावस्थकता है।

यह श्रन्याय कब तक चलेगा ?

इतिहास गवाह है कि मोपले मुसल-भागों ने अप्रेष सासन के दौरान बगावत की थी। उस बमावत मे मोपने मुसल-शानों ने हिन्दुयों के साथ जबरदस्ती की। धनको मुसलमान बनाया । अवरवस्ती खनको अपने धर्म तन्त्रील करने पर मज-बूर किया गया। बच्चो की गुलाम बनावा नया । उनकी नीजबान सबकियों के नाव बसास्कार किया नया और पत्नियों का सपमान किया गया । फिर जारत सरकार रुप मोपसा मुखसमानों को पैशन दे रही है। जिन सोगो ने देशहोह पूर्ण कार्य किया और देस की बाल्मा को ठेस पहुँ-बाई उन लोगों को सरकार पैंसन दे रही है। अवकि प्रार्थेसमाजी सत्यापहो के विषय माती का सा समुक्त किया वा रहा है। हजारों स्रोब अपने मान सम्मान के निए वेको में यह और निजाम हैवरावाब बरकार को कि नवत रास्ते वर बस रही **बी, को राज रास्ते कर साथे। धीर करते हैं।**

उनको कोई पैक्षन नहीं मिल रही हालांकि वे लोन बेख धीर वर्ष के लिए बढ के। परन्तु फिर भी उनको कोई चैंदान नहीं वी वा रही। यह धन्याय नहीं तो और क्या है। धीर वह धन्याय कब तक बलता रहेगा।

> बमदेव गोयस पत्रकार जीम्य ।

शोक संवेदना

वेद है कि जी सरवारी जाल दर्जा की जानी (वर्तपरती जी जवननाव वर्जा) प्रेटर कैलास का बुरवनित रक जाने से नृहस्पतिवार २ मई को देहानताल हो वया । जीया एव सन्तिम शोक दिवस सनिवार ४ मई को सावकाल १ वजे सम्मन्त हुमा।

वमा परिवार ने इस अवसर पर ११०० रुपये विभिन्न प्रार्थ संस्थाओं को बान विचा। धार्यसन्देश परिवार की सोर से इम वर्गा परिवार से सहानुपूर्त प्रकट सरसे हैं।

बब नहीं तो फिर कभी नहीं परोपकारिणी सभा का भविष्य

लेखक--म० म० ग्राचार्यं विश्वश्रवा व्यास वेदाचार्यं एम०ए०

महर्षि स्वामी ववानन सरस्वती द्वारा स्थापि जीवन की पावन केवा में स्थापित स्थित की उत्तराविकारियी स्था परे—पर्वा की उत्तराविकारियी स्था परे—पर्वा की वी वर्ष की स्थापित स्थापित की वर्ष की स्थापित स्थापित की स्थापित कर लिया। स्थापित परोपकारियी स्थापित कर लिया। स्थापित परोपकारियी स्थापित कर लिया।

महाँच निर्माण ग्राहाञ्जी बन पहली बार सकनेर में मनाई गई किस में पाँच लाख देश विदेश के बामें नर नारी लिम-लित हुए और अपनी अदा के फूल लाखों स्पना देकर गए तब परोवकारिकी समा के। सवार के आपों ने जाना। यह पहला ही सवसर का।

परोपकारिगोी सभा के पास महर्षि का पाच प्रकार का सामान

२ — महाँव का पुहित पुस्तकों का विशास सम्बार । जिसमें उस समय के स्रो समस्य नैरिक साहित्य के प्रन्य तथा मतमसामार के प्रन्य जिनका महाँव ने स्थान किया परोपकारियी समा के पास है।

२--- जो प्रम्य उस समय मुद्रित नहीं हुए ये उनके हस्ति रेख हैं।

३ - महर्षि के शपने शन्यों के कई-कई हस्तकेखा।

४--- महर्षि के श्रव तक श्रमुद्रित हस्त-सिसित र के शन्त्र ।

५ -- महर्षि के उपयोग की वस्तुएँ शास-दुशाले वस्त्र सडाऊ पात्र आदि।

परोपकारिजी समा को चाहिए कि जो भी सामान उनके पात है उनकी सूची सापकर सामं जनत को दे के कि हम पर यह सामान महर्षि का है जिस से उनकी मुख्या रहे, सानेदेशिक सभा भी उपेका कर रही है भीर सूची नहीं मामती है। (भ्रमुस्तन्यान कार्य भ्रजमेंर ही

सभव है)

धार्यसमाज द्वारा सवासित धनुसवान विचान परोपकारिणी समा धजनेर में ही सजन है। क्योंकि ऐसा सामान धन्यन कही नहीं है।

श्वकोर अताब्बी से को वस प्राप्त हुमा है वह बीरे बीरे कम हो रहा है क्वोंकि दो वर्ष बीत रहे हैं कार्य हुम प्रारम्भ बही हुमा। कोहा जब वर्ष हो तक कुट केना बाहिए। उना होने पर फिर कुटने से कोई साथ नहीं होता।

कुछ पूर्वे हुई है। उन पर कुछ सोव

पर्वा डास रहे हैं। ये पर्देशवा पर्वेबाजो को जन्म देते हैं। यह प्रवृत्ति किसी सस्या के लिए सामदायक नहीं हो सकती है।

जो भूलें हुई हैं उन्हें झाये न करने का सारवासन दे भूल स्वीकार करना ही बडण्पन है।

हमारा मत

सहाँव ने परोपकारिकी सभा ने वैदिक बाहित्य का कोई उन्द कोटि का विवाद माने की विद्यान मही रवा वर्षाप महर्षि के विवाद माने की विद्यान मही रवा वर्षाप महर्षि के विवाद माने की विद्यान मिलिक के उन्हें भी नही रवा। वर्षोंकि पम्पिकों का स्वापन होता है उन्हों से अवदिक स्वत्य करने का। इस ने महर्षि सावधान स्वत्य के। महर्षि ने महर्षि सावधान स्वत्य के। महर्षि ने निवाद कि से २३ सज्जन पुरुषों की समावनाता हूं। राष्ट्र महाराजे तथा उन्हों से समावनाता हूं। राष्ट्र महाराजे तथा उन्हों से समावनाता हूं। राष्ट्र महाराजे तथा उन्हों स्वत्य करनी स्वत्य निवाद स्वापन स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वापन स्वत्य स्वत्

राजधरानो का राजा खिलाब से जिया नया और राज्य भी । पर **उत्तम** व्यक्तित्व कही नहीं चला गया है **औ**र न वे गरीब ही हैं। महर्षि ने जिन राज-परिवारों को वैदिक चर्म से दीक्षित किया तीन पीढी ही चला। चौबी पीढी आर्य-समाज को मूल गई इसमें हमारा प्रपराध है। जो हमने राज्य चले जाने के ही कारण उन राज परिवारों को भूला दिया। इस को प्रगर कमल के वन से धलग कर दिया खावे तो क्या दव पानी शलग करने की योग्यता उसकी नष्ट हो जाती है। परोपकारिस्ती सभा ने वो व्यक्ति ऐसे हैं जो सम्कृत से भनभिज्ञ है पर अपने को पण्डित समझ बैठे हैं। वे ऋषि के सबी से गडवड कर रहे हैं। इससे परीपकारिसी सभा की रक्षा करनी चाहिए। मैं उन बातो को सोसना नहीं चाहता। शेष सदस्य बुद्धिमान् हैं वे सोचें।

श्वायेसमाज मोडबन्द एनस-टेंशन बदरपुर वार्षिक चुनाव

उपरोक्त सस्या का वाधिक चुनाव विनाक १३-४ ८५ को प० बुद्धराम धर्मा जी की धन्यकता में निर्विरोध निम्न-सिक्ति कथा।

वारजक—को वरतांसह वर्मा सिवस स्थान—डा० धार० एस० धार्य B SC B B B B H CM S उप्रवान—मा० कर्मवन्द थी, मन्त्री— की नेत्रपाल धारती, उप्पण्डी—की किवल कन्द वी कोवायक्य—की धार्यप्रकाल धार्य, इपकोशायक्य—धी ल-बी राख धार्य, इपकोशायक्य—धी ल-बी राख धार्य, इपकोशायक्य—धी ल-बी राख धार्य, इपकोशायक्य—धी ल-बी राख

भूदेव प्रसाद धार्य (प्रचार संविक)

समाचार-सन्देश

'राष्ट्र निर्माण सम्मेलन'

गऊत्रों की तस्करी का गढ

हरिद्वार १४ धप्रैल, १९=६ । गुर-कुल कागडी विश्वविद्यालय के वार्षिक समारीह के संबंधर पर राष्ट्र-निर्माल

सम्मेलन का धाबीजन किया नगा। इस सम्मेलन मे निम्ननिसित प्रस्तावों को प्रस्तुत किया-

(१) राष्ट्र की प्रसन्दता को सुरक्षित रसने के मिए चाविवाद वर्गवाद एव माणावाद के नाम पर उत्तेवमा फैसाने वालों को कठोर वण्ड बेना बाहिए ।

(२) राष्ट की सुरक्षा वैविक उवाल मान्य-

नवचारत टाइस्स १० चप्रैल के प्रका-

चित समाचार के बाचार पर दिल्ली

बार्व प्रतिनिधि समा का एक प्रतिनिधि-

मण्डल बलीपुर ब्लाक स्थित हिरलुकी

गाव के युवको से मिला । जिन्होंने सपनी

जान पर बेलकर बैंकडो गायों को मौत

🕏 मुहुने जाने से बचाने का प्रयास

किया। ये गऊएँ दिल्ली के रास्ते उ०प्र०

के बाबी जा रही भी। स्थानीय यूवकों ने

सब को पुलिस के हवाने कर दिया। हिर

शुक्ती गांव के युवक मण्डल के सचिव श्री

बसजीत सिंह ने बताया कि पुलिस ने

शाओं के बनुसार ही सम्मव है। (३) हम सभी भारतीयों को देस के

प्रत्येक गांव वे धाने-जाने, पूर्वि क्रव करने का धविकार होना वाहिए। (४) राष्ट्र-निर्माण ने सस्मृत की भूमिका

महत्त्वपूर्णं हो सकती है। सभी प्रान्तीय तरकारों से वह बोव्ठी निवे-दन करती है कि संस्कृत-भाषा के उत्थान को सर्वाधिक महस्य दें।

(डा॰ जनदेव वेदासकार) सयोवक राष्ट्र-निर्माण सम्मेलन

कि रात को ही सबमय एक हवार नऊयो

को पूर्विस की साविश से यमूना पार करा

विया नवा। दिल्ली गामी की तस्करी का

गढ बन नया है। बीर बड-बड़े नेता तथा

पुलिस क्मीं भी इस बोर कोई व्यान नही

दे रहे हैं। प्राम प्रधान थी चन्द्रशास ने

बताबा कि इस सम्बन्ध में स्वानीय नेताओ

ने भी कोई सहयोग नही दिया। इस प्रति-

निवि मण्डस में डा० श्रमपास, डा० रघ-

बीर वेदालकार, भी चन्द्रप्रकाश तथा भी

सम्बैना सोबीरोड और स्वामी स्वक्यानम्ब

वे । प्रतिनिधि मण्डल ने उन्हें प्राप्तवासम

दिया कि वे सम्बन्धित अविकारियों से

समिति का कार्यंकर्ता सम्मेलन

वार्यंगीर वस किस्सी प्रवेस का कार्य-कर्ता सम्मेनन २७-४ ८१ को साब ठीक ६ वजे मार्यसमाण इनुमान् रोट नई दिल्ली में सार्वदेखिक बार्ववीर वस के वपत्रधान संधालक बा॰ देवप्रत भी की मध्यें बंदी में प्रारम्भ हुया और ठीक ७ वर्षे समाप्त हुया । बां॰ बी तथा दिल्ली दन के संपासक की भवरनी भी के ग्रेरणा वायक वायम हुए। १४७ वार्य दूसकों ने दब को सकिय करते तथा तीन विविधी को सफस बमाने का सकाम किया । श्री चनः की ने समाका बड़े ही उत्तम हव से त्रपासक किया ।

महेशक्त्र कार्यासन मही

निर्वाचन

मार्वसमाय रमानी वाच की त्रवल्यक सभाकी बैठक २०४ वर्ष को सम्बन्ध हुई विसमे निम्नलिकित ग्रामकारी १६८६ =६ के जिए निर्वाचित हुए।

थो विरवारीसास बुसाटी

भी वेदप्रकास स्तवास कोपाध्यक बी वर्मवीर

भी विरदारीलाल बनाती पृत्तकाञ्चक्ष भी शिवनारायच बचाच

समन्यवाद । वेदप्रकास व्यावास सम्त्री

गोरभा के लिए पत्राचार कार्य करेंने । श्रार्यसमाज राज चैनपुर

द्यायसमान के वाधिकोत्सव पर इस क्षत्र के प्रतेक वार्मिक जन वैदिक वर्स के पावन सन्देश का सुनन ६कटउ हुए। ए० महेन्द्रपाल धार्य, भू० पू० मौसवी महबूब के मायम तथा श्री दयानन्द सत्याची के गजनों से सोव सस्पश्चिक प्रमावित हुए। नन्त्री--बार्यसमाब राज चैनपुर, बिहार

निर्वाचन

२४ मार्च १६८५ को शाससमाक बेम्बूर का चुनाव हुया जिसमे निम्न प्रकार कृपाकर बाप अपने पत्र से प्रकाशित कर प्रमुग्रहीत करें।

पवाधिकारी जिनका निर्वाचन हुवा-प्रधान-की सबदेव भी सार्व, उपप्रधान-की वी वकील । वन्धी

वेगपत सास्त्री धार्यसम्बद्ध चेम्बर

त्रकान भी सरवानन्य शास्त्री की ईरनरचन्द्र बार्व का श्रमिनन्दन थी त्रिलोक चन्द सहाना

श्रार्यसमाज सरस्वती विद्यार (पंजी) दिल्ली का श्राठवां वार्षिकोत्सव

धविष -६ मई सोमवार से रविवार १२ मई ८५ तक

स्वान-वावसमाच मन्दिर, बी-न्नाक, सरस्वती विहार।

कार्यक्रम-प्रात प्रतिवित सत्र ६ वचे से ७ ३० वजे तक पूर्लाहृति १२ मई ८३ को १० वजे प्रात

बह्या-स्वामी स्वरूपानम्ब जी एव स्वामी वयदीश्वराज्य जी

रात्रि – रोण दक्के से द ४४ तक जजन । स्वामी स्वरूपामस्य जी एव बीमान् मायानम्ब बी।

वेदोपवेच--- शक्तिविन रात की = ४३ से १ ३० वर्षे तक महान् विहानों द्वारा : वार्व स्त्री समाव उत्तव-११ ६ ८१ बनिकार को दोपहर है क्ये है ६ क्ये तक बास बुबा सम्मेशन-- १२ १ द१ रविधार को प्राप्त १० १० वर्ष से १३ वचे तक ।

प्रीतिनीय--१२ वर्षे ते १ वर्षे तक रविवार को ह मन्त्री कु वर स्थानांचे वेशी

सार्वदेशिक वार्य वीर दश अर्थिसमाज होती बीहल्ला करनाल की तदर्घ समिति

का गरन

की नरदेव शास्त्री १०१ दवाससिंह कालोगी, करनास २ उपप्रकाम ची० साससिंह विस्ती बाईपास जी०टी० रीड, करनाक वैच रहीराम मीहरमा फोट, करनास

४ कोवास्त्रसः भी स्तिवाराय एडवेन्डिट बार स्म, करनास

१ सदस्य भी हरीस नुलाटी नवाब खता, कलन्द्री बेट, करनाक भी महाराज कृष्ण जोपड़ा भीवडा ट्रांसपीट, विस्ती गईवास. बी o टी o रीड, करनास

मा० वसंबन्त विष्ठ डी०ए॰बी॰ उज्बतर विकासन करमास चौ॰ रतनसिंह

हिस्सा बाटान, करनाम ना • सुन्दरसिंह स**्न• ३८४ मीहल्या जाटान, करना**ल

केंबॉरसिंह बार्य (त्रो॰ शेरसिंह) प्रधान, बार्य प्रतिनिधि सभा, हरिवासा सारस्वत मोहन "मनीषी"



नत २ प्रमत्वर को अधिम जारतीय वस्य सव का वाविक समारोह होटल सिकार्व बेहरादून के सकाकार में कविवर ताराजस्य पास वेकल की सभ्यक्तता भीरडा• यापेण्डनाच सर्मा झरसां के सान्तिस्य में नहीं सफसता के साक् सम्पन्त हुमा । इस सक्तर दर ही। ए० बी। कालेक सबोहर के हिन्दी प्राच्यापक, साव के बक्तर, प्राचा कफन तथा बूंद-बूंद वेदना वैसे समन्त कांच्य संकलनी के रचविता हिन्दी काव्य सच के ग्रुवार बुद्धा कवि भी सारस्थत बोहन "मनीची को "तक्क भी १६८४ 'सी उपाधि से विस्थित करके मानवत्र, स्मृति चिह्न, साम और नक्क पुरस्कार से विधिवत् सम्वानिस विधा वया। स्थानीय स्कूथ के नक्यों को भी पुरस्कृत किया वया। युक्य प्रतिथि वे त्रिविषम सार०सी० सिक्स ।

> यहेन्द्रप्रकाष-चन्द्रीयाः प्रकार "बारत बारती", सबोबार

इन गऊ मो का रखने में भसमर्थं हा व्यक्त की। वरदुव के साथ कहना प्रक्रता है सिधा त्रायं सम्मेलन

बाबन नारतीय सिंबी मार्च समा प्लामु का वार्षिकात्सव सम्पन्न के द्वारा बार्यसमाज पिम्परी कालोनी पूनामे १७१८ १६ मई १६८५ को बढसमाराहपूत्रक मनाया जा रहा है। सम्मेलन का उद्श्य (१) धापस ने मिलन, (२) एकीकरएा,(३) विवारी का भावान प्रदान (४) कुरीतियो से खुटकारा, (६) वैविक वर्ग की जानकारी भीर पालव्ह का बिनाश प्रादि है इस सम्मेलन मे भारत भर से सनेक नेता ज्ञानी विद्वान् पथार मन्स्री रहे हैं।

नेषाराम धाय श्वार्यसमाज मंदिर गांधीनगर

दिल्ली का वार्षिकोत्सव धार्वसमाज नांधीनगर का वार्षिको-

त्सव बढी भूमचाम से ६ मई से १२ मई क्क मनामा जा रहा है। इस अवसर गर धनेक विद्वान् समीतानार्य धार्यं नेता पकार रहे हैं।

१२ मई को "राष्ट्रीय एकता सम्मे नन" होना विस्तवी प्रध्यकता श्री राम-बोपास वासवासे करेंने।

श्यामचुन्दर विरमानी

से पदाधिकारियों का निर्वाचन हुया।

नुसजारी सास भी धार्य, मन्त्री देवपात शास्त्री, उपमन्त्री-की ईस्वर्शिक की शास्त्री, कोपाञ्यक्ष-श्री जनवामदास जी चान्दना, पुरसकाञ्चल-की राजेहर चन्दानी

प्रभुकी प्राप्ति "

४ वर्षितकाञ्चर्यः = वरितकः है कपर, पृषक्

धारमा के सम्बन्ध में उसे वह वह बारणा होनी चाहिए कि बारमा करीर ही नहीं बरत मन से की पूज्य है और वह निस्तालक के अपर है, धर्माय निस्तालक का सवासक है, बर वह मस्तित्क का दवा-कह है तह बस्ट्रीर, जानेदिय और कर्म-निव्रों का तो कुँतर स्वामी ही है।

श्र त्रैरवत् — अविक्रीवंत = प्राप श्रीर प्रास्तु-वृत्तियों को सिर से कार की ओर प्रेरे। भारना-व्यान के श्रन्यात श्रवका प्रात्तावान के श्रन्यात द्वारा प्रात्तों और प्राप्तों की दृत्ति को उपर ने आए श्रवीत् श्रद्धाराज्ञ में पहुँचाए।

६ तत्प्रास्तो प्रजिरक्तिः उसकी प्राण रक्षा करता है।

प्रवित् व्यान या प्राणामाम के कारण वब प्राण्-वृत्ति रुक बाए दो पबराना महीं चाहिए। उद थ्या में प्राप्त ही रक्षक होता है।

 ध्रमनक्यो वन == धन्त भीर नन रक्षा करते हैं।

धर्यात् योगी और योगाञ्चासी तथा योगामिलाची को धरने धन्न के सन्बन्ध में बहुत सावधान रहना चाहिए। बहुा, मीठा, वीवा साथि उत्तेतक पदार्थों के सेवन से बचना चाहिए। यदमास साथि सामस-मोचन मुद्धिका नोप कर देते हैं। कोई मा मासाहारी या करावी योगाम्यास साथि कर सकता।

स्थम का मन पर प्रमाव पनता है। इक्षी-क्षण्य जुड़ मन भी रखा करणा है। विध्य में के स्थ्यूच और पापी निजार हों तो वी बेपान्यक नहीं हो सकता। प्रद बोपी को सन्य के जिए रखना और मन पर कहा निवन्नका एसना चाहिए। मन की प्रसाव सामित्रका को बी पुरा स्थान रखना चाहिए।

'सल्ल का एक सर्व 'सल्लमय कोश है। सन्तमयकोण स्थल बारीर नात्र है। उसकी सपेका वनीजवकोष' सुक्य है। धम्मस्य तथा मनोमय कोशो का सचामन प्रासामय कोस के द्वारा होता है। वह मनोमय की धपेका सुदमतर है। मनोमय की धपेका विज्ञानमय और सचिक सूक्य है उसको बहा चिर' सम्द से कहा नया है। सिर प्राणों का साधार है। जान की नति पर सावधानता से सब्टि डाली तो प्राण की ठोकर सिर में नगती त्रतीत होती है, धर्वात् प्रालाका एक प्रकार से वह मूल ब्दा है। इस चार कोशी का विवेक करने से पाँचवें भ्रानन्दमय कोख का ज्ञान तथा मान होने सगता है । वेद में धनेक स्वानी पर उसे 'मबुकोस' कहा गया है। इस नव मे उसे देवकीस' कहा है, भीर इसे 'अपि-झीबंत कहकर विज्ञानमय कोण से जपर बताबा बवा है। इससे बात्मा पुत्रक है, जहाँ परमात्मा के वर्षन होते हैं यही मुक्ति का सावन है।

इस प्रकार करन यन और प्राया से सर्वाचित सुरक्षित एव नुसस्कृत-

वेबकोश समुख्यित -वेवकोश सचित

हुआ है । श्रमुत् भगवान् का बोध कराने वासा कोश इकटठा हुआ है ।

इस प्रकार योग-साथन से परमास्ना की प्राप्ति होती है। सुख प्राप्ति के साधन"

(पुरुष का सव)
नरता, बहुक मारी। कृप मे से वही सब्द नौटकर उसके कान मे भाया। वस फिर न्या वा उसने छुलाव मारी मीर कुएँ मे पडा पडा हो दो तीन दिन पीछे नहीं मर

स्रतएव जब लोग मुखं हो जाते हैं तो सब स्वार्णी हो जाते हैं और इस प्रकार स्वर्णने साथ पर हो स्राक्तम्य कर बैठते हैं। हम मी इस सम्य ऐसा ही कर रहे हैं। स्वर्णने स्वर्णने स्वर्णने स्वर्णने स्वर्णने स्वर्णने स्वर्णन दुवेंको तथा नियमतो की सही-स्वर्णन दुवेंको तथा नियमतो में सही-स्वर्णन हमें स्वर्णने में स्वर्णनायो। सेव तक यह न होगा तब तक तुन्हे ससार में सुक्र न मिलेगा। सुन्क को स्रोक्तमा ही पवेंद्या तमी सुन्न मिलेगा। हो

धीर भी सुनी । एक मनुष्य के फोबा या उम्हर शाहन ने मरहुम दिया और कहा कि एक वो फोह नयाने दें कहा कि एक वो फोह नयाने दें कहा कि एक वो फोह नयाने दें न हुधा । इसरे उम्हर के पास गया । उससे सन हान कहा। यह बोबा, औषांक तो प्रकार हैं। परन्तु पुन्हें अधीन करने की विकि नहीं आंधी क्लेंकि वालें स्वाद है यह मरहुम को प्रयाग नम्म नहीं करने देता। यहले इस मनाव को निकालो । फिर इस मरहुम को सपासो । उसने सवाद निकास दिशा और फिर उस स्वाम पन परहम कनाया। पहला फाका ही साराम करके स्वरा ।

हमारे मन में मनाव है हस्तिए महर्षि दयान व के उपरेखों का मरहृत्त कुछ काम नहीं करता। पहने हम नवाद को निकासो। फिर महर्षि के उपरेखों का मर हम सगाने का हुछ पन मिल सकेवा। पहने उस गाठ को काटो मन को पविच बनाओं, मूठी वाटी को खोडों यस बेवा पार है बीर आप सास्तरिक सुझ प्राप्त कर सेवें।

> प० गुरुदत्त (पृष्ठ ५ का क्षेत्र)

क्या हो मच्छा हो कि महात्मा हस राज भोर शुनिकर मुस्तत जी विनकी आयु में केवल एक सप्ताह का है। प्रकार है। इन दोनो विल्लामें नेताथों के सम्बन्ध में प्रात्मीय समाधी हारा प्रकाशित पत्र तवा व्यक्तिकत क्या से निकाले जा रहे साप्ताहिक और मासिक एक प्रति वर्ष समुक्त विभागक निकालने की प्रवा जारी कर दें। इस से युवा पीशी को भी सपने जीवन दाताशे करते का सीमास्य प्रमुद्ध से क्या मासिक स्व करने का सीमास्य

> एन॰ सीं० २३६ **स्रोय अवन** कोट किश**य परद, याजन्यर शहर-४**





भार्य जगत की शान २०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन नेत्र चिकित्सालय

(अनुमानित लागत दो करोड रूपये)
के लिए दिल खोलकर दान दीजिए
दान की राधि प्रायकर प्रधिनियम जी० ६० के
प्रतर्गत कर मुक्त होगी।
सारा वान चैक/मनीबार्डर/बैक प्रकट हारा
मत्री, माता चन्ननदेवी प्रायं धर्मायं नेत्र चिकित्सालय,
सी-१ जनकपुरी, नई-विल्ली-१६ के प्रते पर भेजा जाए।
दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर

अकित किए जाएगे। निवेदक

रामबोचान वालवाले पूर्वचेव महासव वर्गपाल सोन्प्रकास सार्व संरक्षक विकित्सालय प्रवास, प्रिस्ती प्रवास इवं प्रवास, शांच्या प्रवास सार्व प्रतास सार्व प्रवास सार्व प्रव प्रवास सार्व प्रवास सार्व प्रवास सार्व प्रवास सार्व प्रवास सार स्था सार्व प्रवास सार्व प्रवास सार्व प्रवास सार्व प्रवास सार्व

सौजन्य से महाखियां वी हट्टी प्रा० सिमिटेड, १/४४ कीर्रितनगर, ग्रीकोमिक क्षेत्र, नई दिल्ली-११००१

केवल ५० रुपये में तीन वर्ष तक हर सप्ताह पद्भते रहिए

- वया बाप ऋषि, मुनि तपस्वी, योगियों को समृत बाग्री पढ़माः बाहते हैं?
- व्या आप वेद के पवित्र ज्ञान को सरस एवं मधुर शब्द में जानना वाहते हैं?
- नवा प्राप उपनिवव्, गीता, रामायण, बाह्यणप्रन्य वा धाष्यारिमक सन्वेश स्वय सुनना ग्रीर प्रपने परिवार को सुनाना वाहते हैं?
- क्वा आप अपने श्रूरवीर एक महायुक्तों की सौर्य गावाएँ जानना वाहेंवे ?
- निषा आप महर्षि दयानन्य की वैचारिक क्रान्ति से भ्रास्मचेतन्त्र जानुत करना चाहते हैं ?

यदि ही तो झाइले झार्यसन्वेश परिवाद वे श्रामिल हो बाइए। केवल ४० रुप्ये में तीन वर्ष तक हर श्रप्ताह पक्ते रहिए। श्राम ही वर्ष में बाद सनपर मध्य विवेदाक को प्राप्त कीविए।

एक वर्ष केवल २० रुपये आजीवन २०० रुपये।

प्राप्ति स्थान— आर्यसन्देश साप्ताहिक १५, हनुमान रोड नई दिल्ली-११०००१

उत्तम स्वास्थ्य के लिए गुरुकुल काँगड़ी फार्मेंसी, हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

वाचा कार्यालय—६३ वली राजा केशरनाय, फोन : २६६८३८ व्यवसी बाजार, विस्ती-६





मूल्य एक प्रति ४० पैसे वर्षे १ प्रक २६

रविवार, १६ मई, १६= इ

मार्थं सबरसर ११६०८५३०८५

ब्यष्ठ २०४२

दयामन्दाब्द --- १६१

देशद्रोहियों को सख्ती से कुचलना आवश्यक है

—रामगोपाल शालवाले

पजाब तथा दिल्ली में हिंसा एवं बिहाइ भी जो प्रवृति उमर रही है ज्या पर रिप्ता होंगे होंगे हुए सार्वदेशिक प्रायंप्रतिनिधि सभा के प्रधान की रामगोपाल घालवाले ने कहा है ''उबित है कि सरकार दसे खता पर काम करने वाले देखडोही लोगों ने हरसा तथा विस्फीट के ध्यमने इरायों पर को वृद्धतापुर्वक प्रधाम दिया है। प्रधानमन्त्री इतिया गाधी की हरसा कर प्रधानमन्त्री इतिया गाधी की हरसा के पूर्व पजाब में जो स्थित थी उसे इस्ट्रोने फिर से कामस कर दिया है। वेश के स्ममुझ एक गम्मीर समस्या सहा कर दी है।

श्री शालवाले ने कहा--'देश की ग्रालण्डता एव एकता की भग करने

वाली राजनीति फिर से शुरू कर दी गयी है। श्री रघनन्दन लाल भाटिया तथा चौषरी बलवीर सिंह की हत्याए सत्रासवादी क्रियाकलापी की गम्भी-रता की स्रोर इगित करती हैं। श्री गालकाले ने सपना क्रम चार्चरस्ते हुए कहा—''जब से धर्जुनसिह पजाब के राज्यपाल हुए हैं, तब से सत्रास-वादी कार्यों मे वृद्धि हुई है। वस्तुत श्री मिह के परामर्श से ही भारत सरकार ने कुछ गलत कदम उठाये भाराली विरोधी पक्ष ने सरकार की भइड नीति को भाग लिया और स्थिनि को अस्थिर बनाने को नाजिश शरू हो गई। सरकार को तुष्टीकरसा नीति ही वर्तमान चरमपथी कार्यो की नींव है।

नोपों से भ्रातुन्व की भावना को कायम रहने की प्रपीत करते हुए श्री सालवालें ने श्री धर्जुनिशह को जान के राज्यपान के पद से हटा लेने तथा वहाँ कोई स्थोग्य प्रधासक श्रेजने की याँग की। नाम ही यह भी कहा कि चरमपिया। के बरो की लगाओं लेकर सभी विस्पोटक पदार्थों को सरकार स्रपने कब्ज में लेले।

जनता का माहवान करते हुए स्रो साजवाजे ने कहा कि समासवादी को सरकार की उसीनगढ़ भटद करें जैमी कि पिछली राष्ट्रीय विदित्त से की थी। 'श्री सातवाने आर्यमाज तिनकानगर के वाधिकीत्सक के धन-सर पर बीग होने पार्थ- समाज निलकत्वर के द्वारा मंचा-लित स्कल तथा वार्मिक समाजिक कार्यक्रमों की प्रशमा की । तथा मार्य समाज के देश देशान्तरो द्वीग द्वोपा-नर तक फेले प्रभाव का भी मृल्या-कन किया।

यह वाधिकोत्सव ५ मई से १२ मई तक वहें समागेह्रपूर्वक मनाया। इस असर पर एक वेद कथा हुई जिसमें पन जुन्नीलाल के महुर प्रेरक भवन हुए और प. यदापाल सवाण के वेद प्रवचन हुए कथा में मनियान पानियान और वीची के देवने का प्रवच्च करा प्रवा । इस अस के बामिक औराओं ने व्या में अस्य-धिक व. चर्य करा में अस्य-धिक व. चर्य करा में अस्य-धिक व. चर्य करा में आस्य-धिक व. चर्य करा भाग निया।

देश के नभ पर समस्याओं के बादल मंडरा रहे हैं

आर्यसमाज गांधीनगर में सभा प्रधान का ब्रोजस्वी भाषण

वार्यसमात्र गावीनगर दिल्ली का वार्षिक उत्सव बही प्रभाग के साथ सम्प्रन्त कुमा। ए महें से लेकर है, महंनक के हस समारिह में शोभा- यात्रा, अजुबंद परावण्य यक्त, वेद-कदा, प्रायं महिला सम्मेलन तथा राष्ट्रीय एकता सम्मेलन का प्रायोजन किया गया। शोभायात्रा में समुनापार की समस्त कार्य सर्वस्था के वार्षिक जने, बालक-बालिकाओ तथा मुवाबन ने बढी मारी सक्या में मार्ग लिया। इस योभायात्रा के सामिक जने, बालक-बालिकाओ तथा मुवाबन ने वडी मारी सक्या में मार्ग लिया। इस योभायात्रा का सामिक उन्हों स्वर्णान का सोधीनगर की नाय-

रिको ने भव्य स्वागत किया ।

रिवनार को राष्ट्रीय एकता सम्मेलन में श्री वेदशकाय श्रीकान श्री विष्ठविधन मेचानी, तथा दिल्ली श्रीविनि सभा के प्रधान श्री स्पर्देश के स्वप्ते भाक्ण दिये । सभा भ्रेषान में कहा आर्यसमाज के सपने संवावकात से देख धर्म और समाज में फेनी समस्त कुरीतिया को दूर करने के लिए समर्थ करता रहा है। इस सम्य राष्ट्र से श्रुष्ठ छोर समस्याओं के बादल मुस्ताने नगे हैं। विषटनकारी तस्त देश के गीव में पलीता लगाने में बाइसर है। मरकार इन उप्रवा-दियों के नामने ब्लंबनीति बपना गई। है। धार्यसमाज ने नवा गण्ड को एकता के लिए कार्य किया है राष्ट्रीय एकता को ज्यान में रखते हुए मैं विल्ली की समस्त आर्यसस्याप्नी को और सरकार से निवेदन कला हू इस सबय धगर सस्ली से इन सूनी हस्यारों को नहीं कुचला गया तो देश की एकता खतरे में पर सकती हैं। इसारा विज्वाहत और राष्ट्रहित के

िए यदि सरकार सक्षका कदम उग्नी है नो हम सहयोगको नैपार है। किन्तू साम्प्रदायिक ताकतो के सामने सम्कार का फ्रार्य-समाज विरोज करता है।

समारोह में वैदिक धर्म के नारो को गुजानी जनता ने करनल ध्वनि से उनके वक्नव्य को समर्थे दिया। इसका मागोजन प्रधान श्री यदुनन्दन धर्मर धौर मन्त्री स्यामसुन्दर विरमानी ने किया।

, CI

सत्संग वाटिका

ससार मे बीटा स लेकर हावी पयन्त विक्रिष बीवसृष्टि हु । उनके नाना रूप-रग, पृथक्-पृथक् स्वभाव धोर भिन्म-भिन्न भोजन है। बहुत स जोव धपन कीवन क सिए किसा को न भारते, न सवाते, केवस प्रकृति प्रदत्त प्राह्मार से काम वसात है। जैस हाची, नाय, घोड़ा धावि। धनेक वाबो का दूसर जावो क प्राम सिए विदा काय गढ़ी चल सकता, जैसे-सिंहावि जीव। परन्तु इन जोबो से स बाह किसा बीव का प्रस्तित्व किसी जीव का प्रनप-क्षित हा, बाहे बढ-बड जाव-शास्त्र विशा-रवो का धमक म भा उनक सांस्तत्व का बावदयकता न बाई हा, चाह विकास-बादी इनको क्वस ज्ञान राह्त विकास हाका परिवास समस्त हा, परन्तु व सब जीव किसान किसी क्प म प्रकृति को सभ व्ट है। उनका सस्तित्व भनावश्यक मही। प्रकृति को उनकी जरूरत है। मीर ब्रह्मवादियों के विश्वासानुसार तो उन्हें एक बडे ही विचारक तत्त्व न निर्माच

सुष्टिक की वृक्ष पुज इस मारू क्षी मधान म बढ हा बाबस्यक है। एक भी पुजका कमास महान विस प्रकार सराब हा जाती है, ठाक वसी प्रकार किसी भी प्राणा का क्रमा स साक-व्यवस्था विगड सकता है। भीटी नमा है ' मझना जस म बया बनाइ गई है ' काल रूप सप का क्या उपयोग ताह ' इस प्रकार विकास करन झोर प्रकृति का निराक्ष स्व स सब क शांस्त्रत्व का महत्त्व जाना जा सकता हु। ६६ टेका॰ मकाका का लाशा का उठाकर चाटियां हा ल जाती है। महामारी रोगो क समय जिस प्रकार पडा हुइ लाशा का भन्त्यांष्ट कर ६ वा धार्मात लाक का स्वास्थ्य रक्षा न सहायक हाता हु, ठीक इस। प्रकार चीटिया हिसकारिया है। मञ्जालया पाना का मिलनता का दूर करन क ।सए स्युनिसपोत्तरा क भागी सम-किय। नाग महाराज भावायुक विषल भागका चूसकर इसा प्रकार लाक कल्याच करत हा कथुमा (वसा) जसा दुल्ख काक्षा भा किसाना का परम सह यक हा घास क जढा का निकालत र मिटा की काफा गहराइ तक साद दता है जिसस कि मिट्टा म उपज का - किन बब्दा हा इसलिए हिन्दू धम 📲 उपदेश ह मा हिस्यात् सवभूतान ।कसः प्राणां का न मारा । प्रकृति जिस पुज का धनावश्यक सममता हु उस स्वय नय् कर दता भीर श्रपक्षा हान पर नय पुज अ। **ब**सा है। यहा कारण ह कई बाबो का वाति क लाप हा बान और कइ नए जीवो क उत्पन्न हान का धीर भिन्न भिन्न परिस्थित वाल दशो स भिन्न-भिन्न प्रास्त्रियो के पाय जान का । अस्तु, जब सभा का कुछ न कुछ उप-

श्रुति-सुधा-

जीवन की सार्थकता

लेखक-प० बिहारी लाल शास्त्री काव्यतीय

मोघमन्न विन्दते ग्रप्रचेता सस्य वदामि वघ इत्स तस्य । नार्यमग्ग पूष्यिन नो सखाय केवताघो भवति केवलादी।।

──蹇○ १०।११७1€

*

योग है तो तब जीवो में चिरोनिय मनुष्य महागाज का तो स्वार्थ पराय कुछ जयभोग होना ही बाहिए। यह प्रकृति कीवल का सब स एक्ट नम्मा मनुष्य केवल इस सिए तो नहीं हो कहता कि उसके लिए कवि को कहता पड़—

> क्या कह सहबाव क्या कारे तुमाया कर वये। बी॰ए॰ किया, नौकर हुए,

बा॰ए॰ क्या, नाकर हुए, पेन्सन मिली और मर क्ये॥" सबै दिन नए विकथ के हेत्

नहां नहीं मनुष्य जीवन का सवस्य काई उद्देश हैं। विसस यह परार वक्क हो बकता है वह दस (उपत्वी) वरोर का पह्ना उद्देश जान ना सवन करना है। बाह्य जान हा नहां साम्य-तर ज्योति का जमाकर सारम-तरम का खासार करना, स्रतमें स्वयं का जान, क्वस जान, बहु-जान, कुछ काह्य, यह तस्य कि विस्तंत्र की

'तस्मिन् ह विज्ञात सर्वीमद विज्ञात भवति'

जिसका जानकर सब बाना बा सकता ह, बानना मनुष्य का पहला उद्दूरम हु। प्रात्म नान, मायात्रपच स वचाकर श्रमृतानन्द का प्राप्त करान वासा ।वज्ञान मानब-तन म हो प्राप्त किया जा सकता है। बस यहा इस नर-तन का साफल्य है। यह मानव शरार भारता क उत्तरासर ज्ञान के विकास का परिस्ताम है। और इस प्रकार यदि अभ्यास किया जाव तो अ)न ।वशान का विकास करक जीव अक्राम तक प_ठच सकता है। यहाऋतभरा प्रजा का प्राप्त होता है। यहा है मनुष्य का प्राप्तब्य पद, माजल मकसूद । इसा पद प्रचन का योग्यता रखन के कारहा मनुष्य-वानि सब वानियां स श्रेष्ठ है। वह प्रमुकी विविध सम्यक्तिया का उपयोग कर सकता है, बार बंदि मनुष्य एसा नही करता, उसनं इस सक्ष्य को यदि ह्योड दिया, भपन प्राप्तक्य पद की ब्रोप संसूह फेर लिया दो बंद भगवान् की वष्टि से--

"मोषमन्त्र विन्दते प्रत्रचेताः" क्वे शत हे रहित बहुल न्यर्ग सन्त साता है, प्रकृति के दान को अवर्ष जवा-कता है। उसे कमनीय कुछुम धीर सुमझुर फली के उपयोग का कोई भी खिकार नहीं है। जिसने घरने जीवन को प्रकृष्ट कान को कों में नहीं स्थाया उसे प्रकृति की विकृतियों के मोन का कोई समिकार नहीं।

'सत्य वदामि वध इत्स तस्य' सत्य कहता है कि वह उसकी मृत्यु है। वास्तव में उसका बीवम, जीवन नहीं है, मह मुर्वाहै।

'नार्यमाग् पुष्यति, नो सखायम्' न तो वह बहा को पुष्ट करता है सर्वात् सपने साम्बारिसक बान को बढ़ावा है सौर न नित्रो, पढोसियो, का उपकार करता है।

'केवलाघो भवति केवलादी'

बहु केवन जाता है, जाने के तिए ही बीता है वह केवन पाप है अब करण है। वेद ने क्या उत्तम नक्य बीवन का बताया केवन का नो ने तिए यत जिता, किन्तु जीवन के तिए जाओं और जीवन वह बीवन है कि वित्र वे बहुम्बावना को पुट्ट किया जाए। साध्यास्मिक कानित को नक्त्यती बनाया जाये और क्योंकि वह बहुझानी ही नहीं हो सकते और स वडको बहुझान का अविकार है। वात्तिक हति निवा पांच बहुझान का अविकार वहां? यत्त यह न वहीं तो अपने साध्यास्मित हिता करते, खार का उपकार करते, बुखियों का कस्थान करते। नवर, पांच, पडोसी किसी के काम बाबो, विनश्वर काया को विसका कोई भाग भी गरने पर किसी के काम न बावेगा, किसी के हिते में सवाको, बीवन किसी के लिए स्व योभी बना हो। रोवियों की सीविध, प्यासों को पानी, मूलो को भोचन, खीताताँ को वस्त्र और जवातों को प्रश्नवदान देने ने तुम्हारे सरीए का उपयोग हो। ब्रह्म-ज्ञानी अपनी बास्मिक शक्ति से जगत् कर हित करता है, उसका एक-एक श्वास-प्रस्थास क्या न्तों कर पश्चित्र प्रमाय पैदा करता है। इस नी विवाद-सहरी से सुष्टि मैं वह पवित्र हरगें प्रवाहित होती हैं जो जीव मात्र के लिए प्रकृति को वस्थान-कारिणी बनाती है। यत समभी कि वह निठल्ला बैठा है वह बैठा ही बैठा सूक्य जनत् मे काम करके स्पूत्र जनत् पर निमा इच्छा के ही प्रमाय वाल रहा है।

'रहे बहा दीपक तहाँ निष्चय करे उदोत'

बह्मज्ञानी किस देश ने होगा उस देश के कल, बाबू, पेड-पीको तक को सारिवक रम में रनेमा, यही उसमें उपकार होता है। सत वह प्रकृति के दिए फल-कूलों को मनुष्य के दिए हुए भोजन को, किसी त्रकार वी सरवान् के क्ये हुए प्रसाद को न्यवं नहीं कोता । परन्तु को एक वो क्नों ही करने बोग्य दुराराध्य इस ब्रह्मा-राषन कथ तप को नहीं कर सकता, वह समार की तेवा करे समार के प्रति अपने को उत्तरवायी समभे। बहु कितना खाता है उसके बोगोपभोन से प्रकृति के कोच का कितना भ्यय होता है, और वह जनत् का स्पकार कितना करता है यह हिसाक उसे नवाना चाहिए भीर यदि इसम उस के काम से उसका व्यय अधिक है तो बह पापी है। भीर विव केवल साता ही है भीरससारका किञ्चिन्मात्र भी हित नहीं करता तो महापापी, लुटेरा अधस्यक्य है। बाज हम ने कितने ऐसे मुटेने बीर महापापी, है, इसका विचार प्रत्यक मनुष्य अपने लिए स्वय करे । यदि अपने जीवन का विचार करें तो हम धपना जीवन सफस बना सकते हैं। प्रथम धपने की शाककर तब दूसरों की घोर घाका उठाने का ह्यारा प्रचिकार है। वेद ने तस्य की शिक्षा वे दी। अब हमारा काम है कि हने जिस सिये यह जन्म मिला है उस उद्देश्य को सफल बनायें।

कुरीतियां

ले ० स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती-प्रधिष्ठाता वेद प्रचार

नदा चाय का प्रचार, पूज्यपान की भरमार, क्या गरीब करबार, सांधु क्या न पुतारी है। स्वान-विजेगा के माने, अने लडकिया नथान,

सौर माच सणे कान, देकों कैसी मित नारी है। रचे देवता समेक, बाके मस्तिष्क पूरे टेक, नहीं दुवि व निवेक पूर्वा ईंग की निवारी है। तो की साला नहीं वह, बनी पूरवानानों की कह,

मरेक्यके नहीं समर मनर पूजा ग्रमी जारी है।

8

★ वचन-सन्देश 🖈

दण्ड और शासक

दण्ड विद्यान ही प्रचापर शासन करता है दण्ड ही
प्रजा का रक्षक है सोते हुआ को जगाने वाला दण्ड ही है।
इसीलिए ज्ञानी लोग दण्ड को ही वर्म कहते हैं। जब दण्ड
विद्यार पूर्वक लागू किया आए तो प्रजा को धानन्दित कर
देता है और जो बिना विद्यारे दण्ड चलाया जाए तो सब
धोर से राजा का विनाश कर देता है।

—-महर्षि मनु

जिसके कन्धो पर शासन का भार हो, उसे व्यक्तिगत पाप भौर दोष का विचार त्याग कर, जिस प्रकार भी हो सके सदा प्रजा का हित करना हो चाहिए, यहो पुरातन राजधर्म है।

—रामायएा

ज्यों-ज्यो अभराध क्छते जीये, न्याय को उग्र होते जाना चाहिए। —वैन जानसन

पहले ग्रपराघ तो उनके है जो उन्हें करते है, दूसरे ग्रपराघ उनके हैं जो उन्हें होने देते है। —यामस फूलर

सम्पादकींय

जनता वजुहस्त को तलाश रही है

दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान और उत्तर प्रदेश में एक साथ हुए बम के बमाकों ने सारा उत्तर भारत हिला दिया है। जून भीर मास के लोबड़े मासूम लोगों की फटी लागें, बीसते विवाडते अय से बर्धराते नागरिक स्तम्भ धाक्रोश मे तनी मानवता की मुकूटिया ग्रातकवाद की दुर्दान्त कहानी कह रही हैं। ४२ जगहों पर विस्फोट हुए और द॰ लोगों के चीचडे उड । सैकडों लोगों की वायल होना पड़ा है। भ्रातकवादियों ने इन बन विस्फोटों को एक समय में ही भनेक प्रान्तों में विस्फोटित कर भारत सरकार के सामने खुली चुनौती दी है लेकिन उनके इरादे कुछ भीर भी के, वे बाहते वे सारा उत्तर भारत हिन्दू सिल नृहयुद्ध की घान में मुलसने लगे। लाखों लोग इघर उधर आने जाने लग जायें भाकी तादाद में एकाएक बावादी का तबादला शुरू हो जाये । इस घडयन्त्र में निप्त विदेशी ताकतें भी इस दिन का बेसबी से इन्तजार कर रही वीं किन्तु उनके इरादो पर तो पानी फिर ही गया। उद्भवादी अपना हर हमला पहले से और भी अधिक क्रता के साथ करते था रहे हैं। सरकार के सामने दो बाते आकर खडी हो गयी हैं। पहली आवश्यक बात यह है इस समय सिख हिन्दू दगों से बचा जाये, अन्यया पृथक्तावादियों के मनसूबे अवस्य पुरे हो जायेंगे।

दूसरों — बातकवादियों के साथ कूर मुठमेंड मोल लेती ही पहेगी, क्वॉकि इसके सिवा कोई चारा है नहीं। पजाब उपवाद की ख्नी होती में तकफ रहा हूं परन्तु वहां हिन्दू सिवा वमें नहीं हो रहे। न हो सकते को परिस्थितिया है। उसका स्पष्ट कारण हिन्दू सिवा के प्रापसी रिस्ते नाते, यारो दोस्तों, प्राप्त का लेन देन हैं, वो उन्हें तामाधिक एक्यूनता में वाबे हुए हैं। इन रिस्तों को परखंचे उदाने में नमें हैं

लोंगोवाल और बादल के इस्तीका देने के बाद बकाली दल पर स्वयुक्त से उपवाधियों का कन्या हो गया है। इस क्यान टो व्यक्ति उपवाधियों की अद्या के केन्द्र बने हुए हैं। एक मिडरावाले के पिता बाता जोंगियन्दिक्त और हुमरे कर रहिए हा एक मिडरावाले के पिता बाता जोंगियन्दिक्त और हुमरे कर रहिए हो। एक मिडरावाले के पिता बाता जोंगियन्दिक्त और हुमरे कर रहिए हो। हम बहु के है। के बताना बाहरे हैं इन बयाकों से कि यह सिख नेतृत्व हमारे हाथ में है और हम सरकार से बनों के बारित बात करना पसल्य करने। के सब्दुक्त सरकार से प्राप्त कर पिता करना पसल्य करने। के सब्दुक्त सरकार से प्राप्त कर सिख नेतृत्व हमा सरकार और गुप्तकर विभाग की पोल लोगने में पूर्ण सफल रहे हैं। अबकि सरकार और गुप्तकर हो ही गया है। सा प्रतक्ता के साधुनिकतम तीर तरिकों से निपटने के लिए हमारी पुलिस और गुप्तकर स्वॉस्त संस्थान मही, स्वसे स्वयुक्त हम हो। इन बातकनार से के हुए प्रहास से स्वस्थायी जनता एस क्याहत्व हो। इन सा प्राप्त से सा सा अस मही, स्वसे स्वयुक्त से राजीव गायों में राजीव जिला का स्वर्ण मही से स्वयापी जनता एस क्याहता है। इन सातक सिक्त का स्वर्ण मही स्वर्ण से राजीव गायों में राजीव साम मही के स्वर्ण स्वर्ण से स्वर्ण स्वर्ण मही स्वर्ण मा सा सुनना चाहती है

जो निर्वाचन के दिनों में हमारे युवा प्रधान मनी ने गुजाया था।

देश को धराजकता से बचाने के लिए सरकार को उसी भाषा में बात करनी पहेगी जिसमें उग्रवादी बोलते रहे हैं। वह माषा बन्द्रक की नाल से भीर बारूद के जबहे से निकलती है। हमारी पुलिस, और सुरक्षावाहिनी की बन्द्रके जग सायी हुई नहीं हैं हमारे जवानी में वीरता सो नही गयी है, अभी वीरता बाम नही हुई है। कमी मगर है तो हमारे नेताओं के पस्त हीसलों की है। चन्द मुट्ठी भर सिरिफरों की आवाज से डर जाने से काम नहीं चल पायेगा। सरकार ने सबक ले ही लिया है। नरम रुख अपनाकर भी क्या मिल पाया, पजाब समस्या पहले से भी और अधिक खतरनाक हो गयी। वैसे भी लोहे के जब तक टोनों सिरे गर्म न हों उनको जोडा नहीं जा सकता। सरकार का लोह मिरा ठडा रहा भीर अकालियों का गर्म। ये छह जुडने की बजाय भीर भी भ्रलग हो गये। पजान की समस्या में उग आये फोडे का बापरेशन ब्लूस्टारके रूप में सन्कारने किया। लेकिन सरकार तब भी समक्त नहीं पायो इन फोडे का विष कहा तक फैल गया है। पूरी बाह में भीर भनेक फोडे फिर मे निकल आये। सरकार केवल मरहम लगाती रह गयी। और अब जब ४२ बम दो दिन में फूट गये, देश के भीड भरे स्थानों में नाशों का व्यापार हुआ। सुरक्षाकर्मी नैताशीं की चौकसी में लगे रहे भाग जनता बारूद निगलती रही। विरोधी नेता श्री बाजपेयी ने सारा इलजाम सरकार पर लगाकर राजनैतिक लाम उठाने की कोश्चित्र करनी प्रारम्भ कर दी। इस समय तो उन्हें भी बाहिए कि देश व्यक्तिगत दलगत स्वार्थों से वहीं ऊचा है। हमें केवल प्रशासन की मजाक उडाने का हक नहीं है, बल्कि अपनी योग्यता और धनुभव कुसलता से राष्ट्र में उठी भयकर समस्या के निदान में सहयोग देना भो कर्तव्य है। हरियाएगा उत्तर प्रदेश, राजस्थान भीर दिल्ली के इतने स्थानों पर बग फूटने का मतलब है कम से कम पांच सी भादमी इस वह्यन्त्र में शामिल हैं। जाहिर है वे उत्तर भारत में फैले पड़े हैं, उनका कोई न कोई मुख्यालय जरूर रहा होगा जिसके ग्रादेश से उन्होंने १० भीर ११ मई के दिन चुने। इस अच्छी खासी उग्र-वादियों की शहर शहर में फैलो फौज ने भारत की नीव मे जो पलीता लगाने में सलग्न है, जरूर कोई न कोई सुराग छोडे होंगे। जासूसी विभाग को अपनी दक्षता का परिचय देना चाहिए। काल का अध्व दौडता हुआ। अब जून के प्रथम सप्ताह की तरफ आ रहा है, उप-वादियों को वह वर्षे गांठ अवस्य तडफडाएगी, उनके भीर क्रूर होने से पूर्व सरकार को विष दन्त तोड देने चाहिए। जो इक्के दुक्के मिर फिरे रहेंगें उनसे निपटना फिर और भी भासान हो जायेगा। इसलिए प्रजा के हित में बब प्रधानमंत्री को राजदण्ड हाथ में लेना ही होगा, मन्यवा हालत भौर भी सगीन होती जायेगी।

— बद्धवाल सुर्वाञु

"नव जागरण के पुरोधा" पुस्तक पर मेरी आपत्ति

स्वामी रामेश्वरानम्द



श्री बा॰ प्रवानिकाल प्रारतीय ने नव जायरल के पूरीया धन्य की बडी प्रश्ना की है। य॰ नेम्यराम से नेकर वो प्री ऋषि के जीवन छारे हैं ने उन सबसे उत्तम माना है। यह तिस्तने इस सञ्जन को जज्जा नहीं घायी जब कि वह ना जीवन मरिजों के साधार पर ही है। इसमें उत्तमता कहा से सा गई। धन्त

- (१) इसमे प्रयम न्यूनतातो यह है कि इस पुत्तक का नाम नहीं जिल्ला यह है क्यायदि ऋषि का जीवन चरित्र है तो जीवन चरित्र जिल्लना चाहिए
- () इसमे ऋषि कास्य लिखित भीवन चरित्र नहीं आर्थाओं कि सब से प्रामा स्मिन्हे।

स्थाम श्रीकहते हैं मैंने पाँच वय मे देवन।गरियशर पढने का भारम्भ निया था। भौर सभको हुल की रीति की शिक्षा भी न तापिता सावि तिया करते वे। बहुत से थम अफ्ड दि के इलोक और सुत्रादि भी कप्टस्य कराया करते वे। फिर मार्वे वस में भेरा यज्ञोपनीत कराके मयत्री सज्या और उसकी किया भी सिमा दी मन्धी। मुक्त को यजुर्वेद की सहिता का धारम्भ कराकर उसने से प्रवम रुद्र च्यास पर या गया था। विता सावि यह भी कहा करते थ कि तुपाचिव पूचन किया कर। प्रामे स्वामी जी शिखते हैं, माता जी बीर वावा जी के समऋति से क्ति। जी शान्त हो मए। फिर निकब्दु निरुक्त पुर्वमीमासा प्राप्त साहत्रों के पढ़ने की इच्छा करके बारम्भ करके पढता रहा धौर कमकाण्ड का विषय भी पढता रहा '

सीर भवार्ग नाल कहते हैं मुक्स कर ने नि उप्टूनियन सीर पूज मीभासा खाबि पाइनो की पढ़ने की रूप, क्यन्त की । पूज १६। ये स्वामी व्यानच जो के विपरील किसते हैं कि इच्छा व्यस्त की धीर स्वामी जी कहते हैं कि मैं पत्ता रहा।

साये स्वामी की लिखने हैं 'उस तमस मेते तिरक्ष किया कि घर दिनाह किए जिना ये लोग म सोविंग न त्यां पढ़ते रा ब्राजा मिलेगी और न माना पिता मेरे सहामारी रहते 'गर सस्त होगे। तस ने हम ने माने सोच दिनार कर सह निश्च का निश्च कह सह करना

ब-म भर के लिए बच्चा बहु निरुव्य मैंने
किसी गर अकट मही किया एक मान कें
निवाह की नीवारी भी हो नवी। भी कें
बहाने एक बोती खाय में तकर घर खोड़
कर साम के समय आग चंडा। सिपाही से
कहला भंजा कि एक निज के चर बचा है।
बार कोश पर एक धाम या। बहा जाकर
राजी को उहरकर दुवरे बिन महर राखी
स उठकर रे१ कोश चला।

कोर मवानीलाल को जिसते हैं कि
स्व करित सारम दगाल में दबनान्य औ
सिसते हैं कि 'बार कोण चल के दे एक
साम में पढ़ने कोर बहा के हुए नाए मदिर में राजी निवास किया वह साम बढ़ा राजपुर वा। इसी साम के बावति सन्तिर में निवास सादि की पूछ पुत्रिका है। दूसरे दिन महर राजी डठकर पन्त्रह कोस क्यों।

और स्वामी की कहते हैं, चार कोख पर एक गाव वा। वहीं ठहरा धीर सवानी की कहते हैं कि स्वामी जी एक गाव के हनुगान में तरहर में ठहरे धीर वह गाव बडा रामपुर या। बढाधी किस की वात सब गाने स्वामी की की वा डा० साहब

यह रामपुर नवर टकारा से पन्द्रहु-बीस कोश दू है। स्वामी जी प्रवम दिन ही रामपुर कैसे पहुँचे। जब कि रामपुर टकारा से पाउह जीस कोश दूर है। धौर श्रद श्रापमे नावदेशिक सन्ना के निलंब के विषरीत स्वामी दयानन्द जी की अपन्म तिथि क्यो सिली। इसका तो यही प्रयो-जन है कि आयों ने परहार विरोध सडा हो जाए। भीर यदि भागके कथनानुसार धनर स्वामी दयानस्य और की अन्य तिथि भादो मास की मान की जाये तब स्वाभी की का यह कथन कैसे सत्य होगा कि विवाह की तैवारी हो चुकी बी क्या शांखों ने व बाहितन पितृ पक्त ने विवाह होगा, सम्भव था और स्वामी जी दर से किस मात में निकलते हैं। और विद्युर के कार्तिक ने मेले पर नैसे का सकते हैं। अविक प्रादिवन के परचात् कार्तिक माख ही बाता है। समनव एक मास स्वामी बी बायली यान मे रहते 🖁, भीर तीन नाव कोट कांगडा में रहते हैं। फिर कार्तिक का मेला सिंदपुर बाबा, और वे बाडे के दिव में एक पोती में क्षेत्र काळी । इसके स्कृत १८६ के ब्रालित वित वनते हैं। वर्राराज बर से वैद्याल के प्रतिवन दिनों में निकसते हैं। एक बात सायके ग्राम में रहते हैं। पिर वर्षा ऋतु के दिनों में कोट कागडा धौर धनत ने सिंडपुर के कार्तिकों मेले पर चतुं जाते हैं।

स्वामी दयानन्द जी तो लिखते हैं कि १४ वर्ष की सबस्था के बारम्भ तक सम्बूर्ण यजुर्वेद कुक्क-पुद्ध सन्य बेदो के मान सीर शब्द रूपावसी ग्रांवि स्वाकरहा के क्रम पूरे हो नवे वे प्रकार पढ लिये थे। और भारतीय जी कहते हैं कि यजुरेंद का वही श्रम मूनसकर को पढाया व्या । जिसमे कैलाक वाली बासकोच जनवान् खकर का वर्णन है। भीर पिता की प्रवृत्ति सपने पुत्र को सम्बदम्ब निष्ठ वर्गशीय एक भारको ब्राह्मण बनाने की बी। मैं पूछना चाहता है कि बजुर्वेद के किस बच्चाय में कैसास वासी बासुतोप जनवान् सकर का नर्जन है। क्या बाप ने बहा सर्जने धीर बब स्वामी जी ने सम्पूर्ण यजुर्वेद सन्य देवो के कुछ जान और सन्द रूपा-बनी बावि स्थाकरल के बन्ध वह लिए वे। तो कापने क्यों कहा कि वहीं साथ पढ़ाया गरा जिसमें कैलाश वासी श्राशु-तीय अववान् शकर का वर्त्तन है। प्राथ-कल कैवाश बहुवा वीनियों के बविकार मै चला गया है। धन वह बाबुतोप वन वान् शाकर कहाँ रहता है। बापको भी तो कुछ पना हो। स्वामी बी को धर्म श्रीहकहर प्रापने स्वामी जी का क्या धामान नहीं किया। तथा पु० १ पर धापने स्वामी दयानन्द जी की नव जाव-रण के पुरोचा भीर शालाका पुरुष सङ्घा है। पूरोबापूरेहित को कहते हैं। और शलाका सुपारी काटने के स्रशता को कहते हैं। ये सथ्य क्यों कहे, स्वामी जी तो साक्रात्कृतवर्मा ऋषि वे । उनको पुरोधा और शलाका पूरव कहना श्रव-मान है। तथा बार बार वर्ष प्रवण कहा, प्रवस्तु भीराहेको नहते हैं। भीर स्वामी बयानम्य जी का सङ्घाविनिध्यमका शिक्कर य नवों निका कि उन्हें हजार क्या पूर्व कपिल बस्तुका राजकुमार विद्वार्थं भी बुवनी पत्नी यशीवरा तथा पुग्यमुहे शासक राष्ट्रम को श्लोड हुओं का निशास तवास करने हेतु राजधसाद का त्थान कर, इसी प्रकार शायमा वया का वर्षिक वर नवा वर। वर्षणातीन वैन्हर अस वचनों को सहन करने में धसमर्थ होकर बृहत्यानी हो वए । हिन्दू पर पारशाही के मन्त्र क्रवटातया शिवाजी के सुद समर्थ रामशस के निए नो यह प्रसिट है कि बैदाहिक मण्डप में सावधान शब्द की सन-कर ही बहरवाश्रम के बटिस दावित्वों स मुन्त होने के सिए बात्र हो स्टे। बीर विवाह क्त्य की समुरा श्लोडकर वैशान्त-वानी हुए। पृ० २१ [।] कृतवा ये बतावें कि इन तीनो का स्वामी दवानन्द जी के जीवन के साथ क्या मेल है। इनका जीवन क्यो लिखा प्रापने भीर जब पृ० ६६ पर धापने राजकुनार खिढार्थ का श्विहास सिस दिया या कि शास्य अञ्चीत्पन्न बाजकुमार सिद्धार्थ का एक रोवी एक मृतक तथा एक कशाबी वं व्यक्ति को देखना किस प्रकार इनके राजसी जीवन को स्थान कर वैराग्य भारता का कारण बनाया। क्याढाई हजार वर्ष पूर्व की वे घटना दोहर ईनहीं जा रही है। क्या बापको इतना जी स्वरण नहीं यहता कि बद बाप पू॰ १७ पर सिदार्थ की कहानी तिक बैठे फिर २१ पृ**० पर भी क्वो** निका। स्वामी वयानन्द भी नहाराच ने तो बुद्ध को अबकर नारितक निसा है। बाप उसकी स्वामी दवानन्द जी से सपमा देते हैं। गौर तुमसीबास की स्त्री ने विधव वासमा मे फसे तुलसीदास को फटकार विया, फिर उसका नया वैराग्य वा। इसी लिए उसने धपनी राषायस में शिका

क्षेस गवार शूह बहु नारी। ये सब ताकन के समिकारी।।

धीर रायवास को ग्रह्मबाधम नहीं करना वा। तौ फिर मण्डप में किस लिए बैठा वेसव जुटे िट जोन थे। इनका उदाहररा बादित्य ब्रह्मचारी के संख्य क्या हो सकता है। ऋषि दयानन्द जी जन्म बरा की कटिस जबीरों के नेवन करने के सिए ग्रहत्यानी हुए और विचा पढके तवा बोबाञ्चास करके देव के बाबार पर सोते भारत की पुन जवादा और पासद का सण्डन किया। तुससीवास और वृद्ध ने बहुत वडे कालन्ड फैलाये । और धापकी स्मरण शक्ति का एक खवाहुग्स् देशा हु। बापने पृ० १ वर किया है कि नुजराती के समर्थ तामुखकार करहेवासास जानिक भाग पुत्री ने भिन्ना। ' पूनकास की रथमूरिन पर ऐसे जनेक व्यक्ति हुए हैं। **१रक्**राम मनु स्**र**ग, क्यान् श्रीकृष्ण धीर संबद्ध समय के राजनीतिज्ञ चिरो-विख वाक्षमव ' 'पुर मासम्म के क्रमायक एवं पुरीवा स्थापना सरस्वती की नक्षमा भी ऐसे समाका पूछनी कें होती है। इसी पुरु के धन्तिम परिक्रों में बाप फिर निश्वते हैं। नुर्वर विकाक मूर्यन्य क्याकार कन्द्रैवासाम मुक्ती ने निस्ता था। पुक्रपास एक महातृता है, बहाती सह में वरपारका बीकृष्य तम कर्ज कोन विदा हुआ है। इक्क्पीकानिकीं एक प्रश्नकरि वनदे और सहस्या वाची की कोलाँ प्रश्नी है।

हुआ शांक कावि मण्य वृद्धिका की मद सूमि में रहने वाली क्यर वादिका है को वहा पांचनी सत्तान्दों में वी । हुन और सक वाति के सीव वह सहाकू बोडा बीर निवसी वे। इन बोनो ने यूरोप को बापने प्राक्रमको से बहुत बार उसाइ सा विवा वा। रोन को चीन को भी सनेकों बार इन लोगों ने लूटा। विश्व देश पर वे सीम सेमा सेकर पढ जाते वह' हाहाकार मन बाता वा । एक बार समाचार निवा कि बड़ी बारी हूजों की बेना हिमासय पर्वत के उस पार भारत पर ब्राक्रमण के किए इक्टठी हो एही है। इस समय भारत में बड़ा राज्य सबक था। बहा का राजा कुमारकुत जा। उनका पुत्र युवराज स्कारमुख उस समय तक्ष्म नही हुए वे । हुनो का सेना एकब होने का जैसे ही क्याचार गिसा स्वत्यकृष्ट घपने पिता के पास बीडे बये। सम्राट कुमारनुष्त अपने मन्त्रियो एव सेनापतियों के साब मत्रका कर रहे वे हूखो न बुद्ध करने की। स्कृत्य मूच्य ने पिता सं कहा कि नै भी बुद्ध करने बाऊना ।

सहाराजाकुमारदुष्त ने बहुतसम अस्या कि क्रिस बहुत गराकमो सौर

बालमञ्च-

वीर बालक स्कन्दगुप्त

प्रस्तीता-बलजीत शास्त्री

निवती होते हैं। वे बायम पूरक विशवकर मी बबको है और जनकी वक्षा भी स्विक है। उनके बकरता हो मुख्य किया भी स्विक है। उनके बकरता हो मुख्य करना है। में किया हो किया के स्विक हों कि स्वक्रिय के स्विक हों कि स्वक्रिय के स्विक मी स्विक की प्रतास के सिए गोरक के बाद है। मैं मृत्यु आ बात करने भी बहु मा बीर बायने वेच को समुख्यों के सारा तुनने नहीं दूवा।

महाराज कुमारणुख ने समने गीर पुत्र को हृदव से जवा निया। स्थमपुत्रस को पुद्ध में बाते की शाका निष्कं गयी। बनके साथ गया के में नाम जी सिम्ब चया पर पदना से चलकर पवान को गार करके हिदासन की न b से बनी सफेद घोटियों पर वे बीर सैनिक चढ वये । भवानक सर्वी घोतल हवा और कफ के तुकान भी उन्हें भागे बढ़ने से रोक नहीं सके।

हुलो ने स्वाहुबरे बेवो पर धात जम किया था। कोई वामे बकर उनगर जा में धाक्यम कर स्वकाह दे यह उन्होंने कमी होमा भी नहीं या। वस उन्होंने बेबा कि हिमालय की मोटी पर से बबी बारी केवा उन पर धाक्रमण करने उतर रही है वो वे भी सबने ने तिया हो बत्रे। उन्हें वस से धानकाम्य सह हुमा कि उस प्रका से धानक भाग पर से उत्ता सी स्ववाद से बार मान भाग पर से उत्ता सी सल्या सिये वहा पत्रा भाग पहा होटी धरस्या का वासक भाग पर से उत्ता सी सल्या सिये वहा पत्रा भा पहा है। बहु वा मुक्त सन्व स्वुप्त ।

मुख भारम्भ हा नया । युवराज स्कन्यमुप्त जिम्मान निकलते ये शत्रुकों को काटकाट कर डर कर देते थे। बोडी देर के यूद में ही हुणों की हिस्मत टुट वई। वे सोग इवर उघर मागने लगे। पूरी हुए सना भाव सडी हुई। शत्रभी पर विकास प्राप्त करके क्षत्र सुवराज स्कन्द गुप्त फिर हिमालय को पोर करके अपने देश पहुचे तो उनका स्वागत करने के लिए काको मनुष्यों का भीड वहा पहले सडी थी। मगवामे राजधानी से पाच कोख तक का माम सज्ञाया गया वा उनके स्वाभत के लिए पूरे देश में उस दिन उत्सव ननाया वया । यही युवराज स्कन्य-नुष्त भागे चलकर भारत क सम्राट दने। बाब के ईरान और अफगानिस्त न नक इन्होने प्रपने राज्य का विस्नार किया। इस जैसा पराक्रमी बीर इतिहास में दुलम ही होता है। इन्होने विन्वित्रम करके ब्रश्वमेष यक्ष किया वा। वीर धर्मात्मा दयालु और न्यायप्रिय सम्राट था। बच्ची बाबो इम मी इन महान् पुरुषों न विका लेकर ऐसे ही बन।

युवामञ्च-

समेवी युवास्य यजमानस्य बीरी बाबताम्

युवक दीक्षित हों

स्वामी समर्पेगानन्द सरस्वती

थात्र ज्ञानव समाज की धरवना दुर्वशा है। प्राकृतिक वैभव अपनी परा काष्टाकरप_{ष्ट}च चुका है। किन्तु उसका फ़ल विज्वस ही विज्वस दीवारहा है। इसका कारण नवा है ? प्रकृति के जिल तरवी को मानव ने स्रोध निकामा है। तमके सदुश्योग के सिए को सराचार भ्रात्नाव तवा वितेन्त्रवता अपेकित है मह बाज मानव समाव ने नहीं है। इससे बढ रर दुस की बात है कि मानव समाव इसका उपाय ठीक नहीं सोच यहां है। बाज समाजवादी तथा साम्बवादी जीव कहत हैं कि वर्षि मीज्य पर्याप्त मात्रा ने त्रसम्ब ही तथा उनका वितरस जीक हो ही मानव समाज के हु क दूर हो जावेंने । यह बात कुछ प्रश्न तक ठीक है। जो सीव बुख और वरिव्रता के कारश कुरात्वा करते हैं वह इससे दूर हो बावेबी करन्तु मुख और वरिद्रता है वडकर तृष्णा और भीवगढ है। उसकी विकित्सा की क्या करनी थी उसको बढाने में सबे हुए हैं।

वाच हवार में सम्म बीर नस्त की इसवी क्नी नहीं कितनी मनुष्मता की है को सरकन कड़ने के बावन हैं, ईंग्बर क्रमान, क्राइट, क्राइवर्ड, विवेगितका, स्त्वन । विद धन सः को एक सन्द ने कहुना हो तो वह है उत्तन विद्या । उत्तकी कोर मानव संबाध का ध्यान नहीं वा रहा । हुनारी सम्मति ने उत्तन वितना मानव समाध की स्रतिम संरम है।

परत् उत्तम शिक्षा का बाकार शी तो कुछ होना बाहिए। यही बात बाच हम इस लेका ने विकाना चाहते हैं। साथ हम शिक्काधास्त्रकापरम नीविक पर मोपयोगी परमोपेक्षित सिद्धान्त सवार के सामने रकना बाहते हैं। बात नई नही है। परन्तुन काने इसका विक शास्त्र से लपयोग वर्जी गही किया जाता । वह सिद्धात है वत प्रथमा प्लव । हम किसी शैनिक को सेना में नहीं नहीं करते जब तक उसको मन्द्रे के सामने कवा करके राष्ट्र रक्षाकी सपद नहीं दिकाले है। इसी प्रकार राष्ट्रपति सेनापति राष्ट्र के मंक्रि मण्डल संसद के सदस्य बादि सब सोवों से सपव भी जाती है। वैक्कि बृहस्य ग्रामन इसी शक्य के ग्रामार पर बाबा है। विकास नवा है ? स्त्री पुरुष के एक दूसरे के सुबा-पुता ने जीवन वर साव हेंने की श्रमक । वह शबय इक्त सुंव के बावने हो बाहे रविस्ट्रार के बनतर में

इससे कुछ सन्तर नहीं पक्ता सपय तो सपय है। बेद हैं कि ननुष्य के भाषी बीतन के जुलाबार शिलस्तालय में कोई सपय नहीं।

प्राचीन मर्थादानुसार इर विद्यार्थी को विद्या शास्त्रभ करने से पहले तीन सावजनीन महाशतुक्ती में से एक न एक शतुके निवा चाव सपव सेनी होती वी। वे सावधीम सनुसक्या से तीन है (१) क्रमाम (२) धन्याम (३ सज्ञान। इसके निवारकाथ का बता लिया जाता वा उसे ही उपनयन सस्कार कहा बाता था। इसीलिए प्राचीन काल ने विद्यार्थी को बती या वर्णी कहते वे । वर्णी इसलिए कि बहुइन तीनों में से एक सनुक नाश के लिए बस करता या समाव दुस से अवने का बती बैन्य धायाय दुस से शहने का बती क्षत्रिय अविद्या दुस से जड़ने का बती बाह्यएं कह्नाता था। जो श्रयोग्यता के कारण इन त[्]नों मेस कुछ न बन सके वह किसी वती के पास रह कर खुर्थूया द्वारा वत पासन का लाज केता का वह सूद कहनाता था वह चुनाक करता था कि हुध्ट की सवा नही इस्ता। किसी न किसी लोक सेवक की क्षी केवाकरूना यह उत्तका जुनाव वा। इसक्रिए बहु भी वर्ली कहनाता या।

साब की शिक्षा में यत का कोई स्वान नहीं न कोई यत की महिला की धोर स्वान वेता है। विद नोई सबस निवल पर सन्यान करता हो तो उसी स्थपित स्थपित सन्यान करता हो तो उसी स्थपित सन्यान सन्याहित कहेवा मुक्ते क्या पर करते हैं से मैं इसकी यूक्षीवल के माथ मूँ। वस इस पराई मुझीबत में घने घापको मिटा बैने की दीक्षाने प्राचीन काल से मानव वाति को प्तनाऊचा उठासावा।

वाह्य कहता वा कि अदि नदर के जार के एक भी विवाहीत है तो हुन विवकार है। अनित कहता वा कि विव नवर व प्राप्त में एक दुवल पर भी वण्यान् आल्याचार करता है तो मुक्के विकार है, मेरे जीने से क्या लाग वैक्य कहता के क्यारी मेरे नवर व प्राप्त में कोरे नोकन किमा मुख्या नरता है तो मुक्के विकास है।

बस इमारी सस्कृति का पूल तस्य है—शयब इत दीक्षा जिसका परिखास वा समिकतम मात्रा में स्वेण्ड्यायूर्वक अव और रण्ड का मूनतम प्रयोग।

क्स की सस्कृति ने अविक्**तन सम्ब** का प्रयोग है।

वजीवादी सक्षार ने वृजावित को यजासमब प्रत्याचार ी सूट है। सक्ष-पति का बेटा कैंसा ही दुराचारी हो, इसकी सम्मत्त उसे निसकार ही रहेगी।

इस स्रविकतन स्वेण्डापूवक अस्य की आवना वानूत करने का उपाय है खिक्षा से पहल की दीक्षा।



व्यामपीठ---

उपनिषत कथा-माला-४

सच्ची पूजा

प्रवचनकर्ता-वीतराग स्वामी सर्वदानन्द महाराज

एको बन्नी सबमूतात्तरात्म एक डप बहुधाय करोति। तमात्मस्य येऽनुबद्यन्ति बीग स्तैयासुस्य शाश्वत नेतरेवामः। ४।१३ कोपनिवद्।

वस उपनिष्ट के सबस बार बात बता है प्रव परास्ता के नियक से निष्यत कर निया है। दूसरे जिस समाज को यह बंद्र प्राप्त हानी है मतुष्यों अ उसका निवस के जना है। तसर प्रमुक्ती के ति क्षान का है। बोद्य यह बताय के कि जो उसका प्राप्त कर लता है "बका महिसा क्या होनी है?

ष य ज ति वाज कहत है कि आयों का परमा साका जात मुण्डि रचना के बहुत य छ मान्त हुए। इ हुँ पहल सहु ज्ञान नहीं य कि रचना का एक है। पर हु आप कमें और उपनिग्मे का वेखा है। जिसे का म सम्बद्ध के एका बा। । सम्बद्ध समझ सहा के एका बा। । सम्बद्ध स्वरूप निरम्न का एक है वेदों सा भी

न द्वितीयो न ततीय चनुर्थो नाप्युच्यत । न पञ्चभो न वष्ठ सप्पमी नाप्युच्यत । नाष्ट्रमी न नवमी दशमी नाप्युच्यत । य एत देवमेक दृत देव ॥

अवववेद १३।४।१६ १८

सर्वात् परमात्मा एक है सनेक नहीं है। वह न ना है न तीन है चार नहीं भाष नहीं छह सात साठ नी और दस सी नहीं। स्रतएव वह केवल एक हा है। यहना कि साबों को परमात्मा का ज्ञान नहीं या या पीछे से हुसा सबया निसार है।

फोडा सिविशसन न से सन्छा कराये हो जनका २०० सा ४०० स्वयं देने होते। सह नयों ? फाडा नो दोनो के इसाज से ही स छारो जाएसा गन्दर का मान नयो प्रविक है नाई का सान नयो कम है ? कारए। यह है कि वह उडा है सौर यह छारा है डाक्पर स्विक पडा लिखा है और नार्नक्य पड सिखे सादिनयों की नात स्विक मानो जाती है।

यह विचार कैस फैसा कि मार्थों को ^रदवर का ज्ञान देग से हथा[?] व्सका काण भी मृनियां परमात्मा का नाम वटो ग्रीर उपनियदो म कई प्रकार से भाषा है अनिन नाम परमेश्वर का है पर नुजल नाम भी परमन्वर का है व्सी प्रकार पथ्वी नाम परमेञ्वर का बायुनाम परमे बर का अपूर नाम परमेश्वर का भौर सूय नाम भी परमे वर का है। जब लोगो नेदेशा कि बेदो मे प्रनित जल पृश्या वायुच गस्य भी परमे वर की **कहत हैं तो हि दू उनके आग हाथ जाड जोड** कर ख रहो गय परन्तु यह न सम से किय सव तागुलासक नाम है। परमेल्बर तो त्वह ै परतु ⊐सको कई नामो से पकारा जाता ^{के} । जम कि उट*निषद मे भ्रया≐ कियहसकससार उस जल की रचना ै ग्राटस जल के बहने से क्या पामम-क्रानियाजाय[?] नहीं। कन्नापि नही शकराचाय जीकहतुहै जिससे सारासस र उपन हुआ। और जिसमे यह त्रय हाज ता^{के प्}यक्तानाम जल**े**। ग्रयाका ज्ञान सन्दिके ग्राप्टि से वला धन है। यजो मन्दिरोपर भण्य होते द्मयासे पूछागया कि परमामा के भण्य करात्रे ? ताउ हान उत्तर दिया कि श्यद्मारि ज्सके भण्ड है। बदो मे कह≓ किहप्रकृत मूय≂ माजैमा पवितार नवालों की जिसम परमामा नरचन का ैन्ध यहं ग्रामन। म म माका न जल नाम । परमन्बर वनो म जब य बातें बाई है तो काइ 🧚 यह नणय कसे हागा। सूना मेरे झाई निन्वाहै हेमनि [!] प्रकाशस्वरूप [!] तू मूम सीघ मागपर र चल जब यह धारिकासम्बद्धासयातो क्यायह मनि जानती है कि माप प्रतिन्ति ह**व**न करत है[?] पर तुर्यदि किसी दिन आपका कपडा न्सनी लपट मंग्राजाये ता यह उसे भी जला दती है। यह ता माएके कपड को भी नही बचासकती तो यह धापको

प्रकट है कि यहां धनि के धय पर मारमा के हैन कि भौतिक धनि के।

जुन भितिषन बरिया की तैर को बाते हो। बरिया में तिन कूदो सही गढ़ेरें पाने में न ते हा यह तुन्द हुनो देवा फिर कह बस परमवस के हुया? हुनो देवा फिर कह बस परमवस के हुया? हुनी लिए तो उपनिवयों के बन्न में कहा है कि परमाना एक है और उसको भुनियों ने बहुत से नामों से पुकार है।

एकोहि मृनयो बहुवा वदन्ति ।

यहां पणित के जानन वाने तो बहुत हैं व जानत है कि हर एक सस्या का धारम्भ एक से हाता है। प्रत्यक सक में एक सवस्य विद्याम न है। दा तीन चर पाच इन सब में एक विद्यामान है।

फिरकहाहै हेईदबर[।] न तेरा कोई नीचा भाग है न मध्य भाग भीर न तेरा कोई ऊपर का ही माग है। परमे इवर मैं तेरी क्या क्यारवा कक[े] तूनीचे भौर जपर के विचार से भनग है ? झास मोग उस परमेदवर को भनी माति बानते ये। ये सब दोष इनमें महाभारत स पी से बाये। जब म सम्प्रदाय हए तभी से बे मी हए। महाभारत से पहले कही भेद विसाई नही देता है। कोई जाति इस्टि नहीं भाती। न सन्ने वेन बल्होज न कोई भौर ही जाति थी। प्राचीन समय में नदको चर ब्राह्ममो की ग्वार वर्णी मे विमाजित किया जाता दः । ब्रह्मचारी गृहस्थी वानप्रस्थी स यासी ब्रादि सम्ब दायक्राय क्रीर सहाण अत्रिय वैदय जुद्र य सब गीजिक नाम की जातिया सकी हो गइ। पहने न काई जाति थी न भगहा य सब सम्प्रताया के ऋग है। लाग कहते हैं कि बायसमाज ही यह कहता है भीर कोई नहीं कहता पर तृतुक्तसीदास महा राजन भी ता व्ही कहा है। यह साढ तीन सौ वयं की ही नो वत है। उनस जब मन्पो न पृष्ठाता "होन भी यहा उत्तर दियाथा। एक प्रश्त होता है ता क्याण्सके चारया दस उत्तर होते 🗦 ? उहोने कहा इसमिए तो सत्य पदाव का तानहालगता। वर्ष बट जोर से हो रही है। चारो धोर वास उम आवा घास व्तना बढ गया है कि उसने मान ढाप लिया है जाने वाले अजियो को विदित नहीं हाता कि हमारा मात्र कौन साहै [?] इसीप्रकार असे पुरुषों के सम्बो का माग भी जाता रहा पाखण्डियो ने

प्राचीन काल में जिस प्रकार सोग परमेश्वर को माना करते थे तुम भी यदि वैसा ही मानना चाही हो मान सकते हो। परमात्मा तुम्हारी बात निकट से सुनता है। यदि सुनाना बाहते हो तो उसके समीप होकर सुनाभो । निकट से उसकी मक्ति करो। परमेश्वर को जैसा नानत हो वैसा ही अपना बाचरण भी कर जो तो तम उसके निकट हो जाधाने। यदि तुमन माना तो कि परमात्मा सत्य है भीर भवित की भी सचाई की तब तावह निकट है। परन्तु मदि तुमने दुकान पर बैठकर सोगो को कम तौलकर देना भीर भूर बोलना बारम्भ कर दिया हो वह दूर हे यह उसकी दूर म भक्ति हुई। मैं कैसे कान सकता ? कि भ्रापके मन म क्या है ? परन्त झापसे तो कोई बान भूली हुई नही। दसी प्रकार मरे मन का विचार मुमे ही मालूम है भापको तो न त नहीं पर तुपरमात्मा सबके तिवारो को जानता

में बापका उपवेश दूपरन्तु किसी दिन एक भादमी ने मुक्ते देखा लिया कि भग पीता हं श्रीर भगका लण्डन श्री वरता है। सुभे उसने कहा कि बाबा एक स्थान पर तो भगका खण्डन करते हो धौर दूसरे स्थान पर झाप ही भग पीते हो। मैंने कहा हा पीता हू सपने पैसो स पीता ह। मनुष्य कहाँ तक दण्ड देसकता है ? परातुयदि मैं उसस कह कि भाई [?] किसी भीर से न कहना तो क्याबना? मनुष्य नहीं परन्तु परमात्मा तो दण्ड देसकता है। पर मनुष्यों से ता हम डरते हैं किन्तु परमात्मा से नही डरते। अर्ड[†] दो प्रास्तो वाला क्या देख सकेगा? वह तो सामने ही देख सकेगा अपनी पीठ की तरफ से तो नहीं देख सकेगा। पर तु परमात्मातो सहस्राक्ष हजारो बाक्षो वाला है। वह तो सूय की किरण के समान देखता है। उससे हरना चाहिए वा परन्तु आप इरते है मनुष्यो से। यदि परमात्मा का भय नहीं तो मनुष्य से क्या डरना? जिस मनुष्य न बुरा काम किया परिषाम सामने बा गया। भीन नेसता था। भारत वध ने उलटेकाम किय जिसके कारण बाज यह दशा हुई । कीन देखता या रिये पल क्सिने विय[े] दूसरे के घर म जाकर क्सिको स्वत त्रता नहीं होता। परन्तु तुम तो धपने घर में भी स्वतनत्र नहीं। यह सब बुरे कमों का पक्ष है। यह कौन देखताया? यह वही देखता था। प्राप कहेवे कि वह समभाता क्यों नहीं ? यह उसकास्वभाव नहीं। में पुछता हू कि लैम्य जलता है दो लडके उसके सामने पुन्तक पढने लगे। श्रव वे दोनो सो गय। क्या लैम्प उनका जग वेगा ? ज्योति देना तो उसका काम ह किन्तू जगाना नही। इसी प्रकार परमेश्वर का काम भी ज्योति देशा है। जब मनुष्य बुरे काम करता है, परमेश्वर भी घोर से लज्जा घाती है मन की घोर सन्नहीं। मेरे माई ! जिल बातीं

और विनको प्रहण करना चाहिए या वह प्रहुख नहीं भी। फिर दुदशान हो तो और क्या हो ?

एक पुरुष कहने लगा स्त्री पुरुष की लडाई का जिल पास हा जाना चाहिए कि जब स्त्री पुरुष लाग पड़े तो धापस मे गकदूसरेको त्याय सकें। मैन कहा सोचो तो सही [।] विद्वानो मे कुछ मति होनी चाहिए। नुम मे तो ग्रनपढ ही भन्छे है। ससार में देखों तो एक स्त्रो पुरुष का विवाहहो गया। यह विवाह जीवन भर कासम्बन्ध होताहै ,सके समान भीर कोई सम्बन्ध नहीं। परन्तु चलो शिमले की पहाडी पर । यहान्नाज एक घर मंजो स्त्री है कल वही दूसरे के घर है। उनके यहां कोई एसा कानून नहीं, परन्तु तुम बाहते हो कानून बनवाना । तुमस तो वही भ्रच्छे है। कल कहोगे कानून हाना चाहिए कि परदान हो । तो भाई [।] अन भीतो कई स्थानों मे परदा नहीं। क्या अनके लिए कोई कानून है[?] तुम मे से भी कई स्त्रिया परदा नहीं करती। ये सब बाते न सुनो⁷ कहा है।

सेवक सदन स्वामी गमन। मञ्जलमूल ग्रमञ्जल दमन।।

संबक्त के बर जब ह्वामी का आप सन होता है तो सब धननव दमन होकर स्वत्त हो जोते हैं। सुनी एक सठ अपने मुनीस के बर बला जाता है। मुनीम की सुवीं का कोई टिकाना होता है। धानेवार सदसी के पर मालिक नेवक के पत्र कार्य सौर स्वत्त को धोर सेवक को पत्र बाता नहीं होना परमात्मा सब का स्वामा है और हम सब जस के सेवक। जब स्वामी है उस समय सब समयन हुए हो बाते हैं सौर समय हमें बाता है। इस्तिए पर-सात्मा का चिन्छन करो। बुरे कामों को कोट दो सा चिन्छन करो। बुरे कामों को कोट दो सा

मेरे नाई। विश्व आप व्ययने वापको वंजासना जातृते हैं तो बल पहल करो। बल ता नहीं वे विसता है जहां बल है बोर कहीं से नहीं मिल वसका। आवकल वह बताह विजनी की प्रक्ति का सवार हो रहा है, यर पर में, रहका वस्त्रका है। उसाना सम्बच्च विजनी से स्टक्ता है। जिसका सम्बच्च विजनी से स्टक्ता प्रकार क्व अनेरा ही प्रन्येश है। प्राप्ता को दिजली का चम-कार परमात्मा से ही निलता है उसको जानन और मानने से ही उसका कन्माण हो बाता है।

परमास्मा धनन्मा है बन्मा नहीं, यह बन्म नहीं सेता। इस पुष्टि की उत्पत्ति और इस रा पालन विकंक प्रधीन है भला बहु कैसे जन्मा हो सकता है? कैसे कोई ऐसी मूल कर सकता है? जितनी माना में भूल होगी, उतनी ही हानि होगी। देखों मानर इकनी बोटी निकल माने से बार के स्थान पर दो पैसे मिलेगे। इसी हैं भी कोजा-कोडा साम होना। इसी हैं भी कोजा-कोडा साम होना। उपना हीरा बोटा निकल साये तो सैक्झो का की हानि हो जाये। स्वस्थि मूल की माना में भेद कुछ प्रविक नहीं होता जैसे धाल बंदी बरल को देश कर बारे कर होते नहीं हो जाती और छोटी करने को देशकर को माना में भी भेद नहीं पकता। परमात्मा को नहीं का कार्य-करने के सुद नहीं सुद ना उसक कार्य-करने हों में कुत नहीं सुद ना वा या परने प्रवास पद जाय परने प्रदेश नहीं हो सकता है।

हैदराबाद म सम्रजी ने एक बड विद्वान थ। विद्वान हा जाहे काई भीर सतान का दूस सबको बरा र है। विद्वान भी सतन का दुख नहीं देख सकता। वहारिवाज है कि कन्याका विवाह सब हो सकता है, जब उसके पिता क पास चार पाच हजार रुपया दहेज मे देने का हा। वहा अनक रूपाएँ हैं जिनका विवाह नहीं होता। कारण जब किसी के पास इतनास्पयाविवाहमे दन क लिए हा सभी वह जिव ह करे। परन्तुबहाक लोग इस रोग को नहीं हटाते, वे जानते हैं कि यह प्रथाबुरी है किन्तु फिर भी नही हटाते। धव दस्तो उस विद्वान का एक कन्या मुसलमान हो गई। जब उससे मुस लमान हाने का कारए। पूछा ना उसने इत्तर दियाकि मैंने अपने माना पिता को सुसादिया उनके पास पाच हजार ६० नहीं था। वे छ। पे मेरा विवाह नहीं कर सकते थ। मैंन मुसलमान से विवाह कर लिया धीर उन्हें मुभे कुछ भी नहीं देना पका। 'हम मे पढे लिखे तो बहुत हैं परत् **वे ध**पने ऐसे कुड क्कट जैंग निकम्मे रिवाजो को बाहर नहीं कर सकते, यह उनकी मूल है। जब उनकी जाति से कोई चला भी जाये तो वह उसे वापस लाने का प्रयत्न भी नहीं करते। इसीलिए सस्कृत का एक विद्वान कहता है कि शास्त्री और वेदो कापड पढाकर भी कुछ लोग मूख ही रहत हैं। परन्तु कीन ? शक्रियावान् धार्यात् व जो भागन पढे जिले का धानुकरण

सब देकां। एक रोगी है उसे वड जोर से जबर चडा है। हु वे शया जवरा कुछ कुनेन सिक्क्पर को शीधी सादि सब कुछ काट के नीचे रख दो। बया यू सीय-विद्या खाट के नीचे सा उसे पास रकत से उसका जबर उत्तर वादेगा? कदाशि कही। मेरे आई! ज्वर तब ही उत्तरेगा जब उसे कोई सौनवि किलाई बायेगा। वैसे कदारिंग तही उत्तरी करमारा हो को निकट होकर पढ़ें। उसी करमारा हो सकेगा। जिस सकार में मातु बेस और पितृ स्तेहन हो कही उस सवार में भी कटसाए। हो जकता है? परमात्या सब को होता से एकने वासे हैं तनिक कोषकर दो देखी!

ज्ञान कोर पढाय है बौर किया बौर। ज्ञान अनुकूल किया के लिए झास्मिक बल होना चाहिए। विद्या ने तो बपना काम करके बलने को ज्ञान नेना है। चैके परिस्थ एक दोषी को पकडती है परन्तु रण्ड ननी वे सकती। वण्ड तो न्यावाणीश (बज) ही देगा। पुलिस का काम पकड़ना है न्या-व्यापीश का यण्ड देगा। क्या कर्षी को-क्षात्रस्टेट की स्वय पकड़कर किसी को नण्ड दे नकता है ? कदाणि नही। इसी प्रकार विद्या का काम हे बता देना किन्तु न्या जान का पनकरण करना द्यारियक कर के प्रणीत है।

वैद्यालोग साजकल वर भीठ सीर करपोक होते हैं। मैं बस्वर्ट में था वहां उन्होंने इकानी पर पलरेलार नौकर रखे हार है। सान्यों ¹ चीरज बडी सम्छी नान है। ग्रमानक यह न्या उड गई कि लडाई हो नई जब फिरक्वा दा? स्रोग सपनी श्चनी दकानें बाट करके ऊपर चट नए। यह तो नै बाजकल के नैज्य लोगों की धवस्था। एक वैष्य के घर चोर दाया उसने फर विजलीका भैग्य जलादिया। देशा कि मेरी स्त्री चौर करण सो रही हैं भौर एक धनजान धानमी पाम ऋडा है। परन्तुपकडनातो नैस्प काकाम जनी। पकडने के लिए उसे बल दिया गया है। यदि उसमे बल और साहस हो तो कहै-हेस्त्री[!] त्भी उठ भीर साहस कर[†] भीर भाग भी साहस करे तब ता वह उस द्यापरे जनव्य को बाहर निकाल देगा। परम्तु यदि यह बल उसमे न आये भीर वह चोरको देखकर फिर रजार्च छोडकर साजाये तो चोर समभः जायगा कि यह कायर है, जानकर भी सो गया है। मेरा कर ही क्यालगा? बस निर्भयता से झल-मारी तो गा भीर जो कुछ भी उसे मिलगा लंबायेगा।

प्रकाण न तो उसे जया दिया। पर-तु भार पण्डला उसका काम नहीं उसका काम ता उज का करना ^{के}। आरियक बल परमात्मा की उथ दना से मिन सकता है। उण्जी हम भूक स्था। परमन्दर की उपा सना हमने छोड़ दी। बात समक मनहा सना हमने छोड़ दी। बात समक मनहा

भ्रच्छा[!] इतिहास का पढेतो ज्ञान होता है कि विदेशियों न इस दे पर द्यात्रमण क्यो किया। महमूद रञ्जनवा को इस दश में सहायता दन वाला को नहा था। वह माग भी नदी जानता था। बुद्धि नहीं मानता किन्त जत सच्या है। हमाराधात्मिक यत दुवल हो चुकाथा। सोमनाथ के मन्दिर पर जब महमूद न धास्मतः किया पचस हजार नवयुवक इसलिए तैयार बैठ थ कि पूजारी जरा कह दें कि मूर्ति को बचाबो तो फिर चाह मूर्ति की रक्षामे अपनी जान भी क्यो न दना पडे मूर्ति भी धव य बचायगे। किन्तु पुजारी कहते वे कि तुम्हे कुछ करने की भावश्यकता नहीं परभारमा त्वय तत्रु पर श्चान बरसायेगा पश्यर वरनायना झौर वहत्रजुको जलाकर अस्म कर देगा। उधर महमूद ने ग्रंपनी फीज से कहा, 'बीरो[।] नौजवानो [।] तुम सात घाठ सौ नीचनात को । साना के नाम पर हिस्मत करो। रसून के नाम पर हिम्मत करो। विवास खुरा के दूबरा कोई नहीं खुवा और रसून न कहा है कि बाग्नो ससार में नैरी ज्योंगि एक्सा दो। कायर न बनी। वेता निक्की ने उत्तर दिया मर नायने किन्तु खुरा के नाम से नहीं हटने। ध्व वस मिल्ट का पानि हो ने देव एक मिल्ट का पता नी नाही। ने देव एक मिल्ट का पता नी नाह में वह मिल्ट का ह्या है। परन्तु उस सम्मय उस मिल्ट का तान सो नाह पुनारों के मिल्ट का नाम में का प्रमाण करते तो का मान्य हमान्य हो सकता था? का का मान्य हमान्य हो सकता था?

यह सम कुछ प मा मा क नाम नने सन्दर्भातम कहाने कि परम मा को ^जम भी मानत हैं। कैसे मानत हो पर मामाकी पूजासे न वैसे झगरे न कुछ, जारगान कुछ घ^{डे}गा। सहदय क पास बाग्रामे तालोगानकर पानीचान के लिए ने जाग्रोग । महाबीर के द्वार जाग्रामे तो एक दो बार तो मत्था टैक मामो यदि साथ कुछ न ने जाम्रो तो तीमरी बार पूजारी कह देगा कि मत्वा तो टकन रोजकाजाते । परन्तुकशी यह भी नहीं किया कि हनुमान जी के ।ला कुछ प्रसाद ही ने बाये। ठाकुर नीक यहाजाशा तो भागके लिए कुछ न कुछ ल् जानाही पडगा। परन्तु परमातमा के पास⁹ वहातो झापको झपने साथ कुछ श्री नहीं ले जाना पन्गा। केवल बराबर का दर्जारखना पडता है। धराबर का नियम तुमने भल अवरेम पढ़ा है। जो हिसाब क्क जाता है उसे धलजबरे के नियम स निकाला जाता है। मिलिए परमा मा के शाय मिलने के लिए बराबर का दजा रखना प्रताहै। दिन भर के कामी मे वरावर का दर्भानहीं हो सक्ता उठ रोटी लाई भीर सो ग्ह इस प्रकार नो वरावरका दर्जानहा हा सकता दाप हर को या नाम का बराबर का दर्जा कभी नहीं हो सकता। राटाल भी उसके भन न्तर नेटन कामन चःहेगा। बरावर का दर्जा कहीं रहा ?

प्राप्त उठो[।] नीद पूरी ले चुके हो। चित में शक्ति है शीच जग्रा स्नान करो दिन भर की शकावट साने से दूर हो गृहं सब बराबर का दर्जा है। कुछ देर परमेन्दर कान मली। देखी प्रच्याजब सोक्र उप्ताह राता है। मता उसको गोद मे ल लती है बच्चा चूप हो जाता है। माता नी गोद मं उसे क्तिना सुख मिलता है ? इसा प्रकार परमात्मा की योद मे जारूर सब थकावट दूर हो जाती है। न बकान रहती है न भारीपन। उस धवस्थामे यत्न करो धारन्मन को एक जगह स्थिर करा भीर सोचा हे पर-माल्मा तेरा लीला अनन्त है। तेरी शक्ति का भ्रम्स नही । मनुष्य भ्रपनी बुद्धि धौर ज्ञान के प्रमुसार तुमे अपनन प्रीर मानने का बल्न करता है '। दस्तो । बन्धेरा दूर करने की शक्ति किस मे है ? बडी से वडी राज्यसमा में भी नहीं।

बां प्रधान्त वेदालकार का स्था धायसमात्र को राजनीति में भाग नेना साह्य में ने स्वाद किरतों में पढा में ने धामवाते नो धायसमात्र को संवेद राज नीति से ऊगर रज्ञकर हिन्दू सम क के सिए रचनात्मक काम कर रहे हैं। इसा समान्तरण स्था साम्प्रधायिक से मा स्था धन्य समत्याएं से सावदेशिक बजा के स्वादसी प्रधान के क्य में ईमानवारी से हिन्दू समात्र की सुढ़दता के सिए इनका निराकरण करते रहे हैं। इसी सिए से करोड़ी धायसमासियों और हिन्दुधों के सिए धनिन वनीय है।

मेरा शुविवारित मत है कि १८०४ के सक्ष्मीय निवाधनों मे राष्ट्रीय एकता कीर सक्यान की निवाधनों में राष्ट्रीय एकता कीर सक्यान की स्वाधनां की ने केश्वेस (इ) की सार्यक्षमां का समर्थन देकर एक महत्त्वपुष्ट साम्यिक कार्य किया है। १८६७ में वे मारायिक जानक के बादनी चीन के स्वय प्रस्थीय के स्वय स्वाधन कीर सार्यक्षमां कीर स्वय प्रस्थीय के स्वय स्वाधन कीर सार्यक्षमां ने कारा पार्टी का सम्बचन किया था।

किस्तु बनता पार्टी और उसके बत-मान मावचा बदक ने दे वन में राव्य विरोधी और मुस्तिम - बकानी देवाई तुष्टीक्टर के वो कार्य किए उसके श्री वाययेगी का मावचा वस कार्येग (इ) की कार्येन कार्यी या वी टीम बस बया। क्या यह एडक्टक साधीन के निर्माण ने वी बाययेगी थीं? उनके बटक वस के ६०

रामगोपाल शालवाले और इन्दिरा कांग्रेस



सासद उत्तरदायी नहीं वे निया विदेश-मन्त्री के रूप में श्री वाजपेशी ३७० वीं धारा के बकील नहीं बन कर वे⁷ क्या यलीगढ मुस्मिम विश्वित को धस्पबस्यक स्बक्त दिशान के सिए जनता सरकार द्वाराविधेयक लोकसभाने परितानही क्या नया था? १६७७ में उ० प्र० मे कनतास कार में म।जयाबटक के कम स कम १५ मन्त्रीया उपमन्त्री वे । फिर धा वाजपेशी भीर डा॰ प्रशान्त वी ने वयोध्या में राम क मन्दिर के शात क्यों नहीं सुलदाए [?] प्रपितु विदेश मन्त्री के रूप में बीसा दीसा कर भी वासपेयी पाकि-स्तान का सामा कोब झाए, विसंधे पाकि-स्तानी कमाडो ने पूछपैठ कर चारत मे स्थान-स्थान पर दने कराने । उस समय १९७८ ७९ ८० में समीनड़ के बाधरस सान्प्रदासिक देगी में था शासकात प्रो० मधोक स्त्र जो । रामसिंह बीर सा म ० नरेन्द्र न ब्रिन्दुको की सभी तरह से सहा-बताकी किन्तु भी वाक्येवी भीर भाक्या क नेताको ने हिन्दुको के १०० ६०० व्य-क्तियो क प्रतिनिधिमहको से बात तक नहीं की कवकि श्रीमती इन्दिश नाथी ने हर पहलू पर सतावत्रद ढम स वार्ताकी । इन प्रतिनिधियण्डको का नेतृत्व मैंने ही प्राय किया था।

११८० के निर्माणनों में विश्ववी होने के परवाद वीमती इनिया माणी को बाध्य होकर वार्षीयक पुरित्तम विश्वविद्यालय को अप्तालक्षण स्वकर देना पक्षा तो वाष्पा के एक भी तास्त्र ने इसका विरोध नहीं किया। श्रीनती गाणी से ११७६ में मैंने बातचीत की नी। ने इस विश्वविद्यालय को अपनास्त्रकर स्वकर दिने जाने भी बार विरोधी थी।

श्रीवरी नाची की हत्या हे एक बाह पूव के वी वाजपेयी वा श्री राजपेठ सकाणी प्रायुक्तान तेची किक्टबर वक्त सादि माज्या के नेतामी के नत्यक्य माहि-स्तान प्रकाशी दल कीर फास्क्स मन्दुल्ला के समयन म दिए हुए हैं। श्रीवती दोवरा याची की हत्या के बाद दिल्ली में किस्ती की हत्या होने पर भी बावपेबी ने कहा कि १७१० के जनका दिल्ला किस्ती में मारे वये हैं। हिल्लुमी तीट वये मन्दिर्ग इत पुजारियों की हत्या की बार में क्या हरवा से पूर्व न सायने प्रभाव काना है। प्रचित्त समामाः

खत बाबरा बंधी हिन्दू विरोधीं गर्टी को तबक विकार के किए शालवाकों की हार शालवाकों की हार शालवाकों की हार शालवाकों की हार शालवाकों को हार को तक विकार के स्थान के स्था के स्थान के स्थान के स्थान के स्थान के स्थान के स्थान के स्थान

गुरकुल महानिद्यालय ततारपुर (गानियाचार) उ०४० का विद्यालय भवन ध्वस्त

हापुत से है नील पूस गांव गांव पर दिखा मुक्कुल सहाविधालन तकारपुर का विधायन सबन भंगाहुर तृहाल लाने हैं नद्द ही बता है जिस से खानों को पढ़ाई में बाजा उत्तरन्त हो गाँह हैं। बच्चे पूप से बैठकर हो सब पड़ाई का काम हुरा कर रहे हैं। परीकाए निकट हैं और जानाओं का सिंचवार पड़ाई का काम सामां का मान्युमान सम्बन्ध से विभोदन है कि स्विक से समिक स्वामी से विभोदन है कि स्विक से समिक स्वामी से विभोदन है कि स्विक से समिक स्वामी के स्वामी करें। पुत्रक से भी करार्य का निर्माद व्यवस्था सामां है साम सम्बन्ध है।

वक्रमावहार का पता---

वर्षपान बानार्व प्रामार्व मुस्कुल यहाविद्यालय स्तारपुर बाब्रवह (बावियाव ४) उ०प्र०

(पृष्ठ ४ का क्षेत्र ;

इत्यादि । ये दो बार एक ही पृष्ठ पर धापने किन्त लिए लिका। नवा आपको स्मरज नहीं रहता। राजा राममोहन राव का धापने सारा इतिहास क्यों निसा बौर राजा राममोहन राव को पुनर्जाग रस के प्रथम सूत्रवार विका है। राजा राममोहन राय का सारे बीवन से लेकर मृत्युतक काभी इतिहास विकाहै। भीर बह्य समाज के सस्वापक उनके पीछे देवेग्द्र नाथ की ब्रह्मसमाय के संचालक हवा केशवयन्त्र के हाथ में बहासमाब श्चावा उनके सारे बीवन का वृत्ताम्ल भी जिलाहै। भीर बहुसमाज की दो फाड हुई, और केशवचन्द्र सेन ने अपनी अस्प बबस्क पुत्रीका विवाह कृष विद्वार के राबकुमार से कर दिया। इत्यादि केसव चन्द्र की जिसा-दीका पारचास्य प्रचासी पर हुई भी । भीर बहाससाय के अनुरूप ही प्रार्थका समाज की महाराष्ट्र में स्वा-पना हवी । इनका जीवन भी सम्पूर्ण लिखा है फिर बापने विवोसोफिष्ट सोसावटी कावर्णन किया फिर रामकृष्ण विवेका नन्द की विशेष प्रश्नशा की य सम्प्रदाय बयानन्द के पूर्ववर्ती समकाबीन सवा पर-,वर्की जो अर्थिक सम्राह्म सम्राह्म आयोजन

बर विहास बच्चि विचार किया। वर्षान्त प्रस्तान की है। रामचारी विह विवार का उत्तेस किया दिनकर ने स्वामी व्यानम्य की के बाद की प्रानीचना की है। फिर बहादमान के अववकुमार वर्त के सम्मा-वस में पत्रिका का स्कूल किया है। राम कृष्ण परसहस विवेकानम्य की सापने तृरि मूर्पि प्रसात की है—

रामकृष्ण नियान तथा जबके बस्था-यक स्वामी विवेकानस्य के कार्यों का उत्तरेख किया जाना धानक्यक है। वस्तुत रमसृत रामकृष्ण ने विश्व धाच्यास्थिक शास्त्राकों का स्पने जनुत्रव में नाकर धपने मर्कों न स्कूत किया।

यह तर्फ एव पुलितवाद के सर्ववा पृत्रक सारितकता तथा साम्मारिसकता का एक ऐता सार्वो फिक मान बा। विदे समु-मृति का विक्य तो विवास वा सकता है। परानु विक्र पर बार-विवास नहीं किया सा सकता, परावृक्ष वेग वस्ति सौक्रिक सरित से विक्तित नहीं थे। कियु साम्मा-रिमक विरू से उनकी सार्व्य वेदान सम्मा-रिमक वीरन से परावृक्ष स्थापन वेदान सम्मा-कार्यक सोमान वर सवा ही सौक्रिक्ट प्रस्ति जी। बक्की सम्मू में सामुद्ध-मुक्किक

नरेन्द्रनाम दल ने इंश्वर अनुभृति का सामास्कार किया था। तथा वह श्रन्भव किया कि उनके गुरु वर्ग के साक्षात विश्वह हैं। विवेकामन्द के रूप में अवस्था लेकर नरेन्द्रसाय दश ने दिव-दिवन्त में द्विन्द् वन और सम्बद्धा की विकास वैकायन्ती फहराबी इस की कवा ही पूबक् है । पूप्ठ 22. 28 क्षमा ये बतायें का॰ साहब कि वह क्या केतना भी जो अनने बर्वोच्य क्षोपान पर हवा स्थिर रहती बी । विवेकानन्द, परमञ्जूस रामकृष्णु के बीवन वर्षि शिक्षणा है। तो बाप अक्षप पुस्तक निष्ठें, स्वामी दवानन्द के जीवन के छाष न्या सम्बन्ध इनका । रामकृष्य परवहस ने बाज्यात्मिक चेतना को बीवन में बाकर शक्ते नक्तों में स्पूर्ण किया । क्लका मुख हिस्सा भागको भी तो निका होना, कृपना ने बतार्वे । तथा की बहु साध्यारिक-कता उस पर बाब-निवाद क्यों कही किया वा बक्ता। और पू॰ वृद् पर वाप विश्वते है। प्रश्नेक कर्द में तरण का तरब है, क्या जनुष्यों ने को क्यारकी क्या वे जी कर्ज हैं। इत्यादि समर्थेन नकारों नुष्ट विश्वकर धापने पुरसक का भार बढ़ावा 🚦 । भीर राय किनाकी विश्वकर रहा प्राप्तक में

शापने सैनार्जे पु॰ धीर बढाये हैं। किसका कोई सत्त्रक ही नहीं वब धारण इतने पुष्ट कार्य किसे। स्वाता द्वारान्य की का वीवन वरित्र को बढ लेक्कों से प्राया-स्त्रिक है क्के न सिकाग धोर दुनिया वर के बोलो का बीलग वरित्र सिकाग से कहीं ताक दुक्ति तुक्त है। सिराका सीवन चरित्र किसका चार खु। हैं इसके बाय उनका कोई समस्यत्र नहीं है।

वीर निव यह पुस्तक स्वामी बवानव वी का वीवण जरिन है। तो इस पुस्तक का मुक्त जरिनों र यह है। तो इस हुम् कार्मिक इस पुस्तक का अक्षावन परोप-कारिशी बना ने किया है। तोर परोप-कारिशी बना कि दानारन की अक्ष्म कारिशों बना कि दानारन की अक्ष्म कारिशों बना कि दिनार कर रहे हैं। एवं अब्दुस्तक नी निवृत्तक का नोड से पूर्व अप्ताक नी निवृत्तक वा नोड से पंची में मिलांस की नागी वाहिए। जीर बार्मिक बनामण के पीवन को इसमें मेहने सुस्त में मेने नाजी बना का परीपेकार करशी है। केम फिर—

(शनाव के प्रापे)

सारका क्या सपनी सपरका का वालेक केंद्री गही। ऐसी मासना की ही हमले प्रमुक्त करवाणीं में किर के सोने-सीने स्वत्याता है। हमारे रिक्स केंद्र सा पुर-पुन, जिसा की स्वापारी दुकाने न करें, मनुष्य को तुक्त, सांगित हमले की पुन्यों ही अनुष्य को तुक्त सांगित हमले की प्रमुष्य की प्रमुख्य को तमन का सानन्य किसता हो, सहां मनुष्य नतमत्वक होकर साता हो, स्वर मनुष्य नतमत्वक होकर साता हो के स्वर हमात्री भागी सीनी सप्या हो मर कर संसार से यह कप्य नाटता हो सा है। स्वी से हमारी सरस्वती सप्या है सेर पुम्पभूमि की सर्वना है—"एस सर-स्कृती सही दिस्तों की सर्वना है— स्वीर पुम्पभूमि की सर्वना है—

इस सब के बाद मुक्ते प्रापको वैविक सर्ग, प्रार्थसमान समा महाँच दशानन्द के विद्युव में मा कुछ कहना है। बछिए वे तीनों समय-समय है प्रस्तु सीनों में एक सरम्बय भी है।

बैक्कि वर्ग इमारी सम्मवा, सस्कृति बर्खन, बाचार, नर्वादाओं बादि का काबार है, जिसके विना हम खरे नहीं हो सक्ते । अवर्षसमाचका प्रार्थराष्ट्र एक समाब-रंपना मा राष्ट्र-रचना का विशिष्ट विवान है को सब संसार को, प्राणिनात्र के उपकार के उद्देश्य से, मानव को मानव के भाईकारे में बोड देता है। यहा ' वस्-त्रैय कुटुम्बकम्" का घावर्ष शामने घा काबाई। इस विशा को दिशाने नाला बहान् नेता दवानन्द है, जिसने हुमे अपने बृत, वर्तमान और अविष्य के लिए उद्-बोबित किया है। हम बीरों की सन्दि में बहुत पिछड वए प्रतीत होते हैं। इसी वे आनरक होने की हमारी सावस्वकता है। हकारी वास्ती ने, हमारे बार्य नेता जाय-क्क नहीं, इसी से कहता हु- 'क्य राष्ट्रे बार्याम पुरोहित", "प्रस्काक बीरा उत्तरे मचन्तु", "देवसेना तूर्वकेतव अचेतस श्रमित्रान् मो क्यम्तु (बत्यं) ने दक्तिसो हस्ते बयो ने सम्प चाड्रित " इत्वर्तांद, इत्कवि ।

निकार में महान गरक में, जो एक तस्त्री किया में, हैं व परमात्त्रा के दी मिलेक मार्थी का परिचन किया है— तस्त्र 'राष्ट्री' और दिवीय 'राष्ट्र' कहाएक 'राष्ट्र का पार्ड्रीय पार्ड्डीय परमात्त्रा है और 'राष्ट्रीय परमात्त्रा है और 'राष्ट्रीय परमात्त्रा है और 'राष्ट्रीय परमात्त्रा है और 'राष्ट्रीय मार्थिक । 'वर्षीयसार्थ्य मार्थ' 'राष्ट्रीय मार्थ हैं हो है वार्ज मार्थ के दूस है । इसी है वार्ज मार्थ हैं । इसी क्या मार्थ हैं । इसी क्या मार्थ हैं । इसी क्या का पार्ड्ड हैं । इसी का मार्थ हैं व 'राष्ट्रीय मार्थ हैं । इसी क्या का पार्ड्ड हों ।

"कृष्यानु विश्वे समृतस्य दुवा ।" "कृष्यानी विश्ववार्थम् !"

शासीय में बहुता है, जन्म पारितम

मुख्युन कोगडी विश्वविद्यालय, हरिद्यार के दोक्षान्त समारोह पर टोक्षान्त-भाषण

हारा--प• सत्यदेव भारदाज वेदालकार

से अधिक आपरवकता है। नीतिक विज्ञान की तरकों ने बीतिक अम्बुद्ध में महान् विदिशों को जाप्त करते हुए अम्बुद्ध का जार्य प्रश्रस्त किया है, एस्सु आर्थस्य वा नि अयम् को नहीं दिशा है। नहीं बद भारतीय सस्कृति में पोचित शिक्षशासयों से बोपीशत है।

इस समय हमने शिक्षा के क्षेत्र मे विशेष उन्मति के मार्ग पर चलना है। हमारे कुछ स्नातको को जर्मनी कास, इटली शादि प्रदेशों से मान्यता निन्ती वी जिससे स्नातक बनने के बाद कुछ स्ना-तको ने सीधे ही उन प्रदेशों के विश्वविद्या-बयो से उच्चतम उपाधिया प्राप्त की थी। श्रव हुने जारत सरकार से मान्यता प्राप्त होने से दूसरे देशों में भी मान्यता प्राप्त हो रही है। इसमे खबिकारीवर्ग बन्यवाद के पाल हैं। हमारा उद्देश्य महान् होना चाहिए। हुमारा विश्वविद्यासय "तार्व-भीम प्रार्व विक्वविकासक बुक्कुल कांगडी" के कप वें पनपे। ससार के सब देशी के विश्वविद्यालयो से हमारा सम्पर्क बढे, चनसे सहायता प्राप्त करने में कभी सकी व व होना चाहिए। ससार की भिन्न जिल्ल राज्य-सस्वास्त्रो सीर राज्याधिकारियो को भी सम्मानित कर उनसे सब तरह की सद्वायसा केनी चाहिए। प्रस्येक देश की श्चपनी विशास साम्रा (Wing) हो, जिसमे उस देश की सर्वोत्कृष्टता को बहुच करने में कभी सकीय न हो। उनकी भाषा, दर्शन, क्लिन बादि हुनै सहज ने प्राप्त होते हो। समार के बढे परोपकार कृत्यो को करने बाले सस्यानो (Foundations) हे सम्पर्क कर उनसे विशिष्ट शार्थिक सहा-बला भी हमें लेगी चाहिए, क्वॉकि हमारे बहेरवों में 'सारे ससार का उपकार करना मी हमारा उद्देश्य है। इसमे, सर्वेष से, तमारिएव की तरफ भाषका ध्यान कींचतर है। बाधा है, बार्यसमाज तथा पुरुष्ट्रस के श्वविकारियस इस पर विश्वेष ध्वान देने ।

सब ह्य पुरुकुम वे एड्डे वे तो सारिया निर्माण, देवन्य साथि विधान स्थान हिमाण हो साथे विधान स्थान है साथे हैं हमारे नहां साथे हैं साथ हो हमारे नहीं साथे हैं साथ हैं होती थीं, कभी कोई अमर होता का कोई सी साथ हैं हमारे कोई समस्य प्रदान साथ हमारी हमारे हमार

वैरिकी उपनिषद्।"

प्रिय स्नेहपूर्ण नवस्नातको [।] अन्त मे 'सस्य वद, ''वर्म चर'' के ऋषियों के सनातन शिक्षा-बारेश्व या दीक्षा की तरफ व्यान विसाते हुए यह कहकर समाप्त करताह कि "सस्वस्वरूप परमात्मा के विषय से प्रवचन करता और चिन्तन करना सत्य के दर्शन से वर्म के स्वलप को सममते हुए उसवे कभी निरपेक्ष न होना, परेन्तु बदा उस पर प्राचरण करते रहना" बही "सत्व शिव सुन्दर" का प्रश्वस्त मार्व है। यह तुम्हें सदा प्राप्त होता रहे। भ्रपने त्रेन सद्भावना सहदयता तथा शिक्षा-करवान (गुरुकुस) की उन्नति में सदा अवसर रहने में सहायक होना — यह कहते हुए तुम्हारा बहुत तस्मेह श्रामनन्दन करता हूँ। गुरुकुस विश्वविद्यालय के सब प्रचि-

कारिक्षं तथा गुरू-मनो के सामने नत-मस्तक होकर सपरी सदा के युवन उप-दिवत करता ह। हशाबी मदानन्द थी की सारम क्योति सापको सदा प्रवास देवी रहे। प्रभु का सब पर सदा बरवहस्त बना रहे।

हिमान्य की सुपुत्री पार्वती कहू या बगामाता से कुसमाता को याद कर-पूछ भी हो-धपणी भावभीनी खढाज्जलि सम-पित कहते हुए कहना चाहुँबा—

> बन्स यहीं मृत्यु वहीं खेलू वहीं द्या-प्राकर। हसना रोगा हो वहीं माता तेरे बरलो में॥

समस्त करन से पून 'हुममाला की पताका पर प्यान दिस्तवा हूं। यह सूने-व्योति स उम्मालत है। यही 'सोन्स् की स-ची प्रकात हैं — सूर्यमन्य स्थोतिकत-मन्। इस्ता सन्देश भी सामने रखी। इसमें बढ़ा झारत करो समिता या सूर्य-वेन के पुत्रमन्त्र का भी मनन करो। इसे हम चेदमाला संपुत्रप्त हैं। यही हमारी बन्देमानपह हैं।

> 'शहवा सत्यमाध्यते।" 'सत्यमेव स्रयते नानृतम्। '

श्रन्तर्जातीय विवाह

वर चाहिए

१ २३ वर्ष ५-६" वी एव ती.बी एव (प्रध्यापिका) ११००) मासिक (मोदीनवर) २ २३॥ वर्ष १-२" वी एस सी वी एव (प्रध्यापिका) १३००), (दिल्सी)

२ २३।। वर्ष १-२" वा एस सावा एड (अध्यापका) ११००), (ादल्सा) ३ २३ ,,, ४-४" वी ए कोया ट्रेनिय (मध्यापका) १२००) माधिक (दिल्ली)

४ २८ ,, ४-३" बी ए (स्टैनो) गरकारी सेवा १६००) मासिक (विस्सी)

४ २४ , ४-२' वा ए ईन्टीरवर टेकोरेशन सेवा १०००) मासिक (दिस्की) ६ २४ ,, ४-२' वी ए नरखरी ट्रेनिंग (ब्रज्यापिका) ६००) माह (दिल्ली)

७ २५ ,, ४-१' बी ए स्टैनो (क्षेत्र बी०वी०पी०टी०) १०००) (दिल्ली) ८ २२ ,, ६-२''बी०ए० (इण्डीरवर ^२कोरेशन ममाप्त) दिल्ली (वण्डीगड)

बबु चाहिए

१ २७ वर्ष ५-७' बी ई मैंकेनिकल सेवा सीमेट क॰ ३१००) दिल्ली

२ २६ ,, ४-७॥ 'एर ए बैनेजर इक्योरेस (बीमा) ३०००) दिल्ली

° २८ ,, इ.६ 'वी काम सेवा सिमको २८००) दिस्की

४ २५ ,, ६७ वी काम समना कार्यटाइपराइटर क० २०००) विस्सी ५२०, ५-६' वी ए घपना कार्य(विपट लाप) २०००) विस्सी

६ २६ ,, ५-- "बी काम (सेवा घोसवाल) १६००) किस्की

७ ३० ,, ६७" एम की वी एस अक्टर इपना क्लीनिक ५०००) फिल्की

द ३१, ५-४' की काम बी ए सेका वैक (वैरीन) ३००००) बैहरीन

१ ३० , प्र-पंपम की बी एस काक्टर मेवा हरावाल २५००} दिल्ली सम्पर्क करें—

> चन्द्र प्रकाश ग्रार्थे सथोजक घन्तर्जातीय विवाह केन्द्र सार्वेदेशिक ग्रार्थे प्रतिनिधि सभा ३/इ. महर्षि बयानन्द भवन, नई दिल्ली-२

बार्वसमाज रघुवरपुरा, हिल्ली-३१ का निर्वाचन

वी स्वामकुष्यर वो स्नातक की प्रया-नता में १२।॥।-वे बे बार्च खान कषुष्यपुरा, वकी न० १ वांची क्षमा, क्ष्मिन-वे का वांचिक निर्वाचन सातिपुर्वक सम्मन हुया। निम्ननिसित पराधिकारी चुने नये— प्रयाना—अनिता प्रीचल परिस्ता कनी भी राजाकृष्ण जानें उपमस्त्री —, सारु पूजनात्र पी , , नानेत दूमार पाय कोराष्ट्रक —, राजारात वसीन नेसा निरोधक — प्रामेन्द सक्क्य सिंह् वी निरोधक — प्रामेन्द सक्क्य सिंह पुरतकाष्ट्राध —, सुन्वरवास जी सार्वे

समाचार-सन्देश

विशाल श्रार्थ युवक प्रशिच्नण शिविर

सन्तर्राष्ट्रीय पुषा वर्ष के उपलब्ध से सार्यवनाय की प्रगतिकांत्रिय नव्युवक सस्या केन्द्रीय सार्य पुषक परिषद् दिल्ली प्रवेश महाँच रूप्य सादियों के बीच दिवत पुरुकूत क्यायम, कलावनार्ट, कोटद्वार विला पोडी वदबाल में १५ से २३ जून तक एक रोमाचकारी विश्वास सार्य पुषक प्रविकाय शिवीर का सायोजन बहानार्टी स्

परिषद् के घम्यल व विवित्त सथो-क्व की धानिल कुमार कार्य ने बतावा कि पुत्रकों को महाँव दवानगब की विवारवारा से बोदमांत करने, धनुवासित जीवन, क्लम बताल्या, बारित निर्माण, राष्ट्र के नवामांण, युवा सचित को रवनात्मां स्थानों से शीलत करने के उद्देश से वर्त-मान परिस्थितियों में ऐसे सिविरों की नितात सावचकता है। शिविर से सावम-प्राणायान, वरव-बंठक, साठी, वृत्री-काल के श्रतिरक्त जबी-बृदियों का मान, प्राक्त-तिक बीदर्य स प्रपूर ऐतिहासिक वार्यिक मतान रर दें। कर सेर, हामी, नाव, हिरएा, बीसनाय बादि हिंसक-बर्रिसक बन्य जीव जतुष्मी के सबझोकन के रोमाच-कारी सवसर सिलेंगे।

धार्यसमान के नीजवान धन्वाची स्वामी जनवीस्तरान्य जी महाराज की स्व-रेज वे हरही दिनों मेना समाना सिक्टर का नी धार्याजन किया जा रहा है। जिस में मीस, सम्बे, तरात, मीडी-सिमरेट व तामर्शिक रवाणों के बेवन से मुक्त व्यक्ति ही इसमें मान के स्वस्त्री

पौढो गडवान ने सार्थ दुवक प्रशिक्षण शिविर का उपघाटन १४ जून युक्तार को शोगा । इस प्रवक्त पर उत्तर प्रवेस के राजस्य मन्त्री भी वस्त्रेय विह, सचस सदस्य भी क्या विहरू चार्य नेताओं की भी बन्मिन्त्र होने की प्राशा है।

चन्यमोहन वार्षे धार्षे जनता से जार्चना है कि इस उत्ताही युवको को प्रोत्माहन वें। धार्य-सगाब में युवको के न धार्ने का एक कारच रचवास्था कार्यक्रम चारानामा मी है। प्रता तम मन घन से सहयोग बैकर दवानन्त्र के मिशन को धार्मे बडायें।

यशपास सुवाश्

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ

(गुन्कुल कागडी विश्वविद्यालय हारद्वार से सम्बद्ध)

धमर शहीद स्वामी अखानन्द द्वारा सस्वापित इस गुरुकुल में सस्कृत विषयों के साथ साथ विज्ञान, तकनीकी, मैडिकस, नानमीडिक्स, इतिहास, विरात, हिन्दी ममेजी मादि विषयों के मध्यापन की समुचित व्यवस्था । छात्रावास मे समाज भोजन भावास की भावर्श व्यवस्था । समस्त सेल, योगासन कमाबी द्वारा व्यक्तित्व कापूर्णविकासः। सैनिको जैसा धनुशासम । श्रमजीवि नामरिक तैयार करना । सदाबार ईश्वर-भवित, शाली-नता भादि वैदिक सस्कारी से भोत-प्रोत करने हेत् सुबह -- साम बेद मन्त्रों के साथ यज्ञ-इवन, सच्या सादि वतिविधिया। क्लात्मक प्रतिमा के विकास हेतु भावरा शीत, व्लोकोच्यारण, वाद विवाद का

नियमित धारमास । ईश्वर मस्ति वेस मस्ति, रितृ पश्चित, मातृ मश्चित, युद भक्ति, धादि सद्युको से सुसण्बित समाब डप-बोबी बात्रो का निर्माण—

विद्याधिकारी (दसवी) के पश्चात् विद्यालकार (में ॰ ए॰) कम से कम चतुर्व नेत्री स्पीर्श, स्वास्त एव प्रधान-सामी क्षात्रों के लिए सभी कक्षाओं में प्रवेश प्राप्तम ।

स्थान सीमित है प्रवेशार्थी तुरन्त सम्पर्क करें।

प्रधानायार्थे पुरुकुस इन्द्रप्रस्य (फरीवाश्यः) हरि॰ डाक वर---नई दिल्सी ४४ फोन न० -- ८२६२६

प्रस्ताव

मत दिनाक ४-४-८५ को जी राज-बन्द जी माय प्रकान कार्यसमाक काण्यका की प्रकासता में पार्वसमाक की सभा हुई किसमे मश्ती कैसाशाच्य पालीवास व बतानन्य कालेज सजमेर को जो राजुदान राश्ति प्राप्त होती थी उसे राजस्थान सरकार के द्वारा बन्द किये जाने पर यह समा पोर विरोध करती है एव राजस्थाय सरकार से धनुरोध करती हैं कि चो वर्षी से अनुवान राशि वी जाती थी उसे बण्य न कर अनिसम्ब वी जाये।

> यत्री बार्वसमाज, सम्बदा

गुरुकुल करतारपुर में प्रवेश श्वारम्भ

भी नुद विरवानम्य वैदिक सस्कृत महाविधानय करतारपुर, विज्ञा धार्णस्य (विद्यान) नुरुकृत कांपड़ी विद्यविध्यान्त (विद्यान हे त्याई साम्यता पान्त, से नये खात्रो का प्रवेश १४ जून १८=४ से सारस हो रहा है। सरकारी स्कूनो ये पढाये वाले वाले विचल, समेनी विज्ञान सारि धर्मी विद्यान से साम सस्कृत तथा वाले किशा मी धानिमार्थ कर मे पढाई जाती है।

नि बुक्त विका, हिली माध्यम, बोम्य एम ,परिवरी प्रध्यापक, स्वस्त्र सातावरण, मोधन, रूप, धावास की माम ३० ६० (तीस क्षणे) पातिक पर समुचिव प्रयस्त्रा पत मुस्कुत की प्रथा अद्धेय श्री लाला रामगोपाल शालवाले का श्रीभनन्दन

हाबंबेशिक वार्य प्रतिनिधि हमा के कारणी प्रमान क्यूंब की नामा राव-मोपान सामवाल के सम्मान में धानामी १-२ जून, १६-६ को प्रस्ताबित स्वीम नन्य क्मारोह कविषय कारणों के स्थानत करना यह खुहैं। इक प्रतिनन्यत हमा-रोह के धायोकन की तैयारिया क्यूंब है और समारोई की मानी तिथियों की निरुत्तत योरणा सीह्य ही की व्याप्त ।

हा॰ बानन्द प्रकाश स्थोजक, ब्राथनन्द्रन स्थारोह स्थिति श्री कैलाशचन्द्र पालीवाल

का सम्मान

बत २३ तारीख को साहित्यकार स्रोजनस्य प्रकासन विमित्त सबुरा उ-४० की स्रोत स प्रकारिता के लेग में गौरय-मयी सेवाए देने के उपलब्ध में बढ़वा से प्रकारत २५ (बाय ने वर्षेस साम्यास्त्र प्रकार के प्रकार सम्पादक की केस्रसम्बद्ध पाष्ट्रीय के प्रकार सम्पादक की केस्रसम्बद्ध पाष्ट्रीय के प्रकार सम्पादक की

आप नगर की साहि≥य, श्रीकारिक, सामाजिक सस्वाधों से भी जुड हुए हैं।

बार्यसमाज श्वडवा है मन्त्री मी है। सुखराम बार्य

पुरोहित, धार्यसमाच सहवा (म॰ ब०)

झायं युवको द्वारा प्रचार आयं युवक बना चुवियाना द्वारा २८-४-१८-१ डो सार्वे दमाब व्यवान्त्र्य बाबारने डा० एव० बी० वांनीयां की स्व्यव्याना ने विशेष कार्यकर हुमा विवर्षे वेद्यारिक, स्वाय देवा सार्वि का बठ विद्यान्ता।

> निवेदक-रोधन बास शर्ना संबोधक मार्व युक्त समा, रजाव

कार्य दुषक तथा चुविषाला ढारा २०-४-८६ को पारिकारिक करवण सम्मन्न हुआ इसमें अवचन एवं नैविक साहित्य नेट किया बोर दुषकों को सनाय सेवा में सहित्य बाल सेने की जेरणा है।

> निवेदन जन्म चारदाय नहानंती

विधेवताएँ है। अवैश्व के लिए खान कर हिन्दी नाम्यम से कक्षा पाच पास होनी जकरी है।

मुक्कुल शिक्षा पढित पर धास्या रकने वाले सज्यन मिने धवर्षी पत्राचार करें।

विकेष---पशास विक्यविद्यालय चडी-वड की शास्त्री कक्षा के अध्यापन का भी पूर्व प्रकल्प है। इन्धुर खात्र पम्पकं करें।

> धाषायं नरेश कुमार सार शे धाषायं, गुरु विरजानन्द वैदिक सस्कृत महाविद्यालय करतारपुर विसा जालघर, पत्राव

वेदोपदेशक विद्यालय का उद्घाटन

बहानुटी वेद अस्तिर श्रवणाट वे वेदोपयेल विद्यालय का उद्दाटन प्रार्थ प्रतिनिथि छमा उत्तर प्रवेश के स्वान की एक स्ट्राटल की हारा रेक आर्थ १८०६. राजनकों को किया गया। इस अपवर पर स्थानीय बन्तो तथा विद्वानों के प्रति-रिक्त डांक सत्प्रिय की खाश्मी सत्कृत सन्कृत विभागाम्याल, वापरीय सर्थ हिंदू हिंदी कानेक समर्रोहा तथा वैधिन सुन्द हुन प्रवृत्ति के प्रवृत्त समर्थेल स्वारी स्वर्ण-नन्द जी महाराज उपस्थित वे।

सभी विद्वानी ने वर्तमान की विषम परिश्वितयों से वेद प्रचार की झान-स्यकता पर बस दिया यह निरुष्य किया वया कि १ जुनाई छन् १६-६ से विक्वित विद्यासव आरम्भ किया जाये।

प्रवेश सूचना

बहा कुटी वेदोपवेशक विश्वासय सवपाट में र जुलाई तम् १६८५ से पारक किया चा रहा है। कम से कम १०वीं पास हिल्दों का जान हो। शोम्प, विष्ट, समुखातनिय तथा सावीवन वैदिक वर्षे अपार के दश्कुत सीम्न पन स्ववहार वर्षे । वर्ष स्ववहार का पता

भाषार्वे ब्रह्मकुटी वेदान्त्वर, तजवाट विक वाणियावाद (उ० प्र०) वि २४५२०६

प्रोफेसर रामसिंह जी की स्मृति में राष्ट्ररच्चा सम्मेलन

धार्यसभाग नित्र नयार्गस विस्ती में १२ गई को स्वामी विधानस्य की की सम्मकता में राष्ट्रस्का सम्मेलन धार्यो-विस्त किया क्या।

इस सम्बद्ध पर बीनवी राकेस रावी, वी बनारवी विद्युपनकार तथा वयालीहरू वेची पूर्व पार्वेद नगर नियम ने स्वयक्ते स्रोवास्त्री विचार प्रकट किये। यह सावी-क्ता प्रवास भी स्वीपनकास भी करवे वाले के द्वारा किया नगा। निवेदक

शिवकुमार

श्री बनारसीदास चतुर्वेदी को श्रद्धांजलि

जानपुर (वाराख्यी) विश्व भारती खुड्बनाव परिषद् में एक लोक्यमा का धार्यक्रम एक लोक्यमा का धार्यक्रम क्या नवा विश्व वर्षकृत्य प्रकार भी नवारती वाच चतुर्वेश के निवन पर शोक प्रकार करते हुए चुड्कुक महाविकास्य अवालापुर (हरिवार) के कुवपित एव धरमा के निवेशक बाक्सिकेट विश्वपे के कहा कि भी चतुर्वेश वो ने को वेश्वयेग, क्रांतिकारियों का साम्बयदान वाहिएस सम्बर्ग एव प्रकार दिशा को वाई अव्हार्य एवं प्रकार वा का बावार्य प्रकार है।

बा• द्विनेदी ने कहा कि उनकी पनि चता और सादसपरता जन जन की सदा हेरना देवी रहेवी।

हा विभू मिश्र हा भारते दुए व सन्य कई व्यक्तियों ने उन्हें श्रद्धाविक सर्पत की। सन्त ने दिवनत महान् सारमा की सार्ति ने विश् दो मिनट का भीन रक्षा गया।

> श्चर्येन्द्र धाय प्रवार मधी विश्वनारत धनुसभान परिषद भानपुर (वारामधी)



लोकनायक श्रीकृष्ण पर सचित्र ट्रैक्ट

दिस्सी ४ नई (शिनवार) महान राजनीतिज्ञ कमयोगी तथा गीता क व्यवेष्टा श्री क्रप्श कमयो पर १६ पूर्ण्येय स्विम ट्रेस्ट प्रकागन का निश्चय साला रामवन्द धनाववाने धर्मां इस्ट नया गाजार ने किया है। इस्ट के धम्मक स गाय नेता की प्रमान प्रोवक ने बताया, तभी तथा रिविहासिक घटनाओ पर धायारित इस ट्रेस्ट वे व मुगु पुस्त और नोकनायक होने। कम से एल्ड प्रमान सक्तिय जीवन आक्रियों से जनशे कुणक सर्टक युवा नेता कांति कांत्री कुणारू धारस मित्र एक एत्यीवन हर्टनीतिज तथा वैदिक सस्कृति का गावसक स्वावा है।

समु परन्तु प्रभावकासी चित्र पुस्तिका के सेसक एवं रचनाकार श्री चंद्रमोहन धाय के धनुसार युवा वय के उपसक्त में वेरामर के मुबक मुबद्दियों के निए यह प्ररणाप्रद होगी। युवा पत्रकार तथा बीर सबुन (दैनिक साध्य) के प्रकान सम्यादक आ सनिक नरेड तीज़ ही इवे हवारों की सात्रा में प्रकित नरेड शाबी पीडी को सर्वाप करग।

वारमोहन प्राय पैस सचिव के ीय धाय युवक परिवद

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय का कुलपति कौन हो ?

—प्रो० सत्यवीर विद्यालकार

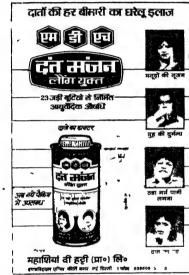
रोहतक १० मनेन (केवार्रीवह साथ) समाचार पणी में प्रतिदित्य महाँव दयानद विश्वविद्यालय के ना कुलवित के सार प में कई नालों की चया चल रही है। इरवाला सरकार को हमारा यह मनाव है कि इस विश्वविद्यालय का जुलवित किसी ऐसे विका शास्त्री को नियुक्त किया जाये जा कि महाँव स्थानन्य के विद्यालये का नाता हो जिससे कि विश्वव विद्यालये का स्थानन्य के विद्यालये का स्थान्य

गुनानक वि″्तिश्वलय समुत्तसर् काकूलपति ग्रम्मानक के सि⊾्ति का गत नथा प्रकाश विश्वलियालय का कुनपति रुज्ञम के सिट्ती का जाता बनाय जानारना रुज्ञम विद्यालय में औषहण रुप्त चुक्तमा वाहिता।

त्सनिया सँगम् । प्रतिनिधि समाझ्ट्यणक सल्लाको ने इच्यरणकेर रू प्याणाके स्थम का

≆ शिम= झान







श्रार्थ जगत की शान २०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन नेत्र चिकित्सालय

(अनुमानित लागत दो करोड़ रुपये)

के लिए दिल खोलकर दान दीजिए वान की राशि श्रायकर प्रविनियम जी० ६० के

भ्रतगैत कर मुक्त होगी।
सारा दान वैक/मनीभाईर/वैक कृष्ट द्वारा
मत्री, माना चन्ननदेवो आर्य धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय,
सी-१ जनकपुरी, नई-दिल्ली-४८ के पते पर भेजा नाए।

सान्य अनकपुरा, नक्ष्मविष्यान्यस्य के पत पर मणा नाण। दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर अकित किए जाएगे।

निवे इक

रावगोपास वासवाले सुर्वेदेव महासाव वर्षणान शोतप्रकास बार्वे सरकार विकित्सालय प्रवान दिश्लो एव प्रयान सार्व्या अर्ध्य प्रतिनिधि धार्य केन्द्रीय महाक्षय कुलीसाल प्रति-त समा सार्व हैरि० हु०

सौजन्य से महाशियाँ ही हट्टी प्रा० लिमिटेड ६/४४ कीर्तिनगर, ग्रीग्रीगिक क्षत्र नई विल्ली-११००१

केवल ५० रुपये में तीन वर्ष तक हर सप्ताह पढ़ते रहिए

- व्या आप ऋषि, मुनि, तपस्वी, योगियो की ध्रमृत वाशी पढना वाहते हैं?
- च क्या आप बेद के पवित्र ज्ञान को सरल एव मधुर शब्दों में जानन्य चाहते हैं?
- क्या ग्राप उपनिषद्, गीता, रामायरा, बाह्यराग्रस्य का भाष्यारिमक सन्देश स्वय सुनना और भ्रपने परिवार को सुनाना चाहते हैं?
- क्या ग्राप भ्राप्ते शूरवीर एव महापुरुषो की क्षीर्य गायाएँ जानना चाहेगे?
- च क्या आप महर्षि दयानन्द की वैचारिक क्रान्ति से धारमचेतनः जागृत करना चाहते हैं?

यदि हाँ तो झाइये आर्थनन्देश परिवार में शामिल हो जाइए। केवल ५० रुपये में तीन वर्ष तक हर सप्ताह पढते रहिए। साथ ही वर्ष में चार अनुपम भव्य विशेषांक भी प्राप्त कीजिए।

एक वर्ष केवल २० रुपये, ग्राजीवन २०० रुपये।

प्राप्ति स्थान— आर्येसन्देश साप्ताहिक १५, हनुमान रोड नई दिल्ली-११०००१

उत्तम स्वास्थ्य के लिए गुरुकुल काँगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

शाला कार्यालय—६३, गली राजा केदारनाथ, फोन : २६८८३८ वालडो बाजार, विल्लो-६





मूल्य एक प्रति १० पैसे

वर्ष १ प्रक २०

रविवार, २६ मई, १६=६

धाय सवस्सर १६६० = ५३० = ५

क्योच्ड २०४२

वयानन्वान्य---१६१

पंजाब के हिन्दू नेता प्रधानमंत्री श्री गांधी से मिले अभी शालवाले ने पंजाब की स्थिति पर ज्ञापन प्रस्तुत किया

प्रजाब के हि दू नेताओं ने धाज सार्वदेशिक पार्व प्रतिनिधि समा के प्रधान थी रामगोपाल शासवाले के मैतल्ब मे प्रधानमन्त्रो श्री राजीव गांची से भट की धौर उन्हें पजाब -की परिस्थितियों के सदर्भ में एक कापन दिया। प्रधान मन्त्री की ने क्रिक्टमण्डल के साथ प्रथमी लम्बी बातचीत में धारवासन दिया कि पकाब में समस्या के समावान मे पचान के जल्पसल्यकों के हितो भीर देश के बहमत की भावनाओं का पूरा धादर और सम्मान किया जावेगा। इन्होने यह भी प्रकट किया कि पञाब में त्युवादियों के साथ बोडे से लीव हैं सभी सिक्ख उनके साथ नहीं है।

शिष्टमण्डल ने निम्न आपन प्रधानमन्त्री जी को प्रस्तुत किया —

, १, पजाब के प्रकाशों नेताओं की क्षिप्त विक्स खाज फेडरेबन से पानन्दी हटाने की घोषगा दिस्सी में कुई हितक घटनाओं की जाब के घावेंथ के उपरास्त उग्रवादियों के में की बाफी यह हैं। उन्होंने रसे घपनी विक्रय खनका है जिससे बाता-क्परा सर्वक्री गया है।

२ श्री अर्जुनसिंह को पजाब भेजने के उपरान्त उनकी राय के अनुसार जो कुछ हुगा, वह केवल उम्रवादियों और अकालियों को खुख करने साक रहा। जिसका परिएान अन्य समुखारों के जिए हानिकारक सिंह हुआ।

3, दिस्ती में हाम ही में उपवा-दिनों ने जी हिसारमक विस्फीट किए हैं, इसके पीक्षे किसी निवेशी समित का हाम हो सकता है। इसके विष् सरकार को विशेष नीति निर्धारित करनी वाहिए।

प पजान में पुलिस तथा प्रसा-सर्त में सिक्सों का बहुमत है, इसलिए बहा के हिन्तुमों के साथ कोई न्याम नहीं हो सकता हैं। इनलिए पजान के प्रन्य समुदाय के लोगों को बी प्रसासन तथा पुलिस में पूरा प्रतिनि-स्था सन्तर्ग वाहिए।

५ लोंगोनाल तहित सभी धकाशी नेता प्रभाग सभी सीमती हन्दिरा गांधी की हुत्या की निन्या करने को गी तैयार नहीं हैं प्रसित्तु लोभोबाल ने सतबृत्तरिह सौर बेमल सिंह के घर बाकर उन्हें श्रदाजित देते हुए सहीशों की सजा दी है।

६ भूतपूर्व विदेश मंत्री सरदार स्वर्णीसह ने लन्दन से प्रकाशित एक बस्तव्य में साफ कहा है कि मिडरा-बाला बरा प्राथमी नहीं था। उसमें ५ व्यक्ति मरवाए तो पुलिस ने ६६ मार दिये। उनका यह कहना है कि मानदपुर प्रस्ताव पृथकतावादी नहीं है तथा प्रधानमत्री और राष्ट्रपति में मंहरे मतनेय हैं जो राष्ट्र के लिए बातक हैं।

७ चडडोगढ फाजित्का और खबोहर के विषय में वहा की जनता की राय लेकर निर्माय किया जाये। धकालियों का निर्माय वहा की जनता पर न कोवा काये।

द उप्रवादियों के विरुद्ध सक्ती से निपटने के विए सरकार कोई ठोस कानून बनावें ताकि देख के जन-जीवन और सम्पत्ति की रक्षा हो सके।

 धदि सरकार ने कमजोर नीति अपनाकर ग्रकालियो को प्रसन्न कन्ने की नीति का परित्याग न किया तो देश का बहुमत सरकार को ममर्थन न देशा बल्कि खुलकर विरोध करेगा।

१० वर्तमान नीति मे परिवर्तन करक पजाब के राज्यपाल श्री झर्जुन सिंह के स्थान पर किसी योन्य व्यक्ति को जासीन किया थाबे।

११ पजान के मामले में जो भी नातचीत हो, उसमें पजान के सभी झामिक व राजनीतिक समुदायों व सस्वाधों के प्रतिनिधियों को बी सम्मिलित किया जाने।

विष्टमण्डल के सबस्यों के नाम---

१ श्री रामगोपाल कालवाले, प्रवान सार्वदेशिक मार्थ प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

२ श्री गोपीचर माटिया, प्रधान कुर्वाना मंदिर, अमृतसर

३ श्री रामलुमाया प्रमाकर, मत्री दुर्म्यामा मदिर, अमृतसर

४. श्री खपदीश तागडी, प्रधान हिन्दू खिबसेना प्रधाब

५, श्री सत्यानन्द मुजाल, उप-प्रवान सर्विदेशिक समा, लुवियाना

प्रवान सावचायक समा, लुप्तयाना ६. श्री किशन कुमार, शार्य-समाज भटिण्डा

७ भी प्रकाशचन्त्र मेहरा, प्रवान सास्त्री मार्किट ग्रमतसर

द्र श्री भोलानाम दिलाक्री, भार्यसमाज सन्तिनगर भमृतसर

श्री नन्दिक सोर, मश्री आर्थ
 केन्द्रीय सभा समृतसर

१० श्री एस० के॰ सञ्जवास एड-वोकेट, जालन्यर

११ श्री तुससीयास जेनवानी, प्रभान व्यापार मण्डल, सुधिवाना

द वृप्त (शेव पृष्ठ १२ पर)

पंजाब के आर्य नेता की

दुःखद मृत्यु : शोक संवेदना

धार्यसम्भव शावार श्रव्हानन्द धमृतसरं के पूर्व प्रधान तेवस्वी धार्य नेता श्री धोमप्रकाश तेव की धाक-दिमक मृत्यु पर कार्यस्माण दीवान हान में वह सहनी सांधा महुरा कुन्य बोर सोक व्यवेश करती है।

श्री धोमप्रकाश जी प्रवास के उस बीर सपूरों में से वे जो बड़े बिद्धान धीर देश तथा समाम के लिए बड़ा से बड़ा बलिदान करने के लिए तैयार रहा करते के।

यह समा पंजाब सरकार से जन

की संविध्व मृत्युकी अद्यानती जान करने की मान करती हैं। यह त्रवा धनुनन करती हैं कि मोमप्रकास वेद के दिक्यत होने से जो स्थान खाली हो गया है उतका सरना निर्ताल सरम्बद्ध हैं-

वह सँमा परम-पिता परमारमा ते जनकी मारमा को काति तथा कु सीपारियारिक जनों को वैसे प्रदान करने की प्राचेना करती है।

बूलचन्द बुप्त

सत्संग वाटिका

(समने) बाह्य तथा स्नानरिक संग्राम में (बहुना दर्राण) बहुती को भगान वाल (विश्रुम्) विविध कर्म कुशसतापूर्वक करने वाले (युवानम्) गुत्र कर्मों से मेस परने बाल तथा ग्रद्भ कर्नो का त्याग करने वानको भी (पलित जभार) सबका पालन करन वाला बुद्धकाल अपने गाल मेरल लता ह। (देवन्य) दिन्य चम-स्कारा प्रभुक (कान्यम्) इस काव्य का (पस्य) देख, यमभ ग्रार स स कर अपन जीवन व्यवहार को बदल । जो व्यक्ति (महित्वा ह्या समान) कल महन्वपूर्ण स्थित के कारण वडी अवड संजा रहा था, सम्मान प्राप्त कर रहाथा (स) वह (ब्रद्धा) क्षत्र (समार) मरापडा है।

मृत्युकं विषय में धनक विद्वानो न अनेक बातें कही हैं। परन्तु मृत्यु जैका सावंभीमिक बस्तुका वि बात्मा न सभी मनुष्यो के लिए बनाया है-यह निष्यत है। क्या यह मृत्यु मनुष्य के लिए सभि-शाप है ? विचार की जिए तो लगेगा कि यह प्राशी-माल के लिए वरदान है, श्रीभ-काप नहीं।

मृयुम एक भान-द हे, पर तुमनुष्य का इस प्रानन्द से इसलिए प्रनानश रका गया है, ताकि वह जीवन का कठिनाइयी को सहसके।

बैदिक संस्कृति में मृत्यू की भीष-णता नही है। मृत्यु तो मानो जीवन वृक्ष मे लगाहुमा सुदर फल है। जीवन मोर मृत्यु दोनो ही श्रत्यन्त मगल कारक श्रीर बेरलाद। यक भाव हैं। रात्रिस ही तो घरणोदय होता है और घरणोदय म ई रात्रि खिपी होती है। जीवन मृत्यु रूपी रात्रिका प्रक्लोवय है।

प्रश्न कभी-कभी मन में घटता है. यह मृत्यु क्या है ? हम मृत्यु को जानते नहीं हैं, क्योंकि हम मरे नहीं है । को मर चुका है। वह मृत्युका स्वरूप बतनाने **धार्**गा नहीं। हा यह मृत्यु प्रत्येक के पास भाएगी। भाष जिसका जन्म हुमा है, कल वह धवश्य बरेगा। परन्तु काई नही बताना कि मृत्यु क्या है ?

बदिक विचारधारा कं अनुसार मृत्यू का अस्तिस्व है ही नहीं। मृयुक वास्त-विक स्वरूप को समभ क्षेत्र स यह मिट जाती है। बारतविक स्वरूप को समक्षते के लिए हमे यह न्यान रखना है, कि आत्मा भीर शरीर द'वस्तुए है। इनमें म शरीर की मृत्युहाती है— बात्मा की नहीं। बास्तव में मूर् एक निद्रा है हम प्रति दिन सोते हैं राज राज सोना छाटी छोटी मृत्यू हैं। डा॰ सत्यव्रम जी सिद्धातालकार लिसत हैं 'गरीर जब यक जाता है, तब बात्मा हमे सुला देती है तानि इसमे शक्ति का सचार हो जाय। बैटरी-वार्ज हो

मृत्यु एक मधुर कविता है

सुरेशचन्द्र वेदालकार

विघु दद्राण समने बहुना, युवान सन्त पश्चितो जभार। देवस्य पश्य काव्य महित्वा, श्रद्धा ममार स ह्य समान ॥

ऋ० १०।४४।४

जाय। बैटरी जब बिल्कुल काम लायक नहीं रहती तब बात्मा इसे छोड देती है भीर वह कारलाने के लिए दूसरी बैटरी से नता है।'

कठापनिषद् में निविकेता ने बमराब से पूछा गुरुदेव [।] जब बादमी मर जाता है तब कई कहते हैं, यह गर गया और कई कहते हैं, यह नहीं मरा। तुम तो साक्षात् मृत्यु रूप हो यत तुम वतनायो कि तुम हो क्या?

यमराज बोला सखार में दो तरह के मनुष्य हैं। एक देजो शरीर को झारमा मानते हैं भीर दूसरे वे जो सरीर को ग्रात्मानही नानते। शरीर की ग्रात्मा मानन वाल सासारिक भोग-विसासी मे सिप्त रहते हैं। वे 'प्रेय मार्ग के पश्चिक बन जाते हैं। परन्तु सरीर को भारमान म नने वाल, वे नित्य की तलाश करते हैं, दुनिया की टीप टाप से उनकी तृष्ति नहीं, होती, भौतिक भोग-विसासी से उनका की नही भरता। इनका मार्व 'श्रेय का होता है। बाद रखो, मृत्यु का सर्व है निर्वाण ग्रयाति ग्रनन्तः जीवन प्राप्तः कर नेना। ब्रपने वैयक्तिक शुद्र स्वार्थ, श्रपनी श्रासक्ति को भूतना ही सन्त्री मृत्यु है। इसनिए सन्त तुकाराम कहा करते वे -

धपनी धासो ही मैंने तो अपनी मृत्यु देख नी है।

बनुपम वा गेरा सुस सुहाव।

जो एक बार इस मृत्युका अनुवय कर लेते हैं उनकी मृत्यु नहीं होती मृत्यु मानो माका सनलस्य हाव जो प्रेय मार्च में सन जीवन को घोकर स्वच्छ कर दे-

बूलि वूसरित है यह तन मन ानज अमृत कर से वो दे भगवन्।

सुला मुक्त चरणो म निश्नदिन भगवन् किसे कहु ? अव क्या कहु ?

अनुष्य से भासक्तिमय पसारा खुटला नहीं। लेकिन ईस्वर मृत्युके द्वारा उखे उटा देतः है। सम्मुज मेरा यह मासिन्य, मा । नेरे विना कीन को सकता है ?

ग्रत वैदिक विचारधारा महती है 'प्राक्तो वै मृत्यु' मृत्यु प्राच है। मृत्यु का वश काटकर वैदिक विचारकारा ने उसे सुन्दर बीर मधुर बना दिवा है। मृत्यू मानो सेस है। मृत्यु जानी आनम्ब है।

मृत्यु मानो काव्य है। मृत्यु मानो पुराने वस्त्र बदलना है। जिन्होंने शूर्यु के इस काव्य को समका है। उन्हें मृत्यु से अय नहीं अनता। उन्हें मृत्यु में भी काव्य का बा रत मिघता है।

भगतसिंह (१६०७-१६३१) को जब फासी पर चडाने क लिए ल जाया जा रहा बा सो उसका बेहरा उज्ज्बल हो उठा उत्तका वजन वढ गया और 'मारत माता की जय, 'इ-कलाव जिन्दाशाद का नारा सगाता हुआ फासी पर चढ यथा।

रोशनसाम को इसाहाबाद केल मे फासी होने वासी थी। पहले दिन सम्बेख सुपरिष्टें व्हेंट न वसरत करते देख उससे पूका कि कस तो तुम्हे पासी होगी, आज क्यो कसरत कर रहे हो ? वह बोखा बैदिक वर्ग में मरते समय जो जाव होता है उन्ही के बनुसार दूसरा जन्म होता है। मैं शक्ति प्राप्त करने का विचार लेकर मक्नातो धनले अन्म में ब्रिटिश राज्य को उसाद फेकने ने बनिक शक्ति ग्रह्म

रामप्रसाद विस्मित को जब गोरक-पूर मे फांसी दी नई तो 'विक्वानि देव' मत्रो का पाठ करते हुए उसने फासी की रस्तीको हवं से चूम लिया।

१६१७ ई॰ ने जब अकबर की सेना से युद्ध के समय जनमस और फला ने और उनके बीर श्रीनिकों ने केसरिया बाना पहनकर अपनी मातृत्रुमि की रक्षा के सिए विवान दिया और स्त्रियों ने बौहर प्रत बारसा किया। तब क्या वह अभिश्वाप

ऋषि वदानन्य (१८२४-१८८३) को विष दिवा गया वा । विष सं रोम-रोम मे बाव सनी बी परन्तु मृत्यु के समय चेहरेकी कान्ति को देखकर नास्तिक नुस्यस (१८६४-१८६०) ब्रास्तिक बन यया ।

वादनी चीक ने सम्बंधों की सेना के सामने वन एक निहत्या सम्बासी प्रपनी श्वाती सोम कर वोसियो का युकावना करने खडाहो नया यो बन्दूको शुक्र नई। क्या यह मृत्यु का बानन्द नही ?

इन्लैड में मीटीमर (१४८६-१५१६) में एक पावरी था। उसके हाथों ने दई सपेटकर, ससकी मधाख बनाकर उसे बाय संया वी वर्ष । यह बाह बाहत कार

मराकि उसकी मृत्यु की मधाल सभी दुनिया में श्रज्ञान के धन्यकार की दूर

बूनो (१५४ :-१६००) कहता वा कि सूर्व पृथ्वी के निर्द नहीं बूस रहा, पृथ्वी उसके वारो धोर प्रवक्षिणा कर रही है। उसके विरोधियों ने उस धान में जलां विया-पर उसने धनना सिदात नही छोडा। यह मृत्यू भी या प्रमरता?

सुकरास मरते समय धम्तरक का स्वाद ने रहा था। मरते समय बेटे से कहा ' श्रविक प्रकाश, श्रविक प्रकाश '। पुकाराम महाराज 'राम, कृष्य हरि गाउँ गाने उसते-इसते चल दिए। समर्थ नै कहा 'क्यो रोते हो ? मेरा 'हास बीक्ष' तो है। लोकमान्य यदा यदा हि धर्मस्य' वासा श्लोक बोलते बोलते चल गये। गांची जी दोनो हाथ जोडे हुए 'हे राम' कहकर ससार से विदा हए।

इसलिए मृत्यु कविता है। मृत्यु रस है। मृत्यु प्रासा ते मृत्यु नवजीवन का नारम है, मृत्यु मानन्द का दर्शन है। मृत्यु मानो परमारमा जीवारमा के मिजन कर समीत है। मरकर धपने त्रियतम के पाक-वाना है। किसी ने कहा है -

> करले शुवार चतुर असबेली । सावन के वर जाना होगा।। माटी भोडावन, माटी विश्वावन । बाटी में जिस जाना होया ॥ नहाल, यो ल, सीस गुवा से। फिर वहाते नहीं भाना होगा।।

निवचिन

वार्व नहिला नडन करीलवान को क का निर्वाचन भीमति सुसीसः जी धानन्द की बच्यक्षता ने हुमा।

निम्नसिक्त पदाविकारी निर्वाधिक

बीमती युशीला महता पथाना

डा० चन्द्रप्रभा उपप्रवामा न्वीमती कृष्स रसवन्त मंत्रिणी

प्रकाश बुग्वा उपमन्त्रिक्ता बीवती सावित्री कपूर कोवाध्यक्ष

मस्त्रि

कृष्य रसवन्त

शोक सभा

सार्वसमाज रमेशनकर के वरिष्ठ उपप्रभाग की बोमराज जी कोखड का धूबईको निधम हो बया। उनकी स्मृति में एक भढ़ाञ्चलि समा बी/१३ रमेशनगर में सम्पत्त हुई। श्री बोधराध कर्नठ समाच सेवी तथा दानवीर वे। उनका स्वभाव सरस एव मधुर था। इस अवसर पर उनके परिवार की शोद से बार्यसमाज रमेशनगर को ३१२५ स्पये का एक एम्प्लीफायर तथा बार्यसमाब सारवापुरी को एक सिलाई मधीन सी। बार्व प्रतिनिधि सभा को भी १०० स्परे दाम स्वरूप दिए।

हम विवेषत भारमा के प्रति प्रमु से स्व्यक्ति एवं शांति की प्रार्थना करते हैं।

सिखों के अपमान का कारण अकाली दल

सरदार सत्येन्द्रपाल सिंह



पजाब के बकाली नेता और लग्दन में रह रहे बडबोले मखबारी घेर खगभीत सिंह बोहान तो साली से कहते चले ग्रा रहे थे कि भारत में सिख द्वितीय अर्थों के नागरिक की हैंसियत रखते हैं, किन्तु मब खुशवन्तरिह खेसे पत्रकार और महीपविह जेसे बुढिजीवी भी यह प्रश्न कर रहे हैं कि भारत में सिक्स आत्मसम्मान से केसे रहें। पर क्या सचमुच सिखों के साथ भेचवान करता का रहा है।

धकाली दल ने मुस्लिम लीग की तरह हमेशा ही धर्म का राज-गीतिक पंतरे के क्य में इस्तेमाल किया है ध्रीस्वह भी पजाब के राजनीतिक परिप्रेक्स में। पजाब के बाहर फालियों ने न तो कभी फाका, न ही कही उन की कड़े रही है। इसके बावजूद ऐसे धम्बर बहुत कम आये, जब वे पजाब से सत्ता में रह रहे हो। पजाब में गांवों का खेतहर जाट तबका हो धकाली दल से जुड़ा रहा है धीर दल की बावडोर भी सम्पन्न जाट मूपित्यों के हाथ में रही है। शहरी पढ़े-लिखे, मेर जाट सिक्षों को सहामुत्ता कि काली दल नहीं प्राप्त कर सका। पजाब के बाहर विभिन्न प्राप्तों में बस बाले सिख धामतीर पर कामस के समर्थक रहे हैं। शायद यहा जजह है कि हरियाएगा, हिमाजल के धलावा उत्तर प्रवेश, राजस्वान, मध्यप्रवस, बिहार, पाइवस बनाल तक को विधानसभारों से कीम टिकट पर पुने गये विहार विधायक दिखाई पर खाते हैं। आज भी कई प्राप्तों में सिख मना हैं।

इससे साफ तौर पर को चोत्र उत्तर कर सामने मातो है, वह यह है कि मकाली दल कभी खिलों का प्रतिनिधित्व करने वाली सस्था नहीं रहीं। इसास्कर पञाव के बाहर के सिलों ने तो इसे कभी गम्भीरता से नहीं विद्या।

स्वर्ण मन्दिर में भापरेशन ब्लूस्टार के पहसे तक भ्रकानी नेता साफ तौर पर कहते में कि वे पजाब के हका को लडाई लड रहे हैं। हाँ पर्वे के पोख़े तिला राज्य का मिश्रक करूर तथार किया गया था। पर स्वर्ण मंदिर में सेता के प्रवेश के बाद से भ्रकालियों को यह कहने का सुनहरा भ्रवर मिला गया कि सिला कौम पर हमला किया गया है, सिला भारत में मुलुरक्तित हैं, भ्रादि-भार्त। एक भावनारमक उद्वेग सा उठा भीर वह सिला भी प्रकालियों की बाता की सचाई को परलने लगा, जिसने भ्रमनी सरी जिन्दगी में कभी स्वर्ण मन्दिर के दर्धन तक नहीं किये। पत्राव का माहील काफो हद तक भ्रकालियों के पक्ष में हो गया। पजाब के बाहर मो सिलों में सुगबुगा-हट थी। श्रीमती गींथी की नृशस हत्या के पश्चात् दिवति में भीर फर्क सामा

इस सम्बन्ध में महीपसिंह से एक सबाल पूछा जा सकता है कि मेरे बसासिस, जो उत्तर प्रदेश मे पदा हुमा, पढ़ा-लिखा, बढा हुमा भीर जो कसी भी उत्तर प्रदेशवासी से अधिक अच्छी भवनी बोल सकता है, तथा हमी भी पजाब के किसी भी शहर, कस्बे, गाँव मे गया तक नही, वह कसे गाम से कि प्याब की अमीन पर उसके हिंत फलफून रहे है ? सवाल यह ही है कि जिस धर्म के नाम पर शकाली पजान को बन्द्रक को नोक पर ल्यक बनाए हुए हैं, वह पजाब में किस दौर से गुजर रहा है ? पजाब के संखों मे बाल कटाने, नक्षा करन, गुरुद्वारे न बाने, यहाँ तक कि पजाब से ालायन कर अन्य प्रदेशों व बिदशों में बसने की प्रवृत्तियाँ तेजी से बढती जा ही हैं। प्रवास में ऐसे सिखों की कमी नहीं जो न तो अपने इतिहास व रुओं को शिक्षाओं के बारे में जानते हैं, और न अपनी माथा लिख-यह सकते । प्रजाब के बाहर रहने वाले सिख अकालियों को किस प्राधार पर सम-ान दे ? सिवाय पजाब झाने का झानन्त्रए। देने के झीर क्या वर सकते हैं -- पजाब से बाहर के सिक्षों का । फिर यदि कभी असम्भव वात सिख ाज्य के रूप मे सम्भव हो भी गई ता क्या गारण्टी कि पजाब जाने वाले ससों का बही हम्म नहीं होगा, जो पाकिस्तान जाने वाले मुसलमानों का भा है ?

इस बात की बास्तविकता नो जान करना भी जरूर हो गया है कि

क्या भारत में विक्षों के साथ भेदभाव बरता जाता रहा है। इस देश में सिलों को एक महान् देशभवन कीम का दर्जा दिया गया था। धोर हर जगह उन्हें सम्मान की निगाह से देला जाता था। पजाब के बाहर सिल उन्हें सह जाता था। पजाब के बाहर सिल उन्हें भेरे जाकर बसे, वहीं के स्थानीथ समाज ने उन्हें द्वियानम कर लिया। इसी बजह से जनके उद्योग भीर ज्यापार भी चल निकले तथा सामाजिक प्रतिष्ठा भी यित्री। बोग एक दूसरे के सुन लुक , अवसरो-त्योहारों से सरीक हीने लगे। यदि इस सब बातों को एक तरफ एक दिया यथे तो भी महीपसिंह, स्वामी विवेकानत्व, हां। राम प्रकृत्य, कुतारीभाष दिवेषी और भनेक विद्यानों, दार्शनिकों की कही व लिखी बातों को कैसे भुठला सकते हैं, जिनमें दिखों की सच्ची प्रशास के करने प्रवृत्य पहले हैं। स्वय महीपसिंह ही सोचें कि हिन्दी कथाकार के रूप में उन्हें इतनी प्रतिष्ठा क्या भ्रनायात ही निन गई।

िकों की वैयनिक्क व सामाजिक प्रतिष्टा व मान्यता का इससे वडा प्रमान्न और क्या हो सकता है कि नियमों व कानूनों का सब्सी से पालन कराने हेतु प्रवेश सरकार सिक पाई एए स व प्राई पी एस अधिकारियों को प्रपत्न वहुँ बुकाने हेतु लालामिन रहती हैं। प्रुक्ते याद था रहा है कि ममेटो में जब पहली बार राजों व गांची ससदीय उपजुनाव लड़ने थाए तो उनके माथ पुलिस के अपराक्षा के कामा पांचित्र हुई कहुँ कहुँ खिला, जिनके साथ पुलिस के अपराक्षा के कामा पांचित्र हुई कहुँ कहुँ खिला, जिनके साथ पुलिस के अपराक्षा के कामा पांचित्र हुई कहाँ कहाँ सिक प्रतिक्री के साथ पुलिस के प्रतिक्र पार्चित्र कामा पांचित्र के साथ प्रतिक्र के साथ प्रदेश के साथ प्रतिक्र के साथ प्रतिक्र के साथ प्रतिक्र कामा प्रतिक्र कामा थी राजनीति में थाए तो उन्होंने हमें हो साथ रखार किया।

राजनीनिक तौर पर भी निश्वों को सदेव महत्त्व दिया जगता रहा है। सरदार बलदेव मिह, मरदार मजीटिया, हुकुमांसह, उउज्ज्वलिखह, स्वर्ण-सिंह, गुरुद्याल सिंह बिल्लों से लेकर ज्ञानी जेलसिंह तक भनेक नाम पिनाए जा सकते हैं। विभान्न प्रदेशों में भी राज्य स्तर पर भनेक सिल राजनीतिक रूप से सिक्रय व पदासीन हैं। यदि इसे हो सिल्वों के साथ राजनीतिक स्तर पर ग्रन्थाय माना जा सकना है कि प्रकाली दल कभी उभर कर सामने न भा सका, तो निष्वय हो हमें चुप रहना होगा।

यदि अमृतसर हरमन्दिर साहव में सेना की कार्यवाई को ही सम्पूर्ण सिल कौम का अपनान करने व जुनीनो देने वाली घटना मान निया जाए तो जो अपनान, जो शम, आज देश के कोने-कोने में बंठा सिल महसूस कर रहा है, उसके लिए जिम्मेदार कोने हैं? वह शकालियो और उनकी गलत नीतियों को क्यों न कोसे ? वह सिलों की सामाजिक, राजनीतिक व वैय-क्तिक स्थित के इस जवसूल्यन के लिए जिम्मेदार है।

इसी आचार पर आज बहुतेरे खिल आनन्तपुर साहब प्रस्ताव को पून रूप से प्रस्तोकार रूपने में तीनक भी हिचकिचाहट क्यों दिलाएँ, जिसकी शुरुआत ही इस फतने से होती है कि शकाली दल सिखों की सर्वोच्च प्रति-निर्मित्र सस्या है।

महीर्गांशह जंसे बुद्धिजीवियो से मेरा प्रमुरोच है कि पजाब समस्या को पत्राव समस्या ही रहने दे, सिल समस्या में न बदले। पजाब समस्या यो पजाब समस्या नहीं, प्रकाली समस्या है। प्रान्दोलन प्रकालियों का, प्रांगे ग्रकाली राजनीति के प्रमुक्त, कभी नर्म, कभी गर्म उपलब्धि प्रमुप-लब्धि सकालियों की, सचर्ष सत्ता का। बाम सिल को चाहे वह पत्राव मे हो या पजाब से बाहर, इन सब बालो से कोई सरोकार नहीं है।

ककाली नेता झाम सिखो के हितों के रक्षक तो कभी भी नहीं रहे, इतना बबस्य हुमा कि वे सिख कीम के अपनान के कारए। वन गए। किन्तु बमें के नाम पर जोली गई उनकी राजनीति का दुकान भविक दिन तक चलने वाली नहीं।

(नवभारत टाइम्स से सामार)

उनीसबी शती मे महर्षि दयानन बिरक्त साधु बेश में समस्त भारत का पैदल भ्रमण कर रहे थे। ब्रह्मचय ग्रीर सपदवर्ग से उनका शरीर व प्रात्मा प्रदीप्त था। भारत के सभी वर्गों की दशा की जनकी सूक्ष्म रुच्टि देख रही थी। देख गुद्ध वैदिक धम के स्थान पर बौद्ध भीर जैन सम्प्रदायों के अपूर्ण अहिंसाबाद तथा मतीन वनात के शक्स श्याद के सम से गिरा पडाया। जाससास का नम्न ताण्डव हो रहा बा। समस्त समाज नानाविध क्रीतियाव कवियों में फसायडा बा। स्त्री जुदो व पश्चमो के साथ घोर खपेका बरती जा रही की। भारत का आर्थिक ढाचा विदेशी कूटनीति के कारए। मडलडा रहा था। रावनैतिक रव्टि से ग्रय ज मारे भारत पर छाये हुए थे। ऐसी विषम परिस्थितियों में भी कुछ देशभक्त व महत्त्राकाक्षी स्रोगो के हृदयों में देश-ग्रेम की श्रान्ति ज्वाता अधक रही थी। प्रथम स्वतन्त्रता युद्ध के महाम् नेताम्रो मे बीर तात्या टीपे, नावा साह्य अजीम उल्ला सौ बादि के साथ ऋषि दवानन्द भी स्वतन्त्रता युद्धकी तैयारी मे जुट गये। ऋवि ने हरिद्वार क्रम्भ मेले पर ही देश की प्रजानता भीर गिरावट का स्थय सब देखाया। यस सवस्वस्थान भारत राष्ट्र के जागरण का स्वप्न सजोकर विरक्त साध्यो की टोली बनाकर हाथों में कमल कून भीर रोटी का दुकड़ा लेकर कश्मीर से वन्याद्यारी तक भ्रदण करते हए स्वतन्त्रता युद्ध का स देशा पह-वाते रहे। जनता भीर सेना के बीरो ने मेरठ छावनी से स्वतन्त्रता के ऋण्ड का हाचमे सकर युद्ध घारम्भ किया किन्तु विद्रोहियों की राजनैतिक भूल के कारश स्वतन्त्रता का प्रथम प्रयास विकल हो गया। तब ऋषि ने नाना साहब तबा धनीय उल्लाखानी श्रीराष्ट्र वले जाने की कलाह वी धीर धपना माग वदल कर दूसरा ही काय भारम्भ किया। सन् ५७ की काति की प्रसफलता का मुख्य कारण —एक विचारवारा, एक जाति एक सन्दन, एक भाषा, एक राष्ट्र का आभाव एव समाय ने फैली विकिष कुरीतियो और कप्रस यों का प्रसाद था।

धन महर्षि स्वतन्त्रता के प्रेमी धाव बन्धे के प्रकाण्ड विद्वास दण्डी स्वामी विरजानन्द क सवा मे पहुने । बहा उन्होने बहा श्राष प्रन्थो एव स्थाकरण का बच्यान विया वहा जारत की दासता का बेडियों को काटने पर भी चितन व मनन किया । तदमन्तर गुरु से विदाई सक्य ऋषि दयानन्द मान्तरिक व बाह्य तैया ते के बाव भारतीय समाध में व्याप्त परतन्त्रता के मूझ कारखी जमन्त्रता, काररता प्रधविश्वास एव एकता बादि कूरी वियो का दूर करने का रह सकल्प े से ≄र प्रचार क्षेत्र मे उत्तर पढाउल्होने क्रायांवत मे फैले सब प्रकार के दुर्गुणो की बाच कर न्बिर और सामयिक उपाय प्रारम्भ किये । स्वान स्वान पर व्याख्यान

भारतीय समाज के जागरण में आर्यसमाज का योगदान

महाबीर 'नीर' विद्यालकार

दिए । सम्प्रदाणी मतमतान्तरी से शास्त्राच किए। वेद भीर संस्कृत श्रष्ट्यमन पर वस विद्वामों एव साधारण जनता को जावृत करने के लिए सत्याधप्रकाश अहरवेद-भाष्यभूमिका सत्कारविधि गोकरुणा-निधि धार्वात्रिविनय बार्वेहिस्यरस्न-माला व्यवहारमानुधादि ग्र**व धा**र्व भाषा (हिन्दी) में सिखे। जनता तका राजा रक्वाडी से सीचा सम्पक स्वापित किया। राजनैतिक व द्याविक सुवार के लिए स्थाम जी कुष्ण वर्मा को विदेश मेजा। जितनी और जिस प्रकार की बीकूरी तिया बुराइया वी सब पर निशव होकर तक की कठोर कुठार चनाई। भीर---

ग्रपने द्वारा चालुकिये कायक्रमो को धामे बढाने के लिए बम्बई मे धायसमाध रूपी सस्था को नीव राखी। जनता मे कानरक हुमा मतन दी व विरोधी शबके। धनक बार सनेक उपायों से ऋषि के प्राण हरने की ठानी। शस्त मे इन्ही सुवार कार्यों के कारल दुष्टों ने विव के द्वारा उनके बाच हर सिये।

ऋषि के निर्दाण के पश्चात् साथसमान एक बार विमूद व इतप्रश्न सा रह गया। कि तु कुछ उत्साही व दढ बाम नेताधी ने ऋषि द्वारा प्रतिगदित कामाम को आगे बढाया । बेद का द्राध्ययन द्राप शिक्षा एव सस्कृत का अचार होने सना। र टकी एकमात्र भाषा 'श्रायमाया हिन्दी तथा देवनागरी लिपि की अब जन मयी। धनेक पाठश लाधी, कालेको गृह क्लों व कत्या गुरुकुसी की स्थापना होने लगी। वेटों भीर सन्य बन्धो का समित परक सर्व होने सवा। समास वे नम ते भीर भोश्मृका स्वापक प्रकार हुआ। स्वदेशी बस्तुधी के प्रति धार्यसमाज ने लगाव पैदा किया । सोसीं को नास्तिकता ते बास्तिकता की जोर मोडा। वड पूजा से विमूख कर निराकार पर ब्रह्म की उगासमाकी धोर उन्मुक्त किया। वाति पार्त तोड कर विवाह होने समे । बसा शाक्षम का प्रकार हुआ। स्त्री जाति को गढाया जाने समा एव उनका सम्मान होने लगा। बसूत अस्प्रस्य साथि कुरीतिको का निवारल होने सवा। जाति-पाति की दावारों ने दरार पडने सबी। आन का सता प्रकाश वहुँ घोर फैसने लगा। घारमा-निमान की वृद्धि होकर राष्ट्र होने की चिन्नारी स्कूरण पाने सबी। गार्विक सुवार हुधा । राजनीति ने भी चैतन्त्र शाया । किन्तु बहा बार्यसमाज ने पार्मिक व

वहां राजनीति वे सामृहिक रूप से कोई उपसब्धि प्राप्त नहीं की । फिर बी राज-दिया । राजा रचवाडो व विचारशील गीति में सार्वसमान के १० प्रतिशत सदस्यों ने मान निया। राष्ट्र की स्वतन्त्रता भीर उसके उत्थान के लिए कब्ट सहे। बैस वातनाए भोनी प्राख्तों की मेंट चढाई। अध्यमान की कालकोठरी ने रहे। हसते हसते फासी के फन्दों को चुना। परन्तु इस सब का श्रेव समाज को न मिल सका। वस्तुत मारतीय समाच की सोयी राज-नैतिक बनीवा की बनाने ने ही धार्यसमाब का प्रवल हाव रहा । समाजमें नई जायूति नाने के मिए न जाने कितने स्वामी बद्धानन्द पं॰ नेसराम व महाशय राज-पास की जैसे नहा-पुरुष मोजी एव सकर का निजाना बनाये वये । यही नहीं श्रमणी वाति विरावरी के भौगों से भी ठकराये गये निकाले गए। हुक्का पानी तक बन्द हवा। किन्तुजावरताकाओ शक्ष ऋषि ने फूका का उसकी ध्वनि सदा सबदा मार्थों के कानों में बूबती रही।

> धाक धायसमाज के बहुमुक्ती प्रचार व प्रतार से राष्ट्र का रूप ही बदलने लवा है। यत कुछ लोग कहने सबे हैं हैं कि जितने काय धायसमाज ने प्रारम्भ किए थे। व सब सरकार ने अपने काय क्रमो ले सिये हैं। उनके बनुशार स्त्री शुद्रों की कोई समस्या नहीं रही। बस्प्र-व्यक्ता धर्वत्र असर दी सभी है। जाति पाति के बाबार पर ऊचनीय के बाब सम प्त हो ए । है। शब्द बता की भावना बढ गया है। एकुयो पर सत्याचार बन्द हो गए है। सिक्षा सब को उपस्रव्य है। नैतिकता नाप्रभाव बढ गया ह। उस्त बाते कहने सूनने में कुछ ठीक श्री सबती हैं किन्तु है अस्कूल निर्मृत । क्योंकि भारतीय समाज के जागरण में झार्बसमाज की जैसी पहन भावश्यकता भी उससे वहीं प्रचित्र बाज है।

बाज बाचिनकास ऋष्टाचार वृक्ष-कोरी लुटपाट कोरवाजारी बागवनी हत्या बाई अतीवाबाद ऊँच नीच का नाव धनानता कायरता, धराव्टीवता स्वायपरता बहेज दानव क्रमांन्यता समाज में नितक समाब सादि बु ।इवा इसने प्रवस रूप में स्थाप्त हैं कि इससे ताम पाना दहा कटिन है। साम पडा निसाव्यक्ति भी बुढि पर ताला देकर बैठा है सीम अपने कीती के द्वारा दुर्व का निवारण न करके तीचों सौर जडस्व में सक नोष्ट्र रहा है। वर्षे ब्राद् धीर जानि वाद का रोग समाज में बढ़ रहा है आय समाय के पास इसका उपचार है। सर-कार ने विरियम हरियम, बादिवासी सामाविक क्षेत्र में सामृहिक कार्य किया पुषक् वर्ष व वाति सदी करशे हैं विक्रका

समाजान मुख कर्मानुसार धार्यसमाज के पास ही है। स्त्री जाति और बूचको 🕏 उत्बाम के सिए धार्यसमाज के पास धनेक कार्यक्रम हैं। युवक धौर युवती (स्त्री पुरुष) दहेज धादि समाज के कनक का निवारण कर सकते हैं। प्रायसमाथ के गुक्कल व कन्या युक्कुल इस विधा में धाव भी पहल कर सकते हैं भीर वाति-पाति, ऊपनीच धमीर-मरीव की वीवारी को समाव से मिटा सकते हैं। पशु हुत्का रुक्तवाकर नी भावि पशुभी का सवर्द्धन कर समाय में प्रथमित शराब अच्छे चाम बादि स्थापक हानिकारक वस्तुवी का प्रयोग कम होकर घन्न की समस्या का समाधान भी हो सकता है । नैतिक शिका बार्यसमाध की धरोहर है जिसके विना व्यक्ति व्यक्ति नहीं। परिवार परिवार नहीं समाज समाज नहीं और राष्ट्र राष्ट्रं नहीं। बाज हिन्दी की बीर उपेका ड्डोकर सरकारी व गैर सरकारी कार्यक्रमो में बसेनी का प्रभाव वढ रहा है। इस वातक प्रवृत्ति का निवारण भी समाज व राष्ट्र हित ने धावस्थक है। बार्य पूर्वी को व्यक्तियत रूप से बदि वे राजनीति में स्वच्छता चाहते हैं तो राजनीति में स्रविकता से प्रवेश कर नैतिक मुन्यों की पुन स्वापना पर बन देना ही होना क्वोंकि पहले वर्गसे नीति और नीति से राज वसाकरते वे । बाज राज से नीति और नीति से थम चस रहा है। स्वामी दयानन्द बुराइयों को हटाने के लिए इट रहे, सचे नहीं। हम सबने समें दद न रहे इसमिए उपलब्धि दूर सबी है।

वास्तव मे शांक हमें इस बात पर बस्भीरता से विचार करना होगा कि हम भारतीय समाज के धन्तनत के बस हिन्दू समाज को ही लेते हैं सथवा इसके यन्त नत-जैन समाज बीख समाज सिन्धी समाज सिक समाज मुख्यमान समाज ईसाई समाज चादि विजिन्न सम जो का जी समावेश करते हैं क्यों कि राष्ट्र के ये विविध पुद्रक धाव फिर विपरीत निवाधी मे भागे वा रहे 🖁 । इसलिए प्रायसमाध के इस क्षेत्रे नियम की व्यावहारिकता का पूनमृत्याकन समाज के पूनर्जायण्या मे कहा तक वही सिंद हो सकता है निचार स्तीय है कि ससार का उपकार करना इस समाच का मुक्य उद्देश्य है प्रकृति बारीरिक बारिनक और सामाजिक बन्मति करना ।"

सत उपमुक्त विवेचन के प्रापार पर कक्षा जा सकता है कि भारतीय समाज के ही नहीं धापितु मानव समाज के जागरण में बार्यसमाज का महान् योगदान रहा है। साथ के बदसते परि-वेख गुतो उसकी भीर भी महती बाय-ब्यवर्ती है बार्वर्गनात्र मान्य समाय की ज वृति के कार्य में सबा ही उचत रहा है—'यनर्भव विच्छत बायत प्राप्य बराज्यिकोचत सर्वात् समुख्य वनी सही कप में मनुष्य बनी, पुरुष बनी--इठी, वानो धौर श्रेष्टता को प्राप्त करो।' नह उक्के अश्तेम बबाज के सिए दिन्ह क्षेत्र स्ट्री

महारासा प्रताप का जन्म सन् १५४० 'ई में हुबा बा। वे महाराजा उवयसिंह के **एबेर्ड पूत्र थे । उनकी खिशा-बीका मेनाड** राजवश परम्पराके धनुकृत हुई थी। **श**स्त्र संस्त्र से**ना संचान**न मृगवा तदा राज काम प्रमम्ब की कुशसता उन्होने बाल्यन न सी पूर्ण रूप से प्राप्त कर सी थी। राजा उदयसिंह धपने कनिष्ठ पुत्र जनमल को बहुत प्यार करते ने। छन्द्री को स ना उत्तराधिकारी घोषित करने का उन्होंने निरुचय कर शिया। प्रतार पित् भक्त थे, उन्होंने पिता के निर्णय का सनिक भी विरोध नहीं किया। प्रताप को बाल्य नाल में सदा यही बात बाटकती रहती वी कि भारत भूमि विदे क्रियो की दासता की हवकड़ी भीर देवी में पड़ी हुई है। वे स्वदेश की धाजाद

किशोरमञ्च-

प्रणवीर बालक प्रताप

प्रस्तोता-बलजोत शास्त्री

कराने की बोधना में चिन्तनशील रहते है। उनके माला मालीह के रास स्रवास्त्र राज बातक प्रताप की गीठ पर सदा हाय खाते है। उनहें आवका वी कि ऐसा स ही कि प्रताप प्रस्त पुर ने वक्षणती के शिकार हो बातें। प्रताप बड साहती बालक है। स्वतन्त्रता धीर शीरता काश स्वतन्त्रता धीर शीरता कशी बालक प्रताप चीर है। कशी कशी बालक प्रताप चीर ही गीठ पर से स्तरकर वडी शदा धीर खादर से महा-राणा कुम्मा के विश्वस स्तम्भ की परिक्रमा कर तथा नेवाड की पतित्र पृत्ति सश्तक पर समाकर वहां करते थे कि वैने वीर सत्राणी का दुःव पान किया है। मेरे रस्त में महाराखा सींगा का सोन प्रशाहित है। चिराडि के विश्वस स्तम्भ । मैं गुनसे स्तन् तथा और सातृ पूर्ति मंत्रिक का खायस नेकर कहता ह विश्वास दिलाता ह कि

तुम सदा जन्नत भीर सिसोदिया नीरव कै विजय प्रतीक बने रहोगे। शत्रु तुम्हें अपने स्पन्न से मेरे रहते अपवित्र नही कर सकते। वालक प्रताप के सामने सदा रालासाँगा का बादशंग्हता था। वे प्राय अद्धानलि समन्ति करते समय कहा करते थे कि मैं महाराचा माना के अधूरे कार्यको प्रवश्य पूरा करूना। उनके इस सकल्प के सामने सकतर जैसे सम्राट्को भी भूकना पढा । प्रश्विश प्रताप ने सारा जीवन युद्ध किया पर शत्रु के सामने भुके नहीं देश के बन्धनमुक्ति का बत लिया था। जिसकी मृत्यु पर प्रकवर जैसा शत्रुभी रोया बा। हम एसे बहादूरी के वशज हैं। भ्रपनी शातुभूमि के प्रति प्रताप के समान भाव रखने। हम सब यह बत लेते हैं।

तह्यामःच-

जवानो, जवानी यूं ही न गंवाना !

प० बुद्धदेव विद्यालकार

मुर्व और बुढिमान में बढा धन्तर होता है। मूर्क प्रच्छी बाद को भी बुरा बना लेता है भीर बुद्धिमान बुरी चीच को भी धम्छा बना लता है। काजल का धनर सही जमीन किया जाये तो साँको में डाला हुगा सुन्दरता को चार चौद सना देता है। सगर नलत इन से प्रयोग किया हुना वही काजस इथर उचर सब जावे तो बच्छी सूरत को भी महा बना देता है। एक द्विमान पुरुष ने साम पर वदी हुई देनवी को देखा, उसने बनुसव किया कि वो पानी जो पहल पुपवाप वा भाग बनकर कितना जबरदस्त बन वया है विसने डक्कन को बक्रेस कर परे फैक दिवा है, दुढिमान ने इस गक्ति की सम्बाता बीर इजिन तैयार कर सिया। मूर्ख ने रानी धीर बाब को इकट्ठा किया धीर हुक्का बनाइटर बुव्युट करता रहा धीर प्रपना समय धीर स्वास्थ्य सराव करता रहा। सनुष्य पर भी एक समय बाता है बन उसके बामने प्रपनी सनित क्षम्मासने का अवसर शासा है। यथानी मस्तानी बनकर बाती है जब वह जनता है तो कमे मार कर वसता है। पूछी तो कहेगा, देखते नहीं बवानी का रही है। स्टीम पदा हो रही है। समझदार न इसे सुम्भासा और लाखों सोनो को पीसे लगा विद्या । केकिन मुखं वह कहता रहा ।

इस दिल के दुकड़े हमार हुए। कोई यहा विरा कोई वहां निरा।

श्रापनी नवानी का नाव कर नेता है, गीवकानी में ही सभवने का समय क्रिक्स है बेक्टिय प्राप्त का नीनवाल कीन

नास सुमारी नानका चड़ी रहे दिन रात । (लकिन नानक के पुत्रारी धाव सब से धांचक शराब पीते हैं।)

समिनमु को लाया पड़ी है, सब रोते हैं। सुमहा का दूरा हु ला है करणा स ते हैं। कहते हैं कि सुप्ता मचा कर रही हो, सुमहा में पड़ती हैं। कहती है कि मार्ह पुत्र मुक्ते वह कह रहे हो कि नवा कर रही हों? वेशा स्वान बेटा किला गया के से सबीर न होक तो स्था कर ? कुच्छा कहते हैं कि सुभाग तुवार कर तु समिय की मुनी है सौर त्या लीम्ब भी र की मार्गा है। बो मार्म का सबसे बड़ा कर्तन्य क्ये सौर भ्याव की रसा के निए सर मिटना है। हेस पुत्र ता सबर में गया है सौर तु रा रही है। सुप्रशा के हिए सा मा नाया है। सुसुका सेकूरा क्यक कठका है। कह है सो

खुमारी। पुत्र साथने सरापडा है और होग कायम रखे जाते हैं। यह हानत तब धाती है जब मनुष्य नाम का खुमारी मे राजास । ब्रह्मचारी बन । ब्रह्मचारी का मतलब है जो बहा में निवास करे धपने सत को बीय को सम्भाल कर न्छे। यह वीय **भ्र**सनी रसायन है ज्सते बढकर भीर कोई रसायन नहीं। श्राव्य तो लोग भसली रसायन को सोकार फिर इस्लेक्श न सम वाने लगते हैं। मूक्तताधीर किन का कहोगे। मात्र सुन्दरता के लिए सुर्थी मौर विपस्टिक लगाय जाते हैं। होठी भीर गानी पर युक्तीं भीर काली सगायी जाता है। इस रहस्य को भुक्ता निया है कि धनली स्वयूरकी और सामी होटी और गली पर कैसे बानी है। मास्रो साप को इस बात कारहस्य भी बतका वें। होठ बहुत कोमस हिस्सा होते हैं। वहा सून की मानी उमरती है। गरीर में सून हा धौर उसका दौराठीक हो तो होटो पर साली जुद व सुद का जाती है। शरीर म जन हो ग्वातरफ भ्यान नहीं दिया काला। नकती रव का बाह्य प्रदशन किया जाता है। यण्डा मला भारती हा कुछ देर पानी मे रहेतो लान का बीशा एक कर होठ मीले पड जाते हैं। ये सून के करिएसे हैं, घरे घपने सत को बीवें को कायम रख कर हो देखों कितना आगन्द आता है? ववाने ने तो काशिक नजा और फिर पश्चतावा सवा रहता है लेकिन इसे कावन रख कर देखी कितना झानन्द भायेगा।

य प कहेंने परिश्त भी क्यों तरका रहे हो। इसे काश्म रचने के लिए कोई रास्ता तो बकामी। रास्ता हुन नो झाप को बहुच्यारी बनना होगा और हमेगा प्रमूकी बाद रचनी होगी, कहा जाता है कि प्रमुणवन और प्रमुणनित तो बुदाये की भीव है। बाद रची समर बापये सभी की भावत न बनाई तो बुदाये में कुछ न होगा।

सावन का महीना है। आसो का टोकरा सामने पड़ा है। बनुष्य साम पूस कर बूटबियों को एक वाली में सवासवा कर रखरहा है। मैंने पूछा वे क्यो तजाई जा रही है 'कहने लगा जयवान की मेंट हाथी। घरे मीठा रस तो खैतान के किए। खब गरीर काम न रहेगा बाक भगवान की मार कराने। बचानी बेकार को तो तु- हो में मलवान हांच न सावेगा रख की तो तु- हो में मलवान हांच न सावेगा रख की तो तु- हो में मलवान हांच न सावेगा रख की स्वा जाता है कि प्रमु अबन क्या कर दिल तो नगता नहीं, लगेगा रहने मूख गैंदा करो। प्राप्त न न एक ही कानून है। भोजन ता ही सच्छा लवता है जब प्रमु हा नुव वे सुखे हुक भी मजा दत है। "रसारना है। जाता के मल न में जिस रही वे स्व हुन हो ने सावेगा है। सावेगा हो। सावेगा है। सावेगा है। सावेगा हो। सावेगा है। सावे

पहलामकत वह होता है जो दुखी हो। आप कहेने क्या हम दुली हो आयें? हा [!] सार कहोगे सच्छे उपदेश देने बैठे। बाता पिता जावित है घर में सब कुछ है किसी चीज की कमी नहीं काने को खुब मिलताहै डड पेलन हैं। दुस्ती क्यो हो ? इस पर भी दुली हो जाबो । बपने लिए नहीं दूसरों के दुस को ग्राना दुस समग्र को । शगर तुम्हारे पास कोई भूमा भागे तो पहला उसे विकासाथों। कोई दुवा है तो उसका दुव दूर करो । परोपकार करो। सब कुछ रसते हुए सेवा का बत बारता करो । सब से बडी ईस्वर की मक्ति यही है। किसी के काम बाकर तो देखो, कितना धानम्ब स्नाता है। दुनिया में जिल्लने दुःस भीर ऋगड हैं उनके तीन कारक हैं इनमें स एक तुम से सो। आव शिक्षाके रहस्य को लोगो ने भूका दिया 🖟 हमारे ऋषियों ने इसे सूब समक्षा वा। बो विद्यानियों को दुनिया के इन तीन प्रकार के दुस्तों को दूर करन के लिए तैवार करते थे। हुमारी वैदिक शिक्षा शुक्ते वैदय सक्ते क्षत्रिय भीर सक्ते बाह्मण पैदा करने के लिए होती थी, जो तीन प्रकार के दुस दूर करने के लिए तैयार किये वाते थे।

> पहलादुता समाव से धिताहोताहै। (तेष पृष्ठ ६ पर)

महर्षि दयानन्द के सपनों का भारत

विनोद कुमार

श्री लालमन आर्य निबन्ध प्रतियोगिता में पुरस्कृत निबन्ध

भागत बतुम्बरा अस्य प्राप्तला भी है ग्रीन बीर-बीर प्रतिकती भी। वा-व्यव बारत सन्त्रला को किसी सकट का मामना करना पढ़ा। धनानाम्बकार की मयाबद और पहुन खाया में भटकना पढ़ा। विदेशी प्राप्ताओं के प्रत्याचार की पीढ़ा सहसी पढ़ी ध्रवणा प्राप्तरिक हैय की घर्मन में मुन्यतान को बन्म विया विसका मा ने गग्री सन्त्रान को बन्म विया विसका करंग—"हुटदो का दमन, वर्म का दश्यान धीर सामुखी का परितास पढ़ा।"

सुष्टिका यह चिर घटल नियम है कि रात जिननी प्रथकारमय होती है, प्रभ त उत्तना ही प्रकाशमय । पराधीनना एव प्रज्ञान के जीवणान्धकार से भारतीयो के परित्राणार्वको ज्योति पुत्र व्यक्तिन्त सबत् १८८१ (१२ फरवरी १८२५ ई०) को जगदीव्यर ने भारत के गुजरात प्रान्त में मौरी जिने के टकारा ग्राम में करवन लाल जी जिवेदी के चर में भेडा वह स्वामी दवानन्द था । दवानन्द के बचान कानाम 'मूक्तकार चा। भारतीय पर-स्परामे शकर' या 'खिद का प्रवंहोता है--- 'कल्याएकारी । जीवन के प्रारम्य से ही इस महापुरुत का कार्य 'बहुजन-हिताय', अब्दुबनमुक्तः व हो नया। यत उनका कर्मभी नाम को सार्थंक कर बया। वस्तर ने दयानन्द का जीवन भवभूति के इस न बन को सायक करता है --

> बच्चावपि कठोरास्ति मृदूषि कृतुवावपि । सोकोस्तरासां चेतासि को विद्यातुमहति ॥

स्वामी दयानन्द का जीवन एक ऐसी बहुप्रतिभाका बनी है, बहा बहु वेदो का प्रकाण्ड पबित है, सास्त्री का उद्गाता है, वहावह देश की निर्धनताको देखकर रो पडता है। दयानन्द के हृदय में विश्व-थान्ति के लिए ठीस रचनात्मक पुरोवम की रूप्ट प्राभा मिनती है। जैसा कि स्वामी की ने स्वय कहा है - "सर्वसस्य का प्रचार कर सब को एकमत में कराके, द्वेप चुडाकर परस्पर में बढ प्रीतियुक्त करा है, सब को सुख लाग पहुँचाने के लिए मेरा प्रवल भीर भनिप्राय है।" भपने विचारी की साकार कप देने के लिए स्वामी बवानन्द ने १८७५ में बार्यसमाज की स्थापना की । स्वामी जी का विचार er -"One God, One religion and One world 'यहा पर एक ईववर से ताल्पर्य "One distinction and One God" से है। एक वर्ग से अभिप्राय एक आवार सहिता' से है। एक विश्व का वर्ष ' एक परिवार" से है।

नवमारत के स्वप्त-द्रष्टा के रूप मे महर्षि दयानस्य ने एक शताब्दी पुर्व ही एक ऐसे भव्य भारत का वित्र उपस्थित किया जो सोकतात्रिक होने के साथ-साथ समाज में फैली विभिन्न कुरीतियों से रहित था। उन्होंने युव की वारा की बढलने का प्रयत्न किया। स्वामी बी भारत को एक धादर्श देख के रूप में देखना बाहते थे। उनके भारत में कुरीतियों का कोई स्थान नहीं था । सर्वत्र प्रेम, सहयोग भौर बन्ब्स्य या। स्थामी जी के मनुसार-"प्रत्येक व्यक्ति को सपने गुलो के सनुसार ही कार्य करना चाहिए । ऐसा होने से देश जन्मति के प्रचापर प्रयूक्तर होगा और देश का वासन सरसता पूर्वक चलेगा।" स्वामी जी च'हते में कि भारत विस्व के समझ एक नमुना बने, वे भारत को इस रूप का बाहते थे। जैसा कि 'विष्णु पुराण २/३ में कहा बया है -

> पायित्त देवा कित धीनकानि बन्धास्तु ते बारतानुनिमाये। स्वर्गाच्यानिस्यकार्यमुते स्वर्गाच्यानिस्यकृते स्वर्गाम्यक्ति कृत्य कुरस्थात्।। सामानि नेतन् क्य वर वितीने स्वर्गामे कर्माणि देश्वाचनम्। प्रास्थानित क्या कृत ते मञ्जूष्या दे बारते निज्ञा विवाहीता।।

न्वामी व्यानन्द का विश्वास ना कि यदि देश से बढ रही नास्ति ता, धर्मीव- कर अपन्ति होता अपनित से प्रान्ति से प्रान्त

दबानन्य सरस्वती व्यक्ति व्यक्ति के बीच की चार्र को बेचना नही चाहते थे। उन्होंने बडी वची सामाविक सान्यताथे के बिलाफ ऐसे समय वे सावाच उन्हों के बिलाफ ऐसे समय के सावाच उन्हों बात प्री विकट सान्यताओं का सबस्व करता था। बाति वर्ण व्यवस्था ने मारत मे ऐसी फूट का बीबारीगण विधा विवासे प्रारतवासी एक दूवरे को बिदेव की बिटेट से देखने करे। मानव पूल्यों की करीटी जन्म बाति गत व्यवस्था की करादी हटकर विद्युद्ध मानबीय स्तर पर ऋषि दवानन्व की वैचारिक कामित से उमरकर सामने प्रायी।

भारतीय समाज ने प्रसुती के साम किए जाने नाने दुर्ज्यहार ने ताबित होकर प्रसुत और दूर विवसंपुत्त होने ने ने । वह जस समस की बात है जन वर्ग के मानने ने दुर्गीकी भी तर्क एक सीजिया से सनस हटकर पाचरण करते ने । सामाजिक स्थानका के इत संकीत सामाजिक होकर होकर महर्षि स्थानका ने मर्मान्तक होकर एक स्थान पर कहा ना—

"बहुव्यवहार तो झार्यों के लिए गरता व्यवस्था वन गई है। देखे इस बाकिन से इसका कब पीछा खूटता है।"

स्वामी दयानन्द जाति-वांति के वेद से प्रस्तत्त क्षु-क दे। बाति पासि के इस व्याचात को हटाने हेतु धन्तर्जाताम विवाद का चौका देना साम धाराई महाँव वया नन्द ने पराधीन मारत में कडिनत आर-तीय समाज के सामनं परस्थित किया। धार्मेयनाज ने ६स धोर किमात्मक कटम उठाया नैकिन प्रभी धर्मकाकृत परिणाम के लिए बोर धर्मिक कमटना से काम करन की सायवसकता है।

दयान-द सरस्वता न सन्देश दिया कि शिक्षा मनुष्य की जीवनदायिनी है। जब तक सभी भारत के नर-नारी शिक्षित नहीं होने तब तक हम एक जुसहास बारत का साना नहीं देख सकते हैं। बास्तव में शिक्षा ही वह गुरा है जो किसी देश या राष्ट्र को उत्थान या प्रयति की और से जाता है। स्वामा भी ने नारी शिक्षा पर बहुत जोर दिया। स्वामी जी से पूर्व स्त्री ग्रीर सूत्री को शिक्षानहीं दी जाती थी। इससे स्वामी जी बदुत दू सी हुए और उन्होंने स्त्रिमों भीर खुदो को खिला दिये जाने का ग्रमियान बलाया । वहा सकराचार्य ने कल्याची को शिक्षित करने का विश्लेष किया, वही दूसरी झोर स्वामी वयानव्य ने स्त्री-शिक्षा का श्रीनयान चनाया ।

किसी भी समाज सबना राष्ट्र के सिए नारी को साचार सिला के कर में कहा जाए तो सस्युक्ति न होती, क्वोंकि नारी <u>में केस स</u>ो. क्वोंक्ट किसान सर्क

स्क्मदर्शी नायरिक प्रदान करती है। "परिवार ही मनुष्य की प्राथमिक पाठ-शासा है।" इस कथन को पूर्व रूप से उचित मानते हुए कहा जा सकता है कि विस देश की नारी सुशिक्षित वीराञ्चना तथा स्वतम विचारों की होनी, उस वेश के नामरिक भी सुश्चितित बीर तथा स्वतन विवारी वाले होंगे जो शिक्षा बच्चो को माता से प्राप्त होती हैं तथा सस्कार स्वायी रहते हैं। वह शिक्षा । व सस्कारी का स्थायित्व किसी सन्य व्यक्ति द्वारा नही दिया जा सकता प्रकृति माता को सस्कार धपने पुत्र में लोशी के माध्यम से सकामित करती हैं। वे संस्कार भ्रन्य किसी माध्यम से सक्रमित होने पर भी स्थायित्व को ब्राप्त नहीं कर सकते। इस तथ्य की पुष्टि "मदाससा" धारूयान मे सलकादि के कथानक से सभी को हो जाती है।

स्वामी दयानन्द का विश्वास वाकि "नारी का स्वान मानव समाज मे शस्यविक महत्त्वपूर्ण है । यदि उसकी ग्रवस्था उन्नत न हो तो सपूर्ण मानव जाति के सबीवति में पहुचने का भय है। नारी पर की साम्राज्ञी है तका घर एक स्मध्टि है। उसकी जन्मति एक समाज तथा प्रत्येक समाज की उन्नति से सपूरा देश की उन्नति सभव है। देश का शाकार रूपी नारी माता बन-कर पुक्ष का निर्माण करती हैं। उसके क्तंब्य की पूर्ति बादर्स सन्तान की वाननी बनकर सन्पूर्ण शासारिक रहस्यो को सन-क्राकर कर्मक्षेत्र ने समर्वकरने के जिए तैयार करके बाहर भेजने में निहित है। मात्-सूल विडीन बातक प्राय बाबारा, निष्कर्मण्य भीर भसपन ही बब्दिनोचर होते हैं। पश्नीके बिनापुदयकी प्रतिष्ठा नगच्य है। नारी जैसा घर का निर्माण करेगी वैसा ही सम्पूर्ण समाज का डाचा बदल आवेगा।"

जिस देश में नारी की विज्ञा का बहु के देशवासियों है रा क्यान नहीं दिया जाता उस देश का प्रविच्य संक्तारम्य कहु। बा सकता है। सम्बद्ध संक्तारम्य कहु। बा सकता है। सम्बद्ध स्वीतिष् पृत्रुचनते रमने उन देशवा ।" हुमार पूर्वज वैदिक सहित्य कि मार्गिय नहीं थे। धरा जन्होंने वैदिक साहित्य में नारी-विज्ञा के प्रति निर्मेश कर दिस्त सहित्य के स्वीत्य में नारी-विज्ञा के प्रति निर्मेश कर दिस्त माहित्य में

बह लानी द्यानन ने बुख तथ्य पर तुक्त विष्ट से विचार किया कि 'किसी भी देश की प्रतिक होना है, ''तो रासानी वारियों का निर्मित्त होना है, ''तो रासानी वो ने नारी जिला का विश्वान कलावा। स्वाधी बी ने वर्ष ने मिल्ड एम वीतिक प्रवाधी वार्ष के प्रतिक हैं के स्वाधी की भारत तथा के ते वर्ष वे के पित शिक्षा कर वीति देश वह विकास विश्व व्यवे सत्तामी का उपनवण करने यहाँ पूर्ण निवास करने वाले हों, वहां वह वे स्वाधा कर विश्व करने वाले हों, वहां वहने स्वाधा स्वाधीन करने वाले हों, वहां वहने में बब्बों को तावन करने के सम्बन्ध में सम्बन्ध सम्बन्ध कर एक नये प्रध्याय स्वामी बी ने तावन के पक्ष में प्रपत्न विचार का श्रीवर्शिक्ष किया। चर्चले पूर्व हिस्सुधी प्रति किये धीर कहा— को लाक्ष और त्रास से ईसाई और

सामृतं पारिएमिक्नंतित गुरबो म विवोसितं । लालनाश्रविक्षो दोवा-स्ताबनाश्रविक्षो गुला ॥

धर्मात्—'वो माता-मिता भीर धानार्थं क्लान भीर तिष्यो है ताइन करते हैं वे मातो धरनी छनतान भीर क्लियों को धरने हान से धनुवपान करा रहे हैं। किन्तु वो छनताने तथा जिन्दों का साइन करते हैं वे धाने छनतानो तथा कियों को बिच पिलाकर नष्ट-अध्यक्त वेते हैं क्लोंकि लाइन से पुरा कुक होते

स्वामी बयालग्द का विषवाड या कि
न्यित को मनबूद बनाने हेंद्र क्या क्यांक को सर्वेत्रण स्वय्यन स्वाने हेंद्र यह पिका मुंद्री होती चाहित्र । हे मानते वे कि सह-चिता से चारित्रिक पतन होता है। उन्होंने "मान्यार्थकराख" के ततीय समुस्ताख" के कहा है— सहको को का ककों की तथा कहादियों को कहादियों की पाठवाला के भूत हैं। लंडके तथा कहादियों की पाठ-खालाएँ एक दुसदे से कम से कम से होते सही होते पर हो।' मनु ने तो बहा तक कहा है कि—

- श्त्रीणा प्रेमकालस्ममुख्यात परस्य च।'

सात स्वामी भी की लिट में विका-काल में नारी को स्थान बीर तपस्था की मूर्ति बनकर ही शिखा बहुव का साहिए तमें कह एकार्याचल से मानार्यक कर सकते हैं बीर तदकर एस्ट्रेफ लिए सुरोबर करनात प्रदान कर तम्झे हैं। सुरोबर करनात प्रदान कर तम्झी है। सुरोबर गंगा प्रदान कर तम्झी है। सुरोबर गंगा प्रदान कर तम्झी है। सुरोबर प्रदान प्रदान कर कर्त हैं। सुरोबर प्रदान कर तम्झी है। सुरोबर प्रदान कर ति हैं। सुरोबर प्रदान कर ति हैं। सुरोबर प्रदान कर तहें हैं। इसी सुरोबर सुरोबर प्रदान कर तहें हैं।

'यनेवां वाच करवासी-प्रावशित करेग्य । बहारावन्यान्यां वृहाय चार्याय य स्वाय चारसाय ॥ बहायर्थेस कम्बा युवाल किन्दरे परित्य ।

वमं के लेन वे भी स्वाबी जो एक महान जातिकारी के कर ने स्वविरत हुए। वातिकारी वे परतज्ञता का बोक बहन करते हुए बारतीय वसता वर्ष का बारत्विक कर विस्मृत कर बैठी थी। वर्ष के नाम पर बहरूब धन्यविद्यात प्रचित्त ने धीर पायक के नो बालानी ने वर्ष के स्वादित स्वकृत के जब कीट के बोक्स स्वस्तुविक स्वकृत जो जब कीट के बोक्स स्वस्तुविक स्वकृत जो जब कीट के बोक्स स्वस्तुविक स्वकृत जो जब कीट के बोक्स साम्बोनन प्रारम्ब कर एक नये घष्णाय का सीयशेष किया। चयसे पूर्व हिम्बुयो को सात्रम सीर नात से ईसाई से मुस्तिम बनावा जा रहा था। हिन्दू धपने तथ बारने से बय किसी भी सम्य चर्याय-सम्बो को स्वष्मं में स्वाहित करना पाप समझते थे, परम्बु स्वामी सी में ईसाइमों और मुस्तमानों को हिन्दू वर्ष में प्रवेश के के लिए प्रोत्साहित कर निवेशी धनिस्तो का प्रतीकार किया।

स्वामी जी ने जनतावारण को वत्तेव दिवा कि हम तब मारतवाची भाई-मांडे हैं। हमे जपने नीच से ईप्पोंडे के निकास देगा जाहिए। उन्होंने कुटुनकम् ' की उपित को खाकार कर देने के निए कहा। 'वें' के स्थान पर 'हम' की मानना पर जोर दिवा। प्रत्येक व्यक्ति परोपकार और स्थान की वानना होनी पाहिए। स्थानी स्थानन के जपनों ने —

'प्रत्येक को धवनी ही उन्मति है। वन्नुष्ट व रहना चाहिए, किन्तु सब की धन्मिन में कपनी उन्मति समस्त्री चाहिए।' उहाने धामे कहा—'खन मनुष्यो से सामाजिक बर्वहित्यक्ती नियम पात्र के परता रहेना चाहिए और प्रत्येक हित-कारी नियम में सह स्वतन्त्र हो।'

सदा से ही शिवा का प्रयोजन रहा है 'धारमा विदि अवर्गत करने को बानो । शिवा का गुन्य उहे' यहे - 'धीकन में उच्चमन सरकारों का प्रारोज ।' शिवा का मुख्य प्रयोजन मानद को पख्ता के सदर से उपर उठाकर सरकारी और का निर्माण करना है। बार . का बृदय से बुदवा के लिए हो होगी चाहिए। केवल मोगों की समुद्धि या केदल उदर पोत्य हेतु यशक्योकन होने से खिला की सावकता नहीं हैं। राज्यु वस हृदय खुद स्थार निम्म हो, तभी जीवनोहरण की गृति होती है। वेद कहते हैं—

तप से ही देवतामी ने मृत्यु पर विजय पाई। हमारी शिका प्रणाली वे धाने वाले कब्ट को सहन करना ही सप है तथा इसी तप से शिष्य शारीरिक मानसिक तथा प्रात्मिक विश्व के पथ पर श्रप्रसर होता है। महर्षि दयानन्द कं धनु सार शिक्षा का उद्देश्य ' कारीरिक मान सक तथा बारिमक शक्तियों का विकसित किया जाना है। ' वे शिक्षा को राज्य का कराज्य मानते हैं। स्थायी की के बनुसार शिका। प्यति में केवन बाध्यारिमकता का सक्य ही नहीं है बुरन् सीकिक विश्वामी (विज्ञान कवा सवा कीवाल) में निष्मात प्रवीवसा प्राप्त किये बाने का निर्देश भी है। स्वामी भी का मत है कि शिक्षा सर्वप्रथम स्ववेत्री वावा में ही वी वानी वाहिए।

स्वामी बवानन्त ने विविध्वाधी से पूर्ण इस देश में एक राष्ट्र, एक माना, एक समाज तथा एक देश्वर का ऐसा वितृत बचाया, विस्ते भारतीय समाज स्वामी दयानन्द ने यह भी बताया कि रावा पननी, स्वतास्त्र कीन व्यक्ति होने व्यक्तिए। इस पर भी प्रकार हाता है। स्वामी बी के सनुसा "राजा को निव्यक्त व्यावकर्ता राजकार में निवृत्य सरवारी, बुढिसान्, यमें पर भीर काम की सिद्धि करने बाला तजोमय जीतियास्त्र के सनुसार सासन बनान जाता होना चाहिए।

> मश्री में निम्न गुण होने चाहिए— ' मौलान साल्प्रविद पुरोल्लब्बलस्थान जुलोदगरान । सचिवान्सप्न चाच्दी वा प्रकृषील परीक्षितान् ॥

धर्गात् स्वरेग में उत्पन्न, देदों को बानने वाला, शूरभीर, विश्वका लक्ष्य निष्कल न हां कुलीन घण्छ प्रकार सुप-रीक्षित साल वा झाठ, वार्मिक, बतुर सचिव या मजी हो।

नौकर के गुरा—
तेवासर्व नियुक्त्वीत श्रूरान्
दकान् कुलोवयतान् ।
बुजीत् करकम्बॅस्ते सीरनन्तर्निवेशने॥'
दूत के गुरा-—

"हुत चेत प्रकुरति सर्वसारतिकारदम् । इतिताकारचेत्रका सुचि वस कुलोदगतम् ।। सनुस्ता सुविद्यस्त सुविद्यस्त स्कृतिकान् देशकासचित् । वृषु-। बीत सीर्वाम्मी दुत्तो राज्ञ प्रजन्मते ॥' समापिक गृहा-

भाषित के गुरा —
'तै सार्व विश्वस्थितस्य
सामान्य समिविश्वहम् ।
स्वान समुदय पुरित
सम्बद्धसम्मानिक ॥"

तत्प्रकाद स्वामं दवानक ने वह भी बतावा कि उनके स्वांत्रम वारत के पान समात्म, दूरा और समास्वयों को क्वा समि-काद देने पाहिए। सच्चा को सर्वेदा राज-कार्य ने समान्य रहुना चाहिए और उसे राजकर्थ को विश्वजे नहीं नेना चाहिए। स्वाम को प्रवास ने साथ सर्वेदा सन्तानवत् स्ववहार करना चाहिए।

> ग्रमात्य के प्रचिकार---"ग्रमात्ये वण्ड ग्रामलो

नृपती कोक्षराब्द्रे च बूते सम्बिचिषपंत्री ॥ दूत के प्रविकार— "बूत एवं हि सम्बत्ते विनायवेष च सहतान्। बूतस्तकुद्दे कर्म निकासे येन वा न वा॥

राज्य कर के सम्बन्ध में स्वामी जी ने जिल्ला है—

' वयात्माऽत्यमदःत्याच वार्वोकोवस्तवटयदा । तथाऽत्याऽत्यो प्रतीतव्यो राष्ट्राज्ञाज्ञाविक कर ॥"

इसके खाव-खाम स्वामी जी ने यह भी बताया कि देश का खाखन किस प्रकार का होना चाहिए। इस सम्बन्ध में स्वामी दयानस्य ने यह कहा है कि—

"धानस्याभित्तिं कुट्यां-इत्रधानपति तथा । विवातीश ततेश च तहुक्तपतिनेत च ॥ प्राथनीयास्त्रपुत्तनाम् प्राप्तिक तान्त्रं स्वयम । कतेषु चानस्त्रेशस्य स्रोती विवातीश्चितम् ॥ विवातीशस्त्र तत्वादं तिवासी

्षानाधातस्य त्रुत्यस्य स्वयम् तेवा बात्रमाणि क्षेत्र हि। पृथ्यसम्बद्धिः चैत्र हि। गात्रोऽस्य स्वयम् निगम्बस्तानि पत्र्येवतन्त्रितः ॥ नगरे नगरे चैत्र कुर्यात् स्वयम्बस्त्रम् ॥ उच्चे स्थान खोरस्य

प्रका से कर तेने का प्रकार --'यञ्चासवमाग आवेषी
राज्ञा पशुहिरच्यवी ।
बान्यानामध्यमी माग बच्छो द्वावस्थ एव वा ॥

स्वामी दयानन्द ने देश के कमचा-रियो की चुनाव पदित का भी तरीका बताया है। राजा बनने का जून बाचार श्रजाका प्रिय होना है। राजाके पद पर सर्वेव अत्रिय रूप के व्यक्ति को ही चवन किया जाना चाहिए। बाह्यम वैश्य ग्रीर शूद्र राज्य में प्रपने गुएों के धहुबार जन्म कार्यकर सकते हैं। राजा कैंनियका प्रत्याकी होने के लिए धावश्यक है कि वह उस राज्य का निवासी होना चाहिए। राजा का जुनाव या तो देश की सम्पूर्ण जनता द्वारा प्रत्यक्ष रूप से होना चाहिए। (भगवा) कुछ महत्त्वपूर्ण न्यक्तियो के द्वारा राजा का भुनाव किया जाना चाहिए। सर्वश्रेष्ठ स्थान पर चुने जाने पर सम्बग्ध्य होने पर भी वह वनता का प्रवम सेवक है जनता की सेवा पर क्षी उसकी दिवति निर्मर है। वह प्रजाकी इच्छामी के पीड़े। चलने वासाहै। प्रजाकी इच्छा के विपरीत उसकी कोई इन्छा नहीं, प्रवा व्यासपीठ---

उपनिषत् कथा-माला-४

सच्ची पूजा

प्रवचनकर्ता-वीतराग स्वामी सर्वदानन्द महाराज

(गताक से आगे)

सहस्रो मीलो तक भन्धकार **छा जाता** है। यह किसकी माया है? फिर कौन इस धन्धेरे को दूर कर देता है [?] रात को हम सब सोये हुए है बेसुच पड हए हैं सोते हुए सब का दर्जा बराबर है। क्या घनी क्या निर्धन ? सब एक ही समान हैं। यह किसकी महिमा है जो जीबीस वण्टे मे एक बार सबको समान कर देती है ? यह क्लोरोफाम किसने सुवाया या[?] यह किस चतुर डाक्टर का काम है? जब कोई सामारण डाक्टर क्लोरोफार्म सुधाता है क्षी उसकी खुमारी का प्रभाव तीन दिन तक रहता है किन्तु इसका प्रभाव ऐसा नहीं। बाप सोकर उठते ही बाग्ने बापको प्रफुल्मित पाते हैं। यदि स्रोकर न उठें तो मरने भीर सोने में भातर ही क्या है? परन्तु ब्रव पाप ग्रक्तिक हो रहे हैं अविष्य मे एसा हा होना झाप मोयने पर तुडठ न

मृत्यूनि सन्दह है परन्तुञ्वर होना भावस्थक नहीं । झाप तनिक देखें तो सही । महाराज रामनस्द जे हुए है। बनवास से श्रीताजाबीरलक्सणा उनके साथ थे। चौटह वर्ष बनो मे रहे। सारी रामायण पढ जाडए कही एक स्थान पर भी यह नहीं मिलता कि अमुक स्वान पर भी राम इस्रसिए ठहरे कि उन्हेज्बर झा गयाया श्रमवारागने द्यादवामा वा। पाण्डव भी बारह वर्ष तक बनो में मटकते रहे। सब काम भनेक कष्ट उठाकर किये। सारा महाभारत पढ बाधो पशन्तु यह कही नहीं मिलेवाकि प्रमुकस्थान पर मीयेन को पेचिश हो नई वी इसलिए उन्हें वहा ठह-रनापडा। कभी वन में किसी मीडड भेडिये, बजुली गाय भावि को भी वीमार होते सुना है ? क्या बन में कही बनैले पक्षमें के लिए बरकारी इस्पताल चुले है ? कही नहीं। चक्क्की जानवर उस समय तक मही लाते जब तक उनका पेट न मामे । वे प्रकृति के घषीन होकर रहते है। परम्तु तुम नो क्या, तुम्हारे जानवर गाय, मैंस घोड भावि भी बीमार हो बाते है। क्योंकि उनका मनुष्य के साथ सम्बन्ध हो नवा है। प्राप भी भनियमित हो नये धीर उन्हें भी भनियमित बना दिया।

प्रकृतिने मनुष्य को रोबी होने के लिए नही बनावा । प्रकृति ने पहले अस्य _{वा}नु बनाये । पसु, कृकावि सब पहने बनाए

और सब से पीछे मनुष्य को बनाया। प्रकृतिका परीक्षण मनुष्य पर जाकर समाप्त हो गया। मनुष्य को प्रकृति ने बडासुन्दर बनाया यह बडा ही रूपवान बनाया। दूर दूर से चनकर इसके पास बाते थे। तपोवन में महात्मा रहते वे, धानन्द करते ये पास ही हिरए। का बच्चा निर्भंग होकर पानी पीतायाः। प्रकृति ने मनुष्य को प्यास बुम्हाने के लिए वस धौर भूख मिटाने के लिए चावल नेहू सादि बनस्पति प्रदान की । श्वास लेने के लिए पवन नेजी। ज्वारको तो प्रकृति ने नहीं नेजा। ज्वर को तो तुम स्वय बनाते हो । प्रकृति ने न कूनैन बनाई न ज्वर।

धाजकस स्त्रियो का स्वास्त्य प्राय विगडा रहता है । पहली स्त्रियों को जिन्होंने देखा है, वे बानते हैं कि पचास साठ वर्षकी झायुने भी वे कितने काम करती वीं।परन्तु ग्राजकल की जवान त्रिया तनिक साकाम किया नहीं वस थीमार हो **वर्ष**। एक स्त्री भी शाह्बरे चे ञाहबहापुर का रही थी। गाडी पर सवार यी। स्टेशन पर गूबरों के लडकों ने देखा। उनका काम वाकि वाडी में भूसकर बात्रियों को लूट लेते थे। उस गाडी में वह सकेली बैठी हुई बी। एक लडका उसमे चढने लगा। उसने कहा पीछे हट जा। वहन हटा भीर सामे भा गया। पिर उसने कहा, 'उत्तर जा । वह न उतरा। उस स्त्री न पक्डकर उसे वाडी में बीच जिया और दो वप्यक मगाये। ध्रमने स्टेशन पर उसे पुलिस के हवासे कर दिवा और साथ ही यह भी कडू दिया कि मैंने इसे पर्याप्त राष्ट्र दे दिया है। शब इस श्लोक की ।

बात तो यह है। माता धण्ली होची तो सन्तान मी मण्डी होगी। उसे कोई भी महर्षि के सपनो का भारत " है।' बीमारी न होगी। वह क्यों हुचा ⁹ क्या सब मुख मूख से हो बबा है ? नहीं। बंदि धाप उन पहली वालों को फिर जाना बाहते हैं तो पहले मानशिक स्वास्थ्य वा मन की तन्द्रवस्ती मानी चाडिए। बनुव्यों को चाहिए कि बुरी वार्तों का चिन्तव न करें। गवयुवक निरव बुरी-बुरी किन्ता करते हैं। राज्यकमा (तपेदिक) के रोब बम बाते हैं। ये नयों दिन रात विश्ता मे क्से रहते हैं [?] नियमपूर्वक न **काते हैं**, न पीते हैं। ईश्वर की छपासना जी खोड़ बेखे हैं। फिर रोगी न हों थी क्या हों ?

चिन्ता भीर जिला ने बहुत क्य अवर

है। परम्तु चिन्ता बडी ही कठोर है। चितातो वर मनुष्य भर जाता है तभी उसको बलाती है परम्तु विन्ता की अग्नि जीते जी ही जला देती है। इससिए द्यात्मिक क्या उत्पन्न करने के लिए नान-सिक शक्ति प्राप्त करने की सावस्थकता है बौर सिवाय परमात्मा की उपासना के किसी दूसरे उपाय से वह शक्ति प्रप्त नहीं हो सकती। प्रातः कास उठकर स्नान बादि से निक्टकर प्रशुका स्थान करो[ा] 'त्रमी तुम्हारी माया धपरम्रार है। श्रान्थकार को दूर करने के निए सूब के द्वारा प्रकाण किया । बस तुमसे इन तुम्हे ही मायते हैं। यह नहीं कि उपासना के सिए बैठे भीर मागने सने बन, दौसत पुत्र भादि । इन सूर्वे विभारों को अपने यन में स्थान न दो । यह तो वह झाप ही देना। उसकी उपासना करो भीर उससे उसी की मॉंको। उससे मायों कि हे प्रभों [।] सूने बस दो जिससे मैं जनहित ने काम कर । तुम्हारे वियोग से हम दूज पाते हैं। तुम्हारे समोग ने हम मोक्षाद को प्राप्त करते हैं। शतएव ऐसी कृपा करी कि तुम से हमारा वियोग कभी न हो।

मन्दिरों में पश्चिमास बजते हैं बलियां बसती हैं, क्या साभ ? दूसरी न इन विवयामों और विश्वयों से कितने काम लिये ? स्टैमनो पर जले जाको गाबी जन वनेगी तत वडियान - वेया । अन्वेरे से इञ्चन हु। इवर को बसी दिखाई जाएबी कि बसो। दुनिया तो मेरे माई [;] इस प्रकार बृद्धि से काम करती है। परल्यु तुम बुद्धि को तिसांजसि दे बैठे हो।

श्चानस्थकम परमारना एक है। एक के सामने मुकने से मनुष्य समाज में एकता

बादी है। वैसा किया वैश्वा फल पाया है हमें कोई नहीं सताता, मनुष्य सपनी सूर् कि से अपने आप ही सताया जाता है। एक ममुख्य या उसके घर के शामने एक बानव था। बांगन में उसकी दुवन्ती निर नई। वहाँ प्रत्येरा वा, कुछ दिकाई नहीं दिया । बाहर सडक पर लासटेन जब रही वी वहांबाकर दूँदने समा। किसी ने पुछा ' भाई क्या ढंढते हो ?' उत्तर विया "द्वन्नी निर गई है। 'फिर पूछा, कहा गिरी थी ? ' वह बोसा, घर के प्रावन में। उसने कहा तो वहां बाकर बुढो। 'इसने उत्तर दिया, 'वहाँ सी अन्वेरा है वहा नहीं निश सकती । इसी-तो मैं प्रकाश से दुढ रहा ह। 'तुम औ ऐसे ही भूने हुए हो। पहले सपन मन से इस मूल को निकालो और प्रपने दिल में दूसरों के लिए वर्ष पैदा करी फिर सक कुछ हो जायेगा।

-वाबी दयानन्द जी एक दार क**लवास** गए। वहाप्राप जहा ठहरे वे रात के १२ वजे उठकर व्ह्नाने लगे। एक ब्रह्म वारी ने पूछा स्वामी जी बाप एसा क्यों 🌭 रहे हैं ? 'स्मामी ने कहा 'दर्द है'। बह्य-कारी बोला पानी में नशक डाल देता हु, पीक्षीजिय दद सम्झाहो जाये**वा** । स्वामी जीने कहा यह वर्ष इस प्रकार दूर होने वासानहीं। मेरे तो विस वें वर्ड हो रहा है।' सतएव मेरे भाइयो ! बुनिया सो रही है। जानी का काम तो वह है-

सामने ग्रपने तस्सन्बर से समकाता है तुने दूरवीं नजदीक दिखलाती है इन्सादूर का।।

जब तक मेरे माई । आर्थजाति प्रमु को सच्ची पूजाको सूने हुए है जब तक बह सौटकर फिर पण्मेरवर के पास नहीं जाती तब तक रसकी बही दुर्गेति रहेगी। इस निए सबेरे उठी भीर उसके सामने हाव बोडकर प्राथमा, उपाक्षना करों। बवि तुम्हारे विस में वर्ष पैदा हो जाये और एक परमेक्बर को मानकर उसके शाने बिर मुका दो तो तुम्हारा तर प्रकृ दे क्ल्बास हो बाय । परमास्मा तुम्हें सुमति प्रदान करें।

(पृष्ठ ७ का क्षेप)

के सुख के व्यक्तिरिक्त राजा का कोई सन्ध सूच नहीं । स्थामी जी का वस है कि राजा को कभी भी स्वत्य नहीं रहने देना चाहिए। "शतपव ब्रह्मण" में कहा बमा

'वर्षि राजा तथा से स्वतम होना वी बत प्रचा को नष्ट कर देश, क्वोंकि सप्रति-बन्धित राजा प्रचा का नाशक होता है। वत किसी एक को राज्य में स्वतम नही रक्षा काहिए। वैदे बांसाहारी पक् किसी कुट वस् को सा वाते हैं। उसी प्रकार स्वतन रावा की त्रवा को बा बासा

उपर्वक्त विवरण से स्पष्ट है कि स्वामी दयानम्य के सपनों के भारत में नोकतांत्रिक खासन प्रसासी की स्वापना की नई है। उसमें एक जावा एक वर्स तथा एक राष्ट्र है । बहुत्व के स्थान पर एकाव है। स्वामी जी के भारत में कडियों कृरीतियों तथा अन्यविश्वासों का कोई स्थान नहीं है । सर्वत्र प्रेम, सहयोग एकता -और आतृत्व का वातप्रवरण है। परस्पर इंब्या-हेव नहीं है। स्वामी जी के भारत में सबकी जन्मति में ही प्रचनी कन्मति है। स्वाती की घारत को पूछ्रं रामशक्त बनाना चानुते हैं। उनका भारत नाववता-पूर्व द्वार वीदार्वपूर्व वर ।

गोहाटी (श्रसम) श्रार्य वीर दल प्रशिच्या शिविर सानन्द सम्पन

ब्रायं त्रीरो, शहीदो स्रौर महर्षि दयानन्द को कर्मक्षेत्र से श्रीरता स्रोर सेवा भाव जगाकर श्रद्धाजलि स्रपित करो -श्री हस टेलीववन से स्रायं वोरो के सनेक व्यायाजों की स्रवि

टलावजन स माय वारा क भनक व्यायामा का सारे ग्रसम में दिसाई जाएगी

बोहाटी, १८ बर्ग्स । धार्यसमाज बोहाटी के तस्वावधान धीर घरम धार्य व्यतिनिधि समा के सरक्षण में सार्वदेशिक भागे कीर दल को हाटी प्रशिक्षण कि^{र्}वर १ द अप्रैस से २ द अप्रैस नक ससमारोह सम्मल हुमा। शिविराध्यक्ष का उत्तर शाबित्व श्री प० शलवित्राक्ष र हस प्रमान-श्रवासक आयं बीर दल नई दिल्ली ने · किए। कीर दीक्षाम्स सावण जो विशिष्ट व्यतिथि के रूप में उन्होंने किया। समारोह की सब्दरशता एक मू० पू० एम० पी० ने की । ज्यायाम प्रशिक्षण का उत्तरवायित्व श्री इ ० सस्यवत सस्यम् गुरुकुल विसीड राजस्वान ने सम्भाता । कल्यामी के निश्वर का सरक्षण-सुधी म**बु** स्मृति कि है ने किया।

श्री इस ने ध"ने घोजस्वी दीक्षान्त श्राद्रण में ग्राम बीशे का ग्रावाहन करते हए उन्हें कम क्षेत्र में उतरने की सलाह बी जिससे युका सक्ति वरित्रोपासक बने। बेरी इ व्ट में महर्षि दवानन्त्र और देश के सहीदो को यहा सच्ची श्रद्धावनि होगी। द्यापने द्यामे वहा झाप भीरवपूर्ण इति-द्वास का निर्माण कर रहे हैं पूर्व से पश्चिम धीर उत्तर से दक्षिण तक भारत के अप्ये चय्ये पर बार को उत्तरवा येल्य सम्मामना है। ममबान राम ने दोनी भुजा उठाकर कहाबा निश्चिषर होन करौँ नहीं तो बाप बन्ही राम के दश ब होने के नाते उत्तरदायित्व सम्भाने । घसप प्रान्त, हिमालय बह्य पुत्र ने अपने घाचल मे किविरायोजन किय है। डा० नारायण शस घो३म्प्रकाश घानन्ट एवं की संखय कुमार जी के नाथ साद उनके परम सह-मो गिन्यारेनान मार्थ (दानती) भी घरण भी का अपूर्व सहयोग हम मे आत्मीबता का सुजन कर रहा है। मैं बाचा कर सकता हू कि बाव बीर बल बार्यसमाज के सरकाए में सारे घरना में बपनी महत्त्वपूर्ण प्रमिका का निर्वाह कर सकेता।

महत्त्वपूर्ण धृषिका का निर्माह कर सकेता। सम्मास गर से मानव करते हुए विद्वाल पू॰ पू॰ पूम॰ पो॰ ने कहा—सार्यकास के महान् मेकको मे सर्वेत मानवीचित स्पन्तार पोर सस्कारों को सनाने में जहरूव पूर्ण मृषिका का निर्माह किया है। मैं साप तोनों का साक्षारी हु कि सापने मुक्ते पुरासरित के नम्य मे बुलाकर उनके उत्तम मिस्स्य हेतु प्रविक्रण सिक्रण का सायोजन किया है। यह कार्य महानि स्पानन के मिस्स का मानव हित में रच-

ध में बीरों के प्रविक्षण काल में सीते का मुस्तमाष्ट्री प्रवर्ग तुम्न कुष्ठं करिने के साथ कराहर गया। ससस सरकार के टेलीबीजन विजाग ने स्थायान के निम्म निम्म कीशानों की किस्स ती जो साथाहिक कार्यकारी में समस्त सरका में दिखारी नारानी।

भी हुत की व यं वोर दल के वोरव पूर्व इतिहास के सदय में एक बातर देशो-विजय वालों ने ली । सक्ष्य में धाय वोरों एक धार्य वोरावनायों के कोशल पूर्ण सम्बाधना और व्यायान प्रवचनों का सर्वेष्ठाकारण गर व्यापन प्रवचनों का सर्वेष्ठाकारण गर व्यापन प्रवचन के निक्ता प्रविच्या के प्रवान पर व्यापन प्रवान तवालक को से धनुरोध किया और व्यायान दिलक को सलबदन सत्यन् लहित केतकी की कुष्यानायों के साथ वस्थोन हार से धाप लोगों का मान मीना स्वास्त किया। जुड़ स्मृत

संबंदराता

नई शिक्षा नीति के संबंध में विदानों का सर्वसम्भत सुमार

सार्ववेरिक द्वार्य प्रतिनिधि सना के राज्यावधान में निर्मित विकासमिति की बैठक केन्द्र की नई विकासीति के सम्बन्ध में सुम्बंदिशिक सभा के प्रधान की राम-नेपाल सालवाने की सम्बन्धता में सम्बन्ध हुई।

विज्ञा समिति ने विज्ञा पदिव में सरहत को महरवायुक्त स्थान होन, नैति क शिक्षा कोर राष्ट्र परित को प्रोरवाहन में का सुकार करियमित के स्थाकार किया है। विद्यानों की समिति में यह निरमन किया है कि बीज्य ही विज्ञा समिति द्वारा 'निर्वारित सुकाड़ी की पूरी कररेका में सम्ब विक्रह हुनकी और नंतर है नियमर 'क्र-', के ने ने किया न

सनसे विकार विवर्श क्या जाये।

विजा बिनित ने बर्गमान विजा पढ़ित के परिवर्तन के उत्पादन ने जुमान दिया है कि दक्षी कमा तक मिनामा फार्नून के बन्दर्यन सहक्रत का विकास समिवार्थ हो तथा ११वी से उत्पर बार-क्षी तक पाठ्यक्रम ने एक नारतीय माना का प्रध्यवन करावा जाने इसकी स्वरस्था के सिए सरकार देवी नोम्यता नाने सम्बर्ग को की निवृत्तिक करे।

> प्रचार विशास वार्वदेशिक समा, विस्ती

एक अनूठा और अनुकरणीय सत्प्रयास । रचनात्मक पद्धति मे

महर्षि दयानन्द बलिदान राताब्दी वैदिक मिशनरी निर्माण योजना के कम मे

१ भार्यवोर दस प्रशिक्षण शिविर—

सह निविद समायोजन रि० २६ मई से ६ बुन तक लोस्ताह मानाया जा रहा है। इसमें सामान्यक कभी प्रतीप मुख्यक उत्तर उबेल, हरियाचा एवं राज-स्थान के ऐसे ही निष्ठावा / धार्यवीर मान की की प्रशिक्ता प्राप्त करके समय वैसे तथा धार्यकी की में धार्यवीर वल का क्यासन करेंगे।

शिविरासी २४ मई की साम लक्त वेदसस्टिर मधुरा पनेंदें। प्रवेशपद की पूर्ति करें बा प्रावेदन पत्र दें। प्रमुखासन का पातन सावस्पक है। शिविर सुरक नहीं हैं। बभी श्रद्धानुसार दान देकर स्थय पूर्ति करें।

इस तिविर वे बावेदेविक पायतीर इस के प्रवान वागक की २० बातिया-कर वी 'इस सहायक वागक की २० देवतर की घागार्थ, की राजिंदिह सार्थ, की सुरेन्द्र प्रार्थ भी अनिक बार्थ बादि उच्छक्ती' के तेत एव विवक्त जाव के रहे हैं। विवेर का बातन था जय नाराजक की बायक करेंरे।

२ ग्रायं कार्यकर्त्ता-कार्यकर्ती प्रशिक्षण शिविर--

रचनात्मक प्रवृत्ति में महर्षि वयानस्य यासवान वाराम्यों के नान्यों में सह एक प्रव्य सहत्वपूर्ण विनिद्य है। विवये वानुशों वीवन रानी प्रवाद धारिषक बनय दानी प्रवाद प्रविद्या धारीयक बनय दानी प्रवाद प्रविद्या धारीयक कर में योजना-क्वा कर में देशे वाले मान केंद्री। यह धारिष्ठ भी वर्ष्युक्त विधियों में वर्ष्युक्त स्वान पर हीं हो रहा है। साठ पुरोशक्य सहरवारिकालार दा स्वामी दिख्यालय ज सरस्वारिकाल पर सामानिकालय ज

सादि उच्चकोटि के विद्वान् प्रशिक्षसा हेके।

अभ्य एव विराट् समारोह
७ से ६ जन-

उन्त विविधो में महर्षि दयानन्द विस्तान शताब्दी के साथ ही विरवानन्द वैदिक सामनाश्रम की रजत जयन्ती धार्योप प्रतिनिधि सभा मधुरा का स्वर्ण जयन्ती भी सम्पन्न हो रहा है। वि० ६ जनको अद्धादिवस दि॰ द जन को सक्त्य दिवस तथा दि॰ १ जुन को बसि-वान विवस का बायोबन होगा । वेदमदिर (वैदिक मिशनरी निर्माण केन्द्र) के भवत का उद्वाटन होया । झाम युवा जानरण सम्मलन, बार्य महिला जायरस सम्मेलन, ब्राय किसान सम्मेलन, हिन्द संबठन, सब्बि सम्मेलन त्या बलिदान सम्मेलन (श्रदा-जिल समारोह) एव कवि सम्मेनन तवा बेद एव वैदिक साहित्य सनोच्छी, वैदिक परिवार सगोव्डी ब्रावि सगोव्डया होसी। विद्वय प्रशितन्दन एव विवदानी वीरों का समिनन्दन एव पुरस्कार वितरस भी होगा । घनेकों सत.विद्वान तथा उच्च स्त-रीय राजनयिक भाग ने रहे हैं।

समारोह के स्पोजक प्राचार्य प्रेमिसिक्क की ने है जून से ६ या जून प्रास्त सक प्रवाना सत्याह की प्रेरणा की है। कह स्वपूर्ण स्पाप्तिक सार प्रभार को सालार बनाकर किया जा रहा है। इस अनुते समारोह को तन नग को सकल क्याने के लिए सो सावर सामिस्त हैं।

के लिए वर्गी सावर बार्गाफत है।
विनीत
समयदेव (प्रवान) सुरेगचन्द्र बार्ग (सर्था)
समारोह स्थल-वेदमदिर
वृन्दावन गार्ग मथुरा
(वेसेवीकी गर्द्ध कार्यक के सामग्रे.

जवानीन गंवाना (ग्रस्ट १ का क्षेप)

देख का काम है कि वह बस्तुओं का निवांच करें चीर तह जोशे को है लेकिन ग्राव का देख तो अर्केक मार्किटियों का हुं ग्राव है। बो अपना स्टाक पर लेता हैं बस्तुए बावब हो जाती हैं, न मिलें तो तब बुखी। अरूर देश अपने बसे पर कायम हैं तो अर्क्क मार्कीट भीर प्रभाव न मार्थिया। बोट टीक हों तो दु ज न होंगा।

दूसरा दुवा का कारता अत्याव है।
कुछ गुव्हे उठते हैं और दूसरों की वस्तु श्लीत कर वरने बाल तेते हैं। शांत्रक का काल है ऐसे लोगों से समाम को बनाये। कोई चोर न हो। तेते हैं। वर करे, यह मुखी हो चारों। इस कान के विष्कृ सामित्र हैंसार किसे आते वे जो त्याव डी ० ए० नी० हार्सस्त्रम के साथ)
को कायम रखने के लिए प्रत लेते वे और
बन्याय को सिटाने के लिए जान पर भी
वेस बाते वे '

तीसरा दुख व्यविधा की नवह है होता है। विश्वा की व्यवस्थ को हुर करते का काम बाहान करता था। खारा सवार सुबी था। इन तीन प्रकार के दुनिया के दुखीं को दूर वस्ते के लिए ही खिखा दी वाती थी और यही प्रमु-प्रक्ति है। जो प्रमुको बाद रखता है और पर हेवा और परोपकार भी विज्ञाबी क्यतीत करता है वहीं प्रभु-करते है।

ऐसा ब्रह्मचारी ब्रह्म ने विकरता है स्रोत मृत्युन्त्रय हो बाता है। मौजवानो तुनिया पर और सपने साथ पर विजय गानी है तो ब्रह्मचये जतको बारण करो। प्रभुन्धन और क्षेत्र का बन को ससार पुन्हें तर पर उठायेवा।

समाचार-सन्देश

देश में गो इत्या कब तक चलेगी

मधेओं के शासनकास से देश में बऊ हत्या चल रही है। गऊ हत्या बद करने के बारे में कई प्रयत्न किए गए। परत गऊ हत्या बन्द होने मे नहीं बाती हालांकि गऊ हत्या से देश को वित्तीय नुक्सान वहन हो रहा है। परन्तु इस बोर बिल्क्न ध्यान नहीं दिया जाता। जब धग्रजो के समय मे बऊ हत्या होती थी तो लागो की बाम विचार घारा बी, विशेष कर भारतीय नेतामो का कि गर हत्या वद होनी चाहिए। लोगो का विचार या कि प्रश्लेओ का शासन समाप्त होते ही गऊ हत्या बद हो जाएकी । हालांकि जिल लोगों ने यह कहा या कि माजादा के मिलते ही पहली कसम से गऊ हत्या बन्द कर दा जाएगी। वब उन नोयों का शासन ग्राया तो उन्होंने इस मोर कोई व्यान नही दिया और गऊ हत्या होती रही। इस विषय मे ऋषि

वयानन्य ने कोषों से हुस्ताखर कराकर मतका विकटीरिया को विकारण की विवा कोर कोर का राज्य राज्

श्रव सोग हैरान हैं श्रीर सोबते हैं कि गऊ हस्या का कलक कब तक इस देश के माबे पर चलता रहेगा।

> जयदेव वोयस पत्रकार जीन्द

बहराइच में विदेशी धन से धर्मान्तरण हुआ श्रार्थममाज का श्रारोप

उन्नाव । सार्वसमाज उन्नाव के अवे याधिकांत्यन के सवसर पर प्रायसमाज व वित्रव हिन्दू परिषद के विरायत नेता की देवीवाल साम में बताया कि हाल में बहराइच में हुए बमन्तिरण के पीछे विदेशीयमा (पेट्रीयालर) की करामाल है। नेपाल बीमा पार कर घरन जीम कुछ ववीं संघर्षन का से बहुरार्थन गोण्डा बस्ती, बोरकपुर जिलों म प्रवेश कर बन के बक्त पर निर्वेण हिन्दू नटों का बम करीद रहे हैं। सरकार मूक दर्शन बना हुई हैं।

भी वेबीदास पार्थ ने सरकार से पूछा

नया प्रवेश

वधानम्य शाह्य महाविद्यालय हिसार (हिन्साला) में नया प्रवेश सारक है। भोजन, निवास, पुस्तक, सरमादि का बारा प्रवन्त्र सर्वेश होता है। मेंद्रक पास काणों का प्रवेश होता है। मद वर्ष प्रवार में वर्ष रक्षने के स्पष्टक का न हों, सर्विद्य हों, अरसी ही प्रवच्छाहर करें। प्रवेश २५ पुलाई तक ही होता स्थान सीमित है, प्रन प्रवेशायीं करती ही प्रव-च्यवहार कर प्रचना स्थान दुर्शास्त्र करा में।

सत्यप्रिय शास्त्री एम०ए० साहित्याचार्य प्राचाय वयामन्द बाह्य महाविद्यालय हिसार (हरवाला) १२५००१ कि बहराडच में ४००० चारह्वार, गोच्या में ००० तीन हवार वस्ती व गोरखपुर में दो दें हुजार व्यक्ति इस्लामी मदद हो और कितने वर्मान्तरिन किसे गये हैं? बजा की सम्मलता डा० रचुवीर सिंह एडवोकेट ने की।

प्रारम्भ मे श्री देवीदार धार्य के महिसा उदार धुदि व यमाव सेवा के महान कार्यों की प्रशसा करते हुए सब्ब स्वागत किया गया।

> रविश्वकर शर्मा नत्री सार्वेशनाम उल्लाब

समय की श्रावाज

उत्तर बारत के कई प्रान्तों ने एक साथ वस विस्फोट, कई शीर्वस्थ नेताओ की हत्या के प्रयास भातकवादियों के पून भवकर रूप से सकिव होने का प्रवास है। उनका बह कुन्सित काय सुनियोखित वा। उनकी बोजनाथी भारत की सलाव्यता ग्रीर एकता को सण्ड-सण्ड करने की। भत माज की शावस्थकता है कि हम सब भारतीय एक जुट होकर वर्ने **और इन** समाज विरोधी तत्त्वो का स्टकर मुका-बला करें। मैं राष्ट्रीय एकता विचार सब विल्लीकी भोर से सभी वर्वी से तथा वार्मिक राजनैतिक दमो से सपील करता हुँ कि इस समय प्रपत्ने समस्त मतमेद भूका-कर राष्ट्रहित के लिए एक होकर सहयोग करें।

> श्रमोक कुमार अभान, राष्ट्रीय एकता विचार सम ८।व२, रमेश समर, नई दिस्की

श्रलगाववादी हिंसक तत्त्वों को सस्ती से क्रवला जाए

सार्यसमाब केतरलब सक्सेर की विनाक १२-५-२६ की यह समा सपके सारवाहिक सरसव के उपरान्त एक सर्व-सम्मद्र प्रताव पारित कर उक्कारो साठक सारियों द्वारा किए गए वेश के विजित्ता मानों वे वन विस्कोदो तथा निर्मेष लोगों की हत्यामों की कडी मर्साना करते हुए नारत सरकार से इन सम्मावनाथी हिंगक तथों को सस्ती से पुन्तकों हुए कारत को सस्ती से पुन्तकों हुए कारत संस्कार एक सम्मावनाथी हिंगक तथों करते की माग करती हैं। साब हो वेश के सम्मावनाथ एक साम्मावनाथ स्वावनाथ स्व स्वी स्वरावनाथ स्व

> मन्त्री धार्यसमाज श्रवमेर

महर्षि दयानन्द शिन्नग् समिति का चुनाव

धाय समाज शिवावी चौक सम्बद्धा विचा पून निमाड (म० प्र०) मे दिनाक १२ ४--४ को जी भावनी माई मानुवासी सम्बद्धा में महुचि दबानन्द शिकाम समित का चुनाव सानन्द सम्पन्न हुखा। समोज्याति सं निम्मोकसिक पदा

विकारी चुने गये — भव्यक श्रीरामचन्द्र जी शाय उपाञ्चक श्री सक्सीनारायस जी शार्गन

हीरालाल को बायें अत्री अभिकेशातचन्द जी पालीवाल उपस्त्री भी खननवाल की चौचरी कोपास्पक्ष भी सामग्री भागताली।

कार्यकारिएती के सदस्य भी कृष्णासाम जी आर्थ २ जी तेठ नारायण दाख जी सण्डलवास ३ जी डा॰ व्यवदेशयणन्य वोरे ४ जी बादुसास जी चौचरी

क्षेत्रवी शास्त्रवाह सम्बेखवाल ६ सीनती चन्द्रकान्ता पासीबाल उच्च समिति के सन्तर्वत नगर में १ बास महिर, २ प्रावमिक साला, १ माम्बेसिक साला, २ महिला सिलाई

स्कृत समामित है।

सुवराव सार्व पुरोहित सा॰ स॰ सहवा इन्ते सबी सार्वसमाज सण्डवा

खुद्धिः
२४ नार्षे १८-१ का श्री हशराधः
वीस्त्रमेन के बराहमीन प्रवस्तां द्वारा ज्याहः
पुर वेरी वाक्याना महार्यामी, नई किल है निवादी रोचना महार्यामी, वर्षे का किला निवादी रोचना का स्वाप्त का ले व जनकी पत्नी निवादी तथा उनकी पुत्रियो पुत्रम तथा कोनिया का मार्गे रीति वे वह तथा स्त्रो-वचीत हारा चुद्धि का कार्ने सम्मन्त किया

इस कार्य में भी हतराम पोस्टरीय का बराहमीय मोग रहा। बी॰ सार॰ मुतेमा, अस्ती

लन्ना में त्रार्थ नवयुवकों की सभा

१२ ६-८१ रविवार को, आर्यसमाव बन्ना वच्ही (लुधियाना) मे सार्थ सब युवको की एक समा का बायोजन किया गया, विसकी अध्यक्षता भी हरिदेव बी जीवरी ने की । यज्ञ के पश्चात वेद प्रवाद मजन मण्डली लुचियाना ने प्रभूमनित एव देशअक्ति के गीतों का कार्यक्रम प्रस्तुत किया । इस भवश्वर पर आर्थ युवक सभा पजाब के समोजक श्री रोशनलास शर्मा ने नवयुवको को सम्बोधित करते हुए कहा कि साज हमारे सामने देश की एकता भीर संसंख्यता का एक बहुत बंबा प्रश्न है न्योकि जिस स्वतन्त्रता को प्राप्त करने के लिए ग्रहीबे माजम भगतसिंह, सुबदेव, राजगृब तथा सनेक वीरो ने सपने प्रास्ती की बाहुति दी बाज इसी स्वतन्त्रता की कायम रखने की जिम्मेदारी हम सभी पर है। उन्होंने दश में ही रही हिंसक घट-नाम्रोपर गहरी जिता प्रकट की तथा नव-यवको को बाह्यान दिया कि उन्हें साबू दायिक एकता बनाये रसते हुए देश की रका के लिए खदैव तैयार रहें। श्री सुबीर जी माटिया, श्री विनोद की बसल तथा सीय तपाल जी साथ ने भी युवको को सम्बोधित किया। श्री चौचरी ने कहा कि बार्यसमात्र नवयुक्को की यवासम्बद सहायताकरेवा।शान्ति पाठ एव अय घोष के साथ कार्यवाही समाध्य हुई।

पुषीर आदिया वर समोबक बाय पुषक तका पताब, ७११ विवित्त हस्पताल रोड, शुविधाना उम्रवादियों से निपटने के लिए भारत सरकार से

धार्यसमान के प्रशिक्ष नेता एवं शीन एन भीन नेनेजिय कमेटी की स्वाची स्थितिहाँ होर्गियारपुर के पेक्टर्सन चौन नक्षतीर सिंह भी की साम जुस्क होर्गियारपुर के स्था कर से गई। वह सार्यसमान प्रश् की एन भीन सान्योक्षन के स्टब्स्स के की वस्त्रीर्थिह भी प्रवास के राजनी-रिक्र व पूराने समावनाती नेता ने । उनका सिंह्य कमान में बहुत सम्मान या। यह समावार निकरी ही बीन एन शीन कालेज कमेटी एक प्रावेशिक स्था कार्याक्ष में शोक स्वास की सई धीर प्रधासा के नक्षती साला की शारित के सिर प्रावंता

इस बैठक में एक प्रस्ताव पारित किया जब कि जारत सरकार उदकावियों में विचय के निपर्ट ! धार्य प्रावेशिक स्था जिति स्वानं देश उपकच्य में पारत के प्रवानवन्त्री जी राबीव नावी एव प्रवाब के वर्षेत्रर जी सर्जुतिहरू को टेलीबान बेठर सारहर क्या है कि वह उपवासियों के वर्षेत्रर की समुद्द ।

> —रामनाय सहयस (मन्ती) यार्व प्रावेशिक प्रतिनिधि स्थान

आर्यसमाज भोगल का वार्षिक चनाव

वि० १२-५ म् ५ को झार्यसमाज भोवज्ञ का वार्षिक जुनाव सवसम्मति वे विवागवा।

प्रवास भी बां जे जी शुरूरा वर्षवास भी मुनीनास बोहरा वरपवासा शीमती नावनना शिलहोत्री वर्षा जी वरदारागात को खा उपवासी आरतेषु प्राप्त कोवास्थ्य राखाल्य विदानी सांशेटर सोवप्रकात चौकरा संवत्त्र स्थापना हिस्स्य स्रोशा बोच्या कारणालास बुराना

ţ

दयानन्द पब्लिक स्कूल

का उदघाटन

षार्थसमाय मात्रल टाउन निरुपी के राजें में बार्यिक सिंदा रें हैं मिला दिन रें रें मूर्य रिविदार को हैं हैं ने बेंदे दानान्य पित्रल हम्म का उद्य टर साला राय गोपाल गालवान (प्रवान सावदेशिक सम) के कर कमलो द्वारा वह हर्गेल्यास से सम्मन हुमा। पश्चात् रें कमनन हुमा। पश्चात् रें वे मह चनार

दयानन्द पब्लिक स्कूल श्रायसमाच रोट माइल टाउन दिल्ली ११०००६ श्रायमहाज वडा बाजार कलकत्ता द्वारा स्वामी दयानन्द्र की प्रामाणिक जीवना के लेखक डा० भवानीलाल भारतीय अध्यक्ष स्थानन्व शोष गीठ पत्राव विश्वविद्यालय का सम्मान च अभिनन्दन

कलकता। कलकता को बड़ी बाआर भायसमाज न श्रपने वार्षिकोत्सव के श्रव सर पर कायनमाज के प्रसिद्ध सोध विद्वान तथा सेसक डा॰ भवानीसाल भारतीय का गत ४ सह को मुलबाति सदन कं विद्याल सभागार संस्थानजनिक सम्मान तथा प्रभिनन्दन किया । इस सम्मान समारोहकी सध्यनता सायसमाज कनकत्ता के वरिष्ठ कायकर्ता श्री सीटा रम बाय ने की। पूर्वाञ्चल विशेषत दगान की सभी प्रमुख द्यायसमाजी तथा माय सस्यामी ने डा॰ भारतीय का माल्यारण द्वारा स्वागत किया नवा इस शवयर पर उपस्थित महारमा अधिमिन् जी । अज्ययन्त कृमार श्वास्त्री तथा प्री उमाकान्त उपाध्याय श्रादि विद्वानी ने भ रतीय जी की साहित्य साम्रो का शुरि मृरि प्रकासाकी। प्रायसमात्र वडा बाजार की सोर से विद्वात के सम्मानाथ १५०० ६० की एक ऊनी शास तथा श्रीभनन्दन पत्र श्रपित किया गया । श्राय समाव बड़ा नाबार के बुवा कार्यकर्ता भी चादरतन दम्माची ने ग्राधनस्दन पत्र बाचन करते हए साहित्य पत्रकारिता तथा प्रचार में डा॰ भारतीय जी की सेवाम्रोका उल्लेख किया। स्वानत के उत्तर में भाषण देने हुए हा० भारता जा ने कहा कि साहित्यकार यद्यपि निस्वाय एव करक्य पूर्ति की भावना से ही अपनी लेसनी असाता है तथापि यदि समाज उसकी शीरबाहित करे तो वह ध्रविकाषिक उत्साह से समाज सेवा मे लगा रहेवा। सम्मान समारोह के समय हर० भारतीय की पत्नी श्रीमती सान्ति भारतीय सी जवस्थित सी ।

ग्रपने वार दिन के कलकत्ता प्रवास

में डा॰ भारतीय ने धायसमाज विधान सरणी कलकलाके मत्री आर पुरस्यन्द जी तथा धायममाज कलकना स्थापना शतादी समाराह समिति के सयोजक श्री श्रीर मजा द्याय स समारोडो के द्यायो-अन के सम्ब व म उपयागी परामधा किया। आयसमाज वहा बाजार का उत्सव दिनाक २ मई म ५ मई तक मनाया गया। इस अवसर पर बायोजित राष्ट्रका सम्मेलन की सध्यक्षता करते हुए डा॰ भारतीय ने सायसमाज को राष्ट पर साये सतरो के प्रति सावभाग किया। कायकम का सयोजन श्री दम्मासी जी ने किया था। वेद सम्मेलन की ध्रध्यक्षता महात्मा भायभिक्ष जीने की तथा मुख्य अतिथि के रूप में प्रो० विष्णुकान्त णास्त्री उपस्थित च । प्रो॰ ज्वलन्त कूम।र शग्स्त्री नथा भवानीलाल सार-तीय ने प्रायसमाज का वेद विषयक प्रीट-कोण प्रस्तृत किया। उत्सव की सफलता के लिए समाज के प्रधान की कन्हैयालाल जी बाय मंत्री जी ब्रुबहालचाद कार्य-कर्ताशी चादरतन तम्माणी घायबाद के

—सबादद ता

श्रार्य वीर दल शिविरों का श्रायोजन

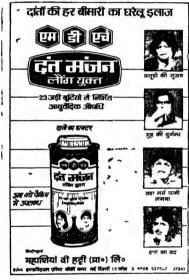
सानदेजिक आय वीर दल दिल्पी अदेग की समिति के नित्यस के अनुसार युक्तो के वरित्र निकास राष्ट्रास एव बास्कृतिक वेदना जानून करने हेतु दिल्ली में निम्म प्रकार से शिवरो का सायोजन किया गया है। प्रश्तक आयदोश्यस स्वया के मंगे/ प्रमण्डक महोदय स प्राचना है कि स्वयानी सायसमान/ स्वया की सोर से सायबीरों के नाम सायचीर दल के सार्याजय १५ हमुमान रोड नई दिल्सी १ के पते पर लोग प्राचना का कटक है।

> २१ ४ ८५ १-६ ८५, २-६ ८६ शुक्त झनि तथा रिवबार रतन देवी आर्थो पुत्री पान्शाला कृष्यस्य नगर दिल्ली—११ (यमुना पार)

१४ १५ १६ पून १६८५ गुक्र पनि तथा रविवार आयममाज निमारपुर दिल्ली-७

१७ ८५ से ७ ७-८५ तक मोमवार से रिववार तक रुषमल कन्या पाठशाला निकट मद्रास होटल नई दिल्ली—१

त्रियतम राम रसबन्त ग्राविकाता, ग्रायनीर दल दिल्नी प्र०





श्चार्य जगत् की शान २०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन नेत्र चिकित्सालय

(अनुमानित लागत दो करोड़ रूपये) के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की र'श्चिम्रायकर ग्रिषिनियम जी० ६० के भ्रतगंत कर मुक्त होगी।

सारा दान : चेक/मनीझार्डर/बेक डाक्ट द्वारा

मत्री, माता चन्ननदेवी द्यार्थ धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय, सी-१ जनकपुरी, नई-दिल्ली-४८ के पते पर भेजा जाए । दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर अंकित किए जाएगे।

निवेडक

रामनोचान सालवाने सूर्यवेष महाशव वर्गपाल प्रोत्तप्रकाश आर्थ सरक्रक विकित्सालय प्रवान, दिश्ली प्रवान प्रत्नी एवं प्रवान, वाञ्चाच धार्य प्रतिनिवि धार्य केन्द्रीय महास्वय कुलीसाल प्रति • समा समा स्वेर केर्रिट हु० सौजन्य से महाशियाँ हिट्टी प्रा० लिमिटेड, १/४४ कीस्तिनगर,

ब्रौद्योगिक क्षत्र, नई दिल्ली-११००१

आर्यं पुरोहित सभा का निर्वाचन

धार्व पुरोहित सभा दिल्ली का निर्वाचन धार्यसम्बद्धान हाज, पादणी चौक, विस्त्री से १ जून समितार को साम १ वण्डे होना निर्वचन हुया है। समस्य सस्यवर्णों से प्राचना है कि स्वयना वाविक सुरक साम सेते प्राचन है

> मंत्री वेदकुमार

आर्यंसमाज विवेक विहार का वार्षिकोत्सव

धार्यसमाञ विवेक विहार का वार्षि-कोत्सव वडे चमचाम से सम्पन्न हसा । इस धवसर पर बहद यज तथा देव प्रशाह का विशाल सायोजन किया ग्या। १६ गई रविवासरीय ग्रन से प्रसिक्त साहित्यकार बी क्षेत्रचन्द समन तथा सभा प्रधान भी सूर्यदेव ने प्रपने विचार प्रकट किये। वक्ताओं ने शिक्षा में हो रहे परिवर्तन के विषय में प्रकाश बालते हुए कहा -- हमारी शिक्षा ने महायुक्ती का गौरवमय परित्र तथा नैतिक चारि-तिक शिक्षा का स्थान अवश्य होना भाहिए। बार्यतमाज सदा परित्र और नैतिकता तथाव्यक्ति धीर समाज के विकास पर बल देखा रहा है। सरकार को बाहिए शिक्षा में बारिजिक सौर

नैतिक मुस्तों तथा धपने भौरवमव इति-ह्यात की खीवत स्वान दे। मन्त्री धार्यसमास विवेक विकार

पंजाब के हिंन्दू नेता प्रधानमंत्री से मिले

(पृष्ठ १ का केष) १२ श्री चतुर्म्ज मिलल, त्रवान

व्यापार मण्डल, जोलन्घर १३ श्री कैलाश शर्मा प्रवान

मदिर कमेटी, लुवियाना १४. श्री भोमप्रकाश त्यागी—

महामन्त्री सार्वदेशिक सभा, दिल्ला १५ श्री जगन्ताच मिश्रा, दुर्ग्याना

१६ श्री सोमनाच मरवाह सीनि-यर एडवोकेट एव कोवाध्यक्ष, सार्व-देशिक समा, दिल्ली

१७ महाराज कृष्ण सन्ना, जानन्त्रर

१८ प्रो॰ शेरसिह, प्रधान बार्य प्रतिनिधि सभा हरियाला, रोहतक है १९ प्रो॰ वेदव्यास, प्रधान बार्य

प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली २०. श्री सूर्यदेव, प्रधान आर्थ प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

२१ श्री कृष्णकान्त एडवोकेट, लुधियाना

> २२ श्री सङ्गीचन्द, दिल्ली —प्रचार विभाग

उत्तम स्वास्थ्य के लिए गुरुकुल काँगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

शासा कार्यालय—६३, गली राजा केशरनाथ, फोन : २६६८३८ वावडी बाजार, दिल्लो-६



साप्ताहिक अस्टिश

मूल्य एक प्रतिः १० वैसे

वर्ष १ शक २=

रशिवार, २ जून १८०%

धार्यं सबस्तर ११६०८१३०८१

क्षेक्ट २०४२

दयामन्दास्य---१६१

स्वामी दयानन्द मेरे महान् गुरु

पंजाब केसरी लाला लाजपतराय

स्वामी दयानन्द मेरे गुरु है। मैंने ससार मैं केवल उन्ही को युरु माना है। वह वर्म के पिला हैं और मार्य-समाब बेरी वर्म की माता है। इन दोनों की गोद में सीने परवरिष्य पाई और अपने दिल भीर दिमाग को काला। कुम को प्रश्निमान इस बात का है कि मेरा पुर बढा द्वाकाद मनका वा। ससने हम को जाजादी से विवार करना प्राजावी से बोलना और बाजादी से क्षपने कर्लभ्य पालन करना सिलाया । मुक्त को इस बात का भी गर्व है कि मेरी वर्म की साता ने मुक्त को एक क्त्वा ने बढ़ होकर रहना निसाया। एक ने बाबादी श्रदान की तो दूसरे ने मुक की डिसिजिन का वान विया। इनके बगेर न ती इन्सान अपना सुवार कर

ताकि मनुष्य मात्र इत में संमा बाए। हमारी वेश्वमंतित वर्ष के अबीन है। प्ररोपीय कीमी की तरह बहु तत और तमक न होंनी चाहिए। कर कर्मन निवासी यह कर्रकर पुका-रता है कि उसे अपनी वन्म यूमि सब पदाचों से जारी है तो वह क्षर बार अपने दिल की तम करके खंडार के नाना प्रकार के क्षेतरों की नीड़ रखता है और सिक्सा वैताबें कि वेशे कीम चाहे नजती पर हो सो भी उसकी पूल पूक्त मिक्स है। इक्के क्सी कर तो सम्बाह है कि सूसी के वहते वह तो सम्बाह है कि सूसी के वहते वह तो सम्बाह है कि सूसी के वहते वाहिए। जो स्वक्ति वितास स्विक् रिक्षित हो, कम सम्माहो, वापी हो उसली ही स्वक्ति त्येष्ट्र की काला असलें होनी व्यक्ति करण्यु एकाल स्व वर्षे नहीं कि क्यूना हलें, हल, गार, सवस्था प्रकर्त है "भी मेंस है। जेने काला दिलां को बोर्च के पर सदात प्रकार मेंस को को सार सदात प्रकार मेंस को काला रहता है। पूर्व स्वक्त क्यूना स्वास्त मेंस काले मेंस का कोत नहता रहता है। पूर्व स्वक्त क्यूना स्वास्त मेंस्स स्वास्त्र को का स्वास्त माहित सो स्व माहित सोच का स्वास है।

परन्तुइसका भर्ययह नहीं है कि जाति की मूलो ग्रीर सवानिक कुल्यों की भी हम बाहने लगें। स्वामी जी महाराज ने हम को जाति सेवा का उपदेश दिया। हम चाहते हैं कि हमारा देश बौर हमारी जाति धर्म के रास्ते मे वृद्धि करे। धर्म से भाव वहाँ उन कुछ सिद्धानी से ल्ही जिनका नाम मत है। धर्म शब्द उन गहरे भीर विश्वाल सभी में लिया जाना है जो हमारे शास्त्र-कारो ने इसके निए नियत किए हैं। सिद्धान्तों को मानना और चीज है और धर्मात्मा बनना भीर चीज है को केवल धम निद्धानी के बोस के नीचे दब कर वयने बिद्धान्तों के प्रशिमान पर अम्मीरमा बनने की चेच्टा

करता है। वह जरूर ही वर्मात्या नहीं वन काता। वर्ष का सन्दर्भ बहुत कुछ कर्म धीर धाषरण से हैं न केशन ज्वक आने वे। पर्नात्मा क्लेम के लिए एक सास तरह का विश्व बनाना होना है जिससे विश्वास्ता, वसाजुरं, न्याय भीर भवित से निश्ची हुई ही।



सत्मंग वाटिका

सन्त्रम बृहर सस्य उद ऋत हाक्षा तप हक्का यह (एते सर्वे) पृथियी धारयति। । पृथियी न भूतस्य जन्मस्य पत्नी (प्रस्ति)। पृथियी न नोक उद कृषोतु।

धम पृथिवी को इतनी बोज कन्सती हैं। (बृहद मत्य) बडा सव (उपन् कराय) तीव ब्हात नीता तप बहा धीर यज । यह पृथिवी (न) हमारे (बृहत्य) भूत-काल (अध्यन्य) धीर अविस्थात काल की (यली) पालन वाली है। यह पृथिवी हमारे (लोक) जीवन को (उद इक्वीतु) उस्मा बनावें।

क्याक्या - इस मत्र मे पृथिवी प्रयत् देश की जनति के सधन बताय गये हैं। पृथियो परहम कोगो का जम होता है इसी पर बढत है और इसी पर हमारी शन्त्येष्टि हो जाती है। यत इसकी उन्नति में हमारी डम्मति भीर इसके हास मे हमारा ह्रास है। उन्नति मे भौतिक सामाजिक वार्मिक सभी उन्निवियों का समावेश है। पृथिकी या देश के समुज्नत होने के बहुत न मौतिब सावन हैं जिनको देश की सरकारें वैज्ञानिकों की सहायता हारा प्रयुक्त किया करता है। वैसे फिल्म ब्रकार की मुमियों को कृषि के उपयुक्त बनाना ऊसरों को तोडना पहाडी बमीनो को जौरस करना जहापानीकी कमी हो हुरस्य नियो म बहर निकाल कर वानी पहुंचाना विद्युत गक्ति को कृषकों के लिए सुसम् बनाना इत्यावि ।

परन्तु वेद सल में कुछ एसे झमौतिक तवा मानसिक बुजो का बरान किया गया है जा उपर दियं भौतिक सामनी संभी श्राविक श्रावहण्य है जिनके सहयोग से ही औतिक साधन सफल हो सकते हैं भीर जिनके प्रजाब में यह भौतिक साधन सवया बिपरीत सिद्ध होते हैं। इवि भ्रादि भौतिक साधन मनुष्य के कल्याए। के लिए हैं न कि मनुष्य उन साधनों के लिए। यत यदि देश में साद्य पदाय बहुत हो और साने वाले निकम्मे हो उन पदार्थों का उपयोग महीं हो सकता। करपना की जिय कि एक चनाढ्य परिवार है। घर मकान जाने के लिए पुष्कल भन्न पहनन के लिए बस्त्र परन्तु परिवार के लाग प्रालक्षा स्वाधी ग्रीप कल हपिय है ताधर का गान्ति का सना भग हता रहेगा धीर शनै ननै घर का समृद्धि भी चनाथमान हो जायगी। राजा न्हारथ के चार लडके थे। राम भौर उन्हीं व सद्या मध्यम् भरत भीर शतुब्त इनम इस मानसिक गुण ये जिनकी सहा यतासे वहन्शरम के राज्य को विस्तृत भौर समृद्धिशासी बना सके। साहबहा 🕏 कार पुत्र व दारा और उसके सका सुवा

ये महान गुण

प० गगात्रसाद उपाध्याय

सत्य बृहद ऋतमुत्र दीक्षातपो ब्रह्मायझ पृथिवी वारयन्ति । सानो भूनस्य भव्यस्य परूपुरु लोक पृथिवीन क्रुसोतु।। (ग्रथवैवेदकाण्ड १२।सूक्त १।सत्र १)



की कमी थी घत सुसमृद्ध मुक्स राज्य गीझ ह छिन भिन हो गया।

इन्हीं गुणों का बेदमत में बलान है।
एक एक करके देखिये पहला है— सत्य
बृह्द । प्रत्यन्त सर्वाप्यता भवीत्
अवस्थ से घोर प्रप्रीति। ज्यन्यद ने प्राया
है सस्योगिताम्पि (ज्यन्यद ने प्राया
है सस्योगिताम्पि (ज्यन्यद १०
८५ १) घवीत् सत्य भूमिको ऊरर उठाये
हुए है उठी विदने नहीं नत।

यहा सस्य कोई नोहे का सम्भा नहीं है। न केवनाय का फन है। न कोई ग्रटसस जैसा कोई देव है जो भूमि को कन्धे पर उठाय रसता हो। यहा तो भूमि रर रहने बाल मनुष्यों के मानसिक गुल से प्रतिप्राय है। सत्यनिष्ठ लोग दर्शि देश को भी भी सम्पन्न बना देते हैं और बस त्यनिष्ठ लोग सम्पन्न देश की सम्पदा को भीनक कर देवे हैं। सत्य का एक विशेषसा बृहद मों दो सभी सत्य को प्रच्या सममन्त्रे हैं पच्यु अवहार में तत्व को कम म न्यष्ठा दी जाती है। हर स्था पारी का विषवात है कि सत्य स आयार नब्ट हो बाता है। हर बकोस कहता है कि बकासत सत्यक्षा स नहीं वस सकती। हर राजनीतिज्ञ कहता है कि राज करना है तो सत्य को कोडी। सत्य ब्रह्म करना है तो ननोटी समाकर वन को चले जासो। राश्रनीति में सस्य का क्या काम? हा सत्य का विदोरा पीटते रहो। दूसरी को उनके घसत्य व्यवहार के लिए बदनाम करते रहो । भारतीय श्वास्त्रों मे सस्य की अहिमा बहुतायत से नाई गई है। परन्तु वाजर बेचन वाल कृषड स सगाकर महा बनावय सेठ साहुकारो तक सभी श्रसत्य को समृद्ध का सावन समस्त है। इससे भारतबब की उम्मति तो नहीं हुग्ती। बेद कहता है कि पृथिवा का बारण करने वाले गुराो में स मुरव गुण बृहद सस्य है नकसी सत्य धीर धसनी सत्य में मेद है। क्या सह अपन्त्रे की बात नहीं है। सत्यं की महिमा को स्थापित करन के लिए किसी ने हरिश्वन्द्र नाटक में धनेक प्रसस्य बातें मिलादी। क्या हरिश्वन्त्र नाटक के सिसने वाने को भी यह विश्वास था कि वसत्य का मिश्रण किय बिना नाटक सफस नही होना ⁹ धसस्य की विपन्नता

का सबसे बढ़ा प्रमाण बहु है कि शास्त्रो

करते हैं परस्तु इन सांटकों ने सखार के सबत्य सम्बह्मर में कमी हो नहीं की। केवक सम्बन्धा हार स्व प्राप्ति ही हो नाटक की कप्त्रस्ता नहीं है। इसी प्रकार वैशानिक उचीमी के साथ साथ मदि सस्य का प्रचार नहीं होता तो देश के सम्यान मीर कस्याण समृद्ध होने में सन्वेह ही है।

दूसरा बुल है ऋतम् उम्र । ऋत का सव है सुष्टि के नियमों का सहयोग। सूर्व किसी को अपने नियमों का ससह योग करने नहीं वेती। जो ऐसा करता है तुरना उस वण्ड मिनता है। साथ रोटी के प्राप्त को मूल के बजाय नाक से आपने समे । तूरन्त हो दण्ड मिलेगा। निर्के बल चलना आरम्भ कीचिये। दिल्ली सोहये रात में वानिये। यह सब उहच्छता के काम हैं और उद्दर्शका के लिए दण्डित होना स्वरवस्थानी है। साक्षक साईस का बुग है। ऋत को क्रिसारपूर्वक बालवे का यत्न किया जाता है। सुष्टि के नियमी की नित्य प्रति सोख हो रही है। परमू धपने जीवन में उसका उपयोग नहीं करते। डाक्टर होकर ऐसे साचरण वा साहार न्यवहार करते हैं कि जो विशान के सर्वना विपरीत है। इसस देश भीर जाति को हानि होती है। कोई ऋत यह नहीं बताता कि सिबट वीना उपयोगी है कोई 'ऋत यह बाजा नहीं देता कि स्त्रियां होठों को रगा करें या कमर को इस प्रकार कसा करें कि उनके पेट की नहीं निवल हो बाय या ऊची एड्डी के जुड़े पहुना कर । विज्ञान-समूननत दशों के धानार व्यवहार बताते हैं कि यदि अपनी वेशो ने ऋत का पासन नहीं कियाती यह उनके अज्ञान के कारण था। जब मनुष्य म ज्ञान का वृद्धि हा जाए फिर भी बानबूक्षकर ऋत से प्रसङ्घीय किया बाब तो दण्डित होना ही पडवा।

तीश्वरानुगाहै दीक्याः बजुर्वेद के

वरोव वीकामाणोति वीकामाणोति विक्रालाम् । वीकासा अद्यामाणोति अदया सम्बद्धान्यते ।

(ब्युवेंद प्रव्याव ११ यम १०)

उसम धविकार किमा है। जब मनुष्य शुत्र काओं के लिए वर्त धारता करता है तो उसको उस काम के करने का प्रवि-कार प्राप्त हो वाशा है। जब सक किसी देख में इस प्रकार के उच्च मनुष्य उत्पत्न नहीं होते को निस्वाधभाव से देश सेवा के निए व्य सकल्य हो वार्गे उस समय तक देख की सम्मति सदिग्ध रहती है। भी तो देश ने कराडो मनुष्य एडते हैं साते हैं. पीते हैं मीज उड़ाते हैं पर तुदश बा वाति उनके बाध्य नहीं है। जैसे नश मे करोडो वसु वसी कीट वृत्त रहते हैं उसी प्रकार वह भी रहते हैं। कोऊ नृप होब हमें का हानि । वार्मिक सोन रहे बा ब्रधार्मिक देश रहे या नष्ट हो जाय मेरे मकान में विकियाँ घोसला रखती है वृहे विक बनाते हैं मकको जामा पूरती है, ररन्तु उनमें से किसा की मकान की जिला नहीं। वर गिर जाये ता वे गिरे हए सकात का सबहर में रहेंगे। या घन्यत्र आग बार्येये । मकान के बारण करन वाले बहु पशुपक्ती नहीं हैं। इसा प्रकार देशा की रक्षाकाभार मी बत हीन भीर दीका) हीन बनुष्यों के ऊपर नहीं है। लोग जब नोकसमाधी या पालिय मध्य के सदस्य चुने जाते हैं तो उनको पच नेनी होती है कि हम जो कुछ करें ने केवल देशहित की बच्टि से करने भपने ०२ क्तित्व परिशार दल या सम्प्रदाय की मावनाओं को बीच में न धाने देंने। यह वत बना ही उनकी बीखा है। क्रक के पश्चात् ही वे पालियामेण्ट की सदस्यता वे अधिकारी होते हैं। प्रव विव उन्होंने दी झाभी ने ली और अधिकार भी प्राप्त हो गब परन्तु बदि स्वाच सर श्रमानवश उन्होन इसको निवाहा नही सो वैश्व शीघ्र ही नष्ट हो जानेवा। वयोंकि व्रत या शपय का मुहु से लेगा प्रथमा कावज पर हस्ताकार कर देन तो प्रासान है परम्तु जब स्वाय और देशहित में विरोध बाता है तो स्विर रहने के किए तीन भीर गुणो की धानश्वकता है तप भी बह्याकी और यज्ञाकी। तप का समाहै कतव्य पासन करन से जो कठिनाइस्थि बावें उनको सह सकता। प्रयमे मन के धनुकूत बाठ होने पर तो सभी सथ बोलते हैं परन्तु जब सब बोलने से धाने स्वाध ने बाबा पहली हो उस समय सब बोजना कठिन हो जाता है। स्वाय होते हुए न्याय तो सभी कर सकते हैं परन्तु सत्रु के साव न्याय करन में सकोच न कर वही देश का उदार कर सकता है। काम कोच लोस मोह का बशामृत पुरुष कभी देश या जातिकी रक्षाकरने में समध नहीं हो सकता। तप वही कर सकता है को बहुत श्रवीत् ब्रध्यास्य जीर यज्ञ सर्थात् श्राह्म-त्वाव या द्यारम समयण मे विश्वास रखता हो। अध्यास्य को मूलकर जो केवल शौतिकवादी हैं वे विषयों वे शीध फस बाते हैं। मनुस्मृति मे अभियो के सक्तारा निनाते हुए एक मुख्य मधन यह वी विमा है कि विवयों में बातवित न हो। रावे दा

🖈 वचनसन्देश 🛨

उपासना

उपामना शब्द का बर्ष समीपस्थ होना है। अध्याञ्च योग से परमास्मा के समीपस्थ होने और उसको सर्वव्यापी, सर्वान्नर्यामी रूप से प्रत्यक्ष करने के लिए जो जो काम करना होता है, वह सब करना चाहिए।

जो उपासना का धारम्भ करना चाहे उसके लिए यही धारम्भ है कि वह किसी मे वैर न रक्खे, सर्वदा सबसे प्रीति करे, सस्य बोले, मिथ्या कभी न बोले, चोरी न करे सस्य व्यवहार करे, जितेन्द्रिय हो, लम्पट न हो धौर निरिभमानी हो, ग्रिभमान कभी न करे।

राग द्वेष छोड भीनर और जलादि से बाहर पिबल रहे, धर्म से पुरुषार्थ करने से लाभ मे न प्रसन्नना भीर हानि मे न अप्रसन्नता करे, प्रसन्न होकर ग्रालस्य छाड सदा पुरुषार्थ किया करे, सदा दुख सुखो का सहन और धर्म ही का अनुष्ठान करे अधर्म का नही। सर्वदा सत्य शास्त्रो को पढ़े पढ़ावे, सत्पृष्ठा का सङ्क करे और धी३म इस एक परमात्मा के नाम का अर्थ विचार कर नित्य प्रति जप किया करे। अपने ग्रात्मा को परमेश्वर की ग्राज्ञानुकूल समर्पित कर देवे।

जो परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना ग्रीर उपासना नही करता वह कृतघ्न ग्रीर महामूखं भी होता है, क्योंकि जिस परमात्मा ने इस जगत् के मन पदार्थं जीवो को सुख के लिए दे रक्खे है उसका गुगा भूल जाना, ईश्वर हो को न मानना कृतघ्नता ग्रीर मूखंता है।

−महर्षि दयानन्द

सम्पादकीय

पहले धूंए और धमाकों का इलाज कीजिए

पजान की घरती के वे गीत जिनमें गाया जाता था कि तोने की घरती है जाती सा पानी, घर-चर में गुजती हैं गुरुबी की वाएंगे। घन बहा आग हैं, चुबा है, चरते तरफ स्तंक्यता है। गीत सो गए हैं, उनके गाने वालों के होट क हुवाहट से तिक्त हैं। हर कोई एक दूसरे को सम्देह की नजर से देखता है। अद्योग की पान हों जिए ही पान हों जिए और घमां को हम और जातिकत हैं। जिन्होंने चुए और घमां को चून भीर लांधों का व्यापार विगत कई वर्षों से गुरू किया है, व जूना घरिन्द वाहते हैं चारो तरफ भातक हो भातक हो हिन्दू तदफड़ते खुटपटाते पत्राव से बाहर प्राथ वाहत हैं वारों तरफ भातक हो भातक हो हिन्दू तदफड़ते खुटपटाते पत्राव से बाहर तथा है वाह वाह के हिन्दू तदफड़ते खुटपटाते पत्राव से बाहर तथा हो वाह हो जा गुरू भातकवाद भपना जड पाताल तक पहुंचा चुका है। एक हा खमय एक ही दिन अनेक भानों में विस्कोट तथा सबैदनवाल, महत्त्वपूण स्थानों पर भी बमो का पाया जाना उपवादियों के हरादा भार उनके होस्ता का तथा उनके साव वार पहिल्हा का वाल वाला तथा सामा है।

उग्रवादिया पर सनिक कायवाहा को एक वष होने जा रहा है, उप्रवादो बौसलाय हुए हं उनका पश्चाचिक मानसिकता निर्दोष मासूम लागो के खुन की हाल। खेलना चाहता है। घल्लू घारा करने की उनकी तथारिया पूरा है उनक अतरनाक सकत भामिल है। हिन्दुस्तान के एक सवाददाता क अनुसार शून्य एक, शून्य दा भीर शून्य तीन। ये है कुछ उप्रवादियों के कुछ गुष्त सकत जिनका प्रयाग उपवादी अपनी हिसात्मक कार्रवाईयो को सचालित करने मे करने। इनका प्रयोग ग्रासन्न चल्लुघारा सप्ताह के दौरान हागा। चुन हुए इलाको ग्रीर लक्ष्यो पर सकेत मिलते हो उग्रवादी सक्रिय हो जायने भीर खुन-खराबा मचायगे। जून्य एक का भय है एक समुदाय के (हिन्दुभी) लोगो की हत्या। शून्य दो का अर्थ है रेल पटरियो पर बम रखना और भून्य तीन का झर्य है कुप्रो मे जहुर डालना-इन गुप्त सकेतो से उनके श्रत्यिक खतरनाक इरादो का श्रन्दाज लगाया हा जा सकता है। वे इससे भी कही बढ-चढकर खोचर हैं। भाग नागरिक इस हालत को साक्षी भाव से देख रहा है लिकन भीरे-भोरे साभारण नागरिको के मन मे भी लावा बहुने लगा है। लोग अपने आपको असुरक्षित सममने लगे हैं। उनकी भृकुटिया तनने लगी हैं और मुट्ठिया कसने लगी हैं। अब समय शा गया है, सरकार इन हत्यारों को इन देश ब्रोहियों को कठीर दण्ड देकर ग्राम नागरिक के मन मे सुरक्षा की अवना जगाये अन्यवा देश गृह्युद्ध के कवार पर जा पहचेगा।

सैनिक कार्रवाई के दौरान जो फीचनी जोशन से माकर अपनी छ।वनियों से निकल पड थे उनमें से ५०० सैनिक पकडे नहीं जा सके उन प्रशिक्षित छैनिको कास्तराभी कम नहीं है। उनका पकडान जाना भी प्रशासन के निकम्मेपन का सबूत है। गृहमन्त्री ने रहस्योद-घाटन किया है कि बहुन बड़ी मस्या मे ऐसे पाकिस्तानियों को गिर-पनार किया गया है जो श्विका का भेव घारण कर भारत मे घुस झाये वे। सरकार ने भिल छात्र सघ भीर सकाली दल के सिरफिरे सदस्यो को भाच्छो वडीसरुवामे पुन गिरफ्नार कर लिया है भ्रौर भातक विरोधी वानून भो पारित कर लिया है झाशा है इससे उग्रवाद पर काबू पाने में सफलता मिलेगी। गृहमन्त्री की ग्रावाग्री के प्रति हमारी सहानुभूति भी है परन्तु राजदण्ड जैसा कठोर होना चाहिए वह दिखाई नहीं पड रहा है। श्री चव्हाएं। कहते हैं हम बातचीत के द्वारा समस्या का समाधान चाहते हैं वास्तविकता तो यह है कि अकालियो की प्रमुख माग मानी जा चुकी हैं लेकिन फिर मी समस्या मुह बागे ज्यो की त्यो भीर ज्यादा बढ-चढकर सामने लडी है। यह सुविचारित मत है कि पजाब में मगर कोई समस्या है तो वह उग्रवादियों के कारण है और आतकवाद से ही पदा हुई है। इसलिए समस्या है उग्रवाद ग्रीर गुण्डा-गर्दी, इसका हल राजैतिनक वार्ती से सम्भव नही है समाज विरोधी तस्वो से निपटने के लिए डण्ड की भावस्यकता है। भातकवादी पजाब अवौर निकटवर्ली राज्यो मे व्यापक निसा भटका कर देश की एकता भीर मखण्डता को नव्य करना चाहते हैं। ऐसे तत्त्वी से बातचीत करने से कोई लाभ नहीं निकल सकता।

सेनिक कार्रवाई की वर्षगाँउ पर जनकी योजना बडी सनरनाक है परन्तु प्रशासन वदि सतर्क रहे तो धातकवादी कुछ भी नहीं कर पायेंगे। अब तक दिल्ली में जो भी धातकवादी गिरपनार हुए हैं वे धाम नागरिकों की सतर्कता और सत्ताहीय प्रयत्नों के हो समय हुध्या है। पुलिस तो केवल महत्त्वपूर्ण सुराग हाथ लगे हैं इसी को विज्ञासिक करती रही है। ये महत्त्वपूर्ण सुराग पुलिस को छोडकर घन्य सब की समक्ष के बूले से बाहर हैं। अत सरकार को ध्यान रखना चाहिए कुछ पुट्ठी घर मिरफिर पूरे समाय को धातकित कर सकते हैं। साम्प्रदा-पक्ष विदय की धाग मडका सकते हैं। इसलिए उपवाद का इलाज पहले करना होगा। प्रावेनस्थेय माप्ताहिक के उत्पाही विद्वान् मध्यावक जो को प्रेरणा मं यह नवा स्वम्भ धारम्भ किया बारहा है। हम इस लेकबाला से धार्यसमाज के दिवहार को प्रेरण २६ नहीं नियो द्वारा प्रायं वाति के रत्तर को ग्यांन का यन्न करेते। इस लेकबाला में घयममाज के जात धजात सेवको क जीवन की घटनाएँ वी जायेगी। इनिहान का सुरन्ति रक्तने की यह एक उत्तम विधि है। हम दनम जो कुछ भी निकान सम्प्रायण हुंगा।

प्रसिद्ध वाकारी वेस के प्रक्रियुक्त प्रकार मं श्री पर रामप्रसाद श्री पंविस्मल के सम्भव्य में तो बहुत से मार्च कानते हैं कि वह एक दह धायसमाजी वे परन्तु उनके सहयोगी ठाडुर रोधनसिंह जो के बारे में धायममाज के सर कोगों को भी धात यह जन नहीं कि वह भी एक सिद्धा-सन्दिन्द देवन मक्त धार्य पुरुष्ठ के। वह कान काउरी में हैं य तो उनके पुत्रच पिना जी चल बसे। यह समा-चार सुनकर उनके नक्ता से एक प्रभू भी न पिरा। केवन दनना हो कहा 'सन् मन् तत् बत कत नन।

फासी दण्ड मुन कर भी उन्होंने संध्योगामना वा व्यायाम के नियम को पूर्ववत् निशाया। फासी पाने से कुछ समय पूर्व भी सन्ध्या वा स्नान करके सन्दें दल्य पेनते देसकर जेल प्रिकारी दश यह गया।

फाडी पाने से लगनग एक सप्ताह पूर्व धारते मिल को लिखे पत्र से धारते वह मानिक व त तिसी, 'तधार न कम लेकर मराना तो धारत्य है। ससार मे कुकम करके मनुष्य धारने बार को धार-कीति का जागी न बनाये बार गरते वमन हैकर का धाग रसे। यही वो बातें होनी माहिए। ईक्तर की कुना से वे बोनो बातें मेरे लाव है स्वसिष्ट मेरी मृत्यु किसी प्रकार मी सोच्यनक नहीं है। दो वर्ष से बाल कप्ती से प्रकाह है। इस धार्मि में इस्तर की जामना का बहुत सम्बाध बन्द हरवार निसा। '

यह ऐतिहासिक पत्र तो आवाकक की पुस्तकों से मिलता नहीं। इन बीरों के बिलतान के समय खपी एक पुस्तक से बहु खपा या। वह पुस्तक विदेशी कासन ने जन्म कर ली थी।

बीर रोधनसिंह को प्रयान में फासी ही गई। धाज उस स्थान पर जवाहर लाक जी की माता ने नाम पर मंडीकल कालेज है। इनके शव की शामा गला तो निकालन की अनुमति ने मिली परन्तु गई उसी पुरत्क में निका है कि इनका यदिम सरकार मार्ग सामाबिक रीति से किया गया।

इनके झन्तिम सस्कार की एक कहानी है। इनका सुपुत्र महाविद्यालय

तस्यामञ्च--

आर्यंसमाज के इतिहास के लुप्त-गुप्त पृष्ठों का अनावरण

आर्यवीर की वीरगाथा-१

लेखक प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु' वेद सदन, ग्रबोहर

वहा ध्रायसमात्र चौक प्रयान से ध्राया और कहा कि मेरे पिता जी का धनिसा सहनार शैंटक मेरिन से ही होषा। तस्कार कौत करवायेगा? नवर से दशनवक चल रहा वा तय रि श्री विश्वप्रकाश जी (प॰ माप्रमाद उत्ताच्याय जी के वितीय सुदुत) ने कहा, "मैं चलता हूँ। मैं नरवाऊगा।"

विश्वज्ञकाश जी ने १६७१ ई० में हमें सगव बताया था कि रक्त साक्षी भी रोशन सिंह का अन्तिम सस्कार मैंने करवाया था।

उसी प्रलम्भ पुस्तक में लिखा है कि ठाकुर जी पवित्र भीश्म् अब्द का उच्चा-रस्स क'ते हुए हसते इसते फासी पर भूस क्ये।

पाठक बृन्द । जब जोग क्रांतिका-रियो के सक के समीप जी नहीं फटकते थे, उस पुन में क्या कोई साबारण सी बात जी कि दिन जने सार्वचीर बडे जोच से तस्कार्शविष्ट हाव में निये उनके प्रसिम सरवार को पहुंच जाते थे।

बब राजेन्द्र लाहुडी फासी पर बड़े — बीर रामप्रशास वा ठाडून रोखनीहरू के एक साथी राजेन्द्रनाथ वो लाहुडी में । वह उच्च किस्तिन बुदक के । ब्रस्तिन बिनों में उन्हें गोडा के जेन में रखा नया। वह मी को ईस्तर बिन्मासी के। पासी बच्च पने बें पूर्व नीता या उपनिषदों का पाठ करते रहें।

धापने धन्तिम इच्छा स्वतः की कि उनका शह कर्म हिण्डू शेति से किया आव । काकोरी के शहीयों पर स्वती उप-रोक्त ऐस्टिहासिक पुन्तक से यह स्वता निक्ता है कि बोद्या के ओ लोव उनके सब के साथ समझाल जूनिक में गये— 'उनमे ध्विष्टतर सार्यतमात्री सन्त्रन वे।'

वसी पुरतक में निकाह है कि पार्य समाबी नोग बीर वहींद रावेंद्र साहती सी धर्बी के बाव कर करण दे वेद मन्त्रों का उच्चारण करते हुए 'आरत माता की क्य- भारत माता की व्य' के व्यक्तारे बागी हुए सम्बान मूर्गि में पृत्रेषे। इस प्रकार निर्मिक द्वार्य बीरों ने दम्के इस समुत्र का ब्रन्टिंग सकार किया।

सुपुत्र महाविद्यालय धार्यक्षमात्र के इतिहास की ऐसी र स्टब्स्टब्स्या वर्देका। कितर्नही महत्वपूर्ण वटनाए हैं, जिनकी

चर्चा धार्यसमाव से बाहर वाले तो करने से रहे। धार्यसमाव का इतिहास लिखने बालों को भी इनका जान नहीं। हम बाहते हैं कि धार्यसमाव की नेरी से को कुछ कहा जाये सप्रमान हो। ऐने तच्यों के रका करना इतिहास की बहुत बड़ी सेगा है।

भीर गांधी उसट गई — धानी कस की बात है आर्यसमांक के उत्सवों हा नगर कीरोनों में हमें सहसानें बनाते हुए मस्त्री से गांने माने एक सन्यासी को मुनने का सीनाम्य प्राप्त होता था। वह सन्यासी वे ऋषि भस्त स्वामी बेवडक सी। वह हरियाणा के एक छोटे से मान में एक विस्ता परिवार में कन्ने के। सार्य-समाजी क्या बने एक ब्रिया पुक्य बस

गये। वैश्व वर्गके विष् कोई दन बार जेल गये।

२ जून, ११८%

वह हमे बताया करते थे कि प्रचय विश्व युद्ध के पश्चात् वह प्रथम बार वांकी भी की पुकार पर जेल में नवे। धबोहर बे कोई बाठ मीख की हरी पर दोतारां बाली बाम ने छन्होंने विरपतारी दी। तब भापने भपना नाम विरवानन्द रखा हुमाबा। इस क्षेत्र में यह प्रथम राब-नैतिक मिरफ्तारी थी। पुलिस ऐसा दुर्ध्यवहार करती वी कि स्वामी जी को रस्सो से बाच कर पुलिस ने अपनी गाडी के पीछे कस कर बांच शिया। कुछ दूर ही गये थे कि गाडी उसट गई। मुसलमान बानेदार लाखू को बहुत चोटें ग्राई। ईरवर का विधि विधान देखें कि हमारे स्वामी जी को एक भी कोट न आई। वानेदार ने कर जोड क्षमा मागी कि 'बाबाकी भाग की बददुक्या से "बुके चोटें बाई हैं। 'स्वामी बेघडक जी ने कहा, "मैंने तो नेरे दुर्व्यहार के कारण तेरा बुरा नहीं मागा। मैं तो इन यात-नामी को देशहित में हस हस कर सहन कर रहा हू।" बाइए ! इन बार्य वीरो कास्मरण कर देख में हिंसकों वा कूर लोगों से लोहा सें। (कमश)

वह देव भूमि भारत यही है

जहाँ सम्मताका सर्वप्रवाग उदय हुआ का सम्मताओं की काननी बारत पूनि यही है कहा जान का सन से पहले प्रकास हुआ का यह देवी की पूनि भारत वहीं है

> बहा विद्या का आदिकाल से सम्मान रहा बास्मीकि बेदस्थास की मारत मूमि यही है बही विज्ञान का प्रारम्भ से प्रवत्न रहा कपिल कवाद ज्ञूचियों की सम्म भूमि यही है

बहा सत्त्वाविता की ररी सबैव मान्-ता हरिश्यन्त, गुनिष्ठिर सर गावियों की भारत भूमि वही है जहाँ वानशीसता की सबैव रही प्रतिका कर्ष भाषामाह हाज़ियों की मारत भूमि यही है

> व्यक्तं कुनपुरुषों का होता रहा सदैव पक्षार्थक राष, कुन्दल, दवानस्य की भारत भूमि बही है बहा जन्म नेने के लिए वालायित रहे देवता वह देवसूमि भारत बही है।

-- शकुनवन्द विद्यारद, सामगत, वि० रायवरेसी(७० प्र०)

श्रमृत-कलश

जो-को भी कोशिश कर करके हिस्सत की पीय बढाता है। इस भ्राजम में सरदार बने, बढ -चढ के मोभा पाता है।

> बह कौन सा उकदाहै को वा हो नहीं सकता। हिम्मत करे इन्सान तो क्या हो नहीं सकता।।

गिरे सौ बार भी निजनी सगर किस्ते-सगन्ना पर। जो हिम्मतदार हैं मायूस कब होते हैं हासिस से ॥

सिर सना सा कटाइने पर वन न नारिने। वंजिन हमार हुए हो, हिंहम्मत न हारिने॥

श्री विनायक दामोदर सावरकर का परिचय प्रसर राष्ट्रमस्ति के वयकत ज्वासामुत्री, कान्तिकारियों के हृदव सम्राट् के रूप में, शण्डमान की काल-कोठरी में नारकीय यातवाए सहते हुए भी साहित्य सुबन मे रत रहने बासे, हिन्दुत्व के मन्त्रकटा के रूप में तो देशवासियों को ज्ञात ही है पर बीर धौर स्वातन्त्र्यवीर इपाचि से विभूषित सावरकर जी इस युग कै महान साहित्यकार भी थे। हिन्दुत्व, हिन्दु पावसाही १८५७ का भारतीय स्वातन्त्र्य समर, क्रोसेफ मैजिनो, सिसी का स्फूरिवायक इतिहास, माम्ही जन्मदेव, रा॰फुने, नीमान्तक उत्शार सन्यस्त सहक नेपाल मराठी भाषा की शुद्धि, उत्तरप्रिया, काला गानी बादि बन्त-र्राष्ट्रीय स्थाति प्रवित ग्रन्थों के रचयिता है। बीर सावरकर केवल भारत के रत्न ही नहीं वो तो विश्वरत्न थे।

मारत के हो नहीं निश्व के इस मणूटे कारिकारी विवादे सपने महान् थाय से स्वराज्य एक स्वयं को सजीवता प्रदान की भारत के पुनर्वावरण ने ठोड चिन्दन प्रदान करने वाले इस पुत्र पुरुष को जीवन के हर कोन ने स्वयंची गाते हैं। (१) बीर सावरकर भारत का गहला खान वा विवे देश निज्य मारा। (२) बीर सावरकर प्रवाद किस्सा गया। (२) बीर सावरकर प्रवाद प्रदान । (२) बीर सावरकर प्रवाद प्रवाद । (२) बीर सावरकर (३) बीर सावरकर विव्य व गहला बीर-स्टर वा जिले परिका गाव होते हुए भी

विश्वरत्न

स्वातन्त्र्य-वीर सावरकर

नरेन्द्र अवस्थी-सचालक आर्यवीर दल, दिल्ली प्रदेश

प्रमाख-पत्र मही दिया गया, (४) बीर सावरकर पहला भारतीय युवक या जिस ने सन्दन के अन्दर १०५७ के तथाकपित गदर को भारतीस स्वात-स्थ सन्नाम का पुरतक १८५७ का स्वातच्य समर ' बो प्रकाशन सं पूर्व ही जन्म कर लिया गया। जिसकी केवल एक प्रति उन दिनो दो सी क्वये में बाजील के एक पाठक नं लरीडी

२८ मई १८०५ को क्रान्निकारियों के प्रेरणास्त्रीत स्वातन्त्र्यावीर सावरकर का जन्म दिवस था। बीर सावरकर युगद्रष्टा महींच त्यान-इ जी के बिन्तन से प्रत्यीवक प्रभावित से । सराठा प्रमुखी दिनिक से उन्होंने महींच स्वानन्त र एक लेक्साला भी तिसी। महान क्रान्निकारी देशभवत त्याम जी कृष्ण वर्मा के परम खिष्य वीर सावरकर ते १८०६ से हिन्दी को राष्ट्र- प्रावा वनाने की घोषणा को भौर उद् को मात्र मुसलमाने तक सीमित रक्षेत को बात कहीं। उन्होंने अण्डमान की जेल से ही वीन्दयों को हिन्दी पत्रवाम किया वे बन्दी साथियों के सिक्स के लेक लेक सावालय का को हिन्दी प्रवार वहुत सफल रहा। जहां पहले के लेक के लायालय का काम ६० प्रतिसत उद् में होता था उनके प्रयासी से नागरी लिए में होन लगा। उन्होंने भाजादी के बाद परमास्त्र बन बनाने की माग्र रक्षी। उनके तीन नार राजनीति का हिन्दुकरण, हिन्दुमों का सैनिककिरण वे देश का उद्योगीकरण पर्वित हिन्दू भमन में लाए होते तो बाज राष्ट्र की सलब्दता को चोट न भ्राती जारत तीसरी शिक्षन वनकर विद्व के मानविज्ञ में उनरता।

नाम दिया तथा १० मई १६८७ को १८५७ का सम सताब्दि समारोह स्वत-न्त्रता दिवस के रूप में मनाया। (३)चीर सावरकर थिया के प्रथम लेखक हैं जिनकी वी धौर निवसे कानात्तर में कात्तिकारें वन्त्रवेक्कर, क्रहीद ए-काजम काततिह व नेताबी सुभावचन्द्र बोस ने प्रकारित कर प्रचार किया। (६) बीर सावरकर प्रथम भारतीय हैं जिनका प्रविश्वोग हम न प्रत-राष्ट्रीय स्थायामय में कता (७)शीर खाय-रकर प्रवम क्रांतिकारी ये विवर्षे दो प्रावम्य कारावासीं (४० वर्ष को वेल) के वण्ड विसे गये (८) बार सावरकर प्रवम वेसानस्क हैं जिन्हें २० वर्ष पर्यस्त बन्धी बीवन विशाना पद्या और केल से हीं प्रपना सम्पूर्ण ग्रीवन गवाना पद्या। कोस्ट्र में बैंक को क्याह जुतना पद्या, चूने को वक्की चलानी पद्यी राम वास मूनना पद्या और को भी मार भी सहुनी पड़ा।

(E) बीर सावरकर पहला कैंदी या जिसने धण्यमान (नालेपानी) मे बेल की दीवारी पर कील की लखनी से (कागज कल्म के धभाव मे) ही साहित्य सूजन किया।(१०) बीर सापरकर प्रथम मेघावी है जिन्होंने कात पानी का मजा काटते हुए, दस सहस्र पवितया को कण्यम करके यह सिद्ध कर दिया कि सुष्टि के धादिकाल से द्यार्थों न वाणी द्वारा बदो को क्रिम प्रकार जीवित रक्षा। (११) राष्ट्र के पुनर्निर्माण मे भारत का उद्योगीकरण राष्ट्रका सैनिकीकरण व राजनीति का डिन्ट्करण' का ठोस कायकम अन्तुत किया। (१२) बीर शावरकर भारत का प्रथम दूरदर्शी राधनीतिज है जिहान १६६७ में शत्रुपक्ष को बेताया भीर उनकी हर नविष्यवाणी समय की क्सोटी पर सरी उत्तरी।

महान् क्रान्तिकारी की प्रेरक जीवनी, जन द्वारा निकित अन्य पुस्तकें प्राप्ति हेतु व जनके चिन्तन की गोरिंडमो के माध्यम के प्रहम करने हेतु मिनों या पत्र व्यवहार करें।

इस समय दिल्लीकी गही पर अस्ता-उद्दीन सिलजी बादशाह होकर बैठा था। यह बहत पूर्व तथा निष्ठुर शवसाह था। राजपूताने ने चितीड के सिहासक पर उस समय राखा जीमसिंह विराजमान वे। श्वसाउदीन ने सुना कि राशा की नहा-रानी पधिनी बहुत ही सुन्दर है। वह पचिन' को किसी भी प्रकार पाने के लिए बढी भारी सेना लेकर राजपूताने नया सीर वितीड से बोडी दूरी पर उसने ध-ानी सेना का पडाव डाला। उस धूत ने राला के पास सदेश भेजा -- 'मैं पचिनी का पतिविभव शीको मे देशकर सौट जाळगा 'महाराजा भीम सह ने इतनी बात के लिए व्यर्च रक्तपाल करना अच्छा मही समन्ता । उनके बुलान पर प्रलाउद्दीन दर्गमे आया। दर्पण मे राना पश्चिनी का प्रतिबिम्ब उसे दिसा दिया यथा। मोटते समय राजा उस दुव संबाहर तक प् वाने भाये। दुव से बाहर अलाउदीन ने पहले से सपन शीनक खिरा रक्से थे। उन्होंने राजा पर झाज़मण करके उन्हें पक्क किया भीर बन्दी बनाकर भाने

राखा के बदी हो बाने ने चिनाड के

शिविर में से सवे।

किशोरमञ्च-

वीर बालक बादल

दुर्ग मे हाहाकार सच गया। बादबाह की सेना इतनी वडी थी कि उससे सीवे बदाम करके विजय पाने की कोई आजा नही थी। धन्त में रानी परिपनी के नामा कोश ने एक योजना बनायी। धलाउद्दीन को सबेग मेजा गया - राभी पश्चिमी बादगाह के पास माने को तैयार है, यदि उनके ब्रा जाने पर वादशाह राला को छोड दें। रानी के स ब सात सी वासियाँ भी धायेयी। याता सैनिक उन्हें रोके नही। बादसाह ने इस बात की बड़ उत्साह से स्वीकार कर निया। साथकास प्रन्थकार होने पर दुवं स सात सी प लकियाँ निकली । बादकाह के सैनिक विजय के जन्माद ने उत्सव मना रहे वे : साही सेना मे बहुच कर रानी ने पहले राजा से मेंट करनी बाह्य और यह माय भी स्थाकार हो बयी। द्वाप क्या सोचते हैं कि राजी परिपनी पालकी में बैठकर साबी बी?

पासकी मे रानी बनास्त्री वेश में छिपा श्रास्त्र शस्त्र संसुक्षणियत रानीका बारह वर्षकासुन्दर भान जा बालक बादल वहा भावाथा। दूसरी पालकियों में भाराब-पूर्त सो ही बैठ व धीर प लका उठान वाले कहारों के वेश में भी र अपूत योद्धा ही थे। राएग को मुक्त करके वा पर बैठ वर कुछ सैनिको के साथ दुस का ग्रार उन्होन भेज दिया घोंगस्वय गलाउड्डान की सनापर शस्त्र लंकर टूट पड । गोरा इस सेना का भनापतिस्य सम से था। बादल ने इस युद्ध मे झद्भूत बारता विकालायी । लेकिन मुटठी बर राजपूत समुद्र के समान विशाल जाही सेना स कव तक लडते। गोरा रणभूगि मे खेत रहा। दोनो हाथो से तलकार चलाकर यक्त सैनिको को गाजर मूली की माति काटता हुआ बालक बादन दुव में पहुँच गया। श्रवाउदीन चाहता था कि इस युद्ध

का सम्बार दुव मेन प_{र्}च । श्र**वा**नक ब्राह्मण करके वह पश्चिमी को पश्चकर दिल्लीले जाना चाहताया किन्तु उस बारह वय के बासक ने उसकी एक औ चास चलने नहीं दा। दूग में समाचार पहुँचत ही राजपूर बीरों ने केसरिया बानापहनाधीर निकल पड बस स्वा मातृम्मि पर मस्तक चढाने । बडी कठि नाई से ब्रलाउटीन को विजय प्राप्त हुई । धपनी ध्रमिकाश सेना की बलि देकर जब वह वितौड के पवित्र दुग में घुसातब बहा बहुत बडी चिता घाँय घाँय करके अल रही थी। राजपूताने की देविया पापा पुरुष के स्पन्न से बचन के लिए सरिन स प्रवेश करकं स्वगप्त च चुकी थी। धला उद्दीन ने अपना सिर पीट निया। भारत की वह नौरवसयी दिक्य भूमि मतिये के तेज के हाथ वीर बालक बादल की गुग्ता एव बलिदान से निय उज्ज्वल है। बच्चे हमे ऐसे वीरों सं शिक्षा नकर सपनी मातृपूमि एव सस्कृति की गार 🕶 🕶 य केकर सुरक्षा करनी है। प्रपना भविरय उज्ज्वस बनाना धीर द्रान्या के नामने व्यवना मस्तक ऊषा रखना है।

---प्रस्तोता बलबीत शास्त्री

१ वेद विद्या एवं विज्ञान का भड़ार है—

वन स विविध प्रकार का विज्ञान है।
सह विज्ञान अलो के माध्यम से हमार क्खा
से प्रवानित था और उसका सबसेय किसी
महाँच कम से साल भी प्रवानित है।
सहाँच व मा न्यान द जो सरस्वती ने
स्वान्न घोषणा की कि बेन से सब जान
विकास बीज छए से हैं भीर सक को स्वीवादी गत स निकास कर विज्ञान के सहाया स स्वान स्वान के सहाया स स्वान कर वजान के सहाया स स्वान कर उपसालिता का स्रमुख्यान योरोप बीर स्वारिक सुनी कमा है और उसके सुज रिणास सनक हान से प्रतीत होने करो हैं।

२ यज काय वैज्ञानिक है-

वेद मे यज्ञ को विश्वभिषक कहा है। भर्यात् यन द्वारा समस्त विन्व को स्वास्थ्य भायुत्रवन प्राप्त होता है भ्रीर समस्त रोगतया रोमो क कारण त वो का प्रदूषस्तो का निवारस भी होता है। प्रत किस परिस्थिति मंकीन सायज किस प्रकार कर इसका विचार करने से ही यज्ञ विज्ञान का विकास करने म सफलता प्राप्त होगा यज्ञ के ३ प्रधान धग है १ सकल्प २ मन्त्र भीर३ ब्राहृति। सकल्प के बिना यज नहीं हो सकता मन्त्र के बिना भी यज्ञ नहीं हो सकता और अन्ति में हु॰य पदार्थों की आहुति दिये विनाभी यज नहीं हो सकता। इन इन तीना का समन्वित काय यज्ञ हे। सकल्प होने पर हायज्ञ सम्भव है। यही यज्ञ का भाषार स्तम्भ है वेद कड़ता है वेंद २५।१४। बर्यात कल्यालकारी यज करने के विचार सब ग्रोर से प्राप्त हो। जब विकारों में निमन्त क्लि उपे करने के निए उद्यत हो जाता है तो वह सकल्प हो जाता है।

३ यज्ञकाय में मन्त्रको प्रधानता-

लौकिक ० थ बहर मंग्रज का स्रव विचार भी है पर तुयज्ञ की परिभाषा मे इसका साबद के ही मंत्रों से प्रधान रूप से बहुए। किया जात है। मत्र ६३ यात्मक होते हैं। ध्वनिका प्रभाव जड चेतन जबत् पर धवस्य हो^{डा के} लाक में प्रस्यक्ष इट्ट है कि विकृत विनियों के उच्चारण एव प्रसारता स मननिक विकृतिया उत्पन्न होती है। बीररस वा ब्वनियो स बीरता का सचार प्रमरस की ध्वनियो से प्रम नान्त रस की व्वतियो स शानि शोकभात्रपूर स्त्रनियों **से** को का प्रसा रण होता है भीर वह प्राशियों के मन स्तन्व पर प्रभाव करता है। मन क प्रभा वित होने पर तदनुरूप वृत्तियों की उत्पत्ति होती है भीर वृत्तियों के अनुरूप ही कर्मों की प्रकृतिया उत्पन्न होती हैं। बत ग्रुम

यज्ञ - विज्ञान

लेखक श्री प० वीरसेन बेदश्रमी वद विज्ञानाचार्यं

विचार पूर्ण म त्रो से शिव कल्या एकारी कर्मों की विचव मे वृद्धि समृद्धि बाहु स्यता और स्य पकता धवस्वस्थायी है।

४ मत्र छन्दोमय है-

वेद काप्रत्येक ग्रक्षर चरण पश्चित व सम्पूरा मन्त्र छ दोमय है। उनमें सब शक्तिमान् परमात्माकी गुप्त शक्ति व साम-व निहित है जो यज्ञ काय से क्रिया शील हो जाती है। छन्द नियत ग्रक्षर या मात्रायों में निबंद होते हैं। नियत बंबर बद्ध दो के नियत स्वरों के व्यन्यारमक ग्रावनन से घ्य यात्मक मण्डल की उत्पत्ति होती है तथा उस मन्दाके पून पून साथ तनचक्र या जप से चाहे वह जप मानसिक हो य व्यासक उसका मण्डल उतरो त्तर वन वपूरातया गतिमय होकर विशा लता को भी प्राप्त होता है जिससे प्राणियो मं उनसे स्वाभावत विलयो एव कममय प्रवित्यो का प्रवाहचलने लगता है अत यज्ञ मे सकल्प एव तदनुकूल मात्री का पुन पुन बावृत्ति से मन्त्र का प्रभाव तेज होता जाता है और छन्दात्मक मण्डलो की सुष्टि होने सगती है।

५ छन्दात्मक मण्डलो का निर्मारा−

खद यद्यपि प्रधान रूप से ७ हैं परन्तु इन सातो छन्दो को भी प्रमुखता से तीन विभागों में विभन्त किया है। ये तीन विभागही मू भूव स्व हैं। इसन्द परि भाषा मेय गायत्र मण्डल क्रिष्ट्रय मण्डल भीर जागत मण्डल हैं। इन्ही मण्डलात्मक प्रभावो की विद्धि के लिए गायत खन्दमा रोह तैष्ट्रभ छन्दमारोह जागत छन्दमा रो " बच्चा गायत्रण त्वा छन्दवा सादयामि जागतेन त्वा अन्दसा सादमामि प्रवका यायत्रण त्वा सन्दशा मन्यामि तैष्टु भेन त्वा छन्दसा म मामि, जागतेन स्वा छन्दसाम शामि — की प्रक्रिया का यजुबद मे प्रनक स्थानो पर उपदेश है। इस प्रक्रिया के द्वारा पृथ्वी क्षन्तरिक्षासीर बुलोक म प्रपने मनोवास्त्रित विवारी की व्याप्ति की जाती है।

६ मण्डनो ८ देवतत्त्वो एव प्रार्गोका क्रियाशाल एव शक्ति सम्पन्न करना—

्न प डलो के श्रांति काशु एव भूव देवतत्त्व हैं। इतको भी सरीक करने क लिए श्रांति काइत बना कर प्रांत्रिक पुरोस्थे। अबुवर २२ १७। यकाथ श्रांति की स्थापमा ग्राप्ते सम्मुक्त भूभूव स्व सन्त्र से विभोको को प्रभावित करने के लिए करनी पबती है। पुत्र उनन प्रयुद्ध
बक्षाित से तीनो सहाव्याहतियाँ स उनके
देवत तत्त्वो के साथ उनके सविध्य प्राथा
स्थान और ज्यान रूपी विकल प्राया
लिए साहतिया दो जाती हैं। वर्षात् यक्ष
हारा समस्त बह्याप्ट या निनोकी के
प्राथों को क्रियातील गुद्ध एव पुरुष्ट
किया बाता है। इसलिए वेद ने यज्ञ को
विवय्बा साहा। यजुर्वेद १।५१ कहा है
सर्थात् यक्ष सहार का वारण पोष्णकर्ती
है। यही यक्ष का प्रथान सक्ष्य है। विश्व
यक्ष से सहाव्याहतियों उनके दैवत तत्वों
कोर उनके दि व प्रायां) के लिए साहति
नहीं बहु यज्ञ स्वप्ता ही है।

७ यज्ञ का त्रिलाकी में गमन-

वज्ञ की यह प्रत्यक्ष एवम् श्रस्यन्त गढ स्थिति है कि वर्डा चड्ड एक्स् अनु मान प्रचीत् सूक्ष्म प्रतिसूक्ष्म एव व्यापक रूप से समस्त बिरव ने व्याप्त हो जाता है। यजुर्वेद शब्याय ५ के १५ व मन्त्र मे यञ्ज की इस स्थिति को प्रकट किया नया है। बहाक हानया है कि — इद विश्ल विचक्रमे — बर्चात् यज्ञ प्रारम्भ होने पर बहुयज्ञ क्रमण उत्तरोत्तर वित करता हुद्रा। त्रचानिदवे पदम्-पृथ्वी शतः न थौर बलोक भपने स्थान को प्राप्त करता है सर्वात् स्थिति को प्राप्त होता है। --- समुदयस्य पासुरे--- सर्वात् यज्ञकी यह स्थिति नागत्र मण्डल जिल्ह्य ज्ञाहन **भागत मण्डमो मे** या भू मुख स्व कोको मे बस्यन्त गढ गुप्ता एवम् बनुमानयम्य है। विज्ञानगम्य है। तात्पय यहहै कि यज्ञ को केवल धूम की ऊषाई स नहीं नापा वासकता। वायुकी ऊर नाई से भी नहीं जाना जा सकता। उसकी व्यापकता विवत् सूय रश्यि और प्रकास के समान व्यापक स्विति को समभक्तर जाना का सकता है।

दयज्ञ से सुस्वको प्राप्ति –

यक किय जाने पर यहाँप वह ती तो नोकों में न्याप्त हो जाता है पर पु वह नव नवार से पुन या निवासों हो कर हमें सुख प्रयान करता है। ऐका वेद में रास्त्र वहां हो हमें हमें सुख प्रयान करता है। ऐका वेद में रास्त्र वताया है। जैना कि —यत्रो देवाता प्रत्येति कुम्लम् । युव्दय सन्धाय स्वत्र व प्रयास कि निवास हमें सुख को सात है पार सार्विश्व के सुख सुवास के सुख प्रयास करता है। इस क्षा सुख प्रयास करता है। इस क्षा सुख प्रयास करता है। इस सुब को सुख प्रयास करता है। इस सुब को सुख प्रयास करता है। इस सुब को सुख प्रयास कुष्ट सुवास को सुख प्रयास करता है। इस सुब को सुख स्वास करता है। इस सुब को सुख सुवास करता है। इस सुब को सुख सुवास करता है। इस सुब सुब को सुख सुवास करता है। इस सुब को सुख सुवास करता है। इस सुवास करता है। इस सुवास करता है। इस सुवास के सुब सुवास हमें सुवास करता है। इस सुवास के सुब सुवास हमें सुवास करता है। इस सुवास करता है। इस सुवास करता है। इस सुवास करता हमें सुवास करता है। इस सुवास करता हमें सुवास करता हमें सुवास करता है। इस सुवास करता हमें सुवास करता

और प्रविक पूरा हो कर प्राप्त हो जाती है। किस प्रकार से प्राप्त हो जाते हैं उसके सिए मान के दिशीय करता उसाहरण यह प्रस्तुत किसा है कि जैसे साबार में करीरते हैं वैसे हो सब के द्वारा भी शुकों को बारीरत हैं। प्रकृति सब से सुकों की माणि प्रश्यक लेख में होती है। सत प्रश्येक काय के प्रार्थन में यह का सनुष्ठान समस्य कारका नाहिए।

ह यज्ञ का महान् फल विस्व मे माधुर्यता का प्रसार-

यजुर्वेद धम्याय १३ के २७ से २६वें मन्त्री मे बताया है कि यज्ञ के सम्पन होने से माधुय ग्रायुक्त धर्वात् धनकूल बायुष्टी का प्रवाह चलने लगता है। नदियी में करनों में मधुर रस का सचार होता है भीर भन्न वृक्ष वनस्पति बनादि विष रहित रोग रहित होकर सब मधुमुक्त बीवनदायी हो जते हैं। यज करने से रात्रि धौर दिन सुन्दर उचा ये सब सब कारी हो जाते हैं। पृथ्वी के कम कम मे चूलि मे मचुरता उत्पन्न होती है मचु रता उत्पन होने धूल में जो विश्व सनता है वह नष्ट होकर परत्पर धाक्ष्यता से रेनिस्तान माग अवर सूमि मे परिवर्तित होने लगता है और रेनिस्तान स्थिति नष्ट होने लगती है तथा खुलोक जो अपने अतिताप से पार्चिव शक्ति का हास करताहै। वह भी साधुय गुणयुक्त प्रिय एव बनुकन शक्तियों से शिता तुल्य बर्चात् पासक और जनक शक्ति युक्त बन जाता है। इस प्रकार विश्व की वनस्पतिया बल्न बुक्ष फल मूल कल्द एवं वन तथा समस्त पर्यावरण मधुर वन जाता है। सीर शक्तिया भी बाधुय बुरायुक्त अनु कुल हो बाली हैं और नी खदि पशु भी माषुय नुरायुक्त समतमय दिक्य दूध के देने वाली हो जाती है। प्रत बज से समस्त वर्षावरण अपने अनुकूल बन जाता है ऐसा सुम्बर बझ का भुगम विज्ञान है।

१० यज से पल प्राप्तिका एक ग्रद्भुत प्रकार—

वजुर्वेद प्रदमाय २। सच २५ से बताया है कि जनती छ द के सभी से यज्ञ करने पर यज्ञ खुलोक में पृत्वता है। जिब्द्य सम्द के मन्त्री से बन्न सम्तरिका में प्रचता है भीर नायती सुन्द के मन्त्रो से यज्ञ पृथ्वी में फैसता है। पून इ.ही स्थानो संबह और सूक्ष्म एव विभक्त होकर सब को पस प्रदान करता है। व्यवती इतन्द क मन्त्रों सं किया यज्ञ सुक्षोक पर सूत्रप्रकाश को प्राप्त होकर जनत की तृप्त करता है। ध तरिक्ष मे पहुचकर वहा से जल विभाग की प्राप्त होता है तो बायु और वर्ष बन की सुद्धि करता है और पृथ्वी पर पट्टच यश विविध प्रकार 🖲 पुत्र की वृद्धि करता है। सर्वात् यज्ञ जब पृथ्वी पर किया जाता है तो उत्तरी त्तर बारोहण क्रम से सूरम तो हो बाता

यज्ञ-विज्ञान

है, परन्यु छन तीनों स्थानी से घीर भी स्कम एव सामध्यं वान् होकर एक नये वर्षावरण का, जीवनीय पर्यावरस का निर्माण करता है। इसी को प्रकारान्तर से श्रजुर्वेद प्रध्यास ८, मन्त्र ६० में निम्न प्रशार संकहा है — कि यज्ञ खुलोक मे यह बकर दिव्य भोगो को प्रदान कराता है। उससे हमें द्रविस्प, धन, सुब, ऋत्वनु-कल मोग प्राप्त होवें। यह यज प्रन्तरिक अण्डल सीर मनुष्यों को प्राप्त होकर बक्त फल प्रदान करता है। पृथ्वी धौर ऋतुकों को प्राप्त होकर यज्ञ उक्त सुस प्राप्त कराता है-बत यज्ञ बहा कही भी किमी सोक मे पहुँचता है वहा से हमारा कस्य सा ही होता । प्रशांत् यज्ञ करने क्षे पदाध नष्ट नहीं होते घौर न किया ही निष्कत होती है — प्रपितु सब घार से कल्यास ही होता है।

११ ब्राहृति शक्त-

🗪 अति हुव्य बाहुक है। अत इच्छित को कः प्राप्ति के लिए हब्य पदार्थों का ज्ञान मावस्यक है। राग, प्रदूषण, विकार द्यादि निवारक कार्यों में किन हुव्य द्रव्यो से लाभ होता है। वासु मण्डल की पुष्टि किन द्रव्यों से होती है, ब्रतिवृष्टि, बना-अपूर्तः किन द्रव्यो से दूर होती है, इत्यादि **ब्**व्य पदार्थ विज्ञान का ज्ञान सावश्यक है। तभी यज्ञ कार्य मन्त्र सामस्य से विशेष फनदायक होता है। यज्ञ का विज्ञान यज्ञ पद्धति इच्ट कार्यानुकूष क्षमकाण्ड तका हुव्य पदार्थी के ज्ञान पर श्राधित है। दिना इस ज्ञान के यज्ञ करने मात्र से इष्ट फलप्राप्ति सम्भव नही। प्राचीन ऋषि महर्षि वेदी से मनेक प्रकार के यज करते थे और उनसे फलप्राप्ति होती बी। इसलिए उन्होने कहा-सर्वेम्यो हिकामेण्यो यज्ञ प्रयुज्यते — सर्वात् यज्ञ की सब कामों के लिए उपयोगिता है और श्रमानता है।

१२. यज्ञो का विभाजन~

यज्ञो का विभाजन निम्न प्रकार है-

१ — रालकृत विशाग न सर्वाचत, २ — स्वान्तिस स्वाचित है — राष्ट्र सर्वाचत, ४ — साम्रिक सावयवस्तानुसार। किसी श्रम स किसी भी फल की प्राप्ति मान सेना बस विज्ञानका तिरस्कार करना है। विविध प्रकार के दशों में सामान्य प्रचाली तो सावपार्त्रत एक हो सकती है परन्तु स्वान शबन में तो मन्त्र मेस, उच्च भेद एव क्रिया मेद तो पृचक् होते हैं।

कासकृत विशास से सवित्त सत्री ने वित्तक सम्मित्तेत्र मात, प्रात की कास सिंदयों में, पश्च प्रम्न सम्बन्ध घरि पूर्णि-सावों मे, चातुनीस्य यान, सवनयान, सम्बन्धरिक साव, पर्ववास, नवरात्रयान ये सन कालकृत समियों से सम्बन्धित यह हैं। इनसे प्राकृतिक पदार्थों से शक्ति की बृद्धि एवं घपनी धाष्यास्मिक शक्तियों की बृद्धि होती है।

व्यक्ति राष्ट्रया कामना सबिधनयज्ञ –

इन यजों का ग्रापोजन व्यक्ति विशेष के भायू से सबचित होता है। जैसे विवाह सरकार, बज्ञोपशील बदारभ गर्भाषा-नादि वोडश सस्काराय यज्ञ होते हैं। वे **व्यक्तियों से सबक्ति हैं तथा राष्ट्र सब**-चित यज्ञ राजसूव धश्वमेषादि हैं। व्यक्ति-वत कामना एव सामृहिक कामनाधो का पूर्ति के लिये किये जाने वाले यज्ञ काम्य यज्ञ हैं। व्यक्ति कामना राग कब्ट निवा रहा बन ऐस्वय प्राप्ति निमित्त कास्य यज होते हैं और सामृहिक कामना जैस वृष्टि कराने, भतिवृष्टि निवारशाय आधी तूफान आदि की शान्त्ययं, सामान्य एव विशिष्ट स्थानो मे प्रमुख प्रदूषसा निवा-रलायं, सर्वेश्वीस्पप्रद यज्ञ झावश्यकता-नुसार मिन्न-भिन्न प्रकार के यज्ञ कल्प पद्धति से होते हैं तभी उनका साम हाता है । सर्वात् वीतवामी का फल समग है। स्मालयागी का फल बलव है बीर काम्य बज्ञों का फस प्रतग है। यह स्पष्ट समधना चाहिए । प्राकृतिक प्रदूषसा, वैचारिक प्रदूषण तथा वैज्ञानिक, ग्रीखो-निक रासायनिक प्रदूषण इन सभी की शान्ति स्वापि यज्ञ से ही सम्भव है तथापि उनका धायोजन यज्ञ विज्ञान पद्धति से ही कल्पना पूबक होगा तभी सफलता होवी ।

यज का प्रधान हव्य द्रव्य-चृत-

यज के हविज्ञक्यों ने युत ही प्रयान है। यदि पूतनी का हो तो सर्वाधिक बेच्ठ है भीर प्रभावकारी है। वृत का नाम प्राज्य है। प्राज्य का सर्व है—सा समन्तात् नोकान् जयति भनेन -- धर्मात इनके द्वारा भोड़ सोकान्तरों के प्रदूषशा रूपी बसर तत्वो पर धांबी, त्फानो पर विजय प्राप्त होती है। इसनिये युक्त की बाहतियों ने समस्त पर्वावरण का शोधन होता है। यूत नाम इसका इसलिए है कि वज्र में इसकी बाहुतियां विशेष प्रमाण मे देने से वर्षातया कामनाश्रो की पूर्ति करता है। इससे वें प्ति होती है भीर वैद्यु-तिक नमोमण्डल मे व्याप्त विख्तु खनित को प्रदीम्त करताहै। युक्त का नाम सर्पि भी है। जब यह बज मे प्रयुक्त होकर बन्तिरम मे गति करता है तो इसकी वित सर्प की नित के सदश तीय होती है और ग्रपने साथ हुट्य द्रव्य के प्रश को भी विविध लोको में से जाता है। तेस बादि या भैंस, बकरी भावि के चूत ने तीनो सोको ने फैसने की शक्ति नहीं है। केवस

शायत्र मण्डल तक ही व्याप्ति की सामर्थ नी के प्रतिरिक्त वृत एव तेसो में है।

भ्रन्य हवि द्रव्य-

वेद से बृत के स्रतिरिक्त हुन्य का प्रयोग भी करने का बादेश हैं। क्ला बुवन्वित पदार्थ रोबनाशक पदाय, पुष्टि प्रदाता, मासुर्य प्रसारक द्रव्य जीवन प्रदाला द्रश्यों की हिंब प्रदान करनी चाहिए। धवर्षवेद में निखा है कि जिन धोर्षाध, बनस्पतियों का सेवन गोएँ करती है वराह और नमुक्त धर्मात् नेवमा करता है उन सब को यक्त में प्रयुक्त करने से रोग की धनाध्या दिश्ती नष्ट होनी है और जीवन तथा हार्यु प्राप्त होनी है।

.

कौन कमी है ग्रपने हिन्दुस्तान मे

धन्नर दिखता नहीं बाग दमशान में, तनातनी हे पूजा और धजान में । ऋगडा होता बीता और कुरान में, कौन कमी है स्रपन हिन्दुस्तान में।

> नेता की नारों से रिस्तेदारी है हाठों पर बादे मन में मक्कारी हा रीम रोम पर दुव की गहरेदानी है, वेदामिलत के चोले से बरारी है। सर्विषान के पन्ने पाठ जाते हैं जानिस्सानी मा जाते हैं। निरुपाब हत्यायों वा विलक्षिता चले, कभी सबस गुजरात कभी पजाब जन।

दूध नहीं बच पाया तेज उफान में च्हेचूंसे हुए ग्रपने सलिहान में। स्थासुस मिल पायेगा लालिस्लान में कन कमी है प्रपने हिन्दुस्तान में।

> हिन्दी की बिन्दी बाथे पर नगी नहीं, ऐसा लगता है घंभी गुनामी भगी नहीं। कृटिया में घव तक दीवासी मनी नहीं, भारतमाता घंभी बुद्दायिन बनी नहीं। वेदनागरों का वर्षस्व घंभूरा है। घंभी चंपीकत तुनसी कृदिग, राही क्विनी हिन्दुस्तान नहीं धंपमोंचा, तो क्या घरव उमें विर पर विठायेगा।

बल्दी हम सब जलते हुए श्रकान के, मुदेंजिन्दा होने लगे मकान मे । समृत दृढ रहेविय की दूकान से कौन कमी है अपने हिन्दुस्तान मे ।

> कुर्सी ने भोजापन कलकरपकड शिवा, कम्बसने तैराको को पिर वकड तिया। खपनी सपनी साम जमी को पढ़ी हुई कुर्ती बनी विराग बाइई छड़ी हुई। वो कुछ नापो कुर्धी के निल वायेगा, सुवाहुसाहून किर है किन पास जनता नेव-वकरियो का पर्याय वनी, को कसाई 'ता जनता नाय वनी।

कितने हैं पैक्ट बाब ईमान में, खेद बहुत हैं घपने इस बलयान में। इन्सानो सी बात नहीं इन्सान में, कौन कमी है घपने हिन्दुन्तान में।

बर्क और कानून हो गया बचा है, विना कफन वर्षी है टूटा कन्या है। ऊपर ते हर कोई रखनीयबा है। बना करन करना बनो का बचा है। बनी नहीं है बेटी कुर्जी भेज के, कहनी हुई हुन्हन है हुन्द यहेज के। रोनी रहना नहीं तमिक परहेज से, जपटे उठती है बुहान की केन से

सुद को सापा रहे हैं फूठी शान में, पड हुए हैं ताले तेज अपनान में। खुड़ी हुई बैठी है मौत अथान में, कौन कमी है अपने हिन्दुस्तान में।—

> रोज-रोज सब जलने लगा तिरगा है, मानो या सत मानो यह सब नगा है। लेक्ट झांड दम की होता दगा है, घो घो पाप थकी वेचारी गया है। पिचल रही झाड़ी से कचन जगा है, डग घाज हो गया बहुत वेडमा है। कदम कदम पर कितने विल्ले रगे हैं सामु-सन्त, नेता हो गयं लक्ते है।

बहुत बेसुरापत है धपनी तान से, क्टेपल सह्वीनी नहीं उडान मं। जाते नहीं शब्द बहरों के कान से, कौन कमी है धपने हिन्दुस्तान थे।

> प्राच्यापक साग्स्वत मोहन मनीवी स्नातकोत्तर हिन्दी विवाग डी० ए० वी० कालज, धवोहर (हरियाणा)



व्यामपीठ---

उपनिषत् कथा-माला-५

ईश्वर दर्शन

प्रवचनकर्ता-वीत गग स्वामी सर्वदानन्द महाराज

म्रो विश्वानि देव सविनर्दृरितानि परासुव । यञ्जूत तन्त्र मासुव ।।

-- बबुबंद

उपनिषद् स पण्यः त्या की इस ज्या-स्था की ब्यान से लग्ग र हा है। एक स्थी प्रवित्त वह पण्यात्मा ह एको वशी सव की स्थाप्त से कल भी करचुका हु। इस से पहल इन्हर्णक प्राथा है। इस से से पहल इन्हर्णक प्राथा है। कि स्वान प्राप्त कलाना है कि प्रधारमा न तो स्पन स्वन्य संविद्यन होता है न परिख्यास से बाता है। द्वास्त वह एक है। उससे स्वन्या

बुँडमानो क सेतो का भी कुछ न कुछ साथ हाता है। इस निनेनाशो को मास कोर्ट बुर्डियान् मनुष्य देखे तो उनमें भी कोर्ट नमोद शिला निवास सकता है। उपनियाने ने परमान्या को बदलाने के लिए यह सिंड दिमा है कि यह एक है। गणित में को यो को स्वस्मार होनी है, उसमें भी एक चित्त्वति है इसी प्रकार सीन से भी, बार में भी एक मिना है। एक बागक परिसन है विन्तु दो का एक परिसित नहीं। कागब पर एक सिसी। बहा सस्या भीर खास्य योनों ने एक ही है। श्रत्यस्य परमात्या एक ही है।

क्या जारतीय, क्या जापानी, क्या धमरीकन सारास को भी कोई है सब मिलकर एक ही परमास्था की उपासका करते हैं। कोई वो की या तीन को नहीं करते। कोई उसे ही 'बीड' (God) कहता है, कोई ''परमास्था', कोई ''खुदा'। किन्दु कह है तो एक ही।

धन देखों । सभी कहते हैं कि बच्चों को माता पिता की बाजा पालन करती बाहिए । बच्च तो पें कि कही माता तथा विता के कालो में मेरा कोई ऐसा धान्य न बाये जिसमे न दु जिन हो । ' रसी प्रकार माता पिता को धान्य उच्चों का विवार रक्षों । देवन रहानों की साज-पालन करता है तो रवाभी भी नवक की बाल मानना है । राजा प्रजा की तथा प्रजा को साज प्रजा को तथा प्रजा को तथा प्रजा को तथा प्रजा को साज प्रजा को वात जुनवी घोर मानती है । राजा प्रजा को प्रण्ने माता करता है हमें भी के क्षा पर साज करता है हमें भी के क्षा पर साज हमा करता है हमें भी के क्षा पर साज हो "खाने ही धपना मरक कुना वाहिए वाही "खाने ही धपना मरक कुना वाहिए ।

है? आग नया नयी बन सकते हैं? अब आग बनी हो जायेंगे तब प्रकृतिका खाक-मण साथ पर न हागा। जब जीव निर्वाख हो जाता है जब यह स्थित हो जाता है, जब यह प्रकृति के प्रभाव में नहीं रहता, तायह एक नियम है कि तभी जस पर प्रभु को कृषा होती है तब ही जाकर बहु बधी बन सकता है पर्वत्त मुक्त हो तकता है। परन्तु यह नव होता है अब वह उम प्रभु की अस्ति करें।

सब प्रस्त यह उत्परन ह्यां कि हम सुन्नी कत होने 'पुरुवास करो ' मुन्न अभ्य होगा। प्रान्नती मतुष्य ही समार ने सदेव जुन्न उठाता है। हिन्दुस्तान सुन्नी क्यों नहीं 'व्यांकि मूच पुरुवार्थी नहीं, जब पुरुवार्थी होगा तब ही सुन्नी हो जायेगा। माई 'सहार सुन्न के लिए हैं।

इससे भी बढकर परमेश्वर की।प्रप्ति के सिए पुरवाध होना चाहिए। ईश्वर तो सब का पिताहै। एक पुक्त के दो नक्षे हैं पिता से वे दोनो रुपये मानते हैं। पिताक हता है ''बाई सुनो [।] श्रव तुम वायान हो यह सब कुछ, तुम्हारा ही है परन्तु धमी मागना ठीक नही। कार व्यवहार करो, कमाधो और साधो । एम नडका वसना वडा निपुत्र है पर दूसरा हेमन्त निर्वृद्धि है। बसन्त ने सोचा, 'पिवाबी की भागा है कि नमाना चाहिए। दुकान के नियमी पर व्यान देने नया। प्रातकाल दुकान पर श्राता दुकान को शाबनानी से ठीक भीर साफ रसता । सब प्रकार सावधान रहता। ग्राहकों से प्रेय-पूर्वक पोलता बाजार का माव ठीक-ठीक बताता। बहु नहीं कि जो मान मिमा समासिया । एक भाव पर बाजार के साथ चनता । साथ कम रसता, सन्व्या-समग्र लक्षा करके घर जाता । सब ग्राहक कहते, "बसो भाई । बसन्त की दुकान पर चनें '। प्राह्क उसके पास प्राक्रर वडी प्रसन्तता से बैठते। साल भर में सर्च कम किया, दुकान से कमाया आहुव । माल औ बागे ने विवक भर सिया, पांच शास शी रुपये भी जमाकर लिये। सोव भी बडे प्रसन्न, पिता भी महा धानन्दित धौर धाप

धव दूसरे शहके हेमन्त की सुनो। उसने विचारा, "पिता ने क्यवा दिया है कूद मीज करो"। उसकी वेसनमधी वेस- कर बुरे लोगपास बाने सने । भग, शराब, पीनी बारम्म कर दी । प्रतिदिन सिनेमा वाता, दुकान पर ब्राहक बाते, उनसे मसी प्रकार ध्यानपूर्वक बात भी नही करता। बैठा ताश केमता रहता। उसी में मन्त्र का ग्राहरू दूसरी दुकान पर क्सा चाता। एक वर्षमे ही सारा रुपया दर-बाद हो गया। ग्रब मीची पिता के दोनी पुत्र हैं। एक पर पिताकी प्रसन्तता है दूसरे पर सप्रसन्तता । नशी प्रकार पर-मात्मा हम सब का विता है भीर हम सब ससार में रहन वाले उसक पुत्र है। को उसकी माजा पर चना उस पर तो पर मात्मा की कृपा दिलाई देती है जिसने चसकी माजा ना भग किया उसी पर उसका कोप है।

यह तुम्हारा कार्य है लोहे को तो तुमने नहीं बनाया परम्तु इञ्जन को तो तुमने ही बनावा है। इसी प्रकार पर-मात्मा ने सब को सोहा वे विया है, उसको ठीक बनाना और काम में जाना वा न भागातो तुम्हारे सपने समिकार वें है। यदि योग की प्राप्ति करना चाहते हो, तो वह को क्यी परमास्था है, उसकी प्रार्थना करो । पहुंचवान बनवा चाहते हो तो किसी पहलवान के शिष्य बनी। यदि ममेजी सीश्रानी है तो किसी श्रोफेसर से ही सीकनी पढेगी, नाना खीकना है ती किसी रावी के पास ही जाना होता। बाप ने सब गुण विश्वमान हैं, पहलवानी भी है, अग्रेची मी, राग भी । परन्तु इनके लिए किसी की सहायता की आव-स्यकता है । बदि तुम वसी बनना बाहते हो, तो परवात्मा की उपासना करो।

धव प्रश्न होता है, कैसे करें ⁷ सर्व-भूट भारमा परमारमा तुम्हारे भन्दर है। प्रमुको बाहर कहां दूदते हो [?] न वह ब्राकास पर है, न द्विमासक पर, न समुद्र मे, वहतो तुम्हारे अम्बर है। परमास्मा कहता है ' न मैं घासमान पर हू, न समुद्र वे, बाहर कही नही हू। केवस ऋषियों के मनो में ही भेरास्वान है" ऋषि कहते हैं बोगी को, सच्चे स्वानी को । सच्चा त्याव विस मनुष्य के पास है|बह सबस्यमेव मुक्तिकी धोर वाता है। झावकत तो स्वान-स्थान पर रहट समे हुए हैं। पहले कुछो पर वरस होते वे। कुए से पानी सेंचने वाला चन चरस ऊपर भा जाता वा, वो उसे पाँच भारता था, इसकिए कि चरस कार कुएं की कुबेर के साथ टाकर

न साथे भीर था बाये। इसी प्रकार को स्वाय करते हैं वे कहते हैं 'इटाओं! इटाओं! सब इटाओं!

एक सच्चा साथुथा। बनाबट और विसायट का उस पर कोई प्रमाय न या। वह एक बृहक्यी के घरवया, वहां एक दिन रहा। दूसरे दिन नहां से चन पना ! उसने कहा, 'महास्था जी ! ध प दरिया के पार जाना चाहते हैं परन्तु वाट वाले पैसे निये बिना पार न जाने देंने ।" साधू ने कहा, "भाई हिम कह देने कि हम साधु हैं। हम फकी रों क पांस पैसे कहा ?" उसने कहा, "वे न मानेगे।" उसने बहु-तेरा कहा परम्तु साधुने उसके एक पैका र लिया। उस भादमी ने चुपके से भठन्ती साधुके पस्त में बाध दी। महामा को ज्ञान भी न हुआ। भीर वह दरिया की भीर वस पदा। वह पुरुव भी पीछे-पीछे हो लिया । साधु दरिया पर वहका। मल्लाहस कहा, पारकरदा। उसन क्हाकि 'पैस निकासा। साधुन कहा हम फकीर है, हमार पास पस कहा?" उसन कहा कि बैठ आस्त्रो। कोइ बना पुरुष बाएवा तो उनसे मागकर द देना हम तो पैसे बिय बिनान जाने देंगे।" साधुन कहा, 'सभी सही भीरवठ गया है धकस्मात् मल्लाह की बच्टि क्षपट पर वर्ड । उद्यन कहा कि 'बाबा तुम ता कहते हो मेरे पास बुध नहीं। परन्तु यह क्या वधा है[?] उसने कहा, 'आर्ड़ी को है तुन ही कोल मो। मल्काइ ने काला सो धटन्नी निकली । **उ**सने कहा 'बाबा सुम क्ठ बोसते थे। 'साधु ने कहा, मैंने क्ठ मही बोला।' जब मल्लाह किश्ती पर व्यक्तकरपार करने लगा उधर से बह बृहस्वी भी था गया । उसने कहा -- "महा-राज । देसा यह घठन्ती जो मैंने बाच ही बी, उसी ने पार किया। यह न होती दी आप पार कैसे चाते ?" साधु ने कहा, "बाबा । यह कमबस्त कव तक बधी थी, क्रमी तक मैं पार नहीं जा सका, जब सुज वर्ष तो पार हो नया।

इसीलिए "ऋषि सच्चे त्यांनी 🛶 कहते हैं। ससार में बनाबट के काम सब विगड जाते हैं। परन्तु परमात्वा के काम । तो नहीं विगडते । उसकी घोर सच्चे माव से बड़ो। जैसा कहा है कि ''परमात्मा ऋषिके मन मेहै।" तुम ऋषि बन जाको । वह स्वयं तुम्हारे मन मे श्रा जायेगा। एक मनुष्य घरन मे बैठा हुआ। भी त्यान करके ऋषि वन सकता है। कारण, परमात्मा सर्वेन्यापक है। सभी जगह है, कही तिनक-सी जगह भी उससे काली नहीं। उसे प्राप्त करने का श्वान तुम्हाराधन्तकरण है। इस स्वानकी तो तुमने कभी स्वच्छ ही नही किया। जब तक प्रस्त करण स्वच्छ न हो तन तक बरमात्मा की प्राप्ति नहीं हो सकती > मन को पवित्र बनाओ। मन की पवित्रता में ही तो वह है। परनेश्वर को पाना सुनम है। (क्रमभ)

वान्वाहिक बार्ववन्देव

समीक्षा-

सफल जीवन

केसक प० पुरेसकम् वेदालकार, समीकक डा॰ विवय विवेशी, प्रकाशक सार्थ कुवार समा(रविक), किंग्सवे विल्ली : प्रकाशन शिथि सेकाराम विवेशन विवेस १८०८ पुरु स० ७० मृत्य द० २०० मात्र ।

प्रस्तुत पुस्तक में प० सुरेशचन्द्र बेशककार विस्तित सन्तर लेख सकतित है। इन लेखी में बताया नया है कि वब के बन्तों द्वारा किस तरह वर्ष और जीवन के वास्तविक स्वरूप की जानकारी हो सकती है तथा मानव बीवन को सफल बनाया का सकता है। विद्वान् लेखक ने बडी सरल भाषा में बताया है कि मानव कीवन केवल भौतिकता का समाहार नही है। यह परमात्मा की देन है। जीवन की सफलता का यह मतलब कदापि नही है कि मनुष्य रोग देने वाल भोगों के पीछे भागते हुए अपनी सायु के बहुमूल्य लाग मध्ट कर है। इसके जिपरीत जीवन को श्वफलता, जीवन की प्रमुके वरलों में क्षपंत्र कर देने में निहित्त है। इसका कारण यह है कि जानव प्रभू के जितना निकट रहता है उतनी ही उसकी शक्तिया बढती है, उत्तना ही उत्तमे नवा उन्हाह और उल्लास बाता है। जीवन की सफ-सताका दूसरा रहस्य बनवान् बनने में है। व्यक्ति के बलवान बनने से ही राष्ट्र बलवान् बनता है। इस कथन का समर्थन क्रभूकी वाजी बेद से लेकर सभी बाधुनिक सन्तो भीर महात्मामो ने किया है। मनेक यद्योषित उदाहरणो के द्वारा पण्डित जी ने इस बात को बड़ी शब्दी तरह से सम-भागा है। इसी तरह 'मृत्यु एक मधुर कविता है ने बताया गया है कि प्रशानता बच्च मानव मृत्युको कठोर और निर्मय मानता है। अवकि वास्तविकता वह है कि मृत्यू अमुख्य के लिए एक बरवान है श्रमिकाय नहीं । वैविक संस्कृति में मृत्यु ्रणी भीषणता नही है। मृत्यु तो मानो

जीवन वृत्र में श्रगाहुबासुन्दर एका है। (पु०१७)।

'मनुनेव (मनुष्य बनो) लेख मे प० जी ने बनाया है कि देवता बनने की ध्रपेशा मनुष्य बनना प्रविक्त कठिन है। मनुष्य बनने के लिए धर्मानुसार श्रावरण करनापडताहै। चन ही मनुष्य धौर मानवेतर प्राशियों के बीच विभाजक रेखा की चना है। धन से हीन सनुष्य ग्रीर पञ् में कोई यन्तर नहीं होता (धर्मेण होना पशुनि समाना)। सन वम से हीन होना नानवता का ग्रपमान करना है। इसी तरह मौसाहार करना प्रभुकास्मरए। न करना, जीवन को यज्ञनय न बनाना धात्म ज्ञान से रहित होना बादि ऐसे कर्म हैं जिनसे मानवता तो कलकित होती ही है, जीवन का प्रशस्त पथ भी सकीएाँ हो जाता है।

बस्तुत पुस्तक में भी सुरेशकल वेदा-सकार ने सपने कवन को देश-विदेश में स्विटित नटनासी तथा को से ते जिता है। देकर पुस्ट दिवा है। उजूक पटनाएँ स्टीक होने के बाम ही नार्मिक भी हैं। इनका बच्चा प्रवान पाउकी पर परेवा, इसमें कोई सम्बेह नहीं हैं। वैते यह पुस्तक किसोरों के लिए जिसी नयी है, परन्तु इसके सभी तपह के लोग नामानित्य है। सकते हैं। सस्त्रों भीर उपवेशकों के लिए इसकी उपयोगिता स्वतिन है। ऐसी उप-वोगी पुस्तक के बकावन के लिए सार्थ कुता वार्या किसी-द ने पदा-विकारी में बबेह नवाई के गता है।

निर्वाचन

वार्यवयाय कोटा का ८७वा वार्षिक पुनाव दिनाक १९-५-८५ को सम्पन्न हुवा विवर्षे निम्न पदासिकारीयण पुने

प्रवान — की सोनेववर जी पूर्वियान वजी — वनवारीकाल सिंह्स कोवास्त्रका — की कन्वास्त्रमञ्ज नित्तक पूरतकास्त्रका — की कृत्रनत्वन विक्री पुरस्तकास्त्रमञ्जी प्रभुववानकी सर्वा क्षिकांत्रस्ताकार्या

वीर वस -- श्री राजववाल वार्व विका परीवक -- श्री विवनारावस वाहेती अपप्रवान -- श्री बीकृष्स वी सावक,

-धी बीकुम्ख वी सावक, की विरधीयम्ब की बाहेती जीवती स्वयंगीदेवी की वार्या उपमधी — बी वनवरीप्रवाद वर्मा बी वादकरता वी बाहेती

> शबदीय वनवारीसास सिंहस मंत्री

स्त्री श्रार्थेसमाज मा**ड**ल टाउन दिल्ली का वार्षिकोत्सव

हर् मई १६०६ शनिवार को शोप-हर १ वर्ष से ४॥ वर्ष एक वर्ड हर्गोस्तास के साम महिला सम्मेशन के कप में सम्मन हुया। जिसमें धनेक विदुषी महिलाओं हारा समीट एवं प्रेरस्थासायक उपवेस हुए।

इस कार्यक्रम की विशेषता यह रही कि नई पीढी को धार्यसमाय के कार्य-क्रम में सक्रिय करने के सिए बचुधी को सम्मानित कर प्राथीनीय विधा गया।

मकुन्तना दीकित, वन्त्रिशी

श्रार्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की वर्तमान स्थिति के संबंध में निरीचण श्रास्था का संचिप्त विवरण

श्चर्यं प्रतिनिधि स्भाटिल्लीकी स्वापना१४ मिलम्बर १८७६ को का गई थी भीर बतनान समय मे इसम सम्बद्ध १५० भागसमाज व ८ शिक्षण सस्थाए हैं। विक्षण सस्थाको की प्रवन्ध समितियो का निर्माण प्रतिनिधि समा द्वारा गठित बार्य विका परिचद करती है। शिक्षसा सस्वाधो मे नैतिक शिला व्यव या की गई है भौर नैतिक शिक्षा की परी क्षाए भी भागोजित की जाती हैं। नैतिक शिक्षाकी पुस्तकों भाग १ से भाग १ / तक समाद्वाराप्रकाशित की गई हैं। वेद प्रचार विभाग में ४७ उपदेशक (बिनमे से २ वैत्रनिक हैं) और ३ अजनोपदेशक वैत्रिक रूप में कार्यरत हैं। ब्रावेसमाजी के साप्ताहिक सत्सयों ने नियमित रूप से उपदेशक मेजने के प्रतिरिक्त ४ टोलियो मे प्रचार कार्न व्यापक रूप से किया जाता है। इस विभाग के श्रीक्षकाता भी स्वरूपा-नन्द भी प्रपना पूर्ण तमक देकर सुचार क्य से इसका कार्य सचालन करते हैं। सवा के पाछ एक मेटाडोर बस भी है, जिसका उपयोग प्रकारक मेजने में किया जाता है। इस सभा ने पिछले ३ वर्षों मे उस्लेखनीय कार्य किए।

१ द्यार्थं महासम्मेसम (दिल्ली के ३ विजिन्न कों त्रों में)

२ प्रचार वाहन का कय ३ सहर्षि दयानन्द निर्वाण क्षतान्दी (तासकटोरा स्टेडियम दिल्ली मे) ४ साहित्य प्रकाशन विशाय का

४ साहित्य प्रकाशन निवियो की स्थापना।

६ पुरानी स्थित निश्चियो का व्याज सहित पूनन वी रेगा।

उद्ग्दशन तथा ग्राक्षणव को पर वेद प्रचार एवं महर्षि दयानन्द पर एक विकास

द प्रमुख मगाचार पत्रों से सैंद्धा-विक् विषयो पर नेस्रों का प्रकाशन।

मभाकी स्रोर से एक साप्याहक पत्र ग्रायमदेश २००को मध्या मे निय-भिन कासे प्रकशित होताहै। पत्र के सपादक श्री यशपाल सुचाञ्च ने योग्यता पूर्वक इसके कलेवर को सवारा है। इस पत्रिका कास्तर उस्तत होता जा ग्हा है। सभाकी झोर से सेवाप्रकल्प के रूप मे वीवानचद हस्पताल का सचालन भी किया जा रहा है। इसके साथ ही अनेक बार्वपमाओं ने बाने चिकित्सालय भी कोने हुए हैं। पिछले वर्ष सभा ने कार्यान लय पर १४४२४), वेद प्रचार पर, ७६०४०), मार्यसदेश पत्रिका पर ६६,७११) प्रार्थ विद्या परिवद् पर ४ १४१) बीर वीवानचन्द चिकित्सासय पर ६६१७०) क्षये व्यय किए।

सार्यं प्रतिनिश्चि समा दिल्ली की चतुर्मुखी प्रवर्ति सर्वेता सराहतीय है। स्वतंत्र सराहतीय है। स्वतंत्र सरी एको एको स्वतंत्र स्वतंत्र स्वी एको एको स्वतंत्र स्वी एको एको स्वतंत्र स्वी एको एको स्वतंत्र स्वी स्वतंत्र स्वी स्वतंत्र स्वी स्वतंत्र स्वी स्वतंत्र स्वी स्वतंत्र स्वतंत्य स्वतंत्र स्वत

डा॰ भागन्दप्रकास निरीक्षक एवम् उपमत्री सार्वदेशिक समा, दिल्ली

श्रारत्त्वग श्रार्थिक श्राधार पर हो

 जन का साधार वातीय होने के कारण वेंसनस्य लिंदे व जनोमानित्य बढ़ता है । वीर वर्ग तथ्य का हर है । वीर वर्ग तथ्य का हर है । वीर वर्ग तथ्य का हर है । वेंदा तथ्य का स्थान पुरत्य के हो रहा है । इस व्यवस्था के कारण वे युवक को सुधीय तथा भेषानी हैं, धना का प्रवत्य नहीं पाते और वेंदा तथा समाव को को नकी प्रतिभा से विचल रहना पहला है । विद धारणण की व्यवस्था जातियत के स्थान पर प्रथमत साथा र की बाय वो समाब का प्रयिक हित इसमें निहित है ।

रावेश्याम 'ग्राय' एडवोकेट मुसापि रस्ताना, सुलतानपर (उ प्र)

समाचार-सन्देश

श्रार्यसमाज जनकपुरी का वार्षिकात्सव पूर्व समाज भवन का उद्घाटन समिरिष्ट

धायसमाज पक्षारो र सी लाक जनकपुरी का वाधिकील्ख दि० ५ स १२ सई १६६५ तक समार्गक पुत्रक मनावा बया। इस करवेद के मणी से नृहर गर कुछा— धिमके बहुा— वैख रामकिनीर जी साचाय डा॰ घावरपति जरास्यान साचाय शिवका त लगान्य साचीय सीति का साचाय ति का मनावा सीत्र साचीय सीत्र साचीय सीत्र साचीय के मजन— उपदेशपुर होते रहे इन प्रकली हारा साव्य त करवान को साच्या के मजन— उपदेशपुर होते रहे इन प्रकली हारा साव्य त विवार सुनने की सिने।

शांसे प्रकान मानदेशिक धार्ष प्रतिनिधि सभा ने का। इस सम्मेवन के प्रयुक्त । इस सम्मेवन का प्रवास वाप्त के प्रवास की ने कहा अप बदास वाप से कोई आति पाति की व्यवस्था का नहीं मानता है पर न्यू एवं कम के धा बार पर वय व्यवस्था को नहीं मानता है एक स्वास का स्वांत समस्त । सम्मेव सम्मेव पर स्त । स्वाम का स्वाम



उद्चाटनकर्ता—औ। वीरसन ची राज्यमन्त्री जारत सरकार । बार्केसे डा॰ एस॰ पी॰ शुक्ला व्यासदेव मेहता मेजर र मधकाश चाम बालक मानवेद विद्यासावर मदाव

१ नई १६-५ को नवनिमित साथ क्षाज भवन पर घोश्म व्यवारोहक सायरल डा॰ सत्येव भारदाज द्वारा किया नया । तक्ष्ण्यात् उनका घीशत दन की किया नया । ११ मई को महिला सम्मेलन सी शकुन्तना घाया की घम्य सता में मरण्य हुया जिससे कुरांति निवारल से महिलाघो का बोगद न विषय पर से विचार प्रस्तुत किये गय ।

१२ मई ११८ स रविवार को साथ स्वयाव नवन उद्यान्न की वीरतेन की क्रिनीय राज्य मना ने किया। उद्यादन स्वयाने की भागवता की स्प्यारीकाल बर्मा ने की। मनी जा का परिचय की सीम पास की (सुपुत्र की रपुनीरसिद्ध साथ्य सुतपुत्र मनी सावसीलक प्राय प्रतिनिधि सहा न्यवस्थापक मनूर प्रश्च) न स्थिय। सनी जी ने उपस्थित जनतमूह को सपने नाम मं बाति सुचक गन्द निकाल देने की प्रायना की। उद्यादन समारोह के प्रथात राष्ट्रीय एकता सम्मेबन सपन हुमा—

4वि विषटनकारी ताकती को सरकार ने राजनैतिक लाज की शब्द से छूट वी फिर तो ग्रायसमाज मूक रूप से भौन नहीं बैठा रहेगा। शायसमाय के सिद्धान्त साब भौजिक हैं भीर वेद की वाणी बयेमा वाच कल्यासी मानवमात्र के लिए है। धन्य बक्ताओं ने विकस जी ने धायसमाज के कार्यों की सराहना की बौर इस प्रकार के सम्मलनों को समय समय पर भायो जित करन के लिए बायसमाय का कन्य वाद किया । शाचाय उपाध्याय जी ने वैदिक उद्धरणो से उपस्थित जन समुदाय को धायसमाज के राष्ट्रीय सक्ष्म की बताया। भी शास्त्री वी ने धीर सुबदेव जी ने सामयिक परिस्थितियों में बाब समाज को सजग रहने की प्ररणा वी। शन्त मे अन्यवाद समाच प्रकार नेवर रामप्रकाश वान ने किया। शान्ति पाठ के बाद समस्त उपस्थित वर्गों ने प्रीति भोज में चाग सिया।

सबदीय.

वीरांगना प्रशिच्चम् शिविर तपोवनाश्रम, नालापानी, देहरादुन

दै॰ जून १६०% है २४ जून १६०% तक के सचालक भी त्यानन बानमस्त्री की की प्रपाद क सावक्षेत्र में एक वीर्मास्त्री की की प्रपाद क सावक्षेत्र में एक वीर्मास्त्री की प्रिक्षण जिलिए संगामा जा रही है। जिसमें हरियाला ज्ञान हिमानक व उत्तर प्रदेश से केवल ४० वहिन भाग मेंनी। वह शिलिए नियुक्त होया। प्राने जाने का किराया सब का ध्यमा ध्यना होगा।

इस शिविर में निम्नसिवित महा नुभाव प्रशिक्षक एवं प्रश्वक होंगे

१ स्वामी सन्यपति बी महाराज २ भी दयान द जी वानप्रस्थी सचा लक तपोवनाश्रम देहरादून।

क तपायनाजन यहराहर । ३ प्रिन्सियल कुमारी विमला खावडा

युवा जागृति के लिए देश भ्रमण

वित्सी २६ धर्मण (स मवार योवा गुजरात सह राष्ट्र राज्यस्थान हरिय ना के १५० विद्यालयो प्रत्यस्थान हरिय ना के १५० विद्यालयो प्रत्यस्थान परिवर्ष के नेता बहुप्तारी ग्रंथ नरेश ने विध्यन्त साम जिल्ला हामधी गोष्टिओं में धरमे प्रव ननी के दौरान हवारो नौकवानो को साम महान — महण्य त्यापनि विना बहुंब विवाह करने विनेमा क्ला को बहुंब्लार करने के समान सुवार के नावों महान प्रत्यस्थान हिमार के साम सुवार के नावों महान प्रत्यस्थान हिमार के अरिनास हिलाई स्थान हिमार की अरिनास हिलाई स्थान हिमार की अरिनास हिलाई स्थान हिमार हिमार

नत १६ विसम्बर से धन्तर्राष्ट्रीय बुवायक के दौरान युवा कागृति स्ट्रिक

भाग महिला कोलेख वरनासाः ४ कुशारी पुरुषा महेती भूतपूर्व

मुख्याच्यापिको द्यात्र गल्य हाई स्कूल, कत्तरिपुर।

तकत शिविर के संघालक की यमानद वी बानप्रस्थी तथा प्रशिक्षक संयोजिका विस्तिपत कुमारी विमना कावबा होंगी ।

इस शिविष मैं भाग केने के किएहैं बहिनों को अप्रैम तिमानण है। इसमें शिविष्ठा बहिनों को प्राथमिकता दीं जाएगी। अस्त जो बहिनें इसमें जान तेना बाहुँ के कुपया २० मई १८०५ तक प्रमने प्राथमा एक स्वासक महोदय को भेजकर स्वीकृति प्राप्त करने का कट करें।

> त्रिन्सिपल कुमारी विमला **छ।स्डाः** सयोजिका

यान के जन्तवत वेशवर में युवाओं में राष्ट्रीयका तथा वेश के टुकड करने वाली ताकतों के विवड ब्रह्मचारी आर्थनरेख जनभत तैयार कर रहे हैं।

शायसमाज वायोक 'नहार में एके भटनातों में उन्होंने बताया कि वे देख के बाग्य मागो पिछड तथा उरेक्तित का की वंभी दौरा करेंगे। वे ध्रयन वेद प्रचार बाहुत के माध्यम में अपन एक प्रचार के कैसेट क्वारों हैं तथा सम्माप प्रकाश क वैदिक साहित्य का प्रचार करते हैं।

चारमोहन द्यास सवादवाता युवा उद्योव (वाक्षक)

निर्वाचन

गत रविवार की धायसमाम स्वामी श्रक्कानन्य वाकार साबून बाकार) सुचि याना का १८८६ १८८६ के लिए साबा रख समा का समिवेचन डा॰ रामस्वकप वी की प्रधानता में हुआ।

श्री स्रो० गी० पासी प्रचान---डा० राजस्वरूप वरिष्ठ उपप्रवान — भी यसपाल वाषिया उपप्रवान — कि भी भी एक्वन भी सरवाल धानन्य की धमरामाय क्याँ महान मिं — वा एव की वाषिया मक्यों कर्मपाल मक्योंन भी वनपत रा कीवाध्यक्ष — भी रामवन की उपकोवाध्यक्ष — मास्टर कुः।रीकाल भी पुरत्तकाध्यक — मास्टर कुः।रीकाल भी पुरत्तकाध्यक — की देवराव्य सैनी स्टोर कीयर मा क सोमफ्डाल एक्वन उप स्टोरकीयर — भी विवयक कुमार सक्ष

वनपतराय मन्त्री

बार्च प्रतिनिधि बचा हरियाचा के श्रीकारी एव पश्चिकारी— प्रवान प्रो० केर्रीवह पूर्व रका राज्य मंत्री उच्चवा भरतींवह पानसस्वी

क्यानम्य बठ, रोह्यक व्यक्ति सुवादिणी वेशी क्रम्बा बुक्कुस सानपुर, वि॰ सोनीपरा बी क्रम्हेशलास वी महारा करीकावाड

बन्ती जी प्रो॰ संस्कीर तास्त्री हासाबाब विद्या विकासी हरिसिंह कालोनी रोहतक सध्यक्ष सरकृत विभाग राजकीय सहाविधा-सम नजना जि॰ हिसार)

जपमन्त्री प्रो॰ सत्यवीर विद्यालकार विहाद वि॰ सोनीपत (झाणूरास किसान कालेव हिसार

कोपाञ्चक सा० रामकिसम प्रमान कार्याच्य श्रृहापुरगढ मण्डी पिक--रोहतक पुरतकाष्यक सामार्थ स्मृतिकास्त्र साथी क्रिमी स्मृतिकासन परकी शास्त्री

ये महान गुण (प्रकाशिय)

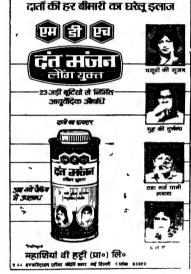
सासक नोव सनिव और समिकार पाकर कोलुप और विस्थी हो जाते हैं। इतीनिए क्लॉयन बम नष्ट होकर देश और जाति की समोपित हो साती है। दसों के इसि हार्सों पर सुक्य धींट उसमें ने कात होता है कि यस सब बृहत सत्य जग्न ऋत सोसा तप सादि मुखी का समाय हो गया तो समुन्नत दस भी रसातम को चमा स्था। लातन का कोई रूप स्थी न हो एक विपाद हो प्रसातन हो गया वहा। 

इंडिट डासिये। सैकडो वर्थों से जला जातिया रहनी थी । नितात जनशी । एक दूसरे ने लड़ने वाली किसी प्रकार की उल्लेखिके चित्र न य । जब दाहर ने कुछ ज्ञान और अब से सम्यान को हथा नये तो उस दश की वही पुरानी मिट्टी सगूर नारकी सेव भावि रान जनलन लग गई। श्रन्य देशों का भी बड़ी हाल है भौतिक सम्पत्ति की उत्पत्ति भी बिना साथ बादि बर्खों के नहीं होती। और यदि उत्पत्ति हो भी काम लो मनुष्य का वल्य सातो हो ही नहीं सकता जब तक कि उ बन्न बस्त की रक्षाका उप।यन हो । वेता करना मात्र ही पर्याप्त नहीं है। उपज को पारी से बचाने का भी तो प्रथन है। जब तक कि दणवासियों में यह सर्वात् साम समयमा का भाव उपन्न नहीं होता उस समय तक साम जिक्क बाब की स्थाना नहीं होती समाजिक याय का भवना के नहने मर्िसा ग्रसाय धौर स्तेय का द्याधिक्य हो जताहै पृथ्वाका घरस करने व ला³द इस्तियानो ³ हा जसे सय की ज्योति वर्षा पृथ्वी की स्व वया शकित इत्यादि । परतृजक तक इन ∽वित्य कला समामक विश्वत सानव गुरागे<u>...</u> का सहयोग न हा निराक 🤻 । असम्य 🛔

जब देश में ऊपर दिये बुर्गो का सामिक्य शेवा है तो पृथ्वी मनुष्य के मृत और मविष्य दोनो की पत्नी सर्पात पालिका हो जाती है। भविष्य तो भत का धनगामी ही होता है । जिसने वोया नहीं बहक टेगाकैसे ? जिस देश का प्रानी पीढिया गुनहीन रहेगा उनकी नई पीढियो मे जुराकहाँ म बावने [?] पित वस हो तो सत्तान के मविषय का उत्तरवाता होती है। बन मत्र में प्राथना है कि ऐसी पथ्बी हम को उदलोक या मोक्ष व दन वाली हो। मोक्षाकी वर्षा श्रवानक ऊर से नही होती। मोक्ष परम प्द है उसके किए भौतिक स्रोर सभौतिक दोनो सानो की स्रवश्यकता है। इन साधनी के लग ब्ह्तमय उग्र ऋत दीका तप बहुत भीर यज्ञ अनिवाय है। अत प्रत्येक मनुष्य को यह गण धपने धाप भा ण करने वाहिए और समाज मे उनका सचार करना



सग्रहकर्ता रणकीर्तासह राजा संग्रहीर तस जिल्ली





THE REAL PROPERTY.

ना पर

भार्य जमत की सान २०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन नेत्र चिकित्सालय

(अनुमानित लागत दो करोड रुपये) के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि ग्रायकर ग्रिथिनियम जी • ८० के ग्रानगंत कर मुक्त होगी।

सारा वान चैक/मनीम्रार्डर/वैक ब्राक्ट द्वारा मत्री, माता चन्ननदेवी आर्थ धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय.

सी-१ जनकपुरी, नई-दिल्ली-४८ के पते पर भेजा जाए। दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर अंकित किए जाएगे।

निवे इक

रानयोपाल शालवाले पूर्ववेव महाश्रव वर्षपाल बोर्चप्रकास बार्च सरसक विकित्सालय प्रवान, दिल्ली प्रवान मन्त्री एक प्रवान शाल्याल वार्य प्रतिनिवि वार्य केन्द्रीय व्हासय कुलीवाल प्रति । समा समा वेरिः 🕫

सौजन्य से महासियाँ दी हुट्टी प्रा० लिमिटेड १/४४ कीर्तिनगर, ग्रीकोनिक श्रत्र, नई दिल्ली-११००१

लाला रामगोपाल सालवाले चिनन्दन समिति महर्षि ववानन्द चवम, राक्कीला वैदान, नई दिल्ली-१६०००२

बहुन भी काका राजनीपाल कावनाते के प्रधानमध्य हवारीक् के क्रमण्य वे निम्मतिनिय प्रमुख वार्य कर्नों का क्क कार्यकारी ग्या कर्त्रका है :----

- १ मी तोशवाच शरका**ए** एक्सोकेड २ सहस्रय कर्यपाल की
- ३ थीगुत सामा स्वस्थाराक्य भी
- ४ डा॰ सन्वयस्था
- थी वयरीमाप्रवास वैधितः
- स्वीचक व सभी सरक्रकेत्रक
- ६ भी क्षोमप्रकास स्याबी ७ प० सम्बिदानस्य शास्त्री
- व भी जयनाराय**ण शब्स**
- १ श्री सूर्यवेत १० डा॰ वर्मपास
- ११ प्रे॰ वेदञ्चास जी
- १२ भी रामनाथ सहबस
- १३ मो*०* ऐरसिंह जी
- १४ श्री इन्द्रराज जी १६ राजगुरु शर्मा
- वनी सार्वेदेशिक समा, दिल्ली। उपमती सार्वेदेशिक समा दिल्ली। उपमती सार्वेदेशिक समा दिल्ली।
- वचान कार्यं प्रतिनिधि समा दिस्सी। सत्री कार्यं प्रतिनिधि समा दिस्सी।
- त्रधान सार्वे त्रावेशिक प्रतिनिधि सभी। मत्री सार्थे प्रावेशिक प्रतिनिधि सभा। प्रधान सार्थे प्रतिनिधि सभा, हरियाना
- प्रवान बार्यप्रतिनिधि समा उत्तर प्रवेशः । प्रवान मध्य भारतीय बार्य प्रतिनिधि सभा ।

सभी माथ बधुको का सहयीग इस कार्य ने क्रपेखित एव प्राथनीय है।

(बा॰ सामन्द प्रकास) संयोजक एवं नजी

उत्तम स्वास्थ्य के लिए गुरुकुल काँगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

शासा कार्यालय—६३, गली रामा केशरनाय, फोन . २६८०३० वावडो बाबार, विस्सो-६



पूरम एक प्रति १० पैते

वर्ष १ सक २१

रविवार ६ जून १६८३

माय वयस्तर ११६००५३००५

क्येक्ट २०४२

दयानन्दाव्य — १६१

पथिक स्वामी श्रद्धानन्द कल्याणमाग

प्रसिद्ध साहित्यकार काका कालेलकर

स्वामी श्रद्धानन्द जी मे आय बाति का मनोन्नत स्वभाव पूरातवा श्रतिबिम्बन था। वे अपने जमाने के सर्वाङ्गीए प्रतिनिधि थे। सामान्य इरिस्थित में रहते हुए भी आय पुरु, अध्य पुरुवाय से केंसे उच्च और असामान्य कोटि तक पहुन श्रेष्ट्रता है इसका उदाहरण स्वामी की के सफल जीवन में हम पाते हैं।

स्वामी दवातन्त्र सरस्वती ने जो चैतन्य देश ने प्रकट किया उसका ब्रह्ममा सम्बद्ध से विश्वीने किया था वो वे स्वामी श्रद्धालन्द ही वे । वर्म प्रचार विका प्रचार धौर लोकसेवा बीनो बातों में अनुमा जीवन अवतीत करके उन्होंने बलिवान के बन में बीवन यज्ञ का भदमुत स्नान किया। बुद भीर शिष्य दोनो पुरुवसिहो ने अपने निर्मय जीवन से मृत्यु को पंरास्त किया।

समार्व हत्यारे का बदला न मेकर सनके प्रसल्य प्रतुवाधियों ने अपना भागत्य हा सिद्ध किया है। निर्मेख पुरुष का रक्त सास्कृतिक क्षत्र का उसम स्वाद है। स्वामी अद्धा मन्द जी ने जीवन भर बपने पसीने से सेवा की भीर भन्त मे भपने खून से। इसलिए वे ग्रमरपद प्राप्त कर तके।

सस्या सोलना भीर चलाना भाजकल सामान्य सी चीज हो गई है नर्गोंकि जनता देख चुकी है कि नोक जीवन में सुन्यवस्थित संस्थामी का महत्त्व किलना है। लेकिन जब ऋषि दयानन्द सरस्वती ने वार्य सस्कृति के बारना की जागृत करने के किए सरवार्वप्रकाश ने नई शिका प्रसाखीका बादकं केस किया तब + करते । केवल बर्गोपदेशक बन बैठते मारतवानी स्ववेषी संस्थाए बहुत तो हवारों सम्बाध्य हासिस करते।



कम भी । ऐसे समय पर सवस्व त्याग कर अपने पुत्रों को साथ लेकर गंगा के तट पर जगल में जाकर बसना केवल श्रद्धाधन पुरुष का ही काम का। मानो वह एक का विश्वजित यज्ञ ही था। मुबीराम जी चाहते तो वे किसी भी क्षत्र में अपनी कार्य शक्तिका परिचय देसकते थे। फीज में दाखिल होते तो नामाकित सेनानी हो जाते । किसी रियासत की सेवा मे प्रवेश करते तो प्रजाहिनैची प्रधान बन जाते । राजनैतिक क्षत्र मे प्रवेश करते तो महासभा की बुरा का वहन

साहित्य सेव का वेशा पसन्द करत तो साहित्य सम्रटो से कर भार बसल करने की बोग्यता प्राप्त करत। परन्तु उन्होने सब छोड कर शिक्षा का ही काय ग्रपना जीवन काय बनाया इसीलिए मेरा सिर उनके सामने सकता है शिक्षा का क्षत्र जगन में भभी उतना प्रतिष्ठित नही है कि जितना उनका श्रविकार है। तो भी मनुष्य जाति की उत्तम सेवा विकादाराही होने को है

बारीरिक शक्ति द्रव्यशक्ति राजशक्ति सथशक्ति इत्यादि सब सर्वितयाँ किसा शक्सिके मुकावले मे गील हैं। वार्षिकता सेवा जानो

वासना भीर बलिदान यहा जीवन का सबस्ब है। और इन जीवन तत्त्व का पोषण केवल शिक्षाप्रसार से ही हो सकता है। दीषदर्शी समाज पुरुष ही इस बात को समभ कर शिक्षा के क्षत्र मे भपना प्रदान कर सकता है। वेसच्चे बाह्यए ये भीर बाह्यए होने के कारए। ही वे हरिजन सेवा की विशेष जिम्मेदारी अपने सिर पर है ऐसा समभत वे। स्वामी श्रद्धा नन्द जी को इसोलिए मैं जातिगुरु कहता है।

कल्यारा मार्ग के पथिक स्वामी श्रद्धानरू जी की सेवा प्रपनी रहिट से भपुन है। राष्टीय शिक्षरण धर्म जागृति समाज सेवा घादि धनेक क्षत्रों में उन्होंने भाग्तवय को एक नया ही रास्ता दिन्यया ै। श्रद्धा के बल से ही वे यह तब कर मके। जिस दिन उहाँने अपने प्रिय प्त्रो की लेकर गृहकुल की स्थाप्ता के सकल्प से गगा के तट पर निवास किया वह दिन भारतवय के बनमान इतिहास मे महत्त्वपूराका था उस दिन उन्होने हिंदू जाति के उद्वार की नीव डाला ऐसा कहा जा मकना है। जिस दिन ए होने ग्रायत बापको को भ्रपनाया उसी दिन हिन्दू जाति को उन्होने सगठित किया । भीर जिस समय उन्होंने पत्थर गोली भीर लाञ्जरकी न≀फ तु≂ ताकी नजर से देखा उसी दिन भारतवा को उन्होंने निभय किया धपनी सतुल 🧃 नीय श्रद्धा से उहोने अपना दीसा नाम कृताथ किया। सचमुच श्रद्धाः उ नन्द राष्ट्रमूर्ति थे। ऐसा समय जरूर भायेगा कि जब उनके द्वषी भौर

(शेष पूष्ठ १ पर)

सत्सग वाटिका

ऋषिः बृहदुक्को वामवेष्य । देवता इ.उ. । छन्द निष्कृत्तिष्दुष ॥

ग्रन्थय - युवान सन्त विष् समने बहूना ददाए। पश्चित जगार। देवस्य महित्या काव्य पश्य हा समान स ग्रव मनार।

सब्बाय — (युवान सन्तम्) एक ऐसे नवमुक्क को (विश्वम्) विशेष कामना करले वाले को (समन) युव ने (वहुनाम्) बहुतो को (दरायाम्) भार मदान वाला हि (खे) (पतित) एक युव (बनार) निवस जाता है। (वबस्य) प्रमुं के (महित्सा) वह महत्त्व वाले (का॰स्य) काल्य को (दर्स्य) वाला (कि) (स सम् सान) जो कल जो रहा वा (स) वह (बस्य) साल (समार) मरापडा है।

व्याच्या — इस नाज में बढ का व्याव्य इस स सरार की साम्प्रमूरता दिखाकर परोक्षक म यह प्रस्था की बसा है कि इस ससार के सुब दुक्त , जन्मीकादि हत्त्रकी चक्की में रिसन से तू स्थी की सुरुष से बाकर नास्त्र स सकता है।

स्तार में बड नड विद्यान हुए जिन्होंने सम्मून वैदिक प्रोर नौकिक वादमय खान मारा । जिन्हें अपनी बहुबता पर वडा खीनमान बा। वे अस्द्यान और विवय इस स्थार सकते ववे रान के वैदुष्य का बस्त करता हुए वास्वीकि महर्षि ने विद्या—

सबिकासरस्नातो समावत् साङ्गनेवनित् । इञ्चरत्रे च वितु सेको बसूव भरतासब ॥ वा० रा० सयो० १।२०

राम सब विद्याभी की पढकर तथा

बुड्ढा जवान को निगल गया

लेखक-प० शिवकुमार शास्त्री

विध ददार्गा समने बहूना ग्रुवान सन्त पिलतो जगार । देवस्य पश्य काव्य महित्वाऽद्या ममार स ह्या समान ॥ ऋग्० १०।४५।४

*

राम शतुका सहार करने के लिए

दो बाला नहीं चढाते सर्वात एक बाग से

हो अपने शतुको समाप्त कर देते हैं।

राम अपनी शरण ने आये की योग्यला की

देशकर एक बारही उचित स्थान पर

उसकी नियुक्ति कर देने हैं। अर्थात

व्यक्तियों को परसने को नमें भवजूत

क्षमताहै। राम यावक को एक बार मे

निहाल कर देते हैं। वह फिर भिक्कमगा

नहीं रहता और राम को एक बार कह

ने गगवान तक बना दिया। किन्तु नेद

कहता है उस नियन्ता के नियम को देखी

यहा सब विवश भीर नतमस्तक हैं। प्रचा

गगार सहा समाण कल तक जो जीवित

जावृत्त या जिसकी योग्यता और परिश्रम

का सिक्का उद्य समय का बसार मानता

या बाच वह नरापदा है। बुडढा सफेद

बालो वाला कालरूपी परमारमा जवानी

बीररस जो किसी प्रतिद्वन्द्वी को कुछ सम

भक्ताहीन या। कहा बया---शीला

स्वयवर के बनुष को देखकर और हसकर

बक्यता ने राम को कहा-यह भी कोई

सक्तम वैसा स्वाजिमानी साकात

को निजले का रहा है।

राम इतने प्रसापी ये कि उन्हें लोगो

देते हैं उसके परिकतन नही होता।

पूरा बद्धायय वत समाप्त कर विविवत स्नातक हुए। यडङ्ग सहित वेद को भी पढा। मारा बोर प्रस्त सस्त समामन में प्रयात बारा को प्रस्त प्रसामन में प्रयात बतुबद में धाने पिता से भी बढ कर हो गये।

श्रमकामायतत्त्वत्र स्मृतिमन् प्रतिभागवान् । लौकिके समयाचारे इतकल्यो विद्यारव ।।

रास ने चन प्रच धोर काम के रहस्यों को समस्य किया। उनकी धवनुत स्मरण-शिंतर ची। शास्त्रीय नृढ रुप्यों को शोर हुएरों के निचारों को वे बहुठ बीझ समस्य तेते वे। बीकिस चन तथा रमयोंचित आचार-स्मद्रहुए को वे नकी प्रकार खानते थे धीर जयांबानुखार खपने धावरणां में

धाचार-स्वहार को वे जली प्रकार कानते वे और सर्वावानुकार अपने बावरण में साते वे । राज की बीरजा बोकोसर उदा रता व्यक्ति के स्वाचन और स्ववहर को परवाने की साम्वर्धवनक सनता और कल्याविता को बेककर उच्च वस्तु यह

व्यसिक वा कि---क्रिक्सरम्गासिसवर्त्ते

हिजनावयति नानिसास् । हिर्वदाति न करिंक्यो

रामो हिन्तिमायते ॥

देश जी रचुनाय कि बहुतका बार्केऽनिम संवयको कैसीनारि अक्टरमा समावे

पराक्रम की क्लौटी है---

वैवर्शियाचि धूबराल बस्तवे बीस्त विशय विवाद । तत्त्वानावित पाव कसं च वस मृत्यस्य वस् कीतुकस्

मृत्कस्य वर्ष् कायुक्स् प्रोडपु प्रतिमामितु प्रचलितुम्मेतु निवृत्तु सम् ॥

हेराम ! मैं सर्विषय साथ का देवक हा प्रविक्त कहा के तो बाद बना कहुं । मैं नेद स्वादि पर्वणों को में कुछ नहीं समस्त्रा, किर इस दुरान सीम-सीख बनुत्र की बात ही स्वाहै । मैं इसे उठन सक्ता हैं . कुका ककता हूं सेक्दें बूस कर सकता हूं भीर इसक हैक्ड दुक्ड कर सकता हूं भीर इसक हैकड दुक्ड कर सकता हैं ।

राज ने बीचि के सरने पर फिफिक्स्स का राज्य पारंद सीवा की जोज के सुबीय का प्रमाद देवा को जवसम्य को दुवाव की जस्सना करन को अबा। अदमय वा एके अससरों के जिए नकार का रहता था। जाते ही एक पहुंच्या से सुभीय को प्रक-मिस्त कर दिया—

न संस्कृषित पत्था येन बालि पुरागत सुप्रीय शिवस्मान से कुछ हो समय पहल हमने बालि का भेखा है, वह मास सद बन्द नहीं हो यया है। ऐसे बीरों को भी बही बूडा कालकबलिस कर

इन्या जेंसे प्रतायी प्रस्तुत्वना सक्ति महापुर्वन विश्वने नित्तनक विद्वार प्रारत के विश्व को काट-बांटकरमवर्षेतिक विद्या। मत में बक्त में लेटे हुए एक बहेबिय के स्ति से वायन होकर स्वयंगे जीवनकीता समाप्त की।

सार बहु निकसा कि ससार से सबको बाना है। सनद का एक एक साम बहुत मृत्यवान है उसका बहुतयोग करो और प्रस्थान के आदेश पर प्रसन्नता से उसे जियान्त्रित करो।

वेद में विज्ञान

घमवीर विद्यालकार

१ श्रोषजन श्रौर उदजन से जल की उत्पत्ति—

उतासि मैत्रावरुगो बस्तिष्ठ, उवश्या बह्मन् मनसो ऽविकात । प्रप्त स्कन बह्मगा दक्येन

विक्ष्मे देवा पुष्करेल्याददला॥ ऋग७३३११

श्रर्थ-

विमध्ट उन मैत्रावरण असि≔है वसिष्ठ 'तूमित्र ग्रीरवरणका लडका है।

बहान् उवस्थाननसः प्रशिकातः == हे बहान् तु उवशीकी मनाकामना से उत्पन्न हुमाहै। दैञ्यन ब्रह्मासा दिव्य नियम के प्रमुक्तार।

द्रप्स स्कल्प स्वा≔बूद के रूप में गिरे [ए तुसको

विष्व देवा पृष्करे श्रददन्तः — सब देवो ने पुष्कर (तासाव) में पहुचा दिवा। भागार्थं —

ावसूत् की उपस्थिति वें शिव और वक्ष्ण स्रोयजन सौर उदस्य) के प्रसाद से प्राकृतिक नियमों के सनु सार दूर-पूर म्य में जस बना। उस सब को देवों ने पुष्कर में एकतिस किया।

२ वायुमण्डल मे जल-

करगो को उपस्थिति । सम्में ह बातानिक्ता गमीनि , कुन्ते केत तिनिकतु समान्य । तवो ह नाल उपिवाद सम्बाद, त ? बातपूर्यमाह्यसम्बद्ध

ऋ०७ ३३ १३

ग्रथ-

सत्र ह जाती — साकाण ने पैदा हुए ननोजि इपिती — इंप्तरीय निवसो से प्ररित किये हुए (मिल सौर जरुण वायुसो) ने

वाबुक्ता) न समानस्==एक साम मिस्रकर, समसासमान रूपसे

कुम्बेरेत विविचतुः — भूतसकपी कुम्बेने वारम्बार सक्यो सीवा सर्वात् भूमि पर बहुत जस वरखाया।

तत मध्यात् माद = उस वरसे हुए सम्र में से कुछ परिनास

उदियान — वाष्य वनकर बाकास ने वजा गया तत विष्ठप्रम् वृद्धि जातम् बाहुः == प्रवत्ते विष्ठप्रकृषि (समस्य प्राविष्यं के वीवन वा बाधार) वने ऐसा कहा जाता है।

भावार्थ-

धाकाश ने विध्यान शोषकर धोर उदबन वायुषों के निसने पर श्राकृतिक निसमों के समुमार कर बना। वह वल्ल पुरियों न सस्पितक माना ने इकटठा हुसा। उसने ने कुछ शाकाश में चका गया। धनाद वायुनण्डल में अककव विध्यान रहने लगे। क्योंकि वह बक्त कर्मात भोषीत, एम एसी धोर प्रास्तियों के बीचन का धाष्ट्र है।

३ विभिन्न माध्यमो से ' गुजरती प्रकाश की किरएो टेडी हो जाती हैं--

(क्षेत्र पूछ १२ वर)

भृष्टाचार और उसकी चिकित्सा

प० बुद्धदेव विद्यालकार

साजक सारी प्रोर प्रव्याचार के समन के जिए पादोसन मजा हुआ है। जियर देखा गही हामहाय सुनाई देती है। रेस में, बस में, नान में हुआई जहान में, बहा बेंटिंग गही चर्चा है, एक बात में सब प्रमाध हैं। चुनिया बण्डे के दिना सीपी नहीं होती। इस रिप्ततकोरी को बीराई में काली दे री बाय तो फिर देखों कान प्राच्याचार बनता है। कीम मन्नु की हुदाई देसर कहते हैं—

वन्न ध्यामो सोहिताको वण्डवचरति वायहा । प्रवास्तव न मुष्ट्यस्ति नेताकेत् साबु पद्यति ॥

बहा इच्छावस एसतने स वयकर पुरूष के समान वाचों का नास करन हारा बच्क विचरता है, नहा जवा मोह का जाय होके सानन्तित हाती है। चरन्तु विचयक का बनाने वाका पक्षपाठ रहिल विदान् हो तजी। १ मनु० ७ २१।

भाई रण्ड की मिक्का तो सब बाते हैं। प्रसन्त अन्त की पनित तो देखी ।

न्त का पानत थे। यका । नेतः चेत् साथु वस्मति ।

'परन्तु को बस्त का वजाने बाजा पक्षपात रहित विद्वाप हो तो। वह 'तो' कैंग्रे पूरी होवी। उच्चा को ठीक है परन्तु कही उच्चे बाने जी हैं। वस वारा नाव ही कोरों का है तो उच्चा किय के हान में बोवें ?

युग की भूख

इस प्रकार स्पष्ट है कि पून की सबसे बड़ी झावस्यकता है। पक्षपात रहित काम को पत्ताने वाले पुरुव, क्या यह कहीं झाकाचा से बरसेंवे ? नहीं बह न होते, हुने स्वयम् बनान होने।

कैसे बनेगे

पाओ इस युन की इस सन से बनी समस्या पर विचार करें। ससार ने कोई भी पदार्थ कसे बनता है ? साचे स वा साथ से, या दो पदार्थ साचे में साम पियं बाते हैं, या साचा पहले बनाकर पड़े साते हैं। एक का नाम निवच्दु प्रक्रिया है, एक का नाम निपारन।

जो वर्भाषान द्वारा ठीक सचि मे हासे बाते हैं वे निपःतन का परिषाम है।

इस पुन को सब से बड़ी जाँच है वे पुच्च जिनकी सन्त स्थिति में सस्य बसा है और और कठन से कठन परिस्थित में मी ईनानवारी क्षोड़ना नहीं चाहते।

को सस्सङ्घ द्वारा तपस्यापूर्वक घडे जाते हैं वे निषद्ध प्रक्रिया का परिचाम हैं।

परन्तु बोडा नहराई ने उत्तर कर सोर्थे तो सांचा जी तो घडकर बनाना पडता है। डससिए नियम्बु प्रक्रिया ही मुख्य है। साम्रो लाचो का डाचा घडकर बना लें।

मत भूलिये

वदना है मनुष्य को, मिट्टी को नही। इससिए सब वे पहला काम है कि ठीक मसाला दूवी, 'श्रवितेऽनुमन्यस्व ।' धविति देवी से कही कि ठीक मसासा दे। फिर वड पदावंको तो ठाक पीट कर ठीक कर इकते हैं परन्तु मनुष्य को वडने के किए अनुमति चाहिए। नहीं तो मास को कारोगरक्या बहेवा, माल ही कारीवर को वह डालेगा। एक बाद मणुरा मे विरवानन्द नाम के कारीवर को दयानन्द नाम का मसाचा मिल गया वा। पूरी अनुमति बी, सोव कहते वे कि वड पदार्थ बोड ही है ठोको पीटो, किन्तु बहु ठोकने वासे के हाथ में लाठी देकर बोसा इस से ठोकिये में बढिवा कारीवरके हावो बढिया जान बनना च हत्ता हु। यह है 'अनुमतेऽनुमन्यस्य ।'

कारीगर

कारीवर बढिया था, गरुलु बाक की बढ़िया था, कारीवर के पास करस्वती थी पर बास के पास करस्वती की पहुषानों बासी धार्ले गी तो पर सहन्नी दो ब्यानन्य सरस्वती था। बच देखों क्या बढिया बास तैवार हुआ, सहदे सरस्वतुमन्यस्य।

दिव्य गन्धर्व

सरस्वतो को सरस्वती का लाभ क्यो न होता। उसने समिता के दरबार में क्या बोडी साक छानी थी। घर खोडा, बार क्षोड़ा, परिवार खोडा, धवला बनने वाला परिवार क्येंड्रा। परिवार बनामा बनसी को, आडियों का, काटों को, पहाडों की, नदियों को, बरफोली नुकीसी बट्टानों को, सब जबह चिल्लाता फिरा सरस्वती दे। बन्त को समिता पित्रल बौर सरस्वती को सरस्वती का साम हुमा । दिव्य गम्बर्व की कृपा से बादित्य ब्रह्मचारी का रोन-रोम वा उठा, गात्र सब के है परन्तु उसके नाम तो समयुग गाम (Musical instruments) वे । घव में पूज्या हु, इसे कीन डण्डा लेकर मारने पाया था। बस बण्ड बहुत हैं, डण्ड बाल चाहिएँ।

परिस्थिति

स्रोव कहते हैं परिस्थिति हो तो उच्छे

वाले आप वन जाते हैं। जने लोगो परि-स्थिति तो सरव मनुष्यों के लिए वहीं यी। क्यों अपने आप को लोशा देते हो। परि-स्थितिया नहीं अन्त स्थिति वाले वाहियें। बहु अन्त स्थिति वाला वा, परिस्थितियों के लक्ष-प्रवाधीर जीत कर खोबा, सुनी शिवलिक्स पर चूमने वाला चृहा क्या कहता है—

> इक ग्रांच जिला सुनने वाला। नैं रोच पते की बात कहूँ।

> > सवन

चाहे डाया बनाओ चाहे साचा, इसे वैदिक भाषा में सबन कहते हैं। सबन करने बाला तथा सबन से तैयार माल दोनों का नाम है सोम ।

क्यों कि जिस उपादान करता स मास तैयार को और को मन्त तैयार हो वह दोनो प्रव्य तो एक ही हैं सोने का मुक्त सोना तो है ही।

भव देखिये शतक्य शाहाण क्या कहता है—

स्रोव कस्मिन् प्रतिष्ठित इति, दीकायागिति (शत•१४६२२४)

> प्रका— सोम किस में सबा है ? उत्तर— दीका में । कस्मिन्दीका प्रतिष्ठिता सस्य इति । प्रका दीका किस पर सबी है ?

वसर—सन्य पर।

ऋषि सत्यार्थप्रकाश के द्वितीय समू-ल्लास में लिखते हैं (मोह बादि दोषी के छोडने और सस्याचार के बहुण करन की शिक्षाकरे। क्वोकि जिस पुरुष ने जिसके सामने एक बार कोरी कारी मिथ्या आव-शादि कमें किया, उसकी प्रतिष्ठा उसके श्वामने मृत्यू पवन्त नहीं होती। जैसी हानि प्रतिका मिथ्या करने वाले की होती है वैसी घल्य किसी की नहीं, इस से जिसके साथ जैसी प्रतिज्ञा करनी उसके साथ वैसी ही पूरी करनी चाहिए सर्वात् जैसे किसी ने कहा कि मैं तुम को या तू मुक्त समिलेगा वामिलना भववा भनुक बस्सु धनुक समय में तुम्कको दूगा इसका वैसी ही पूरी करे नहीं तो उसकी प्रतीति कोई न करेगा। इस निए सदा सत्यभावण बुक्त चीर सस्य प्रतिज्ञा युक्त सब को होना चाहिए।

सही बात तुलसीदास जी ने इन सम्बों में कही है।

> रचुकुल रीत वाली वह धाई। प्राप्त वाहिं पर बचन न वाहे। येद क्षेत्र इतना है कि जो बात

तुमसीदाश की ने रचुकुल के लिए कही हैं उसे ऋषि ने वासक मात्र की शिक्षा का भाषार कहा है।

योजा के बिना शिक्षा निग्यल है परन्तु सत्य के बिना दीजा निराधार है। यदि आप बाहते हैं कि मामव समाब का फिर से ठीक निर्माश हो तो बाह्मण, कतिब, बैस्व यह साव या डाच तैयार करते होते।

परन्तुसव से बडा डाची धीर साची का मसाना है न य । इस्तिल्य "स गुग की खबते बडी मांन हैं वे पुरुष विजकी मनतः स्थिति संस्था का है और जो कठिन से कठिल परिस्थिति में भी ईमानदारी खीकना नहीं चाहतः ।

सब से बबा अप्टावारी कीन है?

कहते हैं कि एक मीनती सा. ब आवान्
एक वार मुक्ते संवार कर से कि है अगवान्
एक बार मुक्ते संवार तो मैं

करकी वादी नीच मूँ। एक दिन अववान्
ने स्वण्य में बीवान की उबके सामने का
बबा किया। सेतान की बबी लम्बी वादी
थी। बीवानो बाहब ने तुरूप्त वादी एकब
के सटका दिया कि एक ही सटके में वादी
क्वार आये पुरुष्त मौजबी बाहब की
भोच कुन मई। बेचा तो बुद अपनी वादी
उनके हाथ में बीचां तो बुद अपनी वादी
उनके हाथ में बीचां तो बुद अपनी वादी
उनके हाथ में बीचां ता हुद अपनी वादी
उनके हाथ में बीचां ता हुद अपनी वादी
अपटाषार की विस्ताह्त सुनकर सही
कार्य पाय सारों है।

देहाती कहता है कि सरपच वेईमान है। उसन कहते हैं कि तहसीअबार से शिकायत करो वह कहता है तहसीलदार भी अञ्चाचारी है। तब बहुते 🖡 🖦 जिलाबीश स शिकायत करो उत्तर मिलता है वह भी भ्रष्टाचारी है तब कहते हैं कि द्मपने विनानसभा के सदस्य म कहा उत्तर मिलता है, वह भी भ्रष्टाचारी है। पिर कहते हैं कि राज्य के मूख्यम-त्री से कही तो उत्तर मिलता है सारी काग्रेस पार्टी ही बेईमान है। तब मैं पूछता हु कि है बोटरो यदि यह सब है कि काग्रेस पार्टी बेईमान है तो तुमने उन्हें बोट क्यो दिया ? उत्तर मिलताहै कि देनातो नही चाहते थे नेकिन वस, यह लकिन ही सारे भ्रष्टाचार की जननी है। इसे घर में मत बसने दो,मैं नहीं कहता कि तुम बोट किसे दो। परन्तु इतना अवश्य कहता ह कि उसे दो जिसमे तुम्हे लेकिन न लगाना पड । तुम्हे काग्रेस के विवार पसन्द है तो कांग्रेस को दो, जनसम के पसन्द हैं तो बनसब को दो, कम्युनिस्ट के पसन्द हैं तो कम्युनिस्ट को दो परन्तु यह न करो कि देना तो कम्युनिग्ट को बाहते थे । सेकिन

(क्षेत्र पृष्ठ द्वापर)

स्व॰ देवेन्द्रनाथ मुखायाच्याय द्वारा संगृहीत स्वामी दणनद के जीवन चरित के विभिन्त मुत्रों को सग्रधित कर जन्हे बन्दियन नित्रत का रूप प्रदान करने का प्रयाप्त माहियकार पर घासीराम जीवा जनम मेरठ नगर मे लाना द्वारिक द स क यहा कार्तिक पूर्णिमा सः १०० वि० को हुमा या । साला द्वारिकाद संस्वामी दयान द के सम्पक्त मे द्याये थे और व मूर्निपूजाका परित्य न कर ग्रायसमाज कसभाग्द बन । प० घास राम की प्रारम्भिक शिक्षा च्रुव फारसी सहुर । तदन नर वे ग्रग्नेत्री पत्न के हतु हाई स्कूल म प्रविध्य कराय गए। यहाउनकापरिचयप गगप्रसद(रिटा यड जज) सहद्या। टोनाम घनिष्ठ घेन एअमैना हास्य। ६८ ८ ६० मंगना प्रसान्धार व सीरामान मिलकर द्याय िवटिंग क्लान की स्थापना की। टसमे द्मायनमात्र विषयक नायसा होते थे। १८८० भे घासीराम अस्ति मैं उत्तरी । उत्तर की तथा साग पटन के लिए सागराचा गए पर∗त् −नके द्वारा सामिल वनव यथावत चलतारहाम रामेभी घासा राम जीका पंगाप्रसाद तथा श्रो ज्वाराप्रसः६ ग्रंदि ग्रायममाजी छात्रो कासहयोग मिला । प्रवाद प्रायमित्र सभा चलाने लगे। ८०६४ मे उन्हाने विश्वविद्यालय में सर्वे व स्वान प्राप्त कर की । ए० की परें आं उत्तास की । इसक उपलक्ष्य मे उहे स्वर्णपदक भी प्राप्त हुआ। छ।त्रवृत्ति तो प्रति वय मिनती ही रही। १ = ६६ ई मे दुइरा प ठयकन लेकर उहीने एम० ए० घीर एल० एल० बी॰ की परीक्ष ये उत्तीम की। निका समाप्त कर व जोचपुर के जसवन्त काले ज मे दर्शन एव तर्क शास्त्र के प्राध्यापक बने जहा उन्होने पाच वष तक काय किया। परन्तु १६०१ मे जोधपुर मे विवृत्तिका फैलने के कारण व विता के आवेश से स्थारपञ्ज बेकर मेरठ चने साथे।

मेरठ प्राक्त घासीराम जी ने वका-लत करना झारम्भा निया। इस क्षेत्र मे भी उन्हेपयात सफलता मिली परन्तु वे आधिक द्र∘यो″ाजन नहीं कर सके। इसके दो कारण थ- वकालत के व्यवसाय म वाबाल व्यक्ति श्रविक सफल हा सकता है जबकि वामीराम जी मितमावी थे। उनमे बाकपट्ता ना ग्रभाव था। द्वितीय दे मुकदमा अडने व लो को पारम्परिक सद्भाव से काम पकर भ्रपना मामला निपटा लेने का ही परामश देन थ। १६२६ तक वासीराम जी हस व्यवसाय म रहे। इसी वर्ष वे मरठ नगर पालिका के सदस्य भी जूने गए भीर जार वर्षत कहस पद पर रहे। इस बीच वे नगरपालिका शिक्षा बोड के सब्यक्ष भी रहे।

श्रायसमाज की प्रवृक्तियों ने वासी राम जी की प्रारम्भ से ही दिखा थी। ने मेरठ रायंसमाज ने नर्जे तक प्रधान रहे। सार्य प्रतिनिधि सभा सथनत प्रान्त

आर्यं साहित्यकार का परिचय

स्वामी दयानन्द के जीवन चरित लेखक पं० घासीराम जी एम.-ए. एल.-एल.-बी०

लेखक डा० भवानीलाल भारतीय

(बन्मान ज्लरप्रदेश क कई वर्षों तक उपप्रवान एव प्रधान रहे। बाथ प्रतिनिधि सभापरिवनोत्तर प्रदेश (उत्तर धदेश का ⊾ार्चन नाम) में साहित्य प्रकाशन **का क म** १८८५ ई० सही प्रारम्भ हो चुका था। पानी रम जी कलियें न मे भी साहित्य ज्ञान एव प्रकाशन का यह कायकन नि नरचलन रा। ग्रीर उनके निधन के प्यचान् यह साहित्य विश्वाग उनकी स्मृति म प वान राम साहित्य विश्वाग के नाम संही ग्रनिहित किया जाने लगा। प जन्नो मधन्त्र लेखन प्रतिमाके धनीय । उ हे निन्दी सम्कृत, उद्, कारसी, बगरानवा ग्रग्नेजी का प्रीत ज्ञान था। धनुव द कार्यमे उननी विशेष रुचि थी। ५० नवस्वर १०३४ को धार्यसमाज के व्स साहित्य महारवी का निधन हो गया। उनके द्वारा रविन तथा अनुदित ग्रन्थों का विवरण इस प्रकार है-

१ सम्पूर्णगताकापद्यानुवाद।

२ ऋत्वेदादि शाध्य पुनिका का प्रयोशी धनुवाद कुन करावदा की धनेशी मुक्त पनिका कुल करावदा की धनेशी मुक्त पनिका किया। पुन धार्य प्रतिकारी में भाषित हुमा। पुन धार्य प्रतिनिधि समा समुक्त प्राप्त ने पुरतक कर मक्षाधित किया। धन्त ही सम प्रिमा के सस्कृत भाग का ही सनुवाद दिशा गया है। इसका खितीय सकरण सावदेशिक धार्य प्रतिनिध्यमा न १६५६ में प्रकाशित किया। वनतान प्रशासन दिल्ली ने १६०३ में इसका

महत्या नारायण स्वाभी विश्वित हैंगोपनियद भाग्य ना सबेजी स्राहाद— प्रयम सस्काण अनाहाबाद के भी विश्वा यर बी० ए० डारा प्रवाचित हुमा। हितोय परिवर्डित एव भशोचित सस्करण सर्थ प्रतिविधि सभ संयुक्त प्रात डारा १८२६ वे प्रकारित हुआ।

४ वासीरामका सर्वाधिक महस्वपूर्ण कार्य स्वाभी दयानय के वयस्त्री
वयाना जीवनी लेक्क प० देवेन्द्रनाव
मुक्त्रोपाच्याय विकित लाचु जीवन चरित
तथा वृहन् जीवन चरित के प्रारम्भिक
निर्मित प्रशासन के हिन्दी सनुवाद करवा
तथा उनके द्वारा मसुहीत सामग्री के सामगर
पर्यावरिष्ट क्या की पुरा करना है।
देवेन्द्र बाहु ने १८६४ ने दयानय चरित

"ीवक जीवनी बनला भाषा में लिखी थी। इसे बातृ दित कर एक पाशीराम ने जीता है जार कर एक पाशीराम ने मेरा के पार्ट कर के स्वास्त्र में मेरा केरा हारा १६१२ में प्रभान कार प्रकाशित कराया। गोदिन्दराम हात नव कतकता न इसका द्वितीय सरकरण प्रका-रिंग किया। बागोंद्य जानाहिक ने इसी का अपने विशेशाक के क्या मा प्रकाशित किया।

६ महर्षि वयानन्द सरस्वती का जीवन

चरित-देवेन्द्रनाच मुखोपाच्याय स्वामी दयानन्द के बृहुन् जीवन चरित की उपा-दान मृत सामग्रीका सचय कर वुके थे। काभी में बैठकर इस मामग्री के झाचार पर उन्होंने वृहत् जीवन चरित का सिश्वना मारम्म ही किया वा कि दुर्योगवश उनका भवाँग रोग से १६१६ में बेहान्त ही गया। उनकी लेखनी से इस जीवनी की महत्त्व-पूर्णभूमिकातवा चार ब्रध्याव ही लिखे गय। प० वासीराम ने १६१७-१८ मे काशी के तस्कासीन डिट्टी कलैक्टर श्री ज्वासाप्रसाद की सहायता से देवे द्रनाव द्वारा सक्बिन सामग्री चित्रकृत की। श्री ज्वालाप्रमाद निष्ठावान् बार्यसमाज वे तथा प विशिधितम के सहत्वानी रह चुके थे। इसमिए इस कार्य में उनका सहायक होना स्वामाविक ही या। देवेन्द्र बाव् द्वारा सचित यह सामग्री घरणत

अस्तम्बस्त दशा में बी । कायजों के सैकडों क्षेटे बड़े टकड़े और उन पर प्रक्रित किए गए नोट, नोट बुकों पत्र पोस्टकाई समा-चार पत्रों की कतरनें इस समस्त सामग्री को पढना, उसे हिन्दी में धनदित कर व्यवस्थित रूप देना तथा प्रन्य में बया-प्रसग इसका उपयोग करना धरवन्त परि-श्रम साध्य कार्य वा । परन्तु वासीराम वी ने अपने परिश्रम एव अध्यवसाय से इस सम्पूर्ण सामग्री का व्यवस्थित सम्बादन एव उपयोग कर स्वामी द्रयानन्द के बीवन चरित को पूर्णता प्रदान की । प = वासी-राम रवित यही जीवनी स्वामी जी का सर्वाधिक प्रामाणिक जीवन चरित माना बाता है। इस महत्वपूर्व ग्रन्व का दयानन्द निवाण अर्द्धशताब्दी के शवसर पर १६३३ में आर्य साहित्य मण्डल अजमेर ने दो मागाँ मे प्रकाशित किया। सब तक इसके चार सस्करण निकल चुके हैं।

६ दण्डी विरजानन्त्र का जीवन करित- वेकेट नाथ पुल्लोपाध्याय ने वश्यो विरजानन्त्र की एक शोधपुण जीवभी वयला जाया में निवद को की भट्ट प्रभ-काणित रही। प० वासीराम जी ने दखका विदी अनुवाब किया, को धार्य प्रतिनिध् समा सबुक्त प्रात द्वारा प्रयम बार १११६ में तथा वितीय बार २०११ वि० से प्रकाशित हुआ।

७ वेरमुमा — ईश्वर स्तुति प्रार्थना विषयक १०० वेर यन्त्रों का बादार्थ ४० वासीराम ने तैयार किया किसे सबुक्त प्रातीय सार्थ प्रतिकृतिक समा के ट्रैक्ट विमान के सक्तिशता कर में स्वय उन्होंने १६०१ में प्रकाशित किया।

ः मन्ति सोपान —सः दे पुस्तकालक, नेरठ।

.

शुद्धि

प्राचार्य देव प्रकार वर्ष प्रवार स्वितित, केन्द्रीय धार्यसभा ध्रमृत पर का एक उपविभाग है, के द्वारा जलती बुसल्यानी को सुद्धि— पूराविषरण नीचे दिया का रहा है।

ग्राम तन्त्रवही चुनन (जिसा प्रमृतसर) दिनांक १७-४-८३

\$	सिलामत	बाबु ६० वष	चुद्ध नाम	स-तराम	कुलसक्या	ų
2	युगिन्द	२६		योषिग्द्र पाम	**	١
3	देस	5.8		देसराज	,	1
¥	विवनस्	२२		व्यविश् कुमार	,,	4
ų	बुरशैद	6.0		खुसीराम	**	ų
٤	मुरमीत	78		गुरशीत आस	,,	٦
ø	मजीदा	果果		मोहन साल	"	6
5	जगा	¥.		वयतराम	,	•
3	मेहन्दी	4 ×		ज्ञान देवी	"	¥
	•				EW V 4	

(जोलानाथ विसासरी) प्रधान (मन्द किसोर मार्च) एम्० ए० महामन्त्री केन्द्रीय सर्वस्था स्वस्तरहरः "देख लो खाती पर वाव हैं"

साम कुछ स्वार्थी सोगों ने यह निरा-वार सोर सिपैसा प्रभार कर रखा है कि सार्यसमान के सरवार कर करना मध्यन के कारण सिखों में पूत्रव्यूंता की मांचे साया। वह एक काला नुरु है। इस सोगों को यह पड़ा हा गड़ी कि ऋषि यसानम्य के व्यक्तित्व का विचारों से प्रमासित होकर पने को छोट में दिख सार्यन्याय में साए। मुख्यि के बाद भी विख सार्य-समाज से दूर न हुए। हिन्दुमों से सिखों को पुक्क करने की कुटिस कुषान परेशों की सम्मा हो। इस प्रसंग की कभी किस सम्मा हो। इस प्रसंग की कभी

धाव हुन एक धार्यनीर की कुछ क्यां करते वर्ष हैं। यह संकरपार कृतायिह मी। क्षाप करासा चित्रा पुलियानी मित्रावी थे। यह देशक्तर और विदाल प्रेमी क्षाय थे। धाप आययमान के नोह पुष्टा न्यामी न्यां भी तो पाने के बाल बक्का थे। स्वामी जो भी तो पाने में बिर्फ क्यां थे। व्याप मुन्नायिह यो विदेश ही थे। व्याप चुन्नायिह यो विदेश वर्ष की सेना के नियु दिन रात एक कर दिया। इतह कुछ सोन विद्या । विदेशी तक हे बुद्धि हो सामके प्रचार का प्रवाह

धाप पर प्राश्चमात्तक पाक्रमण किया गया। धाप सहस्रहात हो गये। यह दुवस समाचार पुनकर कोग धापके वायक सरीर के शास पहुंचे हो इस मार्ग बीर ने खाचार्य व्यानस्य वा प० लेकरान के समितान का त्मरण करते हुए धपने एक मित्र से कहा

देख जो मैंने पीठ नहीं विकाई आत-ताबी के सामने खाती सोनी है। मेरी तस्यामञ्च-

आर्यंसमाज के इतिहास के लुप्त-गुप्त पृष्ठो का अनावरण

आर्यवीर की वीरगाथा-२

लेखक प्राघ्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु' वेद सदन, ग्रवोहर

स्ताती से नहुन्हरहा है। पीठ पर वार नहीं हुआ। '

सरदार जी नावा करत के -मुक्त कम वेद के है पिता,

सदा इस तरह का प्यार दे। किन नोडें मुख कभी इस से मैं

कोई बाहे खिर भी उतार दे।। इस प्रवन को सपने बीवन ने उतार कर सापने सायसमाब के स्ववित इति हास ने एक और सम्मान बोडा।

यह कार्य केवल जिरम्ब वसाल ही कर सकता है —

१-७७ ६० में क्विय वो जुवियाना प्यारं। बहुए एक ११ वर्षीय सम्प्रिक्षित पुत्रक ने क्विय में प्रमुख्याणी तुमी। यह पुत्रक एका विकास ने पर्यापुत्रक सम्प्रिक्ष समस्र बहुत थी। गौराणिक सम्प्रिक्षाको कह्या को इसकी मा. संहर्टर पुत्रकेत और कनरों के पुत्रों से बराती भी और कह्या सम्बन्धिकी कृता करेला स्टम्स स्वस्य विकासी मा गाना कि बर इससे स्टम्स किसाबी मा गाना का बर इससे स्टम्स को बेंद्र मागाना था।

इस व्यापारी कुल मे जम्मे युवक

का बरीर कहा वसवान् था। प्रव यह वरिक का बनी जन क्या । वरिक मिध-नरी वन जया । पर के खाहर ऋषि का काल करता था। कुरीतियो को कब मुख वे उखाहना इसका सक्य बन नया । इसी सार्थ पुरत्य के मुख्य ने नृत्य के साय वस्यान ने 'था। किशा का स्थाना प्रवास सार्वोत्तन लुवियाना म चलाया और विवय "है। यह सारोलन नया था। वहा देविया दरिया " न नती नहाया करती थे। विधानी क्यान्त नता निरुप दर करते थे और कई बार प्राची न इस कुरिति को ही निटा दिया। नागे रका कुरीति को ही निटा दिया। नागे रका कुरीति को ही निटा दिया। नागे

एक बार लुविशाना में एक १६ वन के पोती पोतो नाले सेठ के एक १४ ११ वर्ष की करना के विवाह रवासा। ऋषि के विचार लुविशाना चालो ने सुने थे। हुक लोग ६वे नुरा समप्रते थ पर देठ को कीन रोके। सब सममने थे कि यह काम ऋषि का चना किर्य्यावसाल साम हो कर समन्ता है। बीर न उस सम्प्रधाया सम्बद्धित न सम्बद्धित सम्बद्धित सम्बद्धित सम्बद्धित सम्बद्धित सम्बद्धित हो ने सुनी। साम बीर बाना पुला। याने बालो की इस बार को रोकने के लिए कहा। उन्होने वहा हम स्वाब नहीं देशकते।

"तुम वक्षण कहा देते हो? यह वीर का प्रश्न था।

उन्होंने कहा बहुं भनवा दगा हो।
यह पुनकर पहमवान विरञ्जीव नाम किर सैठ के वर गया। वसे सम्भागा। यह न माना तो उसे कहा, 'युव मरो पुन्हारें बैटी पोती जैंदी वह कन्या है किस्से पुन्हारें बैटी पोती जैंदी वह कन्या है किस्से पुन्हा मेंठ उसके घर के लोग उस पर दृद पढ़। बीर किरञ्जीव पहमवान या। उपने पिटाई कर स्करा वा। बिरा-उपने व वहा पिट कर एक विचान करा है। प्रयोगी दो स्व क्या जब व निए। हाथ में बात पकड़ कर सामी प्रामें करके यान क धीर स्वाय प्रसा

सारा लहुण्यकी कोसी वा बस्त्रों पर पहलाग्या। वहाजाकर वहा देखो मेरै सारे बस्त्र लहुने रगे मुभे मारा बया है। सर रत्त दवी टानिराव गये हैं। प्रवाती दस न नो । पूलिस व लो को द्मव वहा जाना ही पडा। निम किस न मारा है [?] । बर≍त्र व पाल न दुल्ह सेठ का नाव सब संपहले सिवच्या। उसके कई रिश्तेदार जा बागती बनने वाले वे पणकी कोर भी क्रमुकी करके कहा, यह भी भारने वाले वे। पुलिस ने सब वर दबोचे । वे सीम सेठ समेश हाथ कोडले रह गये परन्तु चिरञ्जीव ने उनको बती बनवा दिया। विवाह क्या होना या। कच्या वच गई। स्था किसी देवी की रक्षा के लिए किसी ने ऐसा बलिवान दिया है। यही चिरञ्जीव लाल ऋषि के काद आर्थ समाज का दूसरा शहीद है।

यह महाराखा मताप की बात नहीं है। यह तो विपतिक के एक साकारख राजपुत बातक की बात है। उनका मान प्रताप जा। कर्ष क्षेत्रिक के प्रेम या। यह पीत बात्र को से क्षेत्र के प्रमा । यह पीत बात्र को से प्रता और मिन उनके अपन नहीं पहुँचे हैं। यह जीन उने कारके और विज्ञाने के कि राजपुत के सकके होकर तुम तत्रवार यहाँ विकाद है। यह पर बात बात्र का प्रतिकृत कुत करने स्वत्य का करने विज्ञान करोंगे ? देश की सेवार न हो, देश पर कर पिटने को सेवार न हो, ऐशा राजपुत किस काम काई?

प्रताप का लोगों वे कहा करता था— नेव की सेवा केवल तकवार ने ही नहीं होती। तबीत के भी देख की सेवा हो हरती है। काम पढ़ने पर मैं नता नूवा कि देख के जिए नद मिटने में मैं किता से पीके नहीं हैं।

किसी को प्रताप की बात ठीक नहीं कबरी थी। सोक समस्ते वे कि वह किशोरमञ्च-

चित्तौड़ का वीर गायक

युकुनार तो है ही बीच इस्कने वाला जी है। प्रताप भी अपनी घुन का पनका वा। वह फिसी की वाल पर ज्यान ही नहीं देता वा।

विस्ती से वन दिनो मुक्स झासक वे। मुस्तो की नहीं मारी विना ने फिरोड एर काई कर थी। वेकिन ने फिरोड का किका हतना कर वा कि मुक्स-केना उत पर विजय नहीं या वक्ती थी। किने की वीचार या फाटक टूटते ही गही थे। बार-बार मुस्त तेना की किने के जीतर के राष्कृत वीरो के नाशों की बीडार की भार खाकर पेंछे जीटना रखता था।

चित्तीह ने जो शरवीर राजपूत वे वे महाराखा की देना में भरती हो नदे वे। वेकिन प्रवार एक धोर तो वालक वा धौर हुवरे वने करन यहन पर्वा नही हुया। यो वहने वहने वहने वहने वहने हुया। यो उसे नहीं हुया। यर उसने हुया कार जुन किया। वह राजबुतों की वेना में पून पुन कर वोरणां से मीन गाता धौर उन्हें उस्ताह दिनाता वा। वह चिराते में धोर उसके धार-पात की विस्ता में ने धोर्कमा नवा जाता धौर वहां करनों वहां करना चा वाता धौर वहां करनों वहां करना या। वक्की नीते का यह प्रवाह करना या। वक्की नीते का यह प्रवाह करना या। वक्की नीते का यह प्रवाह हुया हिं वकी में हुया हुया विस्ता हुया कि वहां नीते का यह प्रवाह हुया हिं वहां स्वीत प्रवाह करना या।

एक दिन जब प्रताप किसी पास की बस्ती ने सितार बजाकर गीत सुना रहा का एक मुक्त सैनिक ने स्थितकर उसका बीत सुन लिया। जब प्रत्य को देखें लगा नड उस नीनिक ने प्रमाण की परख लिया धीर खेनापति के पास ज आया। मुझ्ल कैमापनि प्रताप को देखकर बड़ा प्रसन्त हुआ। उसने कहा— लख्डा पुन्न हुआ। उसने कहा— लख्डा

प्रताप ने कहा—'वेरा काम ही गीत सुनाना है। साप कहें मैं नाने को तैयार है! मुगल सेनापति ने रात को सेना सजायी। चित्तीक के किने के पास कह सेना के बाब साया। किने के दरवाले पर प्रताप को साबा करके उसन कहा— सब तुम सपने गीत बासी।'

प्रगत सेनापित ने सोवा वा कि
प्रनाप के बीत सुनकर किसे के भीतर कै
लोव समक्रों कि उनकी सहाबता के
लिए कोई दूसरी राजपूत सेवा वासी है।
को सोई से वे किसे का फाटक कोला

प्रताप मुगल सेनापति की चालाकी (श्रेष पृष्ठ १२ पर) प्रस्तावना -

जब ईब्बर न इस ससार का निर्माण कियाचा उसी समय से इस पृथ्वीपर मलाई बुगई सज्जन धौर दुर्जन के बीच फरका प्रत्रम्भ हो नया था भीर सतार में उसी समय से ऐमे महापूरव पैदा होते रहे हैं, जिन्होने समाज की प्रत्येक ुराई को समय्त करने के हर समय प्रयत्न किए हैं। वो व्यक्ति जो सम ज की बुरा-इयो से इरसमय लडते ग्हे है वो ही व्यक्ति चरित्रशानु बहलाए और उन्ही के कारण बाज ये ससार टिका हुवा है भीर निरन्तर प्रगति की बोर प्रयूप र है, यदि ऐसे चरित्रवान् महापुरुष इस पृथ्वी पर धवतरित न हुए होते तो यह वर्तमान ससार भृतकाल में ही कभी का समाप्त हो जाना।

चरित्र क्या है---

चरित्र शन्द बोलने भीर समझने मे केवल ३ प्रक्षरी काही शब्द है, परन्तु चरित्र बडा व्यापक शाय है। इसके विभिन्न धर्म लगाये ज ते हैं। विद्वान् भी जे॰एम० जिल ने इच्छा शक्ति के अम्याम की ही चरित्र कहा है। श्री काट महोदय भी पूरव को ब्रास्मनिर्मित त्रास्त्री मानने हैं। इसलिए इच्छाशक्तिकाविकान ही चरित्र के लिए श्रीवश्यक है सर्वात् इन विद्वानों के क्षवानसार इसका तान्त्रयं है कि मनुष्य कात्मा दारा निर्मित प्राणी है, इस्लिए उसका चरित्र इसी बात पर डिप्पैण्ड करताहै कि उसकी इच्छा सक्ति क्या है ? बढ़ि व्यक्ति की इच्छा सनित दूसरी के प्रति मलाई की है तो वही व्यक्तिया प्राणी चरित्र शत् है ।

बी मेंक मुगल महोचय स्वानीय जाव के तमरून को परिक करते हैं। भारतीय साक्य घाँविनयम की बारा ११ के सनु-बार ''बर्रिकाम के सम्तर्गत क्यांति तखा स्वभाव दोनों माते हैं। स्थाति से हुमारा समिन्नाय दूसरों के हारा किसी व्यक्ति के बारे में सोवी सबसी जाने न या सारता है, भीर बहु सार्वमनिक घारता हारा बनती है पर्याद् किसी समुक व्यक्ति के विचय में प्रमाद किसी स्वानी की स्वानी की स्वपनी रिजी चारता है।

भ्राव चरित्र मे दो बातों पर ज्यादा ज्यान दिया जाता है।

१ मनुष्यों का दूसरों के प्रति ग्रावरण—

स्रवांत् किसी भी व्यक्ति का समाज के सन्य व्यक्तियों के प्रति किस प्रकार का व्यवहार है, यदि उसका व्यवहार समाज सन्पत है तो वह व्यक्ति वरित्र-वात् है।

वर्तमान चारित्रिक संकट, समस्या और समाधान

मोहम्मद श्रसलम

२ मनुष्य के सिद्धान्त --

सर्वात् किसी व्यक्ति के प्रथने जीवन के बया-गण सिडाम्म हैं। कुछ व्यक्ति स्थाने जीवन के सिडान्त समाव सम्मत नहीं बनाते तो उनकी चरित्र शत् नहीं कहा जा सकता। जैमे चौर डकैत सादि। इनके जीवन के सिडम्स्स समाज सम्मत नहीं हैं इसनिए ये चरित्रवात् नहीं हैं। चले ही य चौरी टर्मती के बाद नरीशों की मेवा ही मों न करते हो।

जपपुंकत दो बातों से हमारा ये निष्कर्ष निकलता है कि वो ही व्यक्ति चरित्रवान् हैं वो समाज के सन्य व्य-क्तियों के साथ प्रच्या व्यवहार करने हो धौर उनके सिद्धान्न समाब सम्मत हो।

वर्तमान चारित्रिक सकट-समस्या का कारण---

प्राय देवा बाता है कि इस समा में कुछ ऐसे व्यक्ति भी जम्म नेते हैं जो स्वार्थी होते हैं भीर ये स्वार्थी स्थित क्यांचे होते हैं भीर ये स्वार्थी स्थित क्यांचे हाते होते हैं भीर ये चरित्र नहीं करते। ऐसे स्वार्थी स्थित करते। ऐसे स्वार्थी स्थित करते। ऐसे स्वार्थी स्थित होते करते। देव भी स्थार स्थित नहीं हो गाते, उपन्तु स्वाय के असे स्थार करते होते होते ये समा का सर्वेशी के सम्युक्त परास्त हो बाते हैं तो य समाज का सर्वेशास कर ते हैं। वर्तमान स्थाय में चारित्रक सकट स्थार होते के स्थार मार्ग के साथ के चारित्रक सकट स्थार होते के स्थार मार्ग करता होते के स्थार मार्ग करता होते के स्थार मार्ग करता होते के स्थार मित्र प्रकार है—

सामाजिक कारण-

वर्तमान समाज के बाज व रो बोर चारित्रिक दुवंसताक्षा नई है। सात्र का समाज प्रगतिशील समात्र होने का दावा करता है परम्तु इस समाज में प्रगति की बाड मे सामाजिक नृत्यो बादखौँ सस्कृति एव सम्यताकी तनिक भी परवाह नही की जाती है। साव सर्वत्र लूट कसोट भ्रष्टाचार दहेज इत्याएँ, बसारकार वर्कती करम बादि हो रहे हैं। इन सब को करने वालो का सामना करने के लिए हमारे समाज मे दम नहीं है, बल्कि ग्रम-राथी का साथ देते हैं। उने सवा से मुक्त करा देते हैं और किसी शरीप व्यक्ति को मुठा फसाकर सवा देते हैं। दवा यही बादवं है हमारे समाच का ? विद्वान शरस्तु महोदय का कथन है कि Man अ

a social animal सर्पात् सनुष्य को जीवित रहने के लिए समाब के अग्ब ब्ब-क्तियो पर निर्भर रहना पडता है, भीर रूसी महोदय सिसते है कि "बच्चाजब उत्पन्न होता है तो वह अञ्छा होता है धौर समाज की सराव व्यवस्था के कारसा विनव जाता है। ऐसा क्यो है? इसका कारण है, जिस समाज का हम सहारा लेते 🖏 जब उस समाज का ही चारितिक पतन हो गया है, जब उसी मे चोर इकैल, बनात्कारी, दहेब हत्या करने वाले, कपटी व्यक्ति पहने ही विश्वमान हैं तो उनका बसर हम पर पडे बिना नहीं रहेगा। उस समाज के साथ हम भी उसी प्रकार ग्राच-रए करेंथे और चरित्रहीन हो जाएने। एक अग्रेज विद्वान् ने लिखा है कि मुक्ते व्यक्तिकी समिति बतादी भीर मैं उसका चरित्र बता दुवा। सस्य ही है, A man is Knoning the Company he

इसी प्रकार सम्बुल रहीन खानसाना ने सिखा है।

बैसी सगति बैठिये, सैसोई फस दीन । कदमी सीप, भुजग मुख

स्वाति एक, गुण तीन ॥ रहिमन नीचन सन वसि, सनत कलक न्<u>काहि।</u> दूब कसारिन हाच असि, मन समुक्षाँई सब ताहि॥

इस पर जी कुछ व्यक्ति तर्क देते हैं कि हम पर जुरी समित का सबर पड़ने बाला नहीं है इस पर एक विद्वान् ने निकाहै कि—

धान के पास मन बैठी बाकर। एक दिन उठोमें दामन बनाकर। ये माना कि तुम दामन बनाते रहोंगे। पर धाम की सेक तो काले रहोंगे।

इस प्रकार प्रमुखे स्वीति विक्र पतन में समाज का बहुत बडा हाथ है क्योंकि जो समाज का बहुत बडा हाथ है क्योंकि जो समाज सामाजिक स्वादगी के गिर बाएगा न्या समाज ने साने वाली सन्तानें भी मरिज्ञहीन होती।

समाघान---

हुने अपने तमाज की कुराहकों को दूर करने के लिए सामाधिक आंदोलन करने होंने। अष्टाबार, बोरी टकैंटी, कारि के विरुद्ध एक होकर बाबाज कार्या होती। हुने बहुद्दे सामाधिक साहबाँ.

मुल्यों को जिल्हा करना होया प्रपत्नी बस्कृति भौर सम्पता को समकता होवा बौर उसी के बनुसार बाबरण करना होगा । समाज के प्रत्येक व्यक्ति को सवा-बार, बाजापानन, मधुर भाषस्, नम्रता, साहस, निर्वीकता भीर धनुसासनप्रियता का संकल्प लेना होगा। समाख के जितने भी वसत बाराधी, बुराबारी, प्रब्टाबारी स्वार्थी कपटी, हिंसक और व्यसनी व्यक्ति हैं उनका साथ श्लोडना होगा। सञ्जय भीर बादर्शस्यक्तिका ताच देना व उसके सम्पर्क मे रहना होगा क्योंकि सर्व्यन व्यक्ति के सम्पर्क में रहने से ही मनुष्य वरित्रवान् बनता है। नयोकि गुलाव के पौषे के बासपास की मिड़ी भी सुवासित हो चाली है। बुरा व्यक्ति यदि विद्यादि से भी विभूषित है तो छोड़ने योग्य है क्योंकि मणियुक्त सर्पभी तो भयानक होता है। हमें सपने पूर्वज सहापुरुषों की बीवन कथाधी से शिक्ष प्राप्त करनी वाहिए। हमे स्थान स्थान से मण्छाइयो को ग्रहण करना चाहिए। सत्सगति ग्रा-नानी चाहिए। तमी हम पं मबुरताः व्य-बहार कुशवता, नम्रता, साहस, निर्मीकता उत्पन्त हो सकती है और हम चरित्रवान् बन सन्ते हैं। जैसे मधुमनिक्समा सक्तरन्द सप्रह करने के लिए कोसो चनकर सवाती हैं भीर अच्छे अच्छे फूलो पर बैठकर उनकेरत नेती हैं तभी तो उनके समु की संसार में सर्वेभिष्ठं मचुरता है। सरस-वति मे रहकर बाल्मीकि जैसा दुराचरसा ससार में सम्मानित हुआ। हमें अपनी यांको को बयने कानों को तथा दूसरी ज्ञानेन्द्रियों को सुसा रसना बाहिए। संसार के सम्बन्ध में जितना जान सनते हो चानो, ज्ञान को बढायो, को ज्ञान इन्त्रियो तुम्हें वेती हैं उनका प्रयोग करा। योग्यता के साथ बुढ़ि ही चरित्र का निर्माण करती है और परित्र सब का सब से बढ़ा हथि-बार है। जो व्यक्ति उत्तम चरित्र के होते हैं इस ससार में जनका कोई कुछ नहीं विमाद सकता।" जैसे रहीम बास भी ले कहा है कि --

> "जो रहीम उत्तम प्रकृति का करि सकत कुसन। बन्दन विच ज्यापत नही, सपटे रहत मुखन।"

ग्रायिक कारण-

वर्तमान चारिनिक सब्द के कारणों में वार्षिक कारणों में वार्षिक कारण भी एक है। बाज हमारे बानने बरेने वार्षि की समस्या वर उठावें सबते हैं ऐसा क्यों है ऐसा क्यों कि स्वाद करते, उसका बटवारा वही प्रत्यां कर नहीं करते, उसका बटवारा वहीं प्रकार नहीं है। एक उत्तर तो एक मजदूर जो चुड़त हुए में बेसता के वर्षन हों हो हो हम के बाता है और मुझे बेसता के बाता है और मुझे के बाता के बाता है और मुझे के बाता के बाता है और मुझे के बाता के बाता है की सुझे के बाता के बाता के बाता है की सुझे के बाता के ब

वर्तमान चारिविक संकट. समस्या और समाधान

भी हैं को ४६ हकार रूपवा माविक नेते हैं और उनका कार्य सिर्फ कुर्वी पर बैठना है। प्राय गीकरी में भाई भतीवाबाद वनप रहा है। रोबनार के लिए परीव तथारोटी के किए तरसते व्यक्तियों को सात मारकर बनी तथा खर्वाखनीय व्य-बितयो को नौकरी का प्रवसर दिया जाता 🤻 । ऐसी परिस्थितियों में व्यक्ति का हिसक बोर, डकैत अनैतिक व्यवनी एव अध्या-चारी बनना स्वामानिक है नगोकि वन एक व्यक्ति २०, २६०००/≔३० देकर किसी पद को प्राप्त करेना तो उसका सक्य सब से पहले पद पर बैठकर उन रिश्वत के वैसों को जनना से वसूस करना होगा भीर वह बस्ल सिर्फन०२ से भ्रमात् रिष्ट्यत से ही करेगा। समाज मे जीवित रहने के लिए प्रत्येक अवस्ति की कुछ बावस्यकताएँ होती हैं। जैसे रोटी कपडा, अकान और ये सब अवश्यकताएँ पैसे से ही पूरी होती हैं। परन्तु जरा विचारिये कि वह व्यक्ति बेरोजनार है ? क्योंकि रोजनार पाने के अनए उसमे योग्यताभी है, परम्तु समाज के ठेकेदारों ने उसको श्रवहेलना करके भाई भतीकावाद या रिश्वत का सिद्धान्त अपनाकर उसे रोज-बार नहीं दिया, तो उस व्यक्ति के हुन्य पर क्या बीतेयी ? वह सारे मादर्भ व मुख्यों को खोड देवा और प्रपत्नी बावस्य-कताओं की पूर्वि के लिए अनैतिक मार्ग की भोर सप्रसर होना भीर नहीं से उसका चारितिक पतन झारम्म हो चानेवा । इस प्रकार बार्बिक दक्षा चरित्रहीन संकट के क्षिए जिम्मेचार है।

समाधान--

चारित्रक पतन को रोकने के लिए हुने पैसे का लिखत बटबारा करना होगा, आई भवीजाबाद व रिस्वत के विद्वान्त को मूलकर वाव्यक्ति जिस पद के योग्य होवा, उसे उसी पव पर सुशोशित होने के - अवसर प्रदान करने होंने। हमे मजदूरी की समयूरी बढ़ानी होनी । समाच ने बदाप्त प्रवटाबार को बिट ना होना और व्यव एक बेरोजवार व्यक्ति को उविद्य दोबगार विन जाएना तमी वह धादवाँ अ सस्कृति की घोर प्रवसर हो सकेया, क्योंकि बुजूर्ग कहते हैं 'कि मूखे पेट से पूजा को नहीं होती है।' इस प्रकार सवाब का चारित्रिक पतन रोकने के लिए प्रत्येक व्यक्ति की ग्राचिक दिवति की सुवारना होना।

राजनैतिक कारण-

बारिकित तकट के कारणों ने राज-नैतिक कारवों को जी नहीं भुजावा जा सकता, साच सावारण व्यक्तियों से लेकर मुक्तिकों पर की व्यक्तिमीला का सारोप

सवाया जाता है। यह सत्य है कि "यथा रामातमा प्रका प्रकृति जैसा राजाका भावमं वा दूराचरल होगा वैशा ही प्रजा पर उसका धसर पडेना। बाज हमारे मत्री व बड बडे राजनेता सरकारी घन का दक्ष्योग करते हैं। भ्रष्टाबार फैलाते हैं रिश्वत नेते हैं। झाज वब चूनाव होते हैं तो प्रत्येक नेता वढ सम्बे चौडे मापता देता है जनता को भूटे बाख्वाबन देता है धौर बात बात में कहता है कि 'देशो भाई हम तो गरीव के साथी हैं ' गरीवों की सेवा करना हमारा वर्ग है। परन्तु जब वो चुन कर चले जाते हैं तो गरीनों को अपनी शक्स भी दिसानी बवारा नहीं करते । शभी धाम चुनाव हुए हैं अनता के सामने प्रत्येक स्तर के नता ने धपन धपने स्तर के बन्बे चौड भाषण, भाग्वासन दिये हैं परन्तु जिस दिन से वो जीतकर गये हैं अपने जे को को लौटकर नहीं वेला है। विल्ली भीर अपने प्रदेशों के चनकर सवा रहे हैं। को बेचारे नेता हार गये हैं वो धपने नसीव को रो खे हैं और जनता से कहते हैं कि तुमने हमें बोट नहीं दी, हम तुम्हारे काम नही करेंगे। ये सब हमारे नेताओं की चरित्रहीनता ही तो है ये सब प्रपने भावजों में गरीन के नसीहा, गरीन के साबी गरीन के जाने क्याक्यावनते हैं, बीर फोम के बद्दों पर बैठकर, विदेशी पोशाक व विदेशी बाज सामान से सुसण्डित, विदेशी स्टाइबॉ से बनी कोठी में बैठकर नरीव की तेवा कैसी करते हैं? ये सब जय वाहिर है, बताने की तनिक भी सकरत नहीं है। इन नेखाओं ने गरीब का साव बेकर उन बेचारों से जो कुछ उनके पास या वो बी ने सिवा और वनी वन नये कभी-कभी ऐसा महसूस होता है कि जैसे वरीबी समाप्त करने का सिद्धान्त ये है कि 'नरीव को ही सत्व कर वो। नरीवी समाप्त ' सर्वात् ' न रहेगा बास न बजेगी बाधुरी ', वासी उक्ति परितार्थ सी हुई नगती है। वर्तमान समय ने प्रत्येक राज-नैतिक दल के दोष अनता के खम्मूका बा थुके हैं। विरोधी राजनैतिक दश, शक्ति प्राप्त सरकार को इटाकर खुद तो कुसी हिषयाना बाह्ते हैं, परन्तु वरी व की सेवा कोई नही करना चाहता, बाज भ्रष्टा-भारी अपराभी भी राजनीति ने बा जाते हैं और जनता को नोहकर चुनाव जीत कर बनता पर अत्याचार शुरू कर देते हैं ये सब क्या है ? ये सब चारिजिक कमी तो है बनी पिश्रले दिनो परित जासुसी काण्ड विसमे वांदी के वर टुकड़ों के कारता हुमारे देश की मुप्त व महत्वपूर्ण दस्तावेजें हमारे देश के कर्णधारी ने दूसरे वेशों को वें दी, वे इनकी चरित्रहीनता ही तो है इन सबका माने वासे युग मे भावी तन्ताम वर क्या शसर वडेवा ? कथी सीचा इन भ्रष्ट धीर हराय सावे गामे नेता

सीर समिकारीगस्य ने 1 ये सव वतमान समाम का मारिजिक पतन हो तो हैं, इस सिए इस समाम पर मारिजिक सकट सामास्वामाविक है।

समाधान-

बाज के समय में प्रत्येक देशवासी को जागरूक होना चाहिए उमे चरित्रवान् नेताबों को ही चुनाव में चुनकर भेजना चाहिए। उसे जाति धर्म ग्रादिका भेद-आव भूलकर वोट देना च हिए। क्योंकि समाज का अन्तित्व भादमें एवं उज्ज्वस वरित्र के व्यक्तियों पर ही निभ र करता है। ग्राचार्य रामचन्द्र गुक्त का कवन है 'कि व्यक्तनो से पडन बाने व्यक्तियो का धाकवंण समाज की धन्त्री तानो की घोर नहीं हो पाता सचम्त ही ऐसे व्यक्ति समाज की चारित्रिक गिरावट के जिम्मे दार होते हैं। इसिक्ए हमें भवने नेताओं का चनाव करने में बढ़ी सर्तकता रस्तनी चाहिए। हमे भ्रष्टाचारी भीर व्यसनी नेता क्षो को ता अपने पास आने ही नहीं देना चाहिए उन्हे पकडकर उनकी हरकती को उनके भुठ बायदों को उनके मृहुपर कहकर मगादेना चाहिए।

नैतिक कारग-

वर्तमान समान ने चारितिक सकट और समस्या उपस्थित करने ने नैतिकता का भी कम रोज नहीं है। मान हम घरने नैतिक मूल्यों को भुता चुके हैं, हमारा मन वचन है। दुवंब है। हम घरना मान सम्यान माबि भूतकर स्वापंत्रश होकर, दूबरों को सनिक भी परवाह नहीं करते हैं। खानस्य एवं स्वापंत्रशा थो ऐसे प्रत-गुण्य हैं किनके बीच पढ कर स्वाप्त सम्यान म्यातिक्त को पूल्य कमा सेता है। नह इन कारणों से दुवंब ना सेता है। नह इन कारणों से दुवंब ने स्वारा है और उसका चरित्र मुखा के बोस क्षम खाता है। एक विद्यान ने कहा है कि—

When wealth is lost, Nothing is lost

When health is lost,

something is lost
But when Character is lost,
every thing is lost

इस प्रकार हुये कोई भी ऐना कर्यं नहीं करना वाहिए विश्वते हमारा चरित्र कलकित हो परन्तु हम वानी स्वायं विद्धि के लिए प्रस्य व्यक्तियों का महिन करने में बरा भी स कोच नहीं करते, गुरु नानक का सत हैं — कि ' दूबरों को मीचा विकाए विचा प्रवचा दूबरों का महित किए निया स्वायं क्यांची करनी करते हैं। सत्य मार्च को कोचकर कुमार्ग की ओर वसते हैं। सर्ववानिक करते हैं। वसते हों सर्ववानिक करते करते हैं। एखा हम केवल घरनी फूडी गान ग्रीकत, दूसरो की नीचा दिलाने, घरनी स्वार्य-परता धकनंग्यता धुपाने सत्तार मे मूठी क्यांतिवाने के स्तर करते हैं और इन के करन से हमारा चरित्रस् यतन होना शावस्वह हैं।

समाधान-

ट्वे नैनिकता की धोर ध्यान देना चाहिए कोई भी एका काव नहीं कर जित्र अपन्य व्यक्तित हमें चिरकहीन वसने। इसे स्वाब्धकार अपने स्वाव्यक्ति से स्वाव्यक्ति से स्वाव्यक्ति से स्वाव्यक्ति से स्वाव्यक्ति की एका के लिए प्रत्यक्त प्रयक्त करने प्रकी चान चिर की रक्षा करने से जान ही क्यों न चली चाए। हमारी पड़ित दुस्त महाभारत में एक स्वान पर वर्षन कात्र प्रयुक्त महाभारत में एक स्वान पर वर्षन वाा है हि—

यद् प्रस्मापि सदा चरित्रस्य रक्षा कार्यावन तुष्मायाति याति च । चरित्र यदि नष्ट स्यात् त्राहि सर्वे विनष्ट भवति ॥

वृत्त बलेन सरक्षेत् वित्तमेति च बाति च। स्रक्षीणो वित्तत क्षीणो वृत्ततस्यु इतो इत ॥

उपसहार-

वर्तमान पारितिक सकट, समस्या का समामान तभी सम्भव है बब हम भ्रपने सामाजिक, राजनैतिक, भ्राविक भीर नैतिक बादशीं, मूल्यो को समर्से और धपनाएँ । भपनी मिथ्या स्वाति प्राप्त करने का मोह खोडें। प्रपने समाज मे प्रच्छी शिक्षा लागुकरें। धन्छा साहित्य पढ़ें उप. रोक्त सभी वार्ती कारणों का निवारण हम बुद करें, खुद को शुवारे । वो हमारा द्याज का नवयुवक दिशाहीन हो सवा है, व्यमनी अत्याचारी कपटी, धकर्मव्य, भाग्यवादी हिप्पी हो गया है। उसे सन्मार्च दिकाएँ। हम धपनी शिक्षा प्रचासी को बदलें क्योंकि हरवार्ट ग्रीर रेमान्ड महोदय ने चरित्र की शिक्षा का सहेश्य बताया है। बारत और यूनाम में इसी उद्देश्य पर श्रमिक कोर दिया जाता वा क्योंकि जब तक हमारी शिना हमारी स स्कृति भादवं मूल्य, सस्कार भावरसा भादिका ज्ञान नहीं कराएगी तब तक हम सन्मानं पर कैंदे चलेंगे और चरित्र-वान् कहलायेंने । हमें प्रपनी विकित्सा खुद करनी होती । वर्तमान सनाव मे व्याप्त बनात्कार घूस सोरी माई भतीचा. बाद पक्ष गत, माहरण मादि दृष्कृती के विश्व प्रशियान छेडना होगा । तभी चारि-त्रिक संकट व समस्या का समाव न सम्भव है भीर "सत्यमेव जयते की उक्ति चरितायं हो सकती है।

नोहम्मद बसलम C/o यग श्यर ड्रेसर १६६, रामनगर, निकट हापुड बस स्टैण्ड मेरठ २५०००२ व्यामपीठ---

उपनिषत् कथा माला-५

ईश्वर दर्शन

प्रवचनकर्ना-वीतराग स्वामी सर्वदान र महाराज

(गताक संधाने)

परमेश्वर का पाना सुगम है, परन्तु पहले काम पूरा कर ला श्रवात् इसक लिए यह बावव्यक है कि पहले परिश्रम करा पिर मजदूरी मिलेगी। श्रत्व परमात्मा का पान के लिए श्रयत् ऋषि बनन कालए पहले मन का पवित्र बनाम्रो । मनुष्य पहाड पर चढता है, परतु ऊपर बढन म जिल्ला समय सगता है, उतरन म उतना नहा लगता। कसोसा जान म जिल्ला समय लगगा वहा से भान म नहा। उतरना सुगम 👸 उतरन म बकाबट दूर 🛊। जाता है : प्रतएव पहुला काम धर्यात् मन को पावत्र बनाना कठिन ह, परमात्मा को पाना सुगम है। इसके लिए भगव वस्त्रा की आवश्यकता नही । ग्रहस्थ मे रहकर भी धापपरमात्मा को पा सकत हैं। वेद दो साब को मिटाता है, रक्त रोगको ूर करता है। गेरुए कपड मैन कम होत हैं, इसीनिए सन्यासी पहुनते थे। वेदए कपड परमात्मा की नहीं मिना देते। इसके निए तो ननुष्य को भ्रपना मन स्वच्छ बनाना चाहिए। महारमा बह है कि जो सकस्य मन मे करता है, वही जिल्ला से कहता है, भौर वही पूरा कर दिखाता है। तब बाकर कही महात्मा होता है। जिसके मन मे कुछ है, जिह्ना पर कुछ धौर, किया मे कुछ घोर, वह महात्मा नहीं। इसीनिए कहा है कि परमात्मा सबके अन्त र रश मे है मन बगानो कठौती में गङ्गा।

> दशन होत नारायण के, न पापी मन बचारे से। ज्योति सेज्योति मिलती हैं जय में मन की मारे से।।

देखा । मन को मारे से कैसे पर मेरवर प्राप्त होता है 'इसके तीन नियम हैं—

पहला बुढि की तराज्ञ पर पूरा तोक-कर रको। नय पुकक दिनता वेबता है, बच्छे भी धौर बुरे भी। यदि मन में का कोटे की पहचान है तो नेक पुकक तो बेसकर शेखें हट बाता है, परन्तु बुरा धाने बढना है। वो बढता है, यह प्राक्त-तिक कप में भ ता ही हैं। तारपर्य यह कि धारतवासियों नो सत्मा नहीं मिलता, जुवन की माना बट गर्ट हैं, सत्युव सत्सव होना सावस्य ।

दूसरे बहातुम उपम्बास पढ़ते रहते

सारत को पुरतक पढ़ो। सपने विद्यार्थी - नहीं। फिर कहो 'साई। पढ़े-लिखे हो, जीवन को पतिज बनायो। सदि मन नहीं स्व मिट्टी से बना सो।' परणु तह नहीं मानता हो उपमान के साथ हा बाब दर्शन मानविक्या। का सदिन्दी से तो विकासन की व तें भी पढ़ो। जादि स्वानस्य का बीवन-चरित पढ़ सो स्वास्यकाश पढ़ पुरस्तार के पास रेत से बाबो सोर तो पढ़ियापरेंट पढ़ सो, जिससे तराज्य जावतें कहो कि 'सबा बना दे!' बहु के दोनो पत्रक समान रहे।

तोसरे धपना घन करसा पवित्र करो । दिन गत म चौबीम वण्टे होते हैं। सवा तेदस घण्ट भीर कामकाज में समाधी पौन घण्या बैठकर सब काय अवहार स बलग होकर, उसस ानसा प्रकार का कोई सम्बन्ध न रसकर, परम पिता पर-माल्या के चरलों में मन लगाओं। भोजन का सम्बन्ध स्र अच्छे है, बस्त्र का सम्बन्ध छ महीने या बच भर किशी बस्तू का सम्बन्ध सन्तकाल तक नही, केवस पर-मारमा का सम्बन्ध धन्तकाल तक है। वब बीबारमा निकसता है तब भी परमास्म उसके साथ पहला है। सतएव इस समय को नहीं सोना चाहिए, मन लगाकर पर-मास्मा का व्याम करो । उस समय दूसरो वे बात न करा। ऐसान हो कि इवर भाप सम्भ्या कर रहे हैं, उधर बच्चे से बार्वे भी द्वा रही हैं। इन पैतासीख मिनट में तो न ससार तुम्हारे लिए हो, न तुम ससार के लिए। यह ठीक हे, कि मन हो चचन प्रवश्य है, वरन्तु तुमने देशा है कि मनुष्य कठिन से कठिन काम भी कर लेता है। एक समय शाता है कि मनुष्य शास्त-ह्र वा तक भी कर सेता है। कितना कठिन काम है [?] परन्तु इसके लिए भी मन तैयार हो जाता है। इसी निए कहा है कि--

> मन के जीते जीत है मन के हारे हार।

बदान्ती कहते हैं कि बहु एक कप बाता है बीर धनेक कर बाता हो बाता है। परणु धार्यसम्म का यह खिडान्त है कि एरमारमा धनेक रण का नहीं होता। जो रक है नह एक ही क्प का खुता है। जैसे नोहे से जुहार धनेक पदार्थ बना केता है परणु मोहा जुहार नहीं बना एकता। इसी प्रकार मिट्टी और जुहार की बात समक थी, जब परचारमा ने प्रकृति को लेकर खतार बना दिया तो प्रकृति परमारमा केत बन सकती है? मिट्टी से पढा बनता है, इसके किए फिक्नी मिट्टी चाहिए, यह फिक्नी निद्दी किसी बक्तीक के सकके को शे बीर कही कि नहीं। फिर कही 'आई। पढ़े-सिखे हो, इस मिट्टी से बना लो । ' परन्तु वह नहीं बना सकेगा । वडा मिट्टी मे तो विश्वमान है, परन्तु उसके मस्तिष्क वे मही। धव उससे कहो कि 'बडाबना दे!' बह कहेगा कि 'वडा रेत से नहीं बनता अर्थात षडा रेत में नहीं, मिटटी में है। इसी प्रकार संसार प्रकृति में और प्रमात्मा क ज्ञान में विद्यमान है। जिसके ज्ञान प्रथवा मस्तिष्क में कोई बस्तुहा वही उस बमा भी सकता है। कोट का कपडा धापने सिया है मैं उसे फाड दू, तो बाप सड़ेने। मैं कह लडते क्यो हो[?] दरकी मातो इसे फाड ही डालता । आप कहेने, मूल पावता ता सही किन्तु किसी रीति से किसी नियम से 17 उसक हास मे कैची भौर मुई हैं भौर उसके मस्तिष्क से कोट है। बस यही तो नियम है। एक बह बस्तु जो बनानी है दूसरे वह पदार्थ जिससे वह बनानी है, तीसरे वह मस्सिष्क विससे वह बनानी है जब तक ये सब चीजें न हो कोई पदाय नहीं बन सकता । इसीकिए तो परमात्मा को अवापति कहा है।

सायकन कई को गाठे बायने को कल प्राय एक साल करवे में आती है। पाप मन कई की गाठ नस साम पाय करनी ने बाती है। क्या उनका नका कम कर दिया ? गही। बकन हो कम नहीं हुमा, केवल देवा और सिकोड हो गई। बढ़ को हो जहां कि उनका को किया है। कहां कि की किया है। कहां कि की किया है। कहां कि की किया है। कहां कि किया है। कहां कि उनका साम किया है। वह किया है। कहां किया वहां है भीर उसका सीम किया है। तो वह किया वहां है सीम ते तक उसका साता है, तो वह किया वहां है साम हो साम है।

एक बार में दूरी बया, बनियरों के पता मैं मानवा ही नहीं। परन्तु में का विद्या कि बचा रीवक हो के हो। तिवार से गया दो बया है कि पार्टी के हो हो है। उसे दो कि पता हो हो है। उसे दो है। उसे के हहा, 'हर की दो है। 'उसे कहा, 'हर की दो है। 'उसे कहा, 'हर की दो है। 'उसे कहा, 'हर की दो है। 'जर कहा, 'या की दो हो। 'या की दो है। 'या की दो

बार्कों को यानवा ही नहीं किर मुने क्यों नजर बाती है ? मैं तो मूर्तिको साकार् वैकरहा हूं।' वास्तव मे पुत्रारियों ने ऐसे ममुख्य रखे हुए हैं, बो यू ही मुठ-मूठ कह बेते हैं। शब वे ऐसा न करें, तो मनुव्यों के मनी ने जब मृति के सिए क्या कैसे हो? रामेश्वर बाबी, भोते-साचे मनुष्य बहकते फिरते हैं। धव तो नहीं परन्तु पहले जब कोई विशाधक जाना भाइता था, तो यही स्रोम कहा करते वे कि "बिनायत व बास्ते, वर्ग प्रम्ह हो जायेगा।' वेश विवेश जाने को इस प्रकार रोक दिया। यस को भी एकादशी का वत समभ रक्षा का, कि चावस मूक्त मे कामा और दूड नवा। धर्म तो प्रत्येक स्वान मे रक्षा करने से यह सकता है। यवि अध्य करना चाही तो यही अध्य हो। वकता है। विवर से उन्नति होती देशी, उधर से ही रोक विया और कहा, आसी, रामेरवर जामो। वस १न्ही लोगो ने भारत को गारत किया है।

बीर पुरुष उस परमात्मा को वेक्सके हैं। मुक्ते आपको वह दिखाई नही देता, यद्यपि वह अन्दर ही विराजमान है। भीर पुरुष पहलवान को नहीं कहते को पहल-वान होता है लगर कसा हुआ, खाली चौडी गर्दन मोटी मुख प्रसन्त, चास ने मस्ती, पुढि मोटी, सरीर बलिच्छ । अब कोई बलवान् भाषातो उसको जी कह कर बुलाया कहा 'बाई तिम ती बढें मञ्झे झादमी हो । ' दुवंस झाया तो विचारे को मारने लगे। ये पहलवान के लक्षरम हैं। वह बीर नहों। मतुंहरि की महाराज करते हैं -- घरे । लक्ष्मी आये चाहे रहे, काज ही मरना हो चाहे बुग बुगल्तर तक जीते रहें, वोई मान करे चाहे अपनान, भीर पुरुष नीति सौर धर्म के सार्ग से एक पन मी विचित्तित नहीं होते।' य मत् हार कौन वे ? चक्रवर्ती महाराज विक्रमादित्व के वट आई। राज ाज इन्ही का वान परम्यु अपने छोटे गाई विकशावित्य को वैकर वन को चले वए। बलुंहरिजी ने राव वे मुख मोड लिया और बहा, त्रको ! मुके राज की इच्छा नही।

> वज्जातीरे हिमािरिखमा बढाप्रसासस्य, बहाष्यानाच्यसमिविमा योगीनहर चत्रस्य । किन्तैर्याच्यसम्बद्धानु र्यत्र निर्मिष्यस्य, कष्युवने स्टर्शरूपा स्वाकुमक्क वरीये ।

मुफे तो यह इश्का है कि वह विक कब झाएगा, जब मैं बना के किनारे वर्क से बकी हुई हिमालय की किसी बहटान पर मैंटा हुआ हैगा बल की तरमें आयोगी और मेरे उनर से नुबर जायेंथी परन्तु नेरा मन फिर जी तेरी मनित से अरपूट परेता।

योगी योग ज्यान में ही बर बिट कर्ती

ईश्वर दर्शन

श्रीय जन्तु भी उन्हें कुछ हानि नहीं पहुं-श्रादे । फिर ने कहते हैं, 'हे प्रयो । हिएन साइर मुक्ते पर्वत का एक बार समर्के श्रीर मुक्ते टक्डर मारें।' ये हैं उन महा-स्थायो के मन की उसनें। सवार के लोग यह बारनी स्त्रीत युनते हैं तो कुलातों मिन्दा करता है तय उनका मुख एवा हो यह कोई की बीच में के पूरा निकास बैने पर कोफ रह नई हो ससारी मनुष्यो को बाब कोई काम नहीं रहता तो ने कियी की प्रयान करने लगते हैं थोर किसी की मिन्दा यह बड़ी दुरी बात हैं। योगी श्रीर वीर पुन्य तो निन्दा स्त्रुति सं सहैव निजेंद रहते हैं।

प्राय तीस साम हुए, मैं काशीपुर सयाधा। एक दिन प्राय न्यारह बजे मैं एक चौतरे पर बैठा लोगों से धर्म सम्बन्धी साधारण वातचीत कर रहादा कि 'आर्द! मृति पुचा करने से परमात्मा प्रसन्त नहीं होता। दतने में एक पुजारी ने कहा, 'महाराज । भोजन का समय है। कुछ मोजन करोने [?]' मैंन समक्ता यह बेरी बातो से प्रसन्त हुआ है, इसलिए भोजन कराना चाइता है। बातचीत सराप्त होने पर मैं उसके साथ-साथ चल दिया। वह मुक्ते एक मन्दिर में ले गया और उसने वहा किठा दिवा वहा सोनो को चरचामृत विया काता है। बहु कहने भगा 'महाराज [।] यहां की वर्की वडी प्रसिद्ध है।" मैंने कहा, "ले बाओ।" वह मिठाई से पाया फिर उसने कहा 'महा-राख ! सूर्ति की निन्दा क्यो करते हो ? भाष नहीं मानते तो न मानें।" तीन-चार वण्डे वहले मैं निग्वाकर रहा वा परन्तु श्रव मेरा मन बदस गया। मैंने कहा 'हा युष ठीक कहते हो हम तो सन्यासी हैं, हम नहीं मानते तो न मानें। यदि कोई गृहस्बी मान से तो हम चय बुरा न कहेंग। वरन्तु यह हमारी भूस बी, बीर पुरुष तो बहु है जो किसी नोम मेन फसे।

एक कबूब बैठा बा, एक रागी बाया, स्वतं राग सुनाया। गाना सुनने के बाद स्वतं राग सुनाया। गाना सुनने के बाद स्वतं कबूब ने कहा, "तुम कब बाना, सुननें पांच कब्ये सेंगे। रागी बडा प्रसन्न हुया। सुन्ता केंद्र साम क्या मुख्या केंद्र साम कस सामा पाच स्पये देवे"। कबूब ने हनकर

(पृष्ठ १ का क्षेत्र)

करूपाण मार्ग के पिथक विरोधी भी स्वीकार करेंगे कि यह भारतवर्ष का धाष्ट्रीनक सन्यासी भिन्न की नजर से ही सभी की तरफ देखता या। कायरों के जमाने में इस पुरुष-बिह की निर्मयता बहुत लोग न समसे होंगे भीर सक्तय की नजर से उनकी तरफ देखा होगा तो वह स्वामी जी तरफ देखा होगा तो वह स्वामी जी का देखा होगा तो वह सामी जी

कहा, 'राची ही हो ना ' चुढि तो है हो नहीं। तुपने पुत्रे क्या दिवा चा? केक्स याकर हो प्रयत्न किया चा ना? की भी नता कनाकर तुम्हें प्रस्नान कर दिवा।' तुनो मेरे भाई ' साझों का चन माने पर विज मानक न ने और पदि चका जाए तो दुस न हा, उसी को चीर-पुरांकहते है।

जरनियदो में कहा है कि घीर-पृष्य ही मानी भारता न परमास्या का देखता है।" मेरे भाई [!] बात यह है कि किसी समय एक स्थान मे राज्य-प्रजन्धकनाओ का नियम यह या कि किसी निपुण मनुष्य को पकडकर पाच वर्ष के निए रात्रा बना बेते न भीर उसम यह कह देन य कि पाच वष नकतुम राज करलो, छुटे वर्ष तुम्हे एक जाल में छोड़ दिया आयेगा। वह मोचतायाकि पाचवय ता बहुत होते हैं इतने चिरतो राप सुख भोग व्रृं। परि-ए। म यह होना चाकि वह राज-सूख मे फैंसकर सब कुछ। भूल जाता था। जब समय बाता बीर वे कहते, "बलो ! तुम्हे वन में इदोड भायें, "तव वह बहुत रोता विल्लाता, परन्तु वे उसकी एक व सुनते। ऐसे ही कई मनुष्य भावे भीर चने गये। परन्तु किसी को यह बुद्धि न धाई कि राज्य पर अधिकार जमाना चाहिए। एक बार एक चतुर अनुष्य राजा बना। उसे भी यही कहा गया। वह बुद्धिमान बा। उसने प्रजा का अब प्रबन्ध किया। नगरी की बलियां स्वच्छ कराई। दो वर्ष इसी प्रकार प्रवन्त्र करता रहा। लोग बड प्रसन्त हुए ती तरा वर्ष लगते ही आज। की कि यह जगल साफ कर दो। वहाँ सबकें बनवा थी । जगल मे मनस हो नया । ढिंडोरा पिटवा दिया कि जो कोई उस अभिल ने जाकर रहेगा उसे मुफ्त सकान मिलेगा। बहुत से लोग वहा बाकर मानाय हो नये। अब समय माथा तो उतने प्रश्मकर्तामें से कहा, 'बसी माई ! मुक्ते जनल में क्षोड बाघो। ' उन्होंने कहा, 'महाराज ! सब बन ही नही रहा जहा बाहो इच्छा पूर्वक रहो।'

इससिए जाई । बुढि से काम जो तो करवाण ही कल्याण है। एक परमारमा की गरित करो प्राने प्रत्य करण को शुढिकरो बुढि स्वयमेन था बायेर्ग और देश्वर के वर्शन हो बायेंथे।

(पृष्ठ३ का शेव)

भृप्टाचार और

देना तो जनसम्बो चाहते वे लेकिन। लेकिन क्या? सेविन यह कि हमने सपना ईमान

कारन यहां के हमन प्राप्ता हमान केन विवा तब स्पष्ट है कि भारत ही सब से बड़ा फ़ब्टाचारी है। भारत का बोटह, ए बोटर ! तूने बीतान के दर्शन नहीं किये तो अब कर सं!

सब से बड़ा अध्याचारी सब से बड़ा बीतान तू है। दे राजी को फटका अब बांस सुनेशी तू देखेगा कि तेरी ही दाड़ी तेरे डाव में है।

"संस्कृत में निर्णाय का श्रोचित्य"

विश्वत १० मई - पू के समाचारपत्नों के माध्यम सं जब इलाहावाद उन्न
स्थानावण के न्याप्ति को बनावारी लाल
बावब हारा दिर गय मन्द्रत आया में
निर्धय का समाचार तात हुया तो घनेक सक्दत प्रेमी मजनते तथा सस्याधी ने इक्का स्वाचत किया। यद्योग कुछ लोगो ने सत्कृत माधा को महन को स्वीकार किया तथारि निर्णय की अगबहारिक्ता के कारण खीचित्य के माध्यम से समा-व्योचना मी की

इस सम्बन्ध में मेगा प्रवना विजार है कि सम्कृत भागा के धन्नर ही मार-सीय सम्कृति की असक मिलती है। बैसा है, सम्कृत सार्क निवन में नार्क में सात्र की है, सम्कृत सार्क निवन । नार्क में सात्र की शिक्षा से धात्र भारतीयों की मार्कमिक बासता का परिचय नवंविदित हो गया है और शिक्षा अभारने को ख्यावहरिस्ता की स्टिमें एकते हुए हमारी सरकार नयी राष्ट्रीय स्थिता जीति बताने में खूटी हई है।

पाल्यास्य म इति व सम्मता के सम्मता का सम्मता का सम्मता का सम्मता का गिर्माक पत्रत के कप से हरिट तोषम हो गहा है। से विवाद से गुरुकृत पिक्षा प्रणासी व सम्झत प्रणा के माध्यम से पढते बाला सायब ही ऐसा कोई खान होया जिसने जोरी, बलात्वार, राहुनती, सपहरण्य साथि इत्य किये हो, जबकि समावार करों के बानों वे वाला विवालयो/विवर्गवार स्थों के बानों के निल्ले हैं।

इन वस्त्र ने कोई पराङ युस नहीं हो सहता कि मानव बीवन निर्माण के जन्म से मृत्यु पर्यम्न तक के सोसह सहकार वर्षो वावन सहक्रत भाषा म ही विग्रित हैं। ऋषि-पुनियों हारा प्रवत्तित धाल्मासिक ज्ञान की ज्योति धाल्म वास्त्रि के साधन का मार्च इसी माषा में धारीक्षेत्र वल्य पर में समाहित हैं जिसका धान्येश्या कर साध विवेशी विद्यान् वेशानिक वनत् में धारि-क्यार कर रहे हैं।

वंस्कृत भाग को मृतभाषा कहना स्वय धपनी हीनता प्रवंशित करता है। विस साथा को समस्त माशाधों की जननी के रूप में जाना जाता हो, जिस भाषा के महर्षि पाणिन जैसे बेगाकरण के बारे से 'म मुतो न मणियन्ति कह विदा मदा हों, जिस साथा को लगभय सारी दुनिया मे पढ़ा जाता हो, जिस भाषा मे ससार का प्राथमितम प्रत्य वेद मानव मान के लिए जान विज्ञान के समुख्य क रूप मे जयन-व हो तथा जिस भाषा में प्रार्थ (हिन्दु) जानि के समस्त क्में काण्य सम्यन्त होने हो वह मृत कैसे?

हां जब सह राज्याय थी तो सम्बद्ध कर के विद्वानी न प्रतिस्पर्ध के इस्ह सबस्य वना विद्या जिसका प्रस्त प्रदेश के जन नाव रस स्थान है। एक समय ऐसा भी रहा जब यह साज ब हाज जाति विज्ञान के भागत के सीमन रह गह दाओ पर नुसाज यह तभी वा जिल्हा के स्थान के स्थान

भाज इस भाषा के सरलतम विधि से भ्रष्ययन व स्थावहारिक ज्ञान की इंदिट से भनेक सस्याये कार्यंशील है। शासन द्वारा भी इस शावा के मान्यम से उपाधि ब्राप्त करने वालों को मान्यतादी जा रही है। परन्तु जब हम भ्रमने सविधान के भ्रमुक्रप स्वतन्त्रता प्राप्ति के ३७ वर्षों के परचात भी राष्ट्रभाषा हिन्दी को पूणरूपेशा नहीं भागना सके हैं तो संस्कृत भाषा दूर रहेगी ही। यत प्राज सावत्यकता है कि हम भ्रपनी सस्कति व सम्यता के प्रति भ्रदूट निच्ठा त्र्यस्त करते हुए सस्कृत का ग्राच्य-यन कर व्यावहारिकता मे परिवतन करें। न्यायपूर्ति अधियदव जी ने हिन्दी धरेजी मे अनुवाद कन्कं एतिहासिक निरास की गौरवंशालो परम्परा सस्कृत भाषा से निर्णय देकर किया है। प्रशाहै भारतीय जनमःनस घाने पूबजो की तस थाथी ' को सम्यक रीति से सुरक्षित रखते हुए इसकी श्रीवृद्धि में योगहान देशे । इससे अहाएक भोर भ वाशी विवाद का शक्त होवा वही दूसरी घोर राष्ट्रीय एकता भी सुद्र होगी।

> सुरेशवन्त्र ''ा-श्री'' प्रवारमन्त्री

भ्रष्टाचार को चिकित्सा धार्मिक शिक्षा

धासिर घ्रष्टाचार रोकने वासे म तो कियी पेड पर लगे मिलते हैं न धासमान से उपकरे हैं, वह वहाँ ही मिल सकते हैं बहाँ मानुष्य वनाए कारी है धार्चीत शिक्षा-एगासयों में धार वहां भी तब मिल सकते हैं बब वहां डल का प्रवण्ड हो।

पिकले दिनो सयुक्त बदाचार समिति की कोर से एक नोकी बुलाई गई। गोकी ने जो सिफारिकों की उनने से दो मुख्य सिफारिकों इस प्रकार हैं।

१ शिक्षा सम्बन्ध मे नैतिक तथा स्रापार सम्बन्धी शिक्षादी जाय ।

भाषार सम्बन्धा शिक्षा दी आयः। ् २ रेडियो और फिल्मो मे सदसील

यदि इसमे यह स्वष्ट कह दिया जाय कि शिक्षालयों में वार्मिक शिक्षा प्रारम्भ कर दी जाय तो सफलता के मिलने की सम्भावना बन जाएगी। नयोहि अब कोई बान कही जाती है तो उसको प्रभावोत्पा-दन सक्ति जहायुक्ति युक्तनापर निर्भर है वहा इस बात से भी इन्कार नहीं किया वा सकता कि प्रमावीत्यादकता का एक बहुत बढा प्राचार बक्ता का व्यक्तिस्व भी है मनुष्य को सस्य के लिए मर मिटना चाहिए यह कह तो सब सकत है। परन्तु सुनने बाले यह भी देखने हैं कि कह कीन रहा है। जब इसी वावय को लोग महात्मा गांची के मुझ से मुनते वे तो महारमा का का सारा जीवन इस वाक्य के समर्थन से बोलता या इसलिए वर्ष शिक्षा को शिक्षा

समाचार-सन्देश

त्रार्य वीर दल, दिल्ली का शिविर सम्पन्न

मभा प्रधान श्री सूर्यदेव जी द्वारा बच्चो को पूरस्कार

बायं बीर दल, दिल्ली प्रदेश का ग्रीब्मकासीन शिविर ३१ मई से २ जन = ५ तक रत्नदेती पुत्री पाठशाला कच्यानगर मधायोजित किया गया। जिसमे यमुनापार की समाजी से १६ सबयुवको ने उत्माहपुण भाग लिया। शिविराधियों हेत् सान पीने एवम् ठहरने की नि शुरुक व्यवस्था की गई।

रविवार २ जून को समापन समा-रोह के प्रवसर पर प्र मं वीरो ने व्यायाम, प्राचामा एवम् साठी चसाने का सुन्दर कार्यक्रम प्रस्तुत कर उपस्थित दर्शको का मन भोह लिया। इस प्रवसर पर सभा प्रचान भी सूर्यदेव जी ने सभा को सम्बो-

वित करते हुए कहा कि बाज की विवस परिस्थितियो में देश एवम् समाज को निष्ठ वान प्रार्थवीरो की परम भावश्यकता है। युवको मे अमाह एवम् असीमित शक्ति को एक निमन्ति कार्यं पढिति मे परिएत कर बार्य वीर दल ने सराह-नीय कार्य किया है। उन्होने एक बार फिर ग्राव्यस्त किया कि अर्थ दीरों को उत्साहित एवम् प्रोत्साहित करने हेत् भमाकभी पीछे नहीं रहेगी।

इस शिविर में साथे सर्वश्रेष्ठ शिव रार्चीको पुरस्कार २००० रुपथ नकद एक मैडल एव पुस्तिका भाग बुवक सजय कुमार कोदी गई। -- श्यामसुन्दर विरमानी

महिष दयानन्द बलिदान निवचिन

धायसमाज, धनाव मण्डी, शाहदरा विल्ली का वार्षिक खाबारण श्रविवेशन २६-५-वर् को सम्पन्न हुआ, जिसमे वर्ष १८८५-८६ के सिव निम्नतिशित पदा-निकारी चुने बये---भी बनवारी साक्ष सर्वेशी निरञ्चन सास बीतन

नेषाकर घाय, रतव साम यय सकी थो सदानन्द जपम त्री श्री ज्ञानप्रकाष कोबाध्यक थी हरपालविह प्रचारमधी भी निष्ठाकर बाब भी यावेश्वर **पुस्तकाव्यक्ष**

श्रावश्यकता

२७ वर्षीया (एम० ए०, शार्ट हैण्ड हिन्दी ग्रमणी पास) ग्रह काय दक्ष, सुशीस, गौरवरा, कद ६ फुट १ इन, धार्यक्षमाजी श्वाकाहारी परिवार की सरकारी सेवारस ११००/- रुपये बेतन वान बासी सम्या के लिए सरकारी सेवारत काह्य वा वैष्य परिवार के वर की भावस्थकता है। श्रम्पक करें-- की प० यशपास जी श्रवाश् धार्यसमाज दीवानहास, दिल्ली ६

श्रावश्यकता

गौर वण ३५, वर्षीय सुसीक्ष कल्या कद ४/३ बाकाहारी परिवार सरकारी सवारत बेतन ११०० द० पाने बासी (घराड़ा) सत्रीवशीय कन्या के लिए सरकारी सेवारत ४० वर्ष से कम आबु बाले वर की झावश्वकता है। विदूर या तमाकधुदा वर वर भी कोई सापति नहीं है।

> सम्पन्नं करें या पत्र सिखें---**22798** विल्ली बार्य प्रतिनिधि समा १५ हनुवान रोड वर्ष किस्ती-१

हरियागा में श्रार्यवीर प्रशिच्चण शिचिर धूमधाम से प्रारम्भ

धार्यवीर दश हरियाचा के तत्त्वाव-थान ने हरियासा शर के विभिन्न विको में बार्वेगीर दस के बीव्यकातीन विविर बढी श्रमधाम से प्रारम्भ हो नए हैं। धार्य-समाज भाष्टवा (भिनानी) ने श्री धर्मपाल "बीर" शास्त्री बी के सरकाण मे २४।॥ से १।६ तक, बार्य हायर सेकेन्डरी विद्या-सय नरवाना (जीन्द) मे श्री रामकुमार जी धार्य के सरकाण मे २६।%, से २।६ तक, डी॰ ए॰ बी॰ हायर सैकप्डरी विश्वालय, करनास मे श्री जगदीश चन्द्र मधोक मण्डल-पति की देखरेख में २७।५ से २।६ तक शिविर प्रारम्भ हो रहे हैं।

धार्यसमाय क्षपुरा, करनाम मे भी एक सप्ताह का बार्य वीशानना दल का प्रशिक्षरण शिविर कू० सन्तोष धार्या के नेतृत्व मे नग रहा है।

इसी प्रकार हिसार मे १४।६ से २१।६ तक सी सजय कुमार जी बार्य के सहयोग सं, बुरुकुण अज्जर (रोहतक) ने १४।६ से २३।६ तक बाचार्य देववर जी ब्बायामाचार्य के नेतृत्व में, दयानन्द सम्ब विद्यालय सैक्टर-१६ फरीडाबाद मे १६।६

कैंस का प्रसिद्ध शिक्षणासन सापका

चिर परिचित्त की नुरुद्धम चित्तीहरह

र्धेरावली की सुन्दर पहाडियों में नमीरी

नदी के तट पर एकान्त स्वल पर भव

स्थित है, शिक्षा बहा सर्वेचा नि शुस्क दी

वाती है सभी प्रान्तों के बालक बिना

किंसी नेदभाव के वहा शिक्षा प्रहुता कर

रहे हैं, आअभ प्रशाकी यहा की एक

उल्लेखनीय एव धनुषम विशेषता सिए

हुए है। यहा सुयोग्य एव विद्वान् बुरुयो

की देखरेख में बालको का सर्वागीख

विकास मुकारित होता है। वद, वेदाग,

धादिकी पढ़ाईको प्रमुखता दी वाली

है। पहली से बाठवी तक वहा सस्कृत

विशेष के साथ धर्वाचीन सभी विषय

पाठ्यक्रम मे है। सस्कृत विश्व विद्यालय

बाराससी से बार्व पढ़ित पर बाबारित

प्राचीन व्याकरण व वेद निरुक्त प्रक्रिया

से मध्यमा, शास्त्री व शाचार्यकक्षा तक

की परीक्षा का समावेश है। विगत वर्षों

से बहा की परीक्षाओं का परिचाम अत्यु-

तम रहा है। मध्यमा, धास्त्री व

ब्राचार्य कक्षा के खात्रों के सिए छात्रवृत्ति

का भी प्रावधान है। पढ़ाई १ जुकाई से

धारम्य होती है। नवीन वासकों का प्रवेश

१४ जुन से भारम्य होता है। प्रदेश

बुम्बन्दी सन्द बायकारी के लिए मुख्या-

विष्ठाता को पुरसुत विसीवनड राज-

त्थान ३१२००१ इस वर्षे से पत्र व्यवहार

से २३।६ तक भी कन्हैयालान जी मेहता के लीजन्य से तथा पलवल में की सत्वपास मार्थ के सहयोग से २३।६ से ३०।६ त.

इन प्रशिक्षण विविरो में युवको की राष्ट्रवादी विचारकारा, भूत्रपान, मध-पान एव समक्य पदावों के सेवन से दूर रहने की प्रेरणा दो जायेगी। दहेज प्रवाध वैसी शामाजिक कुरीतियो से सामवाम किया जाएया ।

व्यायाम, प्राणायाम, श्रासन, बढ़ी-कराटे तथा प्रात्मरक्षाय बाठी प्रश्चिक्षक भी सिखाया जायेगा। उन्हें बारिमक, शारीरिक तथा सामाबिक उन्नति के साधन बताये जायेंगे । समाज ये क्याप्त बजान जन्याय, बभाव का दूर करन का प्रेरणा दी सावेच ।

शिविरों में १ १ से २ ४ वर्ष सक के युवक भाव ले सकते है। निवास समा भोजन की व्यवस्था नि शुल्क है।

> धजीत कुनार धार्य (मन्त्री) बार्यंबीर दल हरियासा

श्री गुरुक्कल चित्तौड़गढ़ में बम्बई में श्रार्य बाल शिविर प्रवेश आरम्भ सफलता प्रवेक सम्पन्न

कार्यसमात नासुप की बोर स २०४-०५ में १२-५-०५ तक १५ दिन के लिए आर्थवाल शिविर लगाया वया बा जो कि राम झाश्रम पवाई के शांगन से बड ही सुचार कप से चलता रहा। इस में सरमय ३० वज्यों ने मान निया। विन हो गायत्री, सब्या, हवन मत्र तका प्रार्थना सादि वड ही प्रच्छे दय से सिकार वये। बन्तमे १२-६ =६ को तो मानो-बार्वजनों का नेसा जुडा हुया था। प्रथम पुरस्कार विजेता भी सुरजीतसिंह उप्पन्न को इनको १०१/- रोकडा दिय । दूसरे क तीसरे मासूप के बण्च रहे। सभी बण्दो सरकृत बाहित्य, व्याकरता, दर्बन, उपनिषद् को खान-पान, नाश्ता, दूव ग्रादि ठीक समय पर मिलता रहा। विस्की देवरेव धार्यसमाध्य के मन्त्री ज्ञानचन्द गोयल कर रहे ने। बच्चों ने वैदिक धर्म को प्रास्ना बाना इस विक्रि का मुख्य उद्देश्य था। ज्ञान वस्य गोयल मन्त्री

शुभ विवाह

दिल्ली साथ प्रतिनिधि सभा के प्रकार मन्त्री वी राजेन्द्र हुर्गकी बहिन सौ० बशबासा का गुत्र विवाह विश्वारतसूवक कोषाध्यक्ष नगर धार्यसमाज शाहबरा दिल्ली के साथ १६ मई को घूमचाम से सम्पन्न हुआ। इस प्रवसर पर सन्ना त्रवान की सूर्वदेव, सहामन्त्री की डा॰ बर्मपाल, वेद प्रचार प्रविष्ठाता स्वामी स्वरूपालम्ब भी मादि मनेक गण्यमान्य व्यक्ति व्यक्तियत वे ।

शताब्दी मयुरा । मार्थोप प्रतिनिधि सभा, सब्दाका स्वय सबस्तो मुख्य समारोह ७ जून से १ जून तक हो रहा है। इसका

श्ववाटनश्री रामबोपाल शासवाले करेंने । इस अवसर वर वेद मन्दिर का उद्दाटन, ब्रिन्दू बागरस सम्मेलन राष्ट्र रक्षी सम्मे-द्धन, महिसा चावरस सम्मेसन, मार्थ किशान सम्मेशन तथा कवि सम्मेशन का क्यायोजन किया गया है। समारोह मे क्षी बनराम जासड, स्वामी शस्यप्रकाश, सद्दारमा दयानम्द, डा॰ क्लासिद्द, प्रो॰ बसराव मधोक, बाचार्य प्रेम भिक्षु सादि महानुनाव धपने घोजस्वी विचार प्रकट

निवेदक डा० द्वारिका प्रस द झास निवोचन

बार्यसमाज बाधा पार्क, जेमरोड, नई विल्ली-१= का सर्वसम्मत चुनाव २= अर्थन १६८५ को निम्न प्रकार हुआ। क्रमान-- श्री गान्सिक्रकाश नारम उपप्रचान-शी दासचन्द जी ग्रायं मन्त्री-- श्री निरंजन देव जी संबदवा

छपमन्त्री- भी दिनेशबन्द जी बन्सल कोवाध्यक्ष — श्री कुमभूवण जी नोबस सेसानिरीक्षक-- श्री राज्य कुमार बौहान धायसमाज धाना पाक १३-८-८३

को स्थापित हुई थी झीर पारिवारिक सत्समो द्वारा ही वेदप्रवार का कार्य प्रच्छी प्रकार ने कर रही है।

२८-४-८६ की साधारण सभा के निश्चय प्रनुसार धायसमाज बाला याक का सम्बन्ध 'झार्ग प्रतिनिधि सभा दिल्ली' से जोडा जा रहा है।

सान्तिप्रकाश नारग

व्यवस्यकता

एक प्रोइ सम्बा साल सेमानिवृत कारित किसे सैनारित य प्रशासिक समुम्ब ही वितोडनइ मृत्कृत सामन मासकों की परिचारी हेंदु स्वास्ताय वद के लिए समेनित हैं। स्नातक व प्रशास निक्त समुम्बी को प्राचितकता। येव नेतन सोमसास समुख्य स नेदन वच १० जून इक साहाइसम्बन्ध करें प्रथा स्वास्ता मिल—

मुख्याबिष्ठाता-ची बृदकुस वित्तीवनब शाबस्थान ३१२००१

निर्वाचन

सायस्थात इच्छानस्य विस्ती ५१ (बसुनातर) का वाधिक चुवाब सम्पन्य हुवा। विसर्वे निम्नलिखित प्रविकारियो का चयन हुवा—

प्रकान — श्री राजकुमार मेहरा नन्त्री —श्री क्षशोक पठानिया कोबाध्यक्ष-—श्री क्षोनप्रकाल बुदवार

सबदीय

पूरोहिस बायसमाज

निशोचन

धायसमाख मुख्यकरपुर (विहार) का ६२ वो वार्षिक निर्वाचन सम्मान हुआ। धानामी नव के जिए सरसम्बद्धि से निम्मजिजित प्रविकारी निर्वाचित किए

- १ श्री पन्नासास धाय-प्रधान
- २ की कुलमूचण बोहरा—य शी
- ३ जी रायकृष्ण विवदावका---

कीषाध्यक्ष ।

स्वत्रा की क्षम्बन्दा समाव के नयो वृद्ध कायकर्ता भी पूराचनः विकरावकः न की भुत व से सामग्र १२% सरस्य उपस्थित थे। प्रातिभोव के साथ निर्मा चन काय सम्मन्न हुया। मंत्री सायसमाव

निर्वाचन

धार्यवसाय विज्ञीनुवी के निम्म-निवित्त विकारी १६०५ ८६के जिए चुने वमे हैं। धासा है प्रियपत्र में त्रकावित कर अनुस्कृति करेंगे।

- १ की जवाहरसास धाय-- प्रचान
- २ औ हर मजराम सग्नवास -- उपप्रयान
- ३ श्री वीरवहादुर प्रचान—उपप्रवान
- ४ श्रीसर्वेश्वरफा—मन्त्री
- १ की बमदेव प्रo मौब— उपमन्त्री
- ६ समावणन्द्र क्कीपुरिमा-कोशाञ्चल
- ७ भी राषेन्द्र प्रसाद—पुस्तकाध्यक्ष

बन्बचाद ।

सर्वेश्वर का (भाजी) भागसमाच सिसीमडी

यञ्जशाला का उद्घाटन बायसमान बसोक विहर पन 1

सायसमाज स्थान । यहर पन्ना । देशनों के सिसाल प्राप्ता स नव निर्मास स्वज्ञासा का सिस्मिं नुस्पेस ज्यानन ६ स्व⁵१६ ५ प्राप्ता नाग की नाम जन्म में प्रस्तवनों के उच्च रहा सीमती पुष्पा जी सम्बद्धा के पर कथनों के सम्पन हुसा उद्युव्द न समाराहु की सम्ब्यनता स्य सम्पन्न के प्रस्ति स्वाह्म आ सीमती को जा स्त्रीन कह्या के क्याने क

बक्रमामा के निर्माण हेतु आमती गवदेवाने २५००० लक्ष्य की । ति स्रोत ने द्वार जीतिलक राव सवदेवा की पृष्य स्वर्गत में दन क्यम दा। इस स्रजाना के निर्माण का सक्य स्वयम १ वध्य पृत्र सदेवे परिवार ने स्क्या स्वार्ण र वा स्वयस्थ्य स्वार हता है

हुण्यार्थः
समस्याप्य प्रक्रित वेद सुम्बित्यो

में मुानिन यह यज्ञाचा देश विदेश की
सभी प्राप्तिन यण्यागाणो में उच्चकोटि
की नीहै। रसका या भायसमास व कासकर्तीयो कासन करवा को वास्त्र इरप्रकाश ग्रान्त्र्याकिया तथा ज्रुतपूर प्रवान श्री वमनलाल के नाम उल्लखनीय

प्ता प्रसास का १ वा विकोस्सव सक्तासा के उत्पादन या भ किया गया एक सत्त ह के उत्पाद मधी जनता ने बत्त-कुश्तीय यन किया गर्मीक करकासक्रम B Block के पार पे धायो जिला किया गया। पार्च प्रसास का स्था की कपारे सुप्ता मण्डी भी विकास प्रमास कोर भी गुनावर्तिक राम्बक मनोहर पत्रम कुष्टा १० मई की महिला सम्मेलक पुर ११ मई को बच्चो की सामक प्रतिविक्ता का सारोजन किया गया।

१२ सई ६५ को पूर्णाइकि के वरपाद बाचाय पुंजीतिक वर्ष बाचार्य मिक्स की के प्रवचन हुए। बाद में ऋषि सबद का बायांचन भी प्रविनाश का कपुर का तरफ है हुआ। जी इप्रवान का कपुर का दारा यक का सारा क्षण दिया गया।

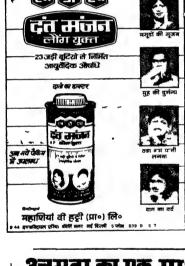
विजय भूषण बाय मन्त्री

श्रार्थ समाज हनुमान रोह का सर्वसम्मत निर्वाचन

साय समाय हुनुसान् रोड के वाधिक राज्य मा प्रशिवसक से सरकम्मति है औं राज्य मा प्रशिवसक से सरकम्मति है औं सम्मूर्ति को किता के राज्य मा मा मा स्रोर सेव निर्वाचन करने का स्रीयकार भी उन्हें ही रिसा गया। श्री प्रमान की ने राज्य हुन र से स्रीयकारिया क नामों की योगमा क

- १ ब्रधान-धी राममूर्ति कैसा
- २ उपप्रधान-श्री सरदारी सास वर्मा
- ३ उपप्रधान श्री रतनलाल सहदेव
- ४ उपप्रधान श्री हसराज चोपडा
- ५ म त्री-की सैरावली लास माटिया
- ६ उपम त्रा-बी त्रिलोको नागमण मिख
- ७ उपम त्री-शीरवदर दवाल वी
- ८ उपमन्त्री-धा जातिवन्यु भाटिया
- १० कोषाध्यक्ष--- श्र बुद्धराम **नृप्त**
- ११ पुस्तकाच्यक्ष--- श्री ह्वयराम नवामी १२ प्रविष्ठाता धार्यवीरदस सी राजीव मारिया

बैरावती साम माटिया (सन्त्री)



दांतों की हर बीमारी का घरेलू इलाज



श्रार्थ जयत की गान २०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन नेत्र चिकित्सालय

(अनुमानित लागत दो करोड रुपये) के लिए दिल खोलकर दान दीजिए द्धान की राणि ग्रायकर ग्रामितियम बीठ का के श्रतगंत कर मुक्त होगी।

सारा दान चैक/मनीमार्डर/बेक ड्राफ्ट द्वारा मत्री, माता चन्ननदेवी ग्रार्थ धर्मार्थ नेत्र चिकिन्मालय सी-१ जनकपरी नर्ट-दिल्ली-४६ के पन प्रभेजा नाग । दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर अकित किए जाएगे।

नहाजय धर्मपाल

राजयोपाल शन्त्रवाले घोमप्रकाश धाव संरक्षक चिकित्सालय प्रधान दिल्ली चळाळ मान्त्री श्राय प्रतिनिधि श्रायं केन्द्रीय एवं प्रधान सा०वा० तहासय चुम्मीलाल वेरि॰ टु॰

तौजभ्य से महाक्षियाँ दो हुट्टी प्रा० लिमिटेड १/४४ कीर्तिनगर, होशिक क्षेत्र, नई विस्ली-११००१

(पृष्ठ २ का क्षेत्र) वद मे विज्ञान उप स्व जातवेयत वे**य वेहरिक केत**य । हते विश्वाय सर्वप्र ।।

ฆซ์-

त्य बातनेवस वेष सूर्वम् = उस ससार को प्रकाशित करने बाते देव सूर्व को

दशे विश्वाय=विश्व के समस्त प्राणियों को विकाने की रुष्टि से

केतव बद वहन्ति - सूब की किरखें रत सूय को अगर कदाति है। भावार्थ-

प्रात काम सब के जब प्रवस दक्तन होते हैं तब सूच मूचि के पीछे, हाता है, जो सूव की सीधी किरणों से दिलाई नहीं दे सकता । उस समय बाबास में ऊपर 🕏 विरस बाबू मण्डल से भानी हुई किरखें. जब पृथियी की स्रोर के यदे माध्यक है पास स गुजरती हैं तो नीचे की धोर ÷क (मुख जाता है। परिसानत सूर्ये— पाउस मध्य पृथिका की घोट में हाता है—दिस ई देश है। ऐसा प्रतीत होना हव भाविक है कि मानो मूब रहिमबी ने उस ऊपर चारिया है, ताकि पृथिकी के समस्त प्राणी उसे देख सकें। जब सुव की सीची किरसा पुविकी पर बडती है, उस समय स्य को देशा नहीं वा सकता। परन्तु इन दिसीई विस्तृति के बारस... स्य का प्रवत प्रकास दूनि वर नहीं

हरेंचता । उस समय वृर्व-दर्शन स der & : इ, स्क्रीक नगर, पीनीजीव (२६२-००**१**)

> (पष्ठ १ का क्षेत्र) बीर गायक

क्षम नवा । उसने ऐसा दीत माना अरम्ब क्या कि उसे सुनक्ष किसे के राजपूत सावबान हो वये । उन्होंने युवस सेना पर परवरो और तीरों की वकी MARKET AL SPER & Affen ant . वये । मुक्त केवानति में डॉटते हुए प्रसाद से पुद्धा-सबके ! तु क्या का रहा है ?

प्रतार ने बड़ी निर्मयता से मैं बीत ने धपने बीरों ने कह एहा है कि श्रमुद्वार पर खडा है। सोधो मन । कोचे में मत बाबो । किया कर कोको । क्लार मारो परभर। समुका समुबर किकास हो।

मुगम सेनापति ने प्रताय के सिर को एक मटके म काट विका किन्तु राजपूत सावजान हो गये वे, मुक्क सेना को निराध होकर लीर बाना पदा। दूसरे दिन राजपूर्वों को प्रताप की लाख मिली। देश पर प्राव्य देने काल बक नीर वासक की देह को स्वय महाराखा ने अपने हान्हें किया पर रखा। बाक्रो इस भी देखें औरों के जीवन से प्रेरका Biddings as an an an an

स्वास्थ्य

काँग डो फार्मेसी.

हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

वासा कार्यालय-६३, गली राजा केदारनाथ, कोन २६१८३८ चावडी बाखार, दिल्ली ६





सूरम एक पृति ४० पैसे वर्ष देशका ३०

रविवार, १६ जून १६ दश्चार्य सवस्तार ११६० दश्वे वद्

क्येष्ठ २०४२

ववागन्यास्य --- १६१

अमर बलिदानी पं० लेखराम

बर्म पर बलियान होने वाले बीर केश प॰ वेसराम का स्वर्ण भाते हो एक दिव्य बाहति मानसपटल बर क्षेत्रती है। एक ऐसे मानी औ बाद बाती है जो उफनती नदी के श्रवत देश की विपरीत भारा में अपनी नाव बेता क्यता है भीर क्यी बांबता नहीं निराय की नहीं होता । क्सार ऐसे लोगों को उत्मत्त कहा करता है। वर्ग की बूत के बनी पर क्रेकराम का जीवत वहाँक दयागम किए वर्ग के प्रति पूर्ण समस्तित काः वै अपनी वर्ग-प्रचार याचा वै अभी बके नहीं, रके नहीं : विदेशी वयवर्षों के जाल ने बारतीय सस्कृति विनश बताब्दियों से अकडी चली बा रही है। इस देश के भीले माने वान रिकों का छल बन से वर्ब-परिवर्तन किया बाता रहा है। १६वीं सदी से हिन्दू बर्म उस करने बाटे के दीपक की हरह हो गया वा जिसे घर में रलें की पृष्टे सा जावें भीर बाहर रबादे हैं तो कीए उठा ने जाए। किसी के छने बात से ही वर्म से धन्य जाति से बलग कर दिया बाता वा । ऐसे कब्दे वार्गे जैसे वर्म को तोवने के लिए घनेक मतावलम्बी ईसाई और मुसलमान हिन्दुयो को क्यांके साप के जकति चने जा रहे के । सक काल में महर्षि दवानन्द द्वारा दिया शुद्ध सुदर्शन चक्र प॰ के सराम ने अपने हाथ ने उठा लिया। कौर प्रस्का ऐसा दूशलता के साब स्थालन किया कि बनेक विख्द भाई किर हिन्दू होकर अपने पुरान घर **अं शरेट हाये । उनके जोवन की इस** बरमा के जी सरीर रोगाणियत ही काता है। यब समी पता चला ममुक हाथ में कुछ लोग मुसलगान होने जा रहे हैं। वे उस समय घर बैठे मोथन इरमें ही जा रहे ने कि पत्र झस्स



वर्ते स्वाम मिनी, उसी समस्या मे उठकर वे रेक्साओं द्वारा चेत आंच के लिए चन पर । उस गोन से कोई रेलके स्टेश्वम वही वा उन्होंने चलती गाडी से सनांग लगा दी। देश है गिरने से उन्हें बीट भी सभी खासे रने वस्त्रों से ही ने उस स्थल पर पहुचे बढ़ी कुछ हिन्दू महकाने मे शाकर भएता वर्भ परित्याव करने का रहे ने । जैसे ही उन्होंने ए० सेमा राम की भीर उनके ल्यांग की देला वे माव विभोर हो गये। उन्होंने यह कलकर धर्म परिवर्तक से अपना निश्चय बदम सिना कि जिस धर्मे में ऐसे हमारे स्थाक बाई हैं जो शपनी जान पर बेलकर हमकी बचाने आपे हैं, हुम सम यम की कवानि नहीं त्याम सन्ते ।

प o ने नराम ने सपने पीचनकाम में सकेन कुछके विस्तरे भी कृषकी ११ हैं वे अमेरपुरत्ये निवासीकार प्रकार के स्वयु में निवासीकार स्वानम्ब के सामाधिक चीचन मरिक को निवास का स्वर्थ की पूर्वपूर्व से स्व राम को ही बाता है। देस के कोने कोने में बाकर उन्होंने सलम्य तथ्य एकतित किए। हिन्दू देनी देनता मौर सरक्कृष्टित कर कीनड टक्क्सलने नार स्वकृष्टित मा तीनड़ी विकामियों से उन्होंने स्वकृष्ट सार्थ्याभ भी किये। उनकी निद्धता है, तक महारों से विवसीं बनो ने सात्र के गया वाहौर के प्रकार के सार्थ्याभ नाहौर मेरक दिस्ली बम्मई की अवामती मे मुक्तकों भी हाने स्वस्तु प्रदा की में सांस्य प्रदान प्रदान स्व मुक्त्ये कारिकं कर विद्गाए। वारों भोग वे लोहा लेने वे पुस्तम्बन्न मनात्वक सही गए। ऐसे ही एक नीच हत्यारे की ने बन्ति वढ़ गये।

उन्होंने आर्यसमान के अच्छा सनम को बनाने में नीव का कार्य किया है। ऐसा उपलेशक, ऐसा केवल देखा बार से प्रकार स्थान के स्था

धार्मक्षाण का चातित विश्वा-मार्थ धारिक्कक्क्क्रैडरस्कू साम इत वन वोर विश्वानने करोति भी वीर्वे क्षणामाँ की कुलते का रहे हैं। न्वामी महानय और महान्या हुन राज की तो फिर भी स्मरण किया जाता रहुं है। सहीद कासराम कुछ उपीक्तत ही पहेंहाँ। यदि बीरता की व पूजा न सराहा तो बीरता की वननी बाल

प्रराणा शहोदों से यदि हम न लेंगे आजादी नलारी हुई सौभ, हो जाएगी। यदि वीरों की पूजा हम नहीं करणे तों सच मानो वीरता बौस हो जाएगी।

—बद्यपास सुत्रांत्र



श्रार्य जगत की शान

200 बिस्तर वाले निर्माणाधीन

ज्ञेत्र चिकित्सालय

(अनुमानित लागत दो करोड़ रुपये)

के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि भायकर भिषिनियम जी । द० के

मतर्गत कर मुक्त होगी। सारा दान चैक/मनीम्बार्डर/बैक द्वापट द्वारा

मत्री, माता चन्ननदेवी ग्रार्थं धर्मार्थं नेत्र चिकित्सालय.

सी-१ जनकपरी, नई-दिल्ली-४८ के पते पर भेजा जाए।

दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर

अंकित किए जाएगे।

निवेडक

गतावय वर्गपाल

धोपप्रकास प्राप्त

रजि० नं० डी (सी०) ७५%

(पुष्ठ ८ का शेष) जान में ईसा, मोहम्मद, बुद्ध, महा-बीर, कन्पयूचियस मावि महारमाओ की सार्वभौमिक शिक्षाएँ रसी बार्वे ।

४ उच्च बाध्यविक (११-१२ कक्षा) विका तकोव परक और ऐक्सिक विवयो के साथ डोभी चाहिए। हिन्दी, संस्कृत, प्रादेशिक भाषाएँ उज्ब साहित्य व व्या-करण सहित धनिवार्ग रहें भीर ममेवी का सामान्य जात. रचना, बोसचास का धारवास तथा तकनीकी घट्टाक्ली का ज्ञान प्रायोगिक पाठी के साथ रहे।

ऐच्छिक विषयों के समूह---(१) विज्ञान तीनो सासाएँ व वणित

- (२) वाणिज्य वणित भी.
- (३) खबाब विज्ञान -रावनीति, शमाब-कारण, इतिहास-मुबोस (विश्व) शीर धर्मन्यवस्था
- (४) जावा वर्ग-कोई वो विदेशी माबार्टे व्याकरण सहित वा कोई से मार-नीय जासाउँ । पर्यावरण नीतक शिक्षा के पाठ धनिवार्य विषयो मे सम्मिलित रहें।

भवदीय -- नवप्रसाद सर्मा

समाज वर्ग, सावि सनेक विद्यामी का समाहित होने पर ही प्रतिपादन करता है। इन समस्त चर्चाओं के पश्वात् हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि वेद में समस्त ज्ञान विज्ञान बीच रूप में निहित्त है तथा बाद के बैदिक ग्रन्थों से ऋषि सहवियों ने

स्वाभी दयानन्द के इस महान् वैदिक प्रकास के फसस्बरूप नेद जो धव तक सायव के हाथ में केवल कर्नकाण्ड की

(पृष्ठ ६ का सेव)

ज्ञती का विकास किया।

में इनमें (जिनमें) प्रकृति की शक्तिमों की पूजा और धार्य जाति के बादि विकास का बुलान्त एव गडरियों के मीत ने। धव एक बच्चारिमक तथा ईश्वरीय ज्ञान की पुस्तक हो बाती है। इसमे एक वैज्ञानिक धर्म है जो मनुष्यमात्र के लिए है जिससे मनुष्य गात्र की माध्यात्मिक एव साला-रिक उन्नति का सही बार्ग बतकावा

पुस्तक वी तका पाषवात्य विद्वानी के सन्

वंदसक किकियामय प्रकार, विक्ती प्रचास कारती एवं प्रचान, सा॰सा॰ धार्व प्रतिनिधि धार्व केन्द्रीय व कुलीलास प्रति० समा वेरि॰ इ॰

सर्वदेव

रामयोपाल जालवाले

सौजन्य से महाश्चियां दो हट्टी प्रा० लिमिटेड, १/४४ कीर्तिनवर, बौद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-११००१

लिए स्वास्थ्य उत्तम काँगडी फार्मेंसी. हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

शासा कार्यालय-६३, गली राजा केवारणाच. फोन । २६१८३८ वावडी बाकार, विस्ती-६



🛨 वक्त-सन्देश 🛨

सत्यार्थंप्रकाश एक महान् सन्देश

सरवाषप्रकाश ने न जांभे कितने ग्रसस्य व्यक्तियों को कावा पतट की होगी।' -स्कामो अद्धानन्द 'युग निर्माण तथा चतुर्मुं की प्रगति की भावना से ऽ गोन यह दिव्य प्रन्थ (सरवाषप्रकाश) एक महान् प्रकाश-रतम्भ है जिसका निर्माण महाव द्यानन्द ने सर्वप्रथम सम्यगं मानव समाज की उन्नति के लिए किया।

-डा० श्यामात्रसाद मुकर्जी

यदि सस्थार्थप्रवाश की एक प्रति का मूल्य एक हजार रुपया होता तो भी उसे सारी सम्पत्ति बेचकर खरीदता। — गुरुदत्त विद्यार्थी एम० ७०

मैंने सत्यार्धप्रकाश पढा। इससे तक्ता पलट गया। सत्यार्धप्रकाश के ग्रध्ययन ने मरे जीवन के टतिहास मे एक नवीन पृष्ठ जोड दिया। —रामप्रसाद बिस्मिल

सम्पादकीय

साइचिन पर पाकिस्तान की गिद्ध दृष्टि।

लहाल मे भारत पाक मीमा रेखा पर साइचिन ग्लेकियर बाटी 🐧 पर इन दिनो लघु युद्ध छिडा हुमा है। मई १६८४ मे प्रथम बार पाकि-स्थानी फौजो ने मचानक साइचिन ग्लेफियर पर स्थित भारतीय चौकी पर जबरदस्त हमला कर दिया वा को भारतीय सैनिको ने बडी कुशलाना के साथ विफल कर दिया था। तब से लेकर ग्रव तक कितने ही पाक तथा भारतीय सैनिको को भ्रमनी जान से हास सोना पटा है। यह स्थान १८ हजार फूट की ऊचाई पर स्थित है। यह स्थान विश्व का सब से ठडा क्षत्र है। यहां की जलवाय बाकटिक की तरह माइनस ४० डिबी रहती है। घोर गरियों में भी जमा देने वाली बर्फीली हवाएँ चनती हैं। यहा पर सदा ही हडिडमों को तो इदेने वासी ठडक रहती है। हवा अस्वधिक हल्की और आक्सीजन इतनी कम होसी है कि कुछ भी काम नहीं किया जा सकता। ग्लेशियर १८ हजार फुट ऊ चा है और बारो तरफ वर्फ से ढके पहाड २२ हजार फुर तक ऊ वे हैं। साइविन ग्लेशियर युद्ध क्षत्र के लिए असम्भव जना है। हथियार पर नगा उगली रखते ही वह जरूर जाती है भीर चमडा उसड जानी है इननी क बाई पर मशीन और मनुष्य २५ प्रतिशत क्षमता तक ही काय कर सकते हैं। यही कारण है १९४६ के युद्ध विराम समझौते में १६७३ के शिमना सममीते में इस क्षत्र का रेखाकन नहीं किया गया था। अब पाकिस्तान इसी का लाभ उठाना चाहता है। बमरोकी व जीनी नक्शो मे समझिवन को पाकिस्तान का हिस्सा बताया जा रहा है। बीठ बीठ सी० ने भी कहा है यह क्षत्र कभी सीमाकित नहीं रहा। इस साजिश के प्रति मारत ने कडा प्रतिरोध किया है। एक समाचार के अनुसार अमरीकी जासूमी उपग्रहों से बहुत समय से साइचिन ग्लेशियर बेल्ट कर निरन्तर जासूसी नजर रखी जा रही थी। इससे प्राप्त माकडो के भाषार पर ही गत वर्ष २३ जून १६८५ को अन्वानक पाकिस्तान ने आक्रमण किया था। ३ भारतीय सैनिको ने भवनी घोर आते हए अनेक जत्थों को देखा। पहले वे सममे कि पवतारोही हैं पर फिर देखा कि वे सभी सशस्त्र हैं व पाक लाइट इन्फट्री या स्पेशन सर्विस प्रप के लोग लगते हैं। उन्होंने फोन से भारतीय दस्ते को खबर करने की कोशिश की परन्त फोन डैंड या तब वे प्रपने साथियों को सूचना देने के लिए स्कीइग के लिए बढ़ कि पाक सेना ने गोली वर्षा शुरू कर दी। एक सैनिक मर गया दूसरा घायल हुआ। तीसरे ने किसी तरह पहच कर भारतीय चौकी पर सूचना दी। भारतीय ज वे तत्काल आये व सम्बी लगई के बाद पाक सेना पी छे हट गया। इस वय २६ मई को पाक्तिस्तानी बायुमेना के ६ जेट लडाकू विमान खुल्पमखुल्ला भारतीय सीमाभो पर घस ग्रामे जिल्हे सदेड दिया गया। फि जो दार ग्राक मसाकियापर भारतीय सेना ने उसे फिर विफल कर दिया। भारत संग्कार ने पाकिस्तान सरकार से इस सब पर बढा प्रतिरोध किया है। राजनतिक प्यवेक्षको का कहना है झाज जब सम्बन्धो के सामान्यीक रगा के लिए प्रयत्न किये जा रहे हैं पाकिस्तान का शत्रुता-पूर्ण कार्यवाहियो मे लिप्त रहना ग्रत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण है। भारत सर-कार ने प्रस्तुत भाक्रमण के पूर्ण विवरण सभी सार्वजनिक नहीं किये

हैं पर साइचिन घाटी के छीनने के लिए किए गये पाक आक्रमणी के बारे से मगरत की उत्तरी कमान के अनरल एम एए ल छिल्बर के अनु सार एक साल के आकृत पारे गये और हवारी के साव मारे गये और हवारी घायल हुए। इन कारराष्ट्रियों में के कल तीन में तोय से सिल्क मारे गये से सिल्क मारे गये अव कि २७ हिन मण्डों के लिसक में से दवन र मर नाये पारे गये अव कि २७ हिन मण्डों के लिसक में से दवन र मर नाये आप मारे गये अव कि २७ हिन मण्डों के लिसक में से दवन र मर नाये मारे गये अविकास प्राप्त छोगामार के कराडों से लिस में यो प्राप्त कि स्वीर से से से पारे में से से से से पारे से लिस से मीर उन्होंने दोनों थीर से एक साथ हमना बीना था।

४० मील लम्बे इस ग्लेक्सियर पर जो ि काश्मीर काराकोरम के बिक्कुल पात तथा इस्त प्रकागांतस्त्राता और जीन की सीमाधो के काफो करीब है। सुरक्षा को डिस्ट से सप्यन्त महत्त्वपुर्या है। इसिलए पाकिस्ताल जीन के हाथ चरने पर इस क्षत्र पर प्रमान कब्जा जमाने की हरसम्बद्ध कर रहा है। पिछले दिनो इस ग्लेक्सियर पर कब्जा जमाने के लिए गांकिस्तान ने वो ४७ वमनवक ला क्ष्र हवाई जहां जमाने के लिए गांकिस्तान ने वो ४७ वमनवक ला क्ष्र हवाई जहां जे भी इस्तेमाल की किया। किनहांल यह ग्लेक्सियर प्रमार के कब्जे मे हैं। १६ हवार फीट कवाई पर स्थिन प्रारंतिय सीलक चौको का काय जयल उद्दर्श है। इसनी कवाई पर जौका का होना एक विद्य तिकाइ है प्रमित्त कि किसी भी कराई पर जौका का होना एक विद्य तिकाइ है प्रमित्त कि किसी भी वर्ग स्वार्य है पर हिम सीलिक्सान वोगो प्रपत्त वर्गाई हमा अहां को से कर हो है। पाकिस्तान की इस व रे में बेहतर स्थिति है। क्योंकि फास के पूरा ११ बी हैनोकाप्टर इसके पाम है भारत भी मस्य धी ग्रकावले के हिलीकाप्टर प्राप्त क ने की तोधात्र कर रहा है। भागन यहा पाक समझे नाकाम करने में पूरा इसके नाम है भारत भी मस्य धी ग्रकावले के हिलीकाप्टर प्राप्त क ने की तोधात्र कर रहा है। भागन यहा पाक

पाकिस्तान के पास काश्मीर का मारतीय ७६००० किलोमोटर सन है जो उपने देश्वार रखा है जबकि छोत ने लहाक से अक्साइविन का ३८००० वर्ग किनोमीटर सन्न द्वीन रवा है। माय ही पाक ने बीत को आग्न की गांश्मीर अविक्रत भूमि म से ४५०० किलोमीनर सन और दे दिया है। इस सब से चीन-पाक सथुका रूप से बनी व १६ जून १९७६ से सुनी ५०० मील लक्ष्मी काराकोरम स क ने ही माइ विन मे पाकिस्तारी हमले की सुविधा प्रदान की है। यह सक्क इस्ला माबाद को चीन के निक्याग प्रान से जोडती है।

पाकिस्तान ने बारत की सीमा के साथ साथ १८ डिबोजन सेना
रखी हुई है और रख बान से कोई सन्देह नहीं रहा कि प किस्त न
पजाब से गण्यन कराने के लिए आनकदादियों को विस्वन्य कार
वाइयों के निष्प्रधिवाल वे रहा है। बायद जनरन जिया किस सीम प्रान्त गौर वहाँ विस्वाल वे रहा है। बायद जनरन जिया किस सीम प्रान्त गौर वहाँ विस्वाल में हैं हिस्पति प्रसे जन्ना का ध्यान हटाने के लिए सनिक कारबाई का खेल खेलना चाहते है। लेकिन उन्हें बड़ निधिवत समक्ष लेना चाहिए भारत किसी से किमी स्प से कम जीर नहीं हैं। हर रूप में मृह नोड जवाब देने में हमारे मनिक सक्षम

—यशगल सुबाश्

नवजागरण के पुरोधा विषयक आपत्तियों का उत्तर

लेखक डा० भवानीलाल भारतीय

म्बामी रामेववरानन्द की ने नेरी पुस्तक नवजावरण के पुरोका पर कुछ भापतिया प्रस्तुत करते हुए एक लेख 'मार तीय बी की भूम' शीर्षक से धार्यमातंत्रक में हो किरतों में छपाया या । सब उसे ही एक भिन्न शीर्थक वेकर आर्थसदेश के १६ सई के प्रक में प्रकाशित किया है। इस सम्बाध में मेरा वक्तव्य निम्न प्रकार है-

स्वामी जी कहते हैं कि भारतीय जी ने अपनी पुस्तक की बढ़ी प्रशसा की है धोर ऐसा करत समय उन्हें सण्डा नही श्राई कि उनकी यह पुस्तक श्रन्थ जीवन विरित्रों के बाधार पर ही लिसी गई है। निवदन है कि अपनी कृति की प्रश्नसा करना काई पाप नहीं है।

निज कवित कहि लाग न नीका। सरस हे ऊचाहे पति फाका।।

बाक्षेपकर्ता को यह सोचना चाहिए कि जीवन चरिन को श्रन्य पूर्व लिखित जीवन वरित्रों के साधार पर है लिखा बायमा और पूर्व लेखको से सहायता लेने मे धनचित भी क्या है? मैंने तो प्रत्य के समपंगुमे हो ४० लेखराम प० देवेश्यनाथ मुझोपाच्याय बादि उन सभी जोबनीकारी को सादर स्मरण किया है जिन्होंने न्वामी इयानन्द के जीवन नेसन म भरपूर परि-श्यम किया।

स्वामी रामेश्वरानम्य जी द्वारा उटाई बई बहुत सी भापत्तियों का निराकरण तो एक बाक्य विस्तकर ही किया जा सकताहै कि प्रत्येक लेखक क्या लिले कैसे लिखे क्या नहीं शिक्षे इसके लिये पूर्णं स्त्रतस्त्र होता है। वह स्रपना ग्रन्थ लिमने से पहले किसी से राय लेने नहीं वा कि वह कैंथे घौर क्या लिकेगा। भव उन ही धन्य आपत्तियों का उत्तर-मैंने स्वामी भी के ग्रैशव भीर प्रारम्भिक शिक्षाका वर्णन करने में महाराज की बात्मकव का ही अधिकाश में उपयोग क्या है मैंन प्रात्मक्या के जिस सस्क रश क उपयोग किया है। वह नरो का-रिली सना से प्रकाशित तथा मरे ही द्वारा समानित है जिसकी मूल पाण्डुलिपि हमे मून्शी समधदान क कानजो मे मिली थी। इसके माय ही देवन्द्रनाव लिखित जीवन चरित्र के प्ररस्थिक भ्रष्ट्यायों का भी उथिश दिया गया है। यदि इन श्राधारमृत ग्रन्थो को समन्वित कर पाटक पर्हेंगे तो उहे इस प्रध्याय म विणित बातो में कोई भ्रमगति न तर नहीं भायगी। श्री महाराज व जीवन लखन में मेरी तो प्रतिज्ञा ही है-

> नामूल लिख्यते किञ्चित्। ६ घर मरे मित्र टकारा निवासी श्री

वयाल की आई बार्य ने टकारा के समीप-वर्ती गांव रामपुर शादि के सम्बन्ध में कुछ नवीन जानकारी दी है। उनके एतप् विष-यक ने सो को ची छा ही अकाचित किया जायेता। इस सामग्री से स्वासी जी के टकारा से निष्क्रमण तथा धावे के वार्ग प्रादि के सम्बन्ध में कुछ नवीन तथ्य सामने बायेंथे। पाठक इन सेक्सो की प्रतीका करे।

स्वामी रामश्वरानन्द जी लिसते हैं कि मैंने सार्वदेशिक सभा द्वारा निर्पारित महाराज की जन्म तिकि के विपरीत एक भन्य तिथि क्यो लिखी [?] भाक्षेप कर्ताको क्या यह भी बताना होगा कि इतिहासकार का काम तो किसी विषय के सम्बन्ध मे सभी पत्नो धौर मतो का प्रस्तुत करना हाता है। मैंने ऐसा ही किया है। जन्म तिथि के सम्बन्ध में कोटा के स्व० भीमसेन शास्त्री के मत को तो रक्ता ही है जिसे सार्वदेशिक सभा की मान्यता प्राप्त है। साय ही ऋषि के बीवन विषयक गवषक स्व० मामराजसिंहका इस विषय का मत भी प्रग्तुत किया है। इसमें कोई भनवें जैसी बात नहीं है। स्व॰ मामराजसिंह ने भाइपद वाली तिथि अपनी कल्पना से नहीं लिसी किन्सु प्रार्थसमात्र क्लोशनव नसनक के पुस्तक अण्डार में रक्खी हुई हस्तलिखित जीवनी (स्व॰ केशवराम विष्ण काल पण्डवा द्वारा निवित्त) मे उद्यत तिथि को ही निसा है। जीवन तिथि के सम्बन्ध में सभी नहीं की बैना मेरा काम था। इससे घार्यों मे परस्पर विरोध कैसे सदा हो जाता है ?

मेरे प्रत्य के भानोचक ने इसे दिस बच्टि से पढा है, यह इस बात से ज्ञात हो ज'ता है कि वह लेसक के अभिप्राय की सर्वोद्यामे भी समऋने मे ग्रसमर्थ रहा है। बाब मैंने सिला था कि "स्वामी दयानन्द के पिता ने धाने पुत्र मूलशकर को सजुबँद के वे प्रश्न पढाये जो अनके मतानुसार कैलाशवासी भागुतोय भववान शकर का वर्णन करते हैं तो स्वामी रावेदवरानन्द मुक्त से पूछने हैं कि बजुबेंद में कैलासवासी शारर का वर्सन कहा है ? धजी महाराज यह करन तो मूलशकर के जैव पिना का है न कि मेरा। लेखक के प्रशिवेत को नसमक्ष कर हो ऐसी भासोचना की जानी है।

ग्रव ग्राम्पेयकर्ता, पुरी**षा शशाका** पुरुव तथा प्रवरा आस्ति शन्दी के प्रयोग की बालोचना करता है। क्या किसी बुद्धिमान् पुरुष को भी यह समकाना पड़ेगा कि शादों के अनक अर्थ होते हैं। पुरोधायदि पुराहित का वाचक है तो यह निदनीय कैंग्रे हो बया ? क्या ऋग्वेद के अवस अब में परवात्मा को भी पुरो-हित नही कहा नवा है ? वस्तुतः वातः यह है कि साहित्यक धैसी से धनभित्र व्यक्ति ही ऐसा बाक्षेप कर सकता है। इसीनिए स्वामी रामेश्वरामन्द को 'प्रवरा' का धर्ष 'वीराहा' तो नवार बाबा किन्तु उन्होंने बामन शिवराम बाप्टै का सस्कृत हिन्दी कोष देखने का भी कष्ट नहीं किया जिसमें प्रवश्य के सर्थ -- गक्त सनुरस्त, प्रवृत्त, सलम्न सादि विये हैं। इन सबों के सावार पर वर्ग प्रवस्त का बर्थ होगा वर्ग मे । अनु-रक्त, वर्ग में प्रवृत्त, वर्ग में सलग्न गादि। क्या स्वामी जी को 'बन प्रवस्त' कहना सनुचित है। 'शसाका का धर्य रामेश्वरा-नन्द जी सुपारी काटने का सरोता करते है। बहु सर्व साप्टे के कोशा मे तो नहीं मिलता। किन्तु जलाका के कई सुन्दर प्रयोग संस्कृत साहित्य में निसते हैं। शिक्षा बन्य में जिल्ला है-

ब्रज्ञानात्वस्य लोकस्य

हाराञ्जनसमाकवा । चक्ष कमीलित वेन

तक्षी पाणिनये नम ।।

जिस पास्त्रिति ऋषि ने सज्ञान के ग्रथकार से भाष्यक्त जोगों के नेत्रों की जान रूपी ग्रञ्चन की समाका से स्रोत दिया वे हमारे प्रजम्म हैं। सफसोस है कि साहिरियक प्रयोगों के सौम्बर्य को न क्ये जले हैं।

बाक्षेपकर्ता की धवली बापतियाँ

१ स्वामी दवानन्द के बहामि निरुह्मण के प्रसम में सिदाय के बहुत्यान, तुमसीदास के पृहत्याय तथा समर्व रामदास के बैरान्य ग्रह्म ग्रादि के ब्ब्टान्त क्वों दिये गये ।

२ स्वामी दयानम्द के जीवन प्रसन ने राम मोहन राग रामकृष्ण परमहस तथा विवेकानन्द की नची क्यों की गई? विवेकानन्य बादि की प्रशसा के वाक्य क्यो लिसे वये ?

3 इस वन्य मे प्रस्येक श्र<u>म्माय</u> में सैकडो पाद टिप्यणियो क्यो की गई? ग्रादि ।

वस्तुतः इन बाक्षेपो मे बोडा भी सार नहीं है। बैसा कि मैं पहले भी लिख भुका हूँ, लेकक को इतनी स्वतन्त्रता प्राप्त होती है कि वह अपने सन्य में क्या शिक्षे, कितमा तिसे धौर भैता निसे ⁷ यह तो सम्मन है कि स्वामी रामेश्वरातम्ब का खपर्युक्त प्रकर्ण प्रासनिक जान न पडे हों, किन्तु अध्य पाटकों को भी वे पसन्त नहीं बार्वेने, इसका ठेका सने वाने वे सीन होते हैं। राम मोहन राय के कार्यों की प्रश्वसा स्वय स्वामी दयामस्य ने पुना प्रवचनो ने की। कमनता प्रवास के समय वे स्वय रामकृष्ण परमहस से मिले वे । सबसे बडी वात तो यह है कि स्वानी दयानन्द के ब्राविभाव काल की परिस्थि॰ तियों की चर्चा के प्रसग म नवजानरख के झाम्बोलनी तथा उनके नेताओं का उल्लेख तो अवस्यम्भात्री ही है।

स्वामी रामेश्वरानन्द जी का सतिम बासीय तो बत्यन्त विचित्र तथा हास्या-स्पद है। उन्हें पार्दिप्पशियो वर ब्रावस्थ है। वे इन्हें ॰मर्थ प्रनावश्यक तथा पुरनक का भार बढाने वाभी मानते हैं किन्त वैज्ञानिक शोध प्रक्रिया के जानकारी का कहना है कि पाद टिप्पणियों के बिना शोध प्रत्य का कोई महत्त्व नहीं होता। हाँ, उन सोगो की बात दूसरी है को साथ प्रक्रिया को न तो जानते हैं और न छ8 व महत्त्वको ही सनुभव करते हैं। साक्षेप-कर्तास्वामी जी बन्त में निवते हैं कि यदि सह प्रत्य स्वामी जी का जीवन चरित है तो इसका मूल्य चालीस स्पन्ने क्वों रक्ता गया ? यदि सनकी राय सी बाए तो स्वामी बी का जीवन चरित तो समक्र कर ही इस प्रकार के व्यव साओ व दिन्त में दिया नामा च हिए। बाक्षेप-**है**कता यह नहीं सोचता कि ६६० वृष्ठों के बन्द को मुक्त में कैसे बादा काएवा ? इसके प्रकाशक ने इस पर साखों स्पने व्यय किये हैं। उनका यह वर्ड को क्षेत्र हास्थाल्य है कि अरोपकारिकों क्ष्मा को इस पुस्तक को बाइबिल के शुरूव निःश्रहक बाटना चाहिए। यदि स्वामी दयानन्द स्वय परोपकारिसी सभा को यह सामा दे जाते कि उन्के ग्रन्थ विमा मुस्य ही बाटे जावें तो शायद सभा भी यही करती। बल परोपकारिगी सथा का कोसने से दी कोई साम नहीं। वो व्यक्ति भाग के समय मे पुस्तको के मूल्यों से परिवित 🗜 उसे ता श्री महाराज का यह जीवन चरित की बयो के मीस से भी सस्ता सवेगा । बाइविस को मुक्त मे बांटने बालों से हमारा कोई मतसब नही। निष्फर्वत यहा कहना पर्याप्त है कि किसी प्रस्थों की मालोबना की पात्रता भी संबी में नहीं होनी।



दिल्भी के मुस्स वावशाह मीरविवेब के महा उसके विकासी जवल से पकडकर कर एक बढा भा । शेर स्त्राय से । शेर लोहे के गिप्रदेसे बन्द या भीर बार बार बहुक रहा था । वाटगाह कहता वा— इसमे बडा भीर मयानक सेर बूसरा नहीं निक्त सकता ।

बादराह के दश्वारियों ने उसकी हा
में हा जिलायी सर्कित महाराज यवनक विह जी ने कह — रससे भी धर्मिक वर्णना लीली और मेरे पत्र हैं। वाववाह की बहुत कथ धाया। उसने कहा — तुम अपने तेर को इससे लड़ने के लिए खोडा। बहि राहारर गिर हार पत्रा वो तुम्हारा सिंदर कार निजय जायना। वसन्यविद्ध ने ब दशाह की यह बत स्वीकार कर ली।

दूसरे दिन दिल्ली के किले क सामने के मैदान में लोहे के मोटे खड़ो का बड़ा

किशोरमञ्च-

वीर बालक पृथ्वीसिंह

आरी पिंबरा वो केरो का सवाई के लिए रखा ग्या। केरो का युद्ध देखने यहाँ वहीं गारी कोड इक्टठी हो गयी। धौरवजेब बाववाह भी ठीक वनम पर साकर धरने विहासन पर बैठ नमा। राजा यशवन्त विह धरने रश वच के पुत्र पृत्वीसिंह के शाव धारों। उन्हें देखनर वारवाह ने पूछा — आप का वेर वहा है?

यशक्तसिंह बोले — मैं प्रपना शेर प्रपने साथ लावा हूं। पाप लडाई प्रारम्भ होने की प्राज्ञा दीजिये। बार साह की घाता से बहु बमती सेर धपने पित्र से सबाई के पित्र से की दिया गया। यत्य-तिस्ति के घनते पुत्र की उस्त पित्र से पुत्र बाने की कहा। बादसाह धीर बहा के स्तर भोग हबके बनके रहु गये। कि-तुस्त बस वस हा सासक पृथ्वीविह पिता का। प्रणाम करके क्रमते हस्ते तोर के पित्र से चल गया।

शेरने पृथ्वीसिंह की घोर देखा। उस तेकस्वी बालक के नेत्रों को देखते ही एक बार यह पूछ दबाकर पीछ हट गया के किन शिकारियों ने बाहर से भाने की नौंक ने ठलार के उसे उस्साया। बहु शेरकोष में प्राक्तर के पृत्वसिंह के ऊपर कूव पडा। बालक पृथ्वी सिंह के के से एक धोर हट नया धीर उसन धपनी समझार सिंब ली।

पुत्र को तलवार निकालते देखकर बरावन्त्रानिह ने पुकारा वटा । तूयह क्या करता है ? शेर के पास तो तलवार है नहीं फिर तूउस पन्न्या तक्षवार वाला-येगा? यह तो वस युद्ध नहीं है।

पिता की बात सुनकर पृथ्वाधिह ने तलवार फक दी और वह गर पर टूड पडा। उस छोटे बालक ने शर का जबड़ा पकड़कर फाड़ दिया और फिर शेर के पूरेशरीर के दो टुकड़े करके फेंक लिया।

वहाका सारी भीड पृथ्श मिह की जय अध्यकार करने लगी। गर के जून से सना पृथ्वीसिंह जब पिंबरे से निकला तो बखनलासिंह ने उसे खाती से लगा जिया।

''वाह रो पाण्डित्य परम्परा''

प्रज्ञादेवी

सन्य बनाल की बाल विववाधी के करण क्रमण के बरली कटी वा रहां वी एव बनावार वढ रहे वे तब समाव सुभारको के विववा विवाह का न्याबोधित पक्ष लेकर हते प्रवाहत कर हिन्दू समाव करनाच किया वा साविस करने वाल तवाक्षित सावाबिक पण्डतों ने?

२ यह कि १६२६ में शारता एक्ट के पास होने पर काशी के पण्डिती ने इसे सवास्त्रीय मौजित करें इस का प्रकार दिरोस किया जा। काशी की पण्डित मण्डली द्वारा हिन्दू समाज के करसाण के लिए किए गये एतास्त्र काली के दहते जनको कोन मारगीय समाज से उदागीन कताने का साहस कर सकता है।

वेक ६**१६ ६**१४

काणी के पण्डिती की सामाजिकता की यह दूसरी उक्ति में समऋती हू प्रत्येक सन को धबस्य कचीर आयेगी। भना बाल विवाहादिका समयम ही नहीं उमे श्रपनी स माजिकता का हेत् बताना क्या देश को मध्यकालीन अधेरे यूगमे ही धकेल देनानही है[।] किस प्रकार मध्य बूग में भी रचे बये मनगढ़ त करोलक स्पित वक्तों को प्रमाशा मान पण्डित वय भी समाज के एक वग के रुदन का परवाह न करते हुए बाज भी दकियानूसी वातो का समधन करता है यह इस बात का उदा-हरत्व है। इसी पुस्तक में पू० ५७२ ५७३ में लेखक ने महात्या बांधी एवं भी भीप्रकाश की के नाम चद्युत करते हुए उनके हरिजनोबार (हरिबन) के मन्दिर प्रवेश प्रविकार प्रावि) सम्बाधी कार्यों की पर्वा के प्रतव मे नदी चतुरता से प० वेदनाशकाषाय जी की वामिता एव जनके वन शान्त्रीय मती की (जिनसे हरिजनों के मदिर प्रवेश का प्रविकार नहीं है को समय होता है।) प्रश्चा की है जो प्राव के प्रव किसए प्राव्यव्यव्ह है।

इस पुन्तक के १४२ में पूर में प्रधानी सरकार हारान पिछतों का सरकार सीयक के बद करान रहारान पिछतों का सरकार सीयक के बद करान रान से बिर्मण सामन को स्तुति भी की गई है। पुन्तक से सने में स्वामी में भ्रतिकारी स्वामी में भ्रतिकारी स्वामी में भ्रतिकारी स्वामी कि स्वामी स्वामी

हिन्दू सभाज को गेंडियाद एवं सा स विश्वासी किममें विशेष क्या से नारी आति पिस रही यो मारहन दिलाने के निए हैंग के गण्यमा-य नेतामी एवं मुंती प्रम बाद तथा सरत्वन्त्र में हैं अच्छ साहित्य कारो ह्यारा में प्रवत्त प्रयास किये आरहे वे उन्हीं का सस्तयनम एक चेत्रनशीस प्रदे हैं उन्हीं का सस्तयनम एक चेत्रनशीस प्रमा हैं तहा दिवाना उदित हैं यह विचार कोच्य बात है। वेद हैं प्रमाणित होने पर

ही अन्य धमशास्त्रों के प्रम ण प्रम ण कोटि में आने हैं यदि एसा नहीं ना न्दयी सनी प्रमा के लिंग भी---

> मतं भनरित्यानारी ममारोहेद्युताणनमः । सञ्चती समाचारा असलोके महीयते ॥

जसे सस्कृत केस्वकित्त प्रमासा है तो क्याइन प्रमानों भी इस युन में स्वो कार की जियगा।

धाज के युग मे ऐनी विष्मानाएँ सहन नहीं की जासकती धत हमे इससे ऊपर उठकर ही विचर करना होगा।

गुरुकुल विश्वविद्यालय इन्दावन में प्रवेश

१ जुलाई - ५ म प्रारम्भ नि स्व-क बी ए स्मर तक शिक्षा साथा मोजन निय-मित विनवसा उत्तम बेचमाल के प्रारमिक मोजन सुरुक ६०/ मान में ७ से १२ वस मक के बालको का प्रवेश मुक्कुल विस्वविद्यालय वृन्दावन से दिलाब । साम्म सम्झन बायकों में दिला हुएनर जनीया परीका खान प्रापुत्र महाविद्या स्य मे प्रवान से सकते हैं।

> (स्वाभी कर्मानन्द) मुख्य बिंगाता गुरुकुल विश्वविद्यालय उप्पावन

काल् प्रतु कस्था के बाम ध्वित्य ध्वित्य ध्वित्य प्रशास घट घट बासी पूरण एक स्वित्र निक्ष सन्तर की टेक प्रवित्र निक्ष सन्तर के हुए प्रविश्वासर तरे गुख गायें ज्ञान सानु का हो के प्रकास, केवल सानी तुम्ही संबास।

२६ सप्रेल १६८६ के माण्डीय मे 'सोते वे माँ की गोद में और फेरे नय सम्बे शीवन को देखकर तथा स समा चारको पढतर कि राजस्थान ने एक बार पुन का दा एक्ट का घक्तिया उटाई गई' मुक्ते वडा धाश्चयावह दुस हुमा श्रीरकृत्रवातें स्थान मे भाषी कि ४० हम र बूबन्हे बच्चों के विवाह कर शारदा एक्ट की बजिजया प्राय उन्ही बानीए प्रवामें बसने बाले प्रपठित निरक्षर सोयो द्वारा चढावी वर्ड हैं। जिन्हें शारदा ्रवन या किसी सरकारी कानून सादि का पता ही नहीं है किन्तुदस सुव म ऐसे बोनो के लिए क्या कहा जाना चाहिए जो पूरा सुपठित भी हैं और सारदा एक्ट का विरोध करना सामाजिक कल्याण के सिए उचित नी मानते हैं।

छन् १६८३ में विश्वविद्यालयीय प्रकाशन वाराण्यकी द्वारा महाशित काली भि वार्षकल वरण्यां नामक एक ऐसी ही वार्षुत पुरतक है जिसके नेवक द्वारा काली के पण्यियों की महत्ता एवं उनकी सामाविकता निम्म उदाहरणों द्वारा वर्षामी वर्षे हैं—

दे यह कि वचान का सहस्यवाज स्वाद्यवाज स्वाद्यवाज स्वाद तथा वचात तथा वचात तथा वचात तथा वचात स्वाद स्वाद

पृ० १३८ १३६ सङ्ख्य महानुमान । सेसक कासी के पश्चितों की सामाजिकता निषयक इस अधित पर स्थ्य विचार कर लेकें कि जिस

वेदभाष्य की पृष्ठभूमि पर सिहावलोकन

धर्मेन्द्रपाल शास्त्री

वेद सब सत्य विद्याग्रो का पुस्तक है। वेद का पढना-पढाना भौर सुनना-सुनाना सब भावों का परम घर्म है।

धायों के जीवन में बेदो का स्थान धरयन्त महत्त्वपूर्ण है। प्राचीनकाल से ही वेद ईश्वरीय जान के रूप से श्रवा व सादर की भावना से स्थीकार किये जात रहे हैं। परना वंद मत्र झत्यन्त गृढ रहस्यमय है। इनकी एक विशिष्ट छन्द रदना है जो सनानन ज्ञान की अपन में सजीय रहती है। वेद मत्रों की ग्सी गम्भीरतातथा विशिष्ट खुद रचना के कारण साधारण ती क्या सम्क्रत भाषा मे पारङ्गत विद्वानी के मस्तिष्क भीडनकेरहस्यो को नही समभ पाने हैं। इसी कारण प्राचीनकाल से ही वेदों के भाष्य करने की पद्धति पायी जाती है। परम्परा के अनुसार रावण हुनारे सामने वेदो के सबप्रवम भाष्यकार के रूप में बाते हैं परन्तु इनका वेद भाष्य पूर्णं≖प से प्राप्त नही होताहै।

पश्चातवर्गी भाष्यकारो से स्कन्द स्वामी उदगीय वरशीय मट्ट आस्कर, महीचर उम्बट व सायश प्रसिद्ध भाष्य कार हैं। इन भाष्यकारों में क्षायण का भाष्य सर्वाधिक प्रसिद्ध है। इन्हाने बारो वेदो ना नाय किया है। सायण क भाष्य का प्रभाव उनके परच नुहोने बाल भाष्य-कारी पर स्पष्ट रूप में बेलने की निसता है। पर त्सायसा भाष्य के बढ भाष्य मे वेद की ग्रत्माव विवासभाराका सही सहा विशास नहीं हथा। इनका भाष्य कमकाण्डपरक है। ये बद मत्री के कम काण्डात्मक भाष्य की धुन से सत्री के बवाय धनिप्राः— जो मूल रूप से सनातन ज्ञान विज्ञान का परिचायक है। को भूत ज ते हैं। फलस्वरप साथशा का बैद भ ८२ "साभाष्य हे जिसमे मझी के यथाथ ध वत्राय को ध यन्त सकुचित बनादिया गया है। जो बद की महान प्रतित्य का "सके ज्ञान को एक्दम बृद्धि विरुद्ध कर देन है। शायरण क बद भ व्य के बाधार पर ह यारोतीय विद्वानी न १६वी शना न स बद क विषय म एक नवीन विकासवारा मत का प्रतिपदन किया। उसके अनुसार वट आय जाति का प्रारम्भिक ग्रवस्थ स विकास को घना है। ब्रह्मीन ज्यास्य प्रकृति परककी जा कि सायण भाष्य मे प्राप्त होने वाले प्रकृति गानी विवारी साली है। यद्यपि य प्रतिमन्द्राली साहमी भीर कपनाकी ज्ञान में स्व छदा फिर भी वेद की सभार पहेलियाको सुलन। नम इनकी प्रतिना

एव कल्पना शक्ति असमर्थ रही । इसका मुख्य कारण वे वेद की भाषा खुन्द रचना व ग्रमर काव्य को नहीं समन्त पाये। उन्होने धारने आच्यो ने बदी में विश्वित रूपको का ब्राह्माता उपनिषद, पुराणो में प्राप्त गायाओं व ऐतिहासिक तत्त्वों से सम्बन्ध बताकर वैदिक गाथा शास्त्र वैदिक सम्पताका नवीन मत सहा कर विया। इस निष्कर्ष पर पहुचने के तीन कारसा बे---

- (१) उ हे वैदिक परम्परा व साहित्य काठीक ठीक ज्ञान नहीं या तथा उन्होंने प्राचीन ऋषियों की नैशक्तक प्रसासी को छोड दिया या।
- (२) सायशा का भाष्य इन का मार्ग दर्शक या।
- (३) परिचनी विद्वानी की वेद से कोई सहानुभूति नही थी।

उगरिलिकित वर्षामो का बूल्याकन करने पर पता चलता है कि बाचार्य सायण के मतानुसार वेद केवल कर्मकाण्ड की एक ऐसी पुस्तक है जिसके मत्रों मे कोई पारस्परिक समित नही है । पारचास्य विद्वानों के मनानुसार वेद मार्थ जाति के धादिम काल से उपनिषत् काल तक की मानसिक स्थिति या धवस्या का नेला जोसा है। जिसे वैदिक कवियों ने छन्द बद्ध कर दिया इसमें कही ऊर्वे विचार नहीं हैं भौर ये तो शसम्य गडरिये के गैस मात्र हैं। बेद रजने वाले प्रकृति की शक्तियों की पूजा करते और उनके प्रकीय से बचने के लिए यज किया करते वे। वैदिक ऋषि मुर्खं परन्तु श्रद्धालु उपासक वे। वेद गाथा श स्त्र है वेदी मे मास भण्ण है यज मे पशुलि का विधान है जुबाबीर सोम के रूप में सुराहै।

महर्षि दयान द के ग्राविशीव तक वदो के सम्बन्ध म इन सभी विच रखाराखों र समृष्टित विकास हो चुका था। स्वामी दयान-द ने देखा कि वेद क सम्बाध से धनक (भ्रान्तिया) भ्रान्त सर्वो का बनार किया जा ग्या है। तो प्रतिक्रियाफस स्परूप उन्नीसवी शताब्दी के महान् सुधा रक सामाजिक काति के धगदूत एव वैदिक बाडमय के मन्यन एव योग साधन की भट्टी में तये कुन्दन सदश महर्षि दयानन्द न वैदिक सत्य निर्भान्त सार्व

भीन एव प्राशिमाल के खपकार की भावना से समुख्य सन्तेस मानव की दिये । वेद के विषय में एक तीसरी विकारवारा का सूजन किया। वे वेद को न तो केवल कर्मकाड की पुस्तक मानते के, न झाम बाति प्राप्ति के उपाय करना। के गीत । वेद के विषय ने प्रमुख रूप से वो मान्यताएँ दी---(१) वेदो के ज्ञान का प्रकाश ईरवर ने सुष्टि के बारम्भ में भ्रान्त बाबु बादिस्य बङ्गिरा नामक बार ऋषियों के बन्त करलों ने मानव जाति के ज्ञान व कस्वाण के लिए किया।

सनातन सर्वज्ञ परमात्मा का ज्ञान होने से बेद में सारा ज्ञान विज्ञान बीच-रूप में बर्लमान है इसी से वेद स्वत प्रमाण हैं। उनकी वे मान्यताएँ वैदिक साहित्य के गम्भीर श्रक्ष्मयन पर श्राक्षा-रित हैं।

वेद ईश्वरीय ज्ञान है। दयानन्द की इस मान्यता का विवेचन हम दो प्रकार से करते हैं --(१) वैदिक साहित्य बाह्मण्, उपन्यिद दर्शनी (दलन ग्रन्थ) मे प्राप्त प्रमासी के बाधार पर। (२) तकंकी कसीटी पर। वैविक साहित्य का बहातक प्रदन है सारा वैदिक साहित्य दयानन्द की या इस यन्तव्य की पृष्टि करता है। वेद का प्रकाश ईश्वर ने सुविट के ब्रादि में ऋषियों के बुद्ध अन्त करणों में किया। शतपत्र बाह्यल कहता है-'तेम्यस्तप्तेम्बरमयो वेदा अजायन्ताग्ने-ऋंग्वेदो वायोर्वजुर्वेद सर्वात्सामवेद । ११४२३ अर्थात् ऋग्वेद का प्रकाश धनि पर बजुबेंद का बाबु पर लामबेन का सूर्य नामक ऋषि पर हुआ। इसी प्रकार प्रम्य उरनि द दर्शन बनुस्मृति बादि सभी एक स्वर में वेदी की ईइवर से उत्पन्न हुया मानते हैं। इसी से बेद की स्वत प्रमाण मानते हैं।

महर्षि दयानन्द का वेद के सम्बन्ध मे दूसरा दावा है कि बेदों में समस्त ज्ञान विज्ञान है। इसी सम्दर्भ में स्वामी जी का कवन है कि सर्वेश्रयम वेद ईश्वरीय या ईंग्वर का ज्ञान होने से बपने बाप से पूर्ण हैं। और ईस्वर ने यह ज्ञान मनुष्यों के ज्ञान व कस्थाण के लिए दिया। सत उसमे मनुष्यापयोगी समस्त आन विज्ञान होना चाहिए। स्वामी जी न बेद से निहित ज्ञान राशि को प्रमुख रूप से चर विषयो मे विभक्त किया है - (१) विज्ञान सर्वात-सब पदावों को बदाई जानना । (२) उपासना (३) कर्म (४) ज्ञाम ।

महर्षि दयानन्द का विज्ञान से तात्पर्य

शान की उस प्रचानी से है, जिसमे जान. कर्म, उपासना इन तीनों के समृत्रित उप-बोग से नेकर तुल-पर्वन्त समस्त पवाची का सामात् बोच होना है और मानव बाति के बम्बुदय नि श्रेयस की प्राप्ति मे यवावत जनका उपयोग होता हो । स्वामी जीने विज्ञान को भी दो रूप में मान्यता वी है ---(१) ईव्दर का स्थावत् ज्ञान व उसकी बाजाधी का पालन। (२) पदार्थ विद्या का नान प्रयात् पदार्थी के नुष्णी व तपथीव की जानना ।

उगसना-पर्यात् परमेञ्बर की

कर्म = कम में कर्मकाण्ड को नेते हैं जिससे जीवन मे परमाथ व सोक भ्यवहार की सिद्धि होती है। स्वामी जी का कमकाण्ड से तात्य केवल यश्च याथ से नहीं दरन् उसमे जीवन की समस्त क्रियामी को सम्मिलित कर लते हैं।

ज्ञान-नान का बय पृथ्वी से नक् नुष से प्रकृति पर्यंत पदार्थों के गूलो के ज्ञान से ठीक शिक काय सिद्ध करना। इसे हम आधुनिक विज्ञान के रूप मे प्रयुक्त कर सकते हैं। वेद भी भाषा मे विज्ञान=विशेष ज्ञान ईश्वर भारमा शादि के ज्ञान को जबकि जान प्राकृतिक विज्ञानों के अथ में प्रयुक्त होता है। (ऋग्वेदाविमाच्यमूमिका)

देव मे पदार्थ विद्याएं **दे**या नहीं ? यह गम्बीर भीर भनुसम्बान का विषय है। सभी तक वेदों में से वैज्ञानिक सुनों की कोज का नियम पूर्वक बस्त्रीर प्रवास नहीं हुया। यत हमारे सामने कोई ठोस प्रमाण नहीं है। बत्तम न में बुख प्रयास किया वा रहा है। तबापि महीं। दवानन्द सरस्व ही ने भानी ऋग्वेशदि राष्यभूमिका में वैदिक मत्रों से विश्वृत्, तार विश्वा, विवान विद्या अयो न विद्या, मूबी न विद्या धादि का प्रतिपादन किया। उन्नीसबी शताब्दी के मध्य में यूरोप में भी इनमें है भनेक विद्यापी का विकास नहीं हुआ व ऐसी धवस्था में स्वामी दगानग्द-सरस्वती का धानी ऋश्वेद।दिसाष्यभूनिका स विमान विश्व भी का प्रतिपादन करना इस बात का स्पष्ट सकेत करता है कि वेदो में पदाय (बदार्गे शेज क मे निहित हैं। परन्तुप्रयम कर को विकसित करने के लिए सम्भोर अन्ते ग्रुण की आवश्यकता है। वर्तमान युग के महान् विद्वान सहिष झरविन्द तो स्त्रामी जी के दाव को हरू हा बताले हुए कहन हैं कि मैं तो यहालक कहुवा कि वेदों में कुछ वैज्ञ निक सत्य ऐसे है जिन्हें प्राधुनिक तिज्ञान ज नता तक नही। यहा घरविन्द ना सकेत मनी-विक्रान से है। वैदिक मनोविज्ञान बास्तव में अपने भाप में धनुरम है तथा अविध्य में विकसित योगविद्या का बीज है।

बेद वास्तव में अपने आप में पद वी विका ही नहीं प्रपितु नीति वर्ग राजवर्ग, (शेष पृष्ठ १२ पर)

ь

व्यासपीठ---

उपनिषत् कथा माला-६

गायत्री मन्त्र की महिमा

प्रवचनकर्ता-वीतराग स्वामी सर्वेदानन्द महाराज

् स्रो भूनुव स्व । तस्सवितुवंरेण्य अर्थो बेबस्य धीमहि । विशो यो न अवीवयात् ।

धो' परमात्मा का निज नाम है, को प्रालो का भी प्राल है उने 'भू' कहते हैं भीर भूव सब दुलों के हरने वाले को कहते हैं स्व 'स्वर मुखस्वरूप है और धारने उपासको को सब सुकी की प्राप्ति कराने वाला है। एका परमास्मा । अञ्चिति अर्थात् समस्त जगत् को उत्पन्न करने वाला सूर्वभादि प्रकाशक पदार्थी को प्रकाशित करने वाला और सब ऐश्वयं का दानाहै। देवस्य उस चाहने योग्य कीत कराने वाले देवता परमात्मा की जो 'वरेण्यम् सबसे वडा धीर ध्यान करने योग्य है भर्वों सब दुनों को दूर करने शास पवित्र भीरतेज स्वरूप है तत् स्त्री परमात्मा के स्वरूप को चीमहि हम द्धाने मन में चारण करें। यो न वही अमारी विश बृदियों को उत्तम गुरू, कर्म और स्त्रभाव मे प्रचीदयात प्रेरसा करे।

इस प्राचा को प्रपंत नन में रखकर सुनें इस मन है सदैन करवीर पर की स्तुति प्राचना और उपासना करनी पाहिए। मनुष्य का बोबन सनेक प्रकार ते किरा सुवा है। मनुष्य पाहता है कि इस्ट के साम स्थान हो और मनिष्य के साम वियोग परम्यु स्वार में देशोगों पास मुंबाक रहते हैं। किसी के पास बोबा समया निष्य है । मनुष्य में हि परन्यु परि-साम साम यह होगा कि एक समय ये सब ही परामंत्र वेते गुच्च जात होने और परे मुख और प्राप्त करने की इच्छा होगी।

वढ जाये उतना ही दुस है हमारा भारत-वष भी इस समय इसी सोंबातानी मे है।

उद्योगिन पुरवसिंतह्युपैति सहमी वैवेन वैयमिति कापुरुवा वदन्ति । वैव निहत्य कुर पौरवनात्मशस्या यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽन बोच ॥ हितोपवेश

मर्थात् उद्यम से ही सिंह समान पुरुष लक्ष्मी को प्राप्त होत हैं। सवार के समस्त ऐरवय तथा गौरव उद्यम से ही प्राप्त होते है। यह ससार सब एश्वर्य का ही है कहन को ताहम यह कहते है किन्तु करते इसके विपरीत हैं। जितना वन चाहते हैं वरित्रता वढती जाती है। विद्या चाहते है परन्तुप्राप्त नहीं होती। हमें याद रजना चाहिए कि ससार का जितना ऐरवर्य है उच्चोगी को ही प्रत्यत होता है। उद्योगी पूरव सपना उद्देश्य स्थिर करता है। उनमे बहुता है बारे-बारे सब दकावटी की धपने मार्ग से परे हुनाकर सागे बढता बाना है। साहसी पूरव जिसमें शारीरिक श्वनित्र भीर विचारशस्ति काम करती है वहीं बन भीर विचा की प्राप्त होता है। विचारशीवता भीर सम्पत्ति वद दोनो ही मिल बाती हैं, तो लक्ष्मी उनके पाव चूमसी है। एसा नहीं कि दीवाणी पर सक्सीकास्तोत्र पढ सिया पूजन कर लिया भीर सक्सी बराग भा नई। यदि सक्त्री पर विजय पाने की यह रीति होती तो भाव सब ही करोइपति वन ज है। इसका सच्या मार्ग क्या वा मेरे वाडी

हिन्दू जाति भाग तीवे मार्ग से भव्ट हा यह है। उसका धन्तरात्मा बहुत दुवस हो जुका है। कहते हैं कि यह दशा ख सात हकार वर्ष से विगडी हुई है। प्रशोक को तो केवल दो हजार वय ही गुजरे है। यदि उस समय ही सुघर जाती तो क्या विगवाया। जिस समय मनुष्य जाति जानकर समल जाये उसी समय उसका उसका वेडापार हो जातः। तुम यदि श्रव भी उद्यमी भीर पुरुषार्थी बन जामी तो धाञ्च हो बेडापार हो जाये । देशो [।] एक मनुष्य है उसने एक मकान बनाया द्वार बन्दकर दिया, भीर कही चला गया। बारह वय तक वहाँ सूय का प्रकाश नही पहुचा भीर बल्चकार का राज्य रहा। बारह वर्ष मीखे वह वहा झाया और उसने

नहापर तीपक जनाया धन्यकार दूर हो गया। नया घणकार ने यह कहा कि मैं सो नायह वर्ष संयहा हू इतने बोझ न दी बाता ? इसी प्रकार तुम भी धाने धन्त करणास झनेरे की दूर कर दी। बिना चानियों ने विद्याधीर प्रकाण का प्रकार किया उन्होंने ही घण्यर दूर कर विद्या।

युरुप भी दो सी वध पहले कुछ वहत मनीन द्याः उसने घपने ग्रवगुराो को हटा दिया तो वह अभी और एव्यर्थवान् बन गया। जागन ने सत्तर प्रस्ती वय मे हो कितनी उन्नति कर ली। उसने विचारा जिन बातो के करने से व्यथ दूख तथा सकट बढता है उन्ह छोड दो। तुरन्त श्चोड दिया। मागती सीधा यह है। पर-तुद्धाप दुवल हैं द्यापक घन्दर वस नही। पहने व दर पकडने की रीति यह थी। शाजकस तो कई कई प्रकार से पक इते हैं परन्तु पहने छोटे लोटे मुह बाने पात्र घरती में गाड देते ने और उनमें दाने डाज देते ने । इन पात्रों के बास पास भी भरती पर कुछ दाने बसेर देने वे। बन्दर भाषा, उसने बरती पर से दाना चठावा साथ ही देला कि पात्र में बहुत संदाने पडे हैं, पात्र में हुव डाला और दानों की मृटठी भरली। धाउन पात्र का मृह तक्त है, मुन्डी बाहर कैसे निकले ? बहुत निकासना चाहत है हाब निकलता ही नही। वस पकडने वाला माकर पकड लेता है। यदि उसे ज्ञान हो कि मुट्ठी तो मैंने ही बाध रसी है इसे सोल दू खुन जाऊगा तो छुट ज।ए, पन्त उसे यह ज्ञान ही तो नी । इसी प्रकार जितने भी भूरे रिवाज हैं ये तुम ने हातो चनाय है परन्तुतुमो छन्ते नी । जकतक य दुरी रस्मेन छुटे तुम में बल नहीं बासकता। प्रभूकी जीनाहै अँसी उसकी च्छा होवी वैसाही वह करेगा यह तो कायर पुरुषो का कथन है। इसलिए मेर भाई! श्रात्मिक बल के लिए पृथ्पार्थं करो युवा ब्रवस्था माने से पहुर हा कन्या का विवाद हा जाता है। घर सोचा हमार गृहस्य के भी बाजनल ग्रदनुत निवम हैं ' यदि उसका पति मर जार तो घरक बाहरके इथरके उथर के सब बही कहेगे कि तेश नसीब इट गया अस्य में ऐसाही लिखाया तूब डी दुर्मागा घर भाई। भव हमारे नाग्य म दुख ही दुल है। हमारी मान मधाटा रहेगी बा नी

चर्गं कर्मं से रहियों। सभी उसको शिक्षा ते हैं। उरन्तु पवि कही पुरुष की स्त्री मर आये तो उते जसाकर नहीं धार्म ना कि विवाह के लिए पहने ही तीयारी हो बाती हैं। खुन माने लगन हैं। यह भेव क्यों हैं? जो जाति धपने लडके धीर लडकी में इतना भेद समझती हो उसके तिल उल्लाति का मार्ग कहा? वह जाति तो मुग्टिम का चिरोक कर रही है, उसे ती सतार छोडना ही पडला

उमये बचानी की होतीं निराती । सभी बानते कीन इनसे है खानी ।। कानून कुदरत ने बब ओर पाया । नहीं हटता हमना है उसका हटाया ।।

जिसे तुम हिंदू जाति कहते हो उसी में से प्राय एक सौ तीस लडके या लड़-किया प्रतिदिन निक्सकर दूसरी जातिकों में मिल रहे हैं। परन्तु यह प्रभंग जाति सोई पड़ी है।

है नजर गर दूरवीं आगाज में अजाज देखां सुब्बह के आईनए रोशन में अकते शांव देखां स्त्रीन जी जाती है जितसे सुरुषे हस्ती से मिट आगी है वह अकबाम देखां

जिस कातिको हान ग्रीर लाभ का कोई ज्ञान नहीं वह क्या जल नहीं बच सकती है?

रेल में एक स्त्री यात्रा कर रही है उन्हते साथना डोने का कहा उतारक वण्ये के हाल में दे दिया। वण्ये ने उन्हें सिक्कती से बाहर कर दिया। उन्हें क्या पना चा कि यह भी किसी काम का योज हैं 'सर बहु विक्लाती हैं रोती हैं। वण्ये को तो ही हानि सान का जान न या परन्तु क्या उन्हती मानीय न जानती की '

सन्ता सस्तों की भीर गरी में की तुन करो बता रहे हैं? उन रा बुरा मना क्यो रह रहे हो 'उन रो सभी रचा नहीं साने देने ? भीर फिर कहते हो प्रभो ! तैरी इचा हो गरी शो की सन उपर गरी में को सतते हा उपर अनु र सामने सन्ते बनत हो । मना तुष्टारा भना की हो 'नहीं बानत —

> नहीं बुद्धि नहीं बाहु बल नहीं सबन को दाम तुलसीदास गरीब की पत रावे भगवान ॥

साप को यद झानी बाबी मंत्राता हो तो टेग बयना 'गेड देग घाईए ए यसे भीषा ही जागा स्वता है। टेड पन ते सा बाबी में पुना हो नहीं मकना। इसियं तुल भी भीर मं कुंद्र छोडकर उद्योग करो। भके बिना कभी देशा पार न होगा। हमारा धन्त करण तो खुद्र होता नहीं रोज प-दे से धन्या उपयेश सुनसे हैं पर-जंद्यका कुल प्रभाव नहीं देग। समीक्षा

5

महान शिचा शास्त्री महात्मा हंमराज

टा० प्रक्तराम पारावार ने विकेश्य पुस्तक से नी० प्र० वी० बारोसन के प्राण महात्मा प्रमराज के व्यक्तित्व प्रोर को मफलता पूजक धाकने जावने धीर परका का धमसाध्य प्रथन किया है। पूरी पुस्तक को धाठ धट्यायों में बाटा गया है। पुस्तक । पारस्पिक करें पर न निक्का जकर समस मधिक गोंच धनुत धान धीर वैज्ञानिकता से पुन्त धनुतातन उपकरणा धीर साहित्य विटंग का प्राजक प्रसाद है।

अथन ग्रध्याय प्राचन भारत की शिक्षापण्ययः। ग्रीरिक्षक हमे हुमारे स्वर्णिम भ्रतीत काराद दिलाने वण्लाहै । नाटय कला का सार्यसमाज मे जिक्र करना एव बृष्टता समभी जाती है परन्तु नाटक को नकार कर हुम क्तिने वड मत्य से भास मृद लेते है नायद यह नही बानते। विदान लेखक ने प्राचीन विद्या काज भो पद्मभ्रष्ट पीता को दिशा सूचक इक्र्य स की तरह रास्ता विसा सनती है इस बात को «लपूर्वक कोरदार शब्दों से कहाहै। द्वितीय ग्रष्टयाय वैदिक शिक्षा का त्वरूप' में इस बारला को पुष्ट किया गया है कि शिक्षा का उद्दय हमे किसी देकर रोजगार कामालयो के चक्कर लगाना पगु ग्रौर परमुखापेकी बनाना नहीं सपितु हमारे व्यक्तिस्व कापूरा विकास करके हमें स्वावसम्बी बनाना है। तीक्षरा ग्रध्याय 'भारतीय शिक्षा का ब्रारम्भ हमारी प्राचीन शिक्षा प्रशासी को किस तरह तहस नहस किया गया इस का एक उवलन्त दस्तावेज है। चौचा सम्माय "उम्नीसवी शताब्दी शिक्षा का स्वरूप ' मैकाले के मिनन इरादो की माकी प्रस्तुत करता है। क्लक बनाने वाली शिक्षा आज भी हमे दी जा रही है। मैकाले ने भारतीय सर्वेक्षण के झाधार पर भेजी भ्रपनी एक रिपोर्ट मे यह सिका थाकि मैं काले भारतीयों को गोरा तो मही बना सकता परन्तु मेरी शिक्षा नीति एक दिन यह चमरकार जरूर दिलायेगी कि मैं भारतवासियों को विस और दिमान से काला प्रयेज बना दूगा। पाराशर जी ने ब्रपनी पुस्तक में ठीक ही निस्ता है "स्पष्टत यह शिक्षा पद्धति भारतीय जन मानस की जावनाम्रो के प्रनुकूल नही थी"। पाचने प्रध्याय प्रायंत्रमाज घीर शिक्षा मे प्रार्थसमाज की शिक्षा, शिक्षक और शिक्ष थीं के बारे में क्या मान्यताएँ हैं, इसका विवेचन किया गया है। सठा बाध्याय गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का स्व-" क्य स्थव्ट करता है। लेखक ने एक स्वान पर इस प्रध्याय में लिखा है गुरुकुल शिक्षा प्रशासी महनव-निर्माण की स्रति

उपयोगी एवं अष्ठ पढ़ित है। यह ही ऐसी पढ़ित है जिसन समाज के लिए कई श्रव्ड रत्न तैयार किय थे।

साववें प्रध्याय देश-विदेश के शिक्षा शास्त्री ये नक्षक का विस्तृत प्रध्ययन तथा अस सकन्य स्वेद का स्वाद स्थान काकनता है। हमारे यहा हो नहीं देश विदेश में कीन किनना महरा है इस बात को आंच करने कं विए तुलनारमक पदित भी प्रथिति है। हानांकि लेकक ने किशी को उठाने किशो को गिरान को गरब ये ऐसा हुख नहीं किया है, न ही किशी विश् शास्त्री में ब रे मे एसे शब्दों का प्रयोग ही किया है। फिर भी विभिन्न विशा शास्त्रियों का एक स्थान पर स्वते स सुवी पठक यह सनुभान तो सकस्त्र हो बात दक्ष हैं किना सम्बन्ध में प्रविक्त तथा है धीर स्वक्षी विद्या सबसे स्वाद तथा है।

सात्वा प्रध्याय महान् विक्षा शास्त्री महात्मा इस्तर्भ के जीवन सीर कार्यों का लेका जीवा है पा यो कहें कि हाव्य-वित्र प्रस्तुत करता है। इस हास्त्रास में महात्मा जी की विका विषयक सात्यताएँ सात्रा जीवन उच्च विचार, इस्तर्भ के वाला पुरवसी स्ववित्य, त्राह्मा जीवन उच्च विचार, इस्तर्भ के वाला पुरवसी स्ववित्य, महात्मा इस्त्र देने वाला पुरवसी स्ववित्य, महात्मा इस्त्र हमा विव्यक्त में साह्य प्रदेश के विवार प्रदेश की विवार का प्रवर्भ महात्मा जी की विवार करा प्रवर्भ महात्मा जी की विवार करा स्वर्भ महात्मा जीवा हमने करनाएँ इस तस्य कं समयन ने प्रस्तुत की बची

बेश विदेश के शिक्षा-शारिनकों के वीज केंग्रे महारमा जी भागा में सुरेश के स्थान, निर्देश के स्थान, निर्देश के स्थान, निर्देश के स्थान, करने के स्थान करने के स्थान स्थान के स्थान करने के स्थान स्थान के स्थान करने के स्थान करने के स्थान करने के स्थान करने के स्थान करने स्थान के स्थान के स्थान करने स्थान स्थान करने स्थान करने स्थान करने स्थान करने स्थान करने स्थान स्थान करने स्थान करने स्थान स्थान

पूरी पुरवक बरल, सुबोच संसी में सिस्ती बासको धीर प्रौदो, सुपरित्य धीर धरपर्याठली धार्मबयाधियो धीर बैर सार्व्याधियों के सिए समान क्य से उप-बोची है। डी० ए० बी० धान्योसन के सादास्त्री वर्ष पर क्रमाधित हम् पुरस्क का पुरव भीर उपयोगिता धिक्क सार्वक धीर प्राह्मान हो उठी है।

प्रो॰ सारस्यत मोह्नन 'मनीवी' डी॰ए॰बी॰ कालेज, सरोहर (पद्माव)

शिक्षा नीति

१२ ५-०५ का सम्मावकीय 'विका भीति ये परिवर्तन' पर सण्डा समा । इस विषय में मार्थ सनार को वर्षित है कि विस्तृत बत्रक और विद्युत सम्पत्नी के द्वार सरकार पर बनाव दानकर मार तीय खिला पढित लागू करवाने का प्रवान करे । इस कार्य हेतु सावेदीयक स्था को प्राणे साकर विद्वालों को एकविन व एकराय करने का बोडा वठाना चाहिए। साथ विद्वालों य विद्यालियों को भी प्रमुख दैनिक पत्रों से सपनी राख प्रकट करनी चाहिए। हुक्क विचारणीय मुक्ताव प्रत्युत है—

१ विधि चाह 'माण्टेसरा' चालू रखें पर प्राथमिक श्विक्षाका माध्यम नातु-भाषा और साधार नाघो जी की बुनि-बादी विकाही रची जावे। नन्हो मुल्नो पर कागकी बोक हुगया जाने। सामान्य कान व सामाजिक क्षान आदि कला ३ तक तो मौलिक ही रखे जाये। भाषा नाम की पुस्तकें मातृभाषा व हिन्दी भी दो एव सामान्य गणित व व्यवहार गणित की एक (बस कुल तीन) रखी वायें। ज्ञान को क्रिया से सम्बन्धित किया जाये। सहायता के लिए वित्रकला व पहाड की पूरतकें रकी वा सकती हैं। इस स्तर पर सुते क, याद करने अनुतने स वर्तनी भीर मौक्तिक उत्तर देने की क्षमताव देखकर काम करने की क्षमता विक्षित की जाये, कापिया अरवाना बन्द किया वाये। मौक्षिक प्रश्नोत्तर त्रणासी याने भी सामदायक रहेगी। परतु ४-५ कलामो मेही पाठवार मिसित प्रश्नोत्तर शुरू करवाये जायें। इन कक्षाधों में इतिहास ने रामायण के भश्र व उपनिषद् कवाए हों तथा भूगोस, समाज, विज्ञान, स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्त सामान्य ज्ञान निवित भौर पाठ्य से दिया जा सकता है। परतु इनका माध्यम मातुशाचा हो रहे। मातु-शावा हिन्दी के व्याकरता तथा मस्त्रत की वर्णोज्यारण व शब्दोज्यारण शिक्षा का प्रारम्भिक स्वक्ष्य सावृ रहे । प्रत्येक भावा शिक्षण (मनिवार्य) में ४वी से दसवीं तक ताहित्य व व्याकरण की अलय-अलय परीक्षा होती रहे । शिष्टाचार व नैतिक शिक्षा मौज्ञिक दी जावे।

२ उच्च प्राथमिक (६ वे = कला) उपरोक्त के प्रताना सहस्त्र का प्रारम्भिक एक्ता स्वरूप धीनिवार्य कर ये एक्ता वाले । किट्याचार मीति व वेदिक वर्गे विज्ञा ची स्वंतवार्य रहें। पड़ीची अवेद्य की मातुवाचा ची वेवनावरी में आरम्भिक ज्वान व बोक्याल के कर में पढ़ाई वार्य प्रवाह में केवल प्रदावारात तक कर कवार हों। बमाच विज्ञान में कुताबरि-कता के पाट रहे बार्ने। विज्ञान, स्वास्थ्य, सुपोस, विक्रत वार्ने प्राथमिक वार्के अक्षुत्व दिया वाये। त्यों मे केवल प्राचीन' इतिहास (महाभारत के बाद मुस्सिम प्राक्षमण से पूर्व तक) पढ़ाया वाये। प्रारम्भिक सिद्धान्त उस काल का सक्षिप्त' विश्व इतिहास भी पढ़ाया जाये। विकाल तीनो सम्बार्ध।

३ हाई स्कूल माध्यमिक स्तर पर ऐच्छिक विषयो की प्रशाली समान का का साथे। कियास्मकता के साथ साथ ये समी-विषय प्रमिवार्थ रहे —

- (१) मातृभागा हिन्दी, सस्कृत के साहित्य व्याकरण सहित
- (२) पडीसी प्रवेश की जावा, निषि, बोलवाल व सामाध्य रवणा के स्तर तक साहित्यिक रवना प्रश्वासनागरि सिपि में कहार्ये।
- (३) इतिहास भारत का विधेष एक पड़ीसी देश का गीण रूप मे । भार-तीय इतिहास साधुनिक पुरातात्त्रक व सभिनेत्रीय काजो पर साथारित हो।

भूगोल---भारतका विशेष व पृथ्वी का गीज रूप से गणित – तीनो शासाएँ । समास विज्ञान क नागरिकशास्त्र- वनू-स्मृति सहित स्वास्थ्य विज्ञान-निजी, सार्वेश-निकद पर्यावरण बाजिज्य — न्यापारिक संबद्धन, विविया, स्पकरण, बहीसाता व मन्तिम लेखे, भौद्योगिक विकास क समस्याए, मुद्रा सीर वेंक। रासायनिक, विज्ञान-मौतिक, वैविकः। कृषि - प्रामीण प्रयं व्यवस्था व

कृषि - प्रामीण प्रवं व्यवस्था व कृषि उद्योग, भूमि का अध्ययन विक्री बाववानी व नाप चोस, कृषि वर्म, विविद्या, रासायनिक प्रयोग

नैतिक (धर्म) शिक्षा धनिवार्य रूप हे इस प्रकार सम्मिनित की जाती है इससे प्रकार परीक्षा का बोफ नहीं पडेक्क-

- (१) तस्कृत वाहित्य में, काब्यो, नाटकों/ गखों के प्रशों से पूर्व कुछ पाठ वेदों के स्तुति मत्रों के व सक्सी संगठन, पुक्त सून्त, उपनिवयों के प्रश माध्य सहित दिये बार्ये।
- (२) हिंदी—सेतीय भाषा साहित्य में, शिश्नाबार व सदावरण के पाठ और शिक्षाभव बीवनियों, परनाए, उप-निवर्षों की कथाएँ वी बावें।
- (२) समाज विज्ञान में, नावरिक, वर्षे, पारिवारिक व विद्यार्थी वर्ग सर्वेशी समुस्मृति के श्रस विवे वार्षे। राज-नीति सम्बन्धी सस्य थी। सन्तिक

(श्रेष पुष्ठ ११ पर)

पंजाब की स्थिति सुधारनेके लिए ठोस उपाय किये जायें

बायसमोश के १६ वर्ष १६८६ के श्रक में देशद्रोहियों को सस्ती से कृष अना बावरब ह है ' शीर्बक से सार्वदेशिक बार्व प्रतिनिधि सभा के बध्यक भी राव-बोबास शासवाये का बाह्यान उचित्र श्वामिक एव देशमन्ति की मावना से ब्रेरित है ।

नि सन्देह इस समय पश्चाव के काली जिम प्रकार केन्द्र के विश्व टक-राव की नीति ग्रानाकर राष्ट्रविरोधी मार्ग का मनुबरण कर रहे हैं। मिण्डरा वाले के पिता पिवासी वर्षीय जोगेन्द्रसिंह की हा में हा मिलाकर उपवाद को बढावा दे रहे है। स्व० आमती इन्दिरा गांघी के इत्यारे को मम्मातित कर रहे हैं। उपवा-वियों द्वारा उत्तरी मारत क विजिन्न नवरों में टाजिस्टर बमी का विस्फोट कर द्धनेक लोगों को मौत के मुद्द ने दकेल । दियाययालया धनको को वायल कर विवा गया । उपवादियो द्वारा स्वर्णमदिर के जस्त्र संग्रह को उचित उहरावा जा रहा है। उनके द्वारा धनेक लोगों की ह याथी का कार्यक्रम और पक्ड रहा है, धनेक लोगों को धमकी के पत्र फिर मिलने सने हैं तथा हर भीर पृथकताबाद एव न्।द्रदेशिहता को बढावा दिया जा रहा है, स्पष्ट है कि पजाब की स्थिति विस्फोटक श्वव विश्तनीय है ऐसी परिस्थिति मे स्वित है कि केन्द्रीय सरकार वहा सन-भौते व तुष्टीकरसा की नीति को त्याग इर कठोर व सथायंवादी नीति अपनाये शाकि देशदीहियों का दमन होकर राष्ट्र अधियों को बढावा मिस सके। इस सबच के तिरू समाव प्रेषित हैं-

१ सरकार उपवादियो तथा मातक-बादियों के विदय कठोर से कठोर कार्य-बाडी कर उन्हें निर्देशतापूर्वक कुचल दे ताबि वे मनिष्य में फिर सिर न उठा सकें। इस सम्बन्ध में उसे स्वर्गीय सरवार बस्सभ-मार्च पटेल की प्रभावी नीति का प्रमुक-

रच करना चाहिए।

२ उते वर्तमान पत्राम, हरियाचा, हिमाचल प्रदेख चण्डीवढ तथा जम्मु क्षेत्र को निसाकर परिचम प्रदेश की स्थापना करनी चाहिए। विसकी रावधानी वडी-यद होयी। नि सन्देह ऐसे प्रदेश में राष्ट-बादी शक्तिया प्रवत हो जावेंबी तथा उपवादी कमजोर हो जार्वेने।

३ हिन्दू प्रशासस्यको को हवियारो के बाइसेन्स प्रकर मात्रा में दिवे जानें ताकि वे प्रातकवादियों का सामना सफ-नतापर्वक कर सके।

४ वहा की पुलिस तका प्रशासनिक सेवाधों में हिन्दुची को ग्राचे स्वान श्रववा चनकी ४= प्रतिसत जनसंस्था के सनुपात में स्थान दिये जागें ताकि झल्पसस्यक वर्ग विस्तों के प्रशासनिक दवाब वे मुक्त हो

५ वर्षे के बाबार परस्थापित सभी शिक्षासस्यायो को समाप्त कर सजी मोनो के लिए एक सी शिक्षापढ़ित लाग की जाये। सभी छात्रों के लिए नैतिक-शिक्षा छोटे बच्चो के लिए स्कार्सिंग तथात्र हो के लिए एन सी सी मनिवार्य की असे।

उपरोक्त उपाय नि सन्देह पत्राव की स्विति श्रुवारने से सहावक सिद्ध हो सकते

> शकुनबन्द गुप्त विकासाबस्पति मासनज जि॰ रायवरेगी, उ०प्र॰

मनोहर वेद कथा

ब्रावंसमाज मासवीय नवर नई दिल्ली के तत्त्वाबचान वे आचार्व वैविकी शास्त्री के प्रवचन एवं प० सत्यदेव स्ना-तक के अजन हुए। यह कार्यक्रम १० जून से १६ जुन तक सम्मन्न हुवा इस वी न के सोनो पर माननीय प्राचार्य जी के प्रव-बनो एव अजनोपदेश का प्रस्थविक क्षतर पक्षा ।

वेशराम जनेना मन्त्रो

दिल्ली से ३०० नौजवान भाग लेंगे

वई दिस्सी, २१ मई (शनिवार) बीव्यकासीन श्रवकाश में १४ जून से २३ जमतक गुरुकून कण्वाश्रम, कोन्द्रार विसा पी श नडवाल मे विशाल पैनाने पर आयोजित केन्द्रीय आर्थ युवक परिषद् बिस्वी प्रदेश के बस विवतीय आर्थ युवक प्रदिचय शिविर मे ३०० नीजवान आराम सेंगे।

शिविर सयोजक थी सनिस कुमार कार्य ने बताया कि युवकों में धनुशासन, चरित्र निर्माण, राष्ट्र-भक्ति की भावना, बैदिक सिद्धान्तों की जानकारी, तथा बारीरिक शिक्षण में योगासन, बण्ड बैठक, बहो-कराटे की स्टाईल कृष्तियों का बोग्य व्यामाम शिक्षको हारा कुशल प्रशि-क्षण देकर उनकी विजिल्म प्रतिभागों को विकसित किया जायेवा । इसके साथ योग-

साधना शिविर का भी धायोजन किया वायेना । श्री शार्थ ने बताया वह गुरुकुल हिमालय की सुरम्य चाटियों के बीच मासतीनदीके तट पर महर्षिक ण्या की वयोश्रमि पर स्थित है।

धार्य युवक प्रशिक्षणा शिविर के लिविराज्यक बहुतवारी आर्थ नरेल होने तया प्रयंस-मासी स्वामी वमदीस्वरा नन्द युवको को शिविर में बौद्धिक शिक्षक हेरो ।

शिबिर में भाग सेने के इच्छुक युवक कार्यांसय प्रायंसमात्र कवीर बस्ती पूरानी सन्बी मडी, विल्ली-७ के यते पर रात्रि ६ से द-३० बजे तक दैनिक सम्पर्क करें।

> चन्द्रमोहन श्रायं प्रेस सचिव

स॰ स्वर्गसिंह, स॰ खरावन्तसिंह के वक्तव्य निन्दनीय एव "राष्ट्रविरोधी"

सरवार स्वराधिह जैसे प्राने और बनुवरी तथा राष्ट्रवादी कहे जाने वाले सान भी धातकवावियों द्वारा की गई इत्याचों के बारे में कहें कि ५ प्रतिशत **बातकवादियो भीर १५%** पुलिस द्वारा की नहीं तो बारवर्ष भी होता है और दन भी । उन्होंने भिण्डरावासा की प्रश्नना धौर सरदार दरगरासिंह की निन्दा की है। शाखिस्तान क नारे में यह ⊲हकर कि मतसग्रह पर मिखी का बहमत साबित कर सकता है कि वह उसके विरुद्ध है मतसद्रह का घोशा छेडने का प्रयास किया गया है। क्या देश का विभाजन केवल एक सम्प्रनाय द्वारा प्रयने बहुमत से स्था बासकता है ? परोश रूप से स॰ स्वरा-सिंह निसाएक भारत कीम है जैमे सतरनाक नारे को समधन दे रहे है। सम्प्रदाय निरपेश राज्य मे ऐसी कल्पना करनाभी सर्विधान की मान्यताको भौर राष्ट्र के विषद्ध है।

स खुशवन्त्रसिंह भी दाना तरह की बोलिया बालते रहते है। उपवाद नवा राष्ट्रदोह की निन्द' भी और दूसरे ह अप उत्तका प्रोत्साहन भी। समृतसर मे ० नू स्टार के पश्वात सेना से क्षमियार और बाहन के तर भागने बाल सैनिको को माजाद हिन्द फीज के सैनिकों के समकक्ष बताकर क्या वे खान्त्रदायिक विद्रोहिशो को स्वतन्त्रता सेनानी घोषित नहीं कर रहे हैं ? साम्प्रदायिकता और विद्रोह की राष्ट्र अवित मानने सर्वे फिर ती साम्ब द्राधिक सामना थों से बहकर तथा देश की

तोडने वाले तस्वों द्वारा भडकाय जाने पर बो सोग सेना से विद्रोह कर जायें वे प्राजावी के परवाने कहे जार्येने । क्या स॰ खशवन्तसिंह जी बाहत है कि ऐसे विद्रोडियों को भागाद हिन्द फीज के सेना-नियो की तरह सम्मानित किया आये ? साम्बदायिकता अच्छे भन बृद्धित्रीबी लोगो को भी कितना धन्धा दना देती है यह इसका जीता जानता उदाहरण है।

धकाली नतुरव के लिए जो सवर्ष चन रहा है उसमे किसी घड से भी तकें-सनत और नरम रवैने की अपेशा करना गलत होगा । उनक बक्तव्यो की भाषा से अन्तर हो सकता है। परन्तु उनकी साम्ब-वायिकता भीर प्रथकतावादिता तो एक जैसी हु है। उनके बीच की लकीर तब ही नही होती जा रही, बर्कित समाध्या होती जा रही है। पजान के बाहर दाने हुए मिलो को प्रजाब में लाने की नावत देकर सन्त लोगोबास न लाजिस्तानी विचार की पुष्टिकी है। स॰ जोगिन्दर्शसह ग्रीर लोगोबास सभी हत्याची का दोव सरकार पर नान रहतें। उनमे सकिसी से भी बात करना भातकबाद को बटावा देना है। उनसे बात तभा करने चाहिए अप वे एक हो दर अर्थे और नविधान की परिचिने तर्कसनत सीर न्यायपूर्णहरू के लिए कहें भीर निर्णय होने पर उसकी तुरन्त अमल में लाने के लिए जुन सहयोग का बचन वें।

केदारसिंह ग्रार्थ

प्रचार वाहन द्वारा वेदप्रचार

ग्रायसमाज गाधीनगर के वार्षिक उल्सव के भवसरपर धुमई १६०५ को बोपहर ३ वजे से एक शोमायात्र का धायोजन किया नया । जिस^{वे} सभा के भवनोपदेश र पः सत्यदेव स्नातक पः आसाराम प्रेमी स्थ मवीर रायव प० बेश्रवास द्याय, प० चुन्नीसास जी द्यार्थ की अजन महलियों के गीती व अजनों का क्षीमा ग्राजा में विकेष धारुवंग रहा।

१७ १८ १६ मई को धार्यसमाज बीस संकटर नीएडा म प्रचार वार्य की धूम रही। जिनम स्वामी स्वरूप नन्द सर-स्वती वे प्रचार प्रविष् ाना प्रचार बाहन द्वारा उपस्थित होते रहे। साथ मे प० गुलावर्सिष्ठ राधव प० ग्राशाराम प्रेमी इयामधीर राघव के मनो र भजन होते रहे। प॰ शिवकुमार शास्त्री का वेग प्रव-चन एवं शावार्य यशापाल सुधायु जी के द्वारा यक्ष का भागोजन किया गया। विसमे हजारों की सरुवा में माता वहिनी भाइयो ने सत्सग से धर्म लाग उठाया।

इसके मतिश्वित प्रचार बाहन द्वारा दोपहर को १ बजे से ४ बजे तरु बोट. क्सव, रेस भवन, प्राई०टी० ग्री० ग्रार०

के० पुरम इत्यादि स्वानी पर प्रवार कार्य होता र ता है। यह समस्त कार्यक्रव स्वामी न्वहपानन्द सरस्वती वेद प्रचार सभिष्ठाता की देखनेल में सुचार कप है चन रहे हैं।

सनित्र श्री कृष्णा देक्ट का विमोचन

नई दिल्ली २७ मई (मोमवार) श्री कृष्ण महानू योगी, विद्वान तथा ईश्वर के परम मक्त थे। इक्मणी उनकी एकमान वर्मपत्नी वी प्रीर राष/ या १६००० र नियो स इनका कोई सम्बन्ध न था। यह उदगार शास्त्रार्थ महारथी व धाय सन्यासः महात्मा धमर स्व मी जी महा-राज ने भायसमाज मन्दिर माग, भनार वलीम लोकनयकश्रीकृष्ण पुस्तिका का विमोधन करते हुए कहे।

ने द्रीय प्राय युवक परिषद दिल्ली प्रदेश व लाला रामचाद धर्माय टस्ट नया बाजार न युवा पीढी के चरित्र-निर्माण के लिए महा रूपो की सचित्र जीवनिया प्रकाशित करने की बोजना बनाई है।

चन्द्रमोहम सार्थ समिव केन्द्रीय द्वार्य युवक परिषद्

समाचार-सन्देश

नवीन श्रार्थसमाज की स्था रना

विशेष संवादबाता

हिरनकी धान दिल्ली ११००३६ में
र जून २६ को स्वाधी र सक्यानस्व वेद
क्यान परिष्ठाता, एक पावाराम प्रेमा,
स्वासवीर राज्य हिएनकी धान रक्या निर्मा के सभी नद नारी भागी सक्या में उपस्थित रहे भीर को सन्तीपेदीय रक्षा गया। धाम के सभी नद नारी भागी सक्या में उपस्थित रहे भीर को की राजि के १ वर्ज वक् भ्रमार कार्य वनता रहा। प्रात काल एक विशेष धाम का कार्यक्रम रक्षा गया। जिससे स्वीयती राक्षेण रंगी घर को वन्स्या हा साठ अपयान प्राय महामधी दिल्लीय प्रक सभा गया प्राय महामधी दिल्लीय प्रव ती हाग काय महामधी हिल्ली गहा स

ग्रावश्यक सूचना श्रार्थममा जों के श्रिभिकारियों से नग्र निवेदन

दिस्ती पारं प्रतिनिधि सभा नी बोर से धारंममाओं के लाजाहिक तस्वन, क्याची ना कोस्वर्धों में प्रचारामं उपनेशक प्रवानोद्धानों की व्यवस्था के जाती है। खता से याने वाले बैठनिक उपनेशकों बेठन तथा यानेक्क्य सादि सभा बहुत करती है। बात साप उनकों को भी बन में, चाहे बहु किसी मह का हो उबकी समा को रमीद न में। सापकी साम हारा सो जाने वाली रातं का बेद मचार सवा कम गाने में सही प्रयान हो सके।

सभा के उपवेषको नया अजनीपवे-सको सादि से भी हमारा ? अप निवेदन हैं कि सार किसी भी प्रकार का धन वह इजिस मद का हो, याहे वशास, वद-प्रवार तथा मार्ग व्यय सम्बन्धी हो, पूर्ण विवरण सहित सभा की रसीद कार्टे। इसकी प्रवहेलना दिग्कुल नहीं होनी याहिए। कृप्या सभी उपवेसक महानुभाव सपने पास प्रकार करने और सभा के नियमों का पालन करें।

हा॰ वर्मपाल वार्य इत्जी दिल्मी वार्य प्रतिनिधि सभा त्र्यार्थसमाज नयाबांस में विशेष ज्याख्यानमाला

२३ जुन से ३० जुन तक सार्यतमाज मन्दिर नयाबाह, दिल्ली म प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासुके विशेष व्यारयान होंगे। समय राजि ८-४५ बजे से ६-४५ सजे तक समी समेद्रेमी बजुद्यों ने प्रार्थना है हम स्वस्तर पर प्लार कर समेलाम उठावे। संभी

शिषकुमार

घरों से घी व निष्टान्न लक्कर श्रद्धा के साथ देव पूजन किय । बाद में प॰ क्य मंबीर र। घर व भाशाराम प्रेमी द्वारा वज्ञ प्राचना गायन व ईश्वर अवित के अबुर अखन हुए। श्रीमती राकेश रानी, डा॰ वर्मपास म र्य जी ने प्राचेसवाज की गतिविधियों पर प्रकाश हाला । स्वामी स्वस्पानम्ब जी वे बार्वसमाज के १० नियम व बार्वसमाज के स्थापक ऋषि दवासन्य के विवय में जानकारी कराई। सोश्यु व्यव पहराया गया भीर भागसमाज के पदाधिकारी व सद यो का चुन।व कराया गया। यहाँ के सभी महानुम वो ने श्रद्धा सद्भित स्वावत सत्कार किया और उत्साह के साथ प्रमाद वितर्गा कराया । शान्तिपाठ के बाद कायत्रम समाप्त हुमा।

ऋत्यावश्यक नम्र निवेदन

जैसा कि साप को विदिल ही है कि दिल्ली प्राय प्रतिनिधि सभा के घन्तर्गत दिल्ली प्रदेश में सार्वदेशिक सभा के सर-क्षच में झायबीर दल जोर शोरी से कार्य **कर रहा है । धार्यवीर दल के सगठन को** सुद्द करने बुवकों के चरित्र विशास तथा र ब्ट्रीय चेतना जाग्रत करने के सिए भारत की राजवानी दिल्ली ने बायाबी जम एव जीनाई मास में इञ्चनवर, तिमारपुर तथा महास होटन के समीप तया रचुमल आयं कन्या पाठकाला मे एक एक सप्ताह के बार्यवीर दल मिविर जगते का निरुपय किया गया है। इसके पूर्व परिपन्न दिनांक १-५-८५ में आप से निवेदन किया गया वा कि सार सपनी बावंसमाज सस्या की स्रोर से कम से से कम ॥ धार्यवीर इन शिविरों में भाग सेने के लिए संबद्ध जिल्लामें।

दिल्ली आर्थ अधिनिष्य समा समस्य आर्थसमात्री से यह अपुरोप करती है कि आय सारमी आर्थसमात्र के निर्वाचन के समस्य अधिकारियों के लियांचन कार्य ले, बाँद आप की समात्र का निर्वाचन कार्य सप्तन्त हो जुका हो तो आप अपनी समात्र की सम्प्रत्य समा की नैठक हमाकर हर कार्य को अधिकान करां लें। कृपया जुने कार्य को अधिकान करां लें। कृपया जुने कार्य को निर्वाच के पते तथा दूरवाच नम्बर सार्य पूरे निर्वाच से सार्थ कुरू की को स्वाच श्रीम निज्ञान से सार्थ कुरू की को स्वाच श्रीम निज्ञान से सार्थ कुरू की

> सूर्यदेव संज्ञा प्रचान

श्रद्धेय लाला रामगोपाल शालवाले के सम्मान राशि में श्री लाला इन्द्रनागयण जी ने ११ इजार रुपये का दान दिया

विस्ती पार्व जनता को यह जानकर हवें होगा कि अद्धेव जाता रावगोगक सालवाजे के प्रतिजनदन समरोह के धव-सर वर प्रेट की बाते वाली अस्थान राशि में प्रवथ सहयोग ११ हजार रुपये के साल्विक दान रूप में प्रतिजन्मन समिति के कोवाध्यक भी जाता इश्र्यारायण जी से प्राण्ड हुया है।

माननीय लाला इन्द्रनार यहा जी ने लाला बी के शताबु होने की कायता करते हुए सार्य जनता से पुन सपील की है कि सम्मान राशि के ११ लाला स्पर्थ के लक्ष्य को पूरा करने के लिए उत्साह पूर्वक बन सग्रह करके सार्वदेशिक सभा विल्ली को केबाँ।

ज्ञातस्य है कि सार्थ प्रतिनिधि सका उत्तर प्रवेश की सन्तरम समाने नेरठ वे १६ मई को सम्यन्त बैठक में यह निराय किया है कि उत्तर प्रवेश की और से स्म से कम एक लाख रुपये की राजि समृही क

> डा॰ धानन्दप्रकाश सयोजक धर्मिनन्दन समिति

प्रतिक्रिया

द्वार्थ सम्बेश नियमित थिन रहा है। इसकी जानवर्धक एव रोचक सामग्री व विश्वसे वो निवेशाङ्क हुए सन्य समाम्यो के मुलावतों के निशिष्ट बना बेरे हैं। बैरे दिस्सी सभा के रोतों पत्न मुक्ते पत्तन्द हैं। कुल्लेक विवार। गुक्ताव प्रस्तृत्व हैं—

१ पुष्ठ २ पर सस्सन बाटिका ने स्वामी वेदानन्व (तीच) सरस्वती का व्याच्यान उत्तम है। इसे बारी रखें, इस बहाने जनकी 'वेदोच्येश' पाठको के स्वामने बारावाहिक कप के प्रस्तुत करें ती बहा सामकारी होता।

२ इती प्रकार इस सवास्थी के पूर्वाई के कुछ नतीरियों के विवारोत्तेषक सौर विकारा प्रकार करें नह से सारा राज्य कर के नह से का स्वार कर के नह से की को उनसे परिवल्त करवाना नरक्त का कर कर के नह से की को उनसे परिवल्त करवाना नरक्त का कर कर कर के नह से की को उनसे परिवल्त करवाना नरक्त का उपाध्यास, त्यांसी वर्षनानन्त, वर्णनान्त, वर्णनान्त,

ठीक हैं पर जायणी के केवल (वयन्तियों पर वर्तमान नेताओं के विस्तृत जावण) जायणित कर्मा हो होगा पर्याप्त होगा। ही मुक्ते विवस्ताव है कि हर महरू पूर्ण कवन्ती पर विवेचा है कि हर महरू पूर्ण कवन्ती पर विवेचा हूं निकानने वा धार्तिरक्त क्याय गठक बहुन करेंगे। यदि यह जुरेक सर्वय के निवर निर्माप्तित किया बाता है तो हुन हर परिका का हुतुना पथ्या भी तहर्ष दिंग।

३ नेरा अभिप्राय है कि 'आई इन्देश' ताहित्यक पत्रिका मने न बने पर हमारे नहापुब्सो और वितहास को पुन प्रकाशित अनस्य करें। इसी से वसका नाम सार्थक होना।

४ कुछ पर्व वा ववन्तिया जब पास पास पक्ष्ते हो तो सबुक्त विशेषाको और सप्ताहों को भगाने की पण्म्यरा डाकनी वाहिए। सार्व० सभा को सुकाया जावे।

 इस पत्र में शिक्का का प्रचार क्रमियान और शुद्धि क्रमियान को स्थान दिया जावे।

> नवप्रसाद शर्मी ११०, घांची कालोनी, पास रोड, ओक्यूरे

'धानेयानेया' का तथा कर रह देख कर मेरा मन गद्वब हो जाता है। धापने तो धार्ववन्येय को इतना धान्यकं वा घटनीय बना दिका है कि वह इतका धनसा धन देखने वा पढ़ने की लक्षण बाना धन्या है। हसे खर्मीयोच पणिका बनाने का बेय निरस्य हो भाषको दिया जानेना । देख पर, रखन पर करिहास पर, बुक्को-प्रवादी, बालोपयोगि, नारी वसन् वस् अकार के स्त्राम्ब आप दे रहे हैं।

किन सम्बंधि ने बचाई वूँ ने आयं स्वाब ने पन लेकाराय के सह से रख स्वाब लेका लावेख जुला दिया। हमारा प्रेय तिकारास हो नया। इसी कारण समाव ने बढ़ता सी धा नई। धार स्वय नम्बीर स्वाध्यास करें। धार की सेवानी ने बाल है। प्रस्तुवीर पन लेकाराय के पन के पक्तिक समस्य सार्व जाति ने बीचन का सञ्चार कीविए।

प० जामूपति, प० गमाप्रसाय ज्या-भ्याय का समाज नवे नवे पत्रकारों को जन्म देता रहेगा। ऐसी बाधा धव वच गई है धपने जैंने यह शेख बौर उदीवमान बिद्यान्तिन्द्य धोनस्वी धार्वेचीरों को कुश्वस पत्रकार बना दे। इसके दिना हम बी नहीं सकते।

धार्यक्रनेस वेसकर जनता है जिंदू हम एक जीतित तमाज के प्रम है। धार्य-समाज के मेल को धीर सुद्ध दनाने कें धाप समय भाव के तो रहें। स्व-क्षीरजन्द की विद्यार्थी के समान आर्क-समाज में पत्रकारिता के लिए जीवन कुटा वें।

सायका अपना राजेन्द्र जिल्लास

श्रार्यसमाज तिमारपुर का वार्षिक चुनाव संपन्न

दांतों की हर बीसारी का घरेलू इलाज

र्गेगि यक्त

23 जड़ी बरियों से निर्मित

आयुर्वेदिक औषधि

दातां का डाक्टर

MARKET STATE

देत मांज

महाशियां वी हट्टी (प्रा॰) लि॰

9/44 इंग्डॉक्ट्यल एरिया कीर्ति नगर नई विल्ली 15 फोक्ट 539609 53 987 53

अब नदे वैक्ट

में उपलब्ध

स्रावंतमाज तिमारपुर विस्ती-७ के ११ वर्ष ८६ को हुए वार्षिक चुनाव में निम्मासितित पदाविकारी सर्वेसम्मति से निर्मासित हए —

सबी—थी कृष्य वेष उप नत्री—थी विमन कान्त प्रार्ग —थी क्यर्वीयह कोषाध्यक्ष—थी वेष व्यप्ति पुस्तकाञ्यक्ष—थी वय नारायक वीसित

हवान चो० बीमॉबह इप प्रधान—श्री जनदोशसाम दुल्यस —श्री ताराक्क धार्य

(विमन कान्त सर्गा) उपमत्री



सात वर (पुष्ठ२ का शेष)

भीभी बात मन ने यह बताई नई कि है विडाना बहुम्लोक की बादित के पहुंचे पूर्ण में की बादित के पहुंचे पूर्ण में दिन के दान के बादित के रामन जुटायों प्रस्था मुन्द में है हुम्लोक की बादित ने होगी। सब स बबा वह नहीं है जो दूवरों की मान्य दिलाना चाहता है। प्रश्च सह है जो दूवरों की मान्य दिलाना चाहता है। प्रश्च स्वाध कर कहानीकम् । मेरा मांग प्रस्त है। अप सह स्वाध कर बहुम्लीकम् । मेरा मांग प्रस्त है।

कहते हैं कि स्वामी बयानन्द को विसी ने कहा का कि व्यवं वेद प्रचार के पचड में पडे हो, योग करो सौर मोल हो बायनी। स्वामी दयानम्द ने उत्तर दिया कि अस ससार प्रविचा की दासता मे पड़ा सड रहा है तो मुक्ते मोक्ष कैस फिल सकता है। महात्मा बाधी के लिये यह कटिन न या कि वे सदेशी शासन की दासता से स्वय मुक्त हो जाते। इस्लैण्ड का नाग-रिक बन जाने से यह ब्येय पूरा हो सकता वा । परन्तु इससे भारतीय सोमो क दासत्व का सत तो व हो सकता था। सत यहात्मा गांधी ने समभा कि जब तक देशवासी गुलाम है मरी स्वतन्त्रता का कोई सर्व नहीं । जनता पुकार कर कहती हैं कि मेरा ऋण पुकाकर ही तुम प्रद्वा लोक को बासकते हो सन्यया नहीं। जिसने रेल का भाडा नहीं चुकाया वह तो रेल से उतर वर घर नहीं का सकता। धाप के सात वरों में एक यह भी है कि जनताद्वारा इन सात वरो की प्राप्ति क जो साधन द्याप चुटा सकते हैं। उनम द्याप कभी न करें। कर भला, र्वदेश तेशा भलाकरेगा।

श्री हरबंस सिंह सेर ५धान, श्री रामसरण दास चार्च महामंत्री सर्वसम्मति से निर्वाचित

दिलग दिल्ली वेद प्रचार महल का वार्षिक चुनाव २६-४ = ५ को आयसमाज मानवीय नगर में हुआ। जिसमें निम्न-लिखित प्रधिकारी चुन गए।

प्रसात श्री हरवस सिंह बेर श्री हरवस लाल कोहली चपप्र बान भी कृष्ण लाल स्री श्रीमती सरवा पाव महामन्त्री{ _- -श्री र ससरण दास पार्थ मत्री श्री ग्रीम प्रकाश भावस मश्री 🗓 धी चन्द्र प्रकाश कोषाध्यक्ष श्री शालिग राम बौतम लेखा निरीक्षक किंदेसराज जुनेका रामसरखदास भार्य

महामत्री



ा सर्वा पार्स

सत्संग वाटिका

धवं-(मवा) मेरे द्वारा (वरवा) बरों को देने वाशी (बेद माता) बेब-माता (स्तुता) स्तुति की गई । खर्कात् मैंने वेव क्पी माता की नोद में बैठ कर ज्ञाम के रस का पान कर विवाहै। (दिवामा) विद्वान् बाह्यको द्वारा गाई हुई (पावनानी) पावसानी नाम की ऋचाएँ जीवन को विक करने वासी (प्रचोदवन्तां) हुन क्य सुम कभी के निए प्रेरित हुआ करें। हे विद्वानी (महा) मुक्त की (बरवा) इनसात वरों को देकर (ब्रह्म सीक) मीका की (त्रजत) प्राप्त की जिये। वह जात वर यह हैं। (ब्रायू) पूर्ण जीवन, (प्रारा) चीवन शक्ति (प्रजा) सन्ताम (पशु) नाव बैस, घोडा ग्रावि वसु (कीर्ति) बना, (प्रविष्) वन बाग्य (बह्यवर्षसम्)

बाध्यात्मिक तकः।

क्यास्था—इस वेद **बन्छ** मे चार बालों का बर्जन है ---(१) वेद वाला 🖁 बाता निर्माता भवति ।' बाता पुत्र 🕏 सारीरिक मानसिक तथा सामाजिक बीवन का निर्माण करती है। इसी प्रकार नेच निचा द्वारा ही नावन समाज का निर्वाण हुया है। मनुष्य ने जूनव्यन पर जिलमा सास्कृतिक विकास किया है वह सब मूज मे बेद विद्या के द्वारा ही धारम्म श्रुपाचा । नेत ने बङ्गान्य को शोधना विकाया । समस्त वानव-वावाची का निकास बैदिक भाषा से है। बापा विज्ञान विशारदो ने सभी भाषाओं के पारस्परिक सारहय की कोज की है। संस्कृत का "विकु पारसी का पिदर लैटिन का ''पेन्र पूर्वनाली भाषा का 'पादरी श्रमेत्री का अपदर यह निवते-जुनत शब्द हैं। संकृत का आतम 'बा'बाव्य ; दिनिणी भाराभी का बाद्या, या बद्या उर्दुकाका भव्या, भरवीका भव्या 'ग्राब्रुयह भी मिलते जुलत हैं। परन्तु सरकृत सब से पुरानी मावा है। भीर संस्कृत मे ध्व यात्मक सादश्य के साथ साथ धात्वर्य भी मिस जाते हैं। जैस 'पित शब्द पे पा रक्षागी चातुका सथ विद्यमान है। प्रयोजी के पार या पारसी के पिदर नाग्रर्थं उत्भाषाओं के बातुओं से जान नहीं पनत । इससे पता चलता है कि एवं सम्कृत कहा दो न प्रपन ब्रादि मूल देश को छाड भीर विकृत होकर दूसर भाषाची कल्प मे नितीन हो गये सीयहश् द ग्रपन व्वनिको तो साव के गये पर तुघात्वर्थों का पीछ छोड गये। संस्कृत मे घन्त्र का मिल अपना धौर दूसरी भ पाराम न मिला सकता इस बान का प्रमाण है कि वंदों की शापा से ही दूसरी नापायें निकली हैं। यदि शप को दो देो मे दो पूल की मुन्दर मालायेँ मिलें ५र-तूएक दश म पूली के साथ उनके बुक्षों का मूक्ष नो मिल जाये और दूसरे में क्वल फूल हो धौर मूल न मिले

साल -दर

लेखक-प० गंगाप्रसाद उपाध्याय

स्तुता सथा वरदा वेदमातीः प्रचोदयन्ता पावमानी द्विजानाम् । स्रायु प्राएग प्रजा पत्तु कीर्ति द्वविए वद्वावर्षेतस् । मह्य दस्वा द्वजत ब्रह्मालोकस् । (वयर्षे वेद काष्ट्र १० । सूक्त ७१ । सन्त्र १)

*

तो अन्या प्रदेश कि द्वा कुर्ती-का अन्य-क्षेत्र वही था बहामूल भी मिलता है। सस्कृत का 'कमें' और पासी का 'कम्म' दोनो मिसते जुलते हैं इनमे व्यनि-सादश्य है। प्रश्न बहु है कि 'कम्म पहले था या 'करने करने का धपभ्रश करन है या कम्म का सपभ्रश कम्में कपर की कसीटी सवाहये। इन दोनो का माय क्' (करता) बातु से निकला है। वरन्तु कर्म में कू' श्रविक विद्यमान है। 'कम्म' मे 'हु' का ऋकार वा रकार सर्ववा लुख हो नया है । बारवर्ष का पता नहीं सबदा। बहुबात प्रकट करती है कि आहुसे 'कर्बी' का किर क्ली का विकृत कर 'कम्म है। इसी प्रकार वर्ग और वस्म ने व्यवसारपंक शास्त्र होते हुए भी वर्ग मे वृ (वारण करने) का माथ विश्वमान है। 'थम्म' ने वसका कीप हो बया। ऊपर का क्रिसका वेव है। मीतर की विरी कुप्ता हो याहै। इसलिए बड हम कहते हैं कि देद माला ने मानव जाति को बोलना विकास, तो इन ने नोई प्रत्युक्ति नही है। इसी प्रकार विचारों की बात है। भूमण्डल के समस्त वर्गी, सम्प्रदायी भीर सस्कृतियो मे जो धच्छी ग्रम्की वार्ते पाई वन्ती हैं, वे सब उन सरक्रतियों के बन्न से सहस्रों वर्षे पूर्वे केरों में उपस्थित भी । काशी के यगात्रल भीर गगोत्तरी के गयाजस में बहुत कुछ सादश्य है। परन्तु कोई यह नहीं कह सकता कि गमोल री का गगाजल काशी स वया है। क्योंकि काशी पीछे का बीज है और बनोत्तरी पहले थी। इसलाम के जल्म महजारी वर्ष पूर्व बेदी में एक ईश्वरवाद था । ईसाई बाइबिस से हतारी वर्षपूर्ववद संईव्वर के निए पिता शब्द था चुका था। श्रव वेदमाता नाषा भी सिखाने वाकी है और धावार भी सिलाने वासी बद ने भोग भीर प्रपदमं दोनो की शिक्षा दी है।

(२) दूसरी बात यह है कि विद्वान के झुणों दे रा की गई पावमानी स्तुतिया अनुव्यमान नो धर्म पर चनन की प्रपाद कर ६७ वें सूचत की ७ ऋषाएँ (मत्र २१२७) पावमानी ऋषाएँ कहीं वाती है — बद्दात्त युच बुरुके मय बिन्दित नामिह। प्रवानविक्रकाई।।

(ऋग्वेद ६ ६७ २१)

कुमान् मां केवलमाः पुनान् नतावी विकास विकारिकाः पुनीतः मा वासकेव पुनीहिताः। (१६० १ ६०-२७)

देववल मुक्ते पवित्र करें। बहुबन-दुक्ति झारा बुक्ते पवित्र वरें। सब देव मुक्ते पवित्र करें। झासस्यक्प ईस्वर मुक्ते पवित्र

इन खनाधों नो खियाँ ने साह-बानी खनाएँ नहा है। भों तो समस्य वेस ही 'पाननान' धर्मात मनुष्क के जीवन को पित्र करने वाला है। परन्तु इन साह पाननानी खनाधों ने पाठ वस दक्षा विचार के मनुष्क को शामिक जीवदान किंद्र साहते हैं अस्तार सिकारी के

करने में प्रेरणा मिलती है। (३) वीचरी बात है सात बरो की । बाबु, प्राच प्रजा, पशु कीति, द्रविक और बहावर्षस । मीतिक या सनीसिक वितनी बीको की मनुष्य इच्छा कर सबसा है कम कब का दन खातों में समावेश औ बाता है। वह सात ६र इतने स्वष्ट हैं कि इनकी विस्तृत व्यास्था की सावस्थ-कता नहीं। त्रत्येक प्राणी का वह सम्पन् है। धीर क्यों-ज्यो मनुष्य उत्पति के क्षोपाम पर चढता बाता है, उसे इस वर्षों ्रेकी उत्तरोत्तर महत्ता की अनुपूषि होती वाती है। रीर्वजीवी होना पहुंचा वर है।कोई नरबा नहीं चाहता। परम्यू बीवन प्रात्त क्षील हो ती दुखनावी है। क्वको बनुप्राणित करने के जिए क्वस भाषार्वे होनी चार्निएँ। निराधान्य जीवन के हुआ होकर ही सीम प्रात्मवात करते है। बस बीवन से बाने बबुकर प्रास्तु का मुल्य है। इन वो बरो केंब्रीनक्षते वर खबा की इच्छा प्रथम होती है। 'एकोऽह बहु-स्वाम्"। मैं भकेला हू बहुत हो जाव्ह। पुत्र, पीत्र हों। इसके परवात् इत तीक की कमी को पूरा करने के निये पश्च वाहियें। पोवा नाय, कुता प्रावि बावकी जीवन के पूरक हैं। वर्तमान वैज्ञानिक यून का सब मे व्हा दोव है दक्षकों की सबहेलना। यत्रो के श्राध्यय ने पश्ची के लिए कोर्ड स्थान नहीं खोदा। वैविक बुहरूब में पशु एक विशेय-बय समग्रे । शांते वे। 🖈 इन बार चें जो के होते 🧗 भी कीर्ति (यश) न ही नी कीशन विश्व काथ का। कीर्ति स्माहै ? ध प के ग्रुम कमीं के विवय में समाज का प्रमाम वन (सार्टी-फिकेट) । जब हम समाज रोबा करते हैं तो हर मनुष्य के हृदय से भाषाज उठती है कि यह ननुष्य हमारा हितेया है। जिस विन बहात्या गाथी की हत्या हुई, ए इ सर्व काल डकाएक दुकन पर खडाकहरहा था, 'महात्मा जी हमार थे। सब हमार्थ सुध कीन लगा ? ' 'इविक्' मे सभी सासा रिक इच्छाक्षो का समावेश है। द्रवि वर्षाय है अभ्युत्य का (द्रविशा=Pro: perity or Prosperous Life 'बन्युदय' क्सि। एक कामना की पूर्ति । नाम नहीं है। यह एक व्यापक शाद है पूर्लाणीवन ही द्रशि" है। इनके व नम्बर है बहायचस् का । यह प्रकृ

(शेष पुष्ठ ११ पर)

(अयु) को (कांका) कार्केंग में (कांका हुरके) और को दूर (गव) जब (दह) इस सवार में (गा) मुक्त को (शिवाति) प्राप्त होने। वसे (है पवनामा) पतिम करने वाले स्थार (यह नहि) यहे दूर कर धीनिय।

पवनान सो अस नः पवित्रेल विश्ववेत्तिः । य योता त पुनातु न ॥

(मानेव १-६-२२) (व विचर्नेकि प्रस्तान) सह सर्व-द्राव्या पनित्र नति नाता ईरवर (पनि-नेक) पान-बंधीक्क रेव वे (ब्रव न) पान इन को पनित्र करे। (व नोता स पुताबु न) ईरवर इन वन का (पोता) वंतोचक है। यह इन को पनित्र करे। पन्ते पनित्रमध्येनको कैरतातमस्वरा। ब्रह्म तेव प्रमेक्षित ।

(ब्बन्दे) हे बॉल्स (है बॉब्ब्सि) हैरे वरायेय के वास्त्यों में (वर पवित्र) हैरे वरायेय के वास्त्यों में (वर पवित्र) वर्ष पुढ़ कर्षों वासी शोमता (बल्ता वित-त्र) भीतर विद्यान है (तेल) उद्ध वास्त्यं डाप (न क्य़) हमारे बाध्या-रियक तेव को (पुनीष्टि) जीवन कौस्त्रिक्षे । वर्षे पवित्रमांववस्त्रों तेन पुनीष्टित्र । इस्त्राचे पुनीष्टित्त ।

(नः १-६७-११) (नर्वन्यव् कन्दे) हैं प्रकास स्वरूप प्रांतन (यसे पवित्र तेन) को तेरा व्यंतिक प्रांतन (यस्य है उस से (क पुनीहि) इस को पव्यंत्र कोतिके। (वहा-सर्वे) साध्यारिकक स्तुतियों द्वारा हम को पवित्र कीसिये।

उनास्था वेब समित पवित्रे स सबेन थ। मा पुनीहि विदयत ॥

(ऋ० १-६७-२१) हे त्रिया वा प्रेरू ईस्कर प्रिक धीर सब दोगों से धर्मात् मल-कट करने वाली किमाभी तथा आस्थात्मिक तेत्र चारण कराने वालो प्रवृत्तियो द्वारा हमको प्रिकृत के जिये।

त्रिशिष्टव देव सरितवंदिष्ठं सोम वामि । सन्ते दुसै पुनीहि न ॥

(ऋ० १-६७-२६) हे समिता देव सोम, (त्व) तृ (निधिः) तोन (वर्षिष्ट) नृद्धतम (दर्श) योग्य (बामित्र) भामो द्वारा हम को पवित्र कीविये।



अलौकिक प्रतिभा के धनी गुरु विरजानन्द दण्डी

स्याग के उच्च बादर्श महानयोगी प्रज्ञाचक्ष गुरुवर्य स्वामी विरंजानन्द की शिक्षा का ही चमत्कार या कि सूगपुरुष महर्षि दयानन्द भारत को मिल पाया । स्वामी विरजानन्द का जन्म १७७६ ईम्बी मे पजाब करतार पुर उपनगर के समीप गमापुर ग्राम म इसा था। वेचक रोग के कारएा पाच वस से भो धल्प धाय मे वे नेत्रविद्वीन हो गए। वे सारद्वाज शारदशासी, सारस्वत बाह्यए। थे। मत बाल्यकाल मे ही बज्ञोपचीत बाद सस्कार के साथ बेदाध्ययन के लिए व्याकरण प्रादि की उनको शिक्षा दोक्षा प्रारम्भ कर दी गई थी। नेत्रों को वारीर का दूसरा प्राण कहा जाता है उनके नेत्र चले गये यह दुलंकम नहीं था कि स्नेह के साग्रर माता पिता भी बच **≱रन** मे ही ग्रसार ससार से उठ गये। इसर वह भाई भाभी ने विरजानन्द को लाड प्यार न देकर सताना दुत्का-रनाशरू कर दिया। इस प्रकार की दु सद स्थिति मे भन्ध बालपन को लेकर वे केवल १२ वष की आयु मे घर से निकल पड़। तीन वर्ष तक भटकते हुए ऋषोकेश पहुचे। यहाँ पर उन्होंने जगल में गगा के तीर पर एक कूटिया बना ली। गायत्री उपा-सना मे रत रहते हुए कण्ड तक गगा के जल में खंड होकर साधना करते रहे। उनकी स्मरण शक्ति धनितीव हो गई। १८ वर्ष की आयु में इन्होने कनसल हरिद्वार मे दण्डी स्वामी पूर्णानन्द से (जिनसे स्वामी वयानन्द ने जी सन्वास लिया वा। तन्यास प्रष्ठता किया । इनसे ही शिक्षा व्याक-

ज्ञान के प्रकार सूर्य परम तपस्थी,

ग के उच्च धादर्श महानयोगी स्थले परवान वे काशो पहुंचे काशो
बज्जु गुरुवर्थ स्वामी विरजान वे काशो पर्वाच मी।
बज्जु गुरुवर्थ स्वामी विरजान वे काशो से पर्वाच मी।
बज्जु महर्षि दयानच भारत को हर प्रकार पुन लेटिकर एन जिला
प्राथा। स्वाभी विरजानन्द का वे गगातीर स्थित सोगे नगर आ

१ १७५६ ईम्बो मे प्रजाब करतार
उपनगर के सभीय गर्नापुर साम
स्वाभी करते हुन के स्वाम स्वाभी विर्णानन्द का से स्वाभी स्वाभ

एक दिन जब वे गगा में खड मत्र पाठ कर रहे थे। मलवर नरेश महा राज विनयसिंह ने इस प्रज्ञाचक्ष विद्वान को शुद्ध मधुर शैली मे पाठ करते देला वे मुख्य हुए विनान रह सके । उनका योग साधना भीर त्याग से वे ऐसे प्रभावित हुए कि उनकी कूटिया में पहुच कर उनसे अपने राज्य अलवर चलने की प्रार्थना करने लगे। स्वामी जो ने कहा हम वरागी तुम रागदव की दूनिया के अनमस्त रागी। हमारा तुम्हारा सग कैसे समव है ? राजा ने जब बहुत धनूनय विनय की तो वे एक बर्त पर साथ जाने के लिए तैयार हुए। यदि तुम प्रतिदिन हम से कुछ ही काल तक सही पढना स्वीकार कर लो तो हम धवश्य साथ चल सकरो । राजा ने उनकी शर्त स्वीकार कर ली लेकिन साथ ही उन्होंने यह भी कह दिया यदि एक दिन भी पढ़ने में व्यवधान हुआ तो हम बापस लीटकर था जावेंगे: ग्रलवर पहचकर उन्होंने राजा को पढाना शरू कर दिया। महाराज विनयसिंह के हृदय में दण्डी जी के लिए दिन-प्रतिदिन मक्तिमान बढता गया। किन्तुएक दिन राजा नाच-रग में व्यस्त हो नया और पढने नही वहुत्र प'या; राजा के प्रतिका गम

करने पर स्वाभी जी राजैनगरी का परित्याग कर चल पड़। कहा तो उस सभय के जानी ध्यानी सत जी मीक्षानन्द नी प्राप्ति से भी अधिक राजदरबार में प्रवेश के निए उत्सक रहते वे और कहाँ ये ने अधिकहोन साधु जो राजवश्य कर राजवुरू के सम्भानन

इसके परकात वे पून सोरो आये यहापर भरतपूर के राजा महाराज बनन्तसिह ने उन्हें भरतपूर पधारने को प्राथना की किन्तु उन्होंने जाने से साफ इन्कार कर दिया। वे मधुरा चले पये भीर यही पर उन्होने भारती पाठशाला प्रारम्भ कर दी। इसका व्यय भार झलंबर नरेश भरतपुर के महाराजा तथा जयपुर के ग्रन्थित वहन करते वे । स्वामी जी इन राजामों को तथा भाने छात्रों को उस समय देश को गुलामी को सहन न करने के निए तथा देशहित में तन मन धन अपराकरने की सदा प्ररणा देते रहे। १८६० मथुरा मे ही उन्हें स्वामी दयानम्द जैमा सुयोग्ब शिष्य मिला। शिष्य को पढाने मे उन्होंने चमरकार जैसा काय किया। स्वामी विरजानन्द पढाने में करोर थे। उन्होने दयानन्द को ग्रनार्षग्रन्थ त्याग करने का प्रचम भादेश दिया।

मह्मिक्कस ध-को को पहने की घट्टी थी। जिसके कारण स्तामी द्यान-द का जीवन ही बदल गया। बैसे तो स्वामी विरजान-द की पाठ स्नाला से हकारो विद्यार्थी जानार्जन कर निकले, किन्तु स्वामी दयान-द जैसा आदिलीय विष्य एकनात्र ही या। आदिलीय विषय एकनात्र ही समय के विरजानक्ष के सिक्य वीपाल

ब्रह्मचारी युगलिकशोर सोहनलाल, नन्दनजी चौबे पाण्डय श्यामलाल, गरुडध्वज दीनव षु वनमाली चौबे और उदयप्रकाश ग्रादि भी प्रसिद्ध रहे।

स्वामी विरजानाद ने उदभट विदानों से अने क शास्त्राथ किये। वे मावग्र यो का प्रतिपादन ग्रीर ग्रनार्थ-ग्रन्थों का रूण्डन बनी कटोरता से किया करते थे यही पारम्भरिक गरा स्वामी दयानन्द मे भी अवनरित हुमा । समावतन (विद्यासमाप्ति) के समय जब दयानन्द अपने गम से विदा लेने लगे एक थाली लीग भरकर सन्यासी शिष्य ने गुरु चरणी मे म्मिंग करनी चाही किन्तु विरुवा नन्द बोले - दयार न्द । हम मनवाही दक्षिणा चाहिए। इतिहास मे इसी प्रकार महर्षि वरतन्तुने अपने शिष्य कौत्स से चौदह करोड स्वरामुद्रा मागो थी । किन्तु दयानन्द ने इससे भी बढकर दक्षिए। अपना जीवन ही गुरु के चरगों में दक्षिशा स्वरूप धर्मित कर दिया । गुरु ने धादेश दिया जीवन भर ग्राचग्रन्थो का प्रचार ग्रीर ग्रनापग्रन्थों के तिमिर का खण्डन करो। जीवन भर दया-नन्द ने इस ग्रादेश का पालन किया. एक बार जब स्वामी दयानस्द मेरठ मे वे रूठ का सन्देश मिला— दया नन्द अभी तक तुम्हारी चवल कीर्नि हमारे कानो तक नही पहची । वे चाहते थे मेरे शियकी कीर्ति दिग दिगन्त में व्याप जाये। सोमवार १८६८ सितम्बर में इस महामनि का निधन हुआ। उनके मृत्यु समाचार को सुनकर स्वामी दयानन्द ने कहा था---

ग्राज्ञ व्याकरण का सूर्य घस्त हो गया। ' -- यशपाल सुवास

सत्मंग दाटिका

वाब्दा न-- (ह इन्द्र)पण्यासमन् श्रयका राजन् । (यम्) जिस मनुष्य की (प्रच-तम) महाज्ञानी (वरण) बरणीय (मित्र) सुहुद (ग्रयंमा) न्यायकारी (रक्षन्ति) रक्षा करते है। (म) वह (जन) मनुष्य (न कि.) नहीं (दम्यन) मारा जाता।

व्याख्या-इस मन्त्र मे एक व्यक्ति की मक्सता का रहस्य बताते हुए वहा है कि वह समुख्य जिसके वरुए। मित्र और ग्रयंगा रक्षक हैं, कभी मारा नहीं जा सकता बर्मात् भान्तरिक भीर बाह्य अनु उसे असफल नहीं कर सकते, दवा नहीं सकते। दूसरे शब्दों में भाव यह हुआ। कि मनुष्य को प्रयना ग्राचरण ऐसा बनाना चाहिए कि समार के बरणीय खेटठ पुरुष उसके उदात वरित्र से प्रभावित होकर उसकी रक्षाकरे । प्रेमी और भित्र भी सन्म गैमे चलने की प्रेरणा करके रक्षा ही करने वाले हो। न्यायप्रिय न्यायाचीय भी मर्यादा-पालन करने वाल ऐमे व्यक्ति के रक्षकवने।

श्रद एक एक बात पर बोडा विस्तार से विचार की जिये। ससार के श्रेष्ठ पुरुषो की यह स्वामाविक प्रवृत्ति होनी है कि बेश, भाई, बन्धु स दि की सामान्य सीमाओं को खोडकर श्रेट्ड व्यक्ति का हित साधते भौर सकर के समय उन्ही का सहयोग करते हैं। ग्रथमचित्रण करने बाले उनके निकट के सम्बन्धी ही क्यों न ह्रो उनका स व वे कदापि नहीं देते।

रामायसामे, रामग्रीर सुपीव राम तवाविभीवरा, महाभारत मे विदुर र्भ तम होण। वार्य सौर हपाचात्र सादि के चदाहरण विस्मयकारक तथा भद्भृत है। आदाये लोग सारीरिक इंटिंग दुर्योजन के पन मे ये वहाँ हृदय ने पाण्डत-पन की ही हित कामना करते थे।

सुग्रीव को दिये वजनानुसर अब राम ने बाण मरकर वाली की धायल कर दिया तो बाली ने रोप प्रकट करत हुए राम से कहा -

> इति मे बुद्धिस्त्यन्ना बसूत्रप्दशने तव। न त्वा विनिद्रतात्मान धर्मध्यजमधार्मिक्स ।। जाने पापसमाचार तुर्गीकूपमिवावृतमः। सता वेयघर पाप प्रच्छ नमिव पावकम्।।

है राम तुम मेरी इप्टिमे एक ब्रात्म-धातो और धर्म की कोरी डीग हाकन वाले पापाचारी भीर तिनको से ढके हुए कूत के समान लोक्त ने हो । सत्पुरुवों का वेष ग्रोडे पायळा डकी हुई शाम के समान पूर्वक अपने श्रविकार में करके कामातुर

जिसे बचावें वरुण, मित्र और अर्यमा उसे मारे कौन?

लेखक-प० शिवकुमार शास्त्रो

य रक्षन्ति प्रचेतसो वहराो मिवो धर्ममा । न कि स दम्यते जन ॥ साम० १८४

दाहक हो ।

हत्वा बासोन काकुत्स्व मामिहानपराधिनम् । कि बक्ष्यसि सत्ती मध्ये कर्न कृत्वा जुगुप्तितव् ॥ बा॰ रामा॰ ४ १७, २०, ३४

द्रे राम बिना धपराच के ही वास के

प्रहार से मुक्त मारने जैमे निन्दनीय कर्म को करके तुम सत्पुरुषों के बीव में क्या उत्तर दोगे ?

> सुप्रीबोऽपि क्षम कर्तु बत कार्यं तब राष्ट्र । किमह न समः करमाद-पराव विना हतः ॥

हे रावव ' तुम्हारी सहावता का बो काम सुन्नीय कर सकता है क्या वह मैं नहीं कर सकता था[?] फिर तुमने निष्का-रहामुके क्यो मारा ?

> राञ्चसञ्च दुरात्मान तव मार्गपहारिखन्। कच्छे बबच्चा प्रबद्धान्ते **ऽनिहत रावश रखे ॥४६॥**

तुम्हारी पत्नी का घपहरश करने वाले उस दुष्ट रावच को युद्ध मे न मार-कर भीर उसकी मुश्कें बाधकर तुम्हारे सामने उपस्थित न कर सका, इसका मुक्ते बढा सेद रहेगा।

वालीका यह कथन कितना मुक्ति युक्त और नीतिनैपुष्ययुक्त है। राम ने वाली के प्रक्ती का निम्न उत्तर दिया ---

> तरतत्कारसः पद्य बन्धस्य नयाहतः। भ्रातुवर्तसि मार्याया त्यक्त्वा घर्षं समाननम् ॥

— देखामैंने तुम्हेजिस कारण से माराहै वह यह है कि तुमने मर्यादा का उल्लंधन करके भ्रापने छोटे भाई की पन्नी को ग्रयन ग्रभिकार में किया हुया है।

> शस्य त्व भरमासम्ब सुप्रीवस्य महात्मन । रमाया वर्तसे कामात्-स्नुवायां पापकर्वकृत् ॥ ४।१८।१९ इस महात्मा सुग्रीव की पत्नी को बन

होकर नूदस प्रकार पापकर्म कर रहा है जो भपनी पुत्रवधू के साब दूराबारण के समाम है। इस उद्धरण से स्पष्ट है कि वाली के पथभ्रष्ट होने के कारण राम उसके बानुबने। सुदीय के ऊपर राम के चतिशय प्रेम का कारल सुन्नीय के लोचित पीडित होने के साथ-साथ उसकी सदा-शयता भी है। राम का सूबीब पर कितना धनरागया सके लिए लड्डा के युद्ध के समय का एक उदाहरण देखिये-

सेत् से वानर सेना के समुद्र पार उतरने पर सुद्रोव लगा को देखने की इच्छासे सुबेन पर्वत पर वड यदा। बहा युदेण केएक शिकार से अपका में चूनते हुए रावल को देखा। रावण को देखते हुए सुप्रीय प्रानवबूता हो गया धीर वयने भापको सभाव न सका। वह ख्वाव नवा कर रावण के पास पहुच बबा धीर उसके साथ कुछ देर तक युद्ध करके धौर धपनी बीरता की वक्त जमाकर वापस भा

. राम विन्तित होकर इस सारे कस्य को देखते रहे और सुपीय के वापख धाने पर शादावेश ने कहने लगे-

प्रसम्मन्त्र्य मवा सार्थ तक्व साहर्व कृतम्। एव साहसकर्मीख न कुर्वेन्ति अनेदवरा ॥ ६।४१।२ मेरे साथ विना परामर्श किए ही यह जो तुमने साहसिक कार्य किया, इस प्रकार का साहस राजा जोवों को नही

करना चाहिए। इवानीं मा क्रमा बीर एव विवमचिरित्तम् । त्ववि किञ्चित् समापन्ने कि कार्य सीतमा पन ॥४॥

हे बीर इस प्रकार विना विचार किए माने से बुसाइस मत करना। यदि तुम्हें कूछ हो जाता तो फिर बीता से मुक्ते क्या मतसब वा ।

वन्तेन महाबाही लक्ष्मलेन ववीवसा । शत्र प्रतेत च शत्र प्रत स्वसरीरेख वा पुनः ॥५॥

हे महाबाहु सुरीव ! फिर भरत से, फिर सहमता है भीर होटे बाई समुख्य है सीर प्रपने शरीर के भी क्या प्रयोजन रह

त्वयि चानागते पूर्वमिति मे निश्चिता मति-। जानतस्थापि ते बीवं महेनाबरुणोपमम् ॥६॥

मैंने यह निश्चय कर लिया वा कि तुम सकुषन वापस न या सके तो--यद्यपि महेन्द्र और वरुश के समान में तुम्हारे पराक्रम से परिचित हैं, फिर भी -

ROTE रावस बुद्धे सपुत्रवलवाहनम्। प्रतिविच्य च सञ्जामां विमीवसमापि च।। सरते राज्यसावेदस

त्यक्षे देह महाबल ॥ ७, ८ ॥ मैंने निम्चय कियावाकि मेना भीर पुत्रो सहित रावण को युद्ध में मारकर भौरलकामे विभीषण का राजतिसक करके तथा स्रयोध्या का राज्य सरत की देकर में भाने शरीर का परित्यात कर

ये राम के जबगार कितने स्नेत्र से सराबीर हैं। जिस व्यक्ति के बावरण से प्रमावित होकर जसे ऐसे सहबोनी मिक जावें वह दूसरों से मार कैते का सकता

राम विभीषण के शक्षकर भी उसके सारियक युच्ची के कार**स ही बने। रायम** ने बयमानित होकर जन विश्वीवता राव के दक्ष में राम से मिनने घाया हो राम को छोडकर शेष सब की सम्मति वह बी कि यह राजुका जाई है, अधिक सम्बा-वना वह है-कि वह हमारे खिद्र जानने बाया होता। फिल्हराम इन विवासे हे सहबत नहीं हैं। वह कहते हैं कि बिना मिले वह कैसे जाना का सकता है कि उसके मन में न्या बात है ? वब सावियों ने इस पर भी प्रश्न किया कि मिलकर भी जन के ग्रन्यर की बात कैने जानी जा सकती है उपर-अपर में विकरी क्यडी बातें करता रहेगा, और मन मे बालू बनाये रसेगा, बब राम ने जो उत्तर वि वह उन महापुरुष की वीखता को बताता है कि वे मन्त्य के कितने पारबी वे। राम

> धाकाररखाद्यमानोऽपि न शको विनिगृहितम् । बलाढि विवृशोत्येव माबग्तर्गत नृत्वाम् ॥

\$1801£8 मन्ष्य प्राने बाकार को खिपाने की कोशिश करने पर भी नहीं छिपा सकता क्योंकि अन्दर के विचार बलपूर्वक शाकर भाकृति पर प्रकट होते रहते हैं। यह मनोवैशानिक बात उर्दू के शायर विवर ने भी कही है ---

जिवर मैंने विवादा लाख व्यवना दवीं यम सेकिन । वयां करबी मेरी सुत ने सब कैंकियतें दिस की ।। (बेब पुष्ठ (१ पर)

★ वचन-सन्देश ★

सफलता का चमत्कार

गाजी मुस्तफा कमालपाशा जिस समय तुर्की से भागे थे उस समय केवल इक्कीस युवक उनके साथ थे। कोई माजो-सामान न था मौत का वारण्ट पीछे-पीछे, घूम रहा था। पर समय ने ऐमा पलटा खाया कि उसी कमाल ने प्रयो कमाल से ससार को माश्चर्यान्तित कर दिया। वही कातिल कमालपाशा टकों का भाग्य निर्माता बन गया। महामना लेनिन को एक दिन शराब के पीपो मे छिपकर भागना पढा था, नहीं तो मृत्यु मे कुछ देर न थी। वही महास्मा लेनिन रूके समय जियाता वने। श्री शिवाजो डाकू भौर लुटेर समये जाते थे, पर समय माया जब हिन्दू जाति ने उन्हें प्रयाना सिरमौर बनाया, गौ ब्राह्मस्त स्वच्यित विवाजी बना दिया। मारत सरकार को भी प्रयोन स्वार्ष के लिए खन्नपति के स्मारक निर्मास काने स्था

पड । क्लाइन एक उहण्ड निद्यार्थी था, जो अपने जीवन से निराश हो चुक्त था । समय के फेर ने उसी उहण्ड विद्यार्थी को अग्रज जाति का राज्य स्थापन कर्त्ता लाई क्लाण्ड बना दिया । श्रा मुनयान सेन चीन के अराजकवादी प्लायक (भागे हुए) थे । समय ने ही उसी प्लायक को चीनी प्रजातन्त्र का सभापति बना दिया । सफलता ही मनुष्य के भाग्य का निर्माण करती है। प्रसफल होने पर उसी को बबर, डाकू, अराजक राजद्रोही तथा हत्यारे के नामो से विश्वपित किया जाता है। मफलता उन्ही सब नामो को बदलकर दयालु प्रजापालक, न्यायकारी, प्रजानकद्वादी तथा महास्मा बना देती है।

─श्रमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल

सम्पादकीय

अकाल के पंजे में तड़फता इथोयोपिया

धाजका मानव विज्ञान भीर तकनीकि से चाद सितारो की क नाई तक पहुच चुका है। घरती का भार सागर की गहराई कची से कवो पवत की बोटा तक, हवा के वेग से लेकर सूरज के २ करोड गुने ताप तक को मनुष्य ने जान लिया है। समस्त विश्व को कुछ पलो मे समान्त कर सकन की सामग्री मनुष्य ने ईजाद कर ली है। लेकिन इसके साथ मनुष्य स लेकर सुद्रप्रााण्या तक के भयावह रोगो तक की विकित्साका भो प्रविष्कार निरन्तर चल रहा है। फसल वनफल की उपज का भारवयजनक वृद्धि कर सक्ते का ।वद्या मनुष्य जान चुका है। किन्तु झान विज्ञान के चरम को छने क बाद भी मनुष्य मे मानवता का हु। सहाता जा रहा है। मनुष्य में विज्ञान के साथ राक्षस प्रवृत्ति भी बढतो जा रहा हु। शांतभाज तथा उत्सव भाज मे लाखो मन भनाज तो अंच्यव्ट के रूप में कुछ में फका दया जाता है। दूसरी भीर इस समय मनुष्यता क नाम कलक बनकर मकाल करोडो मनुष्यो का ानगल रहा है। इवियापिया तथा २५ वकाका देश इस समय शकाल ग्रस्त हु। इाथवाविया का आबादा ४ करोड २० लाख के लगमग है। तान साल स यह दश मकाल के जबह में फसा है। मनुमान है तीस लास लाग भूख बोर बामा। यो सं मर चुके हैं। पूरे मफाका में सिफ १६ =४ म १ कराड ५० लाख लाग मरे है। साथ ही १५ करोड लोग प्रभावित हुए है। इस तरह के आकड़ों का कोई अन्त नहीं है।

वज्ञानक कहते हैं इसका कारण अधाष्ट्रभ जाली का काटा जाता, कई अगही पर १० व से वर्षों का न होना पानी का दुल्योंग नगरों का ावकास करते जाता, जैसी क्रिंग का तथेका प्रास्ति कारणों से सहारा क्रे रिगस्तान का फलान तंत्र हो गया है। इसो कारण १० लाल वन क्लिमोटर खता लायक जान सहारा से समा गयी और ज्यार तुरन्त करन नहीं उठाये गये तो सगते ५० वर्षों में बफाका का ४५ % हस्ता रिगस्तान में समा जाने का ज्ञातर है। पिछले २० वर्षों में पलुसा का चरागाह का तान जीवाई सहारा का हिस्सा वन गया।

स्रफ्तीका में जनसंख्या बृद्ध वर दुनिया में सबसे ज्यादा है। २० वर्ष पहले स्रफ्तीका स्थाता में स्नारम शिवार या और स्थाता उत्पादन की वर जनसंख्या बृद्धि की दर के बराबर थी। और अब वह २३ संबंधित १०३ प्रतिसत रह गई है। विदेशी मल्टी नेवलन भौर स्रफ्तांकी स्क्रम्यिकों में तो जगल काटने की होड सुरू कर की है। जिससे जलवायु में बहुत परिवनन हो गया है सहारा का फलाब तेज हो गया है। लेकिन सब से बडा काररण सामाजिक प्राधिक राजनतिक है। कहें देवों में विदेशों जुलामी से विरासत में मिला प्रीपनिवेशिक डावा प्रव भी वरकरार है। वह बाज भी एक वस्तु के उत्पादन पर प्राचारित हैं। वे कोको वाफी केले स्मादि बेचकर प्रताब खरीदते हैं। मल्डानेशानल सरवाओं ने बड पैमाने पर पूजी लगा रखी है। १४० ग्रास्व जालर का कर्ज ग्रव तक उन पर लद खुका है।

क्स दुमिसा का सबसे बड़ा शिकार इधियोपिया है। इस देश की तमयम ७० नाल जनता इनसे प्रभाविन है। पिछड़ायन भी यहा इतलाय है कि गावो से बगलो से मक्क तक पहुचने में दो या तोन दिन तक लाय जाते हैं। सम्दे देश में लगमना ५ हजार दुक हैं जो राहन कार्यों में जुटे हैं। इस समय पिछचमें देशों की जनना ने घार्षिक मदद देनी गुरू की है इसका अय बीध्बी०भी० को जाना है। क्योंकि इस प्रकाल पर उसते पपनी १० मिनट की एक फिल्म प्रसारित की धौर फाल के छाया जिंत से जब लोगों का घामना सामना कराया तो सबयुव लोगों की जांक लुल गयी। देखते ही देशने लालों पीण्ड जमा हो गए। फिल्म में दिलाया गया था। गुन वन्जों के दर मिल्यों मोर कोडो से भरे शब इन स्वयों ने लोगों के दिलों को दहना दिया।

मार्च में क्रफोका से वर्षा हुई थी जो बहुत थोडी था। लेकिन वह मो क्रिपिकाश मध्य दक्षिएरी प्रकोका से। जुलाई क्रमस्त वर्षा को कोई बाबा नहीं। क्रकान क्षत्रों के लोगी को नये क्षत्रों से बढाया जा रहा हैं। र लाल लोग क्षाये जा जुके हैं ५ लाल लोग क्षीर वसाये जायंगे। क्षत्री यो इवियोपिया से लालों रन प्रनाज बीर भोजन की बावस्य कता है। क्षसिरका के एक नेना रोनीहाल ने क्षकाल ग्रस्त क्षत्र से लौट कर कहा वा कि वड बन को बात है कि एक नरफ ब्रकाल और भूख से ही।

मन मनुष्यता के नाते प्रत्येक मनुष्यका क्तव्य है प्रत्येक देश मूलब्द वासी का फज है अकालपीडितो को सहायता के लिए तन मन बन, वस्त्र, धन्न, दवाई ग्राप्टि से महयोग कर।

—यशपाल सुर्वाञ्

सामित्रक प्रश्न

आरक्षण नीति पर पुनर्विचार जरूरी है

-प्रो० बलराज मध

गुजरत ग्रीर मध्यश्रदेश मे विधान सम चून वो के समय ग्राप्काण की परिवम ग्रनुपुचित जानियो ग्रीर जन जानियो क सनिरिक्त दि हु समाज की धाय बहुत सी उरजातियों का लान का नीति क विरोप में तु हुआ। स नोजन गुजरान मे विकरान रूप चारण कर चुका है वहाइसे दिशक और साम्प्रदायिक रूप भी दे दिया ग्या है और उसके कारण सैकडो लोग हताहुत हुए है तथा कराडो का सम्पन्ति नार हो चुकी है पर इसक कारणास नेदेग का घ्यान इस समस्या का जोर विच गया है और बारश्रा नीति पर स त्रजनिक विश्वाद शुरू हा गया है भागारानीति परवर्ते ५ वर्षी कै धनुभव के भाष र पर पुनर्विकार की बावश्यक्तासब भीर महसूख का जाने

भारत के सविधान में हिंदू समाज के कुछ प्रति रिख" वग के लोगो के लिए जिहे गांधी जी ने हरिजन नाम दिया बा दस वय के लिए विधान सभाक्षी समद भीर नौकरी इत्यादि में भारक्षण की व्यवस्था की गई थी। इसका उद्देव इन वमों को बाबिक और सामाबिक १६ट से क्रपर उठाने के लिए विशय सुविधाए देना था। स्वतन्त्र मारत के पहले विश्वि मत्री भीर सविधान सनाकी प्रका(डापिन्ग) कमेटी के ब्रष्टपम के नाते डा० भीमराव भम्बेडकर का भी इस नीति के बनाने मे हाप था। डा० शम्बेडकर स्वयः हरिजन भीर भूक्त भोगी वे। उनके हृदय में हरि जनो के लिए विशेष तहप भीर सर्वेदना थी। वे प्राजीवन हरिजन बाबुधो के सामाजिक प्राधित बीर शैन जिक उत्वान मै बार्यर रहे। "सलिए इस सम्बाध मे च नका चिन्तन विशेष महत्त्व रखता है।

पुने डा॰ धन्येडकर को बहुन निकट के बाने का नीमाल्य मिला था। हमारी धापक ने काने कर कहा था कि उनके मत वेह हिन कर कहा था कि उनके मत के हिन के स्वत कर कर के स्वत कर कर के स्वत कर कर स्वत कर कर के स्वत कर कर से सिक्षी थी।

गत वर्षों क अनुभव ने डा॰ अस्बेड कर के मत को सत्य सिद्ध किया है। भार सास के दारण हरिजन वंग के नुख्य परि सारों को धनवस नाम हुआ है। वे आर्थिक बोर सालाजिक बीट्ट से ऊन उठ गए हैं पन शारुगण का नाम मुक्सत उन्हों की सनानों को मिल रहा है क्योंकि शिक्षा दीना के मामन में बाब हरिजनों के से बागे निकल चुने हैं। स्वामाजिक रूप मंडनका धारकाण नी त के बने रहने में निर्मित नवा उत्तम हो गया है।

कुछ राजनैतिक दलो विशेष रूप मे

सनार- कारोस न्य का भी भारत्यण नीति में निहिन स्वाथ पैदा हो चुका है। स्वकं नता भाग गए हैं कि बारनण के बस पर वे हरिजन मता कार्य में त्या होने व से प्रवास पुरितंत ने प्रवास पुरितंत ने प्रवास पुरितंत ने प्रवास के स्वास पए हैं भीर रखना उनके सना में बने रहने के लिए सावरण्य है। इस प्रकार हरिजनों कार्यमा निवास है। इस कार्या व ति स्वास निहित्त हवार्यों का में सहो गया है। इसके कारण मार्गनण की भवित १६६१ १६७१ और १६८१ वे दस दस वन के लिए वडाई वार्या ही?

मारक्षण नेति द्वास वोट बैक बनते के सनुभव से कुछ राजनैतिक नेताओं के मन में इस प्रकार के बोट बैंकों के बढ़ाने का विचार पैदा हुया। उन्होने हिन्दूसमाज की कुल भाग उपजातियों को भी पिछाड़े पन के नाम पर बारक्षण की परिवि मे काने की माग उठावी शुक्त की। ऐसी मागो को राजनीतिक समर्थन मिसने के कारए विभिन्न प्रदेशों से सनेक उपवा वियो को खिडी जातियाँ जोजित करके उनसे तिए घारत्मन की व्यवस्था नी बाने लगी। कई प्रदेशों में तो उनकी जनसच्या का श्रीब हाश भाग गिल्लडेयन के नाम "र भारक्षण की परिधि में भा गया है। फ्लस्क्स्प योग्यता के मात्रार पर नौकरी भीर शिल्क संस्थामों में प्रवेश के श्रवसर सगातार सीमित हो रहे हैं। इसके कारण तथा कथित उच्चवनों के लोग श्रपने श्रा को बिंबत भीर उपेलित महसूस करने लगे हैं।

धार : ज की परिवि के लगातार जिस्तार का सब स सबिक प्रवाद तथा करित कसी नातियों के मुक्को पर पढ रहा है। वे इसे पपने मेरियान सौर सपनी योगवात पर सामाज सामने को हैं। सम्मन्त इसीलिए गुजरात का वर्त मान प्रारक्षण निरोणी धामनोजन विका पियो सौर उनके सचित्रावकों ने सुरू

गुजरात के बाहुए भी इस धान्योजन

कीप्रनि नगी है। एक भारताव गेथी मोव हो चुका गठन इस विचार ॰ ण्क राष्ट्री सन का ग्रायाजन कर रहा है उच यामान यम्ब ध याचिक की है धार कोट क ठइस वि द्याने वि कर चुका

भारक्षण के दो मुख्य पहलू हैं। जहा तक हरिजनो सथवा प्रनृत्वित जातियो के लिए ग्रारक्षण का प्रश्न है उसके तुरस्त यमाप्त करने कं प्रत नहीं उठता। उस ıt 5 ८१ में उब धारक्षण की बतमान १० वर्**ों की धवधि** सम्राप्त दोसी छात्रेसा एक न यह साथ कि · बनो के लिए धारक्षण केवल नीक रियों के प्रवेश में हो और पदो नित के मामने ने केवल वरायका और योग्यता का ही व्यान रखा जाना वाहिए और 'रोस्टर प्रणाली खत्म होनी चाहिए दवायी नहीं जा सकती। इसका विद्योध करना भी कठिन है इस मान पर तुरस्त विवार होना चाहिए।

धनुमय से यह जी त्यच्ट हो चुका है कि हरिजनोर्ने भी बारशन का लॉन केवल कुछ उपजातियों भीर उनमे भी बुद्ध परिवारी को शिला है। अधिकाश नियंन भीर पिछ हिरियन बन्यु भी इसके लाम स विवत रहे हैं स्योकि इनका लाभ मुख्यत उन चुने हुए परिवारो की सतानों को ही मिल रहा है। इनलिए हरिजनों में भी बहुबन के हिन में हरियनों सबसी बारमण नीनियर पुरविवार करने की याबस्यकता महसूस हा ग्हा है। पिन्डे हरिजनो के हित में बारण्या क बस पर बागे बढ बुक परिवारी को इनकी परिचि से निकालने की कुछ यवस्था करनी होगी। जन्म के साथ बारससा के लिए द्याचिक प्राचार भी जोडना इसका एक उपाय है।

जहा तक हरियनों के प्रतिस्थित तवाकित प्रत्य सिख्यी वाधियों को प्रारक्षण की परिधि ने साने का जनन है जबके विषय ने प्रमी तक कोई साम सह मति नहीं है। जन्म के प्राचार पर किसी पूरी वालि या उपजाित को सिख्या प्रीचित करना न वर्ष सच्च है और न स्वैचानिक। इस मौन का साचार केवस बोट की राजनीति है। इसने समाब विष-दिव क्षेत्रा और सिख्येनन की कावस रखने में जिल्लि स्वार्ष की हात्स सिष्ट इस साचे में तुरुकु पुनविचार होना चाहिए। भारत सरकार ने भी यह स्वीकार किया है कि इस विषय पर सभी तक कोई साम बहमित नहा है भीर उसने प्रदेश सरकारों को सलाह भादी है कि वे माने विषय सिक्सी जानियों की परिधि की न अबारें।

भ्रारक्षस्य न ति एक ग्रामाशानीति है। सविभान ने इसे केवन दस वय क लित स्वीकार किया था ध्येलनातार भ्रामे बढाते जाने का को भ्रीचित्र नहीं

समय द्या नया है कि द्यारण सीति के सभा यहलुओं की व नृपरक समीला की जाय। समाज क पित्रड लोगों को उठने कादाबित्व समान का भी है भीर सरकार का भी। इस निशा में सोच समऋ कर यग उठावे जाने चाहिए। पर तुकोई पूरी जाति सारी की सारी विश्वबी नहीं मानी सकती। वास्तविकता तो यह है कि हर परिवार में भी कुछ बाई धाने वड जाते हैं और कुछ पिछड वाते हैं। जो किसी भी कारण से पिछड़ नए हो उन्हें उठाना क्षेत्र परिवार का नैतिक कर्तव्य माना नाता है। यही नात बाति वा उपवाति रूपी वहे परिवारी पर भी नागू होती है। उनमें को समृद्ध धीर बढें हुए हैं उन्हें किसी प्रकार के धारकान की वैद्याली का भावत्यकता नहीं। जो पिछाडे हुए हैं वे सवा के लिए पिछाडे न रहे इसका उराय करने की मावस्यकता है। यही कारण है कि वह विचार जोर पक्क रहा है कि यदि भाग्याण नीति कारी रचनी है तो उसका भाषार गरीबी भीर सार्थिक पिछड पन होना वाहिए केवन जन्म धीर बाति नही।

धार इस पान को टाना नहीं का सकता। बेहुतर तो यह होगा कि धाकार स्वय पहुल गर के तरह होगा कि धाकार तरह का एक उन्न गरी य धायोग यत रहीता वर्गों के धन्नम्ब क धाकार पर धारताला नीति के सभी पहलुगों पर किनार करने के लिए गठित कर प्रीर कमी गजी से धपील करें कि वे धपना— धपना पन न्स धायोग के सामने रखें और जनकी रण्ट धाने तक धपने धान्योलन बन्द कर दें। यह एक धानहारिक सुम्माव है। जिस पर उद्दे दिल से निचार होना चाहिए।

(लव सेवा)



अपनी स्वर्ग सदृश मातृभूमि के प्रति हमारा कर्त्तव्य

लेखक समन्त विद्यालकार

क्रमबेट १ १०११ समा १० १०१२ मे बाये दो मत्रो द्वारा हमे अपनी मातृभूमि के प्रति कतव्य का बोच कराया नया है। मत्र इस प्रकार हैं --

१ उदब्दयध्य समनस संसाय सम विनिम ६१ वहव सनीळा दिखकामध्नि मृथम च नेवीमि गवतोऽवसे निह्नये व ॥ 8 -60\$

२ सन्द्रा कुल्ड्य विव सातनुष्ट भावमरित्रपरणी कुलुब्बम्। इष्कुलुब्ब मायुषार इत्युष्ट प्राञ्च यज्ञ प्र स्थापता सकाय ।। १० १०१ २

१ भगवान् हुमे कहते हैं कि -(इन्द्रावत) एश्वय की कामना करने बाने बाप सोगो को (ब्रबसे) रक्षा के जिए मैं (निह्नये) उपदेश **क**रता हू कि हे (सनीडा) एक ही देश के निवासियो (बहुब सन्ताय समनस) बहुत बाबादी बाले समान विचार युक्त तथा परस्पर भित्रभाव बारस्य करते हुए । सब एक विचार से यूनत होकर परस्पर सहयोग स (उद ुध्यध्य) होश में बाब्रो = जागी। (श्रींन समिन्छ्य) सपने ससमी नता को प्रवीप्त करो । (दविकाम् प्रान्त) वारच सनित के साथ प्रवृति के करने वाले (तवस देवी न) और नौकसी की सूचक विश्य शक्ति को प्रवीप्त करो।

राठौर वार बमरसिंह बपनी तेज स्विता के लिए प्रसिद्ध हैं। वे साहबहा बादशाह के दरबार मे एक ऊर्व पद पर थे। एक दिन बादशाह के साले सनावत साने उनका प्रपमान कर दिया। नरे दरबार ने अमरसिंह ने समावत सा का सिर काट फका। किसी की हिम्मत नही हुई कि प्रमर्शित को रोके या उनसे कुछ कह सके। मुसलमान दरवारी जान लेकर इचर उत्तर मागन लगे। सनरसिंह अपने चर सीट प्राया।

भरे दरबार में इस तरह बादवाह के साले का सिर काट देना मुगस दरवार की भारी तौहीन थी। कुछ होकर वदका क्षेत्रे के लिए अमरसिंह के लोगा और भीच स्वभाव के सामे प्रजुन गोड को बाद शाहने सोम दिया समरसिंह का सिर काटने वे सिए ! उसने धमर्रीतह की समका बुकाकर मुगल दरबार में भाने को राजीकर लिया। जोसा देकर बाद द्याह के महल में ल नया। वहाँ जन समरसिंह पूर्व- छोटे दरक के में होकर भीतर का रहें के प्रजुन गीड ने पी के से बार किया सौर समरसिंह का सिंग काट दिया । बावसाह् साह्यहां इत समाचार

२ (मन्द्राकृत्युध्यः) हुष धीर सह प्रदर्शित करने वाले अवध मातरम् वयद्दि शादि नार ल्यायो। (चित्र बातनुष्य होश ज्ञान पुरुषाय साक्षरता प्रसार भादि का विस्तार करो। (नावम् धारव रखी कृशुध्व) रक्षा करने वाला नौकाशी क करो। (इवहागुध्व) श्रीवन र पा काक्रो (Grow more fcca) (ब यु भार कुलुष्य) शस्त्र भीर भस्त्रो का प्रचुर मात्रामं तिर्माण करो (सलाय) पर स्पर मित्र भाव को बारण करते हुए (ब्राञ्च यज्ञ प्र नवत) देश की प्रवृति कृत यज्ञ का सम्यादन करो।

इस प्रकार वेद में इन दो मत्रो द्वारा मात भूमि के निवासियो सनुवायियो तथा नेताधो के क्या कलव्य हैं इन्हें दही सुन्दरता से प्रतिपादित किया है।

देश की जनताका कर्तव्य

१ परस्पर मेद भाव भूलाकर एक साथ मिलकर कथे से कथा मिलाकर देश की दलदल में फसी हुई गाडी को निका सने का बरन करो। ग्रीर इसके सिवे धपने देख के नेताओं की बाजा का पानन कर उनकी शक्ति को बढ़ाओं उन्हें वह क्रोग प्रदान करो।

देश को सरकार का क्त॰।

१ जनताने उसाहधीर जोश की वक्तिकरे।

२ जनतामे विद्यावृद्धिका प्रसार एव जोक्त के साथ नोश भी कायम रह ऐसाप्रयत्न करे

३ जनतामे ज्ञानका विस्तार एव विज्ञान की उप्तति करे।

४ देश की रुमात जनसान बायू यान बादि का निर्माख करे।

५ प्रचुरमात्रा मंब-नका उत्पा दन करे।

६ शस्त्रास्त्र का प्रमुत मात्रा से निर्माण करे। इस प्रकार जनता को साथ लेकर देश राप्रगति रूप यज्ञका सम्या दन करे

उद बुध्यध्य समनसः सन्तामः । इस वेद मत्र का प्रतिना + ग्रनुवाद

उठो बधुवर निद्र त्यागो मात मूमिका च्यान करो। इसको उन्नत करने के हित

तुन मन घन बलिदान करो ॥ तुम सब मिलकर प्रव भाव से

एक साथ उद्योग करो। नौका के जो कल बार हैं

उन से तुम सहयोग करो।। मानु मूमि पर सकट बायें उन्हें बीझ तुन दूर करो।

पून इमे धनघाय युक्त कर वैभव से भरपुर करो।।

नव जी उन सचार करो तम फिर जनता में जोश भरो।

ऋति समर हो जय भारत की जग बर में ज्यायोध करों।। पाकर तुम से दिव्य प्रश्णा

जनता ने उत्पाह बढ़ें। बढ विज्ञान बढ

धनकाय वढ सम्मान वढ ॥ विघन भी बावामी के सब

हम समुद्र को पार करें। हम जल बल ग्रद्ध नम मे चलने वाल यानी का निर्माण करें।।

रिपृकादप दलन करने को **धस्त्र रास्त्र तय्यार करें।**

मित्रो उन्नति पद्य मे धाने बढने का **समार** करें।।

निश्वय मन में घरो सफलता चरण

हमारे चुमेशी। फिर भारत की सकिल विश्व मे निजय र्युती मुखेबी श

एव० ३११ यू राजेल्ल नसर

किशोरमञ्च-

वीर बालक रामसिंह

से बहुत प्रसन्त हुया। उसने ग्रमरसिंह् की शास को किले की बुज पर इसका दिया। एक विस्थात बीर की साझ इस प्रकार चील कौवे को साने के लिए डाल दिया नया। समरसिंह की रानी ने समावार सूना तो उसने धपने पति की लाख बगा उसका सन्तिम सस्कार कराने की बात ठानी पर लाश नाय कैसे ? महल मे जो बोड बहुत राजपूत सैनिक वे उनको उसने स्रपने पति की लास सने भेजा किन्तु बाद क्षाहकी सेनाके बागे वे वोड से बीर क्याकर सकते वे । रानीने बहुत से सर दारों ने प्राचना की परन्तु कोई भी बाद बाहसे शत्रुता सेने का साइस नही कर सकताया। भात में रानी ने तलवार मनाई और स्वय अपने पति का शव लाने को तैयार हो नयी।

इसी समय प्रमरसिंह का मतीना

रामसिंह नगी तलवार लिये वर्ने ग्राया। उसने कहा चाची तुम धमी रकी। मैं जाता हू या तो चाचा की साश ले झाऊवा या मेरी लाश भी वही गिरेगी

रामसिंह ग्रमरसिंह के व भार्ट जस बन्त सिंह का पुत्र था। वह सभी नवयुवक हीया। सती रानी ने उसे भाशीर्वाट विया। पन्न्हवत्र कावह राजपून वीर घोलपर सवार हुआ और घोडा दौडाता क्षीचे बादशाह के सहस्र मे पच ग्या। महल का फान्क जुलाया। द्वारपाल रामसिंह को पहचान भी नहीं पाये कि वह भीतर चन्नावया शक्तिन बुज के नोचे पहुचते पहुचते सैकडो मुसलमान सैनिको ने उसे बर खिया। रामसिंह को प्रपने मरने जीने की चिन्ता नहीं वी । उसन मुक्त में बोडकी लगाम पकड रक्का थी। दोनो हायो से तसकार जसा रहाया।

उसका पूरा शरीर रक्ता ने लखपण हो रहाया । सैकडो नहीं हजारो मुनलमान सैनिक थे। उनकी लागों गिरती थी और भौर उन न को पर से रामसिंह भागे बढताजारहाया वह मुद्दों को आहती पर होता बज पर चढ गया। भ्रमरसिंह की लाश उठाकर उसने क्ये पर रखा सीर एक हाथास तलकार चलाता न वे उतर द्याया। घोड पर लाश का रव्यकर बैठ गया। इत्र के नीचे मुगलो की सेना धाने स पहले रामिनह का घोडा किने के फाटक से बाहर पहुच चुका था।

रानी ग्रपने मतीजे का रास्ता देख रही थी। पति की लाश पानर उसका श्रतिम सस्कार कराया और स्वयं भी पति की लाश के साथ थिता पर बैठ गई। रामसिंह को ब्राझीर्वाद दिया—देश गी बाह्यण धम और स्त्री को रक्षा करना तेरा नाम ससार मे धमर रहेगा। ऐसे नर एव नारी श्रद्धों से हमे प्ररणा मिनती है। देख जाति धम के स्वाभिमान की रक्षा का तो हम भी ऐसे ही बनगे स्पोकि सात भी भावश्यकता हे बीर बटे भीर बेटियो की जिसे हम पूरी करने का सकल्प लगे।

प्रस्तोना--प० बलबीत शास्त्री

व्यामपीठ --

उपनिषत् कथा माला-६

गायत्री मन्त्र की महिमा

प्रवचनकर्ता-वीतराग स्वामी सर्वदानन्द महाराज

एक बार मैं नागपुर गया, उन समय सह्वादा तेर कहा प्राप्तन वा। गवन मेट प्राविमया को पकड़ -पकड़ कर लाना थी। बच्च करें में हो रहते ये कि उच्च र न बाधों। मेरे माय नव्यामिड सब-नीक नोया। हमें उच्चर कहा गये थे स्मावे कांद्र पन्नि हुए इन सायुयों ही ने ती ह्यारी जानि का बेदा गक कर रखा है।" धोर भी बहुन नुख कहाँ रहे। नव्यामिड ने बहुतेरा कहा कि "इन जी प्रात -अभण करके था रहे है।" परन्तु के कब मानते के। कुछ समक्रदे ही न ये।

मैं जड़ाभो जाता हु बार्यसमाज ही मे ठहरता है। परदेश में मेरा घर आयें-समात्र ही है। श्रद्ठाईम वर्ष पहले का वणन है, में एक नगर से यया। समाज में दो भ्रादमी बैठे हुवन कर रहे थे। मैं बाहर तल्य पर बैठ यया, कमण्डल और सोटी मेरे हाथ मे थी। मैंने पूछा, यह क्या हो रहा है ? एक यूवक ने कहा, "तू कुछ पढा हुवा मी है ? 'दूसरे ने कहा, "पढा हुआ होतातो पूत्रताही क्यों ? ऐसे ही साधुर्यों ने तो जाति का नाग कर दिया है। जा ! यहारोडी बोटी कुद्रनदी निनेगी।" कुछ देरपी छेए समापुरव झा नया। उसने कहा, 'महात्मा जी ! रोटी साम्रोगे ?" मैंने कहा, ''हां साऊना।'' वह रोटी ले भाया, दाल भी नाथ भी । मैं वही बैठकर साने लगा। फिर वे युवक बोने, "बस? द्मन तो प्रसन्त हो [?] तुम तो इसीलिए द्माये बे। पेट् हो । पेट्।" इसने ही में स्वामी दशनानन्द जी धा पट्टेंच । बरी प्रसन्नता से मिले। तब तो उनकी प्रांखे खुनी। कहने लगे "स्वामी जी । हम से बड़ी भूल हुई। कथा सुनाबी।" मैंने कहा, भाई तुम मे भीर कुछ नहीं होतातो भाने-जाने वान का बचन से धादर सत्कार कर लिया

> आसो [।] बैठो [|]पीयो पानी [|] तीनों बातें भोलन लानी ॥

वचन में सराबी सड़ी कर लेती यह बहुत बुरी बात है। यही दोष है जो हमारे तन्तुकों को दीसा कर रहा है, इसलिए मेरे भाई। जो बातें सराबी की हैं उन्हें स्रोड दो।

मनुष्य का धर्म है कि परमातमा के नाम का सिमरण करना रहे। यदि नहीं करता तो उस दिन का धपराभ उसके सिर बढ जाता है। यदि एक दिन रोटी न सामो तो दुवंसता मा जाती है। ऐसे ही प्रमुख का नाम न सेने से सनुष्य का भारितक सल शीए। पड बाता है। मारितक शक्ति सहस्य कर प्रकार के स्वादित हो बाती है। मारितक राजित दुवंस हो बाती है। मारितक प्रकार मार्क का सन है कि उपालना कर नी दी एक परम कलव्य कर सिया, नहीं की दो धपने सिर पाप कड़ा सिया।

बटाने में एक मुसलमान लडका था। वहुएफ० ए० का विद्यार्थी था। एक हीज मे नहारहा था। मैं भी वहापहुँच गबा। नहाकर उसने कपडे पहन लिये भीर फिर बैठकर पांव कोने लगा। मैं जान तो गया कियह पांव भो रहा है, नमात्र पढेगा। परन्तु मैंने पृक्षा, "मित्र। तुम नहा तो चुके हो, फिर झाम पांव क्यों बोते हो ?" उसने कहा, ''स्वामी साहव ! यह तो बज् है। नहानातो शरीर की सफाई के लिए है, भीर यह नमाज के लिए।" मैंने कहा, "अब तुम नमाज पढते हो, तो तुम्हारा मन तो इवर-उधर नहीं बाता?" उसने कहा "यह दिल बाने, मैं क्या करूं ? यदि हम तमात्र न पढ़े तो भाज के युनह्वार हो जायेंगे। सिर्फ इस मुनाह से नचने के लिए नमाज पढने हैं।" इसी प्रकार मेरे भाइयो [।] तुन्हः राजीफर्ज है कि ईश्वर का ब्यान करो। परन्तु तुम हो कि किसी प्रकार मानने में नहीं आ ते।

सृष्टि के साथि से लेकर साथ तक सायों 3, दर्शनों के जानने वाले को मों ने देदों के जानने वाले तानों ने, ईश्वर की उपामना किस कप में की रे मन्दिरों में नहीं विरुक्त इसी प्रकार सामश्री मन्त्र के उच्चारण से —

धोशम् भू, धोशम् भूव, धोशम् हव । धोँ तत् धाँवतुर्वेश्यम् भर्गो देवस्य धीस् । वियो यो न अवोदयात् ।। धोरम्। नाश्यी मन्त्र का सर्व मैं दिव हिंद कह् पुका हूँ। इसका भावार्य यह है हिंद वह परमेशवर तिसका निकानाव 'धोश्य' है, जो प्राणी का भी प्राण् है, यह वृद्ध स्वी से छुवाने वाला है, स्वत बुक्तस्वक पहाले के कारण अपने उपासकों को भी सब मुखीकी प्राणित करावा है, वस वब वयत् की उन्मात करने वाले तथा तुर्ध धादि प्रकासक पवार्थों के भी प्रकासक, सब प्रकास के ऐनवार्थ के बाता, चाहने थोला करने योग्य सब पुत्रों को दूर करने वाले,

परम पवित्र तेज स्वक्ष्य प्रमात्मा का ही हुग लोग धपने मन में घ्यान करें। वह परमात्मा हमारी बुढियों को उत्तम गुरा भौर स्वभाव की थोर प्रेरस्ता करे धीर हमें दूरे कामों से बचाए।

संस्कृत माया सीखने पर कोई घषिक रुपया लवें नहीं करना होता। यह सी बड़ी सरल तथा मधुर भाषा है। जो इस मन्त्र का प्रेम के साथ नावन करता है, यह गायत्री मन्त्र उसके धन्त करण की शुद्ध कर देता है भीर इस शक्ति के द्वारा यह भाव-सागर से पार हो जाता है। यह गायती सन्त्र तो इंडबर प्राप्ति के लिए एक तीर के समान है। इसका ग्रामव है कि मनुष्य समाज में एकता प्रकट हो । ईंग्वर के पूजन में कोई एक मन्त्र और कोई दूसरा मन्त्र न बतावे। हर एक इस गायजी नन्त्र से ही ईरवर का पुत्रन करे धौर सब में एकता बनी रहे । गावती सन को शानन्द के साथ उच्चारण करो। एक सीमन्त्र का जाप करने में क्यादा से ज्यादा २५ मिनट लग जाते हैं। न इसमें कुछ बनावट है न विसावट।

करण का जब विवास होता है। यह जरात के साथ दिया होती है। स्थानी गजन वाती हैं। यब के सज्य था जाते हैं। इसी स्थार रिकार के प्रेम में नाग हो बाधी। तथा पार्थना में यह शब्द को कि 'हुस तेरे विद्योग ने झी जनम-मस्सा के जनमा में यह हैं। इस्तिमा गुक्ते तेरा ही स्वरूप पाहते हैं। यह स्वयक्तर कि यह सामक भीर किसी काम के सिए सामकर नहीं खा परमात्मा है जसी औं पार्थना किया करें।

यह मन्त्र खोटा मा है, यह समस्कर इसे तुन्व म समकी। इसका महत्त्र नहुत्त बहा है। क्योंकि इसमें परमाश्या के पुत्र के बहुत की किया के महत्त्र नहुत्त की किया की हैं। ही रा कोटा खा ही होता है। परन्तु पुत्र में बहुत होता है। इससिए इस कोटे से मन्त्र का सी गर प्रतिदिन उच्चारण, करो। यह पुत्रहारे सीवन को पविचता सी बोर से वायेगा।

देखों "सोश्म्" खब्द तीन सकरों से निजकर बनता है। "स+उ+म् एक सकार, दूसरा जकार सोर तीकर नकार। सकार के विराट, सन्ति और निकद, पर-सारमा के तीन नाजों की बाराचना होती है। जिल्लों कब जद प्रवेश कर रहा है

स्रीर जो सन में प्रविष्ट हैं, उकार से हिरण्यगर्ग निसके गर्ग में प्रकाश करने नाले सूर्य माचि, सब लोक हैं। जो सूर्य स्वादि प्रकाश करने वाले सब लोकों का जनम्म करने नाला है। जो सनस्त बस नाला है सीर तस जगत का कर्ता है।

राम-कृष्ण चादि नाम परमात्मा के लिए कहीं भी वेदों में नही चाये। वेदों में हिरण्यगर्भ, ग्रन्ति ग्रादि सव गौणिक नाम बाये हैं। बादित्य नाम सूर्यका भी है। परमात्मा का नाम यह क्यो हुआ ? कारण, उसी से तो समस्त समार में प्रकाश फैलना है। इसीलिए परमात्मा का नाम मुर्वे भी है क्योंकि परमात्मा समग्र जगत् में उजालाफैनाताहै। इस प्रकार एक द्योश्म् नाम का उच्चारण करने मे पर-साल्या के १ नाम जसमें का जाते हैं। एक बार गायली का उच्चारण करने से उसमें थ्र बार धोष्ठम् भा जाता है, मानो ४३**,** बार परमात्मा का नाम विदागवा। बदि इस प्रकार ४५ मिनट तक वडे प्रेम मे बायत्री मन्त्र का जप करो, तो मी बार ब्रथवा इसमे ब्रविक बार इस मन्त्र का उच्चारण कर सकोगे । ४५ मिनट के झन-न्तर तुम संसार के भी र सब काम कर सकते हो।

केवल "झो३म्" "झो३म्" जपना भी है तो सच्छा परन्तु महात्मा लोबों का कवन है कि नायली के साथ ही 'बो३म्' का उच्चारण करना चात्रिए। यह सबसे बहत सच्छा है। "बोश्न् सू" कहते से इसके पर्य हो बाते हैं कि वह "सोक्स्" प्राणों का भी प्राण है। "ब्रोक्स् भूवः" के धर्व हैं कि वह "बो देन्" सब दुकों से खुड़ाने बाला है। "बोश्न स्व " के बर्व हैं कि वह 'सो३म्'' स्वय सुत्रत्यका है और सबको सूच की प्राप्ति कराने वाला है। "तत्" सर्वात् वड स्रो३म् 'सर्वितुर्" श्चर्यत् भव जगत् की उताति करने वाका बीर सुर्यादि प्रकाशकों का भी प्रकाशक है। वही सब का ऐःवर्धदाता है, वरेण्यम् श्चर्यम् वही सबसे बहिया तथा ध्वान करने योग्य है। 'मर्गो' वहीं सब दुसीं के दूर करने वाना समायर । पवित्र है। "देवस्य" वही कापना करने योग है। ''धोमहि' उसी परमत्मा का हम ब्यान करते हैं। "यो न " वही हमारो 'वियो' बुढियों को उसम मुख, कर्म तथा स्वभाव की सोर 'प्रचीदयात्" प्रेरला करे।

गायती मत की महिमा

मात्र द्वारा प्राथना करनी चाहिए

मयुक्तप्रात में एक लडका था।
उसका नाम या प्राप्तनाथ। वह वडा
पूर रचार क्यारन लडका था। प्राप्त
१६ वह या पूर-दाक्ता की ठेए जाव
उमे स्वानक ज्वर प्राने लगा। धीने चीरे
जबर पुराना यह बया। तीन चार बान में
बेह वह तह तह कही गया उसे हिमालय
यहत पर ले गये। मैं भी प्रमण्य करता
हुमा वहां जा ए.चा। वनने बडी स्वाहें
थी। सकाई तो हम इतनी रखत है परतु
जुदा सर्था हम दूबनो नाम नहीं।
चाहिए यह कि—

श्रध्यल खुराई दक्षए दोयम सफाई।

स्वयंत प्रयम दैयन पूत्रा का ध्यान स्वयंत प्रयम दैयन पूत्रा का। वस्त सुत्र हे पिर सफाई सुदर्श का। वस्त सुत्र हो सुत्र पुत्र हो प्रयम्भ स्वयं स्वयं स्वयं प्रयम्भ स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं प्रयम्भ स्वयं स्वयं

एक कारवी किय का कवन है कि
"मूर्व नर शिका बहुण करने नाली सीवों बीव और राजाधी महाराजाओं की बचा केवा हु तो किस गिनती में है। इव मुक्त बोवे आकार कर में कसकर कीन कराव नहीं हुआ ? कैवर (रोग के खजाट) के महुनों में तो मकबियों में बाले तान तान कर परबे बाल दिये हैं और ईरान के राजा ध्रकराशियां है ने गुन्वय पर उस्तू नक्कारे कक्का रहे हैं।

क्सी का समय सर्वेव एक सा नहीं स्थान। पिता समिनान करता है कि नेरा साधपुत्र ऐसा होगा। नह सह मही सानवा कि मैं परसारमा के होक बीर हठ कर रहा हूं। उसने बने नहीं की हठ तोड़ दी समिनान चूर-चूर कर स्था। कैसर रोग का एक नहुत का हमाट वा। सपने समय ने उसके महलो मैं वडी भूम साथ रहा करती वी किन्तु प्रव उस्कू को स रहे हैं। स्वत्य को पुरुष पृद्धमान् हैं व सिनमान से रहित होते हैं।

एक मौर फारसी कवि कहता है कि मुक्ते धपने सन् की मृत्यु से प्रसन्न होने का कोई कारण दिलाई नही देता क्योंकि नेरा अपना जीवन भी तो स्थायी नहीं।

सुनो 'वो बनी पुरुष ये। इनकी पर त्यर वडी सगती थी। सर्वेष जबते क्रगडते इन्हें थे। बाने ग्रीने वासे सार दीस्त चनके पास बाते । एक दूसरे की बडी निदाकरते। घनी लोगो के पीछे ऐसे लोग बहुत लग बाया करते हैं जो उन्ह सडा सडाकर ही अपना उल्लू सीवा करते हैं। एक दिन उनमे से एक चनी मर गया। यार शोग वर प्रसान हुए। खुश स्त्रप दूसरे के पास पण्चे धौर कहने समें कूछ खिलाइए। माज बढा मुदर समाचार सुनायमे। उसने कहा पहल सुम बात तो करो । फिर सा भी नेना। वे बोले बापका धमुक शत्रुमर गया है। वह धमी निराबुढ ही नहीं था। ससार वित को जानताया रुख्ड होकर कहने सवा भरे मूर्वी ! इसमे असनता की बात क्या है [?] मुभे कहते हो कि तुम्हारा सत्रु मर नया परन्तुत्म कभी नहीं मरोगे।

इसिल एहे भाइयो ¹ तुस यह मतुष्य श्रीवन पाकर कुछ बुध काम कर जासी। बक्त हे कुष्य कास प्रतृक्षी उपायना करना है। परमेण्डर मशक्तवक्षर ₱ बिसामे समयक का लेख भी नहीं। यसी का स्थान करों तुन्हें सब सुस्त प्राप्त हों जायेंथे।

एक वासाधु। उससे किसी ने पुछा महाराष[।] कुछ अप ने की इल्हा है उतने कहा सीर कार्येगे। वाली मे बीर मानई। वर्त्रसान होकर काने वने । भूकातो मिट नई परम्तुनीयत नही जरी। उसने पूछा और लोगे⁹ उत्तर विका ले साभी। इसरी कार तीसरी बार पूछा सब भी न नहीं की। फिर कहने लगा धव कुछ नमकीन ले साम्रो। नम कीन बाया वहुभी लुब आराया। फिर सवीच हो गया। हाय । हाय। करने नगा। यह भी कोई सानन्त है ? बच्टे सर खुश फिर धमगम । दुनिया के सब काय ऐसे ही समयक नूल हैं। मनक रूप तो परमात्मा ही है दुनिका के भगड़ी की मिटाबी परम त्मा ते एकता पैदा करो। जब एक ईन्बर को मानीसे ती बेडा पार ही जायेगा।

मन्दिरों में देखों। एक दूसरे से लोग कहते हैं मेरे सन्दिर का परमेश्वर अञ्चा है। बेरे मन्दिर का ईश्वर अन्छा नही। मूर्को । परमेक्बर तो एक है। वस तो एक है। याको से सब ही देखते हैं। सूंचने का काम सब ही नाक से नेते हो। साना मूस से साते हैं। इन सबका साधन तो एक है फिर **दम धन**ग **धनन नै**से [?] सब का चन भी एक ही है। जिसमें भेद भागया वही धपषम हो वया अम नही रहा। चौथे बमुनाकी कार्येंगे अमुनाकी की जय कहेंगे। 'भगजी जाए गगजी की जय कहेंने। कोई कहता है 'नमदा सञ्जी है कोई कहता है गोमती । बस खडाई ही सटाई है। कोई कहेवा सबस का व्रत क्रम्बाई कोई कहेबा, शुक्र का प्रत

श्रम्खाहै। कोई कहेगा सनिवार का दक्त श्रम्खाहै वा एकादशी श्रम्खी है।

कट की गवन देवी होती है। किसी ने कट से पूका भाईं। तन्हारी गरवन टढी क्य है? कट ने तकर रिया ने कीन सा पग मेरा सामा है? टागें सीभी हैं प्रकारी उसी कुछ तो देवा है। इसी प्रकार तुम्हारा भी सभी कुछ देना ही । इस गभी नेपन का उतार की। तुम तो मनुत्य हो कट तो नहीं हो।

केला ला। उसका छिसका उतार दी सन्दर से प्रदानिकल स्रायेगा पोस्त ली। उत्पर का छिलका उनार दो। पोस्त के बार्ने पिकल प्रायुने। परत्त प्रपात्र (गुत्र) मे से क्या निकलता है 'उसमे नो छिलके की छिसके हैं। तस धाने जेल्यल क् छिलके दूर कर ने धौर सनुष्य बन मध्ये।

वाक्टर घम्बदकर ने जो घल्ला के एक प्रसिद्ध नेता हैं विकासन से कहा जा महाराज बन्दान भी उस समय वही थे कि जब तक यह क्या ज्यावन्या नती हुई तब तक हम जपर नहीं उठ सकत। पर त में कहा ने बाल के लिए के

तुम लोगछत घछत का शोर मचा रहे हो । एक मुनलमान किसी गाव में चलाग्या। वहाएक घर मे ब्रह्मभोज चा मुसलगान से किसी भादमी ने कहा घर में चले बाध्ये बाद्यए। भोजन कर रहे हैं दो सडी के लिए बाह्यचवन जामो यदि कोई पूछ तो कह देना कि मैं निकट के ही बाम का बाह्यणा हू फिरमदि पूछें कि कौन बाह्यए। तो कह देना नीड । यह बाह्यासो मे जा बैठा। हाय युलाने के समय उससे पूछा वया तुम कीन हो ? उसने कहा में भूका बाह्य सहा हु। इस नांव में बायाचा। किसी ने कहा बाह्य एते का भोजन है यहाँ चला भाया। उमने पूछा की न बाह्य ए। हो [?] इसने बद व दिया गीड । उसने पूछा कीन गौड तो यह कहने लगा या खुदा गौडी मे भी ग्रौर[?]

यूरोप में ही बेल लो यदि किसी से कमी तुम पक्षों कि नुष कीन हो ? तो उत्तर मिलेगा सीवागर बलक या कोई धौर। परन्तु तुम्हागी यह गुरसला तो समाप्त हो नहीं होती। यह तो उसी दिन सत्य होंगी उस तुम्हारा सम्ब स्थानेशा। परन्तु परमात्मा पर विश्वास रह्यों तो एकता पैवा हो सायेशी।

धावकल के पढ लिखे कहते हैं कि 'यम को बीर ईरवर को छोड दो ।' मैंने कहा सा ध-आर छाड देते हैं प्रव कौन सामाग पकडें? क्याधम को छोड कर समर्थ का माग पकडें? ज्यने कहा मही। तो मने कहा थम को भी छोड रु प्रवस्कों भी छोड र तो क्याकर? मेरे आर्थ कोई खक्स की बास तो करो।

तत सविनुर जिस परमाशा का नुम स्मरण करते हो वह सारे ससार का उपादक है। यह बना हुआ ससार अपने बनाने वाने की तस्बीर ण्लाता है। एक उब कवि का कथन है—

चेहरए तस्त्रीर से शक्ले नुस्तविर देखना।

परमात्माने कैसा ससार बनाया? जगन का चित्र तो देखों कितना ग्रदयत है? ग्रतएवं ग्रन्थन ससार को बनाने वाला स्वामी भी ग्रदभूत टी है।

वरेण्यम परमात्मा का अपदेश है कि बन को बहुण करो पर तुउसको ग्रन्मा करने की बुद्धि होनी चहिए। बाहु बल से उसकी र-नाकरो पूभ काथ मे ज्से लगाने की बुद्धि हाना चाहिए मरत समय सब कुछ यही छोड जाना पडगा। सिकन्दर के पास भरते समय कितनी दौलत की यूरोप व ले यूनान को साना गुरु मानते हैं। उहीने उससे बहुत कुछ सीला। सिक नर जब मरने लगा तो उसने ग्रजाबी मेरे मरने के बाद एक काम करना। जितनी दौलत हाथी घोड इत्यादि हैं सब मेरी घरबी के साथ चलें। एक बार वन दौलत रह बौर दूसरी बोर हाबी घोट। मेरे साली हाय कफन से बाहर रह । उसका भाशय या कि सब यह शिक्षा प्रहुशाकर किसव कथ, यही रह जाता है मरते समय कछ भी साथ नहीं वाता

एक ज्दूकविने कहा है कि

वेरी का निलान कर माफिल। रक्त तसरकों कि बूचुक्ट्रणा। इतने मेंड्यन वहां में गुकरे करते गहलत किसी कने जगवा। के नया सरक कुछ व तिकस्पर हाज काली करन में बाहर था।

धवांत ह मूल ं ध ने नियन होने की लिक यत न कर यह सोच र साला कर में कि नेरे भारत यहां बचा था। बेल सतार म कितने चनपति हा चुके हैं। उनम से किती के पाल भी उनके धन्त समय कुछ चन सम्पत्ति देशी है। सिकदर जैसा म भाव गाली महाराजा भी मपने साथ कुछ नहीं से यसा जब वह मरा तो उनके हांग करन से बाहर निकने थे सौर साली थे।

सुदरमकान बनाझो घन सम्पत्ति जमाकरो किन्तुयदितुम उन्ह धपने साजनी ने जासो तो नहीं ने जासकते ।

(क्षेत्र पृष्ठ ६ पर)

मैं भ्रव किसी पुन्तक की समानीनना करने से सकीच धनुमव करता है। कई मिल सवा कवा सम्बाद करता है। कर मिल सवा कवा सम्बाद करता है। कर मिल स्वीत स्वाद करता है। प्राप्त कुछ ति प्राप्त है। प्राप्त कुछ ति स्वाद स्वाद की ने दार नरपकें जो निस्ता सार्थ समान का दितास का

प्रच उपयोगी है। स्थान स्थान पर बडी सूस्ववान् जानकारी दी भई है परन्तु हत अब के रचने के तिता शारी उपलब्ध प्रकाशित वा सम्मन्तिन तामयी का भी लेवक महानुनावों ने उपयोग प्रयोग नहीं किया। यह बढे बेट की बात है। कहीं कहीं तो बहुत प्रमुपी आनकारी दी गई है। हुक मूले प्रयक्त हैं में सक्सरती है। कुछ गक भूले हम यहां देते हैं

१ प्रहृति दयानन्द जी के विलदान के समय स्थापित धायसमाजी की जो सस्यादी गर्वहै। वह सप्रामाणिक है। निश्चय ही तब इससे स्थिक समाजे स्थापित हो चुकी थी।

२ बार्यसमाज के प्रचर का इति-हास लिखते हुए झायसमाज क भजनो-पदेशको की चर्चा नाममात्र की बाई है। कई भजनोपदेशको ने ऐतिहासिक महत्त्व का काय किया उनका नाम तक भी नही दिया । श्री महाजय लाभचन्द जी का नाम मैं उदाहरण के रूप मे देता हू। हरियासा, पजाब के कई बद्ध अजनीपवेशक जिन्हें मैं नेस्वय देखा--- उनका नःम न पाकर दुक्त होता है। भ्राय प्रादेशिक सभा पञाव वा प्राय प्रतिनिधि सभा पजाब के भज-नीपदेशको ये स्रतिरिक्त उत्तर प्रदेश मध्य प्रदेश वानिजाम राज्य न भी कई नामी मजनीपदेशक पैदा किय । स्वामी बेजडक जी, महाद्यसराजपाल, मदव मोहन श्री सन्तराम पुरी श्री इसराज (श्रभी भी बीवित हैं) श्री ज्ञानचन्द, प॰ मेहरचन्द, कर्मचन्द, प॰ धार्यभानु वी वारूर, श्री तेजभानु, श्री जसवन्तसिंह वर्मा भादि की चर्चा ही नहीं। कई अजनीपदेशक माज कीति के शिखर पर हैं परन्तु १६४७ **६**० से पूर्व ही कार्य क्षेत्र म थे, उनका नाम भाना चाहिए था। यथा प० म्रोम्प्रकाश वर्मा, प० वेगराज प० नरदेव जी स्नेही, प॰ प्रेमचन्द जी (निजाम राज्य) मपनी सेवाधी के कारण प्रख्यात हो चुके थे।

३ प्रखूत शब्द का प्रयोग न किया बाता तो ठीक था। दलित शब्द का ही हुम प्रायों को प्रयोग करना बचता है।

४ स्वामी स्वतन्त्रसानश्व जी सुह-स्थाय से पूर्वही झार्य विचारों के हो चुके ये। इस झाय में विकास या है कि प्रकम विदेश यात्रा से लौट कर झार्य विचार के बने, यह ठीक नहीं। स्वामी जी को समीक्षा

आर्यसमाज का इतिहास

(द्वितीय भाग)

लेकक — डाक्टर सत्यकेषु वी व उनके सहयोगी समीक्षक प्राप्यापक रावेग्द्र विकास् वेद सदन प्रयोहर

सायं बनाने वाले सहत्त विष्णुहास वो का नाम न देना भी भूत है। प० विष्णु टाम जी का न्यामी देशानर जी, सहाजय कृष्ण, प० चप्नुगति जी स्वारित हव सम्मान कृष्ण, वासमी सर्वेदानस्त्र जी भी उनसे वैषक पहते र ।

प्र शीवनी शताब्दी के ब्रारम्भिक वर्षों के प्रवाद के प्रवाद को ने बीर सोम-राज नास्टर बण्डीश राम, महाश्रव चिरञ्जी लाल जो जेम वा समृतस्य के एक जरमनाय जो के दोनो आहबो का नाम नहीं।

६ वीर तुमशीराम का विविदान १८०३ ई. मे नहीं हुआ। उन्होंने सन् १९०४ में बीर नित पाई।

७ प० रामशरणा जी जस्ता की कर्वा तो है। उन्होंने दलितो के लिए स्वियो के लिए जो प्रविस्तरणीय कार्य किया ग्रीर को यातनाए छही उनका दर्शन होना चाहिए था। बहुसन्यासी दन सये ये यह भी लिकना चाहिए था।

= पृ० १६३ पर प० रलाराज की की प्लेग में देवा का वर्णल हैं। वहा बिख ईवाई पादरी का वाच्य दिया हैं जह पादरी का नाम नहीं दिया और वास्थ मी ठीक नहीं दिया। वह देवाई पावरी वे स्टोस्स को स्वामी संस्थानन्द वन गये। प० रलाराम जी ने बेहली रावसपिण्डी सादि में भी ज्येन पीडिको की सेवा की वी। इसका वर्णन मुने इस प्रथ ने मिला नहीं।

१ पू० १३० पर श्री देवीदास की का नाम है। उनका पूरा परिचय नहीं कि वह कुशल लेखक विद्वान् थे।और उनके सार्व दीनानाथ बी भी बैसे ही सार्य मिशनरी के।

१० पृ० ७३२ पर समरीका आने वाले सार्थ वीर का नाम प्रमुख दिया है। उनका नाम वेंदाराम था। उन्हें फण्डाराम भी कहा साला था।

११.स्यालकोट की दलितोद्धार सेवाघो में बीर सामध्यः का नाम तक नहीं दिया। वहीं तो दलितोद्धार के प्रथम कर्मवार वे।

१२ पनान में वो दस मूलरास के मर्चेजी माम्या के धमने नई बने। नह्न उच्च इतिहासकारों को नोट्करना चाहिए। मूलरास उरकार को नोट्करना चाहिए। मिसने से वे इतिहास सेसक क्यों जन-श्रीत है, यह मेरी समक से बाहुर है।

प्रावेशिक सभा बनने पर भी प्रावेशिक समाय ले भी लोगो से मास मझाण खुडारे ये यह भी दसमें नहीं दिया। भ्राय सबट में मास के विरुद्ध चोरदार लिसा बाता था।

देव वित्रहात तो १६४७ तक का दिया है परन्तु विदेश प्रवार ने तन दूँव की वा धोमुक्ताय को स्थामों की मी वर्षा है। यदि ऐसा ही करना वा तो प्रि० राम-सहाय भी की भी चर्चा कर देते। वह जिवाद ने प्रवार करते हुए, वही चस करें।

१४ राजस्थान के प्रचारको की वार्षो भी भी कई महत्वपूर्ण नाम कुट है। या मास्टर हैनेन जी शाहुपुरा, हकीय सम्वराम की प० विष्णुपत जी, की बजीरजर की विद्यार्थों, महता जीतिन जी जैसे याज्यों आप हों हों है प्रचारकों में राजस्थान में केंद्र अचार के लिए समूल्य समय देकर की ति ताई।

१४ फी नेजपुर के झायें खनावालय का स्थापना वर्ष ठीक नहीं दिया। उसके सस्थापक मनुरादास जी का नाम ही नहीं दिया। ऋषि के झाशीबांद से उन्होंने यह यहान् कार्य हाथ में सिया।

११ पृष्ठ १३६ पर 'मालेमहे' ग्राम में ग्रुवि वा पित्रतीवार के सद्युष्ठ कार्यों की चर्चा है। इस ग्राम का नाम मालोमहे या। यह मालोमहेर भी कहनाता वा। इस ग्राम के बारे में शाचार्य कप्रपति जी ने मिला है कि प्रायं तमान की स्थापना के प्रायं तमान की स्थापना के प्रायं तमान की स्थापना के स्थापन के स्थाप

रैंक पृ० २३%, पर मुरादाबाव की वर्षी में भी पं० क्षेत्रकरख दाख जिनेदी का नाम न देना मूल है।

्द पृ॰ २८० पर जपाध्यान थी की एक पुस्तक का नाम नैविकस्पृति दिना है। नहुठीक न्यूरिं। पुस्तक का नाम बार्वस्पृति था।

वहीं पर जिला है कि धापने डी॰ ए॰ वी॰ क्यून की तीस वर्ष सेवा की । यह ठीक नहीं। उपाध्याय वी २६ जुलाई १८१८ ६० से लेकर ११ जुलाई १८३८ एक इस स्कूल की सेवा मे रहे। बीव मे एक वर्ष कोव्हापुर वी लगा बाए और हैरावाव सरवासह में भी समब विधा। इस प्रकार यह बीस वर्ष से भी बोडा समस्कार सह सुसे में रहे।

१६ कोल्हापुर के प्रसग में प० सहेन्द्र प्रसाप जी वाज्याच्याय जी कानास ही नहीं।

२० स्रोतापुर के उपदेशक विद्यालय का बर्सन कही नहीं मिला।

२१ प० भाग मुनि जी प्रावेशिक समाके साथ भी काम करते रहे। मह चर्चानही। वही प्रशास भाग प्रतिनिक्ति समाके प्रथम खपदेशक थे।

२२ मार्थसमात्र के दूसरे शहीब वीर विराज्यीकाल भी की वर्षा तक नहीं। वह व्यक्ति के विषयात्र के दश सक व्यक्ति हुए। पेटे द्वार्ण किला उनका बीवन विराज्य किला है। वहना था। यह व्यूपित की स्वामी अञ्चानक थी ने भा उन पर जो कुछ लिखा है वह निवता है।

२३ मोण्यह विद्रोह के समय दुखियों की देश के लिए महता अंतिनि भाग ये थे। उनका नाम नहीं दिया। महता अंतिनि सन्यादी बन गये। यह कही नहीं लिखा। यह प्रप्रेत्री मी जानत है, यह कई बार किसा है। इसकी धाव-दयकता ही न थी। यहाँ लिखना पर्याप्त था कि वह बी० ए० करके वसील बने। वर्षी वकानत करते रहे।

२४ केरल में वैदिक वर्ग प्रचार की चर्ची ही नहीं। सी विस्तनाथ स्वामी मुरासाबाद वीरवार काहनवन्द वर्गा, र नारासण्यक्त जो जैसे विदानों ने बहुर वर्णों कार्य किया। हमें प्राज ही सुवना सिती है कि २० नारासण दत्त वी सिद्धांत पूर्वा प्रवास करें हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द जी के वायरूप बत्या-ग्रह की चर्चा मुक्ते दिलाई नहीं दी। इसमे केरम के महान् नेता मन्नत पदा-्रन ने भी भाव सिया। स्वर्गीय मन्त्रम केरल के Uncrowned King काने काते वे । उन्होंने स्वय मुक्ते यह बताया था । सब स्वामीश्रद्धानन्द जीकी केरल के महान् सुभारक महात्मा नारायण स्वामी जी से भी मेंट हुई थी। यह नारायसा स्वामी श्री की सम्रजी की एक जीवनी से स्नाता है। नारायसः स्वामी जी महाराज बढानस्य जी से बड़े प्रमावित हुए। उपाध्याय सी, पं॰ मदनमोहन विद्यासागर, स्वामी स्वत-न्त्रतानन्य की महाराज (चार वार केरल बये) स्वामी घ्रावानन्द भी भी केरल मे प्रचारार्थं गये। कही चर्चा नहीं सिली।

२४ प॰ चमुपति वी की पुस्तक कानाम योगेश्वर इच्च था। पुरुकुक कांगडी से ही स्त्रमी थी और खेद है कि पुरुकुक के श्रिष्टासकारों ने ही ऐसी अनुक्री

(क्षेत्र पृष्ठ १ पर)

सिख श्रकालियों से सावधान रहें

मायम देश के २६ मई १६८% के ग्रक मे सरनार सत्येज्यालिनह द्वारा लिखित सिक्षो के ग्रपमान का कारए। धकाली जल लेख मे ० यक्त विचार तथ -पूरा एव महत्त्वपूरग है।

निइत्यही ग्रकाली तल ने ग्रपने ज म संपदाद में सदियों संचले आप रह प्रवाद निदुसिस सम्बाधों से दरार डाल दी है सन् १६४६ में किय्स मिनन के सामने पद्यक्त मिला राज्य की माग की फिरपञाबी सुब कानिर्माण कर पजाब को भीर छोटाकर निया १६०० से प्रवास के बल रही भातकवानी गतिविधियो का इयक्ट विरोधन कर उनका मुक समयन किया फिर ग्रान दपुर साहित प्रस्ताव पर जोर देकर पजात में नाति स्थापित होन की बागाची परपानी फेरदिया धीर श्वब राष्ट्र विशेषी वक्तव्य दे तथा श्रीमती शांधी के हत्यारों को सम्मानित कर भातकवात्यों को बढावा दे रहा है। स्पष्ट है कि उसकी नीति सिको तथा देश तोनों के निए हानिपद है यदि उनकी पृथकता बाटी नीति क कारण उत्पन्न गलतफहुमी के लिकार सिख युवको ने श्रीमती गाणी

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

की इत्यान की डोली तो निश्चय ही ही पत्राव क बाहर सम्पूग देश मे बसने वाले सिल्हों को न तो तबाही का सामना करना पडता भीर न भपमानित होना

दूस का विषय नो यह है कि उसका उपरोक्त गाय्ट विरोधी गतिविधिया निर तर बन्ती जारही हैं जिनकाहा परि साम है कि उत्तरी भारत के कई नगरों में धातकव दियो ने न सजिस्टर बमी को रखकर सैकडो लोगों को मौत व सह स टकेल दिया तथा पद्माव में धनेक लोगो की हत्याची का नया दौर प्रारम्भ हो चुका है। उनकी चपरोक्त कारगुजारिया बदि प्रक्रिय मे पून सिख की न पर मुसी बत लायें तो बादचय नही होग ।

द्मावन्यकत है कि देश के सिम इति हाम प्रसिर्महा जा रहाजीतसिह तथा महान् गहीन वर भगतसिंह की महान् परम्पर स्रोका सनुकरण करें तथ सका लियो स साव गान रह।

कुशलता के लिए सम्मानित किया गया

डा॰ साहिस के कर कमलो से पारितोधिक

लेखक शकुनचाद गुप्त विद्याबाचस्पति नानगत्र जि०-रायबरेलां

१८ मई साय ७ बजे घ यसमाज बाटे गये। डा॰ साहित न कहा कि शिक्षा हुइसन लाइन मे ग्राय कुमार सभा सस्यानो को शिक्षा के साथ शाय लघ किंग्जिने का वार्षिक उत्सव श्री सरवारी उद्योगों की शिला भी देनी चाहिए। इसमें काल वर्माभूतपूर प्रदान धाय प्रतिनिधि पूर्व २४ ग्रंपीन को सभाके स्थ पनादि स सभा की धव्यक्षता में मनाया क्या। धव्यक्ष पर सभा के प्रधान श्री परीश्वित सहगल शहोदय ने प्राय कुमार सभा के सगठन द्वारा व्यवारीहण किया गरा।इसके को भौर इड करने पर जोर दिया भौर प्रचात् व समाल संत्री धाय प्रति -सभाके सस्ते वैदिक साहित्य की प्रशासा निविसमाने 'मनुसव पर भाषण दिया

भीर कहा कि माय कुमार सभा का प्रका

गन विभाग पनि उत्तन है। २५ सप्रैल न

१७ मर्दतक २४ दिन भिन भिन स्थापो

पर नेद प्रचार होता रहा भीर प० सत्य

-परहो मानव की उनति निभर है पर अपने विचार प्रकट किए। की देवे इ गुप्ता (स्वागताध्यका) ने सभा की वार्षिक रिपोर पढी इसके पश्चात् u • सत सवन्द्र पशीजाको उन नी कय

की आ सरैतीलाल माटिया मत्री माय

समाज हनुमान् रोड ने भ्रात्मा के विकास

काम वेदालकार के प्रवचन होते रहे। उमेश कुबार बसारा (मन्त्री)

श्रार्यसमाज दीवान हाल शताब्दी

एक निवेदन

भाषको यह ज न कर हार्निक प्रसन्नता होवी कि भाय जगत का विख्यात सस्था बार्यसमाज दीवान हाल दिल्ली सन् १६६४- ५ मे अपनी शताब्दी कह समारोह पूर्वक मनाने का रही है। शताती के भवसर पर एक अश्युत्तम बृहत् समारिका के प्रकाशन का निश्चय किया गया है - जिसमे धायसमाज वीवान हाल के सी वर्षों का विस्तृत तिहास तथा वैदिक धम के सम्बाध में सप्रहृत्तीय सामग्री होगी । बाबी युवा पीढी के लिए प्रकाश स्तम्भ का काय कर सकती है।

द्मपने स्थापना काल से ही यह अनयसमाज जाय जनत् की मुख्य गतिवि वियो का प्रमुख के ररही है। तवाइस समाज में बाय जनत् क प्रविकांश मूधन्य समातियो विद्वानों नेताको तथा कायकर्ताको का धनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। बापका तवा बापके परिवार का इस नमाज से विशेष सम्बन्ध रहा है। बाबा है इस समाय की प्रनेकों ऐतिहासिक घटनाएँ जो स्मारिका क सिए खावस्यक हो सकती हैं मापके बनुमव मे आयी होती। यह बापस विनम्र प्रायना है कि धपने बहुमूल्य त्तरमाँ को मिनिवड कर त्रीझातिशीझ विजनाकर कृताथ कर।

मुखनगढ़ गुप्त मधी

गायती मत्र की महिमा (पुष्ठ ७ का शेष)

ण्नपति मृत्युकाल तक वन का त्याल जी रखना ने उपर मर रना ने इधर कह रहाहै कि मेरे धन क चित्रक स्थयन करना। घोम्ल त्तोमर रहा है ईष्ट्रकर के बरणों में ध्यान लगा। परन्तु क्या करे ? माथा शमता उपे नही छोडती।

बाइर मंद्रापका एक मित्र मिल यया वह एक दकान पर बैठा बा दूबान दार का भी मित्र था। धापने उसे भाने नाथ ले जाना चाहा। परन् दकानदार ने उसे रोकना वाहा। उसका एक हाथ भापन पकडा दूसरा हाथ दूकानदार ने। लेंचात ी स्नारम्भ हुई। जह कहता है भार्ड! मु-स नक्लीफ हाती है परस्त् आप में से कोई भी नहीं मानता यह म**ब** बेममभी की वत है।

यहातो राते धाये वे क्या आधीगे भी गोते ही। चाहिए तो यह बाकि रोते द्याये हो नसते हुए जाघी स्सलिय मेरे भा^{री} ससार के सब काम करत जामी परन् मश्न समय उनकी तरक ध्यान न रखो। समार मे जीव सर्दैव रहने के लिए नहीं बाते। महार को तो एक न एक दिन छोडनाही है प्रतएव परमात्मा को प्रहरा करो वही ग्रहल करने योग्य है। ग्राने विचारों को पवित्र बनामी। परमात्मा के निकट होते जागी। अत्र तक मन पवित्र महो होता तद तक उसकी प्राप्ति नही होगी। धन को दूबल बादमी नहीं सनाल सकता। मनुष्य का हृदय महादेव का मदिर है यही नता उसका मन्दिर तो सारा ससार है। सीध माग पर चले चलो उसकी उपासना करो बुद्धि को सुमान पर सगाओं बस इसी व तुम्हारा कल्याण होगा। यहा गायत्री मात्र का उपदेश है धौर वही उसकी महिमा है।

आर्यंसमाज का इतिहास

ŧ

(পুৰুত দ্ৰাহাৰ) पुस्तकका ने म अनुदृदिया है। रशीला रसूम की चर्चा Anglo American विचारधारा के इतिहास नेसक प्राय करते हैं इस वित्हाम में भाउसकी चर्ची है। लड है कि इसारे इन म य महानु भावों ने यह नहीं निलाकि रगेलारसुल क्यो चिचागया। न ही यह लिखा गया क्ति जब तक गांधी जी न रगीला रसूल पण्यापित नहीं की भी तद नक कहीं भी मूलमानों ने त्य पर ब्रापनि नहीं की थी। यत्र भी निम्ब देने तो इतिहास पुराहोता कि गाधी वावा ने उस्नीसवी मनी का महीव स्नादि सब्लील घटिया निराधार पुस्तक के विरोध में एक भी

२१ एक बान और लिखकर समाप्त करद कि गोशीनायन महासा सूपीरास वा वजीरचार जी पर स्रक्षियोग वल सा। न्सम् गोरानाय पि गया । इस स्रतियोग के समय धायसम न के नोनो प र डटकर मुीगम जी के पाछ थे। त्नी पक्षी के ग्राप्य वकीलाकामुशीराम जीकासम थन प्राप्त का नल बनी के उम सूग से भी सिद्धात वासग न पर चो लगते ही दल दो होते हुए भी श्रायों का दिल एक होता थ । इस मिमयोग का बलान कही मिलान्द्री।

न ही १८ ८ ईं० मेधम के लिए सद से पहल जेल यात्रा करने वाल स्नाय सुभारक विरञ्जीलाल जी के ग्रमियोग अस्त बगान है।

कोई भी लेखक धपनी पुस्तक से सब कुछ, तो देनही सकताफिर भी को भूलें बीबीर जो बहुत महत्वपूरा क्षिया पुस्तक मे रही मैंन वे सुभादी है।

आशाहै इतिहास प्रमी मरी इस समीक्षाका ब्यान मे रक्षा ।

प्रतिक्रिया

हर व्यक्ति के अपने तेवर हते हैं। धरनाचिन्तन ननन भीर उत्तरी पनि व्यक्ति हो **| है। शब्द** तो हम लोग शद को । मे ही लेते हैं पर उनका सयोजन हम श्रपने श्राने उन से करते है। यही शैली कहसाती है। बापक नब्द चन बौर उनका नयोजन पाना निराली व्यवस्था

शिचा सम्बन्धी यावश्यकता

श्री प्राय गुब्कुत तित्तीहरूढ की माद्यमिक कमाधी के लिए प्रस्थित प्राप्त व्याकरलाकाय (प्रातीन) तथा ग्रग्रजी गणित विनान भूगोम नस्कृत एव हिंदी के सिए प्रशिनित स्नातक स्नातकोत्तर ग्रध्यापको के ग्रावेदन पत्र उनकी योग्यता विवरण सहित ३० जून तक बामन्त्रित हैं। बायुसीमा २३ से २४ तक वेतन होकर योग्यतानुसार इच्छक मह नुमान बावेदन कर

मुस्याचिष्ठाता भी वार्व नुरुकुल चित्तीडगढ, राजस्थान ३१२००१

रलनाह। इनमे पोत्र भी है प्रसाद भी झौर न चुयु गुण भी। झनी झाप को इस पत्र को भीर आगे पृत्याना है साप से बहुत सी घपसाए जुड़ी हुई हैं। व्यय सीकर संघूल कृत हो असती है। बनें बालसी नो बहार सो जानी है।

> शुभाकाशी सारस्वत मोहन मनीवी

निर्वाचन

चयसमाज महरीलो का वार्षिक चुनाव १६८६ का सम्यान हुना जिसमे निम्नलि कित पटाधि गरी चुने गए —

प्रधान ---श्री बनवारीसान जी गुप्ता उपप्रश्नान ---श्री बार बार बाय

समाय जाकुमार सोहनलाल जी सबबास मन्त्री----श्री मदनसाल जी

श्री इन्द्रक्मार तनेजा उपम-त्री रमेशचल्य जी कोवाध्यम — श्री बीरेन्द्रकुमार श्राय

> मदनलाल म त्री

समाचार-सन्देश

स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वर्ता प्रधानमन्त्री श्री राजीव द्वारा सम्मानित

द्याय विद्वत परिषत् के सयोजक श्री स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती को त्तनकी तल्बमसि पुस्तक पर उत्तर प्र**देश** सस्कृत प्रकादमी की बोर से प्रवानमन्त्री क्षी गजीव गांधी द्वारा ५०००/ रुपये का विशेष पुरस्कार व प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया। यह समारोह ७ मई १६८८ को तीनमूर्ति भवन से उत्तर प्रदेश के राज्यात की प्रध्यक्षता में सम्पन्न हमा व मुल्यमन्त्री श्री नारायण दक्त तिवारी ने सभी विद्वानी का मान्यापर्श

द्वारा सम्मान किया। पूज्यवर स्वामी जी का मरकार द्वारा सम्मानित तथा प्रस्कृत किया जाना बार्यसमाज नवा वेदप्रेमियो के सिए गर्व का विषय है।

दिल्ली चार्य प्रतिनिधि सभा स्था दिल्ली की धार्वसम जो धार्व शिक्षस सम्यामो की भी र से हम उन्हें हादिक तथाई देन हैं तथा जनके दीर्थायुकी अनु स कामना करते हैं।

> डा० वर्मपाल बार्य समा महामन्त्री

महाराणा प्रताप जयन्ता समारोह सम्पन्न

सण्डवा, दिनाइ ३१-५-८५ माय समाजमदरमेशी गग। वरण जो मित्र पूर्व विधायक को प्रध्यक्षता में महाराजा व्रताप व्ययन्ता का स्नायाजन हुआ। मुख्य ध्रतिबिश्रा राजनारायणसिंह विभावक न सारयभित शब्दा म कहा कि महाराखा प्रताप के जाबन संप्रदेशा वन ध नतमान राष्ट्राय समस्याहल का जा सकताह। भा **एन** । एन वसा प्राध्यापक न क**हा** कि इस समय दश में भहाराण। प्रताप क्रीसे जनात चारित्र का परम का बहयकता है। ठा॰ वृज-त्रसिंह न कहा महाराखा प्रताप म हिन्दू एव सपनी मातृभूमि के प्रति प्रवाह नह्या। श्री राष्ट्रवन्द्रराव मण्डलाई न कहा कि महाराण प्रताप ने जो ताज पहुना या, वह काटा का था।

निवाचन

बायसमात्र लस्लापुरा वाराव्यक्षा का बार्षिक निवासन २६-४-८५ का श्रा मेवा मास बार्य की ब्रध्यक्षता ने आगामी वय के सिये नाच शिवे धनुसार हुआ-श्री मवासम्ब दार्थ प्रधान क्षपप्रधान भी प्रेमनद प्राय बा कमसाकान्त जी भी बक्सीनारायण धार्य मत्री की कन्हैबालाल बाय उपमन्त्री की राजेन्द प्रसाद की मार्ग ,, कोवाध्यक्ष श्री बुखदेव भार्य क्षी रामगोपाल जी घाय प्रचार मन्स्री भी मदनसास ग्राय उपप्रचार मन्त्री श्री सत्यप्रकाश मार्य पुस्तकाब्यक भी नरेन्द्रनाच मार्य ध्रविष्ठा धार्य बीर दस

बी रामकृष्ण धार्य धाय-व्यय निरीक्षक

बुढदेव माग म्यवस्वापक मका हु हा एसा राज्य था, जो सकबर क सामन नहा कुका । ४०० वनदाशकम्द्र वोरेन कहा कि ऐस भायोजन संसहा राणा प्रनाप क चरित्र का सन्देश फैसाया वा सकता है। भा गहाराम न प्रस्ताव रखा क मध्यप्रदेश शासन माध्यमिक स्तर का पाठ्य पुस्तको म महाराखा प्रताप विवकातन्द, शिवाका जैस महायुद्धी क पाठ जोड । इसका समयन भा हारा-ल ल बाय न किया।

बातिया का स्वावत पाण्डत राम-चन्द्र धार्य ने किया । संस्था को गतिथि-थियो क। जानकारी मा कैसाशक्रद पालावाल न दा। सामार प्रदेशन आ प्रव-क्शिर सकरनाय न किया।

बद्यचये प्रशिच्चण शिविर

बात्मशुद्ध बाबम बहादुरवढ जिला राह्यक न रे४ जून स ३० जून तक ब्रह्म-चय प्राधक्या शिवर का ब्रायाजन किया गया है। इस भवसर पर योगिक ऋयाओ का सिसान तथा अवचन के लिए उच्च-कांद्रि क बिद्धान् सन्यासी महात्मा पचार रहे ई। इच्छुक महानुभाव को १४ वर्ष का आधुस ऊपर हो अपने भोजन के विस्तर तथा ऋतु अनुकूस वस्त्र बादि सकर पहुंचें। भोजन स्ववस्था नि शुरूक --स्वामी वर्ममूनि

संवेदना

निवेदन है कि धार्यसमाब के बबोवूट विद्वान् गुरकुल कामड़ी विश्वविद्यालय के पुराने स्नातक १२ वर्षीय सावार्य दीना-नाम सिद्धान्ताल कार गत सनसन २ सास से रोव पीडित होने से आर्यसवाब की सेवा करने में बसमर्व हैं। सबवान् उन्हें श्रीझ स्वस्य करे ऐसी इम सब प्रार्थबन्दुओं की प्रावंता है।

इरिक्रम्स नान युनेवा, सम्बी

प्ररानी पीढी के गायक एं० श्यामलाल श्रार्य का देहावसान

गायक एव उ ।देशक प० दशामलाल सार्य का १ प्रमाई को निधन हो गया। इस समय उनकी बायू ८५ वर्ष की वी सबमन नीन वर्षों से वे ग्रस्वस्य चल रहे वे।

श्री पण्डित स्थानसान की नामन र्शंती पारम्परिक भूनो एव लोक भूनो पर बाबारित रहती बी। इसी कारण उनके गावन के सम र जोता जो उनके साथ साथ युनगुनाने भीर गाने लगते वे । वे सदा ईवबर मित राष्ट्रभक्ति भीर महवि दया-नन्द के गुण स्तवन के सरल किन्तु क्रोअस्त्री गीत गाया करते वे । उनके भवन प्राचीन कवियो भीर गीतकारों की रचनाएँ हथा करती थी। पण्डित जी बार्यसमाज के उत्सवों भीर कथाओं के माध्यम सं वेदप्रकार १६२६ से अविरत करते रहे हैं। सगभग १७ वर्षों से वे धार्यसमाज

धार्यक्षमाज की पूरानी पीड़ी के मधूर दीव व हास के साप्ताहिक सत्सगी में वानोपबेस के लिए माते रहे हैं। आर्थ-समाब दीवान हाल उनके सेवाओं के क्षिए उनका सदा ऋगो रहेगा ।

> धार्यसमाच दीवान हाल उनकी बन्धावस्था के उनकी प्रचर धार्षिक सहा-थता करता रहा है। उनके परिवार में उनकी परनी क्या दो सन्तान एक सुदुक बौर एक सुपुत्री हैं। उनके सुरुत श्रो बनो-राम ने उनका स्मृत में बायसमा व दीवान हास और प्रायसमाज सदर बाजार दिल्ली को पान गान सौ स्पादान दिये हैं। प्रभू से प्राथन। है उनके गुए। कर्वों के धनुसार उबकी बात्मा को सद्वति प्रदान करें ।

> > मूलबन्द गुप्त मन्त्री पार्यसमाब दीवान हुग्ल दिल्ली

दिल्ली आर्थ प्ररोहित सभा का निर्वाचन

दिल्ली काय पुरोहित सभा का मन्त्री श्रीवलजीत शास्त्री प्रचार मन्त्री श्री वेद । स कोषाध्यक्ष हरियत्त शास्त्री निर्वाचन बायंसमात्र दीवान हाल दिल्ली लेखा निरीक्षक की नरेन्द्र ग्रवस्थी। प्रति-में १ जून १६८६ को श्री धाच यें हरिदत्त विञ्ज सदस्य — स्वामी द क्षानन्द श्री, चौ० की ग्रध्यक्षता में सम्पन्न हुमा। सर्वसम्मति शिवकुमार शास्त्री डा० धमपाल । से प॰ वशपास मुखासु बार्यप्रोहित निवेदक समाके प्रधान तथा श्री प० मेघरसाम महासन्त्री निर्वाचित हुए । उपप्रकान असी

उपमन्त्री बलबीत शास्त्री

निर्वाचन

निम्नलिबित श्रविकारी सर्वसम्मति से निर्वाचित किए गए ---श्री महाबीरप्रसाद प्रवील प्रकान **अक्टब्र**ान श्री बदीनाय महायन भी देशराज काम महामत्री भी भी कुण्णपन्द सर्मा स० मन्त्री थो भीनिवास गुप्त जपस त्री भी भोगप्रकाश वीर प्रचार मन्त्री श्री क्रमंपाल क्ररोरा मत्री स्वास्म्य सेवाएँ श्री जनदोश्चनद पूरी मत्री निर्माण भी शादीसास सागरवास कोषाञ्चक भी भोमप्रकाख गोयस

ठा० विक्रमसिंह भी हरिदत्त सास्त्री, उप

द्यार्थसमाज माडल टाउन का बार्विक

चुनाव २६ मई रविवार को हुना जिसमे

कस्टोक्षिण भी शिवप्रकाश गुप्ता इस वर्ष दयानन्द परिलक स्क्रूम का प्रद्वाटन सार्वदेशिक सत्रा के प्रकान प्राप-रखीव सामा रामशोपात की शासवासे

पुस्तकासवाध्यक्ष भी सतीस वीर

त्रारा १२, मई १६=६ को हुना। नर्सरी से के बी॰ तथा प्रथम कक्षा के छात्रो को प्राशीर्वाद देते हुए उन्होंने माडसटाउन द्यार्यसमाज के कार्यकसायों की सराहना की। सैकड़ो रोगियों को पविदिन को सलग लेडी डाक्टरो द्वारा चिकित्सा प्रदान करना, भासो के एक विशेषत का असव प्रवन्त्र, ३ वैचों से योगान्यास का ककाएँ बसाकर इस समाज न बन बन को राह्य प्रवान की है। सब वैदिक पृष्ठभूमि स आर्थों को बाधुनिक विका देकर ऋषि दयानम्ब के विचारों को युवक युवतियों तक पहुंचाने के लिए विद्यासय को माध्यम भूता है। समाज के प्रत्येक सदस्य सद-स्याची व कार्यकर्ताची ने सर्गाठत रूप में प्रवास करने का सकत्य लिया है।

> बीक्रध्यवन्द्र सर्माः मन्त्री

बार्यस्थाच समर कालोनी का बाविक पूनाव हवंसम्बद्धि से निम्म प्रकार

तरक्षक---प० ज्ञानकाच की प्रवान-वी मसकराच वी डावर क्षप्रवान—का॰ तीवेराय **वी बु**खा नी रामराष्ट्र जी नसिक नी मुससपान नर्वद्रश

बन्त्री--श्री जोबेन्द्रनाथ स्थास ध्यमन्त्री--धी जितेन्द्रनाथ शाहर भी प्रोमप्रकाश सावदा कोषाध्यक्क--श्री सुरेण्डनाय जी सहसम वेषानिरीक्षक-र्था कुल्लाकास वी वचना बहारी-सी पर कहरतीर की वार्य

> सस्त्री वोनेश्रमाद

जिसे बचावे, वरुण, मित्र और अर्थमा उसे मारे कौन ? भवे काम का परामां विकर नहीं (पुष्ठ र का क्षेप) होता। क्षत इस क्षताचार संप्रशा का

राम वि 'पए से मिल । प्रभिवादन के परचात् हांच परुवार कहा — पाफी सकेश ! सेंगे । जब सावियो न कहा कि में तकेश नहीं उसके मार्व है तो राम ने उत्तर दिया — मैंने सोच समम्मकर ही सकेग सम्मेचन का प्रयोग किया है । प्रम बादित प्रोर चरित्रहोंन व्यक्ति को राज्य करने का कोई प्रभिकार नहीं होता, प्रत साव है हमारी बिट में नका के खिहा सन का प्रथिकारी राज्य नहीं, बहिक विने यस है।

 भने नाम का परामर्ग रुविकर नहीं होता। धन इस धनाचार स प्रजा का बचाने के लिए धीर रावण क विनाश के लिए मैं धापके सहसाग में पूरी शक्ति धौर योग्यता व्यय कर दूगा।

राम इस प्रतिकिया से बहुत सन्तुष्ट हुए भीर दोनो भ्रोर से ही वचनो का पासन बडी ईमानदारी से किया गया।

युद्ध में लक्ष्मण के मृष्टित होने पर राम न दुखी होकर जो उदगार व्यक्त किए उनमें विभीषणका राजतिलक भी सम्मित्सल था।

रावस्य के मरने पर विभीषस्य अन दुक्तीह्मातक भी राम ने कडी सहानु भृतिब्यक्त करते हुए कहा—

> मरागान्तानि वै रिश निवृत्तन प्रयोजनम्। क्रियतामस्य सस्कारो ममाप्येष यथा तथा। रामा० ६।११२।२६

हे आर्य विभीषणु । मृत्युके साथ वैर का भात हो जाता है। हमाग उद्देश्य भी पूरा हो गया। भाभी भ्रव मिलकर रमका भन्तिम सस्कार करे। यह जैता तुम्हारा भारतिम सर्कार करे। यह जैता तुम्हारा भार्ष है वैसा मेरा भी है।

राज्य शक्ति और छेना शक्ति से सम्पन्न होले हुए भी कीन्दो की पराजय और हीन धवस्था होते हुए पाण्डवी की विजय तथा सफलता का रहस्य जी पाण्यवीकी वार्षिकता और सदावार ही है।

महागाज विदुर रहते थे कौरती के नाया शास दिन सतरास्त्र उनके समझ-गन्धी करते रहते थे। किन्तु कर भी दुर्वो-वन कहीं और पाण्डवों का पक्ष बाता वातो सर्वेणा करी करी शना देते वे कौर पाण्डवों का "का मेते थे। दुर्वोचन के विदय में इससे पाल्डवों कर दुस्तय क्या हो सकता है कि—

एव दुर्योधनी राजा

मध्यपिगललोचन । न कवल कुलस्यान्त क्षत्रियान्त करिष्यति ॥

धर्मात् यह कबी धालों नाला राजा दुवाँबन प्रपने कुसकालों से केवल धपन परिवार की ही नहीं कात्रियों का साम गान कर देगा। इसी प्रकार कीटम भी पाण्यों के गुणों पर मुख्य थे। कुम्लेज में जब मुधिस्टिट धपने सब शान्यास्त्र छोड़ कर कीटकों के प्रथम सेनापित के रूप में पुरव के लिए उचात भीटम के पास जाकर नतसन्त्र कोटक बोले—

'हम प्रापने कर्तस्य का पालन करने के लिए उद्यत हो रहे हैं साप हमारे पूज्य पितामह हैं बत सापकी सनुमति सीर साद्योजित के लिए मैं सापकी सेवा मे उपस्थित हम्राहु।'

भीष्म वस निष्य भीर विनान स्थव हारको देलकर गदगद हो गय भीर पुल-कित हो कर कहने लगे—

> शीतोऽस्मि पुत्र युष्यस्य जयमाप्तुहि पाण्डव ।

महा० ६।४१ .४

हे युचिकि र मैं तम्हारे इस ब्यवह र से बहुत प्रसम्ब हू। मैं तुम्हें भाशीर्वाद देता हू। ईश्वर तुम्हें विजयी बनावे।

फिर ग्रपनी दुवलताकी भी सफाई देते हुए दोल----

> ष्रभंस्य पुरको हासी वासस्त्वमाँ न कस्यांचत् । इति सस्य महाराज्ञ बढोऽसम्यर्थेन कीरचे ॥

महा० ६।४१।३६

— ह युधिकिटर ! सनुष्य सर्घ का वाल है सर्घ किसी का वास नहीं । इस-लिए तुन्हें ठीक समफ्ते हुए सी मैं दुव-लिए तुन्हें ठीक समफ्ते हुए सी मैं दुव-बन का पा लेकर लड़ रहा हूँ क्योंकि मुक्ते मेरी तन स्नावस्थकताए पूरी करके कौरवों ने सर्घ से बाघ तिया है । सदा इस शरीर पर दुर्गोचन का स्नीवकार है, किन्द्र सा स्पष्ट सर्थ सौरम्यास की डोर है निस्तिए मैं तुन्हारी विजय की कासना करता ह।

इसके बाद युचिष्टिर दो हाए। वास के पास गये। उन्होंने भी ह्वस खोल वर विजय का पक्षीवाद दिया। फिर कुपा-वार्य के पास गये। उन्होंने वही धाली-वार्य दिया।

पाण्यकों को निये वे भाशी वेंचन फसे भीर वे विजयी बने।

हसीलिए सन्त्र से सहा गया कि निस स्मित के उदान चरित्र से प्रभावित होकर प्रमुद्धकानी वरणीय मित्र मण्डल मीत्र स्माय प्रिय समाज क प्रमुख करणुवार रखक हाल नतकर उसको प्रापति से वणाते हैं, उसे कभी कोई शति नहीं पर्ष्मा सकता। (श्रृति सौरम से सामार)





रजि० न० डी (मी०) ७५६

श्रार्य जगत की शान 200 विस्तर वाले निर्माणाधीन

नेत्र चिकित्सालय

(अनुमानित लागत दो करोड रपय) के लिए दिल खोलकर दान दीजिए दान की राशि अध्यार अधिनियम ी० द० रे

> ग्रनर्गन कर मुक्त हागा। सारा दान चैक/मनीम्रार्डर/बक ब्राफ्ट द्वारा

मत्री, माता चन्ननदेवी माय धर्माय नेत्र चिकित्मालय, सी-१ जनकपरी, नई-दिल्ली-५= के पत पर भेजा जाए। दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर

अकित किए जाएगे। निवेडक

राज्योपाल जालकाले सुयवेक प्रोमप्रकाश स्नाब सरक्षक चिक्तिसालय प्रधान दिल्ली **एक प्रधान सा**०मा० धाय प्रतिनिधि साथ केन्द्रीय ।शय चुम्नीलाल चेरि० टु०

सौजन्य से महाशिया ी हट्टी प्रा० लिमिटेड १/४४ कीर्तिनगर. ब्रोद्योगिक क्षत्र, नई दिल्ली-११००१

दिचिंगा दिल्ली वेदप्रचार मण्डल के प्रधान तथा महामत्री





परोपकारी समाजसेवी प्रसिद्ध उद्योग पति तथा वैलक्यर एमोन्सएशन सपदर जग एवक्जेब के धन्यक्ष श्री हरबन्स सिंह रवेर दक्षिण दिल्ली वेदप्रचार मण्डल के प्रधान पुन निर्वाचित हुए। हार्दिक शुभ

रामारण दस दर्मा आर्थक्तठ कायकर्ता अनवक समाजसेवी महर्षि

दयानन्द के धनन्य धनुयायी ती रामशरण दास १५ वर्षों से दक्षिण निल्नी वन्प्रकार ; मण्डल के महामन्त्री है। इस मण्डल में ४६ बायसमात्र शामिल है। इसके महा-मात्री सवसम्मति स निर्वाचित होने पर श्री साथ को हार्दिक बधाई। इन वर्ष दिनगा दिन्ली में ६० सम्मलन हुए जिनमें आयायका शुक्रिका प्रशसनाय है।



लिए स्वास्थ्य काँगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

शासा कार्यालय-६३, गली राजा केदारनाय, फोन । २६६८३८ चावती बाजार, दिल्ली-६





मूल्य एक प्रति ४० पैसे वर्ष € प्रकः ३२

रिवर्गर, ३० जून, १९०६ आय सबस्सर १६६००५३००५

धाघाउ २०४२

ह्यामन्दाव्य - १६१

विरोधी भी मोहित मतिमान

तार्किक शिरोमणि श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी

—प्रो० राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

प्रार्थसमाज के इतिहास में पूज्य पठ पासवाद जो दहलवी का नाम सा कार्य सदा स्वयुं प्रकारों में लिखा कार्यगा। पठ जी एक सस्कारों जोव के। उनकी प्रलोकिक प्रतिमा, विद्या, पाण्डित्य उनकी एक जन्म की साचना का फन नहीं जा। वह एक ऐसे पूज्य प्रारमा के जो जनन जन्मान्तरों के सुन्न सस्कार लकर जन्मे के सुन्न सस्कार लकर जन्मे के सुन्न सरकार लकर जन्मे के महाचि इयानन्द की जोवनदायिनी विश्वारखारा की पाकर व प्रारम्माज के स्वत्य से उनके पूज जन्मों के युग्त संस्कार जाग उठे।

बह बाल्यकाल से ही बड मेधावी के । वह स्वय अपने बाल्यकाल की क्क घटना सुनाया करते ये। उनके विता जी पहले-पहले भायसमाज के सुरसनो मे भी जाया करते थे और घर पर गराशिय जाको पूजाकिया करते के। उन दिनो बाजार से एक माना के बाएक पैसा के दो गराश मिला करते थे। एक दिन जब प० जी के पिता जी गराश पूजा करने बैठे तो प्रजीको मलमारी से गराख जी की प्रतमालाने को कहा। प० जी से बह प्रतिमा गिर गयी। मिट्टी की बह प्रतिमा टूट नई। पिता जी ने पुत्र पर रोष प्रकट किया तो सुम- कुम बाजा बासक मट से बोला, कि क्या हमादो पैसे का गए। शा बाजार से और के बावेंगे । साथ ही कहा, "पिता बी साप झार्यसमाज मे भी वाते हैं और घर पर गरोश पूजा

करते हैं। 'शिथिल विचार के पिना जीने कहा, यदि तो मूर्ति पूजा से कुछ मिलता है तो मुक्क भी मिल जावेगा प्रत्यथा भार्यसमाज में तो मैं जाती ही हां

इस घटना से पता चलता है कि प० जी ग्रारम्भ से प्रत्युत्पन्न मित वाले भीर ऊहा पोह करने वाले मनीषी थे।

प० जी बहुत सुलेख लिखा करते के। धपने सुन्दर हैंडराईटिंग के कारण यह किसी भी सरकारी कामला सब में ऊने थे कने पर को गा सकते थे परन्तु ईरबर की बाएंगे केद के प्रचार के घरमानों ने उन्हों चेन न तेने दिया धौर बहु सुल सुजिया प्र सात मारकर कण्टकालीएँ। मार्ग के पिकक बन गये। उन्होंने ११५३ ई० में इन पित्तयों के लेखक को यह निस्कार दिया कि प० सेखराम को धावर्ष मानकर वह जाति-रक्षा व वर्म-प्रचार में उत्तरे।

धार्यसमाज के इतिहास में बहु एक ऐसे व्यक्ति हुए हैं जिन्होंने लगा-तार १६ वर्ष तक Street Preaching गली कूषों में प्रचार वा फळ्बारा पर व्याख्यान व शास्त्रार्थ करके वैदिक सिद्धान्तों की सच्चाई की सूम मचादी।

कैसे-कैसे कष्ट सहे, इसका एक उदाहरए। प॰ जी ने स्वय एक बार हमे मुनाया। कही शास्त्रायं के लिए उन्हें बुनाया गया। वह रेल पर गये। रेल उस छोटे से गाव तक न जाती थी। वह स्थान या रेल वे नाईन पर। शास्त्रायं का समय नियन था। प० जी उस स्थान के पास वाले स्टेशन पर उतरे। वहीं पता चला कि वहा शास्त्रायं सुनने के लिए भारी भीव जमा है। मौलवियों के दल पहुच चुके हैं। इसम से प्रकेल देहलवी जी को बोलना था। प० जी ने जूता उतारा। रेलवे बाईन के साथ-साथ दौड लगाते उस स्थान पर पहुच गये भीर धार्य-समाज का डका बचा दिया।

पठानकोट में एक शास्त्रायं में मौलबी सत्ना उल्ला साहब मैं कहा, "प० जी सब जानते हैं कि हार प्रापके गत्ने में पड जुकी हैं। 'इक्टम प० जी बोले, 'सब देख रहे हैं कि मेरे सामने खडे होंते ही हार धापके गत्ने में पड़ा महा" त्या बहु बा कि जब मौलाना महत्त्र दख हुए तो उनके मुसल-मान भाइयों ने उनके गत्ने वे हार डाल दिये थे। जो मौलाना नैगले में रहते दिये। प० जी के इस वाक्य पर करतल ज्यनि से पण्डाल गृज उठा।

उनका हिन्दी, उर्दू, अप्रेजी फारसी, अरबी का उच्चारण अति उत्तम था। मुसलमान भी उनकी तलावते कुरान पर मुग्ध वे।

उनकी हाजर जवाबी पर मौलाता सनाउल्ला साहब जैसे मौलवी वा बडे बड पादरी भी मुख्य थे। एक घटना देकर इस लेख को हम विराम देते हैं। हैं दराबाद में एक मोलाना वे पूछा यदि वेद देवर को नार्थित हमार पिक पार्थित के प्रति क

उस महान् मनीषी उस महितीय बक्ता देशमक्त की स्मृति सदा ताजा रहेगी।

इस अन्त मे

₹

¥

सत्सम वाटिका सम्प्रादकीय बायंसमान का इतिहास स्रीर उसके उपादान परोपकार, किसोरसञ्ज सरय की महिसा गरीसी व बेकारी कैमें दूर हो

तवा प्रन्य रोचक सामग्री।

सत्मंग वाटिका

म्हर्षि ग्रहोमुबासदेव्य । देवता विष्मेदेवा छुद उपरिष्टाद बहुती।। धन्यय —सजोयस देवास यस् सर्यमामित्र वरण द्विष ग्रतिनयति तस्

(न दरितम्) न पापजनित दल ही सताते है।

्याग्या— म ल मे उनम शामन के लिए तीन वान पानग्यक ब्यायों पर है। पहली व न यह कि — ग सन मे या बीक के लिए तीन वान स्वयं पर हो। दूसरी बान यह करात्रा प्रथवा झासक वग सारी प्रजा का निज स तार समकर प्रेम से ब्यवहार करने वाला हो। तीसरी बारा यह कि — ग अपी से राष्ट्र की रला करने वाला ने होगी उनमें सह दुरितवृत्व स सारत म होगी उनमें सह दुरितवृत्व म सारत पा पुरानि प्रयोगी सारा विस्व सारा म होगी उनमें सह दुरितवृत्व म सारत पा पुरानि प्रोत से सारा कि समें नहीं होगी।

भारत की स्वाधनता से पूब हम ध्रपने स्वाग य के बण्टगीन सपने सजीवा करते य म जाें रे स्वाधीन मारन गंक बार किर स रे समार का पिप्रमुख धीर गानि स जाने क कल विवायेगा। मारत के ग्रहीं यो क पनि वणिता सब वक भागमस्न समार क विवा को की रही है। यूराक ्क विश्वणीनिवस्मेलन के ध्रम्म पर से की नेते हुगा सिस जरूक ने प्रनिर्मियों को नहा था —

O you assembled scholors of earth if you desire to keep the atmosphere of the world qut and aim go to the calts in the cvs fores of diast at terfect le idve wisdom fror and than proe yourup and Amili

ा न िनी

पि " उ न । । न

रिंदु र च ल्ला नेती

भ ी न न न

हुत्म ना ी । म न प्रान्ट र

उ क " मे उनर उपके बन

स्मोर भि से हिन स्मो उनना प्रवाद

सुद्रमार योक्योर स्मोर करो

सुद्रमार योक्योर सोहिना म करो

राष्ट्र की दुरित, दुर्गति से बचाने का उपाय

लेखक-प० शिवकुमार शास्त्रो

न तमहो न दुरित देवामी ग्रष्ट मर्त्यम् । सजायमो यमयमा भित्रो नयति वरुग्गा ग्रति द्विष ॥ सामग्रस्य

 \star

विवारों से वह सम्भव नहीं है। वस्तृत प्रचन भारत के सुसस्कृत स्राय जोगों ने सपने वद स साचार और विवार से सपस्त समाज का अपने ही

० बगर से मपस्त समाज का ज ० ने हाँ धममय बनादिया चा। उन पावन ममय की फाके त्रव हम धपन ग्रतीत के इति हास और वार्मिक ग्रापी येप ते हैं तो स्राप्त्य होता है।

खादाग्य उपलिथद म उर ल है कि
एक नार एक पान्त्र य विषय की वर्ष ख्रिक्त पर शाक्षमवासी वनस्थी की वर्ष-ख्रुक विकार विशेषक से सारोग न हुया तो महा मा उन लक के नेतर्य में उत्त समय क दिखात विकार कोर विक्र न के स्पार्थन कि सारा वात करन पंति के पम पानी जिस सा शांत करन के निगत के। राजा ने स्विधियों का सामत किया भीर वनके पक्षमत् गोग्डी प्राप्तम हुई विकार होत होने जब भोजने का समय हो गया तो राजा ने स्वरुक्ता थी स स्नुरोव दिया कि सब भीजन का समय हा गया है पहन साथ कोजन का समय हा गया है पहन साथ कोजन कर स्वर्धन प्राप्त विवस कर उसके शहा विश्व

र बाक साजन क इस प्रस्ताव को स्तकर एक सहामा ती ने राज का सम् ती एक साजक के लग्न प्रसाझ होता है। न जान क्सि किस प्रकार से राजकोण का सन्ह होना है। उस प्रकार का सम्मान पर पूरित प्रभाव वानवा। युना को यह प्राथमा प्रमुखन नहीं थी। किस किस वागन प्रधास होना है देश पर सनु ने व्यवस्था है और उसका उसेस प्रहृपि स्थान न न ना सन्का विशि के पूर्ण सुप्रकृष्ण विश्व के पहुष्ठ स्थान

दल्युनास कल्लाचकस्मोध्यकः। दशास्त्राज्ञेनोदशवेशसमोनपः॥ सनुद्रावश्रसोकस्थ

जा / कहाना निवक्ष कमाने हैं जीते ज्वहार गया घर रापार से जारिक करने व घरात निनक कम से जीतीहमा ना बहुन होता है और प्राणिनों के पानन और रक्षण नहीं होता उनके घर को लाने वाले के मन पर बसहत्या करने के बरावर दूषित प्रनाव

पडन है। जो शराब निकालकर वेचने वाने तथा घोबी का सम्न वहला करते हैं उनके मन पर चक वाले ग्रम्म की ग्रपेक्षा से दस गुना भीर भविक भर्तात् सी हवा करने के बराबर मन पर दुष्प्रभाव होता है। जो लोगाहर के दिलावे भीर वेश भूषा ग्राण्म्बर भीर डोग से ज विकोपाजन करते हैं उनका ग्रन्त पहने से दश गुना स्थिक स्रात् एक हजार जाव हत्य करने के तुरुग्मन को दूरित करता है। वसी प्रकार कासन व्यवस्था में सावधानी से मर्थादाकी रुगन करने वाले राजाका अन पहले की अपेका और दशबुना अधिक सर्भात् दश हजार हत्या करने के समान मन को सदोप करना है। श्रमिप्राय बह है कि मनुष्य की जीविका इस प्रकार की हो कि जिसमे यून से न्यून प्राश्यिमों को कच्ट पत्चे धौर सम्बक्त से अधिक का सरनए और पालन हो वह बीविका उत्तम ग्रीर उनका श्रान ही मन को सुद्ध रस सकता है क्योंकि धन्न का सुक्रम भाग ही तो यन का साचार है। यो तो कुथक के काम में भी हल चलाने सिंचाई करने फसल की नुषाई कटाई भीर भान निका सते समय भी बहुत कीव हिंसा होती है। कि तु कुषक के बन्नावि ने प्रास्तियों का प सन कही प्रचिक मात्रा में होता है यस क्षक का भ्रान पवित्र माना गया है।

तो महात्मा की इन बात को सुनकर धानी शासन श्वयस्था के सम्बाध में राखा धञ्चपति ने भी बात कही वह समस्त सभार के "निहस में बेबोड है। राजा ने कहा—

न में स्तेनी जनपरे न कदर्यों न च अक्कप । न नाहिताम्मिनीबिहास न स्वरी स्वैरिशी उत्त ॥

नेर सरे राज्य में कोई नोर नही है, कोई काम धौर प्रदानी नहीं है कोई सात्री हिंदी हैं कोई सात्री ही है के कोई सात्री नहीं है का कोई मही है अप कोई नहीं है कोई दुरावारों पुग्य नहीं है। अब पुष्प ही चरित्रहीं नहीं है तो स्त्रा के तो दुगबा भी होने का प्रत्म है नहीं उठता। आब के बुध में स्त्री नहीं है। से सात्री नहीं है तो स्त्रा के तो दुगबा भी होने के सात्रम है नहीं उठता। आब के बुध में स्त्री मात्री की से सात्रम होने से स्त्री मात्री है। से सम्त्री मात्री है। सात्री है। सा

कोई दावानहीं कर सकता। बहा भी सभी प्रकार के जबन्य धएराध होते हैं। इसीमिए नहां से देश बादत के सन्त की बादर्वं की बाशा रखते है । विन्यू स्था भीनता के परवात् भारतीयो का को चारित्रिक पतन हुआ है वह स श्वयवनक है। भारत की स्व बीनता के लिए स्थान और तप करने वाले यवापि बहुन बड़ी सम्बा में बालकवलित ही बये किन्तु सब भी इजारों हैं भीर उनकी सन्तबंदना क्स बात करते ही फूट विकाती है। जासन्धर पवाब से त्रकाशित होने वासे ७ अवस्त सन् दर के 'पजाब नेसरी' पता में एक पुराने स्वतन्त्रता मनानी श्री बलवातराध ज्यान का यन यम प[्]रेक्त नामक प्रम-कार के सब हए सामास्कार का विश्वरूष खपा है। "सकी प्रारम्भिक पहि या इस प्रकार हैं ---

वे भी तक स्वन त्रना सेनानी हैं जिल्लोने सपने यो न का स्नासा हिस्सा स्वतस्त्रता ग्रास्त्र लन में भीक दिया शा-इस निक्चय के साथ कि जिस देख की धाजादी के लिए प्राज लड रहे हैं कल वह हम र धपना नेग होगा। जिसमे संभी को समानता मिनेवी सभी को गुल्ली कुल्ली भीर जुल्ली मिलेडी। प्रशासन नाफ सुबरा होगा । सभी को न्याय मिनेगा सभी प्रसन्त होंगे सभी को भरपेट रोटी मिलेगी। किन्तु ३६ वर्ष बील आने के बाद भी देश की परिस्थितियों को देखकर निराशा होती है। क्योंकि झाज देख मे के सभी बस्तुएँ प्रभाग हैं जिनकी कि स्वतंत्र भारत ने कल्पना की गयी थी। साम न्वाय कही है ही नहीं। एक व मान्य माव-रिक को कोई पूछ्यानही। नरीय की कही सनवायी नी । पहुन भीर दश्दके वाले दनदना रहे हैं। कानून का डर नशी। बहु बेटियो का सम्मान सुरक्षित नहीं। क्य यह वही देख है जिसकी झात्रादी के लिए बलियानियों ने अपने जीवन की जेंट चढाई भी आज हमे फिर उसी प्रकार के व कलाव को जाने की जरूरत है, जिस प्रकार का हम तन् ४७ में साबे वे ? ' शाख भारत का प्रवृद्ध वग इसी प्रकार की खुँडा से व्यक्ति है।

जने झाजादी लडी तब झपने सबने और वे । हाल घपना आच जो है वो कभी सोचा न चा।। प्रन्य यह है कि हम देश ।

वाक भाषाचान चा।
प्रान्त यह है कि हम देशा की इस परिस्तिन में कैसे परिवतन लासक से हैं। निराक्ष होकर व ने स तो हानि ही हानि है।

हन कने से हल होते हैं पेचीवा मसायल। वर्ग सो कोई काम भी खासान नहीं होता।

वेद के इस म न से भारत के मान सिक नमोमण्डल में छायी इन निराधा की काली बदलियों को खाटने के ही सहस्वपूज उपाय हैं। इनमें पहुंचा उपाय (सेव पुष्ठ ६ पर)

★ वचन-सन्देश ★ आत्मविश्वास

मनुष्य को प्रारत में एक प्रपूर्व प्रलौकिक शक्ति भरी हुई है जिसका वह विवेचन नहीं कर सकता, किन्तु समय-समय पर वह उसका प्रमुभव प्रवश्न करता है। उस शक्ति मं अद्भुत वल है। वह शक्ति मनुष्य को प्रागे बढ़ ने का प्रोत्साहन देती है। वह शक्ति मनुष्य को बड़ों से बड़ी कठिनाइयों में सफलता प्राप्त कराती है। वह शक्ति है। प्राप्तविश्वास पर ही जमी हुई है। प्राप्तविश्वास को बीना किसी भी कार्य में सफलता पाना प्राकाश के ज्योनिष्मान् नक्षत्र को ताड़ने के समान है।

प्रात्मविश्वास का दूसरा नाम है इच्छाशनित। प्रापका भविष्य कव चमकेगा? प्रापका भाग कव जागेगा? इन प्रकृतों के समाचान को लोज में कभी प्राप दैवजों की शरण मे जाते हैं, हस्तरेक्षा विशेषक्षो क पःस बैठते हैं परन्तु यह नहीं जानते कि इन प्रश्नो का निराकररा ग्रापे हो पास छिया हुआ है। यह सब ग्रापे आरमविश्वास या टढ इच्छा- शिक्त पर निर्भर करता है। यह एक ऐसा बैजानिक तथ्य है जो ग्रापके मुर्दा जीवन मे ग्रम् न की वर्षा कर सकता है, जो ग्रापको निराशा को ग्राशा मे परिवर्तित कर सकता है, जो ग्रापको निपत्तियों के बाटको को तिरोहित कर सकता है, जो ग्रापको विपत्तियों के बाटको को तिरोहित कर सकता है, जो आपके ह्यथक्पी मन्स्थल मे ग्राशा ग्री र उत्साह को लहलहानी खेती उत्पन्न कर सकना है। इसके लिए बस ग्राप प्रपने हुदय मे दृढ विश्वास परेंदा कीजिए। जब ग्राप ग्रपने हुदय मे दृढ विश्वास करेंगे तभा ग्रापको उन्नति का मार्ग स्पष्ट होता जाएगा।

सम्पादकीय

पाकिस्तान के जुल्मों से अहमदियों में बढ़ता हुआ आक्रोश

—वार्ता—

पत्राव के जिला गुरुवासपुर का छोटा ता कस्वा कादिया इन दिनो ग्राकोश से छदयटा रहा है। कादिया दुनियासर के दो करोड से प्राचिक ग्रादिमयों का ग्राम्याभितक केन्द्र है और इस ग्राकोश की वस्त्र है पाकिन्नान से रहने वाले ग्रहमदियों पर जुल्म का काया जाना।

कादिया में प्रहमदिया फिरके के प्रमीर निर्वावासिस प्रहमद का कहना है कि यह उत्पीदन राजनीतिक है न कि वार्मिक। प्रहमद साहिब जनाव निर्वा गुलास प्रहमद के पीते हैं जिल्होंने १८-६ से प्रह-मदिया प्रान्दोलन की जुल्मात यह कहकर की थी कि जिस ससीहा ने इन्सान को रजी गम से निजात दिलाने की बात कही है, वह ससीहा

मिजाँ वाधिम साहिव का कहना है कि हमने इस जुल्म के बारे में मानवाधिकार आयोग को भी लिखा लेकिन तेल के बनी भरव देशों के प्रभावहीन होने के कारएग वह हमारा मददयार नहीं बन सका। हम ने प्रधानम-त्री राजीव गांधी को भी इस बाबत लिखा है लेकिन सरकार का कहना है कि यह पाकिस्तान का भदकनी मामला है लेकिन वे भ्रापती तरह से उनको मदद करने। उन्होंने पाकिस्तान सरकार को भी कई पत्र लिखे लेकिन सभी तक कोई जवाब नहीं मिला

पंजा वाधिय का कहना है कि पाकिस्तान में पिछले तीन महीनों में पान बहुमिंदियों की हत्या कर दो गई। इनमें से एक जनाव वाधिय के जवेरे माई ६० साल के प्रालों के डाक्टर प्रकुल विन प्रस्तुल कादिन थे। इस मामले में प्रभी तक कोई गिण्यारी नहीं हो पाई है। मिर्जा वाधिय का कहना है कि पाकिस्तान में जब भी किसी सरकार को प्रपात तकना वगमगाता नजर प्राता है तो वह प्रहुमदियों हुमा व १९७३ तथा १९८४ में भी यहीं कहानी वोहरायी गई। १९८४ में इन लोगो का गर मुस्लिम प्रत्यस्थक घोषित कर दिया गया। इसलिए उत्तरीहर की नजह राजनीतिक है न कि प्रामिक। जन्होंने बताया कि उत्पोदन का नगर दौर १९८३ में गुरू हुमा जबकि लोकनत बहाली के लिए विविक्त नाकरमानी घान्दोलन जुरू किया गया। या।

उस समय पाकिस्तान में एक ध्रफ्ताह यह उड़ी कि जिया साहिब खुद कादियानी थे। वस फिर क्या था जरनल जिया तिलिमला उठे। जहांने ऐतार कर दिया कि उनकी नजर में ब्रह्मदिया काफी से भी गये चुलार केंद्र क्या है। इस्ति क्या क्या क्या कि साहित कारी किया जिससे बहुमदियो पर प्रजान देने सपने वर्मस्वकों को मस्जिद कहने या युसलमानो की तरह से ज्यवहार कृषी पर प्रतिबंध लगा प्रावधान रमा गया। निर्जा वाधिय ने बताया कि श्रह्मदिया धर्म गुरु मिर्जा ताहिर श्रह्मद को इस श्रम्थादेख के जारी होने के एन दिन बाद ही लक्ष्म बागना पडा। क्यों कि तैनिक सरकार ने उन्हें भी गिरपनार करने की ठान ली थी।

पाकिस्तान के कटटर मुल्ला चाहते हैं कि ग्रहमदियों की जमीन जायदाद बन्दा कर ली जाये तथा उन्हें सरकारी नोकिरयों से हटा दिया जाए। कादियों में ग्रहमदियों के आविकारिक पत्र बदर के अनुसार पाकिस्तान में ग्रुल्लायों ने ग्रहमदियों को सनाने का एक नया तरीका क्षोत्रा है। कोई एक मुख्ला एकाएक गायब ही जाता है ग्रीर अहमदियों पर उसके गायब होने का इल्जाम मदकर जनता को अनु-मादी बना दिया जाना है। ऐसे हो एक मौनाना ग्रमनम कुरेसी इन दिनों गायब है भीर भन मुल्ला लोग यह मांग कर रहे है कि इस मामले की तहकोकात करने के लिए मिर्जा ताहिर को लदन से यहा लाया जाए।

'बदर' के सम्पादक लुर्जीद घहमद प्रानवर का कहना है कि उत्पीदन के इम नये दौर में हजारी होती से किंडो प्रहमदिया तीज हर पाकिस्तान में भाग गए है। लेकिन इसका एक फायदा यह भी हथा कि पाकिस्तान में महमदिया वर्ष प्रसार में बहुत वृद्धि इन्हें है

पाकिस्तान में इस समय ५० लाख अहमिया हैं। परिचम्र प्रफोका में ३५ लाख या न में एक लाख। इसमें में १५ ५०० कादिया में इहते हैं। प्रह्मिया अपने वार्तिक साहित्य के प्रलास या मिल महाद्वाय के लिए भी वार्तिक माहित्य छापते हैं। कहमिया गुम्ची विद्वान प्रपत्ते नाम के धागे जानी बिताब लगाते हैं। कादिया में अहमिया फिरके के लिए सब से पवित्र स्थान मिला गुनाम अहमद की कब है। १० एकड में फंना यह किंद्रस्ता निहान हों। कि अपनी वसीयत के एक तिहाई हिस्से से एक दमवे हिस्से को जमानत के नाम करते हैं।

बहिस्ती मा बोबारा तकरीबन पूरा भर जुका है। बदर के सम्पादक का कहना है कि जब पाकिस्तान में हानात ठीक हो जायगे तो वहा हान में मारे गये घहमदियों की नाशों को यहा तांकर उन्नाया जाएगा। सम्पादक हारा यू ही हल्के बन्दाज में करी गई यह बात चौकाने वाली है। लेकिन हकीकन यह है कि तर अन्मदिया मासिरी पिट्टी यही पाना चाहता है। कादिया में अन्मदिया नेता सालिस्तान मान्योंकर को मदद देते के मारोपों से साफ इन्कार करते हैं। उनका कहना है हम पूरी तरह से मजहबी लोग हैं नियानन से हमारा कोई सरीकार नहीं है।

इतिहास का ग्राप्ता दर्जन होता है। केवल घटनायो ग्रीर व्यक्तियो ने विवरण का नाम ही इतिहास नहीं है मौर न सन् भीर सबतो की तालिक एँ प्रम्तुन करना ही इतिहास का लक्ष्य हाता है। इतिहास लेखन से पूर्व वक को धपनी विचार-घारा भीर इंडिट को मुस्थिर करना पडता है तभी वह इतिहास प्रणान के कार्यको दायित्वपुरा दग से निभा सकता है। विभिन्न देशों की ही भाति संस्थाओं भीर धान्दोलनो के भी इतिहास लिखे जाते हैं। भार्यसमाज के पूर्ववर्ती नवजागरण के महान भादोलन बहासमाय का इतिहास प० शिवनाय झास्त्रो की यशस्वी लेखनी से लिखा गया । राजा राममोहन राय द्वारा प्रवर्तित उस धार्मिक सुधार धादो लन का यह प्रविकृत एव प्रामाणिक दस्ता-वेज माना जाता है। भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस का विस्तृत इतिहास स्व० डा० पदाभि सीतारामैयाने लिखा या जो इसदेश के स्वाबीनना झारे लन का तथ्य -श्रित इतिवृत प्रम्तून करता है।

द्यायमनाज की स्थापना का एक शताब्दी बीत गई। जगर से एक दशाब्द भी त्यतीत होने जा रहा है। घत घया-बश्यक है कि ग्रायसमाज के इतिहास के सेचन विषयक प्रयत्नी का सेसाजीसा लिया जाय । हमारी जानकारी के सनुसार ११०३ ई० में महता राषाकुष्ण निस्तित उर्दू ग्रद 'तारी से ग्रायंसमाज इस विषय का प्रथम ग्रन्थ है। महता जी स्वामी दयानन्द के समकाशीन तो वे ही उन्होंने धार्यसमात्र की स्थारना भीर उसके प्रार स्मिक विकास को प्रत्यक्ष शीके रूप से देशा था। निश्चय ही वे प्रपने इस ग्रव मे विगन शताबनी के यन्त तक का ही इति-बृत्त प्रतुन करसके। मुख्यतयापत्राव के द्यार्थसमाज का इतिहास ही उन की विवे-

चनाकाविषय बना।

ननपदवात् लाला लाजपतराय ने धार्यसमान तथा उनके प्रवर्शक का ऐति-हासिक बुलान्त प्रस्तुत करने का महत्त्व पूर्ण प्रयत्न किया । जनका ग्रन्म 'दि श्र यं-समाज १६१५ ईं में लागमैन्स ग्रीन एण्ड कम्पनी नदन से ग्रग्नेजी भाषा मे प्रथम कार प्रकातित हम । लालाओ धार्यसमाज के उन घड संसम्बन्ध रक्षते वे जो वाल जदल प्रथमा कल्चाड पार्टी के नाम से जाना जात था। फलत उन्होने धार्यसमाज की स्थापना उसके सिद्धान्ती त्रवा उनशी प्रवृत्तिया का मूल्य। कन उसी इडिटकोमा से किया है जो उन्हें ने गा उनके दल के काय क्ली भी की स्वानाय था। कालास्तर मे इसका एक अन्य संस्करण **ब**तरचद क्पूर एण- सन्स लाहौर ने प्रकाशित किया। ११६७ ई० मे प्रिसियल श्रीराम शमाने इस प्रन्य का सम्पादन कर हिन्दी ब्राफ दि ब्रायसमाज' शीवक से इम् पूर प्रकाशित कराया। सम्पा-दकने मूल ग्रन्थ मे श्रनेक समयोजित

आर्यसमाज का इतिहास और उसके उपादान

लेखक डा० भवानीलाल भारतीय

परिवान किंग है तथा नुद्ध स्वर्थित परिशिष्ट भी जोड है। यद्यां नाला लाअपत राय ने इस बम्ब को लगम्म ७० वर्ष दूर्व रिला भा किस्तु पन की प्रभाव का साम जिल्ला भा किस्तु पन की प्रभाव का साम जिल्ला भा कि साम जिल्ला के स्वाप्त के साम जिल्ला के स्वाप्त के साम जिल्ला के साम जिला के साम जिल्ला के साम ज

घषेत्री भाषा से प्रसित्त जनता के लिए बाहे लाला नानपनराय की उपर्युक्त पुस्तक उपयोगी रही हो, किन्तु सावस्य- कर्म नी कर से की कि भारत की राज्युमाणा हिन्दी ने सार्यसमाज का प्रामा-पिक देतिहाल निकद किया जाता।

गुन्कुम महाविद्यालय ज्वालापुर के भूतपूर्वं मुख्याबिष्ठाता धीर बाचार्यं प० नरदेव शास्त्री ने एतद् विश्वयक प्रयस्न किया। उन्होने दो सण्डो मे धार्वसमाज का इतिहास जिलाओ क्रमश १११८ तवा १६१६ ई० मे छपा। बस्तुत नरदेव गास्त्री लिखित यह इतिहास तो इतिहास का विद्यानात्र ही या। प्रथम भागमे पार्यमनाज के प्रवर्तक का परिचय इस मस्या के सिदान्तों का निरूपण तथा द्यार्यसमात्र की ग्रन्थ वत पन्थों से तुलना विषयक कुछ प्रध्याय वे विनमे इतिहास के तत्व तो प्रत्यस्य मात्रा म ही थे। इन श्रध्यायो में इञ्जूकाल अपन तो ऐने लोनो ने किया था जिनका प्रार्थसमाज से दूर का भी सम्बन्ध नहीं था। दितीय भाग में धार्यसमाज की प्रमुख सस्थाधी व्यक्तियो समाचार पत्री धादि का विवरण सग्रह करने में कि'ञ्चत् परिकास तो किया गया या किन्तुदानो ही भागो मन तो इतिशमकार का मूक्ष्य पर्यवेशकाही दिम्बा देनाया ग्रीरन इस सस्याके प्रभावगायी एव लोकप्रिय रूप की ही कोई फानी उमरती थी। इसके विप-रीत लेखक ने इस ग्रन्थ में नुख ऐसे विकादस्यद मही को उठाया जिनके कारण ग्रामे चलकर ग्रावेंसमाअप में लेखक भौर उसकी इस कृति को तीव बालोचना का शिकार बनना पढा। लेखक ने स्वामी दबानन्द के बदमाध्य को लेकर कुछ बालो ननात्मक टिप्पणिया इस सन्य मे

समाविष्ट की।स्वामी जी के माच शिष्य

किन्तु कामान्तर से बार्यनमान को स्रोव कर पौरांगिक शिविर काशिन्द हो बार्न वाले प० भीमनन सार्माना वो जीवन इस सन्य म मक्तित किया गया नह सार्मा की के पुत्र प० बहुत्येक मिल द्वारा किसा गया चा। इसमें धनेक द्वारा-कार्यक इसन वे। कहारचानी जो की सपेक्षा प० भीमतेन को प्रक्रिक इस्ता निक्का गया चा। सन्तु प नरदेव सार्मी रिक्त रह सन्य धायसमाजियों का कोपभावन ही बन मका।

धार्यसमाज के महान् नेता स्वामी श्रद्धानन्द ने धार्यसमाज के उपयुक्त इति-हास लेखन की धावश्यकता तथा इस कार्यकी गुस्ता को भनी भौति सनुसद कियाचा। वेस्वयं भी तो धार्यंतमाच के इतिहास निर्माताची मे वै। उनकी हार्विक इच्छा वी कि वे स्वय यह कार्य करें। उन्होंने बार्यसमाज के इतिहास की उपावान भूत प्रभुर सामग्री का सग्रह भी कर रक्का था किन्तु झपनी बहुमुक्ती प्रवृत्तियो तथा स्थम्त कार्यक्रम के कारण वे इसे पूरा नहीं कर सके। तथापि उन्होंने धार्यसमाज के इतिहास लेखन का यह गुक्तर कार्य भगने योग्य पुत्र पं० इन्द्र विद्यादाचस्पति के सुपुर्वकिया। अपने पिना की बाजा को शिरोचार्य कर इन्द्र जी इतिहास लेखन के कार्य में जुट नये। दे स्वय ही दतिहास के गृहन सब्येहा तथा निवहस्त नेसक थे। फलत १६८१ कि॰ मे उनके द्वारा विकाहता आर्यसमाज के इतिहास का प्रवास खण्ड प्रकाश ने पाया । कतियय कारणों ने इन्द्र भी इस इतिहास का द्विनीय लण्ड उस समय प्रकाश्चित नहीं कर पाये किन्तु पर्याप्त समय पक्कात् उन्होने सार्वदेशिक धार्य प्रतिनिधि नमा को सर्वेतमाञ्ज के इतिहास को प्रकाश्चित कराने का वाधित्व बोच कराया भीर वो लग्डो मे बार्यसमात्र का इतिहास' निस्त कर उक्त सम्या से प्रकाशित करासके। २०१३ वि॰ मे प्रकाशित इस ग्रन्थ के प्रवस लग्ड में स्वामी दवानन्द के प्रादु-र्भाव से पूर्वका इतिहास, स्वामी भी के युगकी परिस्वितियों का विगदर्शन तथा उनका जीवन वृत्त दियागया है। साथ ही धार्यसमात्र के प्रारम्भिक काल की विभिन्न प्रवृत्तियों का सिंहावलोकन भी किया गया है। द्वितीय भाग में आर्थ-समाज के इतिहास की उन घटनाओं का विवेचन प्रस्तुत किया नया है जो इस शताकरी में चटी । हैवराबाद विकास के

सरमायह पर्यंग्त घटनाधक का विवरस्य वेने के प्रधानन में कुछ उपयोगी परिशिष्ट जोडे हैं किनमें स्मान्त में कुछ उपयोगी परिशिष्ट जोडे हैं किनमें स्मान्त में कुछ उपयोगी परिशिष्ट जोडे हैं किनमें स्मान्त स्मान्त की बन्दिनीत हों कि स्मान्त हों मिल्क के स्मान्त हों कि स्मान्त हों कि स्मान्त हों कि सिन्द जा कि सिन्द की सिन्द की हों कि स्मान्त हों कि सिन्द उनके बुबंग स्मान्त हों कि सिन्द उनके हैं कि सिन्द उनके हों कि सिन्द उनके हैं कि सिन हैं कि सिन्द उनके हैं कि सिन्द उनके हैं कि सिन्द उनके हैं कि सिन हैं कि सिन्द उनके हैं कि सिन्द उनके हैं कि सिन्द उनके हैं कि सिन हैं कि सिन्द उनके हैं कि सिन

प० इन्द्र जी रिचल इतिहास यश्चपि विवरण प्रधान ही ग्रविक या तथापि एरण्डद्रम न्याय से से सतीयश्रनक बहा जा सकता है। उहोने श्रायसमाजी के विभिन्न सम नो द्यार्थनमात्रो की गिरो-मणि समाधो तथा पूरानी ल्व पत्रिकाधी में उरत्रक्थ वृत्तान्ती के ग्राधार पर ही इस इतिहास का लेखन किया था तथापि इतिहासकार की स्थ्य विवेचना तथा वैज्ञानिक लेखन गैली का इसमे बहुत कुछ प्रमाव ही दिन्दिगी नर होता है। उधर भारतवर्षीय भयं कुमार परिषद् की परीक्षाओं ने धार्मसमाज के इतिहास की पाठ्यक्रम के रूप में स्थान मिल चुका बा। फलत एक ऐसे इतिहास की बाबध्यकता बी जो खात्रोपयोगी हो, सुबोध बीबी मे लिला वया हो तथास किप्त भी हो। प० हरिश्चन्त्र विद्यालकार ने इसी इस्टि-कोता से प्रायंसनाय के सक्तिप्त व सुबोध इतिहास की रचना की को वर्षीतक परिषद् के पाठ्यक्रम मे नग रहा । सार्य कुमार परिषद् भीर उसकी परीक्षाधों के समाप्त हो जने पर इस उपयोगी सन्य की पुनर् मावृत्ति भी नहीं हो सकी।

१६७६ ई० के बस्त में सुप्रसिक्ष इति-हासज्ञ डा॰ सस्यकेतु विद्यालकार ने बार्यसमा । के इतिहास लेखन व प्रकाशन की एक महत्त्वपूर्ण योजना बनाई। इस योजना के प्रन्तयत ७ कण्डों में बार्य-समाज के समग्र इतिहास को प्रकारित किया जाना है। श्रव तक इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थमाना के तीन सच्छ प्रकाशित हो भुके हैं। प्रथम साथ्य के धन्तर्गत भारतीय इतिहास का विस्तृत उह पोह करने के पश्चात् नवर्जै।गरण के बान्दोलमी की पृष्ठभूमि तथा उनके धाविभवि की परि-. स्वितियो काविषद मूल्याः न किया गया है। तदनन्तरस्वमीदयानस्य के जीवन-वृत्तको किङ्मियत् विस्तार से प्रस्तुत करने के पश्चात् उनके निधन काल तक की बार्यसामाजिक गतिविधियो का सम्बक् विचार किया गया है। इस इति-हास का तृतीय सण्ड १६=३ ई० मे प्रकाशित हुमा, विसमें पार्यसमाज के शिक्षा विषयक भवदान का विस्तृत विवे-चन किया गया है। प्रम्थारम्य मे बारत

(क्षेत्र वृष्ठ ११ पर)

बृक्त कबहुनहीं फल भवी, मदी न सर्वनीर। वरनारथ के कारने

> साकुन थरा सरीर ।। पिवन्ति तवा स्वयमेय नाम्म स्वय न लाग्नित फलान गृक्षा । नामन्ति सस्य कालु वारिवाहा परोपकाराय सना विस्तुतय ।।

यह सस्य है, वृक्ष कभी फल नही शाते, यचारि कम उन्हीं में समते हैं, नदिया जल नही पीती मेच की महत्ता भी धनन की हरियाली के हेतु है, पर वह धन्न मही साता। ठीक इसी प्रकार सण्यन पूक्ष्मों का जीवन परमार्थ या परोपकार के निए होता है। यूगो से मानव परोप-कार के विषय में यहा सीचता तथा करता बाबा है। परोक्कारियों ने कभी भी 4इ नहीं सोवा है कि परोपकार के पश्चात उन्हें किस फल को प्राप्त होगी। बे तो निज्हाम आव स लोक हित ने लये रहते हैं। बडारही पुरालों में महाभारत-कार महाकवि व्यास के दो ही तो सार वचन है-परोपकार से पुण्य होता है भीर परपीवन स पाप।

पशोरकार पुष्याव पापाय परपीडनम्

श्वभूष, उनके ये वचन वर ही मूल्य-बान् स्रीर विसम्रता है। परोश्कार सर्वात् दूसरों के दुव से प्रवित होकर उनकी सहायतः करना। वही तो रिपेश्कार है। यदि हुम स्रीत सोमकर देखें तो प्रकृति के स्वर्ण बात्रों तर परोशकार की स्वर्णिय सावस्थंक कहानिया अफित पार्येग।

परोपकार वह वर्ग है वो वर्गों का वर्ग सक्ताता है। अस्य वर्ग मफील हो खकड़े हैं विखर्मा पे के में मफील हो खकड़े हैं विखर्मा पे के में ममेन पुरे का बात होना खम्बन नहीं, किन्तु परोपकार कर्म मृत्र है, वो बीव माल को पुस मफील खमा सामन्य धनिय से मोठ-मोठ कर होता है। परोपकारी व्यक्ति स्वय स्वार्थ होना होना है। किन्तु उठका परोप- कार ही है। किन्तु उठका परोप- कार ही है। किन्तु उठका परोप- कार ही उठकी समर निष्य वन जाती है। की हो होना होना है। किन्तु उठका परोप- कार ही है। किन्तु उठका परोप- कार है। किन्

परोपकार

श्रमित प्रनाप नारायस सिंह

स्वत कर जाती हैं। विकेशन तथा हिंदा मान् को वा स्थान विश्व में नहीं विकास वह एरोफसां की निमता है क्योंकि विकेश को मत की दिन्न वे देखा व स्थान किया जाता है। दुविशान व्यक्ति उतारी सम्मान की जावना पर ह्या बाता है। किन्तु केवक परोपकारी हो वहें (हमारे स्मृह को) बीत पाता है। हरि सनन्त, हरि कवा सनता की माति परोपकार की कवा भी समन्त होती है। वह प्रोपती का जीर है निस्का कोई सन्त नहीं।

सहित बयानन्त का जीवन परोप-कारी जीवन रहा। उनकी एक घटना सनिये—-

एक बार की बात है कि स्वामी बी युनसाम जगह ने ठहरे हुए थे। वे शीव बारहेवे। एक वैश्याकी एक नाते ने फसी हुई बी। गाडीवान वैसी को शेट रहाया। स्वामी जी ये देशकर वहा पर पहुचे और गाडीबान से बैसी को बाडी से बोलकर ग्रलब करने को कहा भौर स्वय बाडी को कवे लगाकर बाहर निकास विया। स्वामी जी के परोपकार के साब साब उनकी शक्तिका भी परिषय मिलता है। हमारे देश में सनेक परोपकारी हुए हैं—वैसे किवि राखा। उन्होंने एक पक्षी की रक्षामं भएना मास ही नहीं शरीर तक दान दिया। दशीचि के विषय मे नहीं जानता जिन्होंने जीते भी परहित मे धस्थिदान कर दिया। इन महामृपरोप-कारियो की गावा कवियो की वाणी में सवा धमर रही है, केवस परोपकार के कारण —

राहिमन पर उपकार के, करत न पारे बीच। मौड दिवो शिवि सूप ने, शीन्ह्यों हाड दवीवि॥ निरामाचीका बोवन परी दार का एक अनुका उदाहरण है ---

एक समय की बात है कि निराता ची पूर्णंत नया शाक्त भोड कर इलाहा बाद में बूम रहये। उस समय सर्दी का मौसम था। एक निकारी सर्दी से ठिठर रहा था। निराना भी न उसके दूस से इवित होकर उस धपना नया शास उतार कर उसे बोडा दिया। यही तो परोपकार है। ऐसी प॰नानिराक्षाको के बीवन में कई बार घटी है। ब्रह्लास्था गांधी जी का अम्पूर्ण जीवन परोपकार का ही उदा-हरल है। उन्होंने हरियन वस्तियों मे मूम मूम कर दलित हरिजनो को स्नेष्ठ तमा परोपकार किया। कुळ क रोगियो को सेवाकर उन्हें ढाढस दिवा। परोप-कार की महला का क्या कहना 'यह वह जादू की छड़ा है दिसके स्पन्नमान स कलह, राग स्वाय हिंसा मय लालच चूला ईर्व्या बादि सभी वृतियो का सत हो बाता है। परोपकार से पूग कावारक सेसावारसा भावना भी गौरवपूरण हो जाती है। तुलसीदास जीन कहा है—

परहित सरिस धर्म नही आई पर पीडा सम नही श्रधमाई॥

ये परितया है बोस्वामी सुम्रशीदास भी के रामचरित मानत की। वास्तव मे परोष्कार स बढकर इस सक्षार में कोई वर्ग नहीं है। सक्षार में सत-प्रवत, मते-बुरे दोनों रहते हैं। एक व्यक्ति दूसरे की समाई के लिए प्रपता सा कुछ स्योद्धावर कर देता है। धौर हुसा प्रव सर की ताक में रहता है कि कम मौका सिन्ने कि दूसरे के सामने की परसी हुई बाभी पर हाथ साफ कर से। ऐसे जीग दूसरे की भनाई करने को कौन कहे, दूसरो की प्रश्नसा सुनने तक को भी नैयार नहीं होते।

महावीर जी मानव शरीर की सार्थ कता परोपकार में ही बतकात हैं—

परोपकार स हा बतमात ह— परोपकाराय फलिन वृक्षा , परोपकाराय बहन्त नद्य । परोपकाराय बुहुन्ति नाव परोपकारायम्बर ।रीरम् ॥

बातन में मानवता का चरितरन ही परोपार की आधार्गामा पर टिका हुग है। बाज तक इस ससार मे जो भी श्रमर हुमा है पशेपकर के ही कारण हरा है। परोपकारा व्यक्ति जन-जन के हुट्य को बिना दिसी प्रयास से जीत नहां है। लोगतत्र के इस युग में बनता जना-र्दन को प्रसन्त भीर वस मे करके स्वतः जनताजन दन वन सकता है। वह कभी कभी कल के अपेट मे नहीं सा सकता। au नी दीति से वह भवर अमर हो जाता है। घरान्कारी व्यक्ति किसी देश भीर श्रीमा के धन्नगत बाजा नहीं जा सबता है। व्हदूती का सुद्धी बनाकर स्वत भी सुक्की होता है परोपकार के "सी महत्त्व को स्वीकार कते हुए राष्ट्र दिव सै चिली-शरण गृप्त ने टीक ही कहा है-- वही मन्द्य है कि ज॰ मनुष्य के लिए मरे।

अस प्रत्यक मानव का क्लीक है कि अह परोप्तार के लिए सर्वेश मध्येक्षण कर दें। हो तस्तर है कि एस के दिल के प्रतिकार के स्ति हो तर है कि एस कर दें। हो तस्तर है कि एस कर दें। हो तस्तर है कि एस कर दें कि एस दें कि एस

है— परोपकरसा गया जानति हृदय सताम्। नहथन्ति विपदस्तेषा सम्पदस्तु पदे पदे॥

स्थित् – किन सज्यनो के हृदय में परोपकार निवास करता है। उनकी विपत्तियानक होती हैं तथापगपा पर सम्पत्तियों बाती हैं।

ग्रा॰ हाटा, पो॰ नदौली देवरिया

एक बार दिल्ली का मुनल बावचाह क्षावन प्रवादा । विकास कर वितास की बीतने प्राचा । विकास के राखा जबव वित्त वह बेककर कर के बारे वितास क्षोबकर दूसरी कबह मान गये और उनका केनापित कथमल चहुर की रक्ता करने कथा। पर एक रात की दूर से धनवर बाह ने उसे नोसी-के झार बाला। वितास विवासी धन एकदम चकरा करें, पर दुरुने में ही एक वितास का नहाहुर सबका स्वयेश की रक्ता के सिए मेशन मे

उस थीर बाबक का नाम वा पुता। उसको उस केवस सोसह वर्ष की थी। पुता वा तो बासक पर बडे-बडे बहादुर साम्ब्रीयों के स्थान यह सम्ब्रा साम्ब्री और

किशोरमञ्च-

वीर बालक पुत्त

बनवान् था। उसकी माता मीर बहिन भीर स्थी ने बुढ मे बाने के लिए उसे बुती हे बाबा दे थी। नहीं नहीं ने भी उस बनव बर मे न बैठकर हिषदार सेकर बपने देश की रका करने के लिए बड़े उस्लाह के साब बुढ़ भूमि में जा बड़े उस्लाह के साब बुढ़ भूमि में जा

शक्यर की सेना वो वागों में वेंटी वी। एक बाव पूरा के सामने सकता वा सौर हुवरा नाप दूबरी सौर पुत को रोकने के लिए था रहा या। वह दूसरे नाव को तेमा पुत की ना, पत्ती सौर वहिंग का पराइन वेकर विकत हो वती। वीपहरके वो कबदेन बक्ते पुत उड़कों गात पहुँचा, वेकता क्या है कि वहिंग सबाई में मर पुकी है, माता सौर क्यो बहुक की गोली खाकर समीन पर तब-फका रही हैं। पुत को गाल वेककर माता ने कहा— वेटा हम स्वयं जा ही है तू लड़ाई करने जा। लड़ ररज मं भूमि की रक्षा करना मरकर स्वग में जार रहम है मिलना। इतन कहकर पुत की माना ने आप छोड़ दिया। पुत की पत्नी ने भी स्वाभी की और भीर जाय वेदलत हुए प्राण स्वाय किया। युत्त का विशेष उरसाह और भीरतास फिर शाबू खेना का मुद्दाबला करना। माता की मरत समस की साक्षा पालन करने में उत्तने तनिक भी गुर पीख़े नहां किया और ज म भूमि के लिए सबते-सबते प्राणु स्थान दिय। इस मंदार स्वर्ण पहां हो पर शान रह के लिए इस सकार में कायम रह गयी। व्यासपीठ -

उपनिषत् कथा माला-७

सत्य की महिमा

प्रवचनकर्ता-वीतराग स्वामी सर्वदानन्द महाराज

बदो ध्रयवा उपनिषदों के समय में उन्दी के पठन पाठन का विचान था। झामार्थ शिष्यों को यही पढाले में। सर्वे भाषारण इन्हीं का उपदेश सुनत थे। इसमें सत्य की बढो महिमा गायन की गई हैं।

सस्यमेव विश्वयते मानृतम् ।

धर्वात् सव।ई सदैव विजयी होती है धीर भर सदा पराजित होता है । मध्य-कालाम भूग्यलवन हो अस्य एसाही सक्ता 🦫, परन्तु झन्त मे सत्य ही की विजय होता है। जिस देग में सस्य का मूण-गान होता है उसकी धवस्थाधच्छी होती जती है। सब सोविए 'सत्य क्या 🖁 ? एक मनुष्य को बोलने में तो देर लयानी चाहिए क्योकि बात सदा क्षोलकर बोलनी चाहिए । द्राप कहे, "लाबुजी! मोजन हमारे घर सन्ता।" यदि मेरी उच्छाही तो "हाँ कर देना चाडिए। यदि इच्छा नहीता'ना' सत्य का धनित्राव यही है कि सत्य बोलाभी जाये भीर उसका पालन भी किया जाये। यह कोई कम काम नहीं। भहाराजार सबन्द्र जी जिनके झाण गुण गान करते हैं जिन्हे झाप मर्यादा पुरुषोतम कहते हैं, भीर रामायण मे जिनका बुल-गान कन्ते हैं जिन्हें चाप ईव।र का धवतार मानते हैं यद्यपि वेद एसा नहीं मानता भीर शास्त्री का सिद्धान्त भी ऐसा नही तथा प्रार्थसमाज भी ऐसा नही कहता। उन्ही राम मे जहा धनेक गुण थे, वहाँ एक बडा मारी गुण यह भी चा कि वे सर्थ-बादी के बीर सत्य के विवा कुछ नही बोसते वे ।

स्तरण कं प्रभाव से प्रान आर्यसमान स्वर होता जाता है। अनुष्य का बीरव बहता है। पर-तुक्व ने जब बहुसन्य बोलता है। पर स्तुक्व का लासक भी करता है। यसन न तें साथ से भीर फिर देखें कि उन्ने दों के सिद्धान्त का तारार्ग नश

सत्य नाएक लक्ष्मा और भी है, जो दीनो नालो में एक जैसा रह नहीं सत्य है। सत्य वह है जिस्सा प्राप्त हैन प्रस्ता को पदाथा विजन समय पर बदल जय एक ने 'तन्न कहने हैं। परमात्मा सर्वय एक जैना नहने साला है। वेलिय एक मनुष्प मत्य नालता है और क्षस्य का पानन भी करता है। परन्तु वह मृति-पूजा

भी करता है। सक्षान और धविधा न उसे पन्ति कर दिया है। बेदों में निका है 'स्त्य की पूर्ति किया भीर जान के दिना नहीं हो सकती । परन्तु धाजक स स्त्य क्या है 'वस यही कि फूठ बोलो परन्तु उसे फूठ सिद्ध न होने दो। श्यायासय में क्या होता है 'गवाह बवाहिया देते हैं परन्तु उसमें किरना सत्य होता है भीर दिनना फूठ' जब विस्तात को धिक सभ्य नममता है उसी। 'र प्रपान निष्य क्या 'सिद्ध-भागण में हो मनूप का गैन है।'

परवारमा तीनों काल म सन्य हैं व परन्तु महात नहीं । महाति, 446 का एव-मृत्य "कहते हैं, उबका नाता तो नहीं होता परन्तु वह बदलती रहती है। कभी बचार के क्य में आ बाती है धौर कभी फिर महाति वन जाती है। यह सत्य ही पर-मारमा ह। देवेच सक्सक हैं।

प्रकृति भी सत्य है परस्तु उचका परि स्थान होता है। यहने प्रस्तु उस नष्ट हो आने सीर दूमरे पुन करट हो आने को ही परि-स्थान वहते हैं। जब प्रकृति में ही परि-स्थान है तो उसकी वनी हुई हर एक वस्तु में भी परि-स्थान समस्य होता। देखों एक खोटा सा वच्चाहे उसमें दान नहीं, स्थोकि बह , कुट नहीं बोनता। परस्तु बब वह सुका-स्वस्था में सा गया तो उसक वासपन का परिस्थान हुआ, फिर बुडापे में भावा तो पुडा ध्वस्था ना परिस्थान हुआ। इससिए सुम प्रकृति में काम से वकते हो। परसु स्थित न होने के कारण से ही वह सीन कालों में सस्य भी नहीं।

प्टह वी साल ही बीत है। वहीं बीत से यात्री कये थे। उन्होंने समनी मारत्वन की यात्रा का दिलहाल विकास है। उस सम्य जिनके पान कर पानी मा से के, इस निस्तान का सड मारतीय मितिस्थ केता किया करते थे। कोई स्वपने पर से ताल नहीं स्वय ता मा। सदि वह यात्री लेसक भैगस्पनीक साल यहा स्वय तो कहें कि निस्ता मा। सदि वह सात्री होता निस्ता मा, वह निक्चक होते स्रोर हो था। सब तो यहा दिन वहाड चोरिया होते है। स्टेसनी पर चपडासी निस्तान फिरत है कि सपना सामाल स्रोम तम रहता। मनु सी में सिस्त वैण का इतिह स सिक्सा मा, वह भी सामय

कोई सौर ही है।

कारणक्या है? हमारे उच्चकोटि के सब गुण नाश को प्राप्त हो गए हैं। सब मानो यदि मैं मूर्ति पूजा करता हू, ईदवर के प्रतिरिक्त किसी घौर के सामने हाब जोडता हुतो मैं उच्चकोटि के सस्य से गिर काता हु। क्या जीवात्मा सत्य है निष्वय बह सत्य है, किन्तु उशमे बन्यास' धा बाता है। वह शरीर से विकल्पित होकर शरीर के दुल को भपना दुल समक्र नेता है। यिन मैं रस्ती को सांप समम लूतो क्या उसमे काटने की शक्ति धा वायेगी[?] नहीं परन्तुफिर भी मनुष्य रस्ती को साप समभ कर भवभीत हो जाता है। अध्यास में यही दोव है, इस शिए वह सस्य नहीं है। प्रकृति ने परिणाय है और जीवारमा में बच्चास, इसलिए दोनों ही सस्य नही।

एक कवि कहता है— बुबा को जिसने विदाया, मिल गया उसको बुबा।

परमेश्वर के सिवा किसी और के सामें किए कुमाना खुवी है। इसमिए इंश्वर का ही पूजन करों। रंग्वर ज्वन के दूर होते ही इसके साम साम सम्बन्ध मार्च को सम्बन्ध भी जाता रहता है। मार्च कोई बनी हो वा मिर्चन रूपी हो बा पुरुष, बार का एक ही परमात्मा है। वहा एकरस रहने नाली बस्तु है। यरणु मारद-वर्ष ने उन भुगा दिया। यो जून बाये उसे सटकता ही बहता है। इसीविष्ट माइयों। एक सत्य को मानो। सारे भगड साम ही गिट जाते हैं।

उपनिषद वहते हैं कि व्यप्त सार के स्टा होते हैं। व्यप्त नाम विनता है? सामक का बी०ए०, एम०ए०, एम०एम का बीए भी विद्यानों को व्यप्त मुन्त भी विधिया मिसती थी। व्यप्त वह वा विद्यानों को व्यप्त मुन्त भी विधिया मिसती थी। व्यप्त वह वा विद्यानों को व्यप्त वा वा भीर वहें ऐसे वेस सकता वा वैदे में पुरुष्त वह वह है। परस्पतानों का एक वनन होता है। आप समझ वानें तो रोक दिसे वार्मिये। आपको दखेंगों के स्वान में ही व्यप्त मिस व्यप्त विद्यानों को हो वह मिस व्यप्त विद्यानों के हमान में ही व्यप्त मिस व्यप्त विद्यानों तो उसे भोदि न रोनेगा। साम्य वह कि वह उनका समामसीस है। परस्पान वहन विद्याना सरम

हुं, उसके साथ उसी का मेल होगा को सरवाबी, सरवमानी तथा सरवकारी हो। सरवमानी प्रवाद सरक के मानने वाले तो साथ भी होंने परस्तु सरवारी होना कठिन है। बच वे तीनो वालें मिल जावें तभी जान की पूर्वि होती है।

चपिनवारे में यह भी निला है कि
'ऋषि वह है जो नेव भीर सहनो का
जाती हो, जो दूसरो को सीचे मार्ग पर
जाती हो, जो दूसरा जाते हो भीर
जात का समुक्त करका हो जात पर
आप का समुक्त करका हो जात पर
आप का समुक्त करका हो । मैं मुख्या ह विडान्
कोन हैं ? आप उत्तर सेंग जो पढा-निल्ला
हो और कन उपार्थन कर लके। परस्पु ऐसे
समय नी बहुत मिल सकते हैं जो बन
जन कराते हैं ने नी विडान् नही कहना
सकते। इतिकाद वहां है कि—

विद्या ददाति विनयम् ।

विद्यः से विनय प्रप्त होता है। जिसने चपने वर्त्तव्य का पंचन किया है, बही मनुष्य विनीत है। 'विनय' उस ने कहते हैं कि यदि मनुष्य किसी की दुसी देखें तो उनके दूल में प्राप भी दुखी हो जाये। जब दुर्लहोगाती उसकादुःस दूर करने का यल भी सनस्य करेगा। एक विल्लीरी शीधे का नोमा लो। उसके पास गुक्ताव का फूल रक्त दो । वह उस फूल का प्रतिविज्य ले लेगा, परम्युक्या मिट्टी का देला भी वह प्रतिबिम्ब ले सकता है [?] कदापि नहीं । इसलिए विनयसील पूरव विस्तीरी गोले के समान है और सन्म सब अनुष्य मिट्टी के इसे के समान। विनयसीम ही सच्चा विद्वान् भी है, बातें बनाने बाला बिद्धान् नहीं।

महारमा बुढ वन में थे। एक किकारों ने पक्षी को बाज बारा। बढ़ विर गया, महारमा बुढ ने जे मैं बैंडकर का लिया और उसका बाग्रा निकान दिया। सिकारों ने कहा, '16ो मरा है। यह मेरे सीर के विराहें।' महारना बुढ ने कहा, 'बढ़ मेरा है, मैंन को बचाया है।' खिनका निर्णय यह हुसा कि सारने बाने ने बचाने बान का प्रस्थितर सिक्ड है

यदि मारका धन्त करए। पविस हो तो क्या वे प्रकृत समूल ही रह जायें? मैंने समुक्तमान से देखा। बहुत लोग कहते वे कि यह महास्ता गांवी का सक्य है। हि जुल से हु ली हैं। उनकी साखा है कि उनके लिए निवर लोज सो। मिंदर जोते ही प्रकृत विश्व कि ने कर उनके हि स्वका कर उनके हु कि हैं। जाती साथ है कि उनके लिए निवर लोज सो। मिंदर जी ही प्रकृत कर उनके ही हि का सक्या मिंदर की हैं। जो ते बात में मिंदर की हैं। जो त्वाका मिंदर की हैं कि स्वका कि साथ मिंदर की हैं कि से सक्या है कि साथ हैं। जो ते बी हैं। जो त्वाका मिंदर की हैं कर सक्या है जो हैं। साथ सक्या है विष्ठ जावेगा। किया सम्बाह स्वव हैं विष्ठ जावेगा। किया सम्बाह खाय है है यर की हैं सनके सब मां।

वार्यक्रमाम ने दुवंबता है। १७में

सत्य की महिमा

द्मजीवल नहीं शाया। पर तुको समाव मन्दर्भों का उपकार करे वह दुवला नहीं रह सनता। इसलिए धीरे घीरे इसकी कुबलत प्रवश्य दूर होगी। मैं बरेली बया वहां प्रख्तोद्वार पर व्यास्यान हुए। एक सज्जन ने प्रन किया 'बहाराज । प्रकृत **पै**र को जुती हैं उन्हें सिर के साथ कैसे मिलासिया जाये [?] सिरपर तो पमडी ह्यीरहेगी। मैंने उत्तर दिया मा^{ही} कभी कभी ऐसा समय भी बा जाता है कि यवडी पैरो प" गिरती है भीर जूट धिर पर पडती है।

यह बढाई का घमण्ड भूठा है। वडा बहुहै का ब्हाई का काम करे और अपने अनुसासे बड दीन करे। बड से बडा मनुष्य भी जब अपनी बढाई बाप करने समता है तो स्रोटाहो जाताहै सेवासे ही प्रचसा ओती है सन्त्री प्रश्नसा वह है जिसमे आति की महिमा है मनुष्य समाज की -बढाई है। धार मोटरें रखते है वड श्चादमी हैं पर तुजन यह कहा जाता है कि ग्रापका देग द सताकी श्रुसनाधी मे बचाहै तो सबे मनी की निदा होती है। ग्राकी भी। ग्राप उस निन्दा स वक तो नहीं सकते।

ऋि सब को एक समान मानता है न्मविकी इञ्डिमे सब स्रोग समानता रकते है। इस स्थान पर सब ही एक हो बाते हैं वर तुयह देश भाग्यहीन है। बढ वड लोग व माग विकात है परन्तु वह उनके वीखेनही चलता। समस्त देश सम्प्रदायो स अन्यया है। स्पर्य का ठीक प्रयोग नहीं होता यूरोप कीर समरीका वे ऐसा मही बहा जितना स्पवा है जाति के उप कार पर ०वम किया जाता है। परन्तु इस वैश्व में सम्प्रवासी बढ़ गये हैं और देश बट त्रया है। इसीलिए काम नही चलता।

सपुनतप्रात में मुसलमान भी हिन्दी जानसे हैं । जिला सागर मे एक मुखलमान इन्स्पनटर थी उसने बूढ का विवाह नाम की एक बढा घच्छो हिन्दी कविता किसी है। एक बाह्यण ने स्पया लंकर -सेठकी शादी कराई। इसमे उसी की दुदशाका वजन है। य^{ित} सभी मुसलमान हिन्दी से इब त्याग द ता कितना बमनस्य घट सकता है भीर एक मातृ भाषा होकर वेश का कितना उनकार हो ? परन्तु वही असम्प्रदाय का मत्यदा वहा भी है।

इन देश के दिझान् ससार को शिका दिया करते थे। इतिहास के नेत्र पाय हुआर वय से पीसे नहीं जाते । परम्तु इस केख का विगड साढ पांच हजार से भी आहें कि वय हो बये हैं। यह देश महामारत से एक इजार साल पहले से ही विनडने सना थी। अर्जुन के पूजने पर भी इन्म वेदो का पूरातया अनुसरसा नही करते इसीनिए दुवापारहे हैं।

उपनिषदों के समय में सवाई की प्रश्न बाहुमा करती थी। उपनिषद् पाच हजार वय से पहले के हैं। दशन इनसे भी श्रविक पूराने हैं। इनमें कोई सप्रताय नहीं सारस्वतः वीड कोई हो सब एक समान हैं।

किया से ही कर्मका विभाग है। न तो बाह्य ए ही घच्छा है भौर न शूद्र ही बुरा है। जब से यह सम्प्रदायों का ऋगडा उठा है इसने भारतक्य को कृष्णकर रस दिया भागसमाज को व्स सभालकर स ध माम पर लाना था परत धायसमाज स्वयमेव न गमल सका। इसमे सभनने की शक्ति भवस्य है। यदि यह समल जाये तो बेडा पार है। सतार बातों को बातों के ही रूप में मानता है। काम सर्वेव ग्राचरता से चलता है क्योंकि सदा सत्य की जय होती है चौर बसत्य की पराजय।

धाः कहेने कि शरीर नम नूत्र का स्थान है इसके सवाई कहा व ईरकर सत्य है वही निमन ३। परन्तु यदि यान किया भाव तो क्या प्रान्त नहीं हो सकता ? देखो बास विवाह भूठ है। पहले लोग बास विवाह किया करते थे। इसकी प्रशसा भी हाता थी। परन्तु जन यस्न किया गया ता रगही बदल गया। अब यही पाप समक्रा जाता है। हमने घपना कतन्य छोड विया तो दूसरे देशो न धाक्रमण किया। सहा बुहोन मुहुमबशीरी ने भारतक्व पर आक बराकरने से पहने बहा दो बादमी मेजे कि हिंदुस्तान का हाल मालूम कर। वे दो बच तक यहा रह यहा बान वा परतु सवाई से फिसबा हुना। दो बद तक उद्दोने यहाका हास देशा और धन्त मे यह पत्र सिसा कि हर कई दूसरों के हाची रोता है परन्तु हिन्दुमों को हिन्दू ही बरबाद कर रहे हैं। यह सात बाठ सौ साल पहले का दश्य है। वो समभ्रदार है उन्होते धर्मी को सवाई से बाना है। उसी सवाई का सहारा लेकर ससार वे सुकाया गय धीर सत्य स्वरूप परमा मा से निस समे।

भाइबो । बाद रखो भूठ बीमारी है भीर समाई त दुबस्ता । समाई से ही मनुब्य की बात बनती है। जो सत्यमानी सत्यवादी भीर सत्यका हे उसकी शनित और क्म को कोई भी नहीं रोक सकता। इस बात को सत्य मान लो मौर सब क्रचेरा दूर हो कावेगा । सब काम सचाई स वसते हैं। परमात्मा की उद्योतिया ज्योति कहा बया है। जिसक मन मे बहु ने उसी के मन में सवाई है। परन्तु हम तो अपनी पूजा भीर प्रापना में भो श्रुल करते हैं। ईस्वर को न भोग समता है। न उसके लिए पैसे ही चाहिएँ। मूर्ति श्री ने कही है कि कुछ समय से की के हम उस बीज का मीन समात हैं जो

हुमे ब्राप कानी हो । यदि पूर्ति ईदवर का कप हो तो उसके पुजारी दयावान् हो। परन्तु यहा क्या है ? बाबू स्रोग कहते हैं मनुष्य से भूगा नहीं करनी वाहिए। गाव बाले भी बही कहते हैं। परतुओं नाम मात्र देश्वर का पूजन करने वाले हैं वही कठोर हैं वही मनुष्य को धछुत समक्र कर उससे बुखा करते हैं।

बौद्धो का राज्य था। शकरानाय भगवान् सञ्जीन पहेंचे वहा ईश्वर का त्रचार किया । कई बादिमयों ने रोका न माने। धन्तत दरशार में पहुचे वहा फासीकी साक्षा हुई यह नियम था कि फॉक्नी देने से पहले सन्तिम क्लापुद्धी बाती थी। मन्वन् शकर ने कहा

जिसन मुमे फामी का ब्राज्ञा दी है उससे मिलना चान्ता है। शकर राजा के सामने पश हुए और कहा कि हेराजन् । मैं ईश्वर को मानता है। यदिवहन भी हो तो कोई हज नहीं परन्त सवि मेरा रेडबर हुआ। तो तुम्हारा क्या दशा होगी ? राजा की समक्ष में यह बात मा गई भीर वे छोड दिय गये।

ऋिंदयानाद ईन्वर की मानने वाले वे ग्राप ५०ट उठाकर ससार को साय म ग दिखला गय । यदि तुम भी यह च हते हो कि परमात्मा तुम पर दया कर तो परमात्माकी सृष्टि से प्रमकरो । यही सचार्र है यही घम है।

भगवान वस बदका प्रचर किए जा। है अनुन शहीदों का सरोकार किंग जा।।

> मनुष्य हा है टेक एक दल भाल ले। मानव की मित का ही सिगार किए जा।

महमा ग्रपार पार नही पा सका कोई। ससार सार सार का विचार कि हिम्मत न हार दार पार हो क रहेगी। भगवान् भरोसे पै तू सुधार किए जा।।

बिलदान शहीदी का रगला के रहेगा। चर्चाय द्वार द्वार बार बार किए जा॥

सन कह रहे हैं धाज धन्यकार छ। रहा। उजियार दीप ज्ञान ज्यगा कार किए जा।।

> हरेक कोई प्रपने कारोबार में लगा। उपकारियों के कार्यों से प्यार किए जा॥

माकार निराकार का पतातो सने तन। ग्रभ्यास ग्रष्ट ग्रङ्ग योग वार किए जा॥

> कैसा धर्मोघ धस्त्र बंद शास्त्र सूत्र सहा। ऋषियों की सम्पन्त का अनल्कार किए जा।।

भौरों को नहीं देख तो अपनी ही तरफ देखा। अपवान को ही एक तरफवार किए जा।।

> थम पन्त्री रूप इस्म का विसे नही नशा। अयाकुन कुमार भर के धुबाबार किए बा।।

> > रचीयता-प्रकाशवीर व्याकुल

श्रमृतक्लश

सुन्वम नेती है क्दम धापके मञ्जिस। धगर असने वाला हिम्मत न हारे।। वडा रह भाग भ नी पस्तीये हिम्मत से पस्ती मे । रसाई तो तेरी ए कास के पुतले खुण तक है।

> कुतुब ग्रगर जगह ोटने तोटल जाय । हिमालय बार्र की टोकर से भी फिसल अ।ये।।

ग्रवर चिल्लाभी पुणन की इप स जला जाय। धौर ग्राफ्ता। भी कदन सरूव दल जाये।। कभी न साहिब निम्मत का होसला दूटे। कभी न भूस से उसका जबीपै बल माये ॥ उत्साही बलवानात्र नास्त्युत्साहात्पर बलम्। सोत्साहस्य हि सोक्षेत्र व किञ्चिवणि दलमम् ।

भारत सरकार न स्वतन्त्रता के पश्चात् धनेको जन हिन की घोषण एँकी है जिनमें से सबसे सुदर धारा यह है कि सरकार देग स गरीवी और वकारी को दूर करेगी ताकि मभी लोग सम्मानपूरक धपने जावन को व्यतीन कर सकें। इसी के लिए सरकार ने पाकिस्तान की नकल न कर भारत को हिन्दू राष्ट न बनाकर इसे मिश्रित देश घोषिन किया ताकि भारत के सभी निवासी इने भारता देश मानें और सम्मान के साथ पूजा पाठ करें तथा नमाज बादि पड । सरकार ने बानी बोधना के सनुवार गरीनी बेकारी की दूर करने का ग्रन्छा प्रयत्न किया । लालो नोबो को गरीबी मिटी तथा साखी की नौकरी मिली परन्तु दुर्माग्यवश समस्या ज्यो की स्थी बनी है।

सरकार को धपने प्रयास में सफ लता मिली परतुदेग्म गरीबी भीर देकारी पहले न समिक है। इसका मुख्य कारण यह है कि भारत की जनता सर कार की घोषणाओं की विताकिए विना समातार बढ रही है। मुख्य रूप स गरीब भीर वेकारी की सस्या प्रधिक बढा है। जनसंख्या की बढि के साथ शिक्षा संस्थाओ की सहायता स ब्रजुएटो की सल्या भी बढ वई है। इसके प्रतिरक्त यात्र के नवयुवक भी श्रव गाव में न रहकर शहर में रहना बाहत हैं। जो बाब में भी रहना चाहत हैं हो जमीन का बोडासाहिस्साजो उन्हें मिल रहा है उसमे उनका निर्वाह भी मही हा सकता है। वस शहरा मे बाकर सोव नौकरी चाहत हैं। नौकरी न मिल हो वे लोग समाज विराधी काय करत हैं। डकैता में व पढ जन नहां पढ़ांल के लाग

गरीबी वबेकारी कैसे दूर होगी?

-प्रोमप्रकाश त्यागी

हा गह काय वाते हैं।

जन बृद्धि को सरकार ने सेनिक्सी ज्यानिक के कामक्रम से रोजना चाहा। परन्तु के स्थ बात का है कि सरकार पुश्चमानों से दर गई भीर देश का जनरा के लिए एक फीसभी ज्यानित बना। मुख्यमानों ने मन यह त रूप से कह दिया कि यह जनके कम के बिद्ध है। सरकार के किसो व्यक्तिने मन पह चानने का प्रमत्त नहीं किया कि मुख्य प्रधान यम की किस बारा का वह विरोध करती है। वैदिक्त कम रह वात को ठीक नहीं समस्ता कि मनुष्य के जम्म की रोका जाय परन्तु देश की समस्या का स्थान कर उन्होंने भी इसे स्वीकार किया है।

गरीबी और बेकारी को बढाने वासी

जब पाकिस्तान, जबला बेछ तथा इ होनेलिया धपने यहा पंजिस्ती व्यानिय सभी धनों धोर सम्प्रवास के लोग पर स्थान कप से लागू करत है। परस्तु हमारी सरकार ने ऐसा नहीं किया। इसका हुव्य-रिणाम वह हुआ कि कैमिसी व्यानिय केवल हिन्दुओं पर लागू हुआ और हिन्दुओं के सभी यह लिसे लोगों ने इसे स्थीकार कर लिया। गरीब लोग बन के लोग में धा गए।

सीमान्यवश स्व • सवयवाची ने इस तथ्म का स्वीकार किया और सरकार के जोनों को धादेश विए कि छन की फैमिकी प्लार्निन हो । उसके विरोध स्वक्य पुनान में इन्दिरा नाबी की जाये परात्तन हुई निरोध मुस्तानामों का मत सरकार के विरोध में नया।

फैनिनी प्लार्गन के द्वारा हिन्हुको के निनाय की शीवा को देख तोत्रों ने हरका निरोम किया। धायसमाम सैसी यस्थायों ने दशका निरोम किया वहां कि फीनवी प्लार्गन प्रच्ये करतु है परन्तु देश के सभी भोनो पर बाजू होनों साहिए। चर्चनाल समय के निका अकार यह यात्र हिन्दु समुदाय बस्सी ही समाप्त हो बाएगा। यह सरकार को बाहिए कार्यकार एक सा कानून बनाइ। धार्यसमान इसका प्रवत्न स्वादा नाइ।

हमों को सपने टी० मी० चादि के कार्य क्रम के प्रचार कर रही है। सरकार का एक विभाग दश्री काय में क्या हुआ है। वह सब हिल्लुमों को असाते हैं। स्वया को नहीं। यही कारख है जैनिको प्लानिय फेना हो गया है और परिचाय करपना छे हुए हैं। कारच वह है कि जनस्वया को बुद्धि का यह सामा नहीं कर सकता है। परिचाय यह सि के बेच में करी सी और वेकारी वड़ी है। कम नहीं हुई।

सरकार फनिली प्लानिवकी सण्हा

गरीबी और बेकारी के बढ बाने पर देश में एक नहीं धने को समस्याए पैदा होनी और बनता की बब्ट में सरकार **धरफस सिंड होगी। सरकार को विदित** होना चाहिए कि गरीबी और बेकारी की इस करने के लिए चीन सरकार ने एक बज्ने से दूसरे की अनुमति नहीं दी। उनका यह नियम चीन की समस्त जनता पर नानृहो रहा है। परिणाम यह हुआ। कि चीन की बनता की वृद्धि पर सरकार का नियतम हो नया है। नरीबी तथा वेकारी को दूर करने के लिए सरकार की एक कानून फैकिसी प्लानिंग का दनाना ही होगा। उसे वह शास बनाये या कमा बनाना ही होवा : वतमान रूप मे वह हिन्दुओं को समाप्त कर देगी सन्य कुछ नहीं। यदि यह बेल चलता रहा तो दो हवार शतान्दी में बेल कुछ भीर ही होका सरकार की अबूरदांखता का ब्यान करते हुए हमें इस कथन में सत्यता मानूम पडती है कि - भारत क मुस्सिम ससद सदस्य हव की सनामों ने कहते हैं कि वह श्रीघ्र-ही भारत में मुस्सिम सरकार बनायें है। वदि ऐसाहुमा तो फिर सरकार को पश्चताना पडवा भीर उत्त समय वाहते हुए भी कुछ नहीं हो सकेगा। इसलिए सरकार को तुरल्त ही अपनी भूस सुभार कर फैनिकी प्लानिंग का एक कानून बनाना चाहिए और जो इसका विरोक करे उसे देशहोड़ी घोषित करके उसके साम किसी प्रकार का समभौता नहीं होना चाहिए।

सरकार ने समय पर यदि इस दिखाः में कानून नहीं बनाया तो कुछ समय के पश्चात् इसे पश्चताना पढेगा।

लाला रामगापाल शालवाले श्राभनन्दन समिति श्रद्धेय नाला रामगोपान शालवाले के मिनन्दन के मवसर पर

> ११ लाख रुपये की सम्मान राशि सकलित करन के सम्बन्ध में निवेदन

वानेवीयक बाय प्रतिनिक्त कमा के गवस्त्री प्रधान श्रद्धय बाला । रामयोगान बालवाने के प्रतिनायन के प्रवहर पर उन्हें ११ लाख क्यर की सम्मान राजि मेंट करने का निरुचय किया नया है। सम्मान राजि कीय के लिए कन सस्त्र करने का कार्य सारक्ष हो पुका है। इस सन्त्र में निम्मतिर्वित बात बातक्ष है।

- (१) प्रधिनन्दन समारोह के शाय सम्मान राधि मेंट करने वे पोखे वह भावता है कि प्रनिमन्दन समारोह की स्मृति में एक स्वामी को को स्वापना को जाने, जिसके तुन से बहायता काल (निवेषकर प्राम्यशास के क्वारक), इट वचके-एकी विश्ववादी एवं निरामित महिलाची तथा पुत्रोच्य विद्यार्थियों की बहुत-बता) मोरला प्रकृष्ट एवं मानगीय साक्षा जा, के प्रिय कार्यों को प्रोत्याहन दिवा जा छहे। इट स्थापी कोच का निर्माण वावदीविक बन्ना के प्रत्युप्तेत होता और पुत्रदाद इट समारी कोच का निर्माण बावता जीव दिवा बच्चा है।
- (२) सम्मान राशि के लिए वन सग्रह शावबेशिक तथा की रहीद दुकों पर किया बादेश ताकि दाताओं को आवकर से सुट का लाज प्राप्त हो तकें। को बल साववेशिक कमा में सीमा प्राप्त होगा, उसके लिए यहां के शोव दिशेष की बेख ही बाएगी। सावदेशिक समा में पैक सबसा कैंक मुस्ट हारा ही वन वावेशिक समा प्राप्त होनी से साववेशिक समा में किया पर हवके मुख्यालय यहाँव दवानक सबस प्राप्त का प्राप्त में हवान साववेशिक साववेश
- (२) आवसमानो तथा प्रन्य सत्याघोँ (विशेषकर शिक्तस सक्याघो) को बाहिए कि वे बनराधि एकपित कर उसे नैक या नैक ड्राफ्ट द्वारा सार्वेदिशिक सभा को वेखें । (४) बाव प्रतिनिध समाएँ प्रपनी रसीद कुकों पर वन स्वष्ठ कर सक्सी हैं। विष

मिल वायेगा। अन्यया जिन बाताओं को आवश्यकता होनी, उन्हें आवकर छे मुक्ति का प्रमास पत्र बाद से सार्वेदेशिक सभा की घोर से भेज दिया जायेगा।

- (१) वन समह मनियान में उन स्टरनामों के तकालको एव महानुषायों का सहयोक प्राप्त करना वाहिए विनकी माननीम साला का के प्रति ता है भीर को उनके प्रिय कार्यों के समयक एव सहयोगी रहे हैं।
- (६) जातम्बाहें कि बार्व प्रतिनिश्चित्र समा उत्तर प्रदेश ने १६ मई ६५ को नेरठ के सम्मान पासि के क्या के क्या है कि सम्मान पासि के क्या में कम से कम एक लाक रूपने का सहुत्रोम प्रवान करेंगे। सम्य साथ प्रतिनिश्चित्र समाने से में प्रतिनिश्चित्र समाने से में प्रतिनिश्चित्र समाने से में प्रतिनिश्चित्र प्रतिनिश्चित्र प्रतिनिश्चित्र से में प्रतिनिश्चित्र प्रतिनिश्च प्रतिनिश्चित्र प्रतिनिश्चित्र प्रतिनिश्चित्र प्रतिनिश्चित्र प्रतिनिश्च प्रतिनिश्चित्र प्रतिनिश्च प्रतिनिश्च
- स्वान-स्वान पर इव कार्य के बिय स्वानीय और क्षेत्रीय समितिया भी विकत की वा सकती हैं, परन्तु ऐसी बिक्षी भी समिति को वन सम्रह से पूज हम के सबवा उस प्रस्त की प्रतिनिधि समा से सनुवित प्रास्त करना सनिवास है।
- (द) वक समृद्ध के बिए प्रवित्तन्त्वन समिति ने भी कच्ची रसीवें ख्याई हैं। इस रसीवें पर प्रत्य बन के बिए सार्ववेषिक बना की तब्की रसीवें नाद में बन प्राप्त हो बाने के कपरान्त मेवी नावेंगी। वह पनकी रसीव स्ताराधी को प्रवक्ता वन वस्त्रीत करने वाली स्थानार्थी को नेवी नावेंगी। इच्छुक व्यक्ति स्ववदा सस्वार्ट प्रतिनान्त्रन समिति को पन निवकर कच्ची रसीवें समझा स्वक्ते हैं।
- (१) वन तमह के लिए अपील का जी प्रकाशन किया जा सकता है।
- (१०) वान-वालामों के नाव वार्वविधिक एव आर्ययमाथ की आप प्रमुख पित्रकारों में प्रकाशिक किए वाले रहेंथे।
- (११) इत विवय में सम्य राज्योजन्त स्वया सम्य वातकारिया स्विकृत्य समिति से प्राप्त की वा सकती हैं। प्रवरीय होत्यान वरणाह स्थापारमञ्जू

राष्ट्र को दुरित, दुर्गैति से बचाने का उपाय (पृष्ठ २ का क्षेत्र)

है -- देश के दायुमण्डल को सुद्ध करने के किए न्यायन्तानी पक्षपान रहित भीर शीघ्र निर्णंय करने वाली हानी चाहिए। बाब देश में घाराची की बाद सी बा रही है। डाके, बलास्कार, हत्या धीर चोरी के समाचारों से प्रसवार परे पड रहते हैं डाकुमो मे माडित भीर गरीबी से पीडित कोन नहीं हैं। बी०ए० घौर एम०ए० हैं। नई दिल्ली में बैक खजाने को लूटने बाले सम्बन्न घरो के भीर उच्चिशका प्राप्त युवक ही वे । उत्तरप्रदेश और मध्यप्रदेश के बहुत के डाकुकों की समस्या वहां की सरकारों के मिए बहुत बढ़ा सरदर्द है। इन बुराइयों के बढने में कतियय ग्रन्य कारणो के साथ सबसे मुख्य काश्य न्याय-प्रशासी की शिथिसता, त्याय की प्रति-व्यवसाध्यता, धपराधियो को मुक्त कराने के लिए राजनीतिक नेताओं के दबाव बादि कुछ ऐसे कारए हैं कि जिनसे बाप-राधियों को दण्ड का भय नहीं रहा।

हुने जो ग्रग्नेजो का ढाचा उत्तराधि-कार में मिला है च। हे वह विध्या का क्षेत्र है भीर बाहरायालय है हम उन्हें उसी श्रकार वसीटेले जारहे हैं। इसस कितनी श्वानि हो रही है यह विवारने और करने का किसी के पास समय नहीं है। प्रधान अपन्त्री भीर मुख्यमत्री जब पहुची बार पद सम्भालते हैं, बढ़ी वड़ी योजनाएँ जनता के सम्मुख रकते हैं। किन्तु कुछ ही समय परकात् नही पार्टी न ससन्तुष्ट तत्त्वो को सनुकृत बनाने में, कही विरोधी पार्टियो की बोजनाएँ ध्वत्त करने में सन्नेप स कश जाये तो सारा समय भीर शक्ति अपने धविकार की रक्षा में ही निकल चाता है। सामाजिक जीवन के परिष्कार के लिए कुछ रचनात्मक काम नही हो वाते ।

हुमारी न्याय पढिल ईसाइयों को न्यावन से प्रभावित है। विसके फिन्सन के मुख्य केन्द्र जिन्दु यह है कि पान के प्रकार के स्वाप्त है कि पान के प्रकार है कि पान के प्रकार है के सिर्फ असीह भूनी पर चढ मने । किसी के मन को डुक नहीं होना चाहिए। किसी उहूँ शाधर के सन्दी में उनकी भावना के नि

वय गुनहगारों पै वेकी रहमते परबरविचार । बेगुनाहों ने पुकारा हम गुनहगारों में हैं।।

बन सपराधियों पर प्रभुका विक्रेष क्यामान देवा तो सुद्धपदिन व्यक्ति स्त्रोधने मने कि हमसे तो ये ही सम्बे रहे और वे निशंच होते हुए भी प्रभुके क्यान पान ननने के लिए चिम्माने सने । हम भी पाणी है, इसारा भी उद्धार की किये।

चौबी श्रीर पाववीं कोकसभा की सदस्यता के दस वर्षों से मेरे निर्वाचन क्षेत्र में ११ से कुछ समिक कृत्म के केस हुए।

होना यह चाहिए हि साथ के कानन में कुछ धरानी प्राचीन दण्डप्रक्रिया के उपादेश करों का समाचेश करेंद्र इसका स्वक्य तेजस्त्री बन ना चाहिए जिससे धाराच्ये धार्ताकत हो। उदाहरण के लिए में चाराव्यक्त के चीरिन्य ध्रयजास्य की एक बात का उत्स्व यहा करता हा।

चाणक्य ने लिया है कि यदि चोरी की घटना कही घर जाने तो उस क्षेत्र के पुलिस प्रधिकारी का मादेश होना चाहिए कि तीन माम के बन्दर चोरी का पता लगाकर गये हुए मान को उतके मालिक को दिलदाये और घाराची को उचित दण्ड की ध्यवस्था कराये। यदि अलिस ग्रमिकारी नियत सर्वात में चारी का पता न लगा सके तो कोरी यो हर माल की क्षति-पृति उस अधिकारी के वेतन स करानी चाहिए। यह जान कितनी उत्तम है। इस नियम का पहला लाभ तो यह होबा कि पुनिस जनता के जानमास की पूरी चौकसी से रक्षा करेगी धौर यदि कही दुर्घटना होनी तो पूरी सतकता से नाल का पता लगायेगी और दोवी को वण्ड विजयायेगी। दूसरा लाग यह होवा कि जनता का सरकार मे विश्वास बढेगा भीर वह भपने को सुरक्षित कर पूरे उत्साह से उद्योग बन्धे बनायेगी।

इस समय भारत में ग्रन्केर मचा हुया है। प्रविकास बारावी वयनी कमाई मे पुलिस को मश्मीदार बनाकर निर्भयता से दुग्कर्म करते हैं। उन्हें पता है थाने म पहल तो रिपोर्ट ही दज नही होगी। यदि ले देकर रिपोर्ट लिकी भी गई तो उस पर कार्यवाही कुछ नहीं होती। पुलिस की इस प्रवस्था पर पंजाब के एक धार्य प्रवा रक बड़ी मनोरजक कहानी सुनाया करते वे - "एक मीरासी के घर में चोरी होने पर तसने वाने में रिपोर्ट दर्ज करादी भीर वहासे तफतीश के लिए पुजिस आसी। मीरासी हुक्का यी रहा बा। पूजिस के ब्रविकारी ने मौके का मुबायना किया और मीरासी से पूछताछ करते हुए चोरी में गये सामान का व्यौरा नोट करना प्रारम्भ किया । नकवी, वर्तन-भाण्डे, काड लिक्साविये । पुलिस धाफिसर ने पूका और कोई चीज तो लिखनी येव नहीं
रही। भीराती ने कहा यह जिल्ह पुरु के
एक बार चुना बीचिय । पुलिस वाले ने
तक चीजें पड़ दो । भीराती ने कहा हमने
एक हक्का और नोट कर वीजिये । पुलिस
काले के सारवर्ष से भीराती को देवने हुए
क्या हैं भीराती ने कहा दम वेवकर
सारकी मेंट प्ला करना भरी धार स
तो नया है। इस बान मे कोई धीन स्व भीरित नहीं हैं। यहने निर्माण स्वी भारति के विश्व के स्व भारति हैं । यहने में रिपोर्ट वन निर्मा बाती हैं वब कुछ चड़ावा चड़ा दिया जाता है। तेन वेन और परिचय प्रमाव का क्षम कही-कही तो हाईकोर्ट नक भी पीक्षा नहीं कही तो हाईकोर्ट नक भी

देश की झारराजिक वृत्ति में सुधार के निए इसम परिवतन करना होगा। हु किसो को यह विज्ञास होना चाहिए कि हम राजकीय व्यवस्था से सुरन्ति है। तो मनन में गहनी बात यह कही गई कि स्थाय बीझ सुक्त भीर निष्यन होना चाहिए।

सन्त्र की दूसरी बात है कि गासक बसंग्र बा को धपना सन्तान के समान रिव समके। बेना कि कालिदाम ने रख के राज्य का बनान करते हुए लिला है 'सा पिना पिनर तामा केन न जन्महेनता। समस्त्र प्रजा का नास्त्रीका निता रज् ही बांडन के माता पिना तो केवल जन्म देने बाने की शेष प्रतीयना के बाता- बरण में प्रकाजन राष्ट्र की रक्ष के लिए बड़ से बड़ाल्यान करने को उद्यन हो जाते हैं।

रामावरण भीर महाभारत में हम पढ़ने हैं कि जब राम धीर पाण्डब कर को जन तो पीछे पीछे प्रचा के लोग भी लाख चल दिया गढ़ धारतीयता का सम्बन्ध बासकों के सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार का ही गरिलाम था। तो मत्ल में परामधं दिया कि जानक बग परिवार के समान धारतीयना से जनता के सथ वरते।

म त्र की तीसरी बात है शासक बाकान्ता धीर शबुबो से राष्ट्र की रना करने वालाहो। राष्ट्रीय सेना दक्षा कीर न देन सम्पन्न हो जो शत्र को सँहतोड उत्तर वे सके। यह शक्ति तभी आधारा जा सवनी घीर वीरपुरुप राष्ट्र की रक्षा-पश्ति को सम्मालेंगे विलासी ग्रीर ग्राशास राष्ट्रकी रतानही कर सकते। मृत्यों के शासन के प्रतिम दिनों में इसी तरत के दुर्गुंगों से राट्ट दुवन हा गया ग्रौर विदेशी माक्राता यहां की प्रजाको स्र मानिन करके यहांकी संगर सम्पनि को जिन्द भौरतस्तन। उस्म तक को यहाँ में लेगा थे। तो इस प्रकार के दुबल राष्ट्र मे प्रन्य नय दीय भी था जाने है। धन देण के प्रहरी सबसी देशभक्त और बीर हो तो ऐसे राष्ट्र मे पाप भीर भागित नहीं होती ।

श्रार्यं प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के तत्त्वावधान में गाँव उत्तरीला

गौण्डा में ११ मुसलमान राजपूत शुद्ध हुए

दिनाक १६ ५ ८ थी १२ वजे वार्यवसण्य उत्तरीला में सुद्धि कार्य तथ्यल । उत्तरे ११ मुक्कवानी ने दरक्या वे व्यक्तिश्ती वारण दिया और तथ्यित र वेदिक वर्ष की दोता ली। दश्यों के वारण विश्व कर्यों की दोता ली। दश्यों के वारण महामन्त्री हिन्दू गुंधि तथ्यलग्रीण क्रिति हुए वार्ष कार्यक्ति क्षा कार्यक्ति कार्यक्ति क्षा कार्यक्ति कार्यक्ति कार्यक्ति क्षा कार्यक्ति कार्य

	पुराना नाम	नया नाम	पिनाका नाम	
t	लास मोहम्मद	चन्द्र बहादुर निह राम सवारी	वास्ति सभी	
			पति - चन्द्र बहादुरसिंह	
		क्षपरानी	पुत्री ,	
		चम्पा		
		पता	. , ,	
		वेतकी	, , ,,	
•	न्र मोहम्मद	धशोक विकास थारा	भलक शमशर व पा	
•	न्रवहा	सरोज देवी	प^नी प्रशोक विक्रम थापा	
3	हसीना	कु॰ भाशा	पुत्री धशोक विकम थाया	
80	फरीदा	कु० सारटी	पुत्री, , ,,	
11	सरोज देवी को एक बच्चा दो तीन दिन मे होने वाला है।			
	प्रधान बार्यसमात्र	मन्त्री प्रार्थसमाज		
	उत्तरीला (गोण्डा)	उत्तरीला (गीण्डा)		

हे धार्य ! उत्साह ही बलवान होता है, उत्साह से वढकर दूसरा कोई बला नहीं है। उत्साही सनुष्य के लिए ससार से कोई भी वस्तु दुलभ नहीं है।

निक्स्साह निरानन्द निर्वीयमरिनन्दनम्। मास्य सीमन्तिनी काचित् जनयेत्पुत्रमीदशम्॥

कोई भी साता ऐस पुत्र को अन्य न दे जो उत्साह तथा धान-द से हीन हो, जो निर्वेश एवं समुग्नी को असन्य करने वासा हो।

ससार मे सबसे कराब दिवालिया वह है जिसने प्रयना उत्साह स्रो दिया है।

समाचार-सन्देश

समाधान कब श्रोर केंसे ??

समम सौर पवाद समस्या का विर-रात कर देवकर कुछ किनो के तिए लागों के दिल में एक उहारत बैठ गई थी। परन्तु इनके सीझ टल ताने का नोई मार्ग न देव कर मजबूरन कोगों ने इनके साथ सम-मौता करके राहुँ प्राप्त कर का सदस्य मान स्थपन साथको सामान्य करने का स्थास प्राप्त कर रिया।

सभी क्षोग स्रपने सापको परिस्थिति कै सनुकूत दालने का प्यास ही कर रहे वे कि गुजरान के 'स्रारक्षरा विरोधी सान्दो-सन'ने स्रपना सर उटा लिया।

यहाँ प्रदन इस झाग्दोलन के घोषित्य या धनीक्ष्य का नहीं है, विलेक प्रवन है सोवों को घानित का, शुंच कैन का, वोचन स्त्रीर शुरका का, घाये दिन ने सकस्या प्रवना नया हो क्य प्रस्तुत करती दिखाई हेती है। 'बाब यहाँ दाने मरे, घाव नहीं इती बानें गई, घाव खुर घोन कर दो की हुखा कर दो, घाव खुर दाने कर बर-बार हो नवे" आदि धाद। इस पर माकाख-बारही से प्रवादित स्त्राचारों में भी एक सन्वादन होता है। हुमैका मही सुनाई देता है— "शहस्यावाद में हुई रिकक पटनाओं में बाज बात व्यक्तियों की मृत्यु हो वर्ष बोर १ द पायल हो गये। इसके स्रतिस्कित किसी प्रथिय पटना का कोई भी समाचार नहीं मिला। कुल मिना कर क्लिकि कान्ति पूरण है।" प्राक्तिय के सानित पूरण स्थिति कर तक बनी रहेंबी?

बाये दिन बदती इन बारवारों न सामाजिको का जीवन पूर्युलमा समुराजि कर दिया है। क्या कराइ के पाव कार्ड में ऐसा ठोस कार्युक्तम नही है विश्वके तहत इस समस्या का कोई सौजिस्स पूर्ण हल निकाला जा सके? यों तो हमारी सरकार प्रतिदिन विश्वकाशिक की बात करती है, परजुक्या सपने पर को क्या सारत बनाकर विश्व शालिक की करपना की जा सकती है? क्या सरकार पर जन सामान्य के कीवन की मुरला का कोई दायिक नहीं है? यदि हैतो साजिर सस्ता निर्देश का बीर कैसे किया जायेगा?

> प्रेषक— गिरीशचन्द्र शास्त्री ४४२३ द्वार्ये पुरा सम्बोग्ण्डी दिल्ली—७

सम्पादक के नाम पत्र

विकासवेजी (तीमसनाडू) से सकर मकोइस तहसील के क्वालुश्ती गांव का यह समाचार प्रकाशित हुआ है हैं से सहाई समाचे स्वालित प्राद्धार स्वालित प्राद्धार स्वालित प्राद्धार स्वालित प्राद्धार स्वालित प्राद्धार स्वालित प्राद्धार स्वालित स्वालित प्राद्धार स्वालित स्वाल

भारत में स्वाइयों के पोप की वाजा सभी होनों है और ईमाध्यों ने हिल्हुयों के रिति-रिवाब तथा मान्य वार्मिक परम्पराधों में बाबा पहुंचाने के रस वग में तेची पुरू कर दी है। स्वाइयों की ये हरकतें वारी रही तो सारक्य नहीं कि वे हिन्दू विश्वास्यों को नाम वस्तने के लिए भी अनक्ष्र करें। ईमाई पन में समहित्युता बहुत पुरानी वात है। हिन्दू वमं के प्रति वे मृशा भी फैलाने हैं। पोप के सामसन के सनवर पर कर रही यह धर्महिल्लुता सोर वृणा जनके भारत तीरे से धौर प्रविकास मुद्दूत होने वाली हैं।

इसी का उदाहरण यह भी है कि केरल में निलाकका शिव मन्दिर के क्षेत्र में चर्च की स्थापना की गैरकानूनी माग को फिर से उठाया जा रहा है। इसके जिए ईसाई चर्चों की झोर से २ करोड़ क्पये एकांत्रत करने की मशा घोषित हो चुकी है। ईसाइयों की इन हरकतों से सम्पूरा देश में बसन्तोय स्थाप्त है।

हसाजिए हवारी सरकार को गम्भी-रतापूर्वक यह सोचना चाहिए कि इस पांचा के प्रमुक्त देवा कि इस दोष की पांचा की प्रमुक्ति देवा कहा तक योग्य है? भारत स्वय महान चांमिक देख हैं। हमारे यहा मानव कत्याण के विए बड़े-बड़े सायु-सन्त हुए हैं। भारत में उपदेश सेने के लिए हम विदेशी प्रचारकों की कोई प्रावस्वकता नहीं हैं।

सनावनवर्धं बन्दिर, सक्ष्मीबाई वगर, नई विस्त्री कविराज बनवारी लाल

(स्वामी बोबानन्द)

गांदा का देहावसान

धार्थ बनता को यह जानकर दु का होगा कि धायसमाज के उपवेशक एव कवि डांग वनवारी साज शादा का हुव नति बन्द हो जाने से वेहास्वान हो चया। धारां की धार्यक्रमाज माडल बस्ती के वर्षो मन्त्री एव प्रचान रहे धीर प्रति रविचार को धार्यक्रमाजों में प्रकारोपवेश के खिले जाते थे। धारित्स शोक विवस्त वृक्षमा रहा होन्द्र को खार्यक्रमा प कवे धार्य-समाज शोकस बस्ती (धीरीवुद्रा) में

गुरुकल करतारपुर में अब टाईपिंग की शिचा भी

धार्यसमाज ने जन-जन तक हिन्दी पहुँचाने का वो सराहतीय कार्य किया, भारतीयताको जीवित रखने मे उसका महत्त्वपूर्ण बोगदान है। उसी का परिस्हाम है कि हिन्दी भाषा साज राष्ट्रभाषा के पद को प्राप्त है। यह हम नव के लिए गौरव का विषय है परन्तु प्रग्नेत्री के प्रभूत्व के कारण हिन्दी सभी हमारे कार्यावयों में स्थान नहीं से पायी। दुस्ट की धन्तरग समाकी सत्त्रेरणातया नह-योग से श्री गुरु विरजानन्द वैदिक सस्कृत महा विद्यासय ने प्रक्तूबर १६८४ से खात्रों के लिए टकण कला (टाइप) का नि शुल्क भ्यवस्था कर प्रशसनीय तथा प्रमुकरातीय पम चठाया है। इतना ही नही सपित् हमे यह भी विश्वास दिलाया गया कि हमाने गुरुकुल से विद्याधिकारी वा लास्त्री कक्षा उत्तीर्वक्षात्रों को बोकि पत्रसेखन कला तवा गणिय में विशेष गति रखते हों, उन्हें अपने भौद्योगिक कार्यासर्वी में स्नातक के समान वेतन तथा सुविधा पर कार्य प्राप्त कराने में महयोग दिया जायेगा। हमें पूरा विक्वास है कि हिन्दी धौर सस्कृत प्रेमी उच्चोगपति हुमारे विद्यार्थियों की अपने कार्यालयो मेन्यान देकर दृस्ट के इस महान कार्य में भपना सहयोग प्रदान करेगे।

हवं का विषय है कि जुलाई ११८ इ. वे खानों को नुकर्नीनिंग तथा प्रकाउच्यैक्षी तिसाने की भी व्यवस्था ने बा रही हैं। इन सभी कार्गक्रमी व जहां एउनों का प्रविध्य उठकल एव समुन्यत होगा बहां राष्ट्र की भी महान् क्षेत्रा होगी।

चस्कृत वर्ष विकार तथा स्कूलों में पढ़ाके काने वाले विज्ञान, प्रशिवा, प्रश्नेती आदि सभी विपयों के नाय नाय वर्षन कोसी का खात्रों के तथा कहा का से कहा नाय के खात प्रत्य स्कूलों में शिक्षक के कप में, कार्यकाण्ड कराने में पुरोहित के रूप में वार्षिक संस्थाधों में प्रशासक के कप में, तो कार्य कर ही सकेंग्ने स्माक के कप में, तो कार्य कर ही सकेंग्ने समाक के कप में, तो कार्य कर ही सकेंग्ने समाक के कप में, तो कार्य कर ही सकेंग्ने समाक कार्यक्रिय सामा कर सामा कर

इन्छुक अभिभावक प्रपते बच्चों की वाखिल कराने के लिए नीचे लिखे पते पर तुरन्त मध्यक्षं करे। नया प्रवेश १६ जून १६८१ से बारस्प्र है। छात्रो का हिन्दी बाज्यम से कला १ पास होना जकरी है।

> प्राचार्य स्री मुद्द विरजानन्द वैदिक सस्कृत महाविद्यालय, करतारपुर, १४४८०१ विसा वालन्यर (पदान)

लुधियाना में विशाल वैदिक सत्संग सम्पन्न

बच्चों के चरित्र निर्माण वार्मिक एव नैतिक विका के लिए प्रेम माइल हाई स्कूल लुक्याना में धार्य युक्क सभा की भोर से शनिवार १६६ १८०६ को एक वैदिक सत्सय का धायोजन किया गया। सत्सनका बारम्य एक यज्ञ से हमा जो कि प्रसिद्ध विद्वान् प॰ रामकुमार, जी मार्थने सम्बन्ध कराया। श्री प्रेम जी वर्मा सपरिवार यजमान वर्ने । इस प्रवसर पर श्री रोशनलाल जी शर्मा संयोजक बार्य युवक समा पजाब के नेतत्व में बेद प्रवार सजन मण्डली ने प्रभूमनित, मान-बता तथा देश प्रेम के नीतों एव अवनीं पर श्रावारित विशेष कार्यक्रम प्रस्तुत किया । भी कैंचाश जीशर्मा प्रधान श्री मन्दिर कमेटी ने समा की स्रोर से श्री प्रेम भी वर्मा को वैदिक साहित्य मेंट किया । श्री श्चर्मा जी ने नवयुवकों को धाशीर्वाद देते

हुए कहा कि मार्ग दुवक बचा ने देखिक वर्ग की ओ ज्योति कवाई है, इबसे कवा को एक नया राज्या नियंता। से भी प्रत की पहर्म पार्थ्या नियंता। से भी प्रत की वर्मा ने सभी महानुभावों का क्यावाद करते हुए कहा कि उनका स्कूल वच्चों की प्रत्येक प्रकार की उन्नित के किए प्रवांत् वार्येक प्रकार की उन्नित के किए प्रवांत् वार्येक के किए कार्येक के प्राप्त के साम्यक्ष कर किए कार्येक के प्राप्त के साम्यक्ष किए कार्येक में भी इस क्षावा में कार्यों के अधिभावकों ने वही सक्या में मार्ग किया। वार्ये प्रवक्त करा हारा सक्क पर सामार्थी में के भी देश के अपने समार्थ मार्थ के साम्यक्ष की कार्यों के कार्यक्ष कर साम्यक्ष की स्थान की स्थान की स्थान की सम्यक्ष की स्थान की सम्यक्ष की सम्यक्ष की स्थान की स्थान

स्रक्तु भारद्वाच, महामन्त्री सार्य युवक सभा, लुवियाना ७६१, सिविल इस्पताल रोड जुवियाना, (पवाब)

निर्वाचन

धार्यसमाण चूनामध्यी पहारमण नई दिल्ली का नॉपिक निर्माचन १,६,८३ रविनार को प्रातः १-३० बजे श्री धाचार्य क्लदेव जी की धम्पशता में निस्न प्रकार

हुधा—
प्रवान—श्री प्रियतस्वासत्रो रस्तवन्तः
उपप्रधान—श्री बन्सीसास श्री पाहुबा
छपप्रधान—श्री बन्सीसास श्री पाहुबा
छपप्रधान—श्री प्रेतप्रसास श्री पोपड़ा
उपप्रधान—श्री प्रेतप्रसास श्री श्रीह्वा
संगी—श्री स्वामदास श्री बचदेवा

चपमत्रो—की सतीश वी माटिया
उपमत्री—की विजय जी पाहुवा
प्रवार वत्री —भी देवराज जी राजपाल
नेशाम्बल—भी विरवीत सात जी दुग पुरत्काम्बल—भी वेग-प्रकास कपूर
लेखा निरीक्षक—की भन्यक्रमार कपूर
सविष्ठाता सार्थ
बीरस्स—सदीस जी माटिया
स्वारक—भी विजयकुमार पाहुबा
स्वारक की विजयकुमार पाहुबा

मंत्री

श्रार्यकुमार सभा का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दांतों की हर बीसारी का घरेलू इलाज

23 जडी बटियों से निर्मित

आयवैदिक औषधि

बाय कुम(र सभा किंग्जबे कैंग का अर्विकोस्सर य यममात्र मन्दिर हुन्सन आर्म मे १ मई को सम्पन्न हुआ। इस श्रवसर पर वस्ताओं ने श्रायकुमार संभा के संगठन का मजबूत करने पर जोर किया । भीर सभा के सन्ते बीदक साहित्य के प्रकारत के प्रशासा की । समा है? से डा॰ सतीनचाव पुत्ररिजा को सम्मानित क्रिया गया श्री देवेग्द्र पूप्ता स्थागताध्यक्ष के मना की उल्लेखनीय कार्यों पर वार्षिक रियोर्ट पढी। वक्ताधी में श्री सरदारी सास वर्मा तथा श्री सैराती लाल माटिया एव डा॰ सतीशवन्द्र धार्रिय व्यता थे।

इससे पूर्व बाबसमाज स्वापना दिवस मी बडी धमधाम स मनाया नया जिसमे दिस्सी ग्राय पतिनिधि समा के महामन्त्री ने मनुर्भव पर प्रशाक्यूच भावता दिया। उहीने प्रकाशन विभागकी सरहनाभी को। समारीहका उदघाटन कुमार समा के प्रधान श्री परीक्षित सहगल ने ध्यान-



रोहणा स्थि। राजिशाल मे श्रीप० सत्यकाम बद ल रार के प्रवचन तथा श्री महाबीर प्रनाद सागक भाषको का भी प्रभाव भा शति उत्तम ग्हा।

उमेर कुमार

सधादक क नाम पत्र

निवेत्म है कि १६ जन १६८५ के क्षायन देश के बाह में पुरु सं०६ पर ण प्रप∘ धम पाल जील स्त्री का वर सद्य का हिंठभूमि पर सिहाव भाइन परनय धर मलीमाति प्रति प नित सब बाद्याप तपदा। बादरणीय नाश्त्री जी नसके निशः बचार्टके पत्र हैं।

वित्रसम्बद्धालम ३ पैरा त न पर "तपय व हास कहना है ऋस्वेद क प्रकाश स्थानि र यज्ञवदका प्रकाश वयुपर साध्वणका प्रकृत सुयनामक दबनापर हुन्। किल्नुब्स प्रुवना से ध्यववन्ता छ ह या सना^क, सका कारण क्या वे । क्य "त्यथ ब्राह्मण स्थ बवेद की स्वतन्त्र सत्ता स्वाकार नही

GEHIN 509 4 " 4 00 582036

करता। काया इस पर प्रशा उ लिय भीर बताइये कि यता देवल तात बदी का ही जनस किया गया है।

बद स॰ सत्य विद्याभी की पुस्तक है। यहावद का पुस्तक क्यो कहा गया है। यदि प्रस्तक कहना हा समित्रन है ता की पुस्तक होनाचाहिए ग्रथवा का व है रदना चाहिए यह भूल प्रस का है या महर्षि दयान द की मातभाषा हिन न होने के कारण है। क्या प्रस्तक के स्थान पर ग्रन्थ याध्यय कोई पर्याय प्रस्तन किया जा सकता है।

भाशा हे मेराइस जिझ सा कापूरा करने। मनी मगल कामनाओं के साथ। वैद्य निरजनसाल गैतन

आर्यंसमाज का इतिहास

पट ४ का दोष)

को सिम्पात्रसाली का एतिहासिक प्रस वक्षण करने के पश्तान् ब्रिटिशागाननकाल मे विदेती नासको द्वर भागाई गई शिक्षा नाति का भी सतक वि नवण किया गया है। अनक शिश्राग सस्याओं की स्थापना के कला संनेकर उनक प्रद्या विवि वृक्ताला उपस्थित रण्या भ इस ग्रन्थ का प्रमुख लक्ष्य हा है फनत भारत में सरकार के पंचान किं। के क्षेत्र म सर्वाधिक यागनान क श्रायसमाज के एनट विशयत ग्र कासमग्रचित्र प्रतत करा प्र ब्रन्थ का सह व निर्मिशद व विवस का द्विताय स्वण् १८ ४ र्वम प्रका किन हमा निममे स्वाम त्या त क निधन रालस लेका १ अ **प्रयसामाजिक जग**न की ग⊣विज्ञिया को विस्नारपुवक निन्ति क्या गय है। साय = दिना म न ति ता नदो म । या प्रथमाञ्च के उमप्रचर ४ यं का स्नित झाकलन भानि चय व इस ग्रन्थमाला के पूर्णवा जान पर सायममाज के प्रयति ग न धीर क्र न्निकारी मानालन की इतिहास यात्रा का समग्र विवरण लखबढ हा जायगा।



पैरिस ब्युटी सेल्स कापेरिशन

श्रार्य जगत की शान 200 बिस्तर वाले निर्माणाधीन

नेत्र चिकित्सालय

(अनमानित लागत दो करोड़ रुपये) के लिए दिल खोलकर दान दीजिए दान की राशि ग्रायार श्रिषिनियम जी । ८० के धतर्गत कर मुक्त होगी।

सारा दान . चैक/मनीझार्डर/बैक दास्ट द्वारा मत्री, माता चन्ननदेवी धार्य धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय, सी-१ जनकप्री, नई-दिल्ली-४८ के पते पर भेजा जाए। दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर अकित किए जाएगे।

निवेदक

रामधोपाल शासवाले सर्वदेव नहासय वर्गपास धोमप्रकास सार्व संरक्षक चिकित्सालय प्रयान, विल्ली SWIM धार्य प्रतिनिधि धार्व केन्द्रीय एवं प्रचान, सा॰धा॰ प्रति० समा वेरि॰ इ॰ सौजन्य से महाक्षियाँ दो हुट्टी प्रा० लिमिटेड, १/४४ कीर्तिनमर, ब्रोद्योगिक क्षेत्र, नई बिल्ली-११००१

रजि० नं० डी (सी०) ७५% ३० जुन ११८५

"आर्य सन्देश"

बैदिक सरक्रति के सन्तमन स्परेश को. पहेचा रहा है सपनी रपदार तेच कर। वैदिक-विद्वान्य प्रतिरादित पुनीत प्रिक, विद्वार्गों की नेखनी, सुत्रोनित हर क्षेत्र पर ॥ तर्क का कुठार सिवे ऋषि का भूकाता ऋसा, वेता है सवनुनों की हुवन में रेख कर। विस्ती भागे प्रतिनिधि समा का है मुख पत्र, शीध्र बाहक बनिवे लिएं बीस ६० जेसकर ॥

—स्वामी स्वरूपानस्य सरस्वती (बाधिकाता बेदप्रकार)

वेद प्रवचन

शार्यसमाज सुदर्शन पार्फ के सत्त्वाव-वान में सामवेद पारायण यश्र(परिवा-रिक)२८ वर्ड ८५ से प्रारम्भ हुवा जिसकी पूर्वाद्वति ३० जून को सम्मन होनी। प्रस्थात विद्वान् विश्वानम्य जी खरस्वती बी पवारेंगे। ग्रार्थ जनत् के भीर जी क्ल-बान्य विद्वान् नेता प्रधारेंवे ।

कार्यक्रम प्राप्त ८०० स ११-३० बजै तक रहेगा यज पुरोहित विद्वान श्री भारत मित्र ज शास्त्री हैं। सभी वर्ग-प्रेमी सज्जनी से प्राचना है कि समय से पचार कर कार्यक्रम की स्रोमा बढाएँ एव वर्म-लाभ करें। धन्यवाद ।

सुदेश चन्द डीगरा, मन्नी

प्रवेश श्वारम्भ

दिल्ली बार्य प्रतिनिधि सभा से संबद्ध मात् मदिए कन्या गुरुकुल ही ४६/१२८. रहै बस्ती, रामापुरा बारावसी में शिख से बाजार्यं तक मे प्रवेश बारस्थ है। वैदिक शोष कात्राचीं को प्राथमिकता । उप्रपश्ची-पीडित परिवार तथा हरिजनों की पुणियों को नि मुल्कता में वरीयता 🗈 सम्पर्क सूत्र

डा॰ वर्गवाल सार्व सर्वदेव मन्त्री प्रधान

> डा॰ पुष्पावती मुल्याधिष्ठात्री

स्वास्थ्य उत्तम कॉगडो फार्मेसी. हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

वासा कार्यालय-६३, गसी राजा देशरनाय, फोनः २६६८३८ चावडी बाजार, विल्ली-६





पं० गुरुदत्त विद्यार्थी

ले०-सोमदेव आर्य, रिसर्च स्कालर

जो जानि या समाज अपने पूर्वजो एव महाप्तवों को सुना देती है वह सर्म पथ से च्युन हो जाती है। कारण यह है हि महाय धनुकरणीय प्राणी है। दूसरो के गुभ कर्म देल या किसी की प्रश्नसा मुनकर उसे भी सुकर्म की अभिजावा होती है। जिन लोगों के हृदय पटल पर अपने महाथनों के स्कुत्यों की स्मृतियाँ अकित रहती है वे उत्तरोत्तर उन्नित पथ पर समस्तर रहते हैं। पर जिन लोगों के सामने बहो का उत्तम आदर्श नहीं होता उनकी समाज एव जाति का इतिहास अन्दर हो जाता है।

आयंसमाज ने जाति और देश को जागृत करके जगत् में प्राचीन आयं संस्कृति को पुनर्जीवत करने का गुभ कार्य किया है। ऋषि दया-नन्द जी ने बार्य जाति को तप, त्याप, अर्थ, स्त्य, न्याय और परोपकार की दीक्षा का आर्ग विकलाया।

राजिका काला कलुषित घोर सम्बकार प्रतिदिन प्रकाश के हाथों पराजित होकर भी खुवन मास्कर को कलेने का कुप्रयास करने का बुध्टता से बाव नहीं साता। ऋषि द्यानन्द सूर्य को सनेक बार कढि-वाद के बादलों ने दकना चाहा।

जब स्वाधी दम्भी एव दुष्ट जन ऋषि का सामनान करसके तो प्रारा क्षेत्रे पर उतारू हो गये। कितनी बार दीप बुक्ताना चाहा पर बचाने वाना बचाता रहा।

बनात रहा। पण्डित गुरुदत्त जी का जन्म २६ मन्नेल १०६४ तवनुसार ६ वैशाख १६२१ को मुलतान मे हुमा था [भापके पिता का नाम रामकृष्ण था। लाला रामकृष्ण कारसी के योग्य

विद्वान् तथा पजाब शिक्षा विभाग मे बच्यापक थे। गुरुदत्त जी से पूर्व रामकृष्ण जी की गृहस्य-वाटिका मे कई पुष्टा खिले परन्तु वे सभी थोडे-थोडे समय के पदवान मुरभागये।

प्रारम्भिक शिक्षा घर पर होने के परचात जब ग्राप = वर्ष के थे तब नाला रामकृष्ण जी ने ग्रापको डिस्ट्रिक्ट स्कूल भ्रुग मे प्रवेश करा दिया।

जब धाप दशम कक्षा में थे धाप के साथ लाला चेतनानन्द व भक्त रीमल जी भी पढते थे। ये दोनो युक्त धार्यसमाज के सदस्य थे। इन्हीं को प्रेराल के धार्यसमाज के सदस्य थे। इन्हीं को प्रेराल के धार्यकों रिज धार्य साहित्य व धार्यसमाज में लगी। परिणाम स्वरूप २० जून १८६० के शुभ दिन गुरुद्दल जी ने धार्यसमाज को नत्य धार्यसमाज को नदस्य का फार्म भर दिया धौर विधिक्त मुग्नस्याज का स्वरूप वा भी विधिक्त वा भी सामल की स्वरूप वा भी विधिक्त वा धार्यसमाज की स्वरूप वा गये।

उन दिनो हिन्दुओं में वाल-विवाह की प्रथा थी। गुरुदत्त जी अभी स्कूल में पढ़ ही रहे थे कि उनका विवाह सेवीबाई के साथ कर दिया।

१८८१ में गुरदत्त जी का स्कूल जीवन समाप्त हुमा और पजाब विस्वविद्यापय लाहीर में एम० ए० प्रथम वर्ष में प्रविद्य हुए। पत्ते में भ्राप तेज थे। मध्यापक व इस्पेक्टर इस होनहार युक्क को देवकर म्राइवर्यं विकृत हो जाते थे।

गुरदार जो की विद्यार्थी जीवन के साथ और कई धनों ये उनके जिल्यों में से कुछ नाम पजान के सार्वजनिक जीवन में स्थाति पा चुके हैं। साना हसराज दीवान नरेस्न नाथ, लाना मनातराम लाला लाज-पत्राय ये लोग पहिल जी के केवल कालज मिस्र ही न ये, वे उनके

वार्मिक ऊहापोह के भी कई ग्रगों में साथी थे।

गुरुवत्त जी ने १८८२ में एक स्वतन्त्र वाद विवाद सभा की स्था-पना की। सर्वमम्मित से गुरुवत्त जी को मन्त्री बना दिया गया। लाजपत-राग मरीके नथा जनके सभी प्रमुख मित्र सदस्य बन गये। सब की आयु लगभग २० वर्ष की थी।

१८८३ मे ऋषि दयानन्द जी को दब में काच व विष मिलाकर पिलाया गया। फलस्वरूप उनकी स्थिति चिन्ताजनक हो गयी। चिकि-त्साकी गई पर सब ब्यर्थ। शीघ्र ही यह समाचार सर्वत्र फेल गया। सब स्थानो से श्रद्धाल ऋषिराज की सेवा के लिए राजस्थान की ग्रोर चल पड । लाहीर ग्रार्यममाज की ग्रतरग सभाने जीवनदास व गुरुदत्त को सेवा के लिए भेजने का निश्चय किया। सन १८७८ मे देव दयानन्द मुलतान ग्राये पर बालक गुरुदत्त उस समय भगमे वैठा थातव गगा घर भाई पर प्यास न बुक्तापाया। श्रव ध्यासा स्वय गगा के पास जा रहा है। २६ अक्टूबर साय को दोनो अज बेर पहच गये।

मांगरा गेट के बाहर मिनार हाउस में महाराज विराजमान य सारे शरार पर फ्लोले या हिंचिकियाँ मा रही थी। डा॰ लक्ष्मणदास की म्रोषिया बन रहीं थी। गुन्दत्त जो ऋषिवद की भरकर वीमारी के कारण उनसे कोई वानीलाप भी न कर पाये। केवन दर्शन हुए। पर जो बीज डार्बिन भीर म्येन्मर, न्युटन और बेकल से न मिल सकी वह मिल प्राप्त हो गई। जन्म मगलवार को

को हुन्ना था स्रौर पुनर्जन्म भी मगल-वार को हो गया।

घर ग्रांकर दो कपडो पर ग्रार्थ-समाज के पाँच पाँच नियम लिखवा लिये। प्रात कान जलपान किया। फिर एक कपटा भागे लटका लिया. दसरा पीठ से बाँघ लिया और चलने लगेऋषि सन्देश सुनाने के लिए। देवी ने देखा तो बिस्मित हो गई। हाथ पकडकर बोली---'पनिदेव, यह क्या हाल बनाया है ? क्या कहेंगे लोग ? 'इत्तर मिला' भोली त नही जानती । यह जीवन मेरा नही रहा। मैं इसे ऋषि के चरणों में द्यपित कर श्रायाह। श्रव रोम-रोम उनको घरोहर है देवी । कोई क्या कहेगा कोई क्या कहेगा-इसकी विन्ता कैमी?

पडित गुरुदत्तजी ने ऋषिवर को समभ लिया। वे जानते वे कि लोग श्रभी उस दिव्य देवता की समभ नही पाये । समभ लेगे तो इनका भी यही हाल हो जायेगा। इमलिए आर्थसमाज धमतसर के उत्सव पर भाषण देते हुए उन्होने कहा था। ऋषि के महत्त्व का लोगो को समय बीनने पर पता लगेगा, भौर वह भी जब विद्वान पक्ष त्याग कर उनके ग्रन्थो पर विचार करेंगे। स्वामी जी के ग्रन्थों को पढ़ने मे उनकी विशेष रुचि थी। इसलिए वे कहा करत र कि मैने १८ बार मत्याथप्रकाश पटा । पर मेने जब-जब पातव नव नई से नई शिक्षा ग्रौर जानकारी प्राप्त हुई।

१ जून १८८६ का दिन डी० ए० बी० स्कल की स्वापना के लिए निश्चित किया गया। ग्रत ३१ मई

(बोय पृष्ठ ११ पर)

सत्मंग राटिका

ऋषि वसिष्ठ।देवतावस्ण स्टब्स् विकट्यः

प्रन्य — य प्रांग चक्क व चित मून यानि बन्दा वयम प्रनागा स्याम प्रदिखे इतानि ऋचत यूयम स्वस्तिमि सदा न

षान्वाय — (य) जो प्रभु (धाय) धाराष (धहुव) करन वाल के प्रति (चिन) भी (वन्यांति) धराना दवाभाव हा गलता नः। (बरण) उम पुनन वोष्य प्रभुक तम ५ (वयम) हम (धनाया) निष्पाय (स्थाम) रहें। (धरिन) उन स्थाप देव के (बराति) मयान्या को (ख्यात) जानकर धावाण करत हुए विद्यन्तन (सूपम) धान सब (स्वरितान) ध्यापन के साश्याप उपयोगां और करामगां है (बदा) वस समयो म (न) हमारा (यात) एशा कांविया।

भील्या म ज में मुख्य प से दो बात कहा गया है। पहला यह कि अनु का दया और वात्त य का हाय ता लग हो अने व पर पहला अनु हो जीव पर पहला है कि वह मयादा का पालन करना हुआ विकास मार्थ के प्रकार अनु की मार्ग अर्थियत एहं। दूसरी यह कि विद्वानों का यह क्त-भ है कि वे जह सक्कान्त्र जीत की प्रमान्ध्र का दुर्ज से जानकर वामान्य जान का दितकारक ज्यवस स परिवास रहा का सदा परामण दत रह स्वान पर करन व अरक मा पर करन विवास का ना

म त्र र प्रथम भगम वहा गय ह कि प्रनुधनाध कल वला परभी दय भाव रखना **4 हवा**ताड पचाना है। इसका यह भाभाय नहां कि प्रनु दुष्कम क ғलानह दन स्रोर पूज पा स्या प्रायाचल मक्षम मिलाजना ै। णास्त्रयविजनना ५ हहै कि संभन्न र नुभ कभा काफल दुख ग्रार स्ख क रूप मध्यय भाग्ना पडगा न्याभ व का धा प्रयहै। क दूरकम का जा पल कना क सम्मुख कर रूप में ग्रात है उसमें यह ाहत निा_वत ह। मन मरे ब्र कम क फल है बन बाग नुस्स व समभ कर पुभ कम चन्त्र बाह्य भनाई गार दाता संग्वाल देपड्डमा ম রাব क गला पाभी करतास्त्र स्राप्त ५ कर≢ें न आसाक ।तक विग प्रय = । श्राम पू अं ४ रने रहे यन्प्रकृहिन कैकि कि पस को नित्यनाम न क कुछ धनाय मार विध्याभीकी सहायताकर नत है। व धपने मन म यन धारणा बनात है कि हानि तो एक का पहचान धीर लाभ पवास को प चाकर उनका गुभ कामनाएँ प्राप्त की तो अपना तो पुष्य ही वढ रहा

प्रभु अपराधी पर भी कृपाभाव रखते हैं

लखक-प० शिवकुमार शास्त्री

यो मृडयानि चक्रुष चिदागो वय स्याम प्रस्को स्ननागा । अनुवनानि स्रदितऋष्टं भन्ना यूय पान स्वस्तिमि सदा न ॥ ऋ० ७।२०।७।

*

है। इस्राध्यम मंबेथ्स पाप में लगे रहत है।

कित्वैदिक सिद्धालन यह है भीर बुद्धभाइस ही स्वाकार करता है कि ⊬ठकानूटन के पण्काफल कर्ताको किसान किसी काटक रूप में चहवह कष्टद्रार्थिक शांत रूप में हा या किसी मार रूप म सहना पत्रमा । साथ हा पचाम •सक्तियाका जालाभ पहुच या उसका फल भा मुख प्रयानाभ के रूप में उस प्राप्त होगा। प्रभू कमफल का व्यवस्था पक है भत पूरी नापतोल से फल भवश्य मिलगा। वेट क्रीर सस्कृत साहित्य से ध्यय शद स्वामा परमातमा धर दुकानदार का बावक है। "न तीना मे एक हानियम काम करता है किये कमक्ल हिसाब से देते हैं अवाषुच नहीं। किसी मित्र श्रथवासम्ब भाके घर आराप भाजनकर ताम्रा कलान कलिए गृत्पत भ्रकताकभाजा मि । याभीर पक्रव न तय।र ≉ गाम्रोर सब कुु करन परभाप्रम भौरनम्रत प्रकट करने क lलएकहगानि समुक समुक कारण **से** भाजन बर्धियातानहाबन सका पिर भा रुखा मूखा जमा है स्व कार को जिय। ग्रद्यक्षाप्रदक्षित्र 'क तनान गरापर भी यह कहा जा रहा है कि कुछ नही बन

व्मके विपरीत विगक का दुकान का इ.स. स.च. ग विपरात हगा। पार्वसा छ रुप्यकार्यसीयाम मिाडदन के लिए प्रानहलव से कहा वतराज क पल में ने से ग्राम डालने ५ बाद स हानराजका गापर दिन्जमादेना ब्रोर⊣रधार वालता हुमा वाकुछ ह्या शीक्षाहात पर कत्या— लाजिय । ग्रया २ लाम तुलुकमाद वकर सह क्हो क्या स्थान क्या है कुछ ग्रीरानातो वह तुनककर उत्तर देगा का क्_य टार्टसाग्राम पर सारा माल चाद दूवन ५ - १ ६ ५६ सद नाप ताल पर र ती है। स्वामी भा भूत्य को परिश्रम के धनुसार हा बतन देता है। ठीक इभाप्रकार प्रभूभाक मानुसार ही पल दनाहै हा प्रभुक दण्ड विधान मे माहित उसा प्रकार समाबिष्ट रहता है वैसे ग्रपराथ करने पर माला बच्चे को चपन लगाती हुई मन मे उसके सुधार की भावना ही रखती है स्त्रीर दण्ड देते हुए भी उसका ह्दय अवित रहता है। ब्से एक उदाहण से समस्त्रिय।

प्रभुत हम दस ज्ञानेन्द्रिया अपने कम सम्यादन क लिए दा है। मनुष्य का क्तव्य है कि वह पहले बुद्धिपूवक ठीक ज्ञान प्राप्त करे भीर फिर ज्ञानानुसार उसकाफल प्राप्त करन के लिए कम करे। उचित प्रकार से देखने सुनने की मयादा वद ने बतायी— शद्र कणसि श्रुणयाम देवा भन् पञ्जमाक्षभियज्ञत्रा । हम कानो से ग्से ग न सुन जा मस्तिष्क भीर हदय में सदिवार उत्पन्न कर भीर भारताने ऐसे रूप देख जो प्रभूकी महिमा को हन्य पटल पर सन्ति कर। वन उपवन के नाना ग्राकार प्रकार रूप रग गचान सुशोभित पौधे लता सौर पूष्प प्रनुकाक।रीगरी पर मुग्ध करने वाला हो याकिसा स्वस्थ सुदर युवक भीर युवनी का रूप सुधा एक साविक भाइताद मन म उत्पन्न करे और प्रभुके कौशल पर मुख्य शोकर हमार मुख्य से सहसा निकलप --

वो जुब कसा है जिसने इन हसीनों को बनाया है। इह जब वेकते हैं हम तो उसकी याद प्रासी है।

इस प्रकार के सिंद्रच रहते उदाल स्राचार के थिंग प्रराणा देंगे बीर हमारी इंग्लिया वास्तव में इंग्लिया होगी। इस्के विचरीत रखोगुण धीर तसीगुण ना चक्या चढते रखोगुण धीर तसीगुण ना चक्या चढते या दुनिया बदस आयमा रि उसके सनुसार विचार भी व्यक्ति धीर समाव का गिराने वाल होंगे। इस स्थिति का किसी गर्न के गायर ने सच्छा चित्र की चा है—

> विल के बुश्मन हैं उनके शौक में रहती है श्रीस । जान का मालिक जो है उससे नजर मिलती नहीं ।।

जब व्यक्ति एक बार पण भ्रष्ट हो जाता है तो फिर उसे बाव पर सामा दुःसाम्य होता है धीर परिएगसस्वरूप हुने प्रभुकी न्याय व्यवस्थाके सनुसार दण्ड भोगना पडता है।

हम सास रिक न्याय व्यवस्था मे देखन है कि यदि प्राप्त शक्ति भीर सामन का कोई व्यक्ति दूरुपयोग करता है तो उते उस वस्तु का धनधिकारी घावित कर के वह बस्त उससे भ्रीन ली जानी है ताकि उससे वह प्रपना धौर समाज का प्रविक महित व करे। जैसे कोई व्यक्ति भपने जीवन और सम्बक्ति की दध्शे से रक्षा करने ने निमित्त एक बन्द्रक सथवा रिवा ल्बर रखने की अनुमति प्राप्त करने के लिए सरकार का प्राथना पत्र है। सरकार के श्रीवकारी विहित प्राक्रमा को श्रानाकर यह जाच करें कि जिस उदृश्य के लिए गस्त्र रखने का श्राधिकार मामा गया **है,** बहकहा नक ठीक है 'प्राथना उचित्र प्रतीत होने पर उसे शस्त्र रखने का प्रमारापत्र लाइसे स दे दिया जाता है भौर वह उसका निष्ट मर्यादा मे उपयोग करता है। उस शस्त्र से वह न केवल भ्रपने जीवन भौर घन की रन्ताक स्ताहे र्मापतु पास पढ़ीस में सकट उत्पान होने पर उनको सरमण देना है। इस प्राचरण ते उसका विताभी प्रसान होता है ग्रीर समाजभी उसका यशोगान करता है। सप्रकार वह चाह जब नक उस ग्राध कार का प्रयाग कर सक्ता है।

अब इसक दुरुपयाय के उदाहरण पर
भी विश्वास की जिया अस्वर शेवन और
बात की रक्षा के लिए कि-लु गन्त के
आत ही विश्वार बदल गये थी उस
शहर कारा दूसरा के बत का अपहरण्
करने लगे। नै गन म बुस्टक में की
विश्वार बदल गये थी उस
शहर कारा दूसरा के बन का अपहरण्
करने लगे। नै गन म बुस्टक में की
विश्वार लागों में होने लगी और एक
ने साहस करके सरकार में गिंगेन भी कर
थी। सरकार न छ नशीन करन पर सिका
बत गैक पांधी ती धाता देकर उनका
बान सक पर कर दिया और गाइन क

टीक यही प्रक्रिया हम प्रनुकी ०य बस्थामे ना देखते है प्रपित् ऐसा प्रतीत होता है कि मनाधियों न लोक संसर्यना को बनाप रखन कलिए प्रमुक ० प्रवस्था के बनुसार ही घाना कानन नाया और तदनुसार प्राचरण किया। प्रव इसी उदाहरुए। को अनी इन्टिशो गर घा इय । जैसे पूर्व चित्र उदाहरण में ग्रास का उत्तरहराते ग्रस क द्वाग क्षर की निक्त का दुब्न योग हम और ज्यने द्रवटाके वासनाम / सम्कारो को भड काया। सदविचार कभी कभी ग्लानि भीर पदकात्ताय का भावन को उमारते हैं कित्व बासना की ग्राप्ती में उड जाते हैं। इस खिन मनोदगा का चित्रण कवि बिहारी ने बड स्वाभाविक रूप में किया

> लाज लगाम न मानहीं नेना मो दस नाहि। (क्षेत्र पुष्ठ ६ पर)

🛨 वचन-सन्देश 🛨

राजनीति और धर्म

मेरी सत्यनिष्ठा मुक्ते राजनीति के मैदान मे खीच लाई है: और मैं जरा भी सकोच किये बिना और फिर भी पूरी नम्नता के साथ कह सकता हूं कि जो लोग यह कहते हैं कि राजनीति मे घर्म का कोई वास्ता नहीं, वे नहीं जानते कि घर्म का धर्य क्या है?

म्रात्मकथा (म्रम्रेजी) १९४८, पृष्ठ ६१५

मेरे लिए घर्म रहित राजनीति विल्कुल गन्दी वोज है, जिससे हमेशा दूर रहना चाहिए। राजनीति का राष्ट्रो के हित से सम्बन्ध है। मीर जिस चीज का सम्बन्ध राष्ट्रो के हित से है, उसके साथ उस मनुष्य का सम्बन्ध होना ही चाहिए, जिसकी घामिक वृत्ति हो या दूसरे शब्दो मे जो ईववर और सत्य का शोधक हो। मेरे लिए ईववर और सत्य समानार्थक शब्द है। और अगर कोई मुक्त से कहे कि ईववर असत्य या अत्याचार का ईववर है, तो मै उसको पूजा करने से इन्कार कर दूंगा। इसलिए राजनीति मे भो हमे स्वगं का राज्य स्थापित करना होगा।

---महात्मा गाधी यगइडिया, १८-६-२५

सम्पादकीय

मौसम पर वनों का प्रकोप

प्राचीन काल से ही भारतवर्ष धपनी ज्ञान विद्या की समद्धि, धन वैभव को समृद्धि के कारए। विख्यात रहा है। यहां की बफ से ढकी पर्वत की चोटिया, उनकी कोख से फटते भरने, झठखेलिया करती नदिया, मीलो दूर तक फैले कचे कचे पेहो से भरे जगल, फसलो फलो से लदे सागर तक फैले मू भाग विदेशियों तक को बाकवित करते रहे हैं। गाव गाव, शहर-शहर, गली-गली, फलदार पेड़ी के कारए। सब कुछ हरितिपा से भरा-भरा दिव्योचर होता था किन्तु जैसे-जैसे वनो की पेडो की ग्रन्थार्थं व कटाई होने लगी घरती नग्न होती रुष्ट होती चली गयी। बादल रूठने लगे भीर रेगिस्तान के जबडे फैलने लगे। रेगिस्तान के बढ़ते काले सामे से बचने के लिए सरकार पेडो को लगाने में व्यस्त है। किन्तु जितनी तेजी से जगलों की कटाई हो रही है उससे भारतीय मौसम पर भी काफी असर पडा है। १८६४ से लेकर अब तक हुए अनु-सन्धान से पता चलता है जगलों के कम होने से किसी भी क्षत्र की वर्षा निश्चित रूप से कम हो जाती है। ग्रीर जगलो के बढने से छ प्रतिशत तक की बढ़ोतरी होती है। १६०६ मे मौसम वैज्ञानिक डा॰ ब्लाड नै यह बताया था कि वर्षाजगलों के कारए। १० प्रतिशत अधिक होती है। भारत में प्राचीन काल से यह माना जाता है कि बनो पर ही वर्षा निर्भर है। इम्प्रवमेन्ट आफ इडियन एप्रीकलचर नामक रिपोर्ट में डा॰ विलकर ने नोलगिरि की पहाडियों में कटकमड तथा उसके ग्रासपाम के क्षेत्रों में श्रांकडे एकत्र कर लगभग सिद्ध कर दिया है कि जगलों से वर्षाका सीघा सम्बन्ध है। नीलगिरि की पहाडिया १८७० के पहले वृक्षविहीन थी। जून जौलाई तथा धगस्त के वर्षा के महीनो को छोडकर यह प्रांका गया कि १८७० से ७४ तक वर्षा के दिनों की सख्या ३७४ थो। इसके बाद यहा वृक्ष लगाये गये और जगल फैलने लगे। १८८६ से ६० तक जब काफी जगल फंल गये थे उस समय वर्षा के दिनो की सख्या ४१६ आकी गया। कहने का अभिप्राय यह है ज्यों-ज्यों जगल फैलते गये वर्षा के दिन भी बढते चले गये । छोटा नाग-पूर का उदाहरण देकर मौसम वैज्ञानिक डा॰ रगनावन ने इस बात की पुष्टि की है जगलों का होना वर्षा के लिए ग्रावश्यक है। उन्होंने कहा भाज से ४० या ६० वर्ष पूर्व छोटा न गपुर मे जब काफो जगल मे उस समय यहा गर्म मौसन मे भी दोपहर के बाद बौखार मा जाया करती श्री। इस कारण यहा का मौसम इतनाठडा रहता थाकि यहा चाय की खेती भासानी से हो जाया करती थी। जैसे-जैसे जगल कटने लगे

वर्षा की बौधारों का धाना बन्द हो गया मौसम धीर वातावरण पर प्रतिकूल असर पडने से चाय की खेती भी बन्द हो गयी।

जगलों से वर्षा के सम्बन्ध का ग्रध्ययन इंडियन इन्स्टीटयूट आफ साइन्म बेगजुर की डा॰ सुनीचना गाडगिल ने किया तो उन्होंने कहा — जगलों के कारए। वायुका तापमान घट जाता है तथा पत्तियों से वाष्पोत्सर्जन के कारए। वाष्प घनत्व बढ जाता है जिससे वर्षा होती ' है। वृक्षों का भूमि पर घनता तथा पत्तियों को घारण करने की अविधि भी वर्षा के वितरण तथा मात्रा को नियंत्रित करती है। उन्होंने ; यह भी देखा कि पतफड वाले वृक्षों की प्रजातियां सदाबहार वाला प्रजातियों की तूलना में कम बाईना बनाए रखती है। बत यदि सदाबहार बनों की जगह पनभड वाली प्रजातिया लगाई जाये तो वर्षा कम हो जाती है। लखनऊ के पोलयो बोटेनिक्स रिसर्च इन्स्टीट्यूट के वैज्ञानिकों ने राजस्थान की खारे पानी की भीलो के नीचे दवे जीवा-श्मो का ग्रध्ययन कर यह पाया है कि पहले इस क्षेत्र में सघन जगल बे। बीरे-बीरे जगल कटते गये वर्षा कम होती गयी भीर रेगिस्तान फैलने लगा। अण्डमान निकोबार द्वीपसमूह, बिहार के राँची क्षेत्र, श्रासाम के डिब्र्गढ तथा बस्बई के सान्ताक्रुज क्षेत्र मे भी वर्षा की कमी का कारण जगलो भीर पेडो का घटना ही बताया गया है। इयोपिया मे तथा ग्रफीका के २५ देशों में श्रकाल के प्रकोप के कारणों में एक बात यह भी कही जाती है कि वर्षा के न होने मे जगलो की कटाई का महत्त्वपूर्मा योगदान रहा है।

मत इस विषय पर मनुष्यमात्र को विचारना चाहिए तथा नगरो झहरों मे फैलते सीमेन्ट के जगलों में पेडों की हरियाली मी बसायी जानी चाहिए।

—यशपाल सुधांश्



धार्यसमाज के सम्मूख जोरदार चुनी-निया हैं। हाव चुनौनिया कि जिनका उत्तर देना ही हे गायदि न दियाती इसकी समाप्ति निचित है। यह कटु है पर है संगाकर घोष की तरह इसे पीनाही चाहिए ग्रन्थवा । कोई भी समाज जब तक ध"न घर काधा ने संसमेट कर रस सकता ह तब तक वह सजी नशक्ति से घाष्टावित रहता है धीर जब उसके घटक विजयकर निष्ठावान् घटक ग्रपनी धाकाक्षाची की पूर्ति एवं मुरक्षा के लिए दूसरे समुनायों का मुह नाकने लगते हैं या दूसरे समुदायी का बज्ज बनते हैं तव समभनाच हिए कि उस समाज से रोग मर रहा है उसकी पाचन शक्ति कुटित हो रह है सोर वह दवत्र होता जा रहा है। जा चेतावनी देने पर भी उसके मुक्षियायाक णधारन चेतें ता समक्षना चाहिए कि राग ग्रसाध्य है।

कायसमाज ने राजनीतिक सहुन्दा-काश्माधी को पूर्ति के लिए तो अपने सदस्यों को दूसरे दलों में जाने को खाने छट दे ही रली की पर अब सस्कृति रला रला — राष्ट्रीय सक्ट के समय भी इसके महित्य घटक धार्यसमाज में काय-को को र जा रहे हैं को धार्यसमाज की रिक्षात कार है इसका मनुमान सहुज हो समाया जा सकता है।

स्रतीत में भी साथे जाति के पतन व विश्व न का दा न्य सही वा पानव सिक्त की क्यों, तक तो स्विवेक के कारण रुढि प्रस्त ममाज ने प्रस्ता तिनाश निया था। प्रकृती व्यक्ति के विवेक तक का धीन्क देकर पौर्य स्रोज व तेज कर मन्द्रज बमा दिया है पर वे सम्बन्ध हुमारे नेतृत्व गर्मे कृष्टित हो रुढे हैं। नेतृत्व प्रवान लोगे का यह साथं कार्य करेज व उत्तरसायित्व होता है कि वे समाज में नये शस्तिकोती का सन्वेषण करें नर्र-नई प्रतिमांशों के हते पुक्त करें सर्वामानी पीड़ों के निष् नये प्रकाब-स्तामी नीश के निष् नये प्रकाब-

दूसरे खब्दों में जीवनचारा के प्रवाह को सर्वेदा यतिर्शल रखें।

पर यहा उस्टी बात हो रही है। जो भी नया प्रसिद-स्रोत नृतन प्रतिका मार्थ क्षोजती है, जसे निस्माहित करक या दो इस दिया जाता है, या पीके बकेल दिया जाता है स्वयन उसके लिए कोई भूल-भूलीया का जाल रच दिया जाता है क्षियों उलक्ष कर या दो वह कार्यकें न की भीण हुए जाता है या भ्रम्य क्षमुदायों से पीण हुए जाता है या भ्रम्य क्षमुदायों से जा प्रस्ताह है।

सगन्त ग्रद्धवा बायुन नेन्द्रव मे कुम्ब-कीय शक्ति होनी है। उसमे उदारता, विकारतीलता एव समन्वयकारिता का गुर्मा होना है। यवायोग्य व्यवहार का

चुनौतियां और उत्तर

डा० पुष्पातती आचार्या मन्तु मन्दिर कन्या गुरुकुल वाराससी

ध्य यही है कि जा जिस हम्म की शमका रखता है उसका उसी कार्य में बारा हैता। धारिमक काल ने धार्यवस्ताक नेताधों में युग्य वे कोज-कोज कर व्यक्तियों ने युग्य वे कोज-कोज कर व्यक्तियों ने सात वे वे उन्हें प्रोत्साहित करते वे धोर कार्यक्षीं में तमते थे। स्वामी प्रद्धानस्त्रम् इस्ताब लेक्सान् मार्तातिह धारि क्यक्ति धार्यक्षमान को हती गुण के कारण मिल सकेथे।

वतमान नतृस्व कुर्सीव धन को मुरयता देकर चल रहाहै। कही उन से ग्रागे बढकर कोई उनका पद न हडूप ले। इसलिए वे नई शक्तियों से भयभीत होकर उन्हें बागे बाने ही नहीं देने हैं। स्वय तो वे क्या स्रोजेंगे ? यदि कोई प्रतिभाशासी व कमठ व्यक्ति स्वतं नेतस्य वर्गसे सहयोग की माग करे, तो अनेक नहाने लगा कर टाल दिया जाता है। यदि प्रार्थसमाज के कर्णवार बास्म-सन्तरा (Inferiority Complex) से ऊपर उठकर यन भावना की समन्वयकारी प्रवृत्तिको हृदयगम करके व्यवहार क्षेत्र में ब्राए और प्रत्येक विचारक्षील कर्म एव प्रतिभाशासीव्यक्तिको उत्तकी दिविव क्षमनाके प्रमुसार कार्यमे लगा दे, तो उनके पास भ्रपार शक्ति समूह सचय हो बाए और उनकी दस गुनी, सीगुनी प्रतिष्ठा बढ जाए।

इसके साय हो बार्यसमाज की गौरव वृद्धि होकर चुदिशि इसका बतीशन फैल जाए।

ग्राड राष्ट्रकी सन्कृतिको, जातीय बीवन को सर प्रोरसे भयकर चुनौतियाँ हैं। सब लोग त्राहि-त्राहि मचा रहे हैं। क्याधार्थी को सामान्य व्यक्तियो की तरह करनाया उपकाशील होकर धपनी रोजी रोटी की ती चिन्ता करना शामा देता है। क्या यह प्रायममाओं के शानदार भोजस्त्री व्यक्तिस्त के शतुरूर है। इस समय तो सभी प्रान्तों के आयों को तन कर मैदान में डट जाना चाहिए वा। कन्या कुमारी से काश्मीर तक ब्रह्मपुत्र से सिन्धु नदी तक एक पुकार चठनी चाहिए थी कि दस्यु (ध तकवादी) लोग एक कदम नहीं बढ सकते । यह देश द्मार्थीका देश है। बनार्थीके दुस्यप्न यहानही पन्य सकते ।

क्यातमाशाहै आ जहमारे देत की प्रिन्न प्रवनमनी केहस्यारों कायहासार्व अनिक अभिनत्दन होता है। देश को विश्विष्टन करने वालों की यहा प्वा होती है भीर देश की अनता व सरकार टुकर टुकर देस रही है। भीर भार्यसभाव रूपी शेर की गर्जेना भी भीन है।

पर सार्यसमान को सर्वस्य समर्पित करने वाल इसे सक्वे दिल से प्यार करते वाले, मूक कप से ऋषि कार्य की पूर्ति के सपने को होम देने वाले आज मर्गाहत होकर पूछ पहें हैं कि सप्समान मीन क्यो है? उनका हुदब चेश्कार कर रहा है।

पूक गया धार्यतमाव भागे धनीत को उस प्रतीय की विसमें वह परती भरे के तरी की तरह प्रत्येक सकट से, विकरा के नारत या की करण वरना करता है मारत या की करण वरना करता है या धाततायियों से जुक्तता था। वह सदा अग्रतिय करता रहा है। भाव देश की सरिवार या स्थापत है से भा के देश की सरिवार करता है। भाव देश की सरिवार करता या भी के का पूँच ही है। भी वस्ती तरनी अग्रतियों का सही सपटत है। फिर यह मौन हो केवल मूक वर्षक करो कर ने देश है।

रूढिवादिता ने सर्वदा समाज की पत्र बनावा है। बाज बार्यसमाज भी रूदियस्त होता जा रहा है। कुछ चिसी विसाई, पिटी पिटाई बातों की नेकर उपदेश करा देना, मनोरजक समन गया देनाही प्रचार नहीं होता। कही कहीं शास्त्रायं, की चुटकिया भी ली जाती हैं पर इस उद्यक्त पुरस्तमयी वेका मे जब कि राष्ट्रीय व सामाजिक जीवन संकट में फसा है, केवल इस बाक् प्रचार से काम नही चलेगा। धार्यसमाज वर्श व्यवस्था को मानता है तो वह बाज क्षात्र शक्ति का तेज दिलाए । केदल पण्डिताई भरी कोरी बातों से बीवन नहीं चलने वाला। यह बैंगी ही बात है जैसा कि कृष्ण ने धर्बन को उद्दोषन बेना ने कहा या कि तुम पण्डिताई की बातें कर रहे हो जो कि कर्तव्य क्षेत्र से भागने का बहाना मात्र है। प्राव सार्यसमाच को कृष्ण उनकर भागे भागा चा, पर वह सर्जन की सरह विषयम् एव कुँठित बुढिहो गवाहै। सर्जुन को परिजनों का मोह सता रहा बा भौर मार्यसमाज को कुर्ती का मोह प्रपत्ने प्राणी का मोह एव सुख सुविधामय जीवन का मोह प्रतिबद्ध कर रहा है।

आर्थं जनता फिर भी सरल हृदस है त्यास तप से पीछे हन्ने वाली नहीं। वह रणलेज में जूम सकेगी पर नेतृत्व उसको सही दिखा दिखाए तभी न वह आसे सामगी। क्या आर्थं नेतृत्व जायेगा। □

सुल नहीं मिलता कभी विषयों के ममेलों में

नीम की निवोक्ती में है प्रमूर का स्वाद यहाँ, इन की खुबड़ कहा चोड़ों के तबेनों में । माटी के देखों में है निश्री का मिठाल कहां, खुड ची का स्वाद कहाँ वनस्पती तेकों में ॥

दुवेंगों के तब होता प्राप्त सद्द्वान कहा, दुवि का विकास कहा ताल युद्धा बेलो में। तज्या सुद्ध "स्वक्तानन है इत्याचयें पालन मे, सुद्धा नहीं निकता कथी विचयो के फरोसो में।

> ले -- स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती (प्रविष्ठाता वद प्रचार)

दो कुण्डली

- शालेशार के वर्ष से स्वय धने के जिल । ठभी ऋषि दयानक का नही लवाबा विज्ञ ॥ नही लगावा चिल नवाई स्थान वरारी । ये सत्त्यार्थ प्रकाश सुखिला सम्बद्धी वारी ॥ इवसिल फैसन बीटए बीट केंसे खुनार के । ऋषि दयानन्द के समुदासी सर्वशार के ॥
- ताल कटोरा में वजी सजी समंकी ताल। जिमे देखने को गए कितने बुढे वाल।। कितने बुढे वाल शिक्तिका व झस्यापक। पाण्यास्व का बप प्रकट नल नस में स्थापक।। कमी रहु गई एक साम की, कुके मोरा। 'स्थाकुल' ऋषि वरका सरना सा ताल कटोरा?।

रपविता- प्रकाशबीर शर्मा 'ब्याकूल'

धाप धार्मसमास के प्रधान है— बात बीत तीय नयं दुरानी होगी। शाकर (बहुरापट्ट) में करवा के यो चुटो ने कोई बिशाद बढ़ नया। इस सम्बंद की रिपोर्ट हातम के पाए नई। योगी पता धर्मने धाप को निर्दोग नताते के धीर दूबरे पता को होगी। दहराते में। सरकार ने इस विवाद ने पुरन नाम के लिए एक उच्च बहिबारी की शाकर मेरा।

बहु समिकारी बहु। पहुंचा। पारूर के प्रियक्ताण सौंग उसे जानते में कि यह एक उप्य प्रियकारों है परन्तु बहु किस उद्देश्य के बहुत प्रसाद है, यह उन्हें बत मा। उस सज्ज्ञन ने सपनी जान पूरी कर की दिवाद की जान प्रकास करके उसे पता यस गया कि इस समने में किस किस का कितमा दोष है। दोनी दोनो

जान का कार्य पूरा करके वह सिंद कारी नहा के शासेंसमात के प्रयान प० झायेंसातु को के पर गया। उन्हें कहा स्वायं गता है कि सै यहा बयो साया है? उन्होंने कहा कि साप करिए कैंग साता हुसा है। तब उट उच्च राज्या किसारी ने जहा, मैं साप के नगर के तो रक्षों के सीख में पक रहे लाले विवाद की गुट्य कार के लिए यहा भेता नया हू। सैंते स्वपात कार्य कर सिंदा है।

स्नाप स्नामंत्रमान के प्रधान है। आप भी एक पक्ष के साथ यहा जुई हुए हैं। मैं भी सायसमाज का एक देवक हु। साप सामंत्रमान के पुराने उपदेशक हैं। साथ

जिसे हिन्दू थम का छत्रपति कहा चाता वा वही कालक प्राच हमारा प्रादर्स है। कठिनाइयो न उसका जीवन निर्मित किया था। शिवा की का बाल्यकाल बहुत बड़ी कटिनाइयों में बीता । शिवनेर के किने में सन् १६३० ईंट में उसका अन्म हसामा। उनके पिता शाह जी बीजापुर दरबार मे नौकर थे। बीजापुर के नवाब की छोर से, जब कि शाह जी झहमदनवर की लढाई में फसे वे, मालदार सान ने दिल्लीक टादशाह को प्रसन्त करने के सिए बालक जिया जी तथा उसकी माता जीजादाई को सिष्ठगट के किल में बन्दी करने का प्रयस्न किया, नेकिन उसका यह हुष्ट प्रयत्न सफल नही हो सका। श्विवा जी के बचपन के तीन वर्ष भपने जन्म स्थान शिवनेर के किले ही में बीते। इसके बाद जीजाबाई का धतुओं के भय से अपने बालक के साथ एक किले से दूसरे किले मे भागते रहना पड़ा किन्तु इस कठिन परि-स्थिति में भी उस बीर माता ने भपने पुत्र की सैनिक शिक्षा में तृटि नहीं आने दी।

माता जीजा नाई चित्रत जी की रामावल महाजारन तथा पुरालों की जीर नावाएँ जुनायां करती थी। नार्य, जीमील, सुदुमन्त तथा नामा जी नामक जीवा जी के खिलक के भीर स्टर्सक थे। प्रज्यक नीर दावा जी कीव देव। इस खिका का परिलास वह हुआ कि नाकक तस्यामञ्च-

आर्यसमाज के इतिहास के लुप्त-ग्प्त पृष्ठो का अनावरण

आर्यों की वीरगाथा-३

प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञाम्'

के सबनोपदेश सुनकर मैं खदा प्ररण। लेशा रहा हूं। सब सात कहिए कि एक साथे के कप में मुझे इस विवाद के बारे में केशी रिपोर्ट सरकार को देनी चाहिए? मैं बत्य सत्य सुचना शासन को हूं सचना मुठी रिपोर्ट मेंक बूं?

सामसाज के प्रमान भी प० पार्थ आपु जी यह सुनकर कुछ बोक पद परस्यू प्रमान भी हुए। सार्यसमाज की गौरव गरिला, सार्यसमाज के प्रमान पद की प्रतिकाश सा स्पनी समाज देवा का उन्हें कमाज साना। सापने जब राज्य-मिकारी के कहा कि एक साथ की साथ हो कहान माहिए सौर सस्य सही है कि हमारे पक्ष ना भी हुछ शोष है। साथ मेरे कारण चक्र-पात न की मिला

प्रधान की की यह आयों जित बात युनकर आपने उन्हें कहा, प्रच्छा यही है कि मिसकर यह विवाद अभी निषटा लें ताकि मैं ऐसी रिपोर्ट भेज सकू। पाकर का यह विवाद निषट गया। कसह मिट गई। प्रेम से दोनो पत्र रहते लगे। प्राप् जानना बाहेगे कि सह उच्च ध्रविकारों कीन वा 'यह धार्य पुरु ये ध्रविकारों के बाने माने निजनती प्रदृत्त व्यानवाग निज्कत्तक बीनन वाले धीनात् बाणु साहत बावमारे जो। प्राप् घन इस स्तार में नहीं रहे। जून माल म आप वस बें। प्राप पूज्य वीचराज जो बावमारे के होटें धाता ये।

जब प० बुद्धदेव जी जुब पिटे

बडी पुरानी बान है कि उत्तर प्रवेष के विज्ञता मधुरा का नीशाव वेदिक वर्म प्रहुण करने वाला बा। राजपूर्ती के इस प्रवाद करने वाला का। राजपूर्ती के इस बुता को का बात कि के राजपूर्त पार्थ न वर्मे। पाजपूरी के कुछ नीशो को धावी के विवद्ध उक्तवाया या। वे मुस्तमान रहने को तैवार हो वर। निक्चय हुआ कि जब कोई खार्य विक्वयार तो उनकी करोट रिटाई की बावे। घषिकान राज-पुत सुद्ध होने को तैवार बेटे के। श्री ए॰ दुबदेव जल साथ को जा रहे से। नाव के पास एक पुत्रक हुल आ ने जन्हे घर दसोया। सब पीरा और पीट पीटकर पूछा 'बता तुन्हें कहा पुन्याक'' ऋषि से सीवनाम दुबदेव साल, 'वाह्रों स्वात से सार दे परसुण्क बार मुझे भेरे दन राजबुल साक्ष्मों के पास पुन्या है।'

यह उत्तर सुनकर हुआ आ की रयो में महाराए। प्रताप का अमा हुमा रक्त गर्म हो गया। उसे यह विकार साथा कि इस हम स दतना प्रम है। वह प० जी के पाल पडा धोर उन्हें गाव ल गया। वह गुढ हुमा। उने ही सिंह नाम दिया साथ।

वही प्रायसमाज मन्दिर बना। सब राजपुत जाय बन गय । श्रायसमाज मदिर की नीव उसी हरिसिंह ने रखी। पूज्य प० बहादल जी जिज्ञासुइस धवसर परवहा पथारे। हरिसिंह फूट फूट कर रोया कि इन हाथों से उसने प० बुद्ध देव जी की ठुकाई पित्राई की बी। प॰ ब्रह्मदस्त जी विकासुधीर भी प० हरिस्त जी (धव प्रावेशिक सभा देहली में हैं) ने उसे कहा कि तेरा प्राथित्यत हो गया । इन्ही हाथों से बापने बायसमाज के मन्दिर की नीव रल दी है। हरिस्टिंह के कुल का एक व्यक्ति द्यार्थसमाज का पूज्य सन्यासी वन-कर धार्यधर्मका सन्देशादेला रहा। भाज यह कुस राजपूती ने भागसमाजियो मे बडा प्रतिष्ठित परिवार माना जाता है। यह बटना हमे श्री प॰ इरिदल जी ने सुनाई ।

किशोरमञ्च-

वीर बालक शिवा जी

शिवा जी बहुत क्षोटी प्रवश्या वे ही निर्भीक एव प्रदम्य हो गये। जन्म जात शुरमावली बालको की टोबी बनाकर वे उनका नेतृत्व करते वे और पुढ के केव केना करते के। उन्होंन बचपन वे ही निर्वामयों हे हिन्दु यम देव मरिटर तथा गोशों के रक्षा करते का वह सक्य्य कर निया।

धाहु अ चाहते वे कि उनका पुत्र भी बीबापुर दरवार का हुम्पायात कै । शिवाली बन दाम वर्ष के थे तमी उनके शिवा उनको धाही स्टब्सर की शाव-उनका, रोक-सान हाली-मोर मारि देव कर वाकल रोज के आ बादोवा मोर दर-बार की बोर सार्कायत होगा निक्यु शिवा की तो बिगा किसी घोर देवे बिना किसी घोर स्थान किसी वेचे पिता के साथ ऐसे चनके वेचे की किसी सामा कार पिता ने शिवा जो की पीठ पर हान के से सुरु हो। नवाब के सामने कार रिका ने शिवा जो की पीठ पर हान के से सुरु हो।

वालक ने मुखकर पिता की की छोर

देखा ग्रीर बोला— बादणाह मेरे राजा नहीं हैं। मैं इनके ग्रागे खिर नहीं भुका सकता।

दरबार से सनसार फैन सही। नवाह सामक की और पूर कर देखने जागा । किन्दु विज्ञा की ने के न नहीं मुना । गाह जी ने ताह नहीं मान को ने का नहीं भागा है। यह मान को नहर नहीं के सामक के प्रोट कर की का साम है थे। बात के ने प्रोट करी और निर्भी कता पूर्व के दरवार से चना गाया। कर लेटकर माह जी ने प्रमु के प

इस घटना के चार वच ीं हो की एक घटना है। उस समय शिवा जी की सवस्था बारह वर्ष की थी। एक दिन शिवा जी बीबापुर के मुस्स माग पर पूप रहे थे। उन्होंने देसा की एक कसाई एक

गाय को रस्सी से बाचे लिये जा रहा है। वाय थाने जाना नहीं चाहती, डकराती है भीर इधर-उधर कातर नेत्रों से देखती है। कमाई उसे डण्डे से बार बार पीट रहा है। इघर उधर दुकानो पर जो हिन्दू हैं। वे सस्तक मुकाये यह सब देख रहे हैं। उनमे इतना साहसनही कि कुछ कह सके। मुसलमानी राज्य मे रहकर वे कुछ बोलें तो पता नहीं क्या हो। लेकिन सोगो की बच्टि धारवर्य से खुनी की खुली रह गई। बालक शिक्षा जी की तलवार स्थान से निक्स कर चमकी व कुटकर क्साई के पाम पहुँचे भीर गाय की रस्मी उन्होने काट दी । गाय भाग गयी एक झोर। कसाई कुछ बोले-इससे पहने उसका सिर थड से कटकर भूमि पर लुटकने लगाथा।

समाचार दरवार में पृत्या। नवाब ने क्रोच से लाल होकर कहा — तुम्हारा पुत्र वडा उपद्रवी जान पडता है शाह जी । तुम उसे बीजापुर से बाहर नहीं मेत्र दो।

साह जी ने साजा स्थिकार कर शी। सिजा जो अपनी माता के पास भेज दिवे यो, नेकिन भारत में एक दिन बहु भी साथा कि श्रीजापुर-राग्व ने स्तरूक हिन्दू सम्राट ने ने ते सिशा जी को बपने राग्य में समित्रत किया शीन जब विशा जी हाथी पर बतार हान श्रीजापुर के बागों में होने हुन दरकार से पहुचे, तर पहांच ने सभ सारण उनका स्वास्त्र किया भी राग्ने सामन कुलाय। व्यामपीठ -

उपनिषत् कथा माला- ८

महत्त्व की प्राप्ति

प्रवचनकर्ता-वीतराग स्वामी सर्वदानन्द महाराज

~पनिषदो कंमन्त्रों संपरम_ासाका मह व वरान किया गया है भीर यह वत नावा है कि सब लोग उसी की उपासना करत ै पन्तु किर भी प्राप्त क्या नहीं स्रोतर ?

महत्व का ग्रय है बडाई सब से बढ़ा शना। वस में एक भेद है जैसे यहा पत्रास साठ मनुष्य बैट हैं। उनमे एक पहलवान भी है। हम कहते है कि वह सब से प्रधिक वसतान् है। परन्तु यदि पचन ग्रादमी मिलकर उसमे लहें तो वह उन पवासी के सामने निवल ही जाएगा। परम स्माको सब से बढ़ा इस लिए बन या है कि चाते समार की सब शक्तिया मिलकर भी उसका सामनाकरें ताभ वह सब से बड़ा ही रहेगा। वह सारे बह्याण्ड संभी बढा है। सारी सृष्टि भी मिल जायं तब भी वह सबसे बडा है। उस में कोई बढ़ा नहीं हो सकता।

मन्त्य मे यह महत्व कव भाता है? जब ० हुउस महान् की पूजा करे। मनुष्य यदि छोटे से बडा बनना चाहता है तो उसकी बारए। ज्ता है जो नसमे बडा हो। यही ससार में बिटियोचर होता है। तुम्हें ग्रयजी पदने के लिए किसी मस्टर की शरए जरीप गी। छटै पहलवान को इन पहलवान के पास जाना होगा। विवाय समाग क दूसरा माग ग्रीर कोई भी नहीं। यति तुम जम भीर मरसा के अर धन मे ⊤ृटनाचाहने हो तो तम्हें उस परमेन्दर की उप सना करनी होगी जो स्बय जन्म भीर सरण के बन्धन से परे

ससार के पदार्थों को देखी कोई छोटा है कोई वडा । जब भाग छोटे-छोटे जीवो को देखते हैं तो उनकी अपेका इसरे अन्तुबड दिलाई देते हैं। जानवरो से बृक्ष बड हैं बूश्री से पबत पवंती में हिमा लय, हिमालय से भूमि । भूमण्डल की देखाती सूर्यं उस से बडा दिखाई विया। सुरज को देखा तो इन्टि भाकाश पर नई सूर्य से भाकाश वडा है । भाकाश ने प्रकृति बड़ी है जो सब में व्याप्त है। प्रकृति से वडा न परमेश्वर। इसीलिए योगी शुद्ध विल होकर एकान्त मे उसी महान् से महान् परमद र की पूजा करते है।

ऋषि याज्ञबस्यय ने धपनी स्त्री मैत्र थी से कहा कि मैं त्स ससार क सब सम्ब घ तोडने लगा ह तुम्हारे मिए सब पदाथ विद्यमान है को चाहे ले लो । तब

मैक्क्यो पूछने लगी - बाप ससार की छोडते हैं क्या भाग यह बता सकते हैं कि इस ससार को खोडकर कहा जायेगे? बता ये बार इस देश को, इस घर की, इस परिवार को क्यो छोडते हैं। उन्होंने उत्तर दिया अमृत प्राप्ति के लिए' मैत्रेयी योजी साप जमूत प्राप्ति के लिए इन बन्धनो को छोड चाते हैं फिर सूके इन बन्धनों से क्यों फलग्ते हैं ? भ्राप विद मुने सब कुछ दे जाये तो क्या मैं उस पद को प्राप्त हो जाऊगी? उन्होने कहा जैमा बनी पुरुषो को जीवन का सुख होता है उसी प्रकार तुमे भी हो सकता है पर तुधन से उस समृत पद की प्राप्ति नहीं होती। मैंत्रवी बोसी इस धन की बावश्यका नहीं।

माइयो [।] त्याम से ही ग्रम्त यद प्राप्त होता है यह धन से नहीं निसता। जो बच्चा त्यामी होता है वही सब कुछ छोड कर समाधि में बैडता है। एकविल होकर उस परमातमा का ध्यान लगाता है। फिर वब वह उठना है तो उसकी दशा का किसी किंव ने य बरान किया है---

समाधि से उठकर यह योगी पुकारा, परमासुमे देखा है ससार सारा। परमासुमे सद्वार सारा समाया है भूमा उथर ही जिथर को बुनाया।।

~से यह सब बाकाश सूई के खिद के समान दिसाई देत है।

समार में छोटी को सुख देश्र ही बड बनने हैं। एक बादमी बूढा है। घरके सब लोग उसका मान करने हैं क्योंकि वह बाबार से उनके लिए चीजें लाता है। पहरे बच्चों को खिलाता है किर भाप साता है। यदि कोई बढा बुढा व हर ग्राप ही साधाये व॰को के लिए न लाये या बच्चो को न दे और उनके सामने बैठकर भागही साले तो क्या उसका मान

प्रनृते तो हमें इतनः कुछ सुल धौर धान द दिया परन्तु हम हैं जो उसका ब्यान भी नहीं करते। सोची तो सही यदि मेरी ब्रालो में घोडासाफक ब्राजाये तो मैं बाबार से एनक लेकर लगाता है। यदि वह टूट आये तो दूसरी ने ल। परन्तु सक मन्त्यों के एक जैसे नेत्र है इन्हें किस ने बनाया[?] यहतो सद प्रशुकी ही कुपा का क्ल है। जिबर भी ग्राप देखें उस प्रभू की ही दया दिखाई देती है। समस्त ससार मे उसी का प्रवन्य है। तनिक जिल्ला को देखो। एक दो वह रस को धनुभव करती है। दूसरा कान इसका इससे भी भारी है। जब आप कुछ मोजन करते हैं तो उसमें को पदार्थ दलने भीर कुचलने बोम्ब होता है उसे वह जिल्ला ससय करती है और दाड़ों में पहुँचाती है। शब्द भी यही है। यद्यपि शब्द अन्दर से निकलता है परन्तु जिल्ला ही बायुको नियम पूर्वक निकासकर काव्द का रूप देती है। हारमोनियम को ही लो । उसके पर्देको हवा देकर दबामी, उसमे सं आरं का शब्द निक नगा। इस शब्द को तुन्हारी उनली ने ही बनाया है। जिल्ला वे तनिक-साविकार भाजाये तो सारा ही काम

दक अराये।

ये हाक भी परमात्वा ने दिवे हैं। इन हार्थों से कितने काम होते हैं। अकडी चीरने के लिए हाथ में कुल्हाडी नेते हैं। गहतीर से तसते बनाने के लिए खारा भौर लकडी साफ करने के जिए दवा उसमे खेद करने के लिए बरमा। कुल्हाड के साथ मिलकर वही हाथ कुल्हाडा बन वाते हैं और धारे के साथ विलकर बारा, रदे से मिलकर रदे का काम देते हैं और बरमे से मिलकर बरमे का। प्रशुने तुम्हें एक बीजार दिया है तुम्हारे बनाये हुए धीजार तो बदन जाते हैं परन्तु बह नही बदला जाता। प्रभुकी महिमातो बात-बात में दिलाई देती है। इसलिए उपनिषदौं ने कहा है कि उस प्रयुक्ती पूजा करने स ही महत्ता प्राप्त होती है।

सदा सीचे मार्गपर वली स्वयमेव निभव हो बाबोगे। परम्तु बापने तो पर-मात्मा से मुख मोडकर वृक्षी मदिवी पूर्णिमा भादि को पूजना भारम्म कर दिया है। इनकी पूत्रा से तुम्हारा दुस दरित्र भडता ही गया है और बडता ही जायेगा।

जहाँ बलवान होने वहा निवल भी शवस्य होने। ससार में सब एक ही जैसे बल गत अथवा धनवान् कैसे हो सकतें हैं ? परन्तु यह कदानि नहीं होना चाहिए कि जिस को छोगधावा दुश्व सम्भाउने ही मारने लगे। जब वड़ो के विचार छोटे हो जाते है तो वह छोटो को मारने और बहाँ त्या बनकानों के प्रन्याय ग्रीर श्रत्या-चारो के सामने भी गदन कुमाने समने हैं। बहदशा क्यों हुई? मेरे भाई। यह सब परमेश्वर को भूमने का फल है। इसी से

यह दुवंशा हुई है।

देखी । पुत्र का सपने पिता के लिए नवा कर्तेच्य है ? धपने पिता का सम्मान करना। पिता को बाजा दे उसका पासन करना। भोजन बने तो पहले गिता की खिलाए, पीसे से बाप काए । बाजकश तो वनी पुरुवो के नौकर ही सब कुछ हैं। न पुत्र ही को पता सगता है और न माता पिता ही को, कि किसने भोधन किया है धौर किसने नहीं[?] मैंने एक युवक को देखा। बह बी॰ ए॰ पास बा बुकान करता था एक कार उसका पिता उसके पास आया, उसने जल गाँगा। सहका मुख लिख रहा या तुरन्त उठा सन काम श्लोडकर पना से पानी लाया और पिता जी को पिलाया। रात को घर जाकर पिता के चरल बोये. उन्हें भोजन कराया। मैंने क्टा नौकर ती हैं उनसे काम क्यो नहीं करवाते ? बहु बोला, नीकर पानी तो घवण्य सा देंगे परन्तु पिता जी के बग्जो को बोकर जो झानस्य मुन्हे होता है उसे मैं ही जानता है। यह धानश्य मुक्ते नौकरों से काम करा के कैसे प्राप्त होना ? पिता जी की भाका पालन करना मेरा कर्त-थ है। उनकी साज्ञा पालन करने में ही मेरा

एक दूसरा युवक वा । उसने माला ले रक्ती थी। पितापिताका नाम रन्ता रहता वा। जब पिताने पानी मौना तो कह दिया कि 'घडे में भरा हुआ है पी को। वह अपने पिता की धारा का वालन नहीं करता था। पिता का नाम ती जफ़्ताथा फरन्तु रिताकी बात कोई भी नहीं मानता था। भाइयो ! पिता की प्रस न्नता उसी पर होती है जो उसकी बाजा का पालन करता है। इसी प्रकार परमा-श्यामी उसीपर प्रसन्त होता है जो उसकी प्राज्ञा का पासन करता है। परम त्नासव के सकत्री को सब की बाब, नाधों को जानता है, परस्तु किसी की कुछ कहता नहीं। यदि बताता भी है तो उस सभय बडा वह कोई बुरा काम करने लगता है जैसे मैं तुम्हारे पैसे निकालना चाहता है। तुमने तनिक दूसरी ओर देशा भीर मैंने हाथ बढावा। परमात्मा ने तुम्हें तो सवेत नहीं किया। उसने मेरे मन मे कहा, कि ऐसामत कर यह काम दूरा है। वस मेरे माई। नेकी कर दरिया मे डाल। यह सब से उत्तम मियप है। प्रपना स्वमाव ऐसा बना लो कि तुम परमारमा की भावात्र सुनकर उसका धनुकरण कर सको। याद रको । सद्वार में वो किसी के दुगुँ सा खिपाता है, वह बण्या है सीर जो किसी के दुर्नुख प्रकट करता है वह बुरा है। धवनुस रहित तो सहार ने कोई भी नहीं। यदि तुम किसी का सुवार करना बाहते हो तो उपकालत में समकाक्री। उसके धवनुस्तो का दिंढीरा न पीटो।

पृथ्वी के लिए सूथ सहारा है, परन्तु सूर्वं को किसका सङ्घारा है ? उस परमास्थर का, जिसने उसे बनाबा है। इसी प्रकार प्रस्त होता है कि परमेश्वर किखके प्राचार
पर हैं? उपनिश्व बतर देवे हैं "वह
स्पत्ती महला ने खपना प्राचार बाप हो
है। तुम भी सपने जीवन है हुल्दी को
छहारा वो, पर परमारमा के विवास भीर
किसी का खहारा न हुजी। परन्तु तुम हो
कि सिनेसा गते तो खह माने कर्च कर
विये, पर कभी किसी मिलागी को चार
वैमे भी नहीं दिये जाते। जो विर जाते,
खखका कोई ठिकान है। बहु तो दिन
सरिविसर स्वतन को ही चला बाता है।
परमारमा ही उठाये तो उठे। इस प्रकार
काल नहीं बनता। तुल प्रपत्ती घोर से
स्व को सहारा दो, साथ ही परमारमा से
उन के लिए प्रापना भी करी।

तुम हिन्दू हो, बखुतो से चुला क्यों **करते हो [?] तुम्ही ने तो उन्हें ब**ल्द्रत बनाया है। क्या कभी किसी मुसलमान ने अभी च्**णा**की है [?] एजिल के महीने से पूना मे एक उत्सव वा। हम लोगो ने वहा देखा गरोश ग्रीर पार्वती की छत्पन हजार मृतियार्थी। उन मन्दिर वे ब्रह्त मी -बर्शन करने गये । वहा पचास हजार बाह्मण ये। क्या हमा उन्होने सक बछती को धनके देकर बाहर निकास दिया । स्था **उनके** दर्शन कर लेने से सन्दिर सपवित्र ही जाता या उन्हें देखकर पतित पावन अभू पतित हो जग्ते ? दूसरे दिन मूर्तियां चुराली गयी। मैंने कहा कि यह क्या हुआ। भगवान् को भी कोई चुरा ले नवा ?

एक दिन हम महादेव को देखने के किए गये। एक पुरुष ने पूछा—"धाप हाय क्वों नहीं जोडते ?" मैंने कहा, "हाय 👉 क्यो जोडू? मनुष्यो को देखी। पति ग्रीर पत्नी दोनों जा रहे हो, यदि कोई पुरुष उसकी पत्नीको इशारा भी कर देतो मरने मारने की तैयार हो जाये। यदि हाम से न्पर्श कर देतव तो उसे मारही 🕏 । परन्तुइन महादेव की की परनी तथा पुत्र दोनो को ही चोर उठाकर ले गवे स्रोर ये महादेव जी बोले भी नहीं। इनकी युवा क्या भाषको करनी चाहिए ?' इस प्रकार अब प्राप भी सोची तो ससार मे परमेच्बर के गुलो को मानकर उनका ही धनुकरल प्रापको करना होगा और उन्हें ही पूजा करने के योग्य मानना पडेगा। चनके सिवाय और किसी को भी नहीं।

देसो, प्रजूनों को सब तुम सताते हो तो प्रत्य मतात्स्वस्त्री उनसे कहत हैं कि हानारी भोर धा जायों। बुद्धानारी केस रहे हैं कि ऐसी प्रदस्ता में उनके दूसरे मनात्स्वस्त्रीमंग्री में जा मिसना कुछ कठिन नहीं। इसलिए ने दुमसे कहते हैं कि सम्ब्रुतों के साथ त्याय करो। प्रेम करो। क्योंक दुर्गना तो प्रेम को देखती है। कभी तुमने सननी इस दुर्गनता को वेसा है?

एक फारती कवि ने कहा कि "धपनी बढाई में ही वन जून का, धपनी बुराई को बी देख भीर उसे बूर करने का समस्य-हरानी कुरका बढाने कार्य को नहीं कोका, इसीविय बकाई भी हुनें कोक-कर वार्ती वहूँ, व्यॉक्त दुराई और बकाई योगी एक नव्यू नहीं रह बकती। धव हुविवता तो सबसे हैं कि नमुख्य धपनी सुराहमा देवे और हुवरी की बकाई देवे। धननी दुराई ओडे और दुवरों की बकाई बहुन करके धपने धाप को बका बनावे। पुन्हारे साम रहते हुए उन्हें कोई धानुत कहें ही क्यों ? परन्तु यहाँ तो धार्यसमान वाले भी कहेंये तो यहाँ कहेंने कि भाग वाले भी कहेंये तो यहाँ कहेंने कि भाग वाले भी कहेंये तो यहाँ कहेंने कि भाग वाले पाद कांग वाले हों ते व्या धानुत रह जाता है परन्तु पुनने रहते हुए तो यह धानुत कांग सी उसना पीछा कवी नहीं कोवता।

एक मनुष्य बन में बैठा रो रहा था. एक साधु वहाँ या निकला । साधु ने पूछा, "भाई । रोते क्यो हो ?' उसने कहा. दरित्र है विचार तो बड़े-बड़ हैं। धन है नहीं। घापको साचु समक्ष कर रोया है कोई विभिवतादों तो रसायन पाकर बानन्द करूँ।" साथु ने कहा, यह वृक्ष है इस बिल्य (बल) कहते हैं। ताम्बालेकर उसे लुब गरम करो । जब बहु गरम हो जाये, तो इस वृक्ष के पत्ते उससे लगा दो, वह सोना हो अधिया। परन्तु उस समय बन्दर का विचार मन से न भाग, यदि वन्दर का विचार नन में भाग्यातो सोनानही बनेवा। श्रव वह सोना बनाता है तो नही बनता, मट बन्दर का विचार मन से बा जाता है। इसीलिए तो तुम भागे नहीं बढ सकते क्योंकि तुम्हारे मन में दूसरी को बस्त समझने का विवार पुना हुया है। वह तुम्हें उनने प्रेम नहीं करने देता। फिर तुम्हारी उन्नति हो भी तो कैसे?

देवनर के मानन वाले के पास यदि पैसा न भी गई तो उसे सन्तोच रहेगा। उसके हृदय में व्याकुणता नहीं सायेगी। कारण, वह दूतर के अवगुणों को खिरादा सौरा उन्हें दूर करने से सहायता देता है? वहाँ तक उसकी पितत है दूसरों का बेबा पार करता है।

वसी का नाम पवित्र बहा है। बैसे एक जुलर बालक को बेसकर सबके हुस्य में प्रेम जमक साता है। धाप कल कितारे-कितारे चन रहे हैं, जल बड़ा निमंत्र मोर खुळ है। धारका मन स्वय बहाँ बैठ चाले को करेगा। एक बुल बड़ा ही सुन्दर हैं। इए-दूर तक उपको सालाएँ स्मी हुई हैं। धारका मन उसे बेसकर बड़ा झानस्तित होगा। ऐसे ही परमास्मा का पवित्र नाम भी जिङ्का पर साने से जिङ्का पवित्र हो आभी वाहिए सौर मन में उनका स्थान साते ही भन महस्य हो जाना चाहिए।

जाहयों याद रही । जो पवार्ष पवित्र है, जह मन को पवित्र करता है। परमारमा पविज्ञ है, उसके प्यान है, उसके चित्रतन के संज्ञ में पवित्रता साती है। निरस्त्र प्रति सपने मन को उसके स्थान है दर्शन होने समें नै क्यों कि वह पवित्र मन में बाता है, मैंसे मन मे नहीं बाता।

बाप बीक के तिए जाते हैं, जोटा लें जाते हैं, फिर वहीं मिट्टी से मासते हैं। रूपडा मैना हो जाए तो साइन वे बी हैं। बीधा मैना हा जाए तो सबिया मिट्टी से साफ करने हैं। सोने के बायूचक को बमिन मे तपाते हैं, सटाई सनाते हैं। प्रत्येक बरतु के प्रविक्त सटा के लिए कोई न कोई साइन बरता जाता है। परन्तु जब मन मैना हो जाय, तो उसके सिर पर फूठ बोसने, परस्ती को बेसने का मूत बसर है, तो क्या करोने ? में बतात, रून साम हो सोने हो में स्वयम्ब प्रत कार है, तो क्या करोने ? में बतात,

उपनिषदी में सिखा है कि जल पड़ाने से मन मुद्र नहीं होता केशक शरीर चुढ़ होता है। वदि हमारी दुवंशा हो। देही हैंगी दवका कारण हुन सपने आप हो हैं। किसी ने हमें दुखी नहीं किया, हम सपने हाथों आप ही दुखी नहीं दिहा,

वाणी से परमास्मा के गुण वणन नहीं हो सकते । जन से उसका सकल्प करो । उपनिवदों ने कहा है कि सांख पैर झादि वाणी का काम नहीं कर स्कते। कारण, कोई भी कार्यंत्रिसे तुम वाणी से कर सनते हो, भास से नहीं किया जा सकता, पैर से धवना भीर भी किसी बग से नहीं कियाजासकता। नीवृकास्वाद यदि कोई तुमने पूछे कि 'कैसा होता है ?" तो तुम पूछोगे कभी लटाई लाई है ? वह कहे 'हा, ग्रम्बी तो लाई है, इमली भी लाई है परन्तु नीवू नही साया ।' तुम कहोने, 'नही वैसानही। ''श्रावला भी लाया है। तुम फिर कहोगे, वैसाभी नहीं। नीबू तो नीबू हो है उसका स्वाव किसी से नही जिलता। दस प्रकार जब पर मारमा के बनाये हुए पदाय ही ठीक ठीक चित्त में नहीं या सकते तो वह बाप कैसे धासकताहै [?] जब तुन विन्ता को छोड दोगे तभी उसका ज्ञान हो कायेगा। आप कहेंगे, 'विन्ता को खोड देंगे', परन्तु भ्रापको मन की शक्ति का ज्ञान नही। इसका पतानो तभी चलेगा अव तुम उसे रोकने काप्रयत्न करागे। सभी तो तुम मन के पीछे पीछे जाते हो। शाम को तनिक मन को टहराने के लिए सन्ध्या करो । उस समय क्होंगे कि मन नहीं अस्पता। बुरे विचार पैदा करने हो तो **अट मन लग जग्ता है। परन्तु उसे रोकने** सनीने तब मन की शक्ति का पता लगेगा जन उसे रोकने के लिए बैटोगे, तब जानोगे कि मन को रोकने की विधि तो कोसो दूर है।

यन रोवने की ठीक विधि का सनु-करण करो । उटते, बँठते, तोते सदैव सपने कार्य व्यवहार से परभारमा का व्यान करो । परन्तु जब परमारमा की उपासना करो तो धपने कार्य स्ववहार से समय हो बाजो। उस कपरें स्ववहार से

एक बासन । हाय मुह धोकर स्वच्छ होकर, धपने जीवन रे ४५ मिनट का यह समय जब तुम पूरे प्रेम और पवित्रता के साय परमात्मा के पास बैठकर वितासीने तब बायका मन बपने बाप ठहरेगा धीर भीरे भीरे भापके वश में भाता जायेगा। जिस काम में पवित्रता और प्रेम नहीं होता वह कभी सफल नहीं होता। जो समय इसके लिए सबसे भच्छा है, उसे नीत्म व्यय स्तो देते हो। एक निवत समय हो जाने पर सन्ध्याका समय होते ही, समय स्वय तुम्हे बुलाने समे। तब समभी कि तुमने पहली मजिल पूरी कर शी। तुम नदी के तट पर मैर करने के लिए जाते हो। पानी मे पैर नहीं बासते भौर फिर पुन कहते हो कि मुक्ते तो जल दूख नहीं कहता। जल तो तब कुछ कहे, जब तुम उसके सन्दर प्रवेश करो।

सीप भी जब ध्यपनी बांबी में आते जगता है तो भीषा हो जाता है। इसी प्रकार मनुष्य जब प्रपने परमारमा के सामन जाता है उतने चरणों में मन ज्याता है तो उने गुढ़ भीर पवित्र होकर

जब बालक धपने पर में माता पिता को "जी नहकर सम्बोधन करता है तब बाहर जाकर भी बैस ही 'खी' कहेगा । धरवाजाधिक बात कला पहल ही दिना । धरवाजाधिक बात कला पहल ही दिना । सैने कहें दिस को कभी लगाया नहीं और नहते हो, 'दिल नहीं सगता।'' युवाबन्या में कहते हा, 'बूबे होंगे तब सन्ध्या करेंगे । परन्तु एक वहूँ कबि कतता है कि

है सक्या वही, जो कि जवानी में काया हो। है जोक्ष वही दिसका कि पीरी में दर्शी हो।।

भवीत् पवित्रता वही है जो युवावस्था मे प्रकट हो भीर भावेश वही है जो वृद्धा-वस्था में भी खिरा न गहे। हे भावी परमाश्मा है दूर है दूर परन्तु प्रभावी निए। जो बुद्धिमान् है, वसे नियमपूर्वक बृद्धते हैं उनके तो वह निकट ही है।

एक माता एक सरीवर में स्नाम करने गर्द। वहा एक वृश्व चा। माता ने धपना धाभूषण उतारकर वृक्ष के साथ भटका दिया ग्रीर स्नान करके घर चली गई अपना धाभूषश वहा से उतारना भूख गई। एक युवक धाया, उसने सरोवर में देका कि एक द्याभूषण जल मे पडा है। वह जल में बुबकी लगाता है परन्तु बाभू-वरा उसके हाथ नही घाता। फिर बाहर बाता है फिर जल मे देखता है, फिर हुबकी लगाता है। कवीर साहव का उधर से गुजर हुआ उन्होंने पूछा, 'माई ! तुम इस प्रकार बार बार नयो हुबकी सवाते हो ?" उसने उत्तर दिया, 'हार दूंदता ह महाराज "" उन्होने कहा, तुभे खाया धीर वस्तुका ज्ञान नहीं। जिसकी स्रोर तु

रिछले दिनो चाव की ध्याली के एक नृष्ण उठा था जो बीकांग छे कुछ के गाय है। यह नृष्ण वा करवा हाईकीट में कुरात पर प्रतिवय सगाने की याचिका के सम्बन्ध में। दरमीर घाटी जहाँ मुससमान प्रविक है भीर बगला देग जो सब दरसानी देश वन कुका है, मैं इस तृष्णन ने हिसक कर भी सारण किया और कहें लोड मारे भी वए।

इरलान घोर प्रतिवचों का गहरा सवस है। सतार के लगभग सभी इरलामी देशों में मूर्ति पूजा पर, मन्दिर बनान पर, पूरान मन्दिरों को मरम्मद पर घोर खुले रूप से कथा-कोठन करन पर प्रतिवच हं। बहुत है इस्लामी देशों म बाहु सरकार र मा प्रतिवच्छ है। उनके एस देश हैं। जिनन नाता, उपनिवद् धादि धार्मिक पुस्तक ल जान पर घी प्रतिवच्छ है। पुर्की घोर देशन नाता घोर वाल स्विवद् पर घी प्रतिवच्छ लवाया था। यात स्विवद् पर घी प्रतिवच्छ लवाया था। यात स्विवाहन कावेडी जिसमे हृक्यत प्रहुस्मक बोर हुन्यत असी का नरक म रोता हुआ दिकाय गया है, पर का बभी इस्लामी देशों में प्रतिवन्य है।

कालिन सौर लियरका हाल म प्रका-शित पुस्तक 'फीडम एट मिडना-ट विसमं जिल्लाह के सुधार का नास जाने का उल्लेख है, पर पाकिस्तान में प्रतिबंध है। मचे की बात यह है कि हिन्दुस्तान जैसे वर्गनिरपक्ष राज्य में भी मुसलमानो के दबाव के कारण श्री ए० श्रीय की सम-रीका म प्रकाशित पुस्तक 'कुरान एण्ड दकापिर, श्राविशनस्वरूप गायल की दिल्लीसे प्रकाशित पुस्तिका काश यात्राचान कुरान पढा होता। भो< डा रमेश आय की पुस्तिका मैंने इस्लाम क्यो श्राडा ''पर प्रतिबन्ध लगा हुआ। है। जिस मजहब क धनुयायी प्रतिबन्ध के इतन शैदायी हैं, वह कुरान पर प्रविवध लगाने सम्बन्धी याचिता स इतन उद्घिन हो गय, यह धाःचर्यकी वात है।

याचिका की कहानी भी बढ़ी राचक है। श्री सी० एम० चोपडा नामक एक सज्जन जो कई फर्मों क कानूनी सलाहकार है. ने बप्रैल १६८५ म कलकता हाईकोर्ट मे एक याचिकापेश की जिथमे मागकी मई वी कि घरनी में लिखे कुरान ग्रीर उसके धनुवादो । र प्रात्यव लगाया आय न्योंकि उसमे ∗हुत मी एसी वाते लिखी हुई हैं जो कि भारतीय सविधान की धारा १५३ एका स्पष्ट उल्लंधन करती हैं धौर गैर मुसल मानो के प्रति विद्वेष धौर हिसाका प्रतिशदन करती हैं। बाचिका में कुरान के ऐस सभी उद्धरण भी विये गये थे। न्यायमूर्ति श्रीमती पदमा सास्त-गीर ने इमे विचाराय स्वीकार कर लिया भौर पश्चिमी बगाल की सरकार को होद्रिस दिया कि वे इस सुबुर्व में सूपना

'कुरान' कानून और प्रतिबन्ध

डा० रामप्रसाद मिश्र एम० ए०, पी० एच० डी०, डी० लिट

अनेक पुस्तकों से लेलक डा॰ रामप्रसाद मिश्र सप्रति डी॰ ए० वी॰ कालेज से हिन्दों के विभागाध्यक्ष हैं। दिल्ली विस्वविद्यालय से स्तातकोत्तर कलाओं को भी पढ़ाते हैं। देश के प्राय सभी प्रतिष्ठित एक-पिकाओं से प्राय के लेल छपते हैं। समस्याओं के गहन प्रध्ययन भीर विश्लेषए के लिए चर्चित डा॰ मिश्र ने इस लेल से कुरान पर प्रतिबन्ध लगाने सम्बन्धी याविका पर देश पर चेनती बहुत के सम्बन्ध में एक दिसापरक चितन प्रस्त किया है। —सपादक।

पक्ष रखे सीर याणिका पर विचार करने के लिए २७ मई की तिथि तय कर दी।

इस बीच मुस्सिम बकीसी भौर सस्याची के विरोध के कारण यह वाचिका किसा सन्य जज को देने की बात कही गई। मुख्य न्यायाधीका ने इस न्यायमूर्ति बासक का दे दिया। न्यायमूर्ति बासक ने सुनवाई की तिथि २७ मई के स्थान पर १३ मईकर दी। श्री चोपडाको इस बदल का सूचना १२ दारास राद को दी गई तो भी ये १३ मई को श्रदासत में पेश हुए और उन्होंने साचिका के पक्ष ने क्या तक समत भौर तथ्यपूरा वक्तक्य दिया। न्यायमूर्ति वासक ने जनके किसी तर्क का बारन किय बिना केवस यह कहकर वाविका रहकर दी कि कूरान एक पवित्र पुस्तक हे इसलिए वह कानून बार न्याय-पालकः का पारांच म नहा बाता । समा-चार पत्राम आद्वी रिपार्टी के प्रमुखार कद्राय विवि मत्राक्षी ए० के० सेन भीर भटानीं जनरस भी उस दिन कलकता म व भार सम्भवत इन्हाके कहने पर पहले तिथि बदली नई धौर याचिका की चसके गुण-दोधो पर विचार किये विना रह कर दिया गया।

इस प्रकार समाई की परल किये बिनाउसे दबादियागया। भारत में सस्य को इस प्रकार दबाया जाना जिसका ध्येय नाक्य सत्यमेव जयते हैं, हर इकिंग स्टेगिनवनीय है।

परन्तु इस बाविका के पेवा होने से एक साम सवरन हुआ है। बहुत ने कोवो को क्लो बार पता क्या कि कुरान के कुछ ऐसी वार्त तिको है वो कानून धोर माग्यता कगत नहीं है। इस्लाम के मबका में क्या में पढ़ गये हैं। वे याविका में उठाई गई बातो का न सकन कर वाये हैं मेरा न लायक कर सकते हैं। आपके ते पताकवित प्रगतिवादी और क्योंनिएसेश से कको धोर बुढिबीचियों की भी इस्की बडी हेटी हुई है। इसकी वे बहुतो ने कुरान को पढ़ा नहीं है, इसलिए ने सब्यों के मामार पर तो हम याविका का विरोध हुए नहीं बकते हैं। परन्तु क्यांनि इस

याचिका के विरोध में तिसकर बिस मनोवृत्ति का परिचय दिया है, वह न प्रयतिवाद की परिचायक है और न सेकुलरबाद 'की।

ससार का इतिहास इस बात का साझी है कि इस्लाम भीर कुरान के नाम पर गत १४,०० वर्षों में बहुत मारकाट हुई

है। हिन्दुस्तान को भी गत हजार वर्षी से इसका कट् धनुभव है। बावश्यकता है कि हिम्दुस्ताम के लेखक भीर विचा-रक इस आरकाट की प्रेरणा देने वाले मुल कारणी को समभने के लिए खुले दिल से कुरान का बाध्ययन करें और स्थाह को स्वाह कहने की हिम्मत करें। हिन्दू-स्तान और हिन्दुयो की परम्परा विचार स्वतन्त्रता की परम्थरा है। यहा हर प्रकार की पुत्रा, विचार और मतिभन्नता की पुरी छट रही है भीर है। हिन्द विन्तको का विश्वास रहा है कि सत्य छिए नही सकता। इसिनए उन्होने हर विषय पर खुल दिल से विचार भीर खुली बहुस का प्रतिपादन किया है। इस इब्टि से कूरान पर प्रति-बन्ध लगाने की माग हिन्दू परम्परा के प्रतिकूल है। परम्तु कुरान मे क्या लिखा नया है और इसमें कीन सी बातें कानून भीर मान्यता विरुद्ध हैं, उनकी जानना भीर उसके सम्बन्ध ने सही तथ्यो को पेश करना एक स्वस्थ सोकतात्रिक परम्परा है ।

> वे ३६४, शकर रोड नई विल्ली-११००६०

निर्वाचन

धार्यसमाज परिवम विद्वार नई विल्ली ६३ का वर्ष १६८४-८६ के लिए निर्वाचन इस प्रकार हुआ है —

हस प्रकार हुआ है —
जान की बीं एतः वोसरी
स्वयम् भी राजवरत मिनोसा
स्वयम् भी राजवरत मिनोसा
स्वयम् भी राजवरत मिनोसा
स्वयम् भी स्वयम् प्रकारी
स्वयम् भी स्वयम् स्वयम्
स्वयम्भी भी राजवस्य साम्

भवदीय धर्मवीर झास्त्री, सन्त्री

धार्यसमाब बोहनबब का वाधिक बुनाव दिनांक १६ महै - ६ को समास्य हुमा। भीर सर्वसम्प्रति से निम्नलिसित पर्वाबकारी चुने यथ। प्रवान — सी सिबग्रसाद वप्त

प्रवान — श्री शिवप्रसाद वय्त उपप्रवान — श्री सुशील कुमारजी वापिया श्री हेमसिंह जी

(पृष्ठ ७ का योष) कुकता है वह तो खावा है, प्रतिबिध्य है। बास्तविक पदार्थ नहीं। वास्तविक पदार्थ तो ऊपर बुझ पर है उचर देखा।

इती प्रकार वेसमक अनुष्य भूल में फलकर परमात्मा प्राप्ति के उसते सामनी का प्रयोग करता है और उसको नहीं पाता, परानु जानी एक ही सन्य में अपना काम नना सेखा है।

> चुत्त क्ये जब झाव चमु किर कहां दूरी रही। चुती के मुख से कही नी बात को दूरी रही॥ बन्द का मुद्दत से पुरुषा

सन्त्री — श्री प्रेमशानरची गृष्त उपमन्त्री — श्री माताप्रशाद जी धार्य श्री नारायखदास जी मितल कोशास्यक — श्री नृपति राय पुस्तकास्यक — श्री कैवाश कृमार

ष कुमार शिवप्रसाद गुण्ड प्रधान

शोक-प्रस्ताव

विस्ती प्रायं प्रतिनिध्य समा के समस्य विकासी प्रायं समाप्ती द्वारा समाप्ती तथा समाप्ती तथा समाप्ती तथा समाप्ती तथा समाप्ती तथा समाप्ती तथा समाप्ती सम्य समाप्ती सम्य समाप्ती के सकस्यात देहानसान पर गहरा हुक एव गोक स्थलत करते हैं कि वह तथान पर नत्ता परमाप्ता से प्रायना करते हैं कि वह विवास वास्ता को ग्रानित प्रशान करे तथा सकते समाप्ती करता हु सी सहने समाप्ती स्थान कर समाप्ती स्थान कर समाप्ती स्थान कर समाप्ती स्थान कर समाप्ती समाप्ती स्थान कर समाप्ती स्थान समाप्ती समाप्

हा० वर्मपाल द्यार्थ महास्ट्रेडी

बह सवानक किल गया। जिसकी कातिर मैं मटकता या वह मुख्ड को मिल गया।।

करेनादान [यह तो बारीक से बारीक है पर तूनहीं बारीक वीं। वो है वेसता तुष्क को सवा तू वेसता उसको नहीं।।

बहु परमात्मा पवित्र मन मे ही भ्रा सकता है सपनित्र मन मे नहीं। पर-मात्मा-प्राप्ति की परीक्षा पास करने से बचार विनवता नहीं, बनता है। इसिंग् हैस्बर वजासना से बेसा पार होगा इसीं का बहारा सो।

जीवन जीने में है।

अपराधी पर कृपा (पृष्ठ२ का क्षेष) वे बुहबोर पुरवर्को ऍबतृह वसे व्यक्ति॥

धाकों के व्यसन से तम धाकर कि कहता है कि मैं इन धाकों को सभार को मर्वादाधों को सम्माकर बहुतेरा रोकता है किन्तु मेरा बग मही चलता। होता बहु है कि जैसे मुह्बोर भोडा बितना करास को सीचें उतने हुट से धामी गति करेतीक क ता चला बता है धीर स्वार को साज बना बेता है और वही बसा सीकी में मेरी भी कर वी है।

इस स्थिति से उवरने का एक ही श्रकार है कि दुव्यसन के साधन उस श्रांस को ही सीन सिया वावे । प्रास न रहने से उस दुव्यसन को कियात्मक रूप क्षेत्रे का प्रवसर ही न रहेगा भीर लम्बे समय तक उनकी धावृत्ति न होने के कारलाउन दुसस्कारो का ही परिमाजन हो जायना। इघर झासो के झमाव मे जो इच्छ उठाने प उनसे दण्ड भी भूगता वया बीर पश्चाल प बीर प्रावश्चित से हास्त्रिकसम्कारीका उत्तय भी हुमा। हेसाजीसापूराहोने पर प्रगत जन्म ने ब्रोचों फिर निल गयी और नया जीवन ब्राइम्भ द्वा । यति साथ सद्पयोन करेवा तो बब्टिलाम के प्रानन्त का प्रविकारी रहेगा।

यही है प्रभुकी दया कि उसका वण्ड भी समुख्य के कत्यास्त्र का कारत्व बनता है। प्रस्त भन्न में गहली बात कही नवी कि बहु बनु यो गुड्याति कहने विवास स्वराक करने वाले का भी कत्याम ही करता है।

इस्ते साने मण्य ने उससे भी नहरूव पूर्ण नात कही गयी कि वय वहणे सनावा स्थान भाग बीवन के त्वर के सनुक्य तो हिस्सित यही है कि हम वरणीय अनु के दरबार ने निण्याप मौर पनिन रहीं। बहु नाव बीवन हमें विचारपुर्वक सपनी पाशसी प्रवस्तियों को निर्मृत करने के निस्ही निम्ना है। स्कृताबिक पहुता तो मनुष्य के बाथ लगी ही रहती है पर विश्लेक हारा डेसे परिसाबिक करना ही मानव-बीवन का नहय है। किशी उन्न के सावत ने बहुत उत्तम कहा है—

ववाहिर सब हैं इन्हा शिव बातिन की चुवा जाने। कि हैं इन्हान इनमें कितने और हैवान कितने हैं।

चारी वेदों में निम्म स न प्राता है एसमे भी बहुत काष्यमय द ग से इस महत्व पूर्ण उद्दय की प्रोर ध्याम सीचा स्था

> सप्तास्यासन परिवयस्त्रि सप्तसमिव इसा । देवा वद्यस सत्त्वाना अवक्रम पुरुष पश्चम ॥ ऋष् १०।२०।१५

धर्यात् एक ऐसा भवन अथवा एक ऐसी यज्ञशाला है जिसकी सात परिविधा चारदीवारी (Boundery walls) हैं भीर उनमे तीन स्वानों पर शात सात समिषाए रखी है। प्रभू ने इस यह का विस्तार करने के लिए जीवरूपी पशु को इसमे बांचा है। इसक ग्रलकार के माध्यम से यह मानव सरीर भीर इसमे भीवारमा के झाने के उद्देश का बरान है। समस्त कमकाण्य मे सात परकादेवासी यक्षणालाका वरान कही नही है। चार बारह बीर इससे भी अधिक स्तम्भीवाली यक्रणासाका विचान तो है किन्तुसात परिवियोगाली का नहीं यह सात परिचि की यज्ञकाला मानव शरीर ही है। भागु वेंद के प्रन्य प्रष्टा ज़हुबय में मानवबेह की त्वचा की सात परतें गिनाई हैं— सप्त त्वची भवन्ति ये ही सात चारवीवारिया है। तीन स्वानो पर साल साल समिवाधी का विभान किसी यज्ञ म नही है। ये तीन स्थाो पर सात सात समिथाए सात बातए रस रक्त मञ्जाद्यादि सात हैं। ये २१ समिचाए प्रतीप्त होकर इस सन को चलाती हैं। ग्रर्वात् इन समियामी से ही बहु यज्ञ द्वियाशील रहता है। इस यज्ञ का लक्ष्य यह है कि इस मानव शारी र कपीयक्रशाला में वैंथा हुआ। जीवरूपी पशुपश्रह की माहति दे दे। सर्यात् विवेकपूरक कम करके काम कोबादि पर विजय प्राप्त करे। विवेक रहित मानव भौर बच्चे को पशुनाम से बेद में समि हित किया गया है। बहाचयवत**्**वक गुरु कुल में विद्यापन से यह पश्ता दृटती है

कोर इसी का एक नाम पखुवाम की है। यह मानव जीवन की सफ्तता बाम पूर्वक वर्मावरण में है। वस्ति विचयों के स्वाम बहुत जटिन हैं किन्तु विवार में इत्तरी बड़ी सफ्ति है कि दुष्ह मार्ग पर की उसके खुरारे सफ्ता प्राप्त की बा सकती है। विवार मुरारावादी ने इस स्वस्ता में वह पते की बात कही है।

इस्त की हर खबा वे बानो दिल सदके जनर। शुरुक कुछ बाजन वजाकर ही गुजर खाने ने हैं।

सवारि सवार के विषयों में वाषणे की बहुत वही विस्तर है। विषय वस्तर स्थाकरण की किन्न करने वालु के बना है। निभाग करने कालु के बना है। निभाग करने कालु के बना है। निभाग करने के पह प्रवार विषय कार का प्रय हुआ विश्वये करने की बहुत क्षमता हो। किन्नु विवेक और विषया से भी वह समात है कि उसके वामण वह विषय की लीह पुरुवान हुन के करने वाने के समान नुष्कु है। विवेकी महापुक्तों ने काम कीच लीम मोह नव धीर गास्तर्य की तृण तुरूव तार होन वनाकर मान म तोड मरो इकर के दिया धीर वनाकर मान म तोड मरो इकर के दिया धीर वनाकर मान म तोड मरो इकर के दिया धीर वनाकर मान म तोड मरो इकर के दिया धीर वना से मनाकर पर दरवारों चने में थे।

बत मनुष्यता की सार्थकता निष्पाप

म क के उत्तराय में निल्याप जीवन में चलने भीर वह रहने के लिए उपाय बताया क्या है कि धा-गोल्या के बतो पर चलने वाले तरकी विद्वालों के जीवन व्यवहार को नेवकर उनन प्ररच्या लो कि इस दुनिया के फिसलन परे नाय पर बस्पने पैरो को कीट दिका पामें ? एक जिजाल यात्री के लिए इस प्रकार के पय प्ररचक का निवना बहुत वा सहारा है। सिलाकों को सलायित पर धावाय सम्बन्ध स्नातकों को समिला पर धावाय सम्बन्ध स्नातकों को समिला वात शाठ वाथकर

श्रव यदि ते कम विविक्तिसा वा क्लविविक्तिसा वा स्यात् ये तत्र बाह्यण समीशनो युक्ता श्रवुक्ता श्रवूला समकामा स्यु स्वाते तत्र वतरत् तथा तत्र वर्तेषा। (स०वि॰ समावतन)

ले जाने के सिए यही कहता है-

यदि सवार वे तुम्म क्विती कलाव्य प्रोर प्रकल्पन के विषय में सवाय उत्पन्न हो तो को दिवार ाल अनुसन महिता करिया में सवाय उत्पन्न हो तो को दिवार कि स्वार कर के कम के घोषित्य का निक्य करो धौर उस प्रकार की परि स्थिति चौर कामों से वे जेंद्रा प्रावरण करते हो तेमा हा करते वसे बाधों वस्त प्रवर्ण कर के स्वार्ण में निष्वय रही। वसोव्य है यह प्रपत्ने मन से निष्वय रही। वसोव्य हो से साथ पदि इस प्रकार का सन्वार्ण व्यवित विद्यानुद ची हो तो कहा। दे वस है नहीं तो घाषार वान् वसोव्य के परिवर्ण को भी नीति कानो ने महत्ववयुण माता है।

प्रबृद्धवयस पृसो पिय पाक प्रजायते । बीर्तस्य चन्द्रनतः । द्यानोद उपवायते ॥

> काम या करके चुदा के कि चुदा के नजबीक। स्थामे नेहतरन हुई है न दबाबत होगी।।

धाज लोग ईवनरमनित का घर केवल प्रपत्ता कल्याण धीर न्यति सम भते हैं। किन्त तत्वदर्शी सामाजिक सरवान के साथ साथ जिससे सान्ति मिले कसी साव को अच्छ सानते हैं। ऋ दि दया सन्य से एक महत्ता ने जब यह कहा कि दयान द तुम नया समाब सुवार के जबार का गये यदि तुम सविवल भाव ने सारश्माधना से लगते ता ग्ला जम में तुम्हारी मुक्ति हो जता। इस प्रदन का ऋषि न्यानस्य ने जो जतार दिया वह कर्त्याल्या में सिकने योग्य है। ऋषि ने कहा महास्प्रां पत्तम के गत स सिरे देशव नियो »। उपक्षा करके मैं सपने सकेले को मुक्ति नहीं बाहता इन दोन-दिवारों का क्ष्ट निवार सु करते करते मेरी मुक्ति भी स्वत हो बाएगी।

धाज क्षमाज के वृद्ध समुदाय में यह भावना जग जाय तो देश की कार्यापलट हो जाए। हमारे घर स्वग बन बार्वे।

कार्यं निवृत्त वृद्ध भीर वृद्धाए वर मे भागवते रहेग । समबयस्को मे बैठकर राजनीतिक लीडरी की बालोचना करते रहेंगे। मनोरबन के लिए नाग शतरब भीर चौपड लेलते रहग भीर साम प्राप्त चार सन्त्री का पाठ करके ऋमते हुए बानिपाठका सत्र बोखदग ग्रीर ग्रपने क्ल॰य की इतिश्रासमक्त लगे। यदि ये काग गली महल्ले बाटकर समाज में फैला हुई बुराइयो को दूर करने के निए वच्ची धीर युवको को वार्तालाप में सदिवचार दें तो देश का उद्घार कर दें। भाज एक दूसरे के विगडे हुए वच्चो को दसकर भीर एक दूसरे भी भाषावना करके स तुब्द हो नेते हैं। कित ये नहीं सोचते कि बच्चे समाज धौर देख की सम्पत्ति हैं। इनके प्रबाधक होने से देश दुवस होकर पतनो मुख होता है। इसके अग्तिरिक्त विवड बुक्क धपने ।रिवारवालो के लिए उतने हानिप्रद नहीं हैं जितने कि दूसरों के लिए सत सार यह निकला कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज मे होने वाले सदगुण दुगुसा के परिमाम भी सुका धौर दुल के रूप में उसे घवन्य सहने

> बक्षर पहलू मैं दिल रखता है बद तक। उसे दुनिया का यम साना पढेंगा॥

स्थलिए शांतिपाठ का मन्य इस तन्य को समक्राता है कि सक्त ! जिस शांति को तूमागरहा है बहुतव मिलेगी सब शुनोक से भूतल तक समृ समृ सौर कए। कए। में वह समा वायेगी।



समाचार-सन्देश

ला॰ रामगोपाल शालवाले द्वारा त्रार्थवीर दल प्रशिज्ञण व्यायामशाला का शिलान्यास

गुक्कुल भठकर से १३६-८६ वे चल रहे सायवोरस्त के बीजान्त नमा रहे से म न ने के लिए सावेदीतिक सार्य प्रतिनिध्य सार्य स्वाप्य सार्य प्रतिनिध्य सार्य होतु सार्य सार्य

सार्यचीर दल के सत्यापक जी स्थान एक सामार्य जी त्यागी एव बालदिशावर हल हत्यादि केताओं ने वह स्टैसना किया कि सार्य सेतो के निवसपूर्वक प्रतिस्थापार्य व्यायप्त-सामा का होना प्रतिवार्य हैं। प्रायव्य-दिक्सार किया कि प्रायवीर दल प्रविशस्य व्यायामशाला की स्थापना यहा चुक्कुल फजकर में ही की जाए तथा दसके गीम निर्माण की कामना करते हुए ताल आप्ताप्त ग्रेपाल की कामना करते हुए ताल आप्ताप्त

केदारसिंह सार्य कार्यालयाध्यक्ष भार्य प्रतिनिधि सभा हरियासा

श्रन्तर्राष्ट्रीय श्रार्य महासम्मेलन डर्बन (दन्निग्र श्रक्षीका) संबंधी सूचनाएँ

वेद निकेनन दर्जन के प्रचान प० गरवेद , विद्यालकार ने दक्षिण प्रकीका से होने वाले सन्तराष्ट्रीय सार्थ महास्थ्येकन के स्थानक में निष्म सुकार्य हुन प्रकान-वार्ष भेजी हैं। तस्तुमार नहा पश्चने वाले वर्षकों के लिए ३० दिव की वजाय १० विन ठहरने की मतुमति भारत सरकार-प्रतिनिष्म मन मायविद्याल सार्थ प्रतिनिष्म मन मायविद्याल सार्थ प्रतिनिष्म मन मायविद्याल स्थान प्रतिनिष्म मन मायविद्याल स्थान प्रतिनिष्म मन मायविद्याल स्थान प्रतिक्ष स्थाने कारी प्रतिकार से स्थान-प्रवाद स्थिए प्रसीका जान की सनुमिन नहीं दा जाती। पिर भी सरकार से प्रत स्थवहार हा रहा हा।

२— वीखा क प्राप्तापत्र का फार्स ठीक तरह म प्रभाप पर, उनके कपना मुसार जिल्ला का ठिन ईकी समावना नहीं है। (बावदान पत्र के इस्कुक बीसा प्रमा की काणी इस समासे प्रमास कर सकते हैं।) प्रनितिश्वि समार्थ इस सरक्ष से क्षणी प्रस्त केत्र म माय सुचनाए प्रका-शित करा था।

६— (१) बीवा फार्म के खाव पास-पोट के पहुन चार पुष्ठो की फोटो स्टेट कापी जिसमें पासपोट नस्वर व्यक्ति की पश्चान सावसेशिक मध्या में प्रवेश करने का अनुमति भार्रि हा, नह मेजना जरूरी हैं। पासपोट अजने की शावस्यकना नहीं है। इस एक स्थावन के दो पाटोग्राफ होने चाहिए जिसके पीछ उसके हुस्तातर स्पष्ट बक्तरों में (बबेजी में पूरा नाम तथा जन्म तारोज लिखी हो।)

(२) ट्रेबस एकेण्ट से जॉब करके एसो फीवर तथा कौलैरा के टैस्ट र्टाटिफिकेट वीसाके फार्म के साथ जरूरी मेवी जायें।

(४) पास पोर्ट में प्रवास के देशों में साजब प्रमोका प्रवेश पर निवेश निवस पहुता है। इसको रद्द करवाना भावेबक के लिए ब-री है। प्रवासों के लिए प्रपर बन पहुंचने पर पासपोट फीस अरबी होगी ।। उनकी भोर से मार्थ प्रतिनिधि सभा साजब म्राजीका इस पीस को भर केंगी।

ज्ञात हुआ। है कि बम्बई सौर गुज-रात से दर्शनों का एक सच्छा समूह इस प्रवसर पर वहा पहुचेगा।

सारत सरकार से दिलम प्रफोका मे प्रवेश की धनुमति दिलाने में सभावित विनम्ब को देखकर भी नगदेव जो का मुख्याव हैं कि वाधगोटे के पहले चार गुरुते की फोड़ों कागी एवं बोशा फाम पहले भेज देता बाह्यिए । बिलम प्रफोवी सरकार बीशा फार्म पर यह मानकर स्वीकृति वे देती हैं कि वहीं उपस्थित रहने के समय तक सारत सरकार की धनुमति पाख पोर्ट पर मिल सावेगी।

> (धोनप्रकास स्वागी) नत्री

निर्वाचन

धायसमाज परिवामपुरी नई दिल्ली का नवा निर्वाचन १६-५-६५ को हुआ जिसमें निम्म प्रतिनिधि मुख्य रूप से चुने गए हैं— प्रकान — श्री राजभरत मिनोचा मन्त्री — श्री सतीछ धार्य कोवाच्यक — श्री झानचन्द

> खतीश **मार्ग** मन्त्री

श्रार्यसमाज राजौरी गार्डन का निर्वाचन

प्रधान — की हरिबाज़ गुप्त उपप्रधान — सर्वश्री गनपत राव वर्मा, बस्रतावर मस, नागपाल व वेशराज सैठी मण्डी — की नम्बक्तियोर भाटिया

मन्त्री— श्री नन्दकिशोर भाटिया उपमन्त्री—संदश्री तिलकरात्र पुरी, कृष्ण साल सार्यं व विनीत कृमार

ाव पन कोषाध्यक्ष — श्री केवलकृष्ण् कोहली पुस्तकाष्यक्ष — श्री इन्द्रकृषार कपूर लेक्सनिरीक्षक — श्री मोहललाल वस्त्र

निरीक्षक – श्री मोहननास बन्द सुरेन्द्र हिन्दी

धार्वसवाब (रामस्वकर हान) धार्व-पूरा मक्त्री पथी, किली का -२ वां वाक्त्रीस्त्र एव खावारण एका का वाक्त्रिस्त्र एव खावारण एका का वाक्त्रिस्त्र धार्वस्त्र २३ जून १६-६ रवि-वार को प्रात १-०० वस्त्र सम्बन्ध्य हुमा। विस्थे नवीम वज्र के लिए निम्म पवाक्ति-कारियो का निर्वादन हुमा।

सर्वश्रीसन्तोषवीर प्रभान ,, राजेन्द्रप्रसाद उपप्रधान

,, राजन्द्रप्रसाव स्वयंत्रमान ,, भ्रोमप्रकाश वर्गा ,, ,,

,, पुरुषोत्तमदासः ,, ,,

,, रणवीरसिंह मन्त्री ,, स्वामबहादुर सैनी उपवन्त्री अभिनती राजकुनारी उपमनाणी स्त्री पुष्पराज कोषाध्यक्ष

,, बीरसैन पुस्तकासबाध्यक्ष ,, धीमप्रकाश शर्मा लेखानिरीक्षक

> प्रधान बार्यसमाज बार्यपुरा

सन्त्री नण्डी, दिल्ली-७ 'धार्यसमाज बाजार सीताराम

दिस्सी के वाधिक खाचारण धिषवेशन में निम्नसित्तित पदाधिकारी व धन्तरम बदस्य सर्वेशम्मति से निकांचित हुए — प्रचान—भी राजाराम जी शास्त्री जपप्रचान—भी सुर्वेनसिंह जी एव भी नैक सम्प्रनाथ भी शास्त्री

मत्रो—श्री बाब्राम झार्य उपमत्री—श्री किशनलाल जी तारवाले, श्री राजीव खडेलवाल जी

कोवाञ्यक्ष--श्री नरेन्द्रनाच गुरता पुस्तकाञ्यक्ष--श्री कमल मालवीय जी लेखानिरीकक--श्री रावारामसिंह ची

क्रमणरा सरस्य — साला - नावरस्य बृध्य, जो रोवानवस्य पसटा सो सूर्य सान वस्त्र से स्थापक्रमण अहेदवरी, जी स्वचनाल कृप्ता, जी रावेणकृतार, जी क्रियमणाल कृप्ता, जी रावेणकृतार, जी रामक्य, जी प्रकाशक्य शास्त्री, जी रामक्यए वास, जीवती शीस गाहेब्बरी, सीमती क्रपावेसी, जी क्टप्रकास, जी गोरीनाव गोटेटाले, जी व्हिप्रकास ।

विशेष धामन्त्रिय —शीमती खान्द्रा बसस, भी दवानन्त्र खुरासा, भी खबदीख चन्द्र बुप्ता, भी सुधीस कुमारी । बासूराम धार्य, मन्त्री

सम्पादक के नाम पत्र-

हार्दिक बधाई

मैं स्वित्तित्वत कर ते धापको ' धार्ये धन्येवा' वारवाहिक पत्र के सम्पादक होने की बहुत बहुत मुनारक देवा हू। धापके सम्पादक होने के मुन्ने ऐवा सामाख होना है कि वास्तव ने धव यह पत्र स्वामान्य के धादशों को मूण कर से स्वाम् द्यानन्य के धादशों को मूण कर से स्वाम् रित कर रहा है। धव दव पत्र को पढ़ कर एवा सनता है कि इस पत्र का सखा-सन किसी थोग्य तथा पूर्ण विद्वान् के हाथों में है। मैं पुन धायको वधार देवा हू।

> हसराज मदान झार्यसमाज मशोक विहार तृतीक

भारतीय जागरण में श्रार्यसमाज का योगदान

श्रायेसमाज का योगदान महोबय, श्री महाबीर विद्यालकार सिवित उपर्युक्त शीर्वक नेवा २६ महंके बक मे

उपर्युक्त शीर्षक लेख २६ मई के सक मे प्रकाशित हुन्ना है। क्या लेखक महोदक भ्रपने इस कथन की पुष्टि इतिहास 🖣 भाषार पर करेंगे कि स्वामी दवानन्द ने साबुधो की टोली बनाई धौर हाथों में क्मल काफून ग्रीर रोटी का टुकड़ाले कर कश्मीर से कल्याकुमारी तक भ्रमण किया भीरस्वतन्त्रतायुद्धकासन्देशपट्टचाया। श्चायद ही कभी किसी साधू टोली ने दया-नन्दका साथ दिया। वे तो ग्राने जीवन के प्रारम्भिक भाग मे एनाकी ही विवरण करते रहे। ऋषि ने भी महाबीर जा के अनुसार नाना साहत और अजीमुल्ला आताको सौराष्ट्र जाने की सलाह दी बी। परन्तु इतिहास इस सम्बन्ध मे कुछ, नही कहता ।

> डा॰ भवानीलाल भारतीय पंजाब विश्वविद्यालय चर्ण्डगढ

प्रवेश प्रारम्भ

बनुमवी विज्ञाविद्यों के नेतृत्व एवं विद्युद्ध नवीन प्रशावित्य व्यवस्था में पूर्वाचित्र वापन महाविद्या स्वयं किरत्व (मेरट) में एक बोलाई वे खार्मों का नवीन प्रवेश प्रारम्भ हो रहा है। यहा बन्यू मानन समझत विश्वविद्यान्य सारामवी की प्रपान के पूर्व व नवार्य पर्वेत्व कलाओं के प्रपान की पूर्व व नवार्य पर्वेत्व कलाओं के प्रपान की पूर्व व नवार्य में कलाओं के प्रपान की पूर्व व नवार्य की साराम की व्यवस्था कि तृत्व है। शिक्षा एवं धानात की व्यवस्था कि तृत्व है। शास्त्री एवं धानात के व्यवस्था कि तृत्व के विश्वविद्यान की प्रपान के विद्यान की प्रारम की साराम की साराम की साराम की साराम की साराम साराम की साराम साराम की साराम सार

मार्ग-निर्वेश — वेहली से सहारतपुर बाने बाले बस मार्ग के रमाला स्टैण्ड से टाच्डा बाने वाले बस मार्ग में किरठल है।

> प्राचार्य समरभानु झाचार्क

गुरुदत्त विद्यार्थी (पुष्ठ १ का शेष)

को प्रार्थसमाज मन्दिर लाहौर में
गुरुवत्त ने एक सभा बुलाई, जिसमें
स्कूल की प्रावस्थकता धौर उद्दर्श पर प्रकाश हाला गया। तथा अनता में इस पवित्र काय के निए उत्साह भरा। प्रावित्र प्रतीक्षा को घडियाँ समाज मन्दिर प्रतीक्षा को घडियाँ समाज मन्दिर गली बच्छो वालो में एक सार्वजनिक सभा करके डी० ए० बी० स्कूल की स्थापना कर दी।

o स्कूल कास्थापनाकर दा। पडित जीने १८८६ में इतना काय किया जितना साधारए। व्यक्ति एक वर्ष में भी नहीं कर सकता। वे कृवनतों विस्वमायम की छुन के दीवाने हो गये। जो स्यक्ति मस्पन में मा माना उसे नी म्राय बनाते के लिए जुट जाते। न जाने किनने व्य किनयों को इस प्रकार ाव जीवन

जुलाई १८८२ में विदक्त मग जीन के नाम ने धाम्ल भाषा में एक मामिक पत्रिका का सपादन ब्रारम्भ किया। पड़िन जी इस पत्रिका में वैदिक सिद्धातों पर क्षोजपूरा लेख निक्षा करते थं। लेख इनने विद्वता पूर्ण होते थ कि देश विदेश में सवत्र पत्रिका का मान हुआ। पत्रिका चलती फिरती आर्यसमाज थी।

ईश्वरीय नियम अपना वटना लिए विना नहीं ओडते। जो वरमात समय से परले ह्या जाता है वह शीष्ट्र ही समाप्त हो जाती है। पडित गरुदत्त जामे प्रतिभा समय मे पव नी बरम पनी थी। जिस उम्र म नमरे बच्चे गिल्ली इटा खेनते हैं उसमे गस्दत्त जो नै प्रामायाम करना ब्रारम्भ कर दिया था। १० वप की भवस्था का विद्यार्थी पजाब की भाय समाज का प्रतिनिधि बनाकर ग्रजमेर भेजागया। २४ वावष परा होता कि नौजवान एम० ए० को पढाने के निए गवनमेट कालेज से साइस का बना भ्रध्यापक नियुक्त कर दिया गा।

फिर पडिन जा ने नियमों को तो जिने में कमर न जोणा। जिस काम में लगे उसके सिवा मत बुख थुला दिया। जिन ने नोगा का उस जानी हैं बे कणा के ते यह कि जब वे विकास मंग्जीन को लिखन वन्ते खान कहें दिनों नक घर मं वाह नहां निकलते खाजव एन्हें पता ता विकास मंग्जीन को लिखन वन्ते खान कहें दिनों नक घर मं वाह नहां निकलते खाजव एन्हें पता ता व खाटे नक एक मिनर भर दिलिए विना पढ चल जाते था जब सोने की धुन सवार नोती थी तव २४ घएटे को जकरनी समाधि लगनी थी।

हम प्रकार के प्रोतक्रमणों से नोहें का सगर भा प्रस्त व्यस्त हो मस्तत है। वालों में पडित जा का अगर सम्मेन व मजबूत था। पर जु ईश्वरोध कि गम्मे के उल्पन न उसे शिजिक कर निया। प्रतोन नोता है कि गम्मे विना प्राणायाम क परि अस ने भा जराग्यर कुछ बरा प्रभाव उपन क निया। इन कारणों से प्रधायसमाज की प्राथाधों के के द्र उस होनहार नव्युक्त को क्षय रोग ने साघरा। फलस्वरूप १६ म व को प्रभात के ७ वजे स्वामी दयान न के सब्बे हिएय ने ५६ वर्ष की सत्याद्ध में ही इस लोक से प्रयाग्य कर दिया। पंडत गम्बल तियाधी जी उस कली की भाति थ जो खिलने से पूर्व हो पुरभा गम्बल। उहाँ निक है कि प० जो के पश्चत आससमाज को गोदी में सनेक र न खिले जिल्हाने सार्य समाज का गोनव द्वारा। पर कोई पुरस्ता प्रमा उनका अभाव तो स्वाप्त प्रकार अभाव तो स्वाप्त पर होता। उनका समाव तो स्वाप्त पर होता। उनके दिना वह सोभा नी नी हो भी कें

जिसे रौनक तरे कदमो ने देकर छीन नी रौनक वहनार ग्राबाद ने

उसे घरकी विराना नहीं प्राइ। प्रशुकरें हम पडित जी के चर्या चिह्नो पर चलकर विश्व में विन्कि मायनाआ का प्रचारकर सक। यहा उनके प्रति मण्बी श्रद्धाजलि होंगी

शोक प्रस्ताव

गरुकुल कागडी विन्वविद्यालय की यह नाक सभा एटलाटिक समुन के एयर इण्टिया जवाजट वायुयान दुघटना मे **३२६ यात्रियों के मारे जाने पर गहरा** गोक प्रकट करनी है। विश्वविद्यालय यह अनुभव करता है कि यह भीषरा एव ह्दय विदारक दूघटना एक राष्ट्रीय क्षति कं रूप में हम सब के सम्मूल है। दघटना में मारे गए इन यात्रियों ने पर शब्द की एक सम्भ र क्षति टूइ है। शोक के वस सतप्त बातावरए म विश्वविद्यालय की यह सभा न्द्रवर संप्राथना करती है कि मत ॰यदितयो क परिवारों का इस गहन द ख को सहन करने क श्यमता प्रदान करे। यह सभा सरकार भ माग करती है कि इस भीषण दुवन्ता क कारही की स्न्मतासे जाचकी जगतयायह सूनि श्चित किया जाय कि कही दुघटना से विवन्नकारी पक्तियो दाता हाथ नहीं — वित्वविद्य लय क समस्त धनिकर एवं क्सचा**री**

ग्राम प्रचार श्रनला

िली स्रय प्रतिनिधि सभा द्वारा वद प्रचार व्यवस्था का कायक्रम अहे य साहपूबक चल रण ह। सभा के बढ प्रचार धारिष्याना स्वामी स्वरून दके द्वारा एक मप्ताइ तक यू लिचडीपुर कालोनी में यो ला॰ दामान्द प्रसार जी आय के निवास स्थान पर २२ जन की बह्दयन व समरोहपूवक सम न हक्या। इस अवसर यज्ञ क ब्रह्मास्व सीस्वरूपा न दनेपचयजीके महत्व धम राष्ट घैर समाज के र्जात हमारे क्या कल्लब्य है विषयो पर प्रकार । ला सभाके भजनो पदशक श्री द्या राम प्रमी सीर श्री इय मवीर के भक्ति स में धोतप्रोत असी न सैकडो नर न रियो को भावविभीर कर दिया। सवाददाता झायसन्देश





रजिं न व डी (सीं) ७५६ अ वुना ११ = ५

श्चार्य जगत की शान २०० बिस्तर वाले निर्माणाधीन नेत्र चिकित्सालय

(अनुमानित लागत दो करोड रुपये) के लिए दिल खोलकर दान दीजिए

दान की राशि ग्रायक्तर ग्रिधिनियम जी० ८०के श्रतर्गत कर मुक्त होगी।

सारा दान चैक/मनीम्रार्डर/बैक ड्राफ्ट द्वारा

मत्री, माता चन्ननदेवी आर्यं धर्मायं नेत्र चिकित्सालय, मो-१ जनकपुरी, नई-दिल्ली-४= के पते पर भेजा जाए। दानदाताओं के नाम चिकित्सालय की शिला पर अकित किए जाएगे।

निवे इक

रामयोपाल शासवाले पूर्ववेष महाशाय वर्षपाल भो अप्रकाश झार्थ सरक्षक विकित्सालय प्रधान, शिरुली प्रधान प्रका एवं प्रधान, शांच्या प्रसिनिधि धार्य केल्द्रीय महासाय युःगीसाल प्रति ० सामा समा समा वेरि० ço

सौजन्य से महाशियाँ ी हट्टी प्रा० लिमिटेड श/४४ कीर्तिनगर, ग्रीद्योगिक क्षेत्र, नई बिस्ली-११००१

खिचड़ीपुर चे त्र में प्राम-प्रचार

ला॰ दामोदर प्रसाद धार्य द्वारा लिजडीपुर क्षेत्र में ग्राम प्रचार रक्षा गया। जिममे विल्ली आर्थ प्रतिनिधि सभा के वेद प्रचार प्रविष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती प्रचार वाहन लकर साथ संगीत कलाकार पण्डित बासाराम प्रेमी व श्वाम राधव की दारा वैदिक समंका प्रसार ह्या । १७ ६ ८५ को ला० दामोदरप्रसाद भार्यं के निवास स्थान पर रात्रि ६ वजे से ११ बजे तक प्रचार कार्य रहा। ग्राम निवासियों ने भारी सत्याने पंचार कर वर्मलाम सिया। १८-६ ८५ की रात्री को सिवडोपुर न० ३ में प्रोग्नाम रसागया, जिसमें सँकड़ो नरनारी एक त्र रहे। १२ बजे तक कायत्रम जलता रहा । दूसरे दिन के लिए इसी स्थान पर कार्यंक्रम रखने कानिवेदन किया गया। १६-६ ८ ५ को भी इसे स्थान पर इया व उत्लास के साथ प्रोगाम सम्पन्न हवा। २०-६-८५ को बार्य-समाज मन्दिर खिचडीपुर ने सामने नाय क्रम रसः। ग्या। यहा ग्रधिक सक्यामे ग्राम निवासियो न भाग विका। रात्रि १२ वजे तरु प्रोग्राम चलाया गया। संगीत क्लाकारों ने बपने भजनीपदेश से जनता को उत्साह दिया।स्त्रामी स्व**रूपान**न्द जीने महर्षि दयानन्द की विशेषता धीर धार्यसमाज की गतिविधियो पर प्रभाव-

वाली उपवेश और हास्य कविताओ हारा स्वमी को वस्थाहित किया—कोतानकों में एक हुने की सहर रही—बीर सभी ने मान की कि यहा पर र सप्ताह तक प्रवार कार्य रक्षा रक्षा जाये। बहुा समिक्ष बनता में बीद समें का प्रवार खिक है। हम चाहते हैं कि वही वैदिक मानाओं की पिनेत मान बहारे दे ताकि हम सभी काकोनी के निवासियों की बेदा-मृत पान का प्रवार समिता रहे। बनता को मान पर बहु मान कार्य रे७ से २२ जुन तक का बडा दिया नथा।

साम प्रकार के लिए बहुत परिस्थान करना पड़ता है जबिन है - असे तक
सर्थकम करना पड़िए साम ने रानि
है - क्षेत्र कुन होता है और १२ व है क्खें
तक प्रोक्षाम चलाया जाता है। हम तसी
स्थान क्षाया पड़ार में पूर्ण
सहयोग देने ना प्यान रकना है ताकि
हम सभी संगठित होनर नैविक सर्थ
प्रवार के स्पर्धन होते है। तब एक स्वर
में नहेंगे कि हज्याते विन्यायम् सी
वोचे सो साम - वैदिक सर्थ हो ना वि



उत्तम स्वास्थ्य के लिए गुरुकुल कॉगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार की और्षाधयां

सेवन करें

ाया कार्यालय—५३, गली राजा केशरनाय, भोन २५६६२= चात्रडो याजार, शिलो ३





मुल्य एक प्रति ५० पैसे

वय श्रमक ३४

रविवार, १४ जुलाई, १६०३

द्यार्थं सबस्सर १६६०८५३०८५

बावाड २०४२

वयानन्वास्य--१६१

महान् साहित्यकार, शास्त्रार्थ महारथी स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

— डा० भवानीलाल भारतीय

त्र्यायंसमाय के प्रदितीय विद्वान लेखक बास्त्रार्थं महारयी और वक्ता स्वामी दर्शनातस्य का जन्म माथ कृष्णा दशमी १६१८ वि० को लुधियाना जिले के वागरावा नामक याम में हुआ। इनके पिता कानाम प० रामप्रताप झर्मा का जो भीदगल्य गोत्र के सारस्वत बाह्य व थे। माता का नाम हीरा देवी था। पुरानी प्रया के धनुसार इनका नाम नेतराम रक्ता गया किन्तुशी झही इसे बदल कर इन्हें कृपा दाम के नाम से पुकारा जाने लगा। क्याराम की प्रारम्भिक दिशा निता के निकट ही हुई तथा उन्होंने फारसी बन्य गुलिस्तौ तथा बोस्तौ पढे। साथ ही सस्कृत व्याकरख के ज्ञान के लिए सिद्धान्त कौमुदी पढना बारम्म किया। तस्वालीन प्रयाके अनुसार इन का विवाह वैशास कुष्णापवनी १६२६ वि० को नात्र ११ वर्ष की बायु में पार्वती देवी नामक क्रम्यासे कर दिया गया।

कुपारान के पिता धपने प्रान के एक सा-के क्षवकारी और बनाइन व्यक्ति है। कनकी हार्वक इच्छा थी कि कुपाराम भी क्क तिपुछ अपपारी बन कर बनोपार्कन करे परन्तु कुपारान की ज्यापार ज्यवसाय से सहुन विरक्ति थी। स्ततन्त्र प्रकृति के होने के कारण एक दिन अपानक सुह्यान कर सन्यासी वन गये। सन्यासी बन कर वे प्रवाब के विभिन्न नगरों में बूजते रहे। इसी धविष में उन्हें स्वामी द्यानक के देश मास्यान सुनने का धन-सर मिला। धन तक उन परनवीन वेपारा सी विचारवारा का प्रवन प्रमाव वा। इस समय उन्होंने विने सावादी नायक २० पूर्वों की एक पुस्तक सिवा को उन्हें पक प्रस्तक सिवा को उन्हें पक से बी । वह धीना नगर (प्लाब) में वे एक पास्ती से बहुत कर रहें थे, उनके जावा सवराम ने उन्हें जा पकड़ा धीर वर कमते के लिए विवध किया किया हिपार पर कमत के लिए विवध किया हिपार पर तीन कर के लिए विवध किया हिपार पर तीन अर्थों के साम — है। ने पने बरूत नहीं उतारेंगे। (२) चर से न रह कर बैठक- साने में रहेंगे। (३) स्वामी बयानव्य के समस्त प्रवा क्रय करेंगे। इसे सी शर है सी शर है होंगे पर से पूर वर बीट कारों।

प० क्वाराम के पिता प० दौसतराम भ्रापने जीवन के भन्तिम भ स से काशी रहन समे था यहा उन्होंने एक क्षेत्र चनाया जिसके माध्यम से सस्कृत पढने के इच्छुक खात्रों के मोजन मादि की व्यवस्थाहोतीथी। पितामह के दिवयत होने पर प० कुराराम को काशी रह कर रतकी सम्पन्ति भादि की व्यवस्था करने के लिए कहा गया। यहा उन्होंने तिमिर नाकक प्रेस की स्थापना १० दिसमार १८८६ की की तथा इस प्रेस के मान्यम से वे संस्कृत शास्त्र ग्रमी का प्रकाशन कर उन्हें सस्ते मूल्य पर आहात्रों को देने लगे। वहा रह कर ही उन्होंने स्वामी मनीपान-द नामक विस्वात विद्वान् का शिष्मस्य ग्रहरा किया तथा उनसे दर्शन शास्त्र का निगड श्राच्ययम किया। सन वे इड ब्रायेसनाजी विचारों के बन चुके वे। काशी में रह कर विद्याच्ययम करने वाले धार्वसमाधी उन्हों को सनेक कठिवाहयों का सामना करना पडताथा। प॰ क्रपाराम ने इसे धन्मव किया और उन्होंने एक बाठवासा स्वापित की बिडमें बार्यवसाओं विचारवारा के खात्रों के पढ़ने की सुबाद व्यवस्था थी। प॰ काशीनाच शास्त्री इस पठवाला के कम्यापक वे तथा प॰ वबादस शास्त्री एवं प॰ भीमतेन खर्मा (खागरा) धारि उन विनो विचार्सी वे।

भीरे भीरे प**॰ क्र**पाराम का क्षेत्र धिक व्यापक होता गया । धव वे वैदिक वर्ग के प्रचारक बनकर प्रजाब तथा संयुक्त शान्त मे भ्रमण करने लगे। १८६३ से १८६ तक का काला उक्त दोनो प्रान्तों में व्यनीत किया। १८६७ से १६०० तक मेरठ मुरादाशव, दिस्ली भागरा भावि नगरो मे रहे। नियमित रूप से शास्त्रार्थ करना व्याख्यान देना एक टुँक्ट रोज निसना श्रकासमाधान करना ग्रादि कार्य-- उनकी दिनचर्का के ग्रग थे। स० १६० में पर क्याराम ने सन्यास की दीका स्वामी प्रमुखनानन्य मे जी धीर दर्शनानन्द नाम स्वीकार किया। धव के सवतत्र स्वतन्त्र परिवाजक होकर निद्वन्द्व भाव से विकारण करन चर्च। स्व मी दशना_ नन्द की प्रवृत्तिया निम्न प्रशार से बरिएद की जा सकती है---

- १ प्रतिद्वन्त्री धर्मावसम्बयो से शास्त्राय-छन्द्रोंने पौगाणिक जैन, न्साई तथा इस्नाम मनो के प्राचायों से सुकेबो शास्त्रायं किये।
- २ गुस्हुनो की त्यापना—सिक-न्दराबाद (उत्तर प्रदेश) बदायू तया क्वालापुर वे गुक्कुको की स्थापना का खेब

चन्हें ही है।

- ३ विभिन्न पत्र पत्रिकाक्षो का सपा॰ दन एव प्रकाशन—प्रपने जीवन काल वें उन्होंने कोई एक दर्जन पत्र प्रकाशिक्ष किये।
- ४ लेखन कार्य-व्यामी जी ने रेटर्ड से एक ट्रेस्ट प्रतिदिन लिखने का नियम नना लिया था। इस प्रकार उन्होंने लेखनी से सैकडो ट्रेस्ट निकल । उन्होंने प्रनेक दर्शनों का माध्य किया, उपनिवर्षों पर टीका लिखी। क्या कहानियों के माध्यम से वाम्कि सिदालों का विषेचन करना उनके साहित्य नेसन की एक प्रमान विशिष्ट निया थी। १२ मई १९१३ को हावश्म म उनका नियन हुया।

स्वामी दर्शनानग्दका साहित्स मुक्त उद्मे लिखा वया है। कालान्तरमे उसका हिन्दी धनुवाद भी हुमा। यहा उनके द्वारा लिखित एव प्रकारित सभी कृतियो का स्वोपलब्स विवस्ता विवस चारहा है--

धणने काशी निवासकाल में प० इत्पाराम ने जिन शास्त्र प्रणो को स्वश्यय में प्रकाणित किया उनका विवरण **इस** प्रकार है—

- १ सामवेद सहिता---विक्नोरिया यत्राला काश्रीम मुद्रित।
 - र भाराध्यायी काशिका वृत्ति
- ३ धा १६४। यो महाशाय : उनके समस्त ग्रन्थों की सस्या सैकडो तक पहुँच चुकी है।

₹

प्रमुकी इस सुब्टिका कौन साऐसा कोना है जो बारवर्ग से परिपूर्ण वा बद-भूत नहीं है। इस सुब्दि ने दश्यमान कीन सी ऐसी प्रक्रिया है जो ज्ञान से यूक्त नही

वास्तव में धारमा को ज्ञान से परि-चित कराने का माध्यम ही यह वह जनत् है। ससार के समस्त पदार्थ मनुष्य की ज्ञान वेतना को जागृत करने के उद्देश्य से ही रचे गये हैं। ज्ञान का व्यावहारिक स्वरूप ही सुव्टि है।

स्रष्टा द्वारा सजित यह ससार वास्तव मै एक विश्वविद्यालय है। जहां जन्म नेकर हमारी धारमा चेतनायुक्त होती है। चिति समाने चातु से ही चेतन सब्द बनता है। स्वरूप से धारमा चेतन होते हुए जी सजा जून्य ही होती है। इसमे वेतना का स्फुरन भी उस बहितीय तत्ता द्वारा ही होता है जो इस समग्र सुष्टिका नियामक या कर्ता है।

कार्य ते ही कर्ता के प्रस्तित्व का बोच होता है। सृष्टि से लच्टा का बोच होता है । बीवारमा की चेतना केवल ज्ञान बहुल करने ने सामध्ये तक ही सीमित है। यह सामर्थ्य ही उसको वड वनत् से था तत्व से जिल्म करता है । जब प्रकृति से भारमा की मिन्नता वा उसका सपना पुषक् अस्तित्व ज्ञान ग्रह्मा की मूल बेतना वे युक्त होना ही है।

बान को प्रस्तुत करने भीर जान को ग्रहण करने के लिए जड जगत् की प्रति-बार्य भावस्थकता है। ज्ञान क क्रियान्य-थन के लिए ही वह श्रद्धितीय सत्ता बढ बगत् से मावड है हिरण्यगभ है। जान की प्रह्म करने व सहस्य करने की प्रक्रिया के बारम्भ के लिए ही बात्मा की वड वमत् के पिण्ड से झाबद्ध किया जाता है।

इस प्रकार हमारे जीवन की जन्म-मरसाकी प्रक्रिया या बन्च सोक्षाकी प्रक्रिया का मूल कारण ज्ञान ही है। ज्ञान प्राप्ति के लिए ही हमे जड शरीर से धावेष्टित किया जाता है। क्योकि हमारी चेतना जब जगत् के बिना जागृत नही हो सकती। साथ ही जान की पूर्णता भी विना अब जगत् से मुक्ति पाये नहीं हो

इस प्रकार धामाकी जीवन बाजा ज्ञान यात्रा ही है। ज्ञान ही जीवास्मा का लक्य है। जो जितना धविक जानाजन करता है उसका जीवन उतना ही श्रविक सपल होता है।

इस परिप्रेक्य में हुमें इस लक्ष्य की धगीकार करना होगा कि कार्य मे पहल उसके उपादान कारण का होना ब्रनि-बार्य है। जिस प्रकार एक कुम्हार के वटा बनाने के लिए घड का उपादान कारण मिट्टी पहले होना बकरी है। नयोंकि वडे का निर्माण ही मिट्टी से होना है। सृष्टि

महर्षि दयानन्द का सर्वाधिक प्रिय वेद मन्त्र-एक मनन

ग्राचार्य वेदभ्षण अविष्ठाता, अन्तर्राष्ट्रीय वेष प्रतिष्ठान, हैवराबाद

विश्वानि देव सवितर् दुरितानि परासुव। यद्भद्र तन्न ग्रामुब ॥ यजु० ३०।३।

की समस्त रचना ज्ञान पूर्वक है बत सृष्टि रचना से पूर्व ज्ञान का होना आव-श्यक है। ज्ञान एक क्षमता या सामध्यं है उसका अपना कोई भिन्न अस्तिस्व नही है। बिना जानी के ज्ञान रह नहीं सकता। क्योंकि ज्ञान ज्ञानी का गुण या सामध्यें ही

इस सिद्धान्त को समग्र लेने वा जान लेने पर हमें यह स्वीकार करना होगा कि ज्ञान सुष्टि के सर्जन से पूर्व ही अच्छा के सामध्यें ने निहित होता है। यह कल्पना कि सृष्टि के बाद ज्ञाम बना वह बात हास्यास्पद होवी ।

इससे स्पष्ट सिद्ध होता है कि कार्य से पूर्व कार्य का ज्ञान कर्जा के पास होता है। सुष्टि के सर्जन और मस्तित्व कोच के सिए जो ज्ञान बावस्यक है उसी का नाम वेद है। वेद शब्द का अर्थ है जान । जान ज्ञानी का गुरह है। इसीखिए ज्ञान को ईश्वरीय माना बाता है। क्यों कि वहीं समग्र विश्व का कर्ता है।

विस प्रकार वस्तु के निर्माण के लिए उससे सम्बान्यत ज्ञान की धनिवार्यसा होती है वैसे ही वस्तु के प्रयोग या उप-बोब के सिए भी ज्ञान एक अपरिद्वार्थ "भावश्यकता" है ।

वैसे किसी ने किसी रोग की एक श्रीविध का निर्माण किया। श्रीविध का निर्माश करने से पूर्व उसे भौषषि निर्माश का ज्ञाम भावश्यक है। ज्ञान से सम्बन धीषचि बनाई । शब जो व्यक्ति उस धीवधि का सेवन करेगा उसके लिए सेवन विधि के ज्ञान की बाबरयक्ता होती है तभी सेवनकर्ता उसके लाग से सामान्वित हो सकेना। इसलिए सेवन विवि भी भौषधि के साथ घोषित की जाती है।

अच्टा का ज्ञान धनन्त है किन्सु धारमा के लिए जितने ज्ञान की ससार में आव-श्यकता होती है उतना ज्ञान सच्टा मनुष्य को देता है इसी ज्ञान को हम बेद या ज्ञान कहते हैं। वेदों में मन्त्र हैं। मन्त्र शब्द का वर्ष है फार्मू साया ज्ञान का बीज।

जिम प्रकार वड वृक्ष का सामर्थ्य छोटे से बीज में घन्तनिष्ठित होता है बैसे ही बेद के मन्त्रों की स्थिति है। मन्त्र उसे इसलिए कहा जाता है कि उस पर हुनें

यह विद्वान्त अपने भाप ने कितना स्यष्ट धीर सरल है पर हमने धनेक उपाधिकारी विद्वानों के मुख से सुना है कि-वेद ईश्वरीय ज्ञान है वह ऋणियों की पाणी से प्रकट हुए प्राप्ति बातों पर वे विश्वास नहीं कर पाते । इसका एकमान कारण चिन्तन ने सुध्यता का न होना ही

महर्वि स्वामी दयानम्द ने छाधुनिक मुग मे इस सस्य को समकाया और सस्य का प्रकाश किया।

माज जब इन एक विश्व को देखते हैं भीर नेदों के मनी पर जनन करते हैं तो हमें स्फटिक मणी के समान वेद के सिखान्त शरवन्त सस्य भीर सटीक त्रतीक होते हैं। जिस प्रकार ससार के किसी भी पदार्थ को हब अच्छा या बुरा नही कह सकते क्यों कि सच्छा वा बुरा सापेक्ष होता है। बैसे किसी पदार्व को छोटा या वहा किसी धन्य की भपेता से वा मुकाबसे ने कहा बाता है अन्यया स्रोटा बढा वा श्रन्छे बुरे का प्रधन ही पैवा नहीं होता।

यही बान वेद मन्त्रों की भी है। वेद को कोई सन्त्र महत्त्वपूर्ण या महत्त्वरहित नहीं होता। हमारी अपनी अपेक्षा से ही हम किसी को सारगणित कह सकते हैं या कह देते हैं।

महर्षि स्वामी दयानन्य सरस्वती ने भपने बेदगाध्य मे प्रत्येक साध्याय के सारभ मे विस्वानि देव सविवरः इस मत्र का प्रयोग किया है। इस हेतु से हम कह सकते हैं कि महर्षि को उक्त सब सर्वाधिक प्रिय SET A

वास्तव में इस छोटे से मन्त्र में जो सार निहित है वह सत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। सारे विदेव में हमें इस मन्त्र का विस्तार बष्टिगोचर होता है। बाइए हम इस मन्त्र पर सक्षेप मे विचार करेंगे।

यह मत्र यजुर्वेब के तीखरे घट्याय का तीसरा मन्त्र है। वो इस प्रकार है।

विश्वाणि देव खनितर् दुरितावि परासुव । बब्बर्यं तन्त्र सासुव ।

वषु० ३०-३

इस प्रव्याय का प्रथम गंत्र है--हेब ननन करना होता है, ननन के करने ते विवित्त प्रसुद वस प्रसुद वसपति •⊷। दूसरा मध्य अकृरित पुण्यित व फलित होता वय है-तस्वविदुर्वरेष्य वर्वो वेतस्व । वावजी मन्त्र है धीर तीसरा मत्र है विस्वानि देव । इन तीनों नचों के ऋषि बारावसा भीर देवता सविता हैं।

"सविता शब्द का मुख्य धर्व है "सत्पादिनी शक्ति"

उत्पादक तरब ही संशोधक होता है। क्कोकन की प्रक्रिया ही यह प्रक्रिया कहाती है। इस प्रकार यजुर्वेद के तीसर्वे धन्याय के ये तीनों मत्र सुद्धि की प्रेरला देते हैं। 'केतपू' केत न पुनातु" मे खुद करने की बाबना स्पष्ट है। गायली सब में भी भवं भीमहि बर्थात् एस दिव्यगुत्त्रॉ से युक्त देव के उत्तम मुख्य कर्म स्वभाव को भारण कर हम भी भगे शुद्ध स्वक्स हो चाएँ। यही मावना इस तीसरे मत्र में है कि - दुरिशानि परासुव "वव्यक्ट तस्त्र बासून" धपवित्रता को दूर करें बीर उत्त-मताको जारण करें।

वदि हम नम्भीरता से विचार करें वो यह बात स्पष्ट हो बाती है कि समस्त संचार में बड सीर वेतन में एक प्रक्रिया निरन्तर वारी है और यह सबसे पहली प्रक्रिया है वह प्रक्रिया है शोधन की। पवित्रताकी।

जड और चेतन दोनों से समान अध्य से निरन्तर यह शोकन की प्रक्रिया क्सती रहती है। हम जितना विकृति से दूर रहेंके उतने ही बीवंबीकी और सुली रहेंने।

पवित्रता दीवं जीवन और संख्ञायित की पहली और महत्त्वपूर्ण वर्त है। दुरित के सपहार के विना भद्र की स्थापना संशव नही है। इसी मीसिक सिद्धान्त को प्रस्तुतः मत्र जवाबर करता है।

मानव समाज में वर्ष के जितने निवस बर्वन सिदान्त है उनका मूल बावार भी सशोधन है तेवा भद्र की स्वापना है। जो धम दुरित के त्याव के नियमी की उपेक्षा कर मद्र स्थापना की बाल करता है वह वर्ग नहीं किन्तु सम्प्रवाय कहोता

सम्प्रदाय मानव बाति से सहला उत्पन्न नहीं कर सकता। जैसे मलिन पास में हम कितना ही उत्तम श्रोजन रक्खें बड उत्तम भोजन भी प्रवित्र धीर हानिज्ञह हो बाता है वैसे ही दुरितों के त्याने विना इब बाहे जितने सद्गुत्ती वन बाएँ हमारे वे सद्गुण भी हमारे लिए सुवाबाबी नहीं हो पाते ।

माजकल बहुत से तथाकवित वर्मा-वार्य और वर्मगुरु अपने वेसे वेलियों को भ्रमवास में फंसाते हैं कि-धाप कुछ भी बाइये पीजिए जो मर्जी माए सो की जिसे वस प्रमुख्यात को धारला कर शीकिए प्रापका कल्याण हो जायेगा यह सिद्धान्त अमपूर्ण है इससे कभी भी सक्य की प्राचित नहीं होती।

दुरित को दूर करने का उपाय है बण्डन, बोट, प्राचात । सर्वात् वद तक हम बुराई को वढ सकल्प व क्सपूर्वक प्रतावना वा परर्शना से नहीं निकासते तब तक वह दूर नहीं होश्री।

(बेव पृष्ठ १ वर)

🛨 वचन-सन्देश 🛨

जिल्लाया सप्ते मधु मे
जिल्लामृते म ग्रनकम्।
ममेदद् करावस्ताः
मम् वित्तपुपायति ॥१/३४/२॥
मधुम-मे निष्क्रमस्य
मधुम-मे परायस्य।
वाचा वदानि मधुमद्
भूयाम मधु मण्या ॥॥॥
मगोरिम्म मधुनरो
मदुषा-मधुमत्र ॥४॥ (स्वर्यवेद)

मधु-पूरित हो मेरी वाएगी '
मधु-पूरित हो मदा माग मेरी जिह्ना का भौर मूल भी इसका हो मधुरिस करवाएगी मधु पूरित हो मेरी वाएगी '। मधु पूरित हो पात्रा मेरी निकट-पूर्व का गमन-भागमन ' सब को प्रमन्नता पह वाकर में सबका प्रियवर बन जाऊँ मधुरिस प्रवृत्तियों का उद्गम ¹ मैं मधुसे भी प्रधिक मधुर हो वन मधुरनर भीर मधुरतम ¹ जग के हर पदार्थ सेमीटी हो मेरी वाणी कन्याणी । सधु-पृरित हो मेरी वाणी ॥

कवि बशीर ग्रहमद मयूख

सम्पादकोय-

सिख आतंकवाद का भयंकर जाल

लुशियो से भरदुसव कामन !

विश्व भर इस समय ब्रानकवाद की चपेट मे है और यह द्यानकवाद बटना हा जा रहा है। भारत मे यह और भी श्रधिक विक-राल रूप से भपने जबड खोले हुए है। भानकवाद का यह खनरा केवल खालिस्तानियों से ही नहीं है बल्कि काश्मीर मुक्ति मोर्चा, मिजो सगठन त्रिपुरा वालटियस तथा नागा मुक्ति मोर्चे जस झनेक उग्रपथी सगठना से हैं। इस अनिकवाद का सामना करना आ सान काम नही। विदेशों में उप्रपथियों को सहया कम नहीं छौर न ही साधनों की कमा। साथ हा इनका पाठ थपथपाने वाली ताकत भा कम नही है। इस सम ब खालिस्तानो उग्रवादिया के क्रूर कारनामा से सारा विद्व दहन उठा है। भारत से बाहर सिख भारो सख्या मे है। यूरोप और पश्चिमी देशो में यह सब जगह पहुंचे हुए है। सब से मिबिक यह ग्रमेरिका भ्रोर कताडा मे बाबाद है। ब्रिटेन मे भा इनको सख्या काफी है किन्तु इनमे उप्रवादी सिल बहुत कम हैं। प्रधिकाश सिल तटस्थ प्रपने व्यापार पेशे में सलग्न है। यह भो स्पष्ट है भनेक व्यापारी सिखो का इन उग्रवादियों को बढ चढकर सहयोग मिल दहा है। ग्रमेरिका में कई ऐसे स्कूल चल रहे है जहाँ दुनिया भर की सरकारो के विद्राहियों को मातकवाद का प्रशिक्षण दिया जाता है। 'न्यूयाक पोस्ट' ने अलवामा के एक स्कूल का ब्यौरादेते हुए बताया है कि एयर इण्डिया के जिस बाइग बिमान को दुघटना हुई है उसके लिए जिन दो व्यक्तियो अमन्द सिह और लालिमह पर सन्देह किया जा रहा है वे इसी स्कूत म प्रशि-क्षित किए गए थ । सस्था के डायरेक्टर फक कैपर के अनुसार उन्हें किसो म्रान्तर्राष्ट्रीय सिम्ब सक्रिय सगठन न दस लाख डालर दिये थे। इसमे छ सिख धानकवादियों को प्रशिक्षित किया गया था। इस प्रोश-क्षा म विस्फोटक बनाने पानो मे जहरामलाने तथा उच्च सुरक्षा के रहते हुए किसा उच्च व्यक्ति तक पहुच पाना ब्रादि का प्रशिक्षण भी शामिल था। विदेशों में भारतीय मम्पत्ति को हानि पहुचाकर ग्रानक मचाने की योजना भो इसके बन्तगत थी। इस योजना को बनाने वाले स्कूल के निदेशक भीर भगरीकी गुप्तचर सस्था एफ बी० ग्राई० के छिपे जासूस है। कहते हे इस तरह के अमेरिका मे दो दजन स्कूल हैं। सेना या गुप्तवर सेवास अवकाश प्राप्त अधिकारियों को भाड़ के सनिक सप्लाइ करने से लेकर आनकवादियों का प्रशिक्षण देने तक की दुकान पश्चिम के अन्य लोकतन्त्रीय देशों में भा है परन्तु धमरीका धौर भन्य देशा का ध्यान इस तरफ नही जाता। कह दिया जाता है कि लोकतन्त्रको कुछ मजबूरिया हैं। प्रत्येक पश्चिमासरकार मिखो को गतिविधयो को नजर अन्दाज करता रही है। यही हाल कनाडा का

कनाडा में बसे ढाई नास भारतीयों में ४० प्रतिशत सिस है। सालिस्तानी समर्थक तो इनसे भी कम है परन्तु इन लोगों को कनाडा सरकार का निरन्तर समर्थन मिलता रहा है। इससे वहा हिन्दू सिसों में सदा दरार बौडी होनी जा रही हैं। इहा जाता है कनाडा सरकार गुप्त रूप से उदावादियों को प्राधिक सहायता भी देती रही है। बिटेन में भी उग्रवादी बढ चढकर प्रपना काम करते रहे हैं। वहा को सरकार ने उन्हें रोकने के बजाय प्रोरसाहन दिया। साउपक से जगजीत सिह बौहान प्रपना आफिस बनाने में सफल हो गया। उसने सुने साम बीठ बीठ से यह प्रोप्तणा की कि जो कोई भी प्रधानमन्त्री श्रीमती हिन्दरा साथी या उनके परिवार के किसी सदस्य की हत्या. करेगा

उसे लालो पौण्ड का इनाग मिनेगा। जगजीनिमह चौहान को कई सा यसासे आर्थिक महायता भी मिननी रही है। जिल्होंने राने साम भारतीयों के प्रति हिसक ब्यवहार किया उनके विरुद्ध भी कोई नारवाई नहीं की गयी

सभैरिका, ब्रिटेन कनाडा के बाद नार्वे भी मिन्न झानक-वादियों का केन्द्र बन गया। इससे बहु। गेर मिन्न भारनीय परेशान हो। उटे हैं। इस तरह की गतिविधियों के मराना बहुँ हिस्टिन्टर मिह से। यह वी व्यक्ति हैं जिसने पजाब में मैनिक कार्रवाई के विरुद्ध विरोध प्रकट करते हुए सोक्लों के भारतीय दूतावात के प्रथम मित्रव के पद सं त्यागपत्र दिया था भी र इसी देश उन्होंने राजनीतन शरए। प्राप्त करने का प्रयान किया था। शराग मिन्न जाने के बाद वे यहा के उप-वादियां के नेता बन गये। धनेक प्रवासी भारनीयों के बिषटमण्डलों ने नायें सरकार से प्रपील की कि इस व्यक्ति की राजनीतक शराग वापस ले नी जायें परन्तु नावें सरकार ने एक नहीं सुनी भी र उसे रेनीडम परिसट 'देकर अपने देश में रहने दिया।

पिछने दिनो भारत सरकार ने पाकिस्तान से लगी भारत की सीमा को सील कर दिया तो सिख उपवादी पाकिस्तान से जाकर शरए। लेने मे तनिक खनरा महसूस करने लग गए । उन्होने ग्रपना रुख नेपाल की तरफ कर निया। वे नेपान को ग्राना केन्द्र बनाने के प्रयास मे नग गए। नेपाल और भारत की सोमः। १५०० कि तोमोटर तक लम्बी है। भारत ने इस लम्बी सीमा पर अपनी २०० चेक पोस्ट स्थापिन की हैं। लोग वैघ तरीको से भी नेपाल ग्राजा सकते है मगर यह सारी सोमा लुली है। कई एक ऐसे स्थान है जहां से लोग ने गल आते जाते है। नेपाल मे सरदार प्रीतमसिह उग्रवादियो का सरक्षक बनाहुन्नाहै। कहते है पहले लगभग ३० वय पूर्व यह माबारए। मकेनिक बनकर नेपाल ग्राया था भीर भव वह समृद्ध हो चुका है कि नेपाल मे परिवहन सेवा की ७० प्रतिशत गाडिया उसकी है। नेपाल के ग्रधिकाश पेट्रोल पम्प भी उमी के है। उसने अपने विज्ञान घरको गरद्वारा बनादिया है। उसमे अने क ब्राघुनिकतम प्रन्य स्थापित किए जिन से पत्रभर मे श्रमेरिका कनानाओं ब्रिटेन से रन्देश श्राजा सकते है। गत वर्ष जगज न सिंह चौहान भी इसके पास कुछ दिन गजार कर गया था। कुछ समय पूर्व एक ग्रानकवा ग पजाब पुनिस का भूतपूर्व डो० श्राई० जी । एस । एस । मान अपन कछ साथियों के साथ जोग बालों के रास्ते नेपाल जाता हुआ गि~पनार कर लिया गया था । समका जाता है यह इसी प्रीतमसिंह के पाम शरण लेने जा रहा था। भारत सरकार के दबाव डालने पर यह प्रीतमन्हि भ्राजकल कही जा चुका है। कहा जाना है उसके इस महत मे ग्रज भी हजारो "ग्रवादी जो कनाडा ग्रीर अमेरिका से ग्राए हुए हे नरए लिए हुए है। इस प्रीतम सिह के राज परिवार के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध होने के कारए। पुनिस भी हाथ डालने में सकोच करती है।

विदेशों में सिक्षों को गुमराह करने के लिए प्रचार भी कम नहीं किया वा रहा। इसलिए फावस्यकता है इस समय अपनी गुप्तचर एजेंसियों को मजबूत करने की। साथ ही इन उपवादी तत्त्वों से निप्तक के लिए हर हिषयार को घार देने की फावस्यकता है। इस आतकवादी विकराल अपल को साफ करने की हर सम्भव कोशिय करनी होगी।

— प्रशास संभाग

भारत के रष्ट्रीय संगठन में धार्मिक उन्माद सबसे बड़ी बाधा है

महावीर 'नीर' विद्यालकार, गुरुकुल कागडी

जब हम अपने प्यारे भारत राष्ट्र के इतिहास पर दिष्टिपात करत है ता वसके संस्कृति भीर सभ्यता पर भी हमारी विष्ट धनायास ही चली जाती है। प्राचीन काल से ही वहां का निवासी घम भावना से भ्रोत-श्रोत रहा है। गगा, गौ गायत्री उसक व्यक्तिमत, पारिवारिक, सामाजिक व राष्ट्रीय जीवन के बाबार रहे हैं। प्राचीन भारत का नाचा ही धम भूलक बा। राजा और प्रजा धार्मिक प्रवत्तियो में भोत-प्रोत रहते थे। धर्म के लक्षणी को वे भपने जीवन की आचार सहिता नानते थे। ईश्वरीय शक्ति को मानते हुए समस्त प्रालियों का पालन करना राजा भौर भविकारी गण भपना कतव्य समभते थे। किन्तु मुस्लिम भीर भाग्ल श्रमाव मे शान के पश्चात् हिन्दुस्तान का समस्त ढाचा ही बदल गया है। माज शाजादी के बाद के भारत की हम केवल हिन्दुम्रोकाहि दुस्तान नहीं कह सक्ते। धाज विभिन्न मतो सम्प्रदाया, फिरको को मानने वाल विभिन्न जातियों के लोग बहा निवास करत है। इसलिए सविधान मै इस राष्ट्रको धर्मसापेक्षन मानकर 'खर्म निरपेक्ष' माना गया है। यदि हम इस बात को यो वह देकि राष्ट्रीय स्तर पर हमारा कार्ड बम नहीं है तो इस मे कुछ भी गल्न बात न होशी किन्तुदूसरी भोर गण्डुके झाटरल में निपटी प्रजा विविध धार्मिक भावनाधी को व्यक्तिगत पारिवारिक सामाजिक व जातिगत ग्राध र बनाये बैठी है। इसलिए झाये दिन वामिक विवाद, राष्ट्रीय विवाद बनकर हमारे बानस की भिभोडते रहते हैं धीर जब राजनीति निपूरा नेनाओं से ये प्रभावित हीते हैं तो दूसराही गूल खिलादेते हैं इसलिए जब हम साम्प्रदायिक सदभाव या सौहाद की बात करते है तो हमे वार्मिक बट्टरपने के पिशाच को नजर-अन्याज नहीं करना होगा। देखा जाए तो भर्मका सीधा सम्बन्ध एक ईश्वर, खुदा या गाड की प्रार्थनाया इबादत से है। इबादत नहीं कर लो कुछ फर्क नहीं पहता। वस्तृत भगडा उसकी इबादत का प्रार्थना करने भववान करने का नहीं है। भिन्तू इसके मूल मे दूसरे ही कारण हैं जो भाई को भाई से भौर मानव को मानव से धलग करते है।

स्पट रूप से देखा जाए हो वर्त-मान भारत के राष्ट्रीय सगठन में वार्मिक उन्माद सब से बडी वाषा है। सनिन समस्त मान्तवासियों को टसका हल सोमना ही होगा। सन्यया बढ-बड बलि- दानों से प्राप्त यह स्वतन्त्रता विकार आएगी। टूट आएगी। याद आ बाते हैं प्रसिद्ध दार्शनिक फॉकांसिन के ये दा द कि 'यदि मनुष्य बर्म की उपस्थिति मे हतने दुष्ट हैं तो बर्म की सनुपस्थिति मे उनकी क्या दशा होगी।'

भारत का ही नहीं भपित संसार का इतिहास भी हमे पुकार-पुकार कर कह रहा है कि धर्म के डकीसलेबाओ धौर वार्मिक उन्मादियो ने सपनी महत्त्वाकौ-क्षाभोकी पूर्ति के लिए क्या नहीं किया। एक खुदा या ईव्वर का बन्दा होने पर भी इन्सान वर्ग की दीवारी में बटकर जडता भौर कगडता रहा है। अपने वार्मिक विवेक को स्रोकर धर्माम्थता की सङान्ध से मानव इतिहास को कल कित करना रहा है। यदि साप जानना ही चाहते हैं तो जाकर पूछो उन यूरोपियनो से जिनके रक्त से रजित इतिहास के पन्ने माज भी धर्मान्धता की गवाही दे रहे हैं। फास मे फ़ासिस प्रथम ने १५४५ ई॰ में **अ**पनी मत्यू से पूर्व भारपस पर्वत माला के तीन हजार निरीह कृषको के कल्लेग्राम की बाजा देकर शांति प्रदान की । उन क्रुपको का एकमात्र धपराध यह था कि वे ईसाई मत के मून विद्धान्तों में विश्वास रखते हए पोप तथा पादरियों की प्रभूता नही मानत थे। धाज भी धनेक राष्ट्र वार्मिक कटमुल्लाधी से तग हैं । धार्मिक ढकोसले-बाओं के धिनौने रूप को यदि देखना चाहत हो तो याद करो १६४७ का वह दुर्दिन जन लग्हीर दिल्ली और पजान की बलियों में एक बर्म के मानने वाली ने दूसरे वर्म के मानने वाली पर भवकर बस्याचर किए। कितनी मौ बहिनो के श्वतीस्व लुटे, कितने भाई बहिनो से विलव हो गए। कितने स्तन पान करते बच्चे अपनी मासे छीन लिए गा। कितनी तदिणया विश्ववाए वन गई। कितने घर उजह गए, जिनके बासू वौद्धने वाका भी कोई न रहा। वस्तुत धार्मिक जन्माद की परिशाति विनाश मे ही होती है। यह उन्माद मानव जाति को गहरे गर्तमे हुवाकर मार डाबसा है। इसलिए इसका उपचार भावश्यक है।

तम है यान है ३७ वर पूर्व हम जन्ने करने दश्या जनेता करते थे। करवा के मन यहि दिन जीया करते थे। केव के तीक मो ने बन रहकर और जाती का मूना भूवकर भी हम चातक की माति स्वातन्त्र युवा रस का पान करने की आसा नगाया करते थे। समय पहना, मुनामी की निया का स्वस्त हुया, स्वान फूले, धाकाक्षाए फन्नी, कल्पनाए साकार हो उठी । घाजादी का मगस प्रभात भूमता हथा था पहेंचा। शाज वह ३७ वर्ष पुराना हो जुका है किन्तु ग्राबादी के इस पावन काल मे भी आज भारत का मानव जहा वैज्ञानिक चकाचींव से तस्त है, टी॰ बी॰, विडियो झादि भौतिक साधनो की उपलब्धियों से जीवन मे बानन्द जुटाने मे लगा है। वही भूखा है नगा है, धसहाय है। धर्म के जवाल मे भटका है। भाषसी वैर व वैमनस्य मे जकडा शकित भीर भयभीत है। काश्मीर से लेकर कन्याकृतारी तक और राजस्यान से लकर बगाल की खाडी तक फैले इस देश में हिन्दू मुखनमान, पारसी सादि सभी जातिया व वर्मों के सोग निवास करते हैं। सब के ध्रपने-ध्रपन विशास मन्दिर हैं। गुम्बदाकार मस्त्रिदे है। क्रास के चिह्न ने सकित गिरजावर हैं। सत्थी धकाल के उद्योग से धकिन गुरुद्वारे है। यहा सब के घपने मजहत्र है, फिरके हैं। रहने सहने व लाने पीने क डग है — ऐस मे क्यायह प्राशाभी जा सकती है कि राष्ट्र के सगठन में वर्ष साधक होवा?

हमारा विचार है कि विव ये बन्दिर, सरिजय, पुरुबारे पिरवायर सादि न हो, संदार को सद्योग सकाल को, पिशु को मन के अ-दर हो पूजे तो य वर्गान्यता के मन बहुत कुछ समान्य हो सकते हैं। वस्तुन कन प्रवाचरों को सर्वाय मानव जादि को सर्वायरा, वगटन, मेम, बाईचारे सादि के निय हाता का किन्तु सब आव कर पुजाररों में राजनीतिक सजादेवाजों ने वर कर विया है। इसलिए केवल सहि-स्मुता नी वाल करता।

सरा तो यह है कि वब वब इस राष्ट्र के धन्दर एक मध्युत एक्तिताली सेन्द्रीय साक्षम रहा। तन-तव किसी भी धनैन्द्र की हिम्मत नहां के सगठन को नग कंपी नी बहीं हुई। धान भी पनाव जल रहा है ससम जल रहा है, कास्मीर जल रहा है सार पर गुजरा। व नहाराष्ट्र ने बया ही हुन जिल रहा है—कसीं वर्मान्वता में र सकीएं मगोवृत्ति के कारण। राज-गीरिक में मिनीमी मिलानट के क रण तथा एक मजबून राष्ट्रीय वकस्प के न होने के

कहा जाता है कि घमं धपने धाप से सत्य का रूप है। ईश्वर का रूप है। वर्मों रस्तित रक्षित । यतो घमंस्ततो सव । यह विद्धान्त रूप से ठीक है। शार्यावर्ते से एका ही होता था। तब वर्स से तीति धीर
नीति से राब बना करते के, ध्रव बिस्कुल
विपरीत है। ध्रव राज से नीति धीर नीति
है। ध्रव राज से नीति धीर नीति
है। साथारण लोग वर्स के ध्रवली मर्म
को व सममकर उसकी मजहनी बाह्य
वातो पर समक करते हैं। धर्म के नाम
पर जहें हैंटो के महुल, मानारे चोटी,
जनेज, सुनत, तुर्की टोपी विश्व कास।
धादमी को धादमी से राष्ट्र को राष्ट्र से
तोवते हैं। ये ही भावनाए राष्ट्र के ध्रवर
कभी पाक्रिरतान कभी साजिस्तान कभी
पावरी क्षेत्र, धाद की सोग कर देश मे
प्रविक्तान कभी साजिस्तान कभी साजिस्तान कभी

कहने की तो कहा जाता है कि सब-हव नहीं शिक्काता सारण में बैर रक्कारों किन्तु समय घरे पर ये सभी मोग काना-धमन सेमो में बटकर, धरने धपने वर्ष की दुहाई देकर प्रथनी सपनी उपनी सपना धपना राग धलपाने नमते हैं। सत हस समय वर्ष से राष्ट्र के उदार या सम-उन की बान करना अपय गाल बचाता है। यह भी कहा जाता है कि राष्ट्र धर्म से ही थारित रहा करते है कि राष्ट्र धर्म से ही थारित रहा करते है कि सुब्ह मनु महाराज के मनुसार धर्म क्या है, यह बात विकारणीय एव सनुकरणीय है। सनु ची के मनुसार धर्म के १० लक्षण है। जैसे— धरित जमा, रमोश्रसिय

शीवमिन्द्रयनिग्रह । वीविद्या सत्यमकोवो

दशक वर्गलक्षणम् ॥

वर्षात---राष्ट के प्रत्येक विवासी वे (बृति) वैर्यहो (असमा) क्षमा की शक्ति हो, (दम) अपने पर नियन्त्रण करने की श्रमित हो, (प्रस्तेव) कोरी की शावका न हो, (इन्द्रिय नियम) इन्द्रियो पर निय-न्त्रण की सक्ति हो। (इससे परिवार-निवीषन की भी बस प्राप्त होगा) (थी) बुढि ही (बच्छे भीर पुरे की विचारने की शक्ति हो),(विद्या) राष्ट्र निवासियों में ज्ञान-विज्ञान की शक्ति हो, (सस्यम्) राष्ट्रकतियों में सत्वाचरश की वृत्रित हो। (बरवंगिय वर्षते, केवल बीवार की शोशा व ही), (बक्रीय) बकारण क्रीव न करना वर्धीकि कीचे सेमस्ते विकास की अंखे है। वह है राष्ट्रं निवासियों का अपने 'लिए और राष्ट्र के लिए सार्वेभीम धर्म। वास्तव में देला जाए तो यह किसी भी राष्ट्र के निवासियों की धाचार संहिता है। इस पर चलने पर ही राष्ट्र संगठित रहते हैं। धर्म की साबारण परिभाषा है 'बारमन प्रतिकृतानि परेषा न समा-चरेत्।" धर्मात् जो बात धपनी खात्मा के प्रतिकृत हो वह दूसरों के साथ जी न करें। किन्तु बाज ठीक इसके विपरीत हो रहा है। मनुष्य प्रवने स्वार्च के वजी-भूत बुरे से बुराकार्यं करने में भी नहीं चुकता। राष्ट्र के ग्रम्दर चोर-वजारी, बूसकोरी, रिश्वतकोरी, भ्रष्टाबारी,

(क्षेत्र पूष्ठ १ वर)

क्रोष मनुष्य का एक बहुत ही अयकर रोव है। कोच का सम्बन्ध हिंसा से है। को मनुष्य क्राध करते हैं, वे स्वय ही अपनी बुद्धिको मध्य कर देते हैं। क्रोध मनुष्य के शरीर में एक बहुत भारी प्रय-गुण है। क्रोच शीन्दर्यकी नष्ट कर देता है। बुद्धिको भ्रष्टकर देता है। सरीर को बुढा बना देता है तका मनुष्य को इसरों को दृष्टि में गिरा देता है। इस मय-कर रोग से मनुष्य की शारीरिक, मान-विक, घात्मक हर प्रकार से घवनति होसी है। क्रोब के विषय में किसी सस्कृत के कवि ने कहा है --

क्रोबो नाश्यते वैयंम. कोषो नाशयते श्रुतम्। क्रोषी नाश्यते सवम. नास्ति क्रोधसमोरिय ॥

क्रोच, वैर्य, विद्या धौर शास्त्रजान सबको नष्ट कर डालता है, क्रोध के समान दूसरा चत्र नही है।

कोच किसी भी कारण से क्यो न पैदा हो-कारण कितना भी बढा स्थो न हो, भाष जिल्लो बार कोशित होते हैं, उतनी बार प्रपती हानि करते हैं। क्रोब शरीर में हुस्के ज्वर का काम करता है। इसे महाचाण्डास कहा गया है।

किसी समय की बात है। एक बाह्यण कासाय के किनारे अपनी कुटिया बनाकर रहता था। वह नित्व स्नान कर धपनी घोती वालान के किनारे पदारता था। वहीं पर एक भाण्डाल प्राकर तालाव में स्लान करने लगा, जिसके कारीन शाह्यज की बोती पर पानी का खीटा पड भया । उसने तूरम्तं धपनी कुटी से निक-सकर बाण्डास को पीटना शुरू कर दिया। जिससे चाण्डाल का शरीर पसीने से अब-पथ हो गया वह गर्मी से परेशान होकर नदी में स्नान कर रहा था। समोमबख क्रोध मत कीजिए

राजेश प्रताप सिह

बाह्यण भी नदी के किनारे पहुँच गया। बाह्मण को दमाधा गई। तब उसने चाण्डास से पूछा "तुम इतनी गर्मी मे क्यो स्नान कर रह हो ?" तुम्हें बुकार हो वायेगा। वाण्डाल ने कहा-मापने क्यों स्नान किया है ? बाह्य एा ने कहा, मुओ भाण्डाल ने छ दिया । इसकिए मैंने स्नान किया है। इस पर चाण्डाल ने कहा कि मुभे तो महाचाण्डाल (कोध) ने जूदिया। इसलिए मैं स्नान कर रहा है।

क्रोष से स्वभाव दूषित हो जाता है। वृत्ति शिविक पढ जाती है और धाकृति क्तर हो जाती है। क्रोध से स्वमाव चिड-चिग हो बाता है भीर स्वास्थ्य-सौन्दर्य नष्ट हो बाता है। समाज ने कुद्ध मनुष्य सदा मूह की बाता है और स्थिर तथा शास्त मनुष्य की सदा विजय होती है। दूसरा त्रोध में हो भीर भाग यदि शान्त हैं तो आप भवस्य बाबी मार ने वायेगे।

"बकोचेन जयेत् क्रोचम्। बकोष से क्रोष की जीतो ॥

कोच एक एसा मनोभाव है जियमें मनुष्य योडी देर के सिए झपने को मूझ बाता है और बढ़ायें भी करने लग पडता है। कीच उद्देश है और उद्देश सम्बा होता है। सब उद्देश झंग्चे होते हैं। क्रोध के जल्पन्त्र होने का तरीका मीता में बताया वया है-

ध्यावतो विवयान्युस, सङ्गस्तेषूपजायते । सञ्जातसमायते काम

कामातकोषोऽभिजायते ॥

कोबादभवति समोह समोहारस्मृतिवि भ्रम । स्मृतिम्न शाद् बुद्धिनाशो

बुद्धिनाशास्त्रषश्यति ॥ मन सहित इन्द्रियों को बज्ञ में करके यन के द्वारा विषयों का चिन्तन होता है धौर विषयों को चिन्तन करने वाले परुषो की उन विषयों ये बासकिन हो जाती है और ग्रासक्ति से उन विषयों की कामना उत्पन्न होती है और कामनामे विन्न पडने से कोध उत्पन्न होता है।

सौर क्रोध से प्रविवेक प्रयात् मूढ-भाव उत्पन्न होता है भीर भविवेक से स्मरएक्शनित प्रमित हो जाती है भीर स्मृति के अभित हो जाने ने बुद्धि शर्वात् ज्ञानश्वक्ति कानाश हो जाता है और बुद्धि के नाश होने से यह बह पुरुष अपने श्रयसायन से गिर जाता है।

यूनाम क महापुरव सुकरात की स्त्री बडी कलहकारिणी भी । एक दिन उसने क्रोध में भरकर पति पर बुठे पानी का डोस उडस दिया । इस पर सुकरात ने ठडे मिकाज से हँसकर कहा, वरजने के बाद पानी बरसा ही करता है।' एक दिन बहुत से बन्यु-बान्धवों के सामने उसने सुकरात के मृह पर तमाचा मार दिया। बन्धु-बान्धवों ने स्त्री को दण्ड देने के सिए सुकरात को बहुत चकसाया, परन्तु उनको क्रोघनही ग्राया ग्रीर उन्होने कहा-मैं तुम लोगों के सामने तमाशा नहीं करना चाइता कि तुम लोग दूर सड देसते रहा भीर गलियों के कुत्तों की **स**डडे देखकर जैंगे बच्चे साली पीटा करने हैं, वैसे ही सालियाँ पीटो।

कोध एक बहुत वडा ग्रमिशाप है। यह सभिशाप ही नहीं बल्कि मनूष्य की उच्च को भी तम कर देता है। उससे मनुष्य को हर प्रकार से हानि ⁻उानी पढती है। कोघ करने से शरीर का विकास एक जाता है। कीथ मार्म का एक स्वमाविक मुख है। क्रोध के कारण ही मनुष्य एक दूसरे से भगडा कर अपने तथा इसरे के जीवन की नष्ट कर देता है। बहुत से लोग तो किसी भी बात की पर-श'नी के कारए अपन घर वाली उर काधित हाकर सना पीना छोड दन हैं। इस भयकर रोग से मनुष्य क कही भी भादर नहीं होता है भीर मनुष्य सप्तकी दृष्टियों में पिर जाता है। क्रोधा स्वभाव का व्यक्ति कभी सज्जन व्यक्ति से प्रेम मही कर सकता है। वह प्रपना जीवन क्रोधमे ही व्यतीत कर देता है। काची व्यक्ति के चेहरे पर कथ मुन्कान ही नहीं रहती है। कोच भीवन को नब्द कर डालता है। यह मनुष्य के जीउन का महा-चाण्डाल शजू है। जो मनुष्य इस शतू के श्रवीन हो जाता है तो उसको न सुख मिलता है, न शान्ति । वह प्रपन जीवन मे शानन्द की प्राप्ति नहीं कर सकता है। उसका तो जीवन द नमय हो जाता है। वह अपने की असह र अनुभव करता है, धौर भ्रपने जीवन को नष्ट कर देता है। इसलिए क्रोध को महाविनाधकारी कहा गया है। इसकी कोई बाकृति नहीं होती है। यह केवल भन्या होता है। क्रीभंकी कोई देख नहीं नकता, लेकिन मनुष्य के धन्दर यह मनोगाव विश्वमान रहता है, तथा अपनी परिस्थिति के अनुसार जायत हो जाता है। धगर कोई व्यक्ति इसके ग्रंभीन हो गया, तो ग्राप समिमिये कि उपका जीवन जून्य है। वह अपने जीवन-काल में कोई उन्तिन नहीं कर सकता, बल्कि वह अपने को बन्धाद कर देता है। इसलिए हमे क्रोध नहीं करना चाहिए।

किशोरमञ्च-

वीर बालक छत्रसाल

राम जी के मन्दिर में इन्होंने भगवान राम (कृष्ण की) लक्ष्मण की मूर्तियों को अपने जैसा बासक समफकर उनके साथ खेलना वाहा और कहते हैं भगवान सवमुख इनके साम सेले। पिता जी की मृत्यू के पश्चात् तेरह वर्ष की घतस्या तक खत्रसास की ननिहास मे रहना पडा। इसके बाद वे पन्ना वसे धाये धीर वाचा सुवान राय ने इन्हें बढ़ी साववानी से उन्हें सैनिक शिक्षा दी। अपने पिता का सौर्य खत्रसाल को पैतुक सम्पत्ति के रूप ने प्राप्त हुआ। था। अपने जीवन से उन्होंने पिका के सकस्यो को पूर्ण किया । पन्ना राज्य खुझ-

> देहनी के सिहासन पर जीरगजेन मैठ चुका था। उसके शन्याय का दौर सारे बेखको बातकित कर रहाया। अवसाल की बाबस्था उस समय समयन १३-१४

साम को पाकर घन्य हुआ।

वर्ष की थी। विन्ध्यवासिनी देवी के मदिर मे मेला या, चारो ग्रोर चहन पहल बी। दूर-दूर से लोग भगवती के दर्शन करने थारहेषे। महार ज सुजानराय बुन्देने सरदारों के सन्य वार्तालाय करने में लगे थे। युवराज समसाय ने जूते उतारे, हाथ पैर वोये भीर एक डिखमा लेकर देवी की पूजा करने के सिए पुष्प चुनने वे वाटिका में पहुंचे। उनके साथ उसी धवस्था के दूसरे राजपूत बासक भी थे। पुष्प चुनते हुए वे कुछ दूर निकल वये। इतने मे कुछ मुखल मान सैनिक वहां घोडो पर **व**डे हए बाये। पास बाकर वे घोड से उतर पड और पूछने जने जिल्ल्यवासिनी देवी का मन्दिर किंचर है ?

खत्रसाम ने पूछा क्यो तुम्हें भी क्या देवी की पूजा करनी है ?

मुससमान सरदार ने कहा--'छि ।

हम तो मन्दिर को तोडने भाग ै । छत्रमाल न फूलो की डलिया दूसरे बालक को पकडायो और गर्ज उठ मुह समास कर बोल। किर एसी बान कही तो जीभ लीच नगा।

सरदार हसा भीर बोला — तू भला क्या कर सकत है। तेरी देवी भी लेकिन बेचारेका वाक्य पूरा नहीं हमा। छत्रमाल की तल बार उसकी छाती मे होक्र पीछ नक निकल गई। एक युद्ध छिड गयाउस पुराव टिकामे। जिन बालको के गास तलवार नहीं थी वे तल-वारे लेने दौड पड।

मन्दिर में इस युद्ध का समाच।र पहुचा। राजपूती ने कवच पहने और तलबार सम्भासी, तिन्तु उन्होने देखा कि युवराज छत्रसाल क हाथ मे रक्त से भीगी तलवार तथा दूसरे मे फूलो की डलिया लिय हसते चले था रहे हैं। उनके बस्त्र रक्त से ल ल हो रहे है। धकेल युव-राजन शत्रुसैनिको को भूमि पर सुला दिया था। महाराज सुजानराय ने छन-सास को हृदय से लगा लिया। भववती विख्यवासिनी अपने सच्चे पुजारी के हाथ के शौर्य-पुष्प पाकर प्रसन्न हो गई। 🗔

पत्ना नरेश महाराज चम्पतराव वहे ही बर्मनिष्ठ एव स्वामिमानी वे। छन्ही के बहा ज्येष्ठ शुक्ला तृतीया वि०स० १७०६ को बासक सुत्रसाल का मोर पहाड़ी के क्षत्रस में जन्म हका । मुगल सम्राट् वाह-वहां की सेना घेरा डालने के प्रयत्न मे श्री । श्रिपे रहना भावश्यक समस्रकर पुत्र के अन्य पर भी महाराज ने कोई उत्सव मही मनाया था। एक बार तो शत्रु इतने निकट भा भये कि कोरी को प्राश बचाने के लिए इघर-उघर क्षिपने के लिए जानना पडा। इस मागदीड में शिशु छतसास भक्ते ही मैदान में छूट गये। किन्तु---

> जाको राखे साइया मार सके नहिं कीय। बाल न बाका करि सकै क्षो जग वेरी होय ॥

बासक खुबसास पर शत्रुधों की बब्टि मही पडी। भगवान ने शिखु की रखा कर भी। चार यथ की श्रवस्था तक इन्हें मनिहास ने एहना पड़ा धौर फिर केवस सास वर्ष की अवस्था तक विता के साथ रह सके। यांच वर्ष की धवरका में भी व्यासपीठ---

उपनिषत् कथा माला- ६

धर्म क्या है ?

लेखक--महेन्द्रदेव शास्त्री विद्याभूषण

मजहब, सम्प्रदाय, मल, पन्च, मार्गे इन सभी को लोगों ने अर्थ समग्र लिया है किन्तू ये वर्गनही हैं। इन सब की बनाने वाले और चलाने वाले मनुष्य हैं, भौर ये सभी किन्ही विशिष्ट व्यक्तियों की मान्यताची के लाथ दुख जनसमूह द्वारा श्चपनाए गए हैं, भीर प्राय उन सभी के पहले उन-उन सम्प्रदायों के संवासकों के नाम जुडे हुए हैं। जैसे कबीर पन्थी, बाबू पन्बी, नानक पन्बी, बैध्यब सम्प्रदाय, रामानुज सम्प्रदाय, बल्मभ सम्प्रदाय जैनमत, बौद्ध मत, राषा स्वामी, मुहम्मदी मजहब, ईसाई मजहच, धानन्य नागी भादि । धर्म तो वह है जिसकी भावश्य-कता समान रूप से समस्त मानव बाति को है। इसीलिए सबसे अच्छा और बास्तविक धर्मका सक्षणः।

"वतोऽम्यूदयनिश्चेवससिद्धि स वर्मः।"

ऐसा कहा है। घर्यात् जिससे किसी श्वास तक्के का नहीं घपितु समस्त मानव चाति का सम्युदय हो, उन्नति हो तथा विसके द्वारा सारी मनुष्य जानि के दुःशी की ब्रस्थम्त निवृत्ति हो जावे, यांनी मुक्ति (मोक्ष) हो जावे वही धर्म है। इन नोनो बातों की चाह सुध्टि के समस्त मानव समाजको बनीर््ती है वदि इस धर्म के लक्षण को सभी समक ले और मान लें तो बसार के सारे भगडे ही दूर हो बावें भीर धर्म ही ऋगड़े कराता है, यह आवना मनुष्यों के हृदय से निकल जात्र। वास्तव में धर्म तो भगबों को मध्ट करने वाला है। वर्गशब्द का सथ भी 'घ।रणाद् धर्म इत्याहु सारा संमार जिसकी वजह मे कायम रहता है वही धम है। उदाहरण के तीर पर सत्य एक धर्मका शङ्ग है। बिना सत्य के मसार का कोई कार्य सुचार रूप से नहीं चल सकता। सारे राज्य सत्य के सहारे ही चलते हैं, असत्य भी सत्य का सहारा लेकर चलता है। सत्य वही है जिसको घारमा सत्य समऋता है। केवल वाणी से कहा सत्य सत्य नही माना जा सकता।

दुव मे मिला पानी सत्य रूप का द्याश्रय लंकर के ही दूध की जगह विक जाता है । मूटा मनुष्य भी सत्य की इस्म लाकर ही ग्रसत्य को सन्य बनाने की कोशिश करना है। अहाँ व्यक्तियों में से, वातियों में से, देश से भीर राष्ट्र से सत्य चंड जाता है, वे व्यक्ति, जाति, देश धीर

नष्ट ही हो बाते हैं । इस ही लिए

''नहि सत्यात्परो वर्ग नाऽनुवात्पातक परम्।"

सस्य से बढकर कोई वर्गनहीं ग्रीर मूठ से वहकर सवार में कोई पाप नहीं है। भूँठ का बाषय लेकर यद्यपि लोग फलते फूलते नजर धाते हैं, धौरससार ने बडे ठाट-बाट के साथ रहते दिलाई भी वेते हैं, किन्तु वह वहार वोडे समय ही रहती है। मनु कहते हैं-

बबर्में जैवते ताबततो भद्राणि पश्यति। तत सपत्नान् जबति समुसस्तु विनश्वति ॥

भवनं करने वाला बादमी पहले खुब बढता है फिर उस सम्पत्ति से धनेक प्रकार के भोगों को भोगता है। उसके बाद धन की शक्ति से ग्राने शत्रुकों पर भी विजय बाप्त कर सेता है, किन्तु फिर समूल नष्ट हो जाता है।

ससार में इस प्रकार के बहुत उदा-हरस हैं जिन्होंने फूठ बोलकर, बेईबानी से, बढ़ा वा कशया, जोगों की मार करके भी धनी बन गये किन्तु फिर वे ससार से ऐसे मिटे कि उन्हें कोई पानी देने वाला भी न रहा, वक्ष के वशा समाप्त हो वये।

> 'धम्यायोगाजित विस दशवर्पाणि तिन्ठति।'

पाप भीर भन्याय से कमाया हुआ वन दस वर्ष ही टिकता है। कुछ, इससे ग्राधिक भी टिक जाता हो तो बारवर्ष महीं किन्तु इसका धन्त ने परिशाम कमी ग्रम्हा नही निकलता । यन्त मे तो-

'सस्यमेव जयते नाडन्सम्।'

सत्य की ही जय होती है। इस समय भारतीय प्रजा में बसत्य का बढा बोसबाला है, हजारो व्यक्तियों वे भी **धा**पको कोई कोई ही सत्यवादी नजर द्मायेगा **भूँठ के बाद वेई**मानी का नम्बर मा बाता है। बेईमानी करने के लिए ही भादमी भूँठ का साथय लेता है। बाजार मे भ्रापको चीओं मे प्राय मिलावट मिलेगी । स्वारच्य के लिए श्रस्यन्त हानि-कर वन्तुएँ भी लाख पदार्थों में मिलादी बाती हैं। दूध, बी, तेस बादि गुढ़ मिसने

वडे कठिन हो गये हैं, उसका ही परिशाम यह हुया है कि लोगों में धनेक प्रकार की बीमारियाँ कूट निकसी हैं भौर स्पष्ट बीख रही हैं। जीवन जी सोवों के कष्टमय होकर भीववों के सहारे ही वस रहे हैं। यह सारा प्रकाप शसत्य का ही है। महात्मा बाधी ने सस्य का धौर ग्रहिसा का ही सहारा लेकर देख भाजाद कराया । जेनवान् नहावीर तथा भववान् बुद्ध ने भी बहिता को ही बपनाकर सोवों को धाइसक वृत्तियों से असने का उपवेश दिया और 'बहिसा परमो वर्म ' के हारा महिंसा को परमानमं बताया जो शब्दाङ्क योग के प्रयम शङ्क यम का प्रथम सम्बद्धी है ।

'ब्राइसा सत्वास्तेय-बहावयपिरिप्रहा यमा ।'

बास्तव में जिससे घपना तथा दूसरों का कल्याण हो वही धर्म है और वर्गदर चलनाही कल्याच का नार्व है।

ब्रह्मचर्य

इसके महत्त्व को लोगों ने विस्कृत ही भूला दिवा है। ईश्वर के प्रतिरिक्त बह्य सन्द का सर्व वेद भी है और वेदाउच्य-यन के लिए बत को भी बहु कहा है। "ब्रह्म वेदस्तद्ययनार्षं बतमपि ब्रह्मा" उसका पूर्ण रूप से पासन करना ही बहा-चर्य है। वास्तव में ब्रह्मचर्य से बनुष्य की महाशक्ति प्राप्त होती है। बरीर, मन, बुद्धि तथा बास्मा सभी निर्मेस तथा बस्यन्त शक्ति सम्पन्न हो बाते हैं।

> "ब्ह्यचर्येच सपसा देवा मृत्युश्याच्नतः।"

बहावर्व के प्रताप से ही देवों ने मृत्यु **पर विजय प्राप्त की । समस्त व्यसन ब्रह्म वर्ष** के चोर विरोधी हैं अस बहुतवारी को व्यसनों से दूर हो रहना पहता है। यहविका---धर्यात् स्कूलों मे, काले जों में सब्के सब्-कियों का एक काथ पढना धत्यन्त हानिकर है। सडके सडकियों के पार-स्परिक सपर्क से बहुरवर्ग कत का पालन कभी नहीं हो सकता। पारशस्य शिक्षा प्रतासी को अपनाकर हमारा देश उसकी ही नवल कर रहा है, विश्व सबके सड़-कियो के कीवन नष्ट हो रहे हैं। यौबना-बरबा मे भनोवेष को सम्हानमा अस्यन्त कठिन हो जाता है। ऐसी स्थिति वें स्नाव कूस को साथ रखक्र हम आहें कि सार

न सरे तो यह कैसे संजन है । धतः बद्धावर्य का पूर्णक्येस सरक्षण ही कल्याण का मार्थ है। निर्व्यसन बनाने के लिए प्रध्य-यग 🗣 साथ आव छात्राची की पृथक् पुत्रक् स्कूल तथा कालेओं के खात्रावासी मे ही बड़े कड़े निवन्त्रस्य के साथ बस्तियों से दूर एकान्त शान्त स्वानों में रखना ही परमावदयक है। पवनंत्रेष्ट को भी शारम्भ से बन्त तक समस्त बान तथा आपत्राचों को नि सुरूक शिक्षा देने का पूर्ण प्रबन्ध करना चाहिए । इस स्थिति मे स्नातक होने वाले समस्त छात्र आकार्मी को १ वर्ष के लिए विना वेतन के काले जॉ में अध्यापन कराने का नियम भी होना बाहिए। इससे छात्र सात्राधों को देनिन की शिक्षा मिल जायेगी तथा स्कूलों, कानेको के सर्वभी घट जाएगे। अब अन्होने मुप्त शिक्षा प्राप्त की है. तो चनको साचारस सा स्वान तो करना ही चाहिए। केवल भोजन बस्त्रों के सीर सामारण निवास स्वाम के ही वे सकि-कारी हों वही कस्याच का मार्ग है।

जीवन मनुष्य को उत्तरि करने के किए निका है। पशुपक्षियों की भौति बहु केवल साम पान कर जीवन की समाप्त करने वासा प्राखी नहीं है। अभ्याजीवन सारवर्षाद्वाराही बनावा जा सकता है। प्रथम तो जीवन के प्रत्येक प्रकार में साथवी का होना जरू री है। हमारा जान पान और निवास तथा रहन सहन सभी सादगी के साथ- पविचला से मरे होने चाहिए, जिसे सावा जीवन एक्य विकार के नाम से पुकारा जाता है। इस समय हमारे देश में इन सभी बातों का सर्वेदा प्रमाव है, और हमने केवल धाड-म्बरों को सपना किया है। हम सब्हे, मॉस, मख्यियां शीक से सेवन करते हैं किन्तु हम वह समझने की कोशिश ही नहीं करते कि ये चीजें कितनी मन्त्री हैं, तका शरीर मन, बुढि, बास्मा पर इनके सेवन चे नवा प्रभाव पड़ते हैं। किन निरपराक बीवों को सताकर धीर मारकर हम इन्हें प्राप्त करते हैं, यदि हमारे साथ भी कोई ऐवा ही व्यवहार करे तो हमें कैंवा महसूख होना। विवारे पशुपक्षी वे जुवान हैं, धीर कमधोर हैं, इसीलिए मनुष्य धपनी दुर्वृद्धि का प्रयोग कर सारि धीर बन्यूकों से इनके प्राणु नेता है। परमास्मा की बी हुई अञ्झी बुढि को भी, हम शराय पीकर भीर भनेक प्रकार के नही, जैसे सुरूफा, भाग चरस, ग्रापीय---चण्डू सदक, कोकीन शादिको सपना कर धौर इनके व्यसन में लिप्त होकर नष्ट कर डामते हैं। श्चिमरेट, बीड़ी, तस्वाकू, हुक्का सादि सी फिर बीवन में इस्तेमास की जाने वाली सावारण जीखें हैं। इस ही लिए मनुष्य बुद्धि कोकर ऊँची शहों को समझने की क्षमता को बैठा है। पशु हमारी धीर देख की सम्पत्ति हैं। उनः गिका करने से बूध

बी मन्द्रन मनाई प्राटि पौष्टिक पदार्थ ¹ जो हमारे चीवन के लिए परम उपयोगी हैं, द्यासानी से लिस सकते हैं। देश की साद्य समस्या मी किसी हुए तक बासानी से सर्माप्त हो सकती है, रिन्तु पशुधी से इन यदाओं को न सेकर हम उनके मास को ही प्रविक पसन्व करत हैं। जिससे देश श्रमेनि को प्राप्त हो गया है और इनकी हिसाका पाप हम अपने उत्पर लेकर बनेक प्रकार के रोगी और कटने में उसम्ब वए हैं। इसिक्ए कस्यास का बार्च यही है कि हम हिसा के कशक से बच-कर धपने कल्याल की भावना को आयुक्त करें। ऋषि दयानन्य ने इन समस्त वातों पर बहराई से प्रकाश टामा है। वे भारत मे सबसे बडे सुबारक हुए हैं। कल्यान , को चाहने वासे प्रत्येक व्यक्ति को छनका विज्ञा समर प्रन्य 'सत्यायं प्रकाश' सवस्य पढना चाहिए।

कस्याच मार्गका पश्चिक बनने से पहले हमे यह जानना बावस्यक है कि किन साधनों से इस कत्यान ने मार्च पर चल सकते हैं। कल्याण का मार्ग बढा <पवित्र है और किसी भी पवित्र बस्तु की ब्राप्ति के लिए पवित्र नाघनों की ही साव-श्यकता है। बगवित्र सावनो से हम किसी भी पवित्र साध्य को प्राप्त नहीं कर सकते। यदि हमने विना पूरी वानकारी श्राविक किये सकस्याए। ने मार्ग को ही कल्याच का मार्व समम्कर प्रपता लिया शो हुमारा धनिष्ट ही होया धौर ययानक बुख भी उठाने होने। विद्वान् शस्त्रत कहते हैं कि घर्म ही सुको का मूल है। ऋषि चाणस्य प्रपने कौटिनीय प्रवंशास्त्र ने सब से पहला सूत्र शिखत हैं--- शुबस्य-मूल वर्गं किन्तु इससे पहले तो हमे यह जानना है कि हम किस साथन से थमें करें? और सर्वप्रथम उस साधन को ही ऐसा पवित्र बनावे विश्वते जनके द्वारा हम सर्वेद सुभ कार्य ही करत रहें। सद से पहला मुख्य साथन हमारा शरीर ही है। 'सरीरमार्थं सलु वर्मसायनम्। इसके -द्वारा ही पवित्र चार्मिक कार्य करते हुए भीवन में कल्यास होता है। बास्तव मे तो शरीर एक डाँचा है और जड है, यह -स्थम अब होने के कारण कुछ नहीं कर सकता। इसके प्रस्वर इन्द्रियों का भीर श्चन्त करण का निवास है, ये सभी जब हैं। इसके अतिरिक्त खरीर ने एक चेतन बात्मा त्री है जिसके ब्रधीन ये सारे यन्त्र 🖁 धौर कर्म फली के उपभोग तथा कर्म करने के सिए ही बात्मा को दिए गए हैं। बे सभी वारीर द्वारा ही शक्ति सम्पन्न होते हैं वदि शरीर मे वामस पदार्थों का प्रवेश होना तो हमारी ये सारी शक्तियाँ तामसी हो बावेंगी । सास्त्रिक पदाबों के श्वेवन से सास्त्रिक बनेंगी । तभी हम निर्दोव सास्त्रिक कार्यत्री कर सकेंगे। बहुत से विद्वानों ने सरीर की बड़ी निन्दा की है और इसको स्थान्य बसाया है। उनका कश्चा है--

प्रस्थि स्थ्य स्नायुपृत, मानशोधातवेपनम् चर्मावनद्व दुर्गेन्धिपूर्णं मुत्रपूरीयथो । जरानो इसम विष्य

रोगायतनमातुरम र बस्दलमनित्य व

भृतावासमिम त्यजेत्॥

धर्मात इस शरीर मे हविडयो का

टाचा बना हुआ है, जैसे मकान बनाने के लिए पहन सोहे के गढेरो का ढांचा खबा करना पडता है। फिर यह शरीर नसो से जकडा हवा है जैसे सोहे के दांचे को पहले-पनल तारों से बाब विया जाता है। फिर मास और खुन से इस पर लिप्पी की गई है, जैसे मकान पर सीमेट, रेता भीर सतने के पानी से की बाती है। ऊपर से यह चाम से दका हुआ है। जैसे नकान को ह्याइट वाश भीर रग रोगन से सवा दिया जाता है। पेशाब धीर पासाने से परिपूर्ण है। बुढापा भीर शोक इसको समे हुए हैं। रोगो का यह बन्दिर है मुख धौर प्यास से सदा व्याकुल रहता है । जैसे रजस्वला स्त्री रको वर्ग से अपवित्र रहती है, उस ही बकार बह भी दूचित रजो गुणी पदाची से भराहृधाहै। पृथ्वी, वस, धन्ति वायु, बाकाश इन पाँच बहासूती से यह बना है और यह अनित्य है। इसन्निए ऐसे गन्दे शरीरको खोंड देना चाहिए। किन्तु हुन कहते हैं कि को स्थिति शरीर के ऊपर बताई है, वह ठीक है । किन्तु इस ही शीर क्यी सोल में हवारी अमूल्यनिकि इन्द्रिया, अन बुढि घौर बात्मा भी वो स्थित है जिनकी यह रक्षाकरता है। जैसे साद बढा बानित्र हुगन्धयुक्त होता है क्लियु बूर्शों से उसके प्रयोग के बाद, कितने कोमल सुगान्धत पुष्य गुलाब चम्पा बमेली स्वका रात की रानी द्यादि विकसित हो जात हैं। धनेक वृक्षों के मुदर स्वादिष्ठ ०ल देने दान पत्न भी पैदा होत हैं। रज एव वीय भी एक प्रकार का गरीर का मन ही तो है धीर धप-विव भी है किन्तुइस स ही सासारिक श्वमस्त प्राणियों के सुन्दर और सुन्दरतम शरीरों की भी रचना हुई है। इसकिए शरीर को निन्दा के योग्य नहीं सममना चाहिए, प्रपितु यह कोश्विश करनी चाहिए कि हमारा शरीर पूर्व युक्षोपयोग तथा धानन्द प्राप्ति (मोक्ष) का भी साधन बने । इसकी धावक से धावक पवित्र रसकर इसके द्वारा ही हम बाहर के वन्त्र (बाह्य करल्) भीर भन्दर के बन्त्र (भन्त कर्त्ता) आदि की भी निर्मेश स्था निर्धेष बनावें। हमारे शरीर में मन, प्रासा और वासी सक्तिया धमूल्य हैं इनके बण्डि भीर दोष रहित किये बिना हम कभी **प्रच्छे कार्य नहीं कर सकते औ**र ससार मे सुब्ती जीवन भी नहीं बिता सकते। मन ती बारी बुराहबी बीर भसाहबों की जब है, बर्बात् मन की पवित्रता स ही सहार मे पविता कार्य होते हैं, उसके अपवित्र होने से ससार के समस्त कार्य प्रपवित्र हो बाते हैं क्योंकि "मन एव मनुष्यासी

बन्धन में डालने वाला धीर घारमा की मुक्ति दिसाने बासा मन ही दी है। घर सोचना यह है कि मन जैसा शक्ति सपन्न इथ्य अपवित्र भीर पवित्र कैसे हो जाता है ? इसका उत्तर यह है कि हमारा मन प्राकृतिक पहाचीं से ही बना है। उपनिषदी मे इसका वर्णन इस प्रकार है - धम्नम-शित त्रेचा विचीयते, शस्य य स्थविड्डो बातुस्तरपुरीव भवति यो मध्यमस्तन्मांस योऽणिष्ठस्तम्मन ।

गर्थात् हम जो कुछ काते हैं उसके सब से मोटा भाग विष्ठा के रूप में शरीर के बाहर निकल जाता है, जो सध्यम भाग है उसमे मांस बन जाता है बौर जो बन्न का श्रत्यन्त सूक्ष्म भाव है उससे मन बनता है। इस ही लिए लोकोक्ति है कि जैसा साधोगे धन्म, वैसा बनेगा मन । इससे यह बात स्पष्ट हो गई कि हम तामसी पदायाँ का सेवन करेंगे तो हमारा मन भी तामधी ही होगा जिसके द्वारा हम कभी शुभ कार्य नहीं कर सकते, इसलिए जो कुछ हम साते हैं उस पर हम की बड़ा ध्यान रसना चाहिए। साई वाने वासी बीओ मे तीन बातें भावस्वक हैं ---पहली बात हमारा खाद्य प्रत्यन्त पवित्र हो, यानी वह पवित्र बस्तुओं से ही बना हो। दूसरी बात वह बलिष्ठ हो यानी उसमें ताकत देने की शक्ति हो। तीसरी बात यह है कि हमारे बाने की सभी वस्तुएँ सास्विक हो। सास्विक वस्तुएँ वे कहमाती हैं जिनके इस्तेमास के बाद बुद्धि में किमी प्रकार का विकार नही पैदा होता। बुद्धि इमेशा सही सोचेगी आपको कभी स्वत रास्त प नहीं जाने देगी भीर उस पित्र बुद्धि से कार्य करते हुए भाष परमात्मा को भी प्राप्त कर लेंचे। मनुष्य जब इन बातो का विवेक खोड देता है ता वह भा^{त्र}, मास मदली नको की जीजें साने समता है, उसे यह ज्ञाम ही नहीं होता कि इनमें कितनी गन्तवी गरी हुई है, भीर य वस्तुएँ हमारे शारीर में कैने-कैसे विकार पैदा कर देती हैं, पहले तो हमारे शरीर पर ही इनका बडा बुरा बसर पकता है, बनेक प्रकार के बुरे से बुरे रोग इन धपवित्र बस्तुधो के लाने से हो जाने हैं। शाजकस हजारों ग्रादमी व्वेत कृष्ठ से पीडित चितकवरे नकर ग्राते हैं शलाध वस्त्रग्रो के सेवन से ही भिन्न जिन्न प्रकार की बीमारियाँ भी मारत ने फैल गई है छायु भी घनेक रोगे के कारण घट जाती हैं और कड सब ही व्यतीन होती है। भारत में पिछले ३० वर्षी मे स स अक्षण का वहा प्रचार हुआ है चुकि ससार के धन्य देशों में मासा का बढा प्रचार है इसनिए भारत भी उन देशो की ही नकस कर रहा है जो भारतीय सस्कृति भीर सम्मता के प्रतिकृत है। हमारे ऋषियों की भीर मूनियों की बायू बढी सम्बी होसी बी घीर वे नीरोन भी रहते ये भीर पवित्र वृद्धि से युक्त भी कारल बन्धनोक्षयो ।" प्रचात बरीरो को होते थे स्थोकि रूप, यस फलो का वे

ग्राचिक सेवन करत ये। ग्राचम में हुआरों की सरुवा में नौएँ भी रहती वी विनका धमृत समान पवित्र दूव भी प्राप्त होता था। उस ही दूव से मक्कन मलाई, दही तवा बृत भी ब्राप्त होते वे । ऐसी पवित्र वस्तुओं के सेवन करते हुए रोग और बुद्धि एव बन के विकार पैदा ही नहीं हो सकते थे । इसलिए स'स्विक भोजन के द्वारा सात्त्रिक मन को बनाना ही कल्यास का मार्ग है।

दूसरा तम्बर हमारी प्राण शक्तिका तीन भाग हो बाते हैं। लाये हुए पदार्थों का है। इस शक्ति से ही हमारा शरीर चसता है। जीवन शक्ति को विकसित करने के लिए सब से बड़ी महत्ता प्राणी को ही है। पीने की जितनी चीजे हम पीत हैं उनमे चाह अल हो दूध हो फ्लॉ का रस हो, शबंत हो समया कोई भी पिये जाने वाली चीज हो उसके भी ३ माग हो जाते हैं। सब से मोटा भाग मूत्र रूप मे शरीर से बाहर निकल जाता है सब्यम भाग से ख्न बन जाता है और सब से सूक्ष्म सर्वात् सुदमतम हिस्से से प्राण शक्ति बन बाती है। इसलिए हम यदि पूर्ण नीरोग रहना बाहते हैं अपनी आयु बढाना बाहते हैं भीर भपने भन्त करण की वृत्तियों को पवित्र रखकर पवित्र कार्य करना चाहते हैं तो हमें पिये जाने वाले पदाकों पर काफी ध्यान देना होया । हम जैसा भी जल हो, शुद्ध हो या प्रशुद्ध एक दूसरे का म् ठा तक पीने मे परहेज नहीं करते । माता पिता घपने बच्चो को घपना मुठा जल विलाते हैं उनका भूठाजल स्वय भी पीते हैं वे नहीं समभते हैं कि इससे जल के उन्दरप्रविष्ट अनेक प्रकार के कीटाए भी दूसरों के सब्छे वारीर में जाकर धनेक प्रकार के रोग और विकास पैदा वर देने हैं। मनुजी ने कहा है---नोज्डिप्ट कस्वचिव दशात्, भारत मे सूक का भी बडा प्रयोग होता है जो ब्रस्य-त हानि-कारक है। जल की पविव्रता नव्ट होने पर प्राण शक्ति भी कमजोर सीर सप्रविष हो जाती है। इयसिए घत्यन्त सावद्यान रहते की जरूरत है। हमारे देश मे श्चराब का इस समय वडा प्रवार है।इस पवित्र देश में कभी लोग महिरा पान से वडी घृरणा करते ये किन्तु इस समय समस्त राज्य सरकार गराब के वड से बडे उके देना हैं भीर देश से श्रधिक से श्रधिक रुपया बटोरन की कोविश करती है किन्तु देश के शासकी का जरा भी ब्यान नहीं होता कि इसस लोगों के सरीर मन बुद्धि पर कितना बुरा प्रभाव पडता है। यही दशा रही तो भागत कवाली का तथा दुक्षियो नादेश बन कर रहुजायगा। शास्त्रवियो में कई गुरा किस को प्राप्त नहीं हो सकते। शरावे सारी सम लिकी शराव में ही पूक देता है धौर उसकी स्त्री भीर सम्तानें वह दुखो भीर निर्ध-नता का जीवन व्यतीत करने पर मजबूर हो बाती है।

(शेव पष्ठ ६ पर)

शायसमाज के सी वर्ष तक कार्य करने पर भी देख के विभिन्न भागों में श्रमी भन्धकार का पूरा साम्राज्य है। इस का बहुसास मुक्ते तब हुया जब मध्यप्रदेश के एक प्राम वारीयढ में जाने का अवसर प्राप्त हवा ? बारीगढ जान का सीभाग्य, कैसे मिला यह भी एक दिलचम्प घटना है। मैं बायममाज पन्धरी (हमीरपुर) क उत्सव पर गया हुन्ना था। एक प्रात को उठते ही एक सन्यासी ने सौ काये का नोट मेरे सम्मुख बढाया। पूछने पर पता चला कि युवा सन्यासी शिवो हम् का उपासक था। अभी-अभी भायसमाज के विचारों से परिचित हुमाहै भीर काफी हद तक प्रभावित हुआ है। उसकी इच्छा थी कि उसके बाधमस्थल बारीगढ मे बार्यसमाज की विचारधारा एक यज्ञ के माध्यम से दी जाए। इसके सिए उस ने मुक्ते खप्युक्त समका। मैं असमजस मे पढ गया सुना वापिसी दबाई तवाबुटे साधुका क्या विश्वाध एकदम इन्कारकर दिया और कहा कि इतनी दूर मैं न बासकूंगा। साबु ने फिर भी साहस न खोडा भीर एक आयं भजनोपदेशक के द्वारा मुक्ते प्रेरित किया। श्रपने साथी की बात मुक्ते माननी पढी धौर ४ जून को मैं कानपुर महोवा धौर फिर बारीगढ के ऊबढ प्राम में जा पहुंचा। बैठ सकता, और वह उद्गड समुदाय यज्ञ षव सुना यह माल्हा भीर ऊदल की विक्रम स्थली है तो मुभ्ने यह ग्राम प्यारा लगने सवा रिप्स पानहर का प्रसर सूर्य घूली-घूसरित नार्ग और यज्ञ-स्थल का अपरि-चिंव हदव में क्षीमं उत्पन्न करनै रहें। सोचतारहामेरा ऋषि भीक्या इस छे ग्राधिक रेगिस्तानो ग्रीर बीहड बनो मैं घूमा होगा घौरफिर उसका ने कोई एक भी साबी नहीं था, हाँ विरोधी पन पग पर थे। उस साहस के पुतल ने किस वैर्य से पग बढाया होगा ? मन ही मन मे अपूर्विके साहस को नमस्कार कहता, यज्ञ स्थली पर पहुन ही गया।

कोई चिराग जलाओ बहत अन्धेरा है

उत्तमचन्द्र शरर

एक वीरान सी यज्ञभाषा, स्कूल के प्रावस में मुक भाव से अनता की उदासी नताका परिचय देरही बा। मुक्ते तलाश बी क यहाँ कोई परिश्वित व्यक्ति मिले, वह साधुमी तो नहीं या। कुछ कास पश्चात् कुवर महीपाल (भवनोपदशक) क दर्शन हुए मन शान्त हुआ कि कोई परिचित दो मिला । इतने मे एक मस्त सन्त स्वामी सत्यानन्द की बोदेम् सम् की व्वनि सुनाइ दी बस फिर तो मैं अपने साथियों में ही

पदा बला ग्राम वे ठाकुरी का भातक फैसा हुमा है। हरिजनो को यज्ञ करने, यज्ञापवीत लेने का अधिकार तो क्या, इज्हा भी दण्डनीय है, ठाकुर साहब के सम्मुख हरिजन बन्धु चारपाई पर नही का विरोध कर रहा है। हरिजन बन्धु यदि यज्ञ में सम्मिलित हुए तो न केवल ने पीद दिए बाएगे, धपित यत करने बाले भी न बच सकेंगे, भीर इस बन्नि के लिए हम ती बाही गये थे।

राजी का प्रवार कार्य प्रारम्म हुंबा, स्दा० सत्यानन्द जीक भाषांगु मे एक उद्दण्ड ब्यक्ति शराद के नक्षे में धूत्त लगा यनापशनाप बकत मैं उसे समकाने को उठा तो कुछ सावियों ने रोका, इधर स्वामी जी ने हवा का दल देखकर 'राम-धून प्रारम्भ कर दी। (उन्हेसह बन्दाज भी बाता था।) सभा जान्त हो गई, भाषरा भी

रामकी यहिमापर हो गया और इस प्रकार स्वामी जी विरोक्तान्त का समन कर पाये। अञ्चन ठा० बहीपाल के थे, वे तो ठाकूर वे । यत क्षत्रियोचित खब्दावली का प्रयोग करते हुए, ठाकुर बन्धुको के स्वाभिमान को समकारते रहे। जातीय बन्धुधो के कारण, उन्हें किसी ने नही रोका। यन मेरी बारी बी में हिन्दुयों की दुरबस्था से दुश्री तो या ही, जाति के पतन के कारणी पर प्रकाश डालने लखा। बापस के मतभेव, विरोषियों के वहबन्त्रो पर बोला विससे जनता मेरे समीप 🚅 सके। सभा समाप्त हुई, हम मोबन को बले, हरिजन बन्धु क्या और कैसे भोजन करते हैं यह उस रात्री को धनुमन हुआ। काश ! हरिजनों के उद्धार तथा बीरों के ठेकेदार कभी इसका खनुभव कर पाते।

दूसरे दिन प्रात यज्ञ हुआ, सब नर-नारियों को बाहति 🏞 का अधिकार दे दिया गदा । कुछ बज्ञोपनीत भी दिये गये, भौर हमने सोचा कि मैदान मार सिया. परन्तु यह हमारी कोरी कल्पना थी। दोपहर को बात हुमा कि हरियनी को विये यज्ञीयवीत ठाकुरी ने लोड दिय हैं कूछ की पिटाई भी हुई है, भीर कम के वज्ञ को राक्षसवग'विष्व# करक रहेगा। राश्रीका प्रवार काम शान्ति से चन गया क्यों कि हम श्री कृष्ण जी की महिमा गाते रहे। बीच बीच में दयानन्द भीर उस की विवारणारा का पूट भी दे जाते, परन्तु इस श्रम्याय से कि भोड़ा सवार से विदय न बाए।

धगले दिन के यज्ञ में केवल संख्यात. को डी बाहरित का ब्रधिकार दिया नया। मैंने कहा भी कि ऐसा क्यों ? परन्तू स्वामी जी ने अनिष्ट कस्पना के भव से मुफ्ते चुफ कस दिया। यज्ञ हुमारी नीति प्रथवा मीक्ता से निर्विष्न समाप्त हुखा। रात्री के प्रवचन भी हुए। प्राच प्रक्तिम रात्री बी मत धार्यसमाज की विचारकारा का खुलकर प्रचार हुआ। खीमान्य से बाम के कमेटी के वैसरमैन प्राय विचारों के निकले उन के धानमन से उग्रवादी कुछ दक गये। पूर्णाहुति क दिन यजमान ने (जो ठाकूर या) बाबह किया कि किसी घन्य से बाहुति न दिमाई जाए। हम ने उसे तसल्ली वी उस यज्ञ सम्यन्त करने के पश्चात् उस के स्थान पर वैयरमैन साहब की विठा कर सारे ब्रामवासियों से ब्राहुति दिखाई गई। इस कशनकश ने मा॰स॰ सुमेरपुर के उत्साही कार्यकर्ता पूरा साथ दे पाये, श्री सम्माधीन तो यज्ञकार्य के प्रात्त ही वे। यज्ञ समाप्त हुमा भीर हम वापस भौटे। महोबामे पता चला कि हमारे धाने के पश्चात् वह सामु पिटाई के बद के ग्राम के मान गया है। भण्डारा नहीं होने विसा*गया ।* याना सर्वेचा मीन भाव से दर्शक रहा और वो खायुओं की पिटाई

पाठक सनुसान समायें कि साम श्री कितना अन्यकार है और इम परिस्थि-वियो ने हिन्दू वावि के जीने के किलते दिन क्षेत्र हैं ? बन्धवाद है ऋषि वसानन्द का जिसके सद्ग्रयास ते आर्यसमाज क्यी वीपक इस प्रत्यकार को दूर करने का प्रयास कर रहा है परन्त क्या यह छोड़रू साबीपक इतने वड अन्धकार को चीर सकेगा? यह प्रश्न है जो हर ऋषि मक्स को विक्कत कर देता है।

लाला रामगोपाल गालवाले श्वभिनन्दन समारोइ समिति मर्हीप दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

सार्वदेशिक ग्रायं प्रतिनिधि सभा के यसस्वी प्रधान श्रद्धेय श्री रामगोपाल शासवाल का सार्वजनिक प्रमिनन्दन करने लबा इस भवसर पर उन्हे ११ लाख ६० की सम्मान राशि मेंट करने सम्बन्धी कार्यक्रम की तैयारी निरन्तर प्रवति पर है। इस विषय में झार्य प्रतिनिधि समान्नी के श्रीवकारियों के नाम भनेक पत्र भेजे चाच्के हैं। विशेष कर य ग्रप्रैल यथ समा ५ जुन ८५ को भेजे गये परिपत्रों में हमने ग्रभिनन्दन समिति के निश्वयो एव सम्मान राशि हेत् धन सम्रह् से नवधित विशेष जानकारी से बापको धनगत किया जा। यह बात बुहराने की भाववयकता नहीं कि सम्मान राशि के सक्य को पूरा करने ने धार्य प्रतिनिधि समाधों से विशेष सहयोग

सस्याची के सचालको एव महानुभावो का भी सहयोग प्राप्त करना बाहिए जिनकी माननीय साला जी के प्रति दा है भीर जो इनके प्रिय कार्यों के समर्थक एव सह-योगी रह है। उपरोक्त दूसरे परिषत्र का प्रकाशन सार्वदेशिक पत्र के १ जून के श्रक मे मुख पृथ्ठ पर शी हुआ। है। अन आ पक्षे प्राचना है कि शीझातिशीझ अपनी प्रति-निवि सभा में निश्चय कर सम्मान राशि के जिए बन सम्रह करने का कार्य झारून करले की कृपा करें।

इस प्रभिनन्दन समारोह की तैयारी के लिए प्रमुख मार्थ बनो का एक ध सदस्वीय कार्यकारी दल पिश्वले ६ मास है कार्यं कर रहा है। इस कार्यकारी वस के सवस्य गण शव तक शनेक बार विल्ली वे

सबह उपसमिति का भी गठन किया वया है जिसके संगोजक गामनीय श्री सोमनाय मरबाह है। साथ ही एक परामर्शदात्री एव कायकम उपसमिति का भी निर्माश हो रहा है जिसके सयोजक वाननीय भी रामचन्द्रराव बन्दे मातरम् हैं। समारोह के जिए मुख्य समिति धर्षात् समिनन्दन समिति का बठन किया जा रहा है, जिसमें सार्वदेशिक सभा के अधिकारी नता समस्त बार्थ प्रतिनिधि समायो के प्रवान, देश विवेश के प्रमुख आर्थ जन एव अदेव सामा भी के कार्यों से संबंधित धनेक वध्य मान्य व्यक्ति होने । इस समिनन्दन समिति की सदस्यता स्वीकार करने के सम्बन्ध में पत व्यवहार किया वा रहा

बाप से साम्रह प्रार्थमा है कि प्रक्रि-नन्दन समिति की स्वस्थता के जिए जार्च बक्ते प्राप्त हे हुन अहानुवानों हे स्वी-

नाम के साथ ही उनका पूरा पता और जिस प्रमुक्त स स्था से उनका मुख्य क्या से सम्बन्ध रहा है उस सस्था का नाम श्री विकाने की कृपा करें। इस समिनन्दन समिति का बठन राष्ट्रीय स्तर पर किया का रहा है। यत देश के सभी प्रान्तों एव श्रद्धेय सामा जी के प्रिय सामाजिक हो में का प्रतिनिधित्व इस समिति में हो सके, इसका ध्यान रसना उचित होगा।

भावर सहित ।

डा॰ धानस्वप्रकास सबोजक एव मनी व्यभिनन्दन समिक्ति



स्यानन्द का प्रिय वेद मत ⁴ (पण्डरकाशेष)

बहुर्गि ववान व ने इसी हित्यान से धवने ग्राम्यों में धवत्य का दरता से सण्टन किया पौर सत्य का पण्टन । सण्यकार और प्रकाश एक साथ नहीं रह सम्बेग । ठीक ऐमें ही ध्यवित्रता में पवित्रता नहीं सम्बन्ध सकती भीते मुखता और बुदिनसा बाधजान धौर जान मुगयन् नहीं रह सकत वेसे ही चुरित धौर भद्र भी एक साथ नहीं गज्द सकते । भ्राप्त में स्थापना के निज्ञ दरित का जयहार धनियाय है।

स्वतार में हम देखते है कि गतियीत यद व में निरुत्तर बाहर का प्रभाव पढ़ता है उनसे बागाव सुख्ता के लिए घोर अस करना होता है। पवित्रता ही भीवन हैं भोर अपवित्रता ही गुल्यु है। इस विद्वाल को हमें सर्गातर करना हो है। स्वोकि सह दका आदेग है। सह वह प्राकृतिक जान सपना स्व भाविक स्व

जब मनुष्य किसी भी मन को विचारको निश्म यानिखातको जीवन मे बारणुकर देता है तभी वह मन्त्र सिख होता है साका नाम है सिखि। मन्त्रके सनुषार साचरणुकरने से मन सिख होनी है।

यं असपुत्य के महित क में बम न म से एक ऐसी फ्रांत च रणा उमरती है कि बम कोई सलीकिक व तुहै। सासा एक व्यवहारी में सम की खाबरस्थकता मही। जब कि सरवा तो यह है कि हमारे क्रीतिक यवहारी में हमारा सहायता करते वाना नियम ही बम है

स्मरण् रिवर्ष कि — भौतिक जनत सौर बाध्यारिक जनत वो मिन्न बाराए नहीं हैं। भौतिक जीवन में बाध्यारिक जीवन की बार्रिक लोगन हैं। भौतिक क्वाब बाध्यारिक सुन्न प्रान्ति का माय प्रसुद्धतक्ष्मते हैं।

जब तक इस सत्य को हम बान नहीं लॅमे तक हम जबने पन को स्कट्ट रूप से समक्ष नहीं शर्मिंगे।

भेद ज्ञान भूमें इसी सत्व मान की भ्रेपना वेने हैं। सखार का सारा कन तान के इसी तत्य प्राच्यार पर ही जन न्या है। बहां हम इन नियमी का उत्सवन चरते हैं नहीं हम नार्ग भठक जाते हैं और दुख पाते हैं।

प्रस्तुत मन्त्र का विस्तार भी घनन्त

हु। हुम्सिलानि परासुवः बद्भद्वतन्न आसुवः। हुनै क्रियान्त्रिति हुमे पग पन पर देखने को मिकती है।

त्रात उठते ही मल त्याग करने बाना स्नान बन्त बाबन करना इसी बुरिसानि परायुव के प्रावेश का पानत है। बाहे पुकान हो या ककान चाहे बाबन है। बहु युव पहले के से स्वच्छ किया ही बहुदा बुव पहले के से स्वच्छ किया ही बहुदा बुव पहले के से स्वच्छ किया ही कही गई है। अब इसके झाथे विदिए— स्नार सुद्वार बढ़ दें गुल्लाना गा किसी से किस के सब के पुल्ला किस दूरि सानि परास्त्र की जनी है। साले को संगान लक्ष्म वाह जना काशस का मनना स्थाह ? यहने बस्त के शय को दूर किया जाता है तभी उससे अदता मती है।

ये सार्ग किया कताय बौतिक स्रूर पर किए जात हैं। यही नाय हमें झाच्या रिमक गत्र वे धा मा के स्तर पर करता होता है। प्रथम झारमा के मलीनता को दर कर तब सम भागा प्राएपी। भद्रता का खावान होता।

एक ही नियम एक ही खिदान्त घर धायन वाजार मंचलता है धौर वं ही नियम धौर सिद्धांत धाष्ट्याभिक जगत् भे वसे ही लागू होने हैं जैसे भौतिक व्यवहार में।केवल स्तरका धासर साम है।

इस मत्र में एक श व क्योन देने योग्य है विदशानि विश्वानि इस्तिनि परासुव सपूण दुरितो का दूर करना। रव मात्र भी दुरित अप न स्वन पए स्ति क्यों के स्ति क्यों में निवस में जितन प्रतिस्रत ना कमर रन्यों ीन उतने ही प्रतिस्रत का कमी प्रन्ता में भा जाएगी।

सारा जीवन गणित के झाधार पर चलत के ज्यमें किसी प्रकार का शुविका घट बन के कल्पना कल्पनामात्र ही है। सहिंप ने इसीलिए क्स मात्र को

महोप ने इसोलिए दस मेत्र का सबप्रथम रक्ताहै। यहक्रम सृष्टिका एक मिद्धात रूप ही है।

धाने बेद आध्य मे इसे बार बार निवाने का मिश्रमाय यही है कि जान मे कहा स्रोव न स्राने पर दिन्यों कि स्वश्नार का स्वत्य प्रोत क्षा (पत्य धीर आधारण) के स्रोव न स्राने पर देशों कि स्वश्नार का स्वत्य स्वत्य कुछ स्वत्य का मूल साथ र आन ही तो है। जान की स्वतस्या का सम्यान राष्ट्र क क्ल्फ् रो विकृति हो स्वत्य हार की विकृति वन जाती है। को करना ही होगा स्वया समाज का साम

धाय है महचि दयान द और घय है बद मान घर घय हैं प्रभुजिन्हों ने जनदिवा

प्रत्येक मनुष्य को इस मत्र को जीवन में चरिताय कर सिद्धि प्राप्त करनी चाहिए प्रमुक्तपा करें कि ---

हे सनिता देव धाए हवारे सपूण दुरितीं को बूर करने में हमारी सहायता क्लेंबिक्ए बीर बाद की बारशा हम में होती रहे ऐसी प्ररुणा व ऐसा सामस्य हमें

श्री३भ'विश्वानि वेव सवितपु रितानि परासुध । बद्भद्र तन्न धासुव ।

> धर्म क्या है (पृष्ठ ७ का शेव)

सास सदिरा जुड़ा बोर व्यक्तियार य चारवंड दोण कसार में दोण सामें बाते हैं। बारत से ये चारों ही जुढ़ि पर हैं दस लिए देश अध्यास्त करना की तरफ का रहा है। चुन्नि मुण्यों ने तथा ऋषि दसा नस्य ने इस समस्त नातों पर सरबाय अकार्य धर्मक पूण प्रकाश बाला है प्रस्थेक व्यक्ति को यह अप पढ़ाता स्वाधियां □

राष्ट्रीय-सगठन म धार्मिक उन्माद बाधा (पण्ड४का वेष

मारकार सब इस फिरकापरस्ती की दन है था मक मता चता ने ही इस राष्ट्र के बढ बढ नेताओं की हत्या तक करवा डाली है।

सच पुत्र यदि देखा जाए तो यहा के लोगस्व थवधा भयवधा ध्रयवा द्यति के करण ही सगठित हुए या एक हुए है होते हैं और होत रहेंथे।

य वर्मिक उन्माद की भावन ए ही ब्रह्मनपन या ग्रस्प्रयता को बढावा देती ‡। सदिरो भीर देवालयो पर पृष्प चटाने को मना करती हैं। व्ससे समक्त्र में विघ टन ही पैदा होता है। स्वामी विवेकान द ने कहावा मैं उस घम को घम नही मानताजो भूसे को रोटी नहीं द सकता स्वामी दयानन्द ने भूदी और नगी भारत जनता को देखकर ब्रह्मान द भीर समाधि क विचरछोडसमाजको जगने का जीवन भर प्रयत्न किया सात्र हम रे राष्ट्र का एक जीवाई से भी प्रविक हिस्सा इसी मुख्या गरी जी से तग आसर चन परिवतन का शिकार होता है और जब धम परिवतन हो जाता है तो नेनाओं की ग्राल खुलने लगती है क्यों कि वह गरीब भूला नगाइ सान यह सोचने को मजबूर हाजताहै कि इस घम में क्या रसाह जो भूखे को रोगी नही देसकता इस लाचारी का लाभ उठात है विदेशा भीर देशी धम के एजेण्ट जो भ रत राप्ट के सगठन को जजर करने मे लगे रहते हैं **बत** भूगीर ख (घरत भीर प्राक्तश) के मध्य रहने वाले इस भूसे मानव का समस्याका समाधान राष्ट्र क करा ६ रो चरनाराकर र प्टटक टक हो जाएगा।

इसी सदन में यदि हुम इस र प्र मे सनामे जाने वाले त्योहारो या पर्वो ३ चर्चाकरें तो वहा भी हमे गडवड नज धाती है। मनुरुष कास्त्रभाव है कि वह ग्रफ्बी वासिक रूडिताको छोडने में ब कच्ट का धनुभव करला है। त्योहार भा रह्ट के अध्यक्ति अधिवन का श्रीमान श्रम है। त्यौहार या पव किसी भी राष्ट्र की सस्कृति व सम्यता के अतीक हुन्ना करत है। जागरूक जनसा के बम भीर साईच रे के प्रतीक हुयाक रते है। राप्ट को एकता धीर सगठन के सूत्र में पिरोने वाले हुआ। करते हैं कि तुइस स दभ में भी हम जब गढनारे विवार करते हैं तो हमारा मन भीर मस्तिष्क फन फना उठता है। हृदय वेदनामे भर जाता है। इस राष्ट के ग्रन्दर अब त्योहार मनाने का समय ग्रासा है तब बड बड नगरी में धारा १४४ लगनापडती है। पी • ए० सी० ग्रीर पुक्षिस का इत्तजाम करना पडता है। यह सब क्यो करना पडता है [?] इस क्यो काउत्तर एक ही है— हुम शाकित हो बठते हैं कि कही भगकान हो जाए। सम्ब्रदायिक उपद्रव न हो जाए। इस

लिए वार्मिक त्यौहार भाहनारे राष्ट्रीय सगठन मे एक वडी बाध बनकर हमारा अटटहास कर रहे हैं।

व स्तव में भारत र इन के स उन मे धार्मिक-उमाद एक बडी बाबा ही नहीं धपितुराष्टके लिए चुनौती भी है। जिसे जिसे समय रहते हमे स्वीकार करना ही होगा। राष्ट ग्रौर धम दोनो मे ग्राज सम वय नही है। एक रूपता नहीं है। क र धमबादी बाज भी ब्स राष्ट की राप्टीयता को स्वीकार करने को तैयार नहीं अपन को अलग कीम बताकर नया ह गुन विजाने को तैयार हैं। धम निर पेक्षताकी बाड में बाज देगताही पच उपवादी द्यातकवादी व्यक्ति से य कि के परिवार के शब्द के टकन टकड करने को कटिवढ़ हैं। यह उ मादी मा। ऐसी ग्रंगे तक घषक जती है ती न गरीब का कीपडा देखती है न समीर की घरालिका धन हमे न्स वार्मिक उमा नाका जिससे साम्ब्रदानिक विद्वय <ावत तती तसमूल विनष्टकरनाह होग। पर पर प्रमाव सीहरू का बराना ह हगानन्ताना विभाजन के कगार पर ज हाहै बाबा एक जुग्लाकर इस सबल स्राव्यन न कासकल्पल

श्री ला हसराज गुप्त का निधन सभाद्वारा शोक सवदना



निल्ली की समस्त बायसमाओं की कोर से उनकी शिरोमणि समा दिल्ली म य प्रतिविध सभा के प्रधिकारी एव कासकना दिली के भूतपूर महापीर प्रसिद्ध उद्योगपति दानबीर समाजसेबी ध्रायसमाज ने कमठ कायनत श्री साला हसर ज जी गृप्ता के अकस्मान् देहाब सन पर गहरा द स एव नोक यक्त करत है। स पने सपना समिकाण जीवन ग्रायसमाज नथा ग्राय स माजिक सस्वा द्यो की याम लगदिया द्यापक चले जाने स भायसम ज का जो क्ष्ति हुई है प्यकी पूर्ति होन असम्भ**ं र परम** िता परमामा स प्राथना है कि बह दिवगन ग्रामा नो सदगति प्रदान करे उनके दुख परिवार का व्स**महा**न्द्रस को सहन की शक्ति तथा सामध्य प्रदान करे (सूय देव)

समाचार-सन्देश

पं॰ युधिष्ठिर मीमांसक का श्रमिनन्दन एक सराहनीय प्रयत्न

वैदिक वाडमय के लाघ प्रतिप्ठ विद्वान् मानवता कं पुजारी धार्यविद्या के तपस्वी प्रचारक प० युविहिन्द मीमासक का भायसमाज साना क्रूब बस्बई म भ्रव्य ग्रभिन दन क्यि गया । टनो ज्लो क ≈र संद्वर तथा मच सत्राया गया जा। विशिष्ट गण्यमान्त व्यक्तिया स्र यदीरदल के सैनिको व सादर द्रश्विवादन क साथ द्याचण्य मोमासक जाको सचपर त जाया गया। मच पर मुन्य पक्ति म श्रीप० बुधिष्ठिर मीमानक नी बलर'म जलड एव श्री प्रा० वद ०यास थे। मच पर उप स्थित थे भाग प्रतिनिधि सभा गुजरात महाराष्ट्र धीर वस्वई के प्रधान क्रमश श्री सगलसैन चोपडा श्री दौलतरास चड्ढा भीर श्री भोकार नाथ भाय धाचाय सोमदेव जी शास्त्री प्रादि महानुभाव थे । धार्यसमाज सान्ता कुज के प्रधान श्री देवेन्द्र करूर ने श्री बलाराम जालंड की अध्यक्षता में अभिनन्दन समारोह के प्रारम्भ होने की घोषणा की। इस समाज के यशस्वा महामत्री कैप्टन देवरत्न साम न जनसमुदाय का साम समाज के द्वारा किये का रह कार्यों का तथा गतिविधियो का परिचय दिया। बन्होन श्राबल राम जासब की नस्त्रिम कहा द्वमार लोकसभा ग्रध्या भारतका संस्कृति धौर सभ्यता की जननी दन भाषा संस्कृत के महान पुजारा है एम भादशैं व्यक्ति द्वारा इस समारोह की ब्रध्यक्षता करना गोरव का विषय है। प्राचाय साम देव ने श्री प० यूजिव्डिंग् मीमासक की तपस्या प्रकाण्ड पाण्डित्य का चाराप्रवाह भाषण मे जब परिचय दिया समागार रोमाचित होकर करतल व्वति कर उठा। श्री बन राम जासाद नेपज्य पण्डित जी की

श्रानिनन्दन पत्र मेंट किया। इस भवसर पर एक स्वर्णिम टाभी भी पण्डित जी को भेर की गयो । इस पर लिखा या-जीवन पयन्त वैदिक धनुसन्धान

श्रीर श्राय नगत् की सेवाय समर्पित जीवन के प्रति कृत्रकता के प्रतीक स्वरूप पण्डित युचि डिंग्र मीमासक को उनके ग्राभिनन्दन समारोह पर ५/६००० रुपये की बैली सहित सादर भेट--१६ ५ मर।

७५००० इपय की यैली भट करने के पश्चात् पुज्य पण्डित जी की धर्मपत्नी श्रीयती बशोदा को भी शाल एव पूज्यमालाश्री से सम्मानित किया गया।

श्री बलराम जाखड ने अपने अध्य-क्षीय भाषमा मे कहा-श्री कैप्टिन प्रार्थ न मेरा परिचय देते हुए मुभे सस्कृत का पूजारी कहा। संस्कृत तो हर भारतीय की मा है। मा का पुजारी होना हमारी संस्कृति है जो धपनी मा की सेवा नहीं करता वह कृतध्न है। मैं सस्कृत की सेवा नहीं कर रहा भपनी मा की सेवा करताहू। उन्हाने भागे कहा मैंने प्रधानमती श्री राजीव वाधी को लिखा है—कि इस दश की ग्रलण्डताको बनाये रसने के लिए मस्कृत नावा के पठन को समस्त भार-नीय विद्यार्थियों के लिए ग्रनिकाय घोषित कर दिया जाए । यदि श्रनिवास न किया अ। सके तो सस्कृत पढने वाल विद्यार्थियो को उच्च शिलाम ब्रध्ययन के लिए प्रवेग हतु १० सक स्रतिरिक्त दिये जाएँ। श्री जाखड ने भायसमाज साम्ताक्र्ज के ग्रविकारियो का इस प्रकार कः समारोह ग्रामोजित करने पर तथा सस्कृत के प्रचा-रक नपस्त्रियों के सम्मान करने की मुक्त-कठसे प्रशासाकी।

सम्पादक धार्यमन्त्रेण

श्रार्य केन्द्रीय सभा दिल्ली का निर्वाचन १८ श्रमस्त ११८४ को

बार्य के-ीय सभा दिल्ली राज्य की धन्तरगसभाकी एक बैठक शनिवार ६ जुलाई को सभाकायालय व्युमान रोट में हुई। इस बैठक में निराय लिया गया कि भागामी वष १६८५-८६ के लिए सह-युक्त सदस्यो का निर्वाचन २८ जुलाई १९ = ५ को तथा वर्षिक श्रधिवेशन एव निवासिन १८ घगस्त १६८५ को किया जाये । विल्ली की सभी सम्बन्धित ग्रार्थ- समाजो क प्रधिकारियों से निवेदन है कि वे सम्बद्धना शुल्क ३० रुपये तका दो प्रतिनिधियों का सदस्यता शुरुक समा कार्यालय में प्रतिनिधियों के नाम सहित शीन्न भिजवाये।

> भवदीय सर्वदेव महायंत्री

भजनोपदेशक संगीत प्रशिच्नग शिविर १४ से २८ जुलाई. ११८५ तक

धार्यजनत् के सुविस्यात सगीताचार्य प॰ पन्नासाल जी पीयूष' तथा प॰ धर्मि-विनव जी भारवी द्वारा एक 'सबने प-देशक संगीत प्रशिल्ल शिविर" का सायी-बन हो रहा है। इसम शास्त्रीय सगीत के साथ स्वर्गत प० बस्तीराम जी, चौ० तेजसिंह जी कुवर सुबानाल जी धार्य मुसाफिर एव कविरत्न प० प्रकाशकन्द्र जी की शैलियो व प्राथनिक सरल सगीतो का भी प्रशिक्षण दिया जायेगा। निवास व मोजन नि शुल्क रहगा।

ऐसा बायोजन प्रथम बार दिल्ली मे हो रहा है। बार्यसमाज के भजनोपदेशक

श्रायंसमाज सान्ताऋज द्वारा चिकित्सा कैम्प का श्रायाजन

ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। महर्षि दयानन्द के इस पादेश का पालन करने के लिए आये समाज सान्ताकुज न रविवार दिनाक २० बर्पस १६=५ बाय मेडिकस रिलीफ मिशन के तत्वाववान में नि शुस्क नेत्र विकित्सा एव ब्राप्नेशन कैम्प का बायो-

शिविर का उद्घाटन महाराष्ट्र के स्वास्थ्य एव परिवार कल्याण राज्य मत्री डा॰ भ्रमिल वरहाडे ने किया । भार्य समाज के योग केन्द्र को वातानुकृतित भाप्रेशन वियेटर मे परिवर्तित किया जिसका उद्वाटन भी मत्री महोदय ने

सावंदेशिक बार्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान श्री गजानन्द जी बार्य मुख्य श्रतिथि के रूप में उपस्थित थे।

इस सवसार पर श्री सत्थप्रकाश जी द्मार्यं ने अपने व्यवसायिक प्रतिप्ठान इक-नामिक ट्रान्सपार्ट धार्गेना ब्रेशन की धोर से भाय मेडिकल रिलीफ मि।न को इत्य भग पौने दो लाख की एक नवीन रुग्गाबा-हिका वान स्थम्प भेंड की।

राज्य सत्री श्री डा० ग्रनिल वरहाडे ने रुग्णवाहिका का फीला काटकर जुते उतारे भौर रिलीफ मिशन के सस्थापक स्वामी रामानन्द की शास्त्री के चरण खकर उसकी चाबी उन्हें सीपी।

इस कैम्प में लगभग ४०० रोगियों के नेत्रों का परीक्षण किया गया एवं लयभग ५० रोगियो की आसी का आप्रेशन किया गया। एस गरीय व्यक्तियो की ब्रास्तों का बाप्रेशन हुआ को इलाज का व्यय तो दर दो समय अपना पट भी नहीं भर सकते

बाप्रेशन के पश्चात् रोगी एक सप्ताह धार्वसमाज अवन वें ही रहे, वहां उनकी देखनान की गई। उनके मोजन व दवाई की व्यवस्था एव स्थस्य होने पर उन्हें चरमा बादिका वितरन नि चूल्क किया नवा 🖆 • वरहारे ने कहा मैं बार्यसमाज के इस कार्य से बहुत प्रभावित हूं । सार्य समाज विद इस प्रकार के परोपकार का

तथा धर्मप्रचार मे रुचि रखने वाले सम्पर्क करें। सम्पर्क व पत्रव्यवहार का ाहा श्रीमहयानन्व बेद विद्यालय १२६ गौतमनगर नई विल्ली-४६

दानी सञ्चनी व समाजो से निवेदन है, कि भाषिक सहयोग तथा साथ रामग्री (बाटा चावस, दास, दूब, भी भावि प्रदान कर पुष्य के भागी बने।

चित्रे एक

स्वामी दीक्षानस्य सरस्वती धाषाय हरिदेव

स्थान श्रीमट्यानम्ड वेद विद्यालय, गौतमनगर-नई दिल्ली।

कार्यं जन सामारण के लिए करला है तो मैं सरकार की स्रोर से पूर्ण सहायता करने को तैयार है। श्री सत्यप्रकाश जी के भाग्रह पर उन्होंने कहा मैं भ्रस्पताल स्रोजन के लिए बम्बई उपनगर म सरकार की बोरसे जमीन भी देने को तैयार हैं। मृग्य प्रतिथि श्री गजानन्द जी पार्य

ने कहा इस शिविर को देखकर मुक्ते आर्थ समाज ने प्रारम्भिक इतिहास की बाद बा रही है। जब इसने जन सामारण की नि स्वाय भावना से सेवा कर सार्थ नमाज को विकसित किया या । सायममाज साताकन्ज ने हमे प्राज नवीन दिसा का बोध कराया है।

श्री सस्यप्रकाश जी आय ने कहा यदि सरकार हमे जमीन देती है तो हम दो करोड़ की लागत से ग्रस्पताल के निर्माख हेतु विल्कुल तैयार हैं।

माय मैडिकल रिलीफ मिशन के सस्या-पकस्वामी रामानन्द जीने **शवके वक्तश्य** मे कहा कैंटन देवरन ग्राय के श्रयक प्रयास से इस नियान की स्थापना हुई सीर भौर हमने पिछल एक वर्ष मे पूरे महा-राष्ट्र मे लगभग ५०० धापरेशन धीर ३०००० रोगियों का नि शुरुक परीक्षण किया।

समारोह का सयोजन महामत्री कैंप्टिन देवरत्न धार्य ने किया । प्रधान श्री देवेन्द्र जी कपुर ने लाक्टरो एव नखीं जिनकी नि शुरूक सेवा प्राप्त हुई एवं कार्यकर्तामो का, प्रतिवियो का धन्यवाद किया । **भवदी ब**

देवरत्न ग्राय महामत्री श्रार्यसमाज हनुमान् रोड

द्वारा वेदप्रवचन

धार्यसमाज हनुमान् रोड नई दिल्सी द्वारा १ जीलाई से ६ जीलाई तक श्री प० श्यामसुन्दर स्नातक की वेदकथा सम्पन्न हुई। इस प्रवसर पर श्री प० गुलावसिंह राचव के मधुर भजन भी हुए। यह ग्रायो-जन बाबा जरकसिंह रोड पर खुले स्थान पर जन सामारण को वैविक सन्देश देने के किए किया गया वा, जो सफस रहा।

मन्त्री, बैरातीकाच माटिका

प्राम प्रचार

स्वामी स्वक्यानन्य सरस्वती स्विधको स्वाय १ वर्षे दे १० वर्षे तक साम
स्वीवय (पानवइ) में श्री कम्मेयावाल
सार्ये के निवास स्वान पर यज्ञ रखा वया
यज्ञ के पत्वादा पानवार में श्री कम्मेयावाल
सार्ये के निवास स्वान पर यज्ञ रखा वया
यज्ञ के पत्वादा पानवार में श्री
स्वामवीर पावय हारा भवनोगरेका रहा।
सिक्समें साम के नर-नारियों ने बारी
सक्समें साम के नर-नारियों ने बारी
सक्समें साम किया। और निवेदन किया
कि हमारे वहाँ कम से कम एक स्वाह स्व का सार्येकम रक्तने का स्वष्ट करें। हमारे
बहाँ पर रहें सार्यों का स्विक प्रचार रहा।
है को कि पैसों के प्रयोगन देकर ईसारिस

का प्रचार करते रहते हैं। और वर्ष परिवर्तन कर रहे हैं। हम चाहते हैं कि हमारे
कर पर वर्ष हैं। हम चाहते हैं कि हमारे
कर्म के प्रचार-अदार आरी रहें। इस
कार्यक्रम के बनाने के लिए भी रामप्रताप
ची का प्रमत्त रहा। भी रामप्रताप
ची का प्रमत्त रहा। भी रामप्रताप
ची का प्रमत्त रहा। ही रामप्रताप
ची का प्रमत्त कर ले आते हैं चीर
हरियम वस्तियों में कार्यक्रम निश्चित
करके समा का पूर्ण सह्योग चाहते हैं। भी
रामप्रताप ची का यह सरहनीय कार्य है।
हरियर इनका प्ररोक रिट से कल्याक
करें ताकि सरक्ता प्राप्त करते रहें।

स्वरूपानन्द



गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्रार

निम्न विभाषों में जुलाई १६८५ से प्रवेश प्रारम्भ हैं—

(१) विद्याविनोद (इण्टरमीडिएट) प्रवेसार्व बोम्बता—

१ (श्वासिकारी (पुण्डूल कानही) २ हार्षस्त्रम शस्क्रत वहित ३ पूर्व मध्यमा प्रवेषी वहित (बाररागृक्षी) ४ निकारव (पजाब मूनिबहिटी) प्रयेषी ने मैट्रिक वहित १ श्वास (पुण्डूल महाविवा-सम क्वासापूर)।

(२) शलकार (बी॰ए॰)

श्रवेकार्य योग्यता —
१ विवायिगोव (गुक्कुल कांगती)
२ इण्टरमोदिएट संस्कृत सहित १ उत्तर
प्राच्यमा पश्रेजी चहित वारावसी) ४
विकारव (पजाब सूनीविदिटो) प्रयेजी में
इण्टरसीविएट सहित

(३) बी॰एस-सी॰ (प्रवस एव डितीय वर्ष) बुद १ कैमिस्ट्री, बौटनी, जूसीजी।

ग्रुप २ कैमिस्ट्री, फिजिक्स, गश्चित । श्रवेक्सार्व बोव्यता—

इन्टरमीडिएट या समकक विज्ञान बहित।

(४) एम० ए०

वैदिक साहित्य २ नस्कृत साहित्य ३ दर्शन शास्त्र ४ प्राचीन मारतीय इति-इति सस्कृति तथा पुरातस्त्र ४ हिन्दी साहित्य ६ मनीविज्ञान ७ प्रग्नेश्वी ८. गिशत ।

प्रवेशार्थं बोष्यता —

१ धलकार (गृरकुल कामकी) २, नौ०एस-सी० ३ बी०ए० ४ बी० काम० १ निवामास्कर ६ खास्त्री ७ धाचार्य द साहित्यरत्न।

नोट—गणिक तथा मनोविकान विषय में बी०एस—सी० परीका उत्तीर्ण छात्रों को एम०एस०सी० की उपाचि प्रदान की जाती है।

(४) एम० एस-सी० (शाहकोबायसौजी) प्रवेझार्चवीम्बता—

बी०एस-सी० वाससीकी मुप (बी० एस-सी० में न्यूनसम् ५० प्रतिशत सकर्मे छत्तीकों)।

(६) पी० एव० डी०

वेद, सस्कृत, हिन्दी, प्राचीन घार-तीय हतिहास सस्कृति तथा पुरातस्व, भारतीय दर्शन, सनोविज्ञान एव प्रश्नेची विक्यों में पी-एच०डी० की व्यवस्वा है। रिबस्ट्रोजन फीस १० रपये है। प्रवेश फार्स तथा नियमावसी शुल्क डाक व्यय सहित ६ रुपये है।

धन्य विशेषताएँ--

१ सुयोग्य शिक्षक तथा सुसज्जित प्रयोगकालाए पुस्तकालय, एन सी०सी॰, एन०एस०एम०, वीडा भ्रादि का उत्तम प्रयन्थ।

(२) निर्धन एव योग्य छात्रों को शुल्क मुक्ति तथा छात्रवृत्ति भी दी बाती है।

हिप्पसी—

विश्वविद्यालय धनुदान धायोग की बारा ३ के प्रन्तमंत गुरुकुल कामडी विश्व-विद्यालय भारत सरकार से माध्यना प्राप्त है तबा उपाधिया सरकार ने प्राय सभी विश्वविद्यालयो द्वारा मान्य है।

प्रवेश पत्र तथा पाटिशिष कार्यालय से प्राप्त करे। प्रवेश की धन्तिम तिथि ७-६-१६६५ है।

(रामप्रसाद वेदालकार) (सुरेशचन्द्र स्थानी)





रजि० नं० डी (सी०) ७४६

धार्यसमा व दीवान हास के जलाक्यो समारोह वर्ष पर विशेष धारोजन मानसिक तथा शारीरिक लाभ उठाइयं हृदय रोग रक्तचाप (अलड प्रेशर), मानसिक तनाव दमा, पूटने, पिडली, कमर, वर्षन आदि के दर्व से छुटकारे हेतु

योग साधना शिविर

विनाक--१० ७-८॥ से ४१-७ ८४ योगीराज स्वामी शक्तीश्वरानन्द सरस्वती

द्वारा

स्थान--ग्रायंसमाज दीवान हाल समय प्रात भू बजकर २५ मिनट पर (समय का विशेष ज्यान रखें) (लगभग एक घण्टा)

निवेदक

सुर्य देव

ग्रायेसमाज दीवान हाल दिल्ली ६

मूनवन्द नृता

दिल्ली बार्य प्रतिनिधि सभा के समस्त अधिकारी एव कर्मवारी आये प्रतिनिधि समा हरियाला के गला भी नवाबसिंह जी के सकस्मात देहाबसान पर गहरा दू स एव शोक व्यक्त करते हैं। श्री नवाबसिंह जो ने सभा को को सहयोग भीर . सेवाएँ सपनी वीं वह कभी भूलाई नहीं जा सकती । परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह दिवबत घाल्मा को सदगति प्रदान करे तथा उनके विवीग में सतप्त दुक्की परिवार को इस मदान् दुक्क एव विद्योग को सहने की सामध्य एवं शक्ति प्रदान करे। हा । धववान प्रार्थ महामन्त्री

शोक-प्रस्ताव

निर्वाचन

बार्यसमाज होज बास नई दिल्ली-१६ का चुनाव नवीन वथ(१६८५, १६८६) के सिए इस प्रकार हुया है। प्रवान-श्री बनवारी काल बुप्ता उपप्रवान -- नरेन्द्र विद्यावाचस्पत्ति

,, — साजपतराव मदान मन्त्रिकी - श्रीमती सीता देवी उपमन्त्रिकी ---क्षकि गय्ता

— राज तनेवा कीवाध्यक्ष-धी वनवीर बी

> जीता हेजी मन्त्रिकी, प्रार्थसमात्र हीज सास

एद निवाली नागर बाता की सीकर। र ्रान्त है तया जह प्रकृतिस् कारा समिश्रत **व स्वस्थ** जन्म है तया जह प्रकृतिस् कारा समिश्रत **व स्वस्थ** जन्मण है। क्षिकण्याई ीठ प्रावला हाउ वहुडा अपवल व कल्य समित्रक अपी अस्त्रितों से अस्य गया एवं की एका

aid of Part, unplicate

ist alleging than the

लबंध से महत्वास्त्र ।

जाई वाउट एक अयत सम्माी शक्कतिक दे**म** एम डी एव है इसमें कोई रातायिन प्याय तहा है। एम की एक शिकाकाई पाऊडर का साम से नियमित प्रयोग की सिये।

महाशियां ही हरी (प्रा॰) लि॰ 9 44 ब्राइस्ट्रियल एरिया क्लीते जनस जर्म विक्ली 110015 **TIT 539609 537987 537341**

लिए स्वास्थ्य काँगडी फार्मेसी.

हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

शासा कार्यालय-६३, गली राजा केवारनाथ, पोनः २६१८३८ चावडो बाजार, दिल्लो ६





यूरूप‴क प्रति १०पैसे वय १ सक ३५/

रविवार, २१ जुलाई १६=५

मुच्टि सबत् ११७२१४१०८६

वावए २०४२

वयामन्वाव्य--- १६१

त्यागमूर्ति आचार्य नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ

—सच्चिदानन्द शास्त्री

सीघे सादे, मोटे कुनी घोती मे, गैरी में चप्पल, नगेमिन से जीवन-यापन करने वाले व्यक्तित्य को के कर कोई यह नहीं जान सकता था कि यह कोई बिहान व्यक्ति हैं। करन्तु अमरी आवरण के नीचे विद्याल पाण्डस्थ मरा हुवा था। कर्तन, -माहिस्स, महाभारत मस्तिक्क पर बावे हुए थे।

महाराष्ट्रियन बाह्याण बच्चन में माता पिता की खन्नश्राया से दूर पर्जाब के लाहीर में सस्कृत का गहन श्राध्ययन कर शास्त्री परीक्षा पास की. अग्रेजी में भी वे निष्णात थे।

आर्यसमाज और न्याभी दयानन्द का क्यापक प्रभाव उनके मन मस्तिक पर छा चुता था। धत लाहौर से शिक्षा पाकर उत्तर मण्दत हरिद्वार था गये। आर्यसमाज की विद्वन्यव्यक्ती हरिद्वार क्षेत्र में जम जुकी थी। घाप भी उसी में सम्मि-लित हो गए। स्वामी अद्धानन्द ने गुज्कुन कौगड़ी की स्थापना गगा के पार कौगड़ी की यह सब विद्वान् भी वही स्क्ष्मे।

परन्तु कुछ सैद्धान्तिक तथा व्यान् वहार्षिक मतयेदों के कारण स्वामी दर्शनान द जी के साथ घावार्य जी की घायये और ज्वानापुर में पुरकुल की स्वापना की गई। प० नरदेव बास्त्री भी म० वि० घा गवे और जीवन पर्य न युरकुल ज्वालापुर महा-विद्यालय की नि खुक सेवा की। परिगामन गरुकुन के घावार्य जी प्यर्थिक नि से वे। प० जवा-कुण्याल नेहक घालके स्वित्त्व से कुण्याल नेहक घालके स्वित्त्व से ही स्वर्णं जयम्ती पर महाविद्यालय भवारे।

त्यानमूर्ति—अपने पास कुछ शी है वह सब दूपरों का है। एक बार एक फिखान बाह में ठिठरता खाया। आपने प्याहें, गहा सभी कुछ दे दिया। अपने खाप आग तापकर रात काटते थे। कोई व्यक्ति कुटिया पर संस्ताती हाथ नो जा ही नहीं सकता था।

सामाजिक जीवन में धार्यसमाज से वथ हुए थे। लेख िलने के घनी थे। सकरो लेख द्वायमित्र व विभिन्न पत्रिकाधों में सुरक्षित हैं।

गीता - विमर्ज ग्रात्मा रोचन ञ्चबोध नीर्थ श्र ि सनेक पुस्तकें भी लिखी। लेकिन वास गरकुल ही रहता था। सैकी 'बद्यार्थी सदा ही उनसे प्ररशा पाना रहा उनमे एक मैं लेखक भी हा जीवन मे न जाने कितनी घटनाए नती हैं पर कुछ स्मरगीय होनी है हैदराबाद का भार्य सत्याग्र रहा था। धच्छे धच्छे कावमी कण्यम से त्याग-पत्र देकर सत्याग्रन मे भाग ले रहे थे। काग्रेस से निकाले जाएगे इसकी उन्हें चिन्तान भी। राजी भी सत्या ग्रह मे जाना तो 🛪 ्ते थे पर काग्रम की धनुमति पर। यत ग्रापने म० गाधी को स्वीकृति के लिए पत्र मेंजा। बह सचना जब समाचार पत्रो मे छपीती बढीले देमची। परन्तु भापने इसकी परवाह नहीं की । बाद मे ग्राप हैदराबाद की जेली का निरी-क्षए करने गये।

राजनीति के परिश्रेक्ष्य मे सामार्थकी का राजनीतिक नीवन देहराहून क्षेत्र ही रहा। वहीं से सदा कारा के बन्दी बनते रहे। केहराहून में वनस्पति भवन के श्रद्धेय स्व० प० अभरताथ वैद्य का साम्मिध्य दोनों में अन्तर्समय तक प्रगाद रहा।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद विशिष्ट बनो वे आन्त्राय की को उ० प्र० विवानक्षम के लिए प्ररचार्थी बनाया और के क्षिण्यक हो भी गये। यर विवायक निवास थे न रहकर काय प्रतिनिधि सभा उ० प्र० भवन के एक कश्च में पाँच वर्ष बिला दिये। शाव ही गोजन घादि का प्रवन्ध उनके शिष्य प० गोनालद्स जी शास्त्री सम्पादक प्रायंभित्र के ही यहाँ रहता या। जो पेसा मिला उसे जसने उनके लिए व्यय किया था उसे वापस कर दिया। लोग हैरान थे।

एक बार गो रक्षा पर एक भा गण छापकर मभा में विनरित कर दिया बनी कानाफूसी हुई। परन्तु राजाँस स्वान का नाम कर कोई खनाब तलब नहीं किया। यह उनके व्य वित्त की निवानी थी। यलत कार्य के लिए कभी भी किसी प्रधिकारी के पास कभी नहीं गये।

अगने चुनाव के समय पुन म्राप से प० महावीर त्यापी बादि ने खड़े होने हेतु प्रार्थना की। म्रापने -पघट कह दिया। क्या मुर्भ कनकर से कान्त गो बनाते हैं। अब मैं ऊचे पर बैठकर सब की डौटता हू। तब सब मुमे डौट हैं। बस सब बाज स्वाया मुमे डहर प्रशासी नहीं वने।

साबारण सा व्यक्ति पत्र लिखे,

उसका उत्तर ध्रवस्य मिलेगा। एक भार बीमार हो गये। ध्रवसार में छुप गया कि कह चुक हैंडलाल पर हैं। बडा सरकारी स्तर पर कुला मबा। दिल्ली से मनीमण भी महा विद्यालय प्रकृषे। जब बस्तु स्थिति का ज्ञान हुमा कि सुस्त हडतील नहीं दस्त पेविद्य से बीमार हैं तब वाता-वरण खाला हुमा।

इस प्रकार दक्षिण के बाह्यण ने उत्तर भारत को कार्य क्षेत्र बनाकर जीवन का पटाक्षप किया।

वृद्धावस्था आहे बारीर को विवा हुई। एक दिन वह अपने आस्मीय प०नम्दिकशोर शास्त्री से बोले — देका स्वामी ग्रानस्त्र प्रकास की प्रयाण वेला पर एक वेण्ड बाला था। मेरी विदाई वेला पर दो वैण्ड करना। प्राक्षित वह ममस भी बाया। सारे जीवन वा निर्मोही त्यामी नपस्त्री सन्त भो चलते को त्यार। जैसे ही पूर पचपुरी में स्वयं हुई स्कूल कालिज बन्द कर प्रिय ग्रावार्थ को चले प्रनिम्म विदा देने चिता की कर प्रशाम किया।

योगेदवर श्रीकृष्ण विदेशिक्षांक

आपकी यव पर = तितम्बर को सार्यस-त्रेय का शोधपुण नजीन सामग्री है मप्पूर एक सारवक नियोगक प्रकाशित किया जा रहा है। निससे श्रीकृत्या के जीवन दशन मात-थोपर विशिष्ट सामग्री लेखक महानुमाशो से प्रशेलित हैं। विद्वान लेखक महानुमाशो से क्येलित हैं। विद्वान केश्वर प्रकाशों

> सम्पाद १६ हनुमान् रोड

सत्संग वाटिका

उपरिक्षित्वत वेदमन्त्र मे परमपिता परमेदवर के दिल्य गुरा कार्य तथा प्रभु-मक्तो को परमपद-प्राप्ति के विषय से वर्णन है।

स नो बन्चु— जड चेतन ससार का एकमात्र प्रविपति हुम सबी का सर्वप्रथम बन्धु है। 'स सस्कृत भाषा का एकवच-मान्त पुल्लिङ्ग सर्वनाम-पद है, जिससे स्पब्ट है कि ईश्वर एक ही है। 'न पद बहुवचनान्त है, जो जीवात्माधी के लिए यहा प्रयुक्त है भ्रमीत् उस एक सर्वाचार पिता की हम अनेक अमृत सन्तानें है। "हम सब एक पिता के पूत यह अव्य अञ्जलभावना प्रथम पदत्रयो मे कितने कौ शक्त से भ्रमिञ्यक्त की गई है। पार-स्परिक राग-द्वेषान्ति मे असता हुमा यह मानव-समुदाय यदि इस सावंभीम वर्ग के मर्म को समक पाला तो क्या गृहकलह, वर राष्ट्र-कोटिल्य एव विश्व-सवर्ष की श्रिशापिनी विभीविका हमें सनस्त कर पाली ? समवत कदापि नहीं?

महाजारतीय कीरव पाण्डको को विषय प्रवास के प्रवास के प्रवास कि महावसी पाण्डक तथा धजुराब कर्या एक ही माता के पुत्र हैं तो तथ पाण्डकों है, कीरवपकाराती महावीर करा प्रवास प्रवास प्रवास प्रवास प्रवास के विषय वेता है।

बन्धुः-द्वितीय प्रत्यन्त मर्मस्पर्शी भाव इस मन्त्र-भाग मे निहित है कि वह अवत् पिता सब से पहल हमारे समक्ष भ्रमना कल्याणमय बन्धु स्वरूप ही प्रकट करता है, जिससे हम उस गम्बीर प्रेम-सावर में सानन्द धवगाहुन कर उस मञ्जू-मूर्ति के निरातक हो दर्धन कर सकें। कोई भी दुवस जन घपने प्रेमास्पद से कभी भयभीत नही होता। यत निभयता के लिए प्रीति-भाव का प्रदर्शन घरयन्त घाव-श्यक है। सस्ति के करा-कण मे उसकी स्निग्ध बास्सल्यमयी खाया प्रतिबिम्बत हो रही है। अक्त नहीं अपितु भगवान् धपनास्तह-सौरभ लुटाने के लिए व्याकुल से दीख पडते हैं। अन्य-तम की विरन्तन प्रम-विवासा के शान्त्यर्थ वह स्वाति का धनस्याम धमुतवर्षिणी धविरस घाराएँ बहारहाहै। चतन ही नही, जब प्रकृति भी उसके ही धनस्त प्यार से बाज विविध मोहक रूपो में बलकृत होती हुई सबीव बी प्रतीत हो रही है। उसका प्रथम सुन्दर

परम पद की प्राप्ति

वेदाचार्या सावित्रो देवी शर्मा

स न बन्धुर्जनिता स विधाता घामानि वेद भुवनानि विश्वा । यत्र देवा ग्रमृतमानशानास्तुतीये घामन्नरुयैरयन्त ॥



स्वरूप है निश्चल बन्धुना की ग्रहेतुकी कृपा।

प्रभूके उपासको मे भी मक्ति के पलस्वरूप विश्वप्रेम के रूप मे (यही गुण) प्रकट होता है। सन्तो का मातृहृदय चेतन मानव-सीमामो का मतिक्रमस्। कर भाव-विश्वल हो पुकार उठता है – 'नित्रस्याह बक्षवा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । 'रवु-वश के पञ्चम सर्ग में कवि-कुल-कमल-दिवाकर विश्वकवि कालिदास ने महाराज रघु के भावप्रवस्त हुवस मे विश्ववन्धुस्व का कैसा अनुपम दर्शन किया है। ब्रह्म-चारी कौत्स महर्षि वरतन्तु के प्राथम से भूपति रच् की राजधानी साकेत मे ण्यारे। सम्बद्ध सल्कार के समन्तर रघुराज ने द्राध्रमवासियो को कुशस पूछी । 'सानन्दा गृद्धवरा सकुशला बाधमकासिन वन्य-वसुबु झाव्यमवासिवु किञ्चित् सक्टुटस्तु नैवापवित पत्रनतातरवर्व विम्लाबास्तु न, माधमस्य जनाशय तु वतते बारिपुखं ?' समस्य संसार के प्रति ऐसा सीकोत्तर उदारभाव जावृत होना ही प्रभु-मामित मक्तो का प्रथम लक्षण है।

'जनिता" वह प्यारा प्रभु प्रकारण बन्ध् प्रतिशयकक्णा-प्रेम से प्रेरित होकर इस सुष्टि का 'जनिता ह प्रयांत् उत्पादक यारचियताके रूप ने प्रकट होता है। स्पष्ट है कि किसी भी रचनात्मक कार्य तथा व्यवहार के जिए प्रीतिपुरस्सरता प्रथमत अपेक्षित है। यदि वन्युता हुए विनाभी कोई 'वनिता' होने का निष्फल प्रयास करेवा तो व्यस-कार्य में ही निपृश् हो सकेगा, सुन्दर निर्माण मे नही। उसमे उसका किसी प्रकार का सहयोग न होगा। हमारे महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सातवें नियम में लीकिक व्यवहारों का ज्ञान करते हुए लिखा-"सब से प्रीतिपूर्वक वर्मानुसार बचायोग्य व्यवहार करना षाहिए।"

कोई भी निर्माता सहदयतापूर्ण एव विष्वकल्याच भावनामो से प्रेरित हुए बिना बीवन क्षेत्र वे सफल न हो सकेवा।

ससार में 'जनिता' रूप में सर्वोत्कृष्ट उदाहरण ममताबयी मातृशस्ति का है थो निष्काम भाव से प्रशीषिक बारसस्य हुव्य वे पारण करती हुई शाचीवन संतरित का निर्माख ही प्रथमा सक्य सबकती है। शिष्यवस्ता गुरु एव धानायंत्रम हो विधारु एव झानायंत्रम हो विधार एव झानायंत्र मित्रेटिय वार्मिक स्वाप्त के स्वा

जहाँ ऐसी निष्काम विश्वप्रीति न होगी, वहाँ उत्तम तति, सवाचारी, किस्ती आज, परिज्वानु नामरिको का निर्माण नहीं सहिता। ऐसा तमाज परिष्क क्यांति हैं हो होकर विनाध को प्राप्त होगा खेश कि साज क्यांग्युकी राष-अ-स्वा ने मक्कर परिणामों से स्पष्ट हैं। धत वैदिक मर्गाता गहीं है कि प्रजु के सस्य बादर्श पथ पर चलते हुए हम "वयु-पैय कुटुमकम्" का उदात कात्र प्रमास कर परिणा कर परिण

'विवाता' सर्वेहितकारी प्रभूजगद-बन्युहोकर बपनी जनित्री शक्ति प्रकट करता है, फिर स्वरवित पदार्थों का वया-तोग्य विभान करने से हमारा 'विभाता' कहसाता है। समुनिष विधान ही प्रत्येक बस्तुको मर्यादित करता है। ग्रन्यशा श्रव्यवस्था एव अनीचित्य पदार्थ का विनाध कर देता है। किसना वैज्ञानिक वर्र्शन है। जो जनिता है वही योग्य विचाता हो सकता है। अत अनिता (निर्माता) को विष्मन हेतु पूर्ण स्वतन्त्रता होनी चाहिए क्योंकि यदि बासको के व्यनिता माता-पिता हो तथा नियम विवासा प्रतिवासी (पड़ोसी) हो तो परि-स्थिति सभाले नहीं सभलेगी। खात्रों के 'जनिता' या ज्ञान-जन्मवाता धाषार्य हो श्रीर उनके ध्रध्ययन, दिनवर्या, धावार धादि की सहिता बनाने बासे 'विकाता' कोई दूरस्य शिखा विभागीय अधिकारी हो तो फिर बर्तमान दुर्वतिपूर्ण प्रम्यवस्था झाप से खिपी नहीं है। विशेष विस्तार की धाव-श्यकता नहीं है। सभी विभागों ने जनिता विवाता की नेक्पूर्ण नीति के बुष्परिसाम दर्शनीय हैं देखने में 'बनिता स विवादा' कितनी बोटी बात प्रतीत होती है किन्तु इसके प्रतिकृत पाचरण ने हमारी वर्ति-विविधों को बामुस परिवर्तन कर बोर

श्रशान्ति उत्पन्न कर दी है।

"बामानि वेद पुत्रनानि विदवा" —व्हकृपासु परमेश सकत पदार्थ-विज्ञानो का
कनिता या विधाता है यद (विदवा)
समस्त (बामानि) तेवोमय (पुत्रनामि)
मुदनी को वेद, असी प्रकार जानाता
है। इस मन्त्रमान से तीन सर्थ विज्ञेव रूप से क्वितत होते हैं—१ बहु देखर सर्वेश
है, र उसकी पृष्टि आनिवानि के तेवोसय सत्या पुत्र है तेवस्थी विचाता के तेवोसय सत्या पुत्र हैं, वेदस्थी विचाता के तेवोसय सत्या पुत्रन हैं, इ सर्गाएक लोक-कोकार नदी का सर्वेशाता होने से वही हमारा ऐहिक-पारतीकिक पद्मी का सच्या नर्योकत हो सदता है, मत उसी की

' बन्न देवा समृतमानशानास्तृतीये भामन्त्रस्मीरयन्तः।"

(यत्र) जहाँ (देवा)दिव्य गुण-सम्बन्ध जितेन्द्रिय योगीजन (अमृतस्-धनाधाना।) -लोकिक आवागमन से मुक्त हो समृत्दर्य को भोगते हुए (तृत्येये बावन् अध्येरयन्त) मोल पर में रमण करते हैं।

म्पष्ट है कि दुर्लम मानव-बीवन को प्राप्त कर जो मनुष्य दिल्य पुणी का जयव करते हैं, मनदा नावा क्यां सल्य-व्यत-पावन एव न हाजवादि के देवन के परोमंदीपावना की योग्यता को बारखा करते हैं ने ही जग्म-मरण के दु बाद पावें हैं। दवीविय मन्यान्य विद्या होते हैं। दवीविय मन्यान्य विद्या होते हैं। दवीविय मन्यान्य विद्या को क्रांत्वि-वर्षी महतीय न्द्राप्त विद्या को क्रांत्वि-वर्षी महतीय न्द्राप्त विद्या होते हैं। प्रमु-पद-प्राप्ति का पब छुरे की तीक्ष्म चारा के समान वताया है सत ससुर, मानव तवा वेव-कोटियों में से यह पद देवों के ही प्राप्त

ऐसे वेवगए। जीवनमुक्त होकर सरीर त्यान के धनन्तर उस दिब्ब लोक में रमण्ड करते हैं, जिसे वेद की माथा में मुक्ति-पद कहा गवा है।

बचिव विशिव मत-मतास्तरों में मृत्यु के परवात् प्राप्त को की का अनेक प्रकार के वर्षण किया गया है किन्तु उनके वर्षणत क्षेत्र कार्य में किया गया है किन्तु उनके वर्षणत क्षेत्र व्यक्तिक घोगों से ही परिपूर्ण हैं, अस जनमें कोई विशेवता प्रतीव नहीं होगी। चर्चामं काम को वावज्योतिन सुचान्तर सिंद करने के वास मोश पद की प्राप्ति वर्षों हारा प्रतिपादित है। यहीं } ह्वस्त्र मास्त्र नेवानिक रावति है। यहीं } ह्वस्त्रमाह नैज्ञानिक रावति है।



सम्यादकीय-

पाकिस्तान का परमाणु बम-भारत चितित

जुल्फिकार अस्तो सुद्रो ने १६६५ में कहा वा प्रगर भारत न्युक्लीय बम बनाता है तो हम वास लाकर, भूखे रहकर भी अपना बम बनाय गे। ' भारत ने तो परमाण बम बनाया नही और न ही इस प्रकार का रिटकोण हो रखा किन्त पाकिस्तान तभी से परमाम कर्जा के विष्वसक उपयोग में निरन्तर आगे बढ़ा है। इस बात को सारी दनिया जान चका है। विशेषज्ञ इस सभावना से इन्कार नही करते कि पाकिस्तान परमास्य बम बनाने की तकनोक जान चुका है और शायद बम भी बना चुका है। गत वर्ष अमेरिकी प्रविकारियों ने पाक व्या-पारी को टेक्सास से इसलिए रवाना किया था कि वह अवैध रूप से प्र• इलक्टोनिक खटके [या घोड] पाकिस्तान भिजवाने के प्रयहन मे सलग्न था। सम्प्रति ये खटके किसी भी प्रकार से पाकिस्तान की प्राप्त हो गये हैं जो परमास बम के विस्फोट मे प्रयोग किये जाते हैं। सारा विश्व हैरान है कि यह लटके अमेरिका से पाकिस्तान कैसे पहुंच गये ? जब कि समेरिका पाकिस्तान के मसुबो से वाकिफ है सीर यह लापरवाही कितना बडा कहर ढा सकतो है। ये सहज ही अनुमान-गम्य है। इन इलेक्ट्रोनिक खटको के सफल परोक्षण कर लेने से यह भी स्पष्ट है कि पाकिस्तान बिना विस्फोट के बम बना रहा है हर चीज का ग्रलग-ग्रलग परीक्षण कर बम बनाना इस साजिश को भी उजागर करता है कि पाक विना बमाके शोह के दूनिया की पता न चल सके और काम हो जाये।

ब्रमेरिकी राजनीतिज्ञ जो ग्लोन ने कहा या-- मैं किसी को भुठा तो नहीं कहुगा पर पाकिस्तान जो कह रहा है उससे कही ज्यादा उसके काम बोल रहे हैं। अमेरिकी प्रतिरक्षा न्युक्लीय ग्रमिकरण को प्रस्तुत की गई विशेषज्ञों को रिपोर्ट के अनुसार अनुमान है कि पाकि स्तान इस दशक के उत्तरार्ध मे प्रतिवष ख न्यूक्लीय बम बनाने की क्षमता प्राप्त कर चुका है भीर १६६० तक तीस यूरेनियम बन बना चुकेगा। भूखे रहकर धौर वास खाकर वस बनाने की योजना श्री युट्टो ने १६७२ के युद्ध हार जाने के बाद प्रारम्भ कर दी थी। राष्ट्रपति के तुरन्त बाद इन्होंने भ्रपने वज्ञानिक बुलाकर प्रोजेक्ट ७०६ का कार्य प्रारम्म कर दिया था। इस प्रोजेक्ट के भ्रन्तगत १६७३ तक पाकिस्तान ने प्राकृतिक यूरेनियम के इधनवाला व्यवसायिक इधनवाला व्यक्तीय रियेक्टर स्थापित कर लिया था इसम कनाडा का भी सहायता ली गई थी मुद्रो ने फान से भी सौदा किया एक ऐमे व्लुरानियम पून ससा बन समझ का जिसमे प्रतिवष ३०० पोड प्लुटोनियम संशोधित ही सकता था। इतने प्लुटोनियम से ३० परमाणु बम तयार हो नकते हैं। १६७६ के समभौते के बाद फास ने इस सयत का काम बन्द कर दिया था परन्तु कुछ फाँसीसो कम्पनिया गुपचुप इस कार्यक्रम को सह-योग देती रही। पा कस्तान ने इस साम्र के ६५ प्रतिका ना नक्शा बहुत ही गोपनीनता से प्राप्त कर लिया। इसी काल मे पाकिस्तानी बम के निर्माण करने मे जी जान से जुटे डा॰ ब्रब्दुल कदीर ला हालेड की फिजिकल डायनेमिक्स रिमच लेबोरेटरी से न्यूक्लीय रियेक्टरो के उपयुक्त यूरेनियम को तैयार करने का जानकारी लेकर पाकिस्तान लौट चुके थे। पाकिस्तान मे डा॰ ग्रब्दुल को इस चोरी की महानता की उपाधि दी गयी और इस सम्मान काओ र अधिक विरस्यायी बनाने के लिए काहटा परिक्षोधन सयत्र का नाम बदल कर डा० मञ्दूल कदीर सौरिसन लेबोरेट्रीज रस दिया गया। डा॰ मन्द्रल कदीर ने ऐसी १०० यूरोपीय, कनाडियन भौर भमेरिकी फर्मों को सूची भी प्राप्त कर ली थी। ये फर्म पाकिस्तान की मावश्यक उपकररण उपलब्ध करा श्रकती थी। नकली घन्त्रों की झांड में पाकिस्तान ने उपकरण प्राप्त मी किये।

१६७६ में लीबिया की सहायता से पाकिस्तान ने नाइजर से ४०० टन यूरेनियम बक्ष्माइड लिया। फरवरी १९८४ में डा० कबीर ला ने बोबगा। कर दी कि पाकिस्तान ने यूरेनियम सवर्षन प्रक्रिया की तक्षी नीक प्राप्त कर ली है। परन्तु पाकिस्तानी राजनेता हमेशा इस बात का सब्बन करते रहें। युट्टो ने स्पन्तु सस्मरणो में लिखा था—'हम जानते है कि इलाइन और दक्षिण अभीका के पाम प्री न्युक्तीय समता है। ईमाई यहदो और हिन्दू समताओं के पाम भी यह समता है। समयवाओं तान भी यह समता है। समयवाओं तान तो के पास भी दे एन न इस्लामी ताकत ही इनसे बिज है। परनु शोझ ही यह स्थित बदनने वाली है। राष्ट्रपति जियाजल हक ने भी इसो बान को दोहराया बीन भारत इस और इसाइल के पास परमाणु हथियार है बगा पाकिस्तान के पास भी ऐसा हथियाद हो सकता है तो इससे इस्लाम की ताकन बढ सकती है।

भमेरिकी सीनेटर एलन क्रस्टन ने पिछले साल जून मे सीनेट मे प्रस्तुन एक रिपोर्ट में पाकिस्तान द्वारा परमाणु बनाने की दिशा मे की गयी प्रगति के खतरों से प्रागाह करते हुए कहा था कि इस बान के बहुत से मुद्रत हैं कि पाकिस्तान ने परमाणु बम बनाने की पूर्ण झमता विकसित कर ली है। एलन क्रस्टन ने पाच मुद्द प्रपनी रिपोर्ट में उठाये के।

१ पाकिस्तान के पास काफी न्यूक्लीय वैज्ञानिक हैं भौर न्यू-क्लीय बस बनाने में पाकिस्तान ने सभी उपरक्षण जुटा लिये हैं। कुले बाजार में उपकरण खरीदने के झनावा हालेष्ट से वह गोानीय सामग्री जुराने में सफल हो गया है। परिचम ज्यांनी भौर फाँस की कम्पनियों का माल तुर्कों के जरिए चोरी खिये पाकिस्तान पहचाया जा रहा है।

े पाकिस्तान घरवो डालर -पूक्तीय समता पर खर्षकर चुका है। लोबिया धौर सकती घरव ने भी पाकिस्तान को घायिक घरद दी है। १८८५ से घव तक घनेरिका ची ३२ घरव टालर की पाकि-स्तान को मदद दे चुका है।

ह हालेण्ड से जुराये गये नक्की के झाधार पर काहुटा के स्थापित परमायु समन्त्र जिसकी वर्तमान समता २००० से २००० ऐनरेटिव वर्क युनिटस है। इसका मतलब तीन -युक्तीय बम बनाने की समता।

४ पाकिस्तान को चीन को मदर मिलने से बलुचिस्तान के पहाडी क्षेत्र मे न्युक्तीय परीक्षास स्थल विकत्तिन कर लिया है।

पाकिस्तान को ग्रमेरिका से एक १६ लडाकू बनवषक मिल

चुके हैं। साथ ही यह भी कहा गया कि हम तीम्री दुनिया की न्युक्तीय

साथ हायह भाकहा गया कि हम तामरा दुनिया के त्युक्तिय शस्त्रों को ऊची होड़ के कगार पर खड़े हैं। जो दुनिया के विनाश में सहायक है निर्माण में नहीं।

बनरल जिया ने लन्दन से प्रकाशिन एक प्ररवी पित्रका के माथ साक्षास्त्रार में कहा— पाकिस्तान की परमाणु बम बनाने का प्रिष-कार है भीर इस बारे में कोई वंश उस पर दवाब नहीं डाल सकता। उन्होंने कहा पाकिस्तान अभीरका के इस दवाब के मानने चुटने नहीं टेकेगा कि वह परमाणु बम न बनाए। हम इस बारे में भ्रमेरिकी आग्रह मानने के निए इनलिए भी बान्य नहीं हैं बयोकि अभेरिका ने परमाणु प्रमार पिनोमान सिंगर हम्ताक्षर करने के लिए भारत इस्राइल भीर दक्षिण अफोरा पर वह वनहीं हाला।

प्रवानमन्त्री श्री राजीव गांधी ने प्राप्ती विंता प्रकट करते हुए कहा है, 'पाकित्सान हारा परमाग्युत्रम के बनाने प्रयत्नी से भारत बहुत विंतत इसलिए है क्योंकि पाकित्सान भारत पर कई बार हमले कर कुका है। धन इसले स्पष्ट है कि पाकित्सान का बम किसके खिलाफ इस्तेमाल होगा। भारत को पाकित्सान पर शोधांतिशीन्न प्रविक्त स प्रथिक धन्तर्राष्ट्रीय बवाव डलवाना चाहिए धौर पाकित्सान को हता हिए समस्त प्रयत्नों के निष्कल होने पर यदि विवेक धात्रा दे तो मैं कहुगा, इसाइल ने जैसे इराक को रोकने के लिए जबरदस्त कार्य किया या वह प्रयोग भी धाज्यमाना गलत नहीं होगा क्योंकि प्रमाग्युद्धातक को प्रक्षी दौड को बहुते ही रोक वैना मनुष्यता पर उपकार होगा।

—यशवाल सुषाञ्

यह नव्दर समार एक एसी धर्म शाला के समान है जिस में नित्यप्रति हजारों की सस्यामें नये-नये मनुष्यों का धाना आना लगा रहता है। जाने वाल इन अविशास मनुष्यों मे दो एक ही ऐसे होते हैं जिनका स्मरण दीधकाल तक बना रहता है। गुणा पूजास्थान गुसियु क अनुसार इन स्मरणाय व्यक्तियो का उनके त्याय तप सयम परोपकार रह सकप सच्चरित्रता द्यादि विशिष्ट गुर्गो के प्रघार पर ही मह व दिया जाता है। वास्तव म मनुष्यों की श्रष्ठता का ग्राधार न उना "र रिक सी दय है न घन वनव रे प्रीर न उनकी भौतिक साधन सप नता ही है क्यों कि सभी प्रकार से सम्यन्त होकर भी यदि कोई व्यक्ति चरित्र वान् नही है तो जस का जीवन ज्यय है। उसे कभी भा भ्रान्तरिक शान्ति नहीं मिलेगा। मनुष्य की प्रतिष्ठा का महत्त्व पूगा साधन उसका चरित्र है। सच्चरित्र व्यक्ति धपनी तथा धपने समाज की व स्तविक उन्नति का मूल होता है। चरित्रवान व्यक्ति का जीवन ही सर्वांग पूग तथा लौकिक और बसीकिक चन्नतियो का जनक होता है। यत मानव अ।वन को उपनत बनाने के सिए व्यक्ति का चारित्रिक विकास परम भावश्यक है। प्राय हमारे सभी ग्रन्थों में चरित्र सरकाए की ग्रावदपकता पर विशेष बल दिया गदा है । वर ०यास जी कहते है —

> वृत्त य नेन सरकाद वित्तमेति च याति च। शक्षणो वित्तत लीएगे वृत्तसस्य इतो हत । मिहाबारत उद्योग पव ३६३]

सनुष्य को परिश्रमपूत्रक अपने आवरण को रक्षा करनी चाहिए। द्माचरण का तुलना से धन काविशेष महत्त्व नहा گ । धन धाने ⁻ ने वासी बातुहै। झत उथ से हीन होने पर भी व्यक्ति भी सान नाहोता कि उद्याप स्थ के नप्ट हो अन पर ०४ वन का सबधा विनाश हो जाना है। इसा प्रकार श्रमजी में भी क्हावत है

'Wealth noth ng is lost, Health at

meth no is lost

Charac Iost everyth ng is lost

श्रदात धन के नध्न हो जाने से कोई विशेष हानि नहीं होती। स्वास्थ्य के नष्ट हो जाने का अप है स्यक्ति की कुछ हानि हो जना किन्तु दुभाग्य से याद चरित्र न रहो ब।ताहै तो फिरतो ० यक्तिका सवनागहा जता है।

प्रत्न यह उत्ता है कि यह मृख्यवान वस्तु जिसे हम चरित्र के नाम से श्रो लालमन द्यार्य निबन्ध प्रतियोगिता मे प्रथम पुरस्कार प्राप्त-

वर्तमान चारित्रिक संकटः समस्या और समाधान

महेश कुमार कौशिक प् प्रवित्त भवट देवपुरा भाषम हरिद्वार

सम्बोधित कर रहे है इसका स्वरूप क्या है ? चर वात् से इत्र प्रत्यय के मोग से चरित्र शब्द निष्यन्न होता है। इसका **•युत्पत्तिपरक श्रथ है कम का प्ररव** । इसी को सकल्प शक्ति इच्छा शक्ति ग्रम्बा Will Power के नाम से भी जाना जाता है । बाचरल या वृत्तमनुष्य का ऐज्छिक कम होता है। तभी तो विद्वानों ने इसकी रक्ता के लिए उपवेश किये हैं। ज्यास के वचन 'वृक्त यत्नेन सरक्षेत का यही माव है।

चरित्र तथा म्राचरण

दैनिक व्यवहार मे चरित्र तथा भाचरण दोनो को प्राय एक ही भव मे ग्रहणुकर लिया जाता है जब कि चरित्र •यक्ति के चिन्तन मनन का साग्यन्तर प**क्र** होता है और साक्यण उसके नाता पक्ष की नजा है। बाबरता के भी वरित्र के समान ही सदाचरण तथा दुराचरल नाम स वो प्रकार हैं। हमारे प्राचार्यों तथा सर्वों ने सदावार पर भी पर्याप्त बल दिया है। •पक्ति के नित्य प्रति के जीवन में हम उसके बाचरण को देखकर टीका टिव्यकी किया करते हैं। अनुस्मृति ने बाचार परमोजम तथा महाभारतमे सावार लन्याो वन से इसकी महत्ता का प्रति पादन होता है। आवरण वरित्र से भिन न होकर उसकी सःपक एक इकाई का काय करता है। सदावारी व्यक्ति ही चरित्रवान हो सकता है।

चरित्र तथा व्यक्तित्व

परित्र शब्द काप्रयोग मनुष्य के •यक्तित्व की भान्तरिक बनावट के भय मे होता है। चरित्र के मातगत व्यक्तिगत चरित्र सामाजिक चरित्र राजनैतिक चरित्र ०यक्तिकी थम भावना द्यादि सभी पर विचार किया जाता है। हम प्राय चरित्र नवा व्यक्तिरव को समाना वक मान उते हैं अब कि इन दोनों मे पर्याप्त ग्रतर है। चरित्र के ग्रतगत मनुष्य की स्वामाविक तथा ऐच्छिक कियामी का योग रहता है। दूसरी भ्रोर ∘यक्तित्व मे ऐन्छिक श**नै** छिक सभी प्रकार की क्रियाए सनुष्य की भावनाए उसकी बोल चाल ज्ञान प्रव्यवन तथा कार है जो इसने प्रधिक का सम्रह करता है शरीर की बनावट आदि सभी का समावेश

हो जाता है।

व्यक्तित्व के निर्माण में मनुष्य के वशानुक्रम तथा उसके परिवेश का भी सहत्त्वपूगा योगन्त होता है। स्यक्तित्व एक प्रकार से काय कारण के नियम से बघाहोताहै जब कि चरित्र के निर्माण में •यक्ति को पूरण स्वतत्रताहोती है **।** ·पन्तित्व मनोविज्ञान का विषय होता है तवा चरित्र का सम्बच नीतिशास्त्र से रहता है। जिन व्यक्तियों में इच्छाणकि ग्रमाव होताहै उनकाकोई भी वरित्र नहीं होता जबकि व्यक्तित्व ऐसे व्यक्तियो में भी अपनाकाम करता है। इच्छाशक्ति के वनी व्यक्ति प्राने सभी कमों को सुविका रित क्य से सम्पन्न करते हैं। सतकोटि के ऐसे महान व्यक्ति बद्यपि व्यक्तिस्य की उपेक्षा करते हैं तथापि उनके किए वरित्र की प्रधानतारहती हैं। हम व्यक्तित्व का साक्षात्कार कर सकते हैं किन्तु चरित्र का केवल ब्रष्ययम ही किया जासकता है।

हमारा वर्तमान चारित्रिक सकट

चरित्र जिसके सम्बन्ध में हमारे सभी म्म बार्यो नतीं तथा विद्वानी ने इतना बस दिया के बाज दुर्भाग्य से सभी क्षेत्रों ने उसका पतन हो रहा है। चरित्र निर्माण का साथक एक तत्त्व भी समाज मे कठि— नाई ने दिलाई पडता है दूसरी भीर उसका हुनन करने वाने हवारी प्रकार के प्रभाव व्यक्त को प्रबच्च्छ करने की उद्यत रत्ने हैं। भारत मात्र अपनी सूसम्यन्त चारित्रिक परम्परा की उपेक्षा करके नस धमेरिका इग्लैंड सवा जमनी की सम्यताधी का प्रधानुसरण करने मे लगा है। हम जाक्त भादि के द्वारा विवे गये समाजवाद के नारो पर लुमा रहे हैं। रूस के साम्यवाद की प्रशासा करता हुधा भारतीय श्रीमद्भा ।त के इस स्लोक को क्यो भूज जाता है --

> यावद भ्रियत वटर तावतं सत्त्व हि बेहिनाम् । ग्रविक बोऽभिमन्येत स स्तेनो दण्डमहिता।

'शरीरवारियों को सने उदर की पूर्ति तक ही पदार्थों को ग्रहण करने का श्रवि वह चोर है तथा वण्ड का समिकारी है।

भारत का शितहास बहुत श्री बीरब पूज चरिकों से धनस्यूत है। पूरे ससार को प्रकाश देने वाले जगदगुर मारत का भाज अव पतन हो रहा है। इस अवनति का मूल कारण है यहा के नागरिकों का बारिजिक पनन । बाज सभी बोर रिश्वत चोर बजारी लूटससोट, उददण्डता तथा उच्छङ्गलताका दूषित वातावरण बना हुन्ना है। स्व स्व वरित्र शिक्षेरन् पृथिक्यासवमानवा की स्थिति सदसकर आज एमा वातावरण बना हमा है कि हम दूसरों को तापरित्र की शिक्षा क्या दमे इस देश के चरित्रदान व्यक्तियो को भी यहाँ क बाताबरए मे दबास लेना भारी पड रहा है। हमारे वस शास्त्रों ने बीवन की नन्दरता का सकेत करके प्राणियो को परलोक का भय दिलाकर समाग पर लगन का जो प्रवास किया था, वह बाज निरथक प्रतीत हो रहा है। भौतिक सुखी की दौड में हमारी धम्यात्म की पूँजी विकार रही है। इसके प्रमुक्त कारण निम्नशिक्ति है ---

१ अप्ट राजनोति

हमारे चारित्रिक पतन का सब से प्रमुख कारए। माज की भ्रष्ट राजनीति है। जिस देख में कभी राम राज्य का उच्च धादर्शका वहाँ बाज वतन की चरम पराकाध्ठा है। राम राज्य की प्रसिद्ध चटना है कि एक भोबी के द्वारास ता के चरित्रको साखित कर देने माम से राम ने सीला भी का परिस्थाय कर दिया था। समध्य सीता की के पक्ष में थी। हुनुमान जैसे प्रत्यक्षकर्मी सन्वरित्र सेवक सीता के निब्कलक जीवन की घोषणा कर रहे वे। धनेक वानर जो सीताकी धनिन परीकार के समय उपस्थित वे रो गेकर उस देवी की पवित्रता की वहाई वे रहे ये किन्सु राम ने व्यष्टि की धालोचना के सामने भी समिष्टिकी परवाह नहीं की। असे ही पुरा समाज सीता की प्रशसा कर रहा वा लेकिन समाज का एक प्रग उसकी एक छोटी सी इकाई सामान्य सा घोडी व यदि सीता के बाचरण पर बाखेप करती है तो राम उसकी उपेक्षा नहीं कर सकते थे। माज स्थिति सबचा विपरीत है। व्यक्ति की बात चोड़िये प्राज समस्टिका ही कोई ठिकाना नहीं है।

राम के चरित्र रियथक इस महान् उदाहरण के समक्ष जब हम धात के शासकों की चरित्रहीनना को देखते हैं तो देख के श्रष पतन का करण स्थम स्वव्ह हो जाता है। प्रजा के चुने हुए प्रतिनिधि, इस समाज के नेता अपने सकुरिहा स्वार्थों के लिए सत्ता इचियाने की विसें, कूर्मी पाने की दौड मे स- नितक भिद्धान्ती को डके की चोट पर तिमा कि देरहे हैं। श्री राजीव गाथी द्वार नम-बदल विरोधी कानून नाने में एवं हमारे

(बेब पुष्ठ - पर)

पहले प्रचार करवाग्री-

सीमान् बापुराव जी बावमारे सब हमारे मध्य नहीं रहें। १९६४ हैं ने यह हमारे मध्य नहीं रहें। १९६४ हैं ने यह हमारे प्रकृते मिसने के सिए नगर से बाहर डी०ए० बी० कालेज पथारे। दोप-हर डा समय जा। मैंने प्रोचन करने के सिए प्राचना की। वापुराव जी ने कहा, पहले मेरा स्थायमा करवारों किर घोजन करू गा। मैंने यहुत कहा कि प्रोचन का समय है साथ पहले सोजन तो करें परन्तु बहुन मानं। मेरी पत्नी ने भी बहुत कहा वस्तु पर सार। मेरी पत्नी ने भी बहुत कहा

तव हारकर कीने कालेख में सार्थे कुवक वसाय के एक वो पुत्रकों को लिया कोर कालेख में एक वो प्राच्यापकों के खहुबीय के एक बात की माराव्या के खहुबीय के एक बात की । उन्होंने सार्थ- खिदालों पर एक वसा हु हिन्सुक ता रोप्या कालेख कालेख की वाले की सार्थ- खाड़ एक प्रभाववाची बनता में। बनते की सार्य किया। वह एक प्रभाववाची बनता के। बोलने की बीलों सन्ही थी। कुवा कर के फिर सार्थ भोचन किया। वह एक बार सबेहर पवारे। वहां भो बहु कुवा किया। वरकार काल कर किया। वह एक बार सबेहर पवारे। वहां भो बहु कुवा किया। वरकार काल कर किया को है वह कर के बाने व पीने की तोचने वाले ऐसे बन्नेवीरों पर यह समाज वितना भी वह कर बोडा है।

भूलो मत । भूलो मत ।

धार्यसमाज बाजार सीताराम में १९५२ ६० में आवशी पन पर चार स्थाल्यान वेते हुए भी प० रामचन्द्र भी बेहुनवी ने एक घटना सुनाई पी। धार्य क्षेत्रीय सभा देहसी ने ऋषि बोध पर्य मनावा। भारत के तत्कालीन मुख्य न्या-धार्मीय रिपाटण्डलि शास्त्री की को

तस्यामञ्च-

हमारे मध्य नहीं रहे। १९६४ ई० मे वह आयेंसमाज के इतिहास के लुप्त-गुप्त पृष्ठों का अनावरण

आर्यों की वीरगाथा-४

प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

सामन्त्रित किया गया उन्होंने सपने व्या-स्थान में कहा व्यक्ति दरातुत्व को सब बाते ठीक व हितकर हैं परातुष्क बात उनके ठीक पहीं। व्यक्ति दयानत्व में मुठिपुत्रा का खण्डन किया है। जब मुति में भी भगवान् है तो मुति पुत्रा से क्या दोष है। इस विषय से स्वामी विवेकानन्व का मत ठीक

यह बात सब ने सुनी । धार्यसमाज के सिद्धान्त प्रेमी सज्जनो को यह भप्रामाणिक बात पुत्री। श्रीप० रामचन्द्र वी देहसवी बञ्च पर विराजमान वे। बाप वठे धौर बपनी सुन्दर शैली मे बोले - ईरवर खब व्यापक है। यह ठीक है। वह मूर्ति ने भी है, यह सत्य है परम्तु परमास्मा का बारमा से मूर्ति में मिलाप असम्भव है। कारण परमारमा तो वहा है, बाल्मा मेरा या बापका तो मूर्ति ने भूस नही सकता, घत मूर्ति पूजा निरयंक है। जहा बात्या व पर-मारमा दोनो हैं बड़ी दोनो का मिलाप होना, धौर वह स्थान है हृदय मन्दिर। प० जी की इस निर्मीकता व सिद्धान्त रक्षा का सब पर बज्हाप्रभाव पडा। धार्यसमाजकायश फैलाने के लिए हुमे ऐसे विद्वानो का अनुकरशा करना होना। रावनेतामो की चादकारिता से तो हम बूबेगे, उमरेगे नहीं।

कत्तंव्य की पुकार विवाह पर नार

धास्त्रायं महारथी श्री प० द्यान्ति-प्रकाश का विवाह था। श्री प० बुढदेव श्री विद्याल द्वार विवाह सस्कार के लिए यए। प्रायं प्रतिनिधि श्वमा पत्राव को विवाह के शारे कायक्रम का पता था।

विवाह सस्कार हो रहा या कि की स्वामी स्वतन्त्रानम्य की का तार पहुँच गया। भी प० बुबबेव जी ने तार खोल्य पढ़ा व सुनाया। तार में तिब्बा या कि लाहोर में शास्त्राएँ है बीप्र पहुँचे। प० शान्त्रिप्ताश की यर्ली को घर पहुँचा कर बहातिक न दके। एक दम जाहोर को प्रस्थान किया। प्राक्त वहाँ शास्त्रार्थ को प्रस्थान किया। प्राक्त वहाँ शास्त्रार्थ को प्रस्थान किया। प्राक्त वहाँ शास्त्रार्थ को प्रस्थान किया। स्वाक्त वहाँ शास्त्रार्थ

पाठकवृन्द । क्या इस घटना पर विष्णपाठी की सावस्कता है। साज के सोवावादी जुम में Honey moon (विज्ञासवाजा) के फैशन से हम इस घटना का मुस्माकुन करें। धार्यस्वराज का यहो-वाहित योगीनण्ड सपुता के कारण हुया श्रीर सागे ती होता।

"मैं विकाऊ माल नही"-महर्षि दयानन्द जी के व्यक्तित्व व साध्यात्मिक प्रभाव से रावस्थान के एक तपस्यी महारमा कानुस्तम जो योगी पार्य-समाजी बने। साथ ने सार्यममा जो सो सेवाएँ भी हैं वह सदा स्विस्सरणीय रहेगी। बोचपुर के महाराजा सर प्रताप तिह बन्य प्रवेश भन्त थे। प्रयेश की उन पर ऐसी हुए। दिल्प थी कि गोगो ने जितने Tilles (निताब) एन्हें दिये, उतने किसी भी और राजा, महाराजा, नवाब व निजान को न दिये। इसका रहस्य वा प्रतायतिह का गुणगान करने वाज जानने हों होगे। मही महाराजा सर प्रतायतिह सपने को सार्यसमाजी भी कहन थे।

इन महाराजा साहब क प्रेमी भक्त वे स्वामी प्रकाशानन्द जी। उन्होने महा-राजा साहब की घोर से महात्मा कालू-राम जीको एक पत्र सिखाकि साप जोघ-पुर महाराजा साहत के साथ जुड़ जावें, **बापको बहुत बार्थिक सहायता दी जावेगी** । प्रतिमास ५०६० रुपये मिला करेंगे। महास्माक। लूराम जी ने स्रविलम्ब उत्तर दिया कि मैं विकाऊ माल नहीं। मुक्ते बन भीर ऐश्वयं नहीं चाहिए। मुक्त तो बेद का, प्रभुका और ऋषि गाक्य रता है। दु स सुस सहकर प्राजीवन प्रार्थसमाज की सेवाकरने वाले, प्रलोभनों को ठक-राने वाले सुला-साज पर लात मारने वाले पूज्य महात्मा कालूराम की का यह उदा-हरण धार्यसमाज के प्रत्येक सेवक की कर्त्तंव्य मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता रहेगा। ईश्वर करे कि हम तुच्छ स्वायों के लिए वेद मार्गसे स्युतन हो । स्रथ के दास न बने कार से न सबरायें। बेद पश्च पर कुछ कथ्ट सहन करना भी पड तो विचलित न हो। यह घटना तत्कालीन पत्रों में छपी थी। महात्माजी का यह पत्र हमारे रिकार्ड मे है।

किशोरमञ्च-

चीर बालक दुर्गादास राठौर

कोकपुर नरेज महाराज यसवत (वह बी के पार उनकी सींविनियों (उटनियों) के रक्षानें ने यह पूजना पहुजार कि एक सोबारण किसान के जबके ने एक साविनी को गार बाला है। महाराज ने उस किसान को पवककर साने को कहा किसान का नाज वा साविकरण, वह राठीर राजपुत वा। महाराज के सावने साने पर उसने सपने बाजक को सावे करके कहा— ीसान् का सपराची यही है।

भहाराव ने कोच से डॉटकर पूजा— 'पुमने खाडिनी मारी ?' बासक ने निर्मे-यता पूर्वक स्वीकार कर सिवा। पूजने पर पर छसने कहा—'मैं वपने खेत की रखा कर रहा था। शावितियों को आते देव-कर मैंने आते दोक्कर परवाहे को मना हिमा, परन्तु उसने मेरी बात पर क्यान हो नहीं दिया। हमारी उसक नष्ट हो बायेगी तो हम बायेंथे क्या? वस इस सावियों ने मेरे बेत में मुख बाया, तब मैंने उसे भार दिया। दूसरी सावितियाँ और चर-बाहा मी माग यथे।'

एक बोटा सा नामक एक अजनूत कर को बार बकता है, यह नात मन मे बनती नहीं थी। महाराज ने पूछा—'तुमने साहिनी मारी कैसे ?'

बातक ने इवर-उवर वेसा। एक पत्तासिया क्रेंट बायने वे बा रहा वा। वह उस क्रट के पास बबा और क्यर दे तल- वार चीचकर उसने एसा हाय थारा कि ऊट की गरेन उस गई। उसका सिर गिर पड़ा। महाराज उस वालक की बांरता पड़ा उसना हुए। उसे उन्होंने या पास रच मिला। यही बालक इतिहास प्रसिद्ध वीर दुर्गदास हुए। धौरण्येब जैसे

कूर बादसाह से इन्होने यशवतसिंह की रानी तथा राजकुमार ग्रजीवसिंह की रक्ता की। मारवाड राज्य का यवनो के एजे से इन्होने ही उद्धार किया।

---प्रस्तोता दलजीत शास्त्री

ग्रमृत कलश

उपका

वों रहीम सुख होत हैं उपकारी के सज़्ता। बाँटन वारे के लगें ज्यों मेहदी का रक्का।

बीका नो जलपर से उपकार बन्धुमो। जो समुद्र से नियाहम पैही वरसायमा।। जुलसीया ससार से, पाचरणत हा।। सरसक्किति पौरहरिजजन, दया, पर्मे उपकार॥ मिसाबम्म उत्तम दुने, कर से कुछ उपकार। समयन महर्फिरमिस सके, जीवादान न हार॥

श्रीकारपद प्राप्य नोपकार करोति य । श्रकारी सोपमात्रेश ककारहित्वता त्रजेत्॥

को ब्राविकार पद को प्राप्त करके नी उपकार महीं करता उसके जीवन की विक्कार है। व्यासपीठ--

उपनिषत् कथा माला-१०

परमात्मा विचार

लेखक-स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती

इस भद्नुत ग्रपार ससार को देख कर परमानाकी महान महिमाका ज्ञान मन मे स्वय उत्पन्न होता है। वह इस सव मसार का घाषार है। उसके ही प्रभाव से हर एक वस्तु मे प्यार है और उसको भूलकर मनुष्य हर प्रकार से दुसी होता है। जीवन क निए सामग्री की थकरत थी। उसने भपनी कृपा से हर एक को उसका दान दिया भीर साथ ही यह भी बता दिया कि मुक्त को भूलकर धपने जीवन को न विद्याना । भक्ति वह सुप्रकर्महै कि सगर काकोई भीकाम इसकी बराबरी नहीं कर नकता। सासा-रिक वस्तुक्षीके सेवन से जो फल प्राप्त होता है उसका सम्बन्ध ससार के साथ ही है। वह ज्यादा देर तक नहीं रहता, वह नाशवान है भीर जो परमात्मा की बाद से पल निकलना है वह सर्वेव स्थिर है भीर उसके बराबर का कोई नहीं है, परन्तु मनुष्य उसको भूल जाता है। परमे इवर की यान्य मनुष्य को प्रसन्त कर देती है भीर इसको शुभ कम करने के लिए झागे बढाती भीर बुरे कर्म से पीछा छुडाती है। उपकार भूलादेने वाने का ससार भे नाम नही होता, वह इससे स्वय सताया जात है भीर भन्त मे पञ्चात्ताप करता है। परन्तु क्रिर भी कुछ, बन नही पाता है। कोई मनुष्य किसी का उपकार करता है भीरकोई किसी के साथ सहानुभूति करता है कोई किसी को जरूरत के समय बाराम पर्≧चाता है बीर कोई विस्ते हुए को हाय का सहारा देकर उठाता है। किसी ने किसी को बन से सहायता दी भौर किसी ने दूसरे को नेक राय दी। ऐसा देखने मे आता है भीर समार का कार्यक्रम इसी से अच्छा चलता है। कोई एक मनुष्य न सब से सहायता ले ही धकता है भीर न कोई सब को सहायता दे ही सकता है। यह बात किन है धीर न सब मिलकर सब स सहायता न सकते है भीर न दे ही सकते हैं। परस्पर महायना से समार चल रहा है।

पर तुएक परमात्मा सबका कल्य रातमा प्रणीमात्रका सद्यारा सात्र में त्यापक ग्रीप्त सात्र में स्थापा है। कोर्ने भी श्रीज एसीन ने ने जी ता इसकी सहा स्वता कं स्थापने स्थापी (स्थितस्वा स्थापने क्यापने स्थापने स्था लाना स्वय ही प्रपने को प्रमाद के फताना है। यह दुढियानों का काम नहीं, यह किया का मनदेश नहीं। यह काम की सहज्ञ या पर वसती है प्रवत्ने विचार को द्यार से हटा सिया, जिससे सुभ काम मे सुरती घोर उरे काम मे चुरती होना पकरी या। समय हाय से जाता रहा धोर दत प्रमात कियों को सठाकर वैरियों को हमाता रहा।

सत्य है भूल से जो कार्य किया जाता है उसका फल कब सामने बाता है यह मनुष्य नही जानता । यह भी सत्य है कि सासारिक लोगसब को इस सदारकपी जाल में फसाता है। अपनी चतुरता से सब को सस्य पत्र से हटाकर कुमार्ग पर ले बाता है। यह सासारिक लोभ हर समय मनुष्य को प्रथमी घोर बाकवित करते रहते हैं। मनुष्य जानता हुआ भी इनके फेर मे पड़ा रहता है। यह सोम हर समय मनुष्य को घोखा देते हैं यह मनुष्य के क्षिए मित्र के मेव वे शतुई । जब पहले पहल मनुष्य ,नके चक्कर में फँसता है तो ग्रास्तिकताको छोडकर नास्तिकताकी धोर बढता है पाप पुण्य में भेद वही कर सकता। तृष्णादेसने मे समृत, परन्तु धसल में विष से भी बूरी है।

विद्वान पुरुष सम बोसते हैं। उनको सत्य से प्रेम होता है। प्रभू को सत्य से प्रेम है इसलिए वे परमात्माके समीप होते है। उनका कथन है कि अब सासारिक क्षोभी की वासना जाती रहती है, तो यनव्य के भीतर ज्ञान की वृद्धि हो जाती है। किर उसको हर वस्तु भ्रापने वास्तविक रूप में बध्दिगोजर होती है, मन्तरात्मा की शुद्धता धारमा को परमारमा से जा मिलाती है। मनुष्य का वास्तविक रूप यही था। यहापर ही मनुष्य का कार्य समाप्त हो जाता है। परन्तु इस कार्य के लिए जिनना परिश्रम करना चाहिए यह इसका इतना प्रेमी नही । जितनी चाह से ष्म ग्रोर बढना चाहिए। यह इमके लिए सैयार नहीं। इस समस्या को इस करने के लिए केवल घत्माकी खुद्रि चाहिए, इसके निहर गरित्रम निष्कल है। यह मूल्यको बस्तुननी यह बहरी योजना नहीं प्रत्न नो यनस्य के प्रन्तात्मा को द्मावाच ै जो सरो नरपकदनादैती है। 'इत्र ण तिको ने गिन तो वहाँ रे बना है और न नास्तकों से परे हट कर कही जाता है। यह तो सर्वस्थापक है, हर स्थान पर हर समय वपस्थित है। मनुष्य 'तु उसको पाने के लिए कही हूँढ़ रहा है 'वास्तव में यह तो तेरे श्रीतर ही है, परम्तु तु उससे ससावचान है, वह तो तेरे घर में है परन्तु तु उसे हूँड़ने के लिए बाहर पूम रहा है, वह तो हर पमय चेतन है परम्तु तु वससे प्रकेत में स्थान है परम्तु चह विधा में प्रकट है। वह परमिता परमास्था हर समय एक रह में ही रहता है। परन्तु तु सपमे मूटे विधारी के कारण उसको सहै। सा वस्ता।

यह सब भूमण्डल उसी से उत्पन्न

भौर उसी ने समाप्त हो चाता है परन्तु

वह इन दोनों धवस्याओं से विरक्त है। वह एक है क्यों कि दूसरा कोई उस जैसा नहीं है। वह दूर से दूर धौर समीप से समीप है। वह बड़ से बड़ा और छोटे से ओटाहै।यही कारण है कि को सूक्ष्म रुष्टि वाले हैं वे उसको देख सकते हैं परन्तु को स्थूल इच्टि वाले हैं इनसे बहुदूर भागताहै। जो इसका इच्छुक है, वह साहत वाला है, क्योंकि बालस परमात्मा को नापसन्द है। विद्या, सन्तोष भीर नम्रता नाहस को बढाते हैं। ईर्ष्या, द्वेष भावि साहस को चटाते हैं। इसलिए मनुष्य को सुनकर्नों में मन जनाना धौर दुष्कर्मों से मन हटाना चाहिए। मन्त्य को ऐरबर्य थन सुझ सम्पत्ति भोवते हुए परमात्मा को धन्यवाद देना चाहिए और दक्षित सबस्था ने भी सतीय को कभी हाथ से नहीं छोडना चाहिए। इस प्रकार रहने से हृदय दर्गण जुद्ध और मन साफ रहता है। शहकारी और लोगी पुरुष यह सुनने ही डरता है। जोभ एक प्रकार का व्यतन है, विससे अलाचना मनुष्य भी व्ययनी होकर उल्टे वार्ग पर चल पहता है। व्य-सनी पुरुष की तृष्णा बहुत बढ़ न त है। वह दूसरों को भुल में देलकर ईर्गावश होकर ववराता है। जैस मिलानी का पात्र क भी नहीं मरता, वैसे ही को भी पुरुष को कभी सतीय नहीं होता। ऐशी अवस्था में परमात्मा का मिलाप कहा ? तुथ्या, लोग एक प्रकार का फन्या है, जिसमें एक बार फैंबकर फिर उसने खुटकारा घसम्भव है। सतोपी पुरुष को इसका ज्ञान है। प्रमू अक्तो के लिए वह हर स्थान पर है। वह एक देशी नहीं परन्तु हर देशा व हर बस्तु में हर समय रम रहा है। परमात्मा सत्य है, बहु प्रेम है, तुम भी इससे प्रेम करो।

समलने का समय है समलो और सपना जबार करो। नह एक रस रहने वाला है, कमी नहीं बरकता। इमर-उमर विवार जाही दूरो, परन्तु वन तक सम्वरास्मा की सुद्धि नहीं होती तर तक उसने सिवाय गढ़ी हो सकता। जो विज्ञासु उसको पवित्र जन तवा सन्ये मन से चाइता है, विवक्ता हुग्य मुख तथा मन सन्तरास्मा इन सावारिक प्रमोमनो ने दूर है जो मनुष्य उसके प्रेम ने हर समस्य मन है, वह उस को सपने सम्वरास्मा के श्रीतर हो देख लेता है।

ऐसा शक्तिशाली व्यक्ति जो हर प्रकार से सम्पूर्ण है, जिसमे कोई जुटि नहीं---उस का पता सब से पहले हमे बेसी ने विया । वेदों ने हमें बताया कि यही ६०८ है, यही पूज्य है इसी की ही उरासना करना हमारा भनिपाय है, इसी को पाने का यत्न करो । वह एक है, वह सांसारिक तवा जाति बादि के बन्धनों से स्वतन्त है। ईरवर की सामन्यं में यह बात मामूली है कि उसने सर्व ससार को रवा परम्यु स्वय रवनाये न भाना उसका एक सर्व-श्रेष्ठ नियम है। सुष्टि उत्पत्ति के साथ भने बुरे का ज्ञान कराना धीर बाद में कर्मानुसार बैसा किसी का कर्न है, न्याब पूर्वक दण्ड या फल देवा, उस काडी कर्लव्य है। वह अपने श्रेष्ठ मुणो के कारण सवा अवेष्ठ है। परन्तु मनुष्य को भूस खताती है भीर प्रमुख्ट कर देती है। परमेश्वर के ब्रस्तकी स्वरूप की न जानने के कारलाप्रकृति तथा वह पदार्थी की पूजा धारम्भ हुई।जो मनुष्य ग्रसली तत्त्वन जानते हुग्गुमी को ही अपना ... चपास्य देव मानना सपना कत्तका सम-मते हैं वे बार-बार इसी ससार मे चक्कर नवाते रहते हैं। सस्य है जो मनुष्य श्वस्य मार्गको छोडकर कुमार्गको सपनाता है, उसको कथी भी निर्दिष्ट पथ प्राप्त नहीं होता, जो मनुष्य सत्य और ग्रसस्य के मेर को जानकर सत्य को धपनाता है उस से कभी दुष्कर्म नहीं होने पाता नर्गेकि उसकी ज्ञान है कि मना कार्य प्रकृति के नियम सनुसार है भी र दुष्कर्म प्रकृति के नियम 🕏 विपरीत है। इस निए ज्ञान प्रकास मनुष्य को अपर चठाता धीर धन्नाम कपी धन्यकार मनुष्य की नीचे विराता है।

पृक्ता, साहस तथा स्क्रांत साम करू परिखाम है। दुष्कर्म, का दरतः भीर सामस सतान से उत्पन्न होने हैं। इसी कारख जान से प्रेम और सजान से घृणा पैदा होती है।

भारतनर्ष वेषो का जान रखता हुआ भी सर मार्ग को ऐसा पूसा कि प्रज्ञान में भी हुआ भी सूका जी को पूरा करना ही कर्तिक सम्बद्ध में देशोर नेव बढ़ने लगा। क्सी न कर क्कार की मूर्डि बगाई तो दूसरे ने उनभो इसरे ही डब में बगाई तो दूसरे ने उनभो इसरे ही डब में बगाई तो इसरे ने उनभो इसरे ही डब में बगाई तो इसरे ने उनभो इसरे ही डब में कर देश को बुठ हु हानि व्यहुवाई, वेड

परमात्मा विचार

को हर प्रकार के भष्टों ने भर दिया। कोई शिवपूजन मे कल्लाण मानता है तो कोई बिट्स् के दर्जन से मील मानता है एक गरोग के बारे शीश भुकाता है तो दूसरा देवी की चौखट पर मस्तक रगडताहै, कोई इनमान को प्रयना इटर मानता है तो दूसरा यङ्गा स्नान में ही मुक्ति ढँवता है। भारतवर्षं की इस बेडबी वाल का कोई पतानही चलता कुछ तो सतोय होता बढिदेश भर में एक प्रकार की मृति का ही निर्माण होता एक ही प्रकार से पूजन होतातो भी कुछ प्रशःक एकता बनी रहती। धार्यसमाज तो मृति प्रजन के बिरुद्ध है। इसकी दृष्टि में वह असत्य है, आरत के मनुत्यों ने करोड़ो रुपये के रुपय है मन्दिरों को बनावा फिर बापस में हेच बढ़ने के प्रतिरिक्त हाथ कुछ न बाबा । यह सब जात है कि इस समय देश की क्याधवस्थाहै न घन है न बल भीर त बृद्धि। स्रविक कहने की भावश्यकता नहीं, दुर्वलता के कारण ग्रव इसका समा-सना कठिन है। वह अपने बबार्व स्वान पर कैसे था सकता है जब कि कुछ ही समय के पश्चात् कोई न कोई सम्प्रदाय सडाहो बाताहै भीर सहस्रो नरनारी विना सोवे समभे उसके पीछे सन जाते हैं। ईदवर प्राप्ति भीर इस ससार से खुटकारापानाही सब की इच्छा होती हैं। श्रज्ञानी होने के कारण न तो कोई पूछता है सौर न इस पर विचार ही करता है कि यदि जिस पथ को उसने अब अर-नाया है सत्य है तो वह पहले गलन पय काही परित्यागकर देपरन्तु ऐसा नही होता । वह पहले पच का भी परित्याम नही करता और नवीन से भी चित्रटा रहता है। इस देश में यह एक अद्भृत बखेडा है, श्विसका निर्णय होना कठिन है।

विचारने से पता चलता है कि जिया प्रकार युद्ध दोंड ने वह बोडे को खाइमा खाबा टट्टी पार करनी होती हैं, उस समय बोडा स्परेन पुने बस और वेद को लगाया है। ठीक इसी प्रकार से पिरकास से पार्य-खाति के साथ प्रतान लगा हुआ है। इस स्त्रान के हाथ धर समय ध्याप है और स्व्या को पाकर प्रजात सब कर स्वाति को नस्ट करने में लगा रहा है। साथ विचार करने देशें कि हिन्दू मार्व जाति का नस्ट बरने पिर प्रतिदिन की दुर्गस होने बा रहे हैं।

हे निज! यदि इस ब्रज्ञान से धाप स्रपना खुरकारा चाहते हैं तो एक ^हदवर के पुजारी बनो वह दु खहतीं और कप्ट-मोचक है।

सपने जन्तों के कच्छों को यीछ दूर कर देता है, यदि सक्त बनायटी नहीं। संहु वेदों का उपदेश बड़ा हितकापी है। अध्यान का इस देख वा हिल्लू वालि ने वस

क्तिना उढा हुआ है, आप विचार ह^{िट} से वेखे।

- (१) जो सब बह्याण्ड का स्वामी धौर सब को अपने यह से रखता है, उसका नाम गएते या निष्पति है। यह तो ठीक है परन्तु जा पूछा जाय कि मन्दिर में एक मूर्ति दिखाकर यह कहना कि वस, गह मूर्ति ही जनत "जिन है इसी की पूजा करने से कल्याए होता है। यह एक एसी कल्याना है तिने कोई सी बुद्धमान् एसा जानाने से इन्कार करेगा।
- (२) जिव वा महादेव उसे कहते हैं जो करवारा का स्तरूप हो और स्थानक हो जिसका स्थाप अञ्चल करण घोर समञ्जल हेप्ण है। उस विषय में बेद शास्त्रों की तो यही सम्मति है। पर, साजकल सोग एक पासाए-पिक सम्मति मन्दि में पहल उसे ही महादेव कहकर पूजते हैं। देखिए कैंग्रा उस्टर गण है?
- (३) विच्या तर्वव्यापक परमात्या का न व है। वह सर्वव्याप का माचार, निराकार धौर निर्विकार है। उसका ध्यान करना मनुष्य के निरा कस्वायाकारी है यह सर्व विस्कुत सत्य है। परन्तु एक मन्दिर में सुन्दर बतुभुँ व प्रति को विष्यु बनाकर पुत्रना केसी मुस्ता है ? इसी प्रकार धौर भी मई बातो में आवक्स उस्टी गणा वह पढ़ी है।

तीर्पं स्थानो की भी ऐसी ही व्यवस्था है। नहा ग्रन्थ विद्यास ने राज्य जनाथा हुमा है। सोग इर दूर से बडी जडा से सैकडों कोस चलकर, थन वर्ष कर तीयों पर पुज्य तिजन करने जाते हैं परन्तु उहें दुरी नाह निराश होती है। पुराणों की निस्प्या वर्ष सुनने से वैदिक कान पन उनके हाथों से नाता पहला है। इसी का पुज्यिस्तास सांव हम देशा है हैं। पहले का समय सार्व जाति के लिए विद्यास सुक्तमय या, बद तो उदका व्यास में साना ही दूर की शाद है। सार्वों की बन्नति के नितनविस्तित कारण थे—

(१) तब सवार का रचिता, सर्व प्रकासक, सर्वालयाँमी, सर्वज, सर्व व्यापक परमेन्दर ही प्रायों का उचारत देव चा। उनका यह यरल विश्वास चा कि इरेवर सारीर-रहित भीर महितीय है। सतार की उन्नीत स्व पना भीर नाल उसी के हाल में है। न्यायपूर्वक सब प्राणियों को कर्मास्तार एक देना उसका स्वजात है। इसी निए उनकी भाजा का र जन करता मनुष्य मात्र के सिए करवाएकारी है। इसी कारख उस प्रमुख मानते से और उन पर करना वे कर्सव्य मानते से और उन प करों से दूर ही रहते थे। जो प्रमु-प्रार्थिक स्वार्थ में प्राप्त करना वे नाय स्व स एव एक बुरेक एव ॥ ८० १३।४।२२॥

यह मन्त्र भी उपरोक्त नाम का सूचक कै।

(२) भ्रायं सत्यवादी और सत्यकारी वे। राग द्वेण से भी कृठ बोलना इनका स्वमाद न था। इसी कारण प्रतिमा पालन करना उन्हे भ्राणों से भी अधिक प्रिय था। विस्मितिसत मत्र इसी बाग का बोषक है—

इवमहमन्तात्सत्यमुपैमि ॥ य० १।५ ।

(३) क्लंब्य पालन तो उनके बिए निरम का हरभाव हो गया था। सलार की कोई भी वर्तु उन्हें नहीं हटा सकती थी। इस कर करण्या वर चा कि वे कार्य करने से पहने उसके परिचाम की सवस्य ब्यान में रख लेते वे चौर उस यचन की मुद्द से निकालते ही न वे जिसे पूरा करने में बे समर्थ न हो। निम्म सन्त्र इसी बात का जायक है—

कुर्वन्नेबेह कमिशा। य० ४०।२॥

(४) मनुष्य समाज वे "हकर किसी को सम्याय से कच्टन पहुचे, खदा उन्हें इस्त्री बात का विचार रहना था। उनके सन्त करण पवित्र वे, उनकी भावना उच्य वे रोपकार को कर्तव्य ग्रीर उप-कारण करने को पाप सममते थे। कहा भी है—

ब्रायुर्वज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ य० ६।२१ ॥

(x) वे स्वय स्थाय का खनुबरण करते वे और प्रत्यों को कराते वे। उनका यह घटन विदवाश का कि बहा त्याय का प्रकाश है वहीं प्रभुका निदां है। इस्तिए प्रत्यायम्क पत्रपात से हुए पहना, मनुष्य जीवन का एना मानते वे।

भ्रमने नय स्वथा। य०। ४०। ७।।

(६) दुराचार के दूर करने धौर खराचार के बदाने में सालस्य का त्याव कर सल करना स्वयाव था। उनका मह विश्वाद था कि दुराचार से रक्कर मनु य समाव पराधीन हो जाता है धौर सदा-चार से उत्थान की घोर निरस्तर बढकर स्वाधीन हो जाता है। घत सदाचार से सिस प्रकार उन्हें पार था उसी तरह दुराचार से वैर था—

त्तनमे मन जिवसक पमस्तु। य० ३४।१॥

(७) प्रायों ने निरस्तर बदादि सारजो के प्रत्यात ने दानात्व के निर्माण नियमो पर स चण्ण करना प्रथम सर्वे मान रखा था। और दसीनिये वे नीरोब, सुन्यर सौर सुरील करे रुगले वे धीर कभी बीमार हो आर पर माचारण, दसी समझा थेड परहेर से ही उनकी सबीस्त ठीक हो बाया करती थी। उनका सह

पूर्णं विश्वास था कि दुवंतता हो सब दुर्सों श्रीर पायो का कारण है। इसीलिए स्वान् स्थ्य को विवाडने वाली वानो का कभी साथ नहीं देते थे। इसका प्रमाण यह है—

वलमसि वल मयि घेहि ॥ य० १६।६॥

- (c) उदारता धार्यों के स्वमाय में उनके नियमों से प्रकट होती है। कोई भी पूरव धपने पुरुषायें से खंदा गुण करें, दक्षाव बना लेता वा समाज में उसे में ही स्थान दिया जाता था। इस प्रकार हर एक को उन्तर्ति करने का धिवकार था, धौर वर्णस्थवस्था की मर्यादा का मार्ये वहा ही सरल था। विद मूल प्रयदा प्रमाव से उनने कोई दोय धा जी जाता था तो वे बड़ी सावधानी में धरना पीछा खड़ा लेते थे।
- (१) बार्य पुरुष कभी भी प्रभू उपा-सता में किसी सासारिक स्ट्रण की पाषणा नहीं करते हैं। उन्हें निरचम या कि सौ बस्तु सपने पुत्रचार्य से प्राप्त हो समती हैं उसे परमेशकर से मीनना पूर्ण हैं। सत प्राप्त साथ के ऐसे चक्का पुत्र से निर्माणने के कि हैं प्रभू प्रमुख्य कर साम हमें बार-म्बार सवार कमें प्रसुख्य हमें से साम सा सबीय मोक में से जाकर नया हसास है। इसीलिए हमें पापके दर्शनों की बडी समितारा हैं।

यस्तन्त वेद किमृवा करिव्यति ॥ ऋ्राः१६४।३६॥

(१०) धार्यों ने वैश्कि ज्ञान से प्राप्रमों के नियमों को इतना सरन बना दिया था कि जिनके पानन करने से चन, अर्थ काम मोझा की प्राप्ति में सब को अस चा। "बील एस सार ने मुझ और शास्त्रिय थे। मुखुं पूर हुं शीखा रिका-धनी से मुक्ती घरीर स्यापना धनना सीमा यसमनते यं भीर व साखा-रिक मोह में ण्ड कर र ते " न नरीर स्यापन सामा क्यान का का स्थान थे। स्थान

यत्र ब्रह्मविदो यान्ति ॥ म १८।४३।८॥



ससस के सत्सर अप अपकार को कुचल वे पातक प्रिय दुष्ण को, उठा ले, पासह सहिनी बढ तू, जगती के उत्कव को।

विभव साधन से हो रीता चल कब्ट की कड वाहद गीता चल लक्ष्य पर न्योखावर होते ही, अमृत प्रिया सन्तत जीता चला।

---भैरवदश शुक्ल

पुष्ठ ४ से झागे वर्तमान चारित्रिक संकट: समस्या और समाधान

विधायक तया सासद एक ही सत्र मे खास्त्रो लास्त्रो रुपयों में कई कई बार बिकते एते थे। ताममी लौह बुद्धि के ये नेता सत्तारूपी चुम्बक से बिच हुए अपने उन सिद्धान्ती की जिनके धाधार पर जम्होने जन।देत प्राप्त किया था निर्लेप-भाव से ठुकरा रहे थे।

भाज के हमारे भनेक नेता श्रसामा-जिक तत्त्वो को सरक्षण दे रहे हैं। भुनाव की राजनीति में गुण्डो का समयन धावश्यक हो गया है। कुछ नेताओं के भूनाव मे तो कभी कभी डाकू लोग भी ग्रच्छी भूमिका निमाते सुने गये हैं। ग्राज की न्याय व्यवस्था भी शस्त व्यस्त है। धनेक व्यक्ति धपने पद समबा पैसे के प्रभाव से त्याय को सरीद कर राष्ट्रीय चरित्र का हुनन कर रह हैं। कहाँ तो राम के राज्य मे एक विगडी हुई इकाई को भी महत्व देते हुए राम ने सीता का परित्याग कर दिया था और कहाँ आव की बीमस्स स्थिति है, जिसमे "सामूहिक रूप से चरित्र कापतन देखाजा सकता है। प्राप्त कठिनाई स ही कोई व्यक्ति क्षच्चरित्रताका भादर्शप्रस्तुतकर पाता है। जब हमारे शासको, नेतामो तथा कराँचारो की ही स्थिति विगडी हुई है तब श्वामान्य नागरिक की तो बात ही क्या है। कहा है---

'राज्ञि वर्मिण वर्मिय्टा पाप पापपरा सदा। राजानमनुबद-न यथाराजातका प्रजा ॥

'प्रजा घपने शासको का प्रनुसरसा करती है। यदि राजा धर्मात्मा है ता प्रजा मे घम बुद्धिका विकास होता है। जब राजा पापकार्यरत होता हे तो उसकी प्रका का भी पाप कार्यों म सलग्न होना स्वा-भाविक है। बाज दुर्भाग्य से हम दूसरी स्थिति के वातावरण में जी रहे हैं, जिसके परिवाम स्वरूप समाज का सामूहिक रूप से पारितिक पतन हो रहा है।

२ ग्रायकरादि की चोरी

प्राचीन कास मे प्रजा शपनी शाय का क्षठा अश राजा को सहच प्रदान करती यी । इस लेन देन में राजा-प्रचा के सम्बन्ध बहुत मधुर रहते थे। प्रकाजन इस प्रतीक्षामे रहते थे कि रावकमवारी भाकर त्नसे राज्यकामध ग्रह्ण करने की कृपाकरे। सभी लोग वानत ये कि यह पैसाप्रजाके हित के लिए ही आपर्य होगा। जैसा कि कालीदास ने रघुवशी सम्राटो के विषय में लिसा है-

> 'प्रजानामेव मूत्यर्थं स वाम्यो वशिसप्रहीत् ।

सहस्रगुलमुस्स्रप्टू बादते हि रस रवि ॥

धर्मात रमुवशी सम्राट प्रजा के कत्याए के लिए ही झाय के खुठे भाग के रूप मे उनसे कर ब्रहण किया करते थे। इन राजाओं का यह काय भगव न सुर्य के समान ही होता या, स्थोकि मूर्यदेव भी पृथ्वीसे बाब्प करूप में जिल्ला जल ग्रहुगा करते हैं उसस कही अधिक शस्य स्रोतो समुद्र, भीत भादि से प्राप्त करके वह है—विटामिन वी के कैप्सूल में हुल्दी सारा का सारा जस पृथ्वा क कल्याण के लिए विकास देते हैं। रघुवशी समाट् भी इसी प्रकार से प्रवनी व्यक्तिगत सम्पत्तिको भी प्रकाके हित में लगादेते थे। महामारी बादि फैसन शबता धकाल की स्थिति साजाने पर वे प्रजाको करशुक्त करके रावकोश से उसकी सङ्गायता किया करते थे।

द्याज स्थिति बदल चुकी है । नदागण धपनी पुनाब की विजय को पाच वय तक मौज उडाने, यदा तथा अपना तथा अपने कुदुम्बियो का पेट मोटा करने तथा यन-मानी करने का आज्ञापत्र मान लेत हैं। दूसरो झोर प्रकाको स्थिति भी एसी है किलोब अपनी आय को छिपाने के सिए दोहरे बही साते बनाते हैं तथा अनेक प्रकार के काल धन्धे करते हैं। भ्रायकर विभाग के समक्ष उत्तटे साथे भाकड प्रस्तुत करक सरकार को भासों में घूल फाँकी वाती है। यही स्थित मायकर मणिका-रियो की भा है। व कुछ, चालाक सोगो को करनो क बाधार पर दूसरे सन्त-सीवे **- यक्तियों को भावका की दब्टिस देखते** हैं भीर भनेक प्रकार सं उन्ह्रं उत्पीडित करत है। कुछ सीय जा दने-तन की कसाम नियुव होते हुव सरसवा संही इन अभिकारियों से बुक्ति पा जात है। परिणामस्बरूप समाज मे अच्छाचार पनप रहा है । तुलसा के मनुसार-

> 'सोइ सयान जो परवन हारा। जो कर दम सो वड भाचारी॥ को कह कुठ मसक्तरी जाना। कवितुत्र सोइ गुनवत बबाना॥" [मानस ७।६७।३]

की स्थिति वनी हुई है, हुमारे चारिकिक पतन का मुक्य कारश है।

३. खाद्य सामग्रियो तथा भ्रीष-षियो मे मिलावट

भाजका व्यापारी इतना चालाक है कि पैसे के ब्राविरिक्त उसे कुछ सुमता ही नहीं । उनकी उस्टी-सीबी करतृती से वेशवासियों का कितना बहित होना, इस बात की इन व्यापारियों को कोई चिन्ता नहीं है। श्रीविध के का ने काम श्राने बासी कालीमिकों में प्रपीते के बीक, बन-स्पति भी में चर्बी, चाय की पश्चिमों में

सकडी का बुरावा, चावस, चीनी तथा वासो में सगमग उसी धाकार प्रकार के पत्यर 🕏 छोटे छोटे टुकडो की मिनावट की जारही है। इस प्रकार के कुकर्मों के परिलाम स्वरूप व्यापारियो को जिल्ला वन वचता है उससे हवारो जःसों गुणा जन-स्वास्थ्य की हानि हो जाती है। श्रनेक प्रकार के ऐसे रोगो का जन्म हो रहा है, जिन्हें हमारे चिकित्सकम्या कोई सजा देने वे भी ससमय है। कैसर, कुष्ठ, सधुमेह बादि भवानक बीमारियाँ व्यापारियो की इस बनलिप्सा का प्रतिफलन रहती है। इनसे खुटकारा दिनाने वासी भौविषयां भी इस मिश्रण के रोग से बाखती नहीं मिसाना, व्यवनप्राश में बावले की पिडिट के स्थान पर उनसे हुए धालू या शकरकत मिलाना, ज्यवनप्राश तथा विविध सव-लेहों ने मूल्यवान् पदार्थों को न मिलाना, ये सब ऐसं ही काय है। मिलावट की नेकर हमारे लमाज का जो साज चारित्रिक पतन विसाई पढ रहा है, **उसकी बीमस्सता को लेकर सैकडो** पृष्ठी को रनावासकताहै।

४. शिक्षा तथा चिकित्सा मे भ्रष्टाचार

शिक्षातथा चिकित्साके क्षेत्री से भी बढ भवानक दग से हमारा चारितिक पतन हो रहा है। शिक्षक जिन्हे साज श्री नई पीढी का निर्माता तथा समाज का नुष कहकर पुकारा जाता है, उनमे से ब्रब अनेक गुरुवण्टाल बन चुके हैं। एक भी बण्टा न पढ़ाना उनकी दादागिरी तथा प्रतिष्ठा का सूचक होता है। शिक्षक का व्यवसाय भव से कुछ, वय पूर्वतक बहुत ही पवित्र तथा ईमानदारी से बराहुझा माना जाता या। विकास की साथ सपने परिवय की तथा बहुत ही सुद्ध होती बी। साम नये प्रकार के शिक्षकों ने इस क्षेत्र मे प्रवेश करके इसे भी दूवित बना विधा है। ट्यूचन के नाम पर आयो की सन्धा-बुँच जुटाई की जाती है। ट्यूशन पढाने बाले अन्यापक भूखे भेडियो की तरह है धपने आयो को देसते हैं और उन्हें ची झातिची झ अपना शिकार बनाने के लिए विविध प्रकार के हुमकण्डे प्रपनाते हैं। प्रयोगात्मक परीक्षा में सन्हे सक पाने का यह ट्यूशन एक समोजमत है।

बाव की परीका पढ़ति भी ऐसी विकृत हो चुकी है कि उसमे इन नये प्रकार के शिक्षकों को अपनी मनमानी करने के चुने मनसर मिल जाते हैं। परीक्षा में कहाँ सीट समेनी, साल को केवल पास होना है या ब्रितीय समया प्रथम नेखी की पविशाषा है, इन सबके समय-असम भाव रहते हैं। ह्यारों क्पवे बेने में समर्थ करीकाणीं विशेष परीका-क्या ने बैठने का समिकारी होता। उसकी सेवा में विधिन्त विवयों के शब्दा-पक सबकरानुकृष कपरिवतः रहेने ।

कभी कभी प्रश्न पत्नो को समय से पूर्व वितरित करके भी प्रभूर मात्रा मे थन कमा लिया जाता है। 'श्रवध विश्व विवासय द्वारा संवासित १६८४ ई० की सी॰ पी॰ एम॰ टी॰ की परीक्षा दो बार हई थी तथा फिर भी वैसी हो पुनरा-वृत्ति होने पर किन्ही कारणी से एसे वीसरी बार भागोजित करने की माग को नकार दिया नया था। १६८४ ई० मे इसी प्रकार दिल्शी विश्वविद्यालय' की पी॰ एम॰ टी॰ की परीक्षा में भी अनेक घोटाले पाये गये थे, किन्तुवहाँ के कुशस खिलाडियो ने यथा-तथा दूसरी **बार**ी परीक्षाहोने की स्थिति को बचालिया आहा जब विश्वविद्यालयो की ऐसी स्थिति है तो विभिन्न बोर्ड जो उनक खुटमस्या है, उनकी करतुती पर प्रकाश डालने मे ती सम्भवत वेद व्यास जी भी समर्थ न हो

शिक्षामन्दिर, को कभी वरित्र निर्माण के मुख्य केन्द्र होते थे, वहा चरित्र हनन का एक इस से भी कुरूप तथा वीमत्स रूप देसने मे भारहा है। सह-शिक्षा के नाम पर धनेक सस्याओं बै इतना भ्रष्टाचार चल रहा है कि प्रति-वर्ष लडकियों के विवाद को लेकर दो-चार हत्याएँ प्रथवा झात्महत्वाएँ हो जाती है। जिस देश में महर्षि दयानन्द औसे तपस्वीर हुए हैं जिनके जीवन में सबस ही सब से बटाघन रहा है वहाउनकी भावनाओं के विपरीत प्राय सभी सस्यामी में सहस्थिता चल रही है। स्वामी जी एक बार बगा में स्नाम करके उसके तट पर ध्यानमान बैठे थे। उनके सन्यासी वेश तथा तेज से प्रभावित है कर स्नान करने के पदवात् किसी नारी ने अपन मस्तक से उनके चरलो का स्पर्ध कर दिया। स्वामी जी हडवडा कर उठे, मा माँ कहकर उस मुक्ती की इस चेव्टा पर बायित की और प्राय-विकत्त स्वरूप तीन दिन भोजन प्रहरा नहीं किया वा। उस महापुरव के देश मे विद्या की प्रथी उठाने वाले तथा शिक्षा का दिवासा निकासने वाले खात्रों की सस्या बाज दिनो दिन वढ रही है। इस बीजस्स प्रसग में इस से प्रचिक कुछ सिसाने में मुक्ते सकीच होता है।

शव एक बृष्टि अपने देश के चिक्रिन त्सालयो पर भी डाल रहा हूँ। जीवन दान देने वासी, जनता के दुल दर्द को कम करने वासी इन सत्वाओं में भी धनेक प्रकार का भ्रवटाचार पनप रहा है। निस्प-व्यति समाचारपत्रों मे चिकित्सको द्वारा किये गए दुव्यंवहार की चर्चा होती रहती है। सनेक राजकीय विकित्सासर्वी से केवल सम्पन्न व्यक्तियों को ही सुविवाएँ निसती हैं। नरीन भादमी अपके साकर, बाक्टरों तथा नसीं द्वारा प्रतादित होकर प्राय, निरास ही सीट बाला है। धारीन्व-प्रव मूल्यवान् घौषणियां इत प्रस्पतासी वें नवारव रहती हैं। नरीकों की **सम्बी** साइनों को निपटाने के बिए डाक्टरों के

न्यास केवन १ वर्षे से ११ वर्षे तक का समय होता है। यदि कोई रोगी सननी सतुष्टिक के लिए विकित्सक के कुछ प्रश्न करता है, तो हमारे ये योग्य चिकित्सक उस्ते परामधं देने हैं कि प्रश्नोत्तर का उनके पास समय नहीं है। यदि पूर्ण सतुष्टि चाहिने हों तो किन्ये पार्वेद विकित्सक से जबाँ में उत्तर कर हो जुका है। तबाँ की जबाँ में उत्तर कर हो जुका है। तबाँ हवा व वरेंदों सा यह पुण्क प्रवहार उसकार उसकार उसकार उसकार उसकार उसकार उसकार सम्बोग प्रश्न हम जाता है।

५ रिश्वतमोरी तथा भ्रष्टाचार

प्राय सभी राजकीय कार्यालयो की क्राज ऐसी स्थिति है कि 'बिन रिस्वत या विना भिप्तान्य, बनता कोई काम नही है किसी भी कार्य के लिए बावदन कर्ता द्मपने प्रार्थना पत्र के साथ कुछ भेंट पूजा श्ववःय करना चाहता है। हमारी मानसि-कताइतनी गिर चुकी है कि यदि कोई क्यक्ति अपने सिद्धाती के प्राधार पर वा किसी अन्य कारसा से रिश्वत नहीं लेता, तो बावेदक को ऐसा प्रतीत होता है कि वह काम होवा ही नही। इस प्रकार की मानसिकता के पर्याप्त कारसा है। अनेक ब्रार्थना वि दफ्तरों की फाइजो में रखे-रखेही गल जाते हैं। भेट-पूजा के विना कोई पाइस एक मेज से दूसरी मेज पढ़े-चनी समव नहीं होती। समी दफ्तरो श्रदासनी तथा मंत्रालयों में बाज सुविधा हो "लगी है। यह सब हमारे सामूहिक वारित्रिक पतन का क'रण है, जिसका अवेव प्रमारे खासको को जाता है। इस कुरूप काभी में सकेतमात्र कर देना ही यद्योप्त समझता हू। हमारे ग्रहमत्रालय विदेश मत्रालय तथा प्रचानमत्री के कार्या-अन्य तक विद्याहमा गुप्तवरो का जाल हमाने इस चारित्रिक पतन का ज्वलत उताहरच है। भाज के हमारे न गरिक को धपने सकुविन स्वायं के लिए समाज क्यापुरे राष्ट्र के विनाश की भी नोई चिन्सा नही है।

चारित्रिक सकट की समस्याग्री का समाधान

सम्प्रति हुमारे देश मे पारवात्य सञ्चला के प्रभाव तथा हमारे दुर्भाग्य से ऐसी स्वित बनी हुई है कि प्रशिक्तियों का द्मावरण कुछ प्रयों में शिक्षितों से प्रज्ञा है। परित्रहीन न्यक्ति ग्राज समाज मे धारना मस्तक ऊँचा उठाकर गर्व से चलता है। मन्द्य पैसे के पीछे पामल हो रहा है धीर समाज के पश्चद्रष्टा हुमारे नेतावस्त ही पबच्चष्ट हो रहे हैं। मत चारित्रिक सुभार भी तभी समव दैजन नेताओं के चरित्र का प्राम सुधार होगा। हमारे सासव तथा विधायक गण देश की मनाई के लिए प ने चरित्र की रक्षा को सर्वो-परि महत्त्र दे। ये नेनागण भगवान् को ाशी करके गिश्रान की रक्षा का जो सकल्प केते है तथा महिमण्डल में प्रवेश पाने से

पूर्वको कुछ प्रतिकाएँ दुहराते हैं, उन्हें पूर्णकरना धपनानैतिक दायित्व समर्भे। ऊपर से प्रकाश सिक्षने पर प्रजाका करियकल स्वन ही बढगा।

हुमारे उद्योगानि तथा व्यापारियो की साठ गाठ भी ऊपर तक रहती है। चुनाव के नप्म पर लाइको रुपय देने वासे एद्योग पति ही धरने व्यवसाय में खुलकर मनमानी उरते है। यदि इश क्रुग से हमारे नत'न्नो का चरित्र सुधार जावे तो इन उद्योगपतियों की बुद्धि ठीक होने से फिर श्रविक समय नहीं त्येगा। करों की जोरीका **बहुत कुछ**, सम्बन्ध स्रायकर, सम्पत्तिकर, विज्ञीकर आदि के अधिका-रियो से होना है । सार्वजनिक निर्माण मे ्मारी सडको तथा पुलो के बीघ नष्ट होने का विशेष उत्तरदायित्व उन प्रशिय-न्ताबो का होता है, जो धपना सुविधा भूमक लकर बिनानिरीक्षण परीण स ही ठेकेदारी के बिली हा भुगतान करा बेते हैं। जिस दिन श्रीभयन्ता गए। तथा दूसरे उच्च ग्रधिकारी ग्रपना सुविधा गुरुक समाध्य कर देंगे ठेकेदारों की बुद्धि स्वत ठीक हो जावगी।

जहा तक हमारे शिक्षालयों के दूषित दातावरण का प्रश्न है शिक्षा पढित नवा परीक्षा पद्धति मे आमूल-च्ल परिवर्तन करने की चर्चाइन दिनो सभी मोर है। सभी विश्व विद्यालयों के कुलगति, हमारा जिलाविभाग, जिलामत्रासय तथा देश के प्रधानमंत्री तक इस विषय ने चिन्तन बीत हैं। पण्मात्मा उनके परिश्रम को सकन करे। इस सम्बन्ध में मैं यह भी धानस्य कहना चाहूना कि सहशिक्षा कम से कम माध्यमिक स्तरपर किसी भी कप में स्त्रीकार नहीं की जानी चाहिए। स्वनाम धन्य महर्षि दयानन्द जी ने हमार जीवन व उत्थान के निमित्त सनेक उप देश दिए हैं उनमें स्वामी जी ने सर्वाचिक वल इस ।त पर दिया है कि नारी शिक्का की पूर्णतः पृत्रक् व्यवस्था हो । भावी पीडी के चरित्र-निर्माण के लिए वह बहुत धावश्यक है। हमारे धनेक नवयुवको का पत्तन यही सोवत सोखते हो बाता है -भयो क्यो धनवाहत को सग⁷ धनेक कि भोग सूर के इस पद को दुहर ते हुए---बा उन की प्रीप्त कही ग्रांबि कैसे खुटै समाज के सामने चरित्रहीनता के कुल्सित प्रदशन ॰ ग्ते हैं तथा बनेक बार भारम हत्या कर ग्पर भी विवश हो जाते हैं। सहिक्तिकाही इस कुरू ताका मूल है। उसको समाप्त कर देना नितान्त भाव-स्यक है।

णिणा से नैतिक शिक्षा तथा वार्षिक शिक्षा का भी उदित सक्यवेश होना श्र व-त्यक है। हानारी सिक्षा भारतीय परस्परा के भनुकून हो सौर पाठ्यकम से च्यारिकिक गुणों पर विभेव ज्यान दिया जाना शाव-स्वक है। दितना सच्छा हो यदि हमारे बालक 'वैडी-सम्मी' की परस्परा मुखाकर सपने मरो मे विगुद्ध भारतीय परम्परा को महुए कर सीर िलालयो का नातातरण आचीन गुरुक्तों ने सादसों पर
सामुत हो। ससोंगानन क निम्त सास
हमारे नमाज मे अप्रेजी शिक्षा का सालव
बना हुवा है। हुरे क्या कृतियन भावना
को भी नाट करने के निवह हिन्दी क
विकास की सीर क्यान देना होगा। जिस
दिन हम सरकृत भाषा तथा अपनी सरकृति
का सारर करना सीखों नह निकस्त
हमारे देश कर करते के
हमारे देश कर इतिहास में शुभ दिन होगा
भीर चरित गमां की दिशा में बटने के
स्वस्त भी हमारे जिला तभी प्रसस्त
बनेंगे। स्थूनकप से परिस्न निर्माण
स्वतिक हमारे हसा स्थून स्था स्थान
स्वतिक हमारे स्थान स्थान
स्वतिक स्वतिक हमारे स्थान
स्वतिक हमारे स्थान
स्वतिक स्थान स्थान
स्वतिक स्यान
स्वतिक स्वतिक स्थान
स्वतिक स्वतिक स्थान
स्वतिक स्थान
स्वतिक स्थान
स्वतिक स्वतिक स्थान
स्वतिक स्वतिक स्वतिक स्वतिक स्वतिक स्वतिक स्थान
स्वतिक स्वतिक

- १ विष्यं कल्यासः की भावना भ्रमनं सन में रखनाः।
- २ धात्मबल तथा धात्मज्ञान के विन्तन पर ध्यान देना।
- ३ कान, कोच मद लोग मोह के विकास से हुए रहुकर विषय दासनाफो का परिस्थान करने की वरटा करना। विकास से क्षेत्र करा करना। विकास से क्षेत्र करा करना। विकास से क्षेत्र का प्रकास करना वह है कि बचनों ने नहीं में की मुख्य के मन में हुरे विचार उत्पन्न होने लगें, वह धन्यमनस्क होने का प्रयास करें तथा ईस्तर क्ष्य म्यानस्क होने का प्रयास करें तथा ईस्तर का प्रस्ति सामित के कारा उन दुरे विचारों के कम को तोव दें।
- ४ ज्यसकल्पी वर्ने शास्त्री में स्हा है — क्रजुमयोध्य पुरुष सर्वात् मनुष्य जैवासकल्य करने तमता हो, वैद्या ही वसका झायरण हो जाता है धीर जैवा सह झायरण करता है, बीरे-धोरे बैचा ही बन जाता है। इस प्रकार स्पट्ट है कि स्थाने चरित्र का बनावा-विवादना हमारे हाय है। कहा भी है—

'यादर्शं सनिविशते यादशाय्योपसेवते । यादशाय्योचन नवितु सादग्रभवति पुरुष ॥

- ५ प्रसबद्धिक में लीत रहता हैस्बर को मानने वाला अस्ति, जो यह सबकता है कि अपवान् उबके प्रयेक सन हुरे का वे देखता है, हमेशा पान से वचने का प्रपास करेगा। कहा भी है— मतुष्य हर समय प्रवचना कोर मीत को साव रखें। इस प्रकार के निज्वत से व्या पाइक से विवयद हुंदूर देहता है।
- ६ व्यक्तियत सदाबारमय जावन ससार के मनेक कुकम प्राय क्रिया-प्रति-क्रिया का प्रतिक्लन होते हैं। जो व्यक्ति गृद्ध सकटन के साथ स्ति भी स्थिति से दूसरो का श्रहित न करन का सकटन जेता है। यह प्रतेक लोगा को सक्यरियता का गाठ पड़ा दता है।
- ७ दुढि पर नियत्रण रक्षना—एक प्रसिद्ध क्हाबत है - दुद्धि से दिवार, चित्रार से क्रिया, क्रिया से प्रदृत्ति, प्रदृत्ति से सुक्षा सक्षा गुणों से स्थक्ति के परित्र का

निर्माण होता है। धत व्यक्ति के लिए धपनी पुढिपर नियतण रखना नितात धावस्यक है।

- = अपन जीवन का मुपुन बनाता— प्रत्येक व्यक्ति का अपना जीवन सिकंक से अधिक सपुर बनाने का अयान करना निहिए। यदि वह अपने स्वभाव को उदार, त्यानु सहिस्मु तथा नम्न बना से तो उसका स्वय का तथा दूसरे धनेक मनुष्यो का जीवन सुसमय वन सकना है।
- ह शारीरिक स्वास्त्य का ध्यान— मानव शरीर ईरनर का मन्दिर भी है। बोर यहीं ज्याधि मन्दिर भी है। त स्व्य के नियमों का पाकन करन बला नारिक न्यय प्रसन्त रहता है तथा अपन परिवार सम'ज और पूरे जातावरण को प्रसन्त रचता है। स्वस्य शरीर से ही स्वस्य मन्दिरक सम्प्रदेश है तथा खसी स्वस्य मन्दिरक सम्प्रदेश हो है तथा खसी स्वस्य मन्दिरक सम्प्रदेश की भावना आसी है।

म्सने वाविरियत निस्द्ध प्रेम तथा मधुण नार्यी का प्रधोग भी सम्मरित तुर्वी का लग्या है। परिजनात व्यक्ति तुर्वी का लग्या करके सपने नार्य उत्तम मुख्यों का विकास करके दिन स्वाध कर्म हीरा है। प्रध्येक स्ववित का सम्म है कि वह दर्गे स्व शक्ति उज्ज्ञकत सन्धे। यदि स्ववित का के पुष्ठ पर सपना कुछ तियेष चित्र लोकना चहता है तो सम्मर् रिजता उसकी प्रधान सावस्वका है।

धात सनेक मनुष्य शका करने हैं कि यह कलियुग है और इस यूग में चरित्र वान् बनप्ररहनातथा धर्मका पालन चनासभव नहीं है। वस्तव में यह घार निराधाकी बात है और चरित्र हनन के लिए इस प्रकार के विवार सब से वातक सिंख होते है। यदि हम ऐसा सकल्प करे कि चरित्रहीनताका सार्गव्यक्ति सद्या समाज के लिए वत्याणकर नहीं है भीर स्वधम निधन श्रेय का सकप लकर दढताम उपयुक्त किञ्चातो ५ र इ.च्हरण करे ता प्रारम्भ पे कठिनाइयाँ नन ही रहें विन्तु बाद मे इतना सुख तथा सुबद्ध मिलेगा कि हम उन प्रारम्भिक कठिना-इयों की विल्कुल भूल आयेथे। साच हमारे लिए परमावश्यक है कि हम सभी दढ सक्त्प ले – 'चरित्र ही कीवन है। ●

निर्दाचन

प्रायंतमात्र शारी सामपुर का साधिक निवांचन १२ ६ ८ ६ को श्री प० हरदेव जी की प्रध्यनता में सम्पन्न हुमा । प्रधान — श्री सिधानता श्री उपप्रधान —श्री सेमचन्द मन्त्री — ककाराम उपमन्त्री — सुधीराम जी कोपाध्यल — श्री मत्र प्रकाश देवी पुग्तकाध्यक मीमप्रकाश कसाराम जी (मन्त्री)

धायसमाज शादी स

समाचार-सन्देश

सार्वदेशिक त्रार्यवार दल प्रशिक्तण शिविर मथुरा उत्साह पूर्ण वातावरण में सानन्द सम्पन्न

गुप्तवर विरज्ञानन्य साधना धाश्रम (बेदमन्टिर) वृत्दावन माग शबुरा क विकास प्रावता में सावदेशिक प्रार्ववीर इस प्रशिक्षण शिविर डा॰ देववृत व्यामा-माचार्य उपप्रधान सवालक सार्वदेशिक धार्यवीर दल को देख रख मे सबधी कृष्ण वास सिंह, सस्यवत सत्यम्, श्री ऋषियास बादि शिक्षको द्वारा सानन्द सम्पन्न हुसा। इस शिबिर के भोजनादि के समस्त उत्तर-दायित्व महर्षि दयानन्द निर्वाण सताव्यी बमारोह समिति ने समाले हुए थे। शिविर बे बस्सी बुबको न घन्त तक नाग लिया। बौद्धिक शिक्षण भी नहारमा प्रम भिन्नु जो बहारमा बार्य भिक्षु जी, ब्रष्यक्ष बानप्रस्व ब्राधम ज्वासापुर, भी बासकृष्ण विन्दकी श्री रामाज्ञा बैराबी[मुबक्फरपुर] विद्वार को जयनारायच आयं (प्रतीयड) सादि ब्रहानुभावो ने किया।

बीकान्त समाराह् बढा ही प्राक्षक बा। सस्त्री वीरोन यज्ञोपबीत वारण हरके सावदेशिक आर्यवार दश का धनु-सासन स्वीकारते हुए राष्ट्रीयता क प्रांत सर्वेव करंट्य परायस रहने की शपय सी। सार्वदेशिक बायबीर दल के प्रधान सचा-लक भी प० वालदिवाकर हस ने दीक्षान्त भाषण करते हुए कहा-देश के सांस्कृतिक भीर वार्मिक मृत्यो का हास हो रहा है। मत मजहबो को धर्म की सजा देना एक सतरनाक बात है। इस दिशा ने झार्य बीटो को सवन रहकर मुद्रा पीढी का वेद को बाध्यम मानकर मार्ग दर्शन करना है श्चन्ययादेश रसातसको चला अवेगा। आपने महात्मा प्रेम जिल्लू के सत्प्रमासी की भूरि भूरि प्रशसा करते हुए उन्हें बावें वीर दल प्रशिक्षण शिविर प्रायोजित करने हेत साथ बाद कहा और प्रत्येक मार्ववीर तथा बाबों को उत्साह परिश्रम, बनुसासन बात्ना से स्वीकार कर कर्म पव पर सम्र-सर होने की प्रेरका दी। अनेक नेताओं ने भी बार्य बीरो को सपने भाषण स प्रोत्सा-दित किया।

> प्रचार विभाग सावंदेशिक मार्थ प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली

कि गत क्यों मे देखने मे बाता था। मैं

सभा प्रवान को एव समोजक को बचाई

देताह भीर प्रायंनाकरता है कि इसी

प्रकार से उत्साहित होकर काय करते रहें

भीर महर्षि निशन को साने बढाते रहें।

पास सस्कृत भीर भाषाभाष्य के सहल %

से ७ तक हो वे सभा को सुवित करने की

क्पाकरे। सभा भ्रपनी जिम्मेदारी पर

काम होने के बाद सुरक्षित रूप से उन्हें

श्चवस्य लौटा देनी। उपरोक्त मडल व

कार्यासय सचिव

सार्वदेशिक सार्थं प्रतिनिधि समा

नई दिल्ली ११०००२

महर्षि दयामन्द भवन, रामबीका मैदान

होने से कार्य मे बाबा बा रही है।

सरेशचन्द्र

श्रायंवीर दल शिविर का उत्साह

दिल्ली बार्य प्रतिनिधि सभा दारा ब्राबोबित बार्यवीर दल के शिविर के समापन नमारोहको देखने सुनन का ग्रुभ श्रवसर मिला। मुभे प्रसन्तता है इस बात की कि इस समय दिल्ली के युवक इस घीर भाकवित हो रहे हैं। विशेष बात यह घी किये यूवक भीर किशोर गुरुकुल भीर धनाचालय से इकट्ड नहीं िये थे जैसे

एफ बी-३६ कैंसाश कालोनी, नई दिल्ली ऋग्वेद का ग्रंग्रेजी श्रनुवाद एक निवेदन

व्यक्ति से गय है।

समस्त मार्थ जनता को आत होगा कि सावदेशिक बाय प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द कृत ऋग्वेद के प्रग्नेशी प्रमु-बाद का प्रकाशन कार्य गत दो वर्ष से कर एडी है। बाब तक ऋग्वेद की मग्नेजी की तौसरी जिल्द तैयार होकर विकी के लिए कार्यालय म उपस्थित है। चौथी जिल्द तैयार हो रही है और बाक्षा है दीपावलि तक यह तैयार हो जायेगी।

इस कार्य को सम्पन्न करने के लिए महर्षिकृत ऋग्वेद के महल ४, ६, और ७ के संस्कृत भीर भाषा भाष्य (प्रकाशक वैदिक यत्रालय, धजमर) की धावश्यकता है। सभा के कार्यालय से य मउस कोई

धार्व बुवक परिवद् (रवि•) विस्थी

सार्वदेशिक आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश के प्रशिचाण शिविर के समापन समारोह पर भव्य श्रायोजन

सावेंदेशिक सार्थ बीर दल दिल्ली प्रदेश के रममल बार्व कन्या विद्यालय, राजा बाजार में बायोजित प्रक्रिक्षण शिविर के समापन समारोह पर यज्ञ के चपरान्त सार्वदेशिक बार्ववीर दस ने प्रचान संचालक भी बास दिवाकर हस जी ने सभी प्रशिक्षित सार्यवीरी व कार्यक-र्ताचों को जनब दिलाई धौर खार्य वोर दल को सगक्त बनान व प्रत्येक बार्यसमाज ने इसकी शासा सोसने का बाह्यान किया। इसके बाद लगभग ८० प्रशिक्तित सार्थ बीरों ने तसवार चनाने, लाठी चमाने, धाग के बोले में से कूदने व बोगासनी का एक वर्ष्ट तक भव्य प्रवर्शन करके दर्शको को नन्त्रभूत्व कर दिया। उनके सम्यास के विभिन्न प्रदर्शनों का बार-बार करतन क्वति से स्वातत किया गया। दिल्ली प्रदेश के व्यक्तिकाता श्री प्रियतक दास रसवन्त जी ने ग्रीव्यकास में श्रामोजित इस दूसरे शिविर की उपलब्बियों न धार्म बीर दस की सक्रियता व जाबी कार्यक्रमी की कपरेका पर अपने विचार प्रस्तुत किये।

दिल्ली धार्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने प्रत्येक बार्यसमाज ने ब्राध-ष्ठाताकी नियुक्ति व सभाकी स्रोर से हर प्रकार के सहयोग देने का बादवासन दिया । सभा के बहामन्त्री हा० बर्मपास धार्व ने दिल्ली में बार्यवीर दल हेतु एक शिक्षक की नियुक्ति करने की घोषणा की एव शिविर में दिये गये प्रशिक्षण की सराहना की । श्रीमती प्रकाश सार्या, बन्त्रासी प्रान्तीय धाय बहिला सभा विक्ली प्रवेश ने कायकम की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करत हुए महिला सभा की स्रोर से यथोचित सहयोग देने का साहदा-सम दिया।

सार्वदेशिक भागं प्रतिनिधि सभा के

महामन्त्री श्री स्रोमप्रकाश त्यागी (भू०५० सासद) ने घरने घष्यक्षीय भाषण में मज्मर में स्थायी रूप से स्थापित किए जा रहे बार्य वीर दस प्रशिक्षण केन्द्र का उल्लेख करते हुए मार्थ वीर दल के लिए स्यायी कोच बनाने पर विचार प्रकट किया । उन्होने देश की बतंमान परिस्थि-तियों मे जबकि सामाजिक म्ह्यो का हास व सबगाववादी तस्वो का सातक बढ रहा है, राष्ट्र रक्षा हेतु बार्यवीर दस की महत्ता पर प्रकाश डासा। असे त्याकी जीने सार्यवीर दल की निर्दिष्टियों में सक्रियता लाने के लिए कई महत्त्वपूर्ण सुकाव विए तथा प्रत्येक आर्यसमाज में एक समिष्ठाता की नियुक्ति वर वस विया । अध्यक्ष महोदय के करकालों द्वारा सार्थ नीरो को प्रमास पत्र एवं पुरस्कार वितरित किये गये। समा ने सर्वेषी सासा इन्द्र नारायण जी हाणी वात वासे, माचार्य देवव्रत जी, रचवीर सिंह जी राए। बादि ने भी बपने विचार प्रस्तुत किए। शिविर में प्रवस पुरस्कार विजेता सार्यसमाच बना मण्डी, पहाड गज के भी सतीय कुमार, द्वितीय परस्कार विजेता बार्यसमाज नारायण विहार के वी मार्थासह जी यादव, तृतीय पुरस्कार विजेता धार्यसमाज मण्डावकी के की धतुल कुमार रहे। बनुशासन मे प्रवक पुरस्कार विजेता प्रार्थसमास कृष्णनसर (यसुनापार) भी कृष्णमित्र कौशन रहे। कार्यक्रम मे ब्रायंसमाज के कई शीवंस्व नेता, उपदेशक धायसमाब के प्रवाध-कारी, कार्यकर्ता व पत्रकार स्नाति औ उपस्थित वे। समारोह के समापन के पश्चात ऋषि लगर का ब्राबोजन और किया गया।

श्याससुन्दर विरमानी मन्त्री सावदेशिक मार्थवीर दन, दिल्ली प्रदेश

धार्य बन्धुयो, सार्यसमाजो, शार्य बोट क्लब पर वेदप्रचार प्रतिनिधि सभाग्री से प्रार्थना है जिनके

दिन्मी घार्य प्रतिनिधि सभा दिल्मी के तत्त्वावचान मे वोट क्लब पर श्रविरत वेदप्रचार का कार्यक्रम चल रहा है। वन दिनो प॰ धर्मवीर शास्त्री के हारा प्रवचन का कार्यक्रम दिनो दिन प्रचित पर है। भारी संस्था मे श्राहालु जन वेद उपनिषद्, गीता, सस्यार्थप्रकाश धादि धार्मिक सन्यों से उपदेश को भवला कर रहे हैं।

सवाददाता बायंसन्देश

श्रार्यसमाज बांकनेर, दिल्ली ४० का वर्ष १६८४-८६ का निर्वाचन त्रवान-वी नानेराम खार्व,

एम ए वी एड -भी घोमप्रकास यूप्त वी. ए. क्त्री-भी बेहरताचे प्रवार

एम ए की ए

उपमन्त्री—की रामकरण एम ए बी एड कोवाष्यक- बीहवासिंह सभी की ए पुस्तकाष्यका-- श्री जिलेसिह सार्य

एम ए बी एड. लेसानिरीक्षक-- भी गुद्दवसन सिंह बीए डीपी एड तिवेदक

मेहरसास पवार समाच मन्त्री

बार्य महिसा समाव, सोहन संब, विल्लीका वार्षिक चुनाव १६-६-८१ को निम्न प्रकार हुमा---

प्रभान श्रीमती सुनीति गुप्ता **उ**पप्रश्नाम कु० सुमित्रा संत्री बीमती प्रेमकुमारी चपमन्त्री सीमती रजनी कोवाध्यक्ष कीमती कमसेश नामिया

'धर्मेन्दु जी सम्मानित'

परोपकारिणी यज्ञ समिति दिल्ली के सरक्षक प्रार्थ प्रनामालय के मत्री तथा द्यार्थं युवक परिषत् के प्रधान वयोवृद्ध धार्य नेता श्री प॰ देववत जी वर्नेन्द्र को "बाल हितैयी सम (रिक•) दिल्सी" द्वारा विल्लीनगर निवम रक्शाला के सुख्जित मच पर भारी जनसमूह के बीच उनकी साठ वर्धीय समाज सेवा के कार्यों में राख दिन समन्त रहने पर समाज सेवी उपाधि से समावकृत समसङ्कृत किया गया।

कमस कियोर सार्व

दिल्ली की आर्यंसमाज मन्दिरो के लिए एक आवश्यक निवेदन

दिल्ली मार्च प्रतिनिधि गमा के मार्च तत चन रही मार्च समाची म कभी कभी सापती विवाद विकन्न रूप पारत्य कर लेते हैं। इन विवादों का कोई विशेष ठास साचार भी नहीं होता। मार्य स्थानों के स्थिकारी पहल ही निगाय से नते हैं और साद में समस्या न मुलम्मन पर भणा के स्थिकारियों स सायह करने हैं कि वे दन। विवाद में सायह करने हैं कि वे दन। सावस्थकता हम बान की है कि स्वादी-

खोटी वाता को पोर न्यान न दिया जाये पौर पार्यन्यान के जो मूल उद्देश्य है उनकी खोर ध्यान रक्षा खाव । नसार का उपकार करना इस सवाब का मुख्य उद्ध है। किसी भी विज्ञाद को गहुरा होते से पहुन, खाप स्था के प्रविकारियों से तबा धार्यविद्वानों से विकार विशव कर न तथा विज्ञाद प्रारम्भ में हो समाख कर न तथा विज्ञाद प्रारम्भ से हो समाख साईचार को बनाय रक्षान परमास्थक है। छोटी छोटी बातों को प्रतिष्ठा का प्रतन न ननामें भीर उने मारखों के प्राप्त के लिए सपने मायह को छोड़ ने सिए सदा तरपर रहे। हम 'मान्छ्यन, सवस्व्य' को भावना से काम करें। ऐसा भी पना पत्ता है जिए सापसी मतभेद के कारण कुछ ऐसे व्यक्ति बिनकी मार्थसमान में पूसर्पठ करने मन्द्रन को स्थापन कर रहे हैं। मार्थ ऐसे लागेन को स्थापन करने समुद्रन को स्थापन रहें।

हमने भागसे पत्र दिनाक २५२ १६८५ भीर २४ ४ १६०४ के सनुसार प्राथना को है कि ग्राप ग्रानी मार्थसमाज को वापिक विवरण सदस्यता शत्क का दशाश वदप्रचर नदा आयसन्देग का गुल्क सदस्यता सुची प्रतिनिधियो के नाम व पते द्यादि सभाकर्यां नय मेज दें। बहत सी समाजो की छोर ने ग्रमी तक इन श्रीपचारिकताश्रो का पूरा नही किया गया है। धापका ध्यान दिल्ली आय प्रति-निविसमा क नियम सरूपा— ५ की घोर शाकवित करते हुए बापसे विश्व अनु-रोष है कि भाग समय पर उपरोक्त भीप-चारिक्ताचो को पूरा करके सबिय सह-योग देने की कुपाक दें। बदि समय पर यह भीपचारिकताएँ पूरी नहीं होती वो वार्षिक प्रचिवेशन में विलम्ब होना प्रव-ष्यम्भाषी है।

दिल्ली झार्य प्रतिनिध हमा क मुख्य एव झाम जन्देग में निश्चम ही आप हुख परिवर्तन सनुमन कर रहे होंगे। झाप इस्तो स्वामी सामार दिलाने में मी हुलारा सद्योग करने की क्या कर। इसके लिए झाप यांपिक से बीचक ग्राहक झाओ-वन तथा नार्थिक बनवाये ववा ब्यापारिक स्वामी के विज्ञापन दिखवाने में सहयांग देने की कृपा करें।

दिन्सी मार्गप्रतिनिधि साथा के भन्तर्गत सायबीरदस भी साक्य रूप से कार्यकर न्हा है। इस बय तीन प्रशिक्षण शिविर भी मायोजित किये गये हैं। माप इस कथ्य के जिए प्राधिक सहयोग मी देन की कृषा करें तथा सभा प्रधान की के पूक पत्र में मभी प्रायंत्रभातों को निर्देग दिवा यथा वा कि वह प्रथनी ममाज मे प्रायं वीर दल के लिए एक प्रिक्टाता का व्यवक कर में भीर उसका नाम निवास का पता वहा दूरमाव सभा कार्यालत नो निज्ञा

दिस्सी बाय प्रतिनिधि सभा से सब-भित विन आर्थसमात्रों में प्राय दिक्कण सरमाएँ चन र्ी है उनका प्राप्य विद्या परित्य दिल्ली से विभिन्नत् नविष्यत होना प्रनिवाय है। सभा प्रत्यक विद्यालय में नीतक विका की पुरस्क प्रित्रवातों है, तथा बब बरसान् उनकी परीक्षण नालाया करती है। प्राप्य प्रतने विद्यालय क सबस्य साथ विद्या परिवर्ष स सबस्य साथ विद्या विद्यालय कर हों।

मुक्ते भाषा हो नहीं पूरा विस्वास है कि भाषका सक्रिय सहयोग सभा की प्रवित के लिए भवत्य मिलेगा।

> भवदीय (घनपाल द्याय) महासन्त्री काय लय १६ हनुसान रोड, नई निन्तर १००१

"त्रार्यसमाज सान्ताकुज वेद वेदाग पुरस्कार"

कार्यसमाज सान्ताक्रज की साधारण सभा दिनांक १६ ६-०६ ने कैंप्टिन देव-रत्न बार्य के इस प्रस्टाव को सवसम्मति से पारित किया कि बायसमाज सान्ता-कुज एक स्थायी पुरस्कार की घोषणा करे जिसके धन्तर्गत प्रतिवर्ध ग्रायं जनत के एक विशिष्ट विद्वान को उनकी वैदिक थम एव बायसमाज के प्रति नी नई सेवाबो क प्रति कृतज्ञता प्रकट करने हेत् "बायसमाज सान्ताकृज वद वेदाग पूर-स्कार दिया जाए । इस धवसर पर पुरस्कृत विद्वान को २१०००/ रपनी की यैकी. सन्तन-दन पत्र रखत टाफी व शाक से सम्मानित किया जाए। विदान का चयन एक समिति करेगी जिसमे बार्य-समाज के प्रधान एवं महामत्री धार्वदे-शिक बाय प्रतिनिधि सभा के प्रधान एव बस्बई ग्रामं प्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा धायसमाज सान्ताक्रज की धातरय सभा द्वारा मनोशीत तीन खदस्य होवे । इस धवसर पर सन १६८५-६६ हेत् वाविक निर्वाचन बड सीहादपूर्ण वातावरण मे सर्वसम्मति से निम्न प्रकार सम्पन्न हथा -प्रधान

> निवेदक (कैप्टिन देवरन्न सहामन्त्री







एम डी एवं

COGO

Tracar

महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल का उद्घाटन

मत्रीय द्यानस्य परिलक स्कल का उदयान्न ग्रायनमान मन्दिर राजीरी गाइन मे १७ जीलाई को स्त्री राम गोपाल शासवास के कर कनलों से सम्पन्न हुपा। इस प्रवसर पर महाक्षय घनपाल श्री ग्यदेव श्री रा० धर्मपाल श्रास्भाष द्याय श्रावधवा जी द्यादि महानुभाव उपित वे। बच्ची के ऋषि दयान द महिमा तथा प्रभू मिन राष्ट्रभन्ति के गीतो से जनसमृह भम उठा। श्री शालवाले ने वैदिक मन्तव्यो और ऋषि दयानन्द की शिशा प्रणाली को धरनाने की भी घेरला दी। उन्होंने कहा हमें मग्ने वो भाषा की गुनामी से दचना चाहिए भीर हिन्दी भाषा के उत्थान से सहयोग करना चाहिए । उन्होंने उदा-हरण देते हए कहा-जब विजय सक्सी पहिल मास्को प्रवास के निए सबी उन्होंने स्वालिन को अपने परिचय पत्र दिखाये जो असजो मं से स्वालिन ने कहा या तो हिन्दी ने विश्वाधो या इस की भाषा ने । उन्होंने फिर भारत ने हिन्दो म प्राने परिश्व शिकाये ।

— सवाददाता

श्री जागेराम की इत्या का हार्दिक शोक

दक्षिण विस्ती वेदप्रवार मण्डल के महामन्त्री भी रामसस्य दास धा ने श्री वागेराम श्राम की हत्या पर नहरा दुःल व्यक्त किया है। मास्टर जाने-राम ने गुक्कुस बौतम नगर में कनावें ४० हवार स्पये दान किये थे। और भार्यसमात्र मासवीय नवर भीर काकेल के भवन निर्माश काय के सिए हजारी क्ष्य का बान किया था। वे वेदप्रचार के कार्यों में सदा सहयोग करते पहले वे। वेदप्रकार मण्डम ने दिवनत भारमा के प्रति एक शोक प्रस्ताव द्वारा श्रदा-ञ्जलि वर्षित की है।

बनाता है।

शिकाकाई 'रीठा ग्रावला हरड बहेवा चन्दन व सन्द सर्गाचित बढी वटियों से बनाया गया एव डी एच विकाकाई डाउन्टर एक सरवना लामकारी अस्कृ है। इसने कोई रासायनिक पदान्य नहीं है।

एम की एम शिकामाई शासकर का साम्र है। ही निर्यासस प्रयोग कोडियो ।

महाशियां वी हुट्टी (प्रा॰) स्ति॰ a 44 क्णानिहरमा एरिका, कीर्ति काहर वर्षा विकास 110015 ein 539609 537987, 537341

लिए उत्तम स्वास्थ्य कॉगडी फार्मेसी. हरिद्वार की औषधियां

भेवन करें

शासा कार्यालय-६३, गली राजा केदारनाय, चावडी बाजार, दिल्ली ६ फोन २६६६३६





स्वामी अभेदानन्द

—ग्राचार्य देवेन्द्रदत्त द्विवेटी

करुए। की जीवित प्रतिमा लोक-कह्याण के निमित्त निरम्तर विन्ता-श्रीज त्यागमूर्ति अपूर्व अपरिवही, सपोचन एव बतिसय सनासकत तथा करबेंटेजिक बार्य प्रतिनिधि सना के हिबसत प्रधान स्वा० घमेदानन्द सी शरस्वती के जीवन से सम्बद्ध अनेक प्रसम विस्मति के नहार में क्रमक सीन होते जा रहे हैं। उनके वित्य में बहुत सी बातें मुख्य है। उन वर बबावत प्रकास हालना बाज नितात स्रपेक्षित है । उनका द्वास्त्विक जीवन वल बार्यसमाज के इतिहास की अनेक विच्छित्न कडियों को जो ने में समब होगा। सार्वदेशिक आर्थ प्रतिनिधि सका के प्रधानों में खायद ही किसी प्रधान का नये एव पुराने कानिका-रियो से इतना वनिषठ सपर्क रहा हो ।

में स्वामी जी के जीवन की करि वय सन घटनाओं को निपिबंद करने आ रहाह जो मेरी उपस्थित मे

विचित्र दानशोलता--

एक बार मैं पटना बायें प्रति निधि सभा के प्रागरा में बैठा स्वामी श्री से बात कर रहा था। स्वामी जी पजाब से नीटे थे। वे भपने साथ 'बाबु गोशा भीर निन्ती से गये थे। उस समय प्रतिनिधि सभा के सभी उपदेशक बाहर गये वे। थोड से लोग वषस्थित वे। धत स्वामी जी को जिल्ला की कि वे जो सीगाल प्रकाब से लेकर गांगे हैं उनका क्या किया बाये। उन्में मे पके की कुछ मिला शीर कार मन दसरे लोग जो वहाँ उपस्थित वे उन्हें भी स्वामी जी ने 'विवा । हवामी जी के लिए वह मान

इयक नहीं था कि उनसे कुछ पाने बाले लोग परिचित ही हो। उनके दरबार में सभी तरह के लोग उप-स्थित रहते वे।

इमी बीच पटना कालेज का एक विद्यार्थी भाषा । उसने स्वामी जी के चरसा स्पर्ध किये। स्वामी जी ने उस से प्रधा- कियर चले ही? उसने थाओं ने बाबू भरके कहा - मुक्ते एम ० ए० की परीक्षा देनी है। बेरे पास रुपये नहीं है कि परीक्षा शुल्क दू। में सदैव प्रथम श्रेणी में ही उत्तीर्ण होता हा ह। पिछले वर्ष मेरी मा ससार से चली गयी । और इसी वर्ष चार महीने पहले मेरे पिता जी । वाक्य पूरा करने के पूर्व ही वह फुट फटकर रो पडा। स्वामी जी की भो बालें भर आयों बीर रणते ग्रपती जेव में हाथ डाया-- को कुछ वा दे दिया मिना नहीं । रुपये देते समय स्वामी जी ने उसकी घोर मे मह फर लिया था। इसी बीच टैनीफोन की घटी बजी स्वामी जी मृतने चले गये। बाहर से दक्तर में धारी लोगो से बातों में उलम गर्थ। मैं ने उस विद्यार्थी से कहा मिली ली स्वामी जी ने तुम्हैं कितने रुपवे वि। वह बरता हक्षा गिनने लगा वह इस-लिए डरता था कि नहीं ग्रधिक रूपवे होने पर में लौटाने के लिए न कह द्। उसे मानूम नहीं वाकि यदि मैं ऐसा कहना तो स्वामी जी की दर्दिन मे मुक्त से बूरा कोई मादमी नहीं होता। स्वामी जी ने उसे पन्तह सौ रुपये दिये थे। उस लक्के का नाम मैं लेना नहीं चाहता । वह शांव एक बार्त बड़े सरकारी पद पर है। स्वामी जी दफ्तर से बाहर बाये। उसे कहा - पर तरन्त ही यह बात सामन धाई

के जाने के बाद मैंने पुछा 'उसे रु० देते समय बापने मुंह क्यो मोड लिया ?' उत्तर मिला यदि मैं उसकी भोर देखता तो उसमे हीनना की भावना धाती और मुक्त मे मिथ्याभिमान की। वह सडका जब भीजन करके जाने लगा तो मैंने उस से जानना चाहा कि वह स्वामी जी से कब से परिजित था। उसने कहा में स्वामी की को नही जानता बा मुक्ते पटना विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के धध्यक्ष डा॰ ईववरदत्त नै इनके विषय में मुक्त से कहा कि विना किसी की सिफारिक के स्वामी की से मिलो। वह या तो स्वय सहा-बता कर दगे या किसी से करा टमें ।'

स्वामी जी मपने फटे कपडे पहने रहते वे। उनके फटे कम्बल होते वे। पर नये कपड नये शाल नये कम्बल दमरों को दे देते वे । उनके पास रू तथा सामान ग्राये नहीं कि बाटने की उनमें बेचैनी पैदा हो जाती ही।

राजनैतिक जीवन-

काग्रेस के झान्दीलनो में स्वामी जी धनेक बार जेन गये। यह उनका बानप्रस्थी जीवन था। उस समय बेववत था। जनका नाम भारत के प्रथम राष्ट्रपति देशरतन बार राजे द्वप्रसाद जी ने स्वामी जी से धनेक बार विद्वार ग्रायं प्रतिनिधि सभा के कार्यों से विरत होकर विहार प्रदेश काग्रस कमेंटी के कायी मे रुचि लेने के लिए कहा था। दो बार तो बिहार के मार्थममात्रियों में यह वर्जी बली कि स्वामी जी का बिहार काग्रम का श्रव्यम होन निविचत है। 'भोजन करके जाना।' उस सडके कि स्वामी जी न राजेन्द्र बाद के

प्रस्ताव को मस्वीकार कर दिवा। यदि स्वामी जी चाहते तो अक्तिल भारतीय काँग्रस कमेटी की कामका रिएी तथा विहार प्रदेश के मंत्रि-मण्डल के सदस्य सरलता पूर्वक तैयार है जाते उनकी रहिन में बार्बसवाज उनकी मा बी 1 वे उसे छोड नहीं सबते वे ।

कान्तिकारियों से स्वामी जी के सम्बन्ध-

स्वामी की बड़ी खोटी उस है प्राने एक नके क्रान्तिकारियों सोधा-निस्ट रिपब्सिकन सार्टी तथा समास के 'बन्द्योलन दल सब के सम्पूर्क मे था चुके ये। सर्वजी इस्फाक उल्ला लान रामप्रसाद विस्मिल चन्द्र शेखर आजाद मनवेद्र नाथ राय, सबसेन मोकनाथ बल योगेश चटर्जी वैकष्ठ जक्ल कमलनाय तिवारी. केदार मिण सक्ल बादि सभी स्वामी की को किसी न किसी रूप मे जानते वे। इस विद्याल परिचय का रहस्य क्या था, यह श्रमी तक श्रजात है।

दो ग्रविस्मरलीय घटनाए"-

१६४६ की बात है। उस समय में भारत के सर्वब्रष्ठ हिन्दी दैनिक विश्वमित्र का सपादक था। उस साल बढ दिन की खुट्टियो मे कल-कसा आयसमाज का वार्षिकोत्मव हो रहा था। स्वामी जी निमत्रित थे। वे क्लकता में सेठ ग्रान दी प्रसाद पोहार की सटल एवेन्य वानी कोठी मे ठहरे थे ! उनके साथ प० रामा नन्द शास्त्री सावदेशिक सभा के भ० पू॰ वर्माध्यक्ष भी थे। शास्त्री जी भ्रभी भ्रभी अवान हो रहे वे मुक्ते स्वामी जी तथा शास्त्री की के साथ भोजन करना था। अनेवनोपरान्त नालेज स्ट्रीट में काफी हाउस के (क्षेत्र पूच्ड ११ वर)

सत्संग वाटिका

समस्त वैदिक पर्व, त्योद्वार उत्सव, सस्कार बादि कर्म यज्ञ से ही प्रारम्भ किए बाते हैं। भीर जनकी समाप्ति पर 'ब्रान्ति पाठ किया जाता है कि परमारमा को धन्यवाद है कि सब कार्य विध्न बाधा रहित शान्ति से सम्पूर्ण हुए हैं। इसी प्रवा तथा पद्धति को एक्टि में एख दोनों का समन्त्रय कर उपसहार के ब्राव से यहा पर रखा है। वैदिक जीवन दर्शन मे यज्ञ ही भूनाधार है। शतपथ बाह्यण कहता है यज्ञा वै अं व्यतम कम । यज्ञ सब से अब्ट कम है। ससार का प्राचीनतम ग्रन्थ ऋष्यदका गुभारम्भ ही यज्ञ शब्द से होता है। प्रथम मत्र वहता है - बनि-भीड पुराहित यहस्य देवमृत्वित्रम् । होतार बन्द्रशासम् ।

यज्ञ द्यान्य यज्ञ आस्तु से बनाहै विसका मध देवपूजासगतिकरणदानेयु अयाकरण कह्नता है। जिसकी ∘या⁻या साधारण रूप मे (१) देवपूत्रा ध्रयात् विदालो का यथाथान्य सत्कार (२) सन तिकरण का अथ सामाजिक एकीकरण सहस्रस्तित्व, सगठन, सत्तन समन्वय स्रादि है। (३) दान की अमान्या अपनी शक्ति के बनुसार यथायोग्य समय शाति धन भादि का मनसा, वाचा कमणा शान देना। देव शब्द दिवु घातु से बना 🖁 जिसका सक्षिप्त भ्रय दिव्य गुरा युक्त, जी सदा बिना मागे सब को समान कप से देतवा दिना मूल्य देता रहे। प्रत यज के इन धर्मा कं अनुसार अपने जीवन को यज्ञमय बनाता रह। यहा वैदिक स्रादेश तया भारका है। भन यज मानव को भपने कीवन के दिव्य माग का बोध कराता है। यश के वही तीनो भाव दावानिक दिन् से मानव समाज म तीन रूप लं नेतं है। (१) समन्वय (२) सगठन (३) सतुसन । सृष्टि मे सब बढ बतन पदाय एक दूसरे से सम्बन्धित है। एक दूसरे पर सतत, बनोचित तथा पूरा रूप स निभर है। न कोई पूरा रूप से स्वतन्त्र (Independent) है, न कोई पूरा रूप स दूसरे पर भाषित (Dependent) ह परन्तु श्वापेक्षरूप से परस्पर एक दूसरे पर निअंद (Dependent) है। सब में समन्वय मतुलन व सगठन है। उदाहरण रूप, सूय व चन्द्रमा दोनो घपना घपनी प्रकृति तथा गरा घम व काम की दिट्ट सं प्रतिकृत प्रभाव प्रत्येक जब चतन पर कर रह है। सुय प्रचण्ड ताप ऊष्मा तथा प्रकाश का स्रोत ह । इसके प्रतिकृत चन्द्रमा शांतल-वाप रहित शान्तिदायक बादनी छिटकाता है। परन्तुदानो ही अपनी अपनी कक्षा मे परिश्रमण करते हैं, काई किसी के कक्ष काधितक्रमण नहीं करता है। किसना सगतिकरण, सहग्रस्तित्व, सामबस्य ग्रादि चनता रहता है। मानव हेतु सृष्टि कितना

यज्ञ और शान्ति

—प्रो॰ प्रतापसिह

म्निनिमीळे पुरोहित यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतार रत्नधातमम् ॥



उच्च भादश उनस्थित कर रही है।

वही सहयोग सगठन समन्वय प्रावि मानव को धाने शरीर विज्ञान द्वारा घगों मे मिलता है। मुह भोजन को चवाकर उदर की भोर इंद न मम' कहकर सरका देता है। इसी प्रकार सब ग्रम ग्रपना ग्रपना कम कर शोजन से सार ब्रह्म कर पूर्ण शरीर को पत्चाते है। पेड पौधे वनस्पति औपधि विज्ञान भी यही धादश मानव को दे रहे है। सुष्टि भ्रपना प्राकृतिक सतु-लन सदा बनाए रखती है। जीव सास द्वारा वायुसे भोषजन लेकर कार्बन डाई बाक्साइड खोडता है। वनस्पति इसे प्रहण कर स्रोपजन निकासती हैं। बायु मे गैसो का अनुपात तथा सतुभन सदा चलता रहता है। परन्तु इस कलपूर-मधीन-युव मे नानाप्रकार से वायु, जल,भूमि द्यादि मे प्रदूषसामानव द्वारा हो रहे हैं। जगलो को बिना विचारे काटा जा रहा ह, शिकारी जन्तुबाका नष्ट कर रहे हैं तथा सारह है। जब यह असतुसन मानव-कृत प्रतिकर नेता है तो तसार में रोग युद्ध सूक्षा प्रतिवृष्टि प्रावि का बैबीय प्रकोप के रूप म मानव का श्रीमना प्रता

दानदाता का यह ध्यान रखना भाव-श्यक ह कि दान सुपात्र अथवा कूपात्र को जाता है। उस सदुपयोग तथा दुरुपयोश का विचार रखना है कि दान का उपयोग समाज विरोधी कार्यों मे तो नहा होता है। यज्ञ से यह श्रेष्ठता है कि पासता का प्रश्न ही नहीं उठता है। यज्ञ से उठी सुगन्धित वायुस्य दिशाधी में सुक्स इत्य से प्रसारित हो समान रूप से नित्र, शत्र, ऊष-नाच बादि सन का प₀चती है। क्योंकि अस्ति ने को बाहुति वा जाती है उनके दो रूप हो जाते हैं। बाहुति की सामग्री घी, समित्रा बादि का सुद्धा रूप होकर समस्त वायु मण्डल मे फलकर शुख तथा सुगन्धित कर देता है। दूसरा लाग वज करने वालो तका ब्राष्ट्रति देने वालो के मन व हृदय पटल पर सूक्त प्रभाव पडता है जो सुद्ध मन, श्रद्धा, प्रशिक्ष, तत्त्व-यता से मन के कलुवित दूवित विचार नष्ट कर पुनीत पवित्र भावनाएँ सभारते हैं। यह शाहृतियां यजकर्ता के सस्कार बन धर्मकारूप वारण कर लेते हैं। ग्रीर सुक्तन शरीर का धन वन वाले हैं। मृत्यू पर यही सस्कार भारमा के साथ पुनर्जन्म

ने वाच बेते हैं। जैवा मनु भी ने ममस्त-मनुम्मवित कहा है कि धम्तकास में बमें ही साम बेता है। यह में कमंकाम्ब याज उपावनाकाम्ब दोनों का समन्यव है। इस यह में परनाम तथा लोक अवहार दोनों एक साम प्राप्त होते हैं। वेदिक जीवन वसन में नम्म से मुन्तु तक सोसह स्वाप्तान हैं जिन सब का प्रारम्भ प्रश्न से होता है। जीवन में पाम महान् यत्नी का विधान है। जो बहुग यह वेस यह, प्रतिक्रिय यह, पातृ यह निल्व सेव से उपान्यता है।

यज्ञ में चार प्रकार की सामग्री का विषान है। सुगन्बियुक्त, मिष्टान्नयुक्त, पुष्टिकारक तथा रोगमाशक। इनसे वायु युद्ध होती है तथा भाकाश में वृद्धि अल मे पुष्टिकारक तत्त्व भिनते हैं। इस वर्षा वस से भीवविवा व वनस्पतिया सुद्ध पवित्र तथा पुष्टिकारक होती हैं। जो जीव हितकारी होती है। मानव के शरीर से मल, मूत्र, पसीना ब्रादि निकलने से वायु, जल तथा भूमि भी दूषित तथा दुगन्थयुक्त होती है भत जो इन तथा भन्य प्रकार के प्रदूषणों को यक्ष से दूर करने का प्रयत्न व प्रयास नहीं करते वह सम्भी तवा पापी हैं। महींव दयानस्य ने इसी प्रकरण ने सभी खकाधी का बढ़ी यक्ति-पूरक तथा सतक समाधान किया है, वैसे हाब से होम करते हैं, शांस से देखते और त्वचा से स्पर्ध करते हैं, वैसे वास्ती से बेद मन्त्रों को भी पढते हैं। क्यों कि उनके पढने से वेदों की रक्षा, ईक्बर की स्तुति प्राथना और उपासना होती है। तवा होन से जो वो फल होते हैं उनका स्मरता भी होता है। वेद मन्त्रों का बारम्बार पाठ करने हे ने कठरन भी रहते हैं। और ईरवर का होना जी विदित होता है कि कोई नास्तिक न हो बाए, क्योंकि ईश्वर की प्रार्वना-पूर्वक ही सब कर्नों का बारम्भ करना होता है। सो बेद मन्त्रों के उच्चारण से यह यह में तो उसकी प्रार्थना सम्प्रस्त होती है। इस बिए सब उत्तम कर्म देव मन्त्रों से ही करना उचित है।" नीता मे त्री वस को 'कानवेनु' कहा है।

महामारत काम तक यसो की सहिमा महान् थी। तथा सब सत्कर्मों के खिए किए वाते वे बीर कहाबत बन नहीं वी कि "स्वर्गकानो बकेद" बो सूख बाह्या

है वह यज करे। राजा दशरव ने पूर्वेष्टि यज्ञ से बार पुता रतन प्राप्त किए ने। इसी प्रकार राजसूब, बाजपेब, धन्निष्टोम, बरवमेष, बन्निहोत्र, शन्न्याथान, चातू-र्मास्य प्राप्ति यज्ञों का विवास है। इनका सर्वन समस्कर यज्ञो कारूप विकृत हो क्या । पञ्च भावि काटकर उनके धवों के यज्ञ होने सबे, तथा नरवित भी होने सवी। यत बाममार्गियो के कुश्रमाब से यज्ञशासा वक्शासा तथा कसाई साना बन नई। तभी बीख, जैन तथा शकराचार्य ने इस कर्मकाण्ड की हीनता बताकर उपा-समाकाण्ड पर घरपविक वस दिया तथा फलस्बरूप यज्ञ सस्था विकृत होकर पतन को प्राप्त हुई। सर्हि दयामन्द 🕏 पूर्व प्रताप तथा प्रयास से यज्ञ के प्रमुख्यान का क्षेकाण्ड मे प्रमुख स्वान हो बया। उन्होंने यज को महान् निष्काम कमें सिद्ध किया जो मुक्ति का मार्ग प्रदर्शित करता है। उन्होंने कहा 'अब तक होस करने का प्रचार रहा तब तक मार्यावर्त देश रोगों से रहित और सुखों से पूरित था, अब भी प्रचार हो तो वैशा हो जायगा।

प्रात काल एक दिन वह सन्त कबीर सपने दुव कमाल के बाद ग्रमण को बा रहे के तो माग में देखा कि उस सुक्रावने बातावरण में कही स वक्की चलने की करवराहट सारही है तो उनकी 'सटपटी' वाली कुट पड़ी—

> चलती चाकी देखकर, दीन कथीरा रोख (दो पाटन के बीच मे, सावित बचान कोय।।

इस ससार ने जन्म मृत्यु सुक्त-दुक्त रूपी इन्द्र के चनकर में मानव पिसता रहता है। तंस, नोम सकडी की विन्ता मे परेशान रहता है। जर, अमीन तका जन के कराट में फसा रहता है। कचन व कामिनी की फिक में दुवला होता जाता है। इस प्रकार ससार में विषय वासनाओ पुत्रीयस्मा, वित्तीयमा, लोकीयमा के चक्कर म रात दिन व्याकुल फिरता है। परन्तु भूपूत्र कमाल ने सरल समाचान किया कि जो दाने की की पास रहते हैं वह इस चक्कर ने नहीं भाते, न पिसते हैं परन्त कीली के पास सुरक्षित रहत है। इस सामारण उद्गार मे एक महान् साम्या-रिवक सन्देश खिपा है। वह सस्य है कि जो अपनित ससार के विवयमोग में सिप्त रहता है, वह जन्म-मृत्यु के चक्कर से पड़ा दुस दर्द में फसा रहता है। जो पर-मात्मा के पास है वह जन्म मृत्यु के चक्कर से मुक्त हो जाता है। जढ वानी को नही मालूम है कि वह की सी के पास होने से दोनों पाटों के बीच मे आकर पिसने से वच वाते हैं। परम्तु अथववेद का सब 'बन्ति सन्त न बहाति सचेत करता है कि को उस परमात्मा रूपी की सी के पास हैं चन्हें परमारमा नहीं स्रोक्ता है तो बह्

(श्रेष पृष्ठ ७ पर)

धर्म-प्रचार के नाम पर राजनीतिक षड्यन्त्र

लेखक-रामगोपाल शालवाले

चेन प्रविधादित वार्य वर्ग एक घरन चलानमें करोड उनलीत साब उनमाब हमार पिमाडी वर्ग पुराना है। कुरान के प्रमुखार इस्साम सत की बाजु सममन तेरह सी नक्षे वर्ष की है। ईसाई कत इंसा के बन् के प्रमुखार १८८४ वर्ष का है।

साब हुमें विचार करता है कि बार्य वर्ष वो सवार वे सब से पुराना है, जिसका चकर्यी वाझान्य पुरातन काल से समूचे सशार पर बासन करता मा, निवके विद्यान दिशों में चाकर प्राणियान को पर्य की सीवा विचा करते से, जिसका वैषय भगवान् मनु ने निम्नतिशिवत शन्यों में वर्तन किया है—

एतह्रेशप्रसूतस्य सकाशात् प्रयजन्मन । स्व स्व नरित्र शिक्षेरत् पृषिव्या सर्वेषानवा ॥

कभी ऐसा स्वर्णिय समय था, जब धपनी-श्रवनी रुचि के धनुष्ठार विदेशों लोग इस पबिल भारतभूमि पर हर प्रकार की विद्या पश्चे के लिए धाया करते थे।

क्षमय बदल गया। राज्यसता क्षित जाने स साग डाला उलट गया। स्रमेत्री राज्य के प्रभाव से भारतीय विद्यालियों को बडी-बडी डिग्निया लेने क क्षिए इस्लंड का दरवाजा दलना पडता है।

पुशातन काल से हमारे नुष्यन विदेशों से आकर घन भीर नांति का प्रवार किया करत में। सहाराज दशरण न पुत्रिन्यम के निमित मुख्यिक्य से पूछा। कि इस सहान् यम का बह्या किस बनाया आप ? उत्तर मिला—बाल सहायारी ऋषिप्रस हा इस महत्वसूष्य या का सम्पादन कर सकत है। सहा-राख ने पाताल दश [समरीका] के सहिंद ग्रंथों को पुत्रेष्टियज्ञ सम्पन्न करते के सिष्टिनिम्निन्त किया।

इस प्रकार वेदिक विचारवारा का प्रमाव भारत हो नहीं, समूच ससार यर फैला हुआ था। हमारे लड़ान् प्रचारक विदेश में वैदिक संस्कृति के प्रसार मे ससान वे। बारे संसार में आनन्द हो झानन्द वा। मानवता फल फूल रही थी।

समय ने पलटा साया। महाभारत के युद्ध में भाई ने आई का गला काटा, यह कलड़ का प्रारम्भ हमा । परमाथ का स्थान स्वाम ने लिया । विदेशो म प्रभार एव राज्य करन का बात ता दूर रहा, मपना दश ही विद्शायों के पादाक न्त हा गया । सातवा शताब्दा म भरव क १८ वर्षीय युवा मुहस्मद ादन काश्चिम ने इस्लामा साम्राज्य क लोभ संखिन्य पर बाक्रमण किया बौर लगभग ३-४ हजार झरबी मुसलमानो ने भारत-मूमि पर पर रखे। हमारे देश पर बबनो का बहु पहुला भाकामण था, सत्त्रश्यात् दर्श खेंबर के सीमान्स के रास्त इस प्रकार क इस्लामा बाक्रमण होते ही रहे और सारे भारत पर इस्साभी साझाज्य छा गया। राज्य सत्ता के बस पर इस्नाम का प्रचार किया बया। तलवारों को खाया से कलमे पढाए गए और बाब वर्म की पुरानी मर्यादाश्री को नष्ट भ्रष्ट किया गया। महाविनाश और पराजय क महान्वकार-मन बाला वरण में अत्रपति शिवाजी, नहाराता प्रताप बन्दा वार वैरानी भौर कितन हो हिन्दू बीरो ने भाग बढकर भनेक प्रकार की यातनाएँ और दूख सह-कर राष्ट्राय नर्यादा और वर्ग की रक्षा की । औरगजेब की वर्गान्वता से देश का हिन्दू प्रजा विक्षु व्य हा उठा था। खत्रपति । श्रवा जा की वोरता और नीति से इस्सामी साम्राज्य पैर सुकेडने सवा, किन्तु अपनी ही बान्तरिक फूट भीर स्वार्वपरायणता से ईस्ट इण्डिया कम्पनी के रूप मे व्यापारी बन कर अग्रेज ने भारत म पर जमाए भीर देखते-देखत सारे देश पर यूनियन जैक फहराने लगा। अग्रेजी राज्य के साथ ईसाई मिशनरी भी गरीशे की सेवा और वर्ष का बहाना बनाकर भारत में कार्य करने लगे। इससे पूर्व सन् १२६१ ईस्वी में पीप निकोलस (चतुय) ने कोहन कार्निबी नामक ईसाई मिसनरी को चीन देश ये भेजाबा। चीन जाते हुए वह जारत मे ठहरा बौर यहा १३ मास तक रहा। भारतमूमि पर पाव घरने वाला यही पहला ईसाई मिशनरी था। अपने निवास-काल में इसने भिन्न भिन्न स्थानों पर संग्रंग १०० व्यक्तियों को ईसाई बनावा ।

इसके परचात् फंच मिखनरी झावा। वह सन् १६२३ में बन्तई के तट वर उत्तर, परन्तु चौबहुवी सती के समान्त होने से पूर्व ही सूरीप के बनेक ईंगाई विस्तारियों ने बन्बई सीर ट्रावनकोर के मध्य के परिचनी चाट पर कई ईसाई वर्षान्वेश स्वापित कर निये थे। पूर्वमान का कूर लुटेरा वास्कोटिगामा वब ११०२ ई० में दूसरी बार कारत में माबा तो उसे भारत के परिवसी तट पर ईवाईयों की विस्ताया देककर बारवर्षे हुमा। इस ईवाई वस न माने राजा और मानने प्रदेश के विश्वास्थात करके ईवाई नुटेरे भी प्रापीनता स्वीकार कर सीर

भारत में पूर्ववाल साझाज्य के सस्यापक धलई-सी धव्तवर ते १ १० के कर १११६ तक पांचा घोर लगा के प्रध्यवर्धी समस्त मुद्दी तट पर दासन किया, उसने तस्याद धौर खाग के वल पर ईमाऽयत की जब जगाई, उसने परिवामी तट के मुसलमानी को सपने प्रतिभोक्त का लहव बनाया।

पर्तमाल के राजा को गोवा से भेजे गा झपने एक पत्र में बह गोवा के साक्रमस्य का वस्योग इस प्रकार करता है —

'तब मैंने नार को जलादिशा भीर जाम मन भ्रया उसा को मौत के बाट उतार दिया। भ्राश्के लोगो न लवात रक ई दिन नक लून बहाने का काम बालू रखा। जो भी सामने भ्राया भीर जहा कही पत्ट गया, बही पर मार डालागया। भ्रुसलमान तासायद ही कोई वया हा। उन की महिनदो म भ्राय लगाकर उन्हें नट भ्रटर दियागय। हनारी गणना क भ्रमुक्तार ६००० व्यक्ति मार डाल्य यंबहुत से मुल्यम पुल्य हिन्दयीन। भ्रमुसर मरे।

मेर न्यामी 'यह काय महन्या जा सम्ब्री तरन हव म निपासीर पूरा किया गया। मैं मुनलस नो ना निसी ्यासन या कव न यहानही रहने देना। जो जीवित बन्दी बनाए गये मैंने उन्हें साग ने भूतन का स्नाहों दी है।'

(श्रीयुत मिलाल सी० पारिल कृत भारत में ईसाःयो द्वारा घम परिवतन पृष्ठ ३६३७,१६४७ कासस्करण)

(जसश

श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक महमन्यादक मार्वेदशिक को श्रद्धाञ्जलियां

स्रायसमः व दीवानहाल दिल्ली में भी रपूनाव प्रशाद र उक्त की श्रश्र विल सभा स्रायाजित की गयी। इस स्रवसर पर श्री रामग पाल जालवाल श्रा सामग्रकाल त्यागी, श्री सोमगाथ मरवाह श्री नूरदेव श्री मुलवन्त गुग्न स्रादि महानुमाव उपिथला था। सार्वदेशिक स्र ० २० समा के प्रथ न श्री र मा। ाल सालवान ने कहा के सनीवे विदान, लेकनी के बनी घर सायसमात्र के दावान वे। सायसमात्र के टीवहास का उन्हें भनोत्ता न न भीर स्मृति थी। बृद्ध हो आने पर भी व सनिस समस तरक कश्मील वने रहा।

श्री सोमप्रकाश त्यांगी ने कहाश्री पाठक श्री के साथ एक युग को स्रोक स्मृतियाँ बुझी हुई है। वे मुखोय पत्रकार तो ये ही जुखन कार्यकला नी थ। उनके झानिश्य सोर सहयोग ने मचा के प्रमुकणत्र का कास प्रगति पर रहा। वी सोमनाय गरवाह सौर श्री प्रदेव, श्री यूल पत्र गुप्त ने भी घर्मी श्रद्धा उन्हों सुष्ति की।

श्री रखुनाथ प्रसाद पाठक की स्मृति को विरत्यायी करने के लिए सावदेशिक समा में पाठक जो कनाम पर पाठक स्मृति निधि स्थापित की गई। इस निधि में प्रतेक लोगों ने श्री रामगोपान सासवाल श्री सुमनारायण नामां, श्री केशावल्य पाठक, श्री राधाकृष्ण समा श्री बहुबदत स्नातक श्री कम-नेया कुमार, श्री बायुदेव विद्यार श्री कुनवन्द्र नो ग्रादि ने एक हजार में सेक्ट एक सी एक तक की दान राजि प्रसान की।

डा॰ सत्यकेत विद्यालंकार गुरुक्त कांगड़ी के कलाधिपति

नहें दिस्सी १० जोसाई । गुरुहुस कागड़ी विश्विण्यासय हरिद्वार के कुझासिपति पद पर भी डा॰ सस्यकेंद्व विद्यालकार नियुत्तत हुए। श्री डा॰ सस्यकेंद्व विद्यालकार नियुत्तत हुए। श्री डा॰ सस्यकेंद्व विद्यालकों के लेलक गुरुहुस कागड़ी के पूर्व कुसपित, वर्षनी से श्री॰ निट की उपाणि प्राप्त है। उनके हुलाधित नियुत्तत किये जाने पर सार्वेसत नियुत्तत किये जाने पर सार्वेसत नियुत्तत किये जाने पर सार्वेसत्त ने दूष की सहर की समी।

-सवाददाता

कुण्वन्तो विश्वमार्थम् 'के स्वर को निनादित करने वाले महर्षि दयानन्द एक यूग-द्रष्टा थे। उन्होंने यूग-बोध की स्थी-कृति ध्रपने जीवन द्वारा प्रदान की है। चनका जीवन ज्योति पँज रहा है तथा वह न अ ने कितनी जीवन -ज्योतियों को श्रदानन ज्योतित करता रहा है। उनके चीवन का ध्यय व्यक्तिगत नहीं, प्रवितु समध्यात है। उन्होने स्व को नहीं भ्रमितु पदाध को ही साधन एवं साध्य बनाया। ऋर्षित जीवन को एक सजग प्रहरी के रूप मे देखा। वे निद्राएव सानी से प्र दूर भागते रहे है । दयानन्द सपनो पर नहा प्रपितु सतन कमं पर विश्वास करन वाला एक सज्य योद्धा था। कर्मठ का एक बादर्श होना है सरना नहीं। बत हुम यह भी कह सकते हैं कि महचि दया-नन्द कं बादशों का भारत।

विव्व को भाग बनाने का सकत्र ऋषि दयः नाद राजा। भागे से ताल्यमें ही किसी एक वन से नहीं प्रतितुक्षेष्ठ मानव के निर्माण से था। मानदोत्तर संस्कृति की सरवाता ही धादकं था। मानवोत्तर संस्कृति का निर्माण मानव को केंद्रतर बनाने से ही सम्भव था। भानव जीवन में मानवीय मुल्यों की स्थापना युग की महती प्रावश्यकता थी। म नवीय मून्यो का ह्रास होताजा रहाथा, जो भारत की गरिमा को नव्ट कर रहा था। ऋषिकाजीयन,चिन्तन दर्शन एवं व्य-वहार भारत की मृत्राय आत्मा के लिए सत्री नीसिड ह्या। विभिन्न प्रशार के बाद विवाद एवं मत सना-तर में उल भा भ।रतकाभवित्यत्रकारमञ्जू। उस भाषकार में ज्यानि कव त्यानन्द का उदय द्याशाकी किरण के रूप में प्रस्कृटित

मतमा,वावा कर्मणा ऐक्य के स्थिति ही पुरुष को गहापुरुष बना देती है। ऋदि दयानन्द्र मन वचन एव कर्म से एक रूप थे। कही भी उनके जीवन में बदलाव व बिसराव नही रहा। मन से एक दढ सकल्पवान् भाजेय, वाणी से भो अस्ती व तेजस्वी तथा कर्म से भटल प्रुव योगी ऋषि दयानन्द थे। ''तमसो माज्योतिर्ग मय" के न्यहार साधक ''धसतो मा सद्ग सब की प्रतिमृति दन गये। "त मे मन बावसकरूपमस्तु" की कल्याणी भावना स युक्त 'सर्वे भवन्तु सुश्चिन" का साकार **रूर प्रतिष्ठित करने वाले ऋषि दयानन्द** ही में। ऋषि दया न्द ने उद्बोधन का कार्यं किया। उहोन एक नयं भादर्शका सन्मार्गं प्रशस्त किया। वस्तुन दयानन्द द्यानिचान ग। वही उसका ग्रामन्द तथा वही उसका मृत्व था। वह जो चाहता था वही करता तथा उमकी ही उसकी भ्रापेक्षा ीयी।

स्त्र- याने प्रतिसञ्ज्ञाता के माव काल्यम सा ऋषि दयानन्द से ही श्रो लालमन बार्यं निबन्ध प्रतियोगिता मे द्वितीय पुरस्कार प्राप्त-

"महर्षि दयानन्द के सपनों का भारत"

--- डा० सूर्यप्रकाश विद्यालकार के० एव० १४७ कविनगर, गांवियाबाद

हाता है। उन्होंने स्पष्ट रूप से सर्वप्रका उद्योगित किया कि भारत की स्वतन्त्रता प्रति प्रावत्यक है। उनका यह कम बीज मन्त्र तिब्र हुया कि विदेशी राज्य प्रच्छे से प्रच्या तथा स्वदेशी राज्य हुरे से हुरा क्यो न हो? पर तु स्वदेशी राज्य ही भेष्ठ है। देश प्रेम का उष्टक्तम भाव स्थानम्ब के द्वारा प्रवारित किया चया। स्वतन्त्र भारत का मपना ही स्थानन्द का महत्त्व प्रण सत्ता था।

जनने व जन्म मुनि के प्रति गौरव-प्राव पर्रव करने वाले द्वानन्द ने विदेशों गावा का पूर्ण रूप से विद्वानन्द ने विदेशों गावा का पूर्ण रूप से विद्वान्द किया है। वे राष्ट्र म गा स्थित के प्रेमी के। उन्होंने प्रवंते प्रन्ती का प्रययन सस्कृत प्रवचा हि-दी में ही किया है। वे इस सदम म 'सत्यार्थकतागं 'की भूमिका ने लिखते हैं, आ समय मैंने पह मारावश्वका बनागा या उब स्थाय उससे पूर्व सस्कृत भ यक करने पटन पाठन में सस्कृत ही बोलने मोर जन्मभूमि की भागा गुजराती शने के कारण गुक को इस भागा का विशेष परिजान न या। प्रक भागा निक्रने सौर बोलने का सरमार हो गया है '

कवि दवानन्द की सपेया भारत को टजप्रका तब प्रतान कप में देखने को स्वी । बहु भारतीयों के ज्यवन्नत कि विश्व क द्वारा ही समस्य थी। चरित्र तमांखा ही ऋषि का उद्देश्य था। चरित्र का पतन तिमन्त्रमा कि ततक उस समस्य पहुष गया सा। 'सस्य वंशक्षाता की रचना द्वारा ऋषिने पन व्यव्हें भारतीय चरित्र की स्थाना । व तीने मारतीयों के चारि-तिका न व निष्दारण य जान को प्रमा । र मना।

ग प्रिताश्चाकः प्रयत्न स्वाधी वा के ए सम्म स्थायप्रकास ' के प्रसम्म स्थायप्रकास ' के प्रवास हो साम स्थायप्रकास ' के प्रवास हो प्राप्त हो तहे हैं स्थायप्रकास के प्रवास हो प्राप्त होती है तथा स्थ्य से विद्वास की प्राप्त होती है तथा स्थ्य से विद्वास की प्राप्त होती है। इस वर्ष कल्य की भावना को बहुए कर के सरवाम सिभवत पहले निय सवस बा को, पर-तु प्रियाम उवक्ष प्रवीच प्रमुतीपन रहा है- प्रमुत्त प्रवास हो से स्थायप्त प्रवास हो से प्रवास विद्वास प्रमुतीपन रहा है- प्रमुत्त प्रवास विद्वास प्रमुतीपन प्रवास स्थाय प्रमुत्त प्रवास करने प्रवास व्यवस्था स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स

ऋषि दयानन्य से प्रेरित तथा उनके प्रादशों काही मूर्तीकरण है।

ज्ञान एव निष्ठा से जीवन एक सावर्श को प्राप्त करता है। उसी खदर्श की स्थापना के दिस ऋषि ने जीवन की प्रारम से ही सवारने का प्रयास किया। जान के क्षेत्र मे द्यानन्द के इस विचार ने का वि-कारी परिवर्तन किया कि ''बेद सब सस्य विचामी का पुस्तक है।"वेद जो गडरियों के गीत बताये गये वे ज्ञान की ही नहीं, श्रपितु सद्ज्ञान का भी श्रादि कोत बन वये । वे ज्ञान-विज्ञान के सक्षय भण्डाण बन गये। वेदो की श्रवस नीति की वाराको पुन प्रवाहित किया गया । वेदो की मदाकिनी कल-कल निनादिनी बनकर जिज्ञासुची के जीवन की सगीतमय बनाने लगी। वेदो की पुन स्थापना ही ऋषि दयानन्द का स्नादर्शया।

महर्षि दयानन्द वेदों के परिप्रेक्य मे बादशं मानव एव चरित्रवान् भारतीय की सृष्टि करना चाहते थे। भारत से नान एव शिक्षा के क्षेत्र में पाञ्चात्य भन्धानु-करण या इस ग्रन्थानुकरसाकी भावना काऋषि दयानन्द ने प्रवस विरोध किया। उन्नोन भारतीयों को धवने ही दर्शवामे देखने का सुकाव दिया। दूसरी के रतीन चरमो ने जहा मत्य झमस्य हो जाताथा बहा बसरा मत्य प्रतिभ सित होता था । सत्य का गोपन ही घात्य हुवन है। इससे "का काई ग्रागंध संभव नहीं है। सत्य का बारानच्य प्रस्तुनीकरण ही दवानन्द के जीवन का ध्येम था। इसी मादर्श पर भारत का पुनिर्माण करने का प्रयास ऋषि दयानन्द ने किया। सदैव ही उनके विचार कर्म तथा सकस्य इसकी पृष्टिः करते रहे हैं। भारत के पूननिर्माण के लिए उन्होंने वेदानुसार वर्णाश्रम व्यवस्था को स्वीकार किया।

वैदिक वर्णात्रम व्यवस्था की स्थी-कृति वैद्याश्वत एव साम जिक बीवन को स्वेयपूर्ण बनाना था। वर्ण जहा क्यान्य स्वासामीक भितन्द्रश्वत है वहा खाल्यम उसके समाज का वैवित्तकरण है। वर्ण विज्ञावित कर्यान्यार हो, यह क्यिक सा स्वपना था। यही वैद्या एक व्यवस्था है। कान का प्रियन्त्रश्वता बाह्यण, पौरूप प्रवास अर्थन, कर्मठ वैदस एक सेवा-वाक को स्वीकार करने वाला जूद वा । मध्यकुत में बहा वर्षीकरस्य वस्त्र से ग्रहण दिवा जाने बचा । बाह्यस्त्र को वेटा बाह्यस्त्र हो रक्का, बाहे वह कर्म से सुद्द हो । ऐसी निविक वार्यास्वितिमों में व्यक्ति वी । सन्दोने जातिकत मनोवृत्ति का नास करके सभी को सार्वजाति में ही समाहित किया । उनकी सार्वजाति में ही समाहित हक्यो वला के स्वत्र स्वा का प्रवा न समाव्येत्' तवा "सारमन प्रविकृतानि परेवा न समाव्येत्' तवा "सारमन प्रवंकृति के हारा समस्त्र प्राच्या को प्रति स्वा का प्राच्य वा वा नव वे अपनि स्वा ।

जीवन को चार सोपानो, ब्रह्मचर्च, नुहृस्य , बानप्रस्य एव सन्यास बाश्रम से विभाजित किया गया। ब्रह्मवर्थं साश्रम ज्ञान एव निर्माण का भाश्रम है। गृहस्थ माञ्चन कर्म का ग्राथम है। वानप्रस्थ सामाधिक कल्यास का बाश्रम है तो सन्य स उपासना एक द्यानस्य का साध्यम है। जन्म लेते ही शिशु ब्रह्मचर्य साधम मे प्रविष्ट हो जाता है। माता निता एव बाचार्य उसके क्रमश गृद है जो उसकी ज्ञानार्जन में सहायता करते हैं--- 'मात्-मान् पितृमान् सावासंवान् पुरुषो वेद। धानार्यं का स्थान माना-पिता के सनग्तर है। प्राचार्यकातास्पर्यक्षेष्ठग्रावरण गला है। प्राचार्य के पास गुरुकूल से वालक ध्वय के सगभग पहुँच आसे। वहीं वह उच्च शिक्षा एवं दीक्षा को प्राप्त करे। शिक्षा जहापच का विस्तार करती है वहा दोक्षा उसको सत्कार देती है। बाज शिक्षा का तो अथापक प्रचार है परन्तु बीक्षाका नही। विना दीक्षाके णिक्षा जीवन का स्थावहारिक स्था नहीं वन सकती। जिलामे जहा प्रदण करने की भावना है वहा दीला में त्याय एव समर्गं की नावना है। झाज दीना प्रारम किय बिना ही दीक्षान्त समारोह प्रायी-जित हो जाते हैं। किमनी बढी विस्नवसा है यह दीका की भावना को पूर्ख रूप से ग्रहण करना ही पूर्ण शिक्षा है।

ऋषि दयानस्य गुरुकुकीय शिक्सा पढिति के सम्बंक थे। गुरुहुस में आचार्य के पूर्णसन्धरण में शिष्यक निर्माण होता है। उमे कठोर धनुशास्त्र में सहकर जीवन का निर्माण करना होता है। खिच्य अहा गुरु को धननी से गएव भक्ति से जीतता है, वहा गुरु विख्य का पालन पोपण प्रपनी सतान की तरह करता है। वेद में गुरु शिष्य का पालन पोदशा झपनी सन्तान के समान करता है। वेद मे गुढ शिष्य के सम्बन्त की न्यन्ट करते हुए कहा गया है कि जिस प्रकार माला-पूत को गर्म मे बारण कर पामन दोवता करता है. उसी प्रकार नद शिष्य का पालन पोचल करे। पासन पोन्क नि धनुशासन के (शेष पुष्ठ ८ पर)

इतिहास की एक अभूतपूर्व

२६ विद्यान्यर का दिन हुम झायों के सिए बड़ा ऐतिहासिक सहस्य रसता है। । यह वह दिन है वब झायेवमान के एक लोकिएन विद्यानिक विद्यानि

२३ विसम्बर १६३० को पत्राव विश्वविद्यालय का दीक्षान्त समारोह या। डा० राधाकुष्णन ने दीक्षाम्त भाषण देना था और पवाब के तत्कालीन गवनैर SIr GEOFFREYDE -- MONT-MORENCY सर गोफरे इस समारोह के बाध्यक ये। समारोह एक हाल में रखा गया । सुरक्षा के कडे प्रवच किए गये । फिर भी पुलिस वा गुप्तवरों से वयकर एक क्रान्ति बीर स्नातक के देश में शब्दकीय में पिस्तील द्विपाकर मन्दर चला गया। इस कास्तिवीर का नाम या हरिकिशन। बहु कुर्सी पर उठा भीर गवर्नर पर निशाना समाया। गवर्नर घायस हुमा। उसके साथ उस का बचाव करने वाले पुलिस कर्मचारी भी हरिकिशन की गोलियों का निशाना बने ।

गवर्तर वस गया क्योंकि उसके साथ द्वाः राजाकृत्यान से। कान्तिकारी बाः साहस को स्थाना बाहता था। बाः राजा क्रम्यन ने स्वय १८६६ में कहा था सि मुक्ते बचाने के सिए उस विद्रोही सीर मुक्क ने सालवानी बरती। इसलिए गवर्गर सामल को हुमा परन्तु वस गया।

इस घटना का प्रत्यन्त गौरवपूर्ण पहुनु
यह है कि बीर हरिकिशन को उसके
पिता बात बुरबास मन की ने स्वय दुस्त निवानिकान बनाया का। नात गुरबास मन ने १६ विसम्बर १६३० की प्रिय पूत्र को साहीर के लिए स्वय विशा किया। वह नीसहरा तक उसे खोडने स्वय आए और सुक्त मुक्त या बलाय कार्यस्थिति की प्रेरणा देते हुए यहा तक कहा कि यदि कार्य में सफन न हुए तो बर सल काना। मैं तुम्हें नोसी से मार

तस्यामञ्च-

२३ विवासर का बिन हम बायों के आर्यसमाज के इतिहास के लुप्त-गुप्त पृष्ठों का अनावरण

आर्यों की वीरगाथा-४

प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

द्वा। पुत्र ने रिताको बादनस्त किया। रिता बानता याकि पुत्र मृत्यु के अवडों मंबारहा है तथापि बीर पुत्र को दब प्रकार विदाकरने का दूखरा उदाहरसा निवना इस पुत्र में प्रतिकटिन है।

जब हरिक्खन जो को नो जून १६३१ ईस्वी को मियावाली जेल में कांसी बण्ड दिया बया। उसके २७ दिन पण्डात् जो गुरवास्थम जी भी घयेंगी शासन से जुमते हुए मैदान में चल बमे । सात जलाई १६३१ हैं० को नह प्रायेंग हारा चलाए वये धमियोगों के निए मर्दान गये थे। ला० गुरवास्थम जी ने घरने बच्चों को देशभक्त, वीर, शिस्ट व धार्य बनाने के लिए सदा यन्त किया। नह सीमा प्रान्त में हत्वे परस्तु बच्चों को धार्य स्कार देने के लिए सीरोजपुर के एक धार स्कृत में भेजा।

वह रहमत लाकौन था?

प्रतिवर्ध नेता बी सुभाव बन्द्र बोस के जन्म दिन पर अपने वाले लेखों में एक व्यक्ति दुस्तत लो की वर्षा होती है। यह नह अपित या जिसने नेता जी को एक मुस्तसान पठान के बेध में देश से विदेश पहुँचाया। दुनंत्र पथ, पैदल कष्टप्रय सामा। स्थान स्थान पर पकड़े जाने का स्थाप परन्तु नेता जी को इस साहसी पहुंसल लाने तक्कुणन विदेश पहुँचा दिया। प्रमेजी शासन देशता ही रह गया।

यह रहमत का कौन या? यह दीर हरिकिशन के समे भ्राता श्री अक्तराम की थे। भ्राप भी फीरोजपुर में भ्रायं कुमार सजा के मन्त्री भी रहे। इन प्रसा-

नीरों की झौबंगाया पर किस देशभक्त को अभिमान न होगा। आज आवश्यकता इस बात की है कि घन की बोलुपता को तज कर आर्थ सन्तान अपने शात्र नेज को जनाए।

ग्रौर वह भी बन्दी बन गया —

इन्ही हरिकिशन के एक भीर भ्राता श्री ईश्वर दास भी सभी किशोर सवस्या में थे कि मम्रेज की जेली मे बहा बन्दीवनाए गये। ग्राप एक दिन द्यायसामाजिक कार्यके लिए मेरे गृह पर पचारे लो एक घटना मुनाई। प्रापने कहा कि एक बार मुक्ते ग्रीय्म ऋतुमे जेल की कोठरी में बन्द किया गया। राति के समय मैं मूज की चटाई पर सोबाहुमा थाकि मुक्ते ऐसासगा कि मेरे सिर के नीवे कोई जन्तुसरसर कर वल रहा है। मैं उठा भौर भपनी कोठरी के बाहर खनाकों के पास लडे सन्तरी से कहा, मुक्ते भापनी टार्च दो, यहाँ कोई बन्तु है। उसने मुक्ते टार्चदिया। मैंने देखा कि मेरी चटाई पर एक मोटा विच्छू था। मैं इसे जूते से मारने लगातो उसने मुक्ते भपनी सगीन दे दी। मैंने उससे कहा, रहने दो। प्रात यदि इसका पता लगा कि तुमने हरिक्शिन क्रातिकारी के राजदोही भाई को कोठरी में समीन उतार कर दी तो तुम्हारी नौकरी भी वावेगी।

परन्तु वह सन्तरी बायुक होकर होना, क्या पता मैं कब तुम्हारे साथ झा बाक। किच्छु बारा क्या। बोठे ही दिन में बह सन्तरी नोकरी छोड कर राज्योत कन गबा स्नीर वही दिवस्त से के पास केल में पहुँचाया गया। तब युवा वर्ष

नीरों वा देवमक्तों हे प्रेरशा पाता था। शास मोगवार के कारण किसी पुरक पर तिकक, सावपत, सावरकर, सुभास, पटेल वा रामप्रसाद भारि वीरों के जीवन का प्रमाय पढ़ता ही नहीं। यह प्रदृत्ति वदकती होंगी।

यह थे चन्द्रदेवसिंह सिद्धान्त किरोमणि

'झायंमित्र' से तैने एक लेख में रकत साझी बीर रोगनिंछह की सन्येष्टि की बचां की बी। उसमें विश्वप्रकाश से हुई अपनी बातशीत के सामार पर निसा वा किएन रोगनिंछह जी के पुत्र सहा-विद्यालय ज्वालापुर से प्रयाग से प्रनित्म सरकार के विल् सार थे।

माननीय श्री बहादत बी स्नातक ने सावंदेशिक सभा से मुक्ते लिखा है कि बीर रोशनसिंह के सुपुत्र का नाम चन्द्र-देवसिंह मिद्धान्त शिरोमणिया । वह गुरुकुल बृत्दावन में स्नानक जी के सहपाठी वे ग्रीर गुरुकुल वृत्दावन मे तब शोक सभा भी हई भीर शहीद की ग्रन्त्येष्टि का प्रयाग में लिया चित्र शहीद ने पैत जगदीशिंड के पास स्नातक जी ने देखा। श्री विद्वारकाश जी को भी त्व पक्का याद न या कि शहीद के पुत्र किस गुरुकुल में पढ़ते थे। मैं पुराने मार्थों से शहीद के पुत्र का नाम वा उनके गुरुकुल कापता करता रहा। ग्रच्छा हुआ। जो मान्य स्नातक जी ने सारी प्रामाणिक वानकारी देवी।

वीर लेखराम का चरणानुरागी छोटे व्यक्ति भी कई बार बडा

ह्योटे स्थलित भी कई बार बडा प्रद्मुल कार्य कर दिलाले हैं। श्री प० स्थानतः म जी हरियाला के एक दरक प्रकृति के समनो देशक थे। वह प्राय प० बस्तीराम जी के भजन गाया करते थे। उनके एक पुत्र का नियम हो गया। प्रत्येपिट करते ही गानीपत सार्यकास कं नगर कोर्तन से माग सेने चले गये। उनहें रोका गया तो वह बोले जे, होना बातो हो गया। सक मुक्ते चलना चाहिए। धायसमाल का उत्सव नहीं विषद्गा चाहिए, प्रत मैं चलता हू। हुम किवन कहली हैं, इन पुन्य पुल्यों के।

किशोरमञ्च-

याज्ञवल्क्य और मैत्रेयी

प्रस्तोता बसबीत शास्त्री

याज्ञसस्य एक ऋषि थे। वे बढ़े विवान के। उन्होंने अच्छी तरह है विधा प्राप्त की थी। धपने समय में वे बढ़े प्रदिक थे। राजा जनक के दरदार में जी गये। वहां पर भी उनका बडा सावर हुवा था। उनके वे। दिकार्ग थी। एक का नाम कालावनी था और हुवरों का नेमेपी। कालावनी खबके बाद अववहार करने में चतुर थी। ऋषि उसे बहुत बाहुते वे। मैंत्रेमी का मन ससार के कार्मों में नहीं जगताया। वह भारणाकी उल्लिक के बारे में सोचाकरती थी।

याज्ञवरूप जी ने वहुत से यज्ञ कर-वाये थे। उन्होंने वहुत से पण्डिकों को हरावा था। वहुत से राजा महारावा उन्हें कुद जानते थे। उन्होंने वहुत वन कमावा या ।

त्याज से मे मिलता है। हमें सम्यास नेने के लिए सब चीजों ने भोड़ छोड़ देता शाहिए। जब तक हम चन दोनत से प्रेम करते हैं, तब तक तपस्या नहीं करसकते।' मैत्रजी ने कहा- 'वरि घाट इस चन दोलत में मुझी नहीं न सकते तो मैं कैसे बन सकती है। मैं भी ये सब चीजें नहीं लूंगी और तपस्या करूगी।

याज्ञवस्वय जी यह मुनकर वडे प्रधन्न हुए । उन्होंने कहा-'तुम ठीक कहती ही । संसार की चीजों से घारमा की उन्मित करना चाहती हो तो सब चीजो का मोह

(शेव पृष्ठ = पर)

व्यासपीठ---

उपनिषत् कथा माला-११

निर्लोभता

लेखक-स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती

बात की अरूरत नहीं। उनके लिए तो

वेदों से सनुष्य जीवन के सुवार के लिए जीने प्रकार के सावेश किए हुए हा काण्य यह है कि वित सनुष्य-जीवन सुप्र ज य तो सखार के समस्य प्राणियों को सावेश किए सम्य पर पर तो सबस्य का जीवन विकृत हो जाए तो उसके जीवन का प्रभाव प्राणियां कर नुराण्डता है। प्रस्तवन्य सनुष्यों ने एक साव मिसकर, साथ में बैटकर हानि सीर लाभ का विवार रूर रखा है। जैवे वेसो —

एक मनुष्य ने मच्छा सकान वनवाया। उसके दिल में खयाल भाया कि इसके कमरों मे हरिए। के सीवों की स्रटियें लगवाए । इस तरह का मूजी अयाल उसके दिल मे मा गया । भव यदि वह शिवारी है ौर उसके पास बन्दूक है वो अगल में जाकर हरिएों को मारना शुर कर देगा। यदि खुद शिकार नही कर सकता है तो दूसरे शिकारी नोगों से कहेगा कि तुम मुक्ते यदि हरिण के सीव ल कर दोगे तो तुमको एक-एक सीम का एक-एक रुपया दूँगा। ग्रव ग्राप ही विवार की जिये सीगो के लिए निरराधी हरिण यों ही मारे ज वेंगे। कमरे में खूँ टियें तो चन्दन की भी लगाई जा सकती बी, जिनके झन्दर से खुशबू झाती है झववा किसी दूसरी जरूडी वादिसी चातु विशेष की स्तुटियों से भी उसके कमरे की बान बढ सकती यी क्योंकि उसकी सूरियो ५र कपडे ही तो टाँगने ये, लेकिन उनने दिल मे यह खयाल पैदा हो गया कि नही कमरे की सवाबट तो हरिए। के सीनो संही हो सकते है। उसके दिल में ऐसी भावना पैदा हुई, पर वे बारे जानवरों के ऊपर मुसी-बत था गई। मनुष्य की भावना का कैसा दूरा प्रमान पडा[?] ग्राजकल तो सन्त्य का जीवन बहुत ही कटू हो रहा है, उसकी कट्ताका बुरा प्रभाव मनुष्य पर भी है और वेचारे दूसरे पद्मियो पर भी। धगर उसको सीगो की जरूरत होती है तो बहसीग उसाड लेता है। अगर उसकी चमडे की जरूरत है तो वह फौरन चमड़ा विचवा लेता है और प्रगर उपको गाँस आने की बादत है तो वह बेकारे निरमशाध हजारों पशुर्घों को मार डालता है। धन धाप देख लीजिये कि वह सृष्टि परमेश्वर की है। उसने मनुष्य और पशुक्रों को बनाया है। पशुर्थों पर मनुष्य क्तिने ग्रत्याचार कर गते हैं। पशुर्यों ने कीई वसीय वहीं चौड़नी। उनको घौर किसी

जगल के अन्दर साना मौजद है, परन्तु बाँटना है तो मनुष्यों को, धन की इच्छा है तो मनुष्य को। यदि कभी सदाई होती है तो स्तृष्यों सन्त्यों में प्रापस में होती है, परन्तु उनकी लड़ाई में बेवारे निरपराध पशु हो मारे जाते हैं। मनुष्यों ने ही दूसरों के बन के हरण करने को इञ्छासे मैय, तोषे, बन्दुकें, बम धादि बनाये हैं। इनकी धापश की लड़ाई से हजारों निपराध पश मारे जाते हैं। इसीलिए वेदों में उपवेश विधानवाहै सौर साज भी उपदेश का सिलसिला जारी है, तो इस उपदेश का मतलाव यही है कि किसी भी तरह से मनुष्यों की भावनाओं में सुचार हो। मनुष्यों की भावनाओं के सुवार में समस्त विश्व के प्राशियों का कस्माण है और उसके दिवाड में प्राणिमात्र की कब्ट ही कच्ट है। यह दुक्त इतने क्यों होते हैं? क्षात्र दुनियामें स्वार्यका बाजार बहत गर्म है। स्वार्थ दुनिया में बहुत ही बढा हुआ है। स्वार्थ ने बढ़ करके इन्सान की विचार शक्ति की मनिन और विकृत कर दिया है। हर एक न्सान को लोभ और लाल व ने इतना नीका गिरा दिया है कि कहने की कोई बात ही नहीं । यह कम्बक्त सोम भी मावना कब तक बढ़ती जावेगी? बाज हर एक मनुष्य में बैश्यवृत्ति काम करने लग गई है। लोग कहते हैं कि यह बाह्यसा है पर वह बाह्यम कहा। वह कभी बाह्यए। नहीं हो सकता जिस के ग्रन्दर वैश्यवृत्ति हो, जो वन के सामव मे पड़ा हुआ है। लोक कहते हैं कि यह राजपूत है, परन्तू वह राजपूत है कहां! वह कभी राजपुत नहीं हो सकता जिसके बन्दर वैश्यवृत्ति काम कर रही है। बाह्याए। में वैदयवृति क्षत्रिय में भी वैदय-वृत्ति हो नई है। बैश्य में तो वैश्ववृत्ति बाहिये ही बी। यन में लोग होना ही वैष्यवृत्ति है, वैश्य का तो काम ही वन कमाना है परन्तु धावकल तो शूदों में भी बैक्यवृत्ति हो गई है। सब धगर सवास करके देलों तो अन कोई बुरी चीज नहीं है, लेकिन बच्छी चीज होने पर शी यह तीमरे दर्वे की जीज है। यह तीसरे दर्जे पर ही भन्छी लगनी है, पहले दूसरै वा चौथे दर्जे पर नही । जैमे--

एक बामक है, उस ना काम है विद्या पढ़ना और खारीनिक शक्ति बढाना। जब सारीरिक शक्ति खन बढ़ बावे और

बालक बवान हो बाय तब उसकी वाली की बाती है। बाली कुछ दूरी कीव नहीं है, वरन्तु बहानी बानी में सफ्छी रहती है। स्वार अवानी काने से पहले बालक्यन में ही घादी कर वी बाले तो बहु बहुठ गुरू-सान देने बाली है। पीछे की बीच को पहले सौर पहले की बीच को पीछे करने से ही बुराइमा सौर तकसीयें होती है।

एक लड़का है, उने पाठवासा में बार की जंदबाई जाती है। पहले जमा और फिर तकसीम। सबके को पहले जमा भीत कि तब में ही तकसीम रिक्काई जा बकती है। सबर जमा के पहले ही बालक को तकसीम दिखायें को वह सकट में पड़ जायेगा। काबदे के पुताबत पहले लड़के को जमा का काबदा ही सिलाते हैं स्वांत् पहले जने मिनती सिलाते हैं १, २, ३, ४, ५, ५, ५, ८ तक। सक्या वो एक ही है। बती से इतक बनी है। परवास्था भी एक है। बेद मन्तों में भी बही बताया है।

न डिलीयो न सृतीयो न चतुर्थो न यचन इत्यादि ।

बागा शिकाने में पहले एक से सिकाना बन्ता है। सौ के बादि में भी एक है मन्य में भी एक है भीर घन्त में भी एक है। परमारमा भी एक है। श्रसल सक्या तो एक ही है। एक सब में मौबूद है, तीन मे दो मौजूद है लिनि २ मे ३ मौजूद नहीं है। ऐसी कोई भी सस्या नहीं है, जिसके अन्दर एक न हो। तीन, वार और नीइन त्व में एक-एक मीजूद है। वह समक्त लीबिए कि एक भीर एक दो होंगे। बास्तव में तो एक ही एक है, अब देखें कि साने चलकर सऱ्या शतक ही है। द्याप पूछे ने नर्वो[?] तो इसका उत्तर **है जो** तंत्र्या है वह पूर्ण रूखा है। एक को सस्या है यह सबंतन्त्र स्वतन्त्र सक्या है, क्योंकि बहद में, १ में, ७ में, ६ चें, सब में ही पाई जाती है क्योंकि ८-१ वर्गरह संख्याओं की ब्यावहारिक सत्ता है, पर-मार्थ में तो एक ही एक नजर सन्ता है। एक बात तो यह हुई, बब दूसरी बात वह है कि यह सर्वतन्त्र भीर स्वतन्त्र क्यों है ? जो सल्या मादि, जन्त भीर मध्य में तथा सब बन्ह रहेनी बहु सर्वतन्त्रं और स्य-तव कही जायेशी । १ को पूर्ण तस्या क्यों कहते हैं ? पूर्ण संस्था बही है जो अपने

में म्यूनका न बाने देने। बाकीकी नोन, यो सीमा पर रहते हैं उनके एक बज्ये के किसी ने पूक्षा कि —

तुम यह बठाओं कि तुम धपनी कीत में कवी धपने स्वार्ष के बिए हानि करते हो वा नहीं ? तो उस कपने ने जवाद दिया की हुमारी कीय धनर दी वर्ष तक कियी की मुसाबी में रह बायेयों तमी हम में ऐसे समास देवा होंगे। वो स्वतन्त्र घावनी है स्था वह कभी परतन्त्र हो सकता है ? वह हर तरह से धपनी स्वतन्त्रता की रक्षा करेवा।

हम सोग वेद की मानने वाले हैं। हम अपने को ऋषि मुनियों की सन्तान कहते हैं। सोदेन का जप करते हैं परन्तु जब तक हमारा व्यवहार न सुधरेगा, घोन् हम को ऊचानहीं उठा सकता। धगर हमारा व्यवहार ऊँवा उठ जायेगा तो हम भी कने उठ जायेंगे। भगर हमारा व्यव हार नीचे गिर कायेगा तो हम भी नीचे गिर जायेंगे। धाप कहेंगे कि व्यवहार तो सैक्झों प्रकार के हैं। हम किन किन को बुद्ध करें ? तो मैं ब्राप लोगों से कहता है कि झाप तीन वातों को बुद्ध कर में तो श्चाप के सब व्यवहार सही हो जार्येथे। जो क्षोटे सर्थात् बच्चे हैं उन पर झाप दवा रक्कों और जो जवान बादमी धर्यात् बरा-बर वाले हैं छनसे प्रेम रक्कों भीर जो बुड्डे लोग हैं जनकी इज्जल करे। इन तीनों बातों पर जब साप सञ्ची तरह समझ करेंगे तब फिर माप देखिये कि कीन सा **बूराकाम कर सकते हैं ? शब जो श्राप से** बड़े होने उनकी तो साप इज्जत करेंने इसलिंग उनके साथ कोई भी दुराई नहीं कर सकते। भीर वो भारकी बरावरी है है जाके साथ बार प्रेम करते हैं। इसिक्ट वनके साथ भी भाग छन कपट नहीं कर सकते. क्योंकि मोहब्बत के साथ क्यह कैसा, भीर भार ने जो छोटे हैं उन पर आप दया त्वलोगे । कोई भी चीज आपके पास बाई तो घाप उसे पहले बच्चे की दिये बिना नहीं का सकते । इन तीन निवर्मों पर चलें तो संछार वच सकता है। और काम, कोष भीर लोग इन तीनों को त्याय देवें तो संचार बन सकता है।

काम कोचरतवा सोभस्तस्मादेतरत्रव त्वचेत्

बीकृष्ण भी ने गीता में कह दिया है कि काम, कोच भीर सोम इस व्यवनों को स्थाप देने से मनुष्य सुनी हो चक्क स्थान है, ररुतु धन हर एक इस्थान में सोम बढ़ पया है। पैसा होगा तो मोटर से जूबा, बित्रेमा देक धार्टमा, धानन से रहुबा, मोन करूंवा सारि-सारि । भाव पेंडे इस्ती कहर कर गई है। इसी वे स्वतने कुस बढ़े हुए हैं धीर परनेक्यर को सतार पीक्षे सास पहा है, इसियर साम ही का सन से पहुसा दर्जा है। पैसा हीनवा के सिय बच्ची भीव है। पैसा लेन-बेन के स्ववहार के क्रिए बना है। इस ने देश खा से से सँ,

निर्लोभता

मुद्राप के पात से के लूँ, मनर पैसा है— बहुतान के साथ घाता है। अनुष्य को सबर जान पैदा होता तो पैसा घपने प्राप सा जावेगा, फिर वह किसी के रोकने से नहीं कक सकता।

धनर ज्ञान नहीं, तब वह ईववर को नहीं देल सरता। देली। एक सेठ नै उसके को मुनीम हैं। एक की सायु करीव २४-२५ वर्ष की है भीर दूसरे की करीब २० २१ वर्ष की : दोनो ही होलियार हैं, क्षेकिन नेठ एक को ४५) रु॰ धौर दूसरे को २४) ए॰ मासिक देना है। एक दिन २५) पाने व ले मुनीम न कहा - से उ साहव ! मुक्ते २५) देते है घौर उसका ४५) द : इस रावया मतत्व ! देखो ? हम दोनो बराबर हैं। दस्तलत देल लीजिय दोनो के बरावर हैं। जितनी देर यह काम करता है उतनी देर मैं भी काम करता हू। हम दोनो ही बापके नौकर है। जैसा यह झरीर से पुष्ट है वैसाही मैं भी हू तब यह भेद क्यो ? सेठ ने कहा --- इसके पास को चीज है वह तेरे पास नहीं है। उपने कहा - क्या ? सेठ ने उत्तर दिया, यह तेरे से बुद्धिमान् ज्यादा है। मुनीम ने कहा---द्याप इस बात का इस्तहान कर लीजिये। सैठने कहा -- भच्छा फिर नाराज तो नहीं होगे[?] नहीं, तो ठ र है मौका धाने पर कर लोंगे। योडे दिन बाद जायपल सदै ऊर भाषे। सेठ ने उसको कहा कि चाकर पूछो कि ऊट पर क्या कीज प्राई है और बेचना है या नहीं ? मुनीम उसके बास नवा और बोला-तुम्हारे पास क्या है रियने कहा, जासफल है। वेने गा[?] ह्ना. बेव लेगे। वस इतना पूछकर वह चला साया भीर सेठ से बोला-जायपस है सीर वह बेचने को कहता है। दूसरे को कहा- श्रव तुम नाकर पृथ्वी। दूसरा उधा धौर माव बाजार ने पूछता गया कि जाय-फाल क्या भाव है [?] एक ने कहा १॥) सेर नवात्म जायफल डेड स्र के भाव से भीस से लोगे ? उन्होंने कहा - नहीं। ब्राखिर खटोक ऊपर १।।) सेर पर तय ह्याः प्रचास ६० का आयफल उस न्या पारी का नोट किया। फिर दूसरे वो पुछा तीसरे को पूछा, इस प्रकार सन का भाव क्रिया सिया। तब भुनीय ने उसकी जाकर पूजा-- क्या आयफल है। उसने कहा, है। बेचेगा ? हा। किस भाव बेचेगा ? खैमा भाव बन बायेगा, बेच देंने । प्रच्छा दो सेर दोने ? नहीं इतना नहीं देंने। धन्त मे एक खटाक कम दो छेर तय हुमा। प्रव बहु जन सब दुकानदारों को बुला साया धौर सभी को जितना जितना कहा वा, होस दिया भीर उनके पास से दाये लेकर स्य कट वाले को दे विये। खु खु खरांक का उसे मफा रहा चौर उसको लेकर उसने क्षेत्र दिया। तो इस्र तरह वो सी दपये का मफा क्से हुमा। यह दी सी वाये दुकान

पर साकर रस दिये । श्रव सेठ ने पृक्षा — बहु कैसे रूपये ? उसने कहा कि मैं अब नवा तो सब दुकानदारों से बाद पुछ लिया भीर पूछ करके इसका स्थापार किया जिसमें सा सा सटाक का नका रहा, उसकी बेचकर यह दुपया लागा ह । तब उसने दूसरे मुनीम से बहा कि सुनो, तुम भी बये के और यह भी बया, परन्त इसने भाव पस सिया, वेश भी दिया धीर वाहर ही रूपया भी चुका दिया और उल्टादो सी रुपया नफा का ज्यादा लेक्टर स्नाया। वहीं कारस है, जिससे इसकी ४४) ६० मिलते हैं। वह शरमिन्दा हो गया। यह तो एक मामुली बात मैंने घापको बताई। ज्ञान जिस वक्त विमल हो जारेगा घापको हर एक चीज ग्रसलियत मे नजर ग्रावेगी। **व्यवहार में धापका ज्ञान धन्धा है। वह** ज्ञान प्रन्था है। वह ज्ञान जिस दिन्ट से निकलता है परमात्मा को नहीं देख मकता। जब हम रोज पढते हैं कि भाई-नाई को प्रेम के साथ रहना चाहिए पर दिन भर प्रेम करे थोर शाम को रोज हमेशा लड लेबे, इसका तो कोई ठिकाना नहीं। उपदेश लाभकारी तो सिद्ध है अवर जब उस पर ग्रमल किया जावे तो तुम्हारा जीवन परमेश्वरमय बन जाव । क्या लडना भच्दा है ? ज्ञान से सोबो। ग्राय

समाच भाव काम कर रहा है उसका काम कुछ। बढा, बहु मुश्किल मे पढा धीर उसका सामनाभी किया। परन्तु यह ठो इतना ही है जैसे एक मादमी को सचेत करके कह दिया, यह मजिल नहीं है इस मजिल से जाभो । भव तुम ठीक मजिल के सामने साडे हो पर मजिल तम करना बाकी है। धगर धाप भी यह सबक लो कि यह उपदेश हमारे हित के लिए कर रहे हैं। उस पर चसने सम जाओ तो कितना साम हो जाने, लेकिन जो नोले सो कुल्डा खोले, जो कह सो करे, हम से तो नही होता। भाई[।] यह बग्त नहीं बनती। सुनो, ज्ञान का तकाजा है जिस दिन तुम ज्ञान-मय उपदेश पर चलने में कामबाब हो वाबोगे तो तुम्हारी ताक्त नही दक

> मुक्ति मुक्ति मानु नहीं भिर कोई याजु नहीं, निया दिन याजु कोड़ी। झा गया तैरी शरण जन, तो मुक्ते सब अय कहाँ। तै नेरा, किस्ती तेरी, साहल तेरा बरना तैरा। तेरे बर को खेडकर ज ये क्या हम देमार स्थान भीर कर के स्थान सीता।

रहस्य दिया है कि सुद्धि की धतिशीकता
में कोई गिंद रहित बाधार है। यह सार्थकाद में कदा कोई निरोज विश्वार खुका
है। इसी निरोज वाधार को वैदिक्यक
'परमारमा कहता है। यही वेदान्यववन
कहता है 'अन्मावस्य यहाँ वही कहा इस
मृद्धि की उत्पत्ति, दिवति तथा प्रमय
मृद्धि की उत्पत्ति, दिवति तथा प्रमय
मृद्धि ही। यह इस विविध सुद्धि में उसी
सामार पर परसारमा के दर्शन होते हैं।
वैसन तसने को सामा चाहिए।

मानव समाजरूपी वृत्त मे व्यक्ति एक केन्द्र-विन्दु के समाम है। यही समाव रूपी वृत्त मानव को ध्रपने बने बनाये चौला में बांचना चाहता है। इसी सक्-चित्र सथा सकी साँपरिधि को मानव श्रपने व्यवहार, ग्राचरमा से विशाल तथा विस्तनकरना चाहता है घन उसकी ग्रात्मा का विकास होता जाता है। तब वह 'ब्रात्मवत सव भृतेष् श्रपने समान सब जीवो को समक्र तथा अपन चारी तरफ सब दिशाओं में भ्रपने मित्रों को समऋता है नभी सर्वेश्वन्तुसुखिन सबके सुका ान्तिकी भावना त्रताहै। इसी ध्येथ व लक्ष्य को प्रप्त करने हेतु वैदिक जीवन दर्शन ने नीनो पुत्रैयसा, वित्तैषणा तथा लोकंपणा का उध्वींकरण कर मानव को मानव बनाने का घ देश निया है। धन वैदिक सम। रोह उत्सव त्यैहर द्यादि की समाप्ति पर सातिपाठ 'मो बी शान्ति भन्तरि गान्ति सत्रम् ज्ञान्ति ।" का पाठ होता ^{के कि} सब जढ चंतन गान्तिदायक

विश्व के में प्रार्थ ज्ञानित के सम-चक है परन्तु उत्पक्त प्राप्ति हेतु प्रवान्ति तम दिशा उत्पन्त रहते वाने सम्य सस्य स्वयुवस सार्टि के निर्माण रहु दिन-रात निरन हैं बनो के गिरकोंगे की गोशनी की काराचेंग सम्य हो रहें हैं। विश्व तु कारण के कुवसुनी की रोगनी समस्या रही हैं वर्ण्य एक दूसरे के मन भय सम्य-विववान, पूर्णा सार्टि के पर रहे हैं। पुनिया विनाज, प्रकार की तरफ बा गड़ी हैं। किसी ने मुख्य कहा है—

कल्याएकारी हो।

बाहद रोधनी खुव हो रही है. दिला हो रहे हैं मैंवे। सवेराआहा जाग्गाजहां में, धर मही रोतनी रहो।।

या इन सामनो की होट में बोल करने से समर महं हो तकती। समार का नियम है कि सामारण उन्हार ये भी गने मिलमने में मी दोनों को मुद्दमा पहता है। इसी मकार एक राष्ट्र को सुबर्ग समान प्रविकार सद्यासिक्त समानता सार को सामार मानना होगा। यही मानई महर्षि स्थासने मार्गदेशमा के देवले दिवार के मार्गदेशमा के स्वतं हिया का मार्ग्स मार्गदेशमा के स्वतं हिया की स्वतं मार्गदेशमा के स्वतं हिया की स्वतं मार्गदेश सिक्स स्वतं मार्गदेश स्वतं मार्गदेश सिक्स (विष कृष्ट पर)

(पृष्टर से बागे) यज्ञ और शान्ति

सतार के जन्म मन्यु क्यो चक्कर से खुट काते हैं, तथा परमानन्य में गहते हैं। सावे चता बेता वेता है कि 'धनित सम्म न पद्मति' जो बस्तु हमारे प्रमानत समीप सम्माके में होती हैं उत्तका स्थान नहीं रहता है। मानव धारी के 'हिस्पाम पर का हुव गहुत पुरीतत' में धारमा पर मारमा का मिलन साशास्त्रार होता है, इस मित समीपता को मानन नहीं जानता है। इसलिए सतार के पवकर में जसे उदगा फिरता है। वैसा कहा है—

मैं सरे धर्मवरी दूब रहत वा तुमको। तेरे कदमों में बी अन्तत,

मुक्ते वालूव न या॥

वजुर्वेद इसी भाष्यारिमक रहस्य की स्पष्ट करता है---

'हिरण्यमयेन पानेण सत्यस्यापिहित मुक्तम।' 'स सत्य स्वरूप परमात्वा का द्वार धर्यात मोज का द्वार स सार के सुम्बर्ल धार्य पत्रक दमक स्वयम्य गेन पर प्रमुख्य के दिया रहता है। मानव इस मुण्टि की कीली रूप परमात्वा को नहीं देख पाता है। मान्यतायों, मर्यादाधी सीवाधों धार्ति स्पी जने बनाए चीलटो में बचा गहता है। यह चीलटे झाव तीन युक्त सन्ते पाये जाते हैं —पूजीवार, सास्य-वाद त दा सम्बन्धा। द्वीनों सप्ते सप्ते कप उगाप परोके से समाज मं स तुक्तन समानता युक्त शानित काले का प्रवास कर प्रव

चनकी की की ली सदा स्थिर रहती है जिस पर पाट घूनता है। ससार मे ऐसी कोई मधीन नहीं है जो विना की ली के चूमतीहो यद्मपि वह की भी प्रत्यक्ष व परोक्त हो। इसी प्रकार सृष्टि के स्वयंतम इलैक्टोन से लेकर सूर्य, चांद पृथ्वी, निहा-रिकासी मादि बाकाशीय पिण्डो की स्थिति है। प्रत्येक पिण्ड दूसरे के सापेक्ष से चूबता है। यही सृष्टिका निवम है कि प्रत्येक ग्रन्थायी नतिशीन पिण्ड स्रोटा बा अका दिसी स्वाबी धाकार के बिना टिक्स नहीं सकता है। विज्ञान गति की परिपाचा करता है कि अब कोई बस्तु अपने पर्या-वरण की धन्य वस्तुओं के सापेक्ष से स्थान परिवर्तन करती है नो उसे गति कहते हैं। बैशानिक परिनाषा के समानात्वर उपनि-बद्की माचाने भी सुन्दिका बहु यूढ (पष्ठ ४ से झागे

महर्षि दयानन्द के सपनों का भारत

सम्बद्ध करी है। सनुभावत विना तथक के युवाक करेगर स्वाधित नहीं हो सकता। क्षम के लिए वेद से स्वयुक्ता की नहीं है। इस ता है। इस ता स्वयुक्त किए वेद से स्वयुक्ता की नहीं है। इस से एक क्षमक हारा स्वयुक्त किया के से व्यवक्त में स्वयुक्त करती समय कम्में परे को वयको मारकर समय कुम नाता है। सास ही नह पपकी मारते समय इस नात का पूर्ण व्याम रक्ता है कि कही प्रवाद दन नाये। इसी प्रकार कर देवे समय नुद भी गिष्य कि निर्माण से स्तेष्ठ का पूर्ण व्याम रक्ता सम्बद्ध की स्वयुक्त का स्वयुक्त का

धनुशासन मे विकसित बालक, जब युवावस्थाको प्राप्त करताहे तो बह बात्म बनुशासन स प्रेरित होता है। उसमे सोचने समभने की मेघा उत्पन्न हो बाती है। वह सत् असत् का निणय करने की क्षमताको प्राप्त कर लता है। वह हम के समान नीरक्षीर विवकी बन मुक्ता को प्राप्त कर लेता है । गुस्कुल मे रहकर धध्ययन करन वाले बालक मे घाल्मनिभ रताकाभ व उत्पन्न होता है। जो उप जीवन म सदैव उच्चताभी घोर ले जाता है। धारमनिभरता के कारण ही उसे कभी जीवन मे पराड्मुसी नहीं होना पडता है। साथ ही वह कर्मशील हो ध्येय की प्राप्ति मे बग्नसर होता है। ऋषि दया-मन्द के अनुसार गुबमात्र गुरु नहीं अपितु वह बाचार्य प्रथम होता है। बाचरस की प्रतिष्ठा को प्रयने से घड़ मानते हुए वह **ब्**रुकुल से शिक्षा प्राप्त कर विदा होत हुए शिष्य से कहता है - यान्त्रस्माक मुचरि-तानि तानि त्वयोपास्यानि नो इतराणि। भवति हेशिष्य [।] जो भामेरे ग्रच्छ गुण 🖁 उन्हें ही तुम प्रहण करनातथा अन्यका नहीं। इससे बहान् गुरुका बादर्शदूसरा कोई नहीं हो सकता। गुरु त्यान की बावना से ज्ञान प्रदान करता है तथा खिच्य सेवा एव समर्पेख की भावना से उसे ग्रहण करता है। यही सूख तत्त्व गुरुकुलीय शिक्षा पढित को है। इसी को ही स्वामी दया-मन्द ने आर्थ पढित स्त्रीकार किया है। विका के लिए गुरुकुली के विकास पर ऋषि दयानन्य ने बल दिया । इनकी इंडिट में भारत के अन्तर्गत इसी सिक्षा प्रणाली का प्रयोग होना चाहिए ताकि भारत की सन्तान भाषरणवान हो सके।

ऋषि वयानन्य सह विशा के पक्षचर मही थे। इनकी दिन्ट में शक्क एव वार्षिकाओं के लिए पुग्क पुग्क मुक्क की व्यवस्था होनी चाहिए। वह-विशा नैतिकता पर सर्वश्रमम कुठायात है। वालक के निर्माण की वब धवस्था होती है बस समय कही वह बाह्य धाक-पंख में बोकर पाने जीवक को नष्ट ऋष्ट चर है। इसकी धावका बही सर्विक ची। वयम एवं ब्रमुशासन से ही निर्वाण समत है। चीव तो जीवन का हातकारी पत्त हैं भीव की प्रावना चाहे मानिक ही क्यों न ही? उबको पत्तन की जीर का महार करती हैं। जोब मोजने से खान्त नहीं धरितु धरित में बुत के समान चौर धरिक प्रज्ञतित हों चाते हैं। बस्तुत "Prevention is better than cure धर्मात् उत्पार ते तो रोज की पहले हो रोक्शाव बेहतर है। जीवन के उज्ज्ञतर विकास के लिए सह-पिशा विधेष कर से किशोरबन के जुकक-पुल्लियों के लिए मृग मरीचिका ही हैं। जिससे प्रपन होता है जसे भी वह संवा बेठता है।

गृहस्य भाषम तहायय भाषम के उपरान्त बाता है। ब्रह्मचर्य की नीव पर ही गृहस्य का प्रासाद मावारित होता है। गृहत्य ब्राध्यम कम प्रधान ब्राध्यम होने 🕏 कारण शेष्ठ भाषम है। गृहन्य भ्रपने कम के द्वाराशेष सभी ग्राथमी का पालन पोषण करता है। इसमें 'विवाह द्वारा विशेष भार का वहन करना ही समिप्रेत है। विवार उसी भायु में होना चाहिए जिसमें बहुभार बहुन करने का सामस्य हो। ऋषि दयानन्द ने बाल विवाह का सबत्र जहा विरोध किया वहा पुन्व के लिए न्यूनतम विवाहकी भागु२५ वर्षतया स्त्री के सिए १६ वथ रसी है। साथ ही इसे बायु की दृष्टि से निकुष्ट कोटि का विवाह माना है। सध्यम श्रेली का विवाह ३६ वर्ष के पुरुष तथा २० वर्षकी स्त्री तथा उच्च श्रेशीकाविवाह४ ≍ वय पुरुष तथा २४ वर्षकी स्त्रीकास्वीकार किया गया है। यदि ऋषि के प्रस्ताव को वावहारिक रूप देखिया जाता तो भारत का परिकार नियोजन कार्यक्रम स्वत ही पूर्ण हो जाता। भारत की बाबावी सुरता के गुहु के सनान विकरान एव समकर रूप ही बारण नहीं कर पाती।

ऋषि दबानन्द स्पष्ट रूप से सब्बो-वसा करते हैं कि यदि विवाह के बाद भी कई वर्षीतक बहानमें का पासन कर सन्ताम की प्राप्त किया जाये तो बह निरोगी, स्वस्व, पुष्ट एव बुखी होती है। श्री कुष्ण ने विवाह के बाद बारह वर्ष तक ग्रसण्ड ब्रह्मचर्यकापासन कर सन्तान को प्राप्त किया। मर्वादा पुरुषोत्तम राम-चन्द्र भी सन्तान को विवाह के १४-१६ वर्ष बाद प्राप्त करते हैं। दबानन्य के बादश एवं सपनों का बारत निसन्देह एक सुरद भारत होता । जहा बाह्य साधनों पर कम धास्या रक्तकर बास्य-सयम पर श्रविक वस दिया जाता। तथी वैदिक माता की खिंह वर्जना चरिताचे होती कि "मसपुत्रा शत्रुहणो श्रवो ने दुविता विराद्" वर्षात् मेरे पुत्र तेवस्ती वर्षस्थी वनकर समुखों का हुनन कर बखें

एक मेरी पुत्रियां भी मेरे समान विराट् युरावती हों।

वानप्रस्व तथा सन्तात की रिवरि गृह्स्य साथम के सन्तर है। धीरत पटरी उस के कारण मतुष्य की मानु को १०० वर्ष तक स्वीकार नहीं किया जा सकता। केवल 'बोबेम सरस खतम्" की सार्यना ही को जा सकती है। खान्यन्त्र होने के सनन्तर स्पने बोबन को सपनी गृहस्यी में ही नहीं समाना जाहिए सपितु उसका विस्तार लोक कत्यांच में करना चाहिए। "सपुर्येन कुटुम्बक म् की मानु स्वीक्ष है। सबांच् स्व को पृथक् कर पर उपकार की सावना ने गृहीत ही जीवन-सायन करना है।

ऋषि के धनुसार बानप्रस्य की स्थित ५० वर्ष की बायु के पूछ होने पर है। ऐसी स्थिति में यदि व्यक्ति प्राप्त के स्था होने पर है। ऐसी स्थिति में यदि व्यक्ति प्राप्त के साक स्था के का भी कत्याण होगा। सेवा निवृत्ति की बायु सिर्ट ५८-६० वर्ष कम के कम करके ५० वर्ष कर री बाये तो इसने वेश काय सामता का विकास होगा। साथ हो नवयुक्कों को रोजवार के स्थिक एव सुन्नम सावन उपलब्ध होगे। परिणामत जीवन के धनित्व साम तक सोय की विवृत्या से मनुष्य मुक्ति प्राप्त कर सकेगा।

द्याज बनरेखन गैप का नारा दिवा बाता है। पिता-पुत्र में सचर्व की भयावह स्चिति पैवा होती है। सास-बहु के ऋगड सामाजिक बनते जा रहे हैं। बुख बाता-पिता बहाबर ने झनादर के पात्र बनते हैं बहा वे समाज में लोक-कल्यास की भावना से महती प्रतिष्ठा के पात्र बन सकते हैं। पौत्र होने पर व्यक्ति अपने को घर के सकीशं दावरे से निकालकर सनाव के विस्तृत दावरे में ले जाये । ऋषि दया-नम्ब का बहुकचन झाज के युग ने बढ़ते हुए गवाबह पारिवारिक सकट का समु-चित्र निदान है। बानप्रस्य में तो लोक-कल्याच के साथ साथ भपनी सन्तान को बदाकवा अचित परामशं एव निर्वेश देते रहें परन्तु सन्यास तो मानबीय जीवन की उत्तरोत्तर चरम अनासक्ति की परम श्रेष्ठ स्थिति है।

महर्षि वयानस्य ने राजनैतिक बस्टि को भी सामाजिक दस्टि के समान ही सर्वेजन-द्वित-पर्य रखा। रराजा एव प्रका के सम्मान को पिता-पुत्र के रूप में रही-कार किया नया है। यहिंच स्वाधीनक राज प्रमाजी के समर्थक ने। वे राखा पर पूर्ण मकुछ के परापाती थे। वे सत-पत्र आहान के दृढ क्यान से पूर्णत्मा सहुन सत्त के कि जो राजा स्वतन्त्र प्रकाशीन होता है, यह क्या का नात्रक होता है। वह सह क्यान होता है सह स्वाधीन सहुन है। बीचे सिंह भादि सन्व पसु को नार कर का जाते हैं, उसी प्रकार स्वतक रावा प्रवाका नाश करता है।

राजा के लिए वण्ड व्यवस्था लयु-चित विचार पूत्रक प्रहुण करनी चाहिए। वयोकि वण्ड ही अमत प्रजा का पावल पर उसकी रजा करता है 'व्यय जानित प्रजा सर्वा वण्ड प्रवामिरकारि।'' परिणामत राजा को परम वण्डाधिकारीः की सजा दी गई है। वण्ड-मयदस्वा से ही सण्डना की रजा एवं हुस्को का निजाक हो सकता है। इस सब्में में राजाक शास्तिशाली होना परम सावस्वक है।

ऋषि दवानन्द एक युव सप्टा थे।
 उन्होंन भारत का निर्माण धार्यावर्त के
 रूप में करने का प्रयास किया ।
 उन्होंने धानवरक
 अगस्य किया। चरित्र को सर्वप्रमम्म
 महरव देकर चरित्रवान् को ही "आयं"
 महरव देकर चरित्रवान् को ही "आयं"
 करित्रवा । धार्य सम्भ्रतिक समिर्या
 करते वाले दयानन्द भारत को सामा विक्र राजनीतिक एव सास्कृतिक सिट से
 एक विराट सदम्म में देवना चाहता वा।
 भारत में धारवस की उच्चतम मनी मुमका का निर्माण ही ययानन्द मा सार्वर्ष
 अयवा सरना था।

(पृष्ठ ४ का तेष) क्षोब दो । इससे बारा परिका बनती हैं भीर उससे जिन होती है । सभी भीर उससे जिन होती है । सभी अनुष्य सुबी होता है । सभी अनुष्य सुबी होता है । सभी अनुष्य सुबी होता है । सभी अने से मार्थ का स्वावानी को दे थे। उससे कहा । में प्रापंक सामार्थ हम नहीं चाहिए। मैं प्रापंक सामार्थ हम नहीं चाहिए। मैं प्रापंक सामार्थ है किससे मार्थ के सम्बाद मार्थ हम नहीं सो में सामार्थ हम नी सामार्थ हम निर्माण सामार्थ हम नी सामार्थ हम निर्माण सामार्थ हम भी सामार्थ हम निर्माण सामार्थ हम निर्म हम निर्माण सामार्थ हम निर्माण सामार्थ हम निर्माण सामार्थ हम निर्म सामार्थ हम निर्माण सामार्थ हम निर्माण सामार्थ हम निर्म हम निर्म सामार्थ हम निर्म हम निर्म सामार्थ हम हम निर्म सामार्थ हम निर्म सामार्थ हम निर्म सामार्थ हम हम निर्म सामार्थ हम निर्म सामार्थ हम निर्म सामार्थ हम निर्म सामार्थ हम हम

(पूट ७ का लेव)
वान्ति, विश्ववन्तुरन, विश्व ए+ता, एक
सानव समाच, एक मानव राष्ट्र का स्वज्न
पूरा होवा तवी 'क्रुच्चनो विश्वमानंत्र' का
नारा सकत होना। तजी शानव को
साविनीतिक, साचि वैविक तवा झाध्यारिक्क सान्ति विका सकेवी।

वों सान्ति वान्ति सान्ति 🕨

गुरुक्कल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार में राष्ट्रीय पुस्तकालयाध्यत्त संगोष्टी

राष्ट्रीय पुस्तकालयाच्यक्ष सघ के तत्वाबधान मे बुरकुस कागडी विदवविद्या-सय हरिद्वार मे पानवी राष्ट्रस्तरीय पुस्तकालय सगोष्ठी का शुपारम्य २३ मई १६८५ को त्था। सम्मेलन मे देश के विभिन्न पुस्तकासयी म लगभग ६० पस्तकालबाध्यक्षों ने भाग लिया। गुरुकुल कौगडी विद्वविद्यालय के मुखाति, श्री बल भद्र कृम रहुजाने सम्मेलन में भाए प्रतिनिधियो का स्वागम करते हुए कहा कि "बाज गुरुकुन की देग के बनेक भागी से प्राए हुए पुस्तकालयाध्यक्षों के सम्मेलन के झातिच्य का गौरव प्राप्त हो रहा है। अभी हुआ। अपे ने याद दिलाया कि स्वामी दयानन्द सरस्वती इस युग के सबंप्रथम जननायक वे जिन्होने राष्ट्रीय जीवनवारा में पुस्तकालय के महत्त्व को समका तथा बार्यसमाज के सविचान मे उन्होंने जिन कुछ पदो का बठन किया उसमे एक पद पुस्तकालयाध्यक्षाकामीथा।स्वामीजी की मान्यतामी के धनुरूप एक मादर्श समाज के लिए पुन्नकालय का उतना ही महत्त्व है जितना कि जीने के लिये धच्छे बाताबरण की भावस्य क्ता होती है। गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय एक ऐसा ऐतिहासिक स्थान है जिसके सम्थापक स्वामी श्रद्धानन्य जी न लोगो मे स्वाध्याय को जप्तत कियातवाउन्होने गरकुल के द्वारास्वाध्याय की परम्पराको जारी रस्तने के लिए पुस्तकात्य की महत्ताको सर्वोपरि रत्ना । जिसके परिशाम स्वरूप मृहकुल कागडी विश्वविद्यालय पुरुष्कालय का भारत के पाच विश्वविद्यालय पुस्तका-सबो में से एक प्रमुख स्वान है । श्री हुआ श्री ने उपस्थित जन समुदाय को सम्बो-भी**वत क**रने हुए कहा कि मुक्ते बाज शी स्पने सालेज के पुश्तकालयाध्यक्ष की याद है, जिसके दर्शन होने पर उनके पैर जुने में मुक्ते कुछ भी सकीव नहीं होगा। एक श्राच्या पुस्तकासयाध्यक विश्वविद्यालय के सामार को सुद्द करता है। किसी विष्य-विद्यालय के स्पर की जानकारी प्राप उस विश्वविद्यालय के पुस्तकालय से प्रासानी से समा सकते हैं।

राष्ट्रीय पुश्तकालय सम्मेलन के इस स्वचर पर गुरुकुल कानकी में 'रा पुश्त-कास्य के सनियं प्राच्यायक की बी-ब्राट- कालिया को मारत सरकार पुस्त-वासवाध्याल सब की घीर से एक मान-यम भी मेंट किया गया। इनको यह मान पत्र बीवन पर्यन्त पुस्तकालय की वेब घो के सब्दें में दिया गया।

सम्मेनन के मुख्य प्रतिषि वी छी। पी। बुप्ता कुपपति जबकी बिक्तविवालय हे कहा 'पुस्तकावय ज्ञान का एक एसा खावार है वहां खोच एवं शिक्ता का उन्न--वन निरक्षर होता रहता है । एक प्रचक्का पुस्तकालय बोच एव शिक्षा की श्वारी रक्षने में सब से प्राचिक बोगदान बेता है। पुस्तकालय की भूमिका पूरे जैलिएक बातावरण ने बारीर में रक्षत के समान महत्त्वपूर्ण होती है।

इस सम्मेलन का उद्वादन की टी॰ सार अन्द्रोक्षण महाप्रश्यक, सेक रातीपुर, हिंदार हारा किया गया। उन्होंने प्रतिनिधियों को संशोधत करते हुए सहा, कि 'पुस्तकासय की पुष्किका धोस्त के हर कीन से व्यक्ति समाव एव राष्ट्र को उन्हिन निर्णंत केने से सहायदा करती है। ज्ञान सम्पदा के इस बाताया ते हर व्यक्ति कमाव पर न की निर्णंय सामग्री प्राप्त होती है। बात सावस्य-कता इस बात की है कि पुस्तकासय वैज्ञानिक सोच कार्यरत साक्षी वैज्ञानिक ने उनके विषय से सम्बन्धित नवीनताम मुजना सामग्री उनके प्रयोगशासा तक

पहुँचाए ।

भारत सरकार पुग्तकालयाध्यक्ष सभ के शब्यक्ष भी एम०के० जैन ने प्रतिनि-वियो को कहा कि प्रव धीरे-भीरे शैक्ष-णिक वातावरसामे तो पुस्तकालय वैज्ञा-निकी की उपयोगिता महसूस की जाने श्रगी है। ज्ञान का विस्तार इननी तेजी से हो रहा है कि पुस्तकालयों पर उसे विश्ले-सित करने की जिस्मेदारी बागई है। पुस्तकालय राष्ट्रीय ज्ञान समादा के प्रतीक हैं। भावस्थकता इस बात की है कि राष्ट्रीय ज्ञान सम्पदा को पुस्तकालय सदर्भ सेवा के मानदण्ड मे एकीकृत करके राष्ट्रीय सूचना सेवाधी की सुनियोजित प्रखाली धपनाई जाए। पुस्तकालवाध्यक्ष का प्रारम्भिक दायिस्य पुस्तकालय वैज्ञा-निकी द्वारा सम्पादित साहित्य की सूलभ जानकारा सम्बन्धित व्यक्तियो तक पह-वाने का हो गया है।

इस समारोह के उद्घाटन के झनसर पर गुरुकुल कागडी विज्वविद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष श्री जगरीय विद्यालकार ने विश्वविद्यालय के कुलपति श्री बलझद्र कुमार हुआ जी को यह विश्वास दिसाया कि महाँव दयानग्द सरस्वती ने पुस्तका-सयो के महत्त्व को सर्वोपरि करने का जो जनमत बनाया या उस भावना को कायम रक्षा जाएगा।

वस्त सम्मेलन मे मनेक गोव्या हुई। विनकी मध्यलता, श्री टी॰ एस॰ राज-गोपालन निर्वेषक राष्ट्रीय ज्ञान प्रवेसन सत्सान, श्री एस॰ एस० मृति निवेधक र प्ट्रीय रना प्रवेसन सत्सान एक भ्री पी॰ पी॰ माना डीन क्ला सकाय दिस्ली विस्त्रि-धालय ने क्या।

सम्मेलन में सब हे सर्चिक बोर इस बात पर विया गया कि विश्वविद्यालय एवं होने सरस्यानी में पुरुषकालय की बढती प्रिकाशों को स्वीकार किया बाता वाहिए। पुस्तकालय बैजानिकों की म्वाए वोच प्रयोगवाला में कार्यंग्त वैज्ञानिकों को निवाए को उनके विवय से सम्बन्धित सुवाएँ पृष्ट के की है। मीरिए प्रत्येक बोच सम्बालों में कम्प्यूटरों द्वारा सूचना सेंवाओं को प्राप्त की सम्बालों में कम्प्यूटरों द्वारा सूचना सेंवाओं को प्राप्त की सम्बालों में कम्प्यूटरों द्वारा सूचना सेंवाओं को प्राप्त किया जाना बाहिए।

सम्पादक के नाम पत्र

सादर नमस्ते [।] वै १० मई स १६ जुन तक बाहर गया था। मेरी अनुप-स्थिति में भाये 'भायंसदेश' के शक मिले। इस साप्ताहिक वारूप निसार रहा है भीर सामयिक तथा उपयोगी मामग्री पाठको तक पहुचरही है। २३ जुन के त जै श्रक मे ग्रनर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल' के उदगार पटकर बटी प्रस-न्नता हुयी। प्रो॰ बलराज मधोक का लेख भाक्षण नीति पर पुर्नीचार अरूरी ' सामयिक एव राष्ट्राय समस्यापर सभी को पुनर्विचार करने का प्रेरणा ~ देता है। बार पर्णकी नीति घटिया राजनेताओं की चान की के कारण ही हमारे देश में जारी है। नौकरी में इस नीति के कारण योग्यता धौर वरिष्ठता कूटाग्रस्ता हो रही हैं। कर्मचारियो ने इस कारण बापसी मनमुगव भीर वैमनस्य देखे जारहे हैं जो किसी भी प्रगतिशील दे के लिए कतरनाक कहे वा सकते हैं। रेवल राष्ट्रीय असण्यता और एकता का नारा समादेने मात्र से कोई देश सुरक्षित नहीं हो जाता। राजनेताओं को समय रहते गलत नीतियों के पलस्वस्य गुजरान में हो रहे इत्याकाड के खतरे को समक्र नेमा चाहिए और पूरे देश में फैनने से पहले इस माग को बुभाने की चेच्टा करनी चाहिए। राष्ट्र के हित में भूल सुधार के लिए किसो भी सकी व की धावश्यकता नहीं होती, तभी तो, बहुजन हिताय, बहुजन सुस्ताय का उद्देश्य पूरा हो सन्ता है। --- त्रजशूषण दुवे

भारक कुशक्त व अच्छ सम्पादन में भायसन्वेश का रगस्य दिनो दिन निजरताजारहा है। पत्रिकाका छुवाई व सफाई भ्रयवे सुन्दर कलेवर के साम

-३ कोराचदरोडकलक्सा७०००१४ वेबोड है। गाप जैसे विद्वान् सम्यादक की कर्मन्ता एवं संबोध सबत वाही प्रतिपक्त है जो धायसन्देग की गुज दूर दूर तक फैलती जा गही है। जिसके निष्धान वधाइ क्षांच है।

मैं बर्ने संप्र-ग्रायंपत्र पत्रिक भो कस च प्रायंस-देश' भी मनाता रहा हैं पर प्रन्थों के मलावा इसकी शान ही नुख भौर है। हर प्रक की प्रतीता बनी रहती

. भवदीय भोहनवाल कर्माण्डम

सापके हु रा प्रकातित ' भाग्यसन्देश का वर्ष ट धक ३२ मेरे सामने हैं। वस्तुन यह पित्रका मानव जीवन को नया सालोक वेने मे प्रकाशपुज के समान है। इस पित्रका में उपनिषद कथा माला 'स्वरक की महिमा' एव गरीवी व वेकारी कैन हुर होगी? श्री शोमश्रकात न्यानी हारा निक्तित तेण बहुत ही धन्छे समे।

बाप जिल सुम्बर्गेक, लगन, कोशल ब मेहनत से दत पिका का प्रकारन कर रहे हैं उबके लिए में बातको द्वस से बमार्ट देता हु। शायकरेद पिकार राष्ट्र विरास को गतिशील बनाने में सपनी यह मुमिका निमाती रहें। इसके उञ्चल सविद्य के लिए मेरी हार्दिक मगनकान माएस्थीकार कीवियेगा। स्वदीस

> श्यामसुन्दर शर्मा (सम्पादक-पालिका समाचार)

साजकस नई शिक्षा नीति बनान की चर्चा ज्वा रहा है। प्रायसन्देश में भी पत्रो एक सम्पादकीय द्वारा इस विवय पर विचार प्रकट किम गए हैं। एक उचित्र स्बपूरा स्थान है। भार्यसमाज क पास शिक्षा का पर्यान्त अनुभव है भीर नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति बनान म वह महत्त्व-पूरा योगवान कर सकता है। अत सार्व-विभिक्त सभा सथवा दिल्ली झाय प्रतिनिधि सभाएक विचार गोध्नी का सायाजन करे जिसमे क्षित्र नीति के सभी पहलुको ५र विचार विनिमय क क एक सम्पूरण शिक्षा नीति का मसीदा सरकार को दिया जाय भौर उमे भ्रयमाचे का भ्रमुराध किया जाये। मर्यमन्देश भी इस विषय पर ल्ख ग्रामन्त्रित करके एक विशेषाक की योजना बनाय ता उचित हगा। इस समय सही शिया नीति के निर्धारण करन स गण्ड की कई समस्याओं का समाधान होगाधीर राष्ट्रत्वकीस्ती शताब्दी से धिक धारमविद्यास एव धानम गौरव लकर प्रवेश करेगा।

योष्ठी में शिक्षानीति से सम्बन्धित निम्न वातो पर विचार किया जा सकता

- १ शिक्साकामूल उद्देश्य। ९ शिक्साका विभाग एवं प्रतरेका
- विमाग की श्रविध ।
- ३ शिक्षाकामाध्यम ।
- ४ प ठथ क्रम ।
- ४ िक्षण सस्याभ्यो कास्वरूपः।
- ६ सध्यापको का चयन । ७ सध्यापको को तैयार करने की

योजना। स्थानाभाव के कारण यहा विस्तृत

स्थानाभाव क कारण यहा विस्तृत रूप से उपरोक्त निषयो पर विवार प्रकट करना सम्भव नहीं है अत सक्षप मे प्रपत्ने विचार दे रहा हूँ।

विशा का मूल उद्देश्य व्यक्ति के चरित्र का निर्माणात्व ज्ञानवर्धन होना चाहिए। विक्षा का प्रवस च व जिसे मूल विक्षा कह सकते हैं, चरित्र निर्माण के

समाचार-सन्देश

दिल्ली-श्रायंसमाजों के साप्ताहिक कार्यक्रम

२८ जुलाई ८५ रविवार

धार्यसमाञ्ज प्रतायनगर-प० हरि-सगीत कलाकार । किंगज्यकैम्प -- महारमा देवेश भिक्ष । किशमगत्र मिल एरिया-मा॰ मोहन गांधी। गीता कालोनी--प॰ ब्रह्मप्रकास शास्त्री । गुडमण्डी — स्वामी प्रकाशवती शास्त्री । तिमारपुर-प• बसवीर वास्त्री। तिलकनगर डा०--रघू-नन्दन सिंह । देवनगर - पण्डित मुनिदेव जी भजनीक । दरियागज —प » समरनाथ कान्त । नगर शाहदरा- प वेदप्रकाश शास्त्री । नारायण विहार--हा० वंद प्रकाश महेश्वरी । प्रीतमपरा---पः विदव प्रकाण जास्त्री । प्रवाबी बाग-प० रमेश चन्द्र वेदाचाय । पत्राबी बाग एक्स टैन्शन-प० बीरेन्द्र बहादुर । भोगल-प अमेरेव शास्त्री । महरौली---प०

धाशाराम प्रेमी । मौडलबस्ती-प० नेत्र-रुवन्द्र ग्रार्थ । ग्रमरकालोनी-पडित वेदस्थास पाल ग्रार्थ । मोती बाग-प० तुलसीराम कार्य । राजौरी गाउँन -- महारमा मुनि-शकर वानब्रस्थी । रमेश नगर--प•भीष्म शास्त्री । लहु वाटी- प० ग्रमी चन्द्र मत-वाला। विनय नवर-प० कामेश्वर बन्नानन्द सरस्वती। गोविन्द भवन-स्थीमती शास्त्री । साकेत- प० जय अववान गण्डली । सोहव गय-धावार्यं वयामसास व्याकरणाचार्य । शालीमार पार्क-स्वामी जबदीव्यसानन्द सरस्वती । सदर बाजार-महात्मा राम किशोर वैश्व । हीअखास---प० जुन्नीलाल बाव । त्रि नगर--बार्य-बीर रणजीत राणा । रभुवरपुरा -प० सत्यदेव स्नातक रेडियो कलाकार । चना मण्डी--प० घनोक विद्यालकार।

> का वस्थापक स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती ग्रधिकाता वेद प्रवार

बायसमाज वडा बाजार पानीपत का वाधिक निवायन वर्ष १६०६-०६ के लिए रविवार दिलाक ७ ७-८५ की झामें समाज मन्दिर में सम्पन्त हुआ।

सभी प्रविकारी सवसम्मति से

निवाचित हुए। प्रधान-श्री रामानन्द शिगला उपप्रधान था बाबूराम जी मित्तल मन्त्री-अो राहुरदान जी बन्ना उपमन्त्री श्रामदनशहत तो कावाध्यः —श्री कुलनूषरा जा पुस्तकाध्यक्ष-श्री दावनव निर्मोही

धन्य घतरगसदस्यो को चूनन का समिकार उत्तरोक्त ब्राधकारियों को विया गया। इस चुनाव को सबसम्मति से कराने के लिए मूतपूर प्रधान भी दलीप सिंह को धाय जिन की शध्यक्षता में चुनाव सम्पन्न हुसा की भूरि भूरि सराहना की नर्दा

ठाकुरदास बना मन्त्री

भागसमाज्याची नगरका वार्षिक चुनाव १४ जुलाई ८५ रविवार की सत्सग क पञ्चात श्री हरिदेव जी शास्त्री, सभा प्रेक्षक की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। निम्नलिखित ग्रथिकारी चुने गये। प्रधान-श्री यदुनन्दन जी झवस्बी उपप्रधान--श्री महेन्द्रपाल वर्मा

श्री रामलाल मेहदीरता मत्री-श्री स्थामसुन्दर विरमानी सपमत्री —श्री शिवशकर गुप्ता भी घोमप्रकाश गुप्ता

प्रचार मंत्री--- श्री रामभज

सेवा निरीक्षक-श्रा हरबसनाल पुस्तकाष्यक्ष-श्रीरामचन्द्र गुलाटी धार्यवीर दस प्रविष्ठाता-श्री प्रमोदकुमार

श्यामसुन्दर विरमानी

न्वीन धार्यसमात्र कृष्णनगर, दिल्ली **५१ का बार्षिक जुनाव दिनौक १६६** ८५ को सर्वसम्मति से हो चुका है। जिसमे निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये है---१ प्रचान—श्रीनेतराम शमा २ उपप्रवान—श्री गिरवारी साल

३ मत्री --श्री दोनानाथ सन्ना ४ कोवा यज-जी सस्यप्रकाश ग्रग्नवास ४ नेकानिरीक्षक—श्री नारायग्रदत्त बहन्त

> भवसीय दीनानाय सन्ता (मत्री)

"कवियों से"

परोपकारिणां यज्ञ समिति दिल्ली के सरसक धार्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् नेताश्री प० देववृत की 'वर्मेन्दु के साठ वर्षीय सामाजिक जीवन की एक हस्की सी असक से जनसामान्य को प्रेरित एव उत्साहित करने हतु स्विरिलिसिय समिति द्वारा 'कवि की कविता नामक समह शीघ्र ही प्रकाशित किया जारहा है। धार्य जगत्की शोभाएव राष्ट्रके सजग प्रहरी कवियों से नज़ निवेदन हैं कि वयो-वृद्ध मार्थ नेता के जीवन से सम्बन्धित शपनी रचना शेख कर क्लंब्स का पासन करें ! चन्यवाव !

> भवदीय क्मलक्सोर वार्व

श्री रघ नाथ प्रसाद पाठक का निधन

सावदेशिक अध्ये प्रतिनिधि सभा के भू०पू० कार्यालयाध्यक्ष तथा सार्वदेशिक वत्र के सह सवादक माननीय श्री रचनाव प्रसाद पाठक का ८५ वर्ष की सामू मे १६ जुलाई, १६=५ को शाहदरा (दिल्ली) मे निषत हो गया है। उनके निधन का समा-वार सुनकर बार्य वगत् को एक गहरा बावात पहुंचा है।

सारंदेशिक श्राय प्रतिनिधि समा के कार्यालय में एक शोक सभा में दिवगत बात्मा को श्रद्धाजनि धर्षित करत हुए साबदेशिक धार्य प्रतिनिधि समा के प्रधान भी रामगोपास जी शासवाले ने श्री पाठक भी के निधन को सार्वदेशिक सभा के इतिहास मे एक प्रपूरशीय श्रांत बताया । उन्होंने बताया कि श्री पाठक जी १६२६ में महात्मा नारायण स्वामी की प्ररणा से सार्वदिशिक सभा के कार्यालय म बाए भौर तन से भन तक लगातार ६० वय तक उन्होंने सावदेशिक समा क कार्याक्रय कासप्तापूरक स्वासन किया है। किसी भी वार्मिक तथा राजनीतिक क्षत्र ने इतने लम्ब मनय तक एस महत्त्वपूरा पदो पर कोई दूसरा सफलता पुत्रक काम करता रहा हा, यह असम्भव है। श्री पाठक जी स्वय साववेशिक समा ब, साव देखिक समाका पाठक जी से सलग करके सोचा भी नहीं जा सकता था। बद्धपि पाठक जी को सार्वदेशिक सभा की अन्त-रग ने उपसन्त्री नियुक्त किया था. परन्त उन्होंने इस पद का अपने नाम के साथ कमी प्रयोग भी नहीं किया। उन्हें श्री

महात्मा भारायस स्वामी, स्वामी श्रद्धा-नन्द की महाराज वैसे प्रमृति उच्चतम कोटि के नेवाओं का सान्तिष्य एवं मार्ग-दर्शन व शुभ ब्राशीवदि प्राप्त वा।

साबंदेशिक राप्ताहिक भी सन् १६२७ ने मासिक रूप में निकलना खुक हुआ वा, तब से ही यह कार्य पाठक जी के बाथ में रहा वा भीर १६६३ से यह साप्तातिक निकलना शुरू हुआ। इसके सर्विरक्त सभा के भग्नेजी बैदिक लाइट के सपादन मे जनका मूल्यवान् सहयोग प्राप्त रहा। की पाठक की सिबहस्त लेखक, भीर कुशल प्रशासक भी थे। हिन्दी, प्रमेजी, उदू तथा संस्कृत पर उनका पुरा निसन्नक वा। उन्होंने कई उपयोगी पुस्तक भी सिसी। सावदेशिक समा के लिए भी उन्होने कई प्रमुत्य रचनाएँ प्रकाशित की भी। उनका रचनाए नवालेख मारत के समस्त हिन्दी व सम्रेजो दैनिक व साप्ता-हिको में भी प्रकाशित होते रहते थे।

भी पाठक जी न निवन से सावदे-शिक सभा भपने को ग्रनाथ समऋती है। यह सभा स्व॰ पाठक जी की अमूल्य सेवाओं के लिए सर्वेव ऋणी रहेगी।

भन्तमे शाक प्रस्ताव पारित करके दिवगत बात्मा की सद्गति के लिए पर-बात्मा से प्रार्थना की गई और शोक सतस्त परिवार के प्रति हार्दिक सबेदना प्रकट की

इसके उपरान्त सावंदेशिक सभा का कार्यालय बन्द कर दिया गया।

सञ्चिदान-द शास्त्री (उपमन्त्री)

ऋषि भक्तों के नाम एक अपील

भाषा पाक, फ्तह नगर के साथ सनती एक नई कालोनी है, जहा पर सिख भाई भी पर्वाप्त सख्या मे रहते हैं। फतेह-नगर वेश के बँटवारे के बाद बसा था। इस नगर में गुरुद्वारा भीर सनातन धर्म बन्दिर तो बारम्भ से ही वन गय थे परन्तु बार्यसमाज मन्दिर सभी शक नहीं बन सका। यहा के जब्द बार्य परिवार बार्व समाज प्रयोक नगर ने जाते हैं घौर इस समाज के ही सबस्य है। बाशा पार्क कालोनी बनने से कुछ बार्य परिवार और बहा पर बस गये हैं बिनके यत्नी से १३-८-८३ को एक नई बार्यसमाज की स्वापना की वर्ष है, जो पारिवारिक सस्तगो द्वारा ही अवार कार्य कर रही है। हमारी प्रवस इच्छा है कि इन दो कासोनियों का एक सीका भागंसमाच मन्दिर बन जावे

जिसस कि वैदिक धर्म का प्रचार इस क्षेत्र में हो सके। यहां का सावादी निम्न साथ वर्गके लोगो की है और वन की कमी के कारता आर्यसभाज मन्दिर बनाने में कठि-नाई प्रमुभव की जारही है। वैसे साथ लगते ही ब्डी ब्ए के भीर दिल्ली कार-पोरेखन के खाली प्लाट पड हैं उन को ऐसाट कराने का यत्न कर २ हे हैं। साम समते डी०डी०ए० पसैट हरिनयर के झाबं सज्जन भी हमारे सदस्य बन रहे हैं।

धार्य जनत् के दानी माइयों से प्रार्थना है कि इस शुभ कार्य मे यहाँ के मार्थ भाइयो की चन से सहाबता करके पुष्य के भागी बने।

> गान्तिप्रकाश नारव प्रधान बार्यसमाच बी-१६ बासायार्थ जेल रोड नई दिल्ली-१८

सरकार श्रकाली दल से समभौते के लिए गिड़गिड़ाये नहीं

कानपुर । धार्यसमास के तत्त्वाबधान में एक साम सभा प्रवान जिला सार्व प्रति-निषि समा कानपुर के भी देवीवास धार्व की बञ्चसता ने बार्वसमाध नोविन्द नगर वे हई, जिसके प्रस्ताव पारित कर भारत सरकार से बाग की गयी कि वह अपनी वरिया को कायन रखते हुए वेस की श्यमा व सम्बन्धना के विश्वमात् करने

वाले शकाशी दल से सममीता करने के लिए विकृतिकाना कोड दे। प्रकाली दल के नेता जब स्थय बात करने की प्रार्थना करें तब उनसे प्रवास के हिन्दू प्रतिनि-वियों के साम बैठ कर एक साथ बात करे। सभा ने सकाली नेता श्री हरवन्द सिंह जोगोबास के कानपुर झाने पर विरोध करने का निरुष्य किया।

मन्त्री प्रावंद्रमाच नोविन्यनगर, कानपुर (पुष्ड ६ ते बागे) सम्पादक के नाम पत्र

क्षिए ही होनो चाहिए । वासको-बालि-कास्त्रो मे निस्न स्लोको का भाव उनके वरित्र कासगबन जायं—

- (१) धारुरेश्यमो सकनिष्ठास एते स भातरो बावधु सौभगाय।
- (२) ग्रय निज परो वेति भणना सम्बेतसाम्। स्वारवरितानान्तु वसुर्वेव कुटुस्वकम्।। (३) ईसा वास्यमिद सर्व यस्किव जगत्या जवत्।

तेन त्यक्तेन भूजीया मा

(४) निज्यन्तु नोशिनियुष्णा सदि वा स्तुवन्तु, लक्ष्मी समावित्रातु पण्डतु वा स्रेषेट्यु । श्राचैव वा मरण्यस्तु सुवान्तारे वा स्याध्यायस्त्र प्रविकश्चनित षद न वीरा ॥

विवास का हुदरा मान जिसे होनिय की सता दी जा सकती है प्रामीनका सर्वान के सन्दर्भ रख्यों पा वय की सामु से पन्द्र वर्ष की बागु तक सामान्य विवास (मूल विचार) दी माने विश्वकों सन्दर्भत करिय निर्माण पर बार देते हुए भाषाओं का जान गणित, इतिहास, मुगोब, वर्ष के मून विद्वाला, प्रारम्भिक विज्ञान हरवादि की रिदान का प्रवल्क हो तका परीक्षा का नरीश व्याद्मानिक हो न कि सुदक बात । इतके एक्षांत् इसकीश वर्ष की बायु तक एक विदोध कर्ष की बायु तक एक विदेश कर्ष की बायु तक एक विदोध कर्म की बायु के परमान् की जा ? । इसकीश कर्म की बायु के परमान् किशी विज्ञान ही । दालको की बाया प्रारम करने का प्रवल्म ही । दालको की बाया परिवार्ष हो । विल्ला किशा व्याप्त करने का प्रवल्म ही । वालको की बाया परिवार्ष हो । विल्ला विश्न व्याप्त किया वार्ष विद्याप पर्म क्याप्त करने किया वार्ष विद्याप वार्म करने की बोक न बायुम हो । विकास वारमार्ग वहरो है हूर होनी चाहिए एव उनमे विद्याविधों के रहने का प्रवन्त हो। प्रध्यापकों के चयन में उनके चरित्र पर विशेष बल देना चाहिए तथा सामु भी कोई सोमा नहीं होनी चाहिए।

नई शिक्षा नीति को सफल नाने का दाधिक अध्यापको का होगा। प्रत सम्बद्धिक एव योग्य प्रध्यापक तैयाद म्हा के लिए भी एक योजना की प्रावस्थकता है। नहीं तो शिक्षा नीति बनाने का कोई साम नहीं होगा। भवदीय

हर्षदेव सिन्हा मन्त्री, बायसमाख डी-ब्लाक, जनकपुरी, नई दिल्ली-५व

(पृष्ठ १ से घागे)

क्रान्तिद्त स्वामी अभेदानन्द

उपरी तन्त्र पर स्थित रेडिक स माक्रेटिक पार्नी के दफ्तर में गया। पार्टी के काला पानी से जीटे चटगाव शस्त्रागार-लूट काण्ड के प्रसियुक्त भी लोकनाथ बल के स्वागत का ग्रायोजन था। द्वितीय महायुद्ध के बाद झण्डमन से काला पानी की खजा साग रहे भनेक भनियुक्तो को मुक्त कर ⊾ियागया था। ग्राने समावार पत्र की ग्रार स्थी बल से साक्षातुकार के निमित्त मैं मा गया या । जब मैं रेटिकल पार्टी के दफ्तर में पट्चातो वहा मुभे पुराने कालिकारी सर्वश्री नक्षिनी सेन, रजनी मुखर्जी, श्रमिक नेत्रीतदानेता मणिबेन कारा गव ह्वी० बी० कार्रिक, प्रविवना ह्वी० एम० सारकुडे बैठे मिल थे। श्री मानवन्द्र नाय भी उपस्थित वे को बलग किसी से बार्ने कर रहे थे। श्री नलिनी सेन ग्रादि के मध्य मंही एक गोरा एवं गठीले बदन का व्यक्ति बैठा या। मैंने श्री सेन से कहा, 'शामी श्री बनेर समे साक्षानुकार बाई। 'गोग व्यक्ति बोल उठा — मामो ननः। पिरश्रीवन ने मुक्त से परिचय पूछा। मेरे जन्म स्थान के वारे मे जानना चाहा। मैंने ग्रपने को विहारवासी वतलाया। तस्काम श्रीत्रम ने स्वामी ध्रमेदः नन्द जी के विषय में पूछा। मैंने, स्वामी जी के कलकत्ता निवास के वित्रय मे बसनाया । सथा श्री बल से स्वामी जी के पास साथ चलने के लिए बाबह किया। वह तैयार हो गय। रास्ते में मैंने भी बन से पूछा-- 'शाप ने अब स्वासी जी का परिचय पहली बार हुमा होगा, उस समय तो बहु "राम समुद्र पाण्डेय थे। लकिन, धापने स्वा० धमेदानन्द जी को क्य से जाना[?] उत्तर मिला – 'ब्रामादेर निरतर सम्पर्के छिलो। भैं प्रवाक् रह गया। मैं स्वयत सर्कं करने लगा, "धारोजी के शासन में श्रहमन से निरन्तर सम्पक कैंथे सभव हुवा ?"यह रहस्य बाज भी बना हुवा है। जब श्रीबल पोहार भवन पूचे तो राम अरस मिलाप का स्थ्य उपस्थित हो गया। दोनो की झाखो ने झानन्द के ग्रांसुवे।

क्षां मानवेन्द्र नाथ राथ १६४० के फरवरी में पटना भागे थे। मैं पत्रकारी के बीच को राय की 'राष्ट्रीय ग्राधिक योजना' (National Planning) तया ' राष्ट्रीय सविधान निर्माण' (Formulation of National Constitution)क मुखर समयक था। अत श्रीराय स मरा पनिष्ठ सम्पकस्थाति हाग्याथा। श्री राय पटना के बुद्धिवादी वग से मिलाना चाहते थ। उसी दिन उनका ह्वोलर सिनेट हाल मे अ। विक-मोजना एव सिव-चान-निर्मण् पर भाषण होने वाला वा। उसके पूर्व वह पटना के बुद्धिवादी समुदाय संभित्तने बात्र थे। निमत्रण मिला बोर मैं स्वाभीओं तथाश्री रामानन्द नास्त्री क साथ आरो राय की गौब्दों में शामिल होने गया। स्वामी जो को देखन ्ी श्रीराय ने उन्हें भागन गस बिटा लिया। भीर चात्र र्कचुस्की नत हुए स्वामी जी से पूछा---बाप रामसमुद्र पाण्य तो नही हैं ? स्वामीजीन कहा– हा मै साचता रहा, जा इ दमी प्राधुनिक क्स के पिता लनिम का कभी दाहिन। हाब था, उससे स्वामी जीका पुराना परिचय कैसे ? स्व।मीजीसे पूछन पर पता चला कि बार्डेनरिव डकैती काड के बाद किशोर वय-क नरेन्द्र भट्टाचाय (श्री मानवेन्द्र नाथ कापडला नाम) जब प्रनामे एक प्रेप कम्पो बीटर के रूप में गुध्त जीवन विता रह थे, तास्वामी जीकाकाम उन दिनो क्रान्तिकारियों के गुप्त पत्रों को विभिन्त केन्द्राम प_{ट्}चाना या पहुचवाना था। यूनाइटेड प्रेस (यू०प्र०) नाम की सस्या को धन नहीं है, की पटना शास्ता क प्रभारी दिवगत श्री पणीबाबू श्री राय के साम उक्त ब्रगम प्रूप रीटर का कम करते थे। पणीबाबू के माध्यम से स्वामी जीकाश्चीनरेन्द्र भट्टाचाय संपरिवय हवा पा।

ग्रजीब दरबार-

स्वामाणी के दरबार म विक्रिन्न राजनैतिक, सामाजिक, एव धार्मिक (शेष पृट्ठ १२ पर)





एम डी एव

TIGGO

रजि० नं० डी (सी०) ७५६

एम भी एव शिकामा[®] पाऊडर वासी की सीकरी दर ्ह प्राम्थतक काला समी**यत व स्वस्य** फ नाता है।

शिकाकाई रोठा प्राथना हरण बहेडा कन्यन व क्रमा सामित छणी बटिया से बनाया गया एन की वृद्ध णिकाकाई पाकडर एक प्रत्यन्त साभकारी प्राकृतिक वेग है इसके कोई रासायनिक पदान नहीं है। एव की एक शिकाकाई पाउटर का साम से ही नियमित प्रयोग की जिये।

महाशियां वी हट्टी (प्रा॰) सि॰ 9 44 इण्डनिह्यम एत्सि पीर्ति समर वर्ष दिल्ली 110015 पान 539609 **537987**, **537341**

स्वामी जी की सबके प्रति समबुध्य रहती वी । वह कहा करते के, देश का करवाण धनेक विविधों से किया का सकता है। येरी विष्ट में कोई बार्व हेव नहीं है न खेष्ठ है । वाबेशी सोसांतरट कम्यांतरट सभी स्वामी जी के सान्तिक्य में बाकर उनका धनुवह प्राप्त करते थे। कालापानी या कासग्रह की सचा पाने वाले प्रतेक परिवारो की बाविक सहायता स्वामी बी करते वे। क निकारी वैकुष्ठ शूक्त वि हैं फासीकी सजा मिसी थी की विद्यवा पत्नी की सहायता स्वामी जी किया करते थे। यह मैंने प्रवनी प्रांखों से देखा था। स्वामी जी का समना का व्यवहार यह कहने के सिए बाध्य करता है कि वह

(पब्ठ ११ से बाने)

विचारों के स्रोप स्वस्थित रहते थे।

सवमूच अमेदानन्द वे । विहार की आर्यसमाज-

विहार में प्रविकास बायसमाओं की स्थापना क अब दो मित्रो एव सहकर्मियो को प्रप्त है। उन दोनों मित्रों के नाम बे श्री वेदवन और भी सत्यवसा दोनों ही करी व करीब समययस्क वे। पीछे बलकर दोनी सादी भी स्वा॰ प्रमेदान द तथा भी स्वा० ईश्वरागद वने । दोनो ही व्यक्ति समान रूप स उदार प्रपरिवृद्धी तथा क्रतंब्यनिष्ठ वे । स्वामी जी धपने विषय में बहुत कम बतलाया करते वे। बहुत बाब्य करने पर कुछ कह दिया करते वे। यही कारत है कि उनके विकास में बहुत सी बातें सभी भी सञ्चात है। सच्या सन्यासी-

स्वामी जी सक्ते धर्व में सम्वासी है। वों तो वानप्रस्थी बीवन विताते समय ही वह पूर्व सम्बाही हा प्रावरत करने सबे वे। वह नहीं चाहते वे कि अनके एक-साम पूत्र 'कृष्ण भी भी उनसे सिसे। बन, मौतिक गरिमा लोफ क्यांति धार्वि किसी के प्रति उनकी जवासीन प्रवृत्ति बी मीरियात बाते समय उनसे उनके किसी प्रियतम स्थानित ने भी यदि यह सबा कि बापकी बारीरिक बनस्वा विवेश बाबा के अनुकूल नहीं है तो उन्होंने यह कह कर टाल दिया कि न वासी भारत में मरे या बाहर रममे कोई चातर मही पहला । मीरियान जाते समय बद्ध धारेक साम तिक रोगो से बन्त में। मही नमें इहसीसा समाप्त कर वी। ऐने वे स्वा० शभेदानस्य बी ।

(सभी इतना है पिर कमी)



स्वास्थ्य के लिए कॉगडी फार्मेसी, हरिद्वार की औषधियां

भेवन करें

शासा कार्यालय-६३, गली राजा केदारनाय, फोनः २६६८३८ बाबडो बाखार, विस्सी-६





साप्ताहिक

आयं सन्देश

इष ६ घक ³७ सुरुद रूक प्रति ५० पैने रविवार, ४ सगस्त १६=६

रश्मक वार्षिक २० स्पये सृष्टि सबत् १८७२८४ ०८६

बावस २०४२

दयानन्दाव्य--- १६१

शाजीवन २०० स्पय

विदेश मे ५० डालर ३० पाँड

कुण्वन्ती विश्वम

प्रभात की प्रतीक्षा में पंजाब की धरती



४ जौलाई को सम्पूर्ण देश से सन्त्री श्री पजाब के समभौते के समाचार से पान है। इस की लटर फैल गयी। चार मल सम

के बाद पजाब से पौ फूटी है। हिन्दू और सिक्षों के तीज उपती करीली आदिया सुलती दिखायों दी। पजाब समस्या के समाधान के लिए ऊची राजनियक्ता और वह साहसिक कदम की अकरत थी अबा प्रधान-मंत्री श्री राजीव गांधी ने निजी प्रधासिक और राजनितक बाधाओं को एक छलगा मे पार कर सफलता प्राप्त की है। विजटन और सलपाव के कगार पर पहुने देश को था मने मे एक कारगर कदम उठाया है। प्रधान-मन्त्री श्री राजीव गांधी वखाई के

समभौते के खास मृहे इस प्रकार

2__

ा मशस्त्र सेनाओं को विशेष ग्राधिकार देने वाला कानून रह।

□ चण्नीगढ पजाब को २६ जन वरी १८८६ को दिया जायेगा।

☐ ग्रानन्दपुर साहब प्रस्ताव के
केन्द्र राज्य सम्बन्धों के बारे में सरकारिया आयोग विचार करगा।

□ चण्डीगढ के बदले हिन्दी इलाके हिन्याएग को ३१ दिसम्बर १६८५ तक।

ानदी जल विवाद सर्वोच्च न्यायानय के न्यायाधीश की अध्य क्षता में गठिन एक न्यायाधिक रा को सोपा जायेगा।

्रिटल्ला में हुए नवम्बर के दमें की जान करने वाले रमनाथ आयोग बोकारों और कानपुर दमों की भी जान करेगा।

श्रिलल भारतीय गुरुद्वा ।
 कातन बनाया जायेगा ।

्राचारपर। प्राचारपर।

□ फौजी मुकदमों में कोई हस्त-क्षप नहीं बर्कास्त लोगों को बसाया जायेगा।

विशेष सामग्री प्रनिक्रिया तथा वस्तुस्थिनि पर एक द[ि]ट सम्पाद-कोय लेख देखिये।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति

प्रसिद्ध इतिहासकार डा० सत्यकेतु विद्यालंकार



हिन्दी लेखको में डा० सत्यमेलु विद्यालकार का धपना विशिष्ट स्थान है। १६ सिलम्बर १६०३ को विकास सहारनपुर में जन्मे भीर १६१० मे गुरुकुल कागडी मे प्रवेश धीर १६२४ मे स्नातक हुए।

उच्च शिक्षा के लिए भ्राप योख्य गये भीर पेरिन यूनिवर्सिटी से इति-हास वि त्य में डी० लिट की सर्वोच्च उपाधि प्राप्त की।

१३ वर्ष का करकुल में इतिहास के प्रोफसर भी है। जीवन का अधिकाश समय माहित्य लेखन में य्यनेत किया ग्रीर सारत्न के विभिन्न विद्यविद्यालयों में व्याख्यान देने हेलू बुलासे जाते रहें।

ग्रनेक राजनैतिक धार्मिक साकृ तिक साहिस्थिक सस्याम्रो के साथ सम्बन्ध रहा। १९६२ उ०८० विधान

परिषद के रुहेलखण्ड म्नातन क्षत्र से सदस्य बना नागरी प्रचारिणी सभा हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग गम् कुन विव्विव् की सीनियर के सदस्य भी हैं।

विदेश भ्रमण में चीन इन्ली स्विटजरलैण्ट फ़ान्स अन्बिटेन ग्रादि देशों की यात्रा भी कर चुके हैं।

डा० सत्यकेतुजी का कार्यक्षत्र साहित्य मृजन ती है।

महत्त्वपूर्ण ग्रन्थो मे

१ प्राचीन भारतीय इतिहास पद ग्रनेको ग्रन्थ लिखे हैं।

२ आधुनिक इतिहास पर भी आयपने भनेको भन्य लिखे हैं। ३ राजनीतिज्ञ शस्त्रपर ग्रन्तः र्राष्ट्रीयस्तर पर ग्रन्थ रचे हैं।

४ उपन्यास यह ग्रप नी एक पृथक विधा है इसमें ग्रापने ग्रनेको पुस्तकों लिवी हैं।

सावदेशिक प्रायप्रतिनिधि सभा के माननीय प्रधान श्री लां राम-गोपाल जी शालवाने की प्रार्थना पर आपने प्रायसमान का शादि से प्रव तक का इनिहास निला है। जिसके चार भाग हजार हजार पृष्टी के नगभग उपक जनता के हाथों में पहुंच चुके हैं और हमां कार्य लेखन प्रगति पर है।

(शेष पृष्ठ २ पर)

सत्संग वाटिका

हे (हम स') एक विचार से युक्त थीर (सलाय) एक प्रकार के शान से प्रकार सोगों । (उर्दुव्याक्ष्म) उठा ! जागों सोर जानों ! (सनीश) एक पर में युक्ते तोलें (बहुव) असले प्रकार (सिन्) ईरवर को शानों को घवना जान को (इफ्टम्) उत्तम रीति से प्रतीप्त करों। (दिक्का) जारण शक्ति के प्रतीप्त करों। (दिक्का) जारण शक्ति के साथ प्रगति करने नालें (धीना) तैयस्त्री धोर (उन्स सेवी) चौकसों को सुचक दिवस शक्ति कर को (इस्तायत) प्रमुख वाहने वाले (व) साथ सबसे (सदमें रहा के लिए (निहुदें) शास्त्रण करवा ह।

बहा ही प्रराशायक मन है जाव यह है कि उठो जाये है बाहयो। मने क वा सा पुत्राचित हो जायो। एक राष्ट्र के बासी तुम नड पाने प्रमण्ड करणा है जी स्रान को प्रतीयत करो। तुम्हारी राज्या सै उस प्रमित को प्रमुख्य करता है जिसे बारणा करते ही मनुष्य क्रियाशीन हो जन्मा है तुम्हारी राज्या सै प्रकाश से बायमवारी हुँ उस उद्या का साह्यान करता हु (असने जीवन योगिस स्टाइ असे है। प्रपन्न जीवनों को प्रतिमस्य बनायों।

इस सत्र में बारग शक्ति के साम प्रवृति तेबस्थिता सनेनता भीर प्रभुत्व शक्ति इन गुणों ने सबारक्षण होता है बहदतलाया ग्याहै। सभी मनुष्यों को राष्ट्रसमाज ौर झामोनित के जिए एक संबंधितकर उप सनादिका निदश दिया गया ै एक घर संर*ने दाले सभी मिलकर उपासा कर हिटूजाति र्चन्वर स्वत है ास्तिक है वार्मिक सार्थों के प्रति समित्व बहुत संघड रखती है पर इस्मारणमा लिक प्रारने क विधानन न। सकापरिणास यह हा । वैकि निज्ञति स्था मा मिल कर कोई का प्रमह कर पती 서취 वस के नाम पर भी एक्त नहीं शापाती इसम छोटे गीरव का उत भीग भठन का भन्धना रहता है। हम यह नही कहत है कि मुसलमानों मंयह भन्तहा है पर नन धत्रय कहत है रिह्म री इप्रपेशा उत्म की प्रधिक ए ता एक साथ मिलकर बाय जरन की भावना चुनाव द्वादि मे एक संद्रामिल कर दार देन काप्रभाविद्यमन है। क्या क्योकि ब प्रतिनितात्र बारणकस्य मिलकर ममाज पढते ^{के के} बर का प्राथना करते है। इसलिए व उन्दर हैं जनके संघि कारो का हनन नहां किया जा सकता इसका मनोवैज्ञानिक कारण यह है कि ई श्वर के नाम पर एक त्र होने वाल व्य स्रोगो मे प्रास्मशक्ति का उदवीयन हो - - - - त र (नमरी स्टेशकिन एक कप

उठो ! जागो और ! जानो !

सुरेशचन्द्र वेदााकार एम ए एल टी

उदबुध्यस्य समनस सरााय समिनिमन्द्र्य बहुव सनीडा । दिषकाममिनमुषस च देवी मिन्द्रावतोऽवसे निह्नयेव ॥ ऋ०१०-१०१-१



हो ज ती है। यत वस कहता है 'एक घर में रहने वाले सब लाल ायलकर है वर को पानी को बात को उताम देशित में प्रवीत करों थे? या या विनेत को उन प्रकार में देशि। ऐ नानाविष्य नयों के स्थित कि हिल्ला को हुए सामव हैं प्रकार करता है एक बार उठकर क्यों नहीं के लेता है कि सब धपना ही धपना है वहाँ के हिल्ला को हम करता है एक बार उठकर क्यों नहीं के लेता है कि सब धपना ही धपना है वहाँ कोई पराधा नहीं सभी उत्ती प्रभू की सनावों है विसकी उपासमा को हम सबके साम एकन हुए हैं। धर्म सब से दा प्रकार के ही किसी का धम-थाएं के हो जिसका है ? किर ए

इस परमकल्यासमय शासन मे स्यो नही

निभय हो कर घुमता है

वेद अन कहता है आगे घीर धानि को प्रवीरण करो। धानि कीन हैं भीन नाम परोनरन का है वेद ने दस्य कहा है तदेशांगिलता दिस्य (अजु० १२१) धादि का यप करते हुए बास्काचाया निकने हैं (धानि कस्मान् धायणी अवित गिम्म्य १४) परमासा धानी है स्थोकि वह धायणी है। सबसे घागे रहने से धौर सब के धाने चनने से परमास्या का नाम धानि है। परमास्या परम धानि हैं। वह सर्वणियों म धायणा हैं। वह

निसंबज्ञहोता है। मानव के गरीर के भग भग में बज हारहा है। आखियत कर रही हैं कान यज कर रहे हैं प्राण बज कर रहे हैं क्वास प्रत्वास यत मे लगे हैं। और वस बज का होना प्रह्व-दता व्यक्तिदेव है। व्यक्ति द्वारा पुरारेगए देव यजमान बनकर अपनी **प्रपती स**हित यज्ञ मिन में छोड़ रहे हैं। चस अग्निको प्रदीप्त करनाह स नव का बहुत्य है। इसलिए भनत भनि को प्रश्तिकरने की प्राथनाकरता हथा कहता है हमेर हृदय के तिनके से उठी बज की भाग [|] प्रदीष्त हो [|] प्रदीप्त हो मेरे टिब्स ज्वानामुखी श्रपनी उज्ज्वन ज्वाला भी के मुझ से मेरे रोम रोम में बज का सदेश पट्टना दे। धपनी दिव्या पुकार से मेर राम रोम को बझ की काय का तिनका दना दे। ये सूचे तिनके तेरे भली किस समय से यज वेडी की क्यकती हुई

चिनगरिया बन वार्ये ।

धाधो यत्र की घाण धायो मेरा धातिष्य स्वीकार करो। मैं एक जीन से नहीं हवारों जीन से तुम्हारा धरिनन्दन करता हूं। केवल एक मुझ की जीन से नहीं घर प्रव की नस्त नस्त की नासी नाडी की जीन से तुम्हारा धरिनन्दन करता हैं। धाज जीवन मे धाने बढ़ने के लिए प्रभुत्व की प्रति के लिए तुम्हारा स्वानत करता हैं। मेरा स्वानत स्वीकार करो। स्वीकार करो इस स्वीकृति से तुम्हारी कमी धीर धोषा बढ़नी।

यह सन्द्रा पाने बढने की कामना के सिए जहाँ ग्रानिदेव को पुकारता है वहाँ चौकसी की सूचक दिव्य शक्ति कया का भी भाद्वान करताहै। दिन के उदय होते ही ऊपा का धानमन होता है। उस समय एक घत्पन्त मनोरम बक्छाई चाऱों धोर का जाती हैं। वृक्षों के हरे हरे पत्त नाल लाम बनय से विर जाते हैं। पानी के तस पर एक चन की मी माल चादर ती बिखु जाती है। झाकाश में महराती दवेन भीर यामसभी बदलियाँ एक हल्का सा गुलाी शा**चल भो**ढलती है। भीर उस समय चौक्सी करने वली ऊपादेशी हल्क हाकी भौकी देजाती है वसी ऊषा की गोर सर्जिका महानुप्रही स्रम कार का दरकर जारी कोर वर्तों को भगाने प्रवासय जाम देता है। उसका श्रद्या वसा दिन्दिगल मे प्रातभासित होकर हम को जगत रहकर कम करने की प्ररणा देता है। इस पुण्य प्रनात मे उद बुद्ध हुई प्रजा ो का प्रकाश के राजा का यह सन्देश है यो ऽमाव। दित्य पुरुष सोऽमावहम् प्रको झत्मा मैहू-- यह ह प्रभूकास द**ा। यह सूय यह प्रभूकह** रहा है ---

ऐ प्रस्त प वित धो के आ र से ब्या कुल मनुष्य उठ। जाग भीर प्रपने उस सन्यक्षक गत्रचित्तक स्ववास्क के कम्मों पर न्हें परस्रबद्धां से ध्रियंत कर निष्यक्षत क्षेत्रों है। जाता। इसलिए वेदस म

हे कर्पबीर [|] उठो [|] जानो [|] तुम्हारे निष्यसारका कायसेस स्था पडा है। तम जिस भी कम को हाथ में लोके तुम्हारे स्पत्त से बज़ी महस्वपूर्ण बन बाएबा। तुम जानत सेवा के लिए बाए है। तुम में महान् सक्ति निहित है। तुम सप्पी सक्ति को पहचानो। उठो। साख विक्व को तुम्हारी म बदयकता है। समस्त सतार तुमसे क्वोति प्राप्त करने की प्रतीक्षा में है। तुम सतार का कल्बाण करो।

इस प्रकार यह वेद म न कहता है उठो । जागो । फ्रोर प्रान्ति को प्रपने हुदय में बाबृत कर समाज को बाबृत करो । राष्ट्रका उठार करो । निराधा को दूर कर प्राणा का प्रसार करो ।

इस न्मृति में एक सत्य है-

म जुक साय क हा न है सको बहाबत में करते तो प्रस्तुत हीरों का बहाबता कहि सके प्राय के इस प्रमात में बने साम की सब्द थो जना फिर कक्क सा पुस्कों को जैसे पुने पुना कुक्क न बीतना स्वर उथा के सुने। सुनासों। साम साम पुस्कान करायों।

हमारे कार्य हो मानवमात्र के लिए

सामो कर कछ ऐसे कम विवासे हो सवज हम रा नाम। इस हो सवजी प्रतिष्टा के पाव न हो तिकी की वष्ट के नाम। हो सभी दुएकों से मस्त कष्ट सम्बद्ध हमारे सिए ने न्यूकत। हस वर्गे राष्ट्र के निर्माण न प्रतासक। हसार काम हो मानव के लिए नानमक।

साहित्य वह है जिसस हो सवका क्याण विषक्षे हो नितकत का प्रगार व व केप्प्रव का ह तथार उपन हो सद्यान सर्वकण दिन मिन हो नुसक्कार पिट बाये उच नीच की चावना का गांग पिक सदमावना। वो करे सत्युग का निर्माव वाहिय पहहें कितत हो सवका करवाण।

— गकुमचाद गृश्त कि स्पति साम्राज जिल्हाम ता (उ. ०)

(पष्ट १ से घ ने)
स्रायसमाज का यह विस्त त
इतिहास यथार्थ में नारा के पुनन्त जागरण स्रोर उसमें महर्षि दयानन्त सरस्वती तथा स्रायसमाज के जन-जन का योगदान सजीव बना है।

पजाब दिस्ली भीर हरियोणा को भाग प्रतिनिन्धिमाणे के तीनो भागको के भागामी वयों के लिगे उन्हें कुनाधिपनि चुना है। बार सत्यकेतु विद्यानकर सलम विद्वान व्यक्ति हैं जो इप न्दीन गुरुतर भार को बहुनकर गुस्कुल का नवनिर्माण करने। सम्पादकीय---

धरम जुद्ध मोर्चा वापिस, नये सर्वेरे की तलाश

पजाब में चार साल से खुन की होली निरन्तर सेली जाती रही। हर रोज सबेरा नये खुन की लालिमा बेगुनाही की चीख लेकर उगता। दहसत और आतक से दिशाये सन्न होती रही। ढोल ढमाको भीर भगडों के स्वर सो गमे, सदभावना एव प्यार प्रीति के गीतो के बोल नफरत के जबड़ो में स्रोते गये। दिन प्रतिदिन स्थिति विगडती रही। खून भीर भाग के दरिया को पारकर २४ जौलाई को प्रधान-मन्त्री समस्त्रीते के किनारे पर पहुचने में सफल हुए। सारे देश ने एक स्वरसे समभौते पर प्रसन्नता व्यक्त की । किन्तु सद्भावना एवं सदास्यता से हुए समकौते से कुछ काले दिलो के कोने में अगारे सुलग रहे हैं। इस को हवा से चिगारिया फूटने लगी हैं। यद्यपि श्री लोगो-वाल ने तीन वर्ष पुराना घरम जुब (धर्मगुद्ध) वास ले निया है परन्तू जरबेदार टोहरा और सरदार बादल ने समभौते पर तीव ध्रसन्तोय जाहिर किया है और यह भाग निरन्तर घषक रही है। जत्येदार टोहरा ने मानन्दपूर साहब में हुई सभा मे समफौते को पजाब के सिखों के हिनों के विरुद्ध बताया। उन्होंने कहा मैं सनमौते से कनई सहमत नहीं ह पर अधिक जुछ नहीं कहुगा कही ऐसान हो कि सम सौते से हमें जो कुछ निलने का आशा है वह भो न निले। हमने तो माग की थी ब्ल्यूस्टाइ श्रापरेशन में गिरपनार लोगों को श्राम माफी दी जाये और उन्हें रिहा किया जाये (जो की हुमा हो नहीं) सरदाद बादल ने कहा कि मगौडे सैनिको भौर छात्रो का हम रिहानही करा सके हालाकि इन लोगो ने हमारे लिए कुर्वानिया दो है। इस सम्मेलन मे बाये २०० प्रतिनिधियों ने सत लोगोबाल के साथ तथा समकौते पर विश्वास प्रकट करते हुए हाय उठाकर सहमति प्रकट की, केवल टोहरा और वादल हो सिर भुकाये बंठे रहे।

सत लोगोबाल साहसी नेता एवं सुक्रवृक्त बाले नेता के रूप में उमरे हैं। मकाली दल में जो नेता सत हरचन्द सिंह के समर्थक है उन्होंने इस ऐतिहासिक समक्रीत पर फूल चढ़ाये हैं। ऐसे नेनामों में पूर्व मत्त्री सुबदेव सिंह डो डसा दन के कानूनो सलाह कार डा॰ गुरनाम सिंह तीर दो पूर्व विचायक कानी अर्जुन सिंह मौर एस एम धुनी ने कहा है इस समक्रीते से पजाब में स्थाप्त सभी सकट दूर होगें मौर विकास का एक नया प्रध्याय शुरू होगा।

समकीत को देश व्यापी समर्थन मिलने से उपवादी लीक से जर गये हैं। इथर बाबा जोगेन्दर सिंह इस ताक में है कि कव बादल भीर टोहरा उघर से बीलला कर उनकी भीर मुल मोडे। अमृतसर स्वर्ण मन्दर के हन दिनो दोनो युपों में नारे बाजी और तीलों फड़पें होने से तनाव बना हुमा है भीर बाहर पुलिस सुरक्षा बल चौकसी के लिए तैनात है।

हरियाणा और राजस्थान, जण्डीगढ तथा पानी के बटनारे को लेकर आक्रीश में भर हुंगा हैं। राजस्थान विधान समा में घरना विये बढ़े भरों सिंद वेंसानत का कहना है हुँगें ऐसा प्रतीत है प्रकालियों की सन्तुष्ट करने के जक्कर में राजस्थान के हितों की वानि हो रही हैं। राजस्थान का विपत्र प्रधानमन्त्रों से हो आदवानन चाहता है। इघर हिरायाणा में भजन लाल के आवश्यत होने पर भी विषय्त के मन में रावी व्यास के पानी भीर चण्डीगढ़ के बदले में मिनने बाने इचालों को लेकर शका बंडी हुई । इसीलए विरात के २६ विचायकों ने अपने इस्तीफं अपने अध्यक्षों को साँप दिये हैं। शुनाई को हरियाणा बन्द का भी प्रेलान किया जा जुका है। इघर भाजपाने समम्प्रीत के स्वस्थ पर आपति पर प्रकार के हरें। स्वास प्रस्ता में के किन इसियाणा का शिया पा किन विवाद जा सा किन विवाद जा हिरायाणा के स्वस्थ पर आपति पर कर को है। अपनुस्त आपतिया इम प्रकार प्रवाद का साथी ने चण्डीगढ़ हरियाणा का रिया वा लेकिन इसिरा मांचीन है स्वेपबाद को दिया चा हिरायाणा का हर के बरने मे सबीहर

बीद फाजिल्का मिला था। लेकिन नए समक्रीते मे वण्डीगढ़ पजाब को दे दिया गया। पर प्रवोहर और फाजिल्का हरियाणा को नही दिया गया। (२) प्रक्षित भारतीय मुख्द्वारा कान्त वनाने से भारतीय राजनीति में साम्यदायिता बढेगी। (३) सरकार ने अकालियों से हिसा मातक या गुख्दारों के हुक्यगोग के सिलसिले से कोई लिक्षित भाष्तासन नहीं लिया।

(४) नथे समक्रौते के तहत दिल्ली दमें की जीच को दायरा बनाकर कानपुर और बोकारों करा दिया गया है लेकिन इसका दायरा पजाव में हुई हिसा तक नहीं बढाया गया।

(४) त्रिपक्षीय वार्ता ३ जनवरी १६-३ मे पानी विवाद पर लम्बी बातचीत हुई थी इसमें प्रकालियों ने कहा था कि पिर्फ समस्या हरियाएगा के साथ ही नहीं राजस्थान के साथ भी है। उस नमय नर-कार प्रीर नमी विपक्षी पार्टियों का कहना था कि १६५५ के समक्रीते के सम्बन्धित के साथ जिए से साथ की पानी मिलता है फिर से लागू नहीं किया जाए, लेकिन नए समक्रीते ने इस मुद्दे को फिर उमार विया है।

इस प्रकार इस ममफीते की विजया उचे व वेने की हर तरफ से कीश्रिय हो रही है अविक आग जनता शान्ति हो जाने की समावना से हो प्रसम्भ है। प्रकाशित्व वावल और पुष्ट चरणिह्न टोहरा ने आगामी रखनीति निर्धारित करने के लिए आपस में बातचीत कर वकीशो और बुढिजीवियों की एक बेटक बुनाई है। बाडा जोगेन्द्र सिह-जब तक सेरी पार्टी से सरकार वातचीन नहीं करेगी नव तक पत्राव में शान्ति नहीं होगी। वे कहते हैं मन्त जोगोबाल अब दल के अध्यक्ष नहीं हैं जन के खुटने के बाद उन्होंने वन से इस्तीफा वे दिया था। इसालि अब बेगों में के इक्टरेट नहीं हैं और न ही दल की अध्यक्ष नहीं हैं जन से खुटने के बाद उन्होंने वन से इस्तीफा वे दिया था। इसालि अब वे भोजें के इक्टरेट नहीं हैं और न ही दल की तदर्थ सीनित के मदस्य। उन्होंने कहा, अभी हमारा लक्ष्य पूरा नहीं हुआ हम उसकी प्रार्थित के लिए जो टीक समभेगे करेंगे। आल इण्डिया सिल स्टूड फेडरेशन के खाल भी इस समभोते की नीव में पतीना लगाने के निए कमर करें हुए हैं।

इन समस्त परिस्थितियो को महेनजर रखते हुए समस्या की भयकरता ग्रीर गहरी जहां का एडसास होता है लेकिन ठडे दिमाग से विचार करें तो समभौता कभी भी बिना लिये दिये नहीं हुआ। करता । समभौते से कभी भी कोई पूर्णत सन्तुष्ट नहीं हमा करता इस तथ्य के अनुसार इस समभौते से समस्या के अगारी पर पानी डालने की भच्छी कोशिश हुई है। हालांकि स्थित यह है भकाली घडा वहना है हमें नया कछ नहीं मिला भीर विपक्षी राजनैतिक दला का कहना है सरकार ने काफी हद तक भक्त कर अधिक उदारता के साथ सम-भौता किया है। इवर पजाब मे शोझ ही चुनाव को घोषणा किये जाने की सभावना है, जबकि शीघ्र चुनाव कराये जाने से पजाब का माहील बिगड जाने की भी समावना है। समस्त स्थितियों को ध्यान में रखकर प्रजाब के तपते लोहे को शान्त करने का प्रयत्न किया जाना चाहिए। साथ ही पजाब को शान्त करते करते दूसरे प्रदेश कुछ न हो आये यह भी सरकार को ध्यान रखना चाहिए। सद्भावना भौर सदाइयता से जो नमकौता एक पूरत में ही कर देने का साहसिक कदम श्री राजीव गाघी ने उठाया है, देशहित में सभी को उस पर फुल गिराने चाहिए न कि घूल।

—यशपाल सुषांशु

धर्म-प्रचार के नाम पर राजनीतिक षड्यन्त्र

लेखक-रामगोपाल शालवाले

[गताक से धावे]

सेवाग्रीर प्रेम काएक नमना

सोबा का प्राप्तिक स्थायास्य बढा बदनाम स्थायालय का । वह स्थाया-सद उन रिस्तों को भी जेल नेजने के सिए बदनाम वा जो हैताई जनने से इनकार करती थी। जेल में उनके साथ बतास्कर किया जाता या ग्रीर प्राप्तिक वृत्तियों से सन्तुष्टिक नाव वे वर्ष मिरोधनी बही जाकर सीवित जना दी जाती थी। (सीयुन पारिक की पुस्तक पृष्ट १-२२)

सन् ११६० में गोवा के समस्त वाहामों भीर स्वयंकारों की झाजा थी गई कि वे दिमाई भई को स्वीकार कर लें प्रमाचन गोवा होड़ कर चले जावें। ११६६७ के में हिन्दुओं के मास्तिक बन्त खल कर रिएए वर्ष और उपनवकत विवाह सिर सवस्त हम्माद कर के लिए में कि पूर्व के सिर अपनव निवाह में रिपार कर के लिए में कि पूर्व के सिर विवाह के स्वयं के सिर कि प्रमाचन के सिर के लिए विवाह कि प्रमाच के सिर के सिर कि प्रमाच के सिर के

रोम का ईसाई (ब्राह्मग्)

मानवीय प्रतिभा को नाटर्कर एवने के लिये ईशाई मत दिननी खुट देता है, इस बात को रावर्ट की॰ नोरिक्ती में निद्ध कर दिक्सवाबात, को है श्री राती के द्वाराज्य में आरत में सावा वा। इसका जन्म दरती के उच्च पराने में हुआ वा। यह बड़ा बुदिवान् और परने पर्यंका कामारी नेगी वा।

जनने देशा कि राज्यसत्ता के सन पर आदिवासियों और छोटी जातियों के लोगों के सार्ग्हिक बर्च परिवतन की नीति चात ह है, जिसका वाजय काविसी और धन्य कीशीक दोशानें नेने रहे वे । इसके स्पट्ट भनुसब हुआ कि जब तक उच्च पर्द के हिन्दू देशाईन बनेंगे तब तक भारत की अूपि में ईसाइस्त की जब्दें गहरों न बन सकेंगी

सत सबने कार्याची गीति का परित्याय करके सामा गीति सरनाई। यह रोमन मैंगीलक सामु पूर्ववात से महरा पृक्षा ३ इसने मानवे बतन सारल कि। साथे पत्रवात सामा, विश्वमें कारत सहस्य सामा, भने में साथेपत्रीत झाना, विश्वमें कास सरका हुआ था। यह पहुरा के ब हार्यों के गुरूरने में मकल केकर रहने तका। उसने कहा. में रीय का बात हु। साथेपत्र के एक आयोग हुआ से रामस्त हू। यह ते तिस्म नेपन सीर माहस्यों के इन से स्टूके ला। अबने कार्यों के में रीय स्टूके ला। अबने साथेपत्र में स्थान साथेपत्र मानविष्ठ से साथेपत्र मानविष्ठ से साथेपत्र से प्रवाद स्थान स्थान पत्र स्थान पत्र साथेपत्र स्थान पत्र साथेपत्र स्थान स्थान प्रवाद स्थान स्यान स्थान स

१६०० से १६११ तक भवर्ष में सक बाह्यणों को ईमाई बनाया। यह नोविबती को बहुन वही बातवारा थी, विबक्त उक्की प्रविद्ध बदी। त्व बन्द्याव सुद्ध ने भव्य तक कार्याकिया जो सपना गरोमन बताया करता था। सपने कुल-प्राप्त भीर स्विकान ने हैं बाता कोर्यों को ईसाई बमाया। सन् १८६६ ई० में ८६ वय की सामु में उतका केहाल ही वया।

इस प्रकार तलवार और छुल से विदेशी मिशनरी भारत में अपने वर्श का प्रसार करने में सफल हुए।

अमेजी राज्य में इन सोगों ने सेवा, प्रेम सादि सनेक प्रकार के हुमकण्डों से धावनी सस्या बढाने का प्रयस्त किया।

सदेवी बरनार सनी यनार जानती थी कि वपने राज्य की बढ़ें सद्दून ररन ने लिए ईमारों के तक्या बनानी वाहिये । वत बरकारी कोए स कोडो रागे वर्ष करने हुआरों स्कूम, काबित, तिरवापर, हस्रातम, स्वावायस, निंदा होम बादि वस्थाए देश के कोने-कोने में कोसी वर्ष । इन सक बाएक ही उद्देश था-केवा के नाम पर वर्ष परिवंतन । पादरियों का वर्षों क् परक्षरों के स व विधिवत संगर्ध राजा बाता था, कहीं-कही तो प्रधान वासरी के सिंदहार किटरी क्रिमरार के बराबर होने थे। इस क्यार वाह ११९७ की राज्य- कारित के परवात् सेवा, शिक्षा और सरकारी नौकरियों के माध्यम से भारत की हिन्दु अनता को ईसा की शेड़ों में सम्मितित किया जाता था ।

भारत ने ईसाइयों की संख्या

सन् १२६१ में केवल १०० हिन्दू ईसाई बने ग्रीट सन् १६५१ तक ८१ नाक ६७ डबार १४ सी ६४ लोग ईसाई बनाये वा मुके थे।

पर्वेच मारत खोक्कर चले यें। उनके साथ-दाय विदेशी मिसनारी भी विस्तर विश्व करके पूरीय की धोर जाने की तैयारी करने सने । कई मिरवायर वेच विश्व ने वाव उनके सरवार २०६७ थी। किया हमारी राष्ट्रीय मरकार की वर्षनित्र के पार्टीय करकार की वर्षनित्र के प्राप्त के प्रति करने की कियारी करने का कियार वरका देश की वर्षनित्र के प्रति के प्रति की कियारी कोम क्वी प्रकार जाने के कि विश्व की वर्षनित्र की कियारी की कियारी का मिलवार वरका विश्व । कियारी की कियारी वर्षने जाने हैं कि विश्व का वर्षनित्र की वर्षणित्र विषय की वर्षनित्र की वर्षणित्र की वर्षनित्र की वर्णनित्र की वर्षनित्र की वर्षनित्र की वर्षनित्र की

पाकिस्तान करते का प्रधान कारण हिम्मू का बमें परिवेतन करके मून-समान कर जाना ही बा। विदेशी विश्वनदी नाम भारत निरोधी विदेशी राजनी-तित इस तम को भंकी प्रकार जानते हैं और क्यारी सरकार का प्रथान कहा-नीति का लाथ उठाकर जाई गाकिस्तानी नुदेने दिन वहारे तीमावर्गी आरोधी कों में पुनकर जुली नृद्ध मचाकर सामन्त्यूयंक लीट नाने हैं वहां समाचार मितने वर हुगारे प्रधानसभी एक वेस नोट चारों कर देने हैं, समया गाकिस्तान सरकार को वोरवार कावजी बोर्टस्ट मेजकर स्वाने राष्ट्रीय करोच्या का गावन करके निकित्त हो बाते हैं।

इस निर्वेश नीति को विदेशी मितागरी वली प्रकार जानते हैं और बड़ी नन् १६४७ में प्रवेशी राज्याविकारियों के ताथ बाद बारत खोडकर जाने की तीयारी कर रहे दे, वहां भाव अपने पर नवाकर कई मारतीय संत्रों को ईसाई स्थान बनाने की नीतारी कर रहे हैं।

कर की पिक्तों में कताया जा पुका है कि देश का बटवारा होने के कम बन १९५७ में विदेशी गर्वारेगों की सका २०६७ थी, हिन्नू नेहक राज्य के इन १७ कों में वर्ष के नाम पर राज्यतना हमिलाने कारे विदेशी अपारकों की गरुपा बरकारी धौकहों के सबुबार १९१६ में ४,७७ हो गई। छोटे बड़े ईलाई सर्थानों में प्रकारक का काम करने वाले पार्वारों की सरुपा बाद जोड़ लो जोवे तो . हजार से धाविक गोरी वमझी वाले विश्वनरी मारस के कोने-कोने में के हुए हैं।

इन गोरे प्रचरकों की ईसाई संस्थाओं को परिषय के २० विदेवों से भारी बनराबि भारत की नरीर जनता को ईसाई बनाने के लिए भेगी जाती है।

रिवर्व वेंक पाठ एण्डिया के द्वारा बनवरी सन् १८५० से बूब सन् १९५४ तक २९ करोड २० लाख १९ हजार वचवा निवेची सिशनरियों को बाहर से भाषा।

किस देश से किनना स्पर्धा आया

। कल दश स	किनना रुपया स्राया
भ्रमेरिका	₹0,5,000
क्ताडा	2,50,25,000
वैस्रियम	\$ Y0,000
डेन मा र्क	73,59,000
फांस	9,52,000
ज र्म नी	17,15,000
नारवे	39,69,000
स्वीडल	£X,X8,000
स्विटअरलैण्ड	?4,55,000
इ ग्लैंड	¥,=3,52,000
भन्य बेखों से	\$8,52,000
विविध	000,35 86

कृत सीव २६.२५.३६.०००

कुछ लोनों को सत्य का तथ्य छिपाने में ही धानी योग्यता की सार्वकता माजक्स भी खुशवन्त सिंह, डा॰ महीप सिंह ब्रादि कई सिका सञ्जन यही कार्य कर रहे हैं बाबा धर्जुनसिंह (वीर अगत सिंह जी के दादा) ने लिखा है कि सिखों को हिन्दुन्नो से प्रथक करने का वडयन्त्र उन्नीसकी बाता ब्दो के धन्त मे चला। यह सब कुछ बग्नेज की राजनीति से हबा। खिखों में पृथकतावाद के लिए ये लोग बायसमाज को देव देते है।

इतिहास का तथ्य यह है कि महर्वि दया नन्द के विचारी वा न्यक्तित्व से प्रभावित होकर स्थान स्थान पर सिख धायसमाज मे चाए भौरतन मन धन से भागसमाज की सदाकरके जीवन को सफल बनाकर गौरवान्तित हुए। यरदार वसाखासिंह जी ने तो लाहीर के उपदेशक विद्यालय मे एक छात्रदृतिभी लगारसी थी।

बहुत कम लोगों को बाज इस बात का पता है कि बायसमाज के भारम्मिक यूगके कवियो गायको मिशनरिया व सेवको मे एक सरदार काहनसिंह जी थे। द्याप ग्रमतसर के रहने वाने थ। किसी कार्यालय में काय करत वे। दिन रात उन्हें झायसमाज के प्रकार की धुन रहती यी। उनके भजन तब बायसमाज ने ऐसे ही कोकत्रिय ये जैसे भक्त समीवन्द मी के। वह भक्त जी के युग में ही हुए। सच-विववास पर सरदार जी ने भपनी कवि ताबो व भजनो में कड़ा प्रहार किया। 'आह्या व 'बेकस उपनाम स मिलते थे। दोनों उप्नामो का सबनो मे प्रयो। किया करते थ । समीतज्ञ भी वे ।

> जप ईश्वर को जप ईश्वर को 'बुश होकर प्रशुबेकस की विनदी सुनले

यह उनका वटा कोकप्रिय अवन या। मार्थेशमाज बच्कोवासी लाहीर ने

तस्यामञ्च-

आर्यों की वीरगाथा-६

प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञास'

चिदान्त के धनुकून मजना का एक समह 'बार्यं सगीत भवन पुष्पावली नाम से द्यापा या । उसमे उपरोक्त भजन के श्रति रिक्त और भी रचनाएँ धापकी सम्म सिल की गई।

बार्यसमाब की भावी पीढी को सर-दार काहनविह जी नरीचे बायों के उत्साह कालग्न से प्ररणा लेनी चाहिए। श्राप धायसमात्र के सब कार्यों को धापने हाय स करते हुए आव विभीर हो जाते थे। काड लगाना पड या दरी विद्यानी पड वह सब कार्यों में आने रहते थे। बन्प्रमल थे। सीच लाचकर कोगो को समाज मे साते थे।

पुलिस का भय नही, लाभचद काभय अधिक था।

धायसमाच के धारम्भिक यूग ने नाभवन्य जी भी एक नामी भजनीपदेशक हुए हैं। उन्होंने धूतछात की जड उसाइने का बढा गौरवपूण काय किया। वह स्य महोट के निवासी थे। दुनानदारी भी की और किसी वकील के मुल्शी भी रहे कभी जुझा बेलन के भी उस्ताद मान जाते वे । आयं बने तो जीवन ही पसट गया ।

मेशो पर प्रकार करने में बड़ दल थे। उनकी लग्न व निर्मीकता का श्रोताधो पर बडाप्रभाव पडताथा। उन दिनी मेलो पर ठगलोगताश के पतो क सेल से भीने माने लोगों को खूब जूटा करते

थे। जब लाभवन्द किसी मेले पर पहुँच वाते तो ये जुजा खेलने वाले उनका वडा सम्मान करते थे। वे समऋते थे कि यह व्यक्ति उनसे निकलकर एक ऊषा मानव जन गया है। यह धम व जाति सेवा का यण लूट रहा है।

प० विष्णुदत्त जी पजात क एक तन प्रसिद्ध द्वाय नता एक मले पर द्वायसमाज के प्रकाराय गये। प० विष्णुदत्त जी वकील ने लिम्बाहे कि वहा मैं देखा कि जुद्राचेला जिलान वार उतना पृथ्तिस संनही हरते य न्तिना लाभचन सः। कारण यह कि पुलिस वाला को ता वे लोगपैसान्करचुप करादेत थ परन्त नाभचन्द को भय अथवाप्रलोभन म चूप कराना असम्भव वा।

निम्न वग के लोगों के जीवन मुखार के लिए लाभवन्द नी जैसे बाय बीरो ने जो ऐतिहासिक काय विया है उसका मूल्याङ्कन करना बति कठिन है।

एक ग्रार्थ सैनिक

दिवनत बाचार्य नरदेव जी बदतीय के पिताजी श्री निवास रावजी एक प्रसिद्ध सायसमाश्री थे। उनके सार्थ समाजी दनने की करानी बढी रोचक है। झाचाय नरदेव जीन भ्रपनी भ्रापनीती से यह कहानी पूरी जाच पडताल करके नही दी मुक्ते श्रीमान् श्रीनिवास राव जी के एक लेख से इस कहानी का प्रामाशिक

विवरण मिला है।

तीकती है। तच्यो को तोर मरोडकर आर्यसमाज के इतिहास के लुप्त-गुप्त पृष्ठों का अनावरण रावनी ऋषि दवानव के वर विरोधी थे। भागपर पून≀ केश्रीविष्णुशास्त्री **वि**प-नुणकरका गूढराचढ़ाहुमाथा। सत भागको विपलूलकर वडा जातिप्रमी व धम रक्षक मानतेथे। एक मित्र गोविन्द राव ने श्रीनिवास राव जी को ऋषिकृत ग्रन्थ दिये परन्तु क्रूठ बोल देते कि इन्हें पड रहाहाएक बार घाप पूना गये।

> बहा अपने गुरु चिपलू एकर के पास बैठ वे कि एक सैनिक साथा । उसने साते ही नमस्ते कही। नमस्त शब्द सुनन ही विक्रम् सरने ऋषि न्य ००० प्रावन व मन्त्रवो पर भवता भनाप नामा भाषण काहता बारम्म किया। वह बाय सैनिक गानि संसवकुर सुनतारहा। त्रव चिप-लूमकर बालकर ्न नो उनने उनकी सब भापनियों का उत्तर दकर श्राय भिद्धाता का यश्यता से मण्डन किया श्रानिवास राव जा वर प्रभ वित हुए।

> क्राकमन परचित्रणकर आहेका जो प्रभावधा सब दूर हा गया। चर लौटकर ऋषि के ग्रन्थ पतः। एक एक बाक्त काज ज्याहत लाकी और स्वत्र वह सास रामाज के दीवाने सैनिक बन गय। उन्होने उस भाग सैनिक का नाम नही दिया। लगता है कि वह हरियाणा प्रजाब अन्वा उ० प्र० का भाय जवान होगा। पूना से सैनिक खावनी तो है ही। श्र निवास राव जी भव सदा के लिए आयसमाज के ही गये। वीरवर प० लेखराम की सगति ने सोनं पर सहागे का काय किया।

> ण कवृद शाजभी हमे यह सम-कताचाहिए कि वैदिक धम का प्रचार करनाकेत्रल हमारे उत्दे को मायपुरो-हिनो व सम्बुद्धो का ही काय नहीं। प्रत्येक श्रायकाकत्त०यहै कि वह वेद के प्रचार मं तत्पर रहं।

किशोरमञ्च-

वाखश्रवानाम क एक ऋषि थे। एक बार उहीने सर्वमेच यज्ञ किया। इस यज्ञ को जो व्यक्ति करता है। यह सब कुछ दान कर देखा है। यह मृत्युपर मी विजय प्राप्त कर सकता है।

यज्ञ के भ्रास्तिरी दिल वाज्यकाने द्यान देना शुरू किया। उनके पास गायें श्राचिक थी । वान देते देते वे सोचने समे कि बदि इस प्रकार सारी घनकी गौए दे हुना तो मेरे पास कुछ भी नहीं बचेना। वे बूढी गामी का दान करने सगे। यह बात उनके लडके को घण्छी नहीं लगी। सडके का नाम निवदेता था। यह सभी किशोर ग्रवस्था में ही था। बहुसोचने लबा- कही पिताजी मेरे लिए तो ऐसा नहीं कर रहे हैं। बहुदी इतता हुया पिता के पास गया और बोला—पिता जी ¹ ये सब नीएँ तो बापने बाह्याणी को दे डासी भीर मुक्ते किन्छे दोगे।

यह सुनकर पिताको बढानुस्छा आया और वे निवकेता को डोटने सबे।

जन्होन ड[ृ]ते हुए कहार्में तुभे यमराज को टगा। यहसुनकर निकेताने यम राज के पास जाने की तैयारी कर ली। उसके पिना जीको यह नान मालूम हुई। उन्हें कहा दुल हुआ। क्योंकि उहीने भावेश म यह कह दिया था। नविकेता की विल्कुल डरनही लगाधीर वह यमराज क पास जाने के लिए तैयार हो गया। पिताने उसे रोकने की कोशिश की। निविकेताने एक न सुनी धौर कहा मुक्ते यमराज के पास जाना है। उनसे साक्ष्य-त्कार करना है डरना नही है। हम अपने पापो के कारण उनसे डरते हैं। इतना कहकर निवकेताने पिताके चरण छुए। वह वहाँ से चल पडा। बहुत दूर चलने **पर वह बजराज के द्वा**र पर प_{ट्}चा। बज राज कही बाहर गये हुए थे। निचकेता

बाहर ही ठहर गया। जब यमराज लौट कर आराय तब उहीने धान चबूनरे पर मुनि कुमार को देवा।

यमराजने पूछा — तुम कौन हो ? नविकेताने नम्नतापूतक कहार्में बाब श्रदा मुनिका प्रज्ञ है। मेरा नाम निष-केता है। मरे पिनाजी ने सबमेश यज्ञ किया या। उन्होने उस यज्ञ की दक्षिणा मे मुक्ते भापके सुरद किया है।

यमराज को वडा बारचर्य हथा। उन्होंने निवकेता से पृद्धा - तुम्हे मेरे पास भाने में डर नहीं लगा? नचित्ता ने उत्तर दिया-- भगवन् । सांसारिक मन्द्य इमे उरा देत हैं। हमे डरना नही चाहिए। बाप तो सब की भनाई करते हैं। यदि

(क्षेत्र पृष्ठ ६ पर)

व्यासपीठ---

उपनिषत् कथा माला-१२

पवित्रता

लेखक-स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती

दो जीजो के साथ मे दो चीजे बधी हु है, जब तुम जन चीजो को हाय मे क्षोगे तो स्वयमेव ही ग्रसली दो बीजें प्राप्त हो जायेंगी सफाई भीर सादगी। जिस समय यह दोनो तुम्हार कब्जे मे हयी उस समय इसका पारितोपिक क्या मिन्या [?] तन्दुरस्ती और सावगी, तो निके साथ ध्रपने भाष बा जावेगी । सफाई क्या है? एक तो सफाई है क्पन्की चाह कपडाकी शनीन भी हो पर साफ होना चादिए च ॰ वह दी भ्राने गज का ही **म्**यो न हो । यहा नो सफाई चाहिए। स्राने मे तुरु दो दल रो ी चाहिए। पर दाल ग्रन्धी ग्रीर रोटी ग्रन्छी हो, सिनी हो। प्राचीन सममदार माताए इस कायदे स भोजन "न लाजननी थी। उनको पना या कि फल्पुन ग्रीरचैत्र में किस चीज का उपप्रोय करना चाहिये। उदेव्ड-धावाढ में किस चीत्र का बीर श्रावशा से किस चीज क यह भी हजनती थी। बह छ जकत की न≃ह ग्र।दमियों से यहकी नही पृष्टनी भी कि ग्राज बया बन।ऊ यह वह स्थामेव ही जानती थी। प्रकृति ने दूनिय की रचना तनी बच्छी की है कि मनुष्य बीम र नहीं हो सकता। जिस मौसम में भाम होता है, ज्यादा लाने से द्वर्गर्गहो जताहै। ब्राय के साथ यदि दस पात्र जामृत लाले तो स्नाम कादोप दूरहो जायेगा। काल्युन म फोडफुन्ना हो जाते हैं ~स ~सो केस व बेर हते हैं जो पोड़े पुन्नी को दूर करते हैं। मातामी को उन जानी को जानना चाहिए। इस प्रकार यदि यत्र वाने व्यवहार में लाई जायें तो रोज इस प्रकार नाये से १० आसे बाम हो जाये। सराई क्या है ? माफ रहने को सफाई कहते हैं।

मै एक ार पत्राय से आयुशेन मण्डी गया जल बाह समाई नहीं थीं। बहा स हाश्लो से राटी लान है, साथ से साम भी होता है। राट लान है, साथ से साम भी होता है। उहा कोई एगा बाद-र-वीलाता नहीं जहां सास न हो, समाज के पार-प्रकृति नहीं है। साम ला रहा थीं है। साम ला रहा थीं जल की केवा नकी है। एक बादमी जूनी पहुन बर-तन सान रहा गांधीर जने मचे हुए पात्री से लाग से अस नीजवान ने पहा साम प्राप्त पुरुष ना से से नीजवान है। हो हैं । हमर्र से एक दूसरा सावयी जम नीजवान से बोला-

चमडाहै, इसको सिर्फल गताहै पर जो तूलारहाहै बहुतो भीतर का है इसमे उनमें कहासूनी हो बयी, फिर तो लट्ठ बल गय, मो बात क्यां है ? दुनिया का नियम है कि साने में सकाई होवे। घर में सपाई होनी चाहिये। यह तो हुई सफाई बाहर की। प्रवासन की भी सफाई हानी वाहिए। दिल के दोषों को साफ करों। फिर परवात्मा का साक्षात्कार हो बावेगा। दिल जिमका मलीन है, उसका क्या रिकामा । दिस की सफाई होतो चाहिये। लेन-देन मे सफाई होनी चाहिए। पहली में सफाई ग्रीर दूसरी सादगी से क्या मत-सब ? जो इन्सान तबियत का सादा होता है वह गुणपाही होता है यह नियम है। दिल भी सादा होना चाहिए, कपडा भी सादा होना चाहिए, जैसे सादे नागत्र पर का लिन्तते है बह पढ लिया जाता है। पर यदि विश्वे कागज पर फिर लिख दिया अराव तो पहले कालि आता हुना भा गया भीर दूसराभी गया। तो । जसकी त्रि-यत्र में सादगी होर्न है। वह गुणग्राही होता है। हम मृताबाही है। नही, यूरोप देश में जिस तरह के कपड बनते हैं वैसे हम भी बनाने लगे। वे हैट लगाते मे हमने भी हैट लगा शिया । वे टाई लगाते थे, हमने भी लगा सी। सत कुछ किया, पर क्याडनके गुलाभी हमारे मे बाये [?] जैस वे टाइम के पावन्द हैं वैसे हम नहीं हैं। जैसे उनको देश का प्रेम दै वैसा हम में नहीं। जिस प्रकार वे कथडे बादि से साफ रहते हैं क्या हम वैसे हैं? नही। को नही हम गुणो को ग्रहण करते। हमारे में सादगी नहीं, घगर सादवी होती तो वे गुराबाजाते है। मुख बहुव करना तो बहुत ग्रन्धी बात है। माई । कोई परमे-इवर ने उनमे गुरानही डाला दिये हैं। टमने सि इजिय हम है बैंने ही उनको वनाया है। परन्तु देखो भाज हम कैसे हैं

> ो यूक्ष्य करेगा वही हम करेगे। जिसर व्हचलेगा उचर हम चलेंगे।। बहुप गाहम भी पढेगे। वह सडायेगा, हम सडेंगे।।

या बान है। गठ वाबिन्दिसिह बी ने सिमो दो कच्छा (जाबिया), कड़ा, वेश छोर कृषण ये पान चीचें दी बी, पर बिसो ने मही धप्नाया। वेष्टन कब यही -िवसर यूक्प वाल्य पहनने स्वे तो हम

रिका में सबाई हुई, बहुं। यतलून यहनते ये। इससे उठने में बड़ी ग्रुविक्स होती थी। बब खिपाही सबाई में मिर कार्व गततून के कारण उनसे बक्दी मही उठा जाता था। एक बार कव्यान ने एक सिपाही के सिर बाने पर उछने पतलून को बुटने के नीचे नीक से बार डाला। तब बहु उठा। सब से नीचे तक कारण ने पतलून हो बात मौबा और उत्पर का हो यवा नेकरा अब इसको सब पहुनने कब पढ़े। हम साची तबियत के नहीं हैं। आक्तरिक गृण को हमारे हैं ने हुक सैने हैं। इसको शाफ करने नाली सावधी है इस नवे यह नगह है। वाल करने नाली सावधी है इस नवे यह नगह है। काल करने नाली सावधी है इस नवे यह नगह है।

'साफ कर दिल को तूधाने सिकन्'र हो जमाने का।'

धश्यमण्य प्रावमी वण्ये के भी सच्ये ज्यवेश को प्रहुश कर लेता है। हमें गुरू-प्राही होना चाहिये। किस समय सफाई सोर बाटबी हमें पाछ होगें। जब समय हम से तन्युस्ती और सावगी सपने साप सा जावेशी। यही ज्ञान का तकामा है। एम साबे मत पूरी नफाई से मत पूरी तो पुन्हारी तन्दरूरनी धवस्य मिनड आवेगी। सावगी नहीं प्रार्थ है। इस बाल्ने मेरे माई ज्ञान का मकाजा है कि विसके पास सादगी है उसकी प्राज्ञामगी सेने में बड़ा घोर नहीं सवाना पढेगा। चोडी ही हिम्मत से

ज्ञान के पीखे ताकल, बक्त है। बक्त कई फिरन का है। एक है जिस्मानी ताकत । जिस इस्थान की जिस्सानी ताकत ठीक है, वह इस्थान नीमारियों से बचता है। विकक्ती विस्सानी ताकत ठीक नहीं है वह बार बार बोगा द्वीगा।

दसरी है भारिमक शक्ति भीर ती करी है सामाजिक ताकत । ऋषि दवामन्द जी ने कहा वा कि प्रार्थसमाज का मुक्य उद्देश्य ससार के प्राणिमात का उपकार करना है। ऐ भार्थों [।] इस शत को जान लो कि ससार का उपकार करना तुम्हारा प्रदेश्य है। कितना बोक ग्रावों के कन्थ। पर रख विया है। इससे ऊँचा कोई उद्देश्य, इन्सान नहीं बना सकता। कोई अपने मूल्क की भनाई करेगा, कोई मन्त्य वाति का। पर ससार का उपकार करना धार्यों का मुख्य उद्देश्य बताया । इस उद्देश्य मे हम काम-बाब तब होगे जब पहले हम अपनी खारी-रिक उल्लेति कर लें। फिर घरिनक उन्नति करो। पीछे से सामाजिक उन्नति करना। कीन पुरुष व समः त ससार का उपकार करन में समर्थ होगा। वहीं पुरुष भौर समाज जा बानी जिस्मानी ताकत को पैदा करेगा। जिसकी जिस्मानी ताकत ठीक होगी, उसकी मास्मिक बदस्या ठीक होगी । तीसरे बारियक बल भीर जिल्लामी ताकत मिलकर उससे जो समाज बनेबा, बही समार वा काम करेगा। जो स्मयस मे ही सहते हैं वे वया समार का नाकार करेंगे, इसलिए इन त कती की हमें सग-टिस करना चाहिये।

(पृष्ठ १ से बाये

कोई मनुष्य मरेनहीं तो उनके दुलाभी नहीं दूरहों सकते।'

यसराज वहें प्रवन्त हुए। उन्होंने निषकेता से कहा -- तुम युक्त से तीन वर सावो।' निवनेता ने कहा मेरे पिता मेरे से प्रवन्त हो बाएँ। समराज ने कहा, ठीक है ऐसा हो होगा।

पिर उसने रहा क्रुया करके सुके स्वयं प्राप्ति का सार्थ कता दीचिए। यह विद्याभी उतका देवी। स्वक्ते बाद निध-केता ने कहा मुक्ते शासा के स्वरूप के वरे में बतकार्य। घरन के बाद मनुष्य का क्या होना है?

यह सु-कर यमराव को बडा पाश्यमं हुया। उन्होंने कोई दूसरा वरदान मागन को बात वहीं। निकतान कहा, सब कुछ करह हो बाने वाला है। साथ मुक्ते कुणा करके बड़ी बताइगे। यमराव ने उठे असो-भन दिने। एक, हाथी घोड़े, बाय-बसीये, महन्द, बास, बासी, राभी, राज्य मांबी पर मिष केता ने यह बात मुनकर कहा —
'बलाय 'तसार की सब बरतुएँ नाय की प्रप्त हो आने की हैं। मफे इन बीचों की बकरत नहीं। मैं तो यही जानना चाहना हु कि मरने के बाद मनुष्य का क्या होता है।' यमराज यह मुनकर बडे सहान हुए। उन्होंने कह मसान में मनुष्य के सामने दो उपन है, एक हितकर हुसरा सुखकर। एक प्रतिकृत करवाल का हुसरा जोग विनाम का। मनुष्य ससार की बरतुओं से प्रेम करते हैं थे? धाल्या की वस्तुओं से प्रेम करते हैं थे? धाल्या

निषकेताको यह सुनकर कडी प्रस-लना हुई। उसने सासारिक सुकी के रथान में प्रारमा की उल्लेति की ही प्रच्छा समक्ता। प्रदास ने उसे घारमा करककर सुकी हो नया। रम भी ऐसे विज्ञासु वर्ने धीर ससार में प्रपने की समर स्नामें।

श्रायंतीर दल-श्रायंसमाज का भविष्य।

क्या आर्यसमाज यह वर्ष युवा वर्ष के रूप में ले सकेगा ?

(उत्तमचन्द्र शरर)

ग्रायंसमाच बालबहाचारी दयानन्द की बनाई सस्या है जिसका सक्ष्य ऋषि राज ने ससार की शारीरिक मार्तिमक तथा सामाजिक उन्नति लिखा है। ऋषि ने स्वयं भीवनं भर इस लक्ष्यं की पति क चित्र सतन सचय किया धार्मिक क्षेत्र म पासप्डकासण्डन कर बदोक्त धम का प्रतिगदन विया। सामाजिक क्षत्र मे पिछडी तथा प्रसहाय जाति यो तथा वर्गो का सरलण किया शारीरिक उन्नति के फिए बहावय पानन का उपदेश दिया ऋषि केस्वर्गतास के पदवान द्वायसमाज ने इस काय को सवाशक्ति सम्यन्न किया। श्चाज का भारत श्रायंसमाज का ऋणी है। देश की सामाजिक व्यक्ति रतया राष्ट्रीय ∼नति के लिए जो प्रयास धार्यों ने किया बह जायद किसी श्रन्य सस्या ने किया हो। द्यार्थीको इस पुनीत कार्यमे नानाप्रकार की बायत्तियों से जुम्मना पड़ा कई महा-मुख्यो का बलिदान भी देना पडा परन्त बिलानी बीर सदाधागे ही बढते रहे। यह भी एक सत्य है कि बायों के इस सर्व-तोमुखी उन्नति के कार्यक्रम को कुछ श्रीमाधों में बाध कर रख देना स्वय ऋषि के मन्तव्यो को पूरान सममना ही है। सुद्धि हो या गोरक्षा, वेदप्रचार हो सबका यासड सण्डन दलिनोद्धार हो प्रथम विदेशी सस्कृति का विरोध यह सारा धार्यसमात्र का ही कार्यक्षेत्र है, उस एक क्षीमा में बौधना शायद मायसमाज के साथ धन्याय होना ।

धार्यसमाय तो समय की धारश्य-कता है, प्रधी शांत - हुत तेथ है प व तवा अतो के धार-वर कुछ कम नही हुय, 'सबक कोते पर है। बात पात की बज रे क्य बदस कर सुबंद हो रही है, शुद्धि क सुद-संन कक को चमाने के लिए कई खडा-श्रव्य सोर लेक्साम चाहिये, सामानिक कुर्धितियों ने धायजाति को स्वस्त्रीन बना विया है राष्ट्र चरित्रवान देशमतों की अशीक्षा में है, प्रत धार्यसम न का मिशन ती दूर करना तेथ है समें कोई सम्बेह नहीं, कि यह सब कुछ बेद सम्मत मार्थ पर चसकर ही सम्मव है।

प्रध्न होता है ऐसे उपयोगी समाब का को मानवता का उपावक है राष्ट्र की हर प्रकार की उन्नति का बानिब है, ऐसे सगटन का भविष्य की सगवा है को क्यां पहले कम की, सब धरिक है और पहांतक केवा नवा है (सबीय) के नेहरे

भी उत्तरे हुए हैं'।

भावसमाज म युवक कम भा रहे है द्यत अविष्य धूमिल सा है। परन्तु यदि युवको को ग्रायसमाज मे लाने का सफल प्रयास किया जावे तो धाना का प्रकाश निराशाके तसको दूर कर सकता है। मेरी वस विषय में सावैदेशिक सभा क कणधारों से प्राथना है कि यदि वे स्वी कार करेतो यह बर्ज ग्रायंसमाज मेमी युवावर्षं के रूप में मनाया जावे। राष्ट्र तो युवाशक्ति को झनुशासन का पाठ पढा कर गध्दीय स्वाभी के जिए तैयार कर रहा है बार्यसमाज भी बार्यजाति के पहरुको को अनुशासित और सगठित करे। उसके लिए ध येंव र दल से उपयोगी सगटन को कयें का गाध्यम बना दिया जावे। प्रत्यक समाज ने वय भर की शाय का चतुर्घाश युवाशवित के सगठन पर व्यय हो प्रत्येक समाज में ग्रायवीर दल तथा बार्यक्रमार सभा की शासाएँ स्थापित की काएँ समाज के ग्राधिकारियों में भी अनुसा-सित तथा कर्मठ युव भी को स्थान दिया जावे । धर्मानियान के समान वह वर्ष युवाभियान के रूप ए परी श'क्त से चलायाजावे यदियुत्राशक्ति का हम वर्षभरमे कुछ भी सगठन कर पाये तो यह एक उपनिध्य हो होगी। 'कुछ सार कम तो होंगे, गुजरेंगे हम जहाँ स । बायवीर दल बार्यसमात्र क अभिव्य है। इस सस्य को स्वीकार कर लेना चाहिये कि जो कार्यएक युवक कर सकता है वह बुढ़ो से सम्भव नहीं भीर यह भी सस्य है कि जो भनुग्व बुजुर्गों के पास है वह नव शिक्षित युश क गम नहीं। युवक बडी का बाशीर्वाद प्राप्त करे, वड ब्रपना स्थान युवको को देने मंत्रसन्नता धनुभव करें 'वरस्पर भावयन्त वाली बात वन आये हो निराशा के बादश खट सकते है। धन्त मे एक शा**बरयक शा**न यह कि सार्य-देशिक सभाके सगठन से जुदा नोई भी व्यक्ति यत शक्ता समूहगत सबठद शायीं में विरोध सो उत्पन्न कर सकता है सग टन को बढ़ावा नहीं दे सकता ग्रीर सार्व-देशिक की धोर से युवाों का एक ही सगटन है -- प्रायंवीर दस ।



त्रो३म घवज ले जाग उठना धर्म है

भैग्वदत्त शुक्ल

महाराजा बग्रसेन विद्यालय, पो० तिरुनिया २,२१०६ जि० सीरी, (उ० प्र०)

वाय ऋषि काप्रिय सहजे,

क्षोत्स् व्यव ते जाग उठना वर्गहै। राजनीतिक कल्मवी से

वित्स के सक राष्ट्र भरते जा रहे।
पुष्टता प्रिय जीव जारो घोर
युव-उपकिथ चरते जा रहे
स्थागियों को तोड मोगी
पामरों के दल उभरते जा रहे,
धान-कम होते हुए
शिशु मवयुवक नर नारि मरते जा रहे,

चक नये सचारसाधन चोगयेस्वर वन निर्यंक क्थाम से ध्यान कुछ देता नहीं सानव हुमा इतना कुटिन बेदामें हैं। चोदम् ब्वज से जाग उन्ना धर्महै।

क्या हुआ, यदि मिन न पायी तोल प्रिय निक्शान की सननाइयाँ क्या हुगा यदि कत न पायी हुग पानी काश की शहनाइया क्या हुआ यदि फल न पायी लब्ध के उल्लाब की झमराइया ब्या हुआ यदि चल न पायी मुन भरे इतिहास की पहनाइया,

वैर्थ-शर्म उर में भरे प्रिय त्याव के सकेत सारे मान कर विष्ण्रमित बढ सशयों का दूर करना ही प्रचम युग-कर्म है। ग्रोदेम् स्वय के जाग उठना यम है।।

> पड क्षांधों के स्वरों को, तुस चयुष के बाग सम पर बड बसो, साम सरगम से 'स्वयपू' के महत्र महुराम निर्दि पर बड बसो, गहु समय — धनन्त गरिमा, शिव प्रश्न में पीठिका प्रिय गड बसो, स्वावहारिक वर्ग-सैमव से सभी विद्याल-पानन मंड बसो,

बाह्यासो-स्वारत्यको का ले विभव सब उपनिवद पहिचान कर वर्षनो का खीच पाना, स्मृति नियोबित चुदिवादी द्वार वर्ष है । सो३म् द्वार ले जाग उठना वर्ष है ॥

झर निष्या कुण्याची के जयावह से हरी मतिवार तुम कि जयावह से हरी मतिवार तुम कियों के बीच उजभी मुन-मतीया का करी उदार तुम उजरते माकामको का एस-मन से जम करी प्रतिकार तुम साम्य की सच्ची क्योंनी व्यावहारिक कृषि करी तैसार तुम,

बाक्यमो की मजुसीमा बेसजी पुरुषार्थ के नकता घर ब्रम्त करता कटुवि∉स्पो का सकीमासटा पाला सर्महै। बो|३ सुब्बक लेबाग च्ठना धर्महै।।

त्रार्य प्रतिनिधि समा, दक्षिण त्रफ्रीका द्वारा विश्व त्रार्य सम्मेलन

प्रापको यह जानकर प्रसन्तर। होगों कि उपरोक्त सभा सारी सारे १४, १६, १६, १६, १६-५ को ध्राने हरएक सहो-सब धौर विश्व सार्थ सन्मेशन का ध्रायोजन कर रही है। जिसके लिए सार्वेदीयक पानं प्रतिनिधि समा नई हित्सी को अनुमति मिल जुकी है। हम पागा करत है कि भारत से धौर धन्य देशों से ध्रिधक से प्रविक्त स्थापित वहा जुने कर इस सक्त बनाये। इसके लिए निम्नतिस्तित सैवारियों इञ्जुक साभी धनी से कर से।

- १ धपना पासपोट बनवा लेवे। उसमे प्रवास के देशों में साउथ ध्रफीका का नाम ध्रवस्य विज्ञाता लेवे। वेसे सामान्य करना साउब ध्रफीका के लिए भारत सरका ध्रमुमित नहीं देनी है। पासपोट का सम्बन्ध में ध्रापको स्वामीय ट्रेक्स एकेस्ट मां लेवेय पासपोट कार्यालय ध्रापको मार्ग-द्यान दे सकेवे। प्राप हमें भी लिखें जिससे यहाँ की वीसा पाने ध्रापको मार्ग-द्यान दे सकेवे। प्राप हमें भी लिखें जिससे यहाँ की वीसा पाने ध्रापको भेज देंगे।
- २ भारत की प्रान्तीय झार्य प्रतिनिधि समार्थ सार्वदेशिक समा से सम्पर्क स्थापित करे। सम्प्रव है छन्हें यांत्रियों का कोटा खिलाक न मिले, तो साप स्वतन्त्र प्रयत्न करें।
- इ. सन्य आई बहुनि भी स्वत-त्र रूप से पासपोर्ट और यहा के प्रवेश पाने की सनु-मित के लिए प्रयत्न करे;
- प्रधानने मार्थ ज्याय और प्रवास क जिए सावत्यक बन राशि इकट्ठी करें और एक्सचेज के नियमों का तमक्ष नवा , ट्वार्ट बात्राव जिल्हां विकटों बनवाना सावत्यक है। निक्तों से उदबन वा एक तरफ का किराया लगम ग है। निक्तों से उदबन वा एक तरफ का किराया लगम ग है। निया ज्ञाय ज्ञाय कर के स्वास्त्र के स्वास्त्र के स्वास्त्र कर लें।
- इसारी राय यह है कि फ्राने वाने प्रतिनिधितक। प्रवाशी वन्यु मारीशक होकर डरबन पहुचे। लीन समय 'लुझाका तथा नेरीशी होन हुए वापत भारत ग्रामकन हैं यदि वे लाहे। ग्र-यथा मारीशस होकर ही वापस ग्रासकत हैं।
- ६ प्रवासी भाई बहित यदि व चाह तो, होत्ल से उहर सकत हैं। जिसका किराया स्वयक्त १२ ५० क्रिनेष्कत बालद प्रति क्यवित प्रति दिन होता। वेषे खभा स्था-नीय बाय प्रवासालय से भ उहाने की स्थवस्था कर रही है। विश्वका किराया सात्र ५ क्योरिकन डालर अधिवित होता।
- ध्राप पाह तो दरवन मे तीन मप्ताह तक ठहर सकत हैं। वैसे सम्मेखन का काय ४ ५ दिन मे समाप्त हा जाएगा।
- द्र यदि धान नम्मेलन ने कार्यक्रम मंसनीत नृत्य ध्रयवा घिमनय के कार्यक्रम केने से विचरतने हो तो इसकी मूचना हुनै सित्तम्बर १८०५ से पूज ध्रयस्य भेद दें बितने स्नाप को उन् प्रोप्रामी से शामिल कश्न पर विचार किया सासके।
- ह बीक्षा के कार्य की कार्या तार्वदेखिक बायें प्रतिनिधि सभा देहनी से प्राप्त की जा तकती है। बीता पार्य के ताय पासपोट क पहले बार पृष्टा की कोटो स्टेट कार्यी जिससे राखयोट नम्बर व्यक्ति की पृह्वान, साउच बाकीका से प्रवेश करते की प्रमुमति बार्यि हो भेजना बाबस्यक है। पासपोट भजने की बाबस्यकता नहीं है। हर व्यक्ति के दो पोटोश्वाफ होने बाहिए जिससे पीखे उसके हस्ताजर स्पष्ट बारों में (समेबी में पूरा नाम ब बन्म तानोक विस्त्री हो)।
- १० ट्रेवल एकेंग्ट मे बाच करके सली भीवर तबा कोसरा के टिको का सर्टिफिकेट फार्म के साथ भेजे जावे।
- १२ पासपोर्ट में प्रवास के देशों में 'शायम प्रश्नेका प्रकेश पर निपम, तिसा पहुंचा है। इसको पद्र करवाना, प्रावेतक के सिए सकरी है। जारन सरकार से बिलाइ प्राप्तीका में मेशे को सद्भार्ति निकान मंत्राय कुछ वितास होता है पत्र हमार सुमाव है कि बाप पपन पासपोर्ट के पहुंच चार कुछों भी कोटो काणी एवं बीडा काम पहुंचे ही भरकर हमें भेज वें। इसिंक प्रधान से सिंत कार वीसा कार्य पर सहु मानकर प्रमृति दे देती है कि वहां पहुंचन के समय तक भारत चरकार भी ममुत्राति पासपोर पर सह मानकर प्रमृति दे देती है कि प्राप्त पहुंचन के समय तक भारत चरकार भी ममुत्राति पासपोर पर महत्र आपनी।
- १२ बरवन मे विसम्बर मास म हल्की गरमी पढती है। वहाइस समय मध्य बोध्य ऋतुका मौसम होता है। श्रप्त पहनने के लिए हल्के कपडो की ही श्रावश्यकता होती है।
- १३ इस सम्बन्ध मे प्रथिक जानकारी प्राप्त करने भीर मार्व दशन के लिए हमसे भी जीझ पत्र व्यवहार शुरू कर दे।

भी एस॰ रामभरोसे, प्रवान — बार्यप्रतिनिधि सभा साडव अफ्रीका ३५ कास स्टीट डरवन (साजव बक्रीकर) प० नरदेव वेदासकार समापति, वेद मिकेतन

वन हमारे अस्तिस्व के लिए आवश्यक

प्रायंतन्त्रित के ७ जुलाई, १६०५ के प्रक में ''मीसम पर वर्तों का प्रकोप'' शोषंक से जिलित सम्पादकीय के व्यक्त विचार महत्त्वपूर्ण तब्दपूर्ण एवं प्रेरणा-दायक रहे।

निस्स-देह वर्षा एव प्रावादी की दिव्ह से बनो को बरवधिक उपयोगिता है । यही कारता है कि हमारे देश से वनों का महत्त्व श्रति ब्राचीनकाल से रहा है। वन हमारी सस्कृति के महत्त्वपूर्ण ग्रग रहे। ब्दा-वस्था मे बनो मे जाकर शानि प्राप्त करने तथा भगवान् के भजन करने की एक गौरवशाली एव सम्मानपूरा परम्परा रही । हमारे ऋषियो एव मुनियो के ब्राध्यम इन्हीवनो में स्थित थे। सर्देव बुक्षो का लगाना एक पुण्य कार्यसमभा जाता रहा है। इसी से हुमारे देश में वर्षा ठीक समय पर होती रही, देश सदैव बन-वान्य से परिपूर्ण रहा, बनो मे लगाये गये ब्राम जामुन महस्रातवावेर ब्रादि के वृक्षाहमे उचित समय पर फ्ला देकर हमारी लाद्य समन्या को सुलक्षाने वे सहायक रहे। नीम एव चन्दन ग्रादि के वृक्ष हमारे स्वास्थ्य को ठोक रवस तथा धने कपड एवं वन-पनियाँ धौषधियों के निर्माण मे महत्वपूरा भूमिकाएँ श्रदा करती रही।

यही नहीं, उपरोक्त वन हमारे ऋषियो, मुनियो योगियो एव चिन्तको के जिए भावास, भ्यान तथा ज्ञानकी प्राप्ति के मुख्य स्थल रह। कीन नहीं वानता है कि ऋषियों की अन्तरात्मा में वेदो काप्रकाशाइ-ही वनो में हुमा था। भगवान् राम ने अपने चौदह वच इन्ही बनो में बिताये थे । पाँडवो ने भ्रपने राज्य त्यागके १३ वर्ष इन्ही वनो में विसाये। भगवान कृष्णा की मृत्यु वन मे एक वृक्ष के नीचे चितन करते समय एक बहुलिए के तीर से हुई थी। राजकुमार खिद्धार्थ बोधिगया में एक वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त कर धगवान् बुद्ध वने वै। हमारे देश मे गुहस्थभात्रम समाप्त कर वानप्रस्य बन-कर बनो में ही जीवन विताने की पर-स्परा की । यही कारण दाकि वहाबुक्ता-रोपण, बाग सगवाना समा बनो का विस्तार पुण्य कामं समन्ता जाता रहा है। इसी से इस देख के नीर्थ, गुप्त तथा राज-पूत बादि सभी सम्बाट्व राजे वृक्षारी-पण को पुष्प कार्यसम्बद्ध जन-कल्याण की बच्टि से उसमें विशेष रुचि सेते थे। उपरोक्त बच्छान्त इस बात के स्पष्ट सकेत हैं कि सम्बता के उदय से लेकर अग्रेजो के बावमन के पूर्व तक हमारे देश में दनों एव बन्यजीवन का विशेष नहत्त्व रहा। धविकाधिक वृक्षों के संगाने की परस्परा रही। जिस प्रकार कि ये दन हमें जजाने. इमारतो के निर्माण, बैसगाडी, रण तथा हहस्वी के बिए बावस्वक अन्य वस्तुधी के बनाने के जिए प्रभूर बाजा में सकती देते उपेशन (स्थित के विगरीत बनो की जेशन जिन्द की शत्य शांधीन सम्यदास्त्रीं के लिए गता के सिंह हुआ । विश्व प्रकार कि बहु। बनो के सबार वे ब उपलाए की आर - मुक्ति स्थान नहीं दिशा नथा मिल मेमोपोटीस्था तथा स्थापरात की सन्य सन्यताए जिनस्ट होकर इति सा की सामग्री नन स्ट

दुल का निषय है कि सम्रेजी साम्राज्य का स्थ पना क बाद हुमारे देश में भी बनो के विनाश की प्रक्रिया प्रारम्भ हो सर्द । दसका कारण धर्मे जा दारा बनाई गई रेल लाइनें सबके कारमाने दथा बसाय गय नय नय नयर भादि थे जिनका निमाण बनो के विनाश के बाद ही सम्भव हो सका। नि सन्दह उपराक्त काय जन्-हित की दृष्ट न भावश्यक य परन्त ऐसा करत समय यदि बद्रेज शासको ने बुका-रोपण के कार्यक्रम की बढावा दिया होता तो बक्षो एव बनो के विनाश की वर्तमान स्विति कदापि न होती । दुल का विषय है कि स्वाधीनता के बाद हमारी राष्ट्राय सरकार ने भी इस बोर समुचित ध्यान नहीं दिया। जिसके पसस्वरूप वृक्षी की सब्या नवा बनो का क्षेत्रफल घटता गया।

प्रसम्तदा का निषय है कि बैशानिक में न न सबकी रिपोटों तथा सुन्दरकाल बहुयुए। ऐसे महानु-तको द्वारा ज्वार क्ये विपको प्रान्तीकानों के फलस्वकप साकार का व्यान इस धोर विशेष क्या से धाक-वित्त हुआ तथा वह इस विशा के विके स्वित्त बुढ़ी। प्रतिवर्ध मनाये काले वन-महोस्सव, वृत्ती के कटने पर प्रतिबक्ष तथा बुकारोध्य पर विशेष कोर इसके प्रमास है। धावस्वकता है कि उस सम्बन्ध के निम्म सुकारों की धोर ब्यान दिया जाव-

(१) प्रतिवर्षं वनमहोत्सव मनाकर प्रधिकाधिक बुक्षों के सवाने की प्रवृत्ति को बढाबा दिया जाये। यह कार्य केवल सरकारी स्तर पर न कर अधिकाधिक बनता को इसमें भाग लेने के लिए प्रोत्सा-हित किया जायः (२) ए० वृक्ष काटने वाले के लिए उसी बीब के इस वृक्ष सनाने का कानून बनाकर उसका पालन कठोरता के साथ कराया जाय। पीधी की अवाने वाले ही बुक्षों के मालिक पजीकृत किये वार्ये । उनकी रक्षा का उत्तरदायित्व भी उन्हीं पर हो। (३) सरकार हारा सबको तथा रेलवे लाइनों के किनारे सकि-काषिक बुख सगवाये बाये तथा उनकी रक्षा के विशेष उपाय किये जाये। (४) इंबन निमित्त सकडी के प्रयोग को सीमित करने के निए सरकार शीझातिसीझ सौर ऊर्वाके विकास की धोर विशेष ध्यान दे। (४) दूरदशन तथा भ्राकाशवासी द्वारा वृक्षारीपण तथा वृक्षों के सङ्ख्य के सबय में विशेष कार्यक्रम एव बार्ताएँ प्रसारित की जायें।

सरकार को चाहिए कि वह उपरोक्त सुकाबो की बोर क्यान हैं।

सक्तकत्व स्था विकारस विकास्तावा

इत प्रकार कानदी सन् १६४० हे जून सन् १६४४ तक २६ करोड़ रु जाल शाया भारत में विवेशों से साया। इत नगराधि से सर्वपरिवर्तन वेग के प्रनेक मानी ने कहे वेग से होते नगा। सारवर्णननक सफलता को देसकर नज विवेशी सहस्रता जहां भा त्यों में २६ करोड २७ लाख की वहां स्थाचार पत्रों से सरकारी सोनों से बताने गये त्यों के सनुवार मत २॥ वर्गों में २४ करोड हो गई। १६७६-७० में २४ करोड ४० लाख ३३ हवार १५ २० विवेधों से मिननिर्मितों को भारत हुए।

धरेत्री राज्य के ११० वर्षों ने हतनी तीक्ष वित से ईसाइयल नहीं नडी भी जितनी नेहरू राज्य की वर्षेनिरपेक्षता की नीति के कारण स्वतन्त्रता के इन १७ वर्षों में नडी है।

पूराने काग्रेसी नेता पवान के ब्रू० पू० राज्यपाल माननीय श्री वाडियन महोत्त्व ने १ करवरी १९४६ को जामदरी में प्रेल वायटेरियन वर्च की हनर्ग खयमती के प्रवस्त पर विदेशी पारियों को समय नान देते तुर कहा वा कि हैशाई मिजनरियों ने नितान काम स्वतन्त्रता के इन १० वर्षों में किया है उतना काम परावीन सारत के ४० वर्षों में भी नहीं किया वा।

द्वविड कडगम तथा बौद्धमत

द्रविक करवान के नेना दक्षिण में बाह्मण विरोधी योजना की झाड में खुसकर हिन्दुल का खर्नेनाण कर रहें हैं। मानवान राग के विक जलाये जा रहें हैं। इसके स्रतिरिक्त जतर भारत के हरिजनों की सलाह थी जा रही है कि वे निन्दु धर्म ख़ीड़कर बौढ़ बन जायें। धर्मी झमी कलपुर से राज्य की रिप्तिक पार्टी की शाला में भाषण बैठे हुए द्रविक नेता भी 50 वी० राजस्वामी नावकर ने कहा कि प्राप्तकों बाह्मण बैठनाभी से खुन्कारा प्राप्त करता होगा अत्यवा स्वाप इस निन्म पद से ऊपर उकर देवी गद प्राप्त न कर सकेंगे। सत विश्वश्री जातियों की हिन्दु मजहब ख़ीड़कर बौडमर प्राप्त न कर सकेंगे। सत विश्वश्री

स्वतन्त्रता मिलने के पश्चात् सरकारी सजाने ने करोडो एपये सब करके बौद्ध वर्म का प्रचार किया जा रहा है। इन १० वर्गों में तरकारी तथा वैर नरकारी सरवाधों से जिनने लाहित्य काराजन किया गया, उनने सार्थ हिन्दू मायलाघी पर भारी चौटे की गई हैं। 'नमवान दुव' नामक पूज को सिह्या सकादयो द्वारा प्रकाशित की गई है जनता की महितक नात्रमाधों को बदबकर मासाहार का प्रचार करने के निमित्त लिखा गया है। भगवान दुव, महाचीर त्वामी मास खाते ने तथा प्राचीनकाल के बाह्यता गोमात भन्नी थे। इत प्रकार का लाहित्य बहुत बडी वन राणि व्यय करके प्रकाणिन हिन्या जा रहा है। सी पुन के० एम० मुक्तो हारा निक्षित बैटिक एव' तथा सम्य पुरसकें इसी मनोहति का एक नमून। है।

कम्युनिस्ट पार्टी

हिन्दू जाति की सल्या की भारी अति पहुचाने वाली उपर्युवन सन्धाओ का चौडा चौडा उल्लेख हम ने ऊपर की पनितयों में करने का यत्न किया है। किल्तुरोटी भौर भर्य के नाम पर एक भौर वहत वडी जॉक पुराने आरतीय द्मार्थ हिन्दू विचारों में लगी हुई है भीर बडी तीत गति से नवयुवको में परिवर्तन करके कार्न मार्कतया लेनिन भीर स्टालिन के रूसी विचारी का प्रचार कर भारतीय परम्पराको सोललाकर ग्ही है उसका नाम है -- कम्यूनिस्ट पार्टी। वैका के कारकानी में हडताले करवाना, मिल मालिक घीर मजदुरों में ऋगडे पैटर करना 'दुनिया के सबदूरी एक ही जाझी' का नारा लगवाकर काफी यूनियन, ठेला यूनियन, अमजीवी सम नाई युनियन, जोबी यूनियन ग्रादि ग्रनेक प्रकार की युनियने बनाकर भीर चलते काम तथा लगी नौकरियो को हटवाकर हर मामले में हडताल करवाकर स्वय चौचरी वन जाना इस पार्टी के नेतामी का प्रचान काम है। जो स्रोग इस पार्टी के चक्कर में पड जाते हैं उनका वर्ग कर्म **संस्कृति, स**म्यता ग्रादि सन काफूर हो जाता है। कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य भारतीय सम्मता, सस्कृति तथा रीति रिवाजी एव पूर्वजों मे विश्वास नही रकते । होसी, दीपावसी वशहरा रामनवमी कृष्ण जन्माष्टमी मादि त्योहार सनाना ठीक नहीं समझते । हा, यदि कोई त्यौहार मनाना हो तो मई दिवस ग्रयवा नेनिन, स्टासिन मादि रूसी नेनाग्रो का जम दिवन बडी भूममान स सनाया जाता है। बलूस निकाल जाते हैं, जलने किये जान है। इस पार्टी का **छहेद्य है-धन्त जाना भारत का भीर गीत** गारे रूस के। ईमाई पिशनरियो की तरह यह पार्टी बी आर्य हिन्दू विवारी तथा परम्परा नी नच्छ अन्ट नरके क्सी साम्यवाद के प्रसार में पूरी शक्ति सवा रही है। कोई नहीं जानता इस बार्टी के नेता राजनीतिक यक्ति हुविया नेने पर नया रव बदलें ।

हिन्दू जाति के लिए यह पार्टी भी एक भारी खतरा है।

राष्ट्राहिक 'बार्यसन्देव'

उत्पर की पिक्तवों में झाने वाली अथकर विपत्तियों की झोर सूत्ररूप से कुछ सकेत किए गए हैं।

धार्यं वर्षं तथा भारतीयता-विरोधी अमरीका इन्लैण्ड धार्दि यूरोपीय वैद्यों से समर्थित ईवाई मिशनरी शाक्रमणात्वक योजना, पाकिन्तान से सहायता प्राप्त मुस्लिम तक्षीय तथा इनी द्वारों पर नावने वाली क्रम्मुनिस्ट पार्टी का कार्यक्रम सम्योगेल्या इन सब का हम क्या है? धार्य आति धौर भारतीयता कैसे युरिशित हो सक्सी है?

भयानक सर्वनाश की समस्या का समाधान

णाव से ८० वर्ष पूर्व महाँच दय नन्द सरस्वती ने सब प्रपता प्रचार कार्य सारम्म किया धीर सार्यसमाव की स्थापना नर दी वी नव कृष्ण कोंगो ने महाँच स्थानन्द से श्रन किया कि वस साथ भी एक नमें सम की स्थापना कर रहे हैं? महाँच ने उड सारप्रसाव ने उत्तर दिया कि— बह्या से नेकर जैमिनी भूनि पर्यन्त जिस पुनील वैर्निन वर्ष का हुम रे पूर्व ४ पानने चने साथ हैं उसी के सवार्य प्रकृष के दिल्लान सीर रूच्य के सिए सार्यसमान की स्थापना की बारही है। कोई नया तर प्रचनित करने का मेरा ० न्यय नहीं है जैन्स सावलस्वी च्या पुनीलों की परस्पार सुरक्षित रहे यह हो सिक उच्छा है।

सहर्षिकी उपयुक्त ग्राकालाको पूर्णकरने के निमित्त ग्रग्नेकी राज्य की शुत्रश्रावा से बतने वाले वितेती लातियों में बडी वीरता के साथ ग्रार्थसमाज ने टक्कर ली। ईसाई मिणन का खुजा मुकाबल करने के लिए करोड़ो न्पय खर्च करके समये देश में हजारी स्कूल कालित गरुपुत धन वात्रय वनिता प्राथम द्योषधालय स्रोल दिय । खुले मैदान मे "गप्त्रार्थं करके ग्रार्थं विद्वानो ने पद-रियों के छक्के छड़ान्यि । प्रार्थसमाज को विद्यास ाकि प्रग्नेजों के चले जाने के बाद ईसाई पादरियों की स्तिविधिया स्वय ज्यारत हो जायेगी। किन्तु भारत सरकार की सैक्यू पर नीति भीर भ्रमेरिका इ नैण्ट भावि की कुटनीतिया तब सामने बाई जब न्जारो गोरे पान्नी करोडो रुपय की सह यना से देश की पि इही जातियों को इसगित से ईमाई बनाने लगे। नागा प्रदेश में पादरियों की बन्धिया से लग्न सरकार परिजिन के बहा सरकार के प्रति प्रवय-जकारी विद्योद किया जा रहा है। इसके साथ ही हिन्द्यों की सत्या बटाकर किस प्रकार। विदेशी तत्त्वो को प्रोत्साहन मिल रहा है यह हम उर बता चुके है। एसी स्थिति में हिन्दू माझा का परमधम है कि इस पवित्र कय से प्रार्थसमाज को योगदान दें। प्रत्येक ग्राम भीर करने में भार्यसमाज स्थानित हो । समाजकपी पुरिस चौकी की स्थापना के पञ्चात कोई विदेशी मिशनरी भारतीय परस्परा की कोरी नहीं कर सक्ता। उनलिए आयममाजो की स्थाना सर्वत्र होनी। चाहिए ।

प्रत्न हिन्दू अपनी बाय का क्यासे क्य एक दायात्म पृत्र कार्य के लिए बार्यममात्र को त्रान दे जिसने विदेशी धन का मुकादना रिया जा सके।

गव गाव मं संस्कृत ग्रीर हिन्दी की पान्जालामी की स्थापना की आया जिनमें प्रारम्भिक कञामी में बालको की धार्मिक शिक्षा का प्रवन्ध हो।

देगमं 3० लाल नामघारी साधु है यदि ज्नमे से कुछ हजार भी इस पवित्र काय में लगने का प्रयत्त करें नी गाप्त एवं धर्मका झानेवाली असकर आधारित संबंधमां बालकना है।

देख कं विधिन्त शानों । एमं पर्डे लिखे विद्यार्थियों को टुर्निग देकर प्रयनं अपने को त्रों में नार्थों पर नियुक्त करने की योजना पर अविस्त र शाखरण होता अस्थावस्यक है।

बेर की समस्य अपनेमामाजिक सनावनवर्मी जैन एव हिन्दू सत्याओं की बोर से सामूहिक मान्त्रीनन प्राप्तम कर देना चाहिए, विश्वके द्वार सरकार से सम्पूर्वक मान की जाज कि जिल्लो पार्चारयों की प्रराष्ट्रीय प्रश्नुतियों को रोकने के तिए उन्हें भागत मान्निक्य निक सन्द स्थाप सर्म कं प्रति तोन बाले स्वाप्तक पहुसन्त्री से गरीब प्रजा की रक्का करें।

पिछडी जातियों के निवास स्थानों पर जाकर जनकी पुगाना थानिक प्रवृक्तियों को बागुत करप दरियों को शतिविधियों से उन्हें सतर्क करना क्षीर उनमें वार्मिक विवारों का प्रमार करना प्रत्यन्त प्रावस्थक है।

श्म जानते हैं कि इन महान कार्य के सम्यादन में भारत सरकार धपनी दक्ष्म नीति के कारण जायद नुखन कर सने किन्तु महाँच दयानन्द का सार्य-खनाव धार्मनीरों के बल-दल को केकर इन महान् कार्य में जुट जाने के लिए सम्मद है। इस कार्य की खफता के लिए देश के सेठ, शाहुकार, व्यातारी और साजारण बनता सनी को निवकर धार्मनाज की सहायता करनी चाहिए। धन्य फिसी संस्था का इस और ध्योत नहीं।

समाचार-सन्देश

दिल्ली श्रार्यसमाजों के साप्ताहिक सत्संग कार्यक्रम ४ श्रगस्त ११८४ रविवार

प्रतापनवर---प॰ बाशाराम प्रेमी। ब्रह्मोकनगर---प॰ देवराज वैदिक मिदा-नरी । बार्यपुरा-प॰ बलबीर शास्त्री । द्यानन्द विद्वार---प० जयभगवान भजन मण्डली । विवेक विहार-स्वामी जम-बीववरानन्द सरस्वती परिवाबक । किञ्चन वज-प॰ घोमप्रकाश शास्त्री । कासका जी-प॰ नत्रपास द्वाय । किंगज्वे कैम्प -बद्धावारी मनुदेव शास्त्री । गाधीनगर--प • माशानन्द भजनी । गीवा कासीनी-बार्यवीर रणजीत रामा। गोविम्दपुरी--प० तुलसीराम आर्थ। गोविन्द भवन --प० धनरनाथ कान्त धार्योपदेशक । जनकपुरी बी-५--महारमा मुनी शकर। जनकपुरी सी ३ — डा॰ सुसदयाल भूटानी । टैगोर बार्डन-प० चुन्नीलास झाय। तिमार-पूर-प • सोमदेव शास्त्री । तिल हनगर -महास्मा रामकिशोर वैद्य । देवनगर-ए० रमेशचन्द्र बेदाचार्थ । न्यू मोतीनगर -प॰ वदप्रकाश शास्त्री । नारायण विहार-

च ॰ रामवीरः। प्रीतमपुरा-प॰ सस्पदेव स्नातक रेडियो कलाकार । पजाबी बाब-प० उदयक्षेष्ठ धर्माचार्य। पत्राची बाक एक्सटेन्सन ---डा॰ रघुनन्दन । वसई दारा-पूर-मा० मोहनसास गाथी। महरौसी-स्वामी बज्ञानन्द सरस्वता । महावीरनगर--प० धमीचन्द्र मतवासा । मोडसबस्ता-महात्मा वेवेदाभिक्ष । मोतीवाग-बहा-चारा नरेन्द्र शास्त्री । राखात्रताप नगर--प॰ नमनलाल माय। रचुवरपुरा--प॰ वेदब्बास बार्य । रमेशनगर-मोजमनत-शास्त्री। साजपत --प० वर्गवीर सास्त्री विद्यावाचस्पति । लड्ड्घाटी--श्रीमतो प्रकाशवती शास्त्री । विनयनवर---श्राचार्य क्यामलास जी। जीनगर-प० मनोहर सास ऋषि । ही बसास-प॰ हरिश्यन्त

> व्यवस्थापक स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती श्रमिष्ठाता वेदग्रवार

श्रार्यसमाज की गतिविधियां

प्रान्तीय आर्थं महिला सभा दिल्लो का शिष्टमण्डल प्रधानमन्त्री से मिला

सहिलाधों का परिवार व राष्ट्र में सानित क्या एकता रकते में बढ़ा योगदान रहा है। सौर धाव भी इस कोन जनको भूमिन। निमानी है। या गण्य प्रवान मन्त्री भी रार्व व गाभी न प्रान्तीय धाव महिला समा के बिर- सग्ल से कहा। जन्होंने मारनीय सस्कृति के प्राचानतम व सावार भूत भूग्यों का सुरक्षा को बिस्मे-

प्रचार वाहन द्वारा प्रचार

वि०१ जुलाई दोनहर १०वे से २ बजे तक सेवाकेन्द्र कार्यालय मण्टी हाउस मे प्रचार रखागया प्रहाक इन्लार्जशी प॰ रमेशचन्द्र शर्माची के निमत्रण पर यह प्रवार काम रतागया वा। जिसमे प० माशाराम प्रेमी, श्याम राचव प० चुनी-सास, प॰ जातीप्रसाद द्वारा सगीत का कार्यक्रम प्रस्तुत हुना। यह कार्यक्रम ज्ञिव मन्दिर के प्रागण में सधन वृश्यों की खाया मे सम्पन्न हमा। स्वार्ग रुग्रूपानन्द सर-स्वती वेद प्रचार प्रविष्ठाता र धाय-समाज भीर महर्षि दयानन्द सरस्वती 🕏 जीवन पर प्रकाश डाला भीर हास्य कवि-ताधी द्वारा मनीरणन किया। कायालय के सभी कमचारियों ने विशेष माग प्रकट की कि ग्रयले सुक्रवार को भी ग्रवस्य ग्रायें। श्री रमेशचन्द्र की शर्माने ५१) दान दिया भीर श्रीमती गुलाबदेवा ने १०) दान दिया हुवं उल्लास के साथ सभी ने भाव भीनी विदाई बेक्र स्थागत किया।

वारी जी महिलाओं को बताई और उनके कार्य की रतक के क्य में महिलाओं की बिम्मेदारी को बर्चाकिन महत्वपूर्ण बत-बताया। प्रान्तीय साथ - हिला सना की और से प्रचान मती भी राजाव गांची को बेद तथा वैदिक साहित्य भी नेट किया गया।

सवाददाता

सत्यार्थप्रकारा की पराज्ञाएँ

सानव जीवन, सद्मृहस्य व सहनाय-रिक बीर राष्ट्र निमास्त्र के कार्य के स्वस्थान उपयोगी, सहवि द्यानान्य कृत पवित्र पण्य ससायश्रकाश की चार प्रकार की परीकाएँ, ग्व वो दशको से पुरे बारस देश में बार्य पुषक परिष्यु दिक्की, (र्जि) हारा कराई वासी हैं, जिनसे लाको परि-वारों को साम पहुंचा है।

हन वर्ष ये परीकाएँ २२ वितस्वर को होगी। यह नव स्वत्रप्रदेशिय युवावर्षे है। सत व्हर्षि स्वानस्य के स्वव्यों को सावार करने हतु इस बार सम्बद्ध से सर्विक युवा बान वृद्ध, नती-पुरुष इन परिधामों में बैठ कर सपने क्लीव्य का पासन करें।

पूरी जानकारी के लिए परीका सची जमनलाल एम॰ ए०/एच-६४, धश्चीक विहार फेज I, दिल्ली-४२ से सम्पर्क करें।

वमनताच (परीका-अञ्जी)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रवार कार्य

विस्थी तमा के प्राय अवनोपदेशक पर प्राशाराम प्रेमी स्थाम रायव द्वारा धार्यस्थान सराय रोहमा भी ज्ञानवद्यार्थ के निमलकुण पर २७ जुलाई को सास्थीनगर मे प्रवार रखा कच जिसके फ्लस्वरूप ११) समा को दान प्राप्त हुआ।

२० जुनाई रिनेबार को श्री होशिय-यार्रीबहु की हारा वर छोट्टाम सरल इस्स्टीट्यूट एक्ट टॅकनोलीबी कम्मान्य र हिस्सी ११००१ में बेदमबार रखा गया। विस्तेष १० बाखाराम प्रेमी की कवन मण्डली का सावकाल ३ वर्षे से इस्ते तक प्रवयोधिय रहा। हुबारो श्रोतावणी ने प्रचार से संस् एवार प्राप्त हुसार। सवा के सिंद राज प्राप्त हुसा।

स्वामी स्वक्यानन्य सरस्वती वेद प्रचार प्रविष्ठाता द्वारा २० जुलाई प्रात चन्द्र धार्व विद्यालय सूरण पर्वत में यज्ञ के परचात् खात्राओं के मध्य में शिक्षाप्रद

श्रमदान श्रौर सेवा का श्रादर्श रूप

२० बीनाई, दिस्सी धार्य प्रतिनिधि तना दिस्ती के महामन्त्री थी। वा० वर्य-पान के बाबह एर तमा के बिक्कारी एव कार्यकाधी ने तथा कार्यावय की कुछ दस्ता एव क्ष्मद्वा के बिए अमसान एवं वेवा का बावसं व्यवहरस्य प्रस्तुत किया।

इस सबसर पर महामननी डा॰ वर्ष-पान, की वेदत्रत सर्मा, भी राजेन्द्र दुर्गा, भी सुरेन्द्र हिन्दी, भी तिपतन वास रस-बन्त, भी बगदीम, भी रामक्तिकर, भी पर्मवीर सास्त्री प्राप्तिकरिकर, भी कर्तवीर सास्त्री प्राप्ति स्विकारो एव काय कर्तामी न मान निया।

इस समदान में विशेष बान यह थी इसा धिवकारी काड़ वरण प्रादि लेकर सम्बद्ध धीर फिकाड की समदस्या के सिए पूल में गत कार्य कर रह थे। दिना किसी मैदनाय के मिलजुसकर वेशा कार्य करने का यह उपाइटएए स्वाधनीय है।

--- BEQ18#

उपवेश हुवा।२०) सभाको दान प्राप्त

२८ जुलाई को गाँव असावती में स्वामी बी द्वारा यक्ष व उपवेश हुआ सिसमें कई व्यक्तियों को प्रशेषपति वारण कराया और मद्य-मास का देवन बन्द कराया। सभी ने घटल वत निवाकि अमध्य प्याप का ग्वन नहीं करेंगे। साब साव ही एक शिक्षु का नामकरण सरकार भी कराया। थया।

सलित मोहन नाम रखा गया। इस धावहर पर गाव के प्रतिष्ठिय व्यक्ति और महिलाएँ भारी सक्या में उपस्थित है। महाख्य भजनमान जो ने कार्यक्रम के परभाद मध्य निषेष का उपरेख दिया और सभा को ११ र० दान दिया। सभी महाजुमायों ने मानयोगी दिवाई देते हुए सम्बद्धा

श्रीमती नेमवती धर्मार्थ द्रस्ट ६१ ई कमलानगर दिल्ली-७ द्वारा प्रचलित त्रि-सूत्री स्विंगम योजना

१ देश भीर जाति चल्चाल हेतु प्रचारार्वभपनी जीय बाहुन की निश्शुस्क सेवाप्रदान करना।

२ बैदिक सिधानरी निर्माश केन्द्र समुरा में, युवक एव प्रीड जीवन दानी व्यक्तियों को नि शुक्क प्रश्चितित कराकर ससम्मान उपयुक्त नार्येम्पेन और समुचित दक्षिण की अपवस्टा कराना।

३ बुढ साहित्य एव तथा भूमि साईफ नेषुरल सादि मासिक सूल्यवान पत्रिकाको को उन व्यक्तियोव सस्साको को, बासूस्य देने की स्थिति से नहीं हो, उन्हें नि बुल्क सथवा सहा सूल्य पर प्राप्त कराना।

> सम्पर्क करे — श्यामसुन्दर श्रामं ६९ ई० कमलानगर, देहली अ

पं॰ रघुनाथ प्रसाद पाउक की स्मृति में स्थिर-निधि

धार्यसभाव दीवानहांच की मह्यूची नमा में भी पाठक भी को गोक श्रदांजिल दी वई। हाच ने बी पाठक ची की स्त्रूचि के एक म्यापी निष्क क्षेत्रने का प्रस्तान पाछ किया नमा निवक्ते हारा जनकी निव्यों हुई दुस्तके एव नेत्री भादि का प्रकारना निव्य में भी किया जाता रंग प्रस्तान पारित्य होने पर निम्मितिक नका-प्रमानों ने प्रयानी होर से क्यूच देने का धारबाहन विद्या है। मार्थ जनता से निवेदन है ग्या निव्यों स्थान दिस्ता के हें हुं हाप अध्यक्त से अधिक दान सार्वदेशिक संगा कार्यालय दिस्सी को मेजने

कृताकरः	
१ दयानन्द सेवाश्रम सम की धोर से	¥000)
२ भी रासकोपाल जी शालकाले प्रकान सार्व० समा	2000)
३ श्रीसूर्यनारायसम्बर्भा	१०००)
४ भी के श्व यचस्य गाठक	₹000)
१ आर्यसमाय दीवानहास प्राप्त (वनराधि)	2008)
६ भी बहुाबत भी स्नातक	२०१)
 ी रावाकृष्ण वर्गा C/o का॰ स॰ रीवानहास 	२०१)
= औ सम्बोध समार Clo आ। एक श्रीवासमास	207)

श्रार्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश लखनऊ का ११वा श्रिविशन तथा वार्षिक निर्वाचन

धाय प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का १९ वा वार्षिक प्रधिवेण्न २७ २८ जुलार्ट चपमात्री १ श्री जयनारायण प्ररुष विजनीर १६८५ को डी ०ए० बी० कानज ससनऊ मे हुया। साबदेशिक द्याय प्रतिनिधि समा के प्रधन लाला रामगोपाल जी शालकाले का पूर्ण निद्यन इस ध्रवसर पर रहा श्वमस्य उत्तर प्रदेश में बायसमाजी से १ ५०० के समभग प्रतिनिधि उपस्थित थे। भूतपूर्व ससद सदस्य प० शिवक्रार शास्त्री जीव्स ग्रवसरपरपथारे भीर बाय जगत् के श्रष्ठ विद्वान् भी सम्मिनित

सावदश्विक सभा के प्रधान श्री गाल बाले की ने इपने इस्जस्बी भाष्ण मे ब्रदेश के या या समाजियों में नवीन प्रश्ला स्रोर जागति उत्पन की नया धर्मात रण के विरुद्ध सर्गति होकर काम करने की प्ररणाकी

वार्षिक निर्वाचन १८८४ के लिए सबसम्मति र निम्न

सिक्रित पर विकारियों का चयन किया

47477 प०इ राजजी मरङ उपप्रधान १ श्री देवी नस भाग कानपुर

२ श्री प्रमचन ार्माहयरस

३ श्रीमती सतोय कपूर (एम॰एल॰सी॰) मिर्जापुर ४ प० सच्चिमान माहकी दिल्ली

UBSE

५ की धमाद्रसिंह

अी **बनबोहन** तिवारा लखन »

२ श्री देवपाल ग्राय मुजफरनगर

३ श्री बाकेलाल दसल ननीताल

४ डा० विनय प्रत प ना सपुर ४ **ग्रीजिन कुमार जलाली श्रसीव**ढ

कोबाध्यक्ष श्री कृष्ण वसदेव महाना श्रीवीरे ग्राय

सहायक कोपाध्य र ग्रमर हा पुरतकालयाच्यास श्राविजयपास गरता

कानपुर उप पुस्तकालयाध्यान श्री सुरेड स्न तक मनमोहन निव री

> म नी धा∘ प्र•सभाउत्तरप्रदे⊺ लक्तन»

श्री योमप्रकाश गुप्त का निधन

धायसमाज बहापुरी (वी) दिल्ली के प्रधान श्री घोमप्रकाश गुप्त का १८ जील ईको ग्राकमिक निचन हो गया। न्दिबत बामा के प्रति बायसमाज के मन्∓रो ने प्राथनाश्चरा⇒त्रलि ग्रपित को २६ जौलाई को उनकी स्मति मे यज तथा भोक समाधायोजित की जिसमे श्रो गुप्त के ब्रायसमाज ने किये सेवा कार्यों की सराहता की गयी।

स की क्रिन्त्रसाल ग्राय



सावदेशिक बाय बीर दल समापन समारोह की ऋलकी सञ्चल्य दावें श्री सा० इन्नारायण श्री वासकिशन वरानी श्री सुबदेव श्रा डा॰ जमपाल श्री बाल दिवाकर हस



शिविर में प्रदशन करते हुए बाय बार



एम डो एव जिरुकाई पाऊडर वालों को लीकरी दर करता है तथा उर्देशहतिक काल सर्गाचत व स्वरूप

तिकाकाई रीठा भावता हरड बहेडा चम्पन व अस्य तर्गाचत जडी बटियों से बनाया गया एम डी एच सिकाकाई गऊडर एक अस्यन्त लाभकारी शाहतिक देव इसमे कोई रासायनिक पदाय नहीं है

एम दी एव शिक्षण्याई पाऊकर का आवा से ही नियमित प्रयोग की जिये

निमाता महाशियां वी हट्टी (प्रा॰) लिं॰ a 44 वणकरिष्ट्रपान एरिया **पीर्ति स**न्दर Revil 110015

कोर 539609 537987 537341



समीक्षा

महान शिक्षा शास्त्री महातमा हंसराज

धार्यम देश के १६-६ = ५ क प्रकार पुरुषक बध्वर थी मनी री जी द्वर "प-कोलापुरत कसर्ग पर्ने। पुरा के प्रकासन र चा प्रशाहिता मैं भी बर्घ ^देना हा। मेरीन सर्बय बह चह "ी "हिम " महपुरती प श्रिष्टिस प्रिः ज-न्या छ्ये। --पुस्तक वे वियमे मनीया जी जबहरू **सुन्दर** करो में बहुत हुछ लिखा है तथापि मैं भी कुछ निवदन करना चाहता ह। लेखक व प्रकाशक उचित समभे तो मेरे

कासुबार कर ले। पृ० ५६ पर लिखा है कि ऋषि जी खब पजाब पचारे तो उनके व्याख्यानी का सहात्वाहसराजपर बढा प्रभाव पडा। यह भी लिला है कि लाहौर में महात्मा चीने ऋषि के ब्यारयान सने । यह बान **इप्तब्य है**। महात्माजी ने न तो ऋषि के प्रवचन सुने न ही ऋषि जी के दर्शन किए महात्मा जी तो ऋषि के लाहौर धागमन के बहुत देग्बाद लाहीर में शिक्षा के बिए धाए।

निवेदन पर विचार करके बगले सस्करण

एक स्थान पर महास्मा अी को "मखीडा" भी जिला है। लेलक ने महात्माजी धौर मसीह मे क्या समानता देखी [?] यूँ ही मसीह की बढाई कर दी। प्रच्छा होता लेखक महात्मा जी के मसीह पर विचार प⁻लते ।

प्राचीनकल की जिला से व्यवसास −ि⊤ग्प्तका मं६४ ≠ आए मिखाई पट ः जभी र्रे, लेखक ने इसकः उल्लेख

न करके एक भूल की है। ीकानर के धकाल के समय सेवा कार्य में ग्रम्मणी लाव लाजपनराय जी की चवाही नही।

महात्मा जी को या तो शिक्षा शास्त्री के रूप मे ही प्रस्तुत किया जाता-यदि जीवन के धन्य पक्ष छुए वे तो जनकी वेद प्रचार के लिए सतत साधना वा उनके **बाध्यास्मिक जीवन पर भी ब्रह्मग ब्रह्म**ग ग्रद्याय लिख दिये जाते । महात्माकी के पाण्डित्य, गहन घट्ययन की भी कुछ तो चर्चा की होती। सेखक के सत्प्रवास पर पुन बचाई। — राजेन्द्र जिज्ञासु

त्रार्यसमाज दुर्गांपुरी लोनी रोड शाहदरा दिल्ली का वार्षिक चुनाव

बाज दिनाक २१-७-८५ को वार्षिक चुनाव हुआ जिसका विवरण इस तरह है--प्रवान-श्री देखपास सी उपप्रधान-धी पुरुवोत्तम बी सन्त्री -श्री रघुवीर सिंह जी

पुस्त्रकः समोक्षाः

वेद बाह्यण उपनिषद् गृह्यमुत्रादि व न्ना' नंपमक पुस्तक इप्टिपय में ग्रामी 🎼 नहीं होना चाहिए। यह पुस्तक जहा याद्य ब्राह्म से सादगी को प्रस्तुत करती है वही प्रथम पृष्ठ संही पढने की तीव आकाक्षा इसकी विशेषता को प्रकट करती है। इसमे विद्वान लेखक द्वारा वेद रे चुने हुए पैतासीम मन्त्री की सरल सुबोध पदच्छेद, धन्वय, पदार्थ एव भावार्थ के माध्यम स हृदय स्पर्शी प्रभाव-नाली शैली युरत घाच्यात्मिक भावना से बनुप्रास्तित एव बोतप्रोत ज्ञानपिपा-सुधो भीर श्रद्धालुधो की परमात्मा मे परमश्रद्धातका प्रकृति के क्यमान् समूचे स्थावर अङ्गम पदार्थों मे उस नियन्ता की विराजमान सत्ता के प्रति प्रगाढ निष्ठा

उपमन्त्री — श्री मूलचन्द गम्भीर कीय व्यक्ष - श्री रामनारायण सर्मा उपकोपाध्यक्ष — श्रो चन्द्र भानु सुमन पुस्तकालयाध्यक्ष -- श्री सुलवीर सिंह जी ले लानिरीक्षक — श्री ऋषिपाल जी प्रकार मन्त्री — श्री विष्णुदलः जी

> विल्ली बार्य प्रतिनिधि सभा १६ हनुमान रोड, नई विल्ली-१

बलवातर होती जाती है नि सकीय साहस के सविकारी विद्वान् डा० कृष्णलास द्वारा पूर्वक कहने से समय हूँ कि नास्तिक पूरुष लिखित विभू वैभवम् विश्वनीष्ठ ई०६३७ में भी इस पुस्तक से बास्तिकता के भाव सरम्बती विहार, दिल्ली ' द्वारा प्रकाशित एव सम्कार जाग्रत व उद्बुख होने ने विलम्ग

> दसका ग्रावधार इतना उध्यस्तरीय है यह निस्सन्देह णिशा संस्थानी सामा-जिक न्यक्तिगत जीवन में प्रतिदिन स्था बोलकर सनमकर सूख शान्ति की प्राप्ति की जासकती है। प्रत्येक परिवार में धाबाल बढ द्वारा इसका लग्योग कर जीवन को सरम वनाया जा सकता है। स्वामी विद्यानाद सरस्वती जैसे प्रसर् वेद एव सिद्धा तममज निद्वान् सन्यासी द्वारा इस पुस्तक की भूमिका निका जाना उक्त विशेषतात्री को प्रमाशित करती है।

> > समीक्षक रूपकिशोर शर्मा

वार्षिक निर्वाचन

दिनाँक ७ जुलाई ८५ को महिमा बायसमाज हरीनगर घण्टावर का वार्विक निर्वाचन सबसम्मति से निम्न प्रकार सम्पन्त

प्र घान उपप्रसान मन्त्री कोवाध्यक्ष

श्रीमती प्रकाशवली वर्मी श्रीमती स्थानदेवी खन्ना श्रीमती राजरानी सूदन श्रीमती सत्या चौधरी

🔨 🥄 चनदीय (बानस्य प्रकाश वर्मा) मन्त्री

लिए स्वास्थ्य

कॉगड़ो फामसो.

हरिद्वार की औषधियां

क्षेवन करें

शाला कार्यालय-६३, गली राजा केदारनाय, वाबडी बाजार, बिल्ली-६ फोनः २६६८३८





क्ष्मं श्यक ३१ मृत्य एक प्रति ४० पैसे रविवार, १८ झगस्त, १६८६ बार्थिक २० इपये मुष्टि सबत् १६७२६४६०८६ बाजीवन २०० रुपये आवस् २०४२

दयामन्दाव्य १६१ विदेश से ५० डालर, ३० पींड

स्वाधीनता की यज्ञवेदी पर सर्वस्व अर्पण

कई शताब्दियों की गलामी की जजीरों को तोडकर धनेक अन्यड तुफानो का मूख मोश्कर भारत देश में स्वाधीनता प्राप्त की । इस स्वा-भीनता के लिए कितने करे काति-कारी बीरो, शहीदो ने धानी जान कुर्बान करी, कितनी चढती खवा-नियों ने धपने जिगर के खुन से सीच तर भारत के नन्दन वन को सब्ज किया। ये स्वाधीनता दिवस समर शहीदो की स्मृति का, उनके नगमे मुनगुनाने का, बलिदानियों की दैरा-गिन भावनाओं का सत्कार करने का दिन है। सर्वप्रथम स्वराज्य भीर स्वाधीनता की चिन्गारी फोडने वाले महर्षि दयानन्द स्तुत्य है जिनके सर्वभाग प्रेरणा पर १०५७ के बीरो नै झाजादी की प्राप्ति के लिए भग-ढाई ली, देश के कुण्ठित मानस की भक्तभोरा। अपने त्रिय विख्य व्यान जी कव्या वर्माको विदेश भेजा जो क्रान्तिकारियों का प्रबल उन्नायक बना । बोर बीरांगना फासी की



रानी क्षमीबाई, शूरवीर तात्या टोपे मगल पाण्डे, चन्द्रघेखर आजाद, वीर भगतसिंह, राजगुर सुधदेव, रामप्रसाद विस्मिल, रोक्षन सिंह, स्रफाक उल्ला, मदनलाल धीगडा, उधमसिह, करतारसिह सरावा मादि भनेक महान् क्रातिकारी जिन्होंने भ्रवेज सरकाद को प्रकम्पित किया। भरत नाता केथे दुलारे स्तुत्य हैं। श्रद्धानत है मस्तक उस वगाली बोस

लेखक--यशपाल सुधांशु

सुभाषनन्द्र पर जिसने खबेजो की नजरबन्दी तोडकर, छिपते छिपाते भफगानिस्तान से जर्मनी भीर फिर जापान पहुचकर दुनिया को हैरत मे डाला और सिंगापुर पहुंच झाजाद हिन्द भीज बनायी। एक पूरी फीज नेकर अग्रेज फीजो से मुकाबला करने निकल पडा बीर बहादुर । उस केहरी शेर की दहाड से भारत का बच्चा जाग पडा, प्रग्नेजी साम्राज्य की नीव हिल गयी। सम्मान का अर्घ्य है उन नर केहरियों को जिन्होंने अपने तप बलिदान यातना, त्याग भीर खुन के छीटो से भारत माके गौरवपर्शा मस्तक पर कुकुम लगाया। वेतप -पत जननायक स्वामी श्रद्धानन्द, लोकमान्य तिलक, महात्मा गाधी, सरदार पटेल, कत्रीन्द्र रवीन्द्रनाच टैगोर, लाला लाजपतराय शचीन्द्र नाय, जवाहरलाल नेहरू तथा देश के तमाम प्रबुद्ध जन जो स्वाधीनता धान्दोलन के लिए जेलो मे गये। धन्य

(शेष पुष्ठ ११ पर)

अपने उपदेशक विद्वानों का सम्मान अवश्य करें

—सूयंदेव

४ झगस्त (६६% को दिल्ली चार्य प्रतिनिधि सभा के सन्तर्गत वेदसचार बार्व में सहुदोश देने वाले आये विद्यानी की एक वेटक झार्यस्थान मन्त्रिय दोवण हाल दिल्ली में साथ ४ वने सपन हुई। सर्वेद्यस्थ सभी उपस्थित सहुनुमानी का स्वामत करते हुए महामन्त्री बा॰ धर्म-पास ने इस मैठक के स्ट्रेस्वी पर प्रकाश बासते हुए कहा कि धान की मैठक में गिल्लासित्त चार विषयों पर मान्य वर-स्थित बन्धुओं के नुकाब सामनित किये सामने तथा विचार विषयों के सल्यात् भावी कार्यक्रम की रूपरेका निर्घारित की जायेगी---

१ वेदप्रकार कार्यक्रम — आर्यसमाय प्रान्दरों मे, सार्वजनिक स्वानो पर, विद्या-सयो थे तथा साहित्य प्रकाशम, विक्रय स्रवया नि सुल्क वितरस द्वारा। २ सभाका वेदप्रचार विमाग-स्राय-श्यकताएँ तथासभावनाएँ।

६ धार्यं विद्वानो तथा उपदेशको के प्रस्ताव।

> ४ क्रियाम्बयन प्रक्रिया। (क्षेत्र पृष्ठ ११ पर)

सत्संग वाटिका

वेद में कई स्वानों पर वार्थनिक तस्यों का विश्लेषण करते हुए सास्य-मीनाखा की प्रेरणा पाई वार्ती है। यो बोद सारविवान के हुब में महुत्य न देकर इसर-उधर की वार्तो में बीवन मना बेने को ही परस दुब्बार्य वाम बैठते है। उनकी भ्रान्य चारणा को हुर करने तथा युग पुगतर से प्रमुख निकासा को बाबुत करन के लिए मनवान् बेद धनेक मननो के हारा उपयेख हैं। उपयुक्त मननो के कार्यन की

(१) क प्रथम दवर्षे — किसने वरीर की उत्पत्ति से भी पूर्व विस्त्रमान रहने वाले सारमा को देखा प्रधाद रुद्ध निष्टमान पूर्वक बान निला कि यह जीवारना पहले ही वर्तमान वा धीर सारीर की रचना का उपक्रम बहुत ीके की घटना है। इस सारमा की विधित भीर धारवर्षकारियी वालित को देखा कि वह धनादि धीर स्वित्रमाधी सारा —

(२) यत् प्रमस्या भावनागम् अस्य-न्यन्य विवर्ति—स्वय तो प्रस्थि से रहित है परन्तु छत्पन्न होने वाले खरीर को धस्त्रियो से प्रस्पूर कर देता है और दिन प्रतिदिन सरीर का पासन-पोषण करके खसको सुरह भीर बनवान् बना देता है, बैंडे कोई जबन सम्भी वर सहा होता है, वैसे ही समारा सरीर सस्थिपञ्चर पर बडा है। उत्पत्ति के समय से लेकर धस्त्रियों का स्वम्म भी उत्पन्न होता रहता हैं और सरीर के मन-प्रत्यन भी समून्नत होते रहते हैं। यह सब बीबारमा की ही महिमा है, परन्तु बाश्चरंबनक बात यह है कि जीवास्मा स्वय तो इतना सूक्ष्म है कि उसके स्वरूप ने शस्त्रिक के केसनाज भी नहीं और सरीर शस्त्रियों से भरपूर है।

मन में सकेत किया है कि वरीर को अस्त्रमन्द्रम् अर्थाए अस्त्रियों से बिक्ट बनाने वाला सरीर से सर्वमा पुषक् हैं बो सरीर को निर्माल पाना-पोनवल सरा बुट्ट पुष्ट करता है, 'विमर्ति' किया का कर्ता कोई धौर ही तरब है वो सरीर की पूर्वक कोई पीन मारवा न होता तो सरीर की उत्तरोत्तर वृद्धि कशिर से सराया केन रहने पर मुठक सरीर की सराया केन रहने पर मुठक सरीर की कर्ती प्रकार को हिंद नहीं होती क्योंकि मृद्धि करने वाला वहां से पना सासा है।

कई सोग विचार किया करते हैं कि-

(३) असु असुक् अस्याः—'आव और रक्त' वे तो भूमि अर्थात् ववसूतो के स्था-वाल से बनते हैं और वे ही सरीर में वीवन के कारण है। इस से पृथक् आस्ता । विवाह कर स्वागत क्या

वैदिक आध्यात्म विज्ञान

लेखक--इन्द्रराज

को ददर्श प्रथम जायमानमस्यन्त्वन्त स्वतस्या विकर्तत । भूम्या प्रसुरसृगारमा ववस्वित् को विद्वासमुपगात् प्रष्टुमेतत् ॥ ऋ० १।१९४।४

*

के निर्माण से प्राच और रक्त का आरवण महत्त्वपूर्ण त्यान है और बाह्य किंद्र मही यो तरण सरीर की धर्मिनुद्धि और दिवारि के प्रचान कारण की प्रतीत होते हैं, ररजु ने दो कार्य हैं और इस के कारण पूजी धारि पच महासूत्र हैं। धर नाह का जबफ में मा बकता है कि पचपूतों के कार्य धर्मा बकता है कि पचपूतों के कार्य धर्मा बकता है कि पचपूतों के कार्य धर्मा करता है। स्वाच और रक्त की खराशि होकर सरीर की रचना, मुब्रि और पुनिट होती है वसी हेतु सरीर धन्म-गब, रक्तमब है।

परन्तु वरीर नेवल प्राय, रक्त, नाव और सस्य कारि गांव जोविक तत्वों के व्यादा ही का नाव नहीं है, वरीर में कोई बोसिद बाइव उरच भी है। यब वरीर एक बीदा बायदा गांव का पुतना है तो बीदन कहीं है साया ? हर प्रश्न का उरमन होना भी स्वामायिक है। यब नव कहुता है कि वह भी विचार करों कि—

(४) **प्रात्मा क्वस्वित्--वरीर** में जीवन की क्योंति जनाने वाला, धनेक कियाओं का सचासक और अवन्त प्रेर-खाओं का प्रेरक 'शास्त्रा' कहा वे बाया ? इस जीवन का कारण कीन है? क्या प्रासा बीर रक्त बादि के समाम बीवन तत्व का भी पृथ्वी बादि पश्चमृत ही कारण हैं सचवा उस करव की कोई शपनी स्वतस बत्ता है भीर वह भारमा तत्त्व किसी भी उपावान से उत्पन्न नहीं है। नत्र ने कहा है कि शरीर को यवार्य तया समझने के लिए खरीर के मूब वस्त्रों पर इंग्डि डालगी चाहिए। सरीर की स्थिति हे प्रतीव होता है कि लरीर एक सस्मिपिञ्जर है। इस धस्त्रिपञ्चर मे प्राणु भीर रक्त का सचार हो रहा है और इस सचार से जीवनशीला वस रही हैं, परम्तु इस पुतके में कोई 'बारमा' नाम का समीतिक तत्व भी विराजनान है जो इस सरीर से. इक शरीर की किया से और इस सरीर के जपादान से या भूज कारता से करपन्न नहीं हुमा है किन्तु उस की उत्पत्ति होने के समय से बहुत पहले से ही विश्वमान गा। इसलिए गंत्र ने उसे 'प्रदव' कहा है। यह सरीर के सन्दर है और शन्दर रहकर सरीर का 'विमर्ति' झवति पासक पोषण करता रहता है। देख सीविष्ट कर बहु पासक, पोबक, बीवमदावक तत्त्व बंगवलाल (परासा-बन्द्रा)

के चिक्क समाप्त हो जाते हैं, यह वासन-कर्ता, पोचलकर्ता और जीवनवाता सरीर में कही से बाता है और किसी स्वान की फिर प्रस्वान कर बाता है, बारमा की इस उत्क्रादिवदि भीर संबीत के भाव को स्पष्ट करने के जिए गण ने वयस्थित् धर्यात कहाँ से तथा कही न कहीं से अवस्य बाता है। इस बब्द का प्रयोग किया है, मम ने उस बाने बाने वाले और सरीए के बरल पोषण करने वाले समिनास्ट्री धनौतिक तत्त्व का शुभ नाम भी बता देने की क्या की है। शरीर की ब्जर चुनि के हरा-भरा करने वाले हाड़-मांत तथा रक्त के बने प्रपत्तित्र पुराने को जीवनाम् स प्रदान कर पवित्र करने वाने तथा इस जड़ श्वरीर की बूजी बस्ती के करत करत में ज्योति को बनाकर चकाचीय कर शसने वाने का बाब बारमा है बारमा।

झारवन् सन्य का सर्व वी वक्ता विचित्र है। ऐसा प्रतीत होता है कि पर-मेस्बर ने इत तरच को जैसा पाता बैदा ही इत का बाम रखा है। निरुक्ताचार्य महर्षित सास्त्र के सारमन् का निर्वेचन करते हुए विचा है कि---

> भारमा भग्नतेर्वा साप्तेर्वा स्थाधिकर्वेण । निरम्स

उसका नाम बात्मन् इसमिए है कि वह सवा ही एक शरीर में निवास नहीं करता किन्तु एक को खोड दूसरे में धीर दूसरे को क्षोड तीसरे में तथा सीसरे को स्रोड़ भीने सरीरमें जाता है धौर इस प्रकार निरतर वर बदसता रहता है। इसके बात्वन् नाव रखने का दूसरा कारण वह नी है कि नह बब सरीर में प्रवेश करता है वो तत्काल सरीर के प्रत्येक शव को नितमानुकर देवा है और जब तक सरीर ने रहता है तब वक बनातार वित देता रक्ता है जिस से बचीर की जानिवृद्धि डोवी यहवी है। इस करन को बारमन इस शिए भी कहा बाता है कि वह तत्व जब शरीर में बवेश करता है तो उसी समय शरीर के कथ कथ में जीवन ज्योति फैल वाती है और करीर का कोना-कोना जब-नवा बठता है बीच बच तक वरीर में प्रदा है इस इस क्यमी उस नगरी को बीवन क्योंकि के प्रकाशिक किने प्रका

वह योजन न्वीति का प्रकास करने वाला, सारीर के कोमे-कोने को बाइत रखने वाला और निरंदर बंदि करते प्रदूष वाला व्यवितिक सारमा कही है जाता है और को बादा है तथा कम से सारा है और का तक सरीरों में सावानमन करता रहेगा? इस प्रकार के समेरों प्रका है जिन पर नियार करना परमायां प्रका परस्तु कुख और सारवर्ष की बात है कि-

एत द अन्द्रम् क विद्यासम् उपगात्-इम बार्षी को पूक्षने के लिए कोन विज्ञास् है बो सारमजानी विद्यान् के पाल पहुषा है। सम्बारम विद्या के प्रमन धान्मजः। गि विद्यान् के पाल जाकर ही करने वाहिएँ सौर बही इस प्रकार की कठिन समस्याधी का सरलतया समाधान कर सकछा है परस्तु वह विज्ञासा सर्वशास्त्रण के वास्त्रक के नहीं उपजीत सोर म ही प्रत्येक विद्यान् इन नुस्थियों को कोस सकछा है। इसके किए तो पूक्षने सीर न्याने वाले सीनों ससामारण होने चाहिए। कर -

धारवर्षेत्रस्य वस्ता हुससीऽस्य सम्बा धारवर्षे जाना हुससानुष्ठाव्ट ।

कठो० हितीय वस्त्री ६

धर्मात् इस् वास्थवान का (वचता) वच्ता (धामलर्म') कोई निरक्षा ही होता है। (वच्च) स्वयंग (लच्चा) पाने वाचा (कुळव) कोई मनेत्र है होता है। (कुळ-बानुविच्ट) प्रवीण पुरूष के वचके पाना हुआ (बारा) जानने वाचा (खास्पर्म.) कोई निजेस ही होता है।

जनवरी जुिंद स्व बाल्या को बर्युक् हे बातने के लिए उत्तरिष्ठ कर रही है। है। वह बाम्यालिक विज्ञान कार्र है। वह बाम्यालिक विज्ञान कार्र साम्याल में दूवा हुआ वर्षक ही बता सकता है परन्तु पूक्ते वाला तो होना जाहिए। वेद महता है इस बाला तत्व को पूक्ते के लिए कीन किसी था गानी के पास बाने का उपक्रम करता है।

पुन कठ मुनि यसामार्थ के मुझ से निमकेता को समझाते हुए बारे सखार के सारमधिकायुकों को सम्बोधित करते हैं— जिसका मायत प्राप्त य राज्यिका ता कुरूम बारा निधिता दुरस्थवा दुवें वसरतस्वयों वर्षात शा

कठो० तृतीय बस्सी १४

ऐ बण्य-बण्यात्वरों से मोडू विदा में वोने हुए बिहासुबनों ' 'वितिस्टव'' छठी केवस कठो ही नहीं प्रितु ''वाहव' बावो और बहा को बागने वाले मोग बिहानों के वास बाकर उक बारस्वरूप को बानों । निरम्ब ही वह घाम्यास्थिक नार्ये छुटे की बार के सबाग कठिन हैं। केवस हस्वपर्धी किंग, नगीची नाम ही रस कठिनता से प्राप्त होंगे मासे बास्य-वरण को बता सकटे हैं।

बाइए, नैषिक बाज्यात्म के इस रहस्य की किसी बाह्मकर्सी से पूच कर बीर उसे बावकर बरवा देश विश्व का कस्याज सम्पादकीय--

सांस्कृतिक अस्मिता और स्वाधीनता

सारा ससार चमत्कृत है भारत की सस्कृति भीर सम्मता पर। हिमालय से भो कची प्राकाश को खुती, सागर की गहराई से धांचक गहरी हमारी सस्कृत सब से पुरातन भीर सब से नूतन है। इसोलिए मानव की सम्यताधों के इतिहास में भारतीय सम्यता की एक विशेष पहचान भीर मास्मता हु। ससार में सभ्वता भार सस्कृति के कई प्राचीन केन्द्र रहे हैं किन्तु उनमें स भाषकाश को ग्राज हुन भग्नावशेषी के माध्यम संहो जानते हैं। भारतीय सम्यता मे एक श्रांवच्छृह्वल निरन्तरता है। भारत पर बाहुर से प्राक्रमण हुए, अन्दर से कृतघ्न राष्ट्रवर्शातयो ने चाटका, जात-पात, ऊच-नाच खूबाळून के विषवर सदव इसत रहे फिर भा हुमारे अन्दर ऐसा शक्ति रही है कि हुन पहले को भवेक्षा अधिक संगठित, जाग्रत भीर विजया बनकर लड हुए। हमारा सामय्य है कि धनेक धवराषों के बावजूद हमारा हस्ती कमा मिटो नही और न मिटेगी। इसका मूल कारण है हमारो मनीबा। सना-तन की लोज मनावा से जुडी है। हमने घम को भी पराक्षाण को कसौट। से ऊपर नहीं माना। भारतीय संस्कृति का बचाये रखने से उसके प्रश्न, शका, मसहमति, विराव, सुवार मीर विदाह का परमारामी का बडा हाथ रहा है। इसानिए हम आज मा नियमान है। पराजीनता के युग में हम सजग थे, ग्राज मो है।

हमे स्वाधानता मिलां। इसमें हमन वनस्व न्याखावर किया। हमारे , हाया क्रांतिकारां भी में और धान्तिपूरण सत्याग्रह आप्योलन चलाने वाल भी। क्राग्रस ने यावनावत रूप से कार्य किया और प्राव्ध भी हमारा सरकार राष्ट्र । नमारण के काय में लगा है। हमारो सरकार स्वतन्त्र के सुवन से भी भाग ल जुका है। गोश्रा आर पाडिकार तथा विनिक्त का राष्ट्र का भग वना चुका है। गोश्रा आर पाडिकार तथा विनिक्त का राष्ट्र का भग वना चुका है। भारत का ख सी रियासता का राष्ट्र में बेलय कर चुका है जा सासान कहा था। इस सरदार वल्लमभाइ पटेल खेसी भेषा का व्यक्ति ही कर सकता था। असक हाय म पूरा सगठन का बाग होर थी। प० नेहरू गाषा के बाद राष्ट्र निर्माता रूप में याद किये जाते हैं। उनके भी प्राने पाधा के बाद राष्ट्र निर्माता रूप में याद किये जाते हैं। उनके भी प्राने पाधा के बाद राष्ट्र निर्माता रूप में याद किये जाते हैं। उनके भी प्राने पाधा के बाद स्वरंध के निर्मा के स्वरंध पढ़ हुप पर का वाग का राष्ट्र हित में सहन करते थे। हमारे दक्ष म नेता थ, हमारे हाथ प पाकिस्तान में नवाब और सेनापित। पारणाम प्रापके सामने हैं।

परिवतन धावस्यक है। साप भी कचुल खांडता है, यद्यपि यह कष्टप्रद प्रक्रिया है। भारत को चाजनीति में भी बदलाव धाये हैं। काम्रस में भा। गांधी के युग में भी भीर इन्दिरा नाथी के युग में भी। पर इस बदलाव स नवजावन का हां सचार हुआ है।

गांघो के पहुले भी स्वाधोतता के लिए सर्वक्त प्रयास हुए हैं। पर वह युग भिक्षा थुग बा—प्रावदेन, प्रतिवेदन का युग। गांधी युग धाया, पर प्रचानक नहीं, धीरे धीरे। जब महात्मा गांधी भारतीय राजनिक गान में सूर्य बनकर चमके ग्रीर धीरे धीरे धपने कार्यक्रम की पखुडिया खोलकर सामने रखने लगे तब उनके बहुत से कार्य ऐसे थे, जो पहले भी बय-भग या स्वदेशी घान्दीलन के रूप में सामने घा चुके थे। शक्कारी शिक्षा सस्वाधों का बायकाट ग्रीर राष्ट्रीय विचान स्वाधों का बायकाट ग्रीर राष्ट्रीय विचान स्वाधों की स्वापना हो चुकी थी। कागडी, बनारस, ग्रालीय, दिल्ली की

सस्थाएँ, इसी कडी मे बाती है। विपिन चद्रपाल, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, एनी बेसेन्ट, ग्ररविन्द लाजपतराय, तिलक, सावरकर श्रचीन्द्रनाथ सान्याल इसी दिशा मे पहल कर चुके थे। कवीन्द्र ग्वीन्द्र का 'एकताचलो रे' उस समय का क्रांति गीत था। जो स्वा घीनता समाम के लिए लज्जारता था। श्रद्धानन्द का सीना सगीनो के सामने खुलाया। तिलकाका स्वराज्य मेरा जन्म निद्ध ग्रिविका है युवको मे प्रारा फुकता था। गाघी भारतोय राजनीति के भगीरथ हुए। वे राजनीति को उच्च ग्रौर मध्यवर्ग के स्वर्ग से उतारक साधा रए। जनता की घरती पर ले आये। उनकी कार्यप्र गाली से कई बार नैहरू जी भी क्षुब्ध हुए। चौरी चोरा ब्रान्दोलन के त्थान पर उन्होने स्वय लिखा है, 'मैं समफता हूँ सभी प्रमुख नेता क्षुब्य हुए, हा गौंघी ी के मलावा। पिता जी, जो उस समय जेल काट रहे थे वे बहुत परेशान हुए। रहे तरुण लोग व बहुत उत्त जित हुए। हमारी बाशाक्रो का उठता हुमासीघ एकाएक घराशायी हो गया।' महात्माजी के विचार 'यद्यपि जीवन के सम्बन्ध मे हमारे दिल्टकोएा के फासले निश्चित रूप से बढते चले गये पर माज हम एक दूसरे के जितने करीब हैं, कभी उतने करीव न ये। 'महत्त्वपूर्ण हैं। ये उद्गार निर्लिप्त युगद्रष्टा 帝費!

प० नेहरू का झनेक बार विरोध हुआ पर देश की बेहतरी के लिए, व भी नम्रतापूर्वक इस विरोध के सामने मुकते गए। इसीलिए आज इसारा दुनिया में स्थान है। हमारी महान उपलिख्या हैं— बनाया मुर्गिय के स्थान है। हमारी महान उपलिख्या हैं— बनाया में पूर्ण रूप से निर्भारता, हिन्द सीवियत सबि, दूरदर्शन का प्रारम, गुटनिरपेक्षता की धम्यक्षता, देशी राज्यों का भारत में विलय, गोवा की मुंबत (सिक्सम का चितय वंको का राष्ट्रीयकरएए, स्वत-त्रता सेनानियों का सस्मान।

साज हम घम निरपेक्षता की बात कह सकते हैं, पर इसमे हम कहा तक सफल हुए हैं। हिन्दू कोडबिल ने हिन्दू स्त्रियों को अधिकार दिए। मुस्लिम औरतों को कौन अधिकार दिलायेगा? गांधी बर्म-निरपेक्षता के लिए शहीद हो गए। रोज्या रोला ने कहा था—'गांधी क्रूस के बिना ईसा है। इन्दिरा की शहादत ने राष्ट्रीयना की आवना को ऊवा उठाने की देख को शक्ति दी है।

धाज देश की बढती हुई पावादी घोर गरीबी जातिवाद, क्षेत्र-वाद, आतकवाद का विष चारों घोर फैल रहा है, हमें इससे निपटना है। हम प्राचा करते हैं कि एक नई सस्कृति एक नई शक्ति के प्रतीक के कप में युवा प्रचानमन्त्री राजीव गांधों के नेतृत्व में स्वाधीनता दिवस के प्रवसर पर प्रएा करने की प्रावध्यकता है कि हम देश को सभी युराइयों को दूर करके ही रहेंगे। मारत को सबल एव सप्पम्न राष्ट्र बनाय में। १८५७ का जेहाद प्रग्न जो के शिक्षाफ या, पर यह धाल का वेहाद इन बुराइयों के विरुद्ध होगा। हम आक्रीश प्राता का प्रौर हिंगा पर नियत्रण कर लो। हमारी प्रपत्तियात्रा नमें वितिज की घोर वढ रही है। हम सभी क्षेत्रों में उच्चतम टेक्नोलोबी प्रपता कर जापान की तरह अस सस्कृति का विकास करके प्रन्य देशों के समतुल्य न होकर बागे बढ़ निकर्लेंगे। इस प्राशामरी परिकल्पना को साकार करने के लिए ससार में धोर विशेष कप से बारतीय उपमहादीप में शान्ति नहें।

—हा० धर्मपाल

फांसी का फंदा चूमनेवाली हंसी

१६ प्रमस्त यानी भारत की घावादी का दिन भाज से ३८ साल पहले नुलामी की जजीरें काटकर भारत ने बाबादी की श्रास्त सी वी। प्रत्येक अन्यतवासी का मस्तक छ । दिन गर्वसे अच्चा उठ सवा या। हरेक चहुरे पर मुस्कान थी। लेकिन इस खुशी के धवसर पर देख के उन हजारों वासी लोगों को भी हमने याद किया बा, जिन्होने बाजादी की लडाई लडते हुए श्रपने प्राशो की बलि चढादी भी भीर ग्रपने जून से भाजादी के बीज को सीवा था। जाने ऐसे कितने किशोर धौर युवक वे जिन्होने सुब सुविषामो से भरी विदगी के मुकाबले काटी भरी राह को चुना, ग्रमेजो के दिल दहलाने वाले ग्रत्याचार सहे और इसते इसते फाँसी के फदे की भूम सिया। भगतसिंह चन्द्रशेखर बाबाद रामप्रसाद विस्मित, प्रश्नफाक उल्ला, राजनुर, सम्बदेव करतार सिंह, दलीप सिंह हेनू कालानी, ऊषमसिंह भीर न जाने कितने ऐसे नाम हैं, जो अपने नतन की भावादी के लिए मर मिटे। १५ धनस्त का विन उन्ही के सपनों उन्ही के सकल्पों भीर उन्ही के बनिदानों का प्रतिफल है।

ऐसे युवको मे एक था खुदीराम बीस जिसे १६ प्रमस्त १६०८ को प्रमेणों ने फौसी पर चढा दिया था। उस समय ब्रोराम की उम्र वी कुख १० तास। लकिन सुदीराम सब १३ साम का ही या तजी वह सावादी की इस बकाई में कृद पुका था। एक सन्येरी रात को अवे जगल के बीच मां काली की विकरान मूर्ति के सामने उसने क्रांति की दीका भी थी। प्रतिका की बी कि देख की धावादी के लिए प्राची की बाबी समाने से भी वह नहीं हिचकेगा।

उसकी प्रतिका पूरी हुई पाय सास बाद बटना मुखपकरपुर की है। बहा का जिला मजिस्ट्रेट वा किन्स कोई नाम का एक निर्देशी प्रमेख देशमक्तों ग्रीर ऋति-कारियों को वह कठोर से कठोर सवाए विया करता वा। यातनाए देने में एसे बुक्त निकता वा । देखमन्ति उन्नकी नवर ने सबसे वडा प्रपराच था। धालिरकार काविकारियों ने इस बांस की विरक्तिरी को दूर करने का निर्णय सिया। उसे नौत चाट उतार देने की जिम्मेदारी सींपी नवी खुदीराम बोस को।

बुवीराम बोस धपने एक साबी के साम मुजपकरपुर पहुँचा। स्थिन तौर पर किंग्स फोर्ड की विनचर्या का पता सवाया। बाजूम हुवा कि किंग्स फीवं रोज साम को बोका बाढी से बैठकर बनोरजन और बामोद-प्रमोध के लिए बीरे सैनिकों के

नवय ने बाता है। बोनों क्रांतिकारियों ने तब किया कि क्थम से मीटते समय की बन है उस दिना बादे । ३० मंत्रैं १६०८ फुसलाने की कोशिश मी की, किर बी उन्हें को उन्हें बबसर मित्र बना और उन्होंने मोक्काकी का का जेंच कर वर्षे क्र-क्रूर क्य क्षमा । यर एक वसती हो नई । नैसी बाक्री किंग्स कोई के बास बी उसी तरह की बाक्री क्छ बडोब बडोब केनेडी की भी भी। हुस्तीन के बूचीराय में केनेटी की वादी की ही किंग्स कोई की बाबी समन्द थिया । इस सर्वा किन्द्र फोर्ड हो वस बया पर क्षेत्री की पत्नी की मदनास्थल पर मृत्यू हो क्वी

क्य फेंकते ही खुदीराम भाग निकला वा। जनस-जनस आह असाह अरा २५ मील का रास्ता बौडते हुए उसने तब किया पर अवल पकडा वया। धदानल में उसने निडर होकर बयान दिया कि बहु प्रत्याचारी किंग्स फोर्ड की हत्या करना चाहता वा। बेकसूर भीमती केमेडी को नारने का इसका इरावा नहीं था। भीमती केनेडी की मौत पर उसे सफसोस

क्रांतिकारियों के सम्बन्ध में सूचनाए भीर दश के सक्त्यों तथा नेताओं के नाम जानने के जिए बेल ने सुदीराय को कठोर वातनाए वी वर्वी । सेकिन मारत के उस बच्चे सपूत ने इसते इसते सारे घत्याचार सह विषये। व तो उत्तके नुवा से उफ

निकली, न क्रांति दल के बारे में कोई जानकारी। जेस के प्रविकारियों ने उसे सफलता न मिली।

बालिरकार खुदीराम बोस की फासी की सवासूना दी गयी। उस समय भी बुदीराम के होंठों पर मुस्कान विरक रही थी। अपने फैसले में क्य ने कहा कि अगर वह बाहे तो एक सप्ताह के भीतर हाई कोर्ट में अपील कर सकता है।

'नही इसकी कोई जरूरत नही है। खुदीराम ने कहा अग्रेज मेरे देश के दुष्मन हैं बुरमन की घदासत कभी इन्साफ नन्प्रें कर सकती। फासी मेरे लिए सजा नहीं है, बल्कि सबस व्हा उपहार है और इसे में खुशी से स्वीकार करता हु। हा प्रगर बाप इजाबत दें तो में श्वामत में -उप-स्थित अपने देखनासियों को नम ननाने की तरकीय बताना चाहुगा, नाकि आरत मा का कोई लास उस काम को पूरा कर सके जो मैं नहीं कर पाया।

भारतीय स्वतन्त्रता के इतिहास में मक्ति १'द्र धयस्त का दिन बाच की सूरव की तरह चनकता है। सर्वस्य त्याम धीर विचित्रान का जीवत प्रतीक साथ की इन सकरों के पीखे फांखी का खदा चूमते समय बुबीराम बोस के होंठों पर बाबी मुस्कान मिलिमलाती है। १ ध्रुप्रमस्त सहीव विवस नही, एक प्रेरणा दिवस है।

मनुभव

इन्सान दो पढी धरे इन्सान दन के देखा। धरती की शान बेजुवान की जान बन के देखा।

> र्रमान तेरा बेजुबान की बता नावान चार रोज का मेहमान वन के देखा।

चुन ऐसी सभी चन की रतन को गवा रहा। कुछ सुन सके तो सुन ले एक कान बन के देखा।

> भगवान भीर कीन है अनवान के पुतले। भगवान है तू ही धरे भवतान बन के देखा ॥

सज्ञान या प्रज्ञान व विज्ञान ज्ञान कर्म। त् वर्मका है मर्मशर्मपान बन के देशा।

> द्यान्यायियों के मान भरे कुल वहान में । भीरक्रुवेन की तरह सैतान वन के देखा।

जीवन की शहमियत को विस्त्रवी नही समक्र। दिल में किसी के दर्द का तूफान बन के देखा।

> क्या सोया धीर शया रिवस्टर को तो टटोस। मत्त नोल करे मोस की दुकान बन के देखा।

'बाकुल' कवि के गीत सुने अनसुने न कर। कवियों के कलम तीर की कमान वन के देखा।

रविवतः प्रकारवीर अञ्चलका

ओ छन्न उजालो!

-विवेत्त्र कुमार 'वेव'

धो खुरा त्यानो ! हमें माच गत विश्वनामी । हम स्वय तिमिर को दलने के धम्यासी हैं।।

> तिकडमी हवाओं के बस पर उठकर तुकने, लु सिया व्योग को, इसमें कोई बात नहीं। नत समक्रो तुम पर ही निर्मर है विश्व क्योंकि इस करती पर हर पम रहती है रात नहीं ॥

बहुकाची नत धपनी अजमपुर चृतिमा से। हुम अपनी पहचानों के यह विश्वासी हैं।।

> इमने देखे हैं अनश्चित युव के परिवर्तन गर्वोत्मत वैभव देखे हैं चठते--गिरते । हम महाहठी हैं, महाकास के प्रामत्रण, को टाल दिया करते हैं वों चलते फिरते।।

क्य क्याय की बीहरता का दो हमकी। 🕶 वहीं क्से हैं, उनके ब्रावि निवासी हैं।।

> को कभी समय का सूर्य स्वय को कहते थे, साधीत वने झाखा में ही डरकर मान वये। ग्रजसाये जोचन, बडिए कर्स नगराजों के, मेरी ही हुँकारों की सुनकर मान सबे।।

तुम जिन्हें सफसका, पुज-सुविधा कहते हो, वे । मेरे जीवट के राजमहत्व की बासी हैं।। हम वीर हैं डरना क्या जानें ?

देश की इस समय की सब से बड़ी भांग यह है कि देश को वीर वित्र चाहिए। वह मांग कौन पूरी करेवा ? प्रार्थसकात को ही यह कार्य करना है। राष्ट्रद्रोही क्रर हत्वारे वैंक सूट में, जुक खपकर सोवों की स्टेनवर्गों से हुत्या कर दें, बम फैक्ट-रियां बना में, दी इन में से किसी को फांसी नहीं दी जाती। सदभावना वा एकता के नाम पर ऐसे लोगों को खोड़ा वाता है। इस प्रकार देश क्या वचेवा ? धावश्यकता है देश को श्रद्धानन्त, साजपत, सुमाष, सावरकर, स्वतन्त्रानन्द, नरेन्द्र (सोमानन्द) जैसे प्रणवीरों की। सकुटों , के सामने खाती तानकर हुकारने वाले धौर वातकों को ललकारने वासे इन तेजस्वी पुरुषों का स्मरण करके मार्च जाति कायरो की 'महिंसा' से मुक्ति पाए।

हैवराबाद सत्याग्रह के दिनों की बात है, पुज्य श्री महात्मा नारायश स्वामी जी महाराज रेल मे यात्रा कर थे। श्री महा-्राज एक पेसेंजर गाड़ी से पूना वा रहे बै। ब्राप बर्ड क्लास के डिथ्वे में विस्तरा विश्वाकर सेट गये। सभी गाडी छोलापूर से नहीं चली थी। प्रायजन जो विदा करने धाए, वडी सडे वे कि एक व्यक्ति महा-राज के पास धाया और कहा कि विस डिब्बामें बहुहै, उसमें और कोई नही इसलिए प्राप वहां चनकर लेटें। महास्या ची सतर्कवे ही। एक धार्यको नेवा, बाघो इसका दिव्या देखकर धामो, क्या इससे प्रच्छा है और वहां धौर कोई बी है [?] उसने सौटकर बतसाया कि खोडा सा डिन्बा है। वहा चार, पांच हैदराबादी मुसलमान हैं। उन्हीं के सिकाने पर वह पाची महात्मा जी को उस दिव्या में क्रिवाने के लिए भाषा था । ऐसी घटनाएँ त्तव घटती रहती की परन्तु इमारे नेता व क्षार्यंत्रन शीश हथेसी पर वर कर भागे बढे। शत्रुभी हाय डालते हुए सोचता वर अविविद्यानन्द जी से लेकर कृष्ण-राब इटेकर वा उनकी पत्नी माता वादा-बरी देवी तक न जाने कितने आयों ने बीर गति पाई। फिर भी देख जाति के

तस्यामञ्च-

आर्यंसमाज के इतिहास के लुप्त-गुप्त पृष्ठो का अनावरण

आर्यों की वीरगाथा-७

प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञास'

सबु बार्यसमाच से भयभीत थे। बार्य-समाज बातकित न हुवा।

महात्मा नारायरा स्वामी जी के शब्द हैं---

"शोलापुर निवासियों में से शनेक हमारे गुभिषन्तक हमारे पास बाते बीर कहते थे कि मैं कभी कहीं बकेसा न जाया करू क्योंकि यह बात सतरे से साली

फिर आगे लिखा है कि मैं भीर स्वामी स्वतंत्रानन्द जी निस्य प्रात ४ बजे चठकर जंगल वसे काते वे। ढाई तीन बीस दूर बाकर सौच स्नाम धादि से निवृत्त होकर प्राय सात वने के लगभग नीटा करते थे।

बच्टों नगर के बाहर बार्यनगर में ये महात्माकार्यकरते थे। जब नारायण स्थामी बेल चले गये तो स्वामी स्वतन्ता-नन्द जी प्रकेले बाहर भ्रमण को जाते। बोलापुर निवासियों ने मुक्ते स्वय बताया कि हमने कई बार श्री महाराज को रोका दरन्तु सीह पुरुष स्वतन्त्रानन्द का एक ही क्तर वा कि "डरना किस बात से ? दस बीस के लिए तो फिर मैं बकेसा ही पर्याप्त है।" मैंने विस्तार से ये बातें सीहपुरुव र्यंच में सिकी हैं।

महारमा नारायण स्वामी जब जेल बये तो वह प्रपना मृत्यू पत्र DEATH WILL लिख कर गये। इससे स्पष्ट है कि महाराज इस वर्ग युक्त में जीवन बाहुत करने की पूरी तैयारी करके गये वे। बाज भार्यसमान को ऐसे महान् तपस्वी, निर्मीक

मत्युञ्जय महाबस्ति नेता चाहिए। राज-नेताओं वाद्यासन की परिक्रमा करने वाले समाज का कुछ न संवार सकेगे। तभी तो बार्यसमाज के बढ़े बड़े कार्यक्रमो में रौनक के लिए शासक बुलाने पहते हैं। डोंगी गुरुषों की भीड़ कितनी हो जाती है। ऐसा क्यों ? बाज प० लेखराम, बायमुनि, रयाम बाई वाली झलण्ड निष्ठा वाले व्यक्तियों के हाथ में हमारी बागडीर

धाषी पार्यवीर दल, धार्ययुवक समाजें, बार्यकुमार सभाएँ बीर व्यायाम-शासाएँ स्वान स्थान पर स्रोलें तभी हम समय बन सकेंगे।

एक वे दिन थे-

लीह पुरुष सरवार पटेल को जमकी भरे पत्र विसने समे । मुस्सिम लीगी गुण्डे उन्हें जान से बारना चाहते थे। गुरुकुल कांवड़ी के कुछ ब्रह्मचारियों ने उन्हें पत्र सिक्षकर उनकी रक्षा के लिए अपनी सेवाएँ मेंट कीं। सरदार पटैल ने ऋषि के शब्दों को उद्धृत करते हुए उन बार्बवीरों का धन्यवाद किया। उन्होंने ब्रह्मचारियो को मिला, "प्रमु की इच्छा ही पूर्ण होगी, मृत्यू से मैं डरता नहीं।"

बाए दिन बार्य जाति के निदांव सास बारे वा रहे हैं। गुरुकुटों के बहाबारी, ही • ए • वी • काले भों के खान शब कहा है। वे दिन फिर लीट सकते हैं। शोया तप तेब फिर बगाना होगा ।

'म्रायों' को निकाल दो—

लासा साजपत राव के निष्कासन के

दिनों की बात है। स्वामी श्रद्धानन्द की ने (तब महात्मा मुशीराम के) एक ऐति-हासिक भावता दिया या । उसकी चर्चा उनके कई जीवन चरिशों में है परन्तु पूरा माष्या सम्भवत किसी ने नहीं दिया। सौभाग्य से मुक्ते वह ऐतिहासिक भाषण मिल गया है। भाषण क्या है सिंह की वहाड वा हॅकार है।

उसी ऐतिहासिक मावण मे स्वामी जीने एक घटनासरकार के दमन चक की दी है। हरियासा के एक ग्राम मे डिप्टी कमिश्नर साइब गये । भ्रासपास के नम्बरदारों, जैलदारों को बुलवाया गया। भ्रमेज साहब के बूलावे पर सब मा गये। साहब ने विशेष बात यह कही कि देखो भपने भपने वामों मे बायसमाज को वसने न देना। यदि कही कोई झायंसमाजी है तो उसे ब्रम से निकाल दो । साहब को यह पतान या कि जिन चौधरियों से वह बात कर रहा या उनमें समिकांश सार्थ-समाजी वे।

सुक्तबुक्त वाले एक चौघरी ने **दकी** नीतिमत्ता से कहा कि यदि हम किसी की ग्राम से निकालेंगे तो ग्रापकी सरकार हमें ही दबाएगी। इसलिए साहब बहादर धाप ही इन बायों को हमारे वहां से निकालें। इस पर साहब बोले, "नहीं हम तो इन्हें नही निकाल सकते। ब्राप निकालें हम भापको कुछ न कहेंगे।"

इस पर वह भायं चौवरी बोला---"साहब जिन भायंसमाजियों पर हाब डामते हुए बाप की सरकार डरती है, हम उन्हें कैसे निकाल दें।" यह वा झार्य-समाज का तेज । खेद है कि स्वामी आद्धा-नन्द जी ने उन चौषरियों का नाम वहां नहीं विया । स्वामी स्वतन्त्रानन्द की छनके नाम बताया करते थे, हमें उनमें से केवल चौचरी जुनला का नाम ही याद है। शेष नाम स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के लेखों में क्लोजने पडेंगे। आर्थो । आसी प्रभूकी वासी वेद की विमल रचनाओं को सनें व सुनावें और उस मतीत को फिर वर्त-मान कर दें।

किशोरमञ्च-

अंगिरा ऋषि का उपदेश

प्रस्तोता-अलबीत बास्त्री

🗣 पास गया और बोला गुरं की मुक्ते ससार सोचता था। ससके पास बहुत धन था, से विरक्ति हैं, मैं चर-बार छोड़ कर संन्यासी बनना बाहता हूँ । गुरु जी बोले-'बर ग्रहस्वी में रहते हुए भी भगवान का भवन किया वा सकता है।

गुरुवी का उपवेश सुनकर सीनक बुहरण जीवन व्यतीय करने सवा। यह में पूछा। बाल्मा को यह जानने की इच्छा

सीनक नामक विद्वान् ग्रंगिरा ऋषि सवा अपने ग्रात्मा की उन्नति के बारे में किन्तु वह उस सारे सुल को मूठा सुल

> एक दिन उसके घर मगिराऋषि बावे । शौनक ने प्रसम्म होकर उनका स्वा-वत किया । प्रात्मा की चन्नति के विषय

की। भंगिरा ऋषि ने कहा—'पहले एक वर्षे तक ब्रह्मचर्ये वस चारण करो । सपस्या करो। बाद में तुम्हें ज्ञान मिलेगा।

मनिरा ऋषि जले गये। बाद से शौनक ने तपस्या की। एक वर्ष बाद वह भविराऋषि के श्रास्त्रम में गये। ऋषि ने प्रनहें बहुत सी ज्ञान की बातें खिखायी। उन्होंने कहा-'विद्या दो प्रकार की होती है। एक विद्यासे हम ससार के सुख प्राप्त करते हैं, परन्तु सच्चा सुम नही मिलता। दूसरी विद्या हमें प्रात्मा के उन्नति की कोर ने जाती है। उसी के द्वारा हमें सच्या सुख भिन सकता है।'

शौनक की समक्ष में ये बार्ते नही

भाषी। उसने इनके बारे ने फिर पूछा। ऋषि ने कहा--'लाली वेदों के पढ़ने बा यज्ञ करने से मनुष्य बास्मा की उन्नति नहीं कर सकता।' इन सब को ध्रपने जीवन में उतारे और उसी प्रकार ग्रपना जीवन बनाये। कथनी और करनी में ग्रस्तर न

शौनक ने फिर झात्मा की उन्मति का उपाय पूछा। ग्रगिरा ऋषि ने कहा----'ईंग्वर का कोई रूप नहीं है, फिर भी वह सब जगह, सब चीजो में मौजूद है। उसी ने सारा जगत् बनाया है। वह सब को विसाई नही पडता। वह सब वस्तुमो में समाया हुआ है। उसे तो वही देखता है जो

(शेष पृष्ठ ६ पर)

व्यासपीठ---

उपनिषत् कथा माला-१४

वेदामृत

लेखक-स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती

धो ३म् अन्ति सन्त न पश्यति, इन्नित सन्त न जहाति । देवस्य पश्य कान्य, न ममार न जीव्यति॥

बह देद मन्त्र है। कोई भी ऐसा नहीं है जो साशात् प्रवादा परम्परा खन्तन्त्र से रिक्तर का ध्रनुत्त्र ही न करता हो। सब बाहे सोक ख्यवहार के बताने वाले हो, बाहे विज्ञान के प्रराप्त एक परम्परा ध्राप्तन्त्र के अंब परमेश्वर की प्राप्ति में ही देदमन्त्र के तावें परमेश्वर की प्राप्ति में ही देदमन्त्र करावेंगे। सालाल् सन्वन्त्र होता है। बंदे प्राप्त के विक्ती ने प्रताक साथी। धावने उपको पुत्तक पठकु सी, बह तो हुआ सालाल् सन्वन्त्र । पुत्तक मैंने किसी को सी प्रोप्त उपने उपको से, यह परप्तरा सन्त्रन्त्र है। बाहे मुक्त क्य है, बाहे गीन कर से ईश्वर की ही विवक्षा

श्रन्ति सन्त न पश्यति ।

प्रविधा प्रस्त जो मनुष्य है वह पर-मारमा के बधिंप प्रस्तन्त निकट है फिर भी नहीं देव सकता। एक सो यह बार, दूबरी बाह यह है कि 'श्रान्त सन्त न बहाति' इसका इतना पट्टम सन्वन्य है कि उससे प्रस्ता हो ही नहीं सकता। इसको बाद में कहा।

> देवस्य पश्य, काव्य नममार न बीर्यात।

वस परमात्माको जानने के लिए उस देव का जो काव्य है, उसको देखो[ा] उसका फल क्या होगा[?] न फिर मृत्युका श्वम्बन्ध है न कीर्याता का। कारता यह है कि जरा मृत्यु व्याधिया, ये सब ससार के मार्ग मे हैं। ससार के मार्ग से पृथक् होने पर बह तीनो चीजें नहीं रहती। फिर धात्मा के साथ उनका सम्बन्ध नही होता । ससार के मार्ग में कही गयी उन वस्तुओं से पृथक हो जावे तो वह उस पूर्ण शक्ति को पहुचान सकता है। इसका कारण यह है कि ससार के घन्दर हरएक चीज जो बनी हुई है उसका धवश्य ही कुछ न कुछ परिणाम है। कोई भी चीज ऐसी नहीं है विसकानुद्धापरिणाम न हो । ससार के झन्दर जितनी चीजें बनी हुई हैं वे सब परिवर्तनधीस हैं। किसी फारसी कवि ने कहा भी है---

> जमाना यक बबाबूदे प्रनर नमेबाफ फरवन्द बाफर

बचर जमानाएक रक्ष रहने वाला होता तो बाज जो बच्चा है यह कस बाप नहीं होता। जमाना बदलने पर छोटा बच्चाबाप की जबहु से लेता है धोर बाप रवाना होता है। समय एक रस रहने बाबा नही, यह परिवर्तनशीस बसार एक रस कभी नही रह सकता, एक एक क्षण बीतने पर ससार बीत जाता है। इस परिवर्तन प्रवस्था को १ प्रश्व ६७ करोड वर्ष के करीब बीत गये हैं। दिन गत के चक्कर ने इतना सम्बा जमाना बीत गया । दिन रात तो मोटा परिवर्तन है। दिन और राष्ट्र मिलाकर २४ वर्ण्ट होते हैं। १ वंटे के ६० मिनट होते हैं। १ मिनट ६० सैकिय्ड होते हैं । सेकिय्ड से भी छोटा समय कालवित् पुरुष ने काए माना है। इस अपन का कोई भी विभाव नहीं किया वा सकता। एक अरण बीता, इसरा क्षण बीवा और तीसरा क्षण भी **बीत बया। इसी तरह क्षण क्षण करते** इस सुष्टिको १ प्ररव १७ करोड वर्ष बीत गये । सस्कृत का एक एक शब्द बहुत मतसब रखता है। समस्त ससार को कन-भगूर कहा गया है। एक एक क्षण ने भी इसका परिवर्तन होता वाता है। इसके नाम से ही इसका कर्च भी मालून हो वाता है। वैसे भूगोस का नक्या। इस नाम के कहने के साथ ही यह जी सबूत कर विया गया कि पृथ्वी गोल है। सारी की बारी बायु इसी क्ष्मण से ही बीती आती है। मनुष्य का एक एक क्षरण परि-वर्तनशीस है। को चीजें बनी हुई होती हैं छन सब में परिवर्तन होता है,। जो बीज बनी ही नहीं चसके भन्दर तो परिवर्तन की शाकत सग ही नहीं सकती। जैसे कमाद ऋषि ने कहा है---

> नित्येष्यमावात् धनित्येषु भावात् कारखे कासास्य ।

इसकी वाकत वाहिर कहा है ? नित्य मे तो बाकर यह काल धार ही पुन हो वाह, हो । धनित्य में यह बाहिर होत है, हो पैदा हो नहीं हुई है उस पर काल को गति का धसर नहीं होता। एक बीव पैदा हुई, उसको दस वर्ष नीत गये, ऐसा कह्न सकते हैं। इसके धन्दर प्रतकाल जी है, वर्तमान काल भी दिंग परिष्मकाल जी भी है। वो जीव पैदा हो नहीं होती वह कदीनी दिख ही है। नित्य पराचों में काल का धमार पहता है धीर धनित्य में काल

-

भाइयो [।] संसार के अन्दर को कोई चीज बनी है वह काल के प्रमाव से ही बनी है। बिना कास की सहायता से कोई नहीं बन सकती। इससे काल की नहुला वाहिर है। संसार में विसने पहचान शिथा कि समय एक वस्तु है, उसने समय व्यर्थ नही स्रोया । विसने समय के महत्त्व को नहीं समका, परन्तु समय तो बीतता ही चना गया, वह समय ठहर नहीं सकता। जैसे एक बज्बा १८ वर्ष का हो गया भीर ससने बी० एस-सी० पास कर निया और जिसने नहीं पढ़ा वह भी १= वर्षं की सायुका तो हो ही शया, उसकी बापरवाही से उसमे फल नही आया. परन्तु विसने बी॰ एस-सी॰ की पढाई की तो एसको फम की प्राप्ति हो नई। समय दोनों का बीता । इसका मतसब यह है कि समय की कीमत को पहचानना चाहिए।

'समय एव करोति बलावसम्।'

समय ही मनुष्य को बलवान् और निर्वत कर देता है। जिसने केशने-कूदने ने ही समय विता दिया, समय का महत्त्व नहीं समका सो वह दुर्वत हो जाता है। धगर समय को समक्र सेगा तो वह बस-वानु हो जाएवा। समव तो दोनो का ही बीतता है, किसी का नही ठहरता, इसलिए वो धक्लमन्द बादमी हैं वही समय का उपयोग ठीक रीति से करते हैं। क्योंकि-'गया बक्त फिर हाब प्राता नहीं, बया ऐश धाराम पाता नहीं, यथा वक्त हाथ ने मही बाता इसलिए ज्ञान को प्राप्त करने में समय को विताना चाहिए, क्योकि ज्ञान नित्य वस्तु है। मित्य वस्तु पर काम का प्रमाव नहीं होता। इससिए कहा है কি---

'बेबस्य काच्य पश्य'

वह परनेक्वर, वो देव हैं, उसके काव्य को देख। उस देव का काव्य वेद ही हो सकता है और वह देव नार प्रकार के हैं---

ऋब्, यजु., साम घीर घवर्ष० ।

धव हुव तो वेदों को आवते हैं, परस्तु दूसरे नहीं बानते, मुसबबान नहीं बानते, ईसाई बही मानते । बह कहेंगे कि हुम तो वेद को नहीं बानते तो यह ठीक है। वेद

नान ज्ञान का है। कोई भी दन्यान यह नहीं कह सकता कि मैं बान को नहीं मानता। प्रगर कोई ऐसा कह देती क्सकी मुक्ता होनी। तो वह ज्ञान चार बकार का है---ऋष्, बबु, साम धीर धवर्ष । जैसे विशास के चार तेव हैं--बोड, बाकी, गुला और नाव, इनके सन्दर ऐस-बचा वर्गेरह सब धा बाते हैं। इसी तरह ज्ञान के भी चार भेद हैं। को बादमी सन्नति की तरफ बायेगा वह देखेगा कि हिन्दुस्तान पविताबस्या मे है। मैं तो कहुना कि हिम्दुस्तान पतिलावस्था मे नही, वह तो धीर सब देशों की मालामास बनाने बाला है। जुगराफिये में ग्रगर ग्राप देखेंगे तो बायको मालून होगा कि जैसा यह है वैसा भीर कोई दूसरा देश नहीं है। परन्तु बावकल के इतिहास में विसकत निकम्मा सिद्ध होता है, क्योंकि हमारे मे बासस ज्यादा है। वो काम जिस समय करना चाहिए, उस समय नही करते. बेमतसब के सडाई-सबडे करते हैं। सब श्रादमियों को श्रगर कोई एक विद्वान्त्र* भादमी भ्रष्के रास्ते पर ने जाना चाहे ता वह भावमी अक्लमन्द भीर ज्ञानवृद्ध होना चाहिए, तभी ले जा सकता है।

भव हम "ऋक्" को लेंगे। ऋक नाम स्तुतिकर्मका है। वेद तो सामान्य सब्द है। उसके साथ में ऋग्, यजु, साम बीर स्वर्वये चार विशेषक लगे हुए हैं। ऋष् जो है वह स्तुतिक में है । बब कोई प्रवस-मन्द धादमी होना वह पहले परमेदबर की बनाई हुई चीजों की तारीफ करेवा। सूर्तियों को हमने बना जिया और कह दिया कि यह परमेश्वर हैं, लेकिन जब परमेश्वर की तारीफ करेंगे तो कहेंगे कि परमेक्वर सर्वव्यापक है, सर्वधक्तिमान् है, सर्वेज है, सर्वेत्र स्थाप्त है। इन विके-वसी से अब हम परमात्मा की स्तृति करेंगे तो पता मगेगा कि मूर्ति ही ईश्वर है याकोई भीरही शक्ति। यह वो ज्ञान है ऋगू है। अब हम सोसारिक पदाध, में यो ही चले धाते हैं। एक प्रादमी ने गुलाब के फूस को देखा उसमें सब सन्सी सुगन्य है, रंग भी बहुत घच्छा है। इसे देश कर बहु भावनी कहता है कि यह फुलों का राजा है। पहले तो उसने सुवस्थिकी वारीफ की। इसके बाद में उसने विचारा कि यह दिमाग को तर करने वासा है, मनोहर है, सुन्दर है। जिस बमीन पर ये परियाँ निर जाती हैं उस समीन की मिट्री सुगन्धित हो जाती है। यह खारा 'ऋग' का स्थान होगा । दूसरा है 'यज् ', उसमें यह विचार माता है कि यह सुवन्धि है तो सम्ब्री, परन्तु यह उस फ़ूम से समय उद्दे हुए भी घरियर रह सकती है बा वहीं। यजून का काम यह है कि वह जिन्न बस्तुओं के योग से कोई उपयोगी पदार्थ बना सके । उसी को लेकर 'यजू ', ही के ज्ञान से बल से तरह तरह के इस हिना वगैरह तैयार किये जाते हैं। वे संबन की भूमि पर बनते हैं। इस कैसे

वेदामृत

विश्वसता है ? वैसे सौंफ का सके निश्वासा बाता है, ससी तरह से सबर तो तीन-बार तोसे सदन का तेल डास देते हैं और इवर गुणाब के फूल डाल देते हैं। सदल के तेल का वह स्वभाव है कि वह अपनी सुगन्ध को छोड कर दूसरी सुगन्य को तत्काल प्रहरण कर लेता है। सदल का तेल १) तोला मिनता है और वह १ तोले की कीमत से १०) व० तोका कैसे हो गवा[?] उसने घपने घापको खुपाया। अपने को जाहिर नहीं किया। दूसरे के गुर्गों को प्रहरा किया। अपने आपको छुपाकरके जो दूसरे के युवाँको प्रकट करता है, उसकी कीमत इसलिए बढ बाती है। सदस के तेल की कीमत इस-क्षिए बढ जाती है कि वह प्रपने गुणों को छुपा करके दूसरों को जाहिर कर देता है। सगर उसमें हिना टाल दो तो वह हिना हो जाता है, मोतिया बाल दो, मोतिया बेल बाता है। इसी वरह को इन्सान दूसरे के वृक्षों को दिलाने वाले होते हैं, उनकी कीमत बढ जाती है। वो अपने ही को विश्वाते रहेंगे, उन लोगों की कीमत नहीं बढ सकती। जैसे सरसों का तेल है, उसमें कितनाही हिना बास दो, तो भी वह धपने रोगन धीर धपनी वूको नहीं क्षोडेगा। सरसों के तेल की कीमत इसीचिए वहीं बढती कि वह प्रपने ब्रापको विकासा है। तो इस तरह यज़्ब का स्वान है मोन करना । किसी चीच के मिलाने से कौन-सी ताकत होनी? यह है यजुः का काम। बैसे गुलाब की सुगत्व में सदल मिला देने से इत्र बन गया, वस इसी ज्ञान का नाम बजुर्वेद है। सब साम क्या है। ऋब् प्रश्वसा करता है। उपयोग बताना काम बबु का है। उसका को नतीजा निकसा, वह बताना साम का काम है। हरएक बादमी नतीबे को देखता है। बगर कोई अं तहान देता है और वह उसके अन्दर फर्स्ट डिबीजन में था जाता है, तो उसको बहुत ही खुशी होती है। परमेश्वर के श्रुप्ते स्वरूप को जानने के लिए जो कोशिय करता है और जब वह परमात्मा के स्वरूप की पहिचान बेता है तो वह परमास्मा स्वरूप वन बाता है। यह साम है। अवर्व का कोई स्थान नहीं है। सबने देशा है। बजुको मूल में रसकर जोड़ा है। श्रायन की निवासी को नेकर उसी में कुछ, न कुछ, उम्मति करने या बढ़ाने को श्री प्रवर्ष कहते हैं। जैसे प्राजकस बड़ी साइन पर बढे बढे एक्सन बीड़ते हैं। वे ४० फीट बम्बे और १६ फीट चक्करवार होते हैं। सगर गुर्लों को न लेते बये होते भौर कुछ न कुछ बढ़ाए नहीं वये होते तो धाल क्या इतने वहे इञ्चन नजर आ सकते वे? पहले के वो इञ्जब वे, वे विवक्त छोटे छोटे वे । अवर्व कोई निव की बस्तुनही रसता, परन्तु वह साम के नतीया निकासने के परवात् को वो उसके

धम्बर स्कावटें डालने वाली वस्तुएँ है, उन सब को हटाता है और उनकी सहाबक बरतुमों को इकट्ठा करता है। इसीबिए कहा है कि---

"पदय देवस्य काव्यम्"

देव का काव्य क्या है। किसी ने कह दिया कि दीवानहास बच्छा है। यह तो नेरा सब्द-ज्ञान हुना, परन्तु मैंने देहली मे जाकर दीवानहास में जाकर दीवान हाम को देला, यह मेरा देलना हमा। इसी तरह से परमात्मा का ज्ञान बहां पर वेद मे विद्यमान है। मैंने जिसका शवन किया वह परमात्मा सारी सृष्टि मे विदामान

किसी भी चित्र को देसकर तीन वातों का ज्ञान होता है। विसका चित्र होगा, उसके वरित्र का ज्ञान होगा, चित्र-कार चित्र बनाने वाले के चरित्र का जान, तीसरे उस चित्र का ज्ञान होना। इसी तरह जित्र देखने से, जिसका चित्र होगा, उसकी तसबीर मालूम होगी, चित्र सीचने वाले की तदबीर मालूम होगी धौर फिर **एस वित्र की जो तदबीर है, मालूम होगी**। भड़ी ही मौजूद है, उसको देखने से ज्ञान होता है कि १ वजे हैं। वसार की जितनी मी वस्तुएँ हैं, उन सब में ज्ञान का विकय सम्बन्ध है, परन्तु को परमात्मा है, प्रसक्ते प्राप्तर ज्ञान का स्वकृत सम्बन्त है। संसार बाह्य है। ससार का कोई न कोई तो कर्ता अवस्य है। वैनी नोन कहते हैं कि बंधार का कोई कर्ता नहीं है तो यह कैसे हो सकता है? किसी कारीनर ने एक भट्टी तस्वीर बनाई, चलता हथा एक छोटा सहका भी विसकी देशाकर कहेगा कि यह मही तस्वीर किसने बनाई है? तो फिर जो सुष्टि चित्र, विचित्र, सब्भुत, सनुपम बनी है, बह किसी न किसी की बनाई हुई धवदय है। ने किन देखने वासाहर एक व्यक्ति सुष्टि के सौत्वर्यं धौर वित्र-विचित्रता के शब्दर ही मोहित हो जाता है, क्योंकि ससार तो बड़ा विचित्र है। एक से एक खूबसूरत चीजें हैं, जब बादमी उनको देखता है, तो बहु उनकी सुम्दरता मे फस कर उसके बनाने वाले को भूज जाता है। उसका जो मुखब्बर परमेश्वर है, उसके पास नहीं ले जा सकता। एक पुरुष ने एक बहुत सन्छा बगीचा लगाया, उसके मन्दर कई मञ्छे-श्रच्छे सकान, पन्दारे, पौषे, फुलबारी ववैरह लगाये। श्रव उसके प्रन्दर जो बादमी देखने गये, उनमें से एक ने कहा कि यह फव्वारा कितना बच्छा बना हुआ है। एक ने कहा--पानी कितना ठडा है। एक ने कहा कि ये फूल कितने अच्छे हैं। बड़ापर एक धादमी सामा सौर उसने कहा कि घरे तुम सोग इन चीओं की क्या प्रश्नक्षा करते हो, बनाने वाले की प्रश्नवाकरो। जिस्त तरह वे लोग वगीने को देखते हुए भूस गये, उसी तरह ससार

की चीजों को देखकर मनुष्य उसके कर्ता को मूल जाता है। वही मनुष्य विद्वान् है, धनसमन्द है, थिसने ससार को बेसकर उसके करने वाले को पहचाना है भीर उसको नहीं भूता है। ससार क्या है? ससार तो एक इशारा है। ससार की हर एक चीव इसारा कर रही है। जो विद्वान् होता है वही उसको पहुचान सकता है। को शहितीय श्रनुपम कर्त्ता को पहचानता है, वही विद्वान् है।

प्रभू विश्वास

विषर देखताहु खुदा ही खदा है। खुदा से नहीं चीज कोई जुदा है।। जब घव्यल बीर प्राक्रिर

खुदा ही खुदा है। तो अन भी वही कीन उसके सिवा है।।

सर्वं जरोसे छोड के, भावा नेरे द्वार ।

मेरे कर की तार है, कर तेरे करतार ॥ कहते हैं प्रभु इसलिए,

तुमको सब करतार। रहत सदा है जगत् का,

तेरे ही करतार ॥ नही सबम. यदी साधना, नही तीर्व व्रतवान।

मात ६ रोसे खुत है,

ज्यों बासक नादान ॥

बाली एक सांस्कृतिक केन्द्र

ले • – रामाज्ञा वैरागी

बासी भूमि पर वब सूरव की पहली किरण उत्तरती 🕻, तो एक चमकदार सतर्वे इन्द्रवनुष का रूप से सेवी है। धाज सुबह उठा तो बाहर कुछ ऐसा ही दश्य नजर माथा भीर मेरी भावों देवती रह बयी किरजों की घोर। ये किरखें ठीक वैसे ही हस रही थी, जैसे वाकी के सोव मुस्कूराते हैं। सूरव की इन वय-बमाती किरलों के साथ बासी के लोगों का थना सम्बन्ध है। भाषा सुबह चठते ही समूद्र के किनारेटहुमने क्या। सूरव की किरलों समुद्र की उठती गिरखी सहरों के साम देश रही वीं।

सूरक कितना छवार है, को सभी पर समान बष्टि रसता है, समान व्यवहार करता है। कुछ वे ही सोचता-गुनता स्नाम संध्या प्राप्तन स्थायाम करता रहा । इतने में हुमारी यूप सीडर सवा की ने सूबना वी कि हम सभी जल्पाहार के सिए रेस्टोरेक्ट वर्ले। बेट, बटर, वान तवा फर्लों वें पपीता, पपैगुल शस्पाहार के बाद शास हुमें वासी के नवर्गर भी मंख जी के यहाँ

मिलने बाना है। इतने में १ वर्षे ठीक गवनैर के निजी सचिव गाडी लेकर हम सभी को लेने बागये। हम उनके साम बाली के गर्वनर भी मत्र जी के बाबास पहुँच वए।

बासी के गर्वनर श्री मत्र श्री का बैठक-काना देखकर हुम सभी चकित रह गए। पूरे बैठक साने में रामायसा की सम्पूर्ण चित्रावसी मंकित है। कही राम, कही सीवा, कही सदमण तो कही हुनुमान का चित्र। एक बहुत ही साकर्षक चित्र था सक्तम को अस्तिवाण सबने बासी घटना का। सामने की बीवार पर सेतृबांध के बंधने के समय का चित्र जिसमें बन्दर पत्थर समुद्र में डाब रहे वे । कई आक-वैक वित्र रामायण तथा महाभारत काल के भाकित देखें नये। कुछ ही देर बाद धन्वर ने बुसाहट या गयी और हम सभी ने सन्दर की बैठक में प्रवेश किया, की मल बी ने हमारा सादर स्वागत किया, विस्कृट के साथ चाय पितायी। श्री सत्यकेत् विकासकार ने बातचीत करते हए इम सभीका परिचय कराया । श्री मंत्र जी

के मधुर व्यवहार से हम बहुत प्रमायित हुए। धन्त में उनके साथ सामृहिक चित्र मी सिवे गए। उसके बाद उन्होने पुनः हमें अपनी नाड़ी से देन पसार बाजार तक क्षोड़ने की व्यवस्था की । हमने कई दर्श-नीय स्थानों का भ्रमण किया।

कला वासी के जीवन का स्रक्रिक भग है। वहां के लोग कला के प्रति सम-पित है। बाली के लोग प्रपने जीवन को नाटक समक्त कर जीते हैं। कहने का सर्व है कि धपनी जिन्दगी को हवें और उल्लास के साथ जीने के अस्यासी हो गए हैं। बासी के लोग मुस्करा कर जीते हैं। वहां मैंने कहीं भी ऋबढते नही देखा। परस्पर विवाद नहीं देखा। किसी के चेडरे पर चदासी या शिकन नहीं देखी । यहां एक सोनों का कहना है कि बदि दो मोटर खाइकिलें ब्रामने सामने टकरा भी वयी तो दोनों के चालक मुस्कराकर चल देंके किन्तु परस्पर विवाद ऋगडा सम्बं नहीं करेंने। यह बहुत बड़ी बात है कि बासी के लोग हसी खुषी की जिल्दगी विता रहे है। बाली द्वीप मदिरों की नगरी है हवारों विख्यात मन्दिर हैं।

नोट-विशेष विवरस्य के बिए मेरी 'दक्षिस पूर्व एशिया यात्रा' पुस्तक पहें।



धार्यसमाञ्ज यद्यपि एक सार्वभीम मान्दोस्त है तबापि मार्गावलं देश की उसने कभी भी उपेका नहीं की। उसके सस्थापक ने तभी जिल्ला था कि जैसा धार्यसमाच धार्यावत्तं देश की उन्नति का कारण है, वैसा दूसरा नहीं हो सकता। स्पष्ट है कि बार्यसमाज बार्यावर्त देख की उन्नति की धवडेलमा नहीं कर सकता। बह उसकी सर्वागीण उन्नति चाहता है। बह चाहता है कि आयों का यह आदि देश सभी प्रकार से समृद्ध, सम्पन्न एव शक्तिशाली बने। किन्तु आज देश के सम्मुल जिस प्रकार की परिस्थितियाँ उत्पन्न हो चुकी है वह इसकी समृद्धि सम्पन्तता एव समर्थं बनने मे बाधक है। द्याज श्रमबाबवादी प्रवृत्तिया जितना खुल कर कार्य कर रही है उतना पहले कभी नहीं कर पाईं। कही साम्प्रदायिकता, कही प्रातीयता, कही जातीयता तो कही भाषायी भाषार पर सलगाव की प्रवृत्तिया दिनो दिन बढती दिखाई दे रही है। बार्यसमाव एक देशभनत सस्वा है। मत उसका चिन्तित होना स्वामाविक है। इसी सिए ग्रायसमाच सभी राष्ट्रवादी शक्तियो को इनके विश्व प्रवल समय करने का ब्राह्मान करना है।

बोट की राजनीति को प्रभावित करने के लिए सामृहिक धर्म परिवतन की विनीनी घटनामो स भी मायसमाज मस्यन्त कद्विग्न है और इसका प्रवल विरोधकरता है ग्रायसम् 1 श्रमपरि-वर्तन के पी जानदना शाक्तयों के हाथ और वन की बीर व्यान दिलाना चाहता है भीर भाग करता है कि देश के ईसाई भीर इस्लामीकरण के लिए विदेशों से माने वाले वन पर श्रविलम्ब रोक लगाई वावे । साथ ही धार्यसमाज यह भी बाहता है कि सामूहिक धम परिवतन पर कानूनी प्रतिवध लगे । आर्यसमाज अल्प-सक्यको के नाम पर किसी वर्ग विशेष की तुष्टिकरण की शासन की नीति को देश के लिए वालक समकता है। भौर इसमे श्रविश्वस्य ग्रामुसन्त परिवर्तन की मांग करता है। साथ ही भायसमाज वेश के त्रवाकवित पिछड बग पर सवर्णों के धरवाचारों की घोर निन्दा करता है। धार्यसमाज बाहता है कि बस्प्रवादा बादि की विनीनी मावनाए उन्मूलित हो बागें भौर सभी वर्ग विना किसी भदभाव के परस्पर प्रीति प्रेम एव माईचारे का व्यव-करें। भार्यसमाज यह भी चाहता है कि समाज के दुवस वर्ग का दुवलताओं का कोई भी राजनीतिक दल लाभ न उठाये भ्रपित् उन दूबसताथी क निवारण के सिए ठोस उपाय एव उद्योग करे। प्रायं-समाज चाहुता है कि सभी देशवासी बातीयता, प्रातीयता एव स्वार्थपरता धादि की घति सकीर्ण एव क्षुद्र भावनाधी से ऊपर उठकर सम्पूर्ण देश के हित की बात सोचें। बार्वसमाज देश मे राष्ट्रीय एव माववात्मक एकता का सम्पादन

वर्तमान परिस्थितियों के संदर्भ में आर्यसमाज क्या चाहता है ?

लेखक-यशपाल ग्रागंबध्

करना वाहता है मीर वाहता है कि सब-यान की प्रवृत्तियों एक नावनाओं का कम्मूलन कर समस्त देशवारी। एकता के सुत्र में प्रावद एव निवद हो बाये। यह कार्य देशवरिक की भावनाओं को उजागर किए विजा सम्भव नहीं। यह धार्यस्थान समस्त देशवासियों ने देशवर्भका की भार मावनाएँ भरना चाहता है। धार्यसमाज के सत्या को प्रपत्ने देशवासियों के लिए उद्बोधन दिया वा कि—'हम धीर पायकों धार्यना खरीर बना, अब भी पालन होता है धार्य होगा उसकी उन्चित तन मन धन में सब जने मिलकर बीदि

सार्यसमान गो को राष्ट्र की वार्षिक एव सारक्ष्मिक वरोहर समझत है। गों के सार वर्ष कर सारक्ष्म के मात्तुत्व मानवनाओं को देवते हुए मार्यक्षमा को क्षेत्र के प्रार्थ करा के स्वेद के प्रार्थ करा के स्वेद के स्वार्थ के सार्यक्षमा अक्ष मान करत है। वह च हता है कि यो वा सम्बार्थ का सार्थ का सार्थ के स्वार्थ के सार्थ के सार्य के सार्य के सार्थ के सार्थ के सार्थ के सार्थ के सार्य के सार्थ के सार्य के सा

बार्वेलमाज का बद्यपि प्रत्यक्ष कृष से राजनीति से कोई सीवा सम्बन्ध नही तबापि वह राजनीति की उपेक्षा भी नहीं करता। वह राजनीति को स्वार्वपरता, साम्प्रदायिकता, प्रातीयता, बातीयता, धादि की सकी गंता से तथा भ्रष्टाचार, मनाचार मादि से सर्वेदा उन्मुक्त देखना चाहता है। वह चाहता है कि देश का शासन सदैव ईमानदार, सदाचारी, बोग्य तथा नीतिमान् देशभक्तो के सदल हायो मे सुरक्षित रहे। मार्यसमाब रावनीति के वर्तमान अष्ट तौर तरीको की निन्दा करता है। वह चाहता है कि राजनीति अनीतिका शिकार न हो। राजनीति के क्षेत्र मं बार्यसमाज बविकार बौर कर्लब्य दोनो को महत्त्व देता है। वह चाहता है कि अधिकार के नाम पर कर्सक्यों की विचन दी बाये एवन ही कलंब्य के नाम पर किसी को उसके अधिकारों से विश्वत

रका नाये । शार्यसमाव चाहता है कि राजनेतामण देश के द्वित को ब्रतीचरित समर्फे धीर जनता के कच्छो के निवास में खर्वेब तत्पर रहें। धार्यसमाव चाहता है कि देश की समस्त सम्पदा एवं सामनों का उचके खणी नागरिकों को समान क्य वे उपमोग का स्विकार हो एवं प्रत्येक ब्यक्ति की उन्हति के समान स्वयसर प्राप्य हों।

धार्यसमाज वेद प्रतिपादित समाज-वाव साना पाहता है। यह प्रधातत का तो सनयंक है, पर मूलों के बहुमत का समर्थन वही करता। उसकी मान्यता है कि बोटो को मिनने की प्रपेक्षा तोलना श्रविक उपयुक्त एव श्रेयस्कर है क्योंकि एक मूर्ख भौर एक महाविद्वान् की सम्मति एक समान कभी नहीं हो सकती। सौ मूर्जभी वदि किसी बात को निलकर कहे तो भी वह एक विद्वान् की बचार्य बुक्ति-युक्त बात की समता नहीं कर सकती। वत वार्यसमान बाहता है कि सविवान का दाचा कुछ इस प्रकार का बने कि विद्वानी की सम्मनि का विशेष सादर हो सके। बदाहरए। के बिए बैकों के राष्ट्रीयक सा के लिए एक अर्थशास्त्री सथवा नीतिनिषुण व्यक्ति की सम्मति एक रिक्सा चालक प्रयवा प्रनपट मजदर की सम्मति एक तुला पर नहीं रखी जा सकती ।

वार्यक्षमाण ससार में व्याप्त सामा-जिक विषमताधी को दूर करना शाहता है। वह वाहता है कि बन्ध, जाति, कुछ,

रंग तथा चन शादि के बाधार पर ऊच-नीय की मेरमूनक भावनाएँ परस्पर बन्ध हो जायें धीर मानव-मात्र एक ही परम पिता की सन्तान होने के नाते परस्पर मेम प्रीति. समता एव सह-प्रस्तित्व की भावना से रहें। बार्यसमाच प्रातत्व का पाठ पडाना बाहवा है। यह ऐसे समाच का निर्माण करना पाहता है कि जहाँ न दो कोई शोवक हो न कोई शोवित। बार्य समाज धस्प्रस्थता के कलक को सवा सदा-के लिए मिटा देना चाहता है। आर्यसमाक बाहता है कि प्रत्येक देश में वास-विवाह. वृद्ध विवाह, धनमेल विवाह एव बहु विवाह भावि पर पूर्ण प्रतिवय समे और विवाह गुण. कम धीर स्वशाव के बाधार पर हो न कि जन्मयत जाति-पाति के बाबार पर । बार्यसमाज यह भी बाहता है कि ससार विवाह के बादशं को समसे क्योकि विवाह एक उत्तरदियस्कपूर्णं मर्या-दिस कर्म है। दायित्वहीन धमर्यादिस भोष-लिप्सा नही । यह एक पवित्र बन्धन है भोग का की नाइसेंस नहीं । शार्यसमान चाहता है कि सम्पूर्ण मानव समाच समुन्तत हो। मानव समाज एक धावर समाज बने। समाब की जन्मति के लिए बार्यसमाज व्यक्ति की उन्नति पर ब्राधक बस देता है । न्योकि सामाजिक इकाइयो का सामृहिक रूप ही तो समाब है। व्यक्ति के स्वरने से ही समाव स्वर सकता है। बार्यसमाय चाहता है कि प्रत्येक व्यक्ति भगनी ही उन्नति से सन्तष्ट न रहे किन्त सब की उन्नति में अपनी उन्नति सबसे यही सामाजिक उत्थान का मुससन्त्र है। मार्यसमाज चाहता है कि प्रत्येक व्यक्ति सही अर्थों में मानव बने अपने परिवार भीर फिर समाज को मानवता का पाठ पड़ाया । व्यक्ति-व्यक्ति के सुखरने है समाज, फिर राष्ट्र धौर शन्तत विश्व समर सकता है। और प्रार्थसमाम विका को सुधारना धपना परम कर्तव्य समस्ता

> इत्योम् सस् (यद्यपास शार्ववंतु) भार्य निवास, चन्द्रकार, मुरावाबाद-२४४००१

विश्वासहीन

के॰—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, प्रविच्ठाता वेदप्रसार

चोर सौर ज्वारी के, सरावी व्यक्तिचारी के, घरित्रहोन नारी के साव नही रहिये।

बार दगावाज से, सारी वे सिहाच से, साघू नधेवाज से, बात नहीं करिये॥

नुम्बो की जमात में, झोसो की बरसात मे, ऋगडे की बारात मे, पैर नहीं घरिये।

कोडी की काया का, खपने की माया का, बादल की खाया का, विश्वास नहीं करिये।

इक भ्रान्त बारखा बप के सम्बन्ध अ ब्राव ब्रमारे समाज मे(हिन्दू समाज में) श्रमी सम भी वनी हुई है कि

> राम नाम का गिद्दा, बाहे पृक्षा बाहे सिव्धा ।।

वर्षात राम के नाम का जाप बाहे क्रमा क्या बाये चाहे तस्टा इससे कोई को पहला परमात्मा धवाय प्रसन्न हो बारी हैं। इस सन्दर्भ में कुछ जीन कियी कृषि का यह कविता का अध अवस्य क्य वे प्रस्तुत करने हैं।

> क्रमा नाम थपा जग जाना। बाक्जीकि भये बहुा समामा ।।

श्रवीत् वह सर्वविदित है कि राम के बास का उल्टा जाप ग्रचीत् राम राम राम ऐकान कहकर गरा गरा, गरा करते रमने से वास्मीकि ऋवि जो हुए हैं, वे बहुा के समान हो गए वे। इस प्रकार के और भी धनेक प्रमाण पुराणों के प्रमाना तुलवी 'रामचरित मानस मावि के प्रस्तुत किये वादे हैं। साथ ही धनेक पूरावों की कपाएँ भी जो सर्वया अवैदिक हैं और विज्ञान सम्मत नहीं हैं प्रस्तुत की बाती हैं विनक्षे यह सावित करने की कोशिय की बाती है कि जूस से जी यदि किसी ने 'बारायण' वा 'राम' बावि सम्ब मुख से बोच विया तो मृत्यु समय में वह सब्यति को प्राप्त कर लेता है।

सबि उपरोक्त भारता बनक इन बाक्बों की बास्तविकता पर विकार करें को पता चनेवा कि ये मान्यताए अवैविक धीष वर्षहीन हैं।

वर्वप्रथम को बप की सम्ट से राम बाब ही उपयुक्त नहीं है उसके लिए 'ब्रो क्य' सन्द है और प्रत्यों के ऐसे अनेक अकास्त दिए वा सकते हैं को कोश्नृनाम भी महिला है भरे पढ़े हैं तथा की देन नाम े क्य का ही विचान करते हैं।

> धोरम् प्रतिष्ठ ॥ वेद तस्य वाचकः प्रख्यानः ॥ योव भोत्रम् इत्येकासरं पर बहा ॥ बीता

इत्यादि सद् ग्रन्थों के बाक्यों का इस दाम बाम से विरोध है। धौर फिर दूसरी बास बहु है कि बिका विचारे ही नाम स्वरूप (बप) करना कहां की समझदारी 🛊 ? इसके प्रतिरिक्त संस्टा नाम जपका वो **अरे** छपयोगी हो सकता है ? वह बात वो व्यवद्वार के भी विदद है। अवर कोई किसी का नाम सक्टा सेकर पुकारे तो क्या बह कुनने वासा एस पर गौर करता 🛊 ? नहीं। बल्फि बहु सस्टा नाम सेने बाबा स्पष्टास का पात्र ही बनता है।

इस इस्टेगाम के जप वाली वसक क्या प्रमार्थ-बारका का निवारण करने 🚉 है केवल एक सुच को बोद सारत का

जप का शास्त्रीय स्वरूप

धर्मवीर शास्त्री, विद्यावाचस्पति

है स्वाध्यावशील पाठको के सामने रक्ष रहा ह पाठक विचार करे। सूत्र इस प्रकार है---

तज्जनस्तदर्यभावनम् ॥ योग १-५८॥

इस सूत्र में पतञ्जलि अव्चि जी अप की परिभाषा बसला रहे हैं। वे कहते हैं--'तत् जप ' उस परमात्मा के नाम का जप क्या है ? तदर्थभावनम् उस नाम के झर्यं की आवना। यह है जर। इसे हम एक उदाहरता से समर्भेने । जब हम 'जल शब्द का प्रयोग करते हैं तो 'जल कहते ही हमारे मन मस्तिष्क मे बल के गुली का बैसे बीतबता, तरमता, उससे व्यास के बुम्हने का, इत्यादि का विचार भी तुरन्त सा वाता है। 'सन्नि' शब्द को कहते ही सोचते ही हमारे मन में उसके बुज प्रकाशधीलता, उच्छाता बादि बुखो का तुरस्त ब्यान हो जाता है। किसी व्यक्ति को हम बुसाएँ तो उसके मुखो का हमारे जन मस्तिष्क में तुरस्त प्रामास होने सवता है। ऐसे ही परवात्मा का नाम, मुल्य नाम तथा जप की क्रव्यित से जो बिल्क्स उपयुक्त नाम 'घो३म्' है उसका बप करने से उसके सर्व का भी चिन्तन होते रहना चाहिए।

परमारमा का अप की बच्टि से तो 'बोदम' नाग है बैसा कि नोनवर्षनकार कहते हैं--दश्य बाचकः प्रस्तव ॥ योग १।२६ उद्य परमात्माका बाचक मो ३म् नाम है तो भो वाचक है वह ही बन से विन्तनीय भी है। वैसे बाज वप के किए स्रोम श्रमन श्रमन नाम बताते हैं। कोई राम राम बपने की बात कहता है कोहें। नम सिवाय, कोई नमी जबवते बासुदेवाय कोई नमी जनवते, शादि धनेक नाम वप के लिए श्ताते तथा करते भी हैं परन्तु भोश्य नाम ही वप की वृष्टि से उपयुक्त है जैसा कि बोन वर्सनकार ने ज्यर 'तस्य बाचक प्रसाव ' में वर्सीन किया भीर वह क्षप भी वैद्या हो "तञ्जपस्तवर्यभावनम् चल बोहम नाम का जप उसके धर्च की बावना पूर्वक करना चाहिए। उत्पर दिये वये सदाहरली से हम वह समझ बये हैं कि किसी बस्तु के नाम का प्रयोग करने से उस बस्तु के गुज-वर्ग मन में बा जाते है। वैसे ही परवारमा के नाम बोरेम का भी जिल्लान बाब हो तब वर्ष पूर्वक हो। 'बोरम्' का धर्व मुख्य व्य है रक्षा करने वाशा होता है तो इस घोरम् नाव का बप करते हुए इस का सर्व "सवकी रक्षा करने वाला" जी जप का विवय होता चाडिए। 'क्रो३म्' का विचार मन में कठते ही हम सोचें कि वह परमारना सब

कारक है, मेराभी रक्षक है। मेरे बसुधसुमे प्रविष्ट होकर मेरी रक्षाकर कर रहा है। यदि मैं बीमार हतो मेरी बीमारी दूर हो रही है। मेरी हर चीज की रक्षा का भार उसी का है। देवल शरीर ही नहीं बल्कि मेर मन मेरी भारमा की नक्षाका कार्यभी वह कर रहा है। प्रव मेरे मन में स्वस्थता है। ब्राटना मे स्वस्थता है। बारीर में स्वस्थता है मेरी रक्षा हो रही है। श्रव मुक्ते कोई नहीं मार शकता, कोई नहीं सता सकता, भव मैं उसकी गोद में हु। उस सर्वे रक्षक की जिसका नाम धी ३म् है मेरी भवभूत रीति से रक्षा हो रही है। मैं उसके सहारे पर हैं, ज्सके बाश्यय मे ह। उसकी काया (सहारे मे) ह धौर को उसकी खावा में (बाश्रम मे) वा जाता है उसे जिलता है अन्त सुत । ''गस्य ञ्लाया अनुतक्" सर्वात् विसकी खाया ही अनुत है विश्वका सहारान लेना मृत्यु जैसे कष्ट का कारता है सो मैं तो सामा में हूं। उसी को में पुकार रहा है। वह मेरे शरीर मे नेरे धाने पीछे दावें वॉर्थे ऊपर नीचे सभी बोर होकर नेरी रका कर रहा है। ऐसी भावना के साथ अप किया जाना चाहिए। भीर वास्तव में ऐसा जय ही ईस्वर के नाम का सच्या जप कहला सकता है।

अंगिरा ऋषि का उपदेश (पृथ्ठ १ का श्रेष)

प्रकृति के प्रत्येक रूप की उसका रूप जान-कर उसे देखता है। धपने समान सबको समस्रता हैं। सारी प्रकृति की झारवर्ष जनक ्वार्ते उसका ही स्वरूप हैं, वो जन सामान्य को दिखाई नहीं देती हैं। ज्ञामी पुरुष उसे शाव नेनों से देवता है। यूसरी विधा बात्मा की चन्नति का तरीका बताती है। उसी के द्वारा हमें सच्या युक्त मिल सकता 81

यज्ञ के विषय में शीनक ने पूछा---शंविरा ऋषि बोले-केवल सामी यज्ञो के इरने से भी हम उस उन्नति को नहीं कर सकते जिससे सच्या सुख मिनता है। क्षेत्रस दान करने से भी उस सुब की प्राप्ति नहीं होती जिसे बानन्य कहते हैं। ये सारी वार्ते तथी जीवन में भाती है। जब बादमी कृठ न बोले, हिंसान करे, चोरी न करे, को बान दे, इसम करे, घपनी बात्मा के समान सब की भारमाधी को जाने । यही बन्न करने का साम है, दान देने का उद्देश्य है। आसी यश किया, बासी बान दिया । बीवन में इन वातों को नही उवास, वो सुब नहीं मिलेगा ।

सन्नेप में कहे तो यो कहूना पडगा कि बोग दर्शनकार ऋषि पतञ्जलि प्रभू नाम के साथक अप के उद्वाटक व सम-यंक है।

हमे एक वात और घ्यान में रहानी होगी कि महर्षि पतञ्जनि योग (नपासना के) मामले में हमारे खिए प्रमाश हैं। क्योकि वे उपासना के विशेषज्ञ (स्पेश-सिस्ट **के। जैसे कोई बाल का** स्पेशसिस्ट डाक्टर होता है तो वह बास के बारे में विजेष ज्ञान रसता है। कर्श रोग विशेषज्ञ कान के विषय में, हर्डी का विशेषज्ञ हुट्टी के बियय में, पेट का विशाश पेट के विषय मे भा रेशन के मामले मे शस्य चिकि-स्सक विशेष जानकारी रखता है तथा ध्रपने विषय में प्रामाणिक माना जाता है। वैसे ही जप के बारे में योग दर्शनकार पत्तञ्जनिका वचन हमारे लिए प्रमास्त की की बहा जाता है। और वे कहते हैं-

् 'सञ्जपस्तवर्यभावनम्" उस पर-मात्मा के नाम का अप उसके धर्म की माबना सहित होता है तो हमे चनकी बात को चप विशेषज्ञ समक्ष कर छो ३म नाम का सार्थंक मावना से जयकरना वाहिए। वाणी से नहीं मन से मनन पूर्वक अप करें। वही जय का शास्त्रीय स्वरूप है। नाम का 'उल्टाजाप या मूझ से लिया गया 'प्रभूनाम' जप की (स्थरक की) कोटि में नहीं बाता। बत- यह उल्टे 'नाम जप' की बारसा त्यान कर हवे भोदेम्' नाम का सार्यंक, भावना से अप करना चाहिए।

दूसरे दिन वह फिर ऋषि के वास नया, इस बार ऋषि ने बताया--'अनवान खब के मन की बात जानते हैं। हमें बदा सस्य बोसना चाहिए। मन को बश से रकता चाहिए। कभी बुरे काम नही करने वाहिए। सासारिक सुब्दी के स्वान मे बाल्या की सम्मति पर ध्वान देना बाह्यि।

यह सुनकर शीनक को सुझ मिला और ज्ञान मिला, ज्ञान नेत्र सुस वये। उसने धनिश ऋषि को प्रमाम किया। **घर सौट बाबा, उनके बताये हुए उपदेशों** के धनुसार विन विताने लया। एसका बीवन एव ग्रहस्य जीवन सुक्री हैं। गया । इस रास्ते पर जो भी चलेगा उसे ही सुक की प्राप्ति होगी। इस योकी देर के लिए मिलने बाला सुबा डूंडते हैं। बाद में हु बी होते हैं। क्यों न ऐसा सुख दूदें जो कमी समाप्त न हो धौर वह सुख है बास्या एव परमात्मा को बालना। बाबो हम सब इसी रास्ते को हुई जिस पर कसने को धविरा ऋषि ने शौनक ऋषि को कहा था।



समाचार-सन्दंश

दिल्ली त्रार्यसमाजों क साप्ताहिक सत्सग कार्यक्रम १८ श्रमस्त ११८४ रविवार

" इतापनगर- श्री भीषमदेव शास्त्री । ग्रहोकनगर-प० चुन्नीकाल ग्रार्थ। धमरकासीमी- प० एदयश्रेष्ठ वर्माचाय । बार्यपूरीं - बहात्मा मुनिशकर जी। ग्रानम्बविद्वार-- प० विदेवप्रकाश शास्त्री सार्वोपर्वशक । इन्द्रपूरी- महास्मा राम किशोर वैद्य महोमदेशक। किंग्जवे कैम्प--प॰ क्रोमप्रकाश शास्त्री । ग्रेटर कैसास न०१-प० ब्रह्मप्रकाश शास्त्री । गुड-मर्था-- प० वेदप्रकाश शास्त्री । योविन्द-पुरी-प व नरेन्द्रकृमार शास्त्री। चुना-मण्डी--- प० आशाराम भजनीक । जनक-पूरी बी-२-प० रमश्चम्ब वेदाचार्य) व्यवपरा-वार्ववीर रखबीतसिंह राखा। टैगोर गार्डन-प• देवराच वैदिक मिश नरी । देवनयर-अभिती प्रकाशनती शास्त्री धार्य प्रचारिका । दरियायच--- प० समरनाथ मान्त सार्वोपदेशक। न्यु मोती-मनर-डा० वेदप्रकाश महेश्वरी । श्री निवासपुरी-डा० रघुनन्दनसिंह महो-परेशक । नारायलाविहार-प० मूनीदेव भवनोपदेशक। श्रीतमपुरा - मा० मोहन काक गांधी जी। पंजाबी वाग-प० वर्म-

'म्यार्ग 🗀 दिवस : हमारा संकल्प'

माज हम भपने स्वाभीनता दिवस की शहतीसबी वर्षमाठ मना रहे हैं। नि -सन्देश हमने भौतिक क्षेत्र में ससीमित प्रमति की है। निर्माश, विज्ञाम, टैक्ना-साबी, सेना व साखान के क्षेत्रों ने भाष्ययंत्रनक विकास हुमा है। राष्ट्र का बाह्य स्वरूपं पूर्णतया परिवर्तित हो गया गया है। उद्योगों की प्रयति भी कम वीरक की बात नहीं हैं। लेकिन इसके विपरीत उसी वित से राष्ट्रीय करित्र का भी पतक हका है। ऋषि मूनियो की पवित्र संस्कृति के देश में ग्राज मानवता कराह रही है। सारे देश से निम्न स्तर से लेकर उच्च-स्तर तक, प्रत्येक क्षात में भीवता भ्रष्टा-चार, श्रकमण्यता, स्वार्धान्वता का साम्राज्य फैला हुआ है। भाई भाई के श्चन का प्यासा हो गया है। साम्प्रदायिक तनाव. श्रराष्टीय गतिविधिया राष्ट्र के माथे पर कलक बनी हुई हैं। वृसकोरी का बाजार गम है। तस्करी, कालेवन की बहुतायत है। भगहरता, बलात्कार, बकैती, **ह**रया श्राच के युग में साधारण सी बात है। बहुआ के नाम पर इत्याए निरम्तर हो रही हैं। स्पवस्या, शान्ति की जिस्मे-दार पुलिस स्वय भ्रष्टाचार के शिक्जे से फसी हड है । नैविकता, मानवीयता, सञ्चरित्रता, सद्भावना लुप्त होती जा रही हैं। यदि इन्सान की इन्सानियत नहीं रहेगी, तो इस घसीमित भौतिक

बीर शास्त्री विद्याबाचस्पति । प्रशान्त विहार-स्वामी यज्ञानन्द सरस्वती। पञ्चानीशाग एक्सटेन्सन- प० सत्यदेव स्ना-तक रेडियो कसाकार साथ प० जोती-प्रसाद होसक कलाकार । नसई दारापूर--प० बलवीर शास्त्री । भोगल - अ० मनु-वेब धास्त्री । महरीली- -प० धमीचन्द्र मतवाना। मौडल बस्ती - प० तुनकीराम द्यार्थे प्रचारक। मोतीवाग-- प० वेदव्यास भजनोपदेशक । राणाप्रताप बाग---प० ब्रह्मोक विद्यासकार । रववरपुरा न० २-प॰ खयमगवान मण्डली । राजीरीगार्डन--महात्मा देवेशनिक् । लक्ष्मीवाई नवर ६० १२०६- ४० सुबीलकुमार बास्त्री। सब्ब्याटी पहाबगज-प० नेत्रपास शास्त्री सोधनगण---प ० सोमदेव सास्त्री । भीनगर पण्डित प्ररिक्षन्द्र शास्त्री । शासीमार बाग- प॰ मनोहरशास ऋषि । हीखसास-क रामवीर हास्त्री ।

> क्यवस्थापक स्वामी स्वक्यानन्व सरस्वती प्रविष्ठाता बेक्प्रचार विशास

विकास का क्या होगा ? बाइए। हम भारत के लोग, स्वाची-नता दिवस 🕏 पूज्य पर्व पर सकल्प तें एक महान् राष्ट्र के निर्माण का और भारत में फैल रही दानवी अवृत्तियों को समाप्त करने का। यही स्वाधीनता के लिए गर मिटने बाखों के प्रति सन्त्री सकाञ्चित

भववीय.

चतुर्वेद पारायगा यज्ञ

२१ बगस्त १६८५ प्रात काम १ सित्तस्वर तक यज्ञ भवन प्रयाग निकेशन जवाहरनगर विल्ली ने श्री स्वामी जीवना-नम्ब एव प॰ सम्रपति शास्त्री की भष्यक्षता ,से चतुर्वेद पारायण यज्ञ का धायोजन किया गया है। श्रद्धालुखन जारी सस्यामे प्रवार कर वर्गसाम चठावें।

Cohen धर्जु नदेव

वेद कथा---

धार्यसमाज लाजपत नवर नदी दिल्ली मे २६ धनस्त से ३१ धनस्त तक रात्रि १ ते १० तके तक कथा प० विद-कुमार की शास्त्री मूतपूर्वसांसद द्वारा होगी। अवन रात्रि स्से स्ववे तक श्री नुसावसिंह की रावन के होंके।

> त्रेवक प • नेवरवाम

श्चार्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य (पंजीकत) १४ इनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

सूचना

धार्वे बेल्टीय समा दिल्ली राज्य, की साधारण सभा की बैठक रविवाद १८ बगस्त १६०६ को साथ ३-३० वर्षे बार्य समाच मन्दिर हनुमान् रोड, नई दिल्ली-१ मे होगी।

विचारगीय विषय-

१ कोक प्रस्ताव

ए गत बैठक की कार्यवाही की सम्पृष्टि ।

> ३ वाषिक विवरण (रिपोर्ट) ४ नत वर्ष के बाय-स्थय का स्थीरा

इ नये वर्ष के लिए धविकारियो एव धम्सरम समा का निर्वाचन ।

६ श्रन्य विषय । भाष इस समा के माननीय **श**बस्य है। कुपया धवस्य दर्शन दें।

वेढ प्रचार सप्ताह

भारत की समस्त बार्यसमाजें वेद प्रचार सप्ताह सगस्त सितम्बर में धपनी-धपनी धार्यसमाजी में वेद कवा कर मनाती हैं। बापसे प्रावंना है कि इस वर्ष भी यह कार्यक्रम अवस्य रखे। इस उप-सक्य में धापको किसी विद्वान की धा-वस्यकता हो तो बाप हमें सूचित करने की क्रपा करें । बापसे एक प्रार्थना सौर करनी है। जैसा कि दिल्ली बार्य प्रतिनिधि समा की मार्थसमाजें एक सप्ताह रक्षा-बन्धन बे सेकर जन्माच्टमी तक वेद कवा बप्ताह मनाती हैं। अञ्झाती यह रहेगा कि इस सप्ताह से एक सप्ताह पहले व दो सप्ताह

श्रार्यममाज की प्रधान सङ्क दुर्घटना में घायल

बार्यसमान, उदयपुर की प्रधान रावेश्याम 'बार्व' एडवोकेट "बीमती मामती बग्रवाल कल १-द-दम् राति चरक सात्राबास के पाब कार पेड से टकरा जाने के कारण वायस हो वह । ततकास उन्हें सामान्य चिकित्सामय के भाषातकालीन कक्ष पहुचामा नया जहाँ उनकी धास्त्रों में शीशे चले बाने के कारण राजि को ही भापरेशन कर निकासा गया दुर्बंटना का कारण ज्ञात करने पर बालूस हुमा कि सामने से सारही बस से बचाव करते समय यह दुटबैना हुई।

वार्यसमाज के मत्री ज्ञानप्रकाश मुप्ता ने एक विज्ञप्ति में बतकाया है कि आज धार्यसमाज मन्दिर मे होने वाली बतरम की मासिक बैठक स्थगित कर दी नई तना साप्ताहिक सत्सव के उपरान्त समस्त सदस्यों ने उनके शीघ्र स्वास्थ्य साम की ईक्सर से पार्वमा की ।

श्रीमती अग्रवास सामान्य विकित्सा-सब के महिला नेत्र कक्ष के प्रस्त न० १ (एक) में नवीं हैं उनकी तबीयत पहले से सुवार पर है।

> (ज्ञानप्रकाश मुप्ता) धन्त्री, बार्वसमाच सरवपूर

नोट १ सहयुक्त सदस्यों से विश्वय भनुरोष है कि वे अपना सदस्यता शुल्क 1/- रुपये कार्यालय में जमा करा दें धववा १८ धनस्त १६८५ को साथ सते बावें।

२ जिनसमाजो ने सभी तक दश-द ६ का सम्बन्ध शरक ३०/ रुपवे और २ प्रतिनिधियों के नाम, घर के पते शहिल. सदस्यता बुल्क १०/- रुपये प्रभी एक वहीं नेजा है, वे भी कार्यासय ने जमा करा दें समना सामारता बाविक समिवेकन ने साथ नेते मावे ।

३ समा कार्यासय सभी कार्यदिवसीं पर अपराक्ष ३ से ६ बजे तक समा रहेगा।

> घवदीस (सूर्यवेव) महामन्त्री

श्रवश्य मनाइये ।

बाव भी यह प्रोग्राम बना ६ कते हैं। इस उपसब्ध में हम बापको बच्छे विद्वान उप-तक्य करा सकते हैं। दिल्ली की मार्थ समाची और स्त्री धार्यसमाचों ने इर रविवार को सत्सय होते हैं। प्रगर रवि-बार या किसी धन्य दिन के लिए छपदे-गको भजनोपवेशको की धावस्थकता हो तो सभा कार्यासक को सुवित करने की कपाकरें।

> महामन्त्री डा॰ वर्गपास विल्ली धार्य प्रतिनिधि समा १५ हनुमान रोड, नई विल्ली-१

योग्य रिश्तों के लिए मिलें

भाषकस योग्य वर या सुधोरव वध को लोब पाना, उत्तम कुलो का निस पाना, विना बहेब के विवाह इच्छक्कार प्राप्त कर सेना अस्यन्त कठिन कार्य 👢 सुशीस गुजवती सुन्दरवधू को इ.ड पाना श्रसाधारता कार्य है। जनसेवा की ध्वान मे रसते हुए दिल्ली बार्य वितिष्धि समा ने वयस्क लडके लडकियों के मेल मिलाने के बिए धावसे बार्य विवाह केन्द्र की क्यापना की है। बत बाप बपने सुपुत एवं सुप्रियों के नाम शीव्रातिशीव्र सभा कार्यासय मे पजीकृत करायें। धपने परि-चय पत्र मे निम्न जानकारी देना न मूर्वे-

१ बायू, कद, शिक्षा, वर्श, व्यव-साय, फोटो कापी ।

२ भपनी इच्छा-नया धाप बाहर नेवन के पक्ष में हैं[?] परिवार के खबस्यों का परिचय शाकाहारी समबा "'क्या कोई रोग वो नहीं है ? क्या चन्तरवासीय विवाह करना चाहेगे।

> सयोजन धादर्श धार्य विवाह केन्द्र दिल्ली आर्थ प्रतिनिधि संबा १६ हनुमान शेड, नई विक्की

उपदेंशक विद्वानो का सम्मान करे

(पुष्ठ१ हे धाने)

वेदप्रचार विधान के व्यविष्ठाला स्वाची स्वक्षानद की ने व्यवे के कार्य का विवरण दिवा और बतावा कि दिवा की कार्य के कार्य का स्वचान के कार्य का स्वचान के कार्य कार्य

मुख्य प्रस्ताव निम्म प्रकारहे— १ वेदमचार विमान ऐसा प्रयास

१ देदचयार विज्ञान एवं। प्रयाध करे कि सामंद्रशासों से बस्ता को सना-बर नहीं तथा धन्त क्षम में स्थान और समस का परिवर्तन न किया जाये तथा कहीं पर ची एक साथ दो प्रचारक न सेने नार्थे।

२ आवंसमानों को यह निर्देश विया नामे कि वे उपवेसकों को समुचित वार्व-क्यम त्रवा दक्षिणा हैं तथा उनका बसपान साबि से सरकार करें।

३ समा के बैतिनक सबैतिनक कप-देखकों की बैठकों नहींने दो महीने में सबस्य

बुका ती जाया करें।

४. सभा का साप्ताहिक पत्र आये
सन्देश सभी उपदेशकों को नि सुरुक नेवा
वाये।

४ सार्वसमानों ने पुरोहियों का अद्वा और सद्वान का परिचन हैं।

उचित सम्मान हो तथा उनकी समझायों का प्रयोग सम्मा हुबन सादि शिखनाने, मस्कुन १८८ ने बादनासय की व्यवस्था करने तथा योग सादि की कमाएँ समाने वे किया जाते।

६ सभा की बोर से सार्वजनिक रूप से सपदेशको का सम्मान किया बाद ।

७ उपयेषको की समया बहाने के सिए उन्हें त्रविकास दिवा बाना प्रावश्यक है, विसके सिए योग्य विहानी द्वारा उन्हें त्रविक्षित कराया बाये।

े ह उपश्यक समय पर धार्यसमान मन्दिर में पहुँचें तथा बहा तक सम्बन हो सपने भाषता को पहल से तैयार करके से आयें। वे वैदिक सिद्धान्तों के सनुसार ही बोलें।

१ ब्राह्मण, सत्याधी, विवाधी इन्हें सम्मान की धाकाला नहीं करनी वाहिए, यदि वह परिचय से कार्य करेंदे तथा स्वाव की बचना रखेंदे तो इनका सम्बान स्वय-नेव होना।

१० प्रचारकों का बीवन वैदा ही हो बैदा वह बोतते हैं। वह तब एक फान के नीचे समुक्तातित रहकर कार्य करें। उन्हार तीर स्ववहार होनें वहीं करवेचकों को सम्बद्ध होना चाहिए। वो कार्यक्रम वह स्वीकार करें उनमें वह सबस्य पहेंचें। इस तबब में वैतनिक जा सर्वतनिक कभी उत्तर वहनें करनें करनें का सानन करना चाहिए।

११ मार्वसमाची के मणिकारी

१२ सम्बस्तावों को हमें सातीवाद नहीं नवाना कार्रण्य। सार्वसमाय गर्पियों का उपयोग मुक्त वेद प्रचार के लिए ही किया जाना चाहिए।

१३ सभाप्रचान की सूर्यदेव की न बैठक का समापन करते हुए कहा कि वहा शोग्यता है उसे कोई ठुकरा नहीं सकता। शिष्टाचार कहता है कि इस मान बासे बक्ता का शम्मान करें। बार्यसमाम मे धपनी बात को कहने की सभी को स्व-तन्त्रता है। कुच ग्रन्थ समठनो में तो प्रचारक प्रपनी बात कड़ भी नहीं सकते। बदि हम बाबारवान हैं तो निश्चव ही हमारा सम्मान होगा। यदि हम उच्छ ह्य में हो हमारा सम्मान हमारे बज्ये भी नहीं करेंते। कमिया अधिकारियो, उपवेशकों दोनों ने हैं मैंने देखा है प० रामचन्द्र देहसवी सदर बाबार से चलकर ग्रपनी बटाई तेकर बाते वे तवा रेलवे स्टेखन के सामने और ज्यादा मीड हो बाने पर पार्क में प्रचार करते है। माज के प्रचारकों को उसी कर्तव्य भावना से कार्य करना चाहिए। उन्होंने बाद ने सभा की बार्षिक स्थिति से भी उपस्थित खबस्मों को सवनत कराया ।

स्वामी स्वरूपानम्य वरस्वती अपि काता वेदमचार विमाय ने सभी उपस्थित स्वरूपों को समूस्य दुर्ममा तवा स्वरूप रहते हुए वेदमचार में समान रहने का सादीनंद रिवा। की वेदयत समी ने सम्बदाद देते हुए कहा कि नाम्य विहानो

हारा दिवे नए पुआर्नों के धनुसार हुन कार्ने करने का पूर्ण प्रवास करने, तका उपदेशकों ने सम्मान के निए प्रवासनिय प्रवास करने । उन्होंने ध्रायंत्रवास वीपना हाल के धार्किमारियों का इस्ट बैठक की स्वत्यस्था करने तथा जलगान हारा स्था-नत करने के स्थिए स्थानास विधा।

इस बैठक मे स्वामी स्वक्यानम्ब सर-स्वती, सना प्रचान भी सूर्यदेव, सभा महा-बन्त्री डा॰ वर्मपास, बन्त्री भी वेदस्त शर्माश्री सोमदेव सर्मा शास्त्री साचार्य रविवस नीतम, प॰ सक्मीदास स्त्री अस प्रकाश बार्य, भी नेत्रपास बार्य, सी समर नाव कान्त भी रखबीत सिंह राखा, भी वमनवास श्री बहाप्रकाश वादीश, श्री बर्मबीर सास्त्री श्री मनुदेव सास्त्री, श्री बादराम बार्य श्री बच्चपाल सास्त्री, भी बनोहर सास ऋषि भी हरिदेव सामार्थ, श्री कुम्मीलास प्रार्थ, श्री सत्यदेव स्नातक की बेदम्बास की मुनीदेव पार्य, की **अ्योति प्रसाद भी रामकिशोर वैद्य, भी** बह्मप्रकाश शास्त्री, जी यह पान सुवासु, भी वेदपाल शास्त्री भी रामचन्त्र समी, बी बनेबकुमार सारी, जी बसाराम प्रेमी, श्री गुलावसिंह राजव भी उदबक्षेट, बर्बाचार्य, की बसवीत सास्त्री, की विचा-राम मिश्र याचार्य भी समीचव नतवासा को स्वामी जगदीस्वरानम्य सरस्वती, नी स्वामी ज्ञानेपरयानम्य बादि उपस्थित वे ।

> स्वरूपानन्य सरस्वती मणिष्ठाता वेदप्रचार विभाव

सर्वस्व ग्रर्ण्ण करने वाले 'होता' ^{*} (पृष्ठ १ का क्षेप)

हु वे सहिंद व्यानन्द के अनुपायी जिनके कारण स्वाधीनता का यज्ञ सफल हुमा क्यों कि देश की माजादी के लिए जेलों में जाने वाले -० प्रति-स्वत मार्यसमाजी थे। सुर धर्म के इन पुचारियों को देश जाति का प्रणाम । क्यों कि-

ागि । इर वर्ष हैं, घमय दहकते धगारो पर चलना, शूर वर्म है को एित कि पर घरकर सीक्ष मचलना। शूर वर्म कहते हैं, खाती तान तीर खाने को, शूर वर्म कहते हैं हसकर

हुलाहुल भी जाने की ॥
हुन्ही अमर बिलवानियों के
हुन्ही अमर बिलवानियों के
हुन्ही अमर बिलवानियों के
हुन्ही अस्त स्वाधीनता
का सुरज उना। भाज का मारत
२१ वीं सताब्दी की भीर सुनहरे
मांक्य को कामना लिए बढ रह्मा
हुन्ही हुन्ही पार करना मामिक जुनौती
है। इस समय जुनौती है। बढती हुई
बावादी घोर गरीकी, मांचिता,
खातिबाद, अंत्रवाद मीर सब से कुर
सातकवाद। रवीन्द्रनाय ने लिखा

धताब्दीर सूर्व धाजि रक्तमेष माने, प्रस्त नेतो हिंसार उत्सत्वे, प्राणि बाजे। प्रस्त्र धरूने भक्तारे उत्माद रागिनी, भवकारी। दयाहीन सम्मता नागिनी। स्वायं वये छै स्वायं लोने लोने, स्वटे छै समाम प्रलय मचन स्रोषे।

"इत रक्तवर्ण मेचो के बीच इस श्वताब्दी का सूर्य मस्त होता विकाई दे रहा है। माज हिंसा के इस उत्सव मे शस्त्र घरस्वों के बीच धार्मुतिक सम्यता नागिन बनकर मृत्यु भी भवकर रागिनी पर नृत्य कर रही है। मनुष्य का एक स्वार्ष दूसरे स्वार्थ से टकरा रहा है। लोभ के साब लोभ का सवर्ष भवा है और इस प्रनय सन्नाम मे रत मानव बारस्विष्टवास के एय पर बढता चला बा रहा है।"

इस सन्धर भरे तूफान में भी सारमिवश्वास का होना, सागे बढ़ने की शक्ति सजीये स्वत्ना, सकत्य की ख्रुता भीर दूरदिन का होना स्वत्य वस्पक है। यही हमारे राष्ट्र की गौरवपुर्ण प्रस्मित हो।



महाशियां वी हट्टी (प्रा॰) सिंग

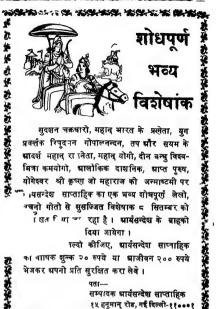
ales, handliken Ales, and in mi Brands 10012

5 538808, \$37887, 537**343**

Post in NDPSO on 16-8-85

Licensed to post without prepayment, Licence No. U 139





सुदशन चक्रधारी, महान भारत के प्रसेता, यूग प्रवर्त्तक रिप्दान गोपालनन्दन, तप ग्रीर सयम के मादर्श महान रा निता, महान योगी, दीन बन्ध विश्व-मित्रा कमयोगो, म्रालोकिक दाशनिक, म्राप्त पुरुष, योगेश्वर श्री कृष्णा जो महाराज की जन्माष्टमी पर " ।यसन्देश साप्ताहिक का एक भव्य शोधपूर्ण लेखो. ज्वनो गोतो से सुसज्जित विशेषाक द सितम्बर को ा शत िया जा रहा है। स्नार्यक्षन्देश के साहको दिया जायेगा।

ग्लदो कीजिए, भार्यसन्देश साप्नाहिक का बाविक जुल्क २० रुपये या श्राजीवन २०० रुपये भेजकर अपनी प्रति सुरक्षित करा लेवे।

सम्पादक श्रार्यसन्देश साप्ताहिक १५ हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१ **************

लिए उत्तम स्वास्थ्य काँगडी फार्मेसी. हरिद्वार की और्षाधयां

सेवन करें



वासा कार्यासय-६३, वली रामा केवारमाय, चावडी बाजार, विल्लो-६ फोन । २६१८३८



वय १ श्रक ४० मूल्य एक प्रति ५० पैसे रविवार ४५ अगस्त १६= इ वाधिक २० ठपने सुव्हि सबत् १६७२६४१०८६

ह४१०६६ झाजीवन २०० क्यम

बाबरा २०४२

दयानन्दाब्द — १६१ विदेश में ४० डासर ३० वॉक

निराशा वादी शत्य मत बनो, आशा और कर्मठता के प्रतीक कृष्ण बनो -रामगोपाल शालवाले

नई दिल्ली १८ अगस्त १८८५। आय केन्द्राय सम दिल्ली राज्य के निर्वाचन से पूर्व सामयिक प्रधान का साबन महत्य करते हुए सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के मान्य प्रधान लाला रामगापाल शालवाले ने कहा कि आय केन्द्रीय सभा दिल्ली के स्थापन नहत्ये स सम दिल्ली के अपने केन्द्रीय सभा दिल्ली के अपने केन्द्रीय सभा कि सी प्रतिनिधि सभा नहीं थी। कानपुर में काफी समय बाद केन्द्रीय सभा की स्थापना हुई। आयं नेन्द्रीय सभा दिल्लो का अगना महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसी सभा के ल्यावयान

में चीन के हमले के ममय तस्तानीन ग्रहमत्त्री श्री चल्लाएं को रामलीला मैदान में भागीजित विशाल सम् रोह में ५१ हजार रुपये भीर एक तलवार भट की गयी थी। समूचे देश में इत सभा की खाप है। मुक्ते दुख होता है जब मेरे कुछ निरास साथ ब कुछ करते हुए भी कहते हैं। हम भ्रष्टी तरह नहीं कर पाये। सब तरह सम्मान होते हुए भी कहते हैं कि हम भूखे हैं नगे हैं। मैं मानता हु कि हम भूखे हैं नगे हैं। मैं मानता ह कि हम भीर स्विक कार्य करना चाहिए। सगठन के भ्रत्यांत कार्य करता चाहिए। करते हुए लोगो के मार्ग में प्रवरोध नहीं पैदा करने चाहिए। हो सके तो उनको सहारा वाहिए। हो सके तो उनको सहारा वाहिए। मुफे यह प्रसम् याव बाता है जब महाभारत के युद्ध में कर्ण के सारची प्रक्ष के तीर वे उस बार योद्धा कर्ण को बार-बार सूतपुत्र अध्योग्य कहकर हतोत्साहित करे तो कार्यकर्ता केसे कार्यों को सुवार कर सह सारची हो हतत्साहित करे तो कार्यकर्ता केसे कार्यों को सुवार कर्ण हर प्रकार प्रज्न को प्रदित्त कर रहे ये। यह सारची हो हत्तरसाहित करे तो कार्यकर्ता केसे कार्यों को सुवार कर्ण हर प्रकार प्रज्न को प्रदित्त कर रहे ये उनका उत्साह-

वर्धन कर रहे थे उसका मोह भग कर रहे थे। द्रोपदी चीरहरण और प्राप्तमन्त्रु की प्रृत्यु का बदना लेके के लिए उकसा रहे थे। परिणास विजयभी भी पाण्डवों को ही मिली जिसमें कुष्ण का बहुत बडा हाथ था।

इसलिए भेरें प्यारे माइयो, जलाह से काम करा। साथियो का जल्लाह सकन करो, जन्हें सहयोग दो। जीत सुम्हारी होगी। जन्होने पजाब की समस्या होगी। जन्होने किये जा रहे कार्यों पर मतोष व्यक्त (शेष पठ ६ पर)

आर्य केन्द्रीय सभा के निर्वाचित प्रधान श्री महाशय धर्मपाल



की महास्य वर्षपाल दानवीर, सर्वमित्र, स्वर्यानच्छ, निक्खल सरण प्रकृति के स्वामी, एम० डी० एव० प्रा० लि० के स्व-स्वाधकारी, सुप्रसिद्ध उद्योगपति सहास्य सर्वपाल सार्व केन्द्रीय समा

दिल्ली राज्य के प्रधान सर्वसम्मति से हुई भीर उल्लास के वातावरण मे निर्वाचित हुए।

श्री महाशय धर्मपाल भपने पूज्य पिता श्री स्व० महाशय चुन्नीलाल के सत्यनिषठ ईमानदार, परोपकारो, दानी स्वभाव को मादश मानकर समाज सेवा में सलग्त हैं। उन्होने भपनी पूज्या माता चन्ननदेवी की मधुर स्मृति को जीवन्त रूप डेने के लिए माता चन्ननदेवी मार्य वर्मार्थ नेत्र विकित्सालय सुभाष नगर मे बनवाया जो हजारो रोगियो को नेत्र ज्योति प्रदान कर रहा है। जनक पूरी में भी दो बढ़े बस्पताल दू खियो के दुबहरण का कार्य महाशय जी भूभ सकल्प के कारए। कर रहे हैं। श्रो महाशय चुन्नीलाल चैन्टिंबल इस्ट के अन्तर्गत एक बनता किरता (क्षेत्र पुष्ठ ११ पर)

महामन्त्री श्री त्र्यशोक कुमार सहगल



भी अशोक कुमार सहयस

कर्मठ कार्यकर्ता धुन के घनी, हसमुख, मधुर स्वमाव जनसेवा के लिए कुनसकल्प समेरिकन एक्सप्रस वेक के उच्च अधिकारी, नहीं दयानम्द और सार्वनमाज के समास

शाक कुमार सहगल श्रदालु श्री प्रशोक महगल के धार्य

श्रद्धालु श्री प्रशोक सहगल के प्रायं केन्द्रीय समा दिल्ली के महामन्त्री चुने जाने पर हादिक बचाई। श्री प्रशोक महगल प्रायंसमाज

श्री प्रशोक महणल धार्यसमाज
राजेन्द्र नगर के १२ वर्षों से लगाता
रहे हैं। जनके कारण जस क्षेत्र के
जन जन तक धार्यस्माज का सन्देश
पहुना है। आय केन्द्रीय सभा दिल्ली
के वे १६७४ से लेकर १६७६ तक
महामत्री रहे। उनके द्वारा उस काल
में किये गये कार्यों की आर्ये जगत
प्रव नक स्मरण करता रहा है।
१६७५ की अन्तर्राष्ट्रीय आर्यसमाज
स्थापना शताब्दी के वे सयोज के
स्थापना शताब्दी के वे सयोज करे
द्वार तराज तथा वेश-वेशान्तर से
प्रवार तथा के आर्यों कार
प्रवार सामान
और धावास व्यवस्था के लिए श्री
अक्षरा को स्था की काफी
प्रवसा को गई थी।

सत्संग वाटिका

(बत बत) जिस जिस स्थान में तू (नम्बेह्स) कम करता है उस उस स्थान में (त) हमारे जिए (यायम्) समय दान (कुर) कर (न प्रकास्त्र) हमारी प्रवा में जिए (तम प्रधान) करवाक कारक समय (तुरु) करो सीर (न पशुस्य) हमारे पशुषी को भी (समयम्) समयवान कर।

पन मत से देवन से प्रावना करते हुए कहा नमा है कि है देवन ! जिस जिस स्थान से गुम्हारा कम चनता है उस उस स्थान से हुमारे लिए हमारी प्रजाधों और प्रावन के लिए कस्थाल मय समयदान की जिए!

क्ल्याण कारक परपेववर प्रमा कैंबे है। अय कोई वस्तु नहीं है। यैने एक घटना कहीं। पढ़ी भी कि एक बार एक बाकू विस्त पर कई हत्याधों के स्तिथोंग थे और वह पांजीवन कारावाल की सम् भूगत रहा था। एक दिन जेल के पहुरेदार के कमरे में पहुंचा जहां चाभियों रखी हुई थी। पहरेदार भीर उसके प्रमा साथियों की प्रोर पिश्मील ताल कर बोला हाथ उपर करों।

उस डाव की भयकरता का अनुमान करके उसकी माज्ञा के मनुसार उहीने हाथ उरा दिए भीर उसके पूछने पर चामियो कार छाभी से बतादिया। उसने पहरेदारों के सन्दरको छोडकर दूसरी का कालको रियो में द कर दिया। फिर सरदार मे कहा चलो प कलीनाग्रर भुर रकार मोटर पर शहर के बाहर चलो सरदार उसे लक्र बाहर निकला जहा जेलर पेडो कैन वटहल रताथा जेलर न एक कैदी को सरनार कसाय द्याराम समीन्र मे बैठत देखान उस कोई सदेह नही हुगा। नस समय डाक पिस्ती को कान केन च छिपाए हुए ग्राप्ट यह तनी सर दरकी ही शोक्छी

कुछ बूर जाकर उसने सरदार को मोटर न रिव ना निया और स्वय गोरर कप ने ना न गरदार के नीच रनरन पर नह पिस्तीन सरदार के सामने न चाटक यी उसे नसस्ते की और मोटर स्टटकरदा।

मोटर के चल पडने पर जन सरदार को होण आया और उसने वह पिस्तोस पड़ी दखी तो उस समफ प्राया कि यह लक्ष्मा को पिस्तोस है भीर मैं व्यय ही जर रहा था। इसी प्रकार जीवन म शब भी लक्ष्मों को पिस्तोस है। हमारी धर्मकाश सीम ए भीर निरालाएँ सकड़ी क पिस्तोल की खुलना से धर्मिक नहीं। हम खुलनाशों

निर्भय बनो, निर्भय करो

सरेशचन्द्र वेदालकार

यनो यत समीहसे ततो नो ग्रमय कुरु। श न कुरु प्रजाम्योऽभय न पशुक्य ॥ यजु० ग्र० ३६ । म० २२



को न पहचान कर उन्हें बचाय की छक्ति देवेते हैं। तब वेहमें दुवा के कारागार में बाल देती हैं और सभी सुबोगों से विश्वत करदेती हैं।

हमें बीवन में बानेवाली प्रापतियो से मयभीत नहीं होना चाहिए। प्रत्येक भागत्ति समिशाप ही नहीं होती । जीवन में बाने वाली प्रारंजिक ग्रापर्तिया धनेक बार आधीर्वाद सिक्ट होती हैं। वेहमे शिक्षा भी देती हैं और इसारे प्रयत्नों ने हमे साहसा भी बनाती हैं। इनसिए इस मत्र मे कहा गया गया है कि हे ईश्वर ! बाप हमारी धौर हमारी प्रवाबी की रक्षा कीजिए भीर सभय कीजिए जिससे निडर होकर हम नव धपने कर्मों को कर सक। परमेश्वर के निजा और मुख्य नाम को श्रम् श्चाद का प्रय ही यही है। परमेश्वर क्योंकि हमारी रक्षा करता है इसलिए उसे ब्रो३म् कहते हैं। वह परमेश्वर नि छल साहस पूरा कार्यों मे सदा हमारी रक्षा करता है। परमेश्वर सत्य साहस धौर निष्काम कम में कैस मनुष्य की रक्षा करता है [?] एक एतिहासिक घटना द्वारा यहमत्य देखाजास्कत हे

यूनान म एक गुलाम ल नदान ये किया नायक कलाकार था। थी रख उठका इस्टेब था। थहीं एक कानून ना भी र गुलामे के लिए सक्ति कला का का अवस्थ कर दिया गया जिन नी यह कानून लागू किया गया जा दिनों कियो कुछ बुदर यूतियों के निर्माण के ना प्रकृतियों के ना प्रकृतियों के निर्माण के ना प्रकृतियों के निर्माण के ना प्रकृतियों के प्रकृतियों के ना प्रकृतियों के ना प्रकृतियों के प्रकृ

हियों की एक नहुत था। उसने यह समाचार आनकर सन्त हृदय से अपू से आपना की है देववर मेरे बाद की रख्यू करों । पुस्तुरे वरणों में हमारा सरसक धर्मित है। तुम्बूरों कृषा ही धव हमारी रखा कर सकती है। तुम्बूरों कृषा सम्ब दो कि कला के विकास में हम निटर होकर सब्दोंने कर सकें। बहु सपने भाई को लेकर तहकाने में गई स्नोर उसे सपना काम वालू रखने की सलाह वी। उसने कहा इसमें मैं भी पुम्हारी सहायता करूपी। भगवान् हमारा साम देवे।

ज्ही विनों एवेन्स ने कता के नभूमी की प्रदेशनी का सायोजन हुया। पेरीक्सीब उसका सभापतित्व कर रहे थे। एक स्थान पर सुन्दर पूनिया थे। ऐसा माझूब होता था कि वैसे सन्तित कलाभी के भिष्टाता देशना सरोजों ने स्वय उनका निर्माण किया है।

ये मूर्तिया किसने बनाई है?
दसकों ने पूछा । शानित एका कारत व्यदक करको नाती यून मरे वालो वाली धम बता की मूर्ति सी एक सकती को पक्ष खाए। पर फिर भी लडको नहीं बोली। पेरैश्लीक ने उसे कैरवाने से बाले का धादेश दिया। इस धादेश को पुनते ही भी की नारता हुए। एक पुतक पेरी ननीव के पाय पूच धोर बोला कमा करी। उस लडकी को बचा ला। धम रामा में हूं ये मूर्तिया मेरे गुलाम हाथों ने तैयार की है।

गुलाम धौर कला ? जनता चिल्लाई इस चेल में बन्दकरो।

परीवनीज ने खन्द होकर कहा अब नक में व जंवत हुएंचा नहीं हो सक्दाा । माज भी क्या के इधिहास में कियों का 11- नमर है यह है परपेस्वर द्वारा प्रदक्त प्रमय का उदाहरण । दश्मिए सज बहुता है कि है ईस्वर । तु बहु बहुत विस्थान है वहाँ वहा हमारी प्रवासों को निजय कर स्थीर उनकी रुआ कर।

भय धारण विषयात का वातु है। अब के कारण दुनिया से बहुत से बोग धायणी मोस्या का लमुचित पुरस्कार पाने से विषय के से से स्थान कर्तुक्तों से स्वव की धाने परिवार धोर सवधियों को तथा धाने देख की लाग नहीं पहुचा खकते क्यों के देल हैं।

पुरुषो की रक्षा के साथ साथ पशुक्री की रक्षा की भी बाद कही वई है। पश्चक्री को सनय कैरे प्राप्त हो वकता है? उनको समस समुख्य हो दे सकते हैं। इसीलिए सारतीय तस्कृति में कहा गया है गाय सारतीय तस्कृति में कहा गया है गाय सोतों के साथ प्रमुक्त करों उनका पूर्व काम की मनर उनका क्याल भी रको। उनको समय पर पात सो। उनहों साइय पर पात सो। उनहों साइय मत सारो। प्रारम्त मुनासो।

महाराष्ट्र मे एक चिठोरी धानावस्था का पन मनावा जात है। इस झमावस्या को बैसो को विश्वाम दिया जता है। उनका शुगार किया जाता है स्सानों की स्त्रियों के पैरों के बामूच्या जैस के पैरो में पहनाये जाते हैं और गमे मे माना बाली जाती है। बैलो का जल्स निकाला जाता है। उनके लिए क महाराष्टीय पक्यान्न पूरस्पयोती का नवेख लगाया वाता है। घी की बार छोडी जती है। वैसो का सत्कार किया जाता है। नयो ? इसके पीछे बैलो मौर पसमी के सभयवान की भावना रहती है। जिस देल की गदन पर हमने जुद्रा रक्षा जिसकी गदन पर षट्टे पड गए जो घूप की चड मे काम करते हैं जिन्होने हल चनाया चरस चलाई गाडियाँ कीची क्रोध में प्राकर हमने जिन्हें वाबुक मारे झार चुभाई जिनके परिश्रम से हरे भने होकर हमारे खेत लड लहाने लगे धौर बनाज से लद गए। जिनके परिश्रम सं मोतियों की तरह ज्वार और सोने की तरह गहूपकते हैं जिनके परि बम से जान और मक्का धरहर और चना होता है उस कच्ट मूर्ति वैल को भ्रमय की भावनास परिपूजित कर उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट करने को बहु दिन मनाया जाता 🦫 ।

गायको तो माताके समान पश्चिम और पूज्यमाना गगाहै। घण्य झाविकी रक्षाकी बातवेनों में सवत्र पार्डकाली है।

इस प्रकार वेद का सन कहता है कि
प्रमुक्त पर बाजित रहकर समुख्य को
निमय बनाने का प्रय न करना चाहिए।
यदि धान जीवन से सकला चाहित है
कोर सपनी दवी हुई सवित को प्रजीवित करना चाहते हैं तो कि को प्रजीवित करना चाहते हैं तो कि को प्रजीवित करना चाहते हैं तो कि को प्रजीवित विपित्यों को स्वकार समस्ता खोड वीजिए। उनते विल्कुल प्रभावित हो डोइए। कठिनाइसो से सपनीत न होकर उन्हें इस विट से देकना चाहिए कि उन्हें कैसे दूर किया जा सकता है? फिर पूर्ण निर्मंद्रता के साथ उन्हें इस करने से सम आइए। तमी जीवन समस्त बनेया। एक कवि ने कहा है

> भ । का दामन छोड है, भय से भय बता मान । यह है भिष्या कल्पना जान सके तो जान ॥



५६ वचन-सन्देश ५६

शरीर और आत्मा दोनो बलवान

को केवल घारमा का बल प्रचीत् विद्या ज्ञान बढाये जाये और स्वरीर का बल न बढ़ावें तो एक ही बलवान् सैकडों, ज्ञानी धौर विद्वानों को बोत ,सकता है। धौर घो केवल सारीर ही का बल बढाता जाये घारमा का नहीं तो भी राज्य पानन की जत्म ब्यस्था बना विद्या के कभी नहीं हो सकता। विना व्यवस्था के सब घापस में ही दूट-फूट विरोध लडाई-फ्रगडा करके नष्ट-भ्रष्ट हो जाये। इसलिए सर्वेदा शरीर भीर भात्मा के बल को बढाते रहना चाहिए।

सेंसा बल भीर बुढि का नाशक व्यक्तिचार भीर श्रांत विषया-संतत है वेसा भीर कोई नहीं हैं। विशेषत जिल्ला को ब्हाङ्ग भीर बलपुक्त होना चाहिए। क्योंकि जब वे ही,विषयासक्त होंगे तो राज्य-वर्म ही नष्ट हो जायेगा। —महाब बयानव

सम्पादकीय--

व्योम को छूता व्यक्तित्व

कई सदियों की गुलामी के बाद जैसे ही भारतवर्ष स्वाधीन हुआ नयी उमगों, नये उत्साह, नवीन क्रान्ति की लहरों को लेकर उन्नत होता चला गया। जिस देश में स्वदेशी सुई नही बनती हो भीर उसा देश में स्वदेशी उपग्रह, स्वदेशी परमाणु ऊर्जा केन्द्र, वडे-बडे उद्योग कल कारखाने धनाज उत्पादन मे धारमनिर्भरता. यातायात भार परिवहन में सलग्न, सम्पूर्ण गाडिया भारतीय हो, टेक, तोप, रेलगाडी, वायुपान, जलयान स्वनिर्मित हो, कई बार जो भारत सीमा पर मडराते बतरो-भाक्रमणों का मुंह तोड जवाब देकर समस्त विस्व को चौका चुका हो, उस गुवा भारतवर्ष को जवान भौर सबल होते देख दूसरी ईर्ष्यालु शक्तिया क्या चुप बैठ सकेगी? जी नहीं। वे इंध्यामे देख शक्तिया भारतवर्षके स्विप्तिल महलको घराशायी करन मे जुटी थी भौर जुटी हैं। ३१ सक्तूबर १६८४ को देशद्रोहियों की गोलियो स भारत माँका लाडली विषव की नेत्रो प्रियदर्शिनी छलनी कर दी गयी। दिशामी में खुन के साथ आतक फैल गया। लगा भारत के स्वप्निल महल को नीव लंडखडा गयी। हर दिल चीखता-कराहना दिलाई पडा। ऐसा जान पडा जसे भारत से उसकी गंगोली छीन ली गई और सारी दुनिया में कोई दूसरी गगोत्री भी नहीं। जो कही से लाकर स्थापित को जा सके। इताश-निराश सतप्त लोगों को ग्रालों मे कोप को चिन्गारिया फूटने लगा। हिसा का ज्वालामुझों फूट पडा। दिल्लो के साथ दूसरे शहरो-प्रातो में मा हिसक प्रतिक्रियाएँ हुई जो बहो हा दुर्भाग्यपूर्ण यो । खाज भीर बीखलाहट भरे वातावरण में श्री राजाव गांचा भारत के प्रधानमन्त्रा बने। दिल्नी में खुँगा उठ रहा था। घर म माँ का प्रथा था, बाहर बाक्रांश से मरो भीड थो। ऐसे में उन जवान कन्धो ने एक से अर्थी उठाई दूसरे से देश को जिम्मेदारी। उसका होसला, उसकी हिम्मत कमजोर नहीं पडी। देश की ग्रांबों ने अपने भासू पोछे। चीरे-चारे देश की उसहतो सासे अविरत हो गयी। एकाएक निर्वाचन की घोषणा हुई। देश की एकता और असण्डता की धपील करते युवा प्रधानमन्त्री को भारत की जनता ने इतने बहमत से चुना जो एक एतिहासिक भाष्ट्ययं बन गया।

भारतीय राजनीति में धनेक वर्षों के बाद बदलाव के स्वष्ट लक्षण दिखाई देने जरी। निर्वाचन के बाद बदता में भारते ही उन्होंने धोषणा कर दी कि वे पजाब समस्या को हल करने के निए हुन समय प्रयत्न करने । दिल्ली तथा दूखरे स्थानो पर दूर्गिकस्टर बम काण्ड के बाद दहुसत भरे बाताबरण में प्रधानमन्त्री का पूर्व निर्धारित विदेश यात्रा का कार्यक्रम जीखिम भरा होने से साम राय थी कि उन्हें विदेश यात्रा पर नही जाना चाहिए किन्तु सतरों से खेलने बाला मह युवा विदेशों में भारतीय संस्कृति, खपनी मान्यता एव विचारों के अध्ये फहराकर साया जो झरथन गरिमामय था।

संसद के मानसून सन के शुरू होने वासे दिन पजाब पर सम-फ़ौता अवानक संत लोंगोवाल के साथ कर लिया गया जिस पर उन्हें वेशव्यापी समर्बन मिला। १४ अगस्त को लालकिले के प्राचीच से आवणा देने से चार चच्टे पूर्व ससम समस्या का समफ़ीता को कर लिया गया। उस रात प्रधानमन्त्री सोमें नहीं। सुबह पौने तीन बचे बहुगुन की बाटी के लोगों के लिए उन्होंने मये प्रभात की तथा स्त्राधीनता दिवस की अनुपम भेट दी। १७ प्रगस्त को जब पजाब में हुसँनपुर में रेलवे कीच फंक्टरी का प्रधानमन्त्री ने शिलान्यास किया तो पजाब में चुनाव कराने की घोषणा कर दी गयी। इसके साथ चुनाव का मार्ग प्रधास्त करने में भी उन्होंने कई एक कदम उठाये। निरपराध और दिसिन्न प्रपराधों में पकड़े गये लोगों की रिहाई भी प्रनायास कर दी गई और धव तक लगमग २००० लोग निहा किये जा चुके हैं।

जिन किसानों ने बिजली के बिल ग्रदा नहीं किये थे उनके कनेक्शन न काटे जाने का फैसला किया गया। महाराजा र एजीत सिंह की बरसी भी सरकारी स्तर पर मनाई गई। सैनिक भगोडों की बहाली के आदेश किये गये। लगभग ६०० ऐसे भगोडों को काम पर लगा दिया गया।

कहने का मतलब यह है कि काफी हद तक उदार होकर भी
उन्होंने समस्याम्रों को सुककाया। प्रवानमन्त्री इसके लिए बधाई के
यात्र हैं। उन्होंने लार्लाकते के प्राचीर से राष्ट्र को सम्बोधित करते
हुए कहा पा कि सिर्फ दस माह पूर्व विदेशों में पूछा जा रहा था कि क्या
भारत की एकता और स्रितत्व कायम रहेगा ? उन्होंने कहा था—
भारत की म्राने कपर विद्यास है और हम किसी में दवाब के साम्य चुटने नहीं टेकने वाले हैं। श्री राजीव गांधी की वाली में नये भारत की म्रासार्य, म्राकासार्य और म्रास्मविद्यास मुलरित हो रहा है।
प्रवाद भीर मतम की समस्यामों के हन भीर गुजरान में भारलाण विरोधी मादोलन को म्राग बुक्ती जाने के बाद मासा और विद्यास की नई किरले पिराले दिशाई वे रही हैं।

लेकिन इसका यह मतलब नही है कि धव देश के सामने कोई समस्या नहीं रह गई है जो लोग साम्प्रदायिकता, जातिवाद, क्षेत्रवाद जैसी जहरीली भावनाओं को उभार कर देश में गडबंड फैनाते रहे हैं उन्हें इस जाद के डण्डे से आकाश में विलीन नहीं किया जा सकता। वे भाज भी मौजद हैं। कल वो फिर सिर उठा सकते हैं। पजाब भीर ग्रसम विधानसमार्थों के चुनाव का ग्रायोजन और संघर्ष से अन ग्राहत इन दोनों राज्यो मे बदि लोकप्रिय सरकारो की स्थापना हो गई तो यह भारतीय लोकतन्त्र की बडी भारी जीत मानी जाएगी। देश की एकता भीर मसण्डता को चुनौती देने वाली ताकतो के गाल पर यह एक करारा जोरदार घूसा होगा भीर इसकी इन समय आवश्यकता भा है। श्रींलका मे तमिलों को समस्या भी भारत के प्रधानमन्त्री के लिए चुनौती है। हमें ग्राशा भी है इसी सद्भाव के साथ वे इस समस्या को भी अवस्य सुनमा सकेंगे। अब तक के तच्यों से यह प्रमाणित है हमारे युवा प्रधानमन्त्री में दूसरे को समभने की ग्रीर उन्हें ग्रानी बात सम-भाने की भद्गुत अन्नता है। भनावस्यक मानापमान की भावना में विश्वास रखने की बजाय शान्ति और सीहार्द के वातावरण मे सम-स्याओं का समाधान निकालने मे विश्वास रसते हैं। इसके लिए उनकी जितनी भी प्रशसा की जाये थोडी है।

--- यशपाल सुषांशु

भाव भौतिकता की भार विवेती सर्वभाषी हवा ने हमारे जीवनी की इतना विवेला और विकृत कर दिया है कि प्रथम तो सम्भवत कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं दील पहला, जो इससे प्रभावित न हुआ हो दूसरे इससे प्रभावित व्यक्ति कुछ ऐसे नास्तिक और स्वार्थान्य हो वए हैं कि मानो जैसे उन्होंने घपनी घन्यायपूर्ण स्वार्ष विधि हेतु देश, राष्ट्र और समाज के बहुमूक्य हिलो की होजी ही कर दी हो। ऐसे ही दूराचारी, दुव्यवृत्तिपूर्ण वावाचारी सोन कागज के कुछ ट्कडों के बदले देश भौर राष्ट्र के बहुमूल्य रहस्यों को विदे-वियो के हाथों देवने में लेशमात्र भी नहीं मजाते । बढ बढे सरकारी और वैर सरकारी प्रविकारी लोग गरीको के लिए सिर खिपाने के लिए मकान निर्माण कार्य वे जुने बिना बुनियाद घषदा कमजोर बुनियाद वाले मकान और उनके निर्माण में निम्न क्षेत्री की निर्माण सामग्री का प्रयोग करके लोगों के जान लेवा नकान बनाने से बरा भी उस नीली खत्री वाले सक्तिशानी भगवान से नहीं डरते।

बायुयन्त्रो में नेलगाडियों में, बसी मे कारो ग्रीर ग्रन्थ सार्वजनिक स्थानो पर जान लेवा बम रखकर धर्म के न म पर सहस्रो बेगुनाह भाषाल बृद्ध बच्चे जवान स्त्री पुरुषो की जान लेने में जराभी नहीं सकोच करते दलित, ग्रह्पसल्यक लोगो की मार्विक तथा सामाजिक दशा सुधारने के नाम पर उनसे निवाचन के समय मत प्राप्त करन हेतु कारक्षण की नीति का सहारालेकर ग्रयोग्य लोगो को पदो पर स्थापित करकेन केवल बोग्य व्यक्तियो का गलाघोटाचा रहा है बल्कि सर-कारी सेवाओं में सयोग्य समवा कम श्रयोग्य व्यक्तियों को नियुक्त करके देश भीर राष्ट्र का बहुत महित कर रहे हैं भीर गम जाति पानि पर बाबारित कार-क्षण के नाम पर अयोग्यो की पदील्नति करना धीर भी बन्यायपूरा व्यवहार है इसी दूपित नीति के फलस्वरूप जो नर-सहार माज महर्षि दयानन्द भीर राष्ट्र पिता महात्मा गांधी की जनमभूमि गुजरात मे हो रहा है, वह किसी सं खुपा नही है। इसी दूषित वातावरण से प्रमावित सभी वर्गी के लोगों न धाचार के मूल्यों को धपने जीवन में से इसे तुच्छ और सारहीन बस्तु सममन्तर ऐसे बाहर फैक दिया है मानो जैसे कोई दूष में से मक्सी निकाल कर फेक दे। देखने मे भाता है कि जीवन का कोई भी तो क्षत्र ऐसा नही रहा, बाहे वह सामाजिक हो या राजनीतिक, वार्मिक हो वाधस्य कोई भीर जा नम दूषित वृक्ति से प्रमावित न हुआ हो। वह एक महान विग्ताका विषय है राष्ट्र घीर समाज के लिए। घत ऐसी स्थिति मे सुधार लान के लिए और सोगो के विचारो मे परिवतन लाने के हतू यहा किन्ही पुक्वो शास्त्रो भौर स्मृतियो के भावार सम्बन्धी कुछ बहुमूल्य धमृत वचन दिवे

देश की वर्तमान पतनोन्मुखी स्थिति में आचार पालन

अत्यन्त आवश्यक

--चमनलाल

वा रहे हैं जिनको बीनन में धारण करने से लोग न केवल धारना सुवार कर पार्यमें, प्रपितु वह राष्ट्र, केव धीर समाव के निर्मक बीनन में सुवार की के बाणी करेंचे। ऐसे ही सुवार की बाज सस्वन्त धावस्थकता।

> साचारास्त्रभते सामुरा-चारास्त्रभते शिवम्, साचारास्त्रभते कीर्ति पुरुष प्रेरम चेह् च। सर्वेजजगहीनोऽपि य सराचारा न् भवेत्, सर्वेजानेजन्यस्य सत वर्षाण प्रीवर्ति ॥

सर्थांतृ सवाचार पावन करने बाले को सायु तथा कांग्लि की प्राप्ति होती है। स्वाचारी इहुनोक एव परलोक मे कीर्ति को प्राप्त करता है। यदि कोई विशेष गूण न भी हो परन्तु असुबारहित सगव-दीय विश्वान पर पूर्ण कदा बाला है, खरा-चारी है तो ऐहा व्यक्ति शत वय जीवी होता है।

> न स्वे मुखे वै कुरुत प्रहर्ष, नाम्यस्य दुखे भवति प्रहरूट । दत्त्वा न परुषान कुरुतेऽनुवाप, म कष्यते सम्पुरुषार्पशीस ॥

प्रयात जो प्रपने सुझ मे प्रसन्न नहीं होता, दूसरों के दुझ के समय हवें नहीं करता तथा भे वान वेकर पछराता नहीं, बह सस्युरुषायंसीन प्रवांत स्वाभारी कह-साता है।

पाप्मान हा व हन्ति यो गवते।

धर्मात यज्ञ करने वासा पाप का नाश करता है।

> सर्वस्मात् पाप्मनो निर्मुज्यते । य एव विद्वानन्निहोत्र जुहोति ॥

भ्रमित भ्रमिनहोत्रयज्ञ करने वासा व्यक्ति पापो से मुक्त हो जाता है।

> धानारनान् सदा पूती सदैशाचारनान् सुसी। धानारनान् सदा नन्य सत्य सत्य च नारद॥ धर्मत् धानारनान् मनुष्य सदा

पवित्र रहता है, सुसी रहता है भीर थन भी प्राप्त कर लेता है भीर सचमुच बहु बन बन्ध हो जाता है।

> इड्ड चेदवेदीयम सत्यमस्ति । त चेदिहावेदीत्महती दिनष्टि ॥

सर्थात् यथि इस सनुष्य जीवन में परवहा को जान जिया तब तो कुशक है, किन्तु यदि इस बीवन के रहते रहते स्राक्तस्य प्रभाव के कारता उसे नहीं जाना तो महान बिनासा है।

समेध्यो वै पुचयो बदनृत वदति।

सर्यात मूठ बोसने वासा व्यक्ति सपवित्र कहलाता है।

> नित्य सरय रिवर्यस्य पुण्यास्या युष्कृता बन्नेत् । कर्ता प्रारते वनेत्यासी स्थीयां योवनिवर्णिता ॥ स्वकुसस्य स्वापार कराणि नो नियुज्यति । एतसे हि समास्यात ग्रहस्थस्य द्विजोत्तस ॥ सहायस्य प्रया प्रोक्त ग्रहस्थस्य क्रिया प्रोक्त

(चुमना बपने पति से कहती है)— बाह्यए। बेच्ठ ! सदा सत्य कर्मों ने विसका सनुराग हैं, वो पुष्पात्मा होकर साबु-शीसता का साबय नेता है, ऋतुकाल से सपनी ही स्वी के साथ समत होता है, वह स्वय दोषों से दूर पहता है सोर सपने वह स्वय दोषों से दूर पहता है सोर सपने हुत के सदाबार का कभी त्यान नहीं करता, समभुव नहीं सच्चा सदाबारी है। यहीं ग्रहस्य का बहुत्वयं है। स्रोप नहीं नहावयं ग्रहस्यों को सदा भूतित प्रवान करने वाला है।

> दुराचाररतो कोके नहंचीय पुनान् भवेत । न्याचिमिश्याचि सूरते सवाल्पायु सुदु समाक्।।

धर्मात सवाचार के पालन न कः ने से मानव विन्यमामी, रोगी दुखी धीर अल्पायुही जाता है।

> सवाचारेण सिख्येच्य ऐहिकामुध्यक सुसम ।

सर्वात् सदावार से इस लोक तथा परलोक के समस्त सुक्त सिद्ध हो जाते हैं।

> सवाचारेण देवत्वमृत्रित्व च तथा लगेत।

सर्वीत् सदाचार से समुख्य देवस्य भीर बहारव को प्राप्त करके महान् वस बाता है।

> क्रोच कामो लोममोही श्रसन्तोष विधिवासा, मानगोकी धकपासरे • स्प्रहा ईच्या जुगुप्सा च मनुष्य शोषा , वज्या द्वारशैते नराणाम ।। एकैक पर्युपास्ते ह मनुष्यान मनुजर्वम । लिप्समानोऽन्तर तपा मृगाणामिक लुब्धक ॥

ध्यति काम, क्रीय, लोझ मोह ध्यतीय निर्वयता ध्रतूचा प्रतिमान बीक, स्पृता, रैप्यां भीर निन्दा 'मनुष्यो मे पाये जाने वाले ये बारह दोय सदा ही स्थापने घोष्य हैं। नरभेष्ठ जैसे ब्याध मृषो को मारने का ध्यत्तर देखता हुआ धनकी राह मे लगा रहता है जदी प्रकार हम में से एक एक दोय मनुष्य का खिद्र देखकर उद्यपर धाकमए कर देता है।

धैयं की महिमा

को पुतीबत में नहीं घवडाते वे सफलता के शिलर पर घड आते दुष्टों का विनास कर दम नेते राम कृष्णा नाची कहकाते काति के बीन कोते दयानन्द बुद्ध सम्मानीर वन जाते देश को सहान् बनाते विकसारित्य इण्डिएरा सम्म हो नाते वंदें से सहान् कार्य होते उन्नोदे रहित व्यक्तिय वकार हो नाते

वे उठा रहे है कदम आत्मघाती

को रात दिन केवल पैसा कमाये हैं
पैते के बस पर सपनी सकब दिवाते हैं
पैते को सपना बेवता उहराते हैं
पैते को सपना बेवता उहराते हैं
ऐसे सप्तरीतों कोन सप्तरा खुल मिलता है
ऐसे सप्तरीतों कोन सप्तरा खुल मिलता है
सर्वेत बिल्ता में उनका सपीर चुलता है
सम्बद्ध प्रमान के स्वतर्भ स्वतर्भ हो
सोबन प्याने में मुझेबर सबी हो जाती है
को ऐसे जीवन के हैं समिलापी
के उठा एहे हैं कदम सारमाती

—शकुनचन्द मुप्त विशारद



स्वामी दयानन्द-एक संन्यासी योद्धा

लेखक-श्री मदनगोपाल

११५० के मध्य मे जब प्रथम स्वत-त्रता संग्राम की शताब्दी मनाये जाने की बोजना बन रही थी, उस समय एक वैधिक विद्वान ने १८५७ के गदर से सम्बन्धित लेखों का ध्रध्ययन करके यह निष्कर्ष निकासा कि महर्षि दयानम्य सर-स्वती (१८२१-८३) ने इस १८६७ के प्रवस स्वतन्त्रता सम्राम मे बढ़ा ही सक्रिय बोगदान दिया था। इन विद्वान् का नाम 🖁 — स्वामी वेदानन्द सरस्वती, जिन्होने १९४४ में स्वामी विरजानन्य की जीवनी लिसी । इसमे उन्होने कहा है, कि १८५५ में स्वामी पूर्णातन्द ने महर्षि दयानन्द की वासिक कार्यों की प्रेरला देने के साथ साथ यह परामर्श दिया या कि वह मयुरा में प्रकाबक्ष स्वामी विरजानम्द जी महा-राज से मिले। स्वामी दयानन्द ने मधुरा जाने के बजाय मध्य भारत में भ्रमण करना प्रारम्भ कर दिया। यह वही स्थान थे बहा पर बाद में ब्रिटिश राज्य 🕏 विरुद्ध विद्रोह हुमा । स्वामी वेदानन्द ने लिला है कि यह विचारचारा समबत झोगो को सही न सने, पर इसको एकदम यसत भी नहीं कहा जा सकता।

महर्षि वयानन्व सरस्वती ने स्वत-न्त्रता सम्राम ने सक्रिय भाग लिया था श्रयवानही, यह प्रायंसमाज के क्षेत्र मे विवाद का विषय है। इस विषय पर कुछ पुस्तकों भी प्रकाशित हुई हैं। कुछ सीन इस विचारबारा का विरोध करते हैं कि क्वामी बयानस्य ने स्वतन्त्रता सम्राम मे भाग लिया था, जब कि कुछ दूसरे इस विचारधारा का पूर्णतवा समर्थन करते हैं। को लोग यह कहते हैं कि स्वामी दया-नन्द ने इस सम्राम में भाग नहीं लिया या **चनकी बजीस यह है कि १८७० तक दमानद** केवल वामिक कार्यों से सम्बन्धित रहे धीर उन्होंने स्वय को शावनीति से दूर रला। इस विचारवारा को इस बाबार पर सही नहीं मानाजा सकता कि उस समय स्वामी दयानन्द की बायू ३२ वर्ष थी। और यह एक ऐसी प्रायु है जब व्यक्तिकी मावनाष्ट्र और विचारकारा विद्रोहात्मक होती है। भीर ऐसे मामको में सिक्रिय मान लेने की व्यक्ति की दिन होती है। यह बात एक और तस्य से सिद्ध हो जाती हैं, कि बाद के बर्वों से महर्षि बयानन्य ने स्ववेशी राज्य भीर स्वराज्य की बात को प्रचारित किया है। छन्द्रोने

नमक कर का भी विरोध किया था।
उन्होंने राष्ट्रीय माना की बात कही थी,
रुप्होंने रुनी पिला पर बन दिया तथा
सस्पुस्ता का विरोध किया। इनसे यह
स्पष्ट है कि असे ही वह वामिक नेता से
पर यह राजनीति से सम्मुख्त नहीं थे।
स्पुत्त तथा स्पुत्त नहीं थे।
स्पुत्त विवास्तारा ने बाद मे चक्कर
महात्या वायों के लिए भी दिशानियंशन
का वार्य किया। उस समय विदेशी राज्य
का विरोध हो रहा या घोर दवानम्थ जैसा
स्मित इस विवास सारे समामित
नहीं यह सका।

महींप वयानन्द के प्रारम्भिक जीवन सम्बन्धी हमारा प्रान उनके उस भाषण पर प्राथास्ति है, जो उन्होंने १८७५ में पूना में विया था और बाद में घन्य १४ भाषाों सहित नराठी में खुपा था।

महर्षि स्थानन्त ने प्रकृती शीवनी के सम्बन्धित है तह हिन्दी में तिस्त्रस्य थे। हम तेसी के तिस्त्रस्य थे। हम तेसी के तिरू १-५८ में विज्ञोद्दो-फिस्ट सोसायटी के सम्बन्ध कर्मा एक एस प्रकृत सम्बन्ध ने प्रमृतित किय गये की सामायटी के सम्बन्ध करी हम गये के सम्बन्ध करी हम गये के सम्बन्ध करी हम गये हम ति सम्बन्ध करी हम गये हम ति सम्बन्ध कर्मा हम ति समाय हम त

बह कहा जाता है कि महिंद दयानन्य समें स ८६६ से कामून होंगे से वेदे परे। वह जातन्य के निकट को में ने वेदे परे। वह जातन्य के निकट को में ने वेदे परे। वह जातन्य है निकट को में ने वेदे परे। वह जातन्य है दिए तमें है की सार्च रेड, रेड, की नगम्म रेड, की निर्म रेड, की

चन्नीस वर्ष पश्चात् स्वामी वेदानद सरस्वती ने अपनी पुस्तक का दूतरा

सशोधित एव प्ररिवधित सस्करण प्रका-शित कराया। इसमे उन्होने श्री मीर-मुश्लाक के फारसी में लिखे हुए सवलाप पवायत के निशायों को परिशिष्ट के रूप में विया। इममें उन्होंने यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि स्वामी जी स्वत-वतासयाम में सिकिय रूप से भाग ले रहे थे। सर्वेकाय प्रचायत का मूख्य कार्यालय सौरम मुजपपरनगर मे था। इस पनायत में मधुरा से प्रज्ञाचक्षुस्वामी विरजानद को भी बुबाया गया था। उन्होने चुने हुए जोगो की इस बैठक मे राष्ट्रीय स्वत-वता कैसे प्राप्त करें, इस विषय पर परा-मर्खंदियाचा। लगभग इसी समय सत्य-प्रिय चास्त्रीकी "भारतीय स्वतन्त्रता के सम्राम में भागसमाज का योगवान' प्रका-शित हुई वी। इसम भी उन्होने दयानन्द के योगदान की बात लिखी है। भी पिण्डी दास ज्ञानी ने भी "१८५७ के स्वतन्त्रता सप्राम में स्वराण्य प्रवर्तक महर्षि दयानन्द का क्रियात्मक योगदान' प्रकाशित करायां।

१६७० मे पण्डित सीनवन्तु का "योगी का झारावर्षित" — ६- वर्षों का सकता जीवन प्रकाशित हुछ।। इसमें यह बावा किया गया है कि महर्षि द्यानन्द ने १-६५० के गुढ़ में भाग लिया था, यह महर्षि द्यानन्द के उन शासावरितासक दिव्यक्तियों के सम्बद्धिय द्यानन्द के उन शासावरितासक के सम्बद्धिय द्यानन्द के जन शासावरितासक के सम्बद्धिय प्रवास है जो जन्होंने सपने दर्जने प्रशासक के समय लिखाई थी। उन्होंने पह भी कहा या कि यह वह उनके श्रीवनकाल में प्रवास कि यह वह उनके श्रीवनकाल में प्रवास की स्वास है कि उन्होंने इन स्व टिप्पण्यियों को सोव निकाला है।

इस विवरण के मनुसार १ ८५% में स्थानन में माजण्ड साह से हरिद्वार के सिए सपनी बाजा प्रारम्म की । वे मजमेर, स्वयुर, दिस्सी, मेरठ होते हुए गए। वह सहा भी कही ठहरे बाजार में, यमंगाला में, स्मान बाट पर सबका महिर में उन्होंने सब बमह वही पाया कि लोग यह कर रहे के कि सबेज भारतवर्ष को राहु धीर केंद्र की तरह यह रहे हैं। दिस्सी में एक मुवाने बाजुबी पर कटाल करने हुए कहा कि यह सोम पारत की रखा को देखा एम से क्वा सब्बें भी सब सी र सब्बें एम नक्वन सब्बें भीवन सीर सब्बें एम-सहन में ही किय स्वारे हैं। यमन्य

को बदम पतालगाकि वहयू नाब्यक्त डायरस के जिमीदार दयाराम का पौत्र या, जो अग्रेजो के विषय लड़ाई में मारा गया वा भौर जो ज्ञान्तिकारी राजा महेन्द्र सिंह का पूर्वज या। दिल्ली में लालकिला के सामने एक महाराष्ट्रियन साधु ने दया-नन्द को सलाइ दी कि वह हरिद्वार मे खाकर ग्रपने ग्रापको पवित्र करेतथा देश की रक्षा के लिए कार्य करे। उस साध् ने बताया कि वह भी उन सैकडो साधुम्री मे से एक है जो इसी उद्देश्य को लेकर सारे देश में घ्म रहे है। बाद में २५० साधु दिल्ली से मेरठ, बैरकपुर मौर वैजूर की भीर गये। इन सब गतिविधियों के सिए केन्द्रीय व्यक्ति दिल्ली के जीवमाया मदिर का एक पूजारी त्रिश्ल बाबा था। यह साधु धपने हाथ ने कमल का प्रतीक लेकर चल रहे थे भीर साधारण लोगो के बीच में रोटिया लेकर चलते थे। इस विद्रोह के लिए मई ३१ निश्चित की गयी बी पर दुर्भाग्यवश मगलपाण्डे ने समय से पूर्व २१ मार्च को भ्रपनी कार्यवाहिया प्रारम्भ कर दी थी।

जपर्युंबत टिप्पिएयो से यह भी पता लगता है कि वैच्याव लोगों ने इस कार्य में सायुगों के सहयोग का वि.शह किया था। उनका कहना था कि मदिर वैदनाओं के क्ष्मा है। यहाँ पर केवल देवताओं के प्रमाहों ने चाहिए। किसी देश समाज स्रवा राष्ट्र की नहीं।

पून हरिद्वार मे दयानन्द ऐसे लोगो के सम्पर्क मे आये जिल्होने १०४७ के सग्राम में महत्त्वपूरा भूमिका निभाई थी। बाद में हार के पन्चात् बुछ नेनाओं ने नेपाल मे शरए। लेने का प्रयास किया था, जहाँ उनको शरण नहीं मिल सकी थी। दयानन्व चनुप काटि, कन्याकुमारी ग्रीर रामस्वर भी गये। जह वह साधुमी के एक एसे वर्गस मिन, जिनका कहना या कि वह दि~ली के जोगमाया मदिर से भाषे है। दयानन्द ने उनमे से एक को पहचान मो लिया था। यह नाना साहब थे। दयानन्द के कहने पर उसने सन्यासः लिया भीर स्वामी दिव्यानद वनकर दया-नन्द के राज्य मीरी में गये जहा पर वह मृत्युपर्यन्त एक धनी व्यक्ति के साथ वेश बदलकर रहे। उनकी स्मृति मे एक बहुत वडास्मारक बनाया गया जिसके लिए बिठ्र के मदिर से धन प्राप्त हुआ

धीनबस्यु का कहना है कि बनाली भागा से प्र प्ल टिप्पणियों को पहुल प्रका-दिल नहीं किया जा सकता था घोर उन्हें हैदन्द में दयानन्द की सुर्यु के पर्वशत् भी हनको प्रकाशित नहीं किया जा सका क्योंकि सभी लेखक बहुसमान्त्री थे घोर वह सभी दयानन्द से द्वेप रखते थे। यह बात उन्हें व्यानन्द के बहुत-

(क्षेत्र पृष्ठ १ पर)



उपनिषत् कथा माला-१५

दुःख और सुख

लेखक-स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती

एक रलोक यह है---निर्मानमोहः जितसगदीवा घच्यात्मनित्या निवृत्तकामा । ह हविमुक्ता सुसबु ससर्त-नंच्छन्त्यमूडा पदमध्यय तत ॥

ससार में दुख के कारए। हैं मान ब्रीर मोह[।] इस मान बीर मोह से जो दूर ह वह है जिमानमोहा। निगती मान मोही येपा ते निर्मानमोहा । मोह क्या है भीर मान क्या है ? ससार की वस्तुओं में दिल की सज्ञानपूर्वक फैंसावर का नाम है मोह। मोहुदुस काकारगुहै पर जिस मनुष्य के दिल की फैसावट ससार की किसी वस्तुमे ज्ञानप्वक है उसका नाम प्रम ⁵। यह (प्रम) सखका काररण है।

दो लडके थे। उनका धापस में प्रेम हो गया। व काले ज मे पढते थे। एक धनल सदयातो दूसराभी चनुर नकिन थोडा प्रहिमल या। यह मोजबाटर पीता था नान्यासहो यान हो। एक दिन उसने श्रपने दूसरे मित्र से बफ का पानी पीने का बाग्रह किया। उसने कहा अपन व्यास लग्गी तब पानी पीवगे। कोई द्यानमी पुने से स्रयाही झीर पवराया हुआ हो उसका उस वक्त ठण्डापानी पीने पर जो झाल झाता है बल्शन द इसीर प्यास क ५ न वा का न न द्राला। में ग्रणनी ।तक न्यान कि जब मै **गाडी** संचल प्राप्ताधानामभ्यासलगी। भूमीक्स टनर्गान नहा मिलात तक भराध्यम स्वतीरही। मैं कम इल स्वकी स वान्रिः निकाले या जैपूर मे एक ब्रादमी ने वह मने वहा बापको पान च हुए भाई ' ५ हटण्डा धाना ले द्याया चसकी तारीप ने ना। दल्वासियो की बादन वर हो गई कि व प्यास क विनाही नाग्रीर बरफका व्यवहार करने लगे ह। महनत करने क पीछ धाराम कितना ग्रन्छ। सुस्व का देने वाला है यह हमे तव भालूम होगा जब हम मेहनत कर। इसी प्रकार तूब प्यास लगने पर ही ठणो पानी का धान द बासकता

सुकरात जैसे भादमी भी दुनिया मे हुए हैं। उससे कमा किसी ने पूछा कि क्या साप कभी ठण्या पानो पीत है? उस ने कहा जिस समय मुक्ते प्यास भज्छी लग जाती है उस समय पानी पीता ह। किसी ने कहा कि हम तुम्हारे साने में कभी घटनी नहीं देखते हैं। उसने कहा, जब

ख्व भूक समती है उसी समय मैं बाता ह चाहे वह दाल हो या चटनी हो या धौर कोई जाने की चीज हो। जब भूख या प्यास नहीं भगती है तब न तो कुछ बाता हैं भीर न पीवा है।

प्राचीन धार्यों ने बोजन को तीन मागो मे बांटा है (१ हित (२) मित (३) ऋतः। हमे भोजन कैसा करना चाहिए ? हिन सर्वात् हिसकारी ऐसा भोजन जो शरीर को फायदा पहुँचावे भौर दूसरा मित सर्वात परिमिक्त भोजन करे भूख से ज्यादा नहीं सावे भीर र्तसरा ऋत यानी समयानुकूल कोचन करे। यह तो हुई प्राचीन ग्रायों की वासा। बाजकल तो ऐसा है कि बाह्यए। लोग जब किसी दावत भीर भोज में सम्मिश्नत होते हैं तो पहले आय पी लेते हैं ताकि तीन चार लण्डु ज्यादा सार्वे। आतने के वक्त तो वेज्यादा साजाते हैं परपीछे, तक लीफ उठाते हैं। इस वास्ते वह लहका जो सोडाबाटर पीसा वा रोजसिनेमा भी देखताथा। पर दूसरा जो न तो सोरा वाटर या सिगरेट ही पीता वा न सिनेमा काही शौकीन वा उससे उसके मित्र ने पूछा मित्र कभी सिनेमामे भी नहीं जाते भीर न सोडाबाटर ही पीते हो ? उसने कहा ठीक है कोई बात नहा। मैं कभी-कभी जब जरूरत होती है तब सोडावाटर भी पीलेटा न भीर सिनेमा भी देख लेता ह पर तुम्हारी तरह हमेशा नहीं। तुम्हारी तो भादत ही ऐसी हो गई है। घण्छातुम मुके सिनेमाम धाज क्यो ल जाने हो [?] उसन उत्तर दिया तुम हमारे मित्र हो सिनेमा मे जाफोगे तो हम तुम बराबर हो आवेंगे। उसने कड़ा कि विद तुम नहीं ले जामोगे तो भी तो हम तुम दोनो बराबर ही रहेगे। श्रास्तिर वही हुमा वह सिनेमा नहीं गया । बहुत से निकम्मे जरको को बहुत से बुद्धिमान लडके भएनी बुद्धिमानी से प्रभावित करके प्रपनी तरफ बाक्षित कर लेते हैं। इसी प्रकार एक भीर उदाहरण सीजिये--

एक बादमी वा पहले के लोग बब्दी पहना करते वे पर धाजकल के लोग नही पहिनते उस आयमी के एक कोई मित्र था । उस बादमी ने बपने मित्र से कहा तुम हमारे मित्र हो, इस समय मुने एक भव्**ठीकी जरूरत है।** तुम हमे दो । हम तुमको बाद करेंगे। उसने कहा क्या याव करोगे[?] उसने उत्तर दिया याद करेंगे कि देखी हमारे एक मित्र वे, उन्हें

हमने तीन-बार दिव के किए एक प्रयुक्ती मानी बी सो उन्होंने दी। उसने बच्चर दिया, मैं बो तुम्हें धव्ठी नही बूंबा दम भी बाब रह बाऊँगा कि मेरे मॉबने पर त्री सिच वे मुक्ते सबूठी नहीं थी। इस वास्ते बोह बो है यह दू स का कारण है। बनुष्य का प्रेय ज्ञान-पूर्वक होना चाहिए। सज्ञान पूर्वक दिन की सतन का नाम मोह याज्ञान पूरक दिल की लवन का नाम प्रेम है। यह हुई द्वन्द्व की चर्चा।

म।न क्या है ? धन्त करण की प्रवृत्ति को गान कहते हैं धर्यात आग्तरिक दिन की फ्लाबट को होती है उसका नाम मान है और मान और मोह जो हैं वे दोनों ही दुवाके कारण हैं। इन दोनों से मुक्त डोने पर ही इस निर्मानमोहा हो सकते

घब धारे है जितसगदीया जिसने समदोष को बीत लिया है । सग दोष बहत बुरी चीज है। इसको बाग भी स्वीकार करेंगे इससे बहत से इसरे अवगुण पैदा हो जाते हैं। जैसे गीता मे कहा है---

त्रोषाद्भवति सम्मोह

सम्मोहात्समृतिविभ्रम ॥

कामात्कोषोऽभिजायते ।

जैसे सम में बैठ जावोगे वैसे श्री विचार हो जावेंग । सोहबत का प्रसर धवन्य हो बावेगा । लेकिन इस सम का श्रसर किस पर होग जो मान भीर मोह को जीत कर निर्मानमोहा हो गये हैं उन पर इस सगदीय का अखर नही होता। वे जितसगदोषा कष्टुलाते हैं। वदापत्रमिवा म्भसा' कमल के पत्र की तरह जो जल के बीच मे रहता है और वस हो में वृद्धि को प्राप्त होता है। परन्तु वह उसके दोष से बचित रहता है क्यों कि उसमें सबदोव नहीं है पानी की बूद प्रगर उसके ऊपर पड आने तो भी वह पत्ता गीला नही होता है वह बूद मोती की तरह बोस बन कर पर्से पर इबर उचर हिसती रहती है, पर उसके ऊपर कोई झसर नहीं होता परम्यु वदि किसी पीपस या बढ़ के बुक्त के पत्तें पर पानी की बूद विरक्षावे तो वह पत्ता गीला हो बाता है। ये दोव "निर्मानमोहा वें नहीं हो सकते।

श्च शब्बास्मनित्याविनिवृत्तकामा

बात्मविन्तन में बात्मविचार वे बाप कहें कि किस तरह से रहा नाता है।

जिसके लिए यह सब चीज हैं, वह कैसा है। भगर इसका पता लग जावे ती फिर किसी को कोई दूस न रहे।

एक बनत का चिक है कि प्रजाब के एक वांव में एक घावयी मिट्टी (सी ने भी मिट्री) सोदने गवा। पहला फावडा बार कर इस मिट्टी उसने घपनी टोकरी के डानी। दूसरा फावडा मारा तो वह एक पाल पर विर पडा । वह पात्र तांबे का वा। उस पाल में वद उसने देशा तो उन्ने बहुत सी अधर्फियां व रुपये दिकाई दिये । वे करीवन ४ ५ हजार की चीजें बी जो किएक छोटै से पात्र में रस्ती थी। जिस समय उसने फावडा मारा था तो वह अनुवेपर भी लगावा जिससे उसका भ्रमुठा कट गया था पर उसने उस वक्त खशी के मारे उस पर कुछ स्थान नहीं विया। वह उस पात्र को मिट्टी में खिया कर वर ले गया और अपनी स्त्री से कहा कि इसको सम्भान कर रख। फिर जब बह अपने इस काम से निवृत्त हुआ तो उस धगुठ के कटने के दुख से बहुत व्याकुल हो गया लेकिन पहले कुछ भी दर्वमालुम नही हुआ। सामने पैसा था गया था. जिसकी खुशीसे उसका दुल दब गया था। वह तो पैसे की खुशी थी, पर जिस को भारमाकापतालगजावे तो उस खुशी को वही जान सकता है इसरा नही। तो अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामा ' इस का भय प्रध्यास्मिचिन्तन मे मस्त रहना, यह अवस्था जिसकी हो जाती है जसकी सब कामनाएँ दूर हो जाती हैं।

इंज्या दिविधा इंज्या दो प्रकार की है। एक स्वाय इच्छा भीर दूसरी परार्थं इच्छा। जैसे यह उसको दो, यह मेरे को दो। सबर उसकी बेच्टा सपने निव के सिए है तो वह स्वार्य इच्छा कह-साती है। अवर उसकी वेष्टा अपने निस के सिये नहीं तो वह परमार्थ इच्छा कह साती है।

धाने इन्हेंविनुनता' इन्ह सर्वात हु स भीर सुस उससे मुक्त हो वये। जीव--मुक्त दक्षा के बीच में यह शरीर ही आसे नहीं मिनता है। शरीर के साथ ही सुका भीर दुस दोनों हैं विवस्मुक्त को न मान की इच्छाहै,न लोभ की और न लाइच की। यदि उसके जीवन में शक्ति है तो वह बोकोपकारावं सर्वात् दूसरों की

(बेव वृष्ठ ७ वर)

भारत की शिक्षा-प्रणाली



दोषपूर्ण है। भाग-१

देवा का विश्वासन लामिक धासार पर हुआ। मुख्यमानों ने सपने वर्ग को गारत में धासन बमें माना धीर उन्होंने अपने लिए धासन स्थान की मान की। कान्नेस पार्टी ने मुस्तमानों को धानन वर्ग मही माना, परन्तु वाद से भारत में कर्म कर्म स्थीकार किये गए उसी धासार पर देख का विभावन हुआ। समूचे भारत में बहु। मुन्यमानों के ६० परिवास वा इससे धासिक सोगों ने धान प्राप्त की धान के

भारत-विभाजन के पश्चात् मुस्किम स्नीत के प्रेसीटेंग्ड मिल जिल्ला ने पूच्य महास्मा बी के कहा कि दो देशों के हिन्दू स्रीर मुसलमानी को धारान से इचर स बचर जाने की बात मान सी जाया। परहु महास्मा गांधी जी ने दवकी बात गहीं स्नाती। श्री जिल्ला जो बात चाहते ये वहीं हुआ परन्तु बड़ी सारकार के बाद हुआ लाखों व्यक्ति दोनों तरफ मारे गये। बहिनों सा धरमान हुआ सीर सरबों की सम्मत्ति सुट ली गयी।

भारत विभावन के पश्चात् पुसल भानों ने अपने देश (पाकिस्तान)को इस्ला-मिक देश बना दिया थोर हिन्दुओं के स्विकारों को समान्त कर दिया। गरत बी धाने देश को हिन्दू राष्ट्र पान्ति कर अकता था, परन्तु दुर्माण्यवय इसने ऐसा नहीं किया। इसके नेतामों ने धाने देश को 'सेन्द्रअर' घोषित किया थीर यहा के स्थानिताश्चिम को समी को में स्विचार खोर पुला की में स्विचार खोर पुला की छूट थी।

भारत ने सैक्यूसर बाद के विवद वेश में हिन्दुधों के लिए धनेकों कानून "हिन्दू कोड़ विश्व बनावे" तब बनता धतकें हो नई स्रोर उसकों कह सवा कि सैक्यूसर मान विश्वान के किया है। परमुद्ध साबेश

सरकार की नीति पुराणी ही है। सनता ने सगह सबह मीटिंग की, और सरकार का स्थान धार्कायत किया कि उसे देश के नित् एक कानून समाना चाहिए दो नहीं। परन्तु भी सवाहरचान जी ने धपने मन की बत की धीर मानून सनते चले गये। धन कानून नुस्तमान धीर कास्मीर की हेसकार सनते हैं।

देश को सन से नवा मादवर्ष उस दिन हुमा जब कि देश में विकाश जगानी चालू हुमा जादिए तो यह वा कि लाई मैकाले की उदाई जमान्त कर भारत की विका पढिले जाल की जाय परन्तु चोक कि साई मैकाले को स्वीकार किया और कानून बनते गरे।

कानून का वस्त्रे बचा दोन वस दिन हुआ जब कि भारत में अस्पस्टस्यक धीर बहुतस्यक वर्ग मानकर दो कानून बनाये वये । अस्पस्टस्यक वर्ग म मुत्तवमान धीर ईसाई थे धीर देश की २० प्रतिशत्त्र धार्य (हिन्दू) जनता बहुत्यस्य बग मे गयी । सरकार ने अस्पत्रस्यकों की ध्यमे स्कूलों को चलाने, शिक्षक नियुक्त करने या निका-कने, शिक्षा से बामिक शिक्षां देशे की जुड़ दी धीर बहुतस्यक वर्ग को यह धायकर

कानून का दुष्परिखाम यह दुमा कि बहुसन्यक वन हिन्दू शिक्षा का विष्ट से असे माने हो परन्तु उसके विधानीं सदा-चार मारनीय सस्कृति तथा वैधानीका से एन्य हो गए। जब कि सस्पसस्यक वर्ग के स्कूलो मे चोर साम्प्रदायिक बच्चे बनन करों हैं।

भारत में आर्यसमान शिक्षा के क्षेत्र में बहुत आगे हैं। परस्तु बहुतस्थल कर्य में मह भी भा गया। सरकार की नीति का क्यान कर आर्यसम्बद्ध के अमेकी लोको ने अपने को अस्पतस्थक वर्ष बनाने का प्रयत्न किया, परस्तु आर्यवेशिक समा ने उनकी इस नीति को न माना। परिस्ताम बहु हुआ कि आयस्थान को जानने कालों का स्थान आर्थ स्कूलों में नहीं शहु, उनके सलावा बहुत और लोग सा बये। कहुने का तास्पर्य यह हुआ कि आर्यस्थान का प्रवास बेकार सिद्ध हुआ। क्ष

सैक्यूनर स्टैट होने के नाते सरकार को एक ही कानून बनाना चाहिए वा। शिक्षा के लिए सस्प्रस्थक्य वर्ग और बहु-सस्यक वर्ष क्या सैक्यूनर की देन है। समस्य पुरुष तथा समरीका में एक ही

कानून है परन्तु अपने देख को सेन्यूमर वोधिय करने नाते स्वय प्रान्यक्ष में प्राप्त्रवाधिक हैं। वस सरकार ही अपने आवर्ष्य में बाम्प्रवाधिक है तो किर देख के विचार्थी उसकी बात स्थो माने। नव-पुत्रकों में ही साम्प्रवासिकता हिंता, मान्य पाववास के बारे हैं। किर सरकार इनसे कैसे पीछा खुडायेथो। वो हमने कार्य किया है उसका परिणाम हमें प्रुत्तमा ही

जब ८० प्रतिशत जनता के बच्चे

सपने सनमाते हम से पढ रहे हैं और सन्त-सम्मक वम के बच्चे चोर साम्प्रवाधिक बन रहे हैं तब सरकार स्वय सामे कि बहु देश में एक्टा और मुख्या केंस लागभी उसकी भीलों का कोई सम्म नहीं है। सरकार को यह बात समझ लेनी चाहिए कि उसकी भून के बारण मारत के प्रत्येक प्रान्त में स्वास्ति है।

भारत की शिक्षा दोषपूर्ण है। इसे सैक्यूलर के अनुकूल होना चाहिए। ऐसे होने पर ही बेश एकता सुरक्षा तथा सर-कार की नीति का पालन करेगा अन्यवा कुछ नही होगा। सरकार की उक्त योग पूर्ण नीति का कुपरिशास यह हुमा कि— १ देश की => प्रतिस्ताल अनता के

बच्चे कण्पटाग बन रहे हैं। २ मुसलमान ईसाई के बच्चे [पोर

साम्प्रदायिक बन रहे हैं। ३ प्रधानमंत्री की घोषणा देश की

एकता व सुरक्षा कैसे चलेगी। ४ समूचा देश प्रमागत के चन्कर में है धीर नवयुगक ही हिमक बन रहे

दुःख और सुख (१९०८ ६ का शेव)

मलाई के लिए कार्यकरता है उसके लिए तो कोई दूसराकाल ही नहीं। वड स्नाद-मियो काऐसाही स्वमाव होता है।

महात्मानाची द्यारहेथ । किसीने कह दिया धरे । इस बोरेको उठा कर इधर रखना। इस जगह यदि काई दुसरा बादमा होता तो कहता कि क्या मैं तेरे बाप का नौकर हूजो उठाकर रखू। धाप भी यही अवाव देते परन्तु महारमा जी ने उसे उठाकर ठीक जगह पर रख दिया। जब वे उठाकर चन नद नो गै को मात्रम हुमा किये तो महात्मा गानी है । तब तो उसको बढा पञ्चाताप हुमा । महास्थाजी ने कहा, इस में पञ्चालाप करने की दी कोई बात नहीं है। तुम ने इस बजन को उठाने की शक्ति नहीं मैंने इसको उठाकर रख दिया तो इस प्रकार एक दसरे को मदद देना प्रादमी का कर्त्तव्य है। यह जो काम महात्मा जी ने किया पैसो के लिए नहीं किया। इस प्रकार अपने को भी किसी की मदद के **बिए कुछ** उठा न रसना चाहिए। विनि-वृत्तकाम दूसरी के हित के लिए है, अपने निज के लिए नहीं। महर्षि दयानन्द की कौनसा सुस हुआ [?] कुछ नही। फिर अपने सारे ससार के मुखीं को छोड़ कर जवानी की हालत में सारे काम को खोड कर क्यो धर्म प्रचार किया ' उनकी निजी कोई कामना नहीं बी। यदि कोई कामना है तो ससार के कल्याए। भोर मलाई की। वे चाहते वे कि ससार मुख्यमय तो जावे। कहा नवाहै कि "इन्हेंविमुक्ता सुका-दुससर्त्रं का।

कामज को साप वसा वो। जस

जावना धौर फिर उसके धाप धक्तर भी पढ़ जीजिए। बाप उनको पढ़ सकत है। मेकिन दस कार्यक की पुढ़िया तो धाप उनके पढ़ हवा की सहर धाई कि वह उड जाएगा " उरह यदि स्ली को "का दो ची ने ने " व सकेरी हो जाने के पढ़िया है के बहु के कि साम के पढ़िया है के पित है के पित है के पित है के पढ़िया है के पित ह

इसलिए सुका भौर दुका से भ्रालग हो गो। गरीर पर दुका उसका ग्रामर नजर भ्राला है। यह भी होगा कोई परवाह नही। यह भी प्रार क्की वस्तुहै। पर भ्रान्त में—

गच्छन्स्यमूडा पदमब्यम तत्।

प्रमुखा = नोह रहित। वो नोह से रहित हो गये और जिन्होंने नित्र स्वरूप को जाना व 'नच्छानित समूद्रा पश्म् प्रस्थाय तत्' उस पद का जो 'प्रस्थाय' है प्राप्त हो बाते हैं।

दोनो ही मार्ग धन्छ हैं कोई किसी मार्ग मे जाता है, कोई किसी माग से जाता है। उसके विषय मे---

कर्मज दुढियुक्ता हि फल स्यक्त्या मनीविण । जन्मजन्यविनिर्मुक्ता

व गम्बन्स्यनामयम् ॥

निर्माणुमोहा वित्तसवदोषा , प्रध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामा । द्वन्दैविमुक्ता सुकदु ससत्रे-गैण्डान्त्यमूढा पदमव्यय तत् ॥

श्रेत्याद्य के वास एम

"मुस्लिम पर्सनल लॉ : विरोध क्यों"

भारतियन के सर्वोच्य न्यायालय ने या से तताक सी गई मुस्लिय महिल भी के प्रथिकारों के सम्बन्ध में नित्य से दिया है तब से इस देश के कट्टर मुस्लियों डारा सम के नाम पर उसका प्रतिवाद कर कानून में परिवर्तन की माग की जा रही है। उन्होंने रिक्षण देश रव को ग्रारीश तबाओं दिवस के रूप में विरोध दशके मगाया। कई बाता पर दक्के विद्व मुस्लिम जनभत का एकत्रित कर महिलामों के सामता है प्रशिव उनका यह प्रथान के कामता है। राष्ट्र उनका यह प्रयास किया जा। है राष्ट्र उनका यह प्रयास किया जा। है राष्ट्र उनका यह प्रयास किया जो कि ही नि

बारतक से इस्लाम ने नारी को दाखता का प्रमीक बताया है, जिव्हान स्पष्ट वस्लेक नवाब खतारी के पौत्र का धानन्द सुमन (पूर्व बांट रफत धालताक) ने वैदिक बन से वीशित होने के पश्च न पहुँचे इस्लाम क्यों खोबा तथा इस्लाम के नारी से इस प्रकार किया है ---

"रवस्वला (मासिक वर्ष में श्रेली) को कह नो सप्तिन हे ट्रवक् रखो। ऋनु कम में उस्केपास सामा, जब तक कि वह पर्न ने ए. ए. पुन्हारी वीविया दुन्कार लिए चेतिया है। बस बाको जिस तरह चाहो । न खेन म दुम को सल्लाह लगव (स्थ्य) सप्तब से नहीं पक्काना। स्थितार श्रुरन २ सायन २२२, २०३ व २२४।

इस प्रकार सचिए रजस्वला काल से स्त्री स्पन्न विजय है तथापि ध्रीरक को नेती समझकर इच्छानुसार प्रयोग करना स्पट्टत मात्र काम वासना पूर्ति की प्रवृत्ति का खोतक है।

पुन कुरसान में सौरत को जो बजा विया गया है वह झायत १८७ सूरत २ सिपारा २ में इस प्रकार है— जरारोजे (उपब स) की गत तुम्हारे लिए हलान को गई। मदनोन्स करना झपनी पत्नियो

इतना ही नहीं सीरत के साथ निम्न प्रकार के व्यवहार का भी सावेश इस्लाम ने दिया है

> "तुम रहो सिर्फंबर मे, बाहर न निकलो घर से '

> > दुरधान− २०३६३८

उपयुंकत चवाहरए। ही श्ली जाति के स्थान का पराप्त विवरण प्रदक्षित करता है। श्ली— माता, बहुत, परती, पुत्री सब कुछ है। प्राणीन काल मे हमारे देश से गार्गी, मैत्रेयी निकोश्चमा, सीशा साविको दमयन्ती सारि नारिया हुई हैं। यह हमारे लिए घावर्ष है। इसीलिए मनुस्पृति में कहा गया कि 'यम नार्यस्तु पुत्रकले प्रजन्ते तत देवता। परन्तु इस्लाम ने नारी का जो स्वस्प प्रस्तुत किया है उसके कारण धाज मुस्लिम महिलाधों में जाएति धाई है तथा बनोंच्य ग्यायालय के निगम न उसमें द्विपृत्तित उत्साह का सवार किता है।

हम रे पुलिस नपुत्रों को इस सण्याई से इन्कार नहीं करना चाहिए और बताना बैज्ञानिक श्रुप से सामानिक न प्रापिक स्थितिक परिप्रेक्ष्य से समने पृष्टिकोण तथा ध्यवहार से परिवर्तन करना चाहिए। यदि सर्थोंच्य न्यायासय का निष्य बार्गिक हरलानेप के रूप से माना बाता है तो मुस्सिम कानून की बड सहिता को भी सारे मुस्सिम वानून की बड स्विता को भी सारे मुस्सिम वानून की स्थीकार करना चाहिए।

भारत सरकार को भी इस दृष्टि से विचार कर ऐसे कानून का प्रावधान करना चाहिए कि भारतवर्थ में रहने वाला प्रत्येक नागरिक भारतीय है और उसके ऊपर एक समान कानून लागू होना चाहिए। हमा ादेन धर्म निरपेज राज्य है, परन्तु इसका यह भवं नही कि सभी बम के व्यक्ति व्यतत्र रूप से अपन सुविधाजनक कानून का निर्माश एव पासन करें। प्रत्यक वर्ष का उद्देश्य मानवीय कल्याच है। सत यदि जानवताकी र ता, विश्व-बन्धुत्व, स्नाति एवं मैत्रीके लिए कोई नियम वन ता वह वरसीय होता है न कि उच्च-नीच लडा६ भगडा भ्रादि का भेद-वाब कराने वाल धार्मिक पासट व **सन्ध**-विश्वास का माना जाय।

बस्टिख एम॰ एम॰ बेग ने सर्वोच्च
ग्यायास्य के शाह बानों के केस ने स्पष्ट
मत व्यायत्य के शाह बानों के केस ने स्पष्ट
मत व्यायत्य केस है कि सुनीम कोटे के
फेसले के विकाद सा-दोलन पूर्णत अनुबित व गुमराह करने बाला है। बहु
निव्यत कर से हमारे सविधान की सामाबित्य कर से हमारे सविधान की सामाबात कर के से संव्यानिक स्थाय
कावम करने की सर्वेयानिक सोवना ने फिट
नहीं बैटला। सच्या धाकोश ऐसी वालो
गर नहीं बैटला। सच्या धाकोश ऐसी वालो
गर नहीं बेटला । सच्या धाकोश ऐसी वालो
गर नहीं बेटल । साम केसित होना
वाहिए।

बाधा है न्यावपालिका की बरिया व नारी-सम्मान की बाबना को बस्टि मे रखकर हमारे वेश के नागरिक विचार करेंगे तबा भारत बस्कार मी सारे वेश में समस्त सारतीय नागरिको हेतु एक-खमान सहिता का निम्नीच करेगी।

> मनवीय (सुरेखचन्द्र ''शास्त्री'') ४८७, मुठ्ठीनम, इलाहाबाद

भारत में मुसलमानों की संख्या कैसे बढी

श्रीमान की.

भारत में पुस्तमात्रों की सस्या चोर जुत्म से बबरदस्ती करने से बड़ी दरता बन कासिय ने सिम्ब पर हमसा किया। उस समय उससे साम ४००० पुस्तमात में। नेकिन साम कम ज्यादा करके पुस्तमात्रों की सस्या १२ करीड के सामम है। सब कोई शृक्षि कि पुस्तमात्रों की सस्या कैंदे बड़ी।

१ यह कि कासिस, वौरी, कुतुबुहीन एकक, धन्तमथ, धलाउदीन खिलबी, बोबी, धादि ने जब भी औका मिला हिन्दुओं को जबरदस्ती मुससमाम नाया।

२ बहु कि उन्होंने हिषयार लेकर लोगों को डरा धमकाकर वबरदस्ती मुस-समान बनाया जो कि तलवार के ओर से मुसलमान बने।

३ कई बावशाहो ने एक सरकुलर निकासा, वा तो नौकरी में लगे हिन्दू मुख्यमान वन जाए। वरना छन्हें कल्स कर दिया बायेगा।

४ बहुत से बादशाह साना तब साते में जब किसी विशेष सम्या में हिन्दुसी को मुसलसान बना सेते से । इस प्रकार से बाबर, हुँमायूँ, सकबर, जहागीर और साहबाह सादि ने भारत से गळ हत्या वद की। परन्तु भीरगजेव के समय गऊ इत्याव जित्रमादोगारालगा दिये गए।

१ हिन्दू बच्चो, धौरतो व लोगो को पकडकर धरने बेग में स गये अहा पर उनका मुख्य टका बगावा यया। इस प्रकार है हिन्दुओं की प्रावारी कम से कब होती नई धौर ज्यादा धावादी मुससमानों की होती गई।

भ यह कोई निवास नहीं कि, कोई सिन्तु तर्क निवक्तं करके सुस्त्रमान बना हो। इसिन्तु तर्क निवक्तं करके सुस्त्रमान बना हो। इसिन्तु एक पाक्तितान बनने के बाद हिन्दु भी कर है कि मुस्त्रमानों के निवस्त्र प्रति कर है कि मुस्त्रमानों के निवस्त्र है। जिसके सामा पहा है। जिसके सामा हिन्दु भी पर परिवार निवोचन नागू करके सरकार निवस्त्र है। इसके सामाम हिन्दु भी पर परिवार निवोचन नागू करके सरकार न ठीक ही नहीं हिचा। विकास परिवार निवोचन नागू करके परिवार निवोचन नाम सरका हिन्दु भी स्तर परिवार परिवार निवोचन नाम सरका हिन्दु भी स्तर प्रति सामान निवास नाम सरका सिन्दु भी स्तर प्रति सामान स्तर सामान सामान

भत प्रायंना है कि सारे मामले की जांच गडताल की जाए। और हिल्दुओं के साथ न्याय किया जाए।

> जयदेव गोयस पत्रकार जीव्य

मिनिस्टर का त्रादेश नहीं चाहिए, कुछ सेवा पानी करो

बादरणीय श्री मिर्धाजी, सादर नमस्ते ।

धापको स्मरण होना कि हम धापको द्र ७-८५ को स्वल सी सवित साकत की के साम सिले थे। धापको महानाम जुलांबाल वैरिटेबल टूस्ट के लिए दूरपाथ के सम्बन्ध में धापको महानाम की सम्बन्ध में धापको महानाम की साम्बन्ध में धापको महानाम की की की सिलाल, उपनिवेदाक ने धपने पत्र सस्या ६३/१/८५ पीक्एक ०ए० ति० २१/७/८५ के धनुसार धारेश में बारों का कर्यान प्रकार स्वी

मैं श्री निलल की का बावेश प्राप्त होने पर ७-द-८६ को कर्माध्यक प्राप्त-सर (प्रवप) से मिला था। उन्होंने हमारा पत्र तेकर नेपुड ने प्रापको बुरा थला कहते हुए उस पर प्रावेश वारी किए थे। किसी कारणवश में दिल्ली से बाहर चला वना।

बहा से शीटने पर कस १६-८-६५ को जब में उनसे पुन जिला तो उन्होंने कहा कि मिनिस्टर बाह्य के कहलवाने से या उनके मादेश बारी करवाने से टेली-फोन बोटे ही जिल काते हैं जब तक सेता पानी न की बाए। मैंने आपकी फाइस प्रसिद्ध वनरास मैंनेवर की ए० के॰ कुप्ता को नेस सी हैं। सी कुप्ता की के पास जब मैं गया तो छन्होंने मुझे आकेले में कहा कि धापका कर मुक्ति प्रमास्त्रपत्र देरै मार्च १६८२ सक का है। या तो भाग धागे का प्रमास्त्रपत्र ने साहये या हमारी सेवा कर बीजिए।

उसके बाद में उपमहाप्रकाशक भी हुनोंच सक्तेना भी से निमने गया तो उनके निश्ची संविष्ठ भी जैन ने कहा कि साहब प्रशिवित २-६ व्यक्तियों को निमते हैं। प्राप्ता मन्दर २-१-९-१ को आयेगा। शाय उस दिन साक्ष्य निम्म स्मित्ति हुन्हें पठा पता है कि कमश्चिमक सारिस्तर तथा श्रतिरोटेन्ट मेंनेबर के सावसी ने साक्ष्य व दिया आये।

(सेच प्रष्ठ & वर)

स्वामी दयानन्द --एक सन्यासी योदा (पृष्ठ ५ से बागे)

समाजियों ने बगाल में बुलावा था। यब विसम्बर १८७३ में वह कलकता में बे, तत वह देवेन्द्रनाय टैगोर भीर केशवचन्द्र सेन मे मिले। कैशवबन्द्र सेन वयानन्य से बहुत पश्चिक प्रमाबित हुआ। धीर इच्छा प्रकर की कि यदि दयानन्द शरोजी जानते तो वह उन्हें ब्रिटेन में ले जाते। वयानम्ब ने कहा कि काश कैंशव बन्द्र सेन संस्कृत बानते और बहु पश्चिम का ग्रन्बानुकरण म करते। दयानम्य ने सेन की सनाह मानकर घपना सारा कार्य सस्कृत की बगह हिन्दी में करना शुरू कर दिया या।

बाद में वर्षों में दयानन्द भीर बह्य-श्वमान में नेद इतने प्रश्निक बढ़ गये वे कि बह्यसमाजियों ने दयानन्द की साहीर में बुसाया पर उनके भाषलों का बाईकाट किया धीर दयानन्द के रहने की व्यवस्था भी एक मुस्लिम प्रशंसक के घर करनी यही। यह मेच इतने ज्यादा बढ़े कि बाहीर में बहासमाज के सस्वापक श्री दयालसिंह मजीठियाने लिला है कि द्यार्यसमान के सदस्यों को उनके ट्रम्ट तथा धन्य सस्वाधों से निकास बाहर किया

फिर भी दयानन्द के बहुत से बगाली प्रश्नसक ये भीर यह उल्लेखनीय है कि दयानन्द की जीवनी लिखने वाकों में देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय थे, जिन्होंने दया, नन्द चरित्र (१८६६) ग्रादर्श सुवारक दयानस्य धौर विरजानन्य चरित्र लिखे। मुझोपाच्याय ने विभिन्न स्थानों की बाजा करके ऐसी सामग्री इकट्टी की वी जो बाद के जीवनी नेसक श्री वासीराम के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुई। श्री घासीराम ने दयानन्द की जीवनी देवेन्द्रनाथ मुखोपा-ध्याय भीर प० लेखराम की उद्गं कृति पर माधारित की है। दीनवन्यु के इस दावे को कि दयानन्द के बगाली प्रशसकों ने कृत महत्त्वपूर्ण टिप्पशियां लिसी थीं, इसको धसम्भव नहीं माना जा सकता। रुपसम्ब भी उन्हीं के बाधार पर दया-नम्ब की बीवनी सिसादी। १८५८ छे १८६० तक के सबस में दीनवन्त्र का

कहना है कि स्वामी जी जनवरी, फरवरी १८६७ में सबस भीर मुरादाबाद में वे धौर बढ़ मुक्ते एवर में मार्च १८५७ में वे। बहुकानपुर जून ६ को पहुचे। मसवकर बाट जुन २२ को धीर कानपूर और इसा-बाद के बीच मुमते रहे। मई, जुन जीसाई १८१७ में वह मिरबापुर में वे। जुलाई में विदूर में और सितम्बर में विश्वगायन में। नवस्वर में वह चन्दनगढ़ और बनारस में ये । उनका कहना है कि इसके बाद भी ब्रह रीवां जिले में नर्मदा के स्रोत तक पहुँचे वे। रीवां में उस समय बचेस सर-दार का राज्य था। रीवा की फीबों ने नव-म्बर, विसम्बर १८४७ में विद्रोह किया।

दयानन्द ने सत्यार्वप्रकाश में मृति

पूजा के संबंध में सिका है कि १०५७ में वय वर्षेस विदुर के झासपास रहते थे, पन्होंने प्रश्नेकों का विरोध किया धौर श्रंत्रेकों ने उनके बदिरों पर वस वरसाये। "तुम्हारी मूर्तियां क्वेशों को बचाने के लिए उस समय क्याकर रही थीं। वह मक्की तक भी नहीं सार सकी।" दीनवन्यू का कहना है कि नयानन्द द्वारा यह विव-रख ऐसा सगता है जैसे उनकी स्वय की साक्षी हो। उन्होंने यह ही कहा है कि दयानन्द लगभग उन्हीं स्थानों पर घुमे जहाँ पर उस समय या कुछ बाद में भीषण युद्ध हुमा। यह विवाद माज भी चल रहा है कि महर्षि दयानन्द ने स्वतन्त्रता सग्राम के प्रथम दौर में भाग लिया था। ग्रथवा नहीं । इस सेस में ऊपर दिये गये ऐतिहा-सिक तथ्य यह सिद्ध करते है कि दयानन्द ने इस पहली लडाई में सक्रिय बोबदान दिया, उन्होंने लोगों को प्रेरला दी तथा भने ही भारतीय इस पहली लडाई में हार बये हों पर उनके बन्दर एक ऐसा विद्यास जागृत हो गया वा कि व्ह ग्रेग्नों को धवश्य उकाड फेंकेंमे । दयानस्य ने सर्वत्र स्वराज्य को ही सच्छा बताया भीर बाद में हुमे स्वराज्य मिला भी। महात्मा उन्होंने बनाली में जो इधर-छधर टिप्पणियां गांधी को मार्व दिखाने वाले वस्तुतः दया-नन्द ही थे।

स्टेटसमैन से साभार

मिनिस्टर का भ्रादेशः 🕇

(पृष्ट व से झाने)

धव प्राप ही बतावें कि इस फ्राप्टा-चारका कैसे अन्त हो सकता है। क्या धार्यसमाज के कार्यकर्ताओं को भी ऐसे भ्रष्ट तरीके भपनाने चाहिए।

यदि सापके विभाग में ही सापके बादेश की इस प्रकार से बदहेलना की बाती है, बीर पञ्जियां उडाई बाती हैं, दो प्राम लोबों का क्या हास होना, इसका ब्राप स्वयं घनुमान सवार्थे ।

बत मेरा बापसे बनुरोप है कि बाप इस मामसे की जांच करावें और ऐसे

भ्रष्ट सोगों के खिलाफ कड़ी कार्यवाही करें, जिससे नीचे वाले ग्राचकारियों को भी सबक हासिस हो सके।

मैं प्राप्ता करता हू कि अध्टाचार मिटाने में बार्यसमाज के उत्साही कार्य-कर्ताओं, चिन्होंने विना रिश्वत के काम कराने की कसम छठा रखी है, का उत्साह बढ़ाने के लिए उपबुंक्त प्रविकारियों के विरुद्ध कड़ी कार्ववाही करेंने।

बोमप्रकाश बार्य, मंत्री

निराशावादो शल्य"

किया भीर बहराइच, गोण्डा वारा-गासी के बर्मीन्तरगाकी समस्याकी मोर ध्यान भाकषित किया। उन्होंने बताया कि केन्द्रीय सभा पर्वो का धमधाम से बायोजन करती है। इस इस वर्ष दिल्ली में प्रार्थसमन्त्र दीवान हाल की स्थापना शताब्दी मनायी जायेगी। हमारा विश्वास है कि झार्य बीरों के शिविरों तथा प्रशिक्षरण के माध्यम से ही ग्रार्थममाज के ग्रान्दो-लन को गति प्रदान की जासकती है। सार्वदेशिक ग्रायं प्रतिनिधि सभा की ग्रन्तरग सभाकी बैठक में भी महत्त्वपूर्ण निश्चय द्यायवीर दल को ऊर्जाप्रदान करने का ही हुआ। है। दीवानहाल की ग्रोर से एक हजार **धार्य वीरों का शिविर इ**स वर्ष दिल्ली में लगाया जायेगा ।

जब हम इतने महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। हमें निर्वातनो के समय शान्ति, सद्बुद्धि भौर एकता से काम लेना चाहिए।

मार्यसमात्र मन्दिर हनुमान् रोड नई दिल्ली में धार्य केन्द्रीय सभा का वार्षिक श्रिषवेशन सभा प्रधान महा-शय धर्मपाल जीकी ग्रध्यक्षना में हथा। गायत्री मत्र के पश्चात महा-मन्त्री श्री सूर्यदेव ने ससद सदस्य श्री ललित माकन, श्रीमती गीताजली माकन, श्री बालकृष्ण खन्ना, श्री पाठक, श्री प्रतापसिंह (करनाल), आदि के निधन पर शोक प्रस्ताव रखा। सभी ने खडे होकर दो मिनट मौन रहकर उन्हें श्रद्धाजलि दी। तत्पइचात् श्री सूर्यदेव ने सभा के वार्षिक प्रधिवेशन को कार्यवाही की प्रस्तुत किया । प्रिसिपल भोनप्रकाश ने कहा कि मैं ग्रौर मेरे साथी कुछ समय से महसूम कर रहे हैं कि कार्य में शिथिलता बाई है। इस बात का उपस्थित सदस्यो ने विरोध किया भीर कहा कि कार्य बढा है और धारे भी बढ़ना चाहिए। श्री रामनाच सहगल, श्री मामचद रिवारिया, श्री राज सिंह भल्ला, श्री विजय गुप्ता ने कहा कि भार्य केन्द्रीय समाकागत वर्षका कार्य प्रशसनीय है। सभी ने तालियों से इस बात का अनुमोदन किया। सभा को वार्षिक रिपोर्ट नर्वसम्मति से सपुष्ट हुई। इसके बाद आय-व्यय विवरण भीर बजट प्रस्तुत करते हुए महामन्नी ने बताया कि जब हमने सभा सभाली उस समय इसके पास ६,००० रुपये का फिक्स डिपोजिट घौर लगभग ८०० रुपये का कर्जा था। माज इसके पास ११,००० रुपये का फिक्स डिपो-जिट तथा सात हजार रुपया कीय में है। भाय व्यय विवरण तथा बजट सर्वसम्मति से पारित हुमा।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

डा॰ धर्मपाल मत्री ने प्रस्ताव रला कि आज भी दिल्ली की आर्थ समाजों की सख्या को देवते हुए हमें अन्तरम सभा के नदस्यों को नहस्या ३१ से बढाकर ४० कर देनी चाहिए। इस प्रस्ताव पर श्री रामनाथ सहगल ने कहा कि वधानिक इब्टि से सबि-वान सशोधन का कार्य नैमिलिक समामें किया जाना चाहिए, यदि कोई वैधानिक ग्रापत्ति न हो तो सशोधन इसी साधारण सभा की बैठक मे पारित कर लिया जाये। उन्हें बनाया गया कि वार्षिक साधा-रए सभा सर्वोच्च है ग्रीर बाज ग्राव-श्यक कोरम भी पूरा है। तीन वर्ष पहले सविधान में सङ्गोधन किया गया था। ग्रत यह सशोधन प्रस्ताव स्वीकृत कर लिया जाये। श्री राज-सिंह भल्ला श्री मामचद रिवारिया श्री रामनाथ सहगल, श्रीलाजपत राय ब्रादि मान्य सदस्यो ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया । यह प्रस्ताव सर्वभम्मति से स्वीकृत हमा।

इसके पश्चात् सभा प्रधान महा-शय धर्मराल ने वर्नमान कार्यका-रिएगी के कार्यकाल की समाप्ति की घोषरा की। सामयिक प्रधान के लिए श्री ग्रोममकाश श्रो रामनाथ ने लाला रामगोपाल शालवाले का नाम प्रस्तावित किया। श्री लाजपत राय तथा ग्रन्य भनेक सदस्यो ने उनके नाम का श्रनुमोदन किया।

लाला रामगोपाल शालवाले ने सामयिक प्रधानका पद ग्रहरा किया। सारा सभागार तालियों की गडगडा-हट से गुज उठा। उन्होंने मान्य सदस्यों को सगठित ग्हने की प्रेरला दी ग्रीर प्रधान पद के लिए नाम वामत्रित किए। श्री हरवससिह सैर ने महाशय धर्मपाल जी का नाम प्रस्तावित किया । श्री रामशरणदास भार्यभौर श्री लाजपत राय ने इस प्रस्ताव का ग्रनुमोदन किया। लाला जी ने दूसरा नाम प्रामित्रत किया। कोई नाम न धाने पर उन्होंने सर्व-सम्मति से महाशय धर्मपाल को सभा का प्रधान निर्वाचित घोषित किया। सभी सदस्यों ने ताली बजाकर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की। श्री लाजपत राय, श्री राजसिंह मल्ला भ्रादि ने प्रस्ताव रखा कि कार्यकारिस्सी के गठन का कार्य महाशय धर्मपाल जी को ही सोंप दिया जाय । लाला जी ने कहा कि महामन्त्री का चुनाव भी धाप धभी कर लें। श्री ईश्वरचद धार्य, श्री रामशरए दास धार्य ने श्री ग्रशोक कुमार सहगल का नाम प्रस्तावित भीर भनुमोदित किया। सभी ने करतल व्यनि से इस प्रस्ताव

(बेब पुष्ठ ११ वर)

समाचार सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि समा द्वारा

वेद प्रचार सप्ताह के कार्यक्रम

आर्यममान दीवान हाल दिल्ली के साप्नाहिक सत्सग मे २४ अगस्त १९८५ को श्री महेश विद्यालकार द्वारा विशेष प्रवचन होगा। मन्त्री

१ प्रायसमात्र त्रिनगर मे ३० प्रगस्त से ६ सितम्बर तक पण्डित प्राधारास प्रेमी भवनोपदेखक अवन मण्डली द्वारा रामिको प्रकेष से १० बचे तक मधुर सगीत एव वेद प्रवचन होगा।

२ धायसमाज रमुवरपुरा न०२ में ४ सिनम्बर से म सितम्बर तक प्राचाय हरिदेव सिद्धान्त भूवण तक नेचारी द्वारा वेद प्रवन होगा। क्या से पूर्व प० जुला साम प्राय अवनायस्थक के ममुर सबन। योख होगे।

३ स्रायसशास सदर फैनाशा न० १ मे २ से म निवस्तर तक प० स्रणीक क्लिसाल्कार द्वाराव प्रवयन का स्राया स्रम किया है। जिससे प० वरण्यास भव-नोपदाक एवं संभागित स्थानसार राज्यक के समुर भवन रसे गय

४ प्रावसमात्र सफदरजग इन्जन में पण्डित वस्त्रपाल मुनायु एम०ए० सम्पा वक प्राव सन्देश वा द्वारा बदकवा का कावक्रम रहेगा। क्वा स पूत्र प० वेदन्यास प्राय प्रचारक द्वारा प्रमुद्ध स्थात सुनन को निकोग यह कायक्रम ४ सितम्बर से ६ विसम्बर तक कृष्णाल स सम्पन्न होगा।

ध्र मसमाज सवरशानार पहाडा बीरज ने नवमचार २० मास्स से व सित म्बर तक धूमचाम क साम मनाया बा रहा है जिसमें प० सत्यवेव स्नानक रीडयो कसाकार के अजनोपदेख होंगे प० ज्यात प्रसाद डोलक बादक साम रहेंगे।

६ प्रायसमाज देवनगर में ६ सिस-म्बर सं १५ सितम्बर तक प० प्राधाराम प्रेमी भी "यामनीर राघन द्वारा भवनी पदेश होने। समय राती = बजे से १० बजे तक रहेगा।

७ श्रायक्षमात्र राख्याप्रताप बाग से ६ से १५ सिखान र तक वेदप्रचार सप्ताह मनाया चा रहा है विषये प० वेदप्यास भवनोपदेशक एव प० वदप्रसह तबका बादक का कार्यक्रम रहेगा, साथ ही द विद्यान्य र स्कृती वीपहर बाग एक विशास सीमायात्रा निकाली जायेगी। म् धायसमाज राजीरी गावन में ह से १४ सितान्वर ५५ तक वेद सप्ताह मनाया चारहा है जिसमे प० सस्यवेद स्नातक रेडियो कलाकार एव ज्योपिप्रसाद होसक कमाकार द्वारा जजनोपवेश होते।

६ श्रायसमाज शामीमार नाग में श्रीकृष्ण जन्मास्ट्री पर वृश्यमान के शाम मनाया जा रहा है। इस श्रन्थर पर विज्ञान स्वत्याका उपदेशको के श्रीकृष्ण जीवन पर व्याव्यात होने। साथ ही उ० सस्यदेव स्नातक रेडियो कलाकार के मधुर मन्त्रम सोरे।

१० साथसमाज प्रश्लोकनगर का वाषिकोत्सव धूमबाम क साथ मनाया जा रहा है। ७ मा क प्रजनापदेशक पण्डित चुन्नावाल जा क्ष)य क जोशाल स्वकाए-देश होंगे।

११ भागसमाथ नवाबात में वद-प्रचार सप्ताह मनाया जा रहा है जिसमें महात्मा राजाकसार वस शहापदसक जी का वद प्रवचन रहेगा।

१२ भागवसाण धकरपुर विस्तार में १ स न वितास्य तक प्रात ६ ३० वर्षे स न वितास्य तक प्रात ६ ३० वर्षे स न के वर्षे तक विद्याय यह प्रवक्त र बास्त्री विद्यान के बहुत पर विद्यान के प्रात्त्र के प्रात्ति के प्रात्त्र के प्रात्ति के प्रात

१३ धायसमाज न्यू भातीनगर से १ वे ७ वितन्यर २५ तक सदम्बार सप्ताह मनाथा जा रहा है जिसमें प॰ शिवास्ताल उपाध्यास का प्रवचन धीर प० जाय मप्तवान सबन मण्डला के सबुर जाजन हाने।

१४ आर्यसमान १५ हनुसान् रोड में नेदशमार सत्याह् १ खितम्बर से द खितम्बर तक मनावा खावना जिवामें व मननमोहन विद्याखागर (हेदरावामें वो का नेदग्रयस्म रखा गया है कवा से पूब ममुर संगीत का कायक्रम रहेगा।

प्रार्थसमान चूनावण्डी पहाडवन नई दिल्ली ४ वितम्बर वे ८ वितम्बर सक वेद प्रवचन श्री ५० रामप्रवाद वेदावकार द्वारा किया जायेगा।

द्वारा किया जायेगा। समय---रात्रि ६ वजे से १० वजे तक।

> व्यवस्थापक स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती प्रविश्ठाता वेदप्रचार विजाव

केन्द्रीय श्रार्य युवक परिषद् का ६ ाट वार्षिक खुला श्विवेशन

केन्द्रीय सार्य पुनक परिचन् विल्यो प्रवेच का छठा गांविक समिवेचन नीववान जनरते हुए रनकार प॰ यद्यपान सुवांचु (सम्मावक मान सन्वेच) की सम्बन्धता में रेक्ष प्रमस्त, रतिवार दोशहूर २ वर्षे सार्यवसाथ सनारकती मन्दिर गान में समारोह पूर्वक होगा। परिचन् सम्बन्ध सी सनिल कुमार साथ ने बताया दिल्ली, हरियाला, पनाव, उत्तर प्रवेश व सम्ब राज्यों से ५०० नीववान बाल सेने।

इस सवसर पर की समर स्थानी की महाराज की प० जिलीस बेवालकार, स० विश्वपाल क्यन्त, साक्षा इन्द्र नारायस्य, की रामनाच सहमल, सहास्य कर्मपाल. श्री राजधन्त विकल डा० क्योखराष्ट्र (करणाल) व श्रोक शूर्धन्य श्राय विडान् व नेता श्राय लेंडे । सम्बल व श्रास्ताधि-कारियो की नियुक्तियां व ब्बल, सोटी, फुटबास उन्हें कायक्रम में दी बार्येगी।

वायसमार्थे व झाय पुत्रक पूर्ण वेध-पूचा में ठीक १ ३० बचे पहुर्थे व झपनी बसें, ट्रक, मैटाबोर गाडियो में खिक से झिक सक्या में प्यारकर सगठन का परिचय हैं।

> चन्द्रमोहन झाय प्रेस सचिव केन्द्रीय झाय युवक परिवद्, दिल्सी

श्रार्यसमाजों के निर्वाचन

मार्वे बनाज राजेन्द्र नगर नई विस्ती का वार्षिक जुनाव २८७८१ को सी विवसास वासुवेवा की सम्प्रकाता कें सम्पन्न हुसा। निम्नासिस्त पदाधिकारी जुने गरे —

वयान---श्री द्वारकानाय सहयज मुस्य उप प्रवान—श्री शिवसास वासुवेवा जपप्रधान—भी कृष्णसास माटिया उप प्रधान-धी रामकिसन जी चुन उप प्रधान-भी नेजराब धार्य उपप्रचान — श्री दीवान पुरुषोत्तमझाल जी उप प्रधान-भी बनराज कोहसी मत्री — भी शादीसाल भी प्रचार नती — श्री ब्रशोक कुमार सहगत्त उपमत्री-श्री प्राणनाथ कक्कड उप मत्री—श्री शिवकृशार जी उप मत्री —श्री हेमराज बांबा उप मत्री-अी मोहनलाल बस्सी कोवाष्यक्ष भी श्रोमप्रकात रुपकोषाञ्चक की चून्नीसास उप कोषाध्यक्ष भी वर्गकृत्व भी पुस्तकाध्यत्र भी घोमप्रकाश समुका लेकानिरीक्षक भी युरेन्द्रमोहम युष्टा

(द्वारकानाथ सहगल) प्रथान बार्यसमाय राषेत्र नगर नई विस्थी-६०

सार्यवसाय नया बाँव दिस्तीका ६५ वाँ वार्षिक समिवेश्वन रिवार विनाक १४ ७-६६ को प० सत्यदेव विद्यालकार की सम्मलता में निम्न प्रकार सम्मल हुआ।

त्रधान—त्ता॰ घोमप्रकाश कपढे वाले छप प्रधान—श्री पूल्यन्त्र घरोड़ा छप प्रधान—, घोमप्रकास कीम वाले

मन्त्री—, विष हुमार बावं उप बन्ती—, वर्षपाश बावं उप बन्ती—, राषेन्द्र हुमार दास बासे उप बन्ती—,, बद्दालक सर्वा उप बन्ती—,, बद्दालक सर्वा कोपाम्बद्ध—, राषेन्द्रनाथ बोटे बावे पुस्तकाध्यक्ष-भी नन्दकिशोर बाब

इसके प्रतिरिक्त सब सम्मति से धन्तरन समा के लिए १५ सबस्य भी चुने गये। भनदीय

शिवकुमार द्यार्थ (मन्त्री) द्यायसमाद्य नयावीस विस्त्री

निवा धायसमान, समस्तेपुर का नामिक निर्वाचन दिनाक २१ ७ ०५ बार रिनवार को भी रातमशाब साथ के सम्मक्ता में सोहारपुण नातमराख में सम्मन हुमा। निम्मविज्ञित प्रवाचिकारी एव सम्तर्ग सदस्य चुने नये।

की रामप्रसाद भायं—प्रवान

,, दीन दयाल कावडा--उप प्रधान

,, विशेष्वर प्रसार यादव —स्पप्रभान ,, नवल किशोर शास्त्री—मत्री

,, रामलाल बाय---छप मत्री

,, बजरमलास सून सून वाला — उपस्थी ॥ हरि नारायण वैद्य — कोवाध्यक्ष

,, हार नारायण वच-कावाध्यक ,, सुरेशयन्द्र भाय-पुस्तकाध्यक्ष ,, हरिशयन्द्र जी-सेका निरीक्षक

निवेदक मन्त्री, नवस किसोर सास्त्री विका आर्यसमाज समस्तीपुर (विहार)

श्रन्तरंग सूचना

सार्वेदेशिक बार्य शेर वस दिश्मी प्रवेश समिति की एक अत्यावस्थक नैठक समितार दिनाक २४ अगस्त १८०६ को साथ ४ वसे सार्येदमान मन्दिर, १५ हर्टु-मान् रोड नई दिल्ली ने होनी निश्चित हुई है।

आप इस समिति के माननीय सबस्य हैं। कृपया बैठक में समय पर पथारकर अपने सहयोग तथा विचारों से सामान्यित करें।

भवदीय (स्थानसुन्दर विरवानी) मन्दी

महाशय धर्मपाल (पष्ठ १ का शेव)

चिकित्सालय दिल्लो के ग्रामीण तथा पिछड़ी बस्तियों में नि गुल्क चिकित्सा सेवा का कार्य कर रहा है। श्री महाश्रय जी ने कई एक शिक्षल सस्थाएँ भी स्थापित की हैं। पिछले भूवयों से जनकी ग्रध्यक्षता में ग्राय केन्द्रीय सभा विल्ली विनोदिन उल्लत होती हुई प्रशन्ति प्राप्त कर रही है। हम मान्य महाश्रय जी को श्रायु होने की मान्य मागा करते हैं।

(पृष्ठ ६ से बामे)

का स्वागत किया। मान्य लाला जी के श्री प्रचोक कुमार सहगल को महामन्त्री निवर्गित कोषित किया और कोषणा की प्रवास की सहग करते। प्रवास को प्रवास करते। प्रतास रका गया कि वर्ग प्रतिनिधियों का गुनाव टीलयों में सदस्यों को बाटकर यही पर करा लिया जाये। इस प्रक्रिया को लम्बा जानकर निराय किया गया कि सभा प्रधान मौर महामन्त्री का श्रीय कायकर्ग मोर परामश करके स्वय ही वग प्रतिनिधि भी चुन ल।

सभा प्रवान महाशय वर्मपाल जी भौर नवनिर्वाचित महामत्री श्री श्रवोक सहगल ने उपस्थित सदस्यो का भाभार व्यक्त किया।

श्री सूयदेव नै सूचाह रूप से

म्राधिवेशन सम्पन्न होने पर उपस्थित सदस्यो का तथा जलपान के लिए महाश्वय धमपाल जी धौर ब्रायसमाज हनुमान रोड के अधिकारियो का धन्यवाद किया।

> राजेन्द्र दुर्गा प्रचार मन्त्री बाय केदीय समादिल्ली राज्य

प्रान्तीय श्रार्थ महिला सभा द्वारा मन्त्र प्रतियोगिता

बेद प्रचार दिवस का पन र १-८५ को सोमन र प्रात है १ को है साथ ४ १० को तक दवार व चाटिका में मान्य बहिन इंदबरदेवी को को प्रम्यवसा में कम्पन होने जा रहा है। मन प्रतियोगिता में युकुबक के १५ म० के म भो स १२ से २२

एक सप्ताह के झान्र धपने नास निम्न पो पर भेज नीतिये।

> प्रक्रमा मार्गसभामतिस्}ी ३०३१ टाह्तकरोड नद्देनिल्सी ५

श्रावग्री यज्ञ

श्चायसमाञ्च पञाकी बाग नहीं दिल्ली २६ में १ सितम् न सितम्बर १६०६ तत्र अन्यवद से ए० ट्रणीराज सास्त्री के नह्या के मेहोगा यत की पूर्णा हुति - सितम्बर र दिवाग आप ६ क्ये हुनी। निवेदक

मा (वेद प्रकाशः)

सम्बन्धित विद्यालय ध्यान दें

साप प्रपने विद्यालय की वस ११-४ ८५ को प्रमुख गतिबिंग्यों की रिपोट तद्या परीक्षादों और सम्ब प्रतियोगिकार त्र पुरस्कार प्राप्त करने वाले स्नाप स्नाप्ताओं के नान विजयाने की कुपा करें। हमारा विश्वास है कि इससे विद्यालय के प्रव्यावस स्नव्यापिकायों स्नाप स्नाप्ता में सा उत्साहस्वयन होवा और ने सीर मी प्रमुख काय सामानी वनों ने कर सम्बंद ।

धाय विचा परिवद द्वारा धार्थाजित नैतिक विचा परोक्षा के सम्ब ने परिपम चापकी वैवा ने नेमा चा चुका है। धार इस सबध ने यथावीझ धारवस्यक काय बाही करने की कुगा करें।

आप निस्त्री प्राय प्रतिनिधित सत्रा के प्रपरेसको अपनोपदेशको और साल प्रवेशको को प्रते निर्माल के निर

१ स्वामी विद्यानद भी सरस्वती डी १४/१६ माडल टाउन दिल्ली ६ दूरमाय ७१२७६२८

२ स्वामी स्वरूपानव की सरस्वनी धायसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली दूरमाय ३१०१४० ३११२८०

३ डा॰ महेश विद्यसकार बी॰जे॰ २६ पूर्वी नालीमारवंग दिल्ली ४२ टरझाष ७११२ ५६१

४ डा० रषत्रार वेदालकार ए०एस०/३ शालीमार बाग दिल्ली ५२ दूरभाग ७१११६७१ ५ जा० प्राप्त वेलालकार ७ २

रूपनवर टिल ७ टरमाप ६ टा० बाव परिचपाच्याय अपे० २ २६ स. त. उत्त टिवी ६

७ द्माचाय हरिनेत्र सि० भूपण सनान नम् ७ ७६ गली नम्बर २२ बीडनपुर जंग नई निल्ली ५ दूराल ५६८४६५ द झावाय रामकिशोर वैद्य सी ४३ डी०टी०सी० कालोनी हरिनगर कियो नई दिल्ली ६४

६ श्री धमबीर शास्त्री आवसमाज वीवानहाल दिल्ली ६ दूरभाव २३७४४०

१० धी सत्यवेद स्नातक धायसमाव रघुवरपुरा न०२ वसी न० ५ विस्ली ३१

११ श्री चुनौसास ग्रायसमाज मोगस दिल्ली-१४

१२ श्री वेदध्यास धायसमाच धनाच मण्डी शाहररा विस्सी ३२ ३ श्री धाशाराम धायसमाच धशोकनगर नई दिस्सी १०

१४ श्री यशपाल सुवाशु बायसमाव वीवान हाल दिल्ली ६ दूरभाव २३७४४०

१५ श्रीप्रि० चन्द्रदेव

१६वी/२० डब्स्यू०ई०ए० देव नवर नईदिल्ली ५ इरमाय १६३४४६

१६ प० स यभूषणा वैदालकार एफ० २१ ग्रीन पाक नई दिल्ली १६ १७ श्री प्रसचद बीचर ३६ ई०

महाराचा रणजीत सिंह रोड मावधनगर विल्ली दूरमाय ७४२४३१ इ.व. इन विद्वानी से सीघा सम्यक

कर लें तथा समय और विभिन्न की सूचना कार्यालय को भी देने की कृपा करें। यसवाद!

> (डा॰ धनपाल भाय) महामत्री

श्रावर्णी पर्व एव वेद प्रचार सप्ताह

दिनाक २० समस्त = ५ मे ७ खि०
म्बर ६६ तक खमारोह पूरक मनाय
जायगा जिसमे मानव करूप ण बहुद प्रात
प्रात साण ६ स खाड = द वे तक प्रत
दिन होगा तवा राणि को ६ २० व वे से
१२० ते तक बी ए० वायक्ररति ज
उपाध्य य द्वारा वेद कथा होगी।

भवदीय बाव्राम भाग (म त्री)



महाशियां वी हट्टी (प्रा॰) लिंड

क्रीन 539609 **637987 637341**







सदर्शन चक्रघारो, महान भारत के प्रशोता, युग प्रवर्त्तक, रिपुदनन, गोपालनन्दन, तप ग्रीर सयम के मादर्श, महान् राजनेता, महान् योगी, दीनबन्धु विश्वा-मित्र कर्मयोगी, आलीकिक दार्शनिक, आप्त पृष्य, योगेश्वर श्री कृष्ण जो महाराज की जन्माष्टमी पर मार्यमन्देश साप्ताहिक का एक भव्य शोषपूर्ण लेखी, वचनो गोतो से सुसज्जित विशेषाक द सितम्बर को प्रकाशित किया जा रहा है। आर्यसन्देश के ग्राहको को विशेषाक मुफ्त दिया जायेगा।

इसलिए जल्दी कीजिए, ग्रायंसन्देश साप्नाहिक का वार्षिक शुल्क २० रुपये या भाजीवन २०० रुपये भेजकर भपनी प्रति सुरक्षित करा लेवे।

सम्पादक भार्यसन्देश साप्ताहिक १५ हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१

लिए उत्तम स्वास्थ्य काँगडी फार्मेसी. हरिद्वार की औषधियां

सवन करें

वाला कार्यालय-६३, गली राजा के गरनाथ. २६६८३८ चावडी वाकार, विस्ती-६





वर्ष स्थल ४१ मूल्य एक प्रति ४० पैने रविवार, १ सितम्बर, १६=६

सृष्टि सबत् ११७२१४४००६ ब्राजीयन २०० ल भावपद २०४२

हयामन्त्रालः १६**१** विदेश में ४० डाक्टर, ३० पींड

प्रधानमन्त्री द्वारा माता चन्नन देवी धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय के कार्यों की सराहना

नई विस्ली, २६ शगस्त १६८६

साव जारत के प्रवानसन्त्री सी राजीय वाधी सी ने मादा बनान देवी सार्य वर्षा में की प्रविक्तात्रम, वनक पूरी, नई विस्सी द्वारा सीमती इन्दिरा मांची वी के ६० में बन्मदिवार के उपस्त्रक में साज से ११ नवन्त्रर १८०६ का आरम्म विश्व सार्थ ने प्रवादि बनाओं सीमयान का सुनारम्य करते हुए चिकि-रवास्य की टीम की सपने निवास स्वान पर दुनाकर सपना सासीनीय प्रवान किया। इस टीम में चिकित्सालय के स्वास्त्र हुए जाते के स्वितित्तर सार्थ में के स्वातित्तर सार्थ में के सार्थ प्रकार सार्थ प्रवितित्ति सार्थ प्रकार सार्थ प्रवास सार्थ सार्थ प्रवास सार्थ सार्थ प्रवास सार्थ सार्थ प्रवास सार्थ सार्य सार्थ सार्थ सार्य सार्थ सार्थ सार्थ सार्थ सार्थ सार्थ सार्थ सार्थ सार्य सार्थ सार्य सार्थ सार्य सार्थ सार्थ सार्थ सार्थ सार्थ सार्थ सार्थ सार्य सार्थ सार्य स

चिकित्सालय के सचिव भी मोन

प्रकाश धार्य ने भी राजीव गांधी को की विश्वले पाच नयों में भीमती गांधी के अन्य रिनों के धावकर पर किए गए कार्यों की रिपोर्ट तथा अब तक विश्वलाक बारा किए वर्ष कार्यों की स्थान कहा में किए साम कर की मिल्लाक बार प्राप्त के बात की मिल्लाक कि देव जो भी के अन्यवित्त पर दिल्ली के ६० जांधी में अब लाकर ने न परीत्रक किये जांधी में ६९ हवार स्कूजी वच्ची के स्कूजी में आ जांकर ने न परीत्रक किये नार्यों देश हवार ने न परीत्रक किये नार्यों ६९ हवार ने न परीत्रक वियों के स्कूजी के स्क्रिय स्वाचीय स्वित्त की स्कूजी के स्कूजी के स्कूजी के स्कूजी के स्क्रिय स्वाचीय स्वाचित स्वाचचित स्वाचित स्वाचचित स्वाचित स्वाचचित स्वाचच स्वाचित स्वाचच स्वाचच स्वाचचित स्वाचचित स्वाचि

प्रकाशित कराकर वितरित किये जार्सेके तथा इस स्वस्तर पर अवस्य १०० ति -शत्क नेत्र सापरेशन किये जार्सेके।

प्रचानमन्त्री श्री राजीव गांची जी ने चिकित्सासय के कार्यों की श्रूरि-श्रूरि प्रचला करते हुए विकित्सासय के स्रीय-कारियों तथा डाक्टरों का कन्यवाद किया।

> श्रोमप्रकाश श्रायं विकित्स सय सचित्र

आर्यसमाज दीवान हाल का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न १६८५-८६ के लिए पूर्वाधिकारी पुर्नीनर्वाचित

की तैयारियां प्रारम्भ

धार्यक्षमान वीवांन हाल का १००वा वाचिक धानियेवा २५ धानस्त को की सूर्य वेन प्रचान की धान्यज्ञवा ने तीहार्वपूर्त नाता. वरण में सम्मान हुया। वर्ष वर्ष के धाव-स्वय की स्वीकृति के परवादा धान्यमानी विद्यान्य में प्रचादी वाने वाली व्यक्तिकों के कार्यज्ञम को धान्यम का विद्या गया तवा नत वर्ष के धान्यज्ञारियों एन धान्यस्य वदस्यों को वी शान्यानी वर्ष १९८६-६६ के लिए श्रिवांत्रिया को शिवांत्रिया।

धार्यसमाव वीवान हान दिल्ली के मन्त्री सी मुलकर मुरत की दोवसा के सनुवार धार्यसमाय वीवान नाम धार्मी समारोह के कामक्रम १६ दिसम्बर से ११ दिसम्बर तक वृश्याम से सायन्त होंगे। बिनने चुकुँव वारासस्य वक्ष मायन, सेलन प्रतियोगिताएँ, वीं क विज्ञानों की स्वीक्रिया तथा विविक्त स्प्रमेलाँ का

द्यायोजन होना । समारोहस्वत पर धनेक

वच्चेंनिया भी सायोजित नी जायेंगी।
विजये सार्यव्याज दोशना हाल के कार्ये
एव सायोजनी को स्वरण कराती भौकिया
होगी। इस स्वरण्ठा पर कहीं भव्य स्थारिका, सनेकी पुस्तकी, ट्रैनटी धीर फोस्चर्स
का प्रकारण किया जायेंग वहा पुरातन
सार्य-साहित्य प्रदर्शनी का भी सायोजन
होगा।

आर्यसमाज दीवान हाल शताब्दी सभारोह

पाठक वृन्द ध्यान दें बायंत्रनेया साप्ताहिंद्र का द वितवर बायंत्रनेया साप्ताहिंद्र का द वितवर बायंत्र विशेगक के क्य ये प्रकाशित होगा। यत इत बार का मक केवल समावारों के किए शीनार पंत्र का प्रकानित किए। या रहा है। १५ वितव्यर का प्रकाशों हम केवांत्र करेंगे। २२ सितव्यर के सार्यंवर्णये हर सप्ताह नवीन केवो और बो-बूर्ण साम्यों के साय पुरुष सम्यादक मार्यंवर्णये स्थाप दुवा।

समाचार सन्देश

दिल्ली श्रार्य प्रतिनिधि द्वारा साप्ताहिक सत्सर्गों की व्यवस्था

१ सितम्बर १६८४ रविवार

आर्यंसमाज दीवान हाल मे प० क्षितीश वेदालकार द्वारा प्रवचन

धन्धामुगस प्रतापनगर--प० देवराज वैदिक मिक्नरी । अशोकनगर-प० मुरारीलाल बेचैन । बार्यपुरा -प॰ रमेश जन्द वेदाचार्य । ग्रानन्दविहार-प॰ग्रमर नाथ काम्त धार्योपदेशक । किंग्जवे कैम्य--धार्यंदीर रखबीवसिंह राखा। किशनगंज मिल एरिया -स्वामी यज्ञानन्य सरस्वती। वांचीनगर-प० चून्नीबाल बार्व । गीता कालोनी-इ० भीष्म । गोविन्वपुरी-प • रवीन्द्रनाम पाठकः योविन्द भवन---प० वेदप्रकाश शास्त्री । जनकपूरी बी २ -डा० सबदवाल सुटानी। जनकपूरी सी० 3 - प० राधेवयाम शर्मा एम०ए० । टैगोर गार्डन -- प० सोमदेव शास्त्री। तिमार-पर — प० सन्देव शास्त्री । तिलक नगर----प० जसमगवान भी । देवनगर — डा० रमु नन्दन सिंह्। नगर शाहदरा — प॰ झमी-चन्द मतवालाः। न्यू मोतीनगर -- प० उदय श्चीरत सर्वाचाय । नागयस्विहार -स्वा० प्रजानस्य सरस्वती । प्रजाबी वाग-प्र केटल्यास द्वार्थ । पजाबी बाग एक्सटेंशन---

माबार्वे हरिदेव सिद्धांत भूवण जी । महरौसी -- मा० मोहनसास गांची । सहा-वीर नगर-- पं बसवीर सिंह आक्सी। मौडस बस्ती---श्रीमती प्रकाशवती वास्त्री मोतीबाग-प० सुबीबकुमार शास्त्री । राजाप्रताप बाग-महात्मा मुनी शकर वानप्रस्य । राशैरी गाईन-डा० केट प्रकाश महेदवरी । रमेश नगर-पाचार्य रामवीर शास्त्री। रचुवरपूरा--श्री मुनी देव भवनोपदेशक। साजपत नगर---शा खुविकृष्ण शास्त्री । लहुडु ाटी-प् नेत्र पाल भार्य । ही बखास --- प० इक्तिवन भार्य। त्रिनवर—प० चमनलास जी। विवेक विहार -- प० ब्रह्मप्रकाश शास्त्री। श्रष्टोक विद्वार-प० सस्यवेव स्नातक रेडियो कलाकार इस्यादि ।

> व्यवस्थापक स्थामी स्वरूपानस्य प्रथिष्ठासा वेद प्रचार विशास दिल्ली सभा

तांसमाज मन्दिर दीवान हाल दिल्ली मे

30 ग्रगस्त मे अमितम्बर तक

वेद प्रचार सप्ताह

प्रतिदिन प्रातः ७ ३० वजे से ६०० वजे तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ

> र० ग्रगस्त को प्रात ७ ३० बजे से बावणी उपाक्रम सामूहिक यजोपबीत संस्कार एवस्

हैदराबाद सत्याग्रह बलिदान-दिवस

३१ ध्रयस्त से ६ सितम्बर १८०४ रात्रि ७॥ बजे से ६ बजे तक ब्राउंसमाज के विद्वाल महोपदेशक वैद्य रामकिकोर जी द्वारा

वेद-प्रवचन

प्रवचन से पूर्व भी गुलाव सिंह जी 'राषव' के सबन होंने। ७ सितस्वर शनिवार से प्रात ७ २० बजे से योगीराज श्री कुड्ण जन्मोस्सव बनाया वायेगा। कृत्या उपरोक्त कार्यक्रमों में पंचार कर बमें साम उठायें।

> मूलचन्द गुप्त मन्त्री धार्यसमाम मन्दिर दीवान हास

वेदप्रचार सप्ताइ

वेद सप्ताह ६ सितम्बर से १४ सित-म्बर १६८५ तक सार्यसमाम स्रोक विद्वार केव-१ में मनाया जाएवा।

> प्राप्त ६ वणे से ७ ३० तक यज्ञ जहार जी वेदप्रकाश जी कोत्रिय

राजि ८ ३० से ६ वर्षे तक भवन १ ०० से १० वर्षे तक वेदकवा (भी वेदककास वी स्रोजिय)

१६ सितम्बर १८०६ रविवार पूर्वाहृति प्रात ७ ३० से ११३० तक

भवन भी विश्वय मूचमार्य एव आर्थ स्त्री समाज सम्रोक विद्वार-१

उपवेशा डा० उवा रानी शास्त्री एव श्री वेदप्रकाश धोत्रिय।

> जसवन्त लाझ प्रदान कार्याचय मधी प्रार्थसमाज संशोक विहार, फेज-१

नत वर्षों की नाति प्रायंतमान तस्त्रा पूरा बाराखांची में विनात ३० प्रमास्त के ७ वितान्वर ११८५ (बावणी से सीकृष्ण जनमाटसी) तक वेदान्नार सप्ताह मनाया बाएगा जिसमें की समंगल सास्त्री, भावांचे पुक्कत ततारपुर गावियाबाद व पायमजाद समीताचार्य, बारावारी पवार रहे हैं।

कार्यक्रम

नित्य प्रतिदिन प्रात ७ वर्षे हे ६ वर्षे तक विभिन्न परिवारों में विशेष सक्ष एव रात्रि ७ वर्षे हे १० वर्षे तक सज्ज, भजन व प्रवचन द्वार्थं माज मन्तिर, सल्लापुरा वाराणसी में होता।

> बुढदेव द्यार्यं व्यवस्थापक व्यार्थसमाज नल्लापुरा, वारासबी

श्रावश्यक सूचना

विल्लां जी सभी तथी वार्यसमायों को सूचित नि या जाता है कि दिस्ती बार्य प्रतिविधि समा में उपदेशक अजनीय-केशकों की पूर्व व्यवस्था है। घाण वार्यने साध्याहिक सत्यंगों के लिए सप्देशक, समीत कलाकारों की सेवा प्राप्त करें। एक सप्ताह पूर्व पत्र व्यवहार कर प्रप्त सस्य के बिए प्रदेशक महानुष्पायों का कर्यक्रम रहाँ। हमें परेल न० ३१०११० पर सामके करें।

व्यवस्थापक स्वामी स्वरूपानन्त सरस्वती स्रविष्ठाता वेद प्रचार विव्याव्यव स्था

श्रार्यसमाज श्राशा पार्क में स्वतंत्रता दिवस समारोह

विनोक १५-८-८६ को प्राचा पार्क निवासी कल्याण सभा (रिवा॰) की धोर से कासीनी मे ३१वां स्वतम्त्रता दिवस समारीह वडे इर्वोल्झास के साथ मनावा वया । इस सबसर पर व्यवारोहरू थी श्चान्तिप्रकाश जी नारन प्रधान, सार्व समाज बाक्षा पार्क के द्वारा किया गया। स्थतन्त्रता प्राप्ति के किए जिन महान वीरों ने धपने प्राव्हों की बस्ति ही थी उन को श्रद्धांश्राणित श्री वर्ष । माननीय प्रधानमध्यी भी राजीव गांची के साहसिक कार्य धीर सम्बन्ध की प्रश्नमा की नई। राष्ट्रीय भावनाओं से बोत प्रोत राष्ट्रीय बीत तथा धन्य सास्कृतिक कागक्रम प्रस्तुन किये गये। समाके प्रधान श्री सरदार सिंह के द्वारा बच्चों से सिठाई सादि बॉट कर समारोह का विधिवत् समापन । कया

निरजन देव स्थदेश मन्त्री आर्थसमाज भागा पाक नई दिल्ली

इम सुधरेंगे जग सुधरेगा

कहाचारी जीव मुनिजी साबकल पजाब में एकताव शान्ति के लिए वैदिक सकोव वेद प्रवचनों का सायोजन करते हुए शान्ति यात्रा कर रहे हैं।

> कृष्णा कोछड़ मन्त्रिसी

चतुर्वेद पारायण यज्ञ की प्रणीहित

यज प्रकल्प कराइट नगर दिस्सी में २१ धनस्त से धायोजित चतुर्वेद पारावण यज की पूर्णाहृति १ श्वित्सर रविवार को होगी। दिस यज के ब्रह्मा एव ऋतिष्क् स्वामी भीवनातन्व तथा एक स्वपति सारणी हैं। प्रारम्भ के विन से ही जवालु जन मारी सस्या में यज्ञ में जाय लेते रहे हैं। यज की पूर्णाहृति ११ वसे होगी। स्वर्णक सुरोग्य विद्यानों के प्रवचनों का स्वर्

> निवेदक धर्मन देव

युना वर्षं के उपलक्ष्य म ६४५ से रात्रि = वजे तक भाषण-प्रतियोगिता

विषय श्रीकृष्ण क्यो महान् थे १

श्रीकृष्ण जमाध्यी पर स्वेट ३० बवेतक पुरस्कार वितरण बी बनिजनरेट प्रवान सम्पादक दनिक वीर सजन साध्य सार्वेजनिक सभा स्वेठ से राज्ञि १० बजे तक

मुख्य वक्तागर

का॰ चनपाल पाय महान भी दिस्सी बाय प्रतिनिधि बभा श्रीप्रेमचार योवल ब्राच्यक्ष ला॰ रामचाह प्रनाब वाद वर्षाच ट्रस्ट वदा वावार सामा किपोरी लाख प्रसिद्ध समाव सवी घायसमाज करर वाचार ,स्रीमती प्रकास सर्वो महासचिव प्रातीय प्राय महिला समा दिल्ली र य

की क्षेत्रकारुक्त रेठी विकास प्राथसभाव प्रताप नगर की प्रतिक कुमार साथ वहान ती के दीन साथ पुत्रक परिषद् दिल्ली प्रदेख साथाय देवता साल्यी उपप्रवानाचाय ला॰ गोवियराव पुरुद्दल दीनियर सैकण्टरी स्कूल राव नाग रोड

बी जुनस किसोर स्वालक बैटिक मुझ्णासय बायसमाक पुन बगस बी बमबीर प्रधान के प्रोय साय युवक परिवर् दिल्ला प्रदेश य० बुची राम खर्मी सिक्टाता महाखब पूनीसाल बेद प्रचार कर्माव ट्रस्ट

नोट— १ श्रीवती प्रकारा धार्या धार्याय देवज्ञत शास्त्री भी क्षमवार जी जावत्त्र प्रति योगिना के निर्वायक होंगे।

२ साबायप्रकारु परीक्षामे बैठ २०० साम सामाओं से प्रयम १० पुरस्कृत होगे।

 स्रोकतायक की कुच्या ट्रैकर ६०००० ख्वावाने में सहयोग देने वाले खाय सञ्चन श्री यहाँ सम्मानित होंगे।

चन्द्रमोहन आयं



एम डी एर

सिकाकाई रीठा खाँसमा हरड बहेडा चन्यन व सम्ब सर्गाच्या बडी बटियों से बनाया गया एफ डी इन्द्र विकासाई गाऊइर एक घरचना सामकारी प्राकृतिक बैड है। इसके कोई रालामनिक पराच नहीं है।

एव की एव शिकाकाई पाजवर का साझ है हैं नियमित प्रयोग की अमे ।

निर्माता महाधियाँ बी हुट्टी (प्रा०) सिंक 9 44 इण्डस्ट्रियन एसिया कीर्ति कमर कर्त सिल्डी-110015 फोन 539809 537987 537348

योग एव सस्कृत प्रशिचाण शिविर सम्पन्न

ज्ञानपुर (वाराससी) विश्वभारती अनुसाधान परिषद् ज्ञानपुर द्वारा आयो चित्र योग भीर संस्कृत प्रशिक्षण शिविर का समापन करते हुए सम्प्रकृति व सस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी के कुलपति डा॰ रागकरण समा ने कहा कि योग विश्वको श्रावकम मैस्मरिक्म कहा वाता है ऐसी कोई बल्लु नही है। योग वह बस्तु है को हमारे वारीर इदिय साल्मा शन और बुद्धिको दश प्रदान करता है। महर्षि पत्रवलि के मत को उद्घत करते हुए धापने कहा कि जीवन शक्की तरह बीने के चार मूझ मात्र है -- मैत्री करूणा मुविता भौर खपेक्षा इनकी व्याख्या करते हुए बापने इन्हें अ बन में बपनाने पर कोर दिया। सन्क्रुत शाया की चर्चा करते हुए बापने कहा कि संस्कृत भाषा एक महाभाषा है। वो देश की सभी भाषाओ को सभी भाव प्राथियों को एक दूसरे के श्राथ जोडने ने ब्रस्थन्त महत्त्वपूरा सुमिका निभा रही है। कायकम के बारस्थ मे परिवद के निदेशक डा॰ कपिल देव द्विवेदी ने मुख्य धतिथि का स्वागत करते हुए योग कै विभिन्न पहुलुक्यों पर प्रकाण डाला और शिविर में छुत्री द्वारा उसाहपुरा भाग सने पर उन्हें बचाई दी। परिषद् के बर्धका डा भारते दु द्विवेदी ने परिषद् की उपलब्धियों का विवरण प्रस्तुत किया। समारोह की धम्यवाता बा० बालचन्द श्रीवास्तव मू०पू० तक्य शिक्षानिवेशक ७० अ० ने की। प्रापने इस अकार के िविर प्रतिवृत समाने की भपील की। इस धवसर पर यीवासनी तथा धायवीर दस के प्रशिक्षक भी कीतिबेच शास्त्री द्वारा धास से त्से हे सरिया मोडमा काच पीसना कागज की तरह वाली फाडना बादिकाभी प्रदक्षन हुआ। समारोह के भात में शो॰ विद्याशकर त्रिपाठी ने भाय बाद ज्ञापन किया।

> धायन्तु धाय प्रचार मात्री विश्वमादती अनुसंधान परिषद् ज्ञानमुर वाराससी

श्रार्य वीर दल हरियागा का श्वा प्रातीय महासम्मेलन २०, २१, २२ सितम्बर को कैथल में होना निश्चित

पसवस । जाबदेशिक बायबीर रख इरियाणा का नीवा प्रात्मीय महास्यलेकत रख वर २० वे १२ सितम्बर रक्त कीमती इत्तर गांधी कत्या महाविधालय कैयल में वडी प्रमास से सनाया काना निश्चल हुया है। सन्मेशन के सम्बन्ध साला रास गोंपाल की बागस्य प्रमान सावदेशिक साथ प्रतिनिधि समा नर्ग रिवसी होंगे

शुक्रवार २० सितम्बर की राजि को साम बीर गोण्डी तथा विवास करि बामें का नहीं से। "गिवार २१ ६ ८५ को प्रात यक्ष के प्रोत राम विवास के प्रोत राम विवास के प्रोत राम विवास की का प्रवचन होगा। साम ३ वर्ष साम बीरो को अच्य रसी नवर के प्रवच में से गुजरोगी इस के १००० साम बीर पूण गण्यक में भाग लगे। राजि को राज्येस समस्याप धीर प्रावस्त का सम्मान सम्याप प्रतिनित्त साम वीर प्रयास साम साम साम प्रतिनित्त साम वीर प्रयास साम साम साम प्रतिनित्त साम वीर प्रयास साम साम साम वीर (विवास) साम प्रवास साम वीर प्रयास साम वीर प

दिकार २२ ६-५ को प्रात प० धिवकुमार की शा शी का प्रकलन यशोप रान्त होगा। साथ की र का कोर साथ समाज सम्मेषन का भी प्रीमानन्व की सरस्वती की सम्बद्धता में होवा मुख्य क्या भी बीक राम की ब्रिडियल सव बानन्व की भी का प्रकाश संस्थार्थी सावास संस्थितिय की होते।

स्वामी जीवनातम्य जी सरस्वती यह के बहुत होने। साला त्वा शोर्व्ही का सपोजन प्राचास वेश्वत जी (उपप्रधान संसापित सन्वरेषिक भ्रास वीर दल) करते। कहि सम्मधन का समायोजन डा॰ राखा प्रताप सिंह गन्नीरी करते। सम्मेलन के स्वास्तास्थल श्री बाबूरास जी गुप्ता ए बोकेट होने। सम्मेलन के सबो जक श्री हरीराम जी बाय मण्डलपति रहेता

आप खी इस नहत्त्रपुरा सम्मेलन म सपरिवार कि निमो सहित माग सल्बा मे सादर निमंत्रित है स्पया इस सम्मे निमा माग नकर साम गक्ति एव एकता का परिवाद। इस की तन मन चन से सहायता भी कर।

> श्रजीत क्रुमार ग्राय मत्री भ्राय वीर दल हरियाचा

श्रावश्यक सूचना

दिल्ला ए य प्रतिनिधि समा के कास कर्ता मनान्य २ व्यवेषक प्रजनीयदेखक ता त अ ६ वण्या एक वाग्यार नरे समा काया स्वयं प्रवस्था प्या प्रवस्था प्

भ यवाद ।

व्यवस्थापक समिष्ठाता वेदप्रचार 经经验的现在分词的现在分词的现在分词的现在分词



建筑建筑 计设计 经实际 经免债 医电影 भव्य वशषाक

सुदर्शन चक्रधारी, महान् भारत के प्रशेता, युग प्रवर्त्तक, रिप्दमन, गोपालनन्दन, तप और सयम के भादर्श, महान् रा अनेता, महान् योगी, दीनबन्ध विश्वा-मित्र कर्मयोगी, ग्रालौकिक दार्शनिक, ग्राप्त पृष्ठ्य, योगेश्वर श्री कृष्ण जो महाराज की जन्माष्टमी पर आर्यसन्देश साप्ताहिक का एक भव्य शोधपुर्ण लेखो. वचनो गोतो से सुसज्जित विशेषाक = सितम्बर को प्रकाशित किया जा रहा है। आर्यसन्देश के बाहको को विशेषाक मूपन दिया जायेगा।

इसलिए जल्दी कीजिए, मार्यसन्देश साप्नाहिक का वार्षिक शुल्क २० रुपये या भाजीवन २०० रुपये भेजकर भपनी प्रति सुरक्षित करा लेवे।

सम्पादक ग्रार्थसन्देश साप्ताहिक १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ ፠፟ጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜጜ^ፙ

लिए उत्तम स्वास्थ्य कांगडी फार्मेसी. हरिद्वार की औषधियां

सेवन करें

अधिकारी परोक्ति गुरुकुल कोगङ्

शाला कार्यालय—६३, गली राजा केवारनाच, फोन २६६६३८ चावडी बाजार, विल्ली-६



वय १ शक ४° वस्य एक प्रति ४० वैसे रविवार ११ सिसम्बर १६-१ वाविक २० व्यो मृष्टि सबत् १९७२९४१०=६ भाजीवन २०० व्यय भावपद २०४२

दबामन्दान्थः — १६१ विदेश में ४० डालर ३० पॉंड

आर्यसन्देश विशेषांक का विमोचन एवं

खण्ड खण्ड भारत कोअखण्डित करने वाले

महामानव का मधुर स्मरण

७ सितम्बर दिल्ली, ग्रार्यसमस्ब दीवानहाल दिल्ली के तत्त्वावधान वे बीकुव्ल जन्माब्टमी घूमवाम से मनाई गयी । इस व्यवस्य पर श्री रामगोपाल खालवाने की प्रध्यक्षता वे अनेक बक्ताओं ने योगेववर श्री कृष्ण के पवित्र एव उदात्त जीवन चरित्र पर प्रकाशक डाला। केन्द्रीय ससदीय मन्त्री श्री एच० के० एल० भगत ने आर्थसन्देश साप्ताहिक के मोनेस्वर श्री कृष्ण विशेषाक का विमोचन किया। श्री भगत ने श्री कदण की महानताओं का वर्णन करते हुए कहा, मुझे उनकी दार्शनिक मान्यताको मे प्रगाद श्रद्धा है। इस बसार ससार में तो कुछ दिन आने कूछ दिन पीछे एक दिन सब को ही बाना है परन्तु यह स्मरण रक्षना चाडिए-नेन खिन्दन्ति शस्त्राणि शस्त्र इस घारमा को नहीं काट सकते बौर म ही अला सकते, बारीर पर ही बाबात हो सकता है। सरीर ही भरता मिटता है धारमा नहीं। इस-लिए यह मान्यता मनुष्य को सनित भीर साहस देती है। उन्होंने मार्थ-संमाज और महर्षि दयानन्द के अन्-क्लियो द्वारा किये गए भीर किये जा रहे कार्यों की पूरि-भूरि प्रजसा की, श्री सनत वे बताया में कुछ सक्य पूर्व साहौर गया था, मैं वहा डी •ए • बी • कासिज भी देखने गया,

मैंने बहु। के रिजस्टर में लिखा यह कालिज अब इस्लामिया कालिज बन गर्या है यह पहले डी॰ ए॰ बी॰ कालिज बा जिसकी स्थापना महारमा हस राज ने की थी। मैं इसी कालिज में पड़ा है। यदि यह डी॰ ए॰ बी॰ कालिज न होता तो न जाने कितने मुक्त जैसे साबारण परिवार के लोग पढ ही न पाते। उन्होंने सामयिक चर्चा करते हुए कहा—जिस मारत की सुख्डता के लिए महाँच रवानन्त, महारमा गाधी तथा सनेक निलदा-नियों ने प्रपता सर्वस्व प्रपंण किया है वह भारत सदा सक्षण्ड रहेगा उसे

कोई तोड नहीं सकेगा।

श्री रामगोपाल बालवाले ने सपने वस्तव्य में कहा, साज से पाच हजार वर्ष पूर्व चक्र घर को कुरुए को महाराष्ट्र ने लक्ष्य हुए गारत को सलस्य सारत किया था। बाल-तासी राजासो की कुग्ता से पिसती प्रजा को सपनी कुशसनीतियों से खुटाया था। बाज जावस्यकता है श्री कुरुएग की नीतियों सौर महान-तासों को सपनाने की

इस सबसर पर ओ प० जय-प्रकाश आर्थ प्रतिनिधि (मूतपूर्व) इमाम बेतिया एव यशपान सुधाशु तथा दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान ने भी धपने विचार प्रस्तुत किये।

स्रायंसमाज दीवानहाल में एक सप्ताह तक श्री महात्या रामकिकोर हारा मनोहर एव प्ररुपाप्रद वेदकार हुई तथा श्री मुनावितह राघव हारा मचर अजन हुए। वेद सप्ताह के सबसर पर सजुर्वेदीय स्त्रा का भी धायोजन किया गया था जिसके बहा। या प० व्यापाल सुघाशु तथा स्ट्राविक श्री सुरेन्द्र सास्त्री एव श्री धर्मनीर शास्त्री थै।

आर्यसमाज का शिष्टमण्डल प्रधानमन्त्री से मिला

पार्यसमाच का विष्टमण्डल सार्वदेशिक ग्रार्थ प्रतिनिधि समा के प्रवान श्री रामगोपाल शालवाले के नेत्रव मे प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांची से जिला और ज्ञापन दिया। इस जापन में कहा गया है कि सैनिको के सेवा कार्व में रहते समय कुछ तस्य उनकी सम्पत्ति बादि पर कब्बा कर लेते हैं। इसलिए सैनिकों को इस मामले में वैचानिक सरकारा दिया जावे तथा इससे सम्बद्ध मुक-हमो का निपटारा शीध किया जावे। ज्ञापन मे यह भी धनुरीय किया गया कि प्रवाबी की लिपि देवनागरी की जाये। इससे पजाव कें हिन्दी का विकास होगा। श्री

रामगोपान बालवासे ने बार्यवसाय दीवानहाल की सताव्यी का उद्वा टन करने का बतुरोव किया। प्रवान क्ष्मी ने विद्यान्तर इस निमन्त्रण् की स्वीकार करते हुए इस ध्वक्तर पर एक डाक टिकट जारी करने की ब्रह्मावना पर भी विचार करने का ब्रह्मावना पर भी विचार करने का ब्रह्मावना एक भी वालवाले ने कारमीर की समस्या और उसके समाबान के लिए महत्त्वपूर्णं प्रभाव देवे। उन्होंने दिल्ली में कनता जासन के क्षमय पुरानी इमारतों के सामने सम्प्रदाय विशेष के लोगों की पूजा करने की अमुमति समाप्त करने का नो अनुरोध किया।

г

आर्यसमाज सफर्दरजंग के ब्राधिकोत्सव पर विशाल सम्मेलन

ग्रार्थममाज सफदर जग इन्क्लेव नई दिल्ली मे वेद सप्ताह के अवसर पर वार्षिकोत्स्व का ग्रायोजन किया गया। इस ध्वसर पर प्रातकाल बृहद यज्ञ श्री डा॰ वाचस्पति के बह्यात्व में सम्पन्न हुआ। रात्रि मे प • यशपान सुधाशु (सम्पादक आर्य सन्देश) द्वारा भ्रत्यन्त रोचक एव द्याध्यात्मिक ज्ञान से भरपूर वेदक्या हई, तथा श्री वेद-याम के मधर भजन हुए। रविवार म सितम्बर को विशाल सम्मेलन का समायोजन हमा। इस ग्रवसर पर गुरकुल कौगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार के कूलाधिपनि श्री डा॰ स यकेतुतथा कुलपति श्रो डा॰ सत्यकान वर्माका

सव्य स्वागत हुआ। इस माररोह की अध्यक्षता श्री डा॰ सत्यकेतु ने का। सम्मेलन में डा॰ सत्यकेतु ने का। सम्मेलन में डा॰ सत्यकाम वर्मी प॰ जीमनी झारती, श्री डा॰ वाचस्पति श्री उपाच्याय श्री प्रमानक श्रीघर श्री कुर्युदेव जो बादि वक्ताओं ने अपने जिलार श्रीकर करें ।

डा॰ मत्यकाम वर्मा ने कहा—
गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के
प्रति जो झार्य जगन मे एक बास्वा बनी हुई थी। स्वामी अद्धानत्व ने जो इस गुरुकुल के माध्यम से स्वप्न देखा वा मैं उसी स्वप्न को पूर्ण करने का, गुरुकुल विश्वविद्यालय गौरव को पुन स्वापित करने का हरसम्भव प्रयत्न कस्ता।

प० जैमिनी शास्त्री ने श्री कृष्ण के मोह र्राहृत मद रहित स्वरूप का मनोरम व्याख्या से चत्रण किया। डा० वाषस्पति ने श्री कृष्ण के दार्घ-निक, नीतिमान योद्धा बादि गुणो का भरपूर व्याख्यान किया। श्री प्रमावन्द्र श्रीषर ने श्री श्रपना श्रोजस्वी सावाग देते हुए कहा आयसमान के सगढाई तेने का समय सा गया है।

दिल्ली झायं प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने कहा —श्री कृष्ण का वास्त्रविक न्वरूप हिन्दू समाज से सो गया है। केवल वास्त्रकाल को लीलाझों को पौरागिक जगत् याद करता है। उनका हृषिया?ों से सजा झाततायियों को ललकारता ख्रास्त्रका खरूप

कौन बाद करेगा ? उनका ध्वर्षाध्वतं भारत को एक भारत करने का महान् कौछल कौन बाद करेगा ? सारयो बनका प्रकृति के स्वाप्त करने का महान् की कि स्वाप्त के प्रकृति के स्वाप्त हो हैं।

आर्यसमाज मन्दिर के प्रधान श्री हरबन्स बाल खेर ने मन्दिर द्वारा चलायी जा रही गतिविधियो का उत्साहबर्द्धक परिचय दिया।

राजधानी में वेदप्रचार सप्ताह की धूमधाम

षार्यसमाज खालोमार वाग ने दिल्ली मे बेद मप्ताह के प्रवसर पर घनेक विद्वानों को प्रामानित्र किया। प० प्रकाशचन्द्र शास्त्रों के द्वारा एक स्पताह वेदरूषा हुई। श्री बह्मप्रकाश वागीश यज्ञ के बह्मा थे श्री कृष्मा खन्मास्टमी पर श्री प० सच्चिदानव खान्मी डा० महेस विद्यालक्षा हा० धर्मपार महानन्त्री दिल्ली आ प्रकाश म्यात तथा डा० प्रवास वेदालकार प्राप्त वक्ताभी के प्रवचन हुए।

भव्य जुलूम

श्रार्थसमाज रागा प्रताय बाग विल्लो की थ्रो से श्री कुटगा जन्मा-हटमी पर एक भव्य जलुस का श्रायोजन क्यागया जिसमे धनेक श्रायंसमाधों ने भाग लिया। दिल्ली श्रायं प्रतिनिधि समाद्वारा भी नेतृस्व एव सहयोग दिया गया।

नवीन श्रार्यसमाज दयानन्द विहार का वेदमप्ताह

स्रायंभमाज दयानन्द विहार दिल्ली मे २७ प्रगस्त से १ सितस्वर तक वेदकथा का प्रायोजन विशा गया। इस प्रवसर पर पर प्रशा सुभागु के द्वारा वेदण्यचन हुए। सेत की सामिक जनता वे सगाघ अदा से सह-बदकर साग विया।

श्रार्यसमाज कृष्णानगर में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

धार्यसमाज कृष्णनगर में जनमा-कटनों के ध्रवनर पर धनेक वस्ताधों ने ध्रपने विचार ज्यस्त किये। नमा श्रवान श्री सूर्यदेव ने श्री कृष्ण के उज्ज्वल वरिख का श्रद्धालु जनता को स्मर्ण करावा। दिल्ली धार्य प्रति-निधि समा द्वारा किये जा रहे उत्साह वर्द्धक कार्यक्रमों का भी परिचय

मण्य उपर्वा प्रार्थयमाज मागा प्रताप वाग श्रायसमाज सीताराम बाजार ती की घो से श्री कृष्ण जन्मा- दिस्ती

इस बार्यसमाज में डा॰ वाच स्पति उपाध्याय की मनोरम बेदकथा हुई बेद सप्नाह के हो ब्रन्तर्गत प्रात काल यज्ञ का भी आयोजन किया गया।

त्र्यार्यसमाज सदर बाजार दिल्ली

महात्मा रामकिशोर वैश्व की गीना एव वेद की पुनीत शिक्षाभी पर माधारित मचुर शेली मे प्ररक्त कथा हुई। हैदरगबाद सत्वाग्रह बिलदान होने वाले वीरो का भी स्मृति दिवस मनाया गया।

आर्यसंदेश का संकल्प

धार्थसदेश की व्यवस्था तथा लेको के स्तर में सुधार के लिए तथा वितरण सक्या में वृद्धि करने हेतु एक बैठक बुखार १२ धमारतः १२५ हनुमान रोड में समाप्रधान श्री सूर्य देव जी की प्रध्यक्षता में हुई। इस बैठक में डा० धर्मपाल डा० गणेशी-नाल श्री विमनकान्न धर्मा श्री राजेन्द्र दुर्गा श्री धजय मल्ला, श्री श्रद्धानन्द प० यशपान जी सुवासु श्री रामकान्य दास आर्थ, श्री धावार्य रामकिशास्त्र श्री धावार्य रामकिशास्त्र श्री धावार्य धासाराम धादि कायकरांध्रो धौर विद्वानो ने भाव लिया।

ग्रायंसदेश ही वस्नुत दिल्ली भाय प्रतिनिधि सभा द्वारा वेद प्रचार के लिए किये जा ग्हे कार्यों तथा ग्रन्थ समाज कल्याए। के लिए किये जा रहे कार्यों का यथातथ्य चित्र प्रस्तुत कर सकता है यह इस सस्याका विगुल है। यह इस सस्या का शख है जो लोगो का ध्यान घ'-कवित करता है कार्यकलायो का विवरण प्रस्तुत करता ८ तथा अघि-कारियो एवं कार्यकर्तामों को प्रशस्त पथ पर ग्राग्रसर होने की प्रेरला देता है। आयं सदेश में सुधार की बात प्रारम करने से पूर्वमहामन्त्री डा० धर्मपाल ने सम्पादक श्री यशपाल जी सुषाशुका निष्ठापूर्वक कार्यकरने भीर भार्यसदेश के स्तर को किचा उठाने के लिए सत्प्रयास करने के लिए बन्यवाद दिया और बताया कि यह बैठक जहाइ स बात पर विस्तार

करने के लिए है कि आर्य सदेश किस प्रकार मनुष्य के शारीरिक आरिसक और सामाजिक कल्यारा के लिए कार्य करे। इस बात पर भी विचार करने के लिए हैं कि किस प्रकार इसकी धारस निर्भर बनावा जाये। बड़े-बड़े लक्य रखने की आवड़्यकता तो हैं पर आधार भूमि की नृउना को भी न्यान से रखना आवइयक हैं। हम तभी इूद मंकते हैं जब हुमारे पैर मजबूत जमीन पर टिके हों।

इन बातो पर विचार विमर्श के पदचात निम्नलिखित निर्णय सर्व-सम्मति से लिये गये।

१ इसकी पृष्ट सरूया १२ ही होनीचाहिए ।

२ समय समय पर विशेषाक निकाले जाने चाहिए। विशेषाक ऐसे आकार में हो कि लोग उसे समाल कर रख सक। साथ ही उनकी सामग्री मी सम्रहुणीय हो।

३ धार्य सदेश में विभिन्न स्तम प्रारम किए गये हैं। यह प्रच्छा प्रयास है। स्वास्थ्य सवनवी परिच्छा मी प्रारम की जाये। इसके लिए डा० विवेकपाल, वैद्य घोकार दल, वेद्य प्रहलाद दल, वेद्य नित्यानद धादिकी सेवाएँ प्राप्त की जा सकती

४ इसकी प्राधिक स्थिति में सुवार प्रावस्थक है। प्रार्थसदेश के व्यवस्थापक, सभा के सभी श्रविकारी श्री राजेन्द्र दुर्गा, श्री खजय घल्ला,

(क्षेत्र पृष्ठ ३ पर)

समाचार सन्देश

जैन ममाज भी श्वार्य प्रचारक से प्रभावित हुए विना न रह सका

निजारा (धनवर) स्थानीय खार्यमाज के वेदश्वार मप्ताह का गुभारम वेदिक प्रवक्ता डाक्टर धानन्द मृत्त (पूर्व नवाव छतारी) ने किया। डाठ सुमन में वेद के सन्देश से स्थानीय जनता का मन भोह लिया, वेदकथा के सुनर प्रवचनों से डाठ सुमन ने हेस्थानीय स्तर पर धार्य-, नमाज की ज्योति को प्रज्वलित किया धारवर्ष तो यह कि बार्यसमाज के दिशो दिवारमारों के जैन समुवाय ने भी डाठ सुमन को धपने

प्रसिद्ध तीर्थस्थल देहरा मन्दिर पर प्रामन्तित किया व उनके विचार सुने, झा नुमन ने प्रमने उद्योधन में कहा कि वद दो प्ररच वर्षे सना-तन सस्कृति का सन्वेद्य मनुष्य मात्र को प्रद्यात कर रहा है। वेद न नर-बलि को मानता है न पशु बलि को यह एक दुष्प्रचार है। हमें सारे सम्प्र-दायों के मोह से निकलकर वेद की विचारधारा की फैलाना है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि समा १५ हनुमान रोड,

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी समारोह

विताक ७ मितस्वर ८५ को साय अनेक ४ ७०० वजे से ११-०० वजे सांतवार कीटि के का आर्थसमम्ब धार्यपुरा सज्जी मटी विस्ती-६ के प्रान्त्रण में बडी पूमवाम के साव मनाया गया। जिसमें वैदिक सिद्धान्तों के प्रान्तार पर योगीराज कृष्ण जी-कु धार्ड्डाचित वर्ष प्रेमी एक कृष्ण जी-कु धार्ड्डाचित वर्ष प्रेमी एक सज्जों के सम्मूख प्रस्तुत किया । पर मस्तिया भी धार्योजित की गई। योगीराज के वित से सम्बन्धित भूभन्नों का धनोना कार्यक्रम हुमा।

बनेक अजन मण्डलियों ने कई उच्च-कोटि के विद्वानों ने जिनका लक्ष्य जनता के मध्य योगीराब का सच्च-बादर्श चरित पहुचाना है पथार कर उत्तम सायर्श किये। इस कार्यक्रम से पूर्व एक बृहद् यज्ञ का सायोजन किया गया। जिसका सरक्षकत्व पुरोहित धर्मेंग्र शास्त्री विद्याचानस्पति जो ने

> राजवीर ग्राय मनी ग्रायंसमाज ग्रायपुरा सब्जी मण्डी, दिल्ली-७

प्रान्तीय श्रार्य महिला सभा द्वारा हरितृतीया पर्व हर्षे उल्लास से सम्पन्न

हरितृतीया पर्व हर्षोल्लास और बडी धूमबाम से बढ़ा गार्डन के विद्यालतन प्रागण में मान्य बहिन सत्यवती जी वि नकृता की अध्य क्षता में सम्पन्न हुआ।

ग्राज के पर्व के मुख्य आकर्षण के बच्चो भीर नवयुवितयो द्वारा भिषक से भिषक दौड में माग लेना भीर परस्कार प्राप्त करना।

बहिनों ने बहुसस्या में यथा समय पहुँचकर अपने सगठन का परिचय दिया । किलकारियों मरती बच्चों की टोलिया फूली नहीं समाती बाँ। ऐसा लग रहा था जैसे कोई से प्राचन का हो। परस्पर प्रीतिकों के की प्रपनी हो विचा थी।

सभा यिकारियों ने बड उत्साह से भाग सेकर पुरस्कार बेदान किये। जिसमें सेका प्रकाना सरला जी महता मान्य बहिन गुणीला जी मान्द, तारा वैद्य, चाद रानी प्ररोडा क्रवादि।

१०० से भी भ्रांचिक प्रतियोगिता में बहिनों ने भाग लिया। प्रत्येक कार्यक्रम यथासमय सम्पन्न हो गया इन्द्रदेव ने महती कुषा की। यक्ष के समय नन्ही-नन्हीं बूदों से भ्रासीवीद

देकर फिर विश्राम करते रहे। सभा मत्रिणी प्रकाश भार्या

श्रार्यसमाज शकरपुर दिल्ली में बृहद् यद्ग

सकरपुर लन के वार्षिक जनो हारा मार्यवसाय के प्रागण में विराट् करू का सायोजन हुंझा, जिसमें प्र-धर्मवीर शास्त्री बहुग एव प्रवचन-कर्ता के। द स्वित्स्वर को जन्मास्टबी का पर्व भी मनाया गया जिसमें स्वामी स्वरूपानन्द ने झोजस्त्री कवि-तामी हारा कृष्ण चरित का बसान किया। (पृष्ठ २ का केव) **आर्यंसन्दे**श का सकल्प

श्री सुरैन्द्र हिन्दी श्री सुशोल महा-जन श्री विमल कान्न श्रमी श्री ग्रोमप्रकाश सुनैष्मा धर्मद्र बालीवन सदस्य बनाकः तथा विज्ञापन मह-योग देकर दिलवाकर प्रार्थ सदेश के कोष की।वृद्धि में निश्चेष सहयोग द। सभा के सभी उपदेशक प्रतिनिधि तथा बार्यसमाजी के मश्री स्वय बा-जीवन सदस्य बन धौर दिसम्बर ६५ तक कम से कम दस सदस्य ब्रवस्य बनाये।

१ माजीवन सदस्यों से प्राप्त धन प्रस्ता साते में रखा जाये जिसे वर्ष के बाद मार्यसदेश निमित्त स्थायों कोच में परिवर्तित कर दिया जाये। उसका ब्याज केवल खर्च किया जाये।

६ समाचार पत्र के निए कागज के कोटा हेतु आवेदन पत्र दे दिया जाये। इस कार्य की श्री राजेन्द्र दुर्गा (सयोजक) श्री विमल कान्त सर्मा और श्री सुरेन्द्र हिन्दी के महयोग से करने।

७ डी ए.वी पी के विज्ञापन प्राप्त करने की सारी ध्रौपचारिक— तार्य पूरी की जा चुकी हैं। श्री विमल कान्त वार्मा (स्योजक) इस कार्य को शीझ पूरा कर दगे।

द बिना पूर्व भुगतान के झाय सदेश को पोस्ट करने की ग्रनुमति मिल चुका है इसके लिए समीने प्रसन्तता यक्त की

६ ग्रायसदेश का सदस्यता शुक्क समाप्त हाने पर ग्राहको को जा पत्र भवा जाये उसका भाषा शिष्ट होनी चाहिए

१० ग्राय प्रतिनिधि सभा की सभी बैरको में ग्रायंसदेश का विषय ग्रवस्य रखा जाये

११ प्रार्थसदेश के श्री कृष्ण जनमाज्यमी विशेषाक के लिए श्री सुरेन्द्र हिन्दी (सयोजक) श्री राजेन्द्र हुर्गा श्री सुशील महाजन, श्री श्रदा-नन्द, श्री रामशरण दास बार्थ डा० गगांशीलाल तथा सभी मणी धौर उपदेशक, विशापन प्राप्त करने मे सहयोग करेंगे।

१२ अधिसदेश में वंवाहिक विज्ञापन भी दिये जाय । इसके लिए पूरा प्रारूप श्री राजेन्द्र दुर्गा उपलब्ध करामेंगे । सभी आधिसमाजी को एक परिपत्र भेजा जाये कि उनके यहाँ जो भी शादी हो उन्हें मार्थसदेश का वाधिक मान्स प्रवस्य बनाया जाये ।

१३ धार्यसदेश दिल्ली धार्य प्रतिनिधि समा का गल है। बत इसमे आर्यसमाज के धार्य नेताको और सभा को सूचना विशेष सज्जा के साथ प्रकाशित को जानी चाहिएँ।

शान्ति पाठ भीर सभा प्रधान एव ग्रन्य उपस्थित सज्जनो के धन्यवाद के पश्चान बैठक समाप्त हई। □

निर्वाचन

सार्थे उपप्रतिनिधि क्या कानपुर महानवर वी सन्तरम मभा ना वाधिक निर्वाचन दिनोक ११ समस्त १८०५ को सामस्वराच कीसामऊ मे था पुलीवाल बादव की सम्मानता म सम्पन्न हुसा, विसमी निम्निसिस्त पदाविकारी निर्वा-चित्र हर।

प्रधान प० विश्वयणान शास्त्रा उपप्रधान श्रीमती सरना चौधरी

- ,, श्रीधाशादीन वर्मा , श्रीगोरसनाय गुप्ता
- मन्त्री डा॰ हरपालसिंह पो०एव०डी० उपमन्त्री श्रीमती डा॰ भाषा रानी राव
 - ,, श्री हरिशचन्द्र साहनी
- , बीरिपुदमन कुमार थल्ला कोषाध्यक्ष ीराजेन्द्र प्रसादद्यार्थ सङ्क्षक डा•द्यमरपाल सिंह

पी०एच•डी० नेकानिरीक्षक श्री पुत्तीलाल बादव

> हरवास सिंह अन्त्री आर्ये उपत्रतिनिधि सभा कानपुर अहानमर

स्वतन्त्रता दिवस समारोह

विडला धार्य गर्ल्स सीनियर मैकेण्डरी विद्यालय का स्वतंत्रता दिवस समारोह माननीय वेदप्रकाश म्बुल्लर की ग्रध्यक्षता मे दिनाक १४ ८ ८५ वृषवार को ग्रार्यसमाज विन्लालाई स के प्रागम में बडी धूमधाम से मनाया गया। ध्वजारो-हरग कार्यकारिसी पाषद श्री खल्लर द्वारा सम्पन्त हुन्ना । विद्यालय की छात्राची ने देशभिक्त पूर्ण सास्कृ-तिक कायक्रम प्रस्तुन किया। एक छात्रा ने स्वामी दयानन्द की घटट देशभक्ति एवं गब्द प्रमुपर ग्रापने विचार व्यक्त किए। मुख्य प्रतिश्वि एव ग्रागन्तको द्वारा कार्यक्रम को भूरि-भूरि प्रशशा की गई।

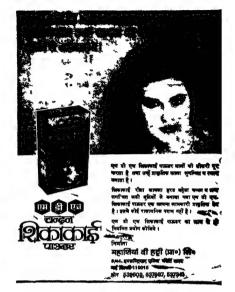
प्रिसिपल बिडला ग्रार्य गर्ल्स सीनियर सैके० स्कूल विडला लाइन्स दिल्ली ७



Post in N D P S O on 13-9-85

Licensed to post without prepayment Licence No U 139





लिए उत्तम स्वास्थ्य कांगडी फार्मेसी. हरिद्वार की औषधियां



शासा कार्यालय-६३ वंकी राजा केरारवाव, शायडी बाजार, विस्ती-६ फोन । १६१८३८

भेवन करें



वय १ सन् ४४ सूक्य एक प्रति ४ ^{तै}मे रविवार २२ सितम्बर १८०६ वार्षिक २० रुपये सृष्टि **नवत् १**९७**२**९४८०८६ द्याजीवन २०० रुपय भाइवद २०४२

दयानन्दाञ्ड—१६१ विदेश मे ४० शलर ३० पींड

गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार के कुलाधिपति डा. सत्यकेतु एवं कुलपति श्री सत्यकाम वर्मा

दिल्ली सभा द्वारा स्वागत समारोह



श्रासत्यकाम वर्मा

रिववार १५ मिनम्बर दिल्ली । मार्थसमाज हनमान् रोड नह दल्भी से डाल म यकेतु एव डा० । स्वायसमाज हनमान् रोड नह दल्भी से डाल म यकेतु एव डा० । स्वायान मा डिल । स्वायान किया गया। इस मव-। दपर बालने हए था रामगोधला मान्याले ने कहा- यह प्रमानना का मुख्य है कि एक्कल विषयी-ब्रालय

के कुलाधिपति एव कुलपति अपने हो गुरुकुल के स्नानक तथा लब्ध प्रति-ष्टित विद्वान है। गुरुकुल विश्वविद्या-लय ने समस्त विश्व को सुयोग्य विद्वान लेखक एव वक्ता प्रदान किये हैं। एक समय तक छ। मिक मामा-जिक एव राजनैतिक क्षत्र में गुरुकुल के स्नातको का वर्चस्व रहा। इस समय फिर हमारे मामने चुनौती है। वही खोई प्रनिष्ठा फिर पाने को मुभे ग्राज्ञाहै। श्रोम यकेनुजी ग्रीरश्रो मत्यकाम जो अपने कार्यो स्रौर प्रय सो से इस मस्थाको उसी उच्च स्थान नक पत्रचाने मे नक्षम ही मकरी। श्री शालवाल ने हमने हुए कहा—ग्राप दानों के गत में पड़ी हुई मालाए जितनी है ग्रीर जितनी इनकी पत्तिया है उनने हो कत्त यो का बोफ ग्राप लोगो के कन्धो पर है।

सावदेशिक सभा के काषाध्यक्ष श्री सोमनाय मरवाह ने दानो विद्वानो की विद्वता और स्वभाव एव कार्य

कुञ्चलना की प्रशमा को तथा गुरुकुल के भविष्य की कुञ्चल कामना की।

दिल्ती मार्थे प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने कहा-यह माना कि माग दुगम है ग्रीर काटो यथरो से भरा हुआ है। कुशलता और योग्यता इसी में है कि बेघनक निडर भीर उत्माहित होकर विपरीत परि स्थितिया में भी काय पूरण कर लिया जाये। इस समय प्रयक्त भ्रायनर नारी का अस्टिगस्कृत के वननान भीरभ बध्यका स्रोर नगी हुई है। गुरुकून म केवन १. विद्यार्थिया का होना स्थिति की गम्भीरता को प्रकट कर रहा है। भगड ग्रीर मुकद्मे गजा तथा ग्रन्य प्रकार को समस्याए वहा ग्रब नक है। हमारे मान्य कुलाबिपनि और क्रपति हम सब को ग्राणाग्रो को विश्वास में वदन पाय गे मैं ऐसी शभ कामना करता है।

श्राराम राज मलिक ने समा काध्यान ध्राय विज्ञानो और पुरो

हितो के सम्मान की ग्रोर दिलाया। दिल्ली ग्राय केन्द्रीय सभा के

प्रदान आये करहाय निवास अधान क्षेत्र में महावध्य अभागल ने स्वा-गत करते हुए हार्किक बबाई दी और कहा-मबसे पुगती और सबसे अच्छी हमारी गरुरल जिला पद्धति है। इसका जितना प्रवार प्रसार होगा उतना हो हम ऋषि के ऋषा को जुका

दि शित्रात प्रतिनिधि सभा के
महामन्ता इ० गम्मान ने गरकुन
का गौरव गरिमा का प्रवान करते
हए भविष्य के उ ज्यात हो सकने की
मगत कमना को

चा० सर-कनु एव चा० सम्यक्ताम ने प्रपन -- गांशन शब्दों मंबक्ताग्रों की ग्रामाया अनुरूप काय करने नाविकास -- चाग्या इस ग्रवसरी पर अनेक ण्यागन्त्र चा प्रदेशनी

स्य. श्री देववात धर्मेन्दु-एक युग की कहानी का अन्त

षयोबुद वैदिक धर्म के सेनानी श्री देववत धर्में दु हा १६ तिनम्बर्र को लिखन हो गया : श्रू सू करती तिता की लपटो में उनके पाधिय धरीन के साथ एक द्वा की कहानी समीध्य हो गयी । अमुना के तीर पर वेदिक मन्त्रों को पित्र ध्वनियां और श्रम्थ सरकार में सम्मिलित नगर धायवानों के बील स्वानाक बहु सरल इस क्षेत्रेय्या का प्रतीक केहरा मेरे

मानस परल पर उमरा । एक-एककर उनके कार्यों से जुडी ग्रनेक स्मृतिया स्झ-रह-कर बादे आने लगी।

महात्मा गांधी के ग्रसहयोग श्रादोलन से लेकर स्वामा श्रद्धानन्द श्रीर महात्मा हण्टाज के निर्देशी पर श्रुद्धि तथा वेदिक सम के प्रवार प्रसार के कार्यों तक उनके जोवन की एक प्रस्क मधुर स्मृति है। सस्याधी के विहासनवाद और सत्तावाद से

स्रलग हरकर व सम प्रचार वैद प्रचार प्राय भाषा के दल्यान राष्ट्र निर्माण धौर युवको मे चिरव निर्माण के महान् कार्य मे लगे रहे। वे दल एव वय से ऊपर रहे, मवको अपना प्यार वाटते रहे। शिमला के पहाडी गाँवो मे चुम-चूम कर उन्होंने विद्यक बमंका प्रचार किया। साथ ही पहाडी क्षेत्रों के प्रजेक नमस्याका के निदान का सा उनका काय ग्लु.य

है।

दिन्नो मे रन्न नए प्रवार प्र"ार क उनके वाय। में ग्राय युवक परि-वद के ना यम में प्रायमाण के शत के लिए क्मर और चरित्रवान युवक तयार करने का उनका मकल्फ काफी हद तक सम्न हुग्न। एक कुशल बक्ना होने के साथ और धनेक सम्मेलनो में ग्रपना निहुत्ना का अ क पम न के

(बेब पृष्ठ ११ पर)



जीवन सार्थक और श्रेष्ठ कैसे हो ? आत्मचिन्तन के क्षण

ग्राचार्य दीनानाथ सिद्धान्नालकार

केन् उपियदे मे एक कथा ग्राती है। पृथ्वी ध्रप नेच वयु आकाश ग्रादि इन तत्त्वो मे धर्मिमान ग्रा गया कि हम ही सर्वशक्तिमय है। वह ग्रपने स्वामी और निर्माता को भूल गये। उन की जाच करने और उनका ग्रमिमान नोज्ने के लिए बह्य शक्ति ने उनको परीक्षालो। ब्रह्म ने अपनीदी हई शक्ति को इन पच तत्वो से छीन जिया। ग्रब पाँचो तन्त्र जन्त्रत् एक्दम निश्चेष्ट हो गये। उन्हें अपनी भूल जब जान हई तव उन्होंने क्षमा मागते हुए बहा शक्ति से प्राथना की । त्सके पश्चात् पृथ्वी ध्रप तेज वायु धाकाश पुन संशक्त हो गये। ठीक यही स्थिति भ्राज के मानव की है। श्रमिम'न मे फस जब वह अपने को शक्तिका भण्डार समभने तगता है तभी दुल कट्ट प्राप्त करता है।

प्रभुशक्तिका विनम्नताने स्म-रगा करते रहना चाहिए फनन वह प्रमुप्त शक्ति पुन जागृत हा जाती

भोष्म की साधना

महाभाग गान्तिपव के स्रतु-सार स्व∽छासे मृत्युका जब वर्ग बृद्ध निनामह भीटम रसा शब्या पर मृत्यु के लिए उहाँ निश नप साधना रत पिनामह द्वाादीर्घ जीवन पर भाधारित प्रकाशप्रद उपदेश श्रवमा करने जन समह एक व होता था। इस दीर्घ गाय शान्तिपर्व मे इन्ही सव अनुपम उपदेशों का सग्रह है। भ्रायात्मिक युद्धि के क्या उपाय है। इसके उत्तर में पितामह कहते हैं-

म्रात्मा नदी सप्रमपुण्यतीर्था, सत्योदका शोलनटा दर्योमि । नत्राभिषक कुरु पाण्डपुत्र न वारिए। श्रुप्यति चान्तरात्मा ॥

यह ग्रात्मचिन्तन रूप नदी, जिसके दोनो किनारे नयमस्प सत्य-रूपी जल, शोल रूपी घाट है। हे पाण्डपुत्रो । वही स्नान करो जिससे श्रन्तरात्मा गुट्ट हा जायेगा, केवल जल द्वारा प्रात्मशुद्धि नही हो सकती।

> जीवन में छिड़ वैदिक धर्म में पवित्र जीवन श्रीर

उसके सबेक्षरण और पवित्रता का माधन हृदय को श्रद्ध गूग का भण्डार बनाने पर विशेष बल दिया ग्या है-

ग्रोउम यन्मे, छिद्र चक्षषो हदयस्य मनसो बातिनुष्ण बृहस्पति-मेंतहचातु। शन्नो भवतु भुवनस्य यस्पति ।।

यज्रु० ३६।३

इसका ग्रर्थ करने हुए महर्षि दयानन्द 'श्रायीभिविनयं' मे कहते हे—हे परमेश्वर । मेरे हृदय(प्राणा-त्मा) मन बुद्धि, विज्ञान विधा भीर सब इन्द्रियद्वष इनके छिद्र के विकार इनको निर्मुल करके मत्य, धर्मादि में स्थापन ग्राप ही करो। भ्राप सब भ्रवनों के पति हैं। इसी-लिए ग्रापसे बार बार प्रार्थना है कि सव दिन हम लागो पर कृपा हिट से कल्यागकारक हो। हे परमात्मन ! श्रापके विनाहमाराकल्याएकारक कोई नहीं है। हमको ग्राप हो का सब प्रकार का भरोसा है, सो ब्राप ही पनाकरगे।

नैमे नौका मे छोटा छेद भी डवो देने मे समर्थ हो सकता है वैसे ही मन व ग्रात्मा मे भी कोई स्वल्प पाप ही धीरे धीरे वटना हुया जीवन नौका को न्यो देने में समय हो सकता है महाभारत में तारद श्री कृष्ण मवाद मे नारदमुनि पाप छिद्र के निच्कासन के दो प्रशार के उपाय बनाने हैं --

दो उपाय नारवमुनि द्वारा

१ परिमार्जन भौर भ्रनुमार्जन। पहले प्रकार के उपाय के अन्तर्गन क्षमा सरलना और कोमलना के द्वारा पाप निवारण होता है भीर दूसरे साधन अनुमार्जन के अन्तर्गत सेवा मत्कार, विनम्रता और समर्पण द्वारा हदय में सदगुराों के प्रति प्रीति, श्रद्धा विश्वास के मकत्र उदित भौर परिवर्धिन होते हैं।

ग्रर्थ शौच सर्वप्रथम

जीवन को प्रथम पवित्र बनाने के लिए सभी ऋषियों ने जितने साधन बताये हैं उनमे मुस्य प्रर्थ 'शौच"है।

सर्वेषामेव शीवाना ग्रर्थशीच परम समृतम्। यो अर्थेन जुर्चिहि स

श्चिन मृद्वारि श्चि॥ सब प्रकार की शद्धना में धर्ष श्चि अर्थान धन सम्पत्ति इन्यादि की

शुद्धना सर्वोपरि है। जो व्यक्ति इस गुद्धता का पालन करता है वता

वास्तविक शुद्ध है

मनुकहते हैं कि जल से शरीर गृद्ध होता है म की पवित्रता सत्य व्यवहार, ग्रात्मा की पवित्रता ग्रध्या-त्मविद्या भीर नपोमय जीवन तथा विचार भीर मानसिक विन्तन के साथ स्वान्याय तथा शास्त्र ग्रन्थयन से होती है। युधिष्टिर के एक प्रवन के उत्तर में भीष्म कहते हैं कि नीयों मे श्रष्ठ तीर्थ विज्ञाह हृदय ही है। पवित्र वस्तुओं में ग्रति पवित्र विशृद्ध हदय ही हैं। श्रेष्ठ जिसे आ चरगामे नाये वह बाचरण सर्वश्रेष्ठ है। इसी-लिए गीना मे भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं कि श्रेष्ठ पुरुष जिस प्रकार द्याचे-रंग करते हे अन्य व्यक्ति उसी का

ग्रनकरण करते हैं।

मदाचार सम्बन्धी निप्रम वालन जीवन पद्धनि के निए सन्त कवीर क शब्दों में ग्रीर पविवता के माग पर चलने के लिए मदा सावधान ग्रीर आगरूक रहना होगा। कत्रीर कहते

तेरी गठरी में लागे चोर बटो-हियाका सोवै। जागू मवेरा बाट धनेरा फिर नहीं लाग जोर। भव सागर डक नदी बहत है, बिन् उतरे जाये बोर।

कहत कवीर सुनो भाइ साधी। जागत कीज भेर

वेद के शब्दों में --

जो जागना है नसे ही ऋचाएँ चाहनी है जो जागता है उसे ही सामबेद प्राप्त होता है, जो जागता है उसे ही प्रभुक ते हैं कि मैं तुम्हारा ही भित्र है। महर्षि दयानन्द ने विष-पान करके भी हमे जगाया पर भाज हम उस ऋषि की ग्रमनवागी सुन पटकर भी नहीं जाग रहे है। जाग करतीहम ऋषिऋग से मुक्त हो सर्त है

उठ जाग जाग रे स्वामिमान

उत्तम चन्द शरर "म० ग०

मेरे मानस की श्रम र ज्योति, मेरे जीवन के असर प्रासा

नेरे बन वैभव कान पार, तेरो शक्ति काक्यावलान ? तेरे माथे की भृकुटि से रिपुदल बर बर कम्पायमान उठ जाग जाग रे

तूश्रीकृष्ण काचक्र, शिवाकी श्रमि रामका धनुष बाए। राएग प्रताप का कवच तू ही, गोविन्द सिंह का चण्डी गान

तूजागे तो जीवन जागे, तूसोये तो नर मृत समान तू प्राणी का प्रेरणा स्रोत, तुक बिन प्राणी केवल मसान उठ जाग •

तेरी हुकृति से जगता है, मानव का सुप्त वैभव महान् तुम बिन अपृत भी गरल तुल्य, तूदे तो विष भी सुघापान उठ जाग जाग रे स्वामिमान

आर्यवीर दल की आवश्यकता

लेखक-योगप्रकाश त्यागी

आत्र ससार प्रशानिन का घर बना हुया है। पणुता इस से जुनकर ताण्डव नृत्य कर रहा है। एक रास्ट्र दूसरे राष्ट्र को निपालने का प्रयत्त कर रहा है। एक प्रस्त्र सर सम्प्राय का विनाश करने पर जुना है। इस पालपन ने भगवान् की मृष्टि का सर्वश्रेष्ठ देन भनुष्य का मृष्य दो कौडी कर दिया है। ईवर पुत्र मुख्य के श्रीवन से भ्रात्र, लोग बनाए हुए एत्वर के भवनो, मन्दिरो और मिल्डियो का मृष्ट्य अविक सम्प्रते हैं। मान्-शिवत विक्षा को गोद में वठकर अपनुत पिया है, आज लोग उसी की टाग पंकड कर बाजारो में प्रसादते फरते हैं और उसे नाना प्रकार अपमानित करते हैं। बच्चे और बुढ़ तक इस सूर्वागन के इंबन बन रहे हैं। इतना ही नहीं, इस पामलप के प्रवार करने बाल अयवा इन पामलो के सरदारों के ले से पामलप्त है और उन्हें बहुत बड़ा राजनीतिज (Politician) कह कर पुकारते हैं। आज जो व्यक्ति जितना हो बड़ा मक्कार, भूठा, श्रोवेताज तथा निर्वेश होता है, वह उतना हा बड़ा नेता समक्ताजाता है। ये पूर्त नेता सपना पुता पर राष्ट्रोयता तथा घम का मुलम्मा (पानी) चढ़ाकर साधारण जनता का अस्था बता रहें।

स्नासिर यह सब क्यों हा रहा है ? इसका विराध क्यों नहीं किया जाता ? बाज क्या वड-वडं सम्पादक प्रपन पत्रों में इस पशुता का प्रोस्ताहन दे रहें है ? इन समस्त प्रकात के उत्तर का खाज में यदि मनुष्य ध्यानावस्थित होकर विचार करे ता वह एक हा पारेरुं। म पर पहुचना कि आज मसार में ऐसे अंटर बार पुरुषा का प्रमाव है जा सरस को रखाये गुण्डों का दमन कर सक। दूसरे शब्दा में ब्राज ससार म ब्रायंवार तथा ब्रायवोर दब का अभाव है। किसा नाम । बशेव स दब हान क कारम. बहुत स माथियों का शायव मेरा यह बात अखरेगा परन्तु बात सरस है। ब्राज नहीं तो कल करहें यह सर्य स्वाकार करना हा पद्या। नाम में मले हो कोई परिवतन करने को चेष्टा कर परन्तु इस सरस स वह कदाणि वस्तु नहीं हो सकता।

ससार म मुस्यत माज तोन प्रकार के ज्यक्ति पाये जाते हैं। पहले गुण्ड, हुसरे वार्राफ हुइ इंड तथा तासरे बार पुरव गुण्डों को परिभाषा प्रयवा उनक स्वरूप का वगुन में साराम में हा कर चुका हूं। ये स्वायांन्य हैं भीर प्रपान स्वाय का पूर्ति समस्त उचित तथा अनुमित उपायों से करते रहते हैं। राष्ट्र-उन्नति, यम रक्षा तथा विश्व शान्ति इनके मुख्य नारे हैं, और इन्हों अंद इनारों का आद म ये भपने समस्त जुकन करते हैं। इन गुण्डों के एकदेशाय ही नहीं अपितु सार्वमील सङ्गुठन ववे हुए है। इन ने पास सुत न सम्ति मामन तथा सनाए है सभी के स्वाय प्रायस में टकराते रहते हैं। अनके परिणानस्वरूप समय-ममय पर युद्धानि अकती नहती है।

दारोफ हिनड व है, जिनके हृदय में भनाई से प्रम तथा बुराई से घूगा है परन्तु उनको यह घूगा उनक हृदय को सीमा का कभी उल्ल हुन नहीं कर पाता, और ना हो उस में उल्ल हुन करने का साहस है। वे गुण्डो को बुरा हो नहों ममने अपिनु हृदय से उनका वि । वा चाहते हैं, परन्तु जन में गुण्डों का सामना करने का साहम नहीं है। परन्तु जन में गुण्डों का सामना करने का साहम नहीं है। वे मृत्यु से भय खाते हैं, म इनका कोई सङ्गठन है, ना हो इनके पास यथेष्ट घन तथा साधन है।

तासरे बीर पुरुष है, जो मृत्यु को कुछ नहीं समझते। जिन में विरो-सारमक समित कुटकूट कर भरी है। परन्तु इनके हृदयों में गुण्डों के जिनाका को उमञ्ज नहीं है। इनमें विद्या का प्रभाव है, जिसके परिग्गामस्वरूप से गुण्डों का वालांकियों को न मममकर उन्हें उनके सहत्र वन जाते हैं। इन का भोलापन इनका समित का दुश्योंग करा रहा है। घन तथा साधन इनके पान हैं हो नहीं, जिमके का रण्ण इनका सगठिन होना कठिन है। इसरे जब इनके हृदय ही भाव शून्य है तो फिर इनके सगठन का प्रश्न हो कैसे उठ सकता है।

अनुपात के विचार से ससार में गुण्डे पिचहत्तर, शरीफ हिजडे बीस
तथा बोर पुरुष पाच प्रतिशत हैं। इस प्रकार आज दुनावा में गुण्डा का एकक्षत्र राज्य है। इस्त्रों के दमर का प्रश्न आज दुनावा में गुण्डा का एकक्षत्र राज्य है। इस्त्रों के दमर का प्रश्न आज स्वास्त के अने मस्त्रयों के
मस्त्रिक चाट रहा है। यह बात रडता के साथ कहो जा मकते हैं कि इस
समस्या का हल शरीफ हिजडे या मूर्य बीर पुरुष करापि नहीं कर सकते।
ससार को आज ऐसे पुरुषों की आवश्यकता है, जिनके हृदय मनुष्यता से
भरे हो। जीवा भीर जोने दां जिन का नारा हो। अन्याय तथा प्रत्याचार का विरोध हो नहीं भिष्ठ दुन का विनाध करने का जिनमें शाहस हो।
अपने इस तक्ष्य का पूर्ति में जिन्हें अने सर्वस्य को बाजो लगाने की उमञ्ज हो, अर्थोन् सत्तरक दोनों ठीक हों, बुद्धि तथा धिक्त का जिनमें समन्यय हो।

भ्रावश्यकता है। आज एक ही देश के नहीं अपितुममार भर के श्रेष्ठ पुरुषों के एक इट सगठन की आवश्यकता है, जिस के द्वारा ममार को गुण्डों से रहित करके विश्व शान्ति की स्थापना की जा मके।

ऐसे ही श्रेष्ट बीर पुन्तों के मगठन के लिए 'प्रायंवार दल नी रचना हुई है। इस का यह नाम भी इसी लक्ष्य को दिट में रखकर रच्या गया है। मेरा दख विश्वास है कि इस प्रकार के सगठन का नाम इस से प्रविक प्रच्छा और हो ही नही सकता। यह नाम प्रपत्ने लक्ष्य को पूर्णत्या व्यक्न करना है! भागंत्रीर दल के जयघोष भी इसी लक्ष्य को पूर्ण न करते हैं। जैसे—

(१) वैदिक धर्म की जय हो।

(२) ग्रार्यवीरो जागो ।

(३) मसार के श्रेष्ठ पुरुषो एक हो जाग्रा।

डम् प्रकार समार को गण्डों के देननार्थ एक मुख्ड आर्यवीर दल की आवश्यकता है, जिस से प्रत्येक अले बीर पुरुष को भाग लेना चाहिए। यदि अले पुरुष को आग लेना चाहिए। यदि अले पुरुष को साम लेना चाहिए। यदि अले पुरुष को का व्यवस्थान चाहिए। यदि अले पुरुष का बात के पुरुष का प्रत्या है। यदि दसकी देश मा प्रत्या तथा है। एटम बम जैसे अयकर घहन का महारा लेकर यह प्रभुता क्या नहीं कर सकती। सचमुच बाज मतृष्या सङ्कुट में है, यदि दसकी रक्षा न की गई तो फिर बचे खुष अले व्यक्तियों को भिववण ही इमी गन्दी को नेवड का सहारा लेका पड़िया। इस गिर खायीरी आयो हम सर्वप्रत्य आयोचित में ऐसे सगठन की रचना करके विषव को सच्वी शानिन का सन्देश मुनाए।

मार्थ बीरदल के कर्संध्य

आर्यवीर दल के दो महान् कर्नव्य हैं—

(१) ब्रार्थ धर्म, ब्रार्थ जानि छोर आर्थ मन्कृति नो रक्षा करना ' (२) समाज मे सेवा एव ब्रात्मत्याग का श्रादर्श उपस्थित करना।

प्राय सेवा धौर रक्षा दो विरोधी शन्द है इत दोनो कर्नश्यो का पालन एक व्यक्ति कैसे करे यह विवारणीय है। परन्तु जब हम बदिक वर्ण व्यवस्था पर रहिटपान करते हैं तो हमारी यह कठिनाई दर हा जाती है।

ष्ट्रायं जाति एक योडा जाति रही है। जिम में कार्य और मुविधा की हिट से चार वर्गों को स्थापना हुई थी। इस वर्ग व्यवस्था में विद्या प्राप्ति स्रीर उसका उपयोग (स्राविकारारि) बाह्य के हाथ में सीपा गया। रखा स्रीर सामन क्षत्रिय के क्रियकार में दिया गया। ममाज का भरणा-पोषण और आर्थिक उपयस्था (Supply Department) बेह्य जाति को सिली तथा समस्त समाज की सेवा गूद वर्ग के व्यक्ति करे, ऐसी व्यवस्था की गई। प्रत्येक वर्ग के कर्नव्य निविधित करने का सर्य यही था कि प्रत्येक वर्ग में चारो वर्गों के गुणा के ममन्वय के साथ साथ प्रपना एक गृणा विशेष क्य से होना चाहिए सर्योग एक बाह्यण जान, नप त्याग के वर्द्धन्य के साथ से होना चाहिए सर्योग एक बाह्यण जान, नप त्याग के वर्द्धन्य के साथ रक्षा, पोषण और सेवा के माल भी प्रत्ये में सवस प्रयस्ता प्रत्ये कारे। व्यवस्य में रक्षा और जासन की प्रमुख भावना के साथ-माथ जान, पोषण और सेवा भाव होना वावस्थम है। वर्ष्य के सन्य उसके पोषणा गुणा की प्रमुख को साथ-साथ बाह्यण सर्थ का जान. क्षात्र वर्ष की शिक्त प्रति होने साथ-साथ बाह्यण सर्थ का जान. क्षात्र वर्ष की शिक्त प्रति होने साथ-साथ बाह्यण सर्थ का जान. क्षात्र वर्ष की शिक्त प्रति होने साथ-साथ बाह्यण सर्थ का जान. क्षात्र वर्ष की साथ-साथ बाह्यण सर्थ की को साथ-साथ बाह्यण सर्थ की को साथ सर्थ की स्वास सर्थ की साथ-साथ बाह्यण सर्थ की को साथ-साथ बाह्यण सर्थ की की साथ सर्थ की स्वास सर्थ की साथ-साथ बाह्यण सर्थ की का त्री होने स्वास सर्थ की स्वास सर्थ की साथ-साथ बाह्यण सर्थ की साथ-साथ बाह्यण सर्थ की स्वास सर्थ की स्वास सर्थ की स्वास सर्थ की स्वास स्वास सर्थ की स्वास स्वास स्वास सर्थ की स्वास सर्थ की स्वास सर्य स्वास सर्थ की स्वास सर्थ की स्वास स्वास सर्थ की स्वास सर्थ की स्वास सर्थ की स्वास स्वास स्वास सर्थ की स्वास स्वास

जब हमें विदिक वर्ण ध्यवन्या द्वारा यह स्पष्ट हा जाता है कि सात्रिय के अन्य रखा और शिवत के गुणों को अमुखता के साय शेष विद्या, पोषणा और सेव के गुणों को होने सीनार्थ हैं ता सेवा और रखा के कर्मध्यों का पालन किस प्रकार कार्यवीर कर मकते हैं, यह प्यष्ट हो जाता है। आर्यवार दल आर्य जाति की आज शिंक्त है। यदि यह शिवत केवल रखा ही में ब्या हो तो रखा कार्य के अभाव में डब शिवत का दुरुशोंग पाश्चिकता में भी हो। सकता है और निवंशों के शोषण में भी नग मकती है। यत शिवत का दुरुशोंग पाश्चिकता में भी हो। सकता है और निवंशों के शोषण में भी नग मकती है। यत शिवत का दुरुशोंग न हो। हुनी आवना में झात्र धर्म का शिवत का समन्य सेवा एवं आत्मार का मांवर सकता होती है, यत एक सित्रिय में जहां वित्र अता को आवस्यकता होती है, अन एक सित्रय में जहां वित्र अता भी दिखाई दे, यही आदर्श कात्र प्रवास है।

प्रत प्रार्थ वीरदल में इस भावना को बल मिलना हो चाहिए कि बार्य वीरो का प्रमुख कार्य प्रार्थ घर्म, प्रार्थ जानि भीर प्रार्थ सम्कृति की ग्ला करना तो है हो परन्नु आर्थ जाति की रला में विरोधों के सम्मूख इदता का पित्र वे हे हुए आर्थ जाति के साथ दिनम्रता का वर्नाव भी होना चाहिए। इस विनम्भना के प्रभाव में हो बच्छपन का प्रकृतर पेदा हो जाता है। प्रार्थ सेवा का प्रमुख कार्य नो शूद्र वर्गा के व्यक्ति हो करेगे परन्तु यदि ब्रावस्थकता पत्री तो सेवा काय तथा रक्षा के कार्य का उत्तरदायित्व भी आर्थवीर दस पर है। इस कर्नव्य को प्रस्थेक आर्थ वीर पहिचाने। यदि कोई सार्यवीर प्यारे को पानी पिलाना है, मुझे को मन्न देता है। आग, पानो, सम्बद्धा स्थाने को पानो पिलाना है, मुझे को मन्न देता है। आग, पानो, सम्बद्धा सम्बद्धा स्थाने के पानो पिलाना है, मुझे को मन्न देता है। आग, पानो, सम्बद्धा स्थाने स्थाने से स्थान सेवा करें करता

धपने पूर्ग के प्रद्वितीय गाम्बज लखक तथा उच्चलम वक्ता प० तुलमीराम स्वामी काजन्म ज्येक ठ तुक्या ३ स० १६२४ वि० (६६७ ई०) को परीक्षित गर जिला मेरर मे पडित हजारालाल स्वमीके यहा हमा। प्रारम्भिक शिक्षा पिता के माल्निध्य में हुई। १ वष को ग्रायु में यजो पवीत सस्कार सम्पन्न हद्या। ११ वर्षकी इप्बस्थाम बाल कत्नसीराम कीनलारोग से झात्र ना हुझा। परिलाम स्वरूप उन्हें एक नेत्र की हानि उठानी पड़ी। गढमुकन-ब्बर मे पडित लज्जाराम से सम्कृत भाषा और व्याक्तरमा का ग्रह्ययन किया। धन्य शास्त्र भी पढे। १६४० वि० में स्वामी दयानन्द लिखित मत्यास्त्रकाद्य वेदाग प्रकाश तथा ऋविदादिभाग्यभूमिका क्रादि ग्रन्थों के पढ़न से उनका कुक्ष द्यायममाज की श्रोगह्या। पून १६ १ वि॰ मे देहणाडून जाकर प० सुबलकिशोर से चाटाहरायी तथा महाभाष्य प्रादि व्या करण क धार्वग्रयो का धब्ययन किया स्वामी दयानन्द के निकर तत्वक के रूप मे रहने वाले प० दिनेशराम मे भी पढने का अवसर मिला।

प॰ तुलसीराम को धार्यममात्र के प्रसिद्ध विद्वान मेरठ निवासी ब व् घासी-राम के सम्पर्कमें ग्राने का ग्रवसर मिला। ग्रद वे विधिवत ग्रायनमाज के सभासद बन । १८०७ मे प्राप्त प्रतिनिधि सभा पश्चिमोल र प्रदेश । वर्तमान उत्तर प्रदेशः) के सगठन में योग दि । तथा जीविकोप जैन हेनु मेरर के देवनागरी स्कृत मे कृद्रकाल तक सम्कृत ग्रह्मापन कार्यं किया । नमी बीच प्रसिद्ध यनातनी विद्वान प० सम्बिकान्स व्याम सर्ग साथे भीर स्नानन भनसभा क तन्त्रावधान से पैरशिकम नब्यो का प्रचार करन लगा। तल मी रामानो ने प्रवार युक्तियो और प्रमाण " क्याम जी के प्रचार का वण्डन किया। उप पर देवनागरी विद्यालय के प्रान्धक उनसे इत्य हा गया। स्वामी जी न अभिनम्य नीकी यागान द दिया भौर पूरानपरा "दसमाज र कास का द्मपन लिंग् आसमसम्बर्ग प्राप्ताय की तम प्रविस तुलमीराम स्वर्णन विश्वमित्रो मैं स्टी लाख न किय जिनस क्रूचसर, पत्र ना परी% त गट आ रा दालापु रोगा पाति के गास्त्रान प्र'सद है। १८/= नि म तुल्मीराम जी धाय प्रतिनिधि सनापि बमा⊤र प्रदेश के उन्देशक नियुवन हत धीर प्रान्त न्य पी प्रचारक "प्रमेन टए। १६५० प्रिमे प भीमसेन समान स्तामीजी काप्रयाग स्तिन धारने प्रेस सर वही यवालय का मै जर नियुक्त किया। धत स्वाभी जा ⊤माजी ने सहयोगी रू~ पद्रयाग था गत धीर बाप सहास्त ने सम्यानन में प० भीममन क सहायक वन । स धविध मे उहोत मैं लितक विषयो पर शनेक लहालि वे।

त्रायंसमाज के शास्त्रार्थ महारथी

प० तुलसीराम स्वामी

ले०-डा० भवानीलाल भारताय

१९ ५ वि०मेष नुत्रसीरास न मेर० में स्वानी प्रय को नापना को धौर साहित्य त्सान तः गाप्रका⊤न क महत् यज्ञ काग्ररम्भ किया। जन्बरी १०६७ से मासिक वदप्रकाण का प्रकाशन प्रारम्भ क्यि । त्र ब्हालाक प्रिय ह**धा। इसमे** बायसयाज के विद्धान्तों के मण्डनात्मक नला के प्रतिरिक्त वि । घी विद्वानी द्वारा सिसे जाने वाल माक्षेपाल्मक उस्त्रो तथा ग्रन्थों क प्रमाण पुरस्म[—] आवण्डन मी श्चपताथाः वेदप्रकाश की फाइन आर्थ-समाज धान्दालन क गत्यात्मक स्वरूप को जानन व दृटि = धत्यन्न सहत्त्वपूरा है। १.. ६ .. द० संप० लखर संनास्मृति मे स्थाम जी न उपदशक विद्यालय की स्था-पनाक । इस विद्यालय संप० सत्यवत रामा प० स्ट्रदस्त शमा प० ज्वालादस्त शामा प० मणिशकर प० मनुदन तय स्वामा झोकार सन्त्रिदानन्द जैसे उ-ध-क्लोटक प्यदत्क निकल कर प्रचारक्षत्र मे ब्राय। १६०६ स १६१ 🖆 तक स्वामी जे **अ**र्थप्रतिनिधि समा संयुक्त प्रान्त के प्रधान रहे। प्राप्त के गवनर सर जम्स मेस्टन = ग्रगम्त '८१३ को ुरु कत्र पृत्दापन ग्राय । उस नमय स्वामी जी गुरुकुल मे भ्रष्ट्यापन करते थे। गुरुकुल के सुचार सचालन का दल कर गतनर प्रत्यत प्रन न हुए। अल्लाङ १०४६ को विभू विकारोगम प०तुल पीराम ल्वामाका निधन हुना।

प॰ नूलमीराम धाव वण्मी तथा सरस्वतीक वरदपुत्र नेखरू य ।

िहोने प्रश्न धीवन काण में लग-श्राप्त क्षेत्र किल जिनम विधिन नास्त्रों इस्राप्त न्द्रण्यान स्वय्यक्षण्य दरक् इस्ता प्रवास प्रतिहत्त्वी पहिलों के लिखे इस्तेय प्रवास के समीव उत्तर सावि प्रमुख ने । स्वासी की ने इतिल का स्विक् रुम्म ने दिसा पर स्ट्रार्टिन

फ्लंद आगय — न्वामी द्यालस्ट इन क्रम्बद आग्य मन्यम मन्य के हिर्मेय यह पर ही समाप्त हो जान है । क्यमे आगे के आग्य प नुपत्ते राम वामी ने लिखना प्रारम्भ क्या पा जिसक स रवानी प्रकाशन वरश्वका क जवाई १८६६ के प्रक से होंगे लगा या। यह भाष्य सस्कृत तथा हिन्दी दोनों भाषायों में लिखा जाता था। प० नुवसी-राम के दिवसत होने पर वनके प्रमुख पन क्रिता परन्तु यह ख्राबेद आप्य पुस्तका- कार नही उप सका।

सामवर नाया — यह बाध्य सी सरहत तथा हिन्दी म निका गया है। वी मागो म डक्श प्रथम प्रकाशन स्वायी ग्रेम मेरट म हुआ काला-तर में इस माध्य का सावदेशिक सम्बंगितिनिक्स साथा दिल्ली ता जनजान प्रकाशन (दयानन्द संस्थान) दिल्ली न संस्कृत थाग खोड कर प्रकाशित किया । स्वामी जीन इस केन, कड सीर नजबकाराण्टीच्य माध्य मुस्क उर्जावद्वर माध्य रचना की।

व्येतास्वतरापनियद आष्य — जीवेदवर भेद परक व्यवस्था युक्त यह सस्कृत हिस्सी भाष्य पर्न्त्रेद धौर मन्यय पुक्क किया गया है। १-६७ ईं । परचा

मनुस्पृति भाष्य — मनुस्पृति का यह पर्*िय पूर्णभाष्य हिन्दी भाषा म लिखा गया है। धे पक्ष्म प्रग्न का सतक भिवपन दिया यदा है। प्रथम सर्वकरण १८१४ ड० में प्रकाशित हुआ। १९७६ वि०तक इस ग्रन्थ के ६ सस्करण प्रका-शित हुए।

व**हदर्श**न **भाष्य** संस्या दशन

सा।दशन— स्वामाप्रस मरठ प्रथम सम्करण १८११ म प्रकाशित।

न्य य दर्शन वैगयिक दशन बदान्त दर्शन

भोसासादर्शन—नुलमो राम स्वामी जीन छपा। इस दशन के प्रथम २ ६ सजो काही नाव्य जलता।

विदुरनीति — यह टीका १८४६ वि० (१८६८ मर्ट) रे प्रथम नार प्रकाशित हुई।

धामनभगवदगीता आध्यम् — वैदिक मान्तवयुतारा यह सरल सुआध् आध्यः स्वामा प्रेस ने प्राणित हुषा। स्मका द्विवाय स-क्रेरण श्री रामसात क्ष्मर ट्रस्ट बहानथढ द्वारा २०३४ वि० (१६७७ ६०) मे प्रकाशित हुया।

नारदीय शिक्का—इस निक्षा शान्त्र विधयक यन्य ना सम्पादन तथा प्रकाशन स्थामी जीन फाल्गुण १८६३ में स्थामी प्रेस मेरठ से किया।

> श्लोक युक्त निष्कत (निषण्टु) श्लोक बद्ध वैदिक निषण्टु— प्रनिन-

चित श्री मास्कर राय बीक्षित कृत निवष्टु का सम्पादन व प्रकाशन तुमसीराम स्वामी द्वारा १८६८ ई० मे किया गया।

अर्जुर्हार कृत मीतिगतक का प्रमू-वाद — धार्य वर्षट पञ्जरिका - सरस्वती यत्रालय इटावा से प्रकाशित — १८६६ र्हे ।

सण्डन मण्डन के ग्रन्थ—

ऋषादिमाग्यभूमि का केन्द्र पराग— दितीयोध वहाकु का उद्यामीन लिखित ऋष्येदादि अध्य भूमिका के खण्डन परक भग्य का यह उत्तर सरक्यती यत्रालय प्रयाग १६५० वि० (१-१० १०) मे प्रकाशित हुया।

भास्करप्रकाक सनातन धर्म के विद्वान प० उनावाप्रभाद मश्र ने मत्याय प्रकाश क लण्डन म दयान-द तिमिर भास्करग्रन्य लिखकर नेमराज श्राकृत्सा दास स वैक्टेश्वर प्रेस बस्प्रड स १६५१ वि० म प्रकाणित करायाचा। प० तुलतीराम ने इसका सटीक उत्तर भास्कर बकाश के रूप में लिखा। भारकरप्रकाश का प्रथम भाग । सत्यार्थप्रकाश के तीन प्रथम समुल्लामा का मण्डल) श्वामी बह्यानस्य सरमात सम्पदित भारती-द्वारक सासिक से भागवाही स्रापने के पश्चात इन्ही स्वग्मी जी द्वारा पृथक् १८६७ ई० म पुस्तकाकार छपा। पुन सम्पूराग्रन्थ न्सीवव (१८६७ ई०) स्वासी प्रेस मेश्ठ से उपा। भास्करप्रकाश का दिलीय सम्बरण १६०४ मे तथा ततीय सम्बरका १६१३ में छवा।

विवाकरमशा सास्करप्रकाश के प्रभम नात सबु लागे के जण्म म प० ज्याल प्रस्त मिश्र के स्वप्त म प० ज्याल प्रस्त मिश्र के स्वप्त में प्रस्त के प्रभम् दिवाकर पुलक लिली। न्याकरण्याण निवाक कर तुलक स्पाम मानी ने समर्थिय। कर का वण्डन किया। १९० में दिनीय सस्करण

मृतिपनाप्रकाशः १९५७ वि० मे प्रकाशतः

निव्यपित यज्ञ — मतक श्राह्म खण्डन म लिया गया ग्रथ । प्रथम सम्बर्ग्स १८०६ दिव पान १८७१ विव तृतीय सम्बर्ग्य ।

भीमप्रत्नो री प० भीमसेन शर्माकृत यानेगोका उर१६१४ ई० मे प्रकाति।

धजाननिवारण — पावरी सदयसिंह के ज्यारयान घार्यतन्त्र प्रकाश का सण्डन । रचाची नेच नेच्छ ने १०८७ ने वर ।णित ।

तुलसीराम न्वामी के बार व्याख्यान— स्वामी प्रेस मेरठ में प्रकाणित १६०॥ में तृतीय सन्करण ये व्याख्यान पृथक्श भी सुपे थे।

तस्ण मंच

उद्बोधन आर्य वीरों के लिए

रामाज्ञा वैरागी सवासक—क्षाय बीर दल विहार





शाहण्हम सभी मिनकर धपने महान् कत्तव्यो के पव पर कदम से कदम मिनाकर चनाना प्रा २ (कर्ना) आप यह तो बानान ही है 'क उठि छोटे सीते मिनकर वडी नदी का रूप लेते है। सभी दिशाओं से प्राता मन्द-मन्द समीर मिनकर नीवामी पवन कर कप नेता है। पड़ी अध्य बाध कर उडते है सीर उससे वे निर्मोकना का

प्रनुभव करते हैं। प्राप देख रहे हैं
विषय की परिम्थितिया बदन रही हैं
ज्ञा स्थित्यों में मुझार का निना त
ग्रावस्यकता है। ऐसे सुधार और
परिवतन की जहा मानव मानव का
छोषगा न कर सके हमें मामाज्ञ शायगा के तरह ग्रायमित का निना त
लायगा न कर सके निमामाज्ञ का ति
लिए शारीरिक मानसिक नथा
सामाजिक द्यक्ति मानसिक नथा
सामाजिक द्यक्ति की ग्रावस्यकता है।
इनके लिए हमें अजेय माधना का
देशक जनाना होगा।

सभय काम्बर है कि साँ प्रलो-भनो से दूर हमें नास्त्रिकाद के दूषित ।वकारों से बचक शास्त्रिक शूल भरेप-परक्रास्ति पथ पर अप्र-सर्वार है

चिलए हम एक साथ मिलकर पिननबद्ध होकर प्री सावधानी के साथ प्रपने निश्चित लक्ष्य की झार बढा

श्राप मुनिए, दूर सुद्र दिशाओं स श्रमियान कंगीनों को चनि अनु-गजिन हो रहा है।

चिलए, बिल्कुल सोध चिनए।
एक निष्टिन उद्देश निचारित कर रहा
स्वापनी स्विकत्त प्रतासा कर रहा
है। यह सम्भव है कि साज की परिस्विन प्रापना जीवन माग सकता
है। न्सानए निभय और निमको
सपने ने त्सा करते की भावना
का लेकर सामे विरुप्त राज से सम

है कि आपको मान्यना यो विनिवेदी पर अपना शांग "ान पढ लेकिन गृठ गांगां चिक अनुगान आपके भीन्य विन्दान और समर्पण की भावना चाहता है आप अपने को सादर समर्पित कर। राष्ट्र के लिए समाज के निग और मानवता के लिए। विना के अनुभव ज्ञान वर्तनान की अनुभिन आपके लिए अजय कोष हाए।

प्राइए चिना सारे बहिए। हमारा एक मी मा और स्पष्ट है। हमारा एक मी मा और स्पष्ट है। हिलते साहम पायशीर हैं को हमारे साथ सीन पथ पजने की न्यार है। राष्ट्र के दिए मान बता के बहुपुणी विकास के लिए, विज्ञान औ जानिकारी कार्यक्रम थापके ममझ है इसकी सम्पूर्णता के लिए वह विस्तृत स्रुत्ते कारी स्थादेश पत्र है।

ग्राड्ट हम एक मुत्र के भीतर बचकर घोषित कर। मनाः क श्रष्ठ पुरुषो एक हो जाग्ना कृष्य ना विष्य मायम। जहां भा क्रप्ने को नग नित्र करो भीर कायोगा करा हम मभी तम्हारे साथ न

श्राय बन्धुनो नागवा नमार धोरे बोरे किन्त समस्याग्रो से घिरता जा रहा है कहिए घिर गया है। विद्व की मारी समस्याग्रो के मना-घान ग्रीर निदान का सम्प्रण उत्तर-

दायित्व क्रांतिदर्शी म ष दयानन्द जी ने ग्रायसमाज को सुपुर्व किया या। सहूपि ने उसक लिए व्यापक रूपरेखा प्रस्तुन को य। ससार का जटिल धनस्याग्री के मसून विनाश के लिए जिन कुशल हाथी की प्राव-स्पकता है, वे हमारे रस्रा ग्रायशीरी के पास है। नये विद्य के निर्मान के यक्ष मे ग्रायंवीरों का प्रमुख स्थान है।

म्राय बीरदन राष्ट्रके विकास के लिए च्हासकत्यी तरएगों का एक स्पाठन है जो मान लाठी जनाने वालो या ज्यायाम करने वालो का सगठन नहीं है। यह मानवता के हिन में उन अकुराते प्राप्त के प्राप्त वीरो का व्हास्त प्राप्त जो उन की वाजी लगाता रहा है। यह मान वी दल मात्र सगठन या सस्या नहीं यह एक मात्र संप्त के विकट कानि की ज्वाला है। मन्यावार तथा कुरा-नियों कुविचारों के विकट सबकनी मात्र है। मन त्रो का न्याक मीर कमजोरें का न्यारा है।

प्रामं बीर ने ने विराम नहीं प्रभियान का मन्थक है। उसके राख्य प्रामिति काय जित है। गसी जाति जो विनाश की घोर नहीं निर्माण की घोर रुगुल हुनी है। इस प्रकार आप वीर दल एक प्रक्रिया है भौर साधन भी आय बार दल यक्ष है भौर घाटनि भी।

किशोर मंच

इन्द्र-विरोचन

बल नीत शास्त्री

देवता प्रो मे सबसे व" इ न्द्र था। देखों (राजमों) में मबसे बड़ा विरोचन था। एक बार विरोचन मीर "म्ह आहमा और परमात्मा के विषय में बात करने लगे। दोनों की ममन में कुछ भी नहीं आया। वे खुव मोचने नथे। बन्त में दोनों बहा जो के पास गये। बहुत जो हो पास बठाया। इन्द्र बिल्कुल सादे कप भें बा प्रीर विरोचन ने राजाओं के कपड़ पहन त्से थे। उन्होंने बहुता के कार में कहा — हम आपता और परमात्मा

क्या है और परमात्मा के साथ उस का क्या मम्बन्ध है " प्रजापति बह्या में क्हा कि पहले दोनो एक वर्ष तक बह्यवर्यवत घारण करके मेरे पास रहां। फिंव तुन्हें इसके विषय ये बताऊमा। दोनों ने ब्रह्माजी को बात मान ली। एक वर्ष तक ब्रह्मवर्य का बत घारण करके फिर दोनो प्रजापति के पास गये बह्या (प्रजा-पति) ने उन्हें एक कटोरा दिया और कह्या—जाबा देसो इसमे तुन्हें क्या दिसाथी देता है।

दोना नै कटोरे में देखा। उसमे

इन्हें भरीर की खाया दिलाई ना। उन्होंने कहा—कटोरे में हमें शरीर की खाया दिलाई देती हैं। हमारे दाढी, मूछ केश, कुण्डल मुकुट श्रादि दिलाई पडते हैं।

इसके बाद प्रजापित ने उनके बस्त उतरवा दिये। उन्होंने फिर से कटोरे में देखने के लिए कहा। दोनों ने फिर देखा। उन्हें फिर से खरीर को छाय। दिखाई दी उन्होंने फिर प्रजापति से जाकर कहा कि घरीर की छाय। दिखाई देती है। प्रजापति ने कहा— यह बारीर ही जापारि



यह बात सुनकर दोनो प्रपनी राजधानी लौट गये। कहाा (प्रजा-पित) को बात याद करके रिरोचन तो प्रपने शरार को हो सब कुछ सम फ़्ते लगा। वह चूब घच्छा खाता घच्छा पहनता और शरीर को मजा कर रखता। उसके साथी भी ऐगा कि करने लगे भीर आपस में फ़गट कर नक्ट हो गये।

इन्द्र ने ऐसा नहीं किया। नसने आरमा के बारे में सोचा, उसकी समक्र में नहीं ग्राया कि शरीर ही किस (केष पुष्ठ ११ पर)

महात्मा गांधी और स्वामी श्रद्धानन्द दोनों को एक जैसी वीरगति प्राप्त हुई

डा० रमल किशार गोयनका

भारत के ब्रामिक काल के दिवहास में उनीवारी बाताव्यी पानेक काराएं। में महत्वपूर्ण है। एक प्रमुख कारएं। यह है कि इस गावाव्यों में धर्मक युग पुरुषों दार्घानको सुवारको विद्वामो जननेतायो मादि के क म सिन्ना भीर देग की कोश्रीय किया। ऐसे मह पुरुषों में महास्या नाची और स्वामी अञ्चान का नाम इतिहास के पृष्पों पर स्वर्णालयों में घष्टित है महामा गावी और स्वर्णी अञ्चानय को से से से सुवर्गन एए जिहने धरने स्वयन सुरों सुवर्गन एए जिहने धरने स्वयन सुरों में अप्तान का नाम स्वर्णालयों सुवर्णन

म्बाम अद्वान दका जाम २५ फर वरी १८५ तथा महामा गाणी का जाम अक्तान १९० को हुमा। गत्त श्वार व्यामी अद्वान गाणी न ल्यामा १२ वप व ग्यामी अद्वान द जब तत्त्र १७० से वरेगी में माने व स्वामा कर रहें गत्व गाणी प्रशंसक याठ साला में गत्या प्रनास मन १८६६ से प्रदान वध्य मुगास मन १८६६ से सावस्त्र माणी के विजित्त सदस्य को तब गाणी नवा कहा कि खान था।

गावा मई १ ६३ में एक वेरिस्टर क नैसियन से भारतीयों का मुकदमा लड़न के लिए निश्च प्रयोगा यद तो उन समय तक मुशादान प्रायनमात्र की सम्मूल गतिविधियों गर खा गय भीर साथ प्रतिनिधि सभा के प्रधान वता

गांधी विक्रिण प्रफाका में कई भार तीय प्रायसमाज के प्रचारकों के सपक में ध्याय और उनके धारम त्याव एवं देशमीतः को दसकर व इतन प्रमाधित हुए कि जुलाई १८०४ में जब प्रायसमाज के प्रचार क लिए माई परसानद दिलाण पण्डे नो गांधी ने उन्हें जोड़ानिस्थयम में मनप्त समर्पत किया

इचर भारत से स्वामी श्रद्धानद न ५६ नवम्बर १ १८ में घाय प्रतिनिधि सभा के माध्यम में मुस्कुल स्थापना का प्रताब स्वीकार करा निया या धौर धन क्का प्रयान स्थान स्थान स्थापन स्यापन स्थापन स्य

महारमा गांची ने निक्षण स्राप्नीक से भ रतीय कुलियों के सम्मान एवं स्रविकारी के लिए मन १० में सत्यायह स्रारम्भ किया यह जन धारोकन बराने देगा बिना परन नो को स्वापार करना भागे पर पजीकृत प्रमाणप्त न दिलाना धार के स्वापार करना भागों पर पजीकृत प्रमाणप्त न दिलाना धगठों की छाप देने हैं इकार करना धार नहीं की साथ का उल्लेखन करना धारि धनेक रूपो में चन रहा था।

स्वामी अद्धान को एक धारोलन की बालकारी मिली थों र रहें यह भी गत हथा कि गांधों के नतत्व में सब आने वाले स स्वय ग्रह धारोलन को धन को धावश्यकता है। इस मी अद्धानत ने नूर ठ गुरुकुल क छात्रों का नूनों के रूप में काय करन धन सम्ह करने की प्ररणा थी इस प्रकार समृहोत बन मेरे प्रिय म इ सन्धोषन से पज्ञ के साथ गांधों को भन्न

न्त्र सी प्रदानद प्रीर व भी के प्रथम परिचयका यह कहानी स्वयमहामा गापान यग शष्टिया के ६ अन्त्रदा १६२७ के प्रकमे स्वामी आसे केस्मरण शोषक से प्रकानित की।

गांधी जा ने सपने सस्मरण म तिला स्वाम जी ने पुरू जापन अवा था वह हिंदी में था। उन्होन मुक्त मेरे प्रिय माई कहकर सम्बाधित क्या था "स बात न मुक्त मुगीराम का प्रमी बना दिया। इस प्रकार इस छोटे से न्यक मे जो सम्ब थ नना वह स्व मा उद्धानत के गहीद होने तक घनिष्ट एव सामीय सम्ब ची के रूप में चलता रहा

महात्मा गाषी के निजय प्राप्तिका स मारत प्रम्त पर स्व भी अद्वानन से उनकी रहती मट गुरुकुल कायबी म ६ सर्पत १ १५ को हुई। गाषी ६ अन्तरो १-१५ को दिद एा अफाका से बन्दर बन्दरवाह एन्ये थीर शांतिनिकेनन मे महाकवि रसीन्नाय ठाकुर से मिलते हुए १ धर्मिन को हरिद्वार मे प्रवेग किया। गांधी को स्वामी अद्वान व ने उतने सोझ मिलाने का अय सी एफ एच्यूज को है जिहीने गांधी को यह सलाह ना भी कि भारत जाने पर भारत के तीन महान सुपुत्रों से एक स्वामी अद्वानद सी वे।

गांची ने जारत जाने से कई बास पून २७ माच १९१४ को नेटास (दक्षिण अफ़ीका) से स्वामी श्रद्धानद को पत्र से ऐंडपूज के सुफान और उनके दक्षन की श्चपनी उत्सुकता का व्यक्त किया महात्मा गाधी ने प्रिय मह मा जी सम्बोधन क बाद पत्र में लिखा श्री एन्यूज मुक शापके नाम भीर काम के बारे में उतला जुके हैं। इसलिए ऐसानही लगता कि मैं किसी धवनवी को लिख रहा है। धाशा है इस सम्बोधन के लिए घाप मुक्त श्रमा करने क्यों कि मैं भीर श्री एच्यूज दोनो ही भ्राप भीर भाषके काम के कारेम चर्च करते समय यनी सम्बोधन करत रहे हैं। श्री ऐत्यूज ने मुक्त यह भी बत सामाथाकि गृहदेव रवी न्नाय ठाकर भौर श्री सुकील कुमार कर पर भापका कितना स्थिक प्रभाव पढा है। उनसे सभ पता बना है कि प्रापके शिप्यों ने सत्या ग्रहियों के लिए कितना काम किया वा छाहोने गुरुकल के जीवन के इतने सुन्दर शुरु चित्र स्रीचे व कि यह पत्र लिसते समय लगता है जैसे मैं गुरकल मे ही पञ्च गया ह। ी एच्यूज ने मेरे मना मे उक्त तीनी स्थानी को देखने और इन स स्थाको के प्रधान भारत के तीन बहान सुपुत्रों के प्रतिसम्भान प्रकट करने की उक्तष्ट धिमलाका जगा दी है

महारमा गांधी के गुरुकल कांग्रधी
पण्यन से पहन मगनलाल गांधी फोलिकस
पाठवाला के २५ छात्रों के साथ नहा पहुन के थे गांधी न - फरवरी १९१५ का पत्र लिखकर स्वामा खद्धान्त का बज्धों को प्रमादन निम्मा खद्धान्त का बज्धों को प्रमादन निम्मा खन्मे साथ परिश्रम करने के निग्व यह दिग्या धार लिला बिना स मत्रण ही सापने निकल पहुंच कर साथके चरणा म सिर कुकाना मेरा कस्ता है के स्वामा मेरा कस्ता है के स्वामा मेरा

गांधी धर्मन १६१४ को गुक्कल कागडी प च जहा स्वामी श्रद्धानर की उपस्थिति मे गुक्कल के ब्रह्माचारियों ने उक्का स्वागत करते हुए मानपत्र भट विद्या।

गांधी न प्रपने उत्तर भे प्रव नातों क साथ स्वामी अद्धानद द्वारा उन्हें भाइ कहते की बात का विशेष रूप से उत्सेख स्वाम होता प्रकृत स्वाम जी ने मुक्त स्वाम त्या के स्वाम प्रकृत स्वाम स

है ऐसे प्रत्येक प्राची के सम्मूक मुक्ते के लिए तैयार हूँ। मैं प्रपते देश की लेवा में प्राच देवे के लिए तैयार हूं। प्रव मैं विदेश नहीं जाऊना। मेरे एक मार्च (सब्सीदाख नाक्षा) चल बते हैं। मुफ्त धाखा है कि महामा बी उनका स्थान ते नये प्रौर मफ्त मार्च मार्ने।

स्वामी अद्यानद ने भाई के नाते मानो घावीबांद देते हए कहा मक्त यह युनकर प्रसन्नवा हुई कि धाप घट प पत पहुंचे धौर धन्य जोधों की णाति वाहर पहुंचे धौर धन्य जोधों की णाति वाहर पहुंचे मारत की सेवा करने के निष् विदेश नहीं आयेंगे। सक्त धावा है कि गांधी मारत के निष् ज्योति स्तम्ब बन जाएंगे। स्वामी बदान व की यह बर्बि-ध्यावाणीं कितनी खड़ हुं, यह हुस गांदी वाही ही नहीं सार। सुसार बानता है।

अहारमा गाँधी स्वामी अद्धानत्व के जीवनकाल में वो बार द सम्मेल १९१५ तथा २० माच १९१९ को गुरुकक कागढी गय तथा उनके शहीर होने के समयम बार मास उपरात १६ माच १९२७ को बीलात माध्य देने गए थे।

इससे पूज गांकी २० माच १६१६ को गृहकल के वार्षिक उत्सव पर जब स्राय ता उहोन गुरुकल कागडी की स्बशामित प्रजातत्रय ग्रीर राष्टीय सस्या मानते हुए स्वामी श्रद्धानाद की प्रशासाकरते हुए कहा या यायममाव की गतिविधि का सबस्रठ परिसाम कदा चित गुरुकुल की स्थापना धीर उसके परि चालन में दिला पहत है यह ठीक है कि सनामा मुजीर स की प्ररत्नादायक उपिवति ही सकी गणित का प्रविष्ठान है किंदुयह सस्यासच्च धर्यों मे एक स्वगासित प्रजातशीय और राष्ट्रीय सस्वा है किसी भी प्रकार की सरकारी सहायता या भाश्रय से वह बिलकुल मुक्त है। व्स आवण मे गाथा ने निधन स्थक्तियों द्वारा दान देने तथा सस्था के प्रवसकी की जबरदम्त सगटन शक्ति की मुक्तकठ से

महारमा गांधी न अपनी आरमकवा से पहली याता के धनुस्त के सबस में मिला अब मैं पहांब से बीलने वाले महारमा जो के स्थान करने और उनका मुस्कुल देवने गया तो मुस्ते बडी शांति मिली। हरिद्वार के कोलाहल भीर गुरुकुल की गांति के भीच का सेव स्पष्ट दिखाई देवा था। यह त्या नं मुक्त भपने प्रम से नहां मिला अहा नहां निया बहा दी सेरे पास से हटते ही न दे।

यात्रा के यद महात्या गायी और स्वामी अद्धानण से सहस्योत निरतर बढता गया धीर स्वामीनता ज्याम के की बार मिलकर काव किया। जब प्रस्वों ने रोसट स्वितियस शाय किया तो स्वामी अद्धानस्य ने ३० साथ १९१९ को दिस्सी से ४० हुआ र अस्तिसर्वी (विष पुष्ट ११ वर)



आचार्य क्षेमचन्द्र 'सूमन'

हिन्दी के ग्रनन्य साधक आराचार्य क्षेत्रवन्द्र सुमन इन दिनो दिवगन

हिन्दी सेवियो की स्मृति को विर-स्थायी बनाने के महन्वपूर्ण यज्ञ में सन्यन हैं। दम ल्ल्डो में प्रकाश्य इस विद्याल ग्रन्थ के दो ल्ल्ड प्रकाशित हो चुके हैं। इस ग्रन्थ में देश-विदा के हुजारों हिन्दी सेवी लेखकों, कवियों, पत्रकारों, हिन्दी प्रवारकों के प्रामागिक परिचय प्रकाशित किये

श्री मृमन नो मृनत धार्यसमाजी तथा काग्रमी हैं। प्रार्थममान में ही। उन्हें दित्ती सेना के मस्कार मिले। गृत्कुल महाविद्यालय ज्वालापुर मे सहाविद्यालय व्यालापुर मे विद्यालय के स्वास्त्र से स्वास्त्र में विद्यालय के श्री नरगों में अध्ययन के

दौरान उन्होंने वैदिक धर्म व भारतीय संस्कृति की मेवा का मकल्प लिया। जिसमें वे ७० वर्ष की श्रायु में श्रमी

तक लगे हए है।

समन जो को डिल्टी साहित्य व सस्कृतिको सेवा के निए राष्ट्रपनि ने गनव ईंडी प्याओं में स्प्रानि किया। उन्हें पत्रकार शिरीसिए, साहित्यसार्तण्ड, साहित्य वाजस्पनि सादि को उपाधियों में विश्वित १६ मितम्बर को ७०वें जन्मदिवस पर

आर्य विद्वान्-हिन्दी सेवी आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन

शिषकुमा**र गोयल**

किया जाचुका है।स्वाधीनतासेनानी केरूप में उन्हें प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने नाम्नपत्र मेंट किया क्या

सुमन जी मार्थसमाज मे सक्रिय योगदान करते रहे हैं। मारीशस में १९७३ में मायोजित १२ वे मार्य महा-सम्मेलन में हुए कवि मम्मेलन के वे मध्यक्ष थे। ३५ वर्षो तब उन्होंने गुर-कुल महाविद्यालय ज्वालापुर की म्रतरंग समिति में विभिन्न पदी पर गृह के शिक्षा मैंवा में योगदान किया।

स्वाधीनता सेनानी

मुमन जी ने स्वाधीनता धादी-लन में भी सक्रिय भाग लिया था। सन् १९४२ में भारत छोडो बादोलन में वह लाहीं? में गिग्फ्तार किए गए। वह देश की स्वाधीनता के लिए फीरोजपुर जेल में पुरेदो वर्ष तक यातनाए सहन करते रहे। प्वाधान मरकार द्वारा पजाव से निक्कासन कर दिए जाने पर वह प्रपने याम वाव्याड (मेंग्ठ) ग्रागए। समन जी को सक्रिय नेता नमभकर उत्तर प्रदेश सरकार ने वाव्याट में न्जायवस्त कर दिया। नगमा स्थम सास न्व वे ग्रपने गाव मे नजरवन्द रहे।

सुमन जी ने फी नेजपुर जेल में "कारा" नामक एक रोचक मण्ड काव्य की रचना की थी। इस सुन्दर खण्ड काव्य में सन् १६८२ के राष्ट्रोय धान्दोलन का सरम वर्णन ममन जी ने प्रनोखे उग से किया है। "कारा" में सुमन जी के देश के युवको का यो धाञ्चान किया है।

> हम बढ़े हमारे जीवन में, बरबन तुफान धर्मण उठे। मदियों से गोते, भारत के तरकर का नीवा तीर उठे। युग-युग से परवशता पिजरे, का बन्दी भारत कीर उठे। है जग रूग जिसमे पाबन, वह वीरों का समझीर उठे। हम जलती प्राहों से रिपु के, प्राएगों को जलता छोट चले। "जय हिन्द" हमारा नारा है, हम नाल किने को ओर वने।

सुमन जी ने जहा अपनी श्रोज-भ्वी लेखनी के माध्यम से स्वाधीनता सप्राम मे योग दिना वहा उन्की श्रोजस्वी वाणी ने भी देश नी नह नाई की बाउन का के स्वाधीनन। के श्रमन या में "में को सार्य स्मन पित करने का धाह्वान भी किया।
न-'रबन्द रहते समय उन्होंने 'कारा'
के प्रतिरिक्त 'बन्दी के गाने' ना के काव्य सकलन की रचना भी की थी। ध्रमस्त क्रान्ति के गोचक इति-हास के रूप में उनके 'ट्रमारा सघर्ष', 'नेताजी मभाष', 'ध्राजादी की कहानी' ग्रादि रास्ट्रीय मावनाओं से श्रीत प्रोत ग्रन्थ उल्लेखनीय है।

ममन जी एक यहास्त्री साहित्य-कार के शाय शाय निर्मीक व सफल एकर र भी रहे हैं। उन्होंने क्षा 'मनस्त्री' 'शिक्षा मुघा' एव लाहीर के दैनिक हिन्दी मिलाप' के मस्पाद-कीय विभाग में काफी मनय तक कार्य किया वहीं उनके सम्पादकीय लेख ग्रोजस्त्री व राष्ट्रीय भावनाग्री से ग्रोजस्त्री व राष्ट्रीय भावनाग्री से ग्रोजस्त्री व राष्ट्रीय भावनाग्री से

समन जी ने लगभग चार दर्जन पुस्तक जिनकर व सम्यादित करके हिन्दी साहित्य की प्रिमिवृद्धि में प्राप्त कर से पी दिवा है। 'प्राप्तुनिक दिन्दी के त्रम गोन,' "हिन्दी के लोक-प्रिय किंत', सिल्कका', 'हिन्दी के लोक-प्रिय किंत', सिल्कका', 'हिन्दी साहित्य सोपान' 'साहित्य सोपान' 'सुमन बौरम' 'प्राप्तुनिक हिन्दी साहित्य और प्रानि' प्राप्त की प्रानि साहित्य और प्रानि' प्राप्ति लोकप्रिय सन्यो की रचना करके उन्होंने हिन्दी साहित्य की प्रानि भी देवनी साहित्य की भागी सेवा की।

उ० वें वर्षको झायुमे साहित्य को सेवामे निरन्तर रत हैं। इसी प्रकार शतायुहोकर वे हिन्दी सेवा मेल्गेरहीं, यही कामना है।

> 'धर्मदूत' पिलखुवा (उ० प्र०)

दिल्ली के आर्य वीरो आओ कैथल चलें

(उत्तमचन्द्र शरर) मचानक धायवीर दल हरियाणा

२० से २० सिनम्बर तक कैंबल मे हरियाएग प्रान्तीय स्रार्यवीर मम्मेलन पूरे समारोह से मनाया जा रहा है। सम्मेलन की ग्रध्यक्षता भार्यजाति के निर्मीक प्रहरी श्री ला० रामगोपा जी बानप्रस्थ करेंगे। इतियाग्गामे इस प्रकार प्रत्येक वर्ष प्रान्तीय स्तर पर सम्मेलन होते रहते है जिसमे प्रान्त भर के आर्यवीर, तथा समाजे सम्मिलित होकर समा-रोह को सफल बनाती हैं। दिल्ली भार्यममाज का मुख्य केन्द्र है। देश के विभाजन के पहतात तातीर के स्थान पर दिल्ली ग्रायों का गढ बना 🖢। प्रमन्तना की नात है कि दिल्ली में प्रार्थतीयदल भी प्रपना स्थान इना पाया है। ग्रार्यवीर दल ग्रार्य-समाज का खड़गधर बाज है। युवा वर्गका मार्थसमान मे प्रवेश द्वार मार्यवीर दल ही है मन दल मार्य समाज का भविष्य है। हरियागा के इस प्राप्तीय सम्मेलन में दिल्ली के

आर्थवोरो तथा समाजों को धामित्वत करने में प्रसन्तना अनुभव कर रहा हूँ। हरियागा दिल्लो का समीपवर्ती प्रान्त है। दिल्ली के आर्थवन्यु यदि बोडा मा कध्ट करे तो हरियागा के प्रायंबोरों का उत्माह के धामी उप-स्थित से वडा सकते हैं। इस के माथ ही सेवाइल का सुन्दर रूप भी प्रस्तुत कर मकते हैं। प्रार्थममाज का मुजा वर्ग धामी इस साठित कार्यक्रम से दग्न के सम्मुल प्रपना उज्ज्वल रूप प्रस्तुत कर सकता है। सत दिल्ली

के ब्रार्यबन्धुओं से साग्रह निवेदन है कि वे २० २१, २० सितम्बर को कैथल के लिए ही जिर्बरमें।

सम्मेलन में देश भर के आर्थ नेता पथार रहे हैं। पजान के चुनावों के कारए। पजान का वह सहयोग नो हमे न मिल मकेगा जो हम जाहते हैं फिर भी पजान तथा हिमाचल के भार्योग भी इस में यथापूर्व सम्मि-लित होंगे। थाज देश तथा समाज के सम्मुख कई चुनौतियाँ हैं, धानकनाद का राक्षस मुहं बाये खडा है, साम्भ- दायिकना, देश के विभाजन के पड़ान् भी हुपारा पीछा नहीं छोड़ रही, समाज में छूनछान तथा दहेज जैमी भय छूद वोमारिया समाज को सत्य होन बना रही हैं। उघर धार्मिक क्षेत्र में प्रत्यविक्वास धौर पासण्ड धाज के विज्ञान के गुग में भी धार्य-समाज तथा बुद्धिजीवियों को चैनज कर रहे हैं। इन नमाम गांगों के विरुद्ध आयंसमाज के गुवा वर्ग की समठित धावाज आज समय को मान है। मत विन्नो नथा धासपाम के धार्यक्ष प्रवाच आपता को प्रत्य वीना है। सत विन्नो नथा धासपाम के धार्यक्ष प्रवाच असपान को प्रवाची वनाने में दन के कार्यकर्नायों को सहयोग अवस्य दें।

मेरी उटी कामना है कि समय की इस तम को पूरा करके के लिए एक दूरर् नम्मेलन आर्थवीर दल दिल्ली की थोर से बुलाया जाए दिल्ली देश की तमाम गतिविष्यों का केन्द्र है, यदि आर्थवीरो का सम-

(बेब पूष्ठ ६ पर)



ब्रध्यक्ष यशपाल सुधान् ब्रध्यनीय भाषसा करते हुए।

केन्द्रीय ग्रार्थ यूवक परिषद दिल्ली के वार्षिक ग्रधिवेशन मे अध्य-क्षीय भाषणं न रते हुए युवा पत्रकार एवम आर्यमन्देश के सम्पादक श्री यशपाल सुधाश ने मार्य युवको का श्राह्मन । कया कि वे देश धर्मको रक्षामे तत्पर हा। उन्होने युवका की भ्रन्तर्राष्ट्रीय स्थिति पर प्रकाश डालते हए कहा-सभी देशों में यवको की रुचिया शारीरिक विकास. मारिमक विकास से अलग हटकर विद्रोह एव नशे पाप सगोत । या **≰कर्त्तव्य विमु**खताकी ग्रोर वटी है। र्घामिक नैतिक मृत्यो का हास भी विस्वभर के युवरी में हुआ। है। हिप्पी- वोल रह थे। उह ने इस अवसर पर

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

दश धर्म और मंस्कृति की रच्चा हेतु चरित्रवान युवक श्वागे श्वायें

इज्म की ग्रादी, कैवरे चौर जीन की सस्कृति हमारे अपने देश में भी घर करता जारही है। तप, सयम भीर सदाचार से श्रीभे 4त हमारी सास्क्र-तिक ग्रस्मितान जाने कहा धूमिल हो गया है। अनेक राष्ट्रीय सम-स्याए भी ग्राज हमारे सामने मुह बाये वडी है। जिन्का सामना करने

युवको की साज नितान्त भावश्यकता नंतिक भौर चारित्रिक गुरगो से युक्त देशभक्त युवको भीर उनके संगठनो की ग्राज स्थान ।स्थान पर ग्रावश्यकता है। यह समय को प्कार

श्रो सुघाशुजा स्नार्यसमाज श्रनार- किया। कली (मन्दिर माग) मे आयोजित युवक रैली के समापन समाराह मे



घाय युवक दवजारीहरू के समय दवज गीत गाते हुए ।

श्रिषकान्या, मण्डन । यको, शारा नादको यो भी पुरस्का विश्विसल डोरी, बैज आदि से सम्मानित

इस भवसर पर ग्रध्यक्षत कर रहे श्री यशपाल सुधाशु को केन्द्रोय आयं युवक परिषद दिल्ली की स्रोर

सं एक टाफी भा प्रदान को गयी जिसे श्रयं जगत् के सम्भादक श्री क्षितीश वेदालकार ने भट किया। इस रैली में विभिन्न स्थानों है

भाये सैकडो युवको ने भाग लिया चन्द्र मोहन ग्रार्थ प्रेस सचिव



केन्द्रीय ग्राय युवक परिषद् के समापन समारोह में दायें से श्रीमती प्रकाण ग्रायं,ी सितीश वेदाल कार. श्री यशपाल सुत्रांगु, श्रीमती सरला मेहला, श्री विश्वपाल जयन्त, श्री धमवीर एव श्री श्रनिल आये।

परायण महायज्ञ की प्रणोहित

श्चार्यसमाज मन्दिर न्यू मोतीनगर मे श्रावराी पर्व के उपलक्ष्य में किये जा रहे यजुर्वेद परायण महायज्ञ को पूर्णाइति न सितम्बर को हुई। इस अवसर पर श्रद्धाल जनता द्वारा पूर्ण सहयोग किया गया। ग्रायंसमाज मन्दर मे यजुर्वेद पारायण महायज्ञ के ग्रनावा बेदकथा तथा श्री कृष्ण जन्माष्टमी का भी श्रायोजन किया गया जिसमे सर्वश्री प० शिवाकान्त उपाध्याय, प॰ भारद्वाज पाण्डेय, प॰ भारत मित्र शास्त्री ग्रादि विद्वानों के सुन्दर उपदेश हए। इस

पुण्य भवसर पर श्री जय भगवान धार्यकी भजन मण्डती द्वारा मनी-रम भजन भी सुनाये गये, जिसमे जनता ने भरपूर लाभ उठाया। श्रन्त में समाज के प्रधान श्री तीर्थराम जी धार्य ने सब का धन्यवाद किया तथा समाज की झोर से यज्ञशेष के रूप मे सिलाई की मशीन धौर यजमानो को स्वामी दयानन्द की अपनर कृति सत्यार्थप्रकाश मेंट किया।

तीर्घराम आर्थ प्रधान

सितम्बर के प्रवचनकर्त्ता

मार्यसमाज विवेक विहार में रविवार के साप्ताहिक सत्सग मे निम्न-निवित महानुभावों की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है।

रविवार उपदेशक महोदय श्री प॰ रविदत्त जी गौतम एम ए १५-६-54 साहित्याचार्य श्रीयुत यशपास सुधाशु २२-६-५५ श्रीयुत जैमिनी शास्त्री ₹8-8-5% दर्भनाभिलाषी. मार सी कथरिया मत्री भार्यसमाज, विवेक विहार

नेत्याज्य के वाज परा

प्रधानमन्त्री के नाम एक पत्र

वैंस तो देश के प्रचान मन्त्री होने के नाते श्रापके पास ऐसी ठोस व्यवस्था है ही जिससे प्रापको देश मे घटने वाली प्रत्येक ऐसी घटना की जानकारी मिलती रहती है जिसका सीचा सम्बन्ध देश की धक्षण्डला, एकता तथा सुरक्षा से है । किन्तु फिर भी मैं देश का एक हितविन्तक नागरिक होने के नाते बापका ध्यान इस समय पाकिस्तान द्वारा हमारे देश मे चलाये जा रहे खल युद्ध की छोर फवन्य दिलाना चाहता ह। नीच लिली जिन घटनामी का मैं इस पत्र में उल्लेख कर रहा है। मैं उसे पाकिस्तान द्वारा हिन्दु-स्तान पर एक छल बाक्रमण ही मानता ह। यह पत्र मैं "संझाशाने लिख रहा है कि भ्राप इस पर गम्भीरतासे विचार कर इस क्योर मधी बावश्यक यम उठाने की कडी व्यवस्था करेंगे।

पाकिस्तान को सन् १९७१ के युद्ध मे बरी तरह परास्त होने के बाद यह बात पुरी तरह साध्ट हो नयी बीकि वह किन्टस्तान को सीघाच। त्रमण कर कभी भी परास्त नहीं कर पायेगा। इसी प्रकार के विचार पर्कस्तान तथा ग्रमरीका ने युद्ध विशेषज्ञो ने भी व्यक्त किए है। इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि प्रकि-इतान के युद्ध विशेषज्ञी ने सोचा कि हिन्दु-ह्थान पर एक छल बाक्रमण किया जाए ताकि उमे ग्रन्दर मे तोडा वा सके ग्रीर अब पाकिस्तान हिन्दस्थान पर भाक्रमण करेतो उमे टिदुस्थान के अन्दर पाकि-स्तान समयन पचमांगी तत्त्वा का समर्थन धीर सहाबता मिल स्कंधीर हिन्दुस्थान को ग्रन्दर से नोड कर कमजोर किया

ऐसा लगता है कि इसके लिए पाकि-स्तान ने अपनी नयी रशानीति म हिन्दू स्थान मे तीन विजिब्द स्थान बम्मू कम्मीर पजाब तथा हैदरावाद को चुना है। पाकि-स्तान धन त जम्मू कत्मीर को हिन्दुस्थान से ग्रलगकर एक मुस्लिम राज्य स्थापित करन की कल्पना करता है। इसके लिए पाकिस्तान तथा शेष मुश्लिम जगत् हिन्दु-स्थान के इन्लाम के जन्नी कटटरवादी तथा प्रथम्तावादी तत्त्वो की खुल कर धार्थिक व सःमरिक सहायता कर रह हैं। जिसके कारण ग्राज कश्मीर घाटी एक मिनी पाकिस्तान का रूप घारण कर चुकी है। इसका प्रमाश समस्त देश के सोगो को हिन्दुन्थान ग्रीर वैस्टइण्डी**ज** के बीच खेले गये ऋषेट मैच मे वहावे मुन्य मत्री शेख फाडक धम्बुल्लाह की उपस्थिति मे पाकिस्तान मण्डे सहराये जाने तथा हिम्दुस्थानी खिलाडियों के प्रति दुवित क्यवहार को देखने से मिला जाता है।

पाज भी जले ही बहाँ शाह की कांग्रेस समर्थक सरकार है किन्तु कश्मीर पादी की पाकिस्तान परस्त नीति तथा स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं है धीर वह पियति तव तक बनी रहेगी जब तक सविधान की सम्यायी बारा ३७० को समाप्त नहीं किया जार्मा। एसी मेरो मान्यता है।

पाकिश्तान का दूसरा मोर्चा है पजाब इसके लिए पाकिस्तान मे जनग्ल नियाजी की देख रेख में लगभग एक लाख मुख्य मानो को सिक्त बनाकर उन्हें सिक्त मत की सभी बातों तथा धातकवादी एव पृथ-क्ताबादी गतिविधियों के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा है। जिससे उन्हें पजाब मे मेजकर उग्रवादी सिस्तो के साथ मिलकर देश मे धराजक तथा पृथकतावादी कार्य-क्रमो को चलाया जा सक । इसके लिए पाकिस्तान में सिस्तों को भी उग्रवादी गतिविधिया सिखाने के लिए भी सैनिक शिविर स्थापित किए गए है। जिसके बारे में आपने भी कई बार इस सम्बन्ध में यह कहा है कि पाकिस्तान में उप्रवादियों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है इसके हिन्दू-स्थान के पास प्रमाश हैं। यह मोचा पजाब का भी इसीलिए बनाया गया है ताकि जब पाकिस्तान हिन्दुस्थान पर ग्राक्रमण कर उस समय ये पथकताबाटी सिख बने मुमलमान तथा उग्रवादी सिक्ट हिन्द्स्थान का धन्दर से कमजोर कर उसकी सहायता

पाकिस्तान क नीसरा मोर्चा हैदरा-ाद है जो एक मुस्लिम बाहत्य नगर है। स्मानत यह तो गपको भी विदित ही है कि निभाजन के समय निजाम हेदरा वाद को पाकिस्तान से मिलाना चाहता वा जिसके लिए वहा पर रजाकाराना बुद्ध भो हुआ। याकिन्तुत्भारेलीहपुरुष सर-दार पटेन ने हैद बाद का हिन्द्रशान मे मिला कर उसकी सब ग्राशामी पर पानी फेर दिया था। इसके बाद १६८ से निरतर जो हेदराबाद म साम्प्रदायिक दगे हो रहे है उनके पीछे यही पाकिस्तान सम-अक प्रवमागी तत्त्वो जिनको पाकिस्तान म महाबता मिलती है काही हाथ है। ताकि यहा मजस्बी जनून और प्रकता-तन्त्र सित्रय रहे भीर यहा भातक व्याप्त रह। हैदराबाद के घास पास के क्षेत्र को विशेषरूप स मत परिवर्तन के लिए भी निक्चित किया⊓या है। आहा पर रहन वाले हरिजनो को पैट्रो डालर के उस पर प्रलोभन देकर मुसलमान बनाया जा रहा है ताकि हैदराबाद को एक अलग मुस्लिम राज्य बनाया जा सके।

इसके ब्रतिरिक्त हिन्दुस्थान के सीमा-वर्ती राषस्थान, पत्राव बुजरात, ब्रासाव बादि राज्यों ने मुसलमानों की वृत्तपैठ मी बड पैमाने पर हो रही है। "मुस्लिम इण्डिया" अव्यवार के अनुसार १६८३ से पूर्व पाच वर्ष में लगभग ७६ हजार पाकि-स्तानी हिन्दस्थान मे प्रवेश कर रह रहे हैं। इस प्रकार यह सत्या इससे भी कही ग्रविक लाखी की है। ये सभी तस्व पाकि-स्तानी होने के नाते वहा समय समय पर तोड-फोड आतकवादी नवा साम्प्रदायिक दगे कराने में सलग्न रहन हैं। हिन्दुम्थान की विदेशियों के प्रति नरम नीति के कारए। इस समय हिन्दुस्थान विश्व का सब से बड़ा ग्रनाय ग्राधम बन चुका है। इसके धनिरिक्त यहाँ की बोटो की राज-नीति भी इस सम्बन्ध में कडी कार्यवाही करने में बाधक है। इस प्रकार पाकिस्तान प्राचीन यूनानी 'टोजन होर्स' की तरह

हिन्दुस्थान के भीतर प्रवेश कर उसे स्थान स्थान से छोड़ने में लगा हुआ है। फिर चाहे वह मुरादाबाद हो या अलीमड अववा मेरठ हो या हैदराबाद ।

माता है माप उपरोक्त मुद्दों पर बस्भीरता से ज्यान देकर दक्तगत एक कुर्ती-वत स्वापों से उपर उठकर देश की भव-दता भीर एकता पर हो रहे पाकि-स्वा-के इस मान्वीरक छल युद्ध को बसाया करने के लिए सभी भ्रावस्थकता कार्यवाही करेंगे विवसे पाकिस्तान जो हमारी भव-उता भीर एकता पर प्रहार कर रहा है उसके युह्न पर करारी वपत लगाई वा

> भवदीय विश्वन स्वरूप एक हितविश्वक नागरिक

आर्य संन्यासी क्या करें ?

ग्रार्यजगत मे जो मन्यासी विद्वान हैं, बहुत ग्रच्छा प्रवचन दे सकते हे बहत भच्छे व्यास्यान दे सकते है बौलने की शैली ग्रच्छी है वक्त्व कला के घनी हैं, वास्मी मे रम है उन्कासर्वत्र सम्मान होता हा है उनको स्वाने पीने की रहने की कही कमी नही। परन्तु जा सन्यासी विद्रान नहीं बेटो शास्त्रों के जाना नहीं बहुन कम पढ लिखे है प्वचन **ब्या**रयान देने की करा ज्यादा ग्रच्छी नहीं के किसी गिनती में नहीं उन का सम्मान नहीं उनको रोटी कपड़ा नही रहने को स्थान नदी कभी किसी ग्रार्यसमाज मदिर मे भटकते किरते हैं कभी कही।

बार्य विवारों र डोने के नाने ऐसे सन्यामियों का पर नाग सभाकों को करना बाहिये जिससे पिपपना भराग पोक्षाण के पक दरदर नागने की स्थिति में नहीं टाए नथा पौराहियां के मर स बादि नहीं

सार्वदशिक रार्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ग्रार्य प्रतिधि सभा प्रादे- शिक ग्रायं प्रतिनिधि सभा इस पर विशेष रूप से गम्भीरता के साथ विचार करके इस समस्या का हल करे।

२ टा प्रकार पुरोहिनों की ममस्या है। आयमनाजों में विद्वान कूषि भन और आयमनाजा के दीवाने प्रिश्तिह होने चाहिए। इसका आय अनाव है। टकारा से नथा दमरे किमी सस्या से जो नण प्रोहिना करने आयमनाजों में गए हैं। आय असमनाजों में गए हैं। आयोग स्वीन विद्वाना भीरता, गभीरान प्रमान हमनाजीना निर्मोभिता होनी चाहिए दमका अभाव है।

म्रायंनमाजो मे उन्म पुरोहित न मिलने की बणी समस्या है, सभायों को इसपर विचार करके, इंड आयंसमाजी, विद्वान् सेवा भाव रखने वाने आयंसमाज का प्रचार करन वाले, गुरुबन्दी से दूर रहकर प्रचार करने वाले पुरोहिन नैपार करन वालिए।

> जगनराम द्यार्थ ाधीनगर

(ण्हण्ण क शय)
ठित रूप िना में कही लाया जा मके और देश के जिलट आर्य नेना
यदि दल के मच से आग के देशदोहियों के जिल्दा स्पर्यना अभ्यान
चला सक नी आयमनाज देश का
नेतृत्व मस्भाल रुकता ,। आर्यसमाज के नेनाधों ने यदि स आ
प्यान दिया तो तिया ।। आर्यवीर
दल प्रमुख्ल रूप से साम भाग तकर
सहस्रोम के प्रोया।

हरियाला मार्थवार दल आज प्रगति के पद्य पर म्राम्य है उस के पास ४ शिक्षन प्रान्त के लिए कार्य कर रहे है उसे कुछ समर्पित मार्पिती सौमान्य से प्राप्त है जिनके जावन का उद्देश प्रार्थवीर दा की सेवा ही है। उस की एक ध्रमनी मार्गिक पत्रिका

भाहे कुळ "च । पद सी ग स्रार्थबन्ध् हदा न उसरा मरभर। पर रहे हैं। दन भी र० के नाभग शास्त्राएँ प्रान्त में चल रही है। स्वामी स्रोमानन्द जमे तपस्वी ने ग का गुभाशोबीद दल को प्राप्त है। इस परिस्थिति मे यदि दिन्ली के ग्रार्यवीर ग्रपने सहयोग का हाब वटाय तो हरि गरा। ग्रायंबोर दन उनका आभागी होगा। भीर निश्चय ही यह छाटा भाई समय ग्राने पर लक्ष्मगा के समान, राम की सेवा र रने मे अपना गौरव अन-भव करेगा । आर्थो । ग्राम्रो विरोधी शक्तियों के सम्मुत हम एक होकर ग्रार्यसमाज तथा ऋषि दयानन्द के पवित्र नाम को उज्वल बनाये।

समाचार सन्देश

सानाहिक मत्समो का विवरण रविवार २२ सितम्बर १६८४

व ग्रामगल प्रताप कालाना) प० उत्प्रश्रद्ध धर्मा चय किंगजब कम्प प० देवराज वदिक मिशनरी गाता कालोनी-श्रीमगीलाल बेचन गुल्मण्टी— ब्र० भोष्मदेव । गोवि न भवन-स्वामी प्रज्ञानात सरस्वती। चना-प० ग्रहोककसार शास्त्री। टगोर गाडन स्वामी यजान द जी। तितक गर-प० मुनीदेव भजनो पटेशक देवनगर प०रमेशचाद बनाचायः। नारायरा विद्वारः प० बदप्रकाश ग्राय । प्रीतमपुरा -- डा० रघन दन सिह पजाबी वाग-डा० वदप्रकाण माहेरवरी । पजाबी वाग-प० अशोक कुमार विद्यालकार भोगल-श्रीमती प्रकाशवती । महा बीरनग प० राधस्याम शर्मा।

मौडल वस्त्री--- प्रायवीर रराजीत सिह राएग मोनी वाग—डा० सुख दयाल भूटानी राजौरी गाडन-महात्मा देवश भिक्ष रमेशनगर-श्री बलवीरसिंह शास्त्री । लक्ष्मीबाई नगर-मा० मोहनलाल गाधी । विजयनगर-ग्रायवार नेत्रपाल ग्राय। सोहन गज-ब॰ मनदव शास्त्री । सदर बाजार-ग० छवि कृष्ण शास्त्री। साकेत-प० मुशील शास्त्री होजनास-प० तुलमाराम धाय। त्रिनगर प० ग्रनराथ कान्तजी। ग्रशोक विहार-प० हरिङ्चन्द्र ग्राय

य**ः स्थापक** स्वामीस्व पा न सरस्वती ग्रधिकाना वन्प्रचा विभागसभा

प्रवार वाहन द्वारा प्रवार कार्य विवरण

१-आयममाज ग्राजापाक २६ २७२८ निम्ब न द बजेसे १० बज तक प० स यदव जी स्नातक रैडियो कलाकार एवं टोलक वादक जोती प्रसाद द्वारा सगीत का काय क्रम रखा गया है जिसमे महामा रामकिशोर वद्य महोपदेशक का बेद प्रवचन रखा गया है। प० चुनी लाल मजनोपदेशक जा के मधूर भजन भी होगे

२-- ब्रायसमाज बुराडी ग्राम मे तीन दिवस के लिए प्रचार बाहन द्वारा वेट प्रचार का स्नायाजन किया गया है। ० सितम्बर से २ भक्टूबर रात्रीको ८ बजे से १ बजे नक प० बेद॰यास जो रेडियो कलाकार प॰ चुन्नीलाल आय भजनोपदेशक का प्रोग्राम रहेगा। साथ ही स्वामा स्व रूपा द सरस्वती वेदप्रवार श्रिष ष्ठाना का प्रवचन होगा। स्वामी म यवेग जी प्रधा ग्रायसमाज बुगी द्वारा प्रचार की व्यवस्था करायगे

— ।यममाज रघवरपुरा न०२ मे १ अक्टूबर स १० अक्टूब नक मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम 🕝 जी राघव क सर्वोत्तम प्ररुगादायक जीवन कथा का आयोजन किया है। यह रामायए का कथा प० सत्यदेव जा स्नातव संगीत कताकार द्वारा प्रस्तुत की जायेगी। ढोलक वादक प॰ ज्योतिप्रसाद जी रहेंगे।

४-- भायसमाज किंगज्वे कम्प मे ७ अपक्दय से १३ तक महात्मा रामकिशोर महोपदेशक का वेद प्रव चन होगाक।यक्रमात्री ८ बजेसे १० बज तक रहेगा कथासे पूरा प० चुन्नीलाल भजनोपदेशक के मधूर भजन हुम्राकरगे

x-श्रायसमाज महानोर नगर मे २६ सितम्बर स ६ ग्रब्टुबर नक आचाय हरिदेव सिद्धान्त भूषण तक केसरी का वेद प्रवचन होगा जिसमे कथा से पूत्र मधुर भजनो काभी कायकम होगा ।

> व्यवस्थापक स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती श्रधिष्ठाना वेदप्रचार विभाग दिल्ली सभा

नि शुल्क वैवाहिक सम्बन्ध सेवा

श्रायसमाज मन्दिर रमेशनगर नई दिल्ली ११००१५

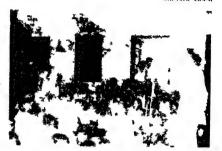
हमारे यहा विवाह योग्य लडके एव लडकियो का रजिस्ट्यान प्रति दिन साय वजे तक हाता है। मिलने का समय रविवार ११ से १२ वजे होगा

भवटीय

ग्रायं वीर दल के बढ़ते कदम

युवकामे राष्ट्रीय चारित्रक नृतिक मुल्यो एव वचारिक क्रान्ति लाने के निए आय बार दल दिल्ली प्रदेश ने ल्लिलो के विभिन स्थानो पर शिविर एव सम्मेलन भागोजित करने के लिए अनेक योजनाए बनाई है। भाय वीर दल भापके बच्चो युवको मे जागृति के लिए शारीरिक एव मान सिक मा यात्मिक उनित के लिए बाह्वान करता है। समस्त मायसमाजो के अधिकारियों से निवेदन है कि अपने मिदर में आय वीर दल की शास्ताए भायोजिन कर तथा युवको को ग्रायसमाज का ओर भाकृष्ट करने के लिए रचनात्मक कत्म उठाय ।

प्रीतनदास रसवन्त



नई दिल्ली भागबीर दस के शिरि में पडकती मुजामो और प्रलिब्ट मुदुयी के द्वारा काच पीसते युक्क दशको को परिचय देते हुए श्री मागे राम स्नाय ।

त्र्यावश्यक निदश

सभा के पूज परिपत्रों में दिल्ली की समस्त सम्बन्धित प्रायसमाओं के प्रवि कारियों से बार बार प्रायना की गयी है कि माप धपन अ यसमाज के चुनाव सपा करालें भीरवय ६८४ ८५ में भाग समाजदारा किंग्य एकास का बलात विवरण घोषित सभासदो की सुची साथ नय य रामभ की देव राशिया दशाश वदप्रचार तथा भायशादेश का शुरुक तथा भागभी तीन वर्षों के न्विए सभा के सिए प्रतिनिधियों के नाम उनके पूरे पते सहित सना कार्यालय को भिजवा है। बार बार लिसन पर भी स्रीतक स्रापकः साम समाज द्वारा "पयन्त श्रीपनारिकताए पूरी नहां की गयी

बार गर एक काय क लिए लिखने से सभा का धन यथ में स्टेशनरी जिटिता तथ डाक श्रादि पर अप्त हो व्याता है। हमारा समी का कत॰य है कि समाके धना**बस्यक ल**चको बनाय तथा समा द्वारा मागी गयी जानकारा को समय पर सभा कार्यामय को मिजवास ताकि सभा का संगठन महद्ध बना रहे।

समा का वर्षिक श्रविदेशन निकट अविष्य मे होने भारहाहै और सभाका वार्षिक विवरण भी प्रकाशित होना है। हमारी हादिक इच्छा है कि बावका बाय समाज की नतिविधिया भी उसमें सम्मि लित की आर्थे।

मुक्त पूरा बाबा है कि बाप पत्र निवते ही उपर्युक्त सभी जानकारिया तथा (मल्ती) सरेन्द्र महायान केन प्रविद्या क्या को बुवाकील विवया

सभा बाप सभा के सहयाग और सद भाव की अपेक्षा करती है। भवदीय डा० धमपाल ग्राय) महामधी

यार्थवीर दल क लिए यत्यावश्यक निवेदन

जसा कि सापको पूर्व पत्र दिनांक ८ ७ १८८६ में प्राथमाकी नयी थी कि बाप बपनी बायसमाज मे सावदेशिक भायवीर दल के लिए एक मधिष्ठाता का चयन करके उसका न म/निवास का पता बाय तथा दूरभाष नम्बर बादि समा कार्यालय को भिज्ञवा द। सभी तका बापकी बायसमाज का बोर स यह नाम भीर विवरण प्राप्त नही हुव प्रापन प्रपनी प्रायसमात्र के निर्वाचन के समय एक धर्षिष्टाता का जयन कर जिया होगा यदि प्रापन धना नही चुना हो तो धपनी समाज की म तरग सभा की बैठक बुलाकर इस काय को यवाशी घ्र पूरा कर ल। इत्याचुने गय मनोनीत । कबे मध् अधिष्ठाताक नाम निम्न फाम पर भर कर सभा कार्यालय को समानीध्य सिक वान काकष्टकर ताकि युवको में नई चेतना नागृत नो धीर धार्यसमाच का. समन्त सह हो स्मरण रह प्रविष्ठाता की प्रायु१८ सं४५ वयं तक हो तथा बह् ब पकी पायसमाज की घोर से बायबीर दल की समिति का सदस्य होना चाहिए।

कुपय अजिसम्ब कायबाही कर सनू-म्रहीत दर हा ॰ घमपान **धार्व**

(पच्ठ६ काशेष) गांधी भौर श्रद्धानंद की बीरगति

के जुलूस का नेतृत्व करते हुए इसका विरोध किया। स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा गाची वो भेजे गए तार के धनुसार इस दिन हए गालीकाड मे ४ हिंदू ५ मुसल मान मारे गय तया १३ घ।यल एव २०

गाओं ने ३ ब्राप्रैल, १६१६ को इस बलिदान गव वैयं के लिए स्वामी श्रदा-न-दको तार दियाधीर लिखा शैसट कानुन का विरोध करने में प्रापने तथा दिल्ली के लोगों ने जिस धनुकरणीय धैर्य से काम लिया है इसके लिए मैं बापका तथा दिल्ली के लोगो को साधुवाद देता हु। हम उसके पीछे निहित दमन की भावना का विरोध कर रहे हैं। यह कोई द्मामान काम नही है।

लक्ति बोरमगाम भीर भमृतसर मे इए दूलदायों काड़ों के बाद जब गांधीजी ने सत्याग्रह स्थिति कर दिया तो स्वामी श्रद्धानन्द न दिल्ली समिति भन करके ग्रादालन ने ग्रपना हाय लोच सिया। स्वामी श्रद्धानन्द गांधी की ग्रोर से निराध हो गय और उन्होने गाची के दृष्टिकोण का जोरदार विरोध किया। यह बोनो की महानता थी कि प्रेमभाव फिर भी बना रहाः गाधीने 'स्वामी जीके सस्मरसां' मे लिखा है कि जितना जोरदार उनका विरोध होता वा ज्तन ही जोरदार उनकाप्रेम भी होताया।

स्वामी श्रद्धानन्द की हत्या स गर्धी की बडा धाषात लगा । गामी काग्रेस कमेटीकी बैठक में भागलने के लिए गोहाी जारहे थे। उन्हें सोरभोग नामक एक द्रोटे से रेलवे स्टेशन पर लाला लाज-पतरायका तार मिला। गावी इस हत्या से स्तन्ध ये किंतु उनके विचार मे यह हत्या नही "बीरनति" भी। नाधी ने गोहाटी की २४ दिसम्बर १६२६ की बैठक मे इसे अपूर्वमरण 'एव 'धन्य मृत्यु' कहा झीर कामना की कि एसी मृत्यु हम सब को मिले।

२६ विसम्बर १६२६ के प्रधिवेशन में गांधी ने स्वय शोक प्रस्ताव रखा धीर उसमे स्वामी श्रद्धानन्द के देशप्रेम, निष्ठा निर्मयताएव धन्य गुरुगे की प्रशसाकी।

"यम इंडिया (३०-१२-१६२६) मे" शहीब श्रद्धानन्द जी 'शीर्यक से शिखी बपनी श्रद्धावालि में गांधी ने उन्हें ' बीरता का भवतार" 'कर्मवीर" एव "योव्धा" कहातया जिला, "वर्गधीर सत्य" के लिए प्राण देने के कारण मृत्यु भी बन्य हो बयी।" बाषी ने १ जनवरी ११२७ को बनारस में उन्हें श्रद्धावलि देने के बिए मगा स्नान किया भीर उस "महान **बात्मा" के कार्यों** को पूरा करने की प्रवर से प्रार्थना की।

महात्मा गांची ने स्वामी श्रद्धनन्द के इत्यारे धम्बुस रखीव को बोबी न मानकर वन वक्षवारों एवं नोकों को उत्तरवादी ठहराया जो स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय भौर मदनमाहन मालबीय को इस्लाम का शत्रु घोषित कर रह थे। गाबी ने अनेक बार स्घ्ट बब्दों मे कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द 'इल्लाम क नत्रु" नहीं हैं। गाथी के कहा कि हिन्दू~ पुनलमानो का इस हत्यास शिशालनी चाहिए भीर उनक रकत से भपने भपन हृदय का पाप थो देना चाहिए। गांधी ने प्रति शोध धौर बदले को भी घम विरोधो कहा भीर निर्देश दिया कि हिंदुक्की की भारम-सयम रखना चाहिए।

महात्मा गांधी स्वामी श्रद्धानन्द की, कूछ मामलो मे बसहमति क बाबजूद धपना भाई छादरणीय सहयोगी मानते हुए उनके गुणों के प्रशसक बने रह। धस्प्रस्यता निवारण के लिए उन्होंने जो कार्य किये उनकी गांधी ने सदैव मुक्त कठ से प्रश्नसा की । यद्यपि दोनो देशसक्तो के क्षेत्रो एवं कार्यप्रशासी में बातर या, लेकिन क्यायह स्थोग ही याकि दोनो को एक जैसी वीरगति बाप्त हुई।

कादम्बिनी से साभार ए/६८ ब्राग्नोक विहार पे-ब-I दिल्ली **५२**

(पृष्ठ ६ मे बागे) इन्द्र-विरोचन

प्रकार बहाहो सक्ता है। वह फिर ब्रह्मा (प्रजापति) के पास ग्राया भीर अपनी शकाको मूनाया।

ब्रह्मा जी (प्रजापति) ने कहा---बेटा । तुम्हारी बुद्धि देखकर मुभे प्रमन्नता हो रही है। इस बार तुम्हारे माथ विरोचन क्यो नही ग्राया ? इन्द्रने कहा -- वे शरीर को ही सब कुछ समभने लगे। हर समय सुख से जीवन बिनाते हैं। शारीरिक सूख को ही वे सच्चा सुख समभते हैं। इस बात से अलग हट कर सोचना नही

इतनासुनकर ब्रह्माजीने इन्द्र को फिर से ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने के लिए कहा। इन्द्र फिर वापस ग्रा गया। उसने एक वर्षतक ब्रह्मचारी का पवित्र जीवन बिताया। एक वर्ष के बाद बह्या जी के पास गया। ब्रह्मा जी ने कहा = ससार में ब्रह्मचर्य से बढकर कोई तप नहीं है। इसी के

इन्द्र ने ब्रह्म के स्वरूप मी जानने को इच्छाकी। ब्रह्माजीने कहा भ्रात्मा या ब्रह्म का कोई स्वरूप नही होता। इस शरीर के नष्ट हो जाने पर भी आत्मा समर रहती है। सातमा कभी मरती नही। इसे किसी प्रकार का रोग या कब्ट नही होता।"

द्वाराद्वम ब्रह्मविद्या प्राप्त कर सकते

ब्रह्मा जी ने यह उपदेश इन्द्र की दिया, जो देवताम्रोका राजा था, जिनकी सान्त्रिक वृत्तिया थी। विरो-चन ग्रसुरो का नेताथा। जो खानाः पीना, रहना यही जीवन तत्त्व है ऐसा समभते हैं वही असूर हैं, ताम-मिक वृत्ति वाले हैं। इन्द्रने उनकी आज्ञा मानी ग्रीर पवित्र जीवन विनाया । ग्रानन्द ग्रीर सुख से जीवन भर गया। इद्र को सच्चा ज्ञान मिला। विरोचन को नही मिला। इसलिए वह दुखी रहता था। सुख भीर दु य की यही पहचान है।

(पृष्ठ १ संग्रागे) देवव्रत धर्मेन्द्

बाद भी उन्होंने केवल भाषरण देने तक ही अपने आप को सीमित नहीं रखा। बल्कि उन्होने उनको चिर-स्थायी बनाने के लिए उन्होने रचना-त्मक कार्य प्रारम्भ किये। बालक वारिकास्रो, युवक युवतियो मे धार्मिक मामाजिक नैतिक मूल्यो के प्रतीक अनेक विषयो पर प्रतियोगिताए ग्रायोजित करना तथा सत्यार्थप्रकाश यज सम्कार सम्बन्धी परीक्षाएँ भायोजित करना ऱ्या युवको को परोपकारी एवं सेवा-कार्यों के लिए उत्साहित करते रहना उन्होने भ्रपने जीवन का ध्रम बना लिया था। ग्रपने

जीवन मे जो घन वैभव उन्होने प्राप्त किया धपने पास नही रखा धौर न स्वय उसके उपभोग का ग्रानन्द लिया वरन एक तपस्वी याजक बनकर ब्रार्थ बनायालय सार्वदेशिक ब्रार्थ प्रतिनिधि सभा ग्रीर अन्य ग्रार्थ साम।जिक सम्याग्री, गरीब छात्री के लिए धर्पित कर दिया।

धीर, गम्भीर एव सौम्य प्रसन्न चित्त धर्मकी घुन के धनी कुशल वक्ता, कुशल लेख र कुशल पुरोहित, कुशल प्रशासक कुशल युवा नेता श्रो देवव्रत धमन्द्र को ग्रार्थ सन्देश परिवार की छोर से विनम्न श्रद्धा-जलि।

---यशपाल मधाश्

श्चार्यसमाज करौलबाग में वेद प्रचार सप्ताह एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

३० अगस्त से ७ सितम्बर तक श्रार्यसमाज करौलवाग नई दिल्ली मे वेदकथा एव बृहद् यज्ञ का स्रायो-जन किया गया। इस अवसर पर श्री प्रो॰ रामिकशोर जी की वेदकथा एव श्री गलाविमह राघव द्वारा मधुर भजनो का रमास्वादन कराया

७ सितम्बरको श्रायसमाज के प्रागरा मे श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का श्रायोजन किया गया। इस श्रवसर प~ श्री प्रा० रामकिकोर, प्रा० रमेश चन्द्र श्री ब्राचार्य हरिदत्त शास्त्रो श्री मोदप्रकाश शास्त्री एव श्री अजय भल्ला सादि वक्तासा ने श्रीकृष्ण के उदात्त चरित्र पर प्रकाश डाला। सभाका सवालन श्री श्रोमप्रकाश सुनेजाने किया।

> निवेदक कार्यालय मन्त्री दयालचन्द गृप्त

स्व० श्री पं० देवव्रत धर्मेन्द्र श्रद्धांजलि सभा दिल्ली की समस्त आयंसमाजो की ओर से २२ सितम्बर रविवार को

श्रार्यसमाज दीवान हाल म प्रात १० बजे प० दवव्रवत धर्मेन्द्र की स्मृति मे श्रद्धाजलि सभा का ग्रायोजन किया गया है, इस ग्रवसर पर पहुँचकर कर्तव्य का पालन करे।

मन्त्री—ग्रायंसमाज दीवानहाल दिल्ली

"कैथल में कवि सम्मेलन"

पलवल । मार्यवीर दन हरि-याएग का प्रान्तीय महा सम्मेलन २२ सितम्बर रविवार से कैंबल मे हो रहा है। २२ सितम्बर रात्रि ६ बजे कवि सम्मेलन का मायोजन किया गया है जिसमे निम्नलिखित भार्य कविगरा पकार रहे हैं-प्रो० उत्तमचन्द श्वरर (सचालक), डा॰ शामा चणव मानी क्रिकेट की

सियाराम निर्भय (भारा), श्री सत्य-पाल बैदार (दिल्ली) श्री गैला राम दीवान, श्री मुन्नवर माहिब, श्री व्याकूल जी एवं धन्य कई कविगरा।

(म्रजीत कुमार ग्रायं) मत्री भार्यवीर दल हरियागा संस्कृत पढ़ने वाले छात्रों के लिए शुभ सूचना

''राष्ट्रीय सस्कृत सस्यान'' से

सुल्तानपुर महरौली दिल्ली-३० मे म्बुल गया है जिसमे विद्यार्थियो को नि शुल्क शिक्षा एव ग्रावास की सुविधा है और जनवरी से ७५ ह० मासिक छात्रवृत्ति भी छात्रो को दी जाएगी।

मनुदेव शास्त्री, प्रिसीपल सीनाराम विद्यामन्दिर दुर्गापुरी सुल्तानपुर





उत्तम स्वास्थ्य के लिए गुरुकुल कॉगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार की औषधियां

लवन करें



धासा कार्यालय-६३ गली राजा केदारनाय चावडी बाजार विल्ली-६ फोन २५६८३८



बच १ मंक ४७ मुस्य एक प्रति १० पैसे रविवार १३ प्रकृतवर, १६=६ वार्षिक २० रुपये सच्टि सबत ११७२१४१०८६ साजीवन २०० रुपय व्याध्वित २०४२

वयामन्याः १६१ विदेश में ४० डालर ३० पौँ

नई दिल्ली, २१ सितम्बर । गप्त-चर एजे नियों ने केन्द्र सरकार को झाग्रह किया है कि पाकिस्तान ने पजाब के भनावा उत्तर भारत के कुछ धन्य क्षेत्रों में प्रशाति पैदा करने के उद्देश्य से कट्टरपनी मुस्लिम नेताओं धीर सगठनों को व्यापक स्तरपर मार्थिक सहायता देने को पेशकशकी है

गुप्नचर एजसियो की सूचना के बनुसार पाकिस्तान सरकार ने 'बीसा देने का उदार नीति के नाम पर बडासच्याम भारत के मुस्लिम नेतामो व्यापारियो भौर सादग्ध व्याक्तयों को पाकिस्तान माने की सविधा दे दो है। पाकिस्तान इन लोगों के माध्यम से भारत में 'मस्लिम पर्सनल ला' भौर 'इस्लाम' की रक्षा के नाम पद मुस्लिम समुदाय को भारतीय समाज से भलग भलग करने काकप्रचार तथादंगे करवाने का इरादा रखता है।

विदेशों में भारत विरोधी षड्-यन्त्र पर नजर रखने वाले गुप्तचर सगठन ने अपनी रिपोर्ट मं जामा मस्जिद के इमाम मौलाना अब्दुल्ला बुखारी द्वारा इसी महोने के प्रारम्भ में को गई पाकिस्तान यात्रा का उल्लेख मी किया है। रिपोर्ट के श्चनसार शाही इमाम ने पाकिस्तान के नेताओं और पत्रकारों के बीच जाकर कहा, भारत मे हिन्दू, मुसल-मानो भौर सिस्रो पर बुरी तरह बरया बार कर रहे हैं। मारताय मुस-लमाना क पास इन जुल्मो क विरुद्ध सबब करने क झावश्यक साधन नही ₹ 1 इन काम के लिए पाकिस्तान सरकार धीर जनता को लडाई

लडने के लिए मार्थिक भीर मन्य सहायता करनी चाहिए।

इमाम बन्दारी ने खलेखाम यह यह भी कहा कि इस पाकिस्तान को ताकतवर देखना चाहते हैं। उन्होने श्रसम मे ५० हजार और मुरादाबाद मे पाच हजार मु ासानों के मारे जाने नथा भगत में गसामानों के पर्सनल ला के कुछ प्रावधानी के विरुद्ध ग्रदालती फेनलो का उल्लेख करते हुए इस्लामी परम्पराओं की रक्षाकी दहाई भी दी है। इमाम की टिप्पियों को पाकिस्तानी प्रखबारी ने सुस्तियों में छापा है। पारिस्तानी नेतामो ने इमाम के साथ हुई गुप्त वार्ताघो में हर सम्भव सहायता के वायदे किए हैं।

गुप्तचर एजेसिया पाकिस्तान के इराजो को जिसल करने के लिए भारत म शक्रिय धन्य धार्मिक नेताओं की गतिविधियों पर भी कडी

नजर रसे हुए है भीर इनके विरुद्ध युवा पीढ़ी को महीष दयानन्द

धार्यसमाज शाहाबाद मुहम्मद-पुर दिल्ली मे ब्रायोजित एक मास के धार्यवीरदल के शिविंग के समापन समारोह के भवसर पर बोतते हुए सभा प्रधान श्रो सूर्यदेव ने कहा-

भाज की आवश्यकता है कि ग्राम ग्राम शहर शहर मे यूवको के शारी-रिक बौद्धिक भीर ग्रात्मिक विकास के लिए इस प्रकार के आर्यवीर दल के शिविर लगने चाहिए। उन्होने धज्ञान, धमाव भीर ग्रत्याचार मिटाने के लिए तथा देश की एकता धीर भ्रखण्डता के लिए युवकी की बागे माने के लिए माह्यान किया तथाप्रेरए। दीकि सभी भार्यनर-नारियों की अपने लड़के और लड कियो को धार्य मत्सगो मे लाना चाहिए ग्रीर उन्हें ग्रपने वर्म और संस्कृतिका परिचय कराना चाहिए। ग्रार्यसमाज का उद्देश्य तो व्यक्ति भीर समाज के सर्वती-मुखी विकास

का सन्देश सुनाय –सर्यंदेव बारीरिक धारिमक सामाजिक नौकिक एव पारलौकिक हर अकार के उत्थान से जुड़ा हुआ है। वदिक मन्त य सर्वोत्कब्ट एव वैज्ञानिक है इनक प्रचार प्रसार के लिए हमे हर सम्भव प्रयत्न करने चाहिए।

> 'स श्रवसार पर ५० यूवको ने तलवार भाले तथा व्यायाम ग्रादि का सन्दर प्रदर्शन किया जिसकी जनताने मन्त्रमुग्ध होकर देखा। बह शिविर श्री बर्मवीर वशिष्ठ प्रशि-क्ष" के नेतत्व में सम्पन्न हुआ, सार्व देश ग्रायंबीर दल दिल्ली प्रदेश के ग्रधिव्हाना श्री प्रियतमदास रसवन्न नया मन्त्री श्री स्थामसुन्दर विरमानी तथा श्री रामसिंह, श्री जगवीर सिंह श्री राजेश में ती शास्त्रानायक स्नादि का भी योगदान इस प्रवसर पर स्तुन्य

> > म-त्री आर्थ त्याज शाहाबाद मुहम्मदपुर

भावश्यक कार्रवाई करने की साह भी देरही हैं।

बनाया जाता है कि भाजमगढ के इमाम मी नाना श्रोबेदल्या स्थान के एक कट्टर साम्प्रदायिक भीर उत्तेजक भाषरा के टेप की मुस्लिम क्षेत्रो में सुनवाने भीर मक्त बटवाने की रिपोर्ट भी सरकार को दी गईं है। राजस्थान के पाली परवें की मिल्लत मे दिये गए इस भाषण मे मौलाना घोबेदुल्ला लान ने तलाक-शदा मस्लिम बीवी की परवरिश का सर्चा देने सम्बन्धी उच्चतम न्याया-लय के फैमले का कड़ा विरोध करने भीर पर्सनल ला के लिए खून की नदिया बहादेने की प्रजोरे भ्रप

इस भाषण में मौताना श्रोबे-दुल्लालान ने कहा है कि मस्लिम किसी कोर्ट के पाबन्द नही है। ये किसी कोट में सफाई देने नहीं जायगे लेकिन कूरान या पर्सनल लाके बिलाफ कोट मे जाने ताली का सफाया कर दिया जाएगा। यदि पर्स-नल ला बदलने की कोशिश हुई तो बाला साहेब देवरस भ्रटलबिंहारी वाजपेयी और गजीव गांधी को भी कल मा पढने के लिए मजबूर दीने। पड सकता है।

बताया जाता है कि इ टेलीजेन्स ब्यूरो की ग्विट पर भोपाल में इस भाषगाके टेपकी प्रतिया जब्त कर ली गई हैं लेकिन दिल्ली उ० प्रव भौर विहार के मुस्लिम बहल क्षत्रो मे अपब भी यह टेप घडल्ले से बट धीर बज रहे है। इन राज्यों के प्रशासन ने घव तक कोई जैस कार्र-वाई नहीं की है।

(नवभारत टाइम्स से साभार)



आइये वेदमाता की शरण में चलें

लेखिका-भीमती सुषीलादेवी विद्यालकृता सिकन्दराबाद

स्रो स्नुनामय। वरदावेदमाता, प्रचोदयन्तापावमानी द्विजानाम् । स्रायु प्रागा प्रजा पञ्जन कीत्ति द्वविराबह्नवर्चस मह्य दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम् ॥



यह ग्रथवंदित का मन्न है। इसमे प्रभुकहते हैं। ऐ मानवी मैं मैंने बेद-माना वेदरूपी माता स्तृता=प्रस्तृत कर दी है। यह कैसी है ? वरदा = बर देने वाली। तुम्हारी फोली र शियो से बरदानों से भर देने वाला है। सबको पढने ती प्रेरगादो। यह वेदमाता द्विजानाम् = द्विजो को पाव-मानी पवित्र करने वाली है। दिज कौन ? जिसके दो जन्म हए हो। एक अपन्म माता के गर्भ से तथा दूसरा जन्म ग्राचार्य गर्भ से । ग्राचार्य उप-नयमान बहाचारिया कृश्युते गर्भ-मन्तः। त रात्रस्तिस उदरे विभक्ति त जान द्रष्टमभिसयन्ति देवा । मौ जन्म देनी है शरीर का। ग्राचार्य उसे दूसरा जन्म देवर भ्रात्मवान् बनाना है। बेदमाता ऐसे दिजो की पवित्र कर देती है। उनके जीवन कुन्दन बन जाते हैं।

फिरक्या देनी है वेदमाता ? सुनिये—श्रायु, प्रा∙ा प्रजा पशु, कीर्निद्रविस्पन्नीर ब्रह्मवर्चस ।

मन्त्य को नीन प्रकार की इच्छाय हानी हे-पुत्रेषणा, वित्तेषणा लोके-षणा।

पुनेवागा=सतान की इच्छा सभी को हानी है। सबकी गोद भरी रहे च गही ना कुर क नाना है। पर प्रमान नाका नामता नि पुर पुर प्रमान के का रागा करने हैं नी एक हैं पुरवागा वेद-साता जा दें। स्म इच्छा को भाषा पुराव रना है।

विन्तेषणा धन नी इच्छा।
भोली मण्डी भगे रहे। कोई गरीब
न हा सभाव सस्त न गहे। सबके
घर धन-धान्य से परिपूर्ण रहे। बैद-माना पश्च पशु खब्द से ही सुद समृद्धि नापी जाती थी। किसके पार पशुधन-मान, बैल, घोडे, हाबी किसने है, इसी से समृद्धि का पता चलता था तो देदमाता पशुभी देती है।

वित्तंवरणा = पूरी करती है।

लोकंबएा = कीस्त यथा, मान नाम गभी चाहते हैं। बुरे काम करने वाला भी चाहता है कि कोई उन्ने बुरा न कहे। धन जायें पर नाम न जाये। बेदमारा कीस्ति भी देती है। इसके साथ-भाष बेदमाता झाखु और प्राएग स्रक्ति भी देती है। जोवेम सरद, काम आसु प्राए। ताल्ययें यह कि जो बेद का स्वाध्याय करता है। बेद पटकर उपके धनुसार प्रपने जीवन का सवालर करता है। वेद पराकर उपके धनुसार प्रपने जीवन का सवालर करता है उसे जीवन मे भगवान के बाशोवांद से सब कुछ प्राप्त हो जाना है।

चार चीजों के समूह का नाम मनुष्य है। घरीर मन बुद्धि झौर आरमा। हमारे पुरुषार्थ भी चार हो कहे गये हैं— घर्म, झर्थ काम और मोशा। घरीर के लिए खावरयकता है झर्थ की। झर्थ याने घरीर को जीवन रलने के साधन । रोटो, जिप्ता महारा को खावरा पर चाहिए सबकों ही खाना। जीवन चल नहीं सकता यदि झारा को झर्थ याने घरीर प्रकार के झर्थ याने घरीर पर चाहिए सबकों ही खाना। जीवन चल नहीं सकता यदि झारा को झर्थ याने घरीर रखाने निये सावरयक सनिवार्य माधन उपलब्धन मही।

शरीरमाच त्नु धर्मसाधनम्।

चा क्यनीतिसूत्र में भी कहा है-सुख्स्य मूल धर्म। धर्मस्य मूतम् अर्थ।

सुल का मूल घर्म है परन्तु घर्म का मूल प्रयंहै। घत मर्थमेवार्जय निष्फला क्रियाधन पदाकरो।

मन के लिए आवश्यकता है काम को। विना कामना के मन ही क्या? हा कामनायें खिन हो खुभ हो। बुद्धि के लिए वर्स की आवश्यकता है,

वर्ग के कारण ही बुद्धि में सत् असत् का विवेक पैदा होना है।

बात्मा को मोंक्ष की पावरयकता है। हमें शरीर ग्रीर गन के बचन से युक्त होना है। केसे? शरीर और गन के द्वारा ही। यह एक ऐसी पहेली है जिसे सुनकाना है। इसका उपाय है—

तराजू तो। एक पलड़ से प्रार्थ झीर काम को रखी। दूसरे एलड़े रखी वर्ष को तराजू की डडी बुढि के हाच में देदो न प्रार्थ और काम को छोडो, न वर्ष को छोडो। वर्ष पूर्वक प्रार्थ प्रार्थ को प्रार्थ को प्रार्थ प्रार्थ प्रार्थ को प्रार्थ को प्रार्थ को प्रार्थ को प्रार्थ की प्रार्थ को प्रार्थ की प्रार्थ को प्रार्थ को प्रार्थ की प्रार्थ को प्रार्थ की प्रार

महामारतकार व्यास जो कहते हैं। ऊर्ण्याहुविंगोम्येय न च करिवत् ग्रागोति मा। धर्मायेय न च करिवत् प्रागोति मा। धर्मायेय च काम्यव स धर्म कि न सेव्यते ? अर्थ ग्रीर काम बुरे नही। धरीर के लिए काम प्रति-वार्य हैं। यह मन हो क्या ? जिसमें कोई कामना न हो?

अर्थ ग्राह बनकर उसने न सने। मन में बुरी कामनाय न प्राये। मन शिवसकरणी हो इसके लिए घमेंपूर्वक अर्थ और काम का उपभोग करो। बाज अर्थ और काम का पलडा आरी हो गया है। धर्म क' पलना ह्ल्का हो। पया है। इसीलिये इतनी प्रशान्ति इनाग अस्ति है।

टका वर्ष टका कर्म, टका हि परमपदम। टका यस्य गृहे नास्ति हा टका टकटकम्युते। टका ही वर्ष। टका हो कर्म वन गया है। मनुष्य का निर्माण नहीं हो रहा। पहिले आश्रम व्यवस्था थी। बहायर्थ में वर्ष का अष्टमारम समृह मजान मिलता था गृहस्थ-प्रथ-सारान का आश्रम का प्रधाप में पूर्वक। वानतस्थ, सन्यास मोश्र की साधना धारम साझात्कार के धात्रम थे। सीवी चढते चढते धादमी मनुष्य बनकर तक्य तक पहुच बाता था। सदय सभी का होता था। सदय सभी का होता था। सदय सभी का

विविषदु सारयन्तनिवृत्ति ग्रस्यन्तपुरुषार्थः । श्राष्ट्यारिसङ्, श्रास्त्रिदेविक, ग्रास्टि-

मौतिक दुःसाँ से पूर्ण निवृत्ति पाना ही बीवन यात्रा का बरन "क्य पा। हम बेदों को भूल गये। बेद की शरण में भाषों सब कुछ मिलेगा। क्य ? बब महा दस्वा अष्ठ के मर्पण करके 'तेन व्यवदेत' की माबना से सुझार के विषयों का भीग करोगे। तब सापको जवत बहुस्सोकम् अष्ठ का बहुस्लोक — मोक्ष भारत हो सकेगा।

यत् करोषि यदश्नासि यज्जु-होसि ददासि यत् बत्तापस्यसि कौन्तेय कुरुव्य मदर्पणम् यह भगवदर्पण की भावना के बिना प्रभु का प्रसाद पाना कठिन है। उपनिषदों में झच्टावक की कवा प्रसिद्ध है। राजा जनक ने झध्टावक्र से कहा पाच मिनटो मे प्रमु के दर्जन करा दो। अध्टावक्र ने कहा कराता ह परन्त तब, जब ग्राप श्रपना मन मुकेदे दें। मन एका प्रती प्रमु दर्शन होते हैं। चचल सहरों मे प्रपना मुक्त नही दिन्वाई पडता । स्थिर पानी मे ही हमारा मुख प्रतिबिम्बित होता है। जीना भी एक कला है। इस वेदमाता की गोद में बैठकर सीला जा सकता है। भाइये श्रावरा मास है। वेद का पढना, पढाना, सुनना, सुनाना, सब भायों का परम धर्म है। वेदमाता को गोद में बैठकर अम्यू-दय, भीर निश्रेयम का अभृत पान करे।

परामर्श बहुमूल्य है

दिया परमात्मा तुमको इसका सदूपयोग करो बदले कुछ न लिया इससे परोपकार करो ऐसे कार्यं करो जिससे दुबारा मनुष्रतन प्राप्त हो ऐसा मार्ग धपनाधो जिससे सच्चा मुख प्राप्त हो निस्सन्देह परमात्मा प्रदत्त यह जीवन प्रमुख्य है इसको समासकर रसना

सारी उलझनों का हल है आर्यसमाज !

कृंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर के हृदयोदगार

*

प्रार्वसमाव एक वडे उद्देय को लेकर स्थापित हुमा था। घजान के घन्तकार को समाब से हूर भगाने के महान् प्रयत्न को बार्यसमाव में निरन्तर जारी रखा। धार्यसमाव राह भूते जहाबों के लिए लाईट हाउस का काम देता हैं।

मैं एक जगह किसी लखपित सेठ महोदय से बन्दा मागने गया। झार्यसमाज का नाम सुनते ही ब गरज उठे बौर कहा—स्या झार्यसमाज समी जदा नहीं है? मैंने कहा—सार्यसमाज नहीं मर सकता, जेरे जैसा असित्त मर जाये तो कोई बात नहीं, लेकिन झार्यसमाज को तो जिन्दा रहुवा है। झान कोई यह समस्रे कि झायसमाज मर जायेगा, तो वह निरा सर्ज है।

कुछ यात्री एक नाम में सफर कर रहे थे। रास्ते में तूफान के कारए। नाम डामाडाल होने लगा। साथी यात्री न एक से कहा—माई नाम बुनने माना है। कुछ उपाम करो। ता वह कहात है— बुनने वाली है तो बुनने दो। मस्लाह का हो नुकसान है। उसने हम से किराया ज्यादा सो लाया है। यह सपने पाप का कल मोगेगा।

लेकिन वह यात्री यह जूल गया कि नाव के शाब वह स्वय जी दूब कर मर जायना। ऐसो हो बान हमारे कुछ माई किया करते हैं। प्राय समाज वह नाव है जिसमें सारी सम्यता, सारो सस्कृति, गीता, रामा गया, वेद और आप्यारितक नावनाए संबोकर सुरक्तित रही गई हैं। स्नानया। सगर यह किस्ती दूबी तो हम सब बूब जायने। याद रखो इस बात का, सायतमाज के गोरव में हमारा गोरव हैं। सायसमाज के जोवन में हमारा जावन हैं। सायसमाज का मौत से हमारा मौय है, आयससाज के समिमान में हमारा समिमान जिसा हुमा है।

एक बायसमाज के सानदार जुलुस में मैंने प्रपने माई-बहुनो को सैनिक रूप में देखा, हरियाने के बारों को सपनी मस्ती में देखा। राजस्थान की सेसीया। राज सी साडां पहने बहुनों का जब मैं देख रहा था तो उस सबसे मेरे दिल की किलारी दिल रही थी भीर मेरी भाषा का सुमन विकरित ही उठा। दिल में एक ध्वीन हुई—धार्यसमाज जिन्दाबाद। महिंब का स्मरण किया। मेरे मार्यों यह तुन्हें क्या माजून कि इस सबसों के बनाने में कितनी जिन्दियों सारी है। इसकी बुनियाद कर्नदर कितने की तिकारी किलारी मेरे हैं। इसकी बुनियाद कर्नदर कितने की तहानी के जीवन गले हैं 'उन बिलायों को किलारी किलारी की महिंदी है। वेद मन्त्रों की कामगोरता तो ये चिंदत प्रापका वतायें। मैं तो एक बात कब्रुता हू। प्रायंसवाक के साल्ताहिक उत्तरावों के कुछ बेद के मन्त्र पढ बाते है। उन सन्त्रों में करा पिता में मारी पिता है—'खगच्छ|के सवद्य 'समभी इन सन्त्रों की महराई की।

राजनीति से जाकर लोग सड़ तो कुछ घण्छा भी लगता है, लेकिन यहा धायसमाज में जाकर जो लोग मन्त्री, प्रचान या कुछ भी र बनने के लिए लड़ना चाहते हैं। चपरासियों पर हुकूमत चलाने के लिए, तो मैं कहूँगा कि तुम अपनी शक्ति नच्ट कर रहे हो। घपनी सारी तपस्या चर पानी फरते हो। घणने जुन्हें करहा बेलनो हो नो जाओ पोलिटि-कल मेंदान के लोगे। धणर चुमले जो लिए टिकट मिल गया तो सुस्हारे भी व वर्ष के लिए पो बारह हैं।

स्थानी सस्या के सादर्श को कायम रखो। सगठित रहों। सगठित रहोंगे तो दुनिया तुम्हारे सामने मुकेगा। वरना वही तुम्हें मुकायेगो। स्थाने जो बुनाय करते हो, उसमे सर्थसम्मत बुनाय करों —ऐसा प्रयक्त करो। उसमें बुनाय न करना पड़, वीट न डामने परे, क्रांट ने तिहा प्रदेश हुस बात को कोसिया करो। जो कुछ कर्मेंट सार्थ हो जिम्में वरित पर आपको विश्वस हो जिम्में वरित पर आपको विश्वस हो उनको साने दो काम करने के लिए। यह प्रवृत्ति म सही से कि हम सपने स्वार्थ का उपर रखकर सायसाम को हो सिन यह सामि पहुंचाने पर तुल साथ। मिं सारी सायत सर्थ से खूनता हू। मैंने यह

अनुभव किया है कि आर्यसमाज सारे भारत की आत्मा है। अगर आस्मा मर गई तो भारत की आरतीयता नष्ट हो जाएगी। विश्व सस्कृति नष्ट हो जाएगी। आर्यसमाज को छाड़कर और कोई सस्वा है किरका परस्ती से लड़ने वाली? मृह से तो सभी लड़ते हैं, पट्ठे उनसे हाथ मिलायये ऐन मौके पर अपने स्वार्थ के लिए। फिरकापरस्त तो वे ज्यादा है जो फिरकापरस्ती के साथ फिरकापरस्त सस्वाओं के साथ हाथ मिलाते हैं भीर उनकी पेठ गेकते हैं। यह वास्त्व में आई बात है। आब ईसाई पादरियों से यह दम नहीं है कि व आर्य हो बात है। आब ईसाई पादरियों से यह दम नहीं है कि व आर्य सिद्धानों के मुकाबले से आव। इन विद्वानों को एहने दो मेरा ही मुकाबला करने आ जाय, तो देखूं। आब ईसाई पादरी नाइमजूस की मोठी गोलिया खिलाकर राम व कुष्णा के मक्तो की चौरिया काट रहे हैं। के सिक्त मुसलमानों के फिरकापरस्ती का मुकाबला करने के लिए काई स्निक्त मुसलमानों की फिरकापरस्ती का मुकाबला करने के लिए काई आये नहीं आता। ईसाइयों का जवाब देने के लिए नोई तैयार नहीं है।

प्राज बहुत लोग बौद्ध घम का प्रचार करते हैं। हमारी सरकार भी उनकी पीठ ठोका करती थी। बौद्धों ने राम धीर कुछए के मन्दिरों से उनकी मूर्तियों को निकाल फक कर उनकी बगह बुद्ध की मूर्ति रखी गईहैं। जिनकों हमने सिर पर चढाया, वे हो प्राज हमारी प्रास्तीन के साप बन रहे हैं।

वे प्रचार करते रहते हैं कि ससार घोचे को टट्टी है। तुम कुछ मत करो। कोई किसी का बाप नहीं, कोई किसी का बेटा नहीं। मैंने कहा 'सगर इस जगन् में कोई किसी का नहीं है तो यह सारा जगत् यतीम-बाना हुसा। यह जगह पूर्ण है, क्योंकि यह पूर्ण में से निकला है। सगर यह दुनिया की महफिन कूठी है सौर सपना है तो तुम्हारे सामने प्रक्रिकत ही प्रश्कित है।

एक पण्डिन ने लिखा —हिन्तुस्तान मे प्लेन बस्बई मे पैदा हुसा स्रोर प्रायसनाज का काम भी दयानन्द ने बस्बई मे ही शुरू किया था। प्लेग स्रोर सार्वसमाज एक बराबर हैं। प्लेग जुहो से शुरू होता है।

उन पण्डित जी के लिए मेरा जवाब यही है कि धार्यसमाज पाल-डियो के लिए प्लेग ही है। मौलवियो के लिए, पादरियों के लिए. ब्रज्ञान फलाने वाला के लिए रूढिवादियों के लिए ब्रायंसमाज प्लेग है और प्लेग हो रहेगा। आर्यसमात्र का प्लेग बम्बई से चला भीर ऊँचे स्वर में कहता है कि ईसाई भाइयों, सफाई करों, नहीं तो मैं झा रहा हूं। मफाई हो रही है। किताबे बदल गयी। किताबो के तर्ज बदल गए। भारतवर्ष के अन्दर जितने अच्छे कानून बन रहे हैं, वे कोई इन लोगो ने बाडे ही ईजाद किए हैं ? वे सब हमारे पीसे हुए को फिर पीसा गया है। ग्राज देश के अन्दर दहेज कानूनन बन्द कर दिया गया है तो पहले इसकी ग्रावाज किसने उठायी थी ? बच्चो के ब्याह न हो, बूढो के ब्याह न हो यह सब भादोलन पहले आर्यसमाज ने चलाये थे और वे ही बात ग्राज हमारो सरकार ग्रमल में ला रही है। ग्रगर गो-हत्या को बन्द करने को ग्रावाण भाज उठ रही है तो दयानन्द का यह भपने जीवन मे देला हमा पहला स्वप्न या। मगर माज हमारे देश में मो-हत्या बन्द नहीं हुई तो यह हमारे लीडरों की कम शोरी की निशानी है। हिन्दी राष्ट्रभाषा हो यह सपना दयानन्द ने देखा था । शाज बह स्वीकार हो हो गयी है। राष्ट्रभाषा की पट्टरानी की जगह वह जा बठी।

हानाया है। रिप्नुमान को कोई कमजोर करना जा है बर्ज में से ही, तो मैं यह कहूगा कि जलो, दोनो चलकर ताला लगा देते हैं। लिकन याद रतो, ग्रार्थकमाज कभी नहीं मरेगा। ग्रगर हमारे हाज से दयानन्द के स्वप्त की पूर्ति न होंगी, तो कोई बात नहीं, दूसरो के हाजो से होगी। भागी सन्तान ही सही, दस स्वप्त को साकार कर दिखायेगी। क्योंकि विश्व का, प्रानव के कल्याण का का बौर कोई रास्ता ही नहीं है, दुनिवा को क्यानन्द के रस्से पर आंगा होगा।

गृहवर विरजानन्द व्याकरण के सुर्यं थे। उनके पार्थिव सरीर के त्याग करने पर देव दयानन्द ने कहा था, ध्याज व्याकरण का सूर्य भ्रस्त हो गया है।' ऐसे महान् गुरु के चरगा। में बेटकर देव दयानन्द ने पासिन की ग्रहटाध्यायी ग्रीर पातञ्जल का महाभाष्य पढा या ग्रीर ग्रार्थ-ग्रनार्थ ग्रन्थों के बन्तर को समका था। आर्थ-अनार्ष ग्रन्थों के ग्रन्तर को समक्तना ही देव दयानन्द को महानतम उप-लब्धि थी। इसी उपलब्धि ने ही भावी भारत के इतिहास में एक नया ग्रध्याय जोड दिया।

देव दयानन्द ने स्पष्ट किया कि वाङ्गय के दो रूप हैं। ग्रपीरुषेय ग्रीर पौरवेय । पून पौरवेय के भी दो रूप हैं ग्रार्थ भीर भनार्थ। आर्थ बाङ्गय बह्यासे जैमिनो पर्यन्त झीर उसके उपरान्तका सारा वाङ्मय माचार्य साहित्य धनार्ष बाङ्गय की श्रेणी में भाता है। जिनकी भास्या भपौर-षेय ज्ञान में है उन्हें ग्रास्तिक और श्चेष सब को उन्होंने नास्तिक कोटि का स्वीकार किया। क्योकि-

शास्तिको वेदनिन्दन ।

— मन्•

जो बेद के अपीर वेयत्व को स्वी-कारक ग्ताहै वही भ्रास्तिक है। देव दयानन्द ने इसलिए स्पष्ट रूप से घोषसा की-

'वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। बेद का पढना, पढाना सुनना सुनाना, सब आयों का परम

-- प्रार्थसमाज का तीसरा नियम

श्रावर्णी उपाकर्म पर वेद कथाश्रो का प्रारम्भ होता है। इसका मुख्य उद्देश्य ही बेद का प्रचार-प्रसार रहता है। इस शुभ अवसर पर वेद के सम्बन्ध में कछ चिन्तन, मनन उप-युक्त रहेगा। इसी इष्टि से हम निम्न तीन मूल भूत प्रश्नों पर विचार करेगे।

१ वेद की उत्पत्ति किस प्रकार

२ वेद का कर्ता कीन है? ३ वेदो का प्रयोजन क्या है ?

हर सत्य का भाधार प्रमाण होता है। प्रमाण भी दो प्रकार का है। स्वत प्रमाण भीर परत प्रमाण। जब ग्रपौरुषेयत्व की बात करते हैं तो इसका अर्थ है कि वेद स्वत प्रमाण है। ईश्वर का दिया हुआ मानव मात्र के लिए श्रेष्ठतम ज्ञान है। बेद का ज्ञान दिना किसी भेदमाव के सब मनुष्यों के लिए है। वे भले ही बं किसी भी जाति वर्ग सथवा देश के

वेदोऽखिलो धर्म मूलम

प्रेमचन्द श्रीषर एम० ए०

भी ग्रन्थ घर्मग्रन्थ हैं सब परत प्रमास हैं, क्योंकि वे मनुष्य कृत है। मनुष्य सर्वज्ञ सर्वान्तर्यामी, सर्वव्या-पक, सर्वशक्तिमास कभी नहीं हो सकता। वह अल्पन है भीर उसकी शक्ति सोमित है। इस सीमितता भौर भ्रत्यक्षता के कारण ही उसमें भपूर्णता है। भपूर्णता कभी पूर्णता को जन्म नही दे सकती। इसलिए मनुष्यकृत सभी ग्रन्थ अपूर्ण हैं भीर उनमें शाइबत तथा सार्वभीम सत्यों का भी सभाव है। प्राय ऐसे सन्धों की मान्यताएँ साम्प्रदायिक तथा एक-पक्षीय हैं।

ज्ञान भी दो प्रकार का है। स्वा-भाविक तथा नैमित्तिक। पश्च पक्षी धपने स्वामाविक ज्ञान के कारण ही तैरना भीर उडना जानते हैं। एक मल्लाह के पुत्र को भी अपने पिता से नदी में तरना सीखना पडेगा। तरना तो अलग बात है, मनुष्य के बच्चे को चलना और बोलना भी सीखना पडता है। ऐसे बहुत से प्रयोग किए गए जिनमें मनुष्य के बच्चों को मानव समाज के वातावरण से मलग थलग एखा गया भौर बच्चे कुछ भी नहीं सीख पाए। केवल वन में जिन पशुर्धों के बीच उन्हें रखा गया वैसा उनका भी स्वभाव बना। इससे स्पष्ट है कि मनुष्य के लिए नीमित्तिक ज्ञान की भावष्यकता है। वेद ईश्वर के द्वारा दिया गया नैमित्तिक ज्ञान है जो सृष्टि के प्रारम्भ में मिला।

मंक्समूलर तो अपने वार्मिक विष्वास में ईसाई थे। वे लिखते हैं---

"If there is a God who has created heaven and earth it will be unjust on his pasf if he deprives millions of his sons born before Moses, of his divine knowledge Reasons and comparative study of religions declares that God gives his divine knowledge from his first appearance

प्रयात यदि घरती ग्रीर भाकाश का रचयिता कोई ईएवर है तो उसके लिए यह भन्याय पूर्ण होगा कि वह मुसा से पूर्व उत्पन्न अपने लाखों पुत्रों को प्रपने ज्ञान से विश्वत रही। तर्क भीर वर्णे का नवनात्वक सम्बदन

सब्दि के बादि में ही ग्रापना ज्ञान मनुष्यों को देता है।

शिक्षा के बिना जान की उत्पत्ति नहीं हो सकती।

नोपदेशमन्तरा ज्ञानोत्पत्ति ।

हम अपने माता पिता और भाचार्य से ज्ञान प्राप्त करते हैं परन्तु भादि सब्दि में इन सबके ज्ञान प्राप्ति का साधन क्या था?

सर्गादी वेदोपदेख पर्वेषामपि गुरुशा। स एव पर्वेषामपि गुरु काले-नानवच्छेदात ।

इस प्रकार परमात्मा पुरुशां गुरु ' ठहरा ।

स्वामी विद्यानन्द जी महाराज ने अपने ग्रन्थ बेदमीमासा में बढा सुन्दर तर्क दिया है। वे लिखते हैं कि जितनी भी मानव कृतियां है उनके कर्ताकास्मरशाकिसीन किसी रूप में होता है परन्तु वेद के कर्ता का नहीं भत बेद निश्चित रूप से ईश्व-रीय हैं।

तम्ब वार्तिक की व्याख्या में माचार्य कुमारिल भट्ट ने कहा 횽—

कर्त्त स्मरणामावादपीरुषेया वेदा ।

इस प्रकार प्रत्येक कल्प के बादि में जब सुष्टि का प्रादुर्भाव होता है

सूर्याचन्द्रमसी बाता यथा पूर्वम-कल्पमयत् । #E0 80186013

और इस प्रकार सपने सनन्त ज्ञान बल से परमात्मा ने ऋत भीर सस्य को जन्म दिया-

ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्वात्तपसी-ऽध्यजायत ।

प्रनादिनिधना निस्या

वागुत्सृष्टा स्वयम्भुवा। भादी वेदमयी दिव्या

यत सर्वा प्रवृत्तयः ॥

सब्दि के बादि में स्वबन्म पर-मात्मा से ऐसी दिव्य वाएी (बेद) का प्रादर्भाव हमा जो नित्य है भीर जिससे ससार की प्रवृत्तियां चलीं। सायगाचार्य के निम्न दलोक के अनू-सार भी बेद ईस्वर द्वारा नि स्वसित श्चान है। यस्य नि श्वसित वेदा,

यो बेदेम्बोऽलिल जनत्। निर्वेते नगर नमे

बीर ऋग्वेद के मन्त्र १०।६०।६ के भनसार बेद की उत्पत्ति-तस्माद् यज्ञात् सर्वहत,

ऋव सामानि जिल्लारे।

सन्दांसि बजिरे

तस्माद यजस्तस्मादजायत् ॥

सत जिसका नाश कभी नहीं होता, चित जो सदा ज्ञान स्वरूप है. धानन्द जो सदा सुख स्वरूप है। उसी परम ब्रह्म परमातमा से (ऋच) ऋग्वेद (यजु) यजुर्वेद (सामानि) सामवेद भौर (खन्दांसि) इस शब्द से श्यवंवेद भी, वे चारों वेद उत्पन्न हए। इस मन्त्र में 'जिज्ञरे' भीर 'अजायत' इन दोनों क्रियाधों के भविक होने से वेद भनेक विद्याओं से युक्त हैं, ऐसा जाना जाता है। इसी प्रकार 'तस्मात' इम से यह निश्चय होता है कि वेद ईश्वर से ही उत्पन्न हुए किसी मनुष्य से नहीं। 'छन्दांसि' शब्द से अथर्ववेद को ग्रहण करना चाहिए। महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेदा-दिमा यसमिका में ऐसा धर्म किया

"वेद की किसी व्याख्याकी सफलताया विफलता इस बात पर निर्भर करती है कि उसमें वैदिक वर्म का केन्द्रीय विचार क्या माना गया है भीर स्वय वेद की अपनी अस्त. साक्षी उस विचार की कहां तक पुष्टि करती है।" इस विषय में महर्षि दयानन्द का डब्टिकोग्रा बिल्कल स्पष्ट है भीर उसका भाषार भवड-नीय है।

> --श्री प्ररविन्द 'महर्षि दयानन्द भीर बेव'

वेद के एक अन्य मन्त्र से भी स्पष्ट होता है कि वेदों की उत्पत्ति का प्रकाश ईववर करता है। कहा है---

"मचर्ववेद मेरे मख के समतत्व. सामवेद लोगों के समान, यजुर्वेद हृदय के समान और ऋग्वेद प्रारा के नाई है। इस मन्त्र में सारी सब्दि को बारण करने वाले परमात्मा को वेद की वाणी में 'स्कम्भ' कहा है। स्कम्भ त ब हि कतम स्विदेव स । - संवर्ववेद १०१७।२०

भीर देखिए शतपन बाह्यरा के

एव वा घरे महतो सतस्य निः-व्वसितमेतद् यद् ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽवविक्रिरस ।

भनुसार---

—বা∘ সা৽ १৽াহাধাং∘ঁ

यहां भी वेदों को ईश्वर से निफ स्वसित कहा है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि बेहीं का कर्ता परमेश्वर को स्रोड़कर शुक्त बेख के विभिन्न भागों में उर्दू की दितीय राजभाषा बनाए जाने की स्रीग समय-समय पर उठती रही है। सारत विभाजन के तत्काल बाव उत्तर प्रवेश में यह स्वर उठा। राजबि पुस्थोत्तम दास टडन उस समय राज्य विधान समा के प्रध्यक्ष है। उत्तरीन स्पष्ट कह दिया — 'डाज्य के एकमाल भाषा हित्ती है, प्राच्य के समस्त कार्य हित्यी में ही होंगे।'

टंडन जो तेजस्वी राष्ट्र मक्त बे। उन्होंने सदन में घोषणा को बी—'उत्तर प्रवेश विधान सभा में सनमा सवा चार सौ सदस्य हैं, उनमें से एक भी सदस्य मेरे विरुद्ध होगा, तो सैं उसी दिन मध्यक्ष पर से स्थाप पन दे दूगा।' फिर किसी ने उर्दे की माग नहीं उठाई।

फिर भी गुप्त प्रयास जारा रहे, क्योंकि तत्कालीन प्रधान मन्सी जवाहर लाल नेहरू मुसलमानों का प्रावव्यक्ता से प्रधिक प्रसपात करने के
किए विक्यात से । वे उर्दू के विद्यान
नहीं से, फिर भी बोल चाल में
(जान बूमकर) उर्दू खब्दों का बहुलता के प्रयोग करते से। मले हो ।
जोंबे कों न प्रतीत हो। मुस्लम
क्रम्कित और उर्दू भाषा उन्हें स्वयत
प्रिम की। उन्होंने स्पष्ट कहा था—
'क्ष विक्या को दृष्टि से प्रमंज है,
सांस्कृतिक दृष्टि से प्रमंज है,
और सांकितम कुष्टिनावश हिन्दू
है।'

कहते हैं कि काश्रेस कार्य समिति
में किसी प्रस्ताव पर जो गार बहुत
चल रही थीं। नेहरू जी पर कुल कहते ती बन नहीं पड़ता था, बस बार-बार यहां दोहरा रहे थे कि इसे राष्ट्रीय मुतलमान पसप्य नहीं करेंगे। इस पर सरवार बरूनम मार्ड पटेल ने हैंतरे हुए कहा था—'मुके ती मुसलमानों में कोई राष्ट्रीय दिखाई देता नहीं। हो, एक ही राष्ट्रीय मुसलमान है, जिसका नाम अवाहर लांल नेहरू है।

बात हुँबी की बी, हँसी में टल कई। वेस का सरकाकीन वासावरण वैसा वा कि वाहकर वी नेहक

उर्दूं की मांग का विरोध और आर्यसमाज

-सन्तोष 'कण्व'

जी उर्दू को दितीय राजभाषा बनाए जाने की मांग का समर्थन नहीं कर सके। एक सार्वेजनिक समा में उक्त कहाना पढा चा—'हम उर्दू की तस्की चाहते हैं, किन्तु वह उत्तर प्रदेश की दूसरी भाषा नहीं बनाई जा सकती। ऐसा करने से राज्य का कर्म हाना हो जाएगा और बहुत तरह की प्रवचन सार्वेगी।

नेहरू जी उर्दू को दूसरी माथा बनावे का विरोध मात्र धार्थिक दिश्यति के कारण कर रहे थे। दूसरे वे यह भी जानते थे कि उर्दू की परा-प्रधारत लिप कार्यालयों के काम-काज में जटिलताएँ हो उत्पन्न करेगी।

स्रायसमाज की दृष्टि में यह कारए गौए हैं। प्रश्न राष्ट्र के हित का है। खर्चा दुगना हो या चौगुना, राष्ट्रोय एकता और सवण्डता के लिए किया जाएगा। हमारा विरोध कुछ कट्ट सत्यों पर ग्राचारित है, जिनकी चर्चा सांगे करगे।

उदूँ वाले इस स्थिति का लाभ उठाते हुए समय-समय पर अपनी सांग मुक्तर करते गए। १४ प्रमस्त १९४७ को अनेक ज्वलन्त समस्याएँ कुल हो बकती थी और सम्पूर्ण राष्ट्र उनका एक स्वर से समर्थन करने को तत्पर वा, परन्तु नेहरू जी की हठवर्धी के कारण ऐसा नहीं ही सका। आगे चलकर देस के विजिल्ल मानों में भावा समस्या उठ सडी हुई।

विश्वस्वना देखिए कि मारत विज्ञाजन के प्रथम दशक में ही 'राज्य पुनर्गठन आयोग (१९६६)' के आया के आयार वर राज्यों के पुनर्गठन को समुज्ञांका कर दी। आर्थेतमाज कभी भी इसका प्रथमर नहीं रहा। आज भी महीं है। हम भाषा, भाव भीर प्रावना में ऐक्स के प्रथमर हैं राष्ट्रीम क्कता और स्वस्वस्वा प्रावना प्रकार प्रथम करती है।

उपर्युक्त वायोग ने राजभाषा के सम्बन्ध में निम्न धनुशंसा की बी---

'बिस राज्य में ७० प्रतिश्वत से प्रविक एक शावामी समूह हो उस राज्य की एक मानी तथा उसके

मतिरिक्त ३० प्रतिशत से भूषिक बोलने वाला कोई ग्रन्य भाषा-ममूह हो, उस राज्य को द्विभाषी घोषित किया जा सकता है।

'जिम जिलों में राज्य की घोषित राजभाषा के प्रतिरक्त ७० प्रतिकार के प्रिषक बोलने वाना कोई प्रन्य भाषा समूह हो तो उस भाषा को उस जिला विशेष में सरकारी काम काज के लिए प्रतिरक्त राजभाषा घोषित किया जा सकना है।'

सन् १६७५ में श्री इन्द्र कुमार गुजराल की शप्यक्षता में Commitive for promotion of ार्तप गठित की गई। उस ने भी भायोग की उपगुक्त भनुशसा को दोहरा दिया।

बिहार और उत्तर प्रदेश को जनगरणा से मुसलमानों की सक्या है। प्रतित से बहुत कम है। दूसरे सभी मुसलमानों की सक्या है। प्रतित सभी मुसलमान उर्दू आधी नहीं हैं। इस प्राथार पब कुछ लोग उर्दू की दितीय गजभाषा बनाए जाने का विरोध कर रहे हैं। इनमें सत्तारू इत का छेन के विधायक, मन्त्री और सामद भी शामिन हैं। इसके बित्रस्त , विश्वार्थी परिषद, राष्ट्रीय स्वय सेवक मन, विश्व हिन्दू परिषद् औस सगठन भी इसी एक में हैं। उर्दू की सबैधानिकता का मामना सर्वोच्य न्यायानय के विचाराकी हैं।

परन्तु झावंसनाज का पक्ष इससे बिल्म है। जो लोग उर्दू की मांग को सववंधानिक बता रहे हैं, वे परोक्ष रूप से मुससमानों के उत्तर प्रवेश व बिहार ने प्रपनी सावादी श्रीझातिशोझ २० प्रतिशत से अधिक करने को प्रेरित कर रहे हैं, बिमसे इस्लामीकरएग की झांघी तेत्र हो गई है। वित वे साने लक्ष्य में सफन हो जाते हैं, तो उर्दू की मांग को ससंवंधानिक बताने वालो पर क्या तर्क बच्चा। दे क्या उस समा उर्दू को द्वितीक राजसाया बगादिया जाएगा?

उर्दूकी मांग के साथ उसकी मानसिकता जुड़ी है। जिल्ला मीर जुनकें सामिती ने कहा था कि जनकी

(मुमतमानों को) मावा उद्ग है। वे हिन्दी वानों के माथ नहीं रह सकते। उन्हें सकत जगह चाहिए। इसी जिद के कारए। भारन दूटा। पाकिस्तान बना। विनको उद्ग राजभाषा बनानी थो, वे स्वेच्छा मे पाकिस्तान गए। इसने किसी को रोका नहीं। घव इस बांछन सागन मे, ध्रयवा उसके किसो राज्य विशेष मे उद्ग को दिलीय राजभाषा वनाए त्राने की जिद करना बया अनुचिन एव राष्ट्र-दोह नहीं हैं? यदि ऐसा ही करना था, तो विभाजन हा नहीं किया जाता। दोनों बाने एक साथ नहीं वल सकतीं।

भारत-विभाजन के समय उर्दू में काम करने के प्रन्यासी लागो की सक्या आज की घरेबा कही प्रक्रिक करी। उन्हें हिन्दों में काम करना मुश्कित था। जब उन समय उर्दू की दिनों पर राज भाषा उनाने की प्रावश्य- करा। नहीं परी नो प्राज कैत सा पहाड दर दन ?

उद्दें के पक्षचरों का कहना है कि जुद्दें भी मारत की भाषा है। भारत में ही पंदा हुई, फली-फ़ली और किसत हुई। हिन्दी राष्ट्र-मावा है। उद्दें उसका धीषकार नहीं छीनती। हिन्दी पटरानी है, तो जुद्दें को छोटी रानी बनाकर रख लो।

हमारा मत इससे फिन्न है। उर्दू भारत की भाषा नहीं है। होती तो पाकिस्तान की राष्ट्र भाषा नहीं बनती। किसी भा तीय भाषा को पाकिस्तान सपनी राष्ट्र भाषा कदापि नहीं बना सकता।

बहाँ पर स्वतन्त्रता है। अपनी उर्दू को रानी बनाग्रो या पटरानी, हमारे यहाँ सौतों का चलन नहीं है।

उद्दें पाकिस्तान की राष्ट्र भाषा है। वहाँ की सरकारी भाषा है। उसको यह दर्जा देने के लिए ही हमने भपनी मातृ भूमि का विभाजन स्वीकार किया था। कलेजे पर पत्थर रसा वा। माताशो ने लास स्रोए थे बहुनों का सुहाग लुटा था। किसी का माई बिछडा था, तो किसी की बहुन लुटी थी। बाप की लाठी दूटी थी, किसी का सहारा छूटा था। नृश्यना के उम ताण्डव नृत्य में बरती कापी थी, ग्राकाश रोया था. मानवता तडपी थी, किमके लिए? उर्द् के लिए। उर्द् वालों की जिद के लिए। जिन्ना के पागलपन के लिए। भव किम बात का हिस्सा मागा जा रहा है ? इस बचे हुए भारत में उर्द के लिए कहाँ जगह है ? क्या वह कुर्वानी कम थी ? क्या वह खून पानी





उपनिषत् कथा-माला-१७

उपासना

लेखक-स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती

मनुष्य विनाग्रहकार के रहे। सत्कर्मके करने से मन्द्य को जो अभिमान माहोता है उसका नाम ब्रहकार है -सस्कृत भाषा में इसे ब्रहता (ब्रहभाव) ब्रथवा मम-ता कहा है। कोई भी सत्कर्म ग्रहकार के साथ मिलकर अपने असली स्व रूप मे नही रहना परन्तु वह किया हमाकम न किए के तुल्य हो जाता है। विद्वानी ने इस दोष की दूर करने के लिए वडे मुन्दर उपदेश दिये हैं - उनका वचन है कि यदि बाए हाथ से कोई शुभ काम किया जावे तो उसका ज्ञान दाए हाद्य को भी न हो। यदि मस्तिष्क किसी के साथ भला करै तो मन इससे देखबर रहे-से वचन मन्द्य को इस बुरी **ब्रा**दन (ब्रहकार) को **खुराने के** लिए काफी हैं। सनुष्य से यदि कोई काम भच्छाही जाता है तो वह प्रपनी प्रशसासूनने के लिए हर भोर कान लगाए रखता है यदि कोई उसकी बडाई न करेतो फिर विवश होकर लोगो के सामने अपनी प्रशसा स्वय हो करने लग जाता है। यह एक ऐसा कडा बन्धन है, ऐसी कडी जजीर है कि मनुष्य का इससे स्वतन्त्र होना बटा कठिन है। भ्रपनी प्रशसा चाहना अपने आप मे एक वडा भारी पाप है। इसके प्रभाव से रसा-यन भो निष्फल हो जाता है।

बीज ग्रपने की छुपाता है तो वक्ष पैदा है ग्रीन जो बीज बाहर पड़ा रहता है वह बीज या ती पद-दलिन हो जाता है या उसे पश्-पक्षी ला जाते हैं। वसकी सस्कृत भाषा मे निकाम कर्म कहा गया है। प्रमु-भक्तों के मन में इसे नाश होने वाला लिखा है। जैसे घान के ऊपर के छिल के को अपनगक र देने में फिर वह लाने के काम तो ग्राना है परन्त्र भागे उत्पत्ति कन्ने के योग्य रहीं रहता। सस्य कर्म के साथ प्रशसा का लगा हुमा छिलका मनुष्य को ससार मे बार बार लाने का कारए। बनता ही रहता है, इसको दूर कर देने से नाशवान नाश हो जाता है और शेष ससार मे रह जाते हैं।

प्रमुभक्त इस बात को जानकर कमें करते हैं। बीर सत्य पथ में जा निक्र नोमें हैं। बीर फिर साम्रातकार

मे जाकर बाराम पाते हैं। इसलिए अपनी प्रशसा ग्राप करना भारी भूल है। लिखा है–

> तारीक धपनी धाप मत करना कभी तू भूल कर। ऐव धपना देख ऐवे गैर पर मत कर नजर।।

जो मनुष्य इस बुरी झन्दत वाला है वह अधरे मे है। उच्च से उच्च मनुष्य भी अपनी प्रशसा करने से छोटा धौर पवित्र होने पर भी सोटा हो जाता है। यह एक प्रकार का पाप है जो मनुष्य में पर दोष निकालने का स्वभाव बढाता है। भीर ससार मे उसको नाकारा बनाता है। स्वार्थी पुरुष धच्छे मनुष्यो के सग से घवराता है भीर कोई विचार-शोल मनुष्य उसको समीप नही आने देता। स्वार्थता मत्य पच से हटाकर कुमार्गपर चलाती है और फिर दुल को समीप वाती है। बुद्धिमान् मनुष्य वह है जो भ्रपने दुर्गुगो पर व्यान रखे और दूसरे के दूर्ग्णो की पडताल न करे।

> स्वार्थ से काम सारे दुनिया मे हैं बिगड जाते। गुप्त कहाँ वह भेद जिसे समा में हैं सुनाते॥

म्वार्थ से सब काम बिगड जाते हैं इससे चोट खाकर फिर वे बनने मे नही बाते। जैसे किसी भेद को जन साधारण की सभा में सुनाकर यह बताना कि यह गुप्त मेद है किसी से मन कहना इस वचन से लोगों को हसाना भीर भपने को मूर्ख बनाना है। जो मनुष्य स्वार्थी हो जाता है वह स्वय भपने भाप की घोला देता है भीर वह शुभ भाच-रगाको देवकर दुराचरगको मील लेता है। इससे सुन्व-दुख में सममाव बना रहता है भीर पद-पद पर कब्ट भाते हैं। यह स्वार्थ एक बला है जो शरारत को जगाती है जो कभी दूर नही होती। स्वार्थता एक बारिमक व्याधि है जिसके साथ प्रसत्य बोलना भी शामिल है। स्वार्थ को पूरा करने के लिए भूठ और थोखा देना मी उसका स्वभाव हो जाता है-

हुवा दिल जो बाबुदा हिरसा हवा से, नहीं चमकता फिर वह नूरेखुदा से।

प्रमु से मिलाप तो मन्ध्य को प्राप्त ही है भीर यह सदा उसके समीप है। प्राप्य बस्तु ध्यापक से मिन्न नहीं हो सकती। केन्द्र भीर वेरे का सम्बन्ध सदा से हैं। अनुवित सासारिक विचार मनुष्य के वित्त को हर समय परेशान करके उसकी पवित्रता को तुष्णा से विगाह देते हैं। इसलिए बुरे काम की जिम्मे-दारी से बचने के लिए जीवन के कार्य क्रम को सत्य तथा उचित प्रकार से बनाना भावस्थक है। मन की शुद्धता से जो पुरुष प्रमुके दर्शन की चेष्टा करता है। वह भूल पर है। जैसे 'र' के ग्रागे व'न लिखा जाये तब तक स नही हो सकता बस, जब तक मन शुद्ध न हो प्रमु प्राप्ति नहीं होती। फिर अन्त करता प्रकाशित होकर प्रमु-दर्शन से स्वयमेव बाल्लादित ही जाता है। मन की शुद्धता के बिना प्रमुप्राप्ति के लिए मनुष्य जिस प्रकार की चेक्टा करता है वह सब व्यर्थ जाती है।

मत उपासना की विधि बिल की चवलता को दूर करके परमेश्वर प्राप्ति के योग्य बना देती है। यदि मनुष्य इस अवस्था को ठीक बना ले, तो ज्ञान पच की बोर उसका पय बस सकता है इसके बिना नहीं। इसिए, प्रमुग्न मक्तो का बचन हैं—

दिलबर तेरा तेरे भागे खडा है। मगर नुक्स तेरी नजर मे पडा है॥

जिस की खेज मैं लोग हैरान व परेशान है वह तो सामने लडा है। परस्त इसको इन बाहरी शांसो से देखना चाहते हैं। उनकी धाँसी से जो वस्तुए दीखती हैं, वे सब महसूस की जाती हैं, परन्तु परमारमा समो से परे है। इसलिए वह किसी भी धग से माजुम नहीं हो सकता। ठीक मस्तिष्क का दूसरा नाम 'क्रान' है। प्रमु-भक्त अपने अपने अनुसन से उसको देख सकते है। परन्तु उसको ससार के मूठे प्रेम ने बुरा बना दिया है, अब तक यह बुराई दूर न की बाय तब तक उसका दर्शन कठिन है। जैसे कि घांस से सुनने का भीर कान से बेखने का कार्य कठिन है।

इसलिए अञ्चयक्त अन की खुढि के लिए ठीक यरन करता है। उन हो पुरतकों का पठन पाठन करता है किसमें यह विषय हो। उन अनुकों की समित में बाला पठन करता है, जो उसमें दख हैं। ससार का कोई भी ऐसा कार्य जो इस मार्ग में कहा-बह उपाय है जिससे लोक और पर-लोक दोनों सुषर जाते हैं।

> अब शत सहस्र इच्छाओं से सब हृदय कलुपित होवे। फिरकहा प्रमुकी ज्योति से अन्तर मालोकित होवे?

इच्छाभी का बढते जाना हृदय में एकाग्रता उत्पन्न नहीं होने देता। भभिलावा हृदय रूपी सागर मे एक सहर सी उठाती है, फिर उससे दूसरी तीसरी बहर स्वयमेव बनती बाती है—इस भवस्या में हृदय में मैल बढता जाता है। यह बार बार जीवन भौर मृत्युकी भाफत को साथ लाती है, इससे पीखा खुडाना ही मनुष्य जीवन का लक्ष्य है। परन्तु हरएक विचार को यहा पहुँच नही, अनुचित इच्छा से हृदय की शुद्धता नहीं, दोष-युक्त स्वभाव को दूर करने वाली पुच्य कसाई नहीं। परन्तुजो अया-नक के प्रेमी हैं जो इस गृढ विषय को हल करने के योग्य हैं, वे सदा कम होते हैं, हर कोई इस पत्र का पविक नहीं। जिसके पूर्व शुभ कर्म सहायक हों, वर्तमान का पुरुवार्ष ठीक प्रकार से हो भीर प्रमुकी कृपा सहायता हो, वह इस मार्ग पर चल सकता है भीर वह निवचय मान्यवान् है, जिस को योग्य पद्म प्रदर्शक मिले। परन्तु बाजकल योगियो की, गुरुवों की भीर गुरु-मर्जी की वटी ही चरचा हो रही है, इसके पीछे ससाद की एक भारी सस्या अपनी सूध-बुध हो रही है। बढ़ी विचित्र बात है कि जो चीज हर प्रवस्था में कम होनी पाहिए, जिसकी कमी ही सुन्दरता की बोतक है, जिसकी समिकता से प्रकृति भी हरती है, मनुख्य अपनी अभूरी चेच्टा से यदि इसी घोर प्रयत्नश्रील हो तो सिवा बूरे परिसाम के बीर क्या हो सकता है ? प्रत्येक सम्प्रदायवालों ने धपने शिक्ष वर्ष को बढाना और उन्हें स्पने सिद्धान्त का मन्द्र-

उपासना

विश्वासी बनाना ही प्रपना विशेष कर्तव्य जान सिवा है। भारत वर्ष इस बात का पीवाना है, इसीलिए तो इपको न कोई सबे होने का स्थान है, और न कोई उन्होंने का ठिकाना। कितनी भूल है, कितना धन्य-विश्वास है कि गृद को प्रश्मेष्वर से केंचा चाए। इससे प्रकट है कि गृह वेस सरस प्रमंपर प्रस्क प्रकट है कि गृह वेस सरस प्रमंपर प्रसस्क नहीं। ऐभी धनुचित चेष्टा तो हुदय को खुदता प्रकट नहीं करती, परन्तु भूल को जतानी है। विद्वानो का तो क्षम है—

विन्दगीको रास्तीसे तूगुजार। कर्मफलसेफिररहेगासुबकसार॥

मनुष्य को चाहिए कि वह अपने जीवन को सत्य-मार्ग पर ही चल कर व्यतीत करे और बनी हुई बात को अपने हाथ से न बिगाडे। यह निबस कर्म के फल से मुक्त होने का है। मनुष्य बुरे कार्य के बोक्स से हल्का हो बाता है। प्रन्त करण की प्रवृत्ति विवव-प्रम से मुक जाती है, फिर सरकर्मों से मेल व वुष्कर्मों से वैर हो भाता है। सुख मे उसी प्रमु का धन्य-बाद भौर दूल मे शान्ति मनुभव करने का स्वभाव हो जाता है। फिर जीवन में न तो अधिक मानन्द भी र न मृत्यु से अधिक ववराहट होती है। हुर एक को सुस्री देलकर खुझ होना भीर दूल में हाय बटाना उसका स्वभाव हो जाता है। इन नियमो के पालन करने से मनुष्य मे मनुष्यता ब्या जाती है, यदि ऐसा न हो तो शोभ-लालच मादि के प्रभाव से हृदय धवराता है। मनुष्य को सासारिक कारोबार में सच्चा रहना चाहिए भीर कभी भी मूल से मूठ या कटु अवन न कहना चाहिए। व्यवहार धौर ब्यापार मे नेकी से काम करना धौर धोला-देही से डरना चाहिए, इससे मान-मर्यादा भीर गुम कमाई श्राप्त होती है।

निष्यय से भीर विचारसील की सगति से मारना बनर हो जाता है। यह विचार बहुत सण्डा है। विस् वे सक्तार होन्द्र में स्वाद होन्द्र में स्वाद होन्द्र में स्वाद होन्द्र में परमारना का मिलाप होता है। कामवासना की स्विचनों को जानी प्रकार से पासना, सोम भीर हण्डाभों से पराचित होल्ल हस पर विजय पाना, यह मनुष्य का पूरा करंग्य है। इस स्वाद को पूरा करंग्य है। इस स्वाद से सुष्ट मान स्वाद से सुष्ट मान स्वाद से सुष्ट मान से सुष्ट में स्वाद है। इस स्वाद से सुष्ट मान से सुष्ट से स्वाद है। इस स्वाद से सुष्ट में स्वाद है। इस स्वाद से सुष्ट में स्वाद है। इस स्वाद है।

है । जो इस पर बाचरण करता है. वह ही पूरा मनुष्य है। जो इन नियमो का पालन नही करता वह चाहे किसी का गुरु हो या शिष्य, वह गवार है। जाच करने से यह प्रमाशित हो चुका है कि जब तक मन धन्चित इच्छाओं से बरी न हो तब तक जलाई की लता कैसे हरी हो ? वह मन्द्य इस पष में कैसे गति करेगा, जिसके नेत्रों में मनध्यपूजा, की घूल पडी हो। मनुष्य को परमे-श्वर से व्यधिक मानना भलाई को बेचकर बराई को मील लेना है जो ऐसा करते हैं वह सच्चाई से वबराते हैं, भीर कुठ के समीप होते जाते हैं। गुरु तो अपनी चतुरता से माल उडाने लगे भीर शिष्य जन बोबे मे भाने लगे। कैसी बात है जिसका न मोल है भीर न पता है केवल वहम-परस्ती है, जिससे मनुष्य समाज पर बहा ही बाधात है। हा, यह सत्य है, इस काम को वही कर सकता है जो ससार को पढाने धौर दनिया से कमाने की शक्ल रखता हो। हर एक इस विद्या का प्रवीण नही इस मनुष्य पूजा से तो यह प्रकट है-

भूलक रहमने खुदा को कैसा प्रधा किया। प्रपने घर के बीच मे धाप ही को गुम किया॥

मेरे मित्र । मनुष्य-पूजा प्रमु-पुजा के उच्च नियम को मनुष्य के दिलो से दूर हटाकर उनको कगाल बना देती है। यह ऐसी मूल है जैसे कि जिल्ला भीरकान रखने वाला खुद को गुंगा भीर बहरा बना देया अपने ही घर में घर स्वामी गुम हो बाए। ऐसी बातो का बनाना केवल अपनी भूल पर लोगों को हँसाना है। जो जिसके योग्य हो उसको वैसा समसना जिसको मनोवृत्ति ससार के उपकार मेहो उसका मान करना उसके उपकार को न मूलना भला ही है, मगर उसकी भूल जाना चाहिए। यह जो कुछ कहा गया है उपासना को सीढी के विपरीन होने से कहा है। यह तो मनुष्य के स्वमाव को शुभ बनाकर परमात्मा की भोर, को सर्व मलाइयो का केन्द्र है, ले वाती है। इसके बिना प्राप्त किए साक्षात्कार की सीढी किसी को नहीं मिलती है। उपासना की रीति ब्रे रास्ते पर चलने वाले भूले दिल की को इसका क्षत्र और बुराई चाहने वाला है, बचाती है। इसके सहारे ही प्रगर मनुष्य में बनावट का स्व-मान न हो, दिल पर काबू हो जाता है। इस इसारे पर दुनिया के सब विद्वान सहनत है, वही एक बात है

कि जिस पर चलने से मनुष्य ससार के बचन से मुक्त होकर मुक्ति की प्राप्त करके स्वा के लिए प्रसन्तिचित्त हो चाता है। इस काम के करने को इस नियम पर कटिबढ़ होना चाहिए जिससे झाने माने माराम की शक्ति बढ़ती चाने, और सासारिक मोह के जजाल से कमजोरी सामने न माने। यह यह है-

> मास कान मृह बन्द कर नाम निरंजन ले। अन्दर के पट तब खुलें बाहर के पट दे॥

देखने के योग्य वस्तु को देखना भीर न देखने के योग्य को न देखना र्माल को बन्द करना है। सूनने के योग्य शब्दो को सुनना भीर न सुनने के योग्य शब्दों को न सुननाकान को बन्द करना है। फिजूल बातो से से जिह्ना को रोकना भीर श्रम भीर हित की बातो का करना जिल्ला को बन्द करना है। इस अमल के दढ हो जाने से प्रमुकी सर्न है कि सगर घारम साक्षातकार घीर प्रमु-दर्शन न हो तो मुक्ते कठा समक्ती मेरा उपहास करो। यह समल बार बार परमाहमा के गुणो के प्रकट होने मे उसके प्यार में बडा ही सहायक है। मगर भाज कल इस पर अपल गलत तरीके से हो रहा है। घण्टा दो घण्टा के लिए भास कान मूस को बन्द करना ही शुभ काम मान लिया गया है। यह किसी सीमातक साधन के रूप में ठीक तो हो सकता है अगर इससे ठीक रास्ता

खल जाय, मगर यह नहीं होता है। श्रसली नियम जिसमे भूल नही है, वह ऊपर लिखा गया है कि आ स कान और जिल्ला का ठीक रास्ता में जाना सिद्धि का कारण तो हो सकता है इसके बिना दूसरा कोई उपाय नहीं। भगो के द्वारा बाहरी धूल जो दनियादी असर लेकर अत -करएा मे जाम होता है वही उसके जीवन को बर्बाट करने में बन एकह लेता है। इन इन्द्रियो भीर संस्कारो के दोष से दूषित होकर मनुष्य जानता हुमान जानने और सुनता हुमान सूनने वालो के बराबर होता है। दनिया में देशा जाता है, सही है गलत नहीं हो सकता है। दिखावटी धमल करने वाले जो भीतरी शक्ति को नही सभालते हैं उनका स्वभाव ज्यादातर कठोर देखा गया है और बाहरी झाडम्बर मे फँसकर कुछ श्रमिमान ग्रीर कुछ ग्रपने बड्यन की स्तुति सदा करते ही रहते हैं, इस लिए सारी बनावट मतलब निकालने के लिए प्रमासित होती है और जो भले लोग ठीक रास्ते पर चल रहे हैं वह किंधर से भाते हैं भीर कहा को जाते हैं। कुछ पता नहीं चलता है। वह ससार को कहा बढाते हैं, फरक है दूनिया के चाहने वालो का, इस रास्ते में कदम नहीं बढता है भीर भगर दिखावट के लिए चले तो कदम कदम पर गिर पडता है, इसलिए उपासना मनुष्य को अन्दर की सफाई को ठीक करके ग्रसली जगह तक पहुचाती भीर परमात्मा से मिलाती है।

श्रार्यसमाज दीवान हाल, दिल्ली के शताब्दी-समारोह के उपलक्ष्य मे

निबन्ध-प्रतियोगिता

विषय 'बेद सब सत्य विद्यामी का पूस्तक है''।

पुरस्कार— प्रथम १००० रुपये द्वितीय ७५० रुपये

- तृतीय ५०० रुपये □ प्रतियोगी की योग्यता न्यून्तम झास्त्री या समकक्ष होनी चाहिए।
- तिबन्ध फुलस्केप साइज के २० पृष्टों में सुलिखित या टिकत अक्षरो होना चाहिए।
- 🗆 निवन्ध की माथा हिल्ली होगी।
- ा तीन प्रसिद्ध प्रायं विद्वानो द्वारा निर्शय किया जायेगा, जो सर्वेमान्य जीगा।
- निबन्ध प्राप्ति की अस्तिम तिबि १५ नवस्वर १६८५ है।
- पुरस्कृत विद्वानो को शताब्दी समारोह के धवसर पर ससम्मानित किया जावेगा।

सयोजक— प्रतासन्द्र राष्ट्र

मूलचन्द गुप्त मन्त्री

दूरमाच . २३७४४०

श्रार्यसमाज, दीवान हाल, दिल्ली-६

खून की निदयों की चेतावनी का उत्तर

धकाली समस्या से अभी हम सुलम ही नहीं पाये थे कि एक और दस्तक दरवाजे तक धा पहची। इस्लामियत का शैतान बौखला उठा। श्री जगन्नाथ शास्त्री द्वारा एक खबर १५ सितम्बर दिल्ली से प्रेषित होकर १६ सितम्बर को "दैनिक" भास्कर में खपी। शीर्षक था. खन की नदियो की चेतावनी । इस खबर से देश के बहु-सख्यक समुदाय पर चोट तो है ही, साथ हो देश में अशांति फैला कर एक नये विभाजन की ही प्रक्रिया है। इसका हर देशभक्त को डटकर विरोध करना चाहिए, मौलाना उबे-दल्ला खान जोश ने भाकर होस को मुल रहे हैं। उत्तर में निवेदन है कि भापके ही घर की भौरते मुस्लिम पर्सनल लॉ से तंग भाकर न्यायालय का दरवाचा खटखटाती है। न्याया-

के अच्छे अच्छे पढे लिखे लोग. भी भव वैदिक धर्म में दीक्षित होकर गायत्री मत्र पढने लगे हैं। प्रापकी मदीना यूनिवसिटी,के वाइस चांसलर धादरणीय भाई धमरेश जी भीर छतारी नवाब के पौत्र डा॰ भाई भानद सुमन जी से मिलना चाहिए। मौलाना उबेदल्ला सान का कथन है कि मुसलमान ही भारत के सच्चे सपुत है। हम मानते हैं कि भारत मे अनेक मुसलमान देशभक्त हुए हैं। मान्यवर रसलान, बादर के बीग्य मोहम्मद भली साहब, समर शहीद सशकाक उल्ला, पूर्व राष्ट्रपति माननीय हा० जाकिर हसैन एक फलरुटीन भली बहमद साहब भीर भूतपूर्व केन्द्रीय मत्री मादरगीय छागला जैसों पर हमें गर्व है। मौलाना खान जैसे पाकिस्तानी एजेट भौर जिल्ला जैसे

इससे प्रापकी यह कल्पना भी निरा-बार हो बाती है। मौलाना बान का कहना है कि जो कोई करान और हमारे पर्सनल लॉ की खेडेगा उसकी सफाई देने हम कोर्ट में नहीं जावेंगे। बल्कि उनकी ही सफाई कर देंगे। इससे यह स्पष्ट सिक्क हो जाता है कि मौलाना लान को भारतीय सविधान भीर न्यायालय में विश्वास नहीं है बापको तो बपनी पाकिस्तानी बस्ला-मिक तलवार में विख्वास है। पर मियां याद है प्रापको, जिस पर्सनल लाँ की हिमायत करके भाग बीखला कर अनर्गल माष्या कर रहे हैं उस लाँ के हिमायती पाकिस्तानी सरकार ने बगलादेश में पर्सनल लॉ की मानने वालों पर ही बार बार झस्याचार किये। उनकी रक्षा हिन्दू बीव वाहिनी ने ही को थी उस समय ग्राप

दौनों बच्चे जिन्दा दीवार में चूनका विये थे। जिसे हम प्रभी भूले नहीं हैं। बन्दा वैरागी एवं वीर हकीकत राय की निर्मम हत्वा हमें याद है जिसे हम भूले नही हैं। ऐसी दर्बनाक घटनाओं से इतिहास भरे पड़े हैं। जो मौलाना खान जैसे मतान्य लोगों के विनीने कुक्रत्य का परिग्णाम था। हम वसु-वैव कुटुम्कम् के मानने वाले लोग है। जियो और जीने दो में निस्वास करते हैं। इसलिए मौलाना सान से मन्रोध है कि पिछले इतिहास की न दोहराये । भमो क्षत्रपति शिवाजी एव महारासा प्रताप का रक्त मीजब है, सरे दरबार में तुम जैसे पाजियों का सिर काटने वाले वाले बोद ग्रमर-सिंह राठीर का रक्त मीजूद है। भारतीय हिन्दुस्व के रक्त की यमनि की कोशिश्वन करो बरना परिस्तास

खुन की नदियों की चेतावनी

(अगन्नाय शास्त्री द्वारा)

दिल्ली को घनी मुम्लिम बस्तियों में नि शुक्त वितरित हो रहे एक भाषण के टेर में चेतावनी दी गई है कि यदि कुरान या मुस्लिम परसनल ला बदलने के बारे में कोई कार्रवाई की गई तो जून की नदिया वह जायेगी!

यह टेप आजमगढ मिन्जिद के इमाम मौलाना उबेदुल्ला लान के राजस्थान के पाली कस्बे में मिल्लत में दिये गये भाषरण का है।

इसमे रावा किया गया है कि केवल पुसलमान ही भारत के सच्चे सपूत हैं। महात्मा गांची या इन्दिरा गांची की हत्या किसी मुमलमान ने नहीं स्वाद इदिरा गांची जी के मुस् रक्षक मुसलमान होते तो यह दिन नहीं देखना पडता। भारत की गोंप- नीय सूचनाएँ विदेशों को बेचने वाला कुमार नारायए। भी मुसलमान नहीं कै।

भाषण में कहा गया है कि बिंद कुरान नहीं रहेगी तो फिर गीता भौर गुरु यह साहब भी नहीं रहेकी। मुसलमान किसी कोर्ट में सफाई देने नहीं जायेंगे, लेकिन कुरान या पसं-नल ला के जिलाफ कोर्ट में जाने वाले को सफाई कर दी जाबेगी।

मौलाना का कहना है कि कुरान पर पावदी लगाने या पर्सनल लॉ बद-लने को कोधिया की गई तो हो सकता है कि इतिहास खुद को दोहराये एव बाला साहब देवरस, खटल बिहारी वाजपेसी और राजीव गांधी को कलमा पढना पड जाये।

भाषए। में कहा गया है कि मुसल-भान ही सच्चे वफादार हैं। इसीलिये

भौलाना का कहा। है कि पाकि-स्तान बनाने में जितना जिल्ला हाथ है, उतना ही सरदार पटेक का जितना अवनमानों का वोध है, उतना ही भारत के गैर मुसलमानों का। जिल्होंने पाकिस्तान मागा, बले गये। हम किसी की दया पर जिल्ला नहीं है। भारत किसी के बाप की जागीर नहीं है।

मापए। में बार बार चेतावनी दी गई है कि वह जबान काट ली जायेमी, वह साल सींच सी बायेगी, जो कुसन या पर्सनल ला के सिसाफ होगी।

यह बारोप भी नगाया गया है कि वगलादेशी मुनलमानो की साह में तिहार में हजारो भारतीय मुनल-मानों के नाम बोटर लिस्ट से काट दिये गये।

भाषणा के टेप में कहा गया है कि साज मुसलमानों का करलेश्राम हों रहा है, अस्मते खुटी जा रही हैं और बच्चों को सत्म किया जा रहा है।

मजेदार वात वह है कि संकडों ऐसे टेप मुस्लिम बस्तियों में को बांटे एक जुने जा रहे हैं लेकिन केसीय ग्रह मन्त्रालय को कोई जानकारी नहीं है। एक वरिष्ठ अधिकारी ने बढ़े सहस्र मान से कहा 'हाँ, उजती-उडती सबर सुनी हैं कि ऐसा कोई ठेप है।'

(दैनिक मास्कर)

सय का काम है, न्याय देना इसमें देशद्रोही लोग भारत माता के सच्चे किसी वर्ग विशेष का दोष नहीं जो सपूत नहीं हो सकते। जिन्होंने देश धाप इतना बौखला रहे हैं। माननीय का बटवारा कराके मारत माता के बालासाहब देवरस श्री अटलविहारी तीन दुकडे करा दिये वर्ना आज भारत विश्व में सर्वशक्तिमान राष्ट बाजपेयी एव देश के प्रिय नेता मान-नीय श्री राजीव जी को कलमा पढ़ाने होता। मौलाना लान का तक है कि की बात भीर हमारी पवित्र गीता श्रीमती इन्दिरा गांधी का ग्रम रक्षक एव गुरु ग्रथ साहिब को मिटाने की कोई मुसलमान होता तो उनकी हत्या बात, वास्तव में हिन्दू समुदाय पर नहीं होती। भापके इस कथन पर भी एक गभीर चोट है। पर मैं समभता प्रश्नचिह्न लग जाता है, क्योंकि हुकि गीता और गुरु ग्रन्थ साहिब को भारत में अग्रेजों का पैर जमाने वाला मिटाने बाला भीर इन उच्च नेताओं मीर जाफर क्या मुसलमाव नहीं था, को कलमा पढाने वाला शायद अभी फांसी वाली महारानी लक्सीबाई का पैदा नहीं हुआता। बाद रहे आपके तोपची जो श्रग्नेजो से मिल गया था, उच्च काटि के मौलवी भीर इस्लाम खुदा वक्त क्या मुसलमान नहीं था ।

कहा वे जब एक लाख पाकिस्तानी तलवार ने पृटते टेक दिये हैं। यह हैं बापकी पाकिस्तानी ताकत जिसके स्वर में बाप बोल रहे हैं। मोलाना जान एक बात और फरमाते हैं जा अरक्त पश्चीर एवं विकार एतिय है। आपका कहना है कि हम पिछले इति-हास को वोहरायों में किन्सु बहु आपको मतान्व का अम है। पिछला इति हास हमें बाद है लगअम ७०० वर्ष पूर्व एक विदेशी सुटेरे मुहम्मद गण-नवी को शक्याठ प्रजीपाज चौहान ने १७ बाथ माफ किया बा। पर मोलाना खाव के स्नाम बा। पर मोलाना खाव के स्नाम के एक बाव धी नहीं समझा। पुर भोविन्सर्विह है

प्रयक्त होंगे । मीलाला लान की तरह ही बहुत से जलकाववादी एवं बेबाही लोग सान्ध्रयायिक बहुर फीलाकर हुनारे देख की एकता एवं क्याबार हुनारे देख की एकता एवं क्याबार के लिए सतरा रेखा कर रवे हुँ हैं। जाना मस्त्रिक के हुनान क्याब्स्टा बुनारी जो झाजकल पासिस्ताम गये हुए हैं। नह नी नहीं भारत के जिलाफ विच बनन कर रहें। हूँ । भारत सर-कार की चाहिए कि नह मीमाला पेसे लोगों की जविलाब शिरकार कर बण्डित करें बीर देखा हित की देखते हुए कमनीर की बार शुरु बीझाति-बील संबोचा की बारे की र स्वीव (कि एक) हुन की एक।

उर्द की मांग" (पुष्ठ १ से बागे)

था ? घरे ! उर्द् भीर उर्द् वालों की विद के लिए हमने जो बलिदान दिया है, उसकी कोई मिसाल दे दो तो हम जाने।

उर्द भारत में पैदा हुई, ठीक है। ब्र रपतवार भी तो खेत मे पैदा होती है। उसे कोई समालकर नहीं रखता उर्दू भारतवासियों के सहयोग से उत्पन्न नहीं हुई थी। पविचम भीर मध्य एशिया से भाए लुटेरों ने जब यहां भपने राज्य स्थापित किये तो उनके समक्ष भाषा समस्या उत्पन्न हुई। उनकी सेवा में ग्ररब. ईरान, टकीं, प्रफगानिस्तान बल्स बुसारा धादि कितने ही देशों के लोग थे। नगरी के बाहर इनकी छावनियाँ शी। सब ग्रपनी ग्रपनी भाषा बोलते के। कोई किसी की भाषा नहीं सम-ऋता था। बडी परेशानी होती थी। भीरे धीरे काम चलाक भाषा बनी। 'भाषा' तो नहीं 'बोली' ठीक रहेगा। धग्रेजों की छावनी से भी 'गोराशाही बोली' चली थी। उर्द लुटेरीं के लक्कर की भाषा है। उनकी, जिन्होंने भारतीय नारियों का सतीत्व खटा था. मन्दिरों को तोडा था. बच्चो को काटा या, पुस्तकों को जलाया चा, भारत को उजाडा था।

'लइकर' को छावनी या उर्द भी कहते हैं। इसीलिए लुटेरों की खावनी की बोली को 'लक्कर की बोली' या अर्दकी बोली कहा जाता था। कालान्तर में इस बोली के लिए उर्द श्रद्ध ही रूढ हो गया।

पाकिस्तान ने उर्द को यो ही भाषनी राष्ट्र भाषा नहीं मान लिया। शास्तविकता यह है कि पाकिस्तान के लोग स्वय को उन्हीं लुटेरो का बद्धज मानते हैं। भारत भीर भार-तीयों के प्रति उनकी शत्रुता का मी यही कारए है।

उर्द् की मांग उठाने वाले भार-तीय मूसलमानों के मन मे भी यही भाव बैठा हवा है कि वे भी उन्हीं स्टेरों के वश्वज हैं मारतवासियों के नहीं। यह हमारा नहीं वरन् उनका अपना विचार है।

मलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय के सस्थापक संयद महमद ली लिखते

"मूसलमान इस देश के मूल निवासी नहीं हैं। वे भूतकासीन विजेताओं के साथ यहां आए और चीरे घीरे यहां प्राकर बस गए। मारतीय मुसलमान उस जाति के बैशक है, जो एक समय इस देख पर शाज्य करती थी। तुम सोची कि तुम श्रीन हो ? शुनारी कीम क्या है ? सात शताब्दियों तक राज्य किया है। हमारी कीम उन लोगों के खन से बनी है, जिनसे न केवल भारत एशिया और यूरोप भी कापते वे। हमारी कौम ने अपनी तलवार से सम्पूर्णभारत जीता था। मैं तम्हें फिर याद दिलाना चाहता ह कि तुमने विभिन्न कौमों पर राज्य किया है भीर कई मूल्कों को शताब्दियों तक अपने आधीन रखा है। तम जानते हो कि राज्य करना क्या होता

उर्दकी माग किसी देशभक्त की मांग नहीं है। उर्द वालों को देश की चिन्ता भी नहीं है। उनके महान शायर इकबाल का कहना है-

> ग्रगर मूल्क हाथों से जाता है, जाए। त् महकाम-ए-हक से न कर बेवफाई ॥

भीर भहकाम -ए - हक, उन्हें 'दारल हरब' को 'दारल इस्लाम बनाने की प्रेरगा देता है। वे हिन्दी को काफिरों की भाषा मानते हैं। इसीलिए उर्द् का मण्डा उठाए हुए

एफ०के० दुर्रानी का निम्न उट-रण पढिये भीर मोचिए---

'But India is a geographical unity, is also a fact, which the Muslims must never forget There is not an inch of the soil of India which our fathers did not once purchase with their b'ood We can not

be false to the blood of our fathers India the whole of it is therefore of heritage and it must be reconquered for Islam Our ultimate Ideal should be the unification of India, spiritually as well as politically under the banner of Islam The final political salvation of India is not other wise possible

दर्रानी साहब लिखते हैं --"लेकिन भारत की भौगोलिक एकता भी एक तथ्य है जिसे मुसल-मानों को नहीं मलना चाहिए। भारत की एक इच भूमि भी ऐसी नहीं जिसे हमारे पूर्वजों ने ग्रपना रक्त बहाकर न खरीदा हो। हम ग्रपने परखों के रक्त का ग्रपमान नहीं कर सकते। इस दिष्ट से सम्पूर्ण भारत ही हमारी बपौती है। इसे इस्लाम के लिए पून जीतना चाहिए। मत इस्लाम के फण्डे के नीचे भारत का घाध्यात्मक भीर राजनीतिक एकी-करण करना ही हमारा अन्तिम उद्देश्य है। इसके बिना भारत की पूर्ण राजनीतिक मुक्ति बसम्भव है। सक्षेप में, उर्द की द्वितीय राज भाषा बनाने की माग एक गहरे वड-यन्त्र का हिस्सा है। प्रवन ३० प्र०६० से मधिक का नहीं है। उर्द के लिए पाकिस्तान बन चुका है। शेष भारत में अब उसका कोई मविष्य नहीं है। इस सत्य को स्वीकारने में किसी को किसी प्रकार की विप्रति नहीं होनी चाहिए, न हिन्दू को धीर न मुसल-

बदलवाने हैं भीर उचित स्थान पर फिट कराने हैं। इन ध्वनि विस्तारक यन्त्र से प्रतिदिन एक घण्टा नित्य केसेटो दारा बार्च वासी का प्रसारस किया जाए तो समय की पुकार की पुर्ति से लाभ ही लाभ होगा। यह विधि बार्यसमाजी के दैनिक सत्सगी को भी सरस बनायगी।

लोग आवंबाशी के गीतो को दिन भर गूनगुनाकर ग्रात्मा में ग्रानन्द लेते रहेंगे।

म्रार्यसमाज के उहे इयपूर्ण गीतों को हम बलात क्षेत्र के लोगों के कानों में डालकर विचार पैदा कर सकेगे।

श्रार्यसमाज के केसेटो की माग बढने से ग्रन्छे ग्रन्छे सगीतज्ञ पैका होते लगे गे भीर केसेट निर्माण कम्प-नियो का होंसला बढ नये नये न केवल सामान्य केसेट ही तैयार करने अपित यह उद्योग वीडियो कैसेट की धोर भी बढ जायेगा।

दिल्पी की भार्यसमाजों का एक बह सफल प्रयोग हरियाएगा, उत्तर प्रदेश राजस्थान भीर पंजाब भावि प्रान्तों मे फैल जायेगा भीर भार्य-समाज मे नवजीवन व्याप्त हो जायेगा।

केसेटों द्वारा प्रचार की के बरा-बर होगा जबकि भजनोपदेशक को बलाने पर काफी व्यय एव व्यवस्था करनी होती है भीर फिर जनता सनने माती नहीं।

कुछ लोग घपने निजी उत्साह से अपने वरों में प्रसारण करते हैं परन्तु यदि यह कार्यक्रम धार्यसमाजी से भी हो तो भार्यसमाज का बस्तित्व लोगों को दृष्टिगोचर होग ।

> धो३म् प्रकाश गुप्त २३, वीर सावरकर ब्लाक शकरपूर मोड, दिल्ली-१२

श्रार्ष वाणी प्रसारण

मात को।

निवेदन है दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाएग और पजाब भादि में आर्यसमाज के प्रचार का श्रेय यदि किसी को दिया जा सकता है तो वह धार्यसमाज के मजनोपदेशक हैं परन्त समय की भावव्यकता बदलने के कारण न तो प्रभावशाली योग्य भजनोपदेशक ही रहे भीर न परम्प-रागत हारमोनियम ढोलक पर सुनने वाले श्रोता ही । उनके मन की रिकाने, मन में सकार पैदा करने का काम यन्त्रीकृत उन्नत साज के साथ दिल को छने वाले निर्जीव कैसेटों के गोतों ने ले लिया है। धाकाशवासी इस मनोविज्ञान का परा लाभ चठा रहा है भीर काम-कता प्रधान गीतों का प्रसारण कर बाताबरण को दुषित कर रहा है। रविवार को दूरवर्शन पर दिखाई वाने वानी फिल्म के कारण बार्य-

Ann who when it wellow it .

की बैठकों समाप्त हो गई हैं। बत बाप इस मनोविज्ञान का

लाभ धपने पुरुवार्थ से भी तथा प्रभा-बशाली व्यक्तियों के प्रभाव से धाकाशवासी के माध्यम से उठाकर भार्यत्व के गीतों को वायुमण्डल मे प्रसारित कर भवना करना कर उद्देश्य प्राप्ति की घोर बढ सकते हैं।

धपने द्वारा किये पूरुवार्थ के क्षेत्र में भाप योजना बद्ध तरीके से दिल्ली की बार्यसमाजों में चारों तरफ गीतो के प्रसारण हेत् लाउडस्पीकर फिट कराके सेट प्लेयर यन्त्र द्वारा आर्य-समाज के केसेटों के प्रसारण से यह काम पूरा कर सकते हैं। बहुत से बार्यसमाजों के पास लाउडस्पीकर हैं भी परन्तु न तो वह उचित स्थानों पर लगे हैं भीर न ही उनकी व्यक्ति बार्यसमाज मन्दिर से बाहर जाती है। यत उनके यह लाउडस्पीकर अर अधिक और मानामानियों अ

की जसवन्त राय को पत्नी शोक

ग्रार्थसमाज राखा प्रताप जान के प्रधान श्री जसवन्त राय साही की धर्मपत्नी का २९ सितम्बर को निधन हो गया । श्रीमती पुष्पा साही मार्य-समाज की कर्मठ कार्यकती थीं। उन के देहाबनान पर भार्यसमाज रागा प्रताप बाग की भोर से एक श्रद्धां-जलि सभा का मायोजन किया गया, जिसमें दिवगत भात्मा के सद्गुर्गों को स्मरण किया गया।

निवेदक जगवीस भार्य मन्त्री

10

समाचार सन्देश

दिल्ली ग्रार्य वीर दल के २० युवकों द्वारा भान्तीय त्रार्थवीर दल महासम्भेलन, कैयल में सोल्लास भाग विशाल शोभा यात्रा निकाली गई

हरियाणा प्रार्थवीर दल के निमन्त्रण पर प्रार्थवीर दल दिल्ली प्रदेश के २० प्रार्थवीरों ने नीवे प्रान्तीय धार्यवीर महासम्भेलन, कंचल में सोल्लास भाग निया। प्रार्थवीर दल दिल्ली कार्य प्रतिनिध्य समा की, मेटाकोर)प्रचार-बाहुन में बठकर वेदिक नारों को गुं जाते हुए २२ सितम्बर, ६५, छनि-बार दोपहुर है। केचे समाध्यक प्रदिद्धा गांधी कन्या महाविद्यालय, कंचल पहुषे। भोजन प्राविक उपरान्त साढ़े तीन बचे प्रारम्भ हुई धोमायात्रा में विभन्न प्रदेशों से खोग हाला हाने हुए सार्थवीरों के मान दिल्लो

कार्यवीर दल के यह युवक लाठी, भाले, तलवारों से सुसज्जित पूर्ण गणवेश में सम्मिलत हुए।

दिल्ली धार्य प्रतिनिध सभा का मूख्य पत्र, बार्यसन्द्रश एव कीगीराख श्री कृष्ण पर लिखा हुआ ट्रेन्ट नव् पुल्लिका प्रचार एव प्रसार के लिए सभास्यल पर नि शुल्क वितरित्र किया गया। धायोजकों ने धार्यवीरों के ठहरने एव साने पीने की सुन्दर ज्यवस्था की बी इसके लिए सभी ने मूक्त कठ से प्रथमा की।

श्यामसुन्दर विस्मानी मत्री झार्यवीर दल, दिल्ली प्रदेश

त्रार्यसमाज तिमारपुर में यज्ञ व वेदकथा सम्पन्न

मार्यसमाज तिमारपुर, दिल्ली-७ मे १६ सितम्बर से २२ सितम्बर तक बजुर्वेद पारायरा यज्ञ एव बेदकशा समारोहपूर्वक सम्पन्न हुई। वेदो के प्रकाण्ड विद्वान् पूज्य प० सत्यप्रिय जी भाचार्ययज्ञ के ब्रह्माचे तथाश्री कर्मवीर जाव पुरोहित श्रीनानक चन्द जो भार्य वेद पाठी थे। सर्वश्री ची अीमसिह, विनोद शर्मा, झानन्द प्रकाश गुप्ना, कृष्णलाल पोपलो, मल्होत्रा जी, श्रीमती शान्ति देवी. सभाष सद एव विमल कान्त शर्मा बारी-बारी से यजमान बने। यज्ञ के पश्चात प्रतिदिन धाचार्य श्री सत्य-प्रिय जी ने वेद मन्त्रों की सरल, सहज रोचक व मनोहारी व्याख्या की। रात्रिको सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री प्रेम-चन्द जी श्रीचर एमं०ए० को वेदकथा हुई। साथ ही रात्रिको भाचार्यश्री सत्यप्रिय जो का भी प्रवचन होता रहा। कथा से पूर्व अजनोपदेशक श्री

सत्यदेव वी स्नातक रेडियो कला-कार एव तवना वादक श्री ज्योति प्रसाद जी ने अपने मणुर भजनों द्वारा सभी को अन्त्रमुख कर दिया। यव कथा ये समाज के नमीपदाध-कारियों ने सदस्यो एव नगर के निवासियों ने नाफी सक्या मे उप-दियत होकर उत्साहपूर्वक माग लया। यश शेष वितररा के परचाम नगर का भी आयोजन किया गया। माता जन्नन देवी आर्य नेस्न धर्माये चिकित्सालय के चलवाहन ने भी १५ वितम्बर को काफी सक्या में स्थानीय रोगियों की आँखों की भी जांच की।

> भवदीय विमलकान्त श्वर्गा उपमन्त्री भार्यसमाज तिमारपुर दिल्ली-७

श्रार्यसमाज राजोरी गार्डन नई दिल्ली द्वारा वेद प्रचार

६६ ८ प्र से १४६ ८ प्र की राजि तबा १४.६ ८ प्र को उपनिवर्दों के महान् बिडान् प्रोठ रतनसिंह बी एम०ए० के प्रवचन होते रहे। ओता-गण काफी सल्या में पबारते रहे तथा उन पर आर्यसमाज का प्रभाव बहुत सन्छा रहा। प्रवचनों से पूर्व श्री सस्य देव जी रेडियो कलाकार के मजन भी होते रहे।

८ ६ ८५ को मार्यसमाज की सोव से श्री कृष्ण जन्म दिवस मनाया गया।

> नन्दकिसोच माटिया मन्त्री

श्वार्यसमाज इनुमान रोड का वार्षिकोत्सव

धार्यसमाज हुनुमान रोड का वाणिको-राव बंडे समारीह पूर्क १५ हुनुमान रोड में ११ बक्दूबर से १३ धक्तुबर तक मनावा गया। इस धक्सर पर एक सप्ताह पूर्व श्री प० मदनमोहन विद्यासागर का वेद प्रवचन हुजा। लिसमें घामिक जनता ने सहवें भाग लिया। प्रवचन से पूर्व श्री सीहनलाल पविक के मचुर मजन हुए। उत्सव के धवसर पर धनेक गण्यमान्य व्य-नित्यों घोर निद्यानों के प्रवचन हुए।

> निवेदक मन्त्री आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली

श्राम प्रचार

घार्यसमाज धाशा पार्क के तत्त्वावधान में वेद प्रचार का धायी-जन किया गया। यह प्रचार कार्य २६ से २८ सितम्बर १६८५ तक माशा पार्क मार्केट के मध्य में होता रहा। जिस में महात्मा राम किशोर वैद्य महोपदेशक जी का वेद प्रवचन हुन्ना साम ही प॰ सत्यदेव स्नातक रेडियो कलाकार के मधुर भजनोपदेश से जनताने धर्मलाभ प्राप्त किया। दिल्ली समा के वेद प्रचार श्रविक्टाता स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी ने स्वास्य्य सम्बन्धी कविताओं भौर हास्य कविताधों द्वारा श्रोतागर्गो को लाभान्त्रित किया। भाशा पार्क मार्केट में भारी सख्या मे श्रोतागरा बाते रहे। बार्यसमाज तिलक नगर जनक पूरी धीर धशोक नगर से सभी मार्थ बन्धु आते रहे साथ ही सभी ने इस बेद प्रचार कार्यक्रम की भूरि-मूरि प्रशसाकी धौर अपनी कालो-नियों में कार्यक्रम रखने के लिए बाप्रह किया भीर इस कार्यक्रम के लिए समा प्रधिकारियों का धन्यवाद किया गया।

> व्यवस्थापक स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती श्रविष्ठाता, वेदप्रवास

षार्ष कन्या गुरुक्टल नरेला (दिल्ली) का कीतिमान

कार्य सनता की यह जानकर हुएँ होगा कि भायकी प्रिय संस्था कन्या गुरुकुल नरेला की कन्याओं ने इस वर्ष महर्षि दयानम्द विस्वविद्यालय रोहतक की शास्त्री परीक्षा में उसीएर्ड परीक्षां ख्यों की योग्यता सची (मेरिट बिस्ट) में पाठ में से पाच स्थान (प्रथम, द्वितीय, चतुर्य, पञ्चम तथा बच्छ। तका एक स्वर्श पदक प्राप्त कर विद्वविद्यालय में धपना कीति-मान स्थापित किया है। इसका श्रेंय कन्या गुरुकुल के कुलपति पुज्य स्वामी मोमानन्द जी सरस्वती के पूज्य तप, तेज एव ब्रह्मनिष्ठ बाश्रमप्राण मान्यवर्या माचार्या बहुन सुमित्रा जी की सुव्यवस्था तथा कर्त्तव्यपरायण स्नातिका बहनों की लगन को है। भारत के सात राज्यों से बाई कन्याओं को महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा निर्दिष्ट शार्ष पद्धति के अनुसाय शिक्षा-दीक्षा देने वाली एकमात्र इस शिकास सल्या के लिए तन मन चन से पूर्ण सहयोग देना शार्य जनता का पुनीत कर्सच्य है।

—सबाददाता दारा

दिल्ली श्रायंसमाजों के श्रिकारी च्यान हैं

समस्त मार्यसमाज के घाँषकारी महानुभावों से मनुरोध है कि दिल्ली बार्य प्रतिनिधि सक्या के उपवेशकों एवं प्रजापित्री संस्था के उपवेशकों एवं प्रजापित्री के नामके मनिष्णत करने के लिए बेदप्रचार स्ववस्थापक स्वामी स्वक्यामन्त्र से मिलें जो केवल उपयेशक से मिलं कर, अवक्षापक से सम्पर्क किया कर, अवक्षापक से सम्पर्क किया कार्यक्रम वनावंगे उनको सद्ध-योग कर पाने में हम प्रसम्ब है। अवक्षापक से तिथि राजिस्टर में ध्रिकत करा ते वें तथा उनसे लिखित पात्र प्रवास करों से तथा उनसे लिखित पात्र प्रवास के लें।

महामन्त्री वर्मवास विल्ली झार्य प्रतिनिधि समा क्लिसे

श्रार्यसमाज घोंडा दिल्ली-४३ में श्रीकृष्ण जन्म महोत्सव

सार्यसमाय के प्रांगण में ७ सितं-बर से द सितस्वर तक श्रीकृष्ण क्षमाष्ट्रमी पर एक समारोह का सारोजन किया गया। क्षित्रमें वैदिक विद्वानों ने भी कृष्ण के महान् परित पर प्रपो कावल किये। कोच औ क्षर्राक्ष क्षमण किये। कोच औ लिया । इस चवसर पर श्री प॰विनेस बन्द सास्त्री श्रीर -सावार्य सस्यक्रिय के प्रवचन हुए ।

> निवेदक सरक्कादार्थ श्रुप्ता मत्री, बार्यस्थाय सौंदा

धर्ममलम (पुब्ठ ४ का शेष)

कल्याशी हैं भीर सब मनध्यों के लिए दिना किसी भेदभाव के दिया गया श्चान है।

यथेमा बाच कल्याशीमावदानी वनेम्य । ब्रह्मराजन्याम्या सदाय बार्खाय च स्वाय चारसाय।

- यजु॰ २६।२

बेदका पवित्र और कल्यास कारी ज्ञान जन जन के निए है। बेद श्राय वमग्रन्थों की तरह किसी एक जानि सम्बदाय या वगका धमग्रथ नही है। वेन पढ़ने और सनने का धाधिकार सब को है इसलिए मनु महारक्ष ने कहा है-

धम जिल्लासमानाना प्रमास परम श्रति मन् २।१२

धम के जिज्ञास्यो क लिए वेद ही एकमात्र प्रमास है। पूर्व मीमासा मे बावा है --

वेत्प्रतिपाद्यप्रयोजनवत ग्रयों 907 1

क्षम के जिज्ञासभी के लिए वेद ही एकमात्र अमाण है। अस वही है को बेद के द्वारा प्रतिपानित है और धम ध्रम नाम मक्ष-चारो प्रयो ख ने की सिद्धि करने,वाला है।

श्री भारते दनाथ (स्वा॰ वेद भिक्षाने अपनी प्रतक Message of the Arva Sama; to the Universe में लिखा है-

knowledge the Vecas are the only one that give this know tedge namely-

1 The teachings are for all men in this wolld without exception for al times and for a lands hev are not at all meant for a vs equal land

सहदय सामनस्यम age or particular society

? There is nothing in them that is against the laws of creat on of the world nor against the laws of finding out truth nor against the world of well wishing sacred souls nor against any good behaviour with regard to men in the world

3 The teachings are not against science nor against good thoughts or things They inculcate a knowledge devoid of confusion and pre-

वेद भारवत नतिक मृत्यो का ज्ञान है जो सब काली देशी जातियो वर्गी तथा विभिन्न सम्प्रदायों के मानवों के लिए कल्यासा सब समद्धि तथा धानन्द का मागदशक है। उन शादवत सत्य ज्ञान के कुछ मन्त्रो पर ध्यान दीजिए ---

सग-उध्व मवदध्व

स वो मनासि जानताम । देवा भाग यथा पुव

> संजानाना उपासते॥ ऋग्वेद १०।१६१।२

वस्तु सर्वाणि भृता

साहित्य प्रचार रस्ट

ਜੀ 6 ਫੋਰਜ਼ਰਬ: 238360:23382

न्यात्मन्नेबानपश्यति । सबभतेष नात्मान

ततो न विज्यप्सते॥

-- यज् o ४० °

विद्वव क्रांगिव । भ यो श वमभिहयत

वत्स जातमिवाघ्न्या ॥

ग्रथकः ३।३०।१

इस प्रकार बेद जाइबत सत्य का ज्ञान हैं जो सब प्राशियों के कत्यारा के लिए सब्टि के प्रारम्भ में ही ईस्वर के द्वारा निमित्तिक ज्ञान के रूप में मिले। वेद के पठन पाठन श्रवण भीर मनन तथा ज्ञान के धनुरूप धाचरण से ही मनुष्य मात्र के जीवन का मार्ग प्रशस्त हो सकता है। उन सब का जो इस पवित्र माग के अनुवायी हैं। यह धर्म और कत्तव्य है कि निष्ठा पुरुक अपनी समग्र शक्ति की इसके प्रचार प्रसार में लगा द तभी क्रव्यन्तो विश्वमायम का लक्ष्य पूरा हो सकता है।

खन की चेतावनी (पृष्ठ द में भ्रागे)

लिए एक घाचार सहिता बनाई जाये। मैं प्राचीन भारतीय संस्कृति के मानने वाले लोगों से बाशा करता है कि वह भी भपनी संस्कृति एव भारत श्रीम की रमा के लिए सचेत ग्हें। और ऐसे देशद्रोहियों से कह दें कि बादे मातरम कहना होगा था भारत से जाना होगा।

> यीताराम द्याव प्रधान बायसमाज विदिवा

श्रार्यममाज श्राशा पार्क में वेढ प्रचार

वायसमाज भाशा पाक (फतेह नगर) नई दिल्ली १ में दिनाक २६ २७ २८ सितम्बर १६८४ को बेद प्रवार का कायक्रम दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा के प्रचार वाहन द्वारा उत्साह से मनाया गया। इस श्रवसर पर महात्मा राम किशोर जी महोपदेशक के प्रवचनी द्वारा तथा प॰ सत्यदेव जी स्नातक रेडियो कलाकार ने धपने भवतो दारा वद प्रचार किया। जनताने वड ध्यान एव र्राच पूर्वक इस कायक्रम को सुना तथा उनके लिए बटा उपयोगी भी रहा है। स्वामी स्वरूपानन्द जी ने अपनी हाम्य कविताशी द्वारा जनता का मनोरजन किया लोगो ने भी इस का परा आनन्द उठाया ।

बाशा पाक की इस छोटी सी नई कालोनी में ग्रायसमाज का यह पहला बद प्रचार हआ। है जो हर प्रकार से सफल और सराहनीय रहा भवदाय

> नरजनदेव सचदेवा मन्त्री





एस ो एक भिक्त कार प संस्य बालों को मीकरी दूर करता है तया उष्ट्रप्राण्य काल सर्गाचित वास

ठा प्रावस ह बहेडा **चलान व सम्ब** ० स संग्रेट गय एम**डी एक** कर्जनक ल गान सल्लागी प्रा**कृतिक हैवा** इसम ।इ र सम्या पाथ नहीं है

एव शिकाराई पान्यर का आख से 🛊

महाशियां वी हट्टी (प्रा॰) लि॰ 9 44 इण्डस्ट्रियल एरिया कीर्ति कार का विकास 118015 the 539609 537987 537341

स कार्य गार्की

Post in N D P S O on 11 10 85

दांतों की हर बीमारी का घरेल इलाज

23 जड़ी बुटियों से निर्मित

आयुर्वेदिक औषधि

टाते का शबदर

देत .

अब नये पैकिय में उपलब्ध Lange

महाशिया दी ु ०) लि० ९ ४४ इण्डस्ट्रियल एरिया कार्ति नगर नई दिल्ली १६ एकेन ६५७४०७ ६५७४७ ६५७४४ Licensed to post without prepayment Licence No. 121

त्रार्यसमाज कराकत्ता स्थापना शताब्दी वर्ष 🕊 🕬 🚉

द्याय महिला 'शक्षा मण्डल टस्ट द्वारा त्रायोक्किट' विषय नारी उत्थान त्र्योर त्रार्यसमाज

(उपनिषयौ सभावनाए एव कत्तव्य)

पुरस्कार—प्रथम १५०० रु० द्वितीय १३०० रु० ततीय १०० क्रक् नियम गणिन की अस्तिम तिथि ३१ °२ ११८५ ई.०

नियमाव ती

- १ निब ध अप्रजी नि दी भाषा और देव गगरी लिपि में हो ?
- च अधिकतम शब्द संख्या ३ ००० हो सकती है
- ३ लेव की विषयवस्तु और मौलिकना के लिए लेल स्वय उक्ता आहे. होगे।
- र्क्ष निवन्स को तीन प्रतियाँ फुलस्केप क गज पर एक झोर टाइप की हुई। या लिखी हुई भेजना सावस्थक होगा।
 - ५ निबन्ध में लेखक का नाम पता परिचय ग्रादि नहीं होना चाहिए।
- ६ लखक का नाम पता हस्ताक्षर युक्त प्रतियोगिता में प्रवशार्थ पक्र ग्रलग कागज पर निबन्ध के साथ सलग्न करना ग्रावश्यक होता।
- ७ लेख के प्राप्त न होने नब्ट होने भ्रथना क्षतनिक्षत मनस्या मे प्राप्त होने का दायित्व भाग महिला शिक्षा मण्डल ट्रस्ट का नही समक्षा जाएगा
- ्र पुरस्कृत लेवो के प्रकाशन का अधिकार आय महिला शिला मण्डल ट्रस्ट को हागा
- ६ प्रतियोगिता मे प्रविष्ट लख वायस नहीं क्रिने आयो किन्तु प्रति योगिता के निराय की वायरण के पष्टव च श्रपने ले को प्रम्यत्र प्रकासित करने मे लेवक स्वतंत्र होंगे।
 - १० पुरस्कृत व्यक्तियों को निराय को "क द्वारण देवी आएगी। ११ प्रियोग्निया में निस्स्थ भेजने समभा आएगा कि लेखक
- को प्रतियोगिना की शत स्वीका है। १२ निर्मायक मण्डल का निर्मय भातम बोगा।

निव व भेजने क पता---श्रीमात्री जी

> आय महिला शिक्ष्म मण्डल ट्रस्ट २० विधान सरहो कलकत्ता

किञ्चनलाल पोद्दार (प्रवान)

रुलियाराम गुप्त (म त्री)

उत्तम स्वास्थ्य के लिए गुरुकुल कॉगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार की और्षाधयां

सेवन करें

प्राप्तिकल प्राप

शासा कार्यालय-६३ गली राजा केवारनाय, चावडी वाचार,] विल्ली-६ फोन । २६१८३८



वर्षे **६ संक** ४० शूक्त एक प्रति ५० पैसे

रविवार, २० अस्तूबर, १६०३ वार्षिक २० व्यवे सृष्टि संबत् ११७२१४००६ स्राजीयन २०० स्वय ग्राध्यम २०४२

दबानन्दाब्द—१६१ विदेश मे ५० डासर, ३० पॉंड

राष्ट्र रक्षा सम्मेलन

राष्ट्र रक्षा के लिए आरक्षण समाप्त करना

आवश्यक है

माज भारत की परिस्थितियां बड़ी विवस हैं। इसे मन्दर धीर बाहर दोनों फ्रोंच से सतरा है। एजाव मालम नामा नामा निर्माण कर सान्ध्र प्रवेश नामा नामा निर्माण कर हैं हैं। जब हम किसी मानत विवेश की सुविवा देते हैं जैसे काश्मीर में मिल रही हैं। बार्म प्रवास की सुविवा देते हैं जैसे काश्मीर में मिल रही हैं। बार्म प्रवास करते के सावार सान मिल की सावार सान करते हैं और मालम नामा मालम करते हैं, और मालम नामा करते हैं, और मालम नामा करते हैं, बीर स्वार राष्ट्र स्वारित करने का प्रवास करने में

लगे हैं। राष्ट्र रक्षा के लिए सलगाव-बादियों को नटर करने के साथ साथ उसकी भावना को समाप्त करना भावस्थक है। आज मनुष्य का बरित्र भी पतन की भोर जा रहा है। सरकार भी इस दिशा में योग सान करती हैं। सराद के व्यवसाय को केवल उत्पादन सुत्क प्राप्त करने के लिए बन्द करने में प्रसम्पर्य है। महा मभी वराइयों की जब है। ये बिनार डा॰ बर्मयाप्त ने प्रार्थसमां हडसन लाईन, गुक्तेग वहादुर नगर दिल्ली-१ के बाधिकीरत्व पर व्यक्त कुमार वेशलकार ने अपने आवए में सम्पूर्ण मारन की दुर्देशा का विवरण दिया और आर्यसमाज से अपेक्षा की कि एक देशव्यापी आरोजन जलाया जाना चाहिए। मनुष्य अच्छा बनेगा। सत मनुष्य का निर्माण आवस्यक है। यह कार्य केवल आर्यसमाज ही कर सकता है। इस अवसर पर आर्यसम्ब सं यहारवी सम्पादक श्री प० यक्षामत सुवास्तु के सार्यक्रमों का आह्वान किया कि वे सभी मिलकर कार्य कर, आचारवान बने, विवेकी हों शीर इस सकत्यी बने तभी राष्ट्र का

— डा० धर्मपाल

कल्याण सम्भव है। राष्ट्र सम्मेलन का सयोजन श्री राजेन्द्र दुर्गाने किया।

धार्यसमाज किन्न्वे केंद्र व विश्वलिएक सप्ताह से प्रुप्तिस्त विद्वाल धोजस्वी वक्ता प० यथाल पुषाष्ठुं की कथा हुई और प० जुन्नीलाल के भगन हुए। १२ धवद्वर को आर्थ प्राव्युवक सम्मेलन सम्मन्त हुए। १४ धवद्वर को आर्थ सम्मेलन सम्मन्त हुए।

निवेदक गोपाल स्नार्य मत्री

पाकिस्तान द्वारा राजस्थान सीमा पर बड़े पैमाने पर युद्धाभ्यास

पाकिस्तान ने राजस्थान से सगने बालो सीमा चीकियों के बाल-पास युडाम्प्रसामें में बडोतरों कर टी है। मारो माना में बारन वारन सामरिक महस्व के ठिकानों पर इकट्ठें किये बार हें हैं। प्राप्त माना रो के जनु-सार यह साथका व्यवत को जा रही है, घागामी कुछ महोनों में पाकिस्तान महस्व सीमा क्षेत्र में अडकाने वाली कार्रवाई कर सकता है। पाकिस्तान ने घपनों सीमा चीकियों पर सुरक्षा संग्लेश की सक्या में बडोतरी कर बी है। पाक्षियों राजस्थान से लगने बाकी सीमान चौकियों पर पाकि-

स्तान ने पाचवी धौर दूसरी कोर लगा रखी है। न॰ भा० के ब्रनुधार पाकिस्तान ने पिक्सी मोमान्त पर पैतिक महत्त्व के ठिकानो पर धमे-रिकी राहार लगा रखे हैं। हाल में इनकी सरुपा में भी वृद्धि को गयो है। यह वो झाशका व्यक्त की गई है। क्या का झाका हमेर से लगो सीमा में पाकिस्तान ने झपने ठिकानो पर इसेक्ट्रोलक हिष्यारों को मो इक्ट्रा करना शुरू कर दिया है।

सीमा पर चल रही ग्रवाखनीय भीर खतरनाक गतिविधिया चिन्ता का विषय हैं। खुली सीमाओं के कारण असम में विदेशों नागरिकों की मुख पैठ की समस्या का सामना करना यहा और पजाब में सिल मानकविध्यों को हिष्यार प्रशिक्षण की सुविधा पित्री के साथ लगने वाला ४०० किलोगीटर झल भी चर्चा का विषय वना है। यहाँ विदेशियों और प्रातकवादियों की घृत पैठ के अलावा तस्करी भी एक वडी समस्या है।

यह उल्लेखनीय है कि सिनम्बर मे पाकिस्नान की वायुसेना ने वायु-सेना दिवस मनाया था इस ग्रवसर पर एयर चीफ मार्गल जमाल ग्रह- भद सान ने एक धादेश जारी कर बायुसेना के प्रविकारियों और जनानों से कहा कि वे किसी भी जुनीनों का मुश्यता करने के लिए नक्तं रहें। उन्होंने कहा कि यदि हम पर गुढ़ थोग गया तो हम उपना कड़ा जवाब दने में सक्ष्म है

इसी दिन पाकि-तान की वायु-सेना क मभी टिकानो, फजल, लाहोर, सरगोधा, चकलाला और पेशावर के बाधुसेना म्रड्डो पर जवानों को जाय दिलाई गी कि वे किसी भी पश्चिति में देलेंगी से मुकाबले के लिए तैयार रहें।



सन्ध्या-योग

लेखक-जगत् कुमार शास्त्री

१ - बाधो भाई सज्जन पृथ्वो । हम सन्ध्या करे, बोन्द्रारोपासना कर गायत्री मन्त्रका अनुष्ठान और भोकारका जप करे। प्रानकाल सूर्य के उद्रय होने से पहले भीर सायकाल सूर्य के अस्त होने के पीछे सध्या का समय है। पच महायज्ञी में सन्ध्या प्रथम ग्रीर मुख्य है। इसे ब्रह्म यज्ञभी कहते हैं। इसकाएक प्राचीन नाम अबहुत भी है। ("जपोऽहुनो, हुतो होम " मनुम्मृति तृतीय श्रध्याय) गायत्री मन्त्र व सावित्रो मन्त्र की प्रनुष्टान विधि भी यही है। ग्रोद्धार जप विधि ग्रथवा आंद्भारोपासना भी यही है। इसके ये विभिन्न नाम कुछ तो शास्त्रकारों के विचार प्रकार के भाषार पर हैं, कुछ साधको उपासको के श्रेणी विभाग के बाधार पर। यदि काई अपना सारा जीवन वा धाधकाश समय सन्ध्या धार्यात स्तुति प्रार्थना धीर उनासनापूर्वक भगवान के सम्यक ध्यान में व्यतीत कर सके तो भी बहत कम है। परन्तू यदि कोई श्रधिक सनय प्रभु भक्ति में न लगा सके तब भी दोनो समय सन्या अवदय करे। सन्ध्या मे गायदी मन्त्र का अनुक्रमानुसार विशेष पाठ भीर विचार तथा अनुक्रमानसार ही प्रणव जर्मी श्चवक्य ही करे। जा ऐसा नहीं करता बास्त्रों में उसे दोवी माना गया है। उसके विश्कार का आदेश भी दिया गया है-

२—प्राचीन इनिहास ग्रन्थों को देखने से ज्ञान होना है। कहमारे पूर्वत राम कुंग सोना कुनी आदि एवस व ऋषि पुनि महास्मा, साधु सन्त आदि नियम पूनक सन्योगासन्य किया करते थे। याज्ञ गुद्ध नोता तथा घोण विपत्ति के समय में भी वे प्रयोग सन्या जत का परित्याग न गन्ते थे। नभी नो वे बड़ वड़ काम करने दीर्ष आयु को प्रान्त करने में भी समय हुए थे। आज भी उनकी यशोगायाए मसार में गाई जा ही है। ईश्वर को उन पर विशेष हुपाया। क्यों कि वे मव ईडार के मच्चे भक्त थे।

= श्राज मसार में हम का स्थान नोम ने ने रखा है। दिखावा प्रतिहित्त त्रिता हो बना जा रहा है। मानो मत्य रणाश हो गया है भीर क्रम के पर त्राम में है। नास्तिकता ग्रीर उसके परिणाम में बरित्र होनता प्रत्योग में मी नाना प्रश्नार ना हुप्रथाए एव हु यो का वदाने था। विचार तरणाप्र ित हा पही हैं। मध्ये श्रास्तिक जन हा इस स्थिति का मानना कर सक्षे। ग्रीर वत्त्री हुई दु य तथा श्रन्थ-कार प्रथम्य औं हो पार सक्षे। श्रीर वत्त्री हुई तु य तथा श्रन्थ-कार प्रथम शांकी पार सक्षे। इस्वर भिक्त से हो पाप मात का स्थार त्रीप्रया उदय त्रामा और सख्य ग्रास्तिक नर-नारी हा स्थार जीयन स्थाप में विज्ञान सम्कर्य।

४—संग्ट्या के मन्त्रों ना पाउ आरे और स्थिर एवं शान्तित्त हो हा करणा पहिए उन्दारण श्रद्ध एवं स्पष्ट हो । साथ हो साथ सन्याम तो के व्यर्थ हो मन्त्र ने ये वि शान्यों हो ना रहे । अर्थ को जान नना नो मं या योग सक्त व्यौ सुखद न हो सकेशा । अर्थ को जाने वि नता मन एगा जा हो सन्ध्या कम में भीनि बटगी । नीता तन्त्र पर्याप्त नहीं सन्ध्या कम में भीनि बटगी । नीता तन्त्र पर्याप्त नहीं है । ज्यव स्वयं अर्थका मन हो मन में पाठ और जप आर्ति पन्ते के लाभ अधिक है । कभी कमार सम्मिनित सन्ध्या प्रमानी में जा उन्वस्वर में पार किया आता है वन तो इनित्र होता है कि जिनको सन्धा के मन घट-श्रद याद नहीं है जनको स्रोव सम्बन्ध म याद हो गई । वह सन्ध्या का सन्धान नहीं होता । प्रशिक्षणा नो तन्न है ही ।

५—वैदिक मल्या विषयक छोटी बडी भौर गय-पद्ममयी भ्रवं-झाप्तक पुस्तक बहुत में विद्वानों ने बनाई हैं। सभी उत्तम हैं। सामको को अपनी भ्रयनी योग्यता भौर सुविधा के भ्रमुसार किसी भी एक पुस्तक की सहायता से, अथवा किसी मित्र वा अन्य विद्वान् की गहा-यता से स्त्व्या के सब मन्त्रों का चुद्ध उच्चारण और आर्थ शिख तेता-वाहिए। विभिन्त विद्वानों के अर्थ-प्रतिपादन में जो जाविक्त केंद्र प्रमेरपाये जाते हैं, वे सब उमरों हैं। वे तो गौरा हो हैं। बास्तिक्त और तास्विक भेद उनमें नहीं हैं। बत उपासकों को भेद में भी अभैद मान कर हो चलना चाहिए। धर्म भेद के विश्वम से नहीं पडना चाहिए। म्बाट्याय से स्प्र मकार के सनो सव्य भासानों से हो मिट जाते हैं। (परस्पर विनद्ध अर्थ न होने चाहिए।)

६— सन्ध्या की महिमा हमारे आयंशास्त्रों में बहुत विस्तार के साथ गाई गई है। उपनिष्कारों एवं स्मृतिकार महिष्यों में वैदिक मन्योगासना पर सर्वाधिक वल दिया है। उपासना के अभाव में मानव-जीवन रूखा, फीका कडवा फुसफुता और अशान्त वन जाता है। ऐसी अवस्था में उत्तम ज्ञान भी मानसिक विलाग अथवा वाज्याल होकर रह जाता है। मिद्रान्त अके कहते हैं, जिसके अन्त में सिद्ध अपवस्थ ही मित्रों है। सिद्धान्त आचरए के लिए बने हैं, वाद विवाद से सिद्धान्त माचरए के लिए बने हैं, वाद विवाद से सिद्धान्त नी की परख होती है।

७—प्रान काल को सन्ध्या के पदवान रात के कार्यों का, और सायकान को सन्ध्या के पदवान दिन के कार्यों का भली प्रकार विवार भी करना वाहिए। यदि किसी से कभी कोई भूनव्क हुई हो, तो उस के सुवार का उनाय करना उचिन है। ऐसा प्रम्याग करने से मनस्य का चरित्र प्रस्पन्त निर्मल जीवन शान्त प्रीर स्वभाव प्रति सौम्य, शुद्ध ट्वि स्तिष्य हो जाता है। फिर प्रमु-भिन्न में मन भी खुब लगने लगाना है थ्रीर श्रन्न में मनुष्य ब्रह्मानस्य में लोन होने की सिद्धि भो प्राप्त कर लेता है।

८—जो लोग उपासना कर्म द्वारा प्रयमे-प्रथमे जोवन को सुखी, सफल नजस्वी और शान्त बनाना चाहते हैं उनको सभी प्रकार के मादक द्वस्थो तमोगुर्गी एव रजोगुर्गी भोजनो प्रशिव पदार्थों, चरित्र-होन मित्रो और काम कोच सद सोह लोजनबा ग्रहकाररूपी मनो-विकानों का पिन्याग घवश्य हो कर देना चाहिए। इसे ही खड्रिपु-दमन कहते हैं।

१—नय के नाम पर शरीर को कब्ट देना या मुखा उलना धनु-विन है। किमी अगन-महान्ये जाना गुढ बाधु के सेवन एकान्तवास विशेष अपनान्य और प्रकृति-निरीक्षण के लिए तो ठीक है अन्यया नहीं। घर-मुहम्बी का परित्यान करके तथाकथित बेरानी या रमते-राम बन जाना तो एक प्रकार की कायरता हो है। कर्ताव्य-कर्मी से यह विमुख्ता और शास्त्र विद्वित जीवन-समर्थ से यह पलायनवाद कि ते निए किसी रूप में भी अयस्कर नहीं है। मन्यास नो अपरि-मह और त्यानवाद ही है।

०० - ग्रण्नी-अपनी स•ध्या उपासना, जप, यनुष्ठान, साधना ग्रादि-ग्रादि भक्ति-धर्म के छोटे-बड़े मभी कार्यक्रम उपासक अपने आप ही कर। नौकरो या मुनोमो से करवाने का काम यह नही है। किसो के शुभ कर्मों मे प्रेरित या उत्साही करना नो बात ही दूसरी है।

११—सन्व्या-माता की शरण प्रहण करो। तन के चोले को भक्तिवाद के रग में ग्यो। मन-वन्दर को वश में करो। सच्चे उपासक बनो। उपासना के लाभ बहुत हैं।





क्या बरनाला उग्रवादियों का इलाज कर सकेंगे ?

तीन वर्षों से पत्राव मे आग भीर शुभा उठता रहा है ह^र दिन कोई शोला फूट पडता भीर लोगो के दिलों मे दहरात व्याप जानी। मुबा प्रधानमन्त्री ने समस्या का समावान करने का हर सम्मव प्रयास किया। स्व० श्री लोगावाल के मान हए समझौते से सारे देश को प्राक्षा बची थी, कि पंजाब समस्या का समाधान हो गया किन्तु सन्त सोगोबाल को हत्या से फर बाबाची पर पानी फिर गया। लेकिन प्रधानमन्त्री ने चुनाव कराकर फिर समस्या को सुलकाने का साहस दिखाया। पजाब ये चुनाव का ।वगुल बजा। सिल भौर हिन्दुमी ने एक-जुट होकर धातकवाद क मुकाबले म बाट डाले। दूसरी तरफ वाबा जोगेन्दरांसह का पाटी न चुनाव का बायकाट करते का फैसला किया। उपवादिया न चुनाव में रकावट डालने में कोई कसर नहीं खाडा । चुनाव शुरू होन सं एक दिन पहले बारावाल, बटाला, दाना-नगर, भन्तसर, फरादकाट आरतलवडा सरवाम उपवादिया ने बम क धर्माको कये। बटाला मे एक बम धर्माके संतान बच्च मर गये मार राज्य सभाक सदस्य माहिन्द्रप्रसाद ममृतसरक प्रमुख पयवे-क्षक का दालाल का कारतहरू नहस हा गई। अनुतसर म चुनाव शुक्त हान सदा दिन पूर्व आतंकवादियो नदा इका कायकनीमा का जहराला प्रसाद । बलाकर मीन का नाद सूला दिया। कई स्थाना पर टाइन बम मामिल । दिल्ल। रलव स्टेशन क बाहर एक ट्रांजस्टर बम काण्ड स तान व्याव त्या का मात का बाल चढा दिया गया। इसक बावभूद जुनाव हुए, भ्रक्तां तथा को सरकार वन गई। केन्द्र सरकार भा बहा चहिता थो। उप्रवाद का सफाया अकाला सरकार के हाथा

१४ दिसम्बर १६२० का जब मकालो दल बना था किसी प्रकार की साम्यदायक भावना का बाज मा उत्तम नवर नहीं भारता था किन्तु जसे जसे काला दल न ताकत प्रकार उसमें कई ऐसे तत्त्व चामिन हो जिस किन्तु जसे जसे कारण भारतावल कह बार टुक्ट टुक्ट हो गया। उदा-बादी तत्त्वानं अकालिया का भूट का भ्रष्ट्या लाग उठाया। धकाली दल में यह नारा उठता रहा, भ्रम भार राजनात साथ साथ चलेगो। राजनाति की कुसे का पान के लिए कुक्तताशा ना उपवादा तत्वा पर हाथ घर रेखा जससे उपवादा सांबरधालां हात गय। इन्हों के कारण अब कर पत्राव में धातकवादा ज्वाला हात गय। इन्हों के कारण अब कर पत्राव में धातकवादा ज्वालां हुत गया। इन्हों के नारण कर के पत्राव में धातकवादा ज्वालां हुत गया। इन्हों के नारण कर के पत्राव में धातकवादा ज्वालां हुत गया। इन्हों के नारण कर के प्रकालादल का सरकार ते में सफल उपवादों घड को ना। कर बातकवादिया का सफाया करने में सफल होगा ? क्या वह सन्त लोगोवाल के धादशा क मनुसार हिन्दू सिख एकता के लिए काम करेगा भीर स्वय म उगते घड बन्दों के फीड का इस्ताक कर पायेगा?

श्री सुरजीतसिह बरनाला सवसम्मति से पबाव के मुख्यमन्त्री बने हैं। उन्होंने कहा भी हैं- लयी सरकार का पहला काम सारे पजाब की सासों के सासू पोछने का होगा। हम ऐसा सरकार बनायमें जिसे राज्य के साहर धावमा अपना समक नके।" हम श्री वरनाना को सफलता के लए खुआबसा देते हैं। क वे सफल हो पर दस स्थित से हम्कार नृते किया जा सकता कि बरनाला लोगोवाल नहीं हैं वे सामूहिन धकाली नेनृत्व का एक हिम्सा हैं। बराबर वालों में वरिष्ठ सारे दल को अपन साथ साथ लेकर चलना उनके लिए एक चुनौती है। पुस्पमन्त्री की साथ प्रवास के ते के बाद भी बरनाला गुख्डोर में अरवास के लिए पृष्ठ इससे उनकी धामिकना का ता पता चलता है नितु राज्य के अद्भावता हिन्दु सो की अद्धा और मानना का प्रतीक किसी हिन्दु मिनवर में बाना भी उचित नहीं समभा। इससे हिन्दु भी के मन में बस तिवार उनने। खाय बही जो किसी सिख प्रकाक ने कहे थे। प्रगर प्रवास के सि सरकार वनती है तो सिख जनता इसे हिन्दु भी सगर प्रवास के सि सरकार वनती है तो सिख जनता हसे हिन्दु भी सगर प्रवास के सि सरकार वनती है तो सिख जनता हसे हिन्दु भी सगर प्रवास के सि सरकार वनती है तो सिख जनता हसे हिन्दु भी स्वास का से हिन्दु भी स्वास हमें हम हमें सह से सि सरकार वनती है तो सिख जनता हसे हिन्दु भी स्वास हमें हम हम से स्वास के साथ से स्वास के साथ से साथ से सि हम्म से साथ से साथ से सि हम्म से सि सरकार वनती है तो सिख जनता हसे हिन्दु भी स्वास हमें हिन्दु भी स्वास हमें हमें हम से सि हम साथ से सि हम साथ से हम से सि हम से साथ से सि हम से सि हम साथ से सि हम साथ से हम से सि हम साथ से सि हम से सि हम स

की सरकार प्रहेगी । तो क्या ग्रब <mark>श्रका</mark>ली सरकार पर हिन्दू विद्वास न कर ? जब कि यह भी धजोब रवैया है जेलो से काफी सिल रिहा क्यिं गये और किये जा पहे हैं परन्तु जेलों में बन्द प्रविकाश हिन्दू अभी भी रिहा नहीं किये गए। दूसरी बोर पजाबियो ने ब्रपने मन मे २६ मितम्बर को बरनाला के मुख्यमन्त्री चुने जाने पर खुशिया अनायां और खुशहालों की बाशाएँ जगायी। लेकिन आने वाला समय शकाली दल के लिए चुनौतियों से भरा हुआ है। पिछले तीन वर्षों से पजाब केन्द्र की सहायना पर चलना या रहा है यब एक तरफ लोगों के ऊपर टैक्सो का बोभ डालना तथा इसरी तरफ उग्रवाद को साफ करना काफी जोखिम भरा काम है। सन्त लोगोवाल और राजीव गाधी के बीच हुए समक्षीते ने बाने वाले पजाब का रास्ता तय कर दिया था। पजाब की नयी सरकार के लिए उस रास्ते पर चलना कडी चुनौतो है। यह सच है कि सिखो के विशाल बहुमत ने इस चुनाव मे आनकवादी रीति नाति के खिलाफ बोट दिया है। देश-नसिंह को विषवा विमल लानसा का सिफ ४०० वोटो से हार जाना इस बात का सकेत है कि उग्रवादियों से सहानुभूति रक्षने वाले प्रभों हैं। प्रजाब की नयी सरकार को उग्रवादियों के इन हिमातियों का मन भी बद-लना होगा। उसे अपने कार्यों से सिद्ध करना होगा कि भिडरावाले भीर उसके सहयोगियों का रास्ता गलत था। पंजाब और मिख दोनों के लिए महिनकर था। उपवादियों के हौसले मभी भी बूलन्द है भारत से बाहर जो षड्यन्त्र धभी चल रहे हैं वास्तव मे काफी चिन्ता-जनक हैं प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी की ब्रिटेन यात्रा से नीन दिन पूर्व ब्रिटिश पुलिस ने लगभग एक दजन ग्रानकवादियों को गिरफ्नार किया है। ऐसाक हाजारहा है कि इन लोगो ने श्री राजीव गांघी की हत्याका वड्यन्त्र रचाया।

यह भी बहुत स्पष्ट है कि पजाब के आतकवादियों को अमेरिका ब्रिटेन भीर कनाडा के बसे सभी मिलो से महायता मिलनी रही है। आनकवादी प्रधानमन्त्री श्रीमनी इन्दिरा गाधी श्रीर सन्त लोगीवाल जैसे सुविरूपान लोकप्रिय नेताबो को हत्या कर चुके है झौर अब भी वे षडयन्त्र करने मे लगे हुए हैं लेकिन यह कूछ मसामान्य सा प्रतीत होता है जब कभी प्रधानमन्त्री वाशिगटन या लन्दन पहुचने वाले होते हैं तभी वहा की सरकार को मानकवादियों की गतिविधियों की जान-कारी मिलती है। क्या यह सच नहा है कि रेगन प्रशासन ग्रीर थैचर सरकार को पूरी तरह मालून है कि उनके देशों में भारत विरोधी गिनिविधिया चल रही हैं। दोनो सरकारो को खालिस्तान की माग करने वाले मुट्ठीभर सिखो की सारी कारस्तानियो की जानकारी है। कुछ राजनैतिक प्रक्षको का यह भी विचार है कि ग्रमेरिका, ब्रिटेन तथा कनाडा के शासको ने जानबुक्त र भारत को खण्डित करने का षडयन्त्र रचने बानों को ग्राश्रय दे रखा है। इन उग्रवादियों का जो भारत से बाहर हैं सम्बन्ध पजाब के किसी सूत्र से भी जुडा हुआ। लगता है। जो योजनाए बाहर बनती हैं उनका प्रयोग भारत मे होना है। इसलिए बरनाला सरकार को देश की ग्रखण्डता का चुनौती देने वाली नाकतो स लडने के लिए कमर कसनी ही होगी। चुनौनी के व लोग जो बन्दूक और वम की भाषा में बात करते हैं। कल तक ये बन्द्रक उन पर तनी हुई थी जिन्हें उग्रवादी ग्रापरेशन ब्लुस्गर के लिए उत्तरदायी सममते थे। अब यह बन्दूक उन पर भी तन सकती है जिन्हें सिख पन्थ के स्वयम्भू सरक्षक सिखी कागदार कह रहे है। मतलब साफ है नयी प्रकाली सरकार को इन भटको का नयी राह हो नहीं दिखानी उन्हें उस राह पर चलाने का दायित्व भी निभाना है। ग्रगर प्यार की भाषा उन्हें समक्ष न ग्राये तो उनकी भाषा से ही उन्हें सही रास्ते लगाना होगा।

--- यशपाल सुषाञ्



ट्या संपीठ

उपनिषत् कथा-माला--१८

कर्मकाण्ड

लम्बक-स्वामी सवदानन्द सग्स्वती

हुक्म है शाओं का तूहो पाक टिला। हो नेक सबसे मुख्यत से मिला।

नेक काम मनुष्य को नेक बनाता है और बरे कामों से मनुख्य बुरा बन जाना है नेक काम से हृदय गृद्ध होता और बरेक म से अज्ञान बढता है नेक बादमी प्रभूका इच्छ्रक भीर इच्छामोका जो मनुष्यको बुरैकामो की घो लीवनी हैं त्यन कताहै पापो का राग्ता खुल जाने से समार मे कष्ट ग्रौर मुमाबत दिन प्रतिदिन बढताजाता है कमण्यता मनुष्य को पापो से हम कर कल्या समागपर अग्रसर करती है बरे काम न करो — दुख पास्रोगे कमजोग्हो बास्रोगे। यह बात्स है कि कोई भापूरव शुरू से हाभ्रपने भ्राप बुरा । नता ननी है जिस स्टेशन पर वह खडा है उसके एक ओर ब्राई श्रीर दूसरी भ्रोर भनाई है यति बेसमभा में वह भपन करम का बुराई को श्रोर बढाता है। तनानामधिक भाई सेदूर हाजाहै पर यति वह सोच सम स न पुणामाग को ग्रन्स करता है तो उनना हा अभिक वह पुरापाता है यी चक्क अगेच जाहग्रा एक वो तो प्रभूसे ना मिनाताहै भौर त्सरे को ससार मे घनाता रहता है परन् भ्राजकन सिद्धान भी बदल पया है—जिस काम के करने से ∺नूष्य का हत्य पवित्र और ग्रात करण ग्रह हो ज्से तो कोई विरलाहा निभाता है जिसम सब का आ । म हो दुव सुल मे परस्पर सहयोग हो अय से कियाको कदन हो उस कम का काई काई नी करता है प तुग्राजकत हरकाई बाहरा श्र बस्तरो का शौकान है और इनके विरुद्ध कहा गई वातो पर कान तक नहाध ना।

जमें कोई मन ईश्वर की पूजा बिल्कुन चुप नाप करना अच्छा मानते हैं और कोर्ड घण्टा घडिलाल बजा कर पूजा पा करना कि मानता है है भी माना में ईश्वर को जपना है तो दूसरा अपन को नपना है एक का मूख पश्चिम नो है नो दूसरे का पूज का किसीन सोण को कसे माना है तो दूसरे ने उसे जटा जाना है

इस विषयम कहाँ तक कहें हर एक मन ने अपने को दूसरे से पृथक करने का कोई न कोई ढग निकाला हुआ। है वह किसी हद तक नीक हो सकते हैं पर नु वास्तविकता को ठीक करने में सहायक नो पर ऐसा नो न हुआ। मनुष्य ने बाह्य भावम्बर को ही सब कुछ मानकर ग्रसलियत को लो दिया जिससे यह ससार भगनी का केंद्र बन गया। धम की तो यह आजा थी कि मनुष्य नेक और शुद्ध साच राग करता हो उसके हत्य मे बमड धौर धभिमान न हो एक दूसरे के साथ प्रम का बर्ताव कर शत्रना के बीज बोने से भीर फमाद करने से सनावर-वहतो हुआ। डोगकी वास्तविकता का स्थान देने से सकडो प्रकार के बसेड नोगे यह तो ठीक है कि मनुष्यों में कुछ न कुछ भेद होता है परत इस भेद की अधिकता को जमाना शत्रना कहता है असूल तो भगवो को मिटाना है इसकी ब्रज्ञानना से मनुष्य भगनो को उरता है असलियन तो यह है-

नेकी की नाकत नहीं तो वदी संपरहेज कर। ग्रापने ऊपर जल्म करने से

सटा ईइवर से डर ।

मनुष्य का यह मुख्य कत्त ०य है कि वर गुभ काम करने वाला ही बने यदि इसमे यह शक्ति महोतो ब्रे कामो से दूर रहना तो ग्रावन्यक यत्र नरीका तो समार के हित ग्रीर क प्राराका है। जब मन्ष्य भ्रपने स्वभाव को ब्राई से हटा कर उसके ५ भाव को टिन से मिटा देना है तब उसका क्यानेकी करने का स्वभाव हो जना है जिल्ल की प्रवृत्ति हिमी न किमी ग्रोर टोनी आवश्यक है बुराई का स्रोत बात होते ही भनाई का माग भाष ही जुन जाता है जो मनुष्य किसी कसाथ बुराई करना है वह ग्राज नहीं तो कल मुमीबत मे फमनाहै अध्याय से किसी को दूव पहचाना धपने ग्राप को स्वयमेव मुसीबनो मे फसाना है परमा मा द्वनाशक है म्रत जो मनुष्य किसी को मूसीबत से बचाता है वह भी भपनी योग्यता के ग्रनुसार प्रमुके इस गुए। का भागी बन जाता है, किंद्र अभी बहु कृष्ट नहीं पाता।

प्रमु स्वतन्त्र है। धत जो कोई किसी को बचन से भुनत कराता है वह मुक्ति पद को पाता और प्रमु के समीप हो जाता है। प्रमु दसाबु है। धत जो किसी पर दया करता है वह धमरत्व प्राप्त कर कभी नहीं सरता। हर हाल में खबा रहना बुरी बात मुख से कभी न कहना सुख-दुख के धावात को नानिपुकक सहना परमे खबर की प्राप्ता है।

इनके बदले में स्वास्थ्य प्रमन्तता

भीर सम्मान पाता है। इसलिए मनुष्य बुरे कामो से बचे भीर भलाई के लिए अरागे बढ़। ससार के किसी मनुष्य को दस्व देना किसी असम्यान का कल व्यानही है मेरेसित्र। द्माप तनिक इत असूलो पर घ्यान द किये मन्द्य को दनिया के रास्ते से निकाल कर प्रभ से मिलाप की घोर किस प्रकार ले जाते हैं। जो मनध्य को भ्रन्याय से कन्ट पहुचाना है वह प्रभु से दर हो जाता है। भलाई करना बुराई से परे ग्हना ग्रीर परहेजगारी का जीवन विताना पर बेदवर को प्राप्त करने का एक विशेष माग है। ग्रीर मिसी भी ईमानदार को जो मच्चे बर्धों मे घमवन है दूसरों को कष्ट देने का ध्यान तक नहीं हो सकता धम एक सच्चा माग है जो प्रभुतक ज पहचताहै। इस पर चरने वाला कभी भटकता नहीं। वह उपाय जो प्रमु से मिलाप में महा यक नो उस पर बाचरण करने से कौन करु पाना है ? मनस्य की गिराक्ट का मुख्य कारण दूसरो को दु व पहुचाना ही है-

बुराईट या मलाई जो है करते। सदाउमकाहै वसाफल वेभरते।

मनप्य वृते वा भले काम के प्रभाव से कभी बचनही सकता। यह नियम वा मजबून थीर वारिक है सा ससार इसी नियम के शतु नार चल रहा है किसी के पांच नफलता चम है। है तो कोई प्रपत्ते (ध्यक्ति) ने हमजी भीर कोई प्रपत्ते (ध्यक्ति) ने हमजी भीर कोई प्रवृत्ति कारणों ने हमजी भीर कोई । यह नियम नसे को नसा है रसी भरकी नहीं बच्चा। मनध्य पहाडों की क्या रामों से जाकर धपने को खिल्पा, चाहे सपने को सागर की रास अधिक हैं।

विराए भीर चाहे शकांग पर उड जाए। पर इस ससार भरके राज्य में कोई ऐसी जगह नहीं जहाँ कर्म ग्रपने परिएगम से पीछा छुडा सके। इसीलिए विद्वान ने कहा है कि जो मनष्य भौरो के माथ ब्राई अथवा मलाई करता है उनका परिशाम लौट कर उसी की प्रभावित करता है जिससे मासारिक द्वया सूख पैदा होता है भीर यदि भला काम फल की इच्छामे रहिन हो जिस मे दिस्वावतया बनावटका लगाव न हो तो वह (मलाई) कर्त्ता को मोक्ष की भीर ले जाता है। इसलिए धर्म की यह भाजा है कि बुरै कामो का त्यागकरनाही चाहिए ग्रीर नेक काय यदि फल की हब्दि रखकर किया जावे तो वह सासारिक सुख देना 🕏 पर यदि भलाई फल की सनिच्छा से की जाए तो उसका फल मोक्ष है। अव मनष्य को अधिकार है कि जिथर को चाहे प्रपनी गनि बढाए-शरव का फरमान है

नेकी से नारे काम कर। मत बदी कर भल से मत किसी को बदनाम कर॥

अन्द ग्राप शुभ कामो पर जो सुका का कारए। है उन पर ध्यान द— गुढ मनि सच्या ज्ञान महनशीलता होशियारी मत्यता पविज्ञता इदिय दमन मनोनिग्रह मुखदुस की अधिकता में निलपना बुरे कामों से भय सत्कर्मों मे निहरता दया. धाराम सतोष भक्ति दान शुभ कामना नशे से परहेज श्रादि श्रच्छी मादत प्रमुकी मोर लेजाती है। जिन लूबियों से सब को लाभ **धौर** ससार मे शाति स्थापित हो वही ईश्वर का माजा है उनका पालन करना मनव्य का मूख्य कत्त व्य है भीर जिन मनध्यों में ये गुए। हो के देवता कहनाते हैं। देवता का कोई

जिन बुरे कामो से मनध्य स्वय कच्ट उदाना है भीर भीरो को-कच्ट पहुचाता है वे सब दुख्टो के प्रिय दुगुस् १ हैं जो निस्नलिखित हैं—

विशेष प्रकार का शरीर नही होता।

देवतातो गुरगवान को कहते हैं।

भक्तान बुराई करना, क्रुविचार, (क्षेत्र एष्ट ११ पर)

श्रेष्ठ मानव जीवन निर्माण : साधन शील और उसके अंग

नीतिकारों के शब्दों में

धाचार्यं दीनानाय सिद्धान्तालकार



महाभारत यान्तिपर्व, राजधर्म प्रकरता के बध्याय १२४ में दुर्वीचन धौर भूतराष्ट्र--पुत्र-पिता का सवाद है जिसमें भोष्मपितामह, युषिष्ठिर तबा भ्रन्य कई विद्वान् भी उपस्थित वे। इसका प्रारम्भ वृतराष्ट्र द्वारा पुत्र दुर्योभन को सतप्त देख कर इस प्रक्त से होता है कि तुम्हारे इस प्रकार सतप्त होने का क्या कारण है जब कि तुम्हारेपास लोकिक सुख समृद्धिक सब साधन उपस्थित है। दुवाधन स्बभावत पाण्डवा से बडी ईव्या करता था। उसने कहा-पुधिष्ठिर के घर म हजारी स्नातक स्वर्णपाकी मे भोजन करते हैं जब कि मेरे महलो मे कुछ संकडा स्नातक भाजन करने बाते है। इसी प्रकार दुर्वीवन ने बस्त्र, धरव इत्यादि धन्य कई जड बेतन वस्तुमा और पशु पक्षिया का भा जिक्र ।कया । धृतसब्द्र न पुत्र की ईच्या, द्वव के त्याग का उपदेश दते हए कहा--

हुपुत्र । यदि तु गुर्बाष्टर सद्वा लक्ष्मा बभव इत्यादि करना चाहुता है ता खालवान् वन । तब दुर्याधन का यह पुछना स्वाभाविक हो वा कि यह बाल क्या है ? तब यूनराष्ट्र न प्राचानकाल का इतिहास सुनात हुए करनो के एक क्यान के प्रमास्य से खात के प्रगो का निम्न वस्त्रन क्या — प्रयाद् (१) वर्ष (२) सर्थ (३) सदाबार घीर (४) तस्मो । हे बुढिमान् । ये बारो खाल के मूल है । इदका सावक स्थाक्या करते हुए मृतराष्ट्र कहता है—

किसी के भी प्रति मन, वासी, कर्म से द्वाह न करना, दया, यवण्यक्ति बान, यह सील कहा जाता है। प्राचीनकाल के नीतिकारों—मर्ट्र हिर ब्रिचुर, चासक्य इंत्यादि ने 'स्वोल' का कुछ सिक विस्तार से विवेचन क्यार है। इनके वचनों को हम यहां उपस्थित करते हैं। शीलवान व्यक्ति के गुरा-भनेंटरि

सन, बचन और शरीर से सत्कार्य क्यों होकर सिनं क्यों होन्दर स्था होन्दर स्था होन्दर सिनं स्थान हे स्थान होने से प्रत्य करने वासे तथा हुक्यों के पर- नाया सु सद्य होने से प्रत्य करने हुव स्थान हिन्दर सिनं सिनं सिनं होने वासे उसन होने वासे उसन होने वासे उसन होने वासे उसन होने सिनं उसन सीन- वान् पुरुष कितने हैं शियले हो हैं।

तृष्ट्णा का त्याग, क्षमा बारण, मद का त्याग, पाप में प्रीति का त्याग सत्य बोलना, सज्जनों के मार्ग का मनुसरण, निद्वानों की सेवा, प्रजनीय व्यक्तियों का भावर, बनुजों के प्रति भी नम्न व्यवहार। भ्रपने गुर्गों को खियाना, अपने यश की रक्षा, बुक्षाना, अपने यश की रक्षा, बुक्षाना, अपने यह सत्पुर्वों के लक्षार हैं।

शील सर्वश्रेष्ठ सुवल् है—

वन सम्पत्ति की घोत्रा सञ्च-नता, सुरवीरता की घोत्रा, वाक् स्रयम, (बढ बढ होंगे न मारना) क्षान की घोत्रा, धान्ति, विद्या की क्षोत्रा नमता, चन की घोत्रा सुपान को दान, तप की घोत्रा, कोच न करना, प्रमुता की घोत्रा, समा धौर वम का प्रवृष्ण निष्छल व्यवहार है। पर इन सब मून घोल सदाचार सर्वेषेष्ठ है।

विदुरनीति

वो धानत हुए वैर को नही मह-काता, न वमण्ड करता है, धपने की होन नहीं अताता है "दुर्यति में पडा हुँ" ऐसा कहकर प्रकार्य नहीं करता प्रार्थ उसे परम आर्थशील कहते हैं।

भपने सुख में बहुत हुएं नहीं करतान ही दूसरे के हु ख में प्रसन्त होता है। भी देकर पदवासाप नहीं करता, वह सत्पुरुष भाव शील कह-साता है।

इस ससार में पुरुष का शील ही

चाणस्य नीति (a) विका

(१) विद्याधम्यास मे, परिवार भील से, गुगा स ध्राय धौर क्रोष नेत्र से पहचाने जाते हैं।

(२) रूप की शोमा गुण से, कुल की शोभा शील से, विद्या की शोभा सफलता से और घन की शोभा उसके प्रयोग से होती है।

(३) गुएाहीन व्यक्तिकारूप, शील से टीन का कुल प्रयोग मेन ग्राने ग्राने से विद्या, और व्यवहार मेन से घन का नाश होता है।

(४) जिसके पास विद्या नहीं, तप नहीं, दान नहीं, शोल नहीं, गुरा भौर धर्म नहीं ऐसे मनुष्य इस पृथ्वी पर भार रूप में मृग के समान विच-रते हैं।

इस प्रकार शील के सम्बन्ध में प्राचीन नीतिग्रन्थी में जो विविध-रूप बताये गये हैं, उनका वर्रान करने के बाद चुतरास्ट्र अपने पुत्र दूर्योघन को ग्रन्त में कहते हैं—

हेपुत्र । यदि त्युधिष्ठिर से भी विशिष्ट होना चाहता है, तो इस प्रकार जीवनका तत्त्व जानकर शोलवान वन ।

> के सी ३७/बी ग्रशोक विहार, दिल्ली-४२

यज्ञोपवीत-महिमा

(एक गीत)

यज्ञोपवीत लेक स्थुदको निहारना है। जीवन सुवारने का सकल्प धारना है॥

मुक्य है, जिसका यह नष्ट हो जाता

है, उसका न तो जीने का प्रयोजन

भौर न वन से उसे कोई लाभ होता

भयवा कुल का मद होता है। बह-

कारियों के लिए यह मद उन्मादक

होते हैं किन्तु सज्जनो के लिए यही

चरित्रेहोन का कुल (उत्तमकुल

में जन्म) प्रमारण नहीं, ऐसा मेरा

विचार है। नीच कुल में उत्पन्त का

वृत्त (सदाचार ही उसकी विशिष्टता

दमन का साधन होते हैं।

होती है) ।

विद्यामद चनमद, तीसरा देश

हर भूठ की तरफ से मुहबपना फेरना है। सच्चे बतो का पालन करने की प्रेरणा है।।

तपत्याग साधना को हर दम उभारना है। जीवन सुधारने का '।।

गायली जाप सन्ध्या स्वाध्याय यज्ञ करना। दुष्टो की सगति में हरगिज न पांव धरना॥

भगवान् को कभी न दिल से विसारना है। जीवन सुधारने का " ।।

समभो येतीन ऋष्ण हैं कन्चेपे तीन वागे। जब तक हैं प्राण इन से व्यक्ति कभी न भागे।।

निष्कपट स्वच्छ सुन्दर जीवन गुजारना है। जीवन सुधारने का

पितरो की टहल सेवा देवो की उचित पूजा। ऋषियो सग जैसा कर्तव्य है न दूजा।।

माता पिता गुरु के ऋरण को उतारना है। जीवन सुवारने का ै॥

... नेकी के काम करके तत्काल भूल जाना। निष्काम भाव होकर ग्रीरो के काम ग्राना।।

शिक्षाकासूत्र है यह मन में विचारना है। जीवन सुधारने का

शुभ चिह्न भार्यो का यक्नोपवीत है यह। सबश्रेष्ठ लोगपहुने ऋषियो की रीत है यह।।

दुनिया में ''पिषक'' इस के यश को निखारना है। जीवन सुवारने का • ॥

लेखक--प० सत्यपाल 'पथिक''

यशर्थवाद के परिप्रेक्ष्य में

ऋषि दयानन्द का दार्शनिक चिन्तन

ले -- जगदीश ग्रार्थ, सिद्धातरत्न, 'विशारद' सासाराम

दशन रश धानुसे बना है। शका अर्थ है दे ना। देवता तो अमे को र है — कीट पनगादि सभी खते हैं। पन्न आहा देवना एक वेशेष अर्थ में आग है। दार्थनिक बन्तन में विवेचनात्मक रण्टि से अभिवन जगन को देवना ही दर्शन हैं।

दर्शन से दो मुख्य तत्व है—प्रष्टा ग्रीर हस्य भीर दोनों के महस्रोग से बना है दर्शन । यह सारा कहाण्य स्वय है। इच्टा ग्रात्मा है। दर्शन शास्त्र के किसी विशेष विचारचारा से प्रपने को सम्बन्धित रबने वाला व्यक्ति वार्शनिक कहा जाता है।

मनुष्य भीर दार्शनिकता का भट्ट सम्बन्ध है। बिना दर्शन ('Anilosphy) के मनुष्य रह ही नहीं सकता।

दार्शनिको को मैं तीन कोटिया मे विभाजित करता है। प्रथम तो वे हैं जो टेवल पर बैठकर दर्शन की बात करते हैं उनके विचार जीवन से कोई मेल नहीं रखते हैं। दूसरे वे हैं जो केवल दर्शन के हो लिये दर्शन-शास्त्र का ग्रध्ययन करने हैं। वे प्रपने क्रोन को दार्शनिक विचारों से इस-लिए पम्प करते हैं ताकि दूसरे लोग उन्हें दाशनिक समक्त । तीमरी कोटि मे वे बाते हैं जो स्वभावत दार्शनिक होते हैं। उनका चिन्तन यथार्थवाद से समन्त्रित रहता है उनके दार्श निक विचारों से मानवता लाभान्वित होता है। ऋषि दयानन्द इसी कोटि के टाजनिक थे।

स्त्रामी दयानन्द जन्मजात दार्श निक (Born Philospher) थे। वे भाव र या काल्पनिक फिलास्फर नही थे। उन्होने दशनशास्त्र का किसी गुरुक्त या विद्यालय मे ग्रह्मयन नही कियाया - नके जीवन की दो घट नाएँ ऐसी हैं जो यह प्रमातिक ती है कि उहें मा के दूध की घड़ो के साथ ही दर्शन मिना था। पहली घटना तो चौदह वर्ष की प्रायु मे घटी शिवरात्रिके दिन। पिनाजो कटर शव थे भी ग्रापने पुत्र को भी होबोपासक बनाना चाहते थे। उसे क्षित्रात्रिका वत रखने के लिए प्रेरित किया। शिव की प्रलौकिक स्थचमन्कारिक कथायो को सुना कर बालक मूलज्ञार (दयानन्द का बच-

पन का नाम) की उत्साहित किया। मन जी के मस्तिष्क में यह दढता से जमा देते हैं कि शिवरात्रिको निष्ठा-पूर्वक वृत रखने वाले भक्तो को शिव साक्षात दर्शन देते हैं। बालक मूल जी शिव मन्दिर में रात्रि के समय वतानव्यान में लीन है। तभी एक छोटी सो सामान्य घटना घटती है। कुछ चहे बिल से निकलते हैं भौर शिव प्रतिमा पर उछल-कूद मचाते हैं। मूलशकर इसे देख कर बादवर्य चिकत हो उठता है। उनके बाल मस्तिष्क मे प्रश्नो की विजलिया काँच उठनो हैं। क्या यह वही शिव है जिस की प्रलीकिक कथाधों को मैंने सुना है, जो अपने जिल्ला से सनेक मय-कर राक्षसो को नष्ट करते हैं अपने तीसरे नेत्र से नामदेव की अस्म किया है वह अपनी रक्षा इन सुद्र चुहो से क्यो नहीं कर पारहा है? क्या यह वही शिव है ? बालक प्रपनी शकाओं को पिता के समक्ष रखता है। पिता जो उत्तर देते हैं उस उत्तर से वह सतुब्ट नहीं होता है भीर तब बही निभयता से विता से कहता है कि मैं वत नहीं रख्या। वह घर पहचता है और वर्तको तोड कर भोजन कर लेता है। सच्चे शिव को प्राप्त करने का मन मे मकल्प लेता है उसे मूर्ति पूजा से विरक्ति हो जाती है।

शिवरात्रिको घटना से तीन बातो का पता लगता है—१ बालक मूल की जिज्ञासुबृति २ खच्चे शिव की प्राप्तिका सकल्प, भौर ३ निमं-यता से प्रप्ते विचारो को प्रकट करना।

एक दार्शनिक के लिए जिज्ञासु होना पहली शर्न है। वेदात का पहला सूत्र है—

श्रयातो बहाजिज्ञासा ।

दूसरी बात यह बताती है कि
उस घरलायु में भी घपने कठोर पिता
के समक्ष निर्भयता से घपनी चठोर
निर्भयता है। दार्घोनिक के लिए
निर्भयता का गुए। घावदयक हैताकि
वह द्यपनी विचारबारा की ससार
के सामने रक्ष सके। तीसरी बात,
हाव की प्राप्त करने का कठोर वत
का से राहै।

बुसरी घटना-पाच वर्षी के बाद

घटती है। बालक पूल अपनी बहुन और वाचा के मृत्यु-बस्यो का साक्षान् देखना है। उसके बाल-मस्तिष्क में इस इस्य से एक दिलझाएं प्रतिक्रिया होती है। प्रदन उठता है मृत्यु क्या है? क्या स्प्रीक्ष एक न एक दिन मरना है? क्या मृत्यु से बचा नहीं वासकता?

दूसरी घटना से दो प्रश्न उत्पन्न हुए—१ सृत्यु नया है ? २ इस से की बचा जा सकता है।

ऋषि दयानन्द का सारा जीवन निम्न चार प्रश्नो को सुलक्षाने में लग जाता है—

१ शिव क्या है ? २ उसे कसे प्राप्त किया काए ?

२ उसे कस प्राप्त किया जाए . ३ मृत्य क्या है? भीर ४ भीर उससे कैसे बचा जाए?

दर्शनद्वास्त्रका भी यही मुख्य विषय है। परमात्मा क्या है? किस विधि से उसे प्राप्त किया जा सकता है? तथा मोझ क्या है? धौर उसकी प्राप्ति के क्या साधन हैं?

धत स्वामी दयानन्द एक जन्म-जात दार्घनिक (Born Philospher) के इसमे किंजित भी मन्देह नहीं।

ऋषि दयानन्द ने दर्शनशास्त्र पर अपलगसे किसी ग्रन्थ की रचनानही की। उनके स्वर्शनत ग्रन्थों में दार्श-निक सूत्र यत्र-तत्र बिलरे हैं। सत्यार्थ प्रकाण नृतीय सप्तम श्रष्टम, नवम ग्रादि समुल्लास मे प्रसगवश दार्श-निक मन्तव्यों के मध्ययन से पता चलता है कि वे उच्चकोटि के दार्श-निक थे। परन्तु कुछ विद्वानी का मत है कि उनके स्वकृत ग्रन्थों में जो प्रसगवश भारतीय दशंनो के कुछ मन्तव्यों के उद्धरण मिलते हैं, वे मन्तब्य ऋषि दयानन्द के न होकर उन दर्शनो का ही मन्तव्य कहना युक्तिसगत है। किन्तुमेरा विचार इस विवार से भिन्न है। मेरी बारा है कि स्वामी जी ने भारतीय दशेंनो का आधार लेकर जिन मन्तव्यो का समन्वय किया है, उन्हें 'दयानन्द-दर्जन' कहना ही युक्ति सगत है। धाज की भाषा में यह कहा जा सकता है कि पाचीन दार्शनिक सिद्धारों की दयानन्द ने एक नवीन शैली, नवीन मावा में सुबोध सरल ढग से उसे प्रतिपादित किया। 'नवीन कवर मे

पुरानी पुस्तक'।

स्वा• दयानन्द महाराख ने विविध प्रकारो से वार्शनिक तस्वो ना प्रतिपादन किया है। किसी सम्प्रनाय विशेष का अनुगमन नहीं किया है। उनके मन्तम्य सम्प्रवाय निरपेक्ष तथा सम्पूर्ण जीवन से सम्बन्ध रखेतें हैं।

श्री दयानस्य महाराज ने गख सूत्रारसक शैली में प्रापने लख ग्रन्थों में दर्शन तत्त्वों का निक्ष्यण किसा है। जैसे 'सायों हेच्य रत्न माला' एव स्वभन्तव्यामन्तव्य प्रकाश । इन लख्-तम पुस्तकों में दर्शन के मौतिक तत्त्वों का विवेचन प्रस्तुत हैं। यत हम नि सकीच कह सकते हैं कि दयानन्य एक मौतिक दार्शनिक हैं।

यह बडे ही खेद की बात है कि ग्रार्थसमाज ने संस्थागत रूप में उनके निरूपित दार्शनिक मन्तव्यो का कोई प्रामासिक भाष्य तैयार नहीं किया है। बाह्य उत्सवो, विश्लेष समारोहों पर लाखो रु का बजट बनता है। जो दो-तीन दिनो के तमाखे का नाटक कर समाप्त हो जाता है। इन उत्सवीं एव समारीहो से किंचित ही लाभ होता है । जितना लाम होता है उस से कही अधिक ही हानि होती है। काश । इन बजटों का दशास भी उन के दार्शनिक मन्तन्यों के भाष्य में लगता तो आज विश्व में दशनन्द. दसरे शकरावार्य के रूप में समास्त होते। हाय ! हमारी (हमारे विद्वानी) की मनमध्यता से हमारा फर्स्ट क्लास का दार्शनिक आचाय पीछे पह गया है। ग्रस्त्।

ऋषि दयानन्द के दर्शन पर माधिकारिक ग्रथ बहुत ही ग्रस्प हैं। यह प्रयास भी व्यक्तिगत ही है। म्रमेजी मे दो पुस्तकें बडी ही भच्छी हैं। स्व॰ प॰ गगाप्रसाद जी उपा-ध्याय की Phoilosophy of Dayanand तथा उनके सुपुत्र स्वा॰ सस्य-प्रकाश जी की A critical study of Philosophy of Dayanad हिन्दी में उपाध्याय जी की ही एक लघु पुस्तक 'शकर रामानुष एव दयानन्द' भी अच्छी पुस्तक है। अभी हाल ही मे डा० श्रीनिवास शास्त्री जी, प्रो॰ दयानन्द पीठ कुरुक्षेत विश्व • ने दयानन्द दर्शन-'एक अध्य-यन' पुस्तक लिखी है। यह पुस्तक कई हिट्यों से अञ्छी है। भी देव-प्रकाश जी गुप्त ने भी 'दयानन्द-दर्शन' नामक एक पुस्तक लिखी है। वे सभी प्रयास व्यक्तिगत हैं-सस्यारे गत नहीं। हा, डा॰ सत्यप्रकाश जी की पुस्तक, मार्थ प्रतिनिधि समा राजस्थान ने प्रकाश्वित की है।

स्वामी जी के दर्शन के बाबाद पर प॰ उदयबीर की बास्त्री वे को

६ दर्शनों का भाष्य प्रकाशित किये हैं, करना है। यह ससार दु लमय है, वे भी धनुषम हैं। प॰ उपाध्याय जी ना 'शह तवाद', 'शांकर भाष्याली-चन', 'जीबात्मा', 'मैं भीर मेरा मग-बान्' (मूल पुस्तक मग्नेजी में 'l and myg d') एव भ्रास्तिकवाद ग्रादि प्स्तक भी दयानद दर्शन के मिद्धान्त के प्राधार पर उपलब्ध है। पर ये सभी पुस्तकों दयानन्द के मौलिक दशन के रूप मे नहीं हैं। शस्तु।

द्भव में द्भावने मुख्य विषय पर भाता हु। स्त्रामी दयानन्द का दर्शन एक यथार्थवादी दर्शन है (Philosophy free from scepticism and full of hope life and vitality) है, जो जीवन के साथ गहरा सम्बन्ध र बना है। उनके सभी दार्शनिक मतव्यों को भगर हम यथार्थवादी रिष्टकोगा से उपस्थित करें, तो एक ग्रन्थ बन जायेगा। श्रीर दूसरी बात यह भी है कि मुफ मे-इतनी योग्यना एव क्षमता भी नही है कि इस विषय पर कोई स्वतत्र ग्रन्थ लिख्। इस लघु निबन्ध में उन के कृतिपय दाशनिक विवासें का श्रध्ययन प्रस्तुत कर रहा हू। मेरा यह लेख एक सकेत मात्र है। मार्य-वार्जनिक विदानों से मेरा यह नम्र निवेदन है कि वे, 'दयानन्द-दर्शन एक यबार्चवादी दर्शन है' इस पर एक स्वतन्त्र प्रत्य की रचना करे।

यथार्थवाद से समन्वय

त्रेतवाद का सिद्धान्त-

इस सिद्धान्त में भोक्ता, भोग्य एव परमात्मा पर विचार प्रस्तुत किया गया है। भोक्ता जोव, भोग्य-अप्ट जगत् है, तथा परमहत्मा इस जगत्काकर्ता-धर्ताग्रीर जीवो के कर्म फलों का प्रदाता है।

जड जगत् सुन्द एव दु.समय है। स्वामी दयानन्द ने इस सुब्दि की शुक्त एव दुल से मिश्रित माना है। बौद्धों का यह निद्धात कि जगत्मात्र दू लगय है 'सर्वस्य ससारस्य दु ला-स्मत्व' बौद्ध धर्म ससार को दु समय मानकर तथा इसे क्षरिएक बतना कर ससार त्यागने का उपवेश देता

शांकर-सिद्धान्त के अनुसार यह जगत् मिथ्या है, माया है। एक बहा ही सस्य है। बत बहा की प्राप्ति के लिए इस मिथ्या एव माया जगत को त्यागना ही जीवन का परम सक्य है। बौद्धों एव शंकर का दार्श-निक सिद्धान्त पलायनवादी सिद्धांत है। इनके स्वान पर दयानन्द का सिद्धान्त यह प्रतिपादन करता है कि ससार सस्य है यत इसका भीग करना है, संसाद से पलायन नहीं इसका निराकरण करते हुए दया-नन्द यह प्रतिपादन करते हैं कि ससार केवल दू समय नहीं है, सुबा भीर दूल दोनों सापेक्षिक हैं। बिना दुल के सल का ग्रानन्द नहीं मिल

'ससार पूर्ण उपभोग करने के निए है। ऋषि दयानन्द का सिद्धान्त है। परन्तु इसका यह ग्रर्थ कदापि नहीं है कि चार्वाकों की तरह केवल सांसारिक सुखों को ही वाँछनीय बतलाया है। वे (स्वामी जी) भोग के साथ सयम की बावश्यकता पर रहता के साथ जोर देते हैं। यजुर्वेद के इस सिद्धान्त को जीवन में उता-रने को कहते हैं। 'तेन त्यक्तेन मु जी बा" अर्थान त्याम के साथ मीग करो।

जीव कर्मकरने में स्वतत्र है, ऐना प्रतिपादन कर मनुष्य को कर्म करने की प्रेरणा देते हैं। कर्म स्वा-तत्र्य पर दयानन्द बहुत बन देते हैं। उनकी यह बारएग है कि मनुष्य स्वतत्र रूप से कर्म करके ही उन्नति के शिखर पर चढ सकता है, या पतन की खाई में भी गिर सकता है। मनुष्य ग्रपने कर्मी से ही 'देव', असुर पिशाच, राक्षस बन जाता है। दया-नन्द दर्शन नियतवादी नहीं है, पुरु षार्यवादी है।

जिस प्रकार जीव कर्म करने में स्वतंत्र है, उसी प्रकार परमात्मा उनके कमों को फल देने में भी स्वतत्र है। ईइवरीय व्यवस्था में जीवों की स्वतत्रताकी एक सीमा है वह झसीमित नहीं है। फल मोगने मे वह परतत्र है। परमात्मा स्वभाव से ही न्याय करता है, वह श्रन्याय कभी नहीं करता। बिना प्रवार्थ किये वह कुछ नही देना। दयानन्द ने स्पष्ट कहा है कि केवल प्रार्थना करने से कुछ नहीं मिल सकता। प्रार्थना के साथ पुरुषार्थ प्रावश्यक है। सत्यार्थ-प्रकाश में लिखते हैं -- भ्रपने पुरुषार्य के उपरान्त प्रार्थना करनी चाहिए। जो परमेष्ट्रार के भरोसे भालसी होकर बैठे रहते हैं, वे महामूर्व हैं। क्योंकि जो परमेश्वर की माजा है, उसको तोडकर सुख कभी नहीं प्राप्त

मुक्ति, उसका स्वरूप धौर उसके प्राप्ति के साधन---

ऋषि दयानंद ने इस विषय पर सत्यार्थप्रकाश और ऋ॰ मा॰ मूमिका में बिस्तृत रूप से विचार प्रस्तुत किया है। उन्होंने यह प्रतिपादन किया है कि जीव स्वभावत पविद्य है, परन्तु ससार में आकर सज्ञान् एव प्रविद्या में फमकर बन्धन में पड बाता है। 'बन्ध' एव 'मोक्ष' का स्व-रूप बताते हुए कहते हैं -

'बन्ध-सनिमित्तक प्रयति प्रविद्या निमित्त से है। जो जो पापकर्म ईश्वर मिन्नोपामना प्रजानादि सब दुल फल करने वाले हैं, इमीलिए यह बन्धन है, कि जिसकी इच्छा नहीं भीर भोगना पडता है।

मुक्ति-- ''ग्रथति सब दुखी से खुटकर बचन रहित सर्वथ्यापक **ए**वर भौर उसकी सुब्टि में स्वेच्छा से विचरता, नियतं समय पर्यन्त मुक्ति का मानन्द भोगकर पून ससार में बाना।"

मक्ति के साधन - ईश्वरोपासना मर्थान् योगाम्यास धर्मानुष्ठान, बह्मचर्य से विद्या प्राप्ति, प्राप्त विद्वानो का सग, सत्य विद्या, सुविचार भौर पुरुषार्थ है।

'बार्योद्देश्यरत्नमाला' में भी यही व्याख्यात है।

ऋषि दयानद के समय मक्ति धौर उसकी प्राप्ति के सम्बन्ध में बढाही भ्रम फैलाबा। मुक्ति का धर्य कुछ लोगों के मतानुसार जीव का बहा हो जाना तथा परमात्मा से मिल जाना भर्यान् उसका 'लय' हो जाना वा। उसकी प्राप्ति का साधन केवल रामकुडल का नाम अपना तवा गगा भादि नदियों में स्नानादि माना जाता रहा। धर्कमण्यता धौर मुक्ति (भक्ति) दोनों कासम्बन्ध था। इन विचारघाराओं के प्रवर्तक कोई सामान्य जन नहीं थे। बल्कि ग्रपने युग के महान् दार्शनिक विद्वान् बाचार्य शकर, रामानुज, माध्व, निम्बार्क एव बल्लम थे। ऋषि दयानन्द ने इस प्रवाह को उलट दिया। कर्मण्यता को मोक्ष से जोड-कर उसे यथार्थवादी बनाया। यह भी सत्य है कि बाज भी मुक्ति की गलत परिभाषा से लोग विषटे है, किन्तु म्वामी जी की विचारधारा का भी प्रभाव कम नहीं पडा है। दया-नन्द ने साल्य दर्शन के बनुमार दुखीं से खटने का उपाय वर्तना ही पुरुषार्य बताया और इसी का फल मक्ति है, ऐसा प्रतिवादन किया । दु स तीन प्रकार के हैं।

(क) भाष्यात्मिक -- वर्यात् श्वरीर सम्बन्धी पीडा जैसे ज्वरादि।

(स, ग्राधिभौतिक-दूसरे प्राशियों से दु खिस होना । जैसे सर्पादि तथा चौर डाकुमो से प्रताहित होना ।

(ग) माचिदैविक- प्राकृतिक षटनांभी से जैसे मूकम्प, बाढ, सूखा भोलों की बुब्टि, साइक्लोनादि।"

स्वामी जो ने दुलों का क्लासि-फिकेशन (वर्गीकर्एा) किया है। क्रम स॰ (क) भीर (ल) के द्वारा जो दुय मिलते है, उनकी रोकवाम करना, मानव के वश मे है। क्रम स॰ (ग) की रोकथाम हमारे हाथ में नही है। जो कि श्राज का विज्ञान भी इन्हें रोक्षाम करने का प्रयास तो करता है, फिर भी ये हनारे वश में नही रहते।

मोक्ष से पूनरावर्तन---

स्वामी दयानन्द मुक्ति को धनन्त नहीं मानते । उनका यह सिद्धान्त है कि मक्ति में सूख भोगने के पश्चानुजीव पून समार में लीटता है, यह प्रतिपादन बिल्कुल नवीन सा लगता है। ऋषि दयानन्द का मक्ति विषयक यह सिद्धान्त एक क्रांतिकारी विचार है। भारतीय चिन्तको को यह सर्वमान्य मान्यता रही है कि मोक्त के बाद जीव पुन शरीर धारए। नहीं करता है। भ्रपनी इस भारता को वे छान्दोग्योपनिषद् बहा सूत्र, एव गीता 10 के प्रमाणों से पुष्ट करते

दयानन्द धपने सिद्धान्त के प्रति-पादन में ऋग्वेद" के मत्रो को, सांस्य" को सूत्रों के प्रस्तृत करते हैं। युक्ति भीर तर्कसे भी अपने मत की पुष्टि करते हैं। वे निम्न तर्क प्रस्तुत करते

१ जीव के साधन परिमित हैं, वत उनका फल धनन्त केंसे हो सकता है।

२ यदिमुक्त जीव मोक्ष से पून न नौटें तो एक दिन ऐसा द्यायेगा कि ससार से जीव का उच्छेद हो जावेगा।

३ दुल के बिनासुल का ग्रनु-भव नहीं हो सकता। मुक्ति का बाकवंशायही है कि जीव दुल के बाद सुप और सुख के बाद दु ख की धनुभूनि प्राप्त करे।

४ परमात्मा न्यायकारी है, यत होने वाले कर्मों का फल धनन्त नहीं हो सकता । स्वामी जी ने पूनरा-वृत्ति के सिद्धान्त का प्रतिपादन कर इस विचारको यथार्थ जीवन से जोडा है।

दर्शनों का समन्वय--

भारतीय एव पाइचात्य दार्श-निकों का यह मत रहा है कि भारतीय षड्दर्शनों में परस्पर विरोध है। स्वा॰ दयानन्द प्रथम दार्शनिक हैं, जिन्होने युक्ति, तर्क एव शास्त्रों के प्रमासा से सिद्ध किया है कि षड्-दर्शनों में विरोध नही है। दार्शनिको की यह धपनी कल्पना है, मनघडन्त सिद्धान्त है।

स्वामी जी ने षडदशतो में स्रवि रोघ कैसे माना है सो उन्ही के शब्दों में देरहाह।

जसे एक विचा में अनेक विचाओं के बबयों का एक दूबने से मिन प्रतिपादन होता है, वैसे ही पुष्टि विचा के मिना भिना छ अवयवों का छ शास्त्रों में प्रतिपादन करने में इनमें कुछ भी चिरोच नहीं है। "इस विचय पर सज्यन के नृतीय एव अध्यम समन्ये में विद्तृत क्य से विके-चन किया गया है। ऋषि वयानन्य का यह प्रतिपादन बहुत ही जम-का यह प्रतिपादन बहुत ही जम-कारिक है।

इस सम्बन्ध से वर्तमान समय के प्रमिद्ध दार्शनिक स्व॰ डा॰ राखा-इन्छान के मत का भी धवन किन पाटक कर। में इसे उद्धत करने का लोग सवरण नहीं कर सकता। वे जिससे हैं म

The six systems agree on a certain essentials. The acceptance of the Veda implies that all the systems have drawn from a common reservoir of thought All the systems protest against the acepticism of the Buddhists and erect a standard of objective reality and truth as opposed to an eternal unstable flux. All the systems accepts the view of the great world rhythm vast periods of creation maintenance and dissolution follows each other in endless succession 14

ईव्वर, बीव एव प्रकृति---

ईश्वर—सभी मास्तिक दार्थ-तिको ने ईश्वर की सत्ता में विश्वास प्रकट किया है। मगर मतभेव है तो उसके गुरा-कर्म एव स्वभाव के प्रति-पादन में। ईश्वर के स्वरूप का प्रति-पादन जीवन से सीमा सम्बन्ध रखता है। कसे स्विये—

नास्तिकता— जो लोग ईस्वर को सर्वध्यापक मानते हुए भी किसी एक विशेष स्थान में निवास मानते हैं । जैसे वेकुष्ठ जोक, शोसमान क्लाश पर्यंत, सातवी प्रास्त्रमान प्रादि तथा ईस्वर धपने प्रस्तो का प्रपराध क्षमा करता है धर्म की स्थापना के लिए मुनुष्य रूप में जम्म लेता है इस्यादि, वे सिद्धान्त मनुष्य को करते से नहा रोक सकते । क्योंकि बहु यह समझता है कि परमात्मा तो एक विशेष स्थान पर निवास करता है, मेर प्रपराधों को नहीं वेख रहा है, भर प्रपराधों को नहीं वेख रहा है । प्रमर में करता हू भी तो भी उमसी स्तृति, प्राधना करने ए- वह मुझे क्षमा कर देगा। यह भावना प्रपराची को बढावा देगो है। जब जब ध्रवम बढता है, ईरवर ध्रवनार प्रहुण करेगा धीर चम की स्वापना करेगा धम की स्वापना और धम्में का उच्छेदन मानव वश की बात नहीं है। यह भावना ध्रकमण्यता फंलाती है। इसे ही नास्तिकवाद कहते हैं।

ग्रास्तिकता— ग्रास्तिकवाद का जोवन की यवार्षता से गहुरा सवस्य है। एक ग्रीतिकवादी (मनीश्वरवादी) की जोवन पवति क्षीर एक अध्या-स्मवादी (ईश्वरवादी) की जीवन-पद्धति में बहुत वडा अत्तर है। ग्रीतिकवादी का सक्य मानव्य प्राप्त करना है। चाहे वह किसी भी डग से मिले यही उनके जीवन का गोटी है।

"ऋण करना पृत पिबेत् — अग-नालिगनाअन्य सुख्येव पुमर्वता।ं ओ यह मानते हैं कि मैं केवल झरोर ह। मेरा वह प्रथम और धलिस धरीर है। वह सरीर के धितरिक्त कुछ और सोच ही नही सकता। समाजधारिक्यों ने इस भावना की नष्टकरने के लिए विविध उपाय सुम्नार्थ हैं। परन्तु चतुर चालाक सनुस्य इन उपायों से वचने का भी रास्ता निकाल ही लेता है।

श्रव बाइये श्रष्यात्मवादियों के जीवन पदिति का निरीक्षण कर। ईस्वरवादी का सिद्धान्त है—

"मित्रस्याह चक्षुषा सर्वाणि मूतानि समीक्ष —मैं सब प्राणिको को मित्र का दिन्ट से देखू। "सर्वे-वेदा यत्पदमामनन्ति तपासि सर्वाणि च यहदन्ति यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्त पद सप्रहेश ब्रवीमि '---श्रवीत जिस पद का सभी वेद वर्तान करते हैं. जिसके लिए सब तप आदि वत किये जाते हैं, जिसकी इच्छा से ही ब्रह्मचारी, ब्रह्मचर्य का पालन करता है, वही ईश्वर है। सभी भूत-प्राशियों को मित्र की द्रष्टि से देखने वाला भ्रास्तिक किसी से घुणा द्वा नहीं करेगा-ईश्वर प्राप्ति के लिए वह ब्रह्मचय का पालन करेगा। जिसका भादश ईश्वर प्राप्ति नहीं है. वह ब्रह्मचर्य का भारण क्यो करेगा। उसके लिए तो जलनाओं का मालि-गन ही परम पूरुवार्थ है।

EHE

पाब टिप्पणिया--

- १ यजुर्वेद ४०।१ २ स्वमतन्यामतन्य प्रकास
- (ले॰ स्वामी दयानन्द) ३ सत्यार्वप्रकाश सप्तम सम्ब
- ४ स्वमतस्यामतस्य प्रकास मन्तस्य स॰ ११, १२, १३

दिल्ली त्राय प्रतिनिधि समा के उपदेशकों के कार्यक्रम महात्मा रामकिशोर वैद्य के कार्यक्रम

१४ से १६ धक्तूबर ८५ रामायण की कथा आनन्द निकेतन दिल्ली २० से २७ धक्तूबर ८५ यज्ञ-प्रवचन प्रात वौक्सानचन्द्र जी

त्त से ३१ प्रबन्तवर द्ध् मार्सकमाज प्रनाप नगर दिल्ली १ से द नवस्त्र द्ध् भार्यसमाज प्रनाप नगर दिल्ली ११ से १७ नवस्त्र द्ध् भार्यसमाज ध्रमर कालोगी दिल्ली ११ से १७ नवस्त्र द्ध्य प्रजानक्ष्म कालोगार वाग दिल्ली ११ से २७ नवस्त्र द्ध्य प्रजानक्षम भी राषस्थाम गुला के निवास स्वान एक्स २९८१ रवृबरपुरा त ० २ दिल्ली

श्राचार्य हरिदेव सिद्धान्त मृष्या तर्क केसरी के कार्यक्रम

२४, २६, २७ बक्तूबर ८५ सोनी त (हरियाणा) २८ व २६ धक्तूबर ८५ प्रवचन, रात्रि पहित्रस विहार दिल्ली १, २ ३ नवस्वर ८५ मार्थसमाज जवाहर नगर पक्षवल ४ से १० नवस्वर ८५ भार्यसमाज वसई दारापुर दिल्ली

दोलकवादक श्री ज्योति प्रसाद श्रार्य के कार्यक्रम १४ व १४ मन्तुवर ८५ विद्यान राजीरी गाईन

१९७ (२ जप्पुचर ६५ वर सस्वान राजारी गाईन १९,१७ १६ कस्तुबर ६५ म्राम प्रवार प्रशान्त बिहार, दिल्ली १६ वे ३ नवस्वर ६५ मार्थसमाज प्रदाव नगर दिल्ली ४ से १० नवस्वर ६५ मार्यसमाज वसई बारा पुर दिल्ली

पं॰ सत्यदेव स्नातक रेडियो दूरदर्शन कलाकार के कार्यक्रम

१९ त १४ जनत्वर ८५ विद स्थान राजीरी गार्डन १६, ७, १८ मनत्वर ८५ मान प्रचार प्रधान्त विद्वार दिल्ली १८ दे, २७ मनत्वर ८५ वैदिक प्रचार समिति सोनीपत १४, २६, २७ मनत्वर ८५ मार्यसमा मात्रापनगर दिल्ली ४ से १० नवस्य ८ धार्यसमाज वसई दारा पुर दिल्ली १४, २४, २६ नवस्य ८६ भार्यसमाज नाणियाबाद (४० म०)

पं० वेदञ्यास भजनोपदेशक के कार्यक्रम

१४ से १६ धक्तुबर ८४ पायवसाथ साकेत दिल्ली १४,२४,२६ धक्तुबर ८४ वैदिक प्रचार समिति सोनीपत १ ते १२ धक्तुबर ८४ पायेसमाथ साल ताजपत नगर १ से १० नवम्बर ८४ साबसमाथ साल मालोगी दिल्ली ११ से १७ वक्चवर ८४ बाबसमाथ सालोगी मार बालोगी

पं॰ चुन्नीलाल भजनोपदेशक के कार्यक्रम

१४ से २३ जनतूबर ८४ २४ से २७ जनतूबर ८४ २६ व २६ जनतूबर ८४ १,२,३ नवस्बर ८४

श्रवकाश रहेगा भार्यसमाज कोसी कला (मथुरा) आर्यसमाज विनय नगर दिल्ली भार्यसमाज जवाहर नगर पलवल (हरियारगा)

४ मार्थोद्दयरत्नमाला व्याख्यात रत्न स॰ २५।३० ६ सास्यदर्शन—"बच विविध दु सात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्तपुरुषार्थ ।"

स०१ सू०१ (जाध्यकार स्वाः ब्रह्ममुनि परि-वाजक, प्रकाशक—वार्यसाः स० विः सजमेर)

 स०प्र० समु० ६ पृष्ठ ३८० (प्र० रामलाल कपूर ट्रस्ट)
 झान्दोम्यो०—न च पुनरा-कर्तन्ते दा१४।१

 वेदान्तवर्धन, सारीरिक सूत्र 'सनावृत्ति' सन्दादनावृत्ति सन्दात्' (४४४१२२)

१०. गीता 'बद् गत्या न निय-र्तन्ते तकाम परम मम ।" ११।१

- ११ ऋ॰ म॰ १सू० २४ म॰ १-२ १२ सास्य दर्शन "इदानीमिव
- सर्वत्र नारायतीच्छेद । "१११६६ १३ ' ऋ० दयानन्दप्र तिपादिस वैदिकदर्यानम्" सम्पादिका एव प्रतु-नादिका—प० प्रसा देवी प्राचाया, पा० कम्मा महाविद्यालय, वारत्यासी पृ० स० २३।२० । इस ग्रन्थ के मूल लेखक काखी पवित समाध्यक्ष राष्ट्र-पति सम्पानित स० म० दा० गोपास चारनी दश्यन केष्ठपरी (प्रवर स्व०) जी
- Philosophy of Dayanand By Dr S. Prakash D Sc Page 93-94.



(स्व > श्री केलबचन्द्र बुग्गा)

ग्राप का जन्म प्रजाब प्रात के जालवा जिला में हुआ। इनके पू० पिता प॰ दौलतराम जी यु॰ पी॰ शिक्षा विभाग में शिक्षक थे अत उनका निवास स्थान मेरठ ग्रयका रुडकी ही रहा। इनकी लगभग सारी शिका मेरठ में हुई। इतिहास में एम ए करने के पश्चात इन्होंने L L B को परीक्षापास की। बकालत का धम्यास करने के लिए इटकी गए। परतु इस व्यवसाय की मलिनता को इनका न्यायप्रिय हृदय सहन न कर सका। दस महीन के पहचात ही इनका मन उचाट हो

गया । इन्होंने प्रपने पिता से अनुरोध किया कि वे उन्हें अपने व्यवसाय मे ही लगाए। इनके पिताजी ने इन्हें शिक्षाप्रशिक्षण प्राप्तकरने के लिए टिमरनी (JP) में भेज दिया। हैक्योग से इनके वहा पहचते ही

मानव जानि का प्रयेक सदस्य ध्रपने कमा के साधार पर ही वास्थ

बनना चाहिए। जन्म के स्राधार पर

वण श्यवस्थाको स्वीकार करके

समाज ने अपने आप को अनेक

प्रकार के सकटो मे चर लिया है।

क्राज मानव समाज भिन्न भिन्न

समनायो अबन कर मानव मात्र का

ही ग्रहित कर रहा है। अपने

(विज्ञापन परिशिष्ट)

स्व० श्री केशवचन्द्र बग्गा के प्रति एक श्रद्धांजलि

जन्म--१८ सितम्बर १६११

मृत्यु १६ सितम्बर १६८४

बहा का विद्यालय ब द हो गया परत् किमी प्रकार में यह व्यव्दवा के एक स्थानीय स्कूल में शिक्षक पद की पा गए और वही रहने नमे। यह एक भादर्श शिक्षक थे शिक्षण काय से **श**त्यत प्रमुखा । इतिहास राजनीति के अतिरिक्त अग्रजी और गणित (उच्च गणित) पर पूर्ण अधिकार था। छात्र इनसे धत्यन प्रम कन्ते ये धीर सहशिक्षक इनके ज्ञान से लाभ उठाते थे। समय पालन तथा क्तब्यपरायग्ता इनके विशेष गुरा थे।

हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक श्री हरि शकर परसाई इनके शिष्य रहे उन्होंने हिंदी की पविका में प्रपने मन्भव लिखते हुए इनकी बनी प्रगसा की है। वे लिखते हैं-

हमे एक शिक्षक पढाते वे कशव चढ्रवग्गा। उनके कक्षा मे झाते हो हम प्रसन्तना से नाच उन्ते वे भीर सोचा करते थे कि हम भी ऐसे ही शियक बनगे। उनके पढाने का तरीका हमें ग्रत्यन रुजिकर लगता

इसके अनिरिक्त फिल्मा ग्रक्षिनेना

श्रशोक कुमार और किशोर कुमार भी इनके शिष्य रहे हैं।

विवाह के पश्चान यह देल्ली मे आपाए। यहाक्छ दिन एक Bank में काय किया परतु मन नहीं रमा बत इन्होने दिल्ली के सरक री शिक्षक प्रशिक्षण विद्यारय मे शिक्षा प्रशिक्षण प्राप्त किया भीर देन्त्री के सप्रद्धि स्वत से श्री महावीर जन हायर सकतो स्कूल मे शिक्षक बन गए वहा पर भी इन्होने ग्रपनी कत यपर यसता तथा निब्द्धल स्वभावस पर्याप्याप्याप्याप्या किया छात्रों के प्रनिट का व्यवहार क्लोरप न्तुप्रसमय नोना था यनी कारण है कि सेबा-निवर्त्तिके पदचात भी वे इनके दशना को आपते रहते थे । न केवन छात्र वरन शिक्षक भी इनके जान में लाभ उठाते वे तथा भपनी समायाश्रीका हल क वाते। इनका प्रग्रजी का जान श्रद्धहोने के कारण नथा गरिएन पर ग्रधिकार होने के कारण इन विषयों के लेखक भी इनकी सहायना लेते थे।

इनके चरित्र में सत्यता और सिद्धात तीनो कृत कृत कर भग हथा WT :

प्राय कहा करते। थे मैं मेरठ श्चार्यसमाज में नियम-पुवक जाया करताथा। वही पर मुर्भे ग्रायसमाज के प्रति विश्वास उपन हआ। ग्रायसमाज के सिद्धातों के प्रति इनकी भ्रास्था थी ग्रत कोई ग्रध-विश्वास या रूढिप्रियमा इनके स मने नही ठहर सकती थी जाति गति नथा जन-पूजा के घोर विरोधी थे चाहे कोई भी ग्रवसर हो व किसी परग्परागत अधिव नास को नोड देते थे हा ईश्वर भिनत के भक्तों से काफी प्रमुखा।

यह सच्चे साहित्य प्रमी थे। मग्रजी नथा उद्स हित्य के ऊपर तो इतना प्रधिकार था कि आप उनके पास घटो बड़े रहिए वे आपको ब्रयजो को नथा न की कविनाएँ रहते। इनको ईइवर ने विलक्षण सनाते प्रतिभात्यास्मरगाशकित दाथी। देश विदेश के राजननिक इनिहाग के अनिरिक्त यह भ्रायसमाज के इति हास तथा इसकी गतिविधियो की परी चानकारी रखते थे।

इनके चरित्र में कुछ ऐसे गुरगा थे। जासब को प्रशाबित करते रहते थे इनकासबसे बनागुण था प्रनु शानन प्रियना य प्रभाजो केवल बाहर हा नहीं घर में भी चनता रहत

गटा कारग है कि मेवा निवृत्ति के पश्चात भ इनके स शिक्षक और छात्र इनके पास आरते रन्ते थे भौर श्रद्धा से शीश भक ते थे।

> प्रकाशवती शास्त्री जन मनिर नई दिल्ली

जातपात-मानवता का शत्र

डा० ग्रानन्द सूमन

हाया गाने ही पर मे कुल्हानी मारने वाली बात को साथक करना ही उसका ध्येय बन गया लगना है। प्रशास्त्र जातिवाद ने सम्प्रमा मानव नमाज व विदव के प्रति एक विकट समस्या उत्पन्न कर दी है। बाबता विभिन्न पथो के अनुरायी भी धपने को जाति के रूप मे मानने उत्ते हैं। नहीं किसी प्रपत्र (फार्म) मादि में जाति का कोब्ठक यता है, वहा तुरन्त हिन्दू, मुस्लिम ईमाई बंग बोद्ध सिन महत्व प्रन्यान्य शब्दो का प्रयोग करते हैं। वास्तव मे यह 'क्रोच्ठक होना ही नहीं चाहिए। वेदों

भाषार पर है जन्म के भाषार पर नही। इस से भी आगे बढकर वेद व्याख्यानुसार- बाह्मणोऽस्य मन-मासीद बाह राजन्य कृत । ऊरू नदस्य यद्वेष्य पदम्या ७ शही जा-यत ।। धर्मात मख बाह्यए है जो ज्ञान पूर्ण है। भुजाए क्षत्रिय हैं जो रक्षा करैती हैं। उदर वैश्य है जो जीवन सामग्री वितरण करना है। पैर शुद्र है जो जीवन को गति प्रदान करते हैं सेवा करते हैं। यदि इस मत्र के प्राचार पर हम देख तो एक ही व्यक्ति चारो वर्गों में बाता है प्रत्येक व्यक्तिका चिन्तन मनन मस्तिष्क से, रक्ता-कार्य हाथो से, शरीर को एक-वितस्श गावि उद्देश में वृत्त-व्यवस्था का व्यक्त कर्न के हो, सेवा कार्य पेडी में होता है। किली बाह्य गावाद जहां वेदय का बहसत

दो हजार वय की गुलामी ने हमे चिन्तन शुन्य बना दिया। हम ग्राष संस्कृतिव सत्य धम का मार्गत्याग कर व्यक्तिवादी और सम्प्रदायवादी विवार भाग के रग मे रग गये। तथ।कथित शासको ने हम पर मन चाहे ग्रत्याचार किये तथा हमे व हमारी विश्ववारा संस्कृति को उजा डने के लिए हमारी शिक्षा पद्धति का स्वरूप विपरीन दिशा में मोड दिया। इसका भी बना प्रभाव नमारी जीवन पद्धति पर पडा। दूसरा हमारी स्व नन्त्रता के परचान जो नैता हमे प्राप्त हुए व भी आर्थ संस्कृति से परिचित न ये उन्होंने जिस प्रदेश मे ब्राह्मरण का पलडा भारी देखा बहा देश्वावहावैश्यवाद जहा गुद्रो का दना वहा गुद्रवाद को बरावा दिया।

भारम्भ मे हम बाह्यण क्षत्रिय ब्रादि के ब्राचार पर बटे, फिर घीरे-बोरे -प वियो सम्मानाथ दिये उपनामों को भी जानि माना जाने नग जैसे दोश्निन चनुवदी त्रिपानी तिवारी रायमाहब रायजादा. ठाकूर पटान लान मादि मादि। इसा प्रकार गोत्र उपनाम भी जाति बनते गये यहा तक कि कबीरपन्थी नानक के चेले मोहम्मद के चेले ग्रनी के चेल (शिया) सभी अपने को जाति बना कर प्रते हैं। मठ घोशो जैसः वातावररा वन गरा मानवता व वम दोनो नी विकृत हो गये विषाक्त हो गये। जानपौट तोटना बडा ग्रावयरक है। इस काय को प्रत्येक वृद्धिजीवी मिलकर करे। सबप्रथम हम मानव है तत्पश्चात् कर्म के आधार पर हमे जो भी वर्ण प्राप्त होना है वह हमारा वर्ध है। श्रत

किक देश अपने विदेश

समाचार सन्देश

साप्ताहिक सत्संगों का विवरण रविवार २० श्रक्तुबर १६८४

ग्रन्था मगल प्रताप नगर -पo त्तलसीराम ग्रायॉपदेशक प्रशीक नगर-स्वामी यज्ञानन्द सरस्वती, ग्रमर कालोनी -डा॰ रचूनन्दनसिह, धानन्द विहार एल ब्लाक-महात्मा देवेशभिक्ष, इन्द्रपुरी श्रीमती प्रकाश-वती शास्त्री किंगज्ये कम्प-प॰ धमंबीर शास्त्रो विद्यावाचस्पति, गुजरावाला टाउन पार्ट-२-भीष्म-वत शास्त्री, ग्रटर कलाश न-१— हा० सु दयाल भूटानी गुडमण्डी-स्वामी प्रज्ञानन्द मग्स्वती गोविन्द-पुर-प॰ मुनिदेव भजनोपदेशक, चनामण्डी पहाडगज-प॰ कामेश्वर शास्त्री, जनकपूरी बी-२-प॰ देव-राज वदिक मिश्नरी, जगपुरा विस्तार—डा॰ कृष्णदत्त शर्मा, टैगोर गार्डन-प॰ स्रशोक कुमार शास्त्री, तिमारपुर—ग्रायंवीर रेश-जीतमिह रागा, तिलक नगर-प॰ ब्रह्मप्रकाश वागीश, देवनगर—डा॰ सुभाषचद शास्त्री, दरिया गज-ण• ग्रस्तिलेश व्याकरणाचार्य, श्री निवासपुरी-प॰ राष्ट्रयाम शर्मा, नारायण विहार- व॰ रामवीर

शास्त्री, प्रीतमपरा-प॰ सीमदेव शास्त्रो, प्रशात विहास- क॰ मनदेव शास्त्री, पञाबी बाग-प रमेशनन्द्र वेदाचार्य, बसई दारा पुर-श्री भ्रमी-चन्द मतवाला, भोगल-डा॰ बेद-प्रकाश महेरवरी, मौडलवस्ती-प•, मुरारीलाल बेचन महावीर नगर- ब्रह्मप्रकाश ज्ञास्त्री, रासा प्रताप बाग-श्री ग्रमरनाथ कान्त. रघवरपरा-प॰ जय मगवान मण्डली. राजीरी गार्डन-प॰ हरिशवन्द्र धार्योपदेशक, रमेश नगर- भी नेत्र-पाल ग्रार्थ लक्ष्मीबाई नगर ई-१२०८-प० वेदप्रकाश शास्त्री, सोहनगज-महात्मा मुनिशकर वान-पस्थी, शादी खामपुर-प॰ बलवीर सिंह शास्त्री शालीमार बाग-स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती. परिवाजक-शार्य नगर— मा० मोहन लाल गाँधी, मोतीबाग - ब्रह्मचारी वेदप्रकाश सार्थ।

व्यवस्थापक स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती विधिष्ठाता वेदप्रचार विभाग दिल्ली समा

श्रायसमाज पंसा राड "सी ब्लाक" जनक पुरा. नई दिल्ली-४८ में वेद प्रचार सप्ताह

भार्य समाज मन्दिर के प्रागण मे उपस्थित जनसमूह के सम्मूख भार्य विद्वानी ने अपने भोजस्वी विचार प्रकट करते हुए कहा-

धाज देश की स्थिति गम्भीर है-भालगाववाद के नारे है। मनुष्य-मनुष्य का प्रागाधानक वन रहा है ऐसे समय में हमें भी सतक रहकर धपने कर्नव्य कम का पालन करते हुए राष्ट्रहित मे बागे बढना होगा। प्राज पजाब, जहापर कभी गुरु गोविन्द सिह जी तथा स्वामी दयानन्द श्रद्धा-नन्द, महात्मा हसराज बीर लेख राम ने प्रम और सीहार्द का वाता-बरण बनाया था भीर जगह जगह भार्य स्कूलो, डी॰ ए०वी० स्कूलो~ कालेजो की नीव रखी थी- उसका स्वरूप विकृत हो रहा है। ऐसे समय मे हमे एक जुट होकर महानऋषियो की प्ररेशा को लेकर अभी बढना है। विघटनकारी तत्त्वो को समाप्त करने के लिए योगिराज श्री कृष्ण और मर्यादा पुरुषोत्तम राम के जीवन से प्ररेशा प्राप्त कर जो हमा**रे** भादर्भ महान् पुरुष थे । उन्होने ही। ए० वी॰ शिक्षण सस्यामो को प्रगति का मृल्याकन भी उपस्थित जनसमूह को कराया।

इस समारोह के अन्य प्रमुख वक्ता थे - स्वामा मुनाश्वरानद जी. श्री दरबारी लाल जी,, हा॰ राषा-कृष्ण ठाकुर, प्रधान, धार्मिक एव सामाजिक महासघ जनकपुरी, श्री शिवकुमार सास्त्री (विकास पुरी), भीर विराट सुपुत्र श्री शिवकुमार जी यह कार्य बडे उत्साह एवं हवं भरे वातावरए मे ७ सितम्बर की सम्पन्न हुमा।

> (वैद्य महेन्द्रपाल सिंह धार्य) मत्री

११८४ ई० के वर्ष में दयानन्द श्रनुसंघान पीठ पंजाब विश्वविधालय से पी०एच०डी० उपाधि प्राप्त विद्वान

डा० वेदपाल वर्णी मापने शतपम बाह्यए तथा महाँव दयानन्द के यजुर्वेद भाष्य का तुलनात्मक धष्ययन प्रस्तुत कर

१६८५ मे पी॰ एच० डी० की उपाँच प्राप्त की है। विद्वान् शोषकर्ताने सस्कृत में प्रस्तुत किये गये भपने शीध प्रबन्ध में श्वरापम की वेदार्थ प्रक्रिया का विस्तार पूर्वक कहापीह कर महर्षि भाष्य से उसका समायोजन किया है। इसी प्रसग में वैदिक यज्ञी का स्वरूप, यजुर्वेद का प्रतिपाश द्यादि नाना विषयो की गम्भीर विवे-चना क्रोधकर्ता ने की है। डा॰ वर्णी ने भावी शोधकार्य के रूप मे शतपथ बाह्मए। को विस्तृत ऐतिहा-

सिक समीक्षा को ही चुना है। डा॰ राजपाल सिह

भारतीय वडदर्शन का झार्य-समाज की देन पर हा॰ राजपाल सिंह को इसी वर्ष उपाधि प्रदान की गई है। डा॰ सिंह ने धार्यसमाज के दार्शनिक विद्वानी के कृतित्व का ऐतिहासिक विश्लेषण प्रस्तुत किया 81

डा० धर्मदेव शर्मा ग्रापका शोध का विषय स्वामी दयानम्द रचित सस्कारविधि का गुह्मसूत्रो से तुलनात्मक अध्ययन बा। इस विषय के सदमं में सोध-कर्ताने विभिन्न ग्रह्मसत्री का अध्ययन कर सस्कारविधि प्रोक्त सस्कारों के विधि विधान से उनकी

तलनात्मक समीक्षा प्रस्तत की है। प्रजाब विश्वविद्यालय ने हार ब्रोमपाल शास्त्रों की प्रेमचन्त्र के परवर्ती हिन्दी उपन्यासकारो पर मार्यसमाज को विचारधारा का प्रमाव शीर्षक शोध काय पर १६८४ ईं॰ मे पी॰ एच॰ ही॰ उपाधि प्रधान की है।

दयानन्द अनुसञ्चान पीठ के भ्रष्यक्ष हा० भवानीलाल भारतीय के निर्देशन में सम्पन्न उक्त शोध कार्यों के अति क्त सम्प्रति स्वामी दयानम्द के यजुर्वेद भाष्य मे देवता तत्त्व, स्वामी दयानन्द की मस्कृत व्याकरण शास्त्र को देन, पुनर्जा-गरए। प्रान्दोलनो को दार्शनिक पृष्ठभूमि सादि विषयो पर भी शोक कार्य किये जा रहे हैं।

वेदपाल कार्यालय सचिव दयानन्द धनुसवान पीठ, चडीगढ

कन्यात्रों को वेदाचार्य बनाने के लिए कन्या वेदगुरुकुलम बरेली में कन्यात्रों को प्रविष्ट कराइए कत्याभी को धारम्भ से बेद

पढाया जायेगा बनारस सस्कृत यूनि-वसिटी की प्रथमा, मध्यमा बास्त्री, वेदाचार्य परीक्षाए दिनाई जायगी। इन परीक्षाओं के द्वारा कन्याए हाई-स्कूल इन्टर बी ए एम ए परीक्षाएँ भी कर सकती हैं।

शाजकल के कल्यागुरकूली मे लडिकयो को साहित्याचार्य व्याकरण चार्य कराया जाता है। एक भी कन्या गुरुकूल ऐमा नही जहा कन्याम्रो को वेदाचार्य कराया जाता हो। धाश्रम तथा भोजन व्यवस्था गुरुकुल मे रहेगी। स्वतन्त्र स्थानीय कन्याएँ भी पढने मा सकती हैं। कन्या की भाय कम से कम दस बारह वध भीर पाचनी श्रेणो उत्तीर्ण हो। प्रथमा, मध्यमा, सास्त्री, वेदाचार्य कक्षाभी में भी प्रवेष हो सकता है यदि किसी ने पूर्व परीक्षाएँ पास की हुई हो।

निवेदक बेदाचार्य, श्राचार्यं विषयश्रवा व्यास एम ए. (सचावक)

तीन सौ व्यक्तियों ने यज्ञोपवीत अहरा किये।

मार्यसमाज डालटेन गज (पलाम्) बिहार में स्वामी श्रेयानव वैदिक यति की अध्यक्षता में वेद प्रचार का कार्य सम्पन्त हुआ। यजुर्वेदीय यज्ञ में हजारा लोगी ने माहति प्रदान की। इस भवसर पर तीन सी (लोगो ने बज्ञोपबीत ग्रहरा किये।

> निवेदक वैद्य महेन्द्र

वेदाचार्या सावित्री देवी शर्मा एम ए

वेदाचार्या श्रीमती देवी शास्त्री एम ए-(मुस्याषिष्ठात्री) (धाचार्या) वेदमन्दिर १०३ बाजार मोतीलाल वरेली (उ० प्र०)

बर्डे बढ़ों का सम्मान करो !

जिस राष्ट्र देश और नुजानि के व्यक्ति अपने पूर्वजो, बहो का श्रादर मान करते हैं उनके महान श्रीर श्रोद्ध कार्यों से प्रेरणा लेते हैं तथा पूरवाय र रते हैं वे सदा श्री, सम्प-न्तता ग्रीर तंभव के स्वामी होते है तथा सभी के बोच यश और कीर्ति के भी भागी होते हैं। 'अभिवादन शीनस्य िस्य बढीयसेबिन । चत्वारि आशीर्वाद मिले हैं और लोगो ने इनके तस्य वक्ते प्रायुविद्या यशोवनम । जा व्यक्ति वद्ध लोगो की सेवा करत हैं भीर प्राभवादन शील हैं उनकी स्य विद्या यश भीर बल बढते हैं।

ग्राज की समस्या भीवरा है। परिवारों के विघटन के कारण बद्ध लोगो को बह सम्मान नहीं मिलता जो उद्धेयरम्परा से मिलता ग्राया है वे कवल सुबह दूघ लाने या शाम को पार्क में टहलने तक ही रह गये है। बद्ध ोगी को धन प्रथवा सहा-अपूर्णिको अपक्षासम्मानकी स्राव-इयकता है। तारों में इस भावना की जागृत करने के तिए दिल्ली मे एक स्वय सेवी सम्था कार्यरत है-ऐज केयर इण्डिया ए ६७ साउथ एक्स-टेशन पार्ट ॥ नई दिलनी-४८

इसो सस्या के सहयोग से जाकिर हुसैन कालेज साध्य के एन एस एस के स्वय सेवको ने बी के दत्त कालोनी भीर सलीगज कालोनी मे बद्ध लागे रास्थिति का सर्वेक्ष स किया इस एन्नर्गब्दीय युवा वर्ष मे इन छालो का दाना है कि जिन बद्ध लोगों को इन्होंने सूची वनाई

कर्मकाड

(पृष्ठ ४ ग्राग)

कूकर्म बुगी नीयत ब्रे स्वय देखना, दुष्कर्म करना स्वार्थता आत्म-इनावा भीरता स्-ती नक्ताचीनी ठयर्थं क्रोध वर्मान्यता घमण्ड अयोग्य इच्छा नीभ नृष्णा बेहदा बोलना अनम्पना, व्रास्त्रभाव वरे सग मे प्रीनि स-मार्ग मे क्कावट---कहा तक कहें -- विद्याभ्यास मे प्रसा भजानता भीर दृष्कर्मों मे प्रवृत्ति उस का भादश हो जाता है जैतान कोई विशेष प्रमारका देहचारी नही। जिसमे यह वरा याँ हो वह मनुष्य, शेनान है।

इन दोशों में से बहत से एक जैसे भीर एक हो ग्रथ रखने वाले जान पडते हैं पर ऐसा नहीं है उनमे बोडा-थोडा भेद है। जैसे तृष्मा व लोभ दोनो समान दीखते हैं पर उनके भर्य मे बोडा मेद अवश्य है ऐसा ही सब जगह जान ले। ये सब ब्री ग्रादत किसी मनुष्य मे एक हो समय प्रकट नहीं होती। समय बाने पर अपने

है उनको बाछित सहायता ये छात्र ऐज केयर के माध्यम से भीर भ्रन्य सस्थान्ना क माध्यम से उपलब्ध करायगे। बपून एक महाना बाद तथा ऐस हा अन्य अन्तराल पर इस कालोनी से धाकर देखते रहेगे कि चन्हे महायत दो है गई या नही। इन छात्रों को बढ़ों का सेवा करते समय लम्बे जीवन के लिए दुशा की है।

इस सम्बन्ध मे शनिवार १२ धक्तवर को ग्रायोजित सर्वेक्षण मल्याकन समागेह मे श्री खशीक जन महानगर पार्षद ने रहा कि ळात्रो से ऐसी मावना उत्पन्न करने की खरूरत है कि वे अपने वड़ो का सरमात करे। मध्य समिमायरा मे श्रो महर्षि ने कहा कि हम ऐसी पीटी तैयार कर जो बुढो का सम्मान करे। फिर हमे ऐक केयर जैसी सस्थाकी अफरतना रहेगी। इस अवसर पर दिल्ली।वहवविद्यालय की डा॰ ऊषा बनर्जी भीर ऐजकेयर के श्री एन डी जैन ने वृद्धों की सेवाकी भावश्यकता पर प्रकाश हाला । ऐज-केयर के ग्रध्यक्ष श्रीएन डी जैन ने कहा कि युवा कोगों में ऐसी भावना जल्याल करने को आवश्यकता है कि ग्रपने बडो का सम्मान कर। समा-रोड के ग्रायोजक डा॰ घमपाल ग्राय ने क्हाकि हमने इन्युवाछात्री को इस कार्यसे इसनिए जोटा कि वे प्रयते घर में बड़ी बटो का सम्मान करनामीख।

बल को बढाती हैं। एक के प्रकाश मे दमरी दब जानी है उनके बढाव-घटाव को जानने बाता मनध्य सद गुरगोका ज्ञारक व्दरी भ्रादनों से ग्रुपनापीला छुट नेताहै। **इस नियम** से ही माध्य मूर पाना है और प्रभु के समीप होता है। इस सय-माग पर न चलकर मनध्य द ख उराता है धीर बदनाम हो जाता है।

श्रार्यसभाज शादीपुर साम-पर का वार्षिकोत्मव सम्पन्न

ग्रार्यसमाज के भवन मे १६ सितम्बर से २२ मिनम्बर तक वार्षिक उत्सव धुमधाम से सम्पन्न हुछा । इस श्ववसर पर श्री कृष्णदत्त ब्रह्मचारी श्री प्रकाश चन्द शास्त्री, श्री सुभाष-चन्द्र श्री ग्रशोक विद्यालकार श्री स्वामी योगानन्द तथा स्वामी प्रमा-नन्द जी आदि महानुभावो के द्वारा वेद प्रवचन हए।

यन्त्री, कलाराम

अभी बाकी है।

महाबीर नीर' विद्यालकार गुरुकुल कांगडी

तुमने सब कुछ दियाहमे पर मन कादान सभी बाकी है। बिगया को बहार तो देदी सीरभ दान श्रभी बाकी है।। हर झिषयारे पथ पर तुम तो जब उजियाला कर जाते हो। में सोचा करता तब मन में कुछ तम जाल प्रभी बाकी है. तुमने कृटिया के बदले मे. राजभवन के स्वप्न दिखाये। यहा धरमान धभी तो क्वारे, कितना दर्द धभी बाकी है तुम ने शासन के कारण ही, ये कानून बना हाले हैं। किन्तुहरकानून बृधा जब, मन-सस्कार श्रभी बाकी है तुमने हिन्दी के बदले मे ध्रयुजी का मान बढाया। किन्तु जन-जन की भाषा का, ग्रंभ सम्मान झभी बाकी है ' तुमने त्फानों को बाघा, नदियों को कगन पहनाये। किन्तु परीक्षा-काल है यह तो कितना काम मभी बाकी है। कितना टीस अभी नवारी है, कितने दद विधूर फिरते। हर ग्रांसु अमृत हो जाये वह वरदान ग्रमी वाकी है तुमने बहुत निर्माण कर लिये ग्रीर योजना बहुत बन' ली।

किन्तू चमन की खुशहाली का वह मधुगान अभी बाकी है तुमने मोमा की रक्षा मे, कितने पहरेदार विठाय ।

किन्तु हमारा यश हो जिससे वह स्रभियान सभी बाकी है

अपने धने ८ १०१३.प्राम्तिक कला व चमकंतर बनाइरा और 'जहें चन्द्रन की शांनी-भीनी एकंट से बददाड़ये। Ľ

面自使

एम ही एव जिरुतकाई पाउन्हर बामा की सीकरी वर करता है तथा उह प्रकृतिक काला सर्गाधत व स्वस्थ बनाता है

ामा र राठा कावला रूप बहेडा **चवल व धन्य** म~िबत अणे बन्यों से बन या गया एम **डी एक** काकार पाउटर एक ग्रामात लाभकारी प्राकृतिक देव है उसमे नेइ स्टायनिक पदार नहा है।

एस इ. एथ न्किनकई पाज्यर का ब्राज से ही नियमित्र प्रयोग की जिया।

महाणिया वी टु^न (प्रा॰) **लि॰** 8 44 भृष्डिट्ट निष्की अवर सर्दे विन्सी 110015 9 539CJ9 537987 537341

Post in N.D P S O on 18-10-85

Licensed to post without prepayment, Licence No U 139



जातपात

(पृष्ठ १ का क्षेप) नाम के साथ वर्ण लिखना श्रावश्यक नहीं हम अपने नाम के साथ यदि कुछ न भी लगाय तो झति उत्तम ।

राष्ट्रीयता को विचार बारा व गष्ट्रभा कि अनुसार हमारा नाम-करण हो तो परेशानी क्या है? श्चरब मे रहने वाला व्यक्ति यदि श्रपना नाम श्रव्दल्ला रखता है तो इसमे बुरा क्या है ? भारत में रहते बाले को अपना नाम द्याम, कृष्ण या इसी प्रकार का कोई नाम वदि उत्तम लगता है तो बूरा क्या है? हमें सम्प्रदाय के प्राचार पर नाम-करण नहीं करना चाहिए। हमें तो नामकरण अपनी राष्ट्रभाषा को दिस्टिगत रखते हए करना चाहिए। जातपात समाप्त करके ही मानव समाज वास्तव म मानवता के उत्तम व सत्य माग को स्त्राकार कर सकता है। केवल हिंदुशी में हा जातपात नही है नुसलमान ईसई व घना समुदायों में भी है। किन्तू हमें मान बता के नाते जातपान त्याग कर धपने नाम को सार्थक करना चाहिए

हम ज्ञान प्राप्त कर मानवो को ज्ञानोपदेश द तो हम बाह्य एा हैं। हम बीर्य रक्षा कर ब्रह्मचय का पालन कर बल प्राप्त कर व समाज की रक्षा कर तो हम समिय हैं। हम न्यायपूर्ण विचि से धनाजन करें व उस धन को यद्याधीय प्रत्येक में बितरित कर द तो हम बच्च हैं, हम समाज को गति प्रदान कर सना प्रदान कर व सेवाकार्य द्वारा मानव समाज की सहायता करें तो हम शूद्र हैं। मानव समाज को बेदजान के धनुसार वर्ण स्वीकार कस्ले चाहिए— यही इस युग की प्रवम धावस्वस्वता है।

वैदिक प्रवक्ताः तपोयन ग्राचमः देहरादून —२४८००८

वहराष्ट्रन —२४६००६ श्रार्य समाज मन्दिर माकृत नई दिल्ली वेदकथा

भार्यसमाज माकेन मे १४ मन्तुबर तक श्री समायत स्वास्त्र से ममुर अञ्चल हुए। न्स स्वस्तर पर प्रनेक अद्वाल नर नारियो । बढ नढ कर सात्र विचा । भाग्यसमाज मन्दिर साकेत मे निव्यात सस्त्र के साथ एक पुरक्कालय एव चमाव विकित्सा का या स्वास्त्र से साथ एक पुरक्कालय एव चमाव विकित्सा का या से स्वार है। विससे से कही लोग लामान्तित ही रहे हैं।

निवदक मन्त्री राजेशात्र द गुरामागर सक्सेना

उत्तम स्वास्थ्य के लिए गुरुकुल कांगड़ी फार्मेंसी, हरिद्वार की और्षाधयां

सेवन करें

शासा कार्यासय—६३, मसी राजा केशरनाय, बावडी बाजार, विल्ली-६ कीन 1 २६८८३८



MT . & STE 2 . बुक्ब एक प्रति ४० पैसे रविवार, ३ नवस्त्रर, १००३

सृष्टि सबन् १८७२८४६०=६ बाजीवन २०० व्यय ग्रास्वित २०४२

वयानन्वाव्य — १६१ विदेश मे ५० डालर ३० पाँड

दयानन्द निर्वाण दिवस पर

उत्कष्ट

भवने पाठको की परजोर माग

को ध्यान में रचकर साप्ताहिक बार्यमन्देश बपनी गौरवमयी पर-म्परा के धनुसार महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस (दीपावली) पर एक उल्कुष्ट लेखों से भरपूर ग्राकषक विशेषाक प्रकाशित कर रहा है। यह विशेषाक नवीन नध्यो शिक्षाप्रद एव प्ररेणाप्रद नेस्रो से सुमञ्जित सपहणीय होगा। मायस्न्देश के ग्राहक इसे नि शुल्क प्राप्त कर

यदि आप अपने घर बैठे ऋषियो म्राप्प्रवो सन्तो विद्वानो की वारगी एव सत्यानदेश पढना चाहते हैं नो बाज ही माप्ताहिक बार्यसदेश के मदस्य बन जाइये भीर विशिष्ट विशे किभी नि शुल्क प्राप्त की जिए।

> पना सम्पादक-माप्ताहिक ग्रायमन्देश, १५ हनुमान रोड नई दिल्ली 8 0 20 8

इन्दिरा-स्मति

कविवर प्रराव" शास्त्री एम॰ए॰ महोपदेशक शास्त्री सन्त रामनगर (कटरा) म्रागरा-६ (उ०प्र०)

विशेषांक की भलाकेया---

- # दश की माजादी का दीवाना राजस्थान की भील जाति का गुरु ग्रल्हड सन्त-गोविन्द गुरु महर्षि दयानन्द का ब्रनोखा शिष्य जिसने स्वतन्त्रता के लिए सेना सजायी थी। इतिहास का मामिक प्रसग
- # अग्रेज चिलौड के किले को अपने कब्जे में लने का षड्यव रच रहे थे। ऋषि दयानन्द ने इसकी रक्षा के लिए ग्रद्भत साहसिक कार्य किया। इतिहास की गुफा मे छिपा ऋषि दयानन्द का एक महान् कार्य।
- # स्वामी दयानस्द ने भ्राघ्यात्मिक जगत् मे अनोस्ती क्रान्ति की, उस क्रान्ति से मसार चमत्कृत हो सकता है। इसी कारगा वे जगत् गरु भ्रौर विश्व वन्दा हैं।
- ऋषि दयानन्द ने बृहत् भारत का स्वप्न देखाथा। उस स्वप्न का पूर्ण करने के लिए उन्होने क्या मन्त्र दिया ? श्रनेको खोजपूर्गा, अध्यात्म, शिक्षाप्रद, मनोरजक, ऐतिहा-सिक लेखो का प्रपूर्व सकलन होगा इस विशेषाक मे।

मात्र हो भ्रपनी प्रति सुरक्षित कराइये।

बता दे कोई मन्ष्यता की महापूजारिगी कहाँ गई है। श्चदम्य दूगिदेवों "ही जो वो सिहवाहिनि कहाँ गई है।।१।। सजाया जिसने स्वतन्त्रता के स्वरूप श्रागर भारती को। जगाया जिसने प्रमन्तता से प्रमुप्त मानी स्वभारती की। विकास वीरगा बजाने वालो सरस्वती सी कहा गई है। २॥

धरा के दुग मे दुजी रनी जो दुलो की कहती रही कहाना। धरान होवे ग्रघीर मन मे न भैय खोव विपन्न प्राणी। बरा के पुत्रो । जरा नो बोलो बरा की पुत्री कहाँ गई है ।३॥

नहीं गगन में कही चिर ये प्रपञ्चवादी घटाए काली। न नाच पाये महासमर की विनाश कारी श्रकाल काली। पुकार ऐसी उठाने वाली समक्त वास्ती कहा गई है ॥४॥ न दुष्ट दृष्मन की चाहना का यहाँ न होने दिया बसेरा।

उसे चटा दी जमीन जिसने यहाँ जो चाहा कर भेषरा। प्रकाश पौरव दिलाने वाली विषय भवानी कहा गई है ।।॥।। कही भी उल्लू ले घूकसेनान डाल पाय चमन मे डरा।

नई चमक से नई दनक से किया है जिसने यहा सबेरा । नया ही सूरज उगा गई जो उथा किरमा वो कहा गई है ॥६॥ मुमाई जिसने सूचारता से समानता की सुरूप रेखा। गिरे हुन्नो को लगा रहे हो गले से ऊँचे कि स्वप्न देखा। स्वराष्ट्र का चित्र निसार देती वो रग रचना कहाँ गई है। आ। कि जाते जाते भी रक्त जल से प्रफुल्लता से जिसे है सीचा।

दिया है मात्रीय प्रसन्तता से भगर मलिंग्डत रहे बगीचा। दघीचि ऋषि की मिसाल बनकर सदा सुहागिनि कहाँ गई है।।दा।

समाचार सन्देञ

श्रम्बिल भारतीय श्रार्य युवा महामम्मेलन

नई दिल्ली १० ग्रक्तुबर (बृह-स्पनिवा)। आयममाज ग्रनारकली (मन्दिर मार्ग) के ६१व वार्षिकोत्सव के भवसर पर भागामी २४ नवस्वर रविवार को बार्य युगा नेता बहा-चारी धार्य नरेश की ग्रध्यक्षता मे 'म्रखिल भारतीय ग्रार्य यवा मना-सम्मेनन का धायोजन किया गया है। जिसमे १००० प्रतिनिधि भाग लेने बारहे हैं।

युवा महासम्मेलन सयोजक व केन्द्रीय ग्रार्थे युवक परिषद दिल्ली प्रदेश के महासचिव श्री ग्रानिच कुमार सम्मेलन के लिए दिल्लो के विश्विन्न मार्थ ने एक प्रस विज्ञप्ति में बताया कि २३ नवस्वर, शनिवार को देश के विभिन्न राज्यों के बार्य युवक सग ठनो के प्रमुख नेताओं व विद्वानों की बैठक होगी जिसमे युवावर्ष पर नौजवानो के लिए एक राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम बनाने तथा राष्ट्रीय स्तर

पर प्रभावी भक्तिका निमाने के उल्लब से भावी कार्यक्रम बनाया जायेगा

ग्रार्य नेता व डी॰ए॰वी॰ प्रबन्ध कर्जी सभा के कायवाहक सभ्यक्ष श्री दरबारी लाल ने समस्त भारत के डी०ए०वी० स्कल कालेजो के प्रति वियो को भी प्रवक महासम्मेलन को सफल बनाने के आदेश दिए हैं। महासम्मेलन को सारी व्यवस्था ग्राय प्रादेशिक प्रतिनिध्य सभा, नई दिल्ली कर रही है।

राष्ट्रीय स्तर के इस युवा महा स्थानो पर जनसम्पर्कग्रियान तथा क्षत्रीय युवक सम्मेलनी क ग्रायोजन भी किये जा रहे हैं।

चन्द्रमोहन ग्रार्थ (प्रेस सचिव) केन्द्रीय बार्य युवक परिषद दिल्ली प्रदेश

सिराज स्तां, सूरज कुमार बन

मुवनेश्वर । कुछ दिन हुए वाली-बीर के श्रो सिराज लाँ द्वारा कुमारी किरण अग्रवाल के अपहरण के विषय को लेकर उडीसामे प्रवल हलचल मची हई थी। गत नाः ६-१०-५५ को अवनेश्वर भागसमाज मदिर मे श्रो सिराज लाकी शृद्धि सस्कार के पदचान उनका विवाह सुश्रो किरण के साथ सम्पन्न होकर एक संघर्ष का सुकान्त समापन हो गया

श्री सिराज सुश्री किरए। तथा उनके अधिवक्ता और भारमीय स्वजन कटक उच्च न्यायालय मे न्यायमूर्ति श्री राधावरमा पटनायक के समक्ष प्रपनी सम्मति प्रकट करके मुवनेह्दर आर्यसमाज की महायता में विवाह के निमित्त प्रम्ताव दिया वा। माननीय न्यायमुर्ति ने इसे स्वी-कार करते हुए अपने दीर्घ निर्माय मे हहा है- 'ग्रिषिवक्ता ने यह निवेदन केया कि मामला मित्रता पूर्वक वलभा लिया गया है और इस प्रकार

शुद्धि ममाचार

कलकत्ता २ अक्ट्बर। स्रार्य समान बड़ा बाजार द्वारा आरज साय एक भाग समारोह में शेख ग्रमी-रुद्दीन पुत्र शेख लतीपुद्दीन लाल-दीघो घार (पूर्व) पो० व याना चन्द्र-नगर, जिला हुगली (प॰ बगाल) के sunaiटन पर उनकी शृद्धि श्री प∙ एक विस्फोटक स्थिति का मुखान्त समापन हो गया है। यह भी तय हमाहै कि श्रो मिराज और सुश्रो किरता प्रार्थसमात्र की पद्धति के अनुगर विवाह बधन मे एक हो जाए गे ।

भुवनेश्वर श्रार्यसमाज के नव-निर्मित महर्षि दयानन्द निर्वाश चताब्दो स्मारक यज्ञ मडप मे कटक मुवनेश्वर तथा उडीसा के बहु प्रति-ष्ठित व्यक्तियो को उपस्थिति मे श्री सिराज का श्रुद्धि संस्कार हुमा। श्री सिराज ने बड़ी प्रसन्नताके साथ श्री सूरजक्रमार" नाम ग्रहमा किया। शृद्धि के अनन्तर श्री सरज कुमार ग्रीर कुमारी सुश्री किरण ग्रग्रवाल का विवार सस्कार अनुष्ठित हमा ।

उटौसाके सभी समाचार पत्रो ने इस समाचार को प्रमुख स्थल पर प्रकाशित किया।

त्रियतमदाम

ई श्वरदत वैद्य के पौरोहिय में को गयी जिसमें समाज के मत्री खशदाल चन्द ग्राय तथा समाज के विशिष्ट सहयोगियो सहित भ्राम जनता के लोग भी उपस्थित हुए। शुद्धि के उपरान्त उनका नया नाम धमर-गीत स्वीकृत हुमा।

पासण्ड सण्डन का श्राहरान

श्री रामनाथ सहगल का वक्तव्य

(निज सवाददाता द्वारा) पिछले दिनो दैनिक समाचार पत्रों में पकाशित दो समाचारों के बारे में आर्थ जनता का ध्यान आक-र्षिन करना चाहताहः। पहला समानार लन्दन का है जहाश्री प० श्रीराम शर्मा की उपन्थिति मे गायत्री परिवार की छोर से ग्रायोजित यज कार्यक्रम के भवसर पर स्वामी प्रजा नन्द ने तथाकथित भगवानी से सावधाम रहने का उपदेश देते हुए कहा कि-अब समय आ गया है कि हम लागो को धपने मकानी पर सूचना पटो पर 'बीवेयर धाफ डाग केंस्थान पर 'बीवेयर श्राफ गाड श्रयीत कुत्ती से सावधान के स्थान पर भगवानों से मावद्यान लिखवा कर रागना चाहिए। इसका ग्रर्थ यह है कि ये तथाकथित भगवान कूत्तो से भी ग्रंथिन काटने वाले ग्रीर गिरे हए हैं ।

दुसरा समाचार न्युयार्क से भावा है। लगमग३ वर्षपूर्वे तथाक वित मगवान आचार्य रजनीश भारत छोडकर ग्रमेरिका मे ग्रादेगान मे जा बसे। करोडो रुपये को विस्तत भूमि खरीद कर वहा रजनीशपरम की स्वापना की । समार की सब से मृल्यवान कार राल्स-रायस का रज-नीश प्रयोगकरते हैं। उनकी घडी की जजीर में मूल्यवान हीरे पड हए हैं। उनके ग्राश्रम में उन्मुक्त सेक्स को पूरी छन्है। विनासी जीवन व्यतीत करने वाले मगवान रजनीश का कहना है कि उनके अनुपायियों ने उनके साथ घोला किया, उनकी हत्या का प्रयास किया तथा उन्हें करोडो डालग्कर्जमे डुवो दिया।

वेदप्रचार विभाग का द्विनीय वार्षिकोत्सव सम्पन्न

महाशय चुन्नीलाल धर्मार्थं ट्रस्ट द्वारा सचालित वेद प्रचार विभाग का वार्षिक उसव दिनाक २७ १०-८५ रविवार साथ ३ बजे १/४४ कीति इण्टर्ग्टीयल एरिया (MIDH) में साबदेशिक श्रार्थ प्रतिनिधि सभा के प्रधान मान्यवर श्री रानगोपाल वानप्रस्थ की अध्य-क्षानामे मनायागया।

इस भवसर वर भनेक प्रतिष्ठित विद्वानो ने घामिक जनता का मार्ग-दर्शन किया।

> खुशीराम शर्मा · वेद प्रचार समिस्ठाता

भव रजनीशपुरम से समाचार से प्राप्त हुआ है कि मगवान रजनीश के लगभग दो हजार धनुयायियो ने रजनीश को भूतपूर्व निजी सचिव मा प्रानन्दशीला द्वारा रजनीश-वाद" पर प्रकाशित पुस्तक की ५००० प्रतियो व सचिव के कपडो की अर्थीवनाकर नाच-गाकर उनकी ग्रत्येब्ट कर दी।

इन दोनो समाचारो से इस बात का स्पष्ट मकेत मिलता है कि तथा कियत नकली भगवान भगवानी के पासण्ड से पाइचात्य भौतिकबादी जगत्काएक वर्गकव चुकाहै। पासण्ड व ढोग से शाकर्षरा होता है। इसलिए शुरू में इनकी भोर क्रकना स्वाभाविक है। परन्त पालव्ड की पोल खुलने पर उस से षएगा भी जल्दी ही हो जाती है।

हमारे देश में भी ईशवर के नाम पर अनेक पालव्ड फैले हुए हैं। कहने की वावश्यकता नहीं कि इन पासण्डो के कारण समय समय पर देश को राष्ट्रीय अपित उठानी पडी है सार्यसमाज घपने जन्म-काल से ही इस प्रकार के पालण्डों का विरोधी रहा है। भ्रपने प्रारमिक काल मे पालण्ड लण्डन के लिए भार्यनमाज ने विधिमयो से अनेक शास्त्रार्थकिए। **अब इस दिशा**मे शिथिलता बाई हुई है। मैं बपने मार्यविद्वान उपदेशक व प्रचारक महानुभावो से निवेदन करूगा कि-पालण्ड लण्डन के कार्यक्रम मे पुरी शक्ति के साथ जुट जाये।

> मबदीय (गजेन्द्रप्रसाद मालवीय) कार्यालयाध्यक्ष

विद प्रचार सप्ताद्य

भार्यसमाज यमुना विहार(रजि) दिल्ली के तत्त्वावधान में बेद प्रचार सप्ताह २ से ६ अक्तूबर तक सर्व श्री आचार्यरामचन्द्र जीकी धक्य-क्षता में पाच दिवसीय यज्ञ के पहचात पूर्ण बाहुति सहित बड समारोह पूर्वक सम्पन्न हुद्या । त्रतिदिन सज्ज, उपदेश तथा मजनो की मधुर ध्वनि के साथ श्री स्वामी कृष्णानन्द जी, श्रीप॰ ग्रस्तिलेश जो श्रीप॰ नानक चन्द्र जी श्री भुदेव जी सादि विदानों ने साग लेक⁷ वेद मार्ग पर चलने की प्रेरगादी ।

कमल किशोर ग्रायं उपमन्त्री मार्यसमाज यमुना विहार (रजि.) विक्सी-४३

श्रार्थसमाज सान्ताकुज में श्रार्य प्यान योग केन्द्र का उदघाटन

धार्यसमाज ने अपने स्थापना दिवस पर नवनिर्मित वानानकनित ध्वनि शुन्य भारत वर्ष की ग्रायं समाजों में सर्व प्रथम ध्यान योग केन्द्र का उदचाटन पूज्य स्त्रामी सत्यपनि जी के कर कमलीं द्वारा किया गया। इस धवसर पर बोलते हए स्वामी जी महाराज ने कहा कि धार्यसमाज ने यह कार्य करके ग्रनकरणीय बादर्श प्रस्तृत किया है, इसकी बहत बडी ग्रावश्यकता भी जो ग्राजपूरी हो रही है। मुभे प्राशा है कि इस ध्यान योग केन्द्र से बम्बई की जनता प्रधिक से प्रधिक लाभान्त्रित होगी। इसे देख कर मुफे हार्दिक प्रसन्नता हई है। यहा आकर वास्तविक शाति मिलती है, यहा आकर ध्यान लगाया

जा सकता है। ऐसे ध्याम योग केन्द्र का निर्माण प्रत्येक नगर से होना चाहिए। परमात्मा यहा के कार्य-कर्नाघों को शन्ति प्रदान करे, जिससे ऋषि के शबूरे कार्यों को पूरा करते रहें।

बन्त में महामन्त्री केंप्टिन देव-रम्न प्रार्थ ने तताया कि इस ध्यान नोग केन्द्र के लिए श्री राजेन्द्र बाहरी जी ने २०००। — रुपये की बातानु-कृतित मधीन तथा श्री केवनकृष्ण जी मेहरा ने ऊनी कालीन मेन्ट किया है। इनके सहयोग से हम दसे पूरा कर पाये हैं।

> (कैप्टिन देवरत्न ग्रार्थ) महामन्त्री

श्रार्यसमाज मन्दिर, बाई ब्लाक, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली में रतनचन्द श्रार्य पब्लिक स्कूल के सत्यवती स्मारक भवन का उद्घाटन

बचवार दिनाक २ अक्टूबर, १६८४ को बडे समारोह पूर्वक प्रात द बजे से साढे १२ बजे तक सम्पन्न हुमा। कार्रवाई प्रात = बजे विशेष यज्ञ से धारम्भ हुई। उसके पश्चात् प्रात १० से ११ बजे तक रतनचन्द मार्य पब्लिक स्कूल के छोटे-छोटे वच्चो ने बहुत ग्राकर्षक वैदिक विवारधारा से गोत प्रोन सास्क्रतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया : इस अवसर पर लाला रामगोपाल जी शालवाले प्रधान, सार्वदेशिक सभा, श्री धर्म-दस जी, प्रशासक, नई दिल्ली नगर पालिका (मुख्य मतिथि के रूप मे), श्री रतनवन्द जी सूद, श्री रामलाल मलिक, श्रो हरवस मिह जी बेर, प्रधान दक्षिए। दिल्ली वेदप्रचार मण्डल डा॰ धर्मपाल जो, महामन्त्री दिल्ली बार्य प्रतिनिधि सभा, श्रो रामनाथ सहगल, मन्त्री, आर्य प्रादे-शिक सभा श्री राजेन्द्र दुर्गा, मन्त्री धार्य केन्द्रीय सभा तथा दिल्ली की बहत सी भार्यसमाओं के अधिकारी

वार्षिकोत्सव

द्वार्थभमाज शालीमार बाग, दिल्ली का वाधिकोत्सव ११ से १७ नवस्वर ८५ को प्रमचाम से मनाया जा रहा है, जिसमे महात्मा राम कियोर वद्य महोपदेशक का बेदप्रवचन सौर ए० सत्यदेव स्नातक रेडियों कलाकार के मजनोपदेश हुआ कर्वेंग। सी ज्योतिप्रसाद ढोलक कलाकार साथ रहेंने।

एव सदस्य व श्री रतनचन्द जी सुद के परिवार के सभी लोग उपस्थित वे। सत्यवती स्मारक भवन क उद्घाटन श्री जे क्मारक सुद शुपुत श्री रतनचन्द जो सुद) जी ने किया। इस भवन के १४ कमरो का निर्माण ,लगभग ५ लाख रुपये की सागत से श्री रतनचन्द जो सुद ने प्रपानो स्व-गींब समेंपरलो श्रीमती सत्यवती जी सुद की स्मृति में कराया है।

श्री वर्मेदल जो, प्रशासक, नह दिल्ली नगर पालिका ने घोषणा की कि रतनज्वद प्रार्थ पिल्क स्कूल को बीघ्र मान्यता दी जायेगी। श्री रोधानलाल गुप्त, प्रचार मन्त्री झाय समाज सरोजिनी नगर, प्रबच्छक, रतनज्वद झार्य पब्लिक स्कूल ने सभी का हार्षिक चन्यवाद किया।

> रोशनलाल गुप्त प्रचारमन्त्री धार्यममाज एव प्रबन्धक रतनचन्द धार्य पब्लिक स्कूल

वेद कथा एवं वार्षिकोत्सव धार्यसमाज समर कालोनी में

भाषतमात्र अन्य कालाना न १ से १० नवस्वर नक वेद कथा धौर वाधिकोस्सव मनाया वा रहा है, जिसमे महात्मा रामिकशोर जी वेद यज्ञ के ब्रह्मा रहेंगे। रात्रिको वेद रहेगा। प० वेद व्यास भजनोरदेशक कासमीत काकार्यक्रम रखागया है।

व्यवस्थापक स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती दिस्ली धार्य प्रतिनिधि सथा

श्रन्तर्जातीय विवाह विभाग की स्थापना

यह प्रावश्यक है कि हिन्दू प्रपत्ती सन्तानों की शादिया युए, कर्म, दक्षाव के बाधार पर करे। इस उद्देश्य की पूर्ति के निए प्रार्थममान (धनारकली) मन्दिर मार्थ प्रार्थिशक प्रतिनिक्ष सन्ना ने तत्त्वावधान में एक बत्तार्जातीय विवाह विभाग की स्थापना की गई है। यहा इस बात का ज्यान रखा जाता है कि धन्त-जातीय विवाह से दहेन वाषक न हो। धब तक लगभग сक धन्तर्जातीय विवाह सरमान हो। धक्त तक लगभग रक धन्तर्जातीय विवाह सरमान हो। धक्त तक लगभग रक धन्तर्जातीय विवाह सरमान हो। चुके हैं और सब

श्रार्थ प्रतिनिधि सभा श्रान्ध प्रदेश के नव निर्वाचन श्रधिकारी

प्रधान श्री रामचन्द्रराव कल्यासी श्री डा॰ गोविदराव जी गी ने बोधन श्री पुरुषोत्तम रेइडी जी उपप्रधान पादन्नापेठ श्री के करुगाकर जी सुर्यनगर मत्री श्री माणिकराव जी शास्त्री बेगम बाजार श्री नागमल्लप्पा जी गोषामहल सिंह जी श्री लक्ष्मण ध्र वपेठ उपमत्री श्रीके० व्हीरेहडी जी जडचरली कोषाध्यक्ष श्रीराजावी० किशन लाल जी पुस्तकाष्यका श्री प॰ कुर्मास्वामी जी शास्त्री

धान्य प्रदेश हैदराबाद चम्पारगा जिला निर्वाचन सम्पन्न

निवेदक

ग्रार्य प्रतिनिधि नभा

दिनांक २२-६-८५ को स्थानीय नर कटिया गज आयंसमाज में श्री राम बुक्षलाल की भ्रष्यक्षता में व्यप्त रहा जिला सभा का निर्वाचन हुया। जिसमें भ्रामाभी नर्षे के लिए सर्वे श्री रामाझा वैरागी प्रचान तथा बी० के० सास्त्री मत्री चुते गये।

मत्री प्रधान के श्रतिरक्त २१ श्रन्य सदस्य तथा पदाधिकारी चुने गए हैं। सभी कार्य शान्ति पूर्ण वातावरण में सर्व सम्मति से सम्पन्न हुआ।

> रामचन्द्र भूतपूर्वं मन्त्री चम्पारण जिला समा, बिहार

वम्पतो सुसी हैं। बाफिस का समय ११ से ५ बजे तक है और साय ५ बजे से ७ बजे तक व्यक्तिगत वात-चीत के लिए सुरक्षित है। विवाह इच्छुक युवक युवति अथवा उनके

सरक्षक निम्न पते पर सपर्क करे।

डा॰ मदनपाल वर्मा ग्रीषध्याता-ग्रन्तर्जातीय विवाह विभाग ग्रार्यसमाज (खनारकली), मदिर मार्ग नई दिल्ली-११०००१

नोट-सेवा नि शुल्क है।

श्रार्यसमाज सफदरजंग एन्क्लेव, नई दिल्ली-२१ का निर्वाचन

वाधिक चुनाव दिनाक २२-१-०५ को श्री लाला रामधरणवास जो की घटणकात में मर्वसम्मति से सम्मत् हुए। निम्न प्रकार है। प्रधान श्री ती श्री के एक प्रधान श्री ती के एक प्रधान श्री के उन्नार सम्बद्ध श्री ती के जुना सन्त्री श्री के जुना सन्त्री रामचन्न श्री ती कि साम्रा

सार्थमपान बन्बई की वार्षिक साधारण सभा दिनाक २६-६-१६=४, को सम्मन हुई जिसमे सागानी वर्ष के लिए पदाधिकारो सर्वे सम्मति से निर्वाधिकारो कुपया वपने प्रतिब्दित पत्र में प्रका-सित करने की कुगा करें।

निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुए'— परामशंदाता श्री प० दयाशकर्

जी सर्मी
प्रधान श्री गए।पत राय मार्य
उपप्रधान श्री ज्यनप्रसाद गौतम
उपप्रधान श्री भाऊलाल शर्मा
मंत्री श्री राजेन्द्रनाथ पाण्डेय
उपमत्री श्री चमनलाल चिंदना
कोषाध्यक्ष करसन दाम राएगा
पुरन्काव्यक्ष श्री अद्वसेन मिश्र

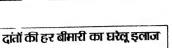
राजेन्द्रनाथ पाण्डेय मत्री

श्रार्यसमाज लाजपत नगर में राष्ट्ररत्ता सम्मेलन

धार्यसमाज लाजपत नगर, नई दिल्ली के उत्सव के प्रवतर पर अद्धेय श्री रामगोपाल जी शालवाल की घट्यसता में राष्ट्र रक्षा सम्मेलन विनांक ३-११-६४, रविवार प्रात. १० से १ वजे तक मनाया जा रहा है।

प्रेषक मेचस्याम वेदालकार











डिस्ट्रीब्यूटर्स महाशियां दी हट्टी (प्रा॰) लि॰ 9 44 इण्डस्ट्रियल एरिया कीर्ति बगर नई दिल्ली 15 फोल 639809 537987 537341



महासियां वी हट्टी (प्रा॰) लि॰ 9 44 अण्डानिहयल एरिया कीर्ति अन्द वर्त विक्रमी 110015 कोन 539609 537987 5₃7341

स्वास्थ्य के लिए उत्तम गुरुकुल कॉगड़ी फार्मेंसी, हरिद्वार की और्षाधयां

सेवन करें



शासा कार्यासय-६६, शसी राजा केवारनाय, बाबडी बाबार, विस्थी-६ फोन . २६६८३८



वयं १ सम्बद्ध पृथ् पृथ्यं एक प्रति १० वेडे रविवार, ८ विसम्बर, ११८६ वार्षिक २० व्यये सृष्टि सबत् ११७५१४१००६ स्राजीवन २०० रुपय

मागशीव २०४२

देवानन्याम्य — १६१ विदेश में ५० डाक्ट ३० गाँड

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के शिष्टमण्डल की केन्द्रीय गृहमन्त्री श्री एस० वी० चव्हाण से भेंट

हैदराबाद आर्य सत्याग्रहियों के सम्बन्ध में ज्ञापन

दिल्ली ३० नवस्वर ।

सार्वदेषिक धार्य प्रतिनिधि समा के प्रकान भी रामगोपाल शालवाले के नेतृत्व में प्राच प्रात भाग्यसवाज के क्षिट्यक्यत ने केन्द्रीय गृहम्की वी एसक बीठ चन्द्राग्य से घट कर उन्हें बुदराबाद बार्य सरपाकद्वियों के सम्बन्ध में एक क्षापन पत्र दिया।

चिट्टनच्यल ने गृहमन्त्री का क्यान काइन्ट करते हुए बताया कि हैदराबाद भाव सत्पाप्रहिकों के समये पत्तन प्राप्त करने ने कु समये पतान प्राप्त करने ने कु समये पतान प्राप्त करने ने कु समय पतान प्राप्त के स्वाप्त कर के स्वाप्त कर ने कि समय को स्वाप्त के मान तिया वा। सत्कालीन निजाम करेट बात तीन प्राप्त में के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के समय को लोग जेलो में गये में, उन्ह निजाम सरकार ने कोई प्रमाग्त पत्र नहीं द्वा वा। यह सान्दालन सार्वदिक्त क्याय प्रति निष्त समा प्रकार ने कोई प्रमाग्त पत्र नहीं क्या प्रति निष्त समा प्रकार ने कोई प्रमाग्त पत्र नहीं क्या प्रविच्यान सार्वदिक्त क्याय प्रति निष्त समा प्रविच्यान सार्वदिक्त क्याय प्रति निष्त सम्राप्त के तत्रवाववान में

चला बा बौर समा ने सत्यापहियो को प्रमारा पत्र भी दिये थे।

बिष्टमस्त ने यह भी बताया कि संधिकास तरपापही जब तक दिवनात हो चुके हैं। वो बोट बहुत लोग इस समय बुद्धानस्था में जी रहे हैं, उनके पास सब ४७ वर्ष के उप-सात्त कोई प्रमास पत्र बेब नहीं है।

षिष्टमबल में सरकार से मींग की कि जिस अकार राष्ट्रीय आयो तन के सेनानियों को काश्य स प्रमाश पत्र के आधार पर स्वतनता सेनानी माना गया था उसी प्रकार केन्द्र सरकार सत्वदेशिक बार्य प्रति-निष्य सभा द्वारा उक्त स्वयाबह के रिकार्य के बाधार पर प्रमाणित नोयों को स्वतन्त्रता सेनाची स्वीकाय कर और पृह्मनालय द्वारा स्वीकृत पश्चन योजना का साम प्रदान कर।

गृहमत्री श्री च॰हारण ने, तुरन्त सभा से सूची भेजने के लिए कहा और श्राहबासन दिया कि वे राज्य सर

कारों से बातचीत करके इसका निर्माण जल्दी करने। उन्होंने यह भी बताया कि निषाम हैचराबाद सब

भागम, कनीटक भीर महाराष्ट्र में विभाषित हो चुका है। जिल्ह्सकल में प्रो॰ केंद्रसिंह, श्री योगप्रकास त्यागी प॰ सिवकुमार शास्त्री, श्री सोमनाय एडवोकेट घौर लक्ष्मीचन्द भादि सम्मिलित वे ।

> स**ि**चदानस्य शास्त्री उपमन्त्री

आर्य विद्या सभा गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार की बैठक सम्पन्न

ग्रायं विचा समा मुस्कूल कागडी हरिवार की बेटक रविवार शश्रान्ध को धार्यसमाज मन्दिर दीवानहाल मे सम्यन्न हुई। इसमें दिनाक ३०।१०। भी कार्यवाही सपुष्ट की गयी तथा सविधान की मन्तिम रूप देकर प्रकाशन की स्वीकृति दी गई। शेष पदाधिकारियो तथा कार्यकारिस्ती के सदस्यों का निर्वाचन किया गया। कुल पदाधिकारी भौर कायकारिसी इस प्रकार है। प्रधान-प्रो० शेरसिंह उपप्रधान-श्री सूर्यदेव श्रीर श्री वीरेन्द्र मन्त्री-डा॰ वमपाल सहा यक मन्त्री-श्री प्रकाशवीर शास्त्री भीर श्री बाशानन्द बाय कोषाध्यक्ष -हा॰ हरिप्रकाश सदस्य लाला रामगोपाल की शालवाले स्वामी श्रोमानन्द, श्री हरवशलाल शर्मा, महासब वर्मपाल जी तथा समी पदेन सदस्य । इस पर लाला रामगोपाल

बालवाले ने कहा कि मैं गरुकूल कांगड़ी के किसी भी भगड़े में नहीं पडना चाहता भीर न ही मैं वहा किसी सभा का सदस्य ही बनना चाहता हू मरे पास बहुत काम है। मरा सार्वदेशिक समा का काय भी हज होता है। वहा आपस मे लोग भगडा करते हैं। मरे पास बहत शिकायत झाती है। सभी उपस्थित सदस्यो ने माननीय लाला रामगोपाल जी शालवाले से एक स्वर में अनु-राध किया है कि भाप हमारे मान्य नेता है, बार्यसमाज को शिरोमिए। समा सार्वदेशिक श्राय प्रतिनिधि समा के प्रधान है। प्राप पजाब समा के त्रिशाखन के भी सर्वमान्य प्रधि-कारी हैं। इस समा का सदस्य अमने की हमेरिरी प्रार्थना की आप अवस्य स्वीकारकरें। धनेक धनुरीकी एक प्रार्थनाची पर किसी प्रकार भाष

(क्षेत्र पुष्ठ १५ वर)

श्री शोरीलाल खन्ना का निधन

साबदेशिक धाय प्रतिनिधि सभा के प्रकान की रामगोपान वी साल बाते के कोटे माई श्री सीरोलाल वी बन्ना का प्रमृतस्य में सम्बी बीमारी के पर्वमार् १७/११/८४ को बेहास्वास हो बमा है। श्री सोरोलाल वी पहल बन्वई में क्यापार करते थे। कुछ वर्ष पूर्व बढ़ ममृतस्य में क्स गए से। बढ़ स्वपने पोकेएक पूत्र कोड गए हैं।

परेपारमा से प्राथना है कि दिवशत बारमा को सद्गति प्रयान करे बीदपरिवाद को इस नहाम् विवीय को वर्ष हुनैक बहुन करने की बक्ति दे । बा॰ वर्गपास

MIN C 174 - 1-W



₹

-चमनलाल (पूर्व प्रधान ग्रायंसमाज ग्रशोक विहार)

यह म त्र बढ़ा महत्त्वपूण है इस लिए भी कि यह ऋग्वेद मे एक बार भीर सामवेद में दो बार भाषा है। इस मन्त्र मे सत्रह शब्द है-पहले पद मे बाठ धीर दूसरे मे नौ शब्द है। इस मन्त्र में म नव को धपने बचपन खबानी तथा बुढापे की याद दिलाकर धात से विधि के विधान में बधी आने वाली मृत्यू के स्वागत का सकेत है। मृत्यू जमी घोर भयवाहनी वस्तु को अगत नियन्ता प्रमुकी भोर से भेजी हुई उसको उपहार के रूप मे स्वीकार करने का झादेख है न कि उससे घबराकर परमात्मा को कोसने लगे प्राणी। यही नहीं इस मन्त्र मे मानव को उसके अपने जीवन की नश्वरता असारता का चिन्तन करा कर प्रभ के प्रति सच्ची निष्ठा एव श्रद्धा घारण करके वेद विहित कार्यों को करक इस ससार रूपी भवसागर से पारहोने का बडा सुदर चित्रण है। जसाकि ऊपर कहं स ये है कि मन्त्र में मानव जीवन को तीन धव स्थाएँ -बालपन खबानी तथा बुढापा की भीर घ्यान दिनाकर अन्त मे चौथी मयुको श्रम क उपहार रूप मे लैने को कहा गया है। बावन मे ऋमिक परि नन ५ फल बरूप ये शवस्थाएँ

ती है योगिशाज श्रीकृष्ण जी ने भागीता प्रध्याय दो इलोक तेरह मे इन प्रवस्थायो का इस प्रकार बढा सुन्दर वणन किया है

> देहिनो ग्रस्मिन यथा देहे कीमार यौवन जरा। तथा देहान्तरप्राप्ति र्वीरस्त्रन महाति॥

यदि विचार पूबक देखा जावे तो जीवन मे ये ऋनिक परिवतन मानो एक सगीत के समान हैं। सगीत प्राय वही अच्छा धौर रचिकर_ोता है जिसमे उतार चढाव हो। गायक कभी मीठ हल्के स्वर में भीर कभी ऊ चे उग्र स्वर में गाता है। इस के श्रभाव मे प्राय लोग गानो को नीरस (Pull) समऋते हैं। पर तुयह जीवन संगीत ऐसा सूरीला मीठा भीर रसीला है कि किसी भी भवस्था मे नगदमी इससे ऊबता नश्ची । शिशुस्व रत्व भीर युवानस्या की तो बात

विध् दद्रारा समने बहना युवान सन्त पलितो जनार । देवस्य पश्य काव्य महित्वाऽद्या ममार सहा समान ॥" ऋग-१०।५५।५

बुधा मौसी सभी की उत्सकता का

कारण बन जाता है। उस शिश्व की

साम-३२५७ २७८२

ही क्या दुखदायी बुढापा जरावस्था से प्रादमी युक्त होना नही चाहता चाहे वह कितनी ही मयकर शीर दुखदायी क्यो न हो।

शक्त गाँत पलित मण्डम दशनविहीन जात तुण्डम । बुद्धो याति गहीत्वा दण्डम तदपि न सञ्चति द्याशा पिण्डम ॥

ऐसी दयनीय अवस्था मे भी कोई मरना नहीं चाहता बरन ऐसा प्राय देखने भ्रथवा सुनने मे भी भाता है कि बहुचा लोग यम के द्वारा मेजे हुए उसके दूतों को भी लताइन का विफल प्रयास करते हैं।

नानाविध कलाओं स्नानापकाने की कला खाने खाने की कला मल मुत्र त्यागने की कला स्नान करने की कला और सगीत कला भादि कलाओं से परिपूर्ण यह जीवन चार अवस्थाओं से युक्त सगीतमय नही यह स्वय सगीत सा प्रतीत होता है। प्रत माम्रो जरा उपर्युक्त मन्त्र के मर्थो के माध्यम से जीवन संगीत का कुछ रसास्वादन करें। विषु दद्वाण समने बहुनाम नव जात चित्रुं चन्द्रमाकी मानिन्द बडा सुन्दर लगता है बच्चा बाहे किसी पशुपक्षी का भी क्यो न हो और यदि किसी के बच्चान हो तो वह सुन्दर मनमोहक शिश्र उसकी वेदना का कारण भी बन जाता है। जसे चन्द्रमा सब को प्यारा लगता है परन्त वही शीतलता का देने वाला चन्द्रकृष्ण और यशोदा को बीधने वाला हो जाता है। जब कृष्ण उसको पाने की इच्छा करता है भीर बेचारी देशी" भीर देखते ही देखते उसे बुढापा यशोदा कृष्ण को नानाविध फुसला कर सन्तुष्ट करने मे विफल हो जाती है 'शिशुजब कुछ बढा हो जाता है चलने फिरने का प्रयास करता है भौर नानाविष चेष्टा मे करने लगता है, तो सभी सबे सबधी... माता पिता भाई बहुन, चाचा चाची

उलटी सीधी बार बार गिरडे उठने की चेष्टाधों को देखकर सभी धानन्द विभोर हो उठते हैं। भन्त सुरदास के वणन में माता यशोदा कृष्ण के चलने को देखने के लिए कितनी उत्सुक हैं। यही कारण है कि बच्चे को घर का चिराग कहा जाता है क्योंकि इसके बिना वर अन्य बन जाता प्रभ अपनी महान उदारता धीर कपा है। कैसा है बच्चे का लावण्य? युवान सन्त समने बहुनाम । इसके पश्चात जब बच्चा शिश्व और कीमार भवस्थाको पार कर युवा भवस्था को प्राप्त होता है तो भ्रपनी भिक्सरी चढती जवानी में भी शिक्षुकी न्याई धनेको को बीघने बाला हो जाता है जब वह उभरती जबानी में यथा ग्रयवा युवती न बाने कितनों का ध्यान अपनी धोर बाक्रस्ट कर नेता है। कतिपय सोग किसी सन्दर ग्राक पक युवा को देखकर उस की अपने जामाता के रूप में बाने का प्रयत्न

धपने घर की लक्ष्मी बनाना चाहत हैं परन्त उन चाहने वालों को वे धप्राप्य होने के कारक कुछ कमने ते लगते हैं परन्तु बहु जवानी कव तक रहती है। कुछ ही समय सक अपना चमत्कार दिखाकर घप की मान द आ लों से धो कल बो जाती है ग्रीर कभी बापस नहीं ग्रातो । इसी लिए किसी ने बड़ा सुन्दर कहा है-'ओ जाकर न बाती वह जवानी भा दबीचता है जो उसको लेकर जाता है इसीलिए कहा भी है जो धाकर नही गया वह बुढापा देखी।

'पलितो जगार" इस अवस्था मे

अवानी का वह सावच्य सौन्दर्य आई

बार्ड हो जाता है भीर सब भक्त

प्रत्यक्त शिवित पर वाते हैं बीच इस

करत हैं भौर कई बाब किसी सुन्दर

युवती को शपनी प्रवस् 🖣 💌 में

ग्रवस्था में वह सुन्दर युवा ग्रव पोपले मुह (बिना दन्त के) वाला बल्ला की न्याई व्यवहार करने लगता है भीर ग्रद तक प्यार करने वाले चाहने बाले सभी छोटे बह उसे घणा की दिष्टि से देखने लगने हैं और चाहते हैं कि जल्दी हो यह इस समार से विदाई से। इस जीबी धवस्था में भगवान का हो एकमात्र सहारा रह जाना है। शेष सब बन्ध बान्धव नी उस बेचारे की निनान्त उपेक्षा ही करते दिखाई देने हैं।

> देवस्य परय काव्य महित्वाऽचा ममार स ह्या समान ।

गेसी दयनीय चौथी धवस्था मे से मत्युरूपी उपहार उसकी सहाय तार्थं भेजने हैं और वह इस उपहार को पाकर उस क्लेशमयी दयनीय मनस्था से मुक्ति पा जाता है। धीर लोगों को केवल यही कहते सुनने हैं कि प्रभ का विद्यान भी कैमा विचित्र है कि कल ही जो धमक व्यक्ति जीवित या माज इस सैंसार से चल बसा है। प्रभ ने नानाविच ससार की प्रदर्भत रचना की है और मृत्यू एक बडी विचित्र किन्ही के लिए मयाबही भीर दूगरों के लिए सुन्दर और बानन्ददायिनी सिख होती है। सारा ससार इस मत्यु शब्द तक से भवभीत हो जाता है परन्तु सन्त कबीर जसे उसी के स्वागत के लिए सर्वदा तैयार रहते हैं। उन्होन क्या ही सुन्दर कहा है-

> जिस मरने से जग हरे मेरे मन आनन्द। इस मरने से ही पाइये पुरण परमानन्द ॥

मृत्यू एक पहेली है जिस का समा-वान द्याज तक भी बढ बढ नही कर सके। यह शास्त्रत है अमीर गरीब, धनवान निर्धन, राजा रक्टू विद्वान श्रविद्वान सभी के लिए समान है। ससार मे यही एक ऐसी वस्तु है जिस ने सब को एकसमान एक स्थान पर मा सहा कर दिया है। इस का सभी जगह साम्राज्य है, कोई इसके पाश है

(कि में कि किहें)

पर्वी उ० प्र० आर्य वीर दल का पित्रक्षण शिविर सम्पन्न

सलतानपुर गत दिवस पूर्वी उ० प्र॰ ग्रायबीर दस का सप्त दिवसीव शिविर का शुभागमा दयान-द जु० हा० स्कल बास्त्रीनगर सुलतानपूर में प्रदेशीय आय बीद दल के अधि-काता श्री बेचनसिंह मिर्जापुर द्वारा ध्वजोत्तोला एव वदिक राष्ट्रगान के साथ सम्पन्न हुआ। इस शिविर के ४०० प्रायवीरों ने भाग लिया।

श्री बेचनसिंह ने भाग शिविर की महला पर प्रकाश डालते हुए इताया कि इस से क्षत्र सुसस्कारित होगे । ग्रायंवीर दल के प्रदेशीय सकालक श्री प्रवद्य विहारी लन्ना बाराणसी ने वतमान मुक्क पीढी की कृत्सित मनोवृत्ति का चित्र सीचते हुए छात्रो से मायवार बनने का किविर के माध्यम से भाहान किया, विविर के सरक्षक श्री रामकिशोर त्रिपाठी ने बैदिक जीवन भादशों पर धकाडा डाला। वक्ताओं मे सर्वश्री राजकच्या जायसवाल भोमप्रकाश एडबोकेट, भीमकुमार सिंह मल्ल प॰ शम प्रविनाश जिपाठी एव ध्रेन्द्रसिंह शिकराधियों को अपना आशीर्वाद देते हुए शिविर को साधना स्थलीय के रूप में अपनाने का बाग्रह किया।

इसी अवसर पर दयानन्द ज॰ हा० स्कूल के निर्मित ३ कक्ष भी शमहृदय जायसवाल कक्ष श्री सतीश-चन्द्र चौपडा कक्ष, श्री स्व० जगबहा-दुरसिंह नक्ष का उद्घाटन फैआबाद के सप्रसिद्ध धार्य नेता श्री माताप्रसाद त्रिपाठी के द्वारा सम्पन्न हुमा। सभी प्रतिथियो का स्वागत शिविर सयो-अक एक प्रधानाचार्य श्री प्रयासदीन जायसवाल एव ग्रम्बिकाप्रसाद चौर-सिया दारा किया गया।

ग्रस्तिम दिए समापन के अवसर थर प्रात यज्ञ के पदचात् दिल्ली के साबंदेशिक पार्यवीर वल के प्रचान श्वासक श्री बालविवाकर हस तथा सुप्रसिद्ध सार्वं बिद्वान् भाषायं प्रज्ञा-मित्र फैजाबाद की विशेष उपस्थिति मे शिविर में भाग सेने वाले ४०० क्षिविराधियों का यक्षेत्रवीत सस्कार तवा प्रतिकापण कार्यकम बारयन्त न्त्रेर्यावायी वीक्**लक्ष्मिक्** रहा ।

सार्वकास राजींव रणवर्गसङ् अवेडी की बध्यक्षता में कार्ववी में का

क्षारीरिक प्रदर्शन हमा। छात्री के सामूहिक नेतिकिया, नेत्रकिया तथा दण्ड चालन का कायकम मनोखा था। श्री सजय कुमार धरोडा गौंडा का सिन् एव जांच पर रसकर टयुबलाइट फोडना श्री शभूराम द्वारा बाह पर ईंट रखकर फाडना भी ग्रत्यन्त प्रधासनीय रहा। दीक्षातमायण के अन्तर्गत श्री बाल दिवाकर इस जी ने सभी प्रशि-क्षार्थियों से स्वामी दयानद की कठोर तपस्या से प्ररणा लेते हुए वदिक वर्म प्रचारार्थं शिविर से घर जाने के बाद भी कभी निराश न होने का ग्राप्रह किया।

राजींव रणञ्जयसिंह ने धायह

किया कि प्रशिक्षार्थियों को मातदेव पितदेव. एव प्राचार्यदेव की भावना से जीवन यात्रा करनी चाहिए। अन्य वक्ताओं में श्री दीनानाथ मुन्दीगज, रमाशकर जी किराकत, प्रशोक त्रिपाठी बाराणसी, का० राजेन्द्रप्रसाद कतपुर, श्री भ्रोमप्रकाश एडवोकेट प्रधान भीमकुमार सिंह गल्ल ध्रधि-ष्ठाता, श्री बेचनसिंह संचालक श्री उदयबिहारी खन्ना, श्री मुन्नीलाल जी किराकत सक्षक श्री रामिक कोर त्रिपाठी कार्यंक्रम संचालक श्री राम कष्ण जायसवाल, उपस्वालक श्री प्रयागदीन बायसवास ने प्रशिक्षा वियो को भ्रपना भाशीर्वाद प्रदान किया। इस प्रवसर पर दयानन्द ज०हा० स्कल के सभी ग्रध्यापक श्री उदयराज प्रजापति कार्यालय इन्नाज श्री रामलाल मीय राशन इन्यार्ज, श्री उमाधकर द्विवेदी श्री सर्यनाण पाण्डेय धनपतगज, श्री जटाशकर तिबारी श्री जगदीश मिश्रा ने मैस का कार्यभार देला. श्री हौसिलाप्रसाद तिवारी, श्री रामकेवल जायसवाल यज्ञ को व्यवस्था को शब्खे दग से सम्पन्न कराया। श्री चन्द्रिकाप्रसाद मिश्र एव श्री बेजनावसिंह ने प्रति-वियो का स्वागत किया। इस शिविच को सम्पन्न कराने मे मुख्य रूप से श्री प॰ रामकिशोर जिपाठी एवं श्री प्रयागकीन जायसवाल का विश्वेत्र सम्बोग रहा।

> प्रयाणकीतः शाससवाश श्चिवित समोजक

श्रार्य प्रतिनिधि सभा प्रवीं श्रकीका कीनियानेरोबी की −ििं रे गई हिर्वी≂न

शण्य प्रतिकित सरु पर्कीय श्रफोका ग्रपने स्थापना काल से हो पर्वीक्रफ का हाटनी आपत भारत से दर सभी पारदेशाय क्षत्रों मे वदिक मन्तव्यो और महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज द्वारा सस्यापित बार्धभगाज के मिटातों के प्रचार प्रमार में लीन रहा है। ग्राज भी यह सभा पुरा मर्यादाओं को सुर-क्षित रजता हमा मागे ही बागे बढता जारहा है। इस वस सभा का निर्वाचन २४ नवस्वर १०८४ ई० को सबसम्मति से दो वर्ष के लिए वर्षात १६८६ ई० तक धनीव प्रस-न्तता एवं मदभावनाधी से परिपर्ण वातावरण में हुआ। निर्वाचन के पश्चात सभाप्रधान श्री हरबगराय जी साही ने अपने साथियों को साथ लकर यगाण्डा तनजानिया श्रीर कोनिया मादि सभी प्रदेशों की आयममाओं का दौरा किया भीर भायं बन्धओ को मिलकर उत्साह प्रदान किया। इस दौरे का वडा ही सफल प्रमाव

इस वर्षकी गतिविधियों से तत्लेखनीय कार्य की निया राष्ट्र से ईसाई और "स्लाम धर्म के साथ साथ हिन्दू वर्गकी शिक्षाको भी धनि-वार्य रूप से लागू कराने का भरसक यत्न है। इस राष्ट्र की सरकार ने धर्मेशिक्षा सभी जिल्ला सम्मान्त्रों से इसी सत्र (Session) से पाठयक्रम मे निर्देशिन कर अनिवाय कर दो थो। किन्तु इसमे केवल इस्लाम और ईसाई वर्म को हो लिया गया था। हिन्दू घर्म का कही भी नाम नही

था। सभा के अविकारि के भी • डा • वदोराम जी शर्मा के ग्रनशक प्रानी से इन सरकार ने हिन्द्रथम भी भी पाठयकम में सम्मिलित करना स्वी-कार कर लिया। किन्त हिन्दुधर्म का मार्ग ग्रन्थ वर्मों के समान सस्ल बही था। किर भी डा॰ शर्मा जी ने हिन्दू-धर्म का पाठयकम तैयार किया भीव सरकार के शिक्षा मन्त्रालय को मेरे माध्यम से भेजा। किन्तु हुमारे ही कई ग्रन्य विचारी वाले सज्जनी ने अपने आप को हिन्दूधम के शीर्षक से यक्त पाठयक्रम को स्वीकार करने मे कल बाधाण उपस्थित की। इन सभी बाबाधों को भी डा० वदाशम जीने बडी ही सुफ-बुफ से राज्य सरकार को परी तरह मन्तृष्ट करके भीर दसरे माइयो को भी समऋकर शान्त किया और परमात्मा की क्रा मे हिन्दूबर्म को भी इस राष्ट्र के बच्चे पतने का ग्रवसर प्राप्त कर सकेंगे। डा॰ साहिब सरकार की शिक्षा नीति के पैनल पर एक वरिष्ठ सदस्य के रूप में मनोनोत हैं। और इनसे बार्य समाज का मान भीर भान को सर्वी-परि प्रनिष्ठा प्राप्त हुई है। डा॰ साहब बाजकल वर्मशिक्षा के बच्या-पको को तैयार कर रहे है भीर स्वय सभी मुसलिम, जन सिख, ईसाई विद्यालयों में जाकर हिन्दू धर्म पर धयने भाषण देते हैं। इस प्रकार स आ वैदिक धर्म के प्रचार मे दत्त-वित्त है।

> लखनराम साही (हरबशगय साहो) सभा प्रचान

निर्वाचन सूची १९८४-८६ के दो वर्षों के लिए

श्री हरबशराय जी शाही सभाप्रधान श्री महेन्द्र जी मल्ला वरिष्ठ उप-प्रचान

श्री जीलकान्त जी वर्मा तवव्रधान मम्बासा (समूद्र तटीय क्षेत्रायं) किसुम् (परिचमी क्षेत्रार्थ) श्रीबलबीर जी ढाडा महामन्त्री

श्रीमधुदुमारजी मल्ला उपमन्त्री एलडोरेट श्री बीरेन्द्र कुमार जी बर्मा उपमत्री श्रो गिरधारीलाल जी सेठी कोषा-ध्यक्ष

श्री धर्मेन्द्र जी कपिसा सह-कोषाध्यक्ष

श्रो भ्रमस्ताय जी फक्कें बेद-प्रचाराधिष्ठाता बीम्बी विमंसाविष्ठ - पुस्तका-१. इन्हीं के साथ चौदह सदस्य

असरस सभा के जिए निर्वाचित हुए।

२. श्रद्धानन्द नर्सरी स्कूल के लिए श्री नवलकुमार भल्ला निर्देशक और श्रीमती पृथ्या मदन, मैनेजर निर्वाचित हुए। प्रमाणित प्रति सभा प्रधान

श्री राजेन्द्रपाल को बहुढ़ा उपप्रधान महर्षि दयानन्द निर्वाग दिवस पर समारोह पूर्वी दिल्ली में

विशाल सभा

१७ नवम्बर दिल्ली । प्रार्थसमाज गीता कालोनी में पूर्वी दिल्ली की समस्त बार्यसमाजो की बोद से एक विशाल समा धायोजित की गई। जिसमे वैद्य रामिकशोर, श्री वेद-प्रकाश क्षेत्रीय, श्री डा॰ धर्मैपील, बी सुर्वदेव समा प्रवान शादि बक्तांओं ने महिंद दयानन्दें के जीवने एव मन्तव्यों पर प्रकास 'डाली' इस व्यवसद्यद पूर्वी दिल्ली के हजारो श्रकाल तर तारी जपस्थित है ।

शाक में मांस परोसा

प्राव दिनाक ३१११।८५ के प्रार्थ समाय के सार्त्ताहिक सत्यग में यह सानकर वडा प्रारचन प्रीर दुव हुआ कि भागिक मुस्लिम विश्वविद्यालय में रहा २११३० प्रकृतर १८८५ को सन्तर्राष्ट्रीय मनोक्षातिक सम्मेलन सम्मेलन हमा। जिसके सन्यम में प्राव मान हाल में शायीजित रात्रि भोज में साकाहारी प्रतिबिध्यों को प्रलग मोजन क्यारचा में पूत्र नियोजित सग से साक में सास मान मान मान में साम मान में साम में साम

बलीगढ मुस्सिम विश्वविद्यालय के एक रीडर ने पुलिस मे एफ आई धार देज कराई। इस घटना से धार्म जगत की घार्मिक मानना को ठस पहुची है। सत्सग में बनेक वस्ताओं ने घोर निन्दा की।

हम जिला प्रशासन से घपेसा करते हैं कि वे इस घटना को गम्भी रता से ल घीर दोषी व्यक्तियों को उचित दण्ड दिया खाय ताकि मक्चिय मे इस प्रकार की पुनरावृत्ति न हो।

सत्यपाल पचनदा

प्रधान

श्रार्यसमाज गोविन्दपुरी का वार्षिकोत्सव

वतमान सन्दर्भ मे चार सूत्र

बायसमास का इंडिड्राव सेवा का ज्यसन्त उदाइन्स है। महार्च दयानन्द के बानुवावियों है सेवा करते करते अपने बसिदान दिखें हैं। उन्हें आवश्य मानकद हुम यह स्प-स्क वर्षों किश्चपने मन्तिय में हुम सेवा की पवित्र भावना के प्रवेश करें न कि पह शोद मान पान की इन्ह्या से। उन्होंने कहा इस समय हमार्चा स्वा-

श्री इरिकिशनसिंह मलिक को श्रद्धांजलि

स्वर्गीय श्री हरकिशन मसिक की दर्दनाक हत्या से समस्त धार्य जगत् ने सोक व्याप्त हो गया। खनकी स्मृति में १० नवस्वर को धार्यसमाज दीवान हाल मे एक श्रद्धाञ्चलि सभा प्रो॰ सेरसिंह की **अध्यक्षता मे हुई। इस घवसर पर** धनेक गण्यमान्य महानुभावो ने दिव-गत बात्मा के प्रति बपनी श्रदाज-सियां प्रपित की। श्री मसिक विटा-बर्ड सेश्वन जब दिल्ली, धार्यसमाज के प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता दानी एव परोप-कारी थे। उन्होंने सेवामुक्त होने के बाब प्रपना सारा समय समाव सेवा मैं व्यतीत किया। वे सरपनिष्ठ मब्द स्वनाव, कर्मठ, धवनी बात विगमता एवं बुद्धा के कहते में

---यशपाल सुधाशु ध्याय कम होता जा रहा है। धार्य-समाज के पुस्तकालयों में घल लगने लगी है। पुराने भार्यों ने स्वाध्याय का गुण बडा विशेष था। साज हमे सत्सग में नियमित पहुंचने का वत बेना होगा। श्रीव गसी, मौहल्लो, पाकों ने कथाओं के आयोजन किये वाने वाहिए। मन्दिरो से बाहर निकलकर वेदों का सन्देश जन जन इक पहुचना समय की पुकार है। श्रीर योषा सूत्र है परस्पर सहयोग। बार्यसमाज मन्दिर मे बाने नाने महर्षि के सबी प्रनुवाकी समस्त भाई बहुनो में एक दूसरे के साथ बन्बुत्व का पवित्र बाता है। प्रतः एक दूसरे के द स में सहमागी होना चाहिए। इस त्रकार परस्पर सहयोग सपेक्षित

इस वार्षिकोत्सव हे पूर्व दक मनोहर वेदकवा भी हुई। विसर्ने व्यवनकर्ता श्री वेदशकास श्रीविव हे। मनोहारी गायक श्री शाव के

सम्बाददाता सायसन्देश

प्रसिद्ध थे । प्रसिद्ध सन्यासी श्री धोमानन्द जो ने उनको समाज होवा एव वान के गुण की भूषि जूषि प्रवसा की। इस धवसद पद श्री वा घर्मपाल, श्री सोमनाव मस्वाह, श्री मामचन्द्र रिवाही, श्री मूलकन्द्र धादि वस्ताओं वे उनके प्रति श्रद्धा-वयन कहें ।

धनेक समावसेवी सस्वाधी वे धोक प्रस्ताव पारित किये जिससे सार्वदेशिक सार्य प्रतिनिधि समा, दिल्ली सार्व प्रतिनिधि समा, झार्य केन्द्रीय सभा दिल्ली, बार्यसमास्व वीवान इस्त सार्वि सस्वार्य सामिल

नियी संपादनाता

एक भाषा व एक लिपि से राष्ट्रीय एकता सम्भव

सालनव (रायवरेली) वेसवारा डिब्री कालेज (महाविद्यालय) में प्रस्थात महिला उदधारक, राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित ग्रार्थसमाजी नेता श्री देवीदास बावं ने राष्ट्रीय एकता व श्रखण्डताविषय पर भाषण देते हए कहा कि राष्ट्रीय एकता नारो व बातो से नहीं होगी इसके लिए सामू-हिक कदम उठाने पहरो। देश की एक ही भाषा हिन्दी व सभी राज्यों की माषामो की लिपि भी एक ही देवनागरी होनी चाहिए। देश मे सब के लिए एक ही कानून भी होना धावस्यक है। सम्प्रदाय विश्लेष के सिये ससग से कानून बनाना सनुचित होबा ।

श्री आर्य ने कहा कि एकता के लिए विद्यार्थियों में देशमक्ति, त्याग

आर्यंसमाज सराय रोहल्ला

वार्षिक चुनाव

३ नवस्बर, १६८५ को सार्य-समाब सराय रोहल्ला का १६८५-८६ के लिए वॉपिक चुनाव हुसा। बिससे निम्न पराधिकारी चुने गए। सीमती सार सर्मा जी। प्रधान

श्रीमती झार शर्मा जी. प्रधान श्री ज्यासाप्रसाद जी उपप्रधान श्री रोशनजास उपप्रधान

,, उत्तमबन्द मत्री ,, देवसैन बहुदा उपमत्री

,, राममेहरा उपमत्री

,, ज्ञानमन्द कोवाध्यक्ष ,, सुञ्जीलकुमार प्रचारमणी सत्तमनन्द्र

इसम्बन्धः मन्त्री

चार्यससमाज निर्माण विद्वार दिल्ली-१२ का प्रथम

वार्षिक उत्सव सम्पन्न

२८ अक्तूबर से ३ नवस्वर ८६ तक सैन्द्रत पार्क निर्माण विहार मे बड समारोह पूर्वक मनाया गया। २८ प्रक्तूबर से २ नवम्बर तक प्रातः ७३० से ६३० बजे सामवेद महा-यज्ञ व राजिको ८३० से १३० वर्षे बी जैमिनि सास्त्री वी की वेद कवा हुई। ३ नवस्वर को प्राप्त द से १३० वज्ञ को पूर्णाहति हुई धीर १०वजे से दोपहर १ वजे तक परित्र निर्माण सम्मेखन जा० रामगोपाल जी **सामवाले प्रधान सार्वदेशि**क सभा की अध्यक्षता में हुन्ना। श्री विद्याप्रकाश सेठो मुस्य जतिवि वे। श्चनेक विद्वानों वे प्रधान कर शपने विचार स्त्रे।

> प्रेम प्रकाश मण्डी आर्यक्षमाम निर्धाण विद्वार

व तपस्या की बावना छोटेपन से हीं उत्पन्न करना झानश्वक है। शिक्षा धानामीय हो बहाँ गरीब समीद एक साथ रहे तथा शिक्षा प्राप्त करें।

कालेज के बाजाएँ वो प्रमन्त-यारी सिंह में बो देवीलाज सार्य का म व्या त्यांत्र किया तथा सामान्य प्रजट किया। त्रांत्र में वेदश्यार सक् के तत्वावधान में प्रयाग मार्ग जोराहा पद धार्याजित विद्याल सभा में वो देवीवास मार्ग के धार्यनत्वन किया गया। वी धार्य ने कूमाळूत व जाति बाद को छोडने पत्र बल दिया। सभा की घम्यसता वी रामकुमार रस्तोकी ने की।

> रामकुमार रस्तोगी भागसमाज

त्रार्यसमाज विकासपुरी में विराट जन सभा

१० नवस्यर नई दिल्ली। प्रायं-समाज विकासपुरी मे क्षत्र के समस्त्र जार्यं समाजों की प्रोय के विराद् जन-समा का प्रायोजन किया गया। इस्र प्रवस्य पर भी डा॰ महेल विद्याल-कार, भी॰ वस्त्रक्तिल, जो डा॰ पर-पास, भी गौरोबाल जारको ने प्रप्य-पास, भी गौरोबाल जारको ने प्रप्य-बोजस्थी क्ष्यों में महिंद व्यानत्य के नहान् कार्यों प्रीर धार्यंसमाज की नावी गोकमाको पर वर्षण्य विवे। स्वा की वार्षिक चनता ने वह चहु

सम्बाददाता

निर्वाचन

समा का वाविक चुनाव ११।६। दूप को आर्यसमान मदिर, प्रकोक नगरा में भी वर्षनमान बस्पानी की धम्बकाता ने बम्पन्न हुआ। जिसके निम्निविक्वा प्रविकारी सर्वे-सम्मति से बने गए —

प्रधान श्री राजाराम भाय उपप्रचान महाशय सुस्रदेव भागे, श्री भोमसेन आर्थ

मंत्री : हरीश कुमार धार्य सहमत्री श्री चन्द्रभाम सतिया,

श्री बीमपैन रहेसा कोवाध्यक्ष श्री चन्द्रमान माहूबा बेकापबीक्षक श्री वशपाल मानव्ह भण्डास्पास श्री नन्वलाल माटिबा हरीश कुमार आर्य

मत्री बार्यसमाज महिर, प्रश्लोक नगरः



ससार का प्रत्येक प्राणी स्वस्तत्र सहना बाहता है। जैसे बधा पश् टटने पर भाग जाता है, पिजरे मे बन्द पक्षी यदि निकलने का अवसर प्राप्त कर ले तो उड जाता है, पकडे गए सर्प, बिच्छ बादि भी भाग जाते है। यहा तक कि वर्षों से चिडियावरों से नाना प्रकार के बन्य प्राणी भागते हुए पण्ट जाते हैं। सभी बोड़े ही विनों पूर्व एक चिडियाचर के वोते ने ऐसे लोहे के जंगले को काट दिया। जिसको बब्बर शेर भी नहीं तोड सकता था। उस तोते को दुबारा पकड़ कर दोहरे पिजरे में रखा गया है। तो मन्द्य जाति का तो कहना ही क्या ?

सतार के श्रेष्ठतम व्याकरणा-वार्य महींय पाणिनि ने कर्ता की परमावा की है जो पूर्ण स्वतन हो यया स्वतन कर्ता। सवार के सभी वाष्ट्र स्वतन रहना चाहते हैं। इसके लिए नाना प्रकार के पुढ होते क्या है हैं। या स्वता का प्रत्येक व्यक्ति स्वतन है। परिवार का प्रत्येक व्यक्ति स्वतन तन रहना चाहता है जिसके फलस्व-रूप परस्पर में सबाई मा हे भी देखे जाते हैं।

स्वतत्रता को अनेक मर्यादाए हैं। वेसे यदि सक को स्वतत्रता को यूरो पूरो छुट दे दो जाए तो अपना विनाश भी वपदयभावों है। आर्थ-समाज का दस्वां नियम सब मनुष्यो का सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतत्र रहना चाहिए तथा प्रत्येक हिनकारी नियम में सब स्व-तत्र रहें। इसके आधार पर पस्त-त्रता को स्वतत्रता है। स्वतत्रता वेस्तेन्त कानून हैं जिसके आधार पर चसना हो स्वतत्रता है।

कुछ लोग तो स्वतंत्रता का मन-माना अर्थ करते हुए व्यक्तिगत तथा शब्दीय, प्रान्ताय वार्या विशेष के साबाद वर एक दूसदे पर हाथी होने के लिए नर सहार पर तुलकर प्रपना तथा पराया अहित करने में हो लगे पहते हैं। बल्कि देखा गया है कि भावतंत्रय को छोड़कर प्रमय देशस्य ब्रिट्ट प्रथिकारी लोग पूर्ण प्रन्याय पूर्वेक दूसरों को दवाना चाहते हैं।

हमारे देश का सवा से ही स्वा-माबक नियम रहा है कि किसी को ची जन्माय पूर्वक न बबाया जाये । परन्तु हमारे देश पर जिन जिन कोगों ने शासन किया, उन्होंने बढे-बढ़े कूद प्रत्याचार किए। इसके किए इतिहास साझी है। पुरुषोक्ता नामेख, स्वानी स्वचानन्य सरस्वा तथा प्रत्य कालिकारियों की सेखा-वशी पड़ने के बहु बात विस्कृत सरस्व

सच्चे भारत माता के सपुतो जागो !!!

प० ब्रह्मप्रकाश वागीश, पुरोहित मार्यसमाज शासीमार बाग, दिल्ली-५२

हो बाती है।

किसी भी दुब तथा विद्याल वस्ता मुख्त नीव के वे पत्यद होते हैं जो विख्ताई नहीं देते। इसो प्रकार से किसी भी स्वतंत्र राष्ट्र के वे कान्ति-कारी ही राष्ट्रकरी भवन के पत्थर होते हैं जिस पर वेश उन्नत कर से खबा है। बोक की बात है कि उन लोगों के विद्यमं, प्रामाणिक तथ्यो तथा उनके बलदानों को जन साधा-रश की जानकारों से परे रखा जा रहा है।

किसी भी देश को स्वतत्रवा दिलाने वाले मूट्यु की निममण देकर क्यो चुलाते हैं। जिस मौत की बात सुनकर वंड कंड योग्य व्यक्ति भी प्राय भयभीत हो जाते हैं इसलिए कि हमारे देश में भ्रमानवीय अत्या-वार बन्द होकर प्राणीमात्र को जाने का पूर्ण अधिकार प्राप्त हो। स्वत-त्रता के लगभग ४० वर्ष वाद क्या हुमा बया क्या हो रहा है? क्या इसी के लिए स्वतत्रना प्राप्त की गई थो?

स्वतत्रना का लक्ष्य क्या था ? सोविष्ट पशु-पिक्षयों का वच बोका आए। प्रमनी भाषा का सभी स्तेत पर प्रयोग हो तथा भास्त विश्वाल तथा समुन्तत हो। स्वतत्रता के परवात् गोवश का नाश, राष्ट्र-माथा की पूर्ण अवहेतना, विदेशों पीति-रिवाल, खानपान व्यवहार, माथा मीस मादि का सेवन, मस्ली-लता का जोरवार प्रचार करके युवा-चित्र को कमभोर करना और शेष भासत को पुन खण्ड करने की मिलोभयत चल रही है।

कुला कीन है ' जुला के करके वमन करके खा लेता है। इसी प्रमाद हम म्र में जो का वमन खा रहे हैं। कुले की नकल कर रहे हैं। व में जी की पूर्ण मरोपता हम दिला रहे हैं। हम विरोध ही नहीं करते। हुए सहन्यतिलता का वाबा करते हैं। हमें पेसा चाहिए, देश, धर्म, परिवास भाड में जाये। जहाँ इस विचारवास के सोन होंगे, वहां सर्वनाश ही तो होता।

दे मारतवासियो, यदि बाप में

उन कान्तिकारियों का खोलता हुमा रक्त है तो क्यो नहीं भारत माता को रक्षार्थ सर्वस्त धर्मण कर रेते। भारत माता के टुकडे करने वाले तथा पृथकता को मांग करने वाले कपूत हैं, छपूत नहीं। उन्हें चाट आधो। उन्हें खत्म कर दो।

याद रक्षो किसी बृक्ष के मूल में पानी डालने से बृक्ष बढ़गा, फलेगा, फूलेगा भी। इसी प्रकार यदि देश बचेगा तो घर, सडक, बाग वर्गाने, नाग प्रकार के जिज्ञान, कारवाने सेत यापार तथा जन समुदाय बचेगे झन्यथा नहीं। देश को बचाजी।

याद रखी प्रत्येक राष्ट्र धपने देश की पूर्व निर्धारित मान्यताको के झारे परन्यराएँ उसका मार्ग दर्शन करती हैं। स्वतंत्र राष्ट्र का सर्विधान होता है। पर हमारे देश के शाकाश-वाणी, दुर्दर्शन, समाचार पत्र और राजकीय स्थिकारी नये दंग से मये रास्ते पर चल रहे है।

किसी भी देश की स्वतंत्रता 'करो वा मरो' पर झाधारित होती है। देवासुर सम्राम सर्वविदित है। महाभारत सर्वविदित है। हमारे धपने घर में कोई धाग लगाने धाये, तो हम तुरन्त बाग बुभाने का उप-कम करते हैं। हमारे देश मे धान लगी है। इसे कौन बुआयेगा? जिस देश की युवाशक्ति बुरी तरह कामान्ति दुव्यंसन, बच-पान, मांसाहार करने में लगी हो, उस देश का महाविनाश सामने ही है। धत सभी सभल जाशी। अगडाई लो। भारतमाता का ग्रगकाटनातो दूर, छूने वालो को सपरिवार, समूल नष्ट कर दो। उन का बीज तक पृथ्वी से मिट जाए, ऐसाप्रयास करो।

जीजाबाई, लक्ष्मीबाई, सीता, साबिधी, युजधा, दुर्गा, काली झादि की सिंगिनों नारियों अपनी अपनी कृपाण हाथ में लेकर नरमुख्डे को एकत्रित करके दिखा दो कि हम आस्क्रमाता को दुरी नवस से देखने बालों की यही दथा करती हैं।

गुरु विरवानंद, स्वामी वयानन्द,

चन्द्रशेखर प्राचाद, बिममिल, भगत-सिंह भाई परमानन्द, सुभावचन्द्र, बोस, बीर सावरकर इत्यादि हजारों बलिदानियो का खुन, युन था पानी नहीं। यदि धाप में रक्त की पवित्रता का तनिक भी भागास है तो क्यों स्वतत्र देश को परतत्रता की स्रोद ले जा रहे हो । ग्रावश्यकता इस बात की है कि हम एक जुट हो कर सबख करें, तभी सफल होगे। विरोध करो तन मन घन से उन नीचों का जो हमारे देश में रहकर जी रहे हैं श्रीइ गुण गाते हैं विदेशों का। भ्रषिकार मागे नही मिलता, मुजबण्डों से छीना जाता है, सच्चाई मानी नही, मन-बाई जाती है। इस काम को कुकर्मी भीर भारमा से बलहीन लोग नहीं कर सकते। चीर का चीर विदोध नहां करता। इस प्रकार से हम भी चोर है यदि हम धराष्ट्रीय तत्त्वों का विरोध नही करते।

यदि प्राप प्रपने को स्वतन समफते हैं तो नाम काम मनी बदलने
होंगे। मुसलमान प्राये, उन्होंने प्रयाग
का नाम बदलकर इलाहाबाद कर
दिया। प्र ग्रेजों ने भी अपने देश की
भाषा धीर सस्कृति के प्राचार पर भी
नामकरण किया। हमें तो प्रपने नाम
प्रपने उग से रखने स्वाहिर, पर हम
प्रपने उग से रखने स्वाहिर, पर हम
प्रपने उग से रखने हमें

तुम सब को महापाप लगेगा
यदि भारतीयता को तिलाजिल देकर
प्रपने घरों में ढंडी, मस्मी, पाया
हत्यादि महापातक करवों का प्रयोग
करोगे। इन शब्दों का प्रमां मृत और
पापी का बोजक है। टीटू, नीटू, दीटू
बीटू, पप्पू, गुडड़ शब्द भी घरों में
सुस गए हैं। हम लोग चोटी और
जनेऊ छोडकर भही बंचभूला प्रयानक कर ही जड़े बन रहे हैं। नारी विदेशों
नर बनने की इच्छा कर रही है।

भाइसो। कहाँ तक लिखूँ। यदि
ठीक छग से लिखूँ तो रोना भाता है।
तथा विशाल ग्रन्थ बन जाये। बाजा हर घर का ग्रत्येक सदस्य भारतबर्थे का परम शत्रु बन रहा है। निवाह, भोज, चुनाव समा, खेलकूद भादि सभी मे विदेशोपना है। ऐसा लगता है कि अपने देश में कुळ गाह्य रहा ही नहीं। जो समार लगभग दो प्रस्व वर्ष तक भारतवर्थ के चकत्रतीं राज्य को ब्यवस्था के भ्रन्नगंत चलता रहा, बहु आ ब घटे के चुका है। हमी में खोट है।

कुछ लोग हैं, जो पूर्ण भारतीय है पर व ग्रस्थल्प हैं। उन्हें राजसत्ता, जनसत्ता, वर्गसत्ता तथा धन धादि

(शेष पुष्ठ ११ पर)

एक घटना और एक दुर्घटना

लेखक-म०म श्राचार्यं विश्वश्रवा व्याम वेदाचार्यं एम० ए० वेदमन्दिर वरेली

(घटना)

दीवान बहादुर बाबू हरविलास जी शारदा उन व्यक्तियों में से थे जिन्होने महर्षि के दर्शन किये थे। वे महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज की धनेक बाते सुनाया करते बे। दीवान बहादूर साहब जीवन भर परोपकारिणी सभा के सदस्य रहे।

डा॰ रघुवीर ससार प्रसिद्ध महान रिसर्च स्कालर थे। दीवान बहादर साहब ने डा० रघवीर को परोपकारिणी सभा मे महर्षि के ग्रथो के सम्यादनायं रखा। डा० रघुवी र कुछ काल भजनेर मे काम करते रहे पर डा॰ रघुवीर यह चाहते थे कि महर्षि के प्रत्थो पर उनका नाम सम्पादक के रूप मे छापा जावे पर दीवान बहादुर साहब ने इसे स्वीकार नहीं किया भीर स्पष्ट कह दिया कि माप रहेयान रहे पर महर्षि के ग्रन्थो पर केवल महर्षिका ही नाम रहेगा भ्रन्य किसी का नहीं। डा॰ रघव र छोडकर चले गये। दीवान बहादूर साहब ने कोई पर्व ह नहीं की। घत द्यायजगत यह देख ले कि परोपका रिणी सभा द्वारा प्रकाशित सत्याथ प्रकाशादि ग्रन्थो पर महर्षिका ही नाम है। श्रन्यत्र प्रकाशित प्रत्येक ग्रय पर लम्बी लम्बी भूमिकाए इसका गलत उसका गलत केवल हमारा सही है। ऐसी तृत् मैं मैं ग्रन्थ से पूर्व भरी रहती है।

(एक दुर्घटना)

महर्षि वेद विज्ञान विद्यापीठ नोएडा गाजियाबाद मे अनार्ष प्रथो की परीक्षाए तोडकर श्राषं पाठविधि से प्रथमा' मध्यमा, शास्त्री, बाचार्य परीक्षाची का कीस बनाया गया है। सस्कृत युनीवर्मिटी वाराणसी ने उमे स्वीकाद करके मान्यता मो दैदो। पर बभी उस म कुछ सुधार की धावश्यकता है धन महेश योगी जी को सत्यार्थप्रकाश संस्कारविधि मे लिखित प्रार्ष पाठविधि देखनी थी। मैं तदथ महात्मा धमर स्वामी जी के धाश्रम, गाजियाबाद गया कि सत्यार्थप्रकाश, सस्कारविधि वहा मिल जायगे।

महात्मा धमर स्वामी भी उस पुर्धप्रकाश को लिये बैठे थे जो व पत्र पर भकित कराया गया | उत्पर उठा | सकता हु। प्रसिद्ध

है उसकी भयकर ब्रह्मद्वियो पर निशान लगा रहे थे। वे सब अश-दियों को संग्रह करके परोपकारिणी समा को भेजने कि ऐसा अध्य सत्यार्थप्रकाश ताम्रपत्र पर शस्त्रित कराया गया है। मेरे पास बहु ग्रन्थ नही था मैंने पहलीबार उसे देखा। कुछ स्वल मैंने भी देखे जैसे सत्यार्च-प्रकाश के सप्तम समुल्लास मे निस्कत के नाम से प्रमाण दिया है---

> 'ऋषयो मन्त्रदृष्टयो मन्त्रान् सप्रादुः।'

पर ऐसा पाठ निक्क्त मे कही नही है। ये तीन स्थानो के ट्रक्ड हैं ऐसा छापना चाहिए-ऋषय मन्त्रदुष्टय ' मन्त्रान् सप्रादु

(एक भयकर चक्का) दीवान बहादुर साहब ने सत्यार्थ जीवन संगीत

(पुष्ठ २ का शेष)

गीता में बड़े सुन्दर शब्दों में कहा है-

जातस्य हि ध्रुवो मृत्यु ।

ध्रुव जन्म मृतस्य च।

ग्रस्मिन् परिवर्तनशील ससारे

मृत को वान जायते।

रखते हुए स्वर्गीय स्वामी केवलानन्द

जीने भजन की एक कली में कैसा

यहा बड -बड विद्वान् हुए,

बलबान हुए धनवान हुए।

पर भीत के पजो से केवल.

भी बड़े मार्मिक शब्दों में इस प्रकार

मृत्युरीशे द्विपदा

मत्युरीशे चत्रवदाम् ।

तस्मात्त्वा मृत्योगींपते-

रुद्धरामि सभाविभे ॥

धर्वात मृत्यु दो पायो व बारपायो

पर एक सम शासन करती है। पर-

मात्मा कहता है कि बा, मेरे पास

बा, मत भयभीत हो क्यांकि उस

भूपति मृत्यु से तो केवस मैं ही तुम्हें

अथवंदेद दाशश्र

वर्णन किया गया है---

कोई रचना में आकर बचान॥

इम मृत्यु के शासन को वेद मे

इसकी बादवतता को ध्यान मे

प्रकार कही है --

सुन्दर कहा है---

यही बात किसी सन्त ने इस

प्रकाश के टाइटल पेज पर भी डा० रथुवीर का नाम देना स्वीकार नही किया पर इस ताम्रपत्र वाले सत्यार्थ प्रकाश पर सस्यार्थप्रकाश के प्रत्येक पुष्ठ पर सेठो के नाम, दुकानदारों के नाम फर्म के नाम, कम्पनी के नाम पूर्ण पते सहित ताम्रपत्र पर अकित किए गए हैं। सत्यार्च-प्रकाश को ताम्रपत्र पर अफित करके ग्रमर नही बनाया गया है। प्रत्युत सत्यार्थप्रकाश की छाती पर व्यापारियों को पूर्ण पते सहित ताञ्चपत्र पर अकित किया गया है। इसीलिए उन्होंने धन दिया होगा। उस दश्य को देखकर एक गहरा घक्का मुक्ते लगा। यदि आज दीबान बहादूर साहब जीवित होते तो ऐसा जवन्य कृत्य कभी न होता। पता नही परोपकारिणीसभा के लोग कुछ देखते हैं या नही । वह सत्यार्थ प्रकाश लगता नहीं । को लियो सत्यार्थ प्रकाष का ऐसा नहीं जो मृद्रित सत्यार्थप्रकाश पर जैसा डाला जाता है। सावंदेशिक सभाको इस दृश्य का ज्ञान नहीं है। बार्यजगत को चाहिए कि इस ताम्रपत्र वाले सत्यार्थ प्रकाश को गलवा देवे यह आर्यसमाज

पारचात्य चिन्तक (Andrew Jackson) ने भी इस मृत्यू के शासन की इस

के इतिहास मे एक कल दूहै। 🔵

When death comes, he respects neither age nor ment He sweeps from this earthly existence the sick and the strong the rich and the poor and should teach us to live to be prepared for

अन सिद्ध हुमा कि मृत्यु कभी भी और किसी को भी धादबोच लेती है यह एक घतिषि की तरह है जिसका सत्कार करना हमारा कर्तंब्य है। यह टाला जाने वाला कोई साघारण निमन्त्रण नही समकता

बन्धवो । हमे चाहिए कि इस क्षण भगुर ससार मे इस नदवर जीवन को ग्रसारता को समक्र कर इसके पालन पोषण मे ही धासकत हो कर अपना बहुमूल्य समय व्यर्थ नष्ट न करे। बुद्धिमत्ता तो इसमे है कि मौत रूपी बज्ज गिरने से अचेत होने से पूर्व ही---

'प्रणोति श्रभिद्यावर्त्तस्व

वेद विहित कार्यों-स्पवहारों को करते हुए उस धानन्दस्वरूप हिरच्य-रूप को ग्रपना रक्ष ह बना से-'श्रॉन पुरा तनवित्नोर वित्ताबि-

दिरण्यकपमवसे कृष्ध्वम्। ऋग् ४।३।१ यही बात उपनिषद में भी कही

'महदभय वज्रयेतच्चत य एसदविदुरमुनास्ते भवन्ति ।' इसी क्रीमक जीवन परिवर्तन को विद्वानों ने 'बीवन सगति' के नाम से पुकारा है उद्दें में इसे 'तराने जिन्दगी भीर अञ्चल भाषा में इमको

कहा गया है। इस जीवन समति को एक उद्देशायर ने दरिया केरूप में सम्बोधित करके उससे ऐसे कहलवाया है। यह रचना हो वर्ष पुरानी है।

शायर दरिया से--

सुना प्यारे दरिया कुछ अपनी कहानी, कहा से तेरा बहुना भाता है पानी। कि वर जारहा है टहसता - टहसता, कदम तील-तील भीर बन-बन है चलता।। दरिया का उत्तर --

> पहाडी है अपनी जन्म भूमि व्यारी. अडी ये की बसा की हस्ती हमारी। था ऊर चे पै सूत के इक भवना भूला, चमन चार जिसके था एक फल निक्ल भाषा इकदिन मैं दीत्राना बनकर, मचाता चला शोर स्ना-साके चनकर। कही फूल थे मुक्के पै भुक भुकके झाते, लजा करते होटो मे कुछ मुस्काते।। पहाडी के नीचे मैं बहुत उखला कदा, किनारों के अन्दर चलामे मटकता। भगर घव गया वह सवी का जमाना, वह जाता रहा मोजो का सब तराना॥ धब तो माता है कानों में शोरे समन्दर, गया कोई दम मे पियदो के घन्दर।।

अत प्रन्त में यही कहगा कि हमारे पाठको । यदि जीवन को सफल करना चाहते हो, भीर मृत्यु के भय से बचना चाहते हो तो--

"नारावण वो चीवों का ज्यान रक, यदि चाहता है कस्याण । याद करने की मील, भवने को थो भनवान्॥ 🗅

प्रकार पृष्टिकी है---बचा नही है। कृष्ण भगवान् ने

विश्वेभि सासिभि. सह।" श्यर्व-७।१०५।१

प्राचीन योग सारिनयों ने प्राच विद्या का विकास किया, जिससे प्रयेक गनुष्ठ स घन निहीन होने पर प्रयोक पनुष्ठ स घन निहीन होने पर कर सकता है उन्होंने प्राणायान तामक एक ऐसी किया का प्रविष्काच एव प्रयोग किया जिसमे मानव शरीर मे होने वाले प्राण का नियमन एव सवधंन मनुष्य के हाण मे हो गया। मनुष्य ने इनमे न केवल सारीरिक हवाहस्य लाम ही किया, प्रपित्त मा

मुस्य प्राण दस है—प्राण, अपान, समान, उदान, स्यान, नाग, कूर्म, ककल, देवदल भीर धनञ्जय।

प्राण—धाल, कान मे मुल-नासिका द्वारा निकलता हुमा ठहरता है। मीतर के पूषित परमाणु बाहर निकालता है। मुक्त ग्रन्न को पुरीप, जल को स्वेद एव पूज और रसादि को बीर्य बनाना प्राण का हो काम है। इसके स्वस्थ रहते से पुष्प का बीर्य बढता है एवं हिमबत्जमता है। तथा स्त्री के रजीविकार नष्ट

धरीर के उत्परी भाग से यह क्षम करता है। इस प्राण के ताब सुर्य का प्रुच्य सरस्वन्य है। क्यों कि दोनो तैजब हैं। इसी कारण परमे-इबर ने धारीर के उत्पर के भाग मे नेकों को बनाया है। इसी सम्बन्ध मे सुर्योदय होने पर नेकों की धर्मित बहुती हैं।

अपान—द्वित वायु को गुदा हार से निकालता है। गुदा से मल, एपस्य से मूज और मण्डकोध से वीयँ निकालता तथा गर्भ को नीचे से बाता है। स्त्री गर्भाधान के समय शीयँ को इस प्रपान बायु से ही प्रदुण करती है। अतएव अपान बायु के क्षाती।

गरीर के नीचे का भाग इसके प्राथीन रहता है। पार्थिय प्रग्नि के सम्बन्ध से प्रपान की चाल नीचे को है।

जठरानिन भी पार्षिव ही है। इस के कि रहने से प्रपान बायु की समता और अन्यया होने से विवसता हो जाती हैं। इसी कारण प्रपान बायु के क्रुपित होने से रोग हो बाते हैं। स्बप्न में बीयें-पात होना भी श्रेपार्तुं बायु के (बिनवने पर) निमित्त कारण से होता है।

प्राण व संपान का परस्पर सवन्य यह है कि जिस नाड़ी से अपान बायु -नीचे को जाता है स्वरी नाड़ी से अपर

जीवनोपयोगी प्राण-शक्ति

--सोमवेद

*

को बाणी निकलती है। इसी कारण बोसते समय प्रपान वायु नहीं निक-सता प्रवता जब प्रपान वायु निक-सता है तब बोल नहीं पाते। प्रतः इस प्रक्रिया का भी प्यान रसना प्रनि-

समान—शरीर में सर्वत्र रस पहु-चाता है। धर्मात् मुक्त धन्न-जल को यचाकर शरीर के सब म गों (अस्पि, मेदा, चर्म, बनाने वाली नाबियों) को तदनुकूल यमायोग्य विमाग देता है।

व्यान---कमल के तत्य माकार वाले हृदय मे ही यह रच रूपी शरीर का स्वामी जीवात्मा रहता है। इसी हदय में एक सी एक नाड़ी हैं। इन एक सौ एक नाडियों में से एक एक की सौ-सौ शास्त्रा नाडी फटती हैं। अर्थात् मूल एक सौ एक नाडियों मे एक-एक मे नौ-सौ शाखा निकलती हैं। उन शाला नाहियों मे से एक-एक के बहत्तर-बहत्तर हजार प्रतिशाला नाडिया होती हैं। इन मूल और पतिशास रूप स्वनाहियों में व्यान प्राण विचरता है। शरीर में सर्वत्र ग्रनि करता है। जिमसे शरीर में चेड्टा शादि कर्म, जीवात्मा मन के सयोग से करता है। सुक्ष्म एव स्थूल नाडियों मे रक्त सचार करना भी इसी का कार्य है।

उदान — कम्ठमूल में रहता हुमा श्विरपर्यंत गांत करता है। शारीर को उठाये रखना भीर बल-पराकम वृद्धि करना इसका काम है। यह धन्न-पान को भीतर खीचकर समान वायु को सौंप देता है। सुषुम्णा नाडी के साथ नामि से उत्तर की और उठता हुमा पुण्य-कर्म से जोवात्मा को सुख भोग की उत्तम सामग्री से युक्त तथा पाप-कमें के सचित होने पर दुख की सामग्री और तियंगादि योनि प्राप्त कराता है। तथा पुण्य-पाप सम होने पर मनुष्य योनि श्राप्त कराता है।

उदान प्राण के द्वारा ही घरीर के प्राण का बह्याच्य के प्राण से सबस्य है। योगी बन इसी के द्वारा स्यूल खरीर से निकलकर लोक-लोकान्तर में घूम सकते हैं।

नाय-इसके द्वारा खींकना, डका-क्ना, अनिष्क्रित का बमन करना एवें

दस्तादि होते हैं।

कूर्म---इसके द्वारा शरीर में सकोचनीयकार्य, यथापलक मार-नादिहोते हैं।

कृकल--इसके द्वारा श्रुत्पिपासा-भूख प्यासादि की उत्पत्ति होती है।

देवदत्त---इसके द्वारा निद्रा, तन्द्रा, अम्हाई भ्रादि किया होती हैं।

भनञ्जय--इसके द्वारा मूर्छा, बेहोशी तथा खरीटा भरना भादि होते हैं।

विवेषन----प्राण घारण करने की रीति जब जात हो जाती है, तब चलु के चित्तहोंन होने पर भी पुन उत्तम बुब्धि प्राप्त को होने पर भी पुन उत्तम बुब्धि प्राप्त को जा सकती है। प्राप्त की स्थानना होने पर भी पुन जाण की स्थित्त की जा सकती है। भीग भीगने की घषस्यता होने पर भी भीग भीगने की चायता हो सकती है। मृन्यु पास धाने के कारण सुर्यंदर्शन धावस्य होने पर भी दीर्ष धायुड्य की प्राप्ति होने के पदचात् पुन सुर्यं की उपासना हो सकती है। प्राप्त होने दि दसने से अप्त प्राप्त होने दि दसने से उपायन ही सकती है। प्राप्त सी ता रखने से यह सब कुछ हो मक्ता है।

प्राण, प्रपान दि सब प्राणो की प्रतिकटा यदि उत्तम रति से की बाए तो मनुष्य नात ज्योति के प्राप्त करता है। इस ज्योति से मनुष्य मनसा, बाचा धोर कर्मणा शुद्ध 'विष हो जाता है। क्योकि प्राण हमारा इत्तियों का राजा है।

बरीर में प्राण की गति ठीक स्हुवे से क्षिर की सुद्धि होती है सौस् सपान की गति से मस-मुमोरसनं

उत्तम प्रकार से होते हैं। इन दोनों के बशीभून होने से शरीर क्यूणं पेण नोनेग रन्दा है। ग्रर्थात् प्राण से शक्ति का सबधन तथा प्रपान से विष को दूर करके स्वास्थ्य का सर-क्षण होता है।

शत्य इन्द्रिय होने से मनुष्य भोगों को भोर तीव गति से बाता है। बौर पतित हो जाता है। इस प्रकार भोगों में फसे हुए मनुष्य प्राण गक्ति सो बैठते है। क्योंकि शरीर में स्वस्थ प्राण के होने पर ही बीयं स्वस्थ प्राण के

जीव गर्म के अन्दर रहना हुमा भी प्राण-अपान के व्यापार करता है। इसी कारण वहा उसका जीवन चलता है। यह प्राण ही जब प्रेरणा करता है तब जीव गर्म से बाहर प्राता है।

हमारे शरीर में जो जो इन्द्रिया-दिक शित्रवा हैं वे सब प्राण के माध्यम से ही कार्य करती हैं। मुब्त दशा में सब इन्द्रियां तमीगुण रूप प्रम्ववार समुद्र में डूब जाती हैं। इसी कारण शरीर का स्वामी जोवारमा न देखता, न सुनता और में स्वाप्त हैं। इसोकि उस समय मन भी तमोगुण रूप माध्यकार में जीन हो जाता हैं। तब भी एक प्राण ही मनुष्य को जताता है कि वह जीवित है। प्राण के शरीर से निकलते ही सब इन्द्रियों की शक्ति भी निकल जाती है।

शरीर में प्राठ चक हैं। मुलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूरक, सूर्य, धना-हत, विशुद्धि, ध्राज्ञा और सहस्रार-इनमें भाग कार्य करता है। कम्पान गुवा से लेकर सिर तक माठ स्थानो में ये घाठ चक हैं। पीठ के मेरदच्छ में इनकी स्थिति है। मस्तिष्क में सहस्रार चक का स्थान है। प्राण का एक केन्द्र द्वस्य में है। प्राण-व्यान द्वाहा प्राण-चक की सार्य पीक्षेक्ष मति

(बेद पूष्ठ = पर)

भायंसमाज भीर बाबू शिव-व्रत लाल

एक नया प्रहार—सितम्बर मास के दूसरे सप्ताह के दैनिक प्रवाब केमरी के एक शक मे श्री खुशवन्त सिंह काएक लेख प्रकाशित हुन्ना। यह लेख हिन्द समाचार उर्दू में भी छपाहोगा। मैं यदाकदा श्री खुश-बन्न सिंह के लेखों को विहगम देख्ट से देखा करता है। यह महोदय हिन्दुकों पर विशेष रूप से भार्यसमाज पर बोट करने से बूकते नहीं। बलिहारी पजाब केसरी के सञ्चा-लको की जो हिन्दू जाति पर ऐसे कृपासभौं के प्रहार करवाने में भ्रपनी उदारता मानते है। इस समय मेरे सामने पजाब केसरी मे छवा उप-होक्त लेख नही।

इस लेखा में श्री शिवज्ञत लाल एम ए की बडाई करते हुए लिखा है कि वह बड़े योग्य भीर भाष्या-त्मिक व्यक्ति थे। बहुएम ए मे एल एल डी थे। इस विभृति की प॰ हसराज (महात्मा हसराज) वह ला॰ लाजपत राय धार्यसमाज मे लाए, ग्रार्थ गजट का सम्पादक बनाया। फिर भार्यसमाज के नेताओ द्वारा दूसरे मती की आलोचना से दुली होकर भार्यसमाज को छोड गये। होशियारपूर के श्री फकी र बन्द इनके उत्तराधिकारी बने। चिवद्रत लाल जी राधा स्वामियो की दयाल बाग शास्त्रा के गुरु बने भीर दाता दयाल नाम से सम्मानित किये जाते थे।

बेद है कि झार्यसमाज ऐसे कूठ को पोल खोलने में प्रमाद करता है। झार्यसमाज पर बडी चतुराई से प्रहार किये जाते हैं मौर हमे पता ही नहीं चलता।

सुशवन्त्रसिंह जी को पताही नहीं कि दाता दयाल शिवव्रत लाल बार्यसमाज में लाए नही गये, वह बाप ही बाए थे। इन्हें यह भी पता नहीं कि एक युवक को प्रोत्साहन देवे के लिए उन्हें झार्य गजट का मम्पादक बनाया गया था प्रन्यथा धार्यसमाज मे तब प्रस्थात दार्शनिक **डा**० दीवानचन्द जैसे युवक मार्य गजट की सेवा करने के लिए दे। भाई परमानन्द जैसे प्रतिभाशाली क्षपस्वी विद्वान् की लेखनी की तब षुम मची हुई थी। श्री शिववृत ने आर्थ गजट नहीं छोडा, उन्हे आर्थ गजट छोडना पडाया ऐसे कहिए कि ब्लहे प्रार्थ गजट से हटाया गया,

मनियमितता के कारण । वह विमितता क्या वी ? इस पर धनी

कुछ तड़प कुछ झड़प

लेखक-प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञास्' वेद सदन ध्रबोहर

में कुछ नहीं लिखता। यह महात्मा हसराज जो की सञ्जनता थी कि उन्होंने इस पर कोई कड़ा दण्ड न दिया।

श्री श्विवत्रत लाल जी तो बेदाती भो बने। बह स्वामी राम तीर्थ के भी गीत गाते रहें। फिर बेदान्त क्यो छोडा ? श्रीमान् जी बह तो यहा से बहा, बहा से यहा, वहा से कही भीर वृगते ही रहें।

रही खण्डन के कारण प्रार्थ-समाज को छोडने की बात सो मी खूब कही। शिवदत लाल जी ऋषि के गीन भी गांत रेत वह क्या उन्हें जीव चा कि बांधेसमाज प्रदे-दिक मतो का खण्डन करता है?

राधा स्वामी मत ने क्या दूसरी का खण्डन नहीं किया ? राषा स्वामियों की पुस्तकों में आपके सिक्ष मत का भी खल कर खण्डन किया गया है, पढ़ना हो तो दाता दयाल जी के उत्तराधिक। स्थि। में से राघा स्वामी गुरु साहिव जी महा-राज का साहित्य पढ नोजिए। राघा स्वामियो का स्पष्ट लेख है कि पूर्व के ऋषि, मुनि महात्मा, व्यास, वसिष्ठ दामकृष्ण भीर इस्लाम के नवी भी सब भटके हुए थे। दाता दयाल के जिन फकीरचन्द जो (परम दयाल) की भाष स्तुति कर रहे है उनके शब्द हैं-- "वो सब के सब वास्त-विकता से अपरिचित थे।" राषा स्वामी गुरु जी का वचन है-

"नही झारम परमास्म मानूँ"

फिर लिखा है "शल्लाह खुदा स्मूल न मानी"

> "ऋषि मुनि सब घोसा साया । क्या व्यास वशिष्ठ भूनाया॥"

ईसाई मत के सस्थापक ईसा वा जन तीर्थकुरों पर जी चोट की नई है। प्रमाण चाहिए तो हम दे वें। वेसे प्रथायार्थ प्रमाणक समीक्षा तो अनुचित्त है। यदि सम्म समाज में विचारक शास्त्र चर्चा करते हुए मुक्ति वा प्रमाणों से एक दूसरे का सण्डन करें तो इससे चबराना नहीं चाहिए। सन्त कवी ने बना सतता (जुन्नत) की, मुलि पूजा साबि को तीकी साकोचना नहीं की? सिक्क गुरुक्षों ने क्यादूसरों का खण्डन नही किया?

जिन परम दयाल फकीरचन्द जी की जुवाबन्त सिंह बडाई करते हैं, वह परम दयाल आप प्रवचनों में अपनी बडाई प्राप्त ही कर किया करते थे भीर उनके द्वारा दूसरों का जण्डन पडना हो तो 'जनता जनादंन' साप्नाहिक होशियाब्युर का '/१४ अपने पड़न के जा एक ही अक आद से मन्त तक पढ़ ले, सब पठा चल जावेगा। मत मार्यसमाज पर जण्डन का कटाल करना अपनी मजानता को वर्धाना है। यह सस्ती लोकप्रियता पाने के लिए एक काय-रता पूर्ण प्रहार है।

यह खद्मवेशी समाज सेवक-

श्रबोहर मे १८-८-१६८५ ई० को एक शिव मन्दिर का शिला-विन्यास किया गया। इसके लिए धनेको लोगो को निमन्त्रण पत्र भेजे गये। शिवलिङ्ग पूजा के लिए बनाए गये इस मन्दिर के मचालक कौन हैं, यह पढकर पाठक चौक पडेगे। उस निमन्त्रण पत्र के नीचे सचालक के रूप भे दो नाम हैं एक है अर्थ हस-राज सार्य जो सब विधान सभा का चनाव लड रहे है भौर दूसरे महा-पुरुष हैं डा॰ राजकुमार बौहान। बहु श्रीमान् अब इस घडी हरियाणा के नन्मोला कस्बा के डी० ए० बी० कालेज के धाचार्य है। यह महोदय एक ही सनय में दो दो आयेसमाजो के सदस्य रहे हैं भीर श्री हसराज भार्य यहा के भार्यसमाज के प्रधान रहे हैं। श्री चौहान वही महानुभाव हैं जिनको वेशों ने प्रपनी देहली की बलिदान शताब्दी के नगर कीर्तन का भार सीपा था। ऐसा मैंने तब पढा या । शार्यसमान को गम्भीरता से सोचना है कि बोट नोट के चक मे फंसे लोगों से समाज को कैसे बचाया जावे । सस्ती लीडरी के लिए माज अपवेश में कई प्रकार के लोग समाज का धनिष्ट कर रहे हैं। पुराने आयं समाबी वैदिक मर्यादा वा वैदिक संस्कारों का प्रचार करते के लिए इढ़ प्रतिश वे । उन्होंनि कितने कव्ट सहै। वैर विरोध का सामना किया परन्तु बनमगाए नहीं । बाहए ! ऐसे महानुसावों से समाय को बचावें।

कुछ भूलो का सुधार-

धार्ष प्रावेशिक उपसभा हरियाणा ने महर्षि बलिदान शतान्धी
पर एक स्मारिका निकासी मुझे
यह स्मारिका धभी धमी प्राप्त है
। इसमे सेरे नेस से छापे की
धमुद्धियों के कारण कुछ सयद्भूर भूसे
हुई हैं। भार्य सन्वेश द्वारा में कुछ का
सुवार करना चाहता हू। कारण यह
है कि यह धरयस्य महस्वपूर्ण बातें

साब युविष्ठिर सिंह रेवाझी बाजों की पत्नी प्रवम भारतीय महिला बी जिसे भारतीय नव जान क्या के जवा काल में किसी सरबा ने कोई पद दिया। यह रेवाडों के आयंसमाज की प्रवान चुनी गई। स्मारिका में राव युविष्ठिर जो की पुत्री खपा है। यह पुत्र छापे की है। वतंमान केन्द्रीय मन्त्री राव वीरिक चिंह उन माताजों के प्रपात है।

मेरे लेख में कुछ विक्तवों कन्हें वा लाल जो प्रत्यक्षपारी के बारे में छूट गई जिससे देहराहून के महाघय मुहम्मद उमर का नाम अधुद्ध छ्या है उनका नाम ऋषि ने श्री अलख-घारी लिखा था। मुरदासपुर के श्री लाला हरजस राव (मीलाना प्रन्दुत प्रजीज) Extra Asstt Commussioner का नाम भी अधुद्ध छ्या है। लोज करने वाले विद्यान् नोट कर

प्राण शक्ति

(পুৰুত ও কাহাৰ)

होती है। प्राण का एक भाग शरीय की शक्तियों के साथ सम्बन्ध रखता है। दूसरा भाग धारमा की शक्ति के साथ सदैव सबन्ध बनाथे रखता है। वसाया हो प्राणों का बायार है। इसी के धाम्य से शरीर के बीच प्राणों की स्थित रहती है।

निष्करि-जो मनुष्य तस्य से प्राण को जानता है यह जीता हुआ ससारी सुख मोगकर प्राणायामादि क्य योगाम्यास करके झात्मज्ञान युक्त हुआ मरने के पदचात् मुक्त हो जाता है।

> पता --डी० ए० वी० मा० स्कूल शालीमार बान, दिस्सी





रूढ़िवादिता के खिलाफ जंग की शुरुआत

मुस्लिम समाज इप समार बहुत चवराका क्रुका है। १४०० ताल बाद इस्लाम में यह भूकम्प भाया है जिसने इस्लाय की बाबोदा पडती दीवारी को हिलाकर रख दिया है। रुढिवादिता के जाका को वक्टन वाले मुल्लामी के दिमाग पर शाहबानो केस वे करारा ऋटका क्या है। वे इस समय क्षव्य हैं कि कही प्रशिक्षित बहुल मुस्लिम समाज बच्चे प्रविकारों को पहचानने न लग जाये और उनका महत्त्व समाप्त न हो बाबे। सुश्रीमकोर्ट के इस फैसले को जो कूरान के दायरे के घदर बिना पश्चक जा ब हस्तक्षप किये हमा है उसे गलत साबित करने वालो के लाय दिन्द्रव्याची समाज तक सीमित नहीं हैं बल्कि इसको सीमा ससार के सारे मुसलमान देशों का परिधि तक फीलो हुई है। वास्तव मे शाहवानो कस का यह फसला इन सार देशों की खुली चुनौता है जा घम को झाड लेकर झौरता पर चार झत्याचार करते हु और उनका अधिकार हजम करते रहे हैं। यह क्रान्तिकारी कदम उन लोगो के विरोध में है जो माजतक भारत को उतक सहा सधिकारों से विवत करते रहे हैं। शाहबानों केस से यह स्पष्ट 🛊 🗑 📲 बढाई केवल मात्र मुस्लिम माहलाओं का लगई नहीं है बल्कि इस बढाई में हर वह औरत बामिल है जो किसी भी धम, समाज देश का हा बीर बत्याचारी को किसी भी रूप में सहन कर रही हो। सम्बन्त इसी बुदबा धीर विस्तृतता के कारण इसका विरोध इतना व्यापक हो रहा है जा कि जमानवास है।

शाहबानों की सादी १६३२ में इन्दौर के एक बकोल श्री गहम्मद शहमद के साथ हुई थी। १६७५ तक पांत पत्ना का जावन वडा सुखमय बीता। मतलब जावन के कामतो ४४ वर्ष जो बेगम बाहबानो ने प्रपने पति के साथ विज्ञाये हुर्व और उल्लास से रहे। १६७५ ये पढि मुहुम्मद ग्रहमह वे यकायक वेगम शाहवानो को घर से बाहर निकास दिया। बेगम शाहवानी ६६ बद का बुढिया हो चुको या। इस उम में विदका सावरा द उती। कौन इस उन्न में उसे पत्ना स्वोकार करता। मासिर उसे भदाक्त हो एक सहारा दिखानी दो। बौर उसने इन्दौर के न्यानिक मिनलेक की बदालक में की बदादी कानून के तहत १२५ वी बारा म अपने पति पर ५०० रुपये प्रति-मास भरस पाषस का बावा ठोका। न्यायालय ने बेबन बाह्बानी के पक्ष ने निर्साय दिया भौर मुहस्मद बहुमद को २५ स्पर्क प्रक्रियास केने का आदेव दिया। यह निराम प्रमस्त (६७१ में दिया नवा प्राकृताना का यह राश्चि प्रपत्ने सच के सिए बहुत कम जमा । उन्होंने सध्यप्रदेश उच्च न्यायालय में त्यायिक मजिस्टू ट के फसल पर पुनावचार के बिह् वान्विका दायर की। जुलाई १६५० में उच्च न्यावालय व मुहम्भव बहुबद को १७६-५० र० प्रति माह देते का आदेश दिया । इस मुहम्मद शहमद नै सर्वोच्न न्यायालय स्त्रीम कोर्ट मे वाचिका दाखिल कर उच्च न्यायालय के निर्श्य को गलत बताया। सर्वोच्च न्यायालय के पाँच न्यायाधांकों का सन्वन्यवन गाउ ने इस याचिका पर सुनवाई शुरू को । इसमे प्रमुख मुख्य न्यायाधाश श्रा वाई॰ बो० चन्द्रचह के। पोठ ने मूहम्मद शहमद की श्रपालों को खारिज कर दिया। देश के इस हवोंच्य न्यायालय की पीठ न निराय दिया कि "एक वलाकश्रदा मुस्लिम भीरत तब तक अपने पूर्व पति को पत्नी कहलाएगा अब तक वह दूसरा शादी नहीं कर लेती। प्रत बारा १२५ के धन्तर्गत उच नहिला का यह प्रविकार प्राप्त है कि उसका पति उसे जोवन यापन का खर्चा दे। पर्सनल ला के प्राव-वानो को मुझावजे से कोई लेना देना नही है।" मुस्खिम पर्सनल ला मे यह शावधान है कि इहत को समयावधि में पति धपना परवा को जीवन यापन हा सर्चा देगा। इहत तीन मास तक की वह धवधि है जिसमें पत्ना पाक बीवन जीते हुए किसी दूसर मद के साथ परनी वाला सम्बन्ध नही रख तकती। इसके बाद ही वह दूसरी शादी कर सकती है। सुप्रामकोर्ट ने अपने निर्माय में यह स्पष्ट किया कि बारा १२५ के अन्तगत एक मुस्लिम पित को प्रपनी तलाकश्रुवा परनी को इहत को अवधि के बाद भी जावन यापन का क्षर्य देना होगा। सबचानिक पीठ ने भीर स्पष्ट किया कि "सही स्थित यह है कि यदि तसाकश्रदा परनी जीवन यापन करने में सक्षम है तो इहत के बाद रित की जिम्मेदारो समाप्त हो जातो है, उसे सब देने की जरूरत नही। बेहान त्यानाबीकों वे कहा कि वह कहना उचित नहीं है कि एक मुस्सिम महिला बारा १२६ के बलावेंत बीवन नावन क्षर्य की नांग नहीं कर बकती।

मुस्लिम पर्सनल ला में 'मेहर' वह राघि नहीं जिसे तलाक के बक्त दिया जाये।'' न्यायाधीकों ने यह भी कहा कि धारा १२४ माने चिरित्र में पूरी तरह से धर्म निरफ्त है। सवेधा-निक्क पीठ में पूरे तरह से धर्म निरफ्त है। सवेधा-निक्क पीठ में पूरे देख में सभी वगों के लिए समान विखिल कोर्ट बनाने का सुभाव दिया। उससे राष्ट्रीय भ्रासण्डता मजबूत होगी। विद्वान न्यायाधीकों ने यह भी कहा—"भारतीय सविधान का ४ अबा मुलेख मृतपत्र" बनकर रह गया है जिसमें कहा गया है कि सरकार को पूरे देख में समान सिवित्र को बाहू करने को मान्यवा दिलांगे के प्रयत्न करने चाहिए।

सर्वोच्च स्यायालय के इस निर्शय को लेकर पूरे देश में एक बार तहलका मचा। सरकार के प्रत्यर धीर बाहर इसके पक्ष धीर विपक्ष में मत प्रकट होने लंगे । केन्द्रीय सरकार के दो मन्त्रियों ने इस विषय पर बड़ी बहादुरी के साथ परस्रर विरोधों विचाए उथक्त किये। प्रबुद्ध नेता करूर मुस्लिम समाज को समय के साथ चलने की सलाह दे रहे हैं। बनतापार्टी के महासंचिच संयद धाहबुड़ीन ने सर्वोच्च न्यायालय के निर्शय को मुसलमानो के बार्मिक मामले में दक्षक माना।

भीर इवर बारत के मुसलमान कह रहे हैं सविधान के अनुच्छूद ४४ को वातो समाप्त कर दिया जाए अववा मुख्यमानो को इसका विधिकार क्षेत्र से बाहर रखा जाये। खास तौर पर भाल इण्डिया मुस्लिम लीग के प्रव्यक्ष सुलेमान सेठ धीर मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड यह शोर मचा रहे हैं। बाहबानो बेगम ने ७ साल छोटी घदालत से लेकर बडी बदालत तक बडी दिने दो के साथ वह मुकदमा लडा है। ब्राखिर उसकी फोली मे उसका नुह मौगा कल इन्याफ के साथ धाही गया। परन्तु कट्टरपथी मुस्लिमी का दवाब की उस शबला पर लगातार पडता रहा और वही हुआ जिसका हर था वह मुक्त गई। उसने सर्वोच्च न्यायालय के फैसले को वापिस लेने को माग कर दी। कुछ सुचारवादी मुस्लिम सगठनो ने यह बारोप लगाया कि रूढिवादी मुस्लिम संगठनो के दवाब मे ग्राकर ही उसने ग्रपना ताजा वक्तव्य दिया है। पू॰ पू॰ मुख्य न्यायाघोश श्री वाई बो॰ चन्द्रचुड ने कहा है कि इस फैसने से एक सामाजिक उथल-पूबल पैदा हो गई है जिससे यह ,निष्कर्ष निकलता है कि फैसले पर पुनर्विचार हो । उन्होंने कहा इस फैसले से अरी-यत में हस्तक्षप के झारोप का कोई दम नहीं है। अदालत को कूरान के सदर्भ मे शरीयत की विवेचना का श्रविकार है। श्री चन्द्रचंड ने कहा इस फैसले पर जो विवाद खडा हुमा है उसके लिए मुसलमान कट्टरपथियो की धर्मा-न्यता भीर किसी परिवर्तन को न स्वाकार कर सकने के प्रवेषे को ही दोषी ठहराया जा सकता है। उन्होंने कहा इस फसले के विरोध से यह सिद्ध हो गया है कि इस तरह के फैसले की समाज मे जबरदस्त आवश्यकता थी।

हमारा कहना इतना ही है सरकार ४४वे अनुच्छेद के अनुसार समस्त देख में एक कानून लागू करना चाहिए तथा समय को प्रावाज के साख चलना चाहिए । भायं यवको [।]

इस समय विश्व का प्रत्येक राष्ट यह वष भ्रान रह य यू रूप मे मा रहा है हमारे दश मे भी ११ जनवरी १८ ८५ को स्व मी विवेकः न्दके न्म दिबन ४४ हनारै ख्वा प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी नै युवावर्ष का उद बाटन किया था भौर ११ जनवरी को युवा दिवस भी बोषित किया। उस समय यह श्राशा बधी यो कि हमारी सरकार युवा-बग को एक रचनात्मक दिशा देगी भीर युवाशकित कादेश के विकास के लिए उपयोग करेगी। पर मुक्ते यह कहते हए अत्यन्त दुख हो रहा है कि युवा वर्ष समाप्त होने को है, पर सभी तक देश में न युवको को कोई रचनात्मक दिशादी जा सकी है न देश के विकास के लिए उनका कोई सदुपयोग किया गया है और न उनके लिए किसी काय की कोई ऐसी योजना बनी है, जिससे वे लाभा" न्वित हो।

युवावर्ष के नाम पर इस देश के कुछ युवक मास्को में आयोजित युवा समाराह में भाग लेने के लिए गये थे, पर बहा पर इन युवको ने अपनी जिस विलासी वृत्ति का परिचय किया उससे मेरे देश की प्रतिक्ठा पर आव आई। नवस्वर मास में दिल्ली निद्द विद्यालय की और से निगुँट देशों के युवकों का एक सम्में कन बुलाया गया पर यह सम्में नन बुलाया गया पर यह सम्में नन बुलाया गया पर यह सम्में नन बुलाया निया किया किया कर सम्में स्ता कुकी के लिग किया नवस्वर म्यान में युवको के लिग किया नवस्वर म्यान में

मैंने बचपन मे एक कविता पढी थी, जिसकी पहली पक्ति थी— ' बताए तुम्हे जवान जवानी किसकी कहते है, दें जग को जीवनदान जवानी उसको कहते हैं।" इस पक्ति मे यौवन को किसी झायु विशेष के साथ नहीं बाधा गया, वरन उसे एक पवित्र भौर ऊची भावना के साथ सम्बद्ध किया गया है। युवक वह है जो स्वार्थों को तिलाजलि देकर नि स्वार्थ भौर परोपकार की भावना से राष्ट्र, नही नही विश्व के कल्याण के लिए अग्त्मसमर्पण की भावना रखता हो जिम समय महिष दयान व ने ग्राय-समाज की स्थापना करके श्रायसमाज कालक्ष्य ऋग्वेद कायह बाक्य कि कुण्बन्तो विदवमायम् स्थापित किया था, उस समय वे भो भागंजन मे यही प भावना भरना चाहते थे कि वे अपने स्वार्थों को छोड दें भीर प्रतिदिन यज्ञ करते हुए विश्व के कल्याण के 🗪 अपनो ब्राहृति, ब्रात्मबलिदान मावनासे भर उठ।

याद रखो. हमे विश्व को छार्य

युवा वर्ष पर आर्य युवकों के नाम सन्देश

डा० प्रशात वेदालकार

और ससार में जितना प्रश्निव है, जो धकन्याणकारी है, दुष्ट स्वभाव व दुष्ट कर्म है उन सबनी नष्ट करना है। क्ष्य वेद ने ससार को श्रष्ट बनाने की जहा प्रेरणा दी वहा ससार की दुष्ट प्रवृत्ति को नष्ट करने का प्रादेश मी दिया।

याद रखो ससार को श्रेष्ठ बनाना है तो पहले हुने स्वय श्रष्ठ बनाना होगा। साधु धौर मानदीय दृष्टि संऊ चा ब्यक्ति हो हुसरे को सत्कर्म पर प्ररित कर सक्या है। जो स्वय दुष्ट है बहु दूसरों की दुष्टता को दूर करने की बात सोच भी कैसे सकता है?

जब मैं तुम्हे कहताह कि तुम मञ्झे बनो तो मेरा ग्रर्थ होता है कि तुम्हारा सारा व्यक्तित्व पूर्ण हो। तुम शरीर से पृष्ट बनो। यदि तम शारीरिक दष्टि से ग्रस्वस्य ग्रीर दबल हो तो तम जीने योग्य भी नही हो। तुमने पढ़ा भीर सुना होगा---वीरभोग्या वसुन्धरा यह पृथ्वी वीरो के भोग के लिए ही है। तम्हे अपने मे बीरता की मावना भरनी होगी। बारताक लिए भपनी मासपेशियो को पुष्ट करना होगा। उसके लिए प्रतिदिन कठिन परिश्रम और व्या-याम करने का प्रपता स्वभाव बनाना होगा। कालिदास ने वहा था-शरीरमाद्य खलु वर्मसाधनम् । शरीर धर्मका भ्रपने कत्तंव्य की पति का प्रथम साधन है। यदि तुमने ससार को श्रेष्ठ बनाने का ग्रापना कर्त्तव्य पूर्ण करना है तो पहले भापने शारीर को पुष्ट बनाधो । मुभ्ते तुम्हे यह भी बनाना है कि वीरता वा पूष्ट शरीर स तुम्हे निर्वलो व अनार्थों की दुष्ट स्वभाव से रक्षा करनी है। बीर व पुष्ट होने का अर्थ किसी को सना-बदय र रूप से दबाना या प्रताहित करना नही है।

जब मैं तुन्हें अष्ठ बनने के लिए कहता हूं तब तुन्हें सच्छा भीर तीक्ष्ण मस्तिष्क वाला बनने की भी प्रेत देता हूं वाकि तुन्न भपनी भक्त दुद्धि से अपने प्राप्त घरीर का ठीक उप-योग कर सकी। तुम्हारा मस्तिष्क ऐसा हो जिससे नीर स्त्रीर विवेक की समता हो। सरय की पहुचानने धीव ससत्य की रहानाने भी समस्त्र हो। समय पर ठीक निषंत्र कर घोर इतना विकसित हो कि बबा 🗬 नये ज्ञान को ब्रहण कर**ै भें 🦏 स**क्षम हो। तभी तुम सम्बद्ध स्थीने कि विश्व में क्या हैम है और का काहा जब तुम्हे ससार के दुष्टी की नष्ट करने का कार्य सौंपा गवा है तो बिना विवेक व जान के तुम यह काम नहीं कर पाधीगे। ससार में कौन दुष्ट है धौर कौन साधु? यह बाल तुम विना धण्छे मस्विष्क 🖣 नही जान सकते । प्रपना बच्छा मस्तिष्क करने के लिए तुम्हे सदा धनवे माता पिता, किसी शक्ते गुरु व पय-प्रदर्शक के सम्पर्क मे रहना होगा ? उनके प्रति तुम्हे भास्था रखनी होगी। गीता में कहा है-- 'श्रद्धावान समते ज्ञानम्" श्रद्धां व विद्वास से ही मस्तिष्क में नित नया ज्ञान घाता है भीर विवेक शक्ति बढ़ती है। जो विचारधारा प्रनास्था का प्रचार करतो है वह हेय है। भाज समार में एसी भौतिकता पर बाबारित भ्रनेक विचारघाराए हैं जो व्यक्ति को भ्रनास्था का पाठ पढाकर उनके मस्तिष्क को विकत कर देती हैं। तुम्हे उन सबसे बचना है। मैं तुम्हे कहना चाहता ह कि तुम महर्षि दया-नन्द के शिष्य हो उन्हीं के प्रन्थों का मनन करो भीर उन्हीं से धपनी दिशा निर्धारित करो।

पर याद रखो पुष्ट घरोर धोर स्वस्य मस्तिष्क वाले व्यक्ति सी अघट आचरण के बोवा देखे यये हैं। मैं तुम्हे सच्छे वरित्र का भी उपवेस देवा याहता हूं। कोई भी ऐसा काम मत करो जिसे करने पच तुम्हे गर्व न हो। सच्छे चरित्र को निर्माणी यहीं हैं कि व्यक्ति जपने किये हुए काम का हर जगह वर्णन कर करता हो। यदि तुमने कोई ऐसा काम किया है जिसे तुम किसी को बता हो नहीं सकते तो वह निषद कर्म है, उससे बचो। तसी चरित्र पुष्ट होता है।

यह सच है कि झाज के यूग में सत्याजरण करने व ईगानदारी से रहने में सनेक कठिनाइयां साती हैं। पर तुम जिस कची और नहान् सरवा से सम्बद्ध क्लिंगोर विश्व देव पुरुष महाव दयानन्य की तुम सतान हो जनके सिण कक्ष जी कठिम नहीं

स्मरण रखो तुमने वही काम करने हैं जो दूसरों के कल्याण के लिए हो। यनि नम्बारे ियो काम से किसी को हानि होती हो उसे कभी मत करो। महाभारत मे धर्मकी परिभाषा ग्रात्मन प्रतिकलानि परेषान स्माचरेत' के रूप मे की मई है। दूसरे के प्रति वहा व्यवहार करो जैसा व्यवहार तम दसरे से चाहते हो। तम्हारे किसी नाम से किसी का दिल न दुखे। वरन तुम्हारे कामो से दूसरों का कल्याण होना चाहिए। महात्मा तससीराम ने 'परहित सरिन घरम नहिं कोई कह-कर मनुष्य को यही प्ररुणा दो थी। महर्षि दयानन्द ने भी भ्रपने ग्रन्थो म बारम्बार यही कहा है कि सपार का उपकार करना हम सबका परम धमं है।

मैं यह सब तम्हे इसलिए कहू रहा हु कि देश का युवा बा भाव किक लॉव्य विमुख है यह कुछ करना बाहता है पर उसे कुछ सुफता नहों है। उसके सामने माज कोई घादरा नहीं है। मुफ्त विद्यास है कि ट्या-नक के शिष्य उनके लिए बादर्श विद्य होंगे।

महर्षि दयानन्द भीर भार्यसमाज की प्रेरणा से देश को स्वतंत्र कराने के लिए इस देश के हवारी युवकी ने प्राणो की झाहति दी थी। सार्थ-समाज के सौ वर्षों का इतिहास इस बात का साक्षी है कि आर्यसमाज ने देश की स्वतन्त्रता में महान योगदान किया। श्री इयाम जी कृष्ण वर्मीने चिदेश में इण्डियन होमरूल लीग की स्थापना करके वैदिक संस्कृति का प्रसार विदेशों में भी किया, जिस से देश का स्वाभिमान जागा । लाला लाजपतराय स्थामी श्रद्धानन्द माई परमानन्द, सरदार प्रजीतसिंह, श्री मदनलाल ढीनरा, श्री रामप्रसाद बिस्मिल, श्री गैंदालाल, हा॰ रोझन सिंह जी सरदार मगतसिंह, चौ॰ मुस्त्यारसिंह श्री हरविलास शारदा तबा धन्य धनेक स्वतत्रता प्रेमियो ने महर्षि से प्रेरणा प्राप्त कर देश की स्वतत्रता के लिए धपने को बलि-दान किया। मालाबार के मोपला विद्रोह, राजस्थान व बगाम के धकास विहार के भूकम्प, देश-विभाजन भीर स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सन १६४७ में पजाब मे हिन्दी, रक्षा-बान्दोलन बादि द्वारा धार्यसमाज ने सदा प्रम्याय के विरुद्ध सच्चें किया।

देश को स्मलजता विकाने में, देख की कुरोतियों व प्रश्वमित्तासी कों विनष्ट करने में, देश की शिक्षा-प्रमामी में बारतियता का स्थव

साधना-शिविर का समापन

नुई दिल्ली १० नकम्बर १ वेक मस्यान में आधीजित सप्त दिवसीय साधना शिविर का समापन १० नव-म्बर को प्राप काल स्वस्तियाग को पूर्णाहित के साथ हो गया। इस शिविंग में ३५ शिविरावियों में बजू-बेंद के शिवसकल्प मत्रो का गहराई से चिन्तन विद्या । व्यक्ति ग्रीर सपूर्ण मानव-सभुदाय का विराट मन शिवसकल्प वाली धपनी स्थिति तक प्रत्येक विकारे हुए ट्टेमन को उठा सकता है, उठाना चाहता है। इस विराट मन की भाकाक्षा की पूरा करने से बरती की विनाशकारी शक्तिया पराजित होंगी भीर विनाश के साधनी पर प्रभावशाली ढगो से रोक लगाई जा सकेगो। मानवता

के विनाण को रोकने के लिए शाख की यहू सब से बड़ी और प्रथम शाव-स्यकता है।

ण्स उण्योगी शिविर मे महात्या दयान-द, स्वामी दयान-द, सत्यात-ध्यक्ष डा० सम्मदेव समा डा० वहीं प्रसाद मचोली माता नरेन्द्रायाँ सादि के प्रवचनों के संविरिक्त सच्चा सासन, प्राणायाम और ज्यानविधि का सम्यास कराया गया। वेदमनों के शुद्ध उच्चारण का अभ्यास सो कराया गया। समला जिविर मई १९८६ में सायोजित किया जाएगा।

> अभयदेव शर्मा प्रध्यक्ष वेद सस्थान, नई दिल्ली

भारत माता के सपूतो (पृष्ठ ३ का केव)

की सला में कुचलकर रख दिया है।
पुनरिप वे प्रियन की तरह बार-बार
सवर्षे रत हैं। ग्रन्त में उन्हीं का सब्यें
रग लावेगा। नकती, गहार, पदलो-लुप, हामता को ककती गई बेडियो बागे लोग इसी प्रकार काला मुह करके मुद्दी की जिन्दगी जियेंगे।

क्षो । ऋषि महर्षि, रामकृष्ण सादि की सन्तानो आज प्रावस्यकता है राजण तथा कस को मारने की, जिससे भारतमाता माता बनी रह-कर झापको धाशीर्वाद देवे। तभी प्रापको और प्रापकी मात्रो सन्तान को सच्चे धर्यों में भाशीर्वाद प्राप्त होगा।

धाज धावस्यकता है कर्ण धौर भामाखाइ की। उन लोगों की धाव-स्यकता है जिनके हृदय पटल में देख-मिन की हर मम्य भ्राग जलती रहती है। जो भारत विस्व को खादि दे सकता है मानवता का सदेश दे सकता है यह अभानुकरण कर रहा है। यह अपनी शक्ति नहीं पहचानता वह उस राजा के समान है जो बड़ राज्य का स्वामी होते हुए औ अपनी शक्ति को न पहचान कर अपने को केवल कोपड़ों यात्र का स्वामी मानता है।

साज हमारी पहली सावरयकता है कि देवप्रस्तों का दृढ समान करें। काल्तिकारी सीर खून खीला देने वाले भाषणों का सायोजन करें। लेखों पुरस्कों, पत्र-पत्रिकासों साकाशवाणी, दूरस्कांन सादि के माध्यम से देवसाब्ति का प्रचार करें। सम्पूर्ण वातावरण को देशसम्बत की वाणी से बुजायमान कर दें। तभी हमारी नसीं में भरी दासता नपु-सकता का विच निकनेगा सीर इनमें देशसब्त का वात्त उलक उठेवा। चर यर प्रत्येक उपविन का जीवन बोल उठेगा—भारतमाता की जय।



शोक-समाचार

धायंत्रमाज मान्ताक के के महा-मत्री केंग्टिन देवरत्न धाय के अनुज भाता व स्वर्मीय भाषायें महसेन जो के छटे पुत्र विश्वस्त आयं का नांसिक में २७ वर्ष की कर्षाजु में धाकस्मिक निषम हो ब्रेक्कः अवस्थान फिल्म हिनया से सभीत निर्देशक के रूप में जुडे हुए थे। एजस्थानी फिल्म पिया मिलन की धाल सहित मन्य कई फिल्मो में उन्होंने सगीत दिया

गत वर्ष महाँष दयायन्द निर्वाण शताब्दी पर झापने प्रथमे पुरुष पिता श्री की स्मृति में 'श्रक्का' केसिट तैयार किया था। जिसका विमोचन अज मेर में निर्वाण शताब्दी के प्रवसर पर किया गया था, जिसकी काफी सराक्ष्मां भी की गई थी।

पांच जुकवार दिनाक १५।१०।=५
को साय द नजे उनेकी भारमा की
सान्ति के लिए झार्यसमाज मदिर
सान्ताक ने साति यक का आयो
जन किया गया जिसमे बस्वई महा
नगरी को समस्त आर्यसमाजो धार्य
प्रतिनिध सभा बस्वई हारा स्वर्गीय
प्रवर्त बार्य के कार्यों को समर्थ
करते हुए उनके इन छोटी सी आयु
में बले जाने पर हार्यिक शोक प्रकट

प० प्रकाशचन्द्र शास्त्री

शुभ विवाह सम्पन्न

धार्यसमाज के कार्यकर्ता विश्वव-देव शास्त्री की सुप्रती उतिक का ग्रुभ तिवाह दिलीपकुमारं सुप्रत स्व-गींम क्षे स्वीश्यक्त की (इक्वीनियर जल निग्म) उठ्यन्न के ताब दिलाक २७ नवस्मर, १६८५ कुम्बार की स्मार्यसमाज हतुमान् रोड, नई दिल्ली-१ में समारोह पूर्वक तस्मन्न हुमा। श्री स्वामी स्वक्रपानन्त भी व श्री यशपुल सुमानु ने प्राप्त आधी-वीर दिये।

दिल्लो भागं प्रतिनिधि सभा से सम्बद्ध

मातृ मन्दिर कृत्या गुरुकुल बी० ४४।१२६ नई बस्ती रामपुरा, बाराणसी

जीतकासीन प्रवेश झारम्भ है। बालिकामो को सर्वविष उन्नति का ग्रलभ्य भवसर।

शिक्षुसे लेकर वेदाचार्य व्या-करणाचार्यएव दशनाचाय (एमए) सककी सुशिक्षा। पी एच की व विदेश भ्रमण का भी सुविधाए। उज्जवल भविष्य। सम्पर्ककरें।

> डा॰ पुष्पावती पीएव डी दर्शनाचार्य विवासारिधि सध्यक्षा



Post in N.D.P.S.O. on 6-12-25 Licenced to post without prepayment, Licence No. U 130



यवा वर्ष पर

(पृथ्व ४ का शैंक) गती के भी भीत करेशा के, विश्वति वृत्व विश्वते केली केलि अस्ति। बातियों के उत्वान में वर्ग का विस्ति-विक स्वरूप प्रकट करने ने तथा प्रपते देश के औरक्पूर्ण ऐतिहासिक पृथ्में को उत्राग्त करने में आये युवकों का कार्य श्रीवस्मरणीय है।

भेषा तुम प्राथिसमाज के उस गरियोपुर्ण इतिहास को स्मएन करके उसी प्रकार का बारवी अस्तव नहीं करपंकते ? 'निर्देशत कर सकते ही। विव मन में के भी आवना ही। हरव मे जीवन हिंसोरे के व्हा हो। बीर मस्तिष्क में उपस पुणत हो तो सब कुछ हो सकता है।

बाज का मुनक अपने महाप्रवी से, देश के गौरवपूज इतिहास से, अपने प्ररक्त वर्षों से कट चुका है। माय-समाज उन्हें उसी जह से फिर से बोडना चाहता है। पर यह काम केवल उपदेशों से हीने वाला नहीं है। असके लिए उदाहरण पहिए। मुक्त पूरा विश्वास है कि सुम जनके लिए उदाहरण बनोंने भौर उनका मार्थ दर्सेन करोपे।

युवा वर्ष में यदि तुमने यौवन के बास्तविक बादशों को प्रवने जीवन

ने चारण कर लिया तो उसके यहां पुर्वीक जनमा कर्त्यांन होना, मार्थ समायका नाम असा होगा, वहां पार्के भी तेषु मेर्ड होगा । विश्व की एक मेर्ड किशी में स्ट होगी । किशी, मेरे बीरो, कर्म्स क्छ सी। एक बाब सक्त्य केरन की कार्यक्षकता है फिर मर्विस तेम्हारे श्रेम भागी।

> डा॰ प्रयोत वैदालकार ७/२ रूपनगर, दिल्ली-७

गर्यकले कांगडी की बैठक " (पृथ्व १ का शेष)

सामा जी वे स्वोकार कर लिया। इस पर सबी सदस्वों ने हर्व व्यक्त किया। तत्पश्चात ग्रन्य विषयो पर निर्णय लिए वए। कुलाबिपति, कूल-पति, मुस्याधिकाता, सहायक मुस्या-विकाता, बानायं तथा बानार्या कन्या गरकल देहर।इम सभी ने इस सकल्प को द्रहराया कि वे सभी गुद-कुल की गौरवमयो परम्परा के अनु-रूप, मिलकर कार्य करने ग्रीर गुरू-कूल को उन्नति के विश्वर पर ल जाने का यथाश्वक्ति प्रयास करने। उल्लास एव हुई के बाताबरण मे बैठक सम्पन्न हुई।

प्रचार-विसाग संस्थेपाल

लिए फार्मेसी. की औषधियां इरिद्वार सेवन करें

> श्वाचा कार्याक्षय—६३, नसी राजा केरारनाय. बावडी बाबार, दिल्ली-६ फोन : २६१८६८





वष १ धक ४६ सुरुष एक प्रति ४० पैसे रविवार, ११ दिसम्बर, १६०१ वाधिक २० हमय सृष्टि सबत् १९७२१४९०८६ द्वाजीवन २०० स्पय मागशीव २०४२

दयानन्दाब्द — १६१ विदेश में ४० डाल र ३० पौंड

कश्मीर से धारा ३७० को शीघ्र समाप्त

कर देना चाहिए

--सूर्यदेव

श्चार्यसमाज पश्चिम पूरी नई दिल्ली में वार्षिकोत्सव पर ध्वजा-रोहण करते समय डा॰ धर्मपाल ने हडा--'झार्यसमाज का एक नियम है प्रविद्या का नाश भीर विद्या की वृद्धि करनो चाहिए। दस ध्वज के नीचे श्रद होकर हम प्रतिज्ञा करे कि प्रविद्याका नाश करने महम कभी नीछे, नहीं हटगे। कुछ समाजों के प्रधिकारी ऐसे उपदेशको की माग करते है जो केवल मीठी माषा बोलते हैं सकारात्मक बोलते है खण्डन की बात नहीं करते हैं। मैं कहता है कि वब तक खण्डन नहीं करेगे, जब नक बतंन को माज नहीं लेंगे, तब नक शदता कहा से भाएगी। पहली बात

को मिटा कर हो दूसको बात बन सकती है। देग पर पिछला मिटाकर हो नया लिखा जा सकता है। दया-नन्द को स्वामी विरज्ञानन्द ने कहा बा जो बब तक पढ़ा है उसे पूस जाओ। इन पोषियों को यमुना में में फक कब माओ। बत हुमारा कर्लब्य होना चाहिए कि हम अविद्या का पासण्ड का, प्राम्वविस्वास का नादा करने से सदा तन्पर रहे, किसी से कोई समझीतान नर,

इस श्रवसर पर अनेक गण्यमान्य महानुभाव उपस्थित थे। क्षेत्र कं धार्मिक जनो ने उत्साहपूर्वक काय-कम मे माग लिया।

सवाददाता ग्रार्थसन्देश

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर

विशाल शोभा यात्रा

प्रति वर्ष की भाति इस वर्ष भी स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान विवस बुधवार, दिनाक २५ दिसम्बर १६८५ को घुमधाम से मनाया जायेगा।

इस अवसर पर प्रात १० वजे से स्वामी अद्धानन्द बिलदान मवन (नया बाजार) से शामा यात्रा का प्रायोजन किया गया है जो निवारित मार्ग से होती हुई लाल किला मैदान पर पहुच कर एक जन सन्ना मे परि-बर्तित हो जाएगी। इस समा में आर्यसमाज के मूर्घन्य नेता तथा देश के प्रसिद्ध नेताओं के मावण होंगे।

महाशय धमपाल प्रधान मशोक कुमार सहगल महामन्त्री

आर्यं केन्द्रीय सभा (पंजीकृत) दिल्ली राज्य १५ हनुमान् रोड, नई दिल्सी-१

को मिटा कर हो दूसरो बात बन सकती है। टेर पर पिछला मिटाकर पाखंड खंडनी की आवश्यकता है

–डा० धर्मपाल

धार्यसमाज म राष्ट्रीय रक्षा सम्मेलनो का झायोजन क्यो किया जाता है? राष्ट्र की सामाधी की रक्षा करना सरकार का दायित्व है, सेनाधो का कर्त्तव्य है। फिर हम क्यो इन सम्मेलनो का ग्रायोजन करते है ? इसलिए करते हैं कि राष्ट केवल मुभाग ही नहीं होता. राष्ट्र वहां क नर-नारी होते है। राष्ट वहा की भारमा होती है। हम उनकी आ-मा को रक्षा करना चाहत है। यह रक्षा धार्यसमाज के माध्यम से हो सकती है। उसके चरित्र का निमाण यही पर हो सकता है। हमारे राष्ट्र रक्षा सम्मेलनो के भायोजन का प्रयोजन यही है। यह उदगार दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा के प्रयान श्री सूयदव ने ग्रायंसमाज चना मण्डी के वार्षि-

कोत्सव पर आयोजित राष्ट्र रक्षा सम्मेलन में प्रपने अध्यक्षीय मावण में कहें। इस प्रवस् पर डा० पर्म-पाल, ओ प० मदमाहन विद्यासागर, ए० क्षितीश बेदालकार ने भी सभा को सम्बोपित किया।

श्रायंसमाज ग्रेटर कैलाश पार्ट-२ के वार्षिकोत्सव पर बोलते हुए सभा प्रधान श्री सूपदव न कहा कि राष्ट्र रक्षा के लिए यह आदरयक है कि प्रदेश विशेष को कोई विशेष प्रधि-कार न दिये जाय । काश्मीर को बारा 300 को तुग्न ममान्त कर दिया जाय। इसी बारा के लालच मे अन्य प्रदेशा के लोग ग्रंपनी श्रपनी स्वायसना को माग करन हैं ग्रीर देश का विघटन का क्नार पदा हो जाना

बाबा पृथ्वीसिह आजाद नहीं रहे

चडोगढ १० दिसम्बर पजाब के भूत-पूर्व मन्त्री बाचार्य पृथ्वी सिह पाजाद का खरड में निघन हो गया। खरड यहा में लगभग दम किलोमोटर की दूरी पर हैं। पजाब सरकार न दिव गत नेता के प्रति सम्मान ब्यक्त करते हुए प्राब अपने कार्यालय बन्द कर विष्ट ।

राप्टपति ज्ञानी जलस्टि ने स्वनचनासनानीव पजाबक सूत-पूर्व स-त्रपथ्वासिट श्राजादकी सन्युपरद्वास्वन किया है।

श्रीमता कृष्णा ग्राजाद के नाम एक सबदना सन्देश में राष्ट्रपति ने बाबा ग्राजाद को एक प्रमुख साहित्य-

(शेष पुष्ठ १२ पर)

मुनि-चोरी के दण्ड का महत्त्व : युधिष्ठिर का विषाद : द्रौपदी-व्यास-कृष्ण द्वारा उद्बोधन : युधिष्ठिर का राजतिलक: अवबोधक प्रसंग

-ग्राचाय दोनानाथ सिद्धान्तालकार

गल ग्रोर दा भाई तपस्वी ऋषि गगानट पर दानों के सुरस्य वृक्षी भीर फल फलो मंलदे भाश्रम थे एक बार लिखित के ग्राश्रम में सव प्रमृत गो किसी प्रकार बाश्रम से निकल रास्ता भ्ल भटक गई देर तक नही प्रायी । लिखिन ऋषि का चितित हो धौर उसकी लोज मे ग्राश्रम मे बाहर जाना स्वाभ विक ही बा काफी दर तक भटकन के बाद भ्रपने बन भाई शख के भ्राश्रम के पास गौ सिल गर्ड देर तक भाग दौड करने के फनस्वरूप लिखित को भूख ने व्याकृत किया। उसने तत्काल बढ माई शख के बाश्रम म लगे पक मस्बाद फलो में भूख की नृष्ति की इसी समय गम्ब भी वहा ग्रचानक ग्रा गये। उहोने भाई को फल खने त्या उनसे पूछा कि यह फल नुमने कहा से लिये ? लिखित ने समीप आरखड बढ भाई को प्रणाम कर कहा यह द्माप के उद्यान कही तो फल³। इस क साथ अपने ग्राश्रम रंगी क गूम हो जान भीर उसकी तन ज मे ग्रपनी देर तक की खोज ग्रीर भूख लगने की साराकहानी मृता दी। शख ने इस पर अपना असतोव प्रकर करते हुए कुछ ककश स्वर म कहा तुमने मूकम पूछे, बिनास्वय हामेरे उद्यान मंस चोरी की है त्सीलिए तुम श्रव । जा के पारु बा श्रपन इस कुकम का व्योग सुना। प्रपना प्रप राप्रस्वीकार कर राजा से समूचित दण्डकी प्राथना करो लिखिन मूनि बड भाई क प्रान्श से राज प्रनम्न के पास गय ग्रीर ग्रपन ग्रपराघका सारी कहात मृत त नगराजा म नन दियं जान का श्रनुगंध किय

ग्रप ≀ ⊬ाक्रनि नण्डक जानन

ाजा बट धमम बस में पड गय उमने न कल मित्रमण्डल का बठक वृत्ताइ मित्रमण्डयनराजाकसाथ सहचित प्रकट करत हुए सहज हो किसी निक्लय तक पहुंचने में ग्रसम यताप्रकटकी मित्रिमण्डल मे एक शद्ध और गास्त्रन म त्रा भी थे। वह त्स समय उपियत न थे। उन्हें

बुलाया गया भीर उनसे पथप्रदशन मागा गया उन्होने समुबा मामला सून कर कहा-- अपराध का दण्ड (कानन का पालन) ना धवश्य होना चाहिए। वह छोटा है या बहा यह मतभेद का विषय है। परन्तु राष्ट चरित्र को रक्षा भौर याय व्यवस्था को मब प्रकार के पक्षपात से ग्रान्छता रखने से लिए उसके पानन म किसी प्रकारका भी नन् नच नदी होना चाहिए। बद्ध विद्वान मन्त्री ने मन् ग्र०० ब्लोक १७ १६ के प्रमाण से कहा--

टण्ड का हा शासक मटा जागता 🧦

- (१) जो दण्ड है वही पुरुष राजा वही याय का प्रचारकर्ता भीर सब का जासनकत्ता वही चारो वण भौर चारो भाश्रमो के धम का प्रतिभू प्रचाित जामित है।
- (२ वही प्रजाका शासनकर्ता सब प्रजाका रूथक सोने हुए प्रजा जनो मे जागता है। इसालिए बुद्धि मान दण्ड को हा घम कहते हैं।
- धारण किमा जय तो वह सब प्रजा का झानित करता है भीर जो बिना विचार चलाया जाये तो सब ग्रोर स राजा का विनाश करता है।

लिखिन मूनि को दण्ड

र जान जब उस बद्ध म श्रोसे पूछा कि अब इस लिखिन ऋषि का चरी कं भ्रपराध मंक्यादण्ड टिया जायं[?] तद बद्धम ताने कुछ समय क गहन चितन के बाद कहा— यायविनो का मत है कि जिस अग म व्यक्ति अपराध करता है वह कार त्ना चार्ए पर यह बहुत कठोर भी अपराधी के भावा मुबार के मार्ग को सवया भवरुद्ध कर देता है जो उचित प्रतात नही होता। इमोलिए मेरा सम्मति मं इस युवक का ऐसा दण्ड दिया ज ये जिससे हाथ स दीव काल तक क^{टा} परिश्रम किया जाये।

वृद्ध मन्त्री का यह मत राजा

और मित्रमण्डल ने पसन्द किया। लिखित ऋषि कुमार को यह दण्ड सुना दिया गया भीर इसकी सचना उसके बड भाई शख ऋषि को भी दे

युधिष्ठिर की पत्नी द्रौपदी का ग्रपने पति को समभाना

न्यास मृनि ने यह कथा उस समय सुनाई जब युधिष्ठिर राज्य भीर गहम्य भाश्रम छोड वराग्यवान हो वानप्रस्थ भीर सन्यासी का जीवन व्यतीत करने का निद्चय कर चके वे महाभारत शान्ति पव के मन्त गत राजधम धनुशासन पव के नवम ग्रध्याय से लेकर ग्रगले ग्रध्यायो तक श्रीकृष्ण दौपदी भीर भाची पाण्डवी सहित मगोड्डी से सबने एक स्वर से ध्रपने बढ भाई युचिष्ठिर के उपयक्त निश्चय का प्रबल विरोध करते हुए उसे धपने कतय राजधम और गहस्य धम के पालन का उपदेश कई प्रकार की प्राचीन श्रवाचीन कथाशी भीर उपाल्यानो द्वारा पुष्ट किया। प्रमगवज हम यह। उस निराधार सवधायसय क्योल कल्पित भीर () जाल्ण्ड ग्रच्छं विचार मे नारी के लिए कलक रूप लोक प्रचलित मिथ्याबाद का जोरदार खण्डन करना बाहत है जिसके अनुसार द्रीपदी के वाच पति युचिष्ठिर महित कहे जाते हैं। महाभारत के अनेक प्रमाणों से यह सिद्ध किया जा चुका है कि द्वीपदी का एकमात्र पति युधिष्ठिर ही या। इस प्रकरण के चतुद्दश भव्याय म इस सभा मे उपस्थित व्यास मूनि श्रीकृष्ण पचपाण्डव तथा प्रमुख नाग रिको का उपस्थिति म प्रवक्ता वशम्यायन पहले ५ व्लोको म द्रौपदी का परिचय देते हुए कहते हैं--

ध्रपने भाइयों के मुख से वेदों के मिद्धातो क अनुसार सुनकर भी जब धमराज युधिष्ठिर कुछ नहीं बोले नब महान कुल मे उपन्न युवितयो मेश्रष्ठ विशाल नेत्रा राजा युधि ष्ठिर के प्रति समिमान रखन वाली राजाकी सदाही लाडली घमजा महारानो द्रौपदी अपने पति देव नृप श्रम्ञ युधिष्ठिरकी जोग्सम्बोधित कर सान्त्वनापूर्ण परम मध्र वाणी मे बोली--

इतवन म ११ वष के वनवास भीर एक वय क श्रज्ञातवास म आपके इन सब भाइयो ने मर्दी गर्मी प्राची पानी आदि प्रतिकल स्थितियो मे सब सहते हुए भापका साथ दिया उस नमय आपने कहा था कि बीर बन्धग्री । दुर्योधन और उसके सार्थियो को हराकर व्मपथ्वी को शत्रमो की लाशो स पाट दगे। उस समय उदारतापूण नाना प्रकार के यज्ञो द्वारा भगवान की बाराधना करते हुए विजय प्राप्त कर बनवास जनित दुस सुक्त मे परिए।त हो गया। बीर महाराज! द्वत वन मे अपने माइयो को स्वय हा ऐसे बीरतापुण वचन कहन के बाद फिर झाज हम लोगों को क्यों छोड रहे हैं ?

द्रौपदी ने अपने निराश पति युचिष्ठिर को निम्न प्ररक्त शब्दों मे कहा---

१ न क्लीबो वसुषा भड़ते न क्लीबो धन मदनुते। न क्लोवस्य गह पुत्रा

मत्स्या पक इवासते ॥ म० मा० शातिपव १४।१३

अर्थात जो कायर भीर नप्सक है वह पथ्वी का उपभोग नहीं कर सकता न ही बन उपाजन कर सकता भीर न ही उसे भोग सकता है। जैसे केवल कीचड में मछलिया नहीं होती उसी प्रकार नपसक क घर मे पुत्र नहीं होता है।

२ जो दण्ड दन की शक्ति नही रखता उस क्षत्रिय की कोमा नहीं होती। दण्डन द सकवै वाला राजा इस पटवा का उपभोग नहीं कर सकता। हे भारत । दण्डहीन राजा की प्रजामी का कभी सुख नही मिलता। वीर धौर घात्मबल की धनी इस बार भारतेय नारी द्वीपदी के यह जब्द याज हमारे देश की वर्त-मान राजनीतिक स्थिति पर शक्षरश्च घटते हैं।

राजा के लिए दण्ड उचित इस सगोब्डी में उपस्थित व्यास (क्षेष पृष्ठ ११ पर)

आचार्य पृथ्वीसिंह आजाद ः एक मधुर स्मृति

×

स्वतत्रता सेनानियों के सम्बन्ध में लिखते हुए नहात्मा गांघी ने बाता पृथ्वीसिंह खाजाद को स्वाधोनता के मदिर की यात्रा करने बाला सहयात्री कहा था। यहात्या जो ने कहा था, कोई भी कान्ति-कारी उनके महान् साहसिक कार्यों को बराबरों कर सकता है, मगर उनसे बागे नहीं जा सकता।

पृथ्वीसिह आजार का जीवन प्रस्तव्यस्त रहा तबा वे किंठना-इयो से जूमते रहे। उनका जन्म १४ सितम्बर, १८६२ को पजाब की परियाला रियासत के लालक गाव मे एक निधन परिवार म हुआ बा। कुछ समय तक वे प्रपने पिता के साब रहे, जा बर्मा मे पशुजो के देवले करके प्रपना जीवन निवाह कर है थे। बर्मा से वे सिगा-पूर सा प्रीर फिर मनीला। बहास प्रमरीका गये।

धपने में राष्ट्रांयता को मावना के उत्पन्त होने का श्रय उन्होंने भार्यसमाज एवं ऋषि दयानन्द, महात्मा गांधी भी व बगाल के काति-कारियों को दिया। उनके मनुसार सब स पहल झायसमाज न १००० में उन्हें प्रमावित किया। इसके बाद वे बगाल के सवार मिंदाह धौर लाला.लाजपतराय के ानबांसन से प्रमावित हुए। विदेशी दमन से उन्हें सर्वाधिक चुणा थी। उन्हें सपने बात्यकाल में कनाडा को झारा महानी (इमारता लक्षों के कारवाना) में काम करना बाद है। वहा रहने के दौरान के झान्दोतन की झोर उन्मुख हुए विसका परिणति स तत १९१४ में गदरपार्टी को स्थापना म हुइ।

गदरपार्टी के सदस्यों ने ब्रिटिश सक्कार द्वारा मास्त के निरा-दर एव ब्रदमानना को समाप्त करने के लिए स्वदेश लोटने और देश को स्वाधोनता के लिए बगावत का नेतृत्व करने कः सकस्य निया था। मदरपार्टी के घन्ध्यत वाबा सोहन मास्ता के नेनृत्व से पार्टी के कुछ साहसी सदस्य १६१४ में एक बहाज में सारत पहुन्ते। यह पार्टी इससे पूर्व केलिकोनिया में बनाई नई थी। बाबा उस समय बहाज में ही थे, खब भारत पहुन्तते ही गवरनार्टी के सदस्यों को गिरफ्नार कर लिया गया।

इती समय पहला आंहीर पहर्व-न काड का मुक्या शुरू हुआ । या। चौबीस क्रान्तिकारिया का मृत्युदण्ड यार येव को सण्डमान के मृत्याथन काश्वास दिया गया। वाबा पृष्वीसिंह उनमे से एक थे। केवल सात व्यक्तियो का फासी हुई। वाबा ने मण्डमान केल से सेल्यु-सर जेल मे राजनीतिक बदिसो क्राप्ति किए जा रहे दुव्यवहाय के विरोध स्वरूप १५५ दिन की भूख हबतान की थी। वाबा जेन में छह वर्ष तक सहै।

जून १६२१ में स्वदेश लीटते संभय उन्हें पुलिस के साब महास से राजमहंद्री भेजा गया। वर्तनान प्रान्त प्रदेश में झाल्ने के निकट वे बलती रेतवाश की खिंडकी से बाहर कूद गए। रात जर वे साल संज में दीवते रहे। प्रान्ती शाम के फिर एकड गये और जेल में जाल विये गए। दुवारा नवम्चर, १६२२ में राजमहेन्द्री से रेल हारा नागपुर के आये आते समय वे प्रमराघती के निकट बडनेस में चलती हुई रुलााडी के सौचालय से कूद गए और मुस्मिन हो गये। अमले १६ बचौं तक उनका कोई पना नहीं चला। वेश बदलकव वे कुछ समय तक मावननर में युवा लोगों को शारीरिक व्यायाम सिखाते रहे और उनमें राष्ट्रीयता की सावना जंगाते रहे। उन्होंने १६३१ में कराचों से हुए कासेस प्रिचेशन में मांग लिया, बहा उनकी मेंट झांग झब्दुस बच्छार सा से हुई।

धफगानिस्तान मे पकडा गया पक्नु हर नार वे किमी नग्ह नव निकसे। सोवियन वस में भी वे दो महोने जेल मे रहे। यह पता चलने पर कि वे गदरपार्टी के सदस्य है उन्ह छोड़ दिया गया। फिन मारको में ठहरे भीर तोन वसं तक उन्होंने मानसंवाद का प्रध्ययन किया। छप्यवेश में ही व १६३४ म काबुल पहुचे जहा व पकड गये और १३ महोने जेल में बन्द रह। जनता के दबाब में प्राकर उन्हें छोड़ दिया गया। फिर व जाली पासपोर्ट पर पाडिचेरी होते हुए मझास पहुचे। बाबा ने १६३५ से १९३० के बीच बम्बई और कलकत्ता में कम्युनिस्ट पार्टी को मजबुत बनाने के लिए कार्य किया।

महात्मा गांघी से उनकी मट १६ मई १६३८ की जुहु में हुई। गांघी जी को नवाह पर उन्होंने पन्मि के स्नागे धारमसमर्गण कर दिया, जिसने उन्हें फिर कुक सम्य के तिलु जेन में बन्द रसा। जेल में रिहा होने पर उन्होंने गांधी जी के साथ उनके साजम में काम किया।

बाबा उन कुछ पुराने स्वतंत्रता सेनानियों से से थे, जिन्होंने इस बब २३ फरवरों को पोर्ट ब्लेबर से राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह हारा सम्पन्त समर्पण समारोह' से आग लिया था !

बाबा पृथ्वीसिह झाजाद का क्षेल जगत् से भी काफी निकट कारिस्तारहा। इस उन्ने से भी व इतने सांक्रम ये कि बुजुग एवले-टिक में उच्हीनै देश और विदेश में सुब नाम कमाया।

भ्रमी हाल ही में हुई विश्व बुद्धा एयसेटिक्स चैस्पियनशिप में बाबा पृथ्वीसिंह भ्राचाद ने सौ मोटर को दोड जीतकर अद्भुत मिसास कायम की।

(नवभारत टाइम्स से साभार)



स्वामी श्रद्धानन्द उपदेशमाला

बायंसन्देश साप्ताहिक अपने सकल्यानुसार एक धौर विशेषाक धपने प्रिय पाठको के लिए सीघ्र प्रकाणित कर रहा है। स्वामी श्रद्धानन्द धरमुत विचारक, जीवन प्रभा को जाअब्त्यमान कर सकने से समर्थ महान् उपदेशक, लेखक मनीया राष्ट्रशयक थे। उनके मध्य प्रध्याल उपदेशों का एक नकनन हम स्वामी श्रद्धानन्द विवास क्ष्याल उपदेशों का एक नकनन हम स्वामी श्रद्धानन्द विवास कि स्मृति मे प्रकाशित कर रहे हैं। यह विशेषाक प्रापकों जीवन मर स्मर्थ रह सकेगा ऐमा हमारा विद्याल है। साप्नाहिक आर्य-सन्देश के सदस्यों के लिए यह नि खुल्क होगा। अत प्राप भी भाज हो २० कपये वाधिक, २०० कपये भेजकर धाजीवन सदस्य वन वाइये भीर भनेक विशेषाक तथा प्रति सप्नाह चर वेटे आयसन्देश पित्रकाद उच्चकोटि के सक्षो का धानन्द लीखिए।

सम्पादक ग्रायस देश १५ हनुमान् रोड, नई दिल्ली

कराबी से छथाबेश में वे सोवियत सथ पहुंचे। कई बार उन्हें

ऋषिवग!

स्राप ता स्नान्दिचन हाकर म्या का प्रानन्द भीग रहे है अपक वह देश जिसके लिए प्राप दिन रात बेचन रहते थे जिस दश क मुक्षार के लिए स्नापका सनको बार विषयान करना पड़ा उसके दशा कर भी स्नारका कुछ अनुमान है।

ग्राप जीवन पयन्त परमिता परमा-मा को जाजा का पालन करते हो जीवन पर्यन्त जापने एक भी बुरा कमं नहीं किया। कमाँ के फ़नदाता ग्रापसे बहुन हो प्रसन्न थे जिस कारण जापको मोझ प्राप्त हमा और कन्म मरण के चक्कर से छूट गये। इससे तो प्रस्का था जाग एक दो नो बुरे कमं ग्राप्त हो जाते जिससे ग्रापने फिर मारत से जन्म मेना पहता ग्रीर पून जन्म ना श्रमूरा काम पूरा कर सेने।

प्रापने प्रायंतमाओं को स्वावना की थी। पापके प्रभाव के कारण उस समय भी दुवारो जन प्रायममाओं बन चुके थे। पापने रूदियों कुरी-तियों, प्रन्वश्रद्धा धन्य विदवान को दूर करने का काम ध्रायों को सौंपा। अभाद हमें माम्मार से हो छोजकर मोक्ष को प्राप्त कर गये। यदि पाच बख धौर रह जादे तो देख का बहुत सुक्षार हो जाता। हमें यह दुदिन न देखने पहते।

आपक व्यक्तित्व कृतित्व और वस्तुत्व मे आदू का ध्रमर था। परि-ह्यतियां और वानावरण विपरित होने के बातजब भी जितना काम ध्राप प्रकेले कर गये परिस्थितिया यनुकूल होने पर भी हम दो करोड ध्रायसमाजी उतना काम नहीं कर

स्वदेशी सस्कृति, स्वभाषा तथा स्वतत्रतः का नाद सर्वप्रयम आपने हो बजाया था। आपने कहा था— 'अपना राज्य सहि कसा मो हो विदेशी राज्य संफिर मा अच्छा है भारत मे भारतीयो का राज्य ही हाना चाहिए।

सन् १८५७ में सापने भारत को स्वतन्त्र कराने का काम सृत्रकार के रूप में किया सापता को तुरन स्वतन्त्र कराना चाहते थे। सापके बाद साधों ने भी यह सोवा कि भारत को पहले बयजों से मुक्त कराया आए। किर सायसमा बतन्त्र स्वतन्त्र सारत में सुगम हा आएगा। स्वत परिस्थितिया स्रनुकूल हो आएगी। ता ऋषिवर का स्वतन्त्र भी साकार हा आएगा औ साकार हा आएगा की न्यत्र भारत में सुगम हा आएगा भी जो नाम हा आएगा की नाम हम आएगा की स्वतन्त्र भागा के स्वतन्त्र साराम में कृव

महर्षि दयानन्द का मोक्ष राष्ट्र का दुर्भाग्य

--जगत्राम स्नार्थ

वह । धार्योपदेशक भजनोपदेशक. हमारे गुरुकुलो, स्कलो, कालेओं क ग्रध्यापक भीर छात्र सभी भाजादी के दोवाने बनकर स्वतन्त्रता सम्राम मे कद पड़। याननाए महीं और बलिदान हुए, धन्त मे भारत स्वतन्त्र हद्या । जिसका श्रेय महर्षि दयानन्द भौर उनके भनुयायी भार्यों को मिलना चाहिल बा परन्तु ऐसा हमा नहीं। ग्राजादी के बाद राष्ट के जो प्रशासक भौर भाग्य विचाता बनते रहे । उनको ग्रार्थसमाज के सम्बन्ध मे पता भी नहीं था कि भारत को स्वतन्त्र कराने मे प्रधिकतम योगदान ग्रायसमा-जियो का रहा है इसलिए भारत को स्वतन्त्र कराने का श्रेय वार्यसमाज को है। भौर न हो आर्थनेताको ने उनके करनो तक भावाज पहुचामी। परिणाम यह हुमा कि स्वतन्त्रता के बाद बायसमाज को पूछा भी नही

भाग्न को स्वत-नता क जन्मदाता महर्षि दयानन्द सरस्वती
मुकावते में राजा राममोहन राय ने
मारत के लिए कोई विशेष काम नही
किया। ऋषि दयानन्द का राजा राममोहन से कोई मुकाबला ही नही।
फिर भी पिछाा मजालय मारत सरकार ने राजा राममोहन राय के नाम
पर बीस लाख क्यय का म्रानुदान
काषिक देव उनका स्थारक कायम
कर रखा है और भाग्न को स्वतन्त्र
कराने वाले महर्षिष दयानन्द का कोई
स्मारक नहीं बना पांधे भीर न हो
उनका काय पर कोई मनुदान दिया
नवा है।

दब दयानन्द ग्रपनी आर्थसमाजो की हालत तो माकर देखें मुक्ते तो ऐसी हालत देखकर छुप छुप कर रोना भाता है।

ऋषिवर । ग्रापका धार्यसमाजो क सदस्य जालीम पचास वय जेंसे पहले होते थे वेंस नही गृंगे। ग्रावत्त व्याविक स्वावसमाजी स्वाध्यायमाल नही है। ग्रावत्त से सम्बद्धान के धार्यसमाजी साध्यसमाज भी र व्यानन्द के प्रस्त हो नही । ऋषि द्यानन्द के प्रस्त हो र ब्रावसमाज के दीवाने समाप्त हो रहे हैं। प्रव नकती, फसली, श्रवसरवादी लोग बार्यसमाजो में स्वयं के जोड़ से प्रपता सिक्का चलाना चाहते हैं। मंर जेंसे पुराने बार्यसमाजी बिन्होंने

भाज से पंचास साठ वर्ष पहले का भायसमाज का स्वर्ण युग दक्षा है व दुखी है भीर बेबस हैं।

ऋषिवर! हम परदवा करो। आपका नाम हो दयानन्द है, आपने आजीवन परमात्मा की माजा का पालन किया है। वे सिन्वदानन्द आप से असन्त हैं आपने हैं उनको हमारी ओर से कहे कि पापके अमृतपुत्र आप जन प्रापकी असर देन वेदों के अवार और प्रसार करने वाले दु की हैं धीर वेदोदारक ऋषिवर दयानन्द का प्राह्मा करते हैं। प्रभो! हमारी पुकार मुने हमादे कहे वह से कर से से सार देन के से इस से से से से सार करने वाले दु की हैं धीर वेदोदारक ऋषिवर दयानन्द का प्राह्मा करते हैं। प्रभो! हमारी पुकार मुने हमादे ऋषिवर को एक वार पुन आरत में बम्म द जिनसे सारत में सुधार हो।

प्रमां । ह्यारे पास सच्चा मीर सुच्चा सौदा है परन्तु पारमी नहीं है। मापने वेदो का ज्ञान रूपी प्रसाद केते हमारे पास नहीं माते चहुा गला महा दुर्गन्य बाला सस्ता सौदा है वहा भाहकों की भीड लग रहा है। उस भीदें का उपयोग करके हानि भी उठाति है पर समझते नहीं। प्रभों । उनको सदबुढि द ।

बायसमाओं में कुञ्जेक लोग ऐसे भी हो गय हैं जिल्होंने सून रखा है कि ससद में विपक्ष मजबूत होना बाहिए। समद मे तो यह आशय होता है कि नेता नोन कोई ऐसा काम न करें जिससे देश और वर्ष का लाम हो, वह ही फार्मला बार्यसमार्जी मे लाना चाहतं है। हालांकि पत्येक साप्ताहि न सत्सग ने ऋग्वेद के अतिम सुक्त का पाठ होता है भीर भर्ष भी बोला जाता है कि "चिस बन सब एक हो"। सबद का फार्मुला ग्रायं-समाजो म नहीं बलाका बाहिए। मार्थममाज वेदो पर प्राथारित एक विश्वद्व धार्मिक सस्या है। ऐसे लोग ग्रार्यसमाजो मे भो गुटबन्दो बना कर विपक्ष को मजबून बनाने का कुकमें करते हैं। ऐसे अनार्य लोग आर्य-समाज का कोई भी काम नही करते भौर न ही दूसरों को करने देते हैं। श्रायसमाज का विषटन करके दूर बैठ कर तमाशा देखना चाहते हैं। वे वार्यसमाज के शृत्र हैं। एक व्यक्ति अपनी योग्यता, क्षमता, लगन और उत्साह के साथ आर्यसमाज का प्रच्छा काम करता है। अपर्यसमाज को

अपनी मा सनफ्रकर आयंसमात्र की सवा करता है। ऐसे व्यक्ति को सह-योग देना चाहिए, यही आयंत्र है। पर-त होना क्या है कि ईध्यों धीर देव के की जब म फ्रेंसकर धार्यन्याज के अच्छे भने चन रहे काम मे बाबा एव विघन राजकर धार्यसम्पज के काम का नहीं चलने देने कितने लेद को बात है।

भायंसमाजों में कुछ व्यक्ति ऐसे मी हैं जिन्होंने स्विकारे पर पर रहते हुए भी भायंसमाज का तन मन उनमें आयंत्व है परन्तु फिर भी भावंत्व है परन्तु फिर भी है। भविकार पद लेने के निए गुट-ब-दी काते है लकाई झमझा करते है भीर प्रश्वस्था फैलाकर वाता-वरण स्थाब करते हैं।

जो लोग प्रथिकार पद को इच्छा न रखते निन रान प्रायक्षमात्र का को चिन्तन करते रहते है प्रीर प्रार्थ-समाज का काम दिन रात करते रहते है उनसे शिक्षा नवा प्रेरणा केली चाहिए। प्रार्थसमाज का मूत जिस कें सिर पर स्वार हो वह स्रिक्ता । पद जिए बिना भी प्रार्थसमाज का काम किए बिना नहीं संह स्रक्ते।

भार्यसमाजो मे प्राय ऐसे लोगो ने वातावरण दूषित कर रखा है। भार्यसमाजो की उन्नति नही होने देते। बार्य जनो को सर्वदा ऐसे ब्य-क्तियो ने सावचान रहना चाहिए।

> अगत्राम **धार्य** गाधीनगर, दिल्ली-३१

त्रार्थसमाज पटेल नगर नई दिल्ली द्वारा वेद पत्रार तथा वार्षिकोत्सव

वार्यसमात्र परेल नगर क्राचा पटेल पार्क में प० यशपाल सुवासु की मनीहर वेदकवा हुई। इस मदलहर वद हुंचारी नर-नारियों ने दो सप्ताह् तक आई प्रत्यों पर आक्षारित स्वमन मय ज्ञान का प्रानन्द लिया। वेद कवा के प्रनिनम सन्त्र्या वेला में ३०० पुरुष महिलायों ने प्रपने दोष त्याग करने का त्या सदगुण सहण करने का वत लिया। ग्रायों कल का स्था-लन श्री जैसाराम तनेजा ने किया।

प्रात काल एक सप्ताह युद्ध-वंदीय यह हुमा जिसके बहुता जो प्रेम चन्द श्रीषर थे। मनेक श्रवालु नरू-नारियों ने श्रद्धा पूर्वक ध्राहुति प्रवान की। बाल्तिम विक्य भी तोमनाब मनवाह के समापनित्व में ध्राक स्थान ठन सम्मेवन हुखा।

> मन्त्री आर्थसमाज

सन्नीसवी शताब्दा के अन्य धीर बीसवी शताब्दी के प्रारम्भ मे आर्था बत देश म मुरूप रूर से राजनीति के क्षत्र मे दश की जो दुई शा थी वह सर्वाबादत यो एक झोर अन्त्रजो का माम्राज्य व दश गुलामी की जजीरी मं जकडा हुआ, दूसरो धार सामा जिक क्ष त्र में मनुष्य मनुष्य के मध्य भदमाव की दावार, श्रज्ञानान्वकार, नारो जाति का दयनोय स्थिति, घामिक जगत म एकेश्वरवाद क स्थान पर बहुदवतावाद निराकार परमात्मा के स्थान पर मूर्ति पूजा एव अवतारवाद न स्थान ग्रहण कर रक्खा या, इतना हा नही बल्कि कर्मानुसार वज ब्यवस्थाको जगह जन्माधिकार पर धाधारित बाह्यण मण्डलो ने

अपना भासन ग्रहण कर रक्सा था।

ऐसे मे परम पिता परमात्मा के

नियमानुसार धम एव सत्य को पुन स्थापित करन हतु ऋषि दयानन्द का प्रादर्भाव हमा। घटनाए ता घाटत होता हो रहता है मगर उन घटनामा की बोर किसा व्यक्ति या महापुरुष का ही ध्यान जाता है जिनके ऊपर परमात्माको कृपा र्राष्ट होतो है। ऐसी हो घटनाए , महर्षि दयानन्द क जीवन में घांटत हुइ, हम इस का ऋ मे द्रशिक विस्तार म न जाकर पाठको को सिफ मूर्ति पूजा संस्विधित घट-नाए देते है। महाँच ने अपने पिता जो के कहने पर वत उपवास स्थेत, धीर उस उपवास रव्यन का कोई कल प्राप्त न होकर जीवन में एक नमा कोच उत्पन्न हुआ और उसा बोधोत्पन्न होने से हा आ**ब इस ग्रा**र्था_ वसंदश तो क्या विश्व को एक नई कान्तियामानवताकेक्षत्र मे नई दिशामिली । जिस कान्तिका प्राज मारत ने ही नहीं बल्कि समस्त विश्व है उसका अनुसरण किया, चाहे वह राजनीति हो या घामिक जगत हो या फिर चाह सामाजिक क्षत्र हा, यहर्षि दयानन्द ही एक ऐसे महाभानव ये जिन्होने धपनी सूक्ष्म बुद्धि से प्रत्येक क्षेत्र मं विचार मधन कर समस्त राष्ट्र को नई दिशा प्रदान करते हुए अपने भ्रमर प्रन्थ सत्यार्थ-प्रकाश में अप्रेजों के साम्राज्य के विदोध में लिखा कि विदशियों का राज्य बाहे कितना ही प्रच्छा हो मगर पूर्ण सुसदायक राज्य ता स्व-देशियों के राज्य होने में ही है। दुर्दिन भव मारी हैं तब ऐसे ही मानवता को कष्ट उठाने पडते हैं, बब तक एक मत, एक हानि-लाम एक ही माचा न होगी तब तक पूर्व सुक्ष की कल्पना करना निरर्थक है। इसना ही महीं ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के ब्यारहव समुल्लास की प्रत्युक्तिका <u>मे</u> लिक्सा कि महाभारत युद्ध के

मर्हीष दयानन्द समग्र क्रान्ति के अग्रदूत थें

लेखक-रतनलाल आर्थ निजारा ग्रलवर (राजम्यार)

पश्चात इस भागवित दश की बही हानि हुई है। दिनोदिन यह दश रसा तल का बार जा रहा है। ग्रागे महर्षि लिखते हैं कि गुप्त हुए ज्ञान का पुन-मिलना बडा हो दुष्कर कार्य है। जैनी, पुरानी, किरानी भीर कुरानी यह सब मतो के मूल हैं। इसके पश्चात हो इस भार्यावर्त दश ने वास, गासा न्तर व मत-मतान्तर प्रचलित हुए है। इनका काई घन्यया नहीं कर सकता। आज जितना भी सम्प्रदायबाद इन बहुदबताबाद के मानने पर मिल रहा ह धौर |दना-दिन राष्ट्रीयत। नाम की चीज नहीं के बराबर है, अगर हम महर्षि दयानन्द के बताए हुए मागपर चल जसा कि उन्होंने वज व्यवस्था के बारे अम उद्घोध करते हुए लिक्सा झौर वेद का मन्त्र चद्धृत करते हुए कहा-

> बाह्यणोऽस्य मुखमासीद् बाहूराजन्य कृत । उस तदस्य यद्वैश्य, पदम्या शुद्रोऽजायत्।।

श्रवति-जिल प्रकार शरीर मे मुस श्रष्ठ है, इसी प्रकार समाजरूपी शरीर में जिसके कर्म बाह्यण के तुल्य हो, जैसा कि स्वामी जी ने लिखा है यज्ञ करना, कराना, दान दना भीर दान लेना, वेदोक्त धम का प्रचार व वेद का पढना भीर पढाना इत्यादि इसो प्रकार से ।अस प्रकार शरीर मे बाहुबल ग्रधिक है वहा राज्याधि कारी हो सकता है अन्य नही। तासरावर्ण जिस प्रकार धारी व मे पेट का स्थान है जो कि सभी भागो को भोजत का समान विभाग कर दता है इसी प्रकार समावरूपी शरीर मे जो वैश्य है उस का भी यह कार्य होना चाहिए कि वह समाज के सभी वर्गों मे धन का समान 🕬 से बट-व।राकरे और ग्रमाव का नाश करे चौषावर्षे जिस प्रकार शरीय में पैरो की स्थिति है कि सारे क्षरीर का बोऋ ढोते हैं, इसी प्रकार समाज रूपी शरीर में जिसको पढन पढान से कुछ नहीं जाने धर्मात् निर्वेद्ध हो उसे शुद्र कहना, मनर महर्षि ने लिखा कि खुद्र भी अपने उत्तम कर्ज से दिज सजा को प्राप्त होता है धीव द्विज झगर नीच काम करे तो वह भी शह हो खाला है। मर्जाख

न समाज म ग्रम्पुश्य समक्ष जान वालो के प्रति बहुत महान् काय किया है। महर्षि दयानन्द के पश्चात हो स्वामी श्रद्धानन्द भीर महात्मा गांची न इस कार्य को धाग बढाया। यह साराकार्य हो ऋषि दयानन्द की मावाजयो। भाजग्रगरउनके पद चिह्नो पर ग्रगर ग्रायांवत दश का मानव बले तो इसमे कोई शक नही कि हम अपने पिछले गौरव का पुन प्राप्त कर सकते हैं। इस वर्ण व्यवस्था पर भाषारित सामाजिक व्यवस्था इस्गरं पुन गुरुकुल प्रणाली के मान्यम से सरकार द्वारा व्यवस्थित हो तो किसो प्रकार का नेदमान ससमानता साम्प्रदायिकता छुझाछत, राष्ट्र की एकता धीर ग्रसण्डताकी जगह पर एक ही भाषा, एक ही मत कायम रहकर ग्राय साम्राज्य की एव राम-काज्य की कल्पना परिलक्षित हो सकतो, है

घार्मिक जबत में भी हम एके-श्वरवाद पर ऋषि दमानन्द के बताए हुए माग पर चल तो सारा ससार ही मोक्ष का मानन्द ले सकता है भौर तभी ससार य पूज कार्नित सम्भव है। कई देशों में तो ईश्वर तक को मान्यता नही है सोर जिस देश मे हैं यहापर भी एक ईश्वर के स्थान पद स्वय सिद्ध पदमातमा मोजूद है भौर भलग कलग मतो के प्रादर्भीव होने से मनुष्य की बृद्धि भ्रमित सो हो गई है, इसलिए महर्षि बयानन्द ने वार्मिक क्षत्र मे एकेश्वरवाद पर बल देते हुए लिस्ताधीर वेद का मन्त्र उदध्त करते हुए कहा कि 'न नस्य प्रतिमास्ति यस्य नाम महद्यश ।'

प्रवर्ति उस निवाकार परमात्मा की कोई प्रतिमा नहीं है जिसका कि नाम बडी महानता के साथ निया जाता है, इसी के साथ उन्होंने ईशो पनिषद के मन्त्र का हवाला देत हुए कहा कि...

> मन्यन्तम प्रविद्यन्ति ये मसम्भूतिमुगसत । ततो भूय इव ते तमो वेसम्भूत्या रता ।

म्रपति वे मनुष्य अन्धकार मे प्रविष्ट होते हैं जो ग्रसम्भूति अर्घात (जड प्रकृति की उपासना करते हैं)

होने 🖹 जा प्रकृति द्वारा निर्मित मृद्धि कुछ स्थूल जडपदार्थों की जसे वि मूर्यादिकी उपासना करते हे इसी-लिए तो महर्षि दयानन्द ने + तिपूजा श्रीर श्रवतारवाद का प्रवल तक भ्रोर युक्ति से खण्डन किया ग्रोर एक ईश्वर काप्रचार किया ग्रीर कहा कि परमान्मा सवव्यापक है उसकी मूर्तिया प्रतिमान्हो है ग्रोर जो मन्द्य परमात्मा को एक स्थान पर जन्तता भीर मानता है वह पापादि न म भौर कुचेब्टा किये बिना नही रह सकता बल्कि जो मनाय पर-मात्मा को नर्व यापक मानना और जानता है वह किसी भी जगह यहा तक कि अपने मन मे भी दुर्भावना नहीं प्राने देता मगर आजकल की ब्राह्मण मण्डली ईश्वर को मूर्ति पूजा के दायरे मे सीमित कर रामलीलाओं भौर रासलीलाग्नो द्वारा मूर्ति पूजा और भवतारवाद को बढावा दे रही है और मनुष्य मध्य को परमात्मा के सही स्वरूप का दिग्दशन न कराकर धन्धकार की गहरी साई म उकेल वही है। इस लिए ग्रगर ऋषि दयामन्द न होते तो भाषका यह आर्थावनं दश न जाने कहा रसातल म जा गिरता। फिर भी उनका उत्तराधिकारिकी आर्यंसमाज देश मे फैले मूर्तिपुजा अवतारवाद कुमाछत का इतना ही नहीं जो मुस्लिम आकान्ताको दारा हमारै समाज से ग्रस्प्रय समक्षे जाने वाले लोगों का विदेशी घन के नाम पर धर्मान्तरण कर रहे हैं एवं ग्रन्थ सामाजिक ग्रमिशाप एव राष्ट्र के विरोध स्वरूप जितने भी कार्य है ध्यान देकर इस देश को एक सूत्र में पिरोने का कार्य जैसा भार्यसमाज कर रहीं है भन्य नहीं। इसी प्रकार जो महर्षि दयान दन प्रत्यक क्षेत्र मे जो वैचारिक कान्ति को बह सदा हो सदा प्रनुकरणीय थी ग्रीर रहेगी।

चतर्वेद पारायण यज्ञ १४ दिसम्बर से २७ दिसम्बर ८५ नक समय प्रात ७३० से ६।३० तक ब्राहतियो द्व रा यज ऋग्वेद तथा यजुर्वेद रात्रि ७ ३० से १ बजे तक मन्त्र पाठ पारायण मामदद अधवदेद स्थान श्री मनोहर विद्यालकार का निवास १७० छत्ता भवानी शकर, फतेहपुरा (चिम्मन लाल की घमशाला के सामने) प्रवचन प्रतिदिन दोनो समय २ या ३ बार दम दस । मनट श्री सत्यभूषण योगी झयवा प॰ हरिशरण सिद्धातालकार आर्य भवदीय

बुरों की भलाई करना ऋादर्श परोपकार मानव का कल्याण मानवता से

टेक

-थामनी प्रकाश सद एम**ा प्रीनपार्क**

ससार में ईंडवर का चना मे मानव को सवा-कहर किन की सजा री गई है। स्रय सद प्राणी केवल अपने कल्यास की सोचते हैं ग्रीर दुसरे जानवर स कौर छीनकर खाने में भा नहीं हिचिकचान क्योंकि उनमे वृद्धि का धभाव है। मनुष्य को इसी-निए सर्वोच्च माना गया है कि उसमे एक विलक्षण शक्ति है जिसका नाम हमारे शास्त्रों ने बुद्धि व विवेक कहा है। व्योक के करण ही मानव धर्म-कर्मकरके मान्वताका कल्याण कर सकता है। यदि मानव में यह भिन्नता नहीं तो निम्नलिखित कहावत के अनुसार यह मानव कहलाने का प्रधि-कार हो नहा ग्यता--

£

बाहारनिदाभव अनुक्रव, सामान्यमेतत् पश्चित्रीराणाम्। धर्मो हि वेषामधिका विशेषो, धर्मेण हीना पश्मि समाना ।।

श्रयात श्राहार निका भय और विलास बामना मारो बात मनुष्य धौर पद्म ने एक समान ही हुआ। करतौ हैं। धर्म ही वह मूल विश्लेषता है जो मनुष्य भीर पशु में भेद करती है। वर्म के सभाव मे मनुष्य पशु से भी गया बीता है। जिसे मनुर्ध के लिए धर्म कहा गया है। वह वास्तव से यही है कि मनुष्य केवल अपने लिए जीने वाला धीर कवल धपने सुख स्वाधीं का ध्यान रखने वाला प्राणी नहीं है। वह एक सामाजिक प्राणी है ग्रन उमका प्रत्येक कार्य-व्यापार प्रत्यक कदम भ्रपना ही नही बल्कि सम्पूर्ण समाज भीर जीवन का हित साधन करने वाला होना चाहिए यही मनुष्यनाका सञ्चालक्षण है।

किन्तु ग्रतिबेद के साथ यह स्वी-कार करना पड़गा कि आज का मनुष्य निहित स्वार्थी और ग्रात्म-जीवी होता जा रहा है। वह अन्धा-धन्ध श्रपनी स्वाथ साधना मे तोव गति में भाग रहा है। उसे दूररों के द्शा ग्रन्याय ग्रत्याचार ग्रविदशम दखने की चिन्ता नही। यही कारण है कि बाज नारो घोर भय घौर घशाति का वातावरण बना हमा है, हाहा-कार मच हुआ है। दैहिक, दैविक, भौतिक तापा ग्राज जलाए सब को ब्रापा' व्से प्रभताका ही लक्षण कहा जाएगा। धांज सारे जीवन में घीर ममाज मे प्रभु-वृत्तिया घर कर गई है। वह इस कमीटी पर पूरा नही - त्रन^र कि ''वहो मनुष्य है कि ओ

मनुष्य के लिए मरे।' जब तक सब के कल्याण की भावना मनुष्य मे जागुत नही होती तब तक जाति दश धीर राष्ट्रका उत्थान सम्भव नही होगा। इस मानव कल्यारण की मावना सं भोत-प्रोत होकर ही हमारे प्रवानमन्त्री श्री राजीव गांधी मध्य-प्रदेश के ब्रादिवासियों में कैसे अनेक व्यक्तिगन दुक्त गाथाए सुनने गए। उसके पवचात उडीसा के दीन दुखियो को पुकार सुनकर ग्रभाव व भय से त्रस्त लोगो को पूर्ण बाइवायन देकर उनके कब्ट निवारण के लिए पूर्ण सहयोग के लिए कहा है। यह मानव योनि हो ऐसी दुर्लभ योनि है जिसमे मानव दूसरों के कट्ट हरण कर सकता है भी र मानवता का कल्याण करने ये समय हो सकता है। ग्राव मनुष्य में अञ्चाचार व चरित्र हनन का बोलबाला अधिक हा गया है क्यों कि वह मानवता के द्वित को भूल गया है। ग्राज एक देश दूसरे देश को निगलना वाहता है भौर शक्तिशाली राष्ट अपनी प्रभुसत्ता से छोटे राष्ट्रों को मास दिला रहे हैं भीर महासक्तियो के बल पर उन्हें भयभीत कर रहे है। बब तक समाज की देश की, राष्ट्र की प्रवृत्ति चर्म विमुख रहेगी राष्ट्र का कल्वाण यथासम्भव नही है। सूख व समृद्धि उसी के पाव चमती है जो मानवता के कल्याण के लिए धन्नसर होता है।

इस नर नन को पाकर कोई न कोई मागलिक कार्य अवस्य करना वाहिए। यह पच भौतिक सरीर तो भवस्यम्मावी नश्वर है वा भारमा समय है सौर उसी व्यक्ति की सान्मा बलशाली व पवित्र होती है जो पाप वृत्ति से दूर रहकर सत्सगनि मे प्रधिक समय व्यतीत करता है। वर्म के धनुसार ग्राचरण करता है भपनी वृत्तियो का बाह्यमृत्रो न करके अन्त-र्मुल करना है उसका ध्येय मानव मात्र का कल्याण हो होता है भीर परपी ना को वह अपनी पीडा समक्रता है भौर दूसरों के थोड़ से दुख को भी महान समभ कर उसक निवारण का पूर्णप्रयास करता हुआ। सच्चे पिता ईश्वर की गोद का अधिकारी हो जाता है। जन्म-मरण के बन्धन से

(शव पुष्ठ १२ पर)

-पृथ्वीसिंह बेघडक ग्रार्थं भजनीक

बूरो की भलाई करना सबसे अच्छा काम है। छडा दे बुराई उसकी जिससे वह बदनाम है।। छोडकर बुराई बुरा धच्छे काम करने लगे शायद उसको देख उसका णाई भी सघरने लगे। बतायों नो इससे प्रच्छा और नया प्रोग्राम है छडा दे बुराई उसकी जिस से वह बदनाम है।।१॥ कोई बुरा होता नही ब्री हो लुटता या रोजाना जो लोग और लुगाइया। जिसका भाज मिद्ध ऋषि याल्मीकि नाम है छडा दे बुराई उसकी जिस से वह बदनाम है।।।।। शिक्षा देकर दूर करो ग्रज्ञानी की ग्रज्ञानता, भगर शिक्षादेने पर भी किसी की नहीं मानता। फिर तो उस पापी के लिए राम है घनश्याम है, खुडा दे बुराई उसकी जिस से वह बदनाम है ॥३॥ मुसलमान ने ही मुसलमान को बरबाद किया, भारत ने कूर्बानी करके बगला को ग्राजाद किया। पूछो जिया से क्या धव भी सतरे में इस्लाम है, छडा दे ब्राई उमकी जिस से वह बदनाम है ॥४॥ बहाद्रशाह जफर का बेटा एक रोज मथुरा गया, वजानन्द के पैर पकडे पाच गिन्नी देकर कहा। खुदा के फरिश्ते तुम्हे शाह का मनाम है, छुडा देवराई उसकी चिससे वह बदनाम है।।।।।। स्वामी दयानन्द ने कहा या तहसीलदार को, छोड दो गराव सुनो वेद के प्रचार को। धमीचन्द तू हीरा है पर वेदयाओं का गुलाम है, खुडा दे बुराई उसकी जिससे वह बदनाम है।।६॥ पिलायाचा दूध जहर गेर करके किसी ने, पांच सौ रुपये दे करके कहा था यह - ऋषि न। दयानन्द की तरफ से यह प्रापको इनाम है, छडा दे बगई उसकी जिससे वह बदनाम है।।।।। ईश्वर की असली भक्ति मत्यार्य-प्रकाश मे, यस्य नाभ महस्रका य्यारहवे समुल्लासमा ज्ञान से बच्छा जाप घो ३मृ नाम न्याम शाम है, छडा दे बराई उसकी जिससे वह बदनाम है।।दा। एक डेढ मिनट बाकी रह गया था फासी का, ितना अच्छा फिकरा था यह अक्त ईसा मसी का। द गृह ऐण्ड फोरगेट पाखिरो कलाम है। छुँडा दे बराई उसकी जिससे वह बदनाम है ॥६॥ कृष्ण जैसी नीति रहे राम सी मर्यादा रहे, पृथ्वीसिंह वेषडक कहै शासन प्रजाबाद रह। जिला मेरठ ग्रन्दर जिलका शिकोहपुर ग्राम है, खुडा दे बराई उसकी जिससे बहु बदनाम है।।१०।।

टिप्पणी -मार्थसमाज के सुविख्यात बार्य मजन उपदेशक वीर बाख् कवि चौघरी पृथ्वीसिंह वेश्वहक ने प्रयन स्वर्गवास से कुछ पहले, दुर्जनी के सुधार तथा उनके दीव निवारणार्थ १० पद्माशों का यह गीत बनाया नाया था। जैसे साधुर्धों के मत्सग से रत्नाकर डाक् किंव वाल्मीकि ऋषि बना वा । भारत ने बगलादेश स्वतत्र कराया । गुरु बुजानन्द की राजनैतिक गुप्त मबुरा पचायत श्रीकृष्ण जन्माष्टमी स० १६१३ वि० मे दिल्ली नरेश बहा-दुर बाह का बेटा फिरोजशाह ने गुरु को पाच गिल्ली भेटकर सम्मान किया तथा अपने पिता का भा सम्मान सदेश दिया था। वह शाहजादा सग्राम हार के पदचान सक्का मदोना जाकर सन १८१६ ई० में गुजरा था। महर्षि दयानन्द के उपदेश से अमीचन्द मार्ये मजनीक बना । विश्वदाता जगननाथ की महर्षि ने पाच सौ क्यये दिए वह पक्कात्ताप पूर्वक दुर्गति सहित मरा। कहा है ईस'ममीह ने फासी के समय भी परे,पकार की बात कही थी, ईश्वर मक्ति दूर होकर वह ग्रमसात्मा हो जाता है। नवा भो ३म स्मरण सर्वश्रेष्ठ उपासना है, दुराग्रहो दुष्टो के लिए रामकृष्ण का दण्ड चाहिए। चौधरो पृथ्वीसिंह का ग्राम शिकोहपूर है।

प्रेषक निहालसिंह बार्ये पता उसीर खेडी रोइतक

9

पस्तक समीक्षा-

'प्रभुदर्शन'

लेखक श्री यशपाल जी 'ग्रायंबन्धु प्रकाशक महिला ग्रायंसमाज, स्'शन रोड, मुरादाबाद। यूरुय केवल प्रचार

'प्रमुदर्शन' को बात प्राय सभी मत मतान्तर करते हैं और इस सबय में ग्राज जितना भूग ज्याप्त है शास्त्र हो ग्रन्य किसी विषय में हो। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने प्रमुदर्शन का वैदिक दृष्टिकोण ग्रत्यन्त सरस और सरस सब्दों में सुन्दर तर्क और ह्यादनीय प्रमाण के साथ प्रस्तुत किया है।

श्री यशपाल जी प्रायंवन्यु प्रतेक वर्षों से प्रपत्ने लेखों तथा लच् पुस्तकों के मान्यम से इस वैदिक माम्रिट्य की निरत्तर सेवां कर रहे हैं। हमारा डिडवाम है कि प्रायंज्यात में इस प्रकार के प्रथक प्रयास की न केवा मराहता होगी भी स्पायं की के स्थिक पुस्तक विनरण द्वारर श्रवाय प्रसाय होगा प्रपितु साहित्य प्रकाशन की सेवा हेत् अवस्य बायसमाज के प्रका-शन विभाग की सहायता करने।

श्री 'धार्यंबन्धु' स्वाध्यायकोल स्रोव प्रायंसमाज हरवला कालोनी मुरादाबाद के सिक्रम सदस्य हैं। उनकी बीस के लगभग इस प्रकाव की पुस्तके प्रकाशित हो चुकी हैं।

मैं उन्हें धौर आर्यसमाज के महिला विभाग को जिन्होंने उनको प्रस्तुत पुस्तक का प्रकाशन कराया है बघाई देता है।

> प्रमचन्द्र श्रीघर एम ए ३६/ईरणजीतसिंह मार्ग श्रादर्शनगर दिल्ली-१ ००३३

गांव शहर बिकते हैं

यत्र सन्त हो जाता है जब समिया और धाहूति से हन्य तो वही रहता है मन इलिन हो जाता है भीर जब— इदल सम का स्थान हव अहम है लेता है तब धवतिरत होता है जयवन्द बीर सीमनाथ का मन्य विवासय पट-सड होकर विकास वाता है गीरी के राक्षसी करमों में ।

→ × ×

राम का बन गमन

रयानन्द का बैराग्य

महावीर का बपरिसह

हुढ का राज्य त्याग

मात्र पेतिहासिक घटनाए नहो थो

उनको पुरुर्जूमि में या

मात्र को समस्टियत

नुढ जीवन के सकल्य का पाठ

बहा सम्राट् दशक-घर को भिगनी
इन्द की समस्राए

गौर वैशाली की बामपाली

उद्दोचन, घन छिन लेवर भो

राजित हो रह गई थी

\(\times \times \times
\)
इयो घूमना रहा गांधी मात्र नगोटी मे

कैसे समक्ष पाये घान्ध्रवासी उसकी

भाषा

क्रॉकड, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु कैसे बन गए उसके श्रनुसामी निरन्तर उपवास श्रुद्धि सस्याग्नह इन सब का सुदर्भक्या था ? दो पैसे सेर के नमक हेतु दाण्डी यात्रा, लाठी वार्ज भीर चौंसट हजार व्यक्तियों का कारावास भर देना हॅस कर सहना सभी याननाए

क्या केवल ग्रहतीस वर्षों मे राष्ट्र का चरित्र बदल जाता है यज वही रहता है मन कल्षित हो जाता है लग जाती है सेवादारों की लम्बी चक्रब्युहो पक्तिया ग्रीर राजनयिक भवनो मे सेवादार छन्ते है सेवक की धर्जा पर हजूर की मर्जी पर गाव शहर विकते हैं। सेनाधिकारी बन जाते हैं लारकिस बन्ध्, भ्रौर व्यापारी-मिएक नाल कूमर नारायए। सेवक हनुमान् की गरिमा भूलकर चुराने लगते हैं स्वामी के रहस्य धर्मात शुद्र भपनी सुद्रता पर उतर बाते हैं जलवे लगते हैं सविधान के पष्ठ देश जायदाद का रूप ले लेता है बँटने लगते हैं उसके भूभाग भग्न हो जाता है भौर बिखर जाते हैं चारी श्रीर राक्षस ही राक्षस ।

---नरेश गुप्त 'नीरव'

देवदयान्द बता गये

ल**सक—स्वर्गीय प० देवेन्द्र जी तूफान** स्थान पो० सुरचपुर जि० गाजियाबाद (यु०पी०)

भारत देख हमारा त्यारा बन जाए स्वर्गनगरिया। देव दयानन्द बना गए हमे वैदिक वर्म डगरिया ॥

एक ब्रह्मका पूजन हो ना पूज दर दीवारो को। सन्ध्या हवन कर नर-नारी रख गुद्ध विचारो को। ग्रन्त के घट-घट भरे हुए हो कोठ खास कुटरिया।

> सभा सचिव मन्त्री ससद में मनुबंद के जाता हो। राज्य की गद बनाकर खेल राम भरत से भाता हा। मीता जैसी माता हो जो तज दे महल श्रटरिया।।

शिल्प क्रास्त्र के पड़ित हो भौर सुझी ममी किसान हो। कान पकड लाए शेरो के बच्चे भरन समान हो। सुग के तुल्य बगण्ये उछल बछडगाय बछण्याः।

> ब्राई है गुम्न वडी देश में फिर सनव निर्माण की। गृद्ध भावना बनी रहं प्रन देवेन्द्र तुफान की चाह कोई उछाले मोना चादी बीच बजरिया।।

गाजर के गुण

र्ले ० स्वामी स्यम्पानन्द सरस्वती

आजकल गाजर की फनल कुछ हो गई है मौर बाजार मे सभी प्रकार की गाजर उपलब्ध है। गाजर कई रगों में होनी है जेंसे के काली नारगी बंगनो भीर लाल रम की गाजर। इन सभी प्रकार की गाजरों में भनेको प्रकार के गुण होते हैं। किन्तु विशेष लाभ की दृष्टि से देशी गाजर प्रथिक लाभ की दृष्टि से देशी

कहावत है कि---

गाजर, बणाबा ग्रामला जो साथ मन लाय। क्षाचा बढे कब्जी मिटे.

खुन साफ हो जाब ।।

गाजर के उपयोग करते व साते का बग इस प्रकार—गाजर कच्छो साते से तथा चसा-चसा कर साते से ऐट साफ रहता है। गाजर मे १२ किस्म के लगण पाये जाते हैं। इसमे सल्फव, सोडियम क्सोरीन मंगने-श्चियम, केलियम सिस्कन पोट-सियम इत्यादि सभी तत्त्व मोजूद है। भी कि कब्बो दूर करने म सहयोगी हैं।

गाजर स्वास्थ्य वर्षक और गुण-कारी तत्त्वो का अप्डार है। गाजर के रस मे उपरोक्त सभी नत्त्व पाये जाते हैं जो लामकारी व पुष्टिकारक होते हैं। गाजर का हलुवा बना कर भी साया जाता है। गाजर को छील कर बोच की नली को निकाल देना साहिए। फिर पानों में घोकर बीया कहा में क्षा कर दूप में पकाना चाहिए गां होने पर मीठा मिला कर हलुवा तैयार होता है। कुछ लोग मावा (खीआ) भी मिलाते हैं जिसके साम पिस्ता काज इलायसी मिलाकर तथार करन है जिसके सेवन करन म अरोग पुष्ट होना है।

गाजर की सब्बो बना कर खाने से पेट साफ रहता 'न्या पेट की बीमागी खत्म होती है। रक्त युद्ध होना है। इस सुद्ध होना है। इपलिग गाजर का उपयोग भववय करना चाहिए। गाजर को बालू में भून कर खान ने बहुत गुण बढ जात हैं किन्तु उण्डो करके खाना चाहिए नहीं तो दानों की जढ खराब हो जाती हैं।

गांचर का मुख्या भी तनाया जाता है जो कि कठनी को खत्म कर के मूल बढाता है। गांजर के रस में थोडा सा गुड मिमाकर पोने से मूज बिकार दूर हाता है। साथ ही जम बोग ठोक होते हैं। सम्ती मिलती है। भाजकल मौसम है प्रयोग कर लाभ उठायें।



समाचार सन्देश

त्रागामी १४ फरवरा १६८६ को दिल्ली में डी०००वी० शताब्दी समारोह पर विशाल गोभा यात्रा कार्यक्रम मभी त्रार्थसमाजों व त्रार्थजनों मे इसमें भाग लेने की त्र्यील

दिल्ला. ४ दिसम्बर

ार्गवेदिशक प्रायं प्रतिगतित मना के प्रधान की रामगीवाल द्यालवाले के प्रधान की रामगीवाल द्यालवाले की एव बीव द्यालव्दी समारोह पर जिकतन वाले विश्वाल द्योगमा कृश्या में सम्मिलत होन के लिए सभी आयं स्थाओं व कायकर्ताओं को विशेषकर दिल्ली की ममस्त आयं जनता से प्रपाल काई कि स्मारत आयं जनता से प्रपाल को है कि इस दिन सभी लोग खन्य कार्यक्रमों को कोडकर इस सोमा यात्रा में बडी सस्या में भाग वांगा यात्रा में बडी सस्या में भाग वांगा यात्रा में बडी सस्या में भाग

यह शोमा यात्रा प्रात ११ वजे

लालकिला गद न ने प्रारम्भ हागो जोर बादनो चौक घण्टाघर नहीं सबक चात्रडो बाजार होजकानी सबकेरी गेट, मिण्टो रोड, कनाट त्लेस रीगल बिल्डिंग, पालियामेण्ट स्ट्रोट सरदार पटेल चौक गोस डाकखाना , विडला मन्दिर से होती हुई साय ५ बजे आर्यसमाज मन्दिर मार्ग नई दिल्लो मे समाप्त होगी।

इस सबसर पर सनक कार्यक्रमो का भी सायोजन किया जा रहा है।

> प्रचाद विमाग सार्वेदेशिक समा, दिल्ली

विस्थापिनो भौर बुसपैठियो मे भेद किया जाए

हिन्दू रचा समिति की अध्यक्ता पंढिता राकेश रानी का वस्तव्य

घसम समभौते के घन्नगंत वगलादेश से धसम में धाए लोगों को १० साल के लिए मतदान से विश्वत करते का निजय विवाद का विषय बन गया है। इसके कारण बगलादेश से आए हिन्दू विस्थापितों के मन में धाकोश पनप रहा है। उनका कहना है कि भारत विभाजन के समय उन की इच्छा के विरुद्ध उन्हे वयसादेश तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान मे रहते के लिए विवश किया गया था। उन्होंने कभी पाकिस्तान बनाने का न तो समयन किया था भौर न ही उन्होने मात् भूमि भारत से भपना सम्बन्ध विच्छेद किया था। इसलिए ये घ्सपैठिये नहीं बल्कि विस्थापित हैं भौर मातृभूमि मे मसम्मान वापस लीटना उनका श्रविकार है। बगला देश से बाये हिन्दुबों के इस कथन मे कन है। वे घुसपीठये नहीं बल्कि बिस्यापित हैं इसके विपदोत ग्रसम मे भूमि हडपने भीर राजनैतिक स्वार्थों को दब्टियत रखकर इसे बगलादेश में मिलाने की योजना मन मे रखने वाने मुस्लिम तस्व वस-पैठिए हैं। घसपैठिया भीर शरणा-थियो मे प्रन्तर समभना चाहिए।

मारत सरकार ने पहले मी पश्चिमी पाकिस्तान से आने वाले हिन्दुश्रो को विस्वापित माना वा । शब श्री लका से भागकर धाने वाले पीडित तमिल हिन्दुओं की भी संबकाय विस्थापित ही मानती है और उन्ह पूरा सरकाण दे वही है। किर इन बगलादेश के विस्थापिती को हिन्दुस्रो के साथ ही सौतेलापन क्यो ? बगखा-देश से निहित स्वायों के कारण वसे मस्लिम बसपैठियों के स्तव पर रखने के पीछे केवस बोट की राजनीति की मानसिकता काम कर रही है। हमारा समो राष्ट्रबादी नागिको धीप सस्थाओं से अनुरोध है कि वे बगला देश से बाए।इन हिन्दू विस्वापितो के हितों के सिए आवाज उठाए। इनका मताधिकार स्ट्ट कचना इनके साय घोर बन्याय है।

> भवदीय राघेरयाम कर्मा

महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा, जिला राजकोट (सौराष्ट्र) भारत सरकार द्वारा श्रकालग्रस्त चेत्र घोषित

धाय जनता की सूचनाथ जिये-दन है कि युग प्रवर्तक महिंव दयान-द की जन्म भूमि टकारा, बाज धकाल के कराज गासी में जा रहा है। आरत सरकार ने टकारा (जिला-राजकोट) सहित समस्त सीराष्ट्र को धकालयस्त चोषित कर दिया है।

टकारा में इस समय उपदेशक विचालय गोशाला प्रादि कार्य महाँच स्यानन्द समरक ट्रस्ट टकारा द्वारा बताये जा रहे हैं। इसके कारण टकारा ट्रस्ट को काफी आर्थिक सकट का सामना करना पद रहा है। बहा पर पानी बिस्कुल सुझ गमा है, जिस से काफी सकट उरएन्न हो गया है।

मेरी समस्त धायसमाजी स्त्री-

वेद अचार गोष्ठी

श्र**जमेर १८-११-१६८५ परोप-**कारियो सभा के तस्वाबधान मे ऋषि मेले के अवतर पर मध्याह सत्र मे चर्चा की गई। रामस्वरूप समोधक गोह्दी ने कहा कि (१) ऋषिकत वेद भाष्य उसी भैली में प्रवाहो (२) सब भाषाधी ने इसका मनुवाद हो (३) धाक्षेत्रों का निरा करण हो। (४) एक निर्धारित रूप रेसा धनुसार विभिन्न देशों के मूल-वासियों में वैदिक बर्म के उपदेश की व्यवस्था हो । इन मुद्दो पर गभी र विचार करने के लिए लब्बप्रतिष्ठ वैज्ञानिक शिक्षा वेसा स्वामी सस्य प्रकाश जी की श्रध्यक्षता में गोष्ठी हुई।

क्रमण स्वामी प्रोमानस्य जी महाराज (प्रधान, परोपकारिणी समा। सत्यप्रिय धास्त्री (हिसार) प० भानन्दत्रिय जी (बडीदा), डा॰ भवानीलाल जी भारतीय (बडोगढ). ओ • वेशसह जी (नई दिल्ली), वैद्य प॰ बह्यानन्द जी (शजमेर), कु॰ सरोजिनी (प्राचार्या-कन्या गुरुकुल वित्तीह), प० भन-तशम जो (व्या-बर) बजरग लाल जी (डोडियाणा), धर्मवीर जी (छात्रडी), वसीसास जी (देवलो), सोहनलाल शारका जी (शाहपुरा भीलवाडा) वैदा लक्ष्मण सिंह जी, श्रीमती मिविनेश (महिला धार्यसमान बजमेर), मजनोपदेखक बेगराज की, भोगाराक वानप्रस्की जी (शिवगव), प्रदीप (सामीर), वैद्य धमसिंह जी कोठाबी ने विचार व्यक्त किये। शान्ति पाठ कियोडीमस जी गुप्त ने किया।

सब बक्ताओं ने सक्षेप में न सक्स भाषा में अपनी बात क्वी। उप-
> रामनाच सहगल सन्त्री

रोक्त चारों विषयों के बारे से क्या किमया रही हैं ? क्यो रही हैं ? क्यो कैसे दूर हो सकतों हैं ? इन सब पव चर्चा की गई। वक्ताओं ने खाबे के कार्य की दिखा की ओव सकेल किए।

श्रोताझाँ का यह प्राप्तह रहा कि इस प्रकार की रोक्टी बाद बाद हो। उपयोक्त कारों विषयों पर प्रकार कर के के हैं दिन गाफी होनी प्रकार के के हैं दिन गाफी होने प्रकार के के हैं कि स्वार्थ के हों। प्राप्त के से हों, गारत के प्रकार के रहा के

रामस्वरूप गोष्ठी सयोजक

धार्मिक विक्चर

प्रचार पर्दे पर भाषभी भ्रयने सार्यसमाज ने कराइए।

गोहत्या, दहेज, महासमुद्रा के बिकट तथा धार्यसमाज क शहोदो की पूर्व जीवन्या स्लाइटम द्वारा दिखलाई बाती हैं। जोशोले गीत यो होते हैं। बिजली का प्रबन्ध ध्रवस्य हो।

द्यासानन्द भजनीक द्यार्यं भवन १/६३४६ प्रतापपुरा, गली न० २ बेस्ट बोहतास नगर साहदरा, दिल्ली-३२

दिल्ली की श्रार्थसमाजों के साप्ताहिक सत्संग रविवार १४ दिसम्बर १६८४

प्रतापनगर-ब॰ भीष्मवत शास्त्री, महात्मा देवेश भिक्ष । मौडलबस्ती-ग्रातन्द्रविद्वार जेलरोड-प० हरि-ज्वन्द्र ग्रार्थं । ग्रार्थं रहा सब्जीमण्डो-व • उदयश्चे ब्रु धर्माचार्यं । इन्द्रपुरी---पः वेदप्रकाश शास्त्री । किंग्जवे-केम्य--- प० बहाप्रकाश शास्त्री । गुज-रावाला टाउन-डाक्टर रघनन्दन मिह । गोविन्दपुरी-स्वामी यज्ञानन्द सरस्वतो । लक्ष्मीनगर विस्तार-यः चन्नालाल ग्रायं भवनोपदेशकः। चनामण्डी पहाडगज-डा॰ छविकृष्ण शास्त्रो । जनकपुरी बी ब्लाक-डा॰ धमंदेव शर्मा ! तिमारपुर-श्री धमी-बन्द्र मतबाला । तिलकनगर-डा॰ वेदप्रकाश महेश्वरी । देवनगर-प० मोमदेव शास्त्री । दरियागज -- बहा-चारियो, पवित्ता रामदेवी एम०ए०। नागलराय-बहाचारी मनुदव शास्त्री नारायण विहार-पर्व रामवीर शास्त्री, श्रानिवास पुरी - प० अमरनाथ कान्त द्यार्थो । देशोर गार्डन-प् कामेश्वर शास्त्री। प्रीतमपुरा-प० नेत्रपाल धार्य । प्रशान्तविष्ठार -- प० चम्रतमान बार्थोपटेशक । पजाबीबाग एक्सटेन्सन---प॰ वेदव्यास भार्य भन-नोपदेशकः प्रजाबी बाग-साचार्य इरिटेव सिद्धान्तभवेण । भोगस--

प - तुलसोराम ग्रार्थ। मोतीबाग---प॰ बलवीरसिंह शास्त्री। महाबीर-नगर - प॰ रमेशचन्द्र वेदाचार्य । राणात्रताय बाग-प॰ धन्नोक विद्या-लकार। राजीशे गार्डन-पं॰ ब्रह्म-पकाश वागीश। रमेशनगर - धार्य-वोर रमजीतसिह राणा । लझ्मीबाई नगर-प॰ नन्दलाल निभंग सिद्धान्त शास्त्री । लड्डूबाटो—मा॰ मोहनलाल नांघी । सोहनगज- पं व मुनिदेव मञ्जनोपदेशक । शालीमार बाग- ढा॰ सुभावचन्द्र शास्त्री । शादी खामपुर--प॰ देवराज बेदिक मिश्नदी। त्री-नगर--श्रोमती कस्तूरी देव शार्या। होजसास-- धाचार्य दयामलास । धनाजमध्डी शाहदरा--महात्मा राम किशोर वैद्य। दीवानहाल-- भावार्य हरिदेव सिद्धान्तमयणः बोट क्लब दोपहर १ बजे से २ बजे तक ह १०, ११, १२ १३ दिसम्बर आचार्य हरि-देव सिद्धान्त भवण नक केशरी का प्रवचन होगा।

> व्यवस्थापक स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती ग्रमिष्ठातः वेदप्रचार

दिल्ली श्रार्थ प्रतिनिधिं सभा के उपदेशकों के कार्यक्रम दिंसम्बर ११८४

१ महात्मा रामिकशोर जी वैद्य महोपदेशक ६ दिसम्बद से १५ दिस-म्बर प्रायंसमाज प्रनाजमण्डी चाह-दरा २२, २३, २४ विसम्बर-ग्रार्थ-समाज सोहना [हरियाणा) २८,२६ दिसम्बर् धार्यसमाज मोतीनगर नई दिल्ली-१५

२. पण्डित सत्यवेव स्नातक रेडियो टी बी कलाकार १ से १४ दिसम्बर नक प्रनाजमण्डो शाहबरा, मधीत कार्यक्रम रहेगा ।

३ पण्डित जोतीप्रसाद ढोलक कलाकार ६ से १५ दिसम्बर धनाज-मण्डी बाहदरा-संगीत कार्यंकम ।

😮 प॰वेदग्यास ग्रामं प्रचारक सगीत कलाकार १ से १५ दिसम्बर, भार्य-समाज कृष्णनगर कार्यकम रहेगा, १८ से २२ दिसम्बर, आर्यसमाज ऋषिनगर सोनीपत (हरियाणा)।

थ. ग्राचार्य हरिदेव सिद्धान्त-भवण ह से १३ दिसम्बर, दोपहर बोट क्लब कार्यक्रम रहेगा।

६ वं० ब्न्बीलाल झार्यप्रवारक सगीतज्ञ १५ विसम्बर फात' १ बजे.

लक्ष्मीनगर विस्तार (सगीत कार्यक्रम) १६ से २० विसम्बर तक दोपहर १ बजे से २ बजे तक बोट क्सब कार्य-कम सगीत द्वारा प्रस्तूत करेंगे।

व्यवस्थापक स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती प्रांचळाता वेदप्रचार विभाव दि॰ अ॰ प्र॰ समा

हरिजन युवक बनवारी विंधर्मियों के चंगुल से मुक्त

करा दिया गया

तिजारा । दिनाक ४-१२-दश ग्राम सातीवाडा (टपूकडा] की मस्जिद के इमाम दुल्ली फकीर धादि साथियो द्वारा हरिजन युवक बनवारो को धर्म परिवर्तन के लिए उडा लिया गया या जिसको बाना टपूकडा के धवक प्रयासों से बार्यसमाज एव विदव हिन्दू परिषद तिजारा के कार्य-कर्ताओं ने मुक्त कराकर शुद्ध कर स्थिया गया है।

विशनदास घार्य सन्त्री प्रार्थसमाज तिजारा, ग्रमवर

श्रायंवीर दल की देन यवकों का शारीरिक स्वास्थ्य विकास

ले०-रामाजा वैरागी सचालक मार्वदिशिक धार्यवीर दल विदास

युवको की पीढी, राष्ट के भविष्य की भाषारशिला होती है। इम भाषारशिला को सशक्त रखने के लिए युवको के शारीरिक स्वा-स्थ्य के विकास की दिशा में आय वीज दल का प्रयास हमारे सामने है। श्रायंवीर दल की शाखाओं भीर शिविरों के माध्यम से युवको को पूर्ण मनुशासित जीवन जीने और बहा-मृहतं में उठने की प्रवत्ति को जागत करने की प्ररणादी जाती है। इन वाखाओं के साध्यम से जारी कि शक्तिको सशक्त बनाने का एयस्त किया जाता है। दैनिक व्यायाम का भ्रम्यास युवको क लिए सक्षम मिद्र होता है। ऐसे श्रसस्य उदाहरण हमारे सामने हैं. जो ध यंबोर दल से सबद होने से पूर्व आचरणहोन ही नहीं अकित से क्षीण हो चके थे उनके भीतर सगठित चरित्र शक्ति का निमाण ही नहीं हथा वरन् उनके भीतर नवजीवन कं मचार हथा। व एक भादर्गश्रीर साहरी युवक के रूप मे समाज के बीच प्रतिकित हए। धार्यवीर दल की स्पष्ट मान्यता है कि चरित्रवान युवक हो जागत राष्ट्र के निर्माण में मही मागीदांव होते है। युवको का चरित्र ही राष्ट्रीय वरित्र को निरूपित करता है। आये वीरदल धाज भी ग्रयने ट्रमी लक्ष्या भीर उद्देश्य को लेकर ध्रयसर है।

साधना की भूमि या माधना मन्दिर

पथ्वो गष्ट का शरीर है, जनता प्राण-है भौर संस्कृति है मन शरीर प्राण और मन के साम्मलन से ही राष्ट्रकी आरमाका निर्माण होता है। हमारे देश का नाम आर्यावर्त है, भारत है। भारतीय तात्पर्य धाय सस्कृति की स्पष्ट परिभाषा है---कुण्वन्तो विद्वमार्यम धौर हमारी संस्कृति का स्वर है- सर्वे भवन्तु सुस्तिन । इस परिभाषा के अध्य-यन के लिए शिक्षा भीर स्वाध्याय मनिवार्य है। वेदों में उत्तम कोटि ने राष्ट्र निर्मास के लिए मानसिक तेज तथा शारोरिक क्षक्तिका प्राप्ति के लिए प्रार्थना को गई है। इसा दृष्टिसे इस परम पावन लक्ष्य की प्राप्ति के लिए धार्य वारदल भीर स्वाध्यायी प्रकृति को प्रनुप्ररित करने, ब्रह्मचर्य धम पालन करने के

साथ ही जारीरिक स्वास्थ्य की समुन्नति के लिए और विशिष्ट सर्वा की ग्रोर ग्रभिक्षि जागत अस्ते के लिए साधना भूमि या साथना मदिर के निर्माण की योजना को अतिम रूप दिया गया। भाय वीर दल की मोर से भारत क विभिन्न प्रदेशों से बहुत सार माधना मदिर स्थापत किए गए। यह योजना समग्र रूप से प्रश्न-सित भौर प्रतिष्ठित हुई है। बीच से कुछ शिथिनता भी बाई है किन्त श्रम पून जागरण है। जिसके लिए हमारे प्रधान संचालक धा बाल दिवाकरहस नथा उपप्रधान सचा-लक डा॰ देवव्रत प्राचाय समर्पित हैं। आयंबीर दल के कार्यों की विशेष जानकारी हेतु 'ग्रायवीर दल एक परिचय" पुस्तक छप गई है श्रवद्य

शोध-संगोर्घ्य

"ब्राज दिनाक २४ ११-८५ ई० को स्वामी समर्पणानन्द वैदिक जोध सस्यान गुरुकुल प्रभात ग्राध्यम (टोकरी) भोला भाल मेरठ (उत्तर प्रदेश) में पुज्य स्वामी विवेकान-द जीसरस्वतीकी ग्रध्यक्षता मे एक शोध समोध्ठी सम्पन्न हुई । जिसका सयोजन डा॰ निरूपण जी विद्याल-कार ने किया है। इस मगोष्ठी का विषय बा--'वैदिक महिनाओं मे देवताबाद' इस समोच्डी में प्रोफेसर षेरसिंह, श्रीमती प्रभात शोभा, **डा**० कर्णसिंह, डा॰ वेदपाल (पजाब वि॰ वि०), डा॰ स्मा दुर्बानवा, डा॰ वेद-

प्रकास, कु० शोला (शोध छात्रा दि० वि०वि०), सुनीना वर्मा, श्री सोमदेव शताश, श्री शिवशकर तथा बहा-चारी वाचस्पति ग्रादि वक्ताग्रो ने अपन विचार व्यक्त किये। अन्त में गुरुक्त के मत्री प॰ श्री इन्द्रराज जो सब को धन्यवाद देत हुए शोध सस्यान को योजना पर प्रकाश डाला यगली संगोष्ठी १३ जनवरी १६८६ को ग्रायोजित करन का निक्चय किया गया।

> भवदीय उन्द्रगाज मन्त्री

प्रेटर कैलाश १ मे श्रार्य युवा मम्मलन सम्पन्न

ग्रायसमाज ग्रन्स कलाश १ क वार्षिका सब पर आय युवा सम्मे सहगल ने सामाजिक सस्यामी से मागकी कि वे युवको को उचित प्रतिनिधिवदायुवा । वशके उप सक्य में कुछ घाय संस्थाए हा काय ऋमो मे युवाअ। का स्थान दे पाई है। धायसमाज क प्रारम्भिक इतिहास मे हम देखते हैं कि युवा वग की प्रचार शली व बडाय हस हा भायसमाज ने बहुमुखी उनात का

प्रसिद्ध ग्रध्यक्ष श्री बमवार एम

ए ने ग्रायसमाजो से ग्रापील की कि वे युवको को भाकषित करने के निए नन की ब्रध्यक्षता करते हुए श्रा धजय मन्दिरों में ब्रखाड यायामशालाए जडो कराटे∦ केंद्र और योगासन कक्षाओं का भायोजन कर।

युवापत्रकार श्रीनरेद्र श्रवस्थी ने कहा कई भी सस्यायुवको के माने से ही गतिशील होती है। युवाभो को अयसनोसे मुक्ति दिला कर राष्ट की मेवाम उहे श्राय समाज ही लगा सकता है।

च द्र मोहन धाय

वेद प्रचार सप्ताह मम्पन्न

धायसमाज बसई दारापुर रतन पाक रामगढ ई एस झाई कालोनी नई दिल्लो ११००१५ मे ७ नवम्बर से १० नवम्बर १६८५ तक वेदप्रचार सप्ताह का कायकम सम्यान हुन्ना जिसमे यज्ञ के ब्रह्मा डा॰ धम देव शर्भा तथा सतदेव जी रेडियो ,कला कार के प्रतिदिन भजन भौर माचाय हरिदेव जी तक केशरी द्वारा कथा के माध्यम से वेद माग पर चलने का सदुपदेश हुआ। पूर्णाहुति के दिन प्रो० मारत मित्र जी शास्त्री खुशी राम जी ने यज्ञ एव वेद के सम्माध मे सदुपदेज दिया। इसी अवसर पर श्री राजकुबार जी यागी सदस्य दिल्लीनगरनिगमन प्रो०दुनीचन्द

पुस्तकालय एव व चनालय का भ्रपन करकमलो से उदघाटन | किया भीर ३१०० रुपये प्रदान कर सभी लोगो को वेद उपनिषद रामायण झादि ग्रयो के झध्ययन को प्ररणा दी। स्व० प्रो० दुनीच द जी का पृत्री श्रीमती शान्ति सभरवास ने ५००/ रुपये तथा षामिक पुस्तक प्रदान की। श्रो मगतराम जो मूतपूव कौसलर न सभोका घन्यवाद मौर समय समय पर झच्छे-अच्छे ग्रायो के सध्य यन के लिए भान का निमत्रण दिया।

कृष्ण कुमार छावडा मन्त्री म्रायसमाम बसई दारा पूर नई दिल्ली ११००१४

श्राय सत्याग्रह हैदराबाद पेशन का मामला

दिल्लो २ दिसम्बर।

जिन लोगो ने हैदराबाद ग्राय सत्याग्रह १६ ३८ ३६ मे |सावदेशिक समा द्वारा सचालित निजाम हेदरा बाद क विरुद्ध भादोलन म माग शिनया या घौराजन्हे जेल **।**का सजा हुई था। उन सब सत्याप्रहियो स निवेदन हे कि भपना प्राथनों पत्र द्मपने नाम पिताके नाम स्थान बहा से सत्याग्रह के लिए गए वे बाद बहा विरफ्तार हुए तिथि ,जेल का नाम बहा प्रारम्भ मे भज । गए बोर वहा से छूट तथा छूटने की । तिथि के

विवरण सहित अधिकतम २० दिस म्बर १८८४ तक साबदेशिक धाय प्रतिानाथ सभा महर्षि दयानन्द्र भवन रामलीला मदान नई दिल्ली २ के पते पर भिजवा देवे ताकि उनका मामला के द्वीय सरकार के सामने पक्षन हेतुस्वीकृत कराया जासके। इसके उपरान्ध यदि कोई व्यक्ति छट गया तो साबदेशिक क्षेत्रमा उनके मामले में किसी भी प्रकार के सह योग के ।सए उत्तरदायां नहीं होगी।

रामगोपास गासवासे प्रधान सावदेशिक सभा दिल्ली

मातृ मन्दिर कन्या गुरुक्त की छात्राश्रो के वेदप्रचार की धूम

२६ ८ ८ १ से २६ ८ ८ १ तक मात्मिन्दरको छात्राची न पलामू बिहार के धन्तगत विश्रामपूर म श्रायोजित विद्यास यजुर्वेद्र पारायण यज्ञ मे ऋत्विज का काय सफलता पुषक सम्पन्न किया । बालिकाओ क मध्य वेंद्र मन्त्रोक्वा रण से दूर २ के **अनेक ग्रा**भाका ला**लों** की संख्या म वनता | मत्रमुग्ध रही घोर उन्होने बालिकाओं का स्तेह से संस्कार किया बस्त्र,तथा ११०१) ६० की बली भटकी।

प्रद कायकमो सामा का मोल, दहेब का नापसा, हिन्दी बेदपाठ प्रश्निक्षणम सत्याय प्रकाशस्य वश्यय (संस्कृति) मादि कावक्रमों का धुम रही।

माचार्या हा॰ पुष्पावती जो के प्रवचनो में जनता सत्यधिक प्रमाविस सहो । प्रामाण जनवा क_रस्तेह से श्रमिभूत होकर श्राचार्या वा वे मिवष्य मे भावस्यक सहयोग देवे तथा बहा कन्या गुरुकुल खोलने का षारवासन दिया। जानार्या जी वे उन्ह ऋषि दयान द प्रदर्शित वदिक पय अनुसरण की प्रदेशा दो।

बालिकाका के मावपूण प्ररणा

लुधियाना में विशाल पारिवारिक सत्स ग

द्यायसमाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना के सहयोग से माय युवक सभाकी भ्रोर से स्विवार ३ नवम्बर १९७५ को साय ३१५ वज से ६ अपजे तक श्री राम ञूक्स जी यादव के निवास स्थान पर पारि वारिक सत्सगका भायोजन किया गया। इस भवसर पर स्रेन्द्र कुमार जीशास्त्रा ने यज्ञ सम्पन्न कराया सथा उनका मनोहर प्रवचन हुआ। वेद प्रचार अजन म इक्षा लुधियाना की बोर से श्री किरपा राम जा बाय तथा श्री बरापाल जी धाय ने भजनो

का कायकम प्रस्तुत किया । इस सारे समारोह की ग्रध्यक्षता श्री नवनीत नाल जो ढीगरा प्रधान **मार्यसमा**ज महर्षि दयानन्द बाबार लुवियाना, ने की। बहुत बढ़ी सक्का में सत्सग प्रमियों वे इस सत्सग में ,भाव सेकर षम साम उठाया ।

रोधन लाल भाग घञ्यक्ष वेद प्रचार विसास धायसमाज महर्वि दवानन्द बाजार नुषियाना

श्रार्यसमाज शालीमार बाग दिल्ली मे योग प्रशिच्चण शिविर का समापन समारोह सम्बन्न

माननीय श्री स्वामी अपरोक्षा मन्द को महादाज के निदशन मे २०११ ११८५ से चलाये जा रहे योग प्रशिक्षण शिविर का समापन समारोह निम्न कायकमानुसार मायोजित किता गया है-

रविवार दिनाक १ १२ १६८५ प्रात ५३० वर्षे यज्ञ

६०० बजे योगाम्यास ৩ ३০ **ৰ**জ **বাল** সহিলেগ विविर समापन समारोह

प्रध्यक्षता स्वामी अपरोक्षानन्द जी वक्ता ब्रह्मचारी वितेन्द्र व साथी

डा॰ रमुकीर वेदालकार डा॰ धम

प्रात ८४५ बजे शान्तिपाठ व प्रसाद वितरण

भाग सब सपरिवार सादर ग्राम त्रित हैं।

निवेदक

बोमदत्त मारद्वाक मगवती बोब राय हरिराम गुप्त नगदीश चन्द्र गुम्ता देवदाज कालरा कमला तल बाड डा॰ बार•के॰ गोवस मोला वकर बार्जिय वेदप्रकाश महता नानक चन्द गुप्ता।

सर्वप्रिय दानवीर प्रवान श्री सोहनलाल जी तुली के श्राकस्मिक निभन पर भावभीनी श्रद्धाजलि

भायसमाज किशनगज (मिल एरिया] दिल्ली के श्रद्ध य प्रचान श्री सोइनलाल जी तुली जिनका झाक स्मिक निधन १०११ ८६ को हुआ भौर किया रस्म बुधवार दिनाक २०११ ८५ को हुई उसमे बायसमाज किशनगंज (मिल एरिया) की म्रोर से निम्नलिसित श्रद्धावनि प्रस्तुत की

श्रद्ध य श्री सोहनलाल जी तुली मायसमाज किशनगज (मिल एरिया) दिल्ली के जन्म देने वाले इन महा पुरुषों में से एक महान पुरुष के जो कि धावे वसकर वे एक बायसमाज के कमठ कार्यवर्ता के रूप में उमरे भौर वर्षों तक इस बायसमाज के प्रधान पद को सुखोशित करते रहे। उनके अवक परिश्रम त्याग नि-स्वाय सेवा तथा उनकी निष्ठाबान कुम मावनाधो काही यह अस 🕏 कि इस में न में नेदिक वर्ग के प्रचा-श्चर्य इस बायसमाय का धपमा एक

महत्त्वपूण क वा स्थान है। इन शब्दो के साथ दिवगत घाटमा के प्रति भपनी श्रद्धाजलि भपित की गई।

इसके अतिरिक्त इस भागसमाज के बतमान प्रधान डा० एस एस कामरा एवं (कविराज श्री बी सी जोशी प्रचान बाजार कमेटी किशन गज विल्ली ६ के प्रतिरिक्त प्राय समाजके एक प्रमुख नेता मलिक रामलाल श्री मोदप्रकाश शास्त्री श्रीमती कोशल्या मलिक सूतपूर कान्सल रूथी बलबीर मित्र झान द भौर भी कामेश्वर शास्त्री ने भी सपनी श्रद्धावनि दिवगत ग्रात्मा की स्राति एव सदगति के लिए भट ी। इस योक सभा मे १५०० से मी समिक बहुर और माई उपस्थित

> [जेपी पाठक] सक्त्री बायसमाज किशन गज (मिल एक्सि) दिल्ली-६

आवश्यकता है

सूजीग्य वर वध मेल मिलान के लिए श्री ग्रात्मदेव, सयोजक आदर्श विवाह केन्द्र दिल्ली श्राय प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड नई दिल्ली से सापर्ककरे।

निम्न युवको युवतियो के लि-स्योग्य मेल वास्त्रित हैं -

सयाग्य वर चाहिए-

१ कन्या२४ वर्ष ५-३ बी०ए० विता दिल्ली में व्यापाररत, २ कन्या २२ वष ५-४ बी/काम सरकारी सेवा मे ३ कल्या २१ वर्ष ५-४ बी० काम मृहकार्यमे दक्षा, ४ कन्या २१ वर्ष, पू-४ एम**०ए० बी० एड, ५ क**न्या २४ वर्ष ५-३ बी०ए० साम एक हजार रुपये मासिक ६ कन्या २८ वर्ष ५-३ बी॰ काम, सरकारी सेवारत, ग्राय १,४००/- मासिक ७ कन्या २३ वर्ष ५-३ बी॰काम पिता प्रिसिपल, ८ कन्या२३ वर्षवी० ए० वॉ०एड पिता ग्राई॰ए०एम० ६ कन्या २३ वय । ५ बी ०ए० बो ०एड० सरकारी सेवा ७०० रुपये मासिक, १० कन्या २६ वर्ष ५२ बी० ए०, ११ कन्या २६ वष ५ फुट नसिंग ट्रैण्ड कार्यन्त १० कत्या २२ वर्ष, ४-४ बी० ए० श्राय ११५० रुपये मासिक १३ कन्या २१ वर्ष ५-२ मध्यापिका ११००/-हपये मासिक, १४ कन्या २२ वष ५-४ बो ०ए० ट्रेनिंग कोर्स, भोप्रटर

एम डी एव

टेलीफान ग्राय ११००/- मासिक ।

सूयोग्य वध् चाहिए--

१ युवक २ ३ वर्ष ५-७ मैक नि कल इन्जीनियर ग्राय १८००/- रुपये मासिक २ युवक २५ वर्ष ४-८ ईच इलैक्ट्रोक्ल इ जीनियर भ्राय १५००/-मासिक ३ युवक २ ४ वर्ष ४-२ एम० बी०की०एस०, ४ युवक २८ वर्ष <-< इ**च** एम० बो० बी० एस० २३००/- मासिक, ५ युवक २० वष ५ ७ इ च एम०बी० बी०एस० भ्रपना क्लिनिक ६ युवक ३०वर्ष ५-८ एम•बी॰बी॰ एस॰ भ्रपना किलनिक ७ युवक ३० वर्ष ६ प्रोफेसर पी० एच॰डी॰ भाय २,५००/- मासिक, ८ युवक २८ वर्ष ५-८ मैकेनिकल इन्जीनियर प्राय २ ३००/- मासिक. ह युवक २२ वर्ष ५-७ बी० काम. धपना कार्यटाइप फोटोस्टेट २.०००)-मासिक १० युवक २७ वर्ष ५-८ इ च बी॰काम इण्डियन प्यर लाइन्स १८०० मासिक, ११ युवक २७ वर्ष ५-७ एल०एल०बी० ग्रंपना व्या-पार २,००० - मासिक १२ युवक २८ वर्ष ५ फट एम० काम यूनियन बक् आय १,८०० - मासिक, १३ युवक इ३ वध ५-४ बी० ए० द्याय .१००/ मासिक, १४ युवक २८ वष ५ ८ सरकारी सेवा १०००/-

> डा॰ घर्मपाल द्यार्य महामन्त्री

मनि-चोरी

(पच्ठाका शेष) मुनिने पूर्वोकन शस्त्र ग्रीर लिखिन कथा की ओर सकत करत हए कहा --हेपाण्डव श्रष्ठ युधिष्ठिर । राजा मुखम्न द्वारा लिखित को दण्ट प्रदान रूपी श्रष्ठ कम कंफनस्वरूप निश्चय ही उच्चनम पद प्राप्त होगा व्यास मनि कहने हैं—

- (१) महाराज[।] प्रजाजना का पालन पूर्णरूप सं करना ही क्षत्रिय का मुख्य धर्म है। अन्य काम कुमाग तुल्य हैं। यत तुम मन को शोक म निमम्न मत करो।
- (२) हे धर्मज सत्पुरुष 🎙 तूम घपना पप्नीव भाइयो की हितकर बात सुनो । राजन् दण्डधारण कानन का पालन[ा] हो क्षत्रिय घमं है। सिर मुडाकर सन्यासी बन जाना ठीक

शोक मत करो --প্রাক্রঘণ

इस सगोष्ठी मे श्रीकृष्ण भी उप-स्थित थे। ग्रर्जुन न उनसे प्राथना की — हे माधव^{ाँ} घर्मपुत्र युधिष्ठिर स्वय भाई वन्धुओं के वियोग से शोक सन्तप्त हो स्वय ही दक्ष माग्रमे ब्ब गये हैं। भाप इन्हें वर्य दोजिए। उस समय श्रोकृष्ण बोले-

१ सिंहपुरुष ! तुम शोक मत करो। शोक नो अरीर को सुखादेने वाला होता है। इस समरागण मे जो बीर मार गये ने वे फिर सहज ही मिल सके यह सभव नहीं है।

२ गजन [!] जैसे सपने में मिले हम बन जागन पर मिण्या हो जाते हैं उस प्रार्जाक्तिय नहासमर मे नष्ट हा गये है उनके दर्शन धब सभव नहीं है।

३ क्षत्रिय धम मे उत्पर रहने वाल वट वेदाङ्गो के पारगत यह शूर वेर नरेश पुण्यमयी वीरगति को प्राप्त हुये है उनके लिए तुम्ह शोक नद्र करना चाहिए।

युर्घिण्ठिर का नगर मे प्रवेश

ग्रदना वमशोला बीरागना बुद्धि-मना द्रौपदी तप पुत व्यासमृति धीर नोति तथा वर्मक अगाध भण्डार श्रीकृष्ण तथा धाने चारो भाइयो के उत्साहबधक शब्दों को मुन युधि-ष्ठिर की घात्मविश्वास की ज्योति प्रदाप्त हो गई। सुसज्जित श्राक्षंक स्वस्थ रथ पर माता कृन्ती महारानी द्रौपदी और घस्त्र शस्त्रों से सज्जित भाइया घीर सेना सहित उच्च स्वर समन्वित विभिन्न वाद्य यन्त्रो भीर मस्त गज ब्रह्म ब्रादिक रख पर विराज्यान वेद पाठी विद्वान द्विज वग क गूणगान श्रीर मगल स्तोत्र पाठ की मधुर वाणी से गुजते हस्तिना-पुर नगरो में सहस्रो लाखी आ बाल वद्ध नर-नारियों का हथ ध्वनि धौर सतन पूष्प वर्षा सहित सम्राट युधि-ष्ठिर ने राजधानी हस्तिनापुर मे प्रवेश कर भाग लाम्राज्य की चतुर्दिक लहराती ध्वजा फहराई।

> भाचाय दीनानाथ सिद्धान्तालकार के सी ३७/वी ध्रशोक विहार दिल्ली-५२

गुरुकुल महाविद्यालय शुऋताल का महोत्सव सम्पन्न

गुरुकूल महाविद्यालय शुक्रताल मुब्नगर का २१ वा वार्षिक महोत्सव २४ सा २७ नवम्बर तक बढ हर्षो-न्लास के वातावरण में सम्पन्न हमा। महोत्सव मे ममाज सुधार धान्दोलन श्चार्यं सम्मेलन शिक्षा सम्मेलन किसान सम्मेलन व ज्यायाम सम्मे-लनो का धायाजन किया गया । महा--सब में लगभग ४० हजार लोगों ने भाग लिय'।

सम्मेलन मे मवश्री स्वामी ग्रानन्द वेश जी शक्तिवेश जी चन्द्रदेव जी, घीरसिंह शास्त्री प्रमपाल शास्त्री चौ॰ प्रियवत जी सहदेव बघडक, वोरन्द्रवीर सेमचन्द, ज्ञान्ति स्वरूप जौली, प्रादि अनेक मुख्य वक्तामी न दश को समस्यासो जैसे शराब का बढता हवा प्रचलन दहेज सनुशासन होनता, राष्ट्रीय सुरक्षा बतंमान शिक्षा प्रणाली देश की श्रखण्डता किसानो को समस्या भादि विभिन्न विषयों पर धपने धपने विचार व्यक्त किये।

स्वामी पानन्दवशजी को ग्रध्यक्षता मे २४ नवम्बर म चल रहे यजुर्वेद महायज्ञ की पूर्णाहति २७ नवस्बर को हुई। गुरुकूल को पवित्र यञ्जवेदी पर हज रा नर नारियो न यज्ञोपबीत ब्रह्मचर्य वानप्रस्थ आदि की दीक्षाए ली भीर शराब माम, घुम्रपान म्रादि समस्त निषद्ध पदार्थों को त्या-गनेकी प्रतिज्ञाए की।

इस महायज्ञ के धन्यक्षीय भाषण म वदो के प्रकाण्ड विद्वान श्री स्वामी भ्रानन्दवेश जा महाराजने ध्रपनी पुरातन संस्कृति एवं यज्ञों के महत्त्व पर दिचार व्यवन करते हुए कहा कि समाज के सभो वर्गों का राष्ट्र उत्चान एव अन्वण्डताक लिए सन्त क्रिया-शोल रहना चाहिए।

सवाददाना श्रायसन्दश





करता है तथा उन्हें प्राकृतिक कामा सुवन्धिन व स्थाय

धिकाम ई रोठा, भावला हरड बहेडा चन्दर व सन्द सुर्पान्यन बडी बूटिया से बनाया गया एम बी एक शिकालाई पाऊडर एक भायन्त लाभकारी आकृतिक वेट है। इससे कोई रासायनिक पदाच नही है।

एम डो एवं क्षिकाकाई पाऊटर का आ**व्य से हो** नियमित प्रयोग कोलिये ।

निर्माता महाशियां वी हट्टी (प्रा॰) लिं॰ 8 44, इण्डॉस्ट्रयम् एरिया, कीर्ति सन्दर वर्ष् विकार 110015 कोन 539609 537987, 537341



ठडा गर्म पानी

बाबा पृथ्वीसिह (पृष्ट १ का नेप)

कार व महान समाज सुधारक
हूँ बताया। उहोने कहा कि पबाब के
लिए उनकी नवाझों को विशेषत
पिछड वर्गों के लिए किए गए क यों
को लस्बे समय नक याद किया
जाएगा। उनका मत्युम अपूरणीय
क्षति हुई है

पंजाब भौर हरियाणा के मुख्य मन्त्रिया और धनक नेताभा न भा बाबा आपाद का अपनी भावभीनी अदाज्जिल भाषन की है।

सावदेशिक ग्राय प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोगल शालवाले ने कहा—श्री ग्रायाय पृण्डीशिक्ष आजाद स्वन तता सप्राम के प्रबल योद्धा महृष्टियान-ने से सच्चे ग्रन् याद्या महृष्टियान-ने से सच्चे ग्रन् याद्या महात्मा गांधी के दिशा निद्यान में ग्रानेक ग्रादोलना म बद बढ कर व ४ परने बाले राष्ट्र सेवक थे।

महात्मा गामा ने वहा मिलन बा उन्होन हरिजनों के बीच रहकर उन की विक्षा सहयोग कर सहो रास्ता दिखाया और उन्दनमाहन मालवीय जन्हें काशी बुलाक्स सम्मानित किया और आवाय शहर से सन्धोचित किया श्रा प्राचाय जा मात्र शिक्ष सभा के उपप्रधान रहे। गुरुकुल कागड़ी के कुलाधिपति ग्रीर प्रजाब प्रतिनिधि समा के भी प्रधान रहे हैं। जीवन के प्रन्तिम काल मे उनकी इच्छा स्थायप्रकाश का गुरुम्झी मे श्रनुवाद करने की था जो पूरी नहीं हा पाई। उनके जाने म भ्राय जगत को गहरा क्षांति पहचा है।

सावदेशिक ग्राम प्रतिनिधि समा नई दिल्ली दिल्ली जाम प्रतिनिधि समा भाग के द्वाम समा दिल्ली भागसमाज दीवान हाल गुरुकुल कागडा हरिद्वार मादि बनेक सस्पाभो मे शोक सवेदना के मदश मिले हैं।

मानव का कल्याण

(गण्ड ६ का गण) ऐसे मजुष्य हमेशा अपने सामने इस विन का धजुसरण करते हैं हीरा जनम प्रमोश हैं तु इसे न गया प्यारे भौर वह इस्वर से सदय यही प्राथना करता हुआ इस ससार में विचरण करता है।

सब का भला कही भगवान। सबका सब विधि हो क याण।।



उत्तम स्वास्थ्य के लिए

I D

000

देत त्मांत्रत

महाशिया दी हुटी (प्रा॰) लि॰

9 44 इण्डस्ट्रियल एरिया कीर्ति नगर नई दिन्नी 15 फोन 539609 537987 537341

अब नये पैकिम में उपलब्ध

डिस्ट्रीब्युटर्स

गुरुकुल कॉगड़ी फार्मेंसी,

हरिद्वार की और्षाधयां

सेवन करें

प्रापिक्त कांगडी प्रामंसी हरिट्टार

सासा कार्यालय-६३, गसी राजा केशरनाय, चावडी वाजार, विल्ली-६ फोन: २६१८३८